राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहद् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

संपादक

(संचालन, परिवर्द्धन एवं संशोधन कर्ता)

मनीषी, साहित्य भूषण, डॉ० सीताराम लालस डी.लिट्.(मानद)

व्युत्पत्ति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण, साहित्य, कोषादि तीर्थ श्री रामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

डॉ० सीताराम लाळस डी. लिट्. (मानद)

स्व० उदयराज उजळ

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जोधपुर.

प्रकाशक :

चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मूल्य १२ रु०

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस
जोधपुर

छप्पय

जुरजोधन जाणियौ, पाट हथणापुर बैठूं ।
एहड़ी कद जांणतौ, जाय जल भीतर पैठूं ।।
सह कौरव लै साथ, कियौ भारत मुदा सूं ।
मन री मन माह, मुऔ भीम री गदा सूं ।।
त्रयलोकं नाथ होतब तणा, अलप करै कुण अख्खरां ।
कवि 'ग्रोप' अग्यांनी नर कहै, नौवां रो तेरह करां ।।

—ग्रोपौ आढौ

संस्था की ओर से—

चौपासनी सिक्सा समिति; राजस्थांन में सिक्सा रै कांमां मैं ठेठ सूं लगाय नै ग्राज तांई ग्रागीवांण रैवती ग्राई है। पच्छिमी राजस्थांन में जठै ''ग्रणभणिया घोड़ां चढ़ै भणिया मांगै भीख'' ईज सईकां तांई नारौ रियौ उठै ग्रा समिति ग्रापरा लगोलग जतनां सूं ग्यांन रा दीपईज नीं चासियौ, घर घर मैं ग्यांन री गंगा नै भी पूगती कोवी। राजस्थांन रै पुरांणै इतिहास, संस्क्रति नै समाज रा मांन – मूल्यां नै जीवतां राखण खातर नै नवी पौध नै राजस्थांन री जूनी सभ्यता नै समझणै, परखणै, ग्रजमांणै तांई 'राजस्थांनी शोध संस्थान' री थरपना कीवी। घणा ग्रणमोल ग्रंथां नै भेला किया। पछै सिक्सा समिति रा जाग्रत लोगां साहित्य इतिहास नै राजस्थांनी भासा री रक्सा नै बढ़ोतरी रै खातर 'राजस्थांनी सबद कोस'' री घणी जरूरत समझी। ग्राज रै विग्यांन सूं खंवा – ठौरी करता समै मैं ग्रैडा लूंठा कामां मैं समै, स्रम, धीरज नै धन री घणी जरूरत पड़ै। घणा फोड़ा देखणा पड़ै, घणी ग्रबकायां झेलणी – उठावणी पड़ै। राजस्थांनी सबद कोस रा कांम मैं भी ग्रैड़ा घणा उतार – चढ़ाव ग्राया, पण जठै चाह उठै राह। सो, कोस रै छपणै रौ कांम इकरां भरता रथ री भांत चालतौ ईज रियौ।

राजस्थांनी सबद कोस रा चौथा खंड री प्रथम जिल्द रौ साहित्य संसार घणौ, ग्रादमांन कियौ इण माथै म्हनै घणौ मोद है नै ग्राज उणी लड़ी मैं ग्रौ ''व'' ग्राखर री चौथा खंड री दूजी जिल्द साहित्य रा पिंडतां रै ग्रागै ग्ररपण करतां म्हांरौ मन हरख सूं बांसां उछलै है।

ग्रा, सवा सोलै ग्रानां खरी बात है कै रुपियां रौ कांम रुपियां सूंईज सरै। कोस जैड़ा ठाढ़ा कांमां मैं ग्रणूतौ द्रव चायोजै। राज सरकार नै केंद्र सरकार भरपूर मदत करै जद भी कोस कारयालय में धनाभाव इज रैवै इण ग्रभाव नै मेटण तांई घणा जुगाड़ बैठावणा पड़ै। समिति रा सदस्य गाढी भागा – दौड़ करै, जद जाय नै कठैई कोस री जिल्द छपावण रौ जोग बणै। इण खातर समिति नै ग्रापरी बीजी योजनावां मैं कटौतरी भी करणी पड़ै। पण, फेर भी, कोस री छपाई रै कांम में लांची नीं ग्रावण देवां. इण कांम री मदत खातर राजस्थांन राज रा राज्यपाल महामहिम जोगेंद्रसिंहजी, राजस्थांन रा मुख्य मंत्री स्रीमान् हरिदेव जोसी, सिक्सा ग्रायुक्त स्रीमान् जगन्नाथसिंहजी मेहता, जोधपुर रा जिलाधीस स्रीमान् करुणकुमारजी भटनागर रा म्हैं घणा गुण मानां जिका जद भी कोस रै छपण रौ गाडौ ग्ररथाभाव रा कीच मैं कलीजतौ दीठौ म्हांरी मदत कराय नै चीला माथै दौड़तौ करता रिया। ग्रै महानुभाव इण कांम री कीमत ग्रांकी, परख कीवी नै साधना रौ ग्रभाव टालियौ।

राजस्थांनी साहित्य नै संस्क्रति रा खंभ ठोक पुजारी नै मांना हेतालु राणी लक्समीकुमारीजी चूंडावत, राजस्थांन रा मोबी पूत, साहित्य रा कोडीला समरथ मांनवी लक्समीमलजी सिंघवी, सरूगोत सूं ईज कोस रा मेढी गोरधनसिंहजी मेड़तिया खांनपुर रै सहयोग रौ स्मरण नीं करणौ क्रतघणता ईज कहीजै। ग्रै लोग देस, समाज नै ग्रापरा घर घराऊ कांमां मैं समै काढ़ नै, कोस रै कांम खातर सदा उछाव रै साथै त्यार मिल्या। राजस्थांनी रा जांणीता ग्रर मांनीता साहित्यकार स्री कोमलजी कोठारी, स्री मरुधरजी म्रदुल, स्री कपूरचन्दजी कुलिस, स्री रेवतदांनजी चारण नै स्री सोहनदांनजी चारण रै प्रति ग्राभार परगट करणौ म्हारौ धरम है, ग्रां लोगां री नेक सलाह सूं कांम नै ग्रागै वधावण मैं घणी मदत मिली है। कोस रा सगला बीजा हेत – प्रीत पालणियां रौ भी म्हैं घणौमांन ग्राभार मांनूं।

सगला सूं घणौ तौ म्हनै ग्रौ हरख है कै इण साल कोस रा संपादक स्री सीतारामजी लालस री तपस्या नै जोधपुर विस्वविद्यालय ग्रांकी ग्रर साहित्य रा इण ग्यांनी गौरख नै डी० लिट्. री मानद पदवी देय नै साहित्यसाधकां रौ उछाह वधायौ। राजस्थांनी साहित्य रा प्रेमियां नै समिति रा सदस्यां सारा खातर स्री लालस रौ ग्रौ मांन गौरव री बात है।

इण जिल्द री छपाई रै कांम नै भली तरै समै माथै पूरौ करावण खातर स्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस रा प्रबंधक स्री हरिदत्तजी थांनवी रौ भी म्हैं ग्राभार मांनूं। सिक्सा समिति रा सदस्यां नै तौ रंग है ईज जिका इण कांम रौ महत्ता नै समझ बरोबर मदत करता रैवै।

कागद रै मूंघा पणै नै छपाई री दरां री बढ़ोतरी रै कारण इण खंड री कीमत ६२) रिपिया राखणी पड़ी है।

चौपासनी शिक्षा समिति,
बसंत पंचमी संवत् २०३२

— नारायण सिंह मांणकलाव
सचिव
उप समिति राजस्थांनो सबद कोस, जोधपुर.

अपनी बात

राजस्थानी शब्द कोश के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द का देश-विदेश के विद्वानों ने स्वागत, सम्मान कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। इससे हमारा उत्साह ही नहीं बढ़ा, अपितु कार्य की महत्ता और गुरुता का बोध भी हुआ है। सभी जानते हैं कि कोश जैसे दुष्कर और अभिनव कार्य में अनेक प्रकार के बाधा-व्यवधान उपस्थित हुआ ही करते हैं, पर साहसी और लग्नशील व्यक्ति बाधाओं के वारिधि को बिना विचलित हुए पार भी करते हैं। हमने भी कोश के प्रकाशन और मुद्रण के व्यवधानों के समक्ष बिना अवनत हुए आगे और आगे ही बढ़ना अपना लक्ष्य रखा। फलतः कोश के चतुर्थ खण्ड की द्वितीय जिल्द आज हम विद्वानों को समर्पित करने में समर्थ हुए हैं।

आशा करते हैं कि विद्वत् समाज कोश के पूर्व खण्डों की भाँति ही इस जिल्द का भी स्वागत कर हमारा उत्साह-वर्द्धन करेंगे।

इस अवसर पर मुझे यह जानकारी देते हुए भी अतीव गर्व, और आल्हाद की अनुभूति हो रही है कि जोधपुर विश्वविद्यालय ने हमारे विद्वान् संपादक श्री लालस को इस अवधि में मानद डी. लिट्. की उपाधि से विभूषित किया है। चौपासनी शिक्षा समिति, उप समिति राजस्थानी शब्द कोश तथा भारती के उपासक सभी लोगों के लिए यह सम्मान गौरव का प्रतीक है। इस प्रकार शिक्षा समिति तथा डॉ. लालस की ऋषि तुल्य साधना फलवती हुई है।

मुझे विश्वास है कि शिक्षा समिति के लग्नशील सदस्यों, डा. लालस और राजस्थान सरकार के सतत सहयोग से यह कार्य यथा-समय संपन्न हो सकेगा।

प्रह्लादसिंह
अध्यक्ष
उप समिति राजस्थानी शब्द कोश
व
कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर.

दिनांक : ५-२-१९७९

॥ श्री ॥

❀ निवेदन ❀

—:दूहा सोरठा:—

नारायण भूले नहीं, अपणी माया हेत । रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढ़ो होय, साच अमर संसार में । कैतो थोबो कोय, श्रो सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईश्वर किरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल अखे । दीपै वांरा देश, ज्यांरा साहित जगमगे ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा संग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है। श्री सीताराम जी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मैंनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज की। इणां कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवा। सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दोयो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोंम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजोया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई, इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री लगन ही। म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जवाब उणां तारीख २९-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री मनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई। उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दोवी।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ रो जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्योंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियां पेली बणी हुई ही। इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो। उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीबांज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता ले ने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासनी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५९ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा।

इस कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदद ही इण वास्ते बैंकूंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो:—

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यन्त्रो (मेंकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे.कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनूं कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है·—

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca·bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied

Sd. W S. Allen M. A., P. H. d.
Professor Comporative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

''गीत'' राजस्थानी में

कोम मरु वाणरो सुणे बण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पथ धन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लगावे घणी सरमे । गिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनों दिन किता सनमान दरसें ॥३॥
पांण मरु वांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो । रखी नह पढण में भाखसां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणाई चारणों व्याकरण विधोविन्न, बणेगो कोश ही लाखसबदो । 'सीत'रो परिश्रम प्रथग फलियों सिरे, रेटियो'उदय'मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति में हजारों खरचने, दाद उजल 'उदे' देम दीधी ॥७॥
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल मिश्रण ने बनाया वंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
साबल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदीयापुर रान के कोष बल घर के।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन धर के।
प्रांत की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा विबुधन दीनमाल वीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित दिवाला है।
जीवित उट्टेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेमे जियाला है।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्जवल
Sd. Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्रा०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० रा०	गोरादि	स० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	स० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डि०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० लि०	जरणी लिखियो
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बन्धी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिह्न

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
¤	शब्द के आगे	—	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
’	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	—	यह ध्वनी-लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	—	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
‘...’	शब्द के दोनों ओर सिरो पर	...	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इनव र्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ–सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोष	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधांन माळा	उदयरांम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदांन लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	वीरभांण रतनू. उदयरांम बारहठ
ऐ० जै० का० सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपा. अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयरांम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबंध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रांमायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढ़ौ
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगल नांम माला	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तंवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियांण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० अगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना० द०	नागदमण	सांयां झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियौ
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदांन लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खू०,	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि० दृ०	,,	,,
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

मा० म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	मीरां
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदांन कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकास	किसनौ ग्राढौ
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जग्गौ खिड़ियौ
र० हमीर	रतनाहमीर री वारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रो रासौ	अज्ञात
रा० जै० छंद	राउ जैतसी रो छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रा० रा०	रांम रासौ	माधोदास दधवाड़ियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीर भांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंसरी विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह I	संम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पि०	लखपत पिंगल	हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालजी कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	संपादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनय कुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० सं० सा०	विश्णोई संप्रदाय और साहित्य	डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
वि० सं०	विरुद सिणगार	कविराजा करणीदांन कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदांन बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	संग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पति	गोपालदांन कविया
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समयसुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समय सुंदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदांन
ह० नां० मा०	हमीर नांम माळा	हमीरदांन रतनू
ह० पु० वां०	स्रीहरिपुरुषजी की वांणी	श्री हरिपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० भा०	हाला भाला रा कुंडळिया	ईसरदास बारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

ब

ब—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन-वर्ण जो उकार, विकार और अंतस्थ अर्द्ध व्यंजन माना जाता है। इसका उच्चारण दंत्योष्ठ है। उच्चारण में जिह्वा-पश्च उकार के समान-संवृत्त या अर्ध-संवृत्त स्थान तक उठता है और तुरंत परवर्ती स्वर के स्थान पर पहुंच जाता है। इसमें व्यंजनात्मकता से अधिक स्वरात्मकता ही पाई जाती है।

बंक—सं. पु.—१ गर्व, अभिमान, घमण्ड।

उ०—१ दिपै रघुनायक दीन दयाळ, पुणां खळ घायक सेवग पाळ। चढै दसमाथ विभजण बंक, लछीवर देण भभीखण लंक। —र. ज. प्र.

उ०—२ बेहु सायबी पगां रांखीबैं, बाळी धरा वचूटी बंक। सबळां अनड़ां बेहु तणै सर, आबु अनड़ तुहाळो अंक। —दुरसो आढो

२ देखो 'बाक' (रू. भे.)

उ०—दरपइ दीठइ दोरडइ, साप न आंणइ सक, बीहइ बिलाडां-बच्चडइ, बाघिणी वालइ बंक। —मा. कां. प्र.

३ देखो 'बांको' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'बंक' (रू. भे.)

५ देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—दीहा पाधर बंक गय, भुज धरिये कुळ-भार। —गु. रू. बं.

बंकड़—१ देखो 'बांको' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बांक' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'बंक' (मह., रू. भे.)

बंकड़ी—देखो 'बांकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कटि-तटि हूंती बंकड़ी, काढ़ी करि करवाल्। तव अग्गीउ आवी करी, करि वलगु ततकाल्। —मा. कां. प्र.

बंकड़ो—देखो 'बांको' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ 'बीरम' आई बंकड़ो, ज्यूं बेटी जगमाल। दत क्यावर चावा दुनी, साहां उर रा साल। —बी. मा.

उ०—२ भड़ां दुबाहा बंकड़ां, हुई सनाहां सत्थि। सेध निवाहां सूरमां, राहां वेध अरत्थि। —रा. रू.

(स्त्री. बंकड़ी)

बंकट—देखो 'बंकट' (रू. भे.) (नां. मा.)

बंकति—देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—छट सुंदर वीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ़ रूप तणा। दुति बंकति तुंड लगांम दियां, कुळवंतिय घूंघट जांणि कियां। —रा. रू.

बंकनाळ, बंकनाळि, बंकनाळी—देखो 'बंकनाळ' (रू. भे.)

उ०—१ बंकनाळ घर अमरा भरि हैं, अरध उरध घर निरझर झरि है। —अनुभववांणी

उ०—२ अजरामर का मारग औळा, सौळा संत पिछांणै। बंक-नाळि मेर संचरि कै, भंवरगुफा सुख मांणै। —अनुभववांणी

उ०—३ पलटि पूरब अपूरब पांणा, करि बंकनाळी ले मेर थांणा। —अनुभववांणी

बंकनाड़ी—देखो 'बंकनाळ' (रू. भे.)

बंकि, बंकी—१ देखो 'बंक' (रू. भे.)

उ०—बंकि पटां फूलहथां, सोरि खिलकार कुसत्री। तस कसीस लेजमा, जजर गती जाजत्री। —सू. प्र.

२ देखो 'बांकी' (रू. भे.)

उ०—वारण सिर तोडै खग बंकी। तांणी त्रंगणि अढारह टंकी। —सू. प्र.

बंकीनाळि, बंकीनाळी—देखो 'बकनाळ' (रू. भे.)

उ०—बंकिनाळि चढावै वाटां, घण अटकै हीरांमण घाटां। —सू. प्र.

बंकेण—१ देखो 'बांको' (मह. रू. भे.)

उ०—दिन वंकै बंकेणं, वांणी मंत्र तंत सा बुद्धी। दुरजण सज्जण थांनै सज्जन होइ दुज्जणाकारैं। —रा. रू.

२ देखो 'वक्र' (मह., रू. भे.)

बंको—देखो 'बांको' (रू. भे.)

उ०—१ ढकै जस जेती बरण, वडपण अंके वार। इण वंकै 'पातल' अगै, सह संकै संसार। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ वदै अंगदेसं हुवा जोध बंका। लगा झोकरै झोक प्राजाळ लंका। —सू. प्र.

उ०—३ मिळिया बंका राठवड़ चितहित राख वधाव। सुख गाढो कीधो सगं, रीधो हाडो राव। —रा. रू.

उ०—४ पेखेवा पतिसाह नूं 'अजन' थयो असवार, गति बंकी दिन पाधरैं, छत देखे संसार। —रा. रू.

बंकत—देखो 'वक्र' (मह., रू. भे.)

उ०—माहा जटीयळ भ्रुगट भेक बंकत मयंक, अलंकत सेस मेखल ऊथाळो। करण पत प्रभा परभात रा समोकर। तेज पुंज नाथ रा तणो ताळो। —भीमसिंह जी री गीत

बंग—सं. पु. [सं.] १ जस्ता या रांगा नामक धातु।

२ उक्त धातु का भस्म ।
३ प्रेम, मुहब्बत ।
४ अधिकार, कब्जा ।
५ बंधा ।
६ सीधा व सरल होने का भाव ।
७ बिना कष्ट के, आसानी से होने वाला कार्य ।
८ अवसर, मौका ।
९ एक चंद्रवंशी राजा । १० कपास । ११ बेंगन ।
रू. भे.—भंग
१२ देखो 'बंग' (रू. भे.)
उ०—मगध मंडळ अंग बंग कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पंचाल जांगल······। —व. स.

बंगर–वि.—एकाकी, अकेला ।

बंगस, बंगसी, बंगस्स देखो 'बंगस' (रू. भे.)

बंगा—देखो 'बंगाल' (रू. भे.)

बंगार—देखो 'बघार' (रू. भे.)
उ०—भोल में तौ मुसाला, पांणी अर बंगार घी रौ है । मा'राज आं री तौ थांनै सोगन दिराई कोनीं । —फुलवाड़ी

बंगारणौ, बंगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)
बंगारणहार, हारौ (हारी), बंगारणियौ—वि० ।
बंगारिप्रोड़ौ, बंगारियोड़ौ, बंगारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंगारीजणौ, बंगारीजबौ—कर्म वा० ।

बंगाळ, बंगाल—देखो 'बगाळ' (रू. भे.)
उ०—बरहार, मथुरा, अवध्या, वणारसी, चंदेरी मल्लिवाल, महोब, हूरियांणउ, भयाणउ, रत्नपुर, कांमरू, आडियाण, जलधर, आरब, बंगाल, त्रिहूण, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण···। —व. स.

बंगाळी, बंगाली—देखो 'बगाळी' (रू. भे.)

बंगास्टक–सं. पु. [स. बंगाष्टक] रांगा आदि आठ धातुओं के योग से बना एक रसौषध ।

बंगेसरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

बंगेस्वर–सं. पु. [सं. बंगेश्वर] एक रसौषध । (वैद्यक)

बंगेस्वरी—१ देखो 'बंगेस्वरी' (रू. भे.)
२ देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

बंगोबंग–क्रि. वि.—यथास्थान, उचित स्थान ।
२ व्यवस्थानुसार ।
३ उपयुक्त, यथोचित ।

बंच–सं. पु. [सं.] १ सूर्य ।
२ तोता ।
रू. भे.—बच ।

बंचक–वि.– [स.] १ छल, प्रपंच से जो दूसरों को ठग लेता है, ठग, धोखेबाज । २ धूर्त खल ।
उ०—१ विभचारी वैरी बद बंचक, छळ बळ कपटी छांनौ । महामोह हिंसक मूरख सूं, मरणौ उत्तम मांनौ । – ऊ. का.
उ०—२ 'बांका' बंचक वांणियौ, नहिं जांण्या नहिं राह । त्यां हंदा धन तांणिया, यां आंण्या घर राह । —बां. दा.
३ पढने वाला, पाठक ।
उ०—परधन हरण परायण पांमर, बंचक बांणी रे । ते भूंठी बुगलां री बातां नाहक ताणी रे । —ऊ. का.
रू. भे.—बंचक, वंछक
४ सेंधियार, चोर ।

बंचकता–सं. स्त्री. [स. वंचक+प्र. ता.] १ छल-प्रपंच से दूसरों को ठगने का कार्य, ठगी, धोखाबाजी, धूर्तता ।
२ चोरी ।
रू. भे.—बंचकता

बंचणा—देखो 'बचना' (रू. भे.)

बंचणौ, बंचबौ–क्रि. स. [सं. वंचनम्] १ ठगना, धोखा देना ।
२ चालबाजी करना, बेईमानी करना ।
३ देखो 'बांचणौ, बांचबौ' (रू. भे.)
उ०—इम कागद आवियौ, पेखि बंचै 'गजपत्ती' । अंग पौरस ऊफणै, आहि घ्रित जेम विभत्ती । —सू. प्र.
४ देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरयिा नारी नागणी, सब जुग लीया खाय । जे कोई बंचै बापड़ौ, गुर का मंतर पाय । —अनुभववांणी
उ०—२ है मुह फाड्यां बाघनी, दाब्या सब संसार । जो बंचै भाज करि, लख चौरासी जेर । —अनुभववांणी
बंचणहार, हारौ (हारी), बंचणियौ—वि० ।
बंचिओड़ौ, बंचियोड़ौ' बंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंचीजणौ, बंचीजबौ—कर्म वा० ।
बंचणौ, बंचबौ—रू० भे० ।

बंचत—१ देखो 'वांछित' (रू. भे.)
२ देखो 'बंचित' (रू. भे.)

बंचना–स. स्त्री. [सं.] १ ठगी, धोखा, जाल, फरेब ।
उ०—लोग प्रिय उत्तम आचार थी, बंचना रहित अक्रूरी जी । पाप करम थी जे डरता रहइ, कपट थकी रहइ दूरी जी । —स. कु.
रू. भे.—बंचणा, बंचणा ।

बंचाणौ, बंचाबौ–क्रि. स. ['बंचणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ ठगवाना, धोखा दिराना ।

२ चालबाजी कराना, बेईमानी करवाना ।
३ देखो 'बचाणौ, बचावौ' (रू. भे.)
उ०—१ हिवै म्हांनु वंचावौ, ताहरां बाळक हंसियो बांमण छुडाया ।
—देवजी बगड़ावत री वात
उ०—२ लक्ष्मी नै कुण नोतरै, गंगोदक कुण पवित्र करै हंसनै गति कुण सिखावै, ब्रहस्पति नै कुण वंचावै । क्रपण नै कुण संचावै । तिम सज्जन नै स्वभावै जांणवौ । —रा. सा. सं.
वंचाणहार, हारौ (हारी), वंचाणियौ—वि० ।
वंचायोड़ो—भू० का० कृ० ।
वंचाईजणौ, वंचाईजबौ—कर्म वा० ।
वंचावणौ, वंचावबौ—रू० भे० ।

वंचायोड़ो—भू. का. कृ.—१ ठगवाया हुआ, धोखा दिराया हुआ.
२ चालबाजी या बेईमानी करवाया हुआ ।
३ देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वचायोड़ी)

वंचावणौ, वंचावबौ—१ देखो 'वंचाणौ, वंचावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बचाणौ, बचावौ' (रू. भे.)
उ०—हंस नै गति कुण सिखावै, व्रिहस्पति नै कुण वंचावै क्रिपण नै कुण संचावै । —रा. सा. सं.
वंचावणहार, हारौ (हारी), वंचावणियौ—वि० ।
वंचाविग्रोड़ौ, वंचावियोड़ौ, वंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंचावीजणौ, वंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वंचावियोड़ौ—१ देखो 'वंचायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वचावियोड़ी)

वंचित—वि. [स.] १ जो ठगा गया हो, धोखा खा गया हो ।
२ जो किसी की कृपा या सहायता प्राप्त करने से अलग रह गया हो, दूर रह गया हो ।
३ जो अभीष्ट फल या लाभ न पा सका हो ।
४ विमुख ।
५ हीन ।
रू. भे.—बंचत, बंचित, वचत ।

वंचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ठगा हुआ, धोखा दिया हुआ. २ चालबाजी किया हुआ, बेईमानी किया हुआ ।
३ देखो 'बांचियोड़ौ' (रू. भे.)
४ देखो 'वचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वंचियोड़ी)

वंछक—वि. (स्त्री. वंछकी) १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला ।
२ कामना करने वाला ।
३ देखो 'बंचक' (रू. भे.)
रू. भे.—बंछक

वंछणौ, वंछबौ—क्रि. अ. [सं. वांछम्] १ चाह होना, इच्छा होना ।
उ०—हरि समरण रस समभ्रण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि । बंसै सभा पारकी बोलण, प्रांणी वंछइ त वेलि पढि ।
—वेलि
क्रि. स.—१ चाहना. इच्छा करना, अभिलाषा करना ।
उ०—१ आकास राता, मेह करि माता । क्यां किण नीला, क्यां किण पीला । नाना प्रकार ना रंग, भला सुरंग । वाधै अनंग, जगी करै जंग, भोगी पीयै भंग, स्त्री वंछै संग आदि ।
—रा. सा. सं.
उ०—२ माधव करि माहरू कहिउं, जु मुभ वंछइ खेम । सास लगइ सेवा करिमि, सीत दमयंती जेम । —मा. कां. प्र.
उ०—३ ग्रो अत्रसांण सूरमां आयौ, पूरां नरां वंछतां पायौ । असमर हथा धणी मुख आगै, लड़तां गयण भुजा डंड लागै ।
—रा. रू.
२ जिज्ञासा करना ।
३ प्रेम करना ।
वछणहार, हारौ (हारी), वंछणियौ—वि० ।
वंछिग्रोड़ौ, वंछियोड़ौ, वछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंछीजणौ, वंछीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।
बंचणौ, बंचबौ वछणौ, बंछबौ—रू० भे० ।

वंछत, वंछती, वंछतौ--देखो 'वांछित' (रू. भे.)
उ०—१ नर न्रप अमर चंद्र त्रयनेता, क्रम क्रम चाह्या करो सकाज । सफळ करण वंछत सगळां रा, तो हातां रघुकुळ सिरताज ।
—र. रू.
उ०—२ अग भुगति मुगति दाता जगा, दांन मांन वंछत दिये । पारथं किसूं मेळग कुपह, प्रभू नाथ पारथियौ । —ज. खि.

वंछना—देखो 'वांछना' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वंछाणौ, वंछाबौ—क्रि. स. ['वंछणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ चाह कराना, इच्छा कराना ।
२ कामना कराना, अभिलाषा करवाना ।
वंछाणहार, हारौ (हारी), वंछाणियौ—वि० ।
वंछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बंछाईजणो, बंछाईजबो—कर्म वा० ।

बंछाणो, बंछाबो—रू० भे० ।

बंछायोड़ो–भू. का. कृ.—१ चाह कराया हुआ, इच्छा कराया हुआ. २ कामना कराया हुआ, अभिलाषा करवाया हुआ ।
(स्त्री. वछाय ड़ी)

बंछासुर—देखो 'वत्सासुर' (रू. भे.)

बंछित – देखो 'वाछित' (रू. भे.)

उ०—महि गुड खट मास प्रात जळ मंजै, आप अपरस अरु जित इद्री । प्रागै वेलि पढंता निन प्रति,स्री वंछित वर **बंछित** स्री ।—वेलि

बंछियोड़ो–भू. का. कृ.— १ चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. २ जिज्ञासा किया हुआ. ३ प्रेम किया हुआ ।
(स्त्री. वछियोड़ी)

बंजण–सं. पु. [देशज] १ घास ।

उ०—१ ताहरां सात-वीस भैंसां दियां । भैंसां लै-नै घरै आयो । चारणी मखरा आसरा घताया । भैंस्या व्यायां नै **बंजण** पड़िया । फोफाणद रै आणद हुवा । —फोफाणद री वात

उ०—२ तैरी बेटी पण लियो छै । जियै रै सात वीस भैंस्या नै **बजण** पड़ै तियै चारण नूं परणीजूं । —फोफाणद री वात

२ शरीरांग, अंग-उपांग ।

३ शरीर के जन्मजात या स्वाभाविक वे चिह्न जिनके द्वारा मनुष्य को पहचान की जाती है । (जैन)

उ०—ए थारो सरीर छै रे, **बंजण** लखण उदार । रोग रहित दोख को नही रे, जोबन कला अपार । —जयवांणी

४ देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)

रू. भे.—वजन ।

बंजणो, बंजबो–क्रि. अ. [सं वज्=गति] १ पराजित होना, भागना ।

उ०—रजपूतं भुड भागियै, दळ मूका छळ देस । 'वोहारी' **बंजै** नहीं, सूना मेल्है नेस । —गु रू. बं.

२ चलना ।

बंजणहार, हारो (हारी), बंजणियो वि० ।

वंजियोड़ो, बंजियोड़ो, बज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बंजीजणो, बजीजबो—भाव वा० ।

बंझणो, बंझबो—रू० भे० ।

बंजन—१ देखो 'वंजण' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यजन' (रू. भे.)

बंजियोड़ो–भू. का. कृ.—१ पराजित हुवा हुआ, भागा हुआ. २ चला हुआ ।
(स्त्री. वजियोड़ी)

बंझ—देखो 'बध्या' (रू. भे.)

बंझणो, बंझबो—देखो 'वंजणो, वंजबो' (रू. भे.)

उ०—वढियो मुखेस 'पतो' वाढाळो, **बंझियो** 'सुरखन' देस वढ । गढ चित्तोड़ गरव तण गरजै, गाडो गो रणथंभ गढ ।
—पत्ता चूंडावत रो गीत

बंझि—देखो 'बध्या' (रू. भे.)

उ०—माई हूई माइ हूई काइं नवि **बंझि**, अह जाया नवि मूआ तुम्हे राजु कांई देवि दिद्धउ । —पं. पं. च.

बंझियोड़ो—देखो 'वंजियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वंझियोड़ी)

बंट–स. पु. [सं.] १ बटवारा करने की क्रिया या भाव ।

२ विभाजन ।

उ०—थे सूंना कूकनै लोक हसावता हा सो आवो उरा अबै आज इण दिन बराबर **बंट** होवै है । —वी. स. टी.

३ विभाजन द्वारा होने वाला हिस्सा, भाग ।

उ०—अबै आज इण दिन बराबर **बंट** होवै है सो आछो वंट व्हे वो आप लेलीजो । —वी. स. टी.

४ अश ।

५ पीसने को क्रिया या भाव ।

६ विधुर ।

७ हसिया नामक उपकरण का बेंट या दस्ता ।

रू. भे.—वंट, बाट, वाट, वांठ ।

बटणो, बटबो—देखो 'वंटणो, बटबो' (रू. भे.)

उ०—अब घर अघर कीया मन भाई, बागा अनहद **बंटी** वधाई । नाव अखडत खंडै नांही, सुरति सबद के मडी मांही ।
—अनुभववांणी

बटणहार, हारो (हारी), बंटणियो—वि०

बंटिओड़ो, बंटियोड़ो, बंट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बंटीजणो, बंटीजबो—कर्म वा० ।

बंटवाड़ो, बटवारो—देखो 'बंटवारो' (रू. भे)

बटाइत—देखो 'बंटायत' (रू. भे.)

बटाई—देखो 'बंटाई' (रू. भे.)

बटाड़णो, बटाड़बो—देखो 'बंटाणो, बंटाबो' (रू. भे.)

बटाड़णहार, हारो (हारी), बंटाड़णियो—वि० ।

बंटाड़िओड़ो, बंटाड़ियोड़ो, बंटाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बटाड़ीजणो, बंटाड़ीजबो—कर्म वा० ।

बटाड़ियोड़ो—देखो 'बटायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. बटाड़ियोड़ी)

बंटाणो, बंटाबो—देखो 'बटाणो, बंटाबो' (रू. भे.)

बंटाणहार, हारौ (हारी), बंटाणियौ—वि० ।
बंटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंटाईजणौ, बंटाईजबौ—कर्म वा० ।

बंटायत – देखो 'बंटायत' (रू. भे.)

बंटायोड़ौ - देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बंटायोड़ी)

बंटारौ – देखो 'बटारौ' (रू. भे.)

बंटावणौ, बंटावबौ – देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)
बंटावणहार, हारौ (हारी), बंटावणियौ—वि० ।
बंटाविप्रोड़ौ, बंटावियोड़ौ, बंटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बटावीजणौ, बटावीजबौ—कर्म वा० ।

बंटावत—देखो 'बंटायत' (रू. भे)

बंटियोड़ौ—देखो 'बंटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बटियोड़ी)

बटीलौ–वि. [सं. वंट+आलुच् प्र.] (स्त्री. बटीली) १ जिसका किसी हिस्से, भाग या अंश पर अधिकार हो। हकधारी।
२ हिस्सेदार, भागीदार।
३ साझीदार

बठ, बठौ–वि. [स वठ] (स्त्री. वंठी) १ उद्दण्ड।
२ अविवाहित, कुंआरा।
३ बोना।
४ पंगु, अंगहीन।
स. पु. [सं वठः] १ अविवाहित व्यक्ति।
२ नोकर, सेवक।
३ भाला, बर्छा, शूल।

बंड—देखो 'बंडौ' (मह., रू. भे)

बंडणौ, बंडबौ–क्रि. स.—पीसना।
उ०—भोरे-भोरे तन करै, बंडै कर कुरबांण। मिठ्ठा कोड़ा ना लगै, दादू तोहू सांण। —दादूबांणी
बंडणहार, हारौ (हारी), बंडणियौ—वि० ।
बंडिप्रोड़ौ, बंडियोड़ौ, बंड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंडीजणौ, बडीजबौ—कर्म वा० ।

बंडियोड़ौ–भू. का. कृ.—पीसा हुआ।
(स्त्री. बंडियोडी)

बंडौ–वि. [सं. वण्ड] १ वह पुरुष जिसके लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर चमड़ा न हो, जो सुन्नी किया हुआ हो।
२ बधिया किया हुआ, आख्ता किया हुआ।
३ अंग-भंग, पंगु।
४ अविवाहित।
रू. भे —बंडौ।
मह,—बंड, बयंड, बंड, वयंड।

बंतळ–सं. स्त्री. [सं. वर्तनम्] १ चित्त का किसी कार्य में लग जाना, मनबहलाव।
उ०—नीं कोई बूढी-ठाडी डोकरी ई घरै बतळ करण सारू आई। —फुलवाड़ी
२ बातचीत, वार्तालाप।
उ०—दीवांणजी री एक खास सुभाव के वै लुगायां सूं घणी बंतळ नी करता। —फुलवाड़ी
रू. भे.—बतळ, बतळ, बतोळ, बतोल, वतळ।
अल्पा.,— वतकलौ।

बंतूळियौ—देखो 'बयूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

बंतूळौ देखो 'बयूळौ' (रू. भे.)

बंतोळ, बंतोल—१ देखो 'बयूळौ' (मह., रू. भे.)
उ०—चिहुंदिसि चमकइ वीजळी, वादलवा बंतोळ। दुल-दरिया-माहां हुं गई, टळवळती द्रहि बोळ। —मा. कां. प्र.
२ देखो 'बंतळ' (रू. भे.)

बंतोळियौ, बंतोलियौ, बंतोलीयौ, बंबूळियौ—१ देखो 'बयूळौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ मझ जावा तुझ तेडवा, विमासिउं निसि दिन्न। वैसाखि बंतोलीया, मरडी नाखइ मन्न। —मा. का. प्र.
उ०—२ उडइ रेणु अबीर नी, सुरतरु नइं सींदूर। गयणि गुलाल वंतोलिया, छलर विछाहिउ सूर। —मा. कां. प्र.

बंबूलौ—देखो 'बयूळौ' (रू. भे)

बंद – देखो 'बंद' (रू. भे) (डिं. नां. मा.)

बंद—देखो 'बंदन' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—तांण मूंछ तोले तिजड़, बिसन सकति कर बंद। कूच नगारां हुय कटक, चवै हुकम जयचंद। —सू. प्र.

बंदगण–सं. पु.— १ पत्थर। (अ. मा.)
२ बन्दीजन।

बंदगी——देखो 'बदगी' (रू. भे.)
उ०—तद ठाकुरजी फुरमायौ कै थांरी जात मांनी। थे घरे जावौ। थे तो अठैई घणी बंदगी करो छौ। सू आज्ञा सूं इणकौ मांनां छां। —द. दा.

बंदण—१ देखो 'बंदन' (रू. भे.)

उ०—कवि वेदव्यास बलमीक कवि, करि अस्तुनि **बंदण** कियौ।
—सू. प्र.

२ देखो 'वंदिरा' (रू. भे.)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, प्रति रग रंग अनूप। जसवांगि **वदण** जीह, उचरंत विरद सईह। —रा. रू.

बंदणा—देखो 'वंदना' (रू. भे.)

उ०—हीदू तुरक नहीं को हसउ, रिणि राउतवटि लक्षणउ जिसउ। जे समरंगणि सांम्हा मरइ, ते सुर सिद्ध **वंदणा** करइ।
—कां. दे. प्र.

बंदणौ, बंदबौ–क्रि. स. [सं. वदनम्] १ नमस्कार करना, प्रणाम करना, अभिवादन करना।

उ०—१ कमधज्ज मिळै सूं कमधजां, होया परफूल्लंत हुवै। **बंदियौ** 'गजरा' जिय चंदवरि, ताम तुरक्कै हिंदुवै।
—गु. रू. ब.

उ०—२ सेतुज **बंदिय** तीरथराउ, गुरु या गराहर करउ पसाउ। वाग वाणि हुउ समरउ देवि, चिहुंगति गमरण कहउ सखेवि।
—वस्तिग

२ स्तुति करना, प्रार्थना करना।

३ पूजा करना, अर्चना करना।

४ प्रशंसा करना, तारीफ करना।

बंदणहार, हारौ (हारी), बंदणियौ—वि०।

बंदिओड़ो, बंदियोड़ो, बंदयोड़ो—भू० का० कृ०।

बंदीजणौ, बंदीजबौ—कर्म वा०।

बंदणौ, बंदबौ, बंधणौ, बंधबौ, बंदेणौ, बंदेबौ विंदणौ, विंदबौ, *विंदणौ, विंदबौ—रू० भे०।

बंदन–सं. पु. [सं.] १ नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।

उ०—१ राजा **बंदन** कीध उभै कर। आसी-वाच विप्रां इम उच्चर। —गु. रू. बं.

उ०—२ इम सिष वयरा सुणै उदमदियौ, **बंदन** करै नरेसुर वदियौ। —सू प्र.

२ प्रार्थना, स्तुति।

३ पूजा, अर्चना।

रू. भे.—बदरा, वदन, बंदिरा, बंदिन, वंद, वदरा।

बंदनमाळ, बंदनमाळा, बंदनवार—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—प्रथीनाथ गढपोळि, प्रथम 'अभसाह' पधारे। तोररा **बंदन-माळ** प्रगट उछब अरापारे। —रा. रू.

बंदना–सं. स्त्री. [सं. बंदन] १ नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम।

उ०—कर कंवू नइ कह्यं **बंदना** हुं वारी। पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे हुं वारी लाल। —स. कु.

२ स्तुति, प्रार्थना।

३ पूजा, अर्चना।

रू. भे.—बदरा, बदना, वंदरा, बंदनी।

बंदनी–सं. स्त्री. [सं. वन्दनी] १ जीवातु नामक औषधि, जो मृतक को जीवित कर सकती है।

२ गोरोचन।

३ तिलक।

४ बटी।

५ याचना कर्म।

६ देखो 'वदना' (रू. भे.)

बंदनीक, बंदनीय–वि. [सं. वन्दनीय] १ प्रणाम या नमस्कार करने योग्य।

उ० **बंदनीक** पाय रा गाय रा दुजां विसावीस। आसुरां भजरा आडे पाय रा प्रभाव। —र. ज. प्र.

२ स्तुति व प्रार्थना योग्य।

३ पूजा व अर्चना करने योग्य।

बंदर–१ देखो 'बदर' (रू. भे.)

२ देखो 'वानर' (रू. भे.)

बंदरगाह—देखो 'बदरगाह' (रू. भे.)

बंदरमाळ, बंदरमाळा, बंदरवाळ, बंदरवाल, बंदरवाळा—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ पारिणग्रहण-तराउ परियारा, माड्यौ विहु भूपति मंडांरा। महोछव तोररा **बंदरमाळ**, अधि वाधइ बाररगइ विसाळ।
—डो. मा.

उ०—२ वेलि जु एक रूंख थें दूसरै रूंख जाइ लागि छै। सु **बंदरवाळ** बंधाणी छै। —वेलि टी.

उ०—३ चारू घट जुग्ल दीव प्रदीप मणिमाळा प्रवाल **बंदरवाल** ए द्रव्य मंगलीक स्रीदेवपूजन गुरू वदन प्रमुख भाव-वंदन मगलीक।
—व. स.

उ०—४ तिणि वेला नऊइ कोरणा बांधीयइ तोरण, बांधीयइ **बंदरवाल**, उत्सव विसाल वाग्विलास। —व. स.

बंदरियौ—१ देखो 'बंदर' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वानर' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बंदरियौ' (रू. भे.)

बंदाड़णौ, बंदाड़बौ—देखो 'बंदाणौ, वंदाबौ' (रू. भे.)

बंदाड़णहार, हारौ (हारी), **बंदाड़णियौ**—वि० ।
बंदाड़ियोड़ौ, बंदाड़ियोड़ौ, बंदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ ।
बंदाड़ीजणौ, बंदाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बंदाड़ियोड़ौ—देखो 'बंदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बंदाड़ियोड़ी)

बंदाणौ, बंदाबौ—क्रि. स. [सं. वंदनम्] १ स्वागत करना, सम्मान पूर्वक, अगवानी करना ।
उ०—ताहरां राजा वरदाईसेनजी साम्हां जाय कुंवर नूं बंदाय घरे ले आया छै । —नैणसी
२ अभिवादन कराना, नमस्कार कराना ।
उ०—१ जांगळू रा लोक ऊंचा चढ चढनै जोवै छै । राजलोक पिण गोखां चढि-चढिने जोवै छै । इण जुगत करिनै तोरण बंदायौ छै । —लाली मेवाड़ी री वात
उ०—२ विवध उतारै वीनती, धारै निजर तुरंग । लगन बंदायौ तूंवरां, पायौ सर्म सुरंग । —रा. रू.
उ०—३ तरै पुरोहितजी नै आघा ले'र कांन में पूछियौ—थें नाळेर किणने बंदायौ ? मैं थांनै काहूं कहि नै मेलिया था । —राव रिणमल री वात
४ स्तुति कराना, प्रार्थना कराना ।
५ पूजा कराना, अर्चना कराना ।
बंदाणहार, हारौ (हारी), **बंदाणियौ**—वि० ।
बंदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंदाईजणौ, बंदाईजबौ—कर्म वा० ।
बंदाड़णौ, बंदाड़बौ, बंदाणौ, बंदाबौ, बदावणौ, बदावबौ, बंधाड़णौ, बधाड़बौ, बंधाणौ, बंधाबौ, बधावणौ, बंधावबौ, वंदाड़णौ, वंदाड़बौ, वंदावणौ, वंदावबौ—रू० भे० ।

बंदायोड़ौ—भू. का. कृ—१ सम्मान पूर्वक अगवानी कराया हुआ, स्वागत कराया हुआ. २ अभिवादन कराया हुआ, नमस्कार कराया हुआ. ३ स्तुति व प्रार्थना कराया हुआ. ४ पूजा व अर्चना कराया हुआ ।
(स्त्री. बंदायोड़ी)

बंदावणौ, बंदावबौ—देखो 'बंदाणौ, बंदाबौ' (रू. भे.)
बंदावणहार, हारौ (हारी), **बंदावणियौ**—वि० ।
बंदाविप्रोड़ौ, बंदावियोड़ौ, बंदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंदावीजणौ, बंदावीजबौ—कर्म वा० ।

बंदिज—देखो 'बंदिम' (रू. भे.)

बंदित—वि. [सं.] १ जिसको नमस्कार किया गया हो, अभिवादित, सम्मानित ।
२ जिसकी प्रार्थना की गई हो, स्तुत्य ।
३ जिसकी पूजा या अर्चना की गई हो, पूजित ।

बंदिन—देखो 'बंदिन' (रू. भे.)

बंदियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम व अभिवादन किया हुआ. २ स्तुति व प्रार्थना किया हुआ. ३ पूजा व अर्चना किया हुआ.
(स्त्री. बंदियोड़ी)

बंदीखांनौ—देखो 'बंदीखांनौ' (रू. भे.)

बंदीग्रह, बंदीघर—देखो 'बंदीघर' (रू. भे.)

बंदीजण, बंदीजन—देखो 'बंदीजन' (रू. भे.)
उ०—सुभ खमा खमा जय सद्द रौ, कोळाहळ बंदीजणां । —रा. रू.

बंदीवाव—सं. स्त्री.—पारसी लोगों की एक धार्मिक पुस्तक ।

बंदेणौ, बंदेबौ—देखो 'वंदणौ, वंदबौ' (रू. भे.)

बंदोकड़ौ, बंदोखड़ौ, बंदोगड़ौ—देखो 'बंदोकड़ौ' (रू. भे.)

बंदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे)

बंदोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

बंदोवस्त—देखो 'बंदोबस्त' (रू. भे.)
उ०—पण उणरी चौड़ै लड़णरी आसंग हुई नहीं । तद वरसघ नूं लाळच देय अजमेर बुलायौ, अरु खातरी करनै वीटली वाढियौ । पीछै बंदोवस्त कियौ । —द. दा.

बंदौ—देखो 'बंदौ' (रू. भे.)
उ०—बंदा करियै बंदगी, आलम तैं आधीन । जनहरिया । घम घम घटै, यो तन होसी छीन । —अनुभववांणी

बंद्य—वि. [सं.] १ नमस्कार, प्रणाम व अभिवादन करने योग्य ।
२ पूजा, अर्चना व स्तुति करने योग्य स्तुत्य, पूज्य ।
३ प्रार्थना व निवेदन करने योग्य ।

बंद्रवाळय—देखो 'वांदरमाळ' (रू. भे.)

बंद्रावनवासी—देखो 'व्रंदावनवासी' (रू. भे.)
उ०—बीयौ टमरियौ बंद्रावनवासी, बणराय भार अढ़ार संख्या, बिरछु बांणी ऐह । —रुकमणी मंगळ

बंध—देखो 'बंध' (रू. भे.)

बंधणौ, बंधबौ—देखो 'बंधणौ, बंधबौ' (रू. भे.)

बंधतीवेस—देखो 'बंधतीवेस' (रू. भे.)

बंधन—देखो 'बंधन' (रू. भे.)

उ०—काळ का मैं बंधन कापै, जाप अजपा आप आपै ।

—ह. पु. वां.

बंधव—देखो 'बंधु' (रू. भे.)

उ०—होय कै निकासी बनी बंधवां समेत हल्यौ । ऊमल्यौ सांमुद्र सेनां हळीलो उदार । —बादरदांन दधवाड़ियौ

बंधाणौ, बंधावौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

बंधायोड़ौ—देखो 'बंधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बंधायोड़ी)

बंधियोड़ौ—देखो 'बंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बंधियोड़ी)

बंधेज—देखो 'बंधेज' (रू. भे.)

बंध्या—देखो 'बंध्या' (रू. भे.)

बंध्याचळ, बंध्याचळि—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—करपूर कावेरी तीरि, कुंकुम कास्मीरि, चंदन मलयाचलसं गि, कस्तूरी कुरंगि, गजराज बंध्याचलि, मोती जयकुंजरि । —व. स.

बंध्यापणौ—देखो 'बांझपणौ' (रू. भे.)

बंनर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

बंनरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—वरणे ग्रहि बंनरमाळ सुविंद । —रामरासौ

बंनोलौ—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बंन्न—देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—मारुवणी मुंह-बंन्न, आदित्ता हूं उज्जळी । सोइ झांवळ सोवंन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ । —ढो. मा.

बंन्नर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

बंबाळी—देखो 'बंबाळी' (रू. भे.)

बंबि, बंबी—देखो 'बंबी' (रू. भे.)

उ०—गुर का सबदळे भौंरा जगायबा । सरप बंबि तजि अगम तहों आयिबा ।

—ह. पु. वां.

बंभ—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.) (जैन)

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

बंभर, बंभार—देखो 'बंवार' (रू. भे.)

उ०—फर फाटस नाह सनाह फड़ै । मामलोड़ बंभार करंत मड़ै ।

—पा. प्र.

बंभि, बभी—देखो 'बंबी' (रू. भे.)

बंवक—देखो 'बंबक' (रू. भे.)

बंवाळी—देखो 'बंबाळी' (रू. भे.)

बंस—सं. पु. [सं. वंश] १ किसी जीव, प्राणी या मनुष्य की संतान परम्परा, कुल, खान्दान, गोत्र ।

उ०—१ सीह-छतीसी सांभळै, छाकै बंस छतीस । 'बांकै' पाटी बीर रस, वरणी बिसवावीस । —बां. दा.

उ०—२ देवी गाजतां देततां बंस गमिया । देवी नवे खंड त्रिभुवन तूझ नमिया । —देवि

२ संतान, संतति, परिवार ।

उ०—हिव एकु अम्ह मांनु, दियउ बिहुं पक्ख तु छंडि । कउरव बंस विणासिया, कांई कूड़ु म मंडि । —पं. पं. च.

३ बेड़ा ।

४ समुदाय, समूह ।

५ रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड ।

६ खड्ग के बीच का भाग जो अधिक चौड़ा होता है ।

७ युद्ध की सामग्री ।

८ गांठ ।

९ गन्ना, ऊख ।

१० साल का पेड़ ।

११ शहतीर, बल्ला, लट्ठा ।

१२ पुष्प, फूल ।

१३ विष्णु का एक नाम ।

१४ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक । (व.स.)

१५ वंस लोचन ।

१६ बारह हाथ का एक नाप ।

१७ देखो 'बांस' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—यौं चिंता उद्वेगो, लगगो अग्ग बंस घासाणं । —रा. रू.

१८ देखो, 'वंसी' (मह, रू. भे.)

उ०—तंनी ताल टक्कड़ा, महल बंस विसाल । निरति करइ नव रागमां, मांडी मस्तक थाल । —मां. कां. प्र.

रू.भे.—वंस, वांस ।

अल्पा.—बंसौ ।

बंसक—वि. [सं. वंश+प्र. क] बंश का, वंश सम्बन्धी ।

सं पु. [सं. वंशक] १ बांस का पेड़ ।

उ० - सू डाळा आलम ढल्ल सिरै । नम्राविध बंसक नंदगिरै ।

—गु. रू. बं.

२ बांस की गांठ ।

३ अगर की लकड़ी।

४ मछली।

रू. भे.—बंसक।

बंसकर—सं. पु. [सं. बंशकर :] जिस से किसी वंश, कुल या गौत्र का प्रारम्भ होता हो, मूल पुरुष।

बंसकार—सं. पु.—राजवर्ग विशेष

उ०—कवि काठीया, मसूरिया, दीवटीया उपाध्याय बड़कार करडिकार आलविणिकार वीणाकार बंसकार आउज्जी पखाउजी पास्चात्यपक्षो तार्किक ज्योतिसी वैद्य महावैद्य। —व.स.

बंसछेतर—सं.पु. [सं.वंशछेतृ] १ किसी वंश का अंतिम पुरुष।

२ एक सर्प विशेष। (शेखावाटी)

रू. भे.—बंसछेतर।

बंसज—सं. पु. [सं. वंशज :] जो किसी कुल, वंश या गौत्र में उत्पन्न हुआ हो, सतान, संतति, औलाद।

वि.—बांस का बना।

रू. भे.—बंसज।

बंसजा—सं स्त्री. [सं. वंशजा] १ कन्या, पुत्री।

२ बंसलोचन।

बंसधर—सं. पु. [सं. वंशधर] १ वंश-परंपरा व वंश की मर्यादा को धारण करने वाला, वशज। वंश की मर्यादा को उज्ज्वल करने वाला।

२ सन्तान, संतति।

रू. भे.—बंसोधर, वंमोधर,

बंसनास—सं. पु. [सं. वशनाश] १ शनि और राहु का सूर्य के साथ एक लग्न में पड़ने, विशेषत: पचम लग्न में पड़ने पर होने वाला एक योग जो वंश—नाश का कारण माना जाता है। (फलित–ज्योतिष)

२ एक भयंकर विषैला सर्प जिसके किसी एक व्यक्ति को काटने से शनै-शनै उस (व्यक्ति) के पूर्ण वंश का नाश हो जाता है।

बंसपरिपाटी—सं. स्त्री. [सं. वंश+परिपाटी, वंशपरम्परा] १ वंश की मर्यादा, गौरव।

उ०—राज्य–द्रंग–दुरग–देस वैभवज सुख हेय। राखी द्रढ़ बसपरिपाटी की प्रभत्ता को। —बालाबक्ष बारहठ

२ क्रमश: चलने वाली वंश-परंपरा, पीढ़ी, शृंखला।

बंसब्रख—देखो 'वंसव्रक्ष' (रू. भे.)

बंसभाई—सं. पु. [सं. वंश+भ्रात:] कुटुंबी, सम्बन्धी, बंधु, बांधव, सगोत्री।

रू. भे.—बंसभाई।

बंसरी, बंसली—१ देखो 'बंसी' (रू. भे.)

उ०—गावणहार मांडइ (अ) र गाई। रास कइ (मम) यह वंसली वाई। —बी. दे.

२ देखो 'बंसावळी' (रू.भे.)

३ देखो 'बांसरी' (रू. भे.)

बंसलोचण, बंसलोचन—सं. पु. [सं. बंशलोचन] लम्बी पोर वाले बड़े बांसों की गांठों को जलाने पर निकलने वाला बांस का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे छोटे टुकड़ों के रूप होता है। वंश-शर्करा, वंशकपूंर।

रू भे.—बंसलोचन।

बंसव्रक्ष—सं. पु. [सं. वंशवृक्ष] १ किसी वंश का, उसके मूल पुरुष से से लेकर परवर्ती वंशजों का, वृक्ष के रूप मे, बनाया हुआ रेखा चित्र या नक्शा।

२ किसी वंश का क्रमश: दिया गया, विवरण।

रू.भे.—बंसब्रख, बंसव्रख।

बंसस्थ—सं. पु. [सं. वंशस्थ] बारह वर्णों का एक वर्ण-वृत।

रू. भे—बंसस्थ।

बंसा—सं.पु.—१ शर्करि प्रभा नामक नर्क। (जैन)

२ देखो 'बांस' (रू. भे.) रू. भे. बंसा।

बंसाबळियौ—देखो'बंसावळियौ' (रू.भे.)

बंसाळी—देखो 'बंसावली (रू. भे.)

बंसावळियौ—देखो 'बंसावळीयौ' (रू. भे.)

बंसावली—सं. स्त्री. [सं. वंशावली] १ किसी वंश या कुल में उत्पन्न व्यक्तियों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची, विवरण।

उ०—१ वसिष्ठ कहै वंसावळी, राज ख्यात दसरथ। —रांमरासौ

उ०—२ पाछलै पानै वंसावळी छै। —नैणसी

२ वंस, कुल, गौत्र।

रू. भे.—बसावळी, वंसळी, बंसाळी बांसावली।

बंसावळीयौ—सं. पु. [सं. वंश+राज. आवळियौ] वशगुरु, कुलगुरु।

वि.—वंश का, वंश सम्बंधी।

रू भे.—बंसाबळियौ, बंसाबळीयौ, बंसावळियौ, बंसावळीयौ, बसावळियौ।

बंसि, बंसी—वि. [सं. वंशी] किसी वंश विशेष में उत्पन्न। वंश का।

उ०—१ लागउ पाय मांजीयां आसू, जगणी दीइ असीस। बंसि अम्हारइ तुं अजरांमर, प्रतिपे कोडि वरीस। —कां. दे. प्र.

उ०—२ बंसि तू सूर वसि मू पीक। नेजे सूं बह घातउं निभीक —रा. ज. सी.

उ०—छटतीस वंस राजकुळी सिरोमणि सूरज बंसी राजांन मारवाड़ि

रा नव कोटांरी ठकुराई जळाबोळ राज पदो भोगवें।
—रा. सा. सं.

सं. स्त्री.—१ बांस की नलिका में छेद करके (स्वर बनाकर) बनाया हुआ एक बाजा जो मुंह से फूंक हाथ की अंगुलियों द्वारा बजाया जाता है। मुरली, बांसुरी।

उ०—१ तिसा बैण श्रीमंडळ जंत्र तालं। सहंनाय वंसी अनै सीस ढाल।
—रा. रू.

उ०—२ दोय बजावइ ताल दोय वीणा वंसी, दोय बजावइ वांसली ए।
—स. कु.

२ रक्त वाहिनी सिरा, नस।

३ चार कर्ष या आठ तोले का एक मान।

४ वंशलोचन।

५ घोड़े का नथुना।

रू. भे.—बसरी, बंसळी, बंसी, बनसी, बांसरी, बांसळी, बासुरी, बांसुळी, वसरी, वसीय, वंसु, वंसू, वनसी, वांसरी, वासी, वांहली।

मह.—बंस, वंस।

बंसीधर, बंसीधरण, बंसीधारी– स. पु. [सं. वंशीधर वंशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण। (अ.मा.)

उ०—बंसीधारी ब्रज वासी विहारी। —पिं. प्र.

२ ईश्वर। (नां.मा)

वि.—बंसी बजाने वाला।

रू. भे.—बंसीधर, बंसीधरण,

बंसीय— देखो 'वंसी' (रू.भे.)

बंसीवट– स. पु. [सं. वंशीवट] वृन्दावन का वह वट-वृक्ष जिसके नीचे बैठ कर श्रीकृष्ण बांसुरी बजाया करते थे।

रू. भे.—बंसीबट, बंसीवट

बंसीवाळो–सं.पु.— १ श्रीकृष्ण।

उ०—गायां ग्वाळो कांनो काळो बंसीवाळो वेहारी। —पिं.प्र.

२ वह जिसके पास बंसी हो।

बंसु, बंसू–देखो 'वंसी' (रू भे.)

उ०—खुरताळां विक्खणी, घणी लग्गी आयासां। नह सुणिजै नीसांण, बंसू बाजी वरहासां। —गु. रू. बं.

बंसै–देखो 'वांसे' (रू. भे)

उ०—तद राणी कही थानै जै वास्तै वसै राखिया हुंता सु विद्या सीखी क नही —चौबोली

बंसोधर—देखो 'बंसधर' (रू. भे.)

उ०—मिणधर मेछ कमळ मह-मेहुण, बाच बंसोधर दे चलण।
—नैणसी

बंसौ –१ देखो 'बांस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बसौ वधति बहुअं, अंतर गति गंठि बेध उतपन्नौ। संजोगि अगनि पतंगौ, प्रजळयं अप मज्झेण। —गु. रू. बं.

२ देखो 'वस' (अल्पा, रू. भे.)

व–सं. पु. [सं] १ वर्ण। २ वायु, पवन, हवा। ३ बाण, तीर। ४ शिव। ५ उपमा। ६ सुखी। ७ अव्यय। ८ अर्थ ६ वरूण देव। १० समुद्र। ११ राहु का नाम। १२ कल्याण मंगल। १३ सांत्वना। १४तुष्टि साधन। १५ बस्ती। १६ वास, निवास। १७ सम्बोधन। १८ मंत्रणा। १९ बाहु २० वस्त्र। २१ शार्दूल। २२ चीता। २३ कलश से उत्पन्न ध्वनि। २४ वंदन। २५ वृक्ष। २६ मूर्वा-लता। २७ अस्त्र। २८ खड़गधारी पुरुष। २९ सेरकी नामक कंद। ३० जल-कंद, शालूक। ३१ मद्य। ३२ प्रचेता। (एका.)

अव्य. [फा.] १ और, तथा।

सर्व.—२ 'वह' का संक्षिप्त रूप।

वअ—देखो 'वय' (रू. भे.) (जैन)

वइंगण, वइंगणीउ, वइंगणु–सं. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ० –पटसाउल मेघाडंबर संभारावउं रावेटउं कणवीर सोवन्न-च्छलेउ मनेत्र नीलउं नेत्र रात कडाहउ वइंगणीउं कल्ही...।
—व. स.

२ देखो 'बेंगण' (रू. भे.)

वइ देखो 'वय' (सं. भे.) (जैन)

वइड—देखो 'वितड' (रू. भे.)

उ०—तिम्रां चोपड़ै तेल सिंदूर तन्नं, वइडां वणावै घणूं स्यांम वन्नं। नोड़ो भीड़िम्रां अंग लग्गा निहंगं, जटाजूट सम्राह जे कोड जंगं। —वचनिका

वइअर—देखो 'वैर' (रू. भे.)

देखो 'वैर' (रू. भे.)

वइठणो, वइठबो देखो 'बैठणो, बैठबो' (रू. भे.)

उ०–मारू वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास। पूनिम-केरे चंद ज्यूं, मंदिर हुवउ उजास। —ढो. मा.)

वइठियोड़ो—देखो 'बैठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वइठियोड़ी)

वइट्ठणो, वइट्ठबो—देखो 'बैठणो, बैठबो' (रू. भे.)

उ०—रूखमइयो नइ राजा भीमक, मंत्र करेवा वइट्ठा।
—रूकमणी मंगळ

वइट्ठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वइट्ठियोड़ी)

वइण—१ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—स्री संखेस्वर 'पास' जी रे लो, सुणि वारू दोइ **वइण** रे सनेही। —वि. कु.

२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

वइताळ—देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

उ०—कांनि कुंडल सिरि मुगट, मुत्ताहलि गलि माल। दिव्य वस्त्र दीसइ भलां, वीर जिके **वइताल**। —मा. कां. प्र.

वइवउं—देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा वीणा वाइं, पवन बुहारइ, गणपति गादह चारइ, कतांत कोट राखइ, सनींस्चर रसोइ चाखइ, मंगल स्रीखंड घसइ, बुध सौनउ कसइ, अढार भार वनस्पति फूलपगर भरइं, धन्वंतरि **वइवउं**···करइं। —व. स.

वइन—देखो 'वचन' (रू.भे.)

उ०—त्युं सदुपदेस विसेस दे कइ विमल एकइ **वइन**। बूझव्यो सो रहनेमि विसयी गई जहां यदुपति सइंन। —वि.कु.

२ देखो बहन' (रू भे.)

वइर—१ देखो वैर' (रू.भे.)

उ०—चउंड रा **वइर** ले चतुरंग देवरा मारि ढाहिय दुरंग।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—पाखरि पलांणि काळउ पहाड। वरिजांग चडिय **वइरां** विभाड —रा ज. सी.

३ देखो 'वैर' (रू. भे.)

वइरतमांण—देखो विरहमांण (रू. भे.)

वइरसेन—देखो 'वीरसेन' (रू. भे.)

वइराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—१ जेती जउ मनमांहि, पंजर जइ तेती पुळइ। मनि **वइराग** न थाइ, वालंभ वीछुड़ियां तणी। —ढो. मा.

उ०—२ आगइ वार बिच्यारि हराव्या, तुरकि न लाघउ लाग। मोटे राजि लाज अम्ह आवी, एहवु हुईइ **वइराग**। कां. दे. प्र.

उ०—३ चित्त विचारि समाचरइ रे लाल, वलि मरकट **वइराग** रे।

—वि. कु.

वइरागर—सं. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जादर हीरागर **वइरागर** फूलगर चौर वलगार चुतार पीतांबर चादर रक्तांबर, नेत्रांबर...............। —व. स.

रू. भे.—वयरागर, वयरागरि।

२ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ० उडीसा री नइं नाहूली, चीण भोट बंभेरी। गवड देस **वइरा-गर** सागर, जाळंधर भंभेरी। —रुकमणी मंगळ

वइरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—१ माली तंबोली हरमेखलीया जोगी भोगी **वइरागी** नट विट सुट खरड लाठा रंगाचारय.........। —व. स.

उ०—२ **वइरागी** थिउ विस्तरइ, रांमा सूंपि राग। कारत कांटे काकरि, पुलसु धणगृहांणि पाग। —मा. कां. प्र.

वइराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे.) (व. स.)

२ देखो 'वैराट' (रू भे.)

वइरि, वइरी—१ देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—१ **वइरियां** तणइ सिरि मिरी वाटि। पइ मलइ कूंभ वइ-सारि पाटि। —रा. ज. सी.

उ० २ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्के पांव। सयणै घाटा वउळिया, **वइरि** जु हूआ वाव। —ढो. मा.

२ देखो 'वैर' (रू. भे)

३ देखो 'वैर' (अल्पा रू. भे)

वइवस्तु—देखो 'वैवस्वत' (रू भे.)

उ०—सुत कासिप सूरज तप असाधि। **वइवस्तु** सूर सुत तेज वाधि। —सू. प्र.

वइस—देखो वैस्य' (रू. भे.)

उ०—वांणिज्य **वइस** फबि जेण वेर। कोटेक जांण वप धर कुमेर। —सू प्र.

वइसणौ, वइसबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—कणक सिंहासण स्वांमी **वइसण**। —स. कु.

वइसनव—देखो 'वैसणव' (रू भे.)

उ०—**वइसनव** ग्यांन केवल वियाप। छक प्रेम त्रुलिसिका तिलक छाप। —सू. प्र.

वइसाख—देखो 'वैसाख' (रू. भे.) (उ. र.)

वइसाणौ, वइसाबौ—देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

उ०—अपरापति चडि चाल्यो राम। लो अस्त्री अरधंग **वइसाय**।

—बी दे

वइसायोड़ौ—देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री 'बैठायोड़ी' (रू. भे.)

वइसाह—देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

उ०—सव्वे भला मासड़ा, पण **वइसाह** न तुल्ल। जे दवि दाधा रूंखड़ां, तीहं माथइ फुल्ल। —रा. सा. सं.

बहसियोड़ौ—देखो 'वंठियोड़ौ', (रू. भे.)

(स्त्री. बहसियोड़ी)

बहुनड़ो – देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भूरइ रा बहुनंड़ी भकन कुवार। महाजन भूरई राई साधार।
—बी दे

बहुरमांण—देखो 'विरहमांण' (रू. भे.)

बई—देखो 'बेई' (रू. भे.)

उ०पछै भ्रा वात रावळ मालजी रै हजूर हुई जु साथ रै बई एक जरपूत रजपूतांणी छोडी। —नैणसी

बईअर—१ देखो 'वहीर' (रू. भे.)

उ०—दलै कबीला देसने, बईअर कीधा वेग। साथै बंधव सातही, तिकै उरस री तेग। —बी. मां.

२ देखो 'बैर' (रू. भे.)

बईकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

बईजयंती—देखो 'वैजयंती' (रू.भे.) (ध. मा)

बईवराज – देखो 'वैद्यराज' (रू. भे.)

उ०—बईवराज के विसाल, श्रौखधी उपाइक। तई रसायणी स्वधातु, स्वच्छय रसायकं। —सू. प्र.

बइद्रभा—देखो विदरभा (रू. भे.)

उ०—बळिभद्र बंधव तेडीयोजी, बीजउ प्रमनकुमार। बईद्रभा नयरी वीवाह छइ जी, रहीय म लावो वार —रुकमणी मगळ

बईभ्रत—देखो 'वैभ्रत' (रू. भे.)

बईयर—१ देखो 'बैर' (रू. भे)

उ० – बईयर बालं रूसणं सवि भाखं देवी वाणि। —वि. कु.

२ देखो 'वहीर' (रू भे.)

बईर—देखो 'वहीर' (रू. भे.)

उ०—दुस मेटण पोट कबीर घरां दिस। हाकळ कीध बईर हरी।
—भगतमाळ

बईस—देखो 'वेस्य' (रू. भे.) (जैन)

बईस्रवण - देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.)

बउ—देखो 'बहू' (रू. भे.)

बउबंदोळी—देखो 'बहुबदोळी' (रू. भे)

बउरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

बउलण – १ देखो 'बोलण' (रू. भे)

२ देखो 'बोलणी' (रू.भे.)

बउळणौ, बउळबौ, बउलणौ, बउलबौ—देखो 'वोळणौ, वोळबौ' (रू.भे.)

उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कं पाव। सयणै घाटा बउळीया, वइरि जु हूआ वाव। —ढो. मा.

उ०—२ अभिलाख द्राखन कउ समांनत, मउज मांनत लोग। बैसाख मइं वयसाख बउलत, कहा पीछइं भोग। —वि. कु.

बउलसरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

बउळाणौ, बउळाबौ, बउलाणौ बउलाबौ—देखो 'वोळाणौ', 'वोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—सजणियां बउळाइ कइ, मंदिर बइठी आइ। मंदिर काळउ नाग जिउं, हेलउ दे दे खाइ। —ढो. मा.

बउळायोड़ौ, बउलायोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बउळायोड़ी)

बउळावणौ, बउळावबौ, बउलावणौ, बउलावबौ- देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तंत तणक्कइ पिउ गियइ, करहउ ऊगाळेह। भल बउळावौ दीहड़ा, दई वळावण देह। —ढो. मा.

उ०—२ कुंती मुद्री जाइ बउलावेवा नदणह। —पं. प. च.

बउळावियोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बउळावियोडी)

बउळावू बउळावौ—देखो 'वोळाऊ' (रू. भे.)

उ०—१ बउळावू सगळा विलविलइ, ढोलउ किउही पाछउ वळइ। साथी मारू दागण-भणी, घणु कहइ पति न रहइ घणी।

उ०—२ जिणि वेळा ढोलउ नीकळइ, केता बउळावा साथइ करइ। सोभ करेवउ इण वात रउ, पडिस्यइ रखै तुम्हां पांतरउ। —ढो. मा.

बउळियोड़ौ, बउलियोड़ौ—देखो 'वोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० बउळियोड़ी, बउलियोड़ी)

बउलसिरी देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

उ०—जइ सूकी तउ बउलसिरी, त्रूटी तउ मोतीसरी, जइभागउ तउ वारहउ, थाकउ तउ सेराइ, जइ खांडउ तोइ चद्र...... ।
— व. स.

बऊ—देखो 'बहू' (रू. भे.)

बऊबंदोळी—देखो 'बहुबदोळी' (रू. भे.)

बऊरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

बएसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—सर्भ खांडस सगार सुतनी। बएसा भूल चली रिखवनि।
—रांमरासौ

बक—देखो 'बक' (रू. भे.)

०—सुकवि तणे सुदतार नूं, जिण मुख कुकवि प्रसंस । जळद
प्र वक देख जूं, व्है प्रछन्न कळहंस । —बां. दा.
स्त्री. वकी)
-देखो 'विकट' (रू. भे.)
०—हले थाट दवणाद लग टळ तोपां हमत, वसत मद मोढ रा
रां खागां । मरट तिणवार राखी वकट मोमरां, सुपेती चौसरां
णी 'सांगा' । —सग्रामसिंह सक्तावत रौ गीत
वकबौ—देखो 'बकणौ, बकबौ' (रू. भे.)
०—१ बांणां बांण वाजे गोळा चोसरा सबीर वकै, वाहा हार
ल भाजै छाजै पखां बोळ । जठी-तठी मार पड़ै मीरजां म्रोहटै जठी,
ठी-तठी राजा म्राडौ म्रोडजै सतोळ । —म्रमरदास बारहठ
०—२ म्रवळी बयण म्रहीर, उठतै तैंहिज म्राखियौ । वकियौ
पिण वीर, वात न जांणां वींझरा । —वींझरंम्रहीर री वात
णहार, हारौ (हारी), वकणियौ—वि० ।
कम्रोड़ौ, वकियोड़ौ, वक्योड़ौ —भू० का० कृ० ।
कीजणौ, वकीजबौ—कर्म वा० ।
-१ 'वक्त' (रू. भे.)
देखो 'बखत' (रू. भे.)
— १ देखो 'वकत्र' (रू भे.) (डि. को.)
देखो 'बखतर' (रू. भे.)
यौ—१ देखो 'बखतरियौ' (रू. भे.)
देखो 'बखतर' (म्रल्पा. रू. भे.)
सं. स्त्री. [सं. वक्तृ] १ जिव्हा, जीभ, रसना । (ह. नां. मां.)
भे.—वगता ।
देखो 'वक्ता' [रू. भे]
०—सकल प्रताप सुरसरी, हरिपद रूद्र सहित । सुरता रांम
मित्रसुत, वकता विसवामित्र । —रांमरासौ
र—देखो 'बखतावर' [रू. भे.]
सं. पु. [सं. वक्त्रं] १ मुख, मूंह, वदन । [म्र. मा.]
०—देवी भाव स्वादे हसंतै वकत्रे । देवी पांणपांणां पिये मद्य
। —देवि
जानवरो का थूथन ।
पक्षियों की चोंच ।
म्रग्रभाग या नोक ।
म्रारम्भ ।
म्रनुष्टप छंद ।
जिव्हा, जीभ ।
भे.—वकत्र, वकतर ।

वकपंचक—देखो 'बकपंचक' (रू. भे.)

वकफ-सं. पु. [म्र. वक्फ] १ देवी-देवताम्रों या ईश्वर को भेंट करने म्रथवा धार्मिक कार्यों के लिये दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु ।
२ उक्त प्रकार का उत्सर्ग या भेंट करने की क्रिया ।
३ दान ।
४ वर्षा में छत के टपकने या चूने की म्रवस्था ।
५ दो घटनाम्रों के बीच का समय, विराम, मध्यान्तर ।
६ फुरसत, म्रवकाश, छुट्टी ।
७ देर, विलम्ब ।
रू. भे.—वक्फ ।

वकफनामौ-सं. पु. [म्र. वक्फनाम:] दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु का दान-पत्र ।
रू. भे.—वक्फनामौ ।

वकबाद—देखो 'बकवाद' (रू. भे.)

वकबादी—देखो 'बकवादी' (रू. भे.)

वकवादी—देखो 'बकवादी' (रू. भे.)

वकर-सं. पु.—१ बलिदान, वध ।
उ०—उठै देवी म्रागै भैंसौ वकर करण नूं तयार कियौ छै ।
—नैणसी
२ देखो 'वक्र' (रू. भे.)
उ०—तरण तप जुळण म्रंगीट रा सरोतर, सत्रा रिण रीठ रा खगा सालै । कर मकर कर धीट रा वचन ना काढ़ै, वकर म्रणदीठ रा वकर चालै । —महाराजा मानसिंह जी री गीत

वकरगति, वकरगती—देखो 'वक्रगति' (रू. भे.)

वकरगांमी—देखो 'वक्रगांमी' (रू. भे.)

वकरगुल्फ—देखो 'वक्रगुल्फ' (रू. भे.)

वकरणौ, वकरबौ—देखो 'बकरणौ, बकरबौ' [रू. भे.]
उ०—डायण चढ़ी जिसी परि डकरै । वांणी विकट भयंकर वकरै ।
—सू. प्र.

वकरदरस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू. भे.)

वकद्रस्ट—देखो 'वक्रद्रस्ट' (रू. भे.)

वकरद्रस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू. भे.)

वकरपूंछ—देखो 'वक्रपुच्छ' (रू. भे.)

वकरांग—देखो 'वक्रांग' (रू. भे.)

वकराणौ, वकराबौ—देखो 'बकराणौ, बकराबौ' (रू. भे.)

वकरायोड़ौ—देखो 'बकरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकरायोड़ी)

वकरियोड़ौ—देखो 'बकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकरियोड़ी)

वकरी—१ देखो 'वक्री' (रू. भे.)

२ देखो 'बकरी' (रू. भे.)

वकरोगति—देखो 'वक्रोक्ति' (रू. भे.)

वकरौ—देखो 'बकरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकरी)

वकळ—१ देखो 'विकळ' (रू. भे.)

उ०—करि अग **वकळा** हुआं रीस जळाकरी, अगं अकळा करी भगत अमळा। करी चक्रवाह तन ग्राह तंडळा करी, करी रावण गयौ घरी कमळा। —हुकमीचंद खिड़ियौ

२ देखो 'व्याकुळ' (रू. भे.)

३ देखो 'वकळ' (रू. भे.)

वकबाद—देखो 'बकवाद' (रू. भे.)

उ०—सुक-पिक लगं सवाद, भल थोड़ो ही भाखणौं। ग्रथा करै **वकवाद**, भेक लवै ज्यूं 'भेरिया'। —रतलांम नरेस बळवंतसिंह

वकवत, वकवत्ति—देखो 'बकवृत्ति' (रू. भे.)

वकसणौ, वकसबौ—देखो 'वकसणौ, बकसबौ (रू. भे.)

वकसियोड़ौ—देखो 'बकसियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वकसियोड़ी)

वकांण, वकांन—१ देखो 'बखांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वकायन' (रू. भे.)

वकाई—देखो 'बकाई' (रू. भे.)

वकाईण, वकायण, वकायन—देखो 'बकायन' (रू. भे.)

उ०—अरक आउल तिणासिरा, सिम रोहिड़ौ रोहिण। इंद्रोख अबरस आंमिद्रो, अरस्यंज **वकाईण**। —रुकमणी मगळ

वकार—देखो 'वाकार' (रू. भे.)

वकारणौ, वकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बार हजार बंगाळ, 'विलद' तिण वार **वकारै**। करि कबांण टकार, धाव सामा पग धारै। —सू. प्र.

उ०—२ नाई री आ बात राजाजी रै ई सोळै आंना होयं ढूकी। बोल्या - हां, आ बात तौ थारी साव साची। पोहरौ देवणीया टाळ तौ वो किणी नै **वकारिया** ई नीं। —फुलवाड़ी

उ०—३ उडै रीठ अणपार, पीठ लगा लाखां पिसण। वेढ़ीगार **वकार** पैठो उदियाचळ 'पतौ'। —अज्ञात

वकारणहार, हारौ (हारी), वकारणियौ—वि०।

वकारियोड़ौ, वकारियोड़ौ, वकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वकारीजणौ, वकारीजबौ—कर्म वा०।

वकारियोड़ौ—देखो 'वाकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकारियोड़ी)

वकाळ—१ देखो 'बक्काल' (रू. भे.)

उ०—बिसायती **वकाळ** और सहर के लोग, इस वजह से गुजारा करैं। केतेक भाड़भूंजे केतेक भीख मांग पेट भरैं। —दुरगादत्त बारहठ

२ देखो '**वकील**' (रू. भे.)

वकालत—सं. स्त्री. [फा.] १ न्यायालय या कचहरी में किसी मुकद्दमे में किसी की तरफ से की जाने वाली बहस, पैरवी या अभिभाषण।

२ वकीलों का कार्य व व्यवसाय।

३ किसी का स्थानापन्न होकर किया जाने वाला कार्य या उसके पक्ष का मंडन।

वकालतन—क्रि. वि [फा.] वकील के द्वारा, वकील के जरिये।

वकालतनांमौ—सं पु [फा. वकालतनाम:] किसी न्यायालय या कचहरी में किसी के मुकद्दमें पर विधिवत बहस या अभिभाषण करने का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र।

वकासुर—देखो 'बकासुर' (रू. भे.)

वकी—देखो 'बकी' (रू. भे.)

वकील—सं. पु [फा.] १ वह व्यक्ति जो कानून की परीक्षा पास हो और जिसको न्यायालय या कोर्ट में किसी मुकद्दमें की बहस या कार्यवाही करने का अधिकार पत्र प्राप्त हो।

२ किसी के कार्य में उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ संदेश वाहक, दूत।

४ किसी के पक्ष को युक्तियुक्त अभिवाचन करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बकाल, बक्काल, वकाल, वक्काल।

वकुल—देखो 'बकुल' (रू. भे.)

उ०—अन्न उदक पय परिहरी, आभरणां ऊवेसि। **वकुल-त्वचा** वीटि करि, तरुणी तापस वेसि। —मा. कां. प्र.

वकूअौ—सं. पु. [अ. वकूआ] १ प्रकटीकरण।

२ देखो 'वाकौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बाकौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

वकूफ—१ देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

वक्कसण—१ देखो 'वक्रता' (रू. भे.)

उ०— हा हा दसम कालबलु, खल वक्कलण जोइ। नांमेणिइ सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरीय होइ। —षष्टि शतक-प्रकरण

वक्कर—१ देखो 'बकरौ' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बकर' (रू. भे.)

३ देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—तब राकस रूपं रवौ, ददुर पग धूजबं। हुंकार वक्कर हुलसीयो, कुंवर खडग करि पूजबं। —रीसालू री बात

वक्करणौ, वक्करबौ—देखो 'बकरणौ, बकरबौ' (रू. भे.)

उ०—अचळेस कहै अहमद्द-सूं, वदं न कथयण वक्करं। पतसाह पुत्री परणी नहीं, कंवर वीर कणियागरं। —अ. वचनिका

वक्कराणौ, वक्करावौ—देखो 'बकराणौ, बकरावौ' (रू. भे.)

वक्करायोड़ौ—देखो 'बक्करायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. वक्करायोड़ी)

वक्करियोड़ौ—देखो 'बकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वक्करियोड़ी)

वक्काल—देखो 'बक्काल' (रू. भे)

वक्त—सं. स्त्री. [अ.] १ समय, काल, वेला।

मुहा.—१ वक्त काटणौ=समय गुजारना, किसी तरह निर्वाह करना। २ वक्त गमांणौ=समय नष्ट करना। ३ वक्त री चीज=समयानुसार मिलने वाली चीज, ऋतु के अनुसार गाना या राग।

२ किसी कार्य का उपयुक्त समय, अवसर मौका।

मुहा.—१ वक्त पर=समय पर, यथा समय। २ वक्त रा बाया मोती नीपजै=समय पर किया काम उचित लाभ देता है। ३ वक्त हाथ सूं गवाणौ=अवसर चूकना, मौके का फायदा न उठाना।

३ विशिष्ट कार्य के लिये निश्चित किया हुआ समय।

४ पल, घड़ी, दिन। (ज्योतिष)

५ किसी कार्य में लगने वाली समय की मात्रा, विलंब, देर।

६ अवकाश, फुरसत, टाइम।

७ मृत्यु का समय, मौत की घड़ी।

रू. भे.—बकत, बखत, बख्त, बगत, वकत, वखत, वखत्त, वख्त, वगत।

वक्तव्य—वि. [सं.] १ व्यक्त करने योग्य, निरूपण करने योग्य।

२ वह जिसके लिये कुछ व्यक्त किया जावे, कहा जावे।

सं. पु.—१ किसी घटना विशेष या विषय विशेष पर, लोगों की जानकारी के लिये दिया जाने वाला लिखित या कथित स्पष्टीकरण, मन्तव्य, टिप्पणी।

२ वक्ता का कथन,

वक्ता—वि. [सं. वक्तृ] १ कहने या बोलने वाला, भाषण देने वाला।

२ जो किसी बात या घटना को ठीक ढंग से व्यक्त कर सकता हो, कह सकता हो, भाषण पटु।

सं पु.—१ कहने, बोलने या भाषण देने वाला व्यक्ति।

२ उपदेशक, शिक्षक।

३ पठन पाठन करने, स्तवन करने व उच्चारण करने वाला व्यक्ति।

उ०—उज्जीण नगरी रै मांही देव सरमा नांमे बिरांमण निवास करै। उवौ च्यार वेद री वक्ता, सठ सास्त्र री जांण हार, बडौ पंडित थौ। —साई री पलक री बात

४ विद्वान, पण्डित।

रू. भे.—बकता, वकता, वखता, बगता।

वक्फ—देखो 'वकफ' (रू. भे.)

वक्फदार—वि. [फा.] वक्फ प्राप्त करने वाला।

वि. वि.—जिस प्रकार भविष्य में की जाने वाली सेवा के लिये जागीरदारों को जागीरें दी जाती थी उसी प्रकार पिछली जानदार सेवा या कार्य करने के बदले पेंशन के तौर पर अथवा पहलवानों, विद्वानों, कलाकारों आदि को जीवन-यापन के लिये जागीरें दी जाती थी उन्हें वक्फ कहते थे। अतः उक्त प्रकार की जागीर प्राप्त करने वाला।

वक्फनांमौ—देखो 'वकफनांमौ' (रू. भे.)

वक्र—वि. [सं.] १ सीधा का विपर्याय, टेढ़ा, तिरछा बांका।

२ झुका हुआ, मुड़ा हुआ, नत।

३ घुंघराला, छल्लेदार, गोल-मटोल।

४ कुटिल, धूर्त, बेईमान, छलिया।

५ निष्ठुर, बेरहम।

६ दीर्घ। (छन्दशास्त्र)

सं. पु.—१ मुख। (ह. नां. मा.)

२ रुद्र।

३ मंगल ग्रह

४ शनि,

५ त्रिपुर-नामक राक्षस, त्रिपुरासुर।

६ नदी का मोड़।

७ प्रथम गुरु के गणण का नाम (र. ज. प्र.)

रू. भे.—बंक बक्र, बांकौ, बंक, बंकनि, बंकेण, बंकत, बक, बक्कुर।

वक्रकोटी–सं. पु. एक वस्त्र विशेष।

उ०—धोत पट्ट, राजपट्ट, गजवडि, हंसवडि, बोरिम्रावडी, ऊमावडि, मूमावडि, पूमावडि, सिलहटी, कपूरीयां, चउकपडीयां, पोतियां, **वक्रकोटा** नागवटां'''। —व. स.

वक्रगति, वक्रगती–वि. [सं. वक्रगति] १ जिसकी गति तिरछी हो, टेढ़ी चाल चलने वाला।

२ जिसके आचार-विचार व व्यवहार सीधा-सादा न हो।

३ विपरीत दशा में चलने वाला।

४ कुटिल।

सं. पु.—१ सूर्य से पांचवे, छठे, सातवें व आठवें ग्रह। (ग्रह लाघव)

वि. वि.—मंगल ३६ दिन, बुध २१ दिन वृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ वक्री होते हैं।

२ मंगल ग्रह।

३ सर्प, सांप। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वकरगत, वकरगति।

वक्रगामी–वि. [सं. वक्रगामिन्] तिरछी चाल चलने वाला।

रू. भे.—वकरगांमी।

वक्रग्रीव–सं. पु. [सं. वक्रग्रीवः] ऊंट।

वक्रता–सं. पु. [सं.] १ वक्र होने की दशा या अवस्था।

२ टेढ़ापन, तिरछापन।

३ साहित्य रचना की एक शैली जो रचना को सौन्दर्य व उत्कृष्टता प्रदान करती है।

रू. भे.- वक्कत्तण।

वक्रति—देखो 'विक्रति' (रू. भे.)

उ०—इम करतइ कूवड हवु भूप, कालु कुत्सित अतिहि कुरूप। देवगति आहवी संपनी, एवली वक्रति किहां थी ऊपनी। —नळ दवदंती रास

वक्रतुंड–सं. पु. [सं. वक्रतुण्डः] १ गणेश।

२ तोता।

रू. भे.—बक्रतुंड, बिक्रतंड, बिक्रतुंड।

वक्रदंस्ट्र–स पु. [स. वक्रदंष्ट्र] सूअर, शूकर, वराह।

रू. भे.—वकरद्रंस्ट।

वक्रद्रस्टि–वि. [स. वक्रदृष्टि] १ जिसकी दृष्टि में दुष्टता भरी हो, जिसकी दृष्टि पड़ने पर कुछ अमंगल होता हो।

२ जिसकी दृष्टि मे क्रोध भरा हो।

३ मन्द, दृष्टि वाला।

४ ईर्षालु, डाही।

सं. स्त्री.—१ टेढ़ी दृष्टि, तिरछी नजर।

२ क्रोध पूर्ण नजर।

३ मन्द दृष्टि।

४ ऐंचाताना।

रू. भे.—वकरदरस्टी, वक्रद्रस्टी।

वक्रपुच्छ–सं. पु. [सं.] कुत्ता, श्वान।

रू. भे.—वकरपूंछ।

वक्रांग–वि.—जिसका अंग सीधा न हो, कूबड़ वाला।

स. पु.—१ हंस।

२ चक्रवाक, चकवा।

३ सर्प, सांप।

रू. भे.—वकरांग।

वक्री–वि. [स. वक्रिन] १ अपना मार्ग छोड़ कर विपरीत दिशा में चलने वाला। (ग्रह)

२ टेढ़े मेढ़े अंगों वाला।

३ क्रोधी।

४ विपरीत, उल्टा।

रू. भे.—वक्री, वकरी,

वक्रोक्ति–स. स्त्री. [सं.] १ एक काव्यालंकार जिसमें काकुश्लेष से किसी वाक्य या बात का और का और अर्थ निकलता है।

२ चमत्कार पूर्ण कथन।

३ काकूक्ति।

रू. भे.—वक्रोक्ति, वकरोगति।

वक्रोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे.)

वक्ष–स. पु. [सं. वक्षस्] १ पेट और गले के बीच का भाग, छाती। सीना।

२ स्त्रियों के कुच, स्तन, चूंचियें व पुरुषों के स्तन चिन्ह।

रू. भे.-बकस, बक्ख, बक्खल, बक्स, बच्छ, बछ, वख, वच्छ, वछ।

वक्षस्थल–सं. पु. [सं] १ छाती, सीना, उर-स्थल।

उ०-अरु आदमी तरवारां वाय मा'राज नूं छेड़ै किया तो हेठै जादूराय मूवो लाघो वा कटारी सूधो हाथ मा'राज रो जादूराय रै वक्षस्थल मायां सूं काढ़ियो। —द. दा.

२ कुच, स्तन, चूंचियां।

रू. भे.—वच्छस, वखिस्थळ।

वक्षोज–सं. पु. [सं. वक्षस्] १ छाती, सीना।

२ कुच, स्तन, चूंचियां।

रू. भे.—वक्षोज

वक्ष्मांण–वि. [स. वक्ष्यमाण] १ जो कहने योग्य हो, वक्तव्य, वर्णनीय

२ जो कहा जारहा हो।

बख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—ग्रह दाटक थकां कमण मण घेरै, जेरै कुंण हासै बख आंण। काळ तणी डेरै जावै कुंण, फेरै कुंण थारा फुरमांण।
—जसजी खिड़ियौ

२ देखो 'बख' (रू. भे.)

उ०-ग्रब बीकानेर सूं मूंधड़ै रुघनाथ वा चोरड़ियै मांन जगरूपसिंघ बिहारीदास जी नूं इसी लिखावट करी थी के मोहतो थांनूं मारण नूं भादूणी सूं हुकम लेय नै ग्रायो है, सू थे घणा सैंठा रहज्यो, तथा थांरी बख लागै तो मुहतै नूं धरम-करम देय नै चूक कर मारज्यो।
—द. दा.

३ देखो 'वक्ष' (रू. भे.)

बखड़ी—देखो 'बखड़ी' (रू. भे.)

बखत—१ देखो 'वक्त' (रू भे.)

उ०—१ पच बखत निम्माज ताज कुलराह सोहइ, खोजा खांन वजीर मलिक उबरै मन मोहइ।
—व. स.

उ०—२ फौज तहव्वरखांन री, ग्रावी ऊगै सूर। बखत वणी रिण सद्धरा, नरां खरां मुख नूर।
—रा. रू.

२ देखो 'बखत' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पाखती ना लोक लीडी गी मा नुं समझावण लागा हिवै तो बीजो परणीजसी कोई नही। इण रा बखत मे इसड़ी हीज लिखीयो।
—कांवळो जोइयो नै तीडी खरळ री वात।

बखतवंत—देखो 'बखतवत' (रू. रू)

उ०—विसम वांणि विसवाद, विसयरस ग्रंगि न बाधइ, बखतवत वर विबुध वान दिन प्रति बाधइ।
— ऐ. जै. का. सं.

बखतवडाळ—देखो 'बखतवडाल' (रू. भे.)

उ०—तणु केहर' मभमराव मांगळराव तुगेस। भूपाळै भूपाळ भाटीवटी बखतवडाळ।
—नैणसी

बखतवायरो—देखो 'बखतबायरो' (रू. भे.)

उ०—'वखता' बखतवायरा, तै मारघो 'ग्रजमाळ'। हिंदवांणी रो बादसा, तुरकांणी रो काळ।
— कविराजा करणीदान

बखतविलंब—देखो 'बखतविलद' (रू. भे.)

बखतसर–क्रि. वि.—उपयुक्त समय पर, टीक समय पर।

उ०—मोटा ताजां नै डोल सारू खसाई री खोरसो भौळावै। पीसणियां पोसै रांधणियां रांधै बखतसर न्हावो धोवो ग्रर सिझ्यां सीख री वातां सांधै।
— दसदोख

बखता—देखो 'बक्ता' (रू. भे.)

बखतावर—देखो 'बखतावर' (रू. भे.)

उ०—धरम्यानै पिण तजि घरं, सहु बखतावर सीर। इंद्र चेडा नै मवगिणी, मयो कोणिक री भीर।
—ध. व. ग्रं.

बखतावरी—देखो 'बखतावरी' (रू. भे.)

बखतावरू—देखो 'बखतावर' (रू. भे.)

उ०—विद्याधर वड बखतावरू महियान मै हो महिमा महिमाय।
—ध. व. ग्रं

बखतौ—देखो 'बगतौ' (रू. भे·)

उ०—ताहरां राजा सों जैत ग्ररज करण लागो, 'राज बंदे मांहे कोण खांमी जु महाराज ग्रतरा (नाराज) हूवा ?' तद राजा जैत नूं कहीयो" जू मै तो थांनू सगळो ऊपर कीयो थो, तिको तूं बाहर चढ नै वांणीया री हणां बखतौ माल छोड ग्रायो।
—जैतमाल प्रमार री वात

बखतंत – देखो 'बख्तंत' (रू. भे.)

बखत्त—१ देखो 'वकत्र' (रू. भे.)

उ०—सपदा विहीण खीर कन्यका संतोखियो क, निसाभू मोखियो क सुधा सै घणी नखत्त। राजियो 'विसन्न' रो सनंह रोकियो क, विजा 'किसन्न' रो विलोकियो बखत्त।
—साहिबो सूरतांणियो

२ देखो 'वक्त' (रू. भे)

३ देखो 'बखत' (रू. भे)

बखमी—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ० –जिय जावत धार विना जखमी। वनडा ग्राज वार घणं बखमी।
—पा. प्र.

बखर—देखो 'भखारी' (मह., रू. भे.)

उ०—जवाईड़ा मेरी गुदड़ां में रोटी मांगै, रे क लाडो मेरी ना चलै। सासूड़ी मैं कलेवै का बखर भरा द्यूं, ए क तेरी लाडो ले चलूं।
—लो. गी.

बखसीस—देखो 'बकसीस' (रू. भे.)

उ०—बादसाह री सारी बखसीस ग्रोर वीरमजी दिया सो सगळा ग्रागे मेल्हिया।
—ठाकुर जैतसी री वारता

बखांण—देखो 'बखांण' (रू. भे.) (ग्र. मा, ह. नां. मा.)(उ. र.)

उ० –१ घणउं बखांण किसुं हिव कीजइ, ग्रभिनव सारद देवि। तेह तणउ जे कउतिग वीनवउं, ते निसुणउ संखेविइ।
—हीराणंद सूरी

उ०—२ मिगार खोड मैं संजुत्त सुंदरी बखांण ए। पयंच ग्रांगुळी जु पांण, कांम पच्च बांण ए।
—गु. रू. बं.

उ०—३ सोल सहस पणि सांमटी, परण्या पुरुस पुरांण। तु हि गोकुल-गोलिणी, विलस्या-तणउं बखांण।
—मा. कां. प्र.

उ०–४ माळव-देस विखोड़िया, मारू किया बखांण। मारू सोहागिण थई, मुंदरि सगुण सुजांण।
– ढो. मा.

उ०—५ ऐ प्रोहित दीवाळ सखरा पण । अर बीण आछी बजावै । तद सहर मांहि बखांण हुवौ । —नैणसी

बखांणण—देखो 'बखांणण' (रू. भे.)

बखांणणौ, बखांणबौ—देखो 'बखांणणौ, बखांणबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ भड़ां मंत्रियां जूथ भारा, सजे निज दरबार सारा। भलां पातां जूथ भेळा, बखांणे पह जेण वेळा। —सू. प्र.

उ०—२ पंचविध पांचूं पंच उभै पण, पिंड ताहरै तणा प्रकार। 'जैता' हरा वदीता जग में, हारै नहीं बखांणणहार। —द. दा.

बखांणणहार, हारौ (हारी), बखांणणियौ—वि०।

बखांणिग्रोड़ौ, बखांणियोड़ौ, बखांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बखांणीजणौ, बखांणीजबौ—कर्म वा०।

बखांणसद—देखो 'व्याख्यांनसद' (रू. भे.)

बखांणियोड़ौ—देखो 'बखांणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बखांणियोड़ी)

बखांणिव—वि. [सं. व्याख्यातव्य] १ जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता हो। (उ. र.)

[सं. व्याखेय]—२ जिसकी व्याख्या होने को हो। (उ. र.)

३ व्याख्या करने योग्य (उ. र.)

बखांणु—देखो 'बखांण' (रू. भे.)

उ०—ऊपनुं केवल नाणु सामीय ए नेमि जिणेसरह ए। सांभली सामि बखांणु विरता ए सावयव्रतु धरइं ए। —प. पं. च.

बखांणो—देखो 'बखांण' (रू. भे.)

उ०—तो चौथे वन धन छै जिकै राजा ईसरादिक जांणो रे ! स्त्री-वीरै समीपै जाय नै, नित नित का सुणै बखांणो रे —जय वांणी

बखात—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

उ०—एकरसूं मोटै न्रप आगै, पण तज बखो दियो प्रण पार। जण दन तो 'गोपाळ' जीवाया, लांघो बखो बखातां लार। —ठाकुर सवाईसिंह रो गीत

बखारी—देखो 'भखारी' (रू. भे.)

उ०—चोर नै इण बात रौ सुराग हो के बखारी में रूई पड़ी है। —फुलवाड़ी

बखिस्थळ—देखो 'वक्षस्थल' (रू. भे.)

उ०—महावर कघ पंचाइन मंड, बखिस्थळ जड़ हरावळि वंड। —रामरासो

बखेड़ी—देखो 'बखेड़ी' (रू. भे.)

उ० बखेड़ियां री टोळी घर रै सामी हाको करण लागी-काढ़ो तुरक नै बारै, काढ़ो तुरक-नै बारै'। —वरसगांठ

बखे—देखो 'पखे' (रू. भे.)

उ०—तठै ऐक महावेल खाडी। तकण री पाखती सेखा वंनर असै नांम नगर रै बखे आय नीसरियौ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

बखेर—देखो 'बिखेर' (रू. भे.)

बखेरणौ, बखेरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ 'भजन' नमौ तप तेज राजा 'गजन' भ्रभनमा, चीत ही दुधरम रीत चाहो। पत जका राखतो पातसाही पगां। सुत जका बखेरी पातसाही। —तेजसी खिड़ियौ

उ०—२ म्हैं तो आंगण मूंग बखेरस्यां, म्हारा साजन रा कोडां। चोखो रै मादळ घुळ रह्यो, रंग रातो रै मादळियो, थारो रै सबद सुवावणो। —लो. गी.

बखेरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बखेरियोड़ी)

बखो—देखो 'विखो' (रू. भे.)

उ०—१ मरणो हुवै जकै पग मांडो, ऊबरणो हुवै जिकै अखो। दिल घबरीज मोन सूं डरपो, वळै कहो किण मांत बखो।

—जादूरांमजी आढौ

उ० २ राज जनमिया ईज हुंता, तरै धरती मांहै बखो हुवो।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ महवेचा' बखो करतां 'मधकर', मछर तणा गढअवळी-माण। सोहड़ा गलै न ऊतरै सलहा, पमंगां न उत्तरै पलांण।

—माधोसिंह महेचा रो गीत

बख्त—देखो 'वक्त' (रू. भे.)

बख्तर—देखो 'बखतर' (रू. भे.)

उ०—तिका सस्त्र विद्या घोड़ा री सवारी व बख्तर पहरणै री विद्या सिखावै। —नी. प्र.

बग—१ देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—कविता टुक सुण सुख अधिक, स्त्रीमुख हुकम सहंत। पं जम अस बग झुक 'पता', रुक पग नीठ रहंत।

—जैतदांन बारहठ

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—१ बगां बीचाळै काढिया, हुड़ जिम पग झल्लै। ऊभी मेली साहबी, गढ गढ़ महल्लै। —केसौदास गाडण

उ०—२ जिकै धरती रा धणी पताल वासी भुयंग नै अण रा धणी दौलतवत श्री बिन्है एकै बग हूंता सु धरती री पुड़ मेद नै विमरै पेठा। उठै रहण लागा। —रा. सा. सं.

बगड़ देखो 'वगड़' (रू. भे.)

उ०—सीम्राळइ जल मांहि सरि, उंन्हालइ पंचांगि। बरसालइ बगडइ, बसइ कांमकंदला-काजि। —मा. कां. प्र.

बगड़इ—देखो 'बगड' (रू भे.)

बगड़णो, बगड़बो—देखो 'बिगडणो, बिगड़बो' (रू. भे.)

बगड़ावत—सं. पु [देशज] १ गोठण निवासी बाघ नामक क्षत्रिय के वंशज जो २४ विभिन्न जाति की कन्याओं से उत्पन्न हुए थे। ये बड़े शूरवीर और दानी थे।

वि. वि —बाघ ने उक्त कन्याओं के साथ जंगल में गंधर्व-विवाह कर लिया, जब यह बात प्रगट हुई तो कन्याओं के माता-पिता ने इनका बाघ के साथ विवाह कर दिया। वास्तव में इन कन्याओं की संख्या २५ थी परन्तु विवाह के लिये आये हुए प्रोहित ने एक कन्या को विवाह कराने के उपलक्ष में मांग लिया। इस प्रकार शेष चोबीस की संतान बगडावत कहलाई

रू. भे.—बगडावत, बघडावत।

२ इनकी प्रशसा मे गाया जाने वाला लोक गीत।

वि.—बहादुर, वीर।

बगट—सं. पु. [सं. भृकुट] शिर, मस्तक।

बगड—देखो 'बगड़' (रू. भे.)

बगणो, बगबो —१ देखो 'बजणो, बजबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे.)

बगणहार, हारो (हारी), बगणियो—वि०।

बगिओड़ो, बगियोड़ो, बग्योड़ो—भू० का० कृ०।

बगीजणो, बगीजबो—भाव वा०।

बगत—१ देखो 'वक्त' (रू भे.)

उ०—१ राजाजी तो सूरज रै ढळणा री बाट जोवता जोवता पूरा आंती आयग्या हा। सेवट सूरज नै तो बगत माथै ढळणो हो इज। —फुलवाड़ी

उ०—२ कंवर नै ऐड़ी अणचीती जीत री आस नीं ही। वो जांणतो हो के उणनै पाधरी सणक करणा में की बगत लागैला। —फुलवाड़ी

२ देखो 'बखत' (रू. भे.)

बगतर—देखो 'बखतर' (रू. भे.)

उ०—वाही रांण प्रतापसी, बगतर में वरछीह। जांणक भींगर-जाळ में, मुंह काढ्यो मच्छीह। —अज्ञात

बगतरियो, बगतरो—१ देखो 'बखतरियो (रू. भे.)

उ०—धीरज रख म्हारा धणी, ओढ लयूं असमांन। बगतरियां पोवैं वरम, पीपळ हुंदा पांन। —पा. प्र.

२ देखो 'बखतर' (अल्पा., रू. भे.)

बगता—देखो 'वकता' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'वक्ता' (रू. भे.)

बगतावर—देखो 'बखतावर'

बगतो—सं. पु.—लूटा गया माल या धन दौलत।

उ०—१ ताहरां वांणीयै पुकार घाती। ताहरां नरो राजा कनै बैठो हूतो। सु राजा कहीयो 'खबर करो कौण पुकारै ? ताहरां नरो कहण लागो, 'राज जैत बाहर चढियो हंतो। खबर मगाबं छूं।' ताहरां वांणीये कहीयो। राज जैत आप न चढियो, रजपूत चढीया हंता। तिकां म्हारो बगतो माल छोड ने आया। —जैत पुमार री वात

उ०—२ राजा देदे बारट नूं पूछजै छै। ताहरां राज देदे नूं बुलायो। सु देदो महाराज रै हजूर आय कहीयो, "जु महाराज मैं तो इहां नूं कहीयो, बगतो माल ढीलो मता करो। —जैत पुमार री वात

रू. भे.—बखतो।

बगर—१ देखो 'बगैर' (रू भे.)

उ०—दूभर पेट भरण नुं दन दन दस रड़वड़सां वड़सां देस वदेस। पावां बगर कीया पारेवा, जातां सुरग बीया 'जगतेस'। —जवांनजी आढ़ो

२ देखो 'बगड़' (रू. भे.

उ०—सांवरो लगन लगावत ग्रे मा, काहु कछु कांम बहांनै कोई, अपनै बगर में आवत ग्रे मा। —रसीलै राज रा गीत

स. पु.—एक देश विशेष जहां के ऊट बढिया होते हैं।

बगरू—देखो 'बगरू' (रू. भे.)

उ०—सू ऊठ कुण-कुण दिसावर रा छै ? काछी बोदला, छपरी, जालोरी, बगरू बलोची, सिववाड़िया, और ही अनेक जात-भात रा ऊंठ छै। —रा. सा. सं.

बगळ, बगल—देखो 'बगल' (रू. भे.)

उ०—छुरी बगल में हाथि गेडियो, छांनै बेसर' मळो छोडियो —अनुभववांणी

बगलबंदी, बगलबंधी—देखो 'बगलबंधी' (रू. भे.)

बगळांणा—देखो 'बगळांणा' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

बगलामुखी—देखो 'बगलामुखी' (रू. भे.)

बगसणो, बगसबो—१ देखो 'विकसणो, विकसबो' (रू. भे.)

उ०—पोहप बगसीया गहक्क करै पख, पांगरीया बन नीला पांन। राव 'पीथल' वाळो गर रूड़ो, आबूड़ो लागो असमांन। —आबू परवत रो गीत

२ देखो 'बकसणो, बकसबो' (रू. भे.)

बगसणहार, हारौ (हारी), बगसणियौ—वि० ।
बगसियोड़ौ, बगसियोड़ौ, बगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बगसीजणौ, बगसीजबौ—कर्म वा० ।

बगसर—देखो 'बगसर' (रू. भे.)

बगसरिया - देखो 'बगसरिया' (रू. भे.)

बगसरियौ—१ देखो 'बगसरियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बगसर' (अल्पा., रू. भे.)

बगसाणौ, बगसाबौ—देखो 'बकसाणौ, बकसाबौ (रू. भे.)

बगसियोड़ौ—१ देखो 'विकसियोडौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बकसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बगसियोड़ी)

बगसी—देखो 'बकसी' (रू. भे.)
उ०—तद पातसाह जी **बगसी** नूं फुरमायौ के इसका रोजगार चढ़या है जितना लेखौ कर चुकाय देवौ। पीछै **बगसी** यासूं लेखौ कियौ जिणमे तळब रा रिपिया पनरा लाख हुवा। —द. दा.

बगहरा—देखो 'बगैरह' (रू. भे.)
उ०—सो बड़ा ही गाढ़ सूं केसरीसिंहजी नै नागोर मेलियौ। हजार तीस रौ पटौ, सावां ओडीट वगहरा लिख दिया अर रिपिया दस थाळी रा कर दिया। —अमरसिंह गजसिहोत री बात

बगाणौ, बगाबौ—१ देखो 'बगाणौ, बगाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ इतरा मे भीतर सूं मांई-मां पधारया। हाथ पकड़ धूजी ने परा रे **बगाया**। —लो. गी.
उ०—२ छोटा छोटा गुलाबी होठ फरूकण लागा। पग पटकनै एक कांकरी उठाई। पछै उण कागा रै साम्हो **बगाई**। —फुलवाड़ी
२ देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)

बगायोड़ौ—१ देखो 'बगायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बगायोड़ी)

बगार—देखो 'बघार' (रू. भे.)

बगारणौ, बगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

बगारियोड़ौ—देखो 'बघारियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. बगारियोड़ी)

बगावणौ, बगावबौ—१ देखो 'बगाणौ, बगाबौ' (रू. भे.)
उ०—बाप तौ घड़ो एक ई बात कैवतो के वै उणनै छोडनै कठै ई नी जावै। थोड़ा दिनां तांई कमाई लारै धूळ **बगावै**। —फुलवाड़ी
२ देखो 'बजावणौ, बजावबौ' (रू. भे.)

बगावत—देखो 'बगावत' (रू. भे.)

बगावियोड़ौ १ देखो 'बगायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बगावियोड़ी)

बगि—देखो 'वरग' (रू. भे.)
उ०—पेखे कोइ कहति एक-एक प्रति, विमळ मंगळ ग्रह एक **बगि**। एणि कवण सुभ क्रम आचरतां, जांणियै वेलि जपंति जग। —वेलि

बगियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बगियोड़ी)

बगीचौ—देखो बगीचौ' (अल्पा., रू. भे.)

बगीचौ—देखो 'बगीचौ' (रू. भे.)
उ०—गदाळ सहर गढ़ कोट बाजार **पोळि** पगार बाग **बावड़ी** **बगीचा** कूआ सखरा री बड़ां पीपळां री छिबि सहर री पाखती विराजिनै रही छै। —रा. सा स.

बगूतणौ, बगूतबौ—देखो 'विगूतणौ, विगूतबौ' (रू. भे.)
उ०—बुधे तमारी ए अति बलिया बांधव बहु **बगूता**। नहि तरे द्यूत रमता तमो तिवारां अमो पासै हूता —नलाख्यान

बगूतियोड़ौ—देखो 'विगूतियोड़ौ' (रू. भे.)

बगेर—देखो 'बगैर' (रू. भे.)

बगेरे, बगेरै—देखो 'बगैरह' (रू. भे)
उ०—पछै सांचोर ऊपर मांडवां री तथा बोगरा पातसा **बगेरे** केई राज रैया। —मारवाड़ री ख्यात

बगेलू—१ देखो 'बघेल' (रू. भे.)
२ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

बगेसरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू भे.)
उ०—भणंत स्री विनोदयं, कल्यांण केक मोदयं। खंमायची पटंगयं, **बगेसरी** विहंगयं। —रा. रू.

बगैर—देखो 'बगैर' (रू. भे.)

बगैरह—अव्य. [फा. वगैरः] १ आदि. इत्यादि।
२ इसी प्रकार।
३ सम्बन्धित।
४ शेष।
५ प्रभृति।
६ प्रमुख।

रू. भे.—बगहरा, वगहरा, वगेरै ।

बगोरणौ, बगोरबौ—क्रि. स. [सं. विकुर्वम्] १ प्रव्यंजन करना, व्यक्त करना ।

उ०—गजेंद्र कुंभस्थल सीस डोलइं, कोइ हीडोला जिम सीस डोलइं, तुरंग मातंग ति नींद्र घोरई, न पक्षीया नीद्रलडी **बगोरइं** । —सालिसूरि

२ प्रगट करना, बताना ।

बगोरणहार, हारौ (हारी), बगोरणियौ—वि० ।

बगोरियोड़ो, बगोरियोड़ौ, बगोरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बगोरीजणौ, बगोरीजबौ—कर्म वा० ।

बिगोरणौ, बिगोरबौ—रू० भे० ।

बग—१ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—१ आपै ही जांगावसी, भलो ज होसी **बग** । कै मांगिए दग्साविया, कै ऊछजियां खग्गि । —हा भा.

उ०—२ साहिब, म्हां का बापकइ, छइ करहां कउ **बग** । जइ करहउ खोड़उ हुवइ, गादह दीजइ दग्ग । —ढो. मा.

२ देखो 'वाग' (रू. भे.)

उ०—१ आघारि **बग** आयासि लग्ग । खुरिसांणि खेड़ि खिविया खड़ग्ग । —रा. ज. सी.

उ०—२ फेरे **बग** तुरग री, तोले खग्ग करग्ग । रिण पगा उमंगे लगं, 'रैणायर' गयणग्ग । —रा. रू.

बग्गणौ, बग्गबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ **बग्गा** भड़ मेवाड़ रा, सीसोद्या ग्रह सार । आहू दिस कळ सल्लळी, चळाचळी संसार । —रा. रू.

उ०—२ तें जोधां छळ झल्लियौ, धणी 'अजो' सिर धार । कळ लागै जांणै कवण, विण **बग्गी** तरवार । —रा. रू.

उ०—३ इण दिसिया अजमेर सूं, आयो तहवरखांन । इण दिसि **बग्गा** सिंधुवा, भुज लग्गा असमांन । —रा. रू.

उ०—४ लग्गो सूर परक्खणौ, **बग्गी** धारा रीठ । —रा. रू.

३ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)

बग्गणहार, हारौ (हारी), बग्गणियौ—वि० ।

बग्गियोड़ो, बग्गियोड़ौ, बग्गयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बग्गीजणौ, बग्गीजबौ— भाव वा० ।

बग्गय—देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—ऊपड़ै **बग्गयं** गाजवां लग्गयं । गोम गयणंगयं, धूजिया नग्गय । —गु. रू. ब.

बग्गियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'भागियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बग्गियोड़ी)

बग्घ—१ देखो 'बाघ' (रू. भे.)

उ०—वयणं गाढ़ा वड चडै, मूठी गाढ़ा खग्ग । हाजरती दरबार मैं विरता बीयै **बग्घ** । —गु. रू. बं.

२ देखो 'वाग' (रू. भे.)

बघ्रहणौ, बघ्रहबौ—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू. भे.)

उ०—कहीया मुख वचन घणा मनकारै, **बघ्रहीया** खळ खतावण । नर समजति तरै नरवहीया, रहीया 'चांपा' तरै रण । —गोपाळदास चांपावत री गीत

बघ्रहियोड़ौ—देखो 'विग्रहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बघ्रहियोड़ी)

बघंबर—देखो 'बाघंबर' (रू. भे.)

उ०—**बघंबर** जेम सिलै विकराळ । मंडै गळिमाळ जिका रुंडमाळ । —सू. प्र.

बघबाव, बघवाय, बघवाव, बघवाह—देखो 'बघवाव' (रू. भे.)

उ०—१ विघ वाघ जिम **बघबाव**, पलटंत गज पछ पाव । —सू. प्र.

उ०—२ वाघ करै नह कोट वन, वाघ करै नह वाड़ । वाघां रा **बघवाव** सूं, भिळै अगंजी झाड़ । —बां. दा.

उ०—३ दळ गयंद टाळा दियै, वाघ तणी **बघवाह** । हौल पड़ै प्रसणां हियै, गहन 'पतो' गजगाह । —किसोरदान बारहठ

बघार देखो 'बघार' (रू. भे.)

उ०—मोठ मटर चूंला फली रे लाल, छमकारघा देइ **बघार** । मूंग फूल फल पांनड़ा रे लाल, अथांणा सुखकार । —प. च. चौ.

बघारणौ, बघारबौ - देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

उ०—तूमरि नी दालि नां साक, उढ़वां ना साक, चिणां ना साक, राईता मिरीतां खाटां खारा मीठां गल्यां तीखां तमतमां तल्यां बघारघां छमकारघा पुंगारघां । —व. स.

बघारणहार, हारौ, (हारी), बघारणियौ—वि० ।

बघारियोड़ो, बघारियोड़ौ, बघारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बघारीजणौ, बघारीजबौ—कर्म वा० ।

बघारियोड़ौ—देखो 'बघारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बघारियोड़ी)

बघूल—देखो 'बघूलौ' (मह. रू. भे.)

बघूलौ—देखो 'बघूलौ' (रू. भे.)

बघेरौ—देखो 'बघेरौ' (रू. भे.)

उ०—जगळ मांहे रमता-रमता गया । ताहरां एक बघेरौ दीठौ । —नैणसी

बघेल—१ देखो 'बघेल' (रू भे)

२ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

बघेलखंड—देखो 'बाघेलखंड' (रू भे.)

वड़—१ देखो 'वट' (रू भे.)

उ०—**वड़** पीपळ जांबू बिरख, नींबू नींव पळास । आसूपाळा अति सरम, आधौ फरै अकास । —गज उद्धार

२ देखो 'बड़ौ' (मह., रू. भे.)

उ०—होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठिया, मीर **वड़** वीर रिगाधीर रोसड़ं । —प. च. चौ.

वड़णौ, वड़बौ–क्रि. स.—१ काटना, कतरना ।

उ०—त्राग पाखर भ्रणण हजारी तड़छिया, रोळ भुज **वड़छिया** रचण गाड़ा । कर मछर घाड़वी लियण वित कड़छिया, घड़ाचया 'वृड रज' भुजां धाड़ा । —रावत हम्मीरसिंह चुंडावत रौ गीत

वड़णौ, वड़बौ—देखो 'वड़णौ, बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ डाढाळौ अर मूंडण बाचरा उठाय अठी उठी जोयौ के चांणचक डाढ़ाळै रै लिलाड़ में तच करती रौ एक तीर **वड़ग्यौ**। अर मूंडण रै डावै पसवाड़े सूंसाड़ करती गोळी वड़गी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ गोगादेजी आप सिनांन करण नू पैठा । पण वांनर तेजौ तळाव मांहे वड़ै नहो । —नैणसी

वड़णहार, हारौ (हारी), वड़णियौ—वि० ।

वड़ियोड़ौ, वड़ियोड़ौ, वड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वड़ीजणौ, वड़ीजबौ—भाव वा० ।

वड़दी—देखो 'वरदी' (रू. भे.)

वड़लौ—देखो 'वट' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेत में वडओरड़ियां आयोड़ी, गहर डम्मर व्हियोड़ी, जांणे, **वड़ला** ऊभा । —रातवासौ

वड़वड़—देखो 'बड़बड़' (रू. भे.)

उ० तड़फड मायक अति सत्राड, **वड़वड़** काळज घाव वराड़ । वडचड जोगणियां रतचोस, जुड़ै भिड 'धूहड' बाधै जोस । —गौ. रू.

वड़वड़णौ, वड़वड़बौ—देखो 'बडबडणौ, बड़बडबौ' (रू. भे)

उ०—१ भडभडै के लटग्रडै भारथ, अडै के अवडैत । **वड़वड़ै** के हडहडै बीजळ, जडै के जरदैत । —र. ज. प्र.

उ०—२ बूर पड़ि जबूर विहुं घड, भुग्ज बीछड़ि पड़ै रवड भड । विढण धरि अड़ सुहड़ समवड़ **वड़वड़ै** पिड वार । —रा. रू.

वड़वड़ियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वड़वड़ियोड़ी)

वड़वा—१ देखो 'बड़वा' (रू. भे.)

वड़वाअगन, वड़वाअनळ, वड़वाग, वड़वाग, वड़वागि, वड़वाग्नि, वड़वानळ, वड़वानल—देखो 'बड़वानळ' (रू.भे.)

उ०—१ जड़ी असमर समर कंवर 'सुबमांन' ज्यां, पड़ी **वड़वाअनळ** सीस पिसणां । —महाराजा सुनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ सोर आग सपरस्स, किना **वड़वाग** अकारी । माग हूंत सामंद्र, ध्याग बरतण उर धारी । —रा. रू.

उ०—३ वध प्रचंड 'वखतेस' कियौ कोडंड कुमक्खै । अोप वदन ऊभरै, रूप **वड़वाग** निरक्खै । ज्वाळाकार खतंग, कोध गुण सग तमक्कै । प्रळंवंत सिव चक्ख, जाणि अमरक्ख भभक्कै । —रा. रू

उ०—४ मुखि 'माधव-माधव' जपइ, नयणे नीर प्रवाह । टंक नमइ नही टलवळइ, घटि **वड़वानळ** दाह । —मा. कां प्र.

वड़वामुख—देखो 'बड़वामुख' (रू. भे.) (अ. मा.)

वड़वाय–सं. पु.—वट वृक्ष की उपशाखा ।

उ०—'मान' महावड़ साख कर, आसौ किर **वड़वाय** । साह सभा बन मैं खड़ी, छाया सूं जग छाय । —बां. दा.

वड़सावित्रीव्रत–सं.पु. [सं. वट सावित्री व्रत] स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत जो ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को किया जाता है, इस दिन वड की पूजा होती है ।

वड़सी–सं. स्त्री. [सं. वार्षिकी] १ मृत्त व्यक्ति का प्रति वर्ष आने वाला मृत्यु का दिन ।

२ उक्त दिन को किया जाने वाला भोजन आदि का विशेष आयोजन

३ देखो 'बड़ी' (रू.भे.)

वड़ाणौ, वड़ाबौ—देखो 'बड़ाणौ, बड़ाबौ' (रू. भे.)

वड़ारण—देखो 'वडारण' (रू. भे.)

उ०—चौगड़दा कनात खंची छै । तैण समै अचूकी रा सुखपाळ आंण नवाई । तैण समै दूजी **वड़ारणां** खवासी उठै हीज बरजी । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल रौ वात

वड़ि—१ देखो 'वट' (रू. भे.)

२ देखो 'वड़ी' (रू. भे.)

वड़ियोड़ौ—देखो 'बड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वड़ियोड़ी)

वड़ियौ—देखो 'बड़ियौ' (रू.भे.)

बड़ी—देखो 'बड़ी' (रू.भे.)

बड़ौ—१ देखो 'बड़ौ' (रू.भे)

उ०–उपाड़ सेल अवदल्ल पर, रांम भुजांबळ रोपियौ। बीचियौ जांण तळियौ बड़ौ, ऊथलियौ तन ओपियौ। —रा. रू.

२ देखो 'बड़ौ' (रू.भे.)

उ०—रूडा रूडा उपदेश दे दे बड़ा बड़ा भूप, कीधा, भ्रम्म, रूप, खड़ा तडा सेवै पाय। —ध. व. ग्रं.

बच–सं.पु. [सं. वच्] १ वचन, वाक्य।

सं.स्त्री.—२ सरस्वती, शारदा।

[सं. वचा] ३ औषधि विशेष।

रू. भे.—बच।

४ देखो 'बंच' (रू.भे.)

५ देखो 'बीच' (रू.भे.)

उ०–वरै रभ मनबंछत, वसै सुर थांन बच, एळा सर सुजस दध कड़ां अड़ियो। —माहसिंह भाटी रौ गीत

६ देखो 'वचन' (रू. भे.)

बचकळा–सं. स्त्री [सं. वचः कला] पढ़ने का ढंग या कला, तरीका।

बचखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ अस्त्री पण राजा री राण्यां सूं अनेक प्रमोध आंण लगाए जाए। हेत घणौ बाधौ। या पण महावीर बचखण एम करतां सांमणी रौ दौहाड़ौ आवियौ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ अेहड़ौ वीर बचखण, महा चतर आसैर दौकिओ

—कल्यांणसिंघ नागराजोत वाढ़ेल री बात

बचणौ, बचबौ—देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)

उ०— १ मर सबळां आगै निबळ, नीर घकै वांनीर। वाय धकै त्रण जाय बच, भलौ नमण गुण भीर। —बां. दा.

उ०—२ चूर लियौ अौ चौतरफ, केवी वयण कहंत। वाघ केम छिपियौ बचै, रुपियां धरम रहंत। —बां. दा.

उ०—३ नारिन को पुरखा, चतर न मुरखा, बेद न ब्यारि बचंदा है। —अनुभववांणी

बचणहार, हारौ, (हारी), बचणियौ—वि०।

बचिओड़ौ, बचियोड़ौ, बच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बचीजणौ, बचीजबौ—कर्म वा०।

बचत—१ देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—पर आफु क्यारी पंकत, मोताहळ बोह मत। वीरम ठग वाळा बकट, बांका वडा बचत।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

२ देखो 'बचत' (रू. भे.)

बचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—बारध कुण बांधै राघव वण, धरा सेस वण कवण धरै। बीकावत पाछै बचत्रां रा, कमण दूसरो तंडळ करै।

—तेजसी खिड़ियौ

बचन–सं. पु. [सं.] १ बोलने की क्रिया या भाव, उच्चारण।

२ मुंह से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाणी, वाक्य।

उ०—१ कदाचित पांणी माहि पाखांण तरइ, कदाचित मेरु चूलिका चलइ, कदाचित् ब्रहस्पति बचन तु स्कलइ कदाचित् सिलातलि ऊपरि कमल विकास लहइं। —व. स.

उ०—२ वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक। वे खाधा वे मांनियां, हुवा कतांत खुराक। —बां. दा.

३. कही हुई बात, उक्ति, कथन।

उ०—सांभलि एहवा बचन कुमांर, रागातुर हूवौ तिणवार।

—वि. कु.

४ प्रतिज्ञा या प्रण के रूप में दृढ़ता पूर्वक कही हुई बात, वादा, प्रण।

मुहा.—१ वचन तोड़णौ = प्रण को तोड़ देना, वादे के अनुसार न रहना। २ वचन दैणौ=किसी के वचनों में बंधजाना, वचन बद्ध होना, वादा करना, प्रतिज्ञा करना। ३ वचन भंग करणौ=देखो 'वचन तोड़णौ' ४ वचन राखणौ= प्रतिज्ञा पूरी करना, दिये वचन निभाना, वादा पूरा करना। ५ वचन हारणौ=प्रतीज्ञा पूरी करने में असमर्थ रहना। वादा न निभाना, वचन विमुख होना।

५ घोषणा।

६ उपदेश, निर्देश, मार्ग दर्शन।

उ०–सील सतोस दया सत भक्ती, स्वधरम ग्यांन वैरागी। सत्वगुण का पायक सब साथै, गुरु बचनां का पागी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

७ आदेश, आज्ञा।

८ सलाह, परामर्श।

९ वर्णन, बयान, उल्लेख।

१० अभिव्यक्ति।

११ पुनरावृत्ति।

१२ शब्दशास्त्र में शब्द के रूप में वह विधान जिसके द्वारा एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है।

१३ नियम।

१४ सरस्वती।

१५ भाषा।

रू. भे.—वच, वचन, वचन्न, वयण, वयन, बैंण, बेण, बैंण, बैन, वैण, बैन, वइण, वइन, वच, वचनि, वचन्न, वच्चन,वयण, वैण।

अल्पा.—वचनड़ो, वयणड़ो।

वचनका—देखो 'वचनिका' (रू. भे.) (द. दा.)

वचनकारी–वि. [सं. वचनकारिन्] १ वचन को मानने वाला।

२ आज्ञाकारी।

वचनगुप्ति–सं. स्त्री. [सं.] वाणी का संयम–जिससे वचन का निग्रह कर प्रयोजन, उचित सत्य, तथ्य व निर्दोष वचन का ही उच्चारण हो। (जैन)

उ०—तपः कांति सोसित लोभ मद, क्रोधाग्नि वध्यापन पयःपूर, मायातमस्विनी संहरणसूर, मानगिरवरदलनवज्रमौलि, त्यक्त पुत्रमित्र कलत्रादिसबंध, मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति प्रधान। —व. स.

वचनपाटव–सं.स्त्री. [सं. वचनपटुता] १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ बोलने की चतुराई, वाक्पटुता।

वि. [सं. वचनपटु] बोलने में चतुर, प्रवीण।

वचनप्रतिस्ठा–सं.स्त्री. [सं. वचन+प्रतिष्ठा] वचनों की मर्यादा, कहे हुए वचनों की दृढ़ता, सच्चाई।

उ०—प्रतापि लंकेंद्र, गुरु नियम रामचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला करण, वचनप्रतिस्ठां युधिस्ठिर, धनुरवेदि. अरजुन, सग्रांमचरघा सूग्रावीर, आग्यां अजयपाल।

—व. स.

वचनयुद्ध–सं.पु. [सं. वचनयुद्ध] १ जबानी लड़ाई, वाद-विवाद। वाग्युद्ध

२ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स)

वचनयोग–वि. [सं.] सत्यासत्य भाषा का उच्चारण करने की क्रिया या ढंग। (जैन)

वचनलक्षिता–सं. स्त्री [सं.] वह परकीया नायिका जिसकी बात चीत से उसके उप-पति से प्रेम लक्षित या प्रगट होता हो।

वचनविदगधता, वचनविदग्धता–सं. स्त्री. [सं. वचनविदग्धता] बोलने की चतुराई, पटुता।

वचनविदग्धा–स स्त्री. [स. वचनविदग्धा] १ परकीय नायिका जो अपनी वचन चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती है।

२ मधुर भाषणी या मन-मोहिनी स्त्री।

रू. भे.—वचन विदग्धा।

वचनसिध–वि. [स. वचनसिद्ध] वह महात्मा या सिद्ध-पुरुष जिसके मुंह के बोल सर्वथा सत्य होते हो, वचन-सिद्धि प्राप्त महात्मा।

सं. स्त्री.—अपने वचनों या बोल की सिद्धि।

वचनात–सं. स्त्री.—राजा महाराजाओं द्वारा अपने छोटे को पत्र में लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—पछै महेसदासजी जाळोर पायौ, गढ़पती हुवा जिणसूं लिखावट आगै न रही। प्रथीराज रै मनसब घणौ हो जिण सूं वचनात नहीं नै लिखावट लिखीजती। —बां. दा. ख्यात

वचनि—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—चरण चारिहिं हंस हरावती। वचनि जिणइं जीती भारती। —सालि सूरि

वचनिका–सं. स्त्री.—१ गद्य और पद्य रचना का एक ढंग विशेष। (र. वचनिका)

२ गद्य रचना में छोटे-छोटे युग्म रूप।

३ कोई गद्य रचना।

४ वृत्त-गंधी नामक काव्य रचना का एक विधान। (र. रू.)

५ चम्पू काव्य।

रू. भे.—वचनका, वचनिका, वचनका।

वचनीय–वि. [सं] १ कहने योग्य, वर्णन करने योग्य।

२ प्रशमनीय।

रू. भे.—वचनीय।

वचन्न—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ तवं 'भीम' वांका वचन्नं तियारं। 'खुमांणं' आदू जुद्ध सूं खूंदकारं। —गु रू. बं.

उ०—२ वर विलंद राय लिखिया वचन्न। वाचिया किया चख चोळ व्रन्न। —वि. सं.

उ०—३ गादह दाध्यउ दग्ग करि, सासू कहइ वचन्न। करहुउ ए कूकइ मनइ, खोड़उ करइ यतन्न। —ढो. मा.

उ०—४ मेड़तियौ मुख ऊचरै, हैमतसिंघ वचन्न। मारौ दुरजण सांम रा, कुण भाई कुण तन्न। —रा. रू.

वचा—देखो 'वाचा' (रू. भे.)

उ०—वचा दिराड़ खिलाड़ व्रछ, चंचळ आंठू चाढ़ियौ। 'पाल' कर कार समंदां परै, कमध भूत नै काढ़ियौ। —पा.प्र.

वचाड़णो, वचाड़बो—देखो 'बचाणो, बचाबो' (रू. भे.)

उ०—जसवंत औरंगसाहि जब, वेद कतेब वचाड़ि, बे छत्रपती बहसिग्र, रचि दिन राड़ि। —वचनिका

वचाड़णहार, हारौ (हारी), वचाड़णियौ—वि०।

वचाड़िओड़ौ, वचाड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०।

वचाड़ीजणो, वचाड़ीजबो—कर्म वा०।

वचाड़ियोड़ो—देखो 'वचायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वचाड़ियोड़ी)

वचाणौ, वचाबौ—देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—तिणि नयरि जेसिंघदे राउ, नवउ खणावइ तिहां तलाव। ते खणावतां लिपि नीसरी, ते न वचाइ कुणहि खरी।
—हीरांणंद सूरि

उ०—२ नेस वचाया कोलियां, पेस धरे न्रप पाय। पाटण 'म्रजन' पधारिया, भरि पागड़ै लगाय। — रा रू.

वचाणहार, हारौ (हारी), वचाणियौ—वि०।

वचायोड़ो—भू० का० कृ०।

वचाईजणौ, वचाईजबौ—कर्म वा०।

वचायोड़ो—देखो 'बचायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री वचायोड़ी)

वचार—देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—बांहै सुंदरि बहरखा, जासू चुड़ स वचार। मनुहरि कटि थळ मेखळा, पग झांझर झणकार। —ढो. मा.

वचाळै—देखो 'विचै' (रू. भे.)

उ०—अवसर खोय जेतला आया, गोरी दळा वचाळै गात। मेवाड़ै खाली मोकळीयौ, पोहू महमंद 'जसो' जग पात।
—रांणा कुंभा री गीत

वचाव—देखो 'बचाव' (रू. भे.)

उ०—पायकां के हमल्लै बांक पट्टै फूल हत्थूं का दाव। नजर वक्रंक का हुन्नर अंगूगा वचाव। हणमंत रूप जगजेठू नै भुजंग दंडूंपर दस्तताळ दिया। —सू. प्र.

वचावणौ–वि—बचाने वाला, रक्षा करने वाला।

उ०-भुज दंड लीजै भांमणा, अघियावणां अभीत। विध-विध दास वचावणा, जुध पावणा सजीत। —र. ज. प्र.

वचावणौ, वचावबौ—देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ खत्रवट धरम सदा थां खोळै, श्री हिंदवांण वचावौ श्रोळै।
—रा. रू.

उ०—२ आज न दीसै आपरो, प्रांण वचावण हार। —पा. प्र.

उ०—३ तवता कुरांण काजी तठै, ब्रहम पुरांण वचाविया। आसुरां धरम मेटै 'अजै', सुरां धर्म दरसाविया। —सू. प्र.

वचावणहार, हारौ (हारी), वचावणियौ—वि०।

वचाविओड़ो, वचावियोड़ो, वचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वचावीजणौ, वचावीजबौ—कर्म वा०।

वचावियोड़ो—देखो 'बचायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वचावियोड़ी)

वचिक्खण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—अनि वचिक्खण अम्नाय व्यापरिउ, करण्णधारनइ विसइ कुसलीउ, वैरिजन अनाकलनीय, गुहिर गंभीर। —व. स.

वचियोड़ो—देखो 'बचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वचियोड़ी)

वचै—देखो 'विचै' (रू. भे.)

उ०—अंब खास वचै बांणास आछटी, कहर 'पदम' धमजगर कर। 'मुहण' मरण कीया मार हतै, एकण धाव छट्टक धर।
—संकर बारहठ

वचौ—देखो 'वच्चौ' (रू. भे.)

वच्चंसी–वि. [सं. वर्चस्विन्] किसी के छल कपट के बोल में न आने वाला (जैन), प्रभावशाली वचन वाला।

वच्चक–वि. [सं. वाचक] लिखी हुई लिखावट को ठीक ढंग से पढ़ कर सुनाने वाला। बांचने वाला, पढ़ने वाला।

रू. भे.—वच्चक।

वच्चणौ, वच्चबौ–क्रि. स [स. व्रज्, प्रा. वच्च्] १ जाना, गमन करना, यात्रा करना।

उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीह तित्थ जां घरि पहुच्चई। मणिचूडह भित्तह भयणि राउ एकु परिहरीउ वच्चई। —पं. प. च.

२ निर्वासित करना। होना।

३ देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)

उ०—आ सुणतां आलोचिया, 'सोनंगर' दुरगेस।' 'अजन' रहै, सच्चे जतन, वच्चे मुरधर देस। —रा. रू.

वच्चणहार, हारौ (हारी), वच्चणियौ—वि०।

वच्चिओड़ो, वच्चियोड़ो, वच्च्योड़ो—भू० का० कृ०।

वच्चीजणौ, वच्चीजबौ—कर्म वा०।

वच्चन—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—जेता बोल बोलै तेता दे संभाळ ली, वच्चने वच्चने दिए हत्तु वाळी। —ना. द.

वच्चाळइ—देखो 'विचै' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देसै बीस वसाळ। ऊंचै थळइ ज एकलौ, वच्चाळइ एवाळ। —ढो. मा

वच्चियोड़ो–भू. का. कृ.—१ गया हुआ, गमन किया हुआ, यात्रा किया हुआ, २ निर्वासित।

३ देखो 'बचियोड़ो' (रू. भे.) —(स्त्री. वच्चियोड़ी)

वच्छ—१ देखो 'वत्स' (रू. भे.)

उ०—१ सदा मिळै विल स्याळ रै, बच्छ पुच्छ खुर चाम। मिळै गयां म्रगराज यह, गज रद मोती-ग्रांम —बां. दा.

उ०—२ तूं तो गंलो है, बच्छी तो इयां ही बचियो-खुचियो दूध चूंघ लेती अर घास-फूस खा लेती। —बरस गांठ

उ०—३ बच्छा वल्लह तुम तणो, गिरुई रिद्धि समेउ। —स्त्रीपाल रास

२ देखो 'वक्ष' (रू. भे.)

उ०—रही प्रतच्छ रच्छसी, दुगच्छ गच्छ दच्छबनी। लगें विपच्छ लच्छ पें, भुजाग बच्छ मच्छनी। ऊ. का.

बच्छड़ो—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. बच्छा, वच्छो, बच्छड़ी)

बच्छनाग बच्छनाभ—देखो 'वत्सनाभ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ मुगट कछी सुमाग, ज बाधिया बच्छनाग। बवकसमी बेलारो लंग बगसी खंघारो। —गु. रू. बं

उ०—२ अमरकंद आदूं अलां, सूरज रोम रताल। बच्छनाग वाकुंभीयां, भेखागारी भालि। —मा. कां. प्र.

बच्छर, बच्छरी—देखो 'वत्सर' (रू. भे)

उ०—नीपनउ नयर नादउद्रि बच्छरी ए चऊददहोत्तर ए। तंदुलवेयालीय सूत्र माभिला ए भव म्मिहि ऊधरया ए। —पं. पं. च.

बच्छळ, बच्छल—देखो 'वत्सल' (रू. भे.)

उ०—१ वर रा दियण जगत रा बच्छळ। नर रा रूप नमो रगुनाथ। —र. रू.

उ०—२ जयउ जयउ जगदीस्वरी, आनंदि आरत्रि। वकता स्रोता बच्छली, तू थाए त्रय-मात्रि। —मा. कां. प्र.

बच्छळता—देखो 'वत्सळता' (रू. भे.)

उ०—वंसी नै आंवतो देख' र गाय हुर हुर करती अर बै'री आंखियां में सरळता बच्छळता अर करुणा री मिळावट रा भाव साफ प्रकट हुता। बरसगांठ

बच्छि—देखो 'वत्स' (रू. भे)

उ०—जीव-विना जिम देहुड़ी, वारि-विना जिम मच्छि,पुरुष विना तिम पदमिनी, साचूं संभलि बच्छि। —मा. कां. प्र.

बछ—१ देखो 'वत्स' (रू. भे.)

उ०—१ सुणि माधव मोरू बछ तुं, कांम कंदला पेय, माई इणि परि ऊचरइ, मइ करि घरिया वेय। —मा. कां. प्र.

उ०—२ डोकरी दळ छाड़ि छूटी, गई दांणव पासि। मांहरू प्रांण म जांणि मूरख, बछ वहिलूं न्हासि। —रूकमणि मंगळ

उ०—३ खूंप पराक्रम देखिने, विजयसेन राजान। तब बोल्यौ बछ आपणो, प्रगटो रूप बलवांन। —स्रीपाल रास

२ देखो 'वक्ष' (रू. भे.)

उ०—उरध लिलाड़ नीर भव आंखें, नाक कीर छिब न्यारी। दंत भुजा बछ दीर धीर धर, उर तसवीर उतारी। —ऊ. का.

३ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

बछक—देखो 'वत्सक' (रू. भे.)

उ०—पौहती सुरग एम करि पौरिस, जगत विख्यात ब्रहवळ री जस। न्रप जे सुत वरकिय कुळ नाइक, बछक वच्छ ते सुत वरदाइक। —सू. प्र.

बछड़ो—देखो 'वत्स' (अल्पा, रू. भे.)

(स्त्री. बछड़ी)

बछचोर—सं. पु. [स. वत्स=बछड़ा+चोर] ब्रह्मा। (डिं. नां. मा.)

रू. भे.—बछचोर,

बछबारस—सं. स्त्री [सं.वत्स-द्वादशी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की द्वादशी जिस दिन स्त्रियें बछड़े सहित गाय की पूजा करती हैं। वि. वि. इस दिन प्राय: मोठ व बाजरी का खाना ही खाया जाता है गेहूँ का नहीं।

रू. भे.—बछवारस।

बछर—देखो 'वत्सर' (रू. भे.)

उ०—बोल्या हिव बछर पूरा चोपन लाख सांमी मुनि सुव्रत हुआ सूत्रे साख। —ध. व. ग्रं.

बछराज—देखो 'वत्सराज' (रू. भे.)

बछरि—देखो 'वत्सर' (रू. भे.)

उ०—तेरह नउया एम जांणि जिण पउम गणीसर, लद्ध नांम जिनलबद्ध सूरि चहुदय सय बछरि। —ऐ. जै. का. सं.

बछळ—देखो 'वत्सळ' (रू. भे.)

उ०—भगत बछळ ब्रद ताहरो, सब के सिरजनहार, संकट मेटो सांमजी, स्रवणां सुणो पुकार। —गज उद्धार

बछाणो, बछावो—देखो 'बिछाणो, बिछावो' (रू. भे.)

उ०—आसाढ़ उमय्या मेह, गया पंथि आणणि गेह। हूं पणि जोउं प्रियु वाट, खांति बछाउं खाट। —सं. कु.

बछाणहार, हारो (हारी), बछाणियो—वि०।

बछायोड़ो—भू० का० कृ०।

बछाईजणो, बछाईबो—कर्म वा०।

बछायत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

बछायोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. वछायोड़ी)

वछावणौ, वछावबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछावौ' (रू. भे.)

वछावणहार, हारौ (हारी), वछावणियौ—वि०।

वछाविय्रोड़ौ, वछावियोड़ौ, वछाव्योड़ौ भू० का० कृ०।

वछावीजणौ, वछावीजबौ—कर्म वा०।

वछावत—देखो 'बिछायत (रू. भे.)

वछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछावियोड़ी)

वछूटणौ, वछूटबौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू भे.)

उ०—दल लेई जगनीक नरेसर, समरथ सांम्हउ ग्राविउ। बांणावली बिहुं दले वछूटी, इण परि अंबर छायउ। —हीराणंद सूरि

वछूटियोड़ौ—देखो बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वछूटियोड़ी)

वछेक—देखो 'बिमेस' (रू. भे.)

उ०—वदै दहुवै घड़ देखि **वछेक**, एको भड़ 'ऊदक' ऊद ग्रनेक।
—सू. प्र.

वछेदणौ, वछेवबौ—देखो 'विच्छेदणौ, विच्छेदबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सवां कमल नी इच्छा करइ, भीमसेनु तउ वनि-वनि फिरइ। प्रसवण देखी बोलइ राउ, भीम पासि **वछेविह** जाउ।
—पं. पं. च.

उ०—२ सतीय बेउ छइं कारणि रही, इंद्रह ग्राइसु तु तुम्ह कही। मेलहुउ पंडव वडइं **वछेवि**, विणु हथियारह बांधा भेदि। —पं. पं. च.

वछेवियोड़ौ—देखो 'विच्छेदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछेदियोड़ी)

वछेर—देखो 'बछेरौ' (मह., रू. भे.)

उ०—**वछेर** केतलं सवागि, फेरक फरावतं, नटंस नाटक विधांन, साफना सफावतं।
—सू. प्र.

वछेरियौ—देखो 'बछेरौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वछेरौ—देखो 'बछेरौ' (रू. भे)

उ०—१ विसनदास लेजाय नै घोड़ी बोर नै घोड़ौ दिखायौ। वरस १ नू व्याई। **वछेरौ** जायौ। —नैणसी

उ०—२ लोहां लकड़ा चांमड़ां, पहला किसा वखाण, वहू **वछेरा** डीकरा, नीमटियां परवांण। —ग्रज्ञात

(स्त्री. वछेरी)

वछोड़णौ, वछोड़बौ—देखो 'विछोड़णौ, विछोड़बौ' (रू. भे.)

वछोड़ियोड़ौ देखो 'विछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछोड़ियोड़ी)

वछोड़णौ, वछोड़बौ—देखो 'विछोड़णौ, विछोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—सोसइ सइरु महातपि, ग्रातपि रहइ गंभीर। मोह तणा जगबंधव, बंध **वछोडइ** धीर। —जयसेखर सूरि

वछोहणौ, वछोहबौ—देखो 'विछोहणौ, विछोहबौ' (रू. भे.)

उ० जइ करवत सिर ताहरइ, दीजत सिरजणहार। वर **वछोहां** साजणां रे, तउ तउ जांणत सार। —हीराणंद सूरि

वछोहियोड़ौ—देखो 'विछोहियोड़ौ (रू भे.)

(स्त्री. वछोहियोड़ी)

वछौ—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

२ देखो 'बच्चौ' (रू भे.)

उ०—रोयती य नृप वधूग्र निवारी, वछि रोयसि म मइं तूं वारी।
— सालि सूरि

(स्त्री. वछि, वछी)

वजंतरी, वजंत्री—देखो 'बजंत्री' (रू. भे.)

वजंत्र—स. पु. [सं. वज्र] कुलिश, वज्र।

वज—सं. स्त्री. [वजम्र] १ शरीर की बनावट, रचना।

२ बनावट का ढंग, प्रणाली, रीति।

३ ग्रवस्था, दशा, हालत।

४ देखो 'बज' (रू. भे.)

वजड़—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—खोल्या खोल्या **वजड़** कमाड़। —लो. गी.

वजजंत्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

वजण—१ देखो 'बाजण' (रू. भे.)

उ०—सरण ग्रसरण ग्रदण साफण, टकर वण किय **वजण** दिन, तिण वार तेर विसाळ। —सू. प्र.

२ देखो 'वजन' (रू. भे.)

वजणौ, वजबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कठै **वजै** वडबोर, कठै झाड़ी मोटोड़ी। कठै बोरटी नांव, वणी देवा री छोड़ी। —दसदेव

उ०—२ काळवी कियौ 'पाल' विनौ कजियौ, वसुधा पर नाम घणौ **वजियौ**। —पा. प्र.

उ०—३ **वजि** म्रदंग चंग रंग उपग वारंग, ग्रनंग छवि चंग उमंग ग्रग ग्रग। —सू. प्र.

वजणहार, हारौ (हारी), वजणियौ—वि०।

वजिग्रोड़ौ वजियोड़ौ, वज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बजोजणो बजोजबो—भाव वा० ।

बजन–स .पु. [फा॰ वज्न:] १ बोझ, भार ।

२ भार का परिमाण, तौल ।

३ भारीपन, गुरुता ।

४ महत्व या मान का सूचक ।

उ०—यह सिफत कुतबुदीन साहजादे की पढ़ै । बहुत ही **बजन** सुख से बढ़ै । —कुतबीदीन साहजादे री वात

५ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

६ दबाव, दाब ।

रू. भे.—बजन, वजरा ।

बजनी–वि. [फा॰ वज्नी] १ जिसमें वजन हो, भार हो, भारयुक्त, बोझिल ।

२ जिसमें अधिक बोझ या भार हो, गुरुतर ।

३ ठोस

४ महत्वपूर्ण ।

५ गभीर, महान ।

बजरंग–वि. [सं. वज्रांग] १ जिसका शरीर वज्र के सामान कठोर व मजबूत हो, सुदृढ़ ।

उ०—१ अति सुघट पौड़ **बजरंग** ओप, अय पाक उलट चव जव अनोप । —रा. रू.

उ०—२ वरियांम जर्ण जरा बाजतौ, जोधपुरां जोधहपुरौ । **बजरंग** हुऔ हरामत वरि, भलौ 'भीम' कल्याण रौ । —गु. रू. ब

२ धूल से लथ पथ ।

सं. पु. [स॰ वज्र-अंग] पवनसुत हनुमान का नामान्तर । (अ मा)

रू. भे.—बजरंग, बजरंगी, बजरअंग, बजरअंगी, बज्रंगी, वजरंगी. वजरांगी, वज्रंगी, वज्रअंगी, वज्रांग, वज्रांगी ।

बजरंगबळी, बजरगबली—देखो 'बजरंगबळी' (रू. भे)

बजरंगो—देखो 'बजरग' (रू. भे.)

बजर–सं पु. [फा॰ फजर] १ प्रातः काल, प्रभात ।

२ देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—१मचियै काकळ मदत री, वीर न देखै वाट । एक अनेकां सूं हिचै, छाती **बजर** कपाट । —बा. दा.

उ०—२ जरदैतां ओरे असि जाऊं, बजर घजर घरा गजर बजाऊं । —सू. प्र.

उ०—३ दांतूसळ बजर घजर जमदाढां, वाढां ऊगाढा विहर । असपति नजर भलौ आफळियौ, कुंजर नै नाहर कवर । —लिखमीदास गाडरण

उ०—४ सुरतांरा हुऔ भय भीत सपेल,गुड़िया खांन सू पड़ियौ गाढ़ । 'अमर' तणा भुज हूंता अंबर, जांणै बजर पड़ी जमदाढ़ । —केसोदास गाडण

बजरतुंड—देखो 'वज्रतुंड' (रू. भे.) (डि. को.)

बजरदंड—देखो 'वज्रदंड' (रू. भे.)

बजरदंत—देखो 'वज्रदंत' (रू. भे.) (अ. मा.)

बजरदंती—देखो 'वज्रदंती' (रू. भे.)

बजरधर—देखो 'वज्रधर' (रू. भे.)

बजरनख—देखो 'वज्रनख' (रू. भे.)

बजरपांण, बजरपांणि, बजरपांणी—देखो 'वज्रपांरिण' (रू. भे.)

बजरबांहु—देखो 'वज्रबाहु' (रू. भे.)

बजरमूठी—देखो 'वज्रमुस्टि' (रू. भे.)

बजरवारक–वि. [सं. वज्रवारक] वज्रप्रहार को रोकने वाला ।

सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

बजरसार—देखो 'वज्रसार' (रू. भे)

बजरांगी देखो 'बजरंग' (रू. भे.)

बजराक, बजराग—देखो 'बजराक' (रू. भे.)

बजरायुध देखो 'वज्रायुध' (रू. भे.)

बजरासण, बजरासन—देखो 'वज्रासन' (रू. भे.)

बजरेसुरी, बजरेस्वरी—देखो 'वज्रेस्वरी' (रू. भे)

बजरोळी—देखो 'वज्रोळी' (रू. भे.)

बजवजणो, बजवजबो–क्रि. स. [स. भज्] १ प्रभाव या प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रसिद्धि पाना ।

उ०—बारा बुध न ऊपजी, सोळां कळा न होय । बीसां न **बजवजियौ** भळपरा वाट न जोय । —अज्ञात

२ वैभव प्राप्त करना ।

बजवजियोड़ो—भू. का. कृ.—१ प्रभाव, प्रतिष्ठा, व प्रसिद्धि प्राप्त किया हुआ । २ वैभव प्राप्त किया हुआ ।

(स्त्री बजवजियोड़ी)

बजह–सं. स्त्री. [अ. वज्ह] १ कारण, हेतु, निमित्त ।

२ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन ।

३ कोई असाधारण परिस्थिति ।

४ मुखाकृति, चेहरा ।

५ प्रकृति, तत्व ।

रू. भे.—बजह, वजं ।

बजाई—देखो 'विजाई' (रू. भे.)

बजाड़णो, बजाड़बो—देखो 'बजाणो, बजाबो' (रू. भे.)

उ०—पाट हुतौ तिण प्रवाड़ा पाटपत, **वजाड़ै** वार संसार वाजा। आप री राल रज सुरग वसियौ "अना," राज रिघ भोगवे महाराजा।
—द. दा.

वजाड़णहार, हारौ (हारी), वजाड़णियौ—वि०।
वजाड़िग्रोड़ौ वजाड़ियोड़ौ, वजाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
वजाड़ीजणौ, वजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वजाड़ियोड़ौ—देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वजाड़ियोडी)

वजाणौ, वजाबौ—देखो 'बजाणौ, बजावौ' (रू. भे.)

उ०—जिण 'अवरंग' तणा दळ जीता, आतम सकति **वजाई** असमर। मारि बहादरसाह मनाया, जोरै मुलक लिया जोरावर।
—सू. प्र.

वजाणहार, हारौ (हारी), वजाणियौ—वि०।
वजायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वजाईजणौ, वजाईजबौ—कर्म वा०।

वजायोड़ौ—देखो 'बजायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. वजायोड़ी)

वजावणौ, वजावबौ—देखो 'वजाणौ, वजावौ' (रू. भे.)

उ०—१ बेण वांस वांसळी **वजावण**। घिनी मोहन राधिका घवण।
—ह. नां. मा.

उ०—२ 'विजावत' उप्रमते असि वाग। खत्री गुर 'क्रन्न' **वजावत** खाग।
—सू. प्र.

वजावणहार, हारौ (हारी), वजावणियौ—वि०।
वजाविग्रोड़ौ, वजावियोड़ौ, वजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वजावीजणौ, वजावीजबौ—कर्म वा०।

वजावियोड़ौ—देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वजावियोड़ी)

वजित्र, वजित्रि—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरंग वणाय गजराज चढ़ि, **वजित्र** अनेक वजाविया।
—सू. प्र.

उ०—२ डोहळै मीर घड़ा गज डंबर, **वजित्रि** नर हैमर कर वेस। आऊगति हिंदुआं ऊपरि, दस संहसि नवसहसउ देस।
—दूदौ

वजियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वाजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वजियोड़ी)

वजीफादार—वि. [फा. वजीफ़ःदार] जिसको वजीफा या सहायता मिलती हो, सहायता-वृत्ति पाने वाला।

वजीफौ—सं. पु. [फा. वजीफ़ः] १ वह आर्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्वानों, छात्रों, दीनों व बिगडे हुए रईसों आदि को भरण पोषण के निमित्त दी जाती है।
२ निवृत्ति, वेतन, पेंशन।
३ छात्र वृत्ति।
४ नियम या श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला मंत्र-पाठ, जप।

वजीर—सं. पु. [फा.] १ बादशाह का प्रधान, शासक का मुख्य सलाहकार, अमात्य, मन्त्री, प्रधान, सचिव, दीवान।

उ०—१ हुकम **वजीरां** हुवा, करौ लसकर अधिकारां। तर कलमां दफतरां, हुवै अन्नेक हजारां।
—सू. प्र.

उ०—२ पंच वखत निम्माज ताज कुनहराह सोहइ। खोजा खांन **वजीर** मलिक उंबरे मन मोहइ।
—व. स.

२ राजदूत।
३ रावणा-राजपूतों का एक नाम। (मा. म.)
४ शतरज नामक खेल का एक मोहरा जो बादशाह से छोटा व अन्य मोहरों से बड़ा होता है।
रू. भे.—उजीर, बजीर।

वजीरात—सं. स्त्री. [फा.] १ वजीर का पद, वजीर का कार्य।

उ०—थांहरी दियांनत सूं हूं म्हारै राज री **वजीरात** तोनूं सौंपो।
—नी. प्र.

२ वजीर का कार्यालय, कचहरी।

वजीरी—सं. स्त्री. [फा.] १ वजीर का कार्य व पद।
२ उक्त पद की नौकरी।
३ बलूचिस्तान में पाई जाने वाली घोड़ों की एक जाति।

वजुग्रात—स. स्त्री. [फा.] १ वजह का बहुवचनात्मक रूप।
२ कारणों का समूह।
रू. भे.—वजूग्रात।

वजू—सं. पु [अ. वुज़ू] नमाज पढ़ने से पहले हाथ-पांव धोने की क्रिया। (मुसलमान)

वजूग्रात—देखो 'वजुग्रात' (रू. भे.)

वजूद—सं. पु. [अ.] १ शरीर, देह।

उ०—अखाहे सिजदां कुनंद, **वजूद** रा चे कार। दादू नूर दादनी, आसिकां दीदार।
—दादूवांणी

२ सत्ता, अस्तित्व।

उ०—दादू इस्क अलह की जाति है, इस्क अलह का अंग। इस्क अल्लाह **वजूद** है, इस्क अलह का रंग।
—दादूवांणी

वर्जं—सं. स्त्री.—१ तरह, भांति, प्रकार।

उ०—सरद की चंदणी चंद्रवंसी विमलूं का उजास। रितराज के

दिवस तहां सूरज वसी कंवल् का प्रकास, इस वजं खटरितु की कीला जल्मे गुलाब की छाक । —सू. प्र

२ देखो 'वजह' (रू. भे.)

वजोग—देखो 'विजोग' (रू. भे)

उ० हर घर ध्यांन कमध हेमाळं, परिहां चाहेवा प्रभत। किसन वजोग चारणा कारण, गळियो जुजठळ राव गत। —बां. दा.

२ देखो 'वियोग' (रू भे.)

वजो—देखो 'बजो' (रू. भे.)

वजणो वजबो १ देखो 'बजणो वजबो (रू. भे)

२ देखो 'बाजणो, वाजबो' (रू. भे.)

उ०—१ जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वजउ वाउ। उम्रां लगं मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ। —ढो. मा.

उ०—२ हाथी तुरिय तुसार सार अरिम्रण उतारइ, वजइ ढोल नीसांण म्रांण जगि सघळे जांणइ । —व. स.

उ०—३ रिणमलोत रिण वजियो, मुंदर 'हरी' सुजाव। सहसा ले पड़ियो समर, घट सो लग्गा घाव। —रा. रू.

उ०—४ यां 'मधकर' हर वजिया, म्राद विसं म्रण रेह। ज्यांउलटे मेघा रवि, सिद्ध पळट्टं देह। —रा रू.

उ०—५ गुंजारव भेरियां, घनक टका-रव वजं। —गु. रू. बं.

उ०—६ वागी खग्गां वे घड़ा, ज्यां वजं घडियाळ। पाव न मडै राव पिड़, गो छडै रिण ताळ। —रा रू.

वजणहार, हारो (हारी), वजणियो—वि० ।

वज्जियोड़ो वज्जियोड़ो, वज्योड़ो—भू. का. कृ. ।

वजीजणो, वजीजबो—कर्म वा०/भाव वा० ।

वज्जपांणी वि. [सं. वज्रपाणि] १ वह 'जिसके हाथ में वज्र हो।

सं. पु.—इन्द्र ।

वज्जमयौ—देखो 'वज्रमय' [रू. भे]

उ०—रोपीउ पवरिणहि कलपतरो, सुमिणइ कुंति दूयारि। पवणह नंदणु वज्जमयौ, भीमु सु भूयण मझारि। —पं पं. च.

वज्जया—देखो 'विजया' [रू. भे.]

उ०—देवी दडणी देव वेरी उदंडा, देवी वज्जया जया दैतां त्रिखंडा। —देवि.

वज्जर—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—१ करा खग तोल लड़े कयकांण, पड़ं मनु वज्जर सोस, पठाण। —पे. रू.

उ०—२ वट्टा वट्टा गोळा वज्जर। धूम्रां-धार उठंदा धोमर। —गु. रू. बं.

वज्जरणो, वज्जरबो—क्रि. स. [सं. वज्जरं] १ कहना, बोलना।

२ क्रोध में बड़बड़ाना ।

उ०—काळ रूप जम रूप, ग्रहे गयणागक उडळ। वासंग बळ वज्जरं, भुज्ज धूणो वीजूजळ। —गु. रू. ब.

वज्जरणहार हारो (हारी), वज्जरणियो—वि० ।

वज्जरिओड़ो, वज्जरियोड़ो, वज्जरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वज्जरीजणो, वज्जरीजबो—कर्म वा० ।

वजरणो, वजरबो, बज्जरणो, बज्जरबो—रू० भे० ।

वज्जरियोड़ो—भू. का. कृ १ कहा हुआ, बोला हुआ। २ क्रोध में बड़बड़ाया हुआ।

(स्त्री. वज्जरियोड़ी)

वज्जियोड़ो—१ देखो 'बजियोड़ो' (रू भे.)

२ देखो 'बाजियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. वज्जियोड़ी)

वज्रंगी—देखो 'वजरंगी' (रू. भे)

उ०- वज्रंगी किंवाड़ मू मेवाड़ भुजां डंडां वंका, वरूथां बिभाड वीरभद्र सो बेछाड़। मातगां पछाड़ सेर म्रोछाड़ म्रहाड़ मेर, पिंडगो पहाड मेर सावळो पहाड़। —हुकमीचंद खिड़ियो

वज्रंद—वि. [सं. वज्र+इंद्र] १ जबरदस्त, जोरदार, प्रचंड भयंकर।

उ०—अरांवां तणो असबाब अपणावियो, भट किलकता तणो भागो। म्राड रोपी वज्रंद भीक वागो असभ, 'लीक' टोप पटक पथ लागो। —कविराजा बांकीदास

२ महान ।

वज्र—वि. [सं] १ बहुत अधिक कठोर, कड़ा, सख्त।

२ अत्यन्त मजबूत, दृढ।

३ तीव्र, उग्र ।

स. पु.—१ इन्द्र का प्रधान शस्त्र जो दधीचि ऋषि की हड्डियों से बना हुआ माना जाता है। (पौराणिक)

पर्या—अतोट, अतोल, असनी, इंदरससतर, इंद्रावध, कुलिस, खटकूणी खयपत्रगिर, खळखाळ, गेत्रभेदी, जोतसुभ्र, दंभोळ दधीचास्थी, पवि, पुरहूतजय, भिदुर ।

२ विष्णु का सुदर्शन चक्र। (नां. मा)

३ कोई भी विनाशक शस्त्र, हथियार ।

उ०—मुग्दर, लगुड, गदा दड भिडमाल गांजीव विस्फोटक वज्र तरुवारि। —व. स.

४ बरछा, भाला ।

५ शंकर का शस्त्र, त्रिशूल ।

६ तलवार।

७ विद्युत, बिजली।

८ फौलाद नामक लोहा, स्टील।

उ०—चढ़ै खळ होक तुरी उर चोट। कळाहळ झूस हुवै व्रज कोट।
—सू. प्र.

९ हीरा। (अ. मा.)

उ०—आभूखरण वज्र तरण अथाहै। माथातरणा हार गळि माहै।
—सू. प्र.

१०—हीरा काटने का औजार।

११—एक खंभा जिसके मध्य भाग होते हैं। (वास्तु-विद्या)

१२ चन्द्रमा की एक बनावट।

१३ व्यूह रचना विशेष।

१४ विश्वामित्र का एक पुत्र, वज्रनाभ।

१५ श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का पुत्र जिसकी माता का नाम रोचना था।

१६ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से नवां योग।
(फलित ज्योतिष)

१७ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से पन्द्रवें योग का नाम।
(फलित ज्योतिष)

१८ कोकिलाक्ष नामक वृक्ष।

१९ सफेद कुश

२०—अकलबीर नामक पौधा।

२१ थूहड़, सेंहुड़।

२२ वज्रपुष्प।

२३ त्रिकोण। *

रू. भे.—वजड़, बजर, बजरि, बजरी, बज्ज, बज्जर, बज्र, वजड़, वजर, वज्जर, वज्रउ, वज्रह।

वज्रअंगी—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

उ०—एम गंधवाह रै प्राक्रमीस वज्रअंगी। जेठो बीस वांहरै अनम्मी इंद्रजीत —सनमानसिंघ हाडा री गीत

वज्रउ—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०–स्फुलिंग सहस्र वरसतउ ज्वाला ना सहस्र, झरतउ, देदीप्यमांन, दक्षरण हस्ति वज्रउ नइ वउरासी, सहस्र प्रति स्वच्छ निरमल वस्त्र।
—व. स.

वज्रककट—सं. पु. [स. वज्रककूट] १ हनुमान। (अ. मा., नां. मा.)

२ हीर करणी।

३ कोकिलाक्ष वृक्ष।

४ थूहड़-सेहुड़।

वज्रकंटशाल्मली—सं. पु. [सं. वज्रकंटशाल्मली] अट्ठाईस नरकों में से एक नरक। (पौराणिक)

वज्रक—सं. पु. [सं.] १ हीरा।

२ वज्रक्षार।

३ सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक जो सूर्य से तेइसवां नक्षत्र है।
(फलित ज्योतिष)

४ चर्मरोग के लिये एक तेल विशेष। (वैद्यक)

वज्रकपाट—सं. पु. [सं.] दरवाजे पर लगे वे कपाट जो वज्र के समान दृढ़ और मजबूत हो।

रू. भे.—बजड़कपाट, बजड़किवाड़, बजरकपाट, वजरकिवाड़।

वज्रकीट—सं. पु. [सं.] पत्थर में छेद कर देने वाला कीड़ा। बनरोहू।

वज्रकूट—सं. पु. [सं.] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

वज्रकेतु—स. पु [सं.] नरक का राजा, एक राक्षस। (पौराणिक)

वज्रक्षार—सं. पु. [सं] वैद्यक का एक रसायन योग, जो उदर रोगों में काम आता है।

वज्रगोप—सं. पु. [सं.] वीरबहूटी नामक कीड़ा, इंद्रगोप।

वज्रघट—सं. पु. [सं] लंका का एक राक्षस।

उ०—कर सूळ विकटह सुभट कौचट, रांम थट झट झपट रौंझट। पछ्छक वज्रघट कुघट ऊपट, रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट।
—सू. प्र.

वज्रतुंड—सं. पु. [सं] १ गरणेश।

२ गरुड़।

३ गिद्ध।

४ मच्छर।

५ थूहड़-सेंहुड़।

रू. भे.—बजरतुंड, वज्रतुंड, वजरतुंड।

वज्रदंड—सं. पु. [सं] इंद्र द्वारा अर्जुन को प्रदान किया जाने वाला एक अस्त्र।

रू. भे.—वजरदंड।

वज्रदंत—सं. पु. [सं.] १ वन्य-सूकर, सूअर।

२ चूहा।

रू. भे.—बजरदत, वजरदंत,

वज्रदंती—सं. स्त्री. [सं.] १ औषधि विशेष।

२ उक्त औषधि का पौधा।

रू. भे.—वजरदंती

वज्रधर—वि. [सं.] वज्र या हथियार धारण करने वाला।

सं. पु.—१ इन्द्र।

२ महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध (बौद्ध)।

रू. भे.—वज्रधर, वजरधर।

वजूधार–स. पु. [सं. वज्रधारिन्] इन्द्र ।

वजूनख–सं. पु. [सं.] नृसिंग ।

रू. भे.—वजरनख ।

वजूनाभ, वजूनाभ्र–सं. पु. [स. वज्रनाभ] १ श्री कृष्ण का चक्र ।

२ एक सूर्य वंशी राजा ।

उ०—बाळ सुतन नृप सिथळ उवंबर । **वजूनाभ्र** जिण सुतण भुपबर । —सू. प्र.

३ वज्रपुर नगरी का एक राक्षस राजा जो निकुंभ का भाई था । यह कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न के हाथों से मारा गया था ।

४ एक दुष्ट राक्षस जो ब्रह्मदेव के हाथ में स्थित कमल के प्रहार से मारा गया ।

५ स्कंद का एक सैनिक ।

६ प्रद्युम्न का एक पुत्र ।

७ विश्वामित्र का पुत्र ।

रू. भे.—वज्रनाभ ।

वजूपांनि–सं. पु. [सं. वज्रपाणिन्] १ इन्द्र ।

२ ब्राह्मण ।

३ एक देव-योनि । (बौद्ध)

रू. भे.—वजरपांण, वजरपांणि, वजरपांणी ।

वजूपात–स. पु. [सं.] १ विद्युत या बिजली का आकाश मे गिरने का आघात ।

उ०—तठै करि खीज वहै तरवार, अकाळिग बीज तणी उणिहार । गजां करि खडळ तंडळ गात, पवि जिम कीध हुवा **वजूपात** । —सू. प्र

२ उक्त प्रकार से बिजली के गिरने से होने वाला क्षय, क्षति ।

३ कोई भयंकर आपत्ति, दुःख, मुसीबत ।

४ शस्त्र-प्रहार ।

उ०—गुडै गज्ज प्राहाड़, टूंक ढहिया कुंभाथळ । **वजूपात** करमाळ, गुडै तूटैं कबू-सळ । —गु. रू व

५ दुर्घटना ।

रू. भे.- बज्रपात,

वजूपोस–स. पु.—कवचधारी योद्धा ।

उ०—जोगावत 'ऊदल' ऊभल जोम । पछट्टत खाग हणी **वजूपोस** । बिहारियदास अभंग अजागि । लड़ै सुत 'वीरम' अंबर लागि । —सू. प्र.

वजूप्रांणघातक–सं. पु.—एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

वजूबाहु–स. पु. [स.] १ इन्द्र ।

२ रुद्र ।

३ अग्नि ।

४ राम की सेना का एक वानर जिसका कुम्भकरण ने भक्षण किया ।

रू. भे.—वजरबाहु ।

वजूभाखी–वि. [सं. वज्र+भाषिन्] अपने वचनों पर कायम रहने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

वजूभास–वि.—वज्र के समान शरीर वाला, दृढ़ और मजबूत ।

रू. भे.—वज्रभास ।

वजूमय–वि. [सं.] १ मजबूत और दृढ़, वज्र के समान ।

उ०—तरै देवी जी हुकम कियौ—एक थारी पाकी ईंट, एक मांहरै नांवै काची ईंट, इण भांत री गढ़ कराय, **वजूमई** दुरंग अविचळ हुसी । —नैणसी

२ प्रबल, शक्तिशाली ।

वि.—हीरे का, हीरे सम्बन्धी ।

रू. भे.—वज्जमओ ।

वजूमाग–सं. पु. [सं. वज्र-मार्ग] आकाश, अम्बर, व्योम । (डिं. को.)

वजूमुस्ठि–स. स्त्री. [सं. वज्रमुष्ठि] १ इन्द्र ।

२ तीर चलाने समय की एक विशेष हस्त मुद्रा ।

वि.—वज्र के समान मुष्ठिका वाला ।

रू. भे.—वजरमूंठी ।

वजूविसन–सं. पु [स. विष्णु+वज्र] सुदर्शन चक्र । (अ. मा.)

वजूसरीर–वि. [स. वज्र-शरीर] जिसका शरीर वज्र के समान दृढ़ व मजबूत हो, शक्तिशाली, ताकतवर ।

उ०—गयणह वाणी आपीयउ आगइ **वजूसरीर** । वाधइ पंचइ चंद जिम पडव गुण गभीर । —पं. पं. च.

वजूसार–वि. [सं.] अत्यन्त कठोर ।

सं. पु.—हीरा ।

रू. भे.—वजरसार ।

वजूसोह–स. पु.—वज् की चोट या प्रहार ।

वजांग—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

वजांगी–सं. स्त्री. [स.] १ चोट पर लगाई जाने वाली हडजोड़ नाम की लता ।

२ देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

वजाग, वजाग्नि—देखो 'वजराक' (रू. भे.)

उ०—१ 'अम्मा'हर वाहत खाग उतंग । जुड़ै जिम भारथ दारुण जंग । वळोवळ नृवत रोद्र **वजाग** । भिड़ै सुजि सूर हुवै दुय भाग । —सू. प्र.

उ०—२ घड़ लाकड़ हुवै बळै हुंस घुमा, भाळ हुवो रणताळ झलू। बळगो खाग प्रभाग वैरियां, बळती प्राग बजाग 'बलू।

—केसोदास गाडण.

बजागरा-सं. स्त्री.—पृथ्वी, धरती, धरा। (डिं. नां. मा.)

बजायुध बजायुधो-सं. पु. [सं. वज्रप्रायुध] इन्द्र। (नां. मां.)

रू. भे. —वजरायुध।

बजासन-सं. पु. [सं.]योग के चौरासी प्रासनों में से एक।

२ गया में बोधितरु के नीचे की वह शिला जिस पर बैठ कर बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त की थी।

रू. भे.—वजरासण, वजरासन।

बजी-सं. पु. [सं. वज्रिन्] इन्द्र। (अ. मा.)

रू. भे.—बज्री

बजेसरी, बजेसुरी, बजेस्वरी-सं. स्त्री. [स. वज्र-ईश्वरी] १ देवी, दुर्गा। (बौद्ध)

२ शत्रुनों पर विजय प्राप्त करने का एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहिनिका भी कहते हैं।

रू. भे.—वजरेसुरी, वजरेस्वरी।

बजोळी-सं. स्त्री. [सं.] १ अंगुलियों द्वारा बनाई जाने वाली एक मुद्रा विशेष। (हठयोग)

२ नाथ सम्प्रदाय की वज्रायनी शाखा की योग साधन की एक मुद्रा जिसमें स्त्री का संयोग होना प्रावश्यक है।

वि. वि.—इस सम्बन्ध में ऐसी किंवदंती है कि साधक साधना करते समय एक साथ कई स्त्रियों का संयोग कर सकता है, लिंगेन्द्रिय द्वारा स्त्री के रज का शोषण कर सकता है, वीर्य का स्तंभन कर सकता है, इत्यादि इस प्रकार की कई चेष्टाएं कर सकता है।

रू. भे.—बजरोळी, वजरोली।

बझणो, बझबो-क्रि.प्र. [सं. भज्=प्राश्रय लेना]१ फैलना,विस्तार होना।

उ०-पाखती प्ररटां री झीगड़ि चींगरड़ि पड़ि नै रही छै। दुहारो खटाको लागिनै रहिम्रो। पाखती नीळ बझि नै रही छै।

—रा. सा. स.

२ देखो 'बझणो, बझबो' (रू. भे.)

३ देखो 'वजणो, वजबो' (रू. भे.)

४ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे.)

बझियोड़ो—१ फैला हुआ, विस्तार प्राप्त।

२ देखो 'बझियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बजियोड़ो' (रू. भे.)

४ देखो 'बाजियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बझियोड़ी)

बझौ—देखो 'बजौ' (रू. भे.)

बट—सं. पु. [सं. वटः] १ बरगद का पेड़, बड़।

उ०—१ ता मधि राजन एक बट, छांह रहतु ठहराय। सदा विराजत सारती, प्रांन-दिसा नह जाय। —गजउद्धार

रू. भे.—बट, बट्ट, बड़, बड, वड़, वड़ि, वड, वडु।

अल्पा -बड़लो, बड़ल्यो, वड़लो।

[सं. वर्त्मक, प्रा. वट्ट] अभिमान, गर्व, घमंड।

उ०—१ काय प्राडां पग प्रांण, काय कर घात कटारियां। छोगाळा छळ छाड, रांणा रावत वट तणो। —नैणसी

उ०—२ रौदां भाज उजळां रूकां, वैर वाळ उजवाळ वट। पग मलंग निरलंग श्रंग पाड़ै, भुज निरलंग निरलंग भ्रकुट। —द. दा

मुहा.—१ वट काढ़णो=अभिमान को समाप्त करना, मन की निकालना, २ वट निकलणो=घमड समाप्त होना, मन की मुराद पूरी होना। ३ वट भरीजणो=गर्व करना।

३ मर्यादा, गौरव, परम्परा, कायदा।

उ०—१ प्राकुली कुळ वट लोपिय, गोपिय रमइ रंगि। फांस केसि चांगूर ए, चूरण जे वह भगि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ ज्याग रा गीत सुण प्रीत न करी जिकै, प्रीत हद चारणां हूंत पाळी। वीत रै वाहरू हुवो जिण वार में, चीत रज रीत वट तणी चाली। —गिरवरदांन सांदू

४ गुण, धर्म।

उ०—कुळवट छोडै कांण, छतै पांण गढ़ छोडियो। रजवट रो वट रांण, छांटोही न रहियो 'चिमन'। —लक्ष्मीदांन बारहठ

५ मोड़, ऐंठन, बल।

उ० – प्रा बात कैय राजाजी गुमांन सूं मूंछयां रै वट देवण लागा

—फुलवाड़ी

मुहा.—हाथां रो वट काढ़णो=किसी को पीट कर अपने मन की निकालना।

६ शृंखला, सांकल, लगर।

७ एक वर्ग विशेष।

उ०—मांमगर कउतिगीया कुहटीया नट बट गांछा छीपा परियटा मुइ नाई तेली मोची मतूआरा बंधारा चीतारा...... —व. स.

वि. [सं. वट=शून्य] १ भयानक, भयावह।

उ०—वट वाटै घाट प्रौघटे रण वन। जळ थळ महियळ प्रजर जरै। चेलक चाड प्राप रणां रण, करणी सदा सहाय करै। —दोलो

२ देखो 'वाट' (रू. भे)

रू. भे.—बट, बट्ट।

बटकणौ, बटकबौ,—देखो 'बटकणौ, बटकबौ' (रू. भे.)

बटकियोड़ौ—देखो 'बटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बटकियोडी)

बटकी—देखो 'बाटकी' (रू. भे.)

बटकौ—१ देखो 'बटकौ' (रू. भे.)
उ०—ईतरे उमरां उपर कागला पांच आय बैठा। तद रजपूत लाकडी री बटकौ वायौ। जणी सू गाव कागला मुवा।
—पंच मार री वात

२ देखो 'बाटकौ' (रू. भे.)

बटक्कणौ, बटक्कबौ देखो 'बटकणौ, बटकबौ' (रू. भे.)

बटक्कियोड़ौ—देखो 'बटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बटक्कियोडी)

बटक्कौ—देखो 'बटकौ' (रू. भे)
उ०— वीर झटक्के वज्जिया, वे रणधीर दुबाह। अग बटक्के उडंता, मेन झटक्के साह। —रा. रू.

बटबड़—स. पु. [अनु] १ बेचेनी में धीरे धीरे बोलने या बड़बड़ाने की क्रिया या भाव।
२ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

बटगियौ—देखो 'बटगौ' (अल्पा., रू भे.)

बटणौ, बटबौ—१ देखो 'बटणौ, बटबौ' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां भीतर सू कहायौ—कुंवर ने ले आवणौ छै तो आप पधारौ नही तो कोई आवै नही। जै साहूकार नै आदमी आया री खबर हुई तो कही परदेस मेल देसी। पछै क्यों ही बटसी नही।
—पलकदरियाव री बात

उ०—२ टाकण आवै न वाघ अडोळे, दीघा वटै न कोडी दाम। अस जो उरो लियो अो "चंडै", गज दीधो काय दोधी गांम।
—ओपो आढौ

२ देखो 'बांटणौ वांटबौ' (रू. भे.)
उ०—गाय, भैंस ओर ऊटां रा घाव भरै बट नीम दे. चबसौ पांन उगाळ धोया, नव्य त्वचा मट नीम दे —दसदेव

बटणहार, हारौ (हारी), बटणियौ वि०।
बटिओड़ो, बटियोड़ौ, बटयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बटीजणौ, बटीजबौ—कर्म वा०।

बटत—देखो 'बटत' (रू. भे)

बटतर—स पु. [देशज] वैर, दुश्मनी।
उ०—नरै राजा बूझियो तो कठा सू आया, अमी कांमू बटतर छै।
--कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

बटपत्री—सं. स्त्री [स. वटपत्र] १ रामतुलसी।
[स. वटपत्रा] २ चमेली।

३ एक वनस्पती विशेष [जड़ी] जिसके रस से पत्थर फूट जाता है। पत्थर फोड़।

बटपाड़ौ—देखो 'बटपाड़ौ' (रू. भे.)
उ०—१ जम दळ बटपाड़ौ वह जासी, थासी नहीं बिगाड़ौ थारै। जगपत निस दिन नांम जपंतां, संता सारा काज सुधारै।
—र. ज. प्र.

उ०—२ बटपाड़ा धरपाड़ा वाळी आभ जड़ां नांखें ऊपाड़। कोय न गांज सके किनियांणी, झीझळियाळ तुहाळा झाड़ —बां. दा.

बटभरणौ—सं. पु.—धनुषाकार एक काष्ट का बना छोटा यंत्र जिसके मध्य के छेद में लकडी का डडा लगा रहता है, जिसकी सहायता से मोटी रस्सियों या जेवड़ी के वट दिया जाता है।
रू. भे.—बटभरणौ।

बटर—सं. पु. [स. वट+अरन् वटर:] १ चोर, डाकू।
२ बटेर पक्षी।
३ बिस्तर, बिछोना, चटाई,
४ पगड़ी।
५ मथाणी।
६ मुर्गा।
७ एक सुगध युक्त घास।

बटळणौ, बटळबौ—देखो 'विटळणौ, विटळबौ' (रू. भे.)
बटळणहार, हारौ (हारी), बटळणियौ—वि०।
बटळिओड़ौ, बटळियोड़ौ, बटळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बटळीजणौ बटळीजबौ—भाव वा०।

बटसावत्री-पूनम—स. स्त्री.—जेष्ठ मास की पूर्णिमा। इस दिन कबीर जयती भी मनाई जाती है।

बटसावत्री-व्रत बटसावित्री व्रत—सं. पु.—जेष्ठ शुक्ला त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला व्रत जिसमें तीन दिन निराहार रहा जाता है और वट की पूजा होती है।
वि. वि.—मतान्तर से जेष्ठ वदी अमावस्या को भी यह व्रत किया जाता है।

बटाउ—देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)
उ०—जु सोरभजी रै घाट थो गंगादिक आंणनै देवरै पाटण सोमइयै ऊपर चाढै, सु सातमी वार गंगोदक कावड़ भरी नै आंणतौ हुतो सु किणहेक सहर बटाउ थकौ किण हेक रे चौंतरै उतरियौ हुतौ। —नैणसी

बटाउड़ौ—देखो 'बटाऊ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मारग चालतौ एक बटाउड़ौ बोल ऊठ्यौ-तेरे मन कुछ और है करता के कछु और। —रातवासौ

बटाऊ – खरीददार ।

उ०—किसतूरी फंकी मई, केसर घटियो भाव । सह वस्तू सुहंगी थई, गयौ बटाऊ बाव । —आसो बारठ

२ देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)

उ०—रोतां मग रोवराबीया, वाट बटाऊ लोक। जातां जीव वहै नहीं, वीछड़वा नौ सोक । —स्रीपाल रास

बटाऊड़ौ—देखो 'बटाऊ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सेवै नर सदीना मुरधर, सदा नीरोगी ही रवं । बूठै जांरी बातड़ी नै, बगत बटाऊड़ा कवं । —दस देव

बटाड़णौ, बटाड़बौ—देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

बटाड़ियोड़ौ —देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बटाड़ियोड़ी)

बटाणौ, बटाबौ—देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

बटाणहार, हारौ (हारी), बटाणियौ—वि० ।

बटायोड़ौ,—भू० का० कृ० ।

बटाईजणौ बटाईजबौ—कर्म वा० ।

बटायोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बटायोड़ी)

बटारक-सं. स्त्री. [सं.] डोरी, रस्सी ।

रू. भे.—बटारक ।

बटाळ – देखो 'बटाळौ' (मह., रू. भे.)

(स्त्री. बटाळी)

बटाळणौ, बटाळबौ देखो 'विटाळणौ, विटाळबौ' (रू. भे.)

बटाळणहार, हारौ (हारी), बटाळणियौ—वि० ।

बटाळिग्रोड़ौ, बटाळियोड़ौ, बटाळघोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बटाळीजणौ, बटाळीजबौ—कर्म वा० ।

बटाळौ–वि. [स्त्री. बटाळी] दुष्ट, नीच, धूर्त ।

बटाव—देखो 'वाट' (रू. भे.)

उ०—तेजसी तासली लेने डेरं आयौ । रावजी बुरौ मांनियौ । बास छूटी, बटाव मांहै लोग कहै छै-थाळी तेजसी ली-सु इण भांत लीधी । —राव रिड़मल री बात

बटावणौ, बटावबौ - देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

उ०—सब कोइ प्रीत बटावते, सब कोइ करते भाव । सम्मन वै कुण रू'खड़ा, ज्यां न झकोळै वाव । —सम्मन

बटावणहार, हारौ (हारी), बटावणियौ—वि० ।

बटाविग्रोड़ौ, बटावियोड़ौ, बटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बटावीजणौ, बटावीजबौ —कर्म वा० ।

बटावियोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बटावियोड़ी)

बटाबू—देखो 'बटाऊ (रू. भे.)

उ०—१ जमला जोबन फूल है, फूलत ही कुम्हलाय । जांण बटाबू पंथ सिर, बैठे भी उठ जाय । —जमाल

उ०—२ मस्तक लीनौ लूंग, धरण री धूड़ ठरावै । खेजड़ खेबा खाय, मरु में छांन छवावै । बगत बटावां हेत, खेत किरसांणां तांई, बन में पसवा प्रेम, हमीरां धांम हुवाई । —दसदेव

बटियोड़ौ—देखो 'बटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बटियोड़ी)

बटियौ—१ देखो 'बाटियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाटौ' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो वटभरणौ ।

बटी–सं. पु. [सं.] १ रस्सी, डोरी ।

२ गोली या टिकिया ।

३ उपवन, बगीचा, उद्यान ।

रू. भे.—बटी ।

बटु, बटुक–सं. पु. [सं. वटुकः] १ बालक, लड़का ।

२ ब्रह्मचारी, माणवक ।

३ धर्म शास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी, छात्र ।

४ एक भैरव ।

वि —मूर्ख मूढ़ ।

रू. भे.—बटुक, बड़ुया, बटुय ।

बटूकणौ बटूकबौ—देखो 'बटूकणौ, बटूकबौ' (रू. भे.)

उ०—कंथा करक न छोडियै, हिरण किसा घी खाय । आक बटूकै, पवन भखै, घोड़ां आगळ जाय । —अज्ञात

बटूकणहार, हारौ (हारी), बटूकणियौ—वि० ।

बटूकिग्रोड़ौ, बटूकियोड़ौ, बटूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बटूकीजणौ, बटूकीजबौ—कर्म वा० ।

बटूकरण-सं. पु.—उपनय संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार । (डि. को.)

रू. भे.—बटूकरण ।

बटूकियोड़ौ—देखो 'बटूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बटूकियोड़ी)

बटेबाहू—देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)

उ०—इकि डोकरि तिणि दीसि पांच पूत्र इकि बहूय सउं । कुंती नइ भावासि बटेबाहू बीसमियां । —पं. पं. च.

बटंत—देखो 'बटाऊ' (मह., रू. भे.)

बटो—देखो 'बट्टौ' (रू. भे.)

बट्ट—१ देखो 'वाट' (रू. भे.)

उ०—अति भांगंइ ऊमाहियउ, वहइज पूगळ बट्ट। श्रीजइ पुहरि उलांघियउ, भाडवळा रउ घट्ट। —ढो. मा.

ऊ०—२ कूच नगारा वज्जिया, गिर गज्जिया गहीर। समंद उलट्टं जिम सजळ, बट्टं लगं वहीर। —सू. प्र.

२ देखो 'वट' (रू. भे.)

उ०—कट वट्ट गयो खग भट्ट कहूं, रण वट्ट घणा भट पास रहूं। घर बट्ट पहट्ट गहट्ट घड़, पिड़ खंड विहंड पमग पड़ं। —पा. प्र.

बट्टि—देखो 'वाट' (रू भे.)

उ०—हरि हथीग्रार हलावतां, मुकत्यह रुंघी वट्टि। ते मुभ-लीधइं आविजं, नाकि घणा जिणि घट्टि। —मा. कां. प्र.

बट्टौ—सं.पु. [स. वट प्रा. वट्टुल] १ गोला, गोली, कोई गोल मोगरा।

उ०—भागो खबर फिरै ओहट्टा। वाटां दूत थया नट बट्टा, अति सोचै पतसाह अछांनै, खिण सज्या खिण तारतखांनै। —रा. रू.

२ आर्यावर्त का एक जनपद, एक देश।

उ०—विदेह मडिल्ल मलय वत्स मत्स वरण दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग बट्टा कुणाल लाट केकयमडलारद्ध इत्यरद्ध पच विशति जनपदा आरया। —व. स.

४ देखो 'बट्टौ' (रू. भे.)

बठ—पु.—१ अनुसार, अनुरूप।

उ०—रसा रूठो रूठो अलख इक रूठो मत रहे। हमारी देखे ना विरुद निज नेकं बठ वहे। —ऊ का.

२ देखो 'वठै' (रू. भे.)

बठल—वृक्ष विशेष।

उ०—कल्प द्रुम नद केतकी, कठल बठल ककुस्ट। कमरख अनइ कालुबरी, केसर मुर सतुस्ट। —मा. कां. प्र.

बठाऊं—क्रि. वि.—वहां से, उधर से।

बठी—देखो 'वठै' (रू. भे.)

रू. भे.—बठी, बठीनै।

बठे, बठै—क्रि. वि.—वहां, उधर।

उ०—अबै ईणा बामण रा बेटा नै कनात माहे लीधो। कथा बखाणी माडो। बठै बांमण रूपवत अमसतरी देखे नै मन डोग्यो थको कथा वांचवां लागो। —गांव रा धणी री बात

रू. भे—बठेई बठै. बठैई, वटै, वठ।

बड—सं. पु.—१ शिर ढापने या घूंघट निकालने के लिये स्त्रियों द्वारा खींचा जाने वाला ओढ़नी का पल्ला, छोर।

उ०—धरती माहे नै थारै दरबार मांहे इण सरीखो दातार कोई नही। तिणसूं लोवड़ी रो बड माथा ऊपर खैंच्यो। —जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.) (ह. नां. मा.) (उ. र.)

उ०—१ हरि मन हरिखि हकारिय नारिय स्वउं निजजाति। बइसिह बड लहुडाईय, भाई जिम ते पांति। —जयसेखर सूरि

उ०—२ बड जगड विसतारै, निधि मेघा तुफो नभ।—रांमरासौ

उ०—३ दीसंत दुयंग पटदेवगत्ति। दीवांण वडो बड देसपत्ति। —गु. रू. बं.

३ देखो 'वट' (रू. भे.) (उ. र.)

बडउ—देखो 'बडौ' (रू. भे.) (उ० र०)

उ०—तुं ही रावत गोरल्ल, तुं हीज दल मांही वडउ, तुं ही रावत गोरल्ल, तुं हीज मोरउ भाईड़उ। —प. च. चौ.

बडकंवार—१ देखो 'बडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—तरै किणही कह्यो-काइक बडकंवार बेटी वरस १५ तथा १६ री बैर हुवै तिकां जो च्यार पोहर छाती सूं लगाय सोवै तौ बाहुड़ै। बीजूं तो जीवै नहीं। —नैणसी

२ देखो 'बडकुमार' (रू. भे.)

बडकारण—वि. [देशज] १ बड़ाई करने वाला, प्रसंसा करने वाला।

उ०—केहर वाघ आद बडकारण, चक्रवत पगे एक सौ चारण। पति की प्रीत धारियां पूरी, हेमराज अबदार हजूरी। —रा. रू.

२ स्तुति व यशोगान करने वाला।

बडकुंवार—१ देखो 'बडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—जेसळमेर सोढां रे विच में कोटेचा रजपूत रहै। कोटेचां रै बडकुंवार दीकरी सु पड़िहारै रो मोहिल परणीजणनूं आयो। —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे)

बडकौ—देखो 'बडकौ' (रू. भे.)

उ०—कांमेती खात्रै धन कूडा, पड़िया दुख भुगतै रजपूत। यौं बडको थां बडकां आंगो, बटका हुय भड़िया अंगबूत। —ऊमरदांन लाळस

(स्त्री. बडकी)

बडगात—वि. —१ वीर, शक्तिशाली, बहादुर।

उ०—१ प्रथम 'अमैपति' पूछियौ, भूप कणैठी आत। अब भगड़ौ कीजै किसू, वखतसिंघ बडगात। —सू. प्र.

उ०—२ वांणी ग्रवरळ सुख वचरण, गुरण सागर बडगात । ढोली पुंगळ ग्रावतां, पंथ मळै कविपात । —डो. मा.

रू. भे.—बडगात ।

बडगूजर—सं. पु.—एक क्षत्रिय वंश या इस वंश का व्यक्ति ।

उ०—मजि जात प्रजा मय बात मंगेळां, पाटण तूंग्रर कंपपुरे । बडगूजर जाट ग्रहीर तजै बळ, दाट लगा पुर राट दुरे । —रा. रू.

रू. भे.—बडगूजर ।

बडगोतण—देखो 'बडगोतण' (रू. भे.)

बडगोळौ—सं. पु. [सं. वट+राज. गोळी] वट वृक्ष का फल ।

बडचड—वि. १ दुराग्रही, जिद्दी, हठी ।

२ विरुद्ध ग्राचरण करने वाला ।

बडचीत— वि.—१ दानवीर, उदार चित्त, महान ।

उ०—१ खाग तियाग, रखण खूमांणा, सगराहां हिंदू सुप्रवीत । सिवयंसी न मिळे 'ग्रकसी' सुत, चीतोड़ौ खांमंद बडचीत ।

—जादुरांम ग्राढ़ौ

उ०—२ लखघोर बडो लख लूट बणी वपि लाज । बडचीत वरीसण बाज गरीब निवाज ॥ —ल. पिं.

२ वीर, साहसी ।

उ०—त्हारौ सुजस ग्रमर 'करणावत' वासुर जग बहु हुवै वितीत । वाघारियौ पाघड़ौ विढ़तै, चैराड़ियौ नहीं बडचीत । —द. दा.

रू. भे.—बडचीत, वढ़चीत ।

बडजांनी—सं. पु.—बारात में वर के दादा, पिता, चाचा ग्रादि मुखिया पुरुष ।

उ०—बेली सहि बिरदैत, जेठी 'गोवरघन' जिसा, "करनाजळ" ग्रणबर कन्है, बडजांनी वांनैत । —वचनिका

बडणौ, बडबौ—देखो 'बढ़णौ, बढ़बौ' (रू. भे.)

उ०—कमळ बीय ससिकळा, कळा बडती जग वंदै । कळाहीण सळ हुवै, जेम निस पूनिम चंदै । —गु. रू. बं.

बडणहार, हारौ (हारी), बडणियौ—वि० ।

बडिग्रोड़ौ, बडियोड़ौ, बड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बडीजणौ, बडीजबौ—भाव वा०

बडत्यागी—वि.—दान वीर, त्यागमूर्ति ।

उ०—ग्रांबेर उदैपुर मुरधर ग्राबु, पूगो जस गुजरात परै । ताहरौ सुजस सदा बडत्यागी, "भगवंत" बूंदी साख भरै । —ग्रोपौ ग्राढ़ौ

बडनाळ—सं. स्त्री. तोप ।

उ०—भुरजां-भुरजां भिरड़गढ़, बडनाळ गुड़की, सोर धुंग्रा रव घोर सज, घर ग्रंबर ढकी, ग्राई बीज ग्रचीत की, ग्रसमांन कड़की, भूप तुरांटां भेळिया, जुध कारण जकी । —वी. मा.

रू. भे.—बडनाळ, बडीनाळ, वडीनाळ ।

बडपण, बडपणौ, बडप्पण, बडप्पणौ—देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)।

(उ० र०)

उ०—१ हाथी हींडत देख, कूकर लव-लव कर मरै । बडपण तणौ विवेक, क्रोध न ग्रांणै किसनिया । —ग्रज्ञात

उ०—२ रांणै प्रताप राव-मालदे सजीतां ग्राळां सटै । पण बांघ विखो भांजो यौ पिसण, विखा बडप्पण नह घटै । —रा. रू.

बडफर, बडफरि, बडफ्फर—वि. [सं. वड्+फलक] रक्षा करने वाला, रक्षक ।

उ०—कहर हर निज थरहर ऊपर कायरां, ग्रतर सर सोक जरहर ग्रखत । जो वर 'तेज' हर इसौ मोसर जठै, होऐ बडफर मोहर खूद हत । —कवि करणीदांन

स. पु. [सं. वड्+फलक] ढाल ।

उ०—१ ग्रति लीजै सुण सुण ग्रसुर, जण जण छीजै प्रांण । ग्रबदलखां चढ़ियौ ग्रकस, कस बडफर केवांण । —रा. रू.

उ०—२ गज बाघा वहै उपगार खग्री गुर, वदन वहै खग ग्रांकविया । (तैं), ऊबारिया बडफरां ग्रोटां, कोटां पावण हार किया । —महाराजा गजसिंह री गीत

उ०—३ सरिखां सूं बलभद्र लोह साहियै, बडफरि उछजतै विवधि । भलाभली सति तोईज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि । —वेलि

उ०—४ बडफर टूक ऊऐ गजवाज, तड़फ्फड़ मच्छ जिहीं सिरताज । मरद्द जरद्द पड़ै ग्रनमंघ, कहक्कह वीरह नाचि कमंघ । —वचनिका

रू. भे.—बडफर ।

बडबडणौ, बडबडबौ—देखो 'बड़बड़णौ, बड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वरियांम विढ़ोवा बडबडंत । जमदूत जोघ सिलहां जडंत । —गु. रू. बं.

बडबडियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बडबडियोड़ी)

बडबेहड़ौ—देखो 'बडबेड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कोई सिरदार रै सत्रुग्रों नै मार भगाया सो सिरदार री फतै हुई । पाछा ग्राया तरै बडबेहड़ां सूं बधाया, वधावा ठावा २ ग्रादमी तिकां रा नांम सूं गावीजण लागा । —बी. स. टी.

बडबोर—देखो 'बडबोर' (रू. भे.)

उ०—कठै बजै बडबोर, कठै भाड़ी मोटोड़ी । कठै बोरटी नांव, वणी देवा री छोड़ी । — दसदोख

वडबोरड़ी, वडबोरी—देखो 'वडबोर' (१) (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—खेत में **वडबोरड़ियां** ग्रायोड़ी, गहर डम्मर छियोड़ी, जांणै वड़ला ऊभा। —रातवासौ

वडभाग—१ देखो 'वडभाग' (रू. भे.)

२ देखो 'वडभागी' (रू. भे.)

उ०—दोनूं देरावर तणी, भटियांणी **वडभाग**। ग्रोपै वर वरदळ ग्रभो, सोभै ग्रचळ सुहाग। —रा. रू.

वडभागी—देखो 'वडभागी' (रू. भे.)

उ०—ए वडभागण राधका, कवण तपस्या कीन। तीन लोक तारण तरण, सो थारै ग्राधीन। —ग्रज्ञात

(स्त्री. वडभागण, वडभागणी, वडभागिण)

वडमंन–वि.—१ उदार चित्त, दयालु।

उ०—ग्रति उतिम दीजै उकति, सरसति हू सुप्रसंन। गाग्रां 'लखपत्ती' गुणं, महि पत्ती **वडमंन**। —ल. पि.

२ विशाल हृदय, महान, श्रेष्ठ,।

वडम–सं. पु.—१ यश, कीर्ति, बड़ाई, विरुद, महत्व, विशेषता।

उ०—१ कनक जड़ाव दयण 'करणावत,' तै कीधौ कुण करै तम। ग्राठ पोहर मोटा ग्राथांणा, वाखांणां थारी **वडम**।

—किसनौ ग्राढो

उ०—२ फब खट ध्रन चहुंफेर, घेर रावता सुभटा। करण जेर केवियां, वाय समसेर विकटां। मारू जैसलमेर, बळै ग्रांबेर बखांणूं, नागंद्र बीकानेर हेर दीठौ हिंद वाणूं। रैणवा दियण कूंमेर रिध **वडम** सुमेरज विसतरै। धज, बंध 'सेर' रिया घणी, ग्रेक बेर फेर ग्रवतरै। —पहाड़खां ग्राढ़ो

२ पूर्वज, बुजुर्ग।

३ बड़प्पन, महानता, सज्जनता।

उ०—१ हिव चालौ प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सफाई। चद्रदीप मांहे बैठा किम, ग्रावै **वडम** वडाई। —वि. कु.

उ०—२ लख्रवर नाम वारणा लीजै, **वडम** तणा कीजै वाखांण। —ह. नां मा.

उ०—३ प्रसण वखांण करै जोधांपत, **वडम** तुहाळी साख वळै। ग्रे जो जिकै वहै ऊवेड़ा, खेड़ा तले राखिया खळै।

—महाराजा गजसिंह रौ गीत

४ देखो 'वडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ **वडम** पराक्रम वीर वर, विहर निडर बळ बांह। सर "प्रताप" केई सुखी, छत्र धर तो कर छांह। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ **वडम** सुदातार हर भगत ताळा वीळंद, सरसरी ऊवार गुण ग्ररत सरसै। वरसतां सदन कर इंद जिम 'वगतसी,' दरस तां इता साभाव दरसै। —महाराजा बगतसिंह रौ गीत

रू. भे.—वडम, वडिम, वडिमि वडमि, वडिव, वडिम, वडिमि, वडीम, वाडम, वाडव, वाडिम।

वडमन, वडमनौ, वडमन्न—देखो 'वडमंन' (रू. भे.)

उ—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढा नीर पवन्न। तिण रित नेह न छांडियइ, हे वालम वडमन्न। —ढो. मा.

उ०—२ विधो-विध धूहड़ दाख वचन्न। मेले नह चाल रांणी वडमन्न। —गो. रू.

वडमपण, वडमपणौ–सं. पु—१ वृद्धापन, बुजुर्गियत।

२ देखो 'वडप्पण' (रू. भे.)

उ० --बिया जैचंद छत वडमपण वेखतां, लेखतां छत्रपति भोक लागै। तीसरो थयो ईसांण न्रप ताहरो, ग्रभंग 'वीक' "जैतसी" कीध ग्रागै। —द. दा.

वडमि—देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—गढ़पति गहगीर हद विहद हेल हमीर। धरपति लखधीर वडमि घण बावन वीर। —ल. पि.

वडराग–सं स्त्री.—देखो 'बडौ-राग' (रू. भे.)

उ०—धकै सिमोद मेवास चढिया घटा, गोठिया गाज वडराग गवता। —दल्लौ मोतीसर

वडरूप—देखो 'विडरूप' (रू. भे)

वडलाज–वि स्त्री—जिसको बहुत लाज ग्राती हो, जो, लज्जाशील हो, लजालु।

उ० - रूप नरूको रांणियां, वडभागणि **वडलाज**। पाधारै ग्राया प्रथम महिल जिके महाराज। —रा. रू.

वडवडाळौ–वि [ग्रनु.] बड़े से बड़ा, सब से बड़ा।

उ०—ग्रवै ग्रछाया देतराय रोद काया रूप ए। ग्रन्नड कराळा **वडवड**ळा भड भुजाळा भूपए। —गु. रू. ब.

वडवानळ—देखो 'बड़वानळ' (रू. भे.)

उ० - ग्रागनि रहो करि ग्ररदास, चाहूग्रांण राउ लीलविलास। जउ सायर **वडवानळ** समइ, तउ कांन्हउ तुरकांनइ नमइ।

—का. दे. प्र.

वडवार—देखो 'बडवार' (रू. भे)

उ०—लगर बब दूलावत 'लाला', सुपह दात फरमी भक सार। सर डूबण दुमहा नवसहसां, वड करसण भोका वडवार।

—लालसिंह राठोड़ **बड़ली** रौ गीत

वडवामुख–सं. पु. [सं. बडवा+मुख:] पाताल। (डि. को.)

रू. भे.—वडवामुख।

वडवालु, वडवालौ—सं. पु.—वट वृक्ष का फल।

उ०—**वडवालु** नइ बुणि वली, वांस वणसरी वेलि। वाकुंभा वाघइ भला, वकुल ग्रढतण वेलि। —मा. कां. प्र.

वडव्वड—क्रि. वि.—बढ़ बढ़ कर।

उ०—**वडव्वड** वीजळ धार वहंत। लडत्थड संकर सीस लहंत। —गु. रू. बं

वडस—देखो 'विडस' (रू. भे.)

वडहठ—युद्ध, लड़ाई, जंग।

उ०—वीरम पहली वीरवर इतरै वह आया। साहै खग बळ सांखलै, वडहठ रचाया। —वी. मा.

रू. भे.—बडहठ।

वडहत, वडहत्थ, वडहथ—वि. [सं. वड्हस्त] १ आजानबाहु।

उ०—१ विदा किया भाटी खगवाहा, बेली साथै कमंध दुबाहा। मारण दुयण करन महवेचं, **वडहथ** 'नाथो' अमर धवेचं। —रा. रू.

उ०—२ अदल आंण वरती इळा, जसराज जमाया। **वडहथ** पूगळ जिणवखत, भाटी मन भाया। —द. दा.

रू. भे.—बडहत, बडहत्थ, बडहथ, बडहाथ।

वडहर—वि. [सं. वड्+हर ?] उच्च कुल का।

सं. पु.—पाखर से मिलता जुलता पत्तों वाला एक वृक्ष विशेष।

रू. भे.—बडहर, वडहार, बढ़हर।

वडहार—देखो 'वडहर' (रू. भे.)

वडां—वि. वृद्ध (सामान)

वडांवडी—वि. स्त्री.—१ महान, बड़ी, समर्थ।

उ०—**वडांवडी** किनियांणी बांका.' पोख पूजगां पाळै। देस विदेस माय डाढाळी, राज दरबार रुखाळै। —कविराजा बांकीदास

२ देखो 'बडांबडी' (रू. भे.)

वडाई—देखो 'बडाई' (रू. भे.)

उ०—१ **वडा वडाई** ना करै, वडा न बोलै बोल। हीरा मुख से ना कहै, लाख हमारा मोल। —अज्ञात

उ०—२ कहै प्रोहित 'केहरो' अम्हां घरवट अधिकाई। सांम सुखळ सत्र वाढ़ि, वडा जुध तरै **वडाई**। —सू. प्र.

उ०—३ जिको पंवारां रो आदमी आवै तिण आगै पवारां री घणी **वडाई** करै। —नैणसी

वडाऊ—देखो 'वडको'।

वडाक—सं. पु.—भेड़िया।

उ० ताहरां जांन नू मारग में जावतां **वडाकां री सवण हुवो**। ताहरां सवणियां कही—राज ! सवण भला न हुवा छै, पाछा फिरो —नैणसी

रू. भे.—वड़ाक, वड़ाख।

वडापण, वडापणौ—देखो 'वडप्पण' (रू. भे.)

वडार—देखो 'वडहार' (रू. भे.)

वडारण—सं. स्त्री. [सं. अवदरिका, भाटकारिणी=भडारण] दासी सेविका, बांदी, वरोगा जाति की स्त्री।

उ०—१ हाडा राव 'रतन' री हवेली कनै डेरो हुतो। रांणी राठोड़ बीकावतजी सत कियो। **वडारण** पातर खवास ऐ ११ बळी —बां. दा. ख्यात

उ०—२ तांहरां **वडारण** पूजा करण नूं आई। ताहरां मूळ. वडारण नूं पकड़ आपरी दोवड़ मांहै पोट बांध अर उवैरा कपड़ा पैहरनै कोट ऊपर चढ़ियो। —नैणसी

उ०—३ दांत रा चुडा विना **वडारण** राखण री आखड़ी। —रा. सा. सं.

रू. भे—बड़ारण, बडारण, वड़ारण।

वडाळ—सं. पु.—१ रथ। (डि. नां. मा.)

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—'वरसिंघ देव' राजा **वडाळ**। बूंदेल चडै चम्मर बंबाळ। —गु. रू. बं.

रू. भे—वडाळ।

वडाळौ—देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ उत्तम नाम वंस उजवाळो, वेद-धरम चौ वंधव **वडाळो**। —सू. प्र.

उ०—२ हाडा गोड़ जादव्व झाला हठाळा। वळै वंस छत्रीस साथै **वडाळा**। —वचनिका

उ०—३ सोळहसै संमत हूआे जोगण पुर चाळै। सम्मै एकासियै मास काति **वडाळै**। —गु. रू. बं.

उ०—४ 'करण' तणै परणतै क्यावर, कर मुकता कवि बियै कल्यांण। अडहर कहियो पंथ **वडाळो**, जांगळवा कहियो जेसाण। —द. दा.

(स्त्री. वडाळी)

वडाळोराग—देखो 'बडोराग' (रू. भे.)

उ०—रूड़े **वडाळाराग**, हूर अच्छर सिव हरखिया। —गो. रू.

वडावड, वडावडी—१ देखो 'बढाबढी' (रू. भे.)

उ०—राव मालदे रै कूंपी जी सिरै चौकी हुवा। बीकानेर डोडवांना सरीखा तखत पटै हुवा। तौही तद रिणमलां रै घरै इसडी **वडावड** हुती। —राव मालदे री बात

२ देखो 'बड़ाबड़' (रू. भे.)

बड़िब, बड़िम, बड़िमि–स. पु.—देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—धन बड़िम गोवरधन धारण। चख यक सूर वियो चख चंद।
—ह. नां. मा.

उ०—२ रथि हाथ हक सम थर रेलगि, महिपति पग तिस एक एक मरण। प्रम कमधज जिण बड़िम पूजतो, प्राप बड़िम मुजि प्राचरण।
—जैमल राठौड़ री गीत

उ०—३ धारण सलज चखां चद धारै। प्राच उठाया बड़िम उच्चारै। विच पुर घसे विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चंद राजा।
—सू. प्र.

उ०—४ उदह वेळां बड़िम महारस दांनेत, जौति जळ प्रबळ सीतळ प्रबळ जांण। कोक जळचर निजर दमंगचर पाळ कब, मीन सागर गिरंद चद झूमांण।
—महांराणा जगतसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—५ भिड़ै पतसाह सं हाथि जिण भांजिया, बड़िम विधि जास वरगह विराजै, इसै विरदै लियै श्री जगति ऊपरा 'सूर' सुत तपै छत्रवाट साजै।
—केसोदास गाडण.

बड़ियाससुर–स. पु. (स्त्री. बड़ियासासु) श्वसुर का बड़ा भाई।

बड़िस–स. पु [सं. बडिशं, बलिशं.] मछली पकड़ने का कांटा, वंशी।
(डि. को.)

रू. भे. बडिस।

बड़ी देखो 'बडी' (रू. भे.)

बड़ीतीज–सं. स्त्री —भाद्रव मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया।

वि. वि.—देखो 'तीज'।

रू. भे.—बडीतीज।

बड़ीदेव–सं. स्त्री.—१ श्री करणी देवी।

उ०—संग वीतज प्राया उरा सार, कियै वंद करनला कर पुकार। दरसण दियै ताछिन बडीदेव, साजो कियै करहो फळी सेव।
—रामदांन लाळस

२ भगवती, दुर्गा।

बडीनाळ—देखो 'वडनाळ' (रू.भे.)

उ०—बडीनाळ दस विलम, धोम सतपंच मुहर घर। तीन राड़ि विच ओत, प्रायो रेवा नदि उत्तर।
—सू. प्र.

बडीम—देखो 'वडम' (रू. भे.)

बडीमां–सं. स्त्री.—पिता की भोजाई, ताई।

बडीराग– सं. स्त्री.—देखो 'बडीराग'।

बडु—१ देखो 'बडो' (रू. भे.) (उ० र०)

उ०—लंक वडु चूंटी लहु, पींडी चड़तई मांसि। चूंटण पगि घाठा जिस्या, कांई न कीजइ पासि।
—मा. कां. प्र.

२ देखो 'बट' (रू. भे.) (उ० रा०)

बडुग्रार—देखो 'बडो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ वड पह बडुग्रार भुजि कुळिभार धर सिणगार तपै लखधीर। विलसण गजवाज कुंग्रर सकाज वसधा राज करै वर वीर।
—ल. पिं.

उ०—२ साख सिणगार बडुग्रार सांमो, नवं खंड जास जसवास नांमो।
—ल. पिं.

बडूजा –देखो 'विडूजा' (रू. भे.)

बडूजावाह—देखो 'विडूवावाह' (रू. भे.)

बडेर–सं. पु. [सं. वडु+रा. प्र. ग्रेर] १ बड़ा घर।

२ 'कूटे' एवं माटी से बनी हुई अनाज डालने की कोठी
(गोडवाड़)

रू. भे.—बडेर।

बडेरउ, बडेरौ– देखो 'बडेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वडउं बडेरउं भाइगु जांणि,स्रावक नइ घरि चडइ प्रमांणि। करम ना जोइ एवडा फेर, धरम प्राडा छइं काठिग्रा तेर।
—वस्तिग

उ०—२ ताहरां गोगैजी कही—थे बडेरा छौ, छोटा तोई सुसरा छौ, पग बडा छौ, थे बैसो, हूं ले प्राईस।
—नैणसी

उ०—३ ताहरां बडेरा लोक एकठा हुवा। दाबड्यां तेडीयां। बात पूछी।
—देवजी बगड़ावतां री बात

उ०—४ हेमो कहे-कूंभा! थारै अजेस पिंड लोह नहीं लागो छै, बाळक छै। तूं घाव कर। हूं बडेरो छूं, घाव क्यूं करूं? कूंभो कहै–हेमाजी! वरसै थे वडा पण पगं म्हे वडा। थां मांहरो धांन पलै में लियो, थे माहरा चाकर, तै में वडा, थे घाव करो।
—नैणसी

२ देखो 'बडो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—नांन्हड़ किसनइ नाथियौ, वासिग नाग बडेरौ रे। नास करइ रवि नांन्हड़ो, अंधकार बहुतेरो रे।
—पं. प चौ.

बडै—समान, बराबर।

बडैरौ—देखो 'बडैरौ' (रू. भे.)

उ०—सु 'जैतो' 'कूंपो' तो बडी वेढ़ कांम ग्राया था, नै तद बडैरा ठाकुरां मैं रावजी कन्है जेसो भैरवदास हुतो, तरै जेसेजी रावजी सुं कह्यो।
—राव मालदे री बात

बडोड़ो – देखो 'बडो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ ग्रा तो उण डाढाळा रा मन में सुहावै नहीं के वांरा माला

ती ऊगिड़-सूर बडोड़ौ ग्राप री डाढ़ां अठा रूपी दिखाय मांज न्हांकसी। —वी स. टी.

उ०—२ चाकरड़ी, रे मारू थांरै बडोड़ै वीरैजी ने मेल, राय मरिये रे मादवै रे, म्हारा गाढ़ा म्हारू घर बसौ। —लो. गी.

बड़ौ—देखो 'बडौ' (रू. भे.)

उ०—१ कळिहरा 'करनोत' बडा काळंनळ, 'भेडक' 'नाघू' निवड मडं। लखघाट करै वहवाट 'लखंमरा', घरा घाए वर त्रिघि घिघडं। —गु. रू. बं.

उ०—२ व्रज राखियौ विगोयौ वासव, बडौ प्रवर कुरा विसन वड। —ह. नां. मा.

उ०—३ छाजू, सिवौ वडा रजपूत, नै कनै बडौ वित, तिरा घर २० तथा २५ रजपूतां रा बसाया। बडी वसती हुई। —नैणसी

उ०—४ पुर लूटियौ वडी सिघ पाई। संभिया सुज मारिया सिपाई। —रा. रू.

उ०—५ ते वडी चिडी नही जे वडउ फडहुउ, ते वडी नइ नही जे वडउ खड हुड। —व. स.

(स्त्री. वडी)

बड़ौ-दूहौ—सं पु.—दोहे नामक छंद का एक भेद जिसके प्रथम व चौथे चरण में ११-११ तथा दूसरे व तीसरे चरण में १३-१३ मात्राए होती है। —बां. दा.

उ०—खित्रियां वडाराग माहे बडादूहा गवाड़ौ। —वचनिका

बड़ौ-बाप—देखो 'बडौ-बाप' (रू. भे.)

बड़ौ-माव—सं. पु.—हाथी का एक रोग (मोतीजरा) जिसके कारण उसका शरीर सूक जाता है और वह खाना पीना बंद कर देता है। वि. वि.—इस दशा में अगर हाथी की पूंछ चीरी जाय तो उसमें खून के स्थान पर पानी निकलता है।

बड़ौ-राग—देखो 'बडौ-राग' (रू. भे)

उ०—१ खित्रियां रा बडा राग माहे वडा दूहा गवाड़ौ। —वचनिका

उ०—२ नौबति झींगड़ी पड़ी नै रही छै। भेर नफेर, करनाळ भभक नै रह्यौ छै। सुरणायां री झहक पडि नै रही छै। बडो-राग सिंधवौ वागि नै रहीग्रौ छै। —रा. सा. सं.

बड़ौ-राज—सं. पु. [सं. वड्‌ राज्य] राजा का राज्य, बड़ा राज्य।

उ०—मोटी भायप होय, पिंडां हुवै पूजता, वडाराज रो गांव लोग सोह बूझता। नह को लोपै लीह, क बरे पचोलणा, एता दे किरतार फेर नहीं बोलणा। —भोमिया बंचन

बड़ौ रावळौ—सं. पु.—गांव के ठाकुर का घर।

रू. भे.—बडो रावळौ।

बड़ौ-लाट—देखो 'बडौ-लाट' (रू. भे.)

बड़ौ-सांणोर—सं. पु.—एक प्रकार का डिंगल-गीत जिसके-प्रथम व तृतीय विषम चरणों में २०-२० मात्राऐं तथा द्वितीय व चतुर्थ सम चरणों १८-१८ मात्राऐं होती है, साथ ही प्रथम द्वाले के प्रथम पद में २३ मात्राऐं होती हैं। (र. रू.)

वि. वि.—इसका दूसरा नाम 'शुद्ध-सांणोर' भी है।

बड़ुवड़ी—सं. स्त्री.—सर्व शक्तिमान देवि, दुर्गा।

उ०—देवी चंद्रघटा महम्माय, चंडी। देवी वीहळा धन्नेळा बड़ुवड़ी —देवि.

बड़ूक, बड़ूख—देखो 'वडाक' (रू. भे.)

उ०—बैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकरिए महासद्द। मिळ समळ ग्रीघ ग्रांमंख भक्ख, जंबक्क रीछ बडूक अक्ख। —गु. रू. बं.

उ०—२ जरख रींछ वडूख, सिवा सत लख्ख मलक्का। साकरिए डायरिए सकति, काळ भैरव काळक्का। —गु. रू. बं.

बड़ौ—सं. पु.—१ देखो 'बढौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बडौ' (रू. भे.)

रू. भे.—वढौ।

बड्‌डणौ, बड्‌डबौ—देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

बड्‌ढियोड़ौ—देखो 'बढियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बड्‌ढियोड़ी)

बढ—सं. पु. [सं. वर्घ] १ घाव।

उ०—वढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, वंभियौ 'सुरजन' देख बढ। गढ चित्तौड़ गरब तज गरजै, गाडौ गौ रणथंभ गढ। —पत्ता चूंडावत री गीत

२ कटाव।

उ०—तासणी री बाड़ी रौ नीपनौ इकतीस ताड़ी री, नाळेर सौ मोटौ, खोपरा बढ री, गरी रै दळ री, हाथ सूं छूट पड़ै तौ काच री सीसी ज्यूं किरचा-किरचा हुय जावै। —रा. सा. सं.

३ काट-छांट।

४ देखो 'बढ' (रू. भे.)

५ देखो 'बढौ' (रू. भे)

रू. भे.—वढौ वड्‌ढ।

बढणी—सं. स्त्री.—१ आमातिसार से होने वाला पेट का दर्द, ऐंठन।

२ काटना क्रिया का भाव।

बढणौ, बढबौ—१ देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बढ पड़ूं विहर घाटां विळंद, भुजलग झट सेलां भचाड़ि।

स्रुग वनूं कहै 'हटमल' सुतन, "ग्रमूनि" जिम काटै ग्रचढ़ि ।
—सू. प्र.

उ०—२ रजपूतां रै स्त्रियां री तो धरम पती रै लारै काठ चढ जांणो नें रजपूतां रो धरम स्यांम भ्रम साऊ तथा निजकुळ साऊ तरवारा री धागं स बढ जावणो । —वी स. टी.

२ देखो 'बधणो, बधबो' (रू. रू.)

बढणहार, हारो (हारी), बढणियो—वि० ।

बढियोड़ो, बढियोड़ो, बढ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बढीजणो, बढीजबो भाव वा० ।

बढवार—देखो 'बढवार' (रू. भे.)

बढाणो, बढाबो—देखो 'बढाणो, बढाबो' (रू. भे.)

उ०—पण म्हारो मन तो श्रो इज कैवै कै खुदा रा इण रांमतिया री अब कांई जरूरत है, इण तो भ्रणगिण मिनखां रा गळा बढाय दिया बढावतो इ जावैला । —फुलवाड़ी

बढाणहार, हारो (हारी), बढाणियो—वि० ।

बढायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बढाईजणो, बढाईजबो—कर्म वा० ।

बढायोड़ो - देखो 'बढायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बढायोड़ी)

बढाळ, बढाळी, बढाली—स. स्त्री.—तलवार ।

उ०—१ बढाळ सेल के बणाय, कीध श्रोपणै कळा । जिकै कुमार वीज जांणि, चचळा भ्रपच्चळा । —सू. प्र.

उ०-२ वीजली परि झलकती, तीन्ही धाराळी बढाली भ्रणी भ्राळी —व. स.

बढावणो, बढावबो—देखो 'बढाणो, बढाबो' (रू. भे)

उ०—२ इण तो भ्रण गिण मिनखां रा गळा बढाय दिया, बढावतो इज जावैला । —फुलवाड़ी

बढावणहार, हारो (हारी), बढावणियो—वि० ।

बढावियोड़ो, बढावियोड़ो, बढाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बढावीजणो, बढावीजबो—कर्म वा० ।

बढावियोड़ो—देखो 'बढायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बढावियोड़ी)

बढियोड़ो—१ देखो 'बढियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बधियोड़ो'

(स्त्री. बढियोड़ी)

बढूलियो—देखो 'बधूळो' (भ्रल्पा., रू. भे.)

उ०—धूळि जु ऊडी छै । त्यै खेह माहै । सूरज किसो देखिजै छै । जैसे बढूळिया (बधूलिया) माहै पात दीसै । —वेलि टी.

बढ्ढ—१ देखो 'बढ' (रू. भे.)

उ०—सग्रांम खड़ग वाहंत सनड्ढ । वपै पळ तडळ ऊछळ वड्ढ ।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'बढ' (रू. भे.)

३ देखो 'बढो' (मह., रू. भे.)

बढ्ढणो, बढ्ढबो—१ देखो 'बढणो, बढबो' (रू. भे.)

उ०—भ्रारण कियो उछाह, वीरातन वढ्ढियो । मारू लोहमराट, चमू सभ चढ्ढियो । —किसोरदांन बारहठ

२ देखो 'बधणो, बधबो' (रू. भे.)

बढ्ढियोड़ो—१ देखो 'बढियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बढ्ढियोड़ी)

बढो—सं. पु.—१ रुपये पैसे के अभाव में ऋणमुक्त होने के लिए दिया जाने वाला सामान, पशु आदि ।

२ बंधन के कारण शरीर में रस्सी का होने वाला निशान ।

३ देखो 'बढ' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'बढ' (मह., रू. भे.)

बण—सर्व.—१ उस, उन ।

उ०—१ आप वण ठोड़ कर जोड़ि कीधी ग्ररज । बीकपुर पधारो इंद्र बाई । —मे. म.

उ०—२ वेल भुजां बळ खेलणो, ग्राहव मन ऊमेल । वरदायक दीठां वणै, वण फुळ री वाघेल । —पा. प्र.

२ देखो 'बिना' (रू. भे)

उ०—बण दीपक मंदिर कमो, वण पूतां परिवार । कसी महेली कत वण, घ्रत वण भ्रळप भ्रहार । —ढो. मा.

३ देखो 'वणी' (भ्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ चदण नींरू बण चरै, वण नीरू सण खाय । ए हर ढीलो करहलो, जित बरजूं तित जाय । —जलाल बूबना री बात

उ०—२ खेत कवळा । बाजरी मोट मूंग बण घणी । —नैणसी

३ देखो 'व्रण' (रू. भे.)

४ देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—जिण दाहे बण हर धरइ, नदी खळक्कइ नीर । तिण दिन ठाकुर किम चलइ, धण किम बांधइ धीर । —ढो. मा.

रू. भे.—बण, बिण, वण, विण ।

भ्रल्पा.,—बणि, बणी, वणी ।

बणक—देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—कै पूजै श्रीकंत नूं, कै पूजै भ्ररिहंत । 'बांका' मत विस्वास कर, ए सह बणक भ्रसंत । —बां. दा.

वणकर — देखो 'बुनकर' (रू. भे.)

उ०—सोइ नइ सराणी भ्रा, कंसारा तिहां कोडि । **वणकर** नइ बालंब परिण, घसता हाथा जोडि । —मा. कां. प्र.

वणकल — देखो 'वरिणक' (अल्पा., रू. भे.)

वणगत - सं. स्त्री — १ मेल जोल ।

२ कपड़े बुनने का ढंग या प्रकार, बुनाई ।

रू. भे.—वाणक ।

वणचरि — देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—सूयर देखी मेल्हिउं बाणु, अरजुन सिउं कुण करइ संधांणु । तिणि खिणि मेल्हिउं **वणचरि** बांणु, ऊडिउं गयणि हुउं अप्रमांणु । —पं. पं. च.

वणज — १ देखो 'विणज' (रू. भे.)

२ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

वणजणो, वणजबो — देखो 'विणजणो, विणजबो' (रू. भे)

वणजणहार, हारो (हारी), वणजणियो — वि० ।

वणजिओड़ो, वणजियोड़ो, वणज्योड़ो — भू० का० कृ० ।

वणजीजणो, वणजीजबो — कर्म वा० ।

वणजार — १ देखो 'बिणजार' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणजारो' (मह., रू. भे.)

वणजारा — देखो 'बिणजारा' (रू. भे.)

वणजारो — देखो 'बिणजारो' (रू. भे.)

वणजियोड़ो — देखो 'बिणजियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वणजियोड़ी)

वणठण — देखो 'बणठण' (रू. भे.)

वणठणो, वणठबो — देखो 'बिणठुणो, बिणठुबो' (रू. भे.)

वणठणहार, हारो (हारी), वणठणियो — वि० ।

वणठिओड़ो, वणठियोड़ो, वणठ्योड़ो — भू० का० कृ० ।

वणठीजणो, वणठीजबो — भाव वा० ।

वणठियोड़ो — देखो 'बिणट्ठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वणठियोड़ी)

वणणो, वणबो — देखो 'बणणो, बणबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ करै तिकांरा कांठला, कंठ न्रपत कुंवरांह । **वधनहियां** ज्यां सिर **वणै**, कीरत जेण करांह । —बां. दा.

उ०—२ सखी अमीणो साहिबो, मदन मनोहर गात । महाकाळ मूरत **वणै**, करण गयंदा घात । —बां. दा.

उ०—३ मांण उदय इव विधि वयण, कुण तिण रुकण करेह । त्यूंही हुकम 'पातल' तणो, **वणबो** त्यूंही वणेह । —जैतदांन बारहट

उ०—४ भ्रामा रूप जोम ऊफांणिक । **वणियो** अनंक दूसरै वांणिक । —सू. प्र.

उ०—५ साजिहांनजी रै वेटा ४ हुवा । दारासाह, साहसूजो, औरंगजेब, मुरादबगस । सू इणां रै आपस में **वणै** नहीं । —द. दा.

उ०—६ औरगसा अजमेर सूं, कूच करंतां वार । **वणी** अनायत खांन सूं, कांने सुणी पुकार । —रा. रू.

उ० – ७ म्रग नयणी म्रगपति-मुखि, म्रगमद तिळक निलाट । म्रगरिपु-कटि सुंदर **वणी**, मारू अइहइ घाट । —ढो. मा.

उ०—८ कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेता जांणै तिजारा की वाड़ी फूली छै । ऊपर उणहीज **वणता** हथियार बांधजै छै । —रा. सा. सं.

वणणहार, हारो (हारी), वणणियो — वि० ।

वणिओड़ो, वणियोड़ो, वण्योड़ो — भू० का० कृ० ।

वणीजणो, वणीजबो — भाव वा० ।

वणता — देखो 'वनिता' (रू. भे)

वणराइ, वणराई, वणराज, वणराय, — १ देखो 'वनराज' (रू. भे.)

उ०—१ तिसिह आविउ वसंत. हूउ सीत तणउ अंत । दक्षिण दिसि तणउ, सीतल वाउ वाइं त्रिहभइ **वणराइ** । —रा. सा. सं.

उ०—२ थळ भूरा वन झंखरा, नही सु चंपउ जाइ । गुणै सुगंधी मारवी, महकी सहु **वणराइ** । —ढो. मा.

उ०—३ **वणराय** भार अढ़ार संख्या, विस्णु वांणी एह । जेलुं जाण्यु तेतलु, वखाण्यउ, भणइं पदम विसेख । —रूकमणी मंगळ

उ० —४ अत तपियै तन अर्वनि, दियै परजन सरदाई । सुधा पाय ससि करै, जेम वणराय सवाई । —रा. रू.

उ०—५ विद्या सवि सिद्धिहिं गई, जां पेखइ पणराइ । आहेडी आरोडीउ ता एकु सूअरु धाइ । —पं. प. च.

वणराव — देखो 'वनराज' (रू. भे.)

वणरावमुनी — सं. पु.—नारद मुनि ।

वणवास, वणवासु — देखो 'वनवास' (रू. भे.)

उ०—बारह ए वरस वणवासु नाठै हींडिवुं तेरमई ए । अम्हि किम ए जांणिसुं तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए । —पं. पं. च.

वणवीरोत — सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

वणसटो — देखो 'वणस्टो' (रू. भे.)

वणसणो, वणसबो — देखो 'विणसणो, विणसबो' (रू. भे.)

उ०—गाडा मे नाव नाव मे गाडो, लेख तणा कुण भेद लदै । 'ओपा' रांम तणी गत अंवळी, **वणसै** दवी' र दखण वदै । —ओपो आढ़ो

बणसणहार, हारौ (हारी), **बणसणियौ**—वि० ।

बणसिग्रोड़ौ, बणसियोड़ौ, बणस्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

बणसीजणौ, बणसीजबौ—भाव वा० ।

बणसियोड़ौ—देखो 'विणसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बणसियोड़ी)

बणस्टी-सं. पु. [सं. वणयष्टि] कपास के पौधे का डंठल ।

रू. भे.—बणसटी, बणस्टी, बनसटी, वणसटी।

बणस्सइ—देखो 'वनस्पति'

उ०—सात लाख जीव प्रथवी माहि, साते उप साते तेउ माहि । वाउकाई जीव माने विचारि, दस लाख **बणस्सइ** मझारि । —वरितग

बणाक—१ देखो 'बणाक' (रू. भे.)

२ देखो 'विनायक' (रू. भे.)

बणाकियौ—देखो 'बणाक' (अल्पा., रू. भे.)

बणाड़णौ, बणाड़बौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

बणाड़ियोड़ौ—देखो 'बणाणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बणाड़ियोड़ी)

बणाणौ, बणाबौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

बणाणहार, हारौ (हारी), **बणाणियौ**—वि० ।

बणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बणाईजणौ, बणाईजबौ—कर्म वा० ।

बणायतौ-वि.—१ प्रभाव पूर्ण व्यक्तित्व वाला ।

उ०—तरै सहांणी लायक ठावो **बणायतो** डील देखि उठि मिळियो । —जगदेव पंवार री वात

२ सुन्दर, तेजस्वी ।

बणायोड़ौ—देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बणायोड़ी)

बणारसी—१ देखो 'बनारसी' (रू. भे.)

२ देखो 'बनारस' (रू. भे.)

उ०—बरहार मथुरा अवध्या **बणारसी** चंदेरी वल्लिवाल महबर महोब हरियाणउ भयाणउ । —व. स.

बणारिस-सं. पु [सं. वाचनाचार्य] वाचनाचार्य (उ. र.)

बणाव—देखो 'बणाव' (रू. भे.)

उ०—१ आद कंठ चव अकिवरा, अंत दोय ठहराव । यौ सुबंध घट अक्खियां, बिगड़ै कठ **बणाव** । —र. ज. प्र.

उ०—२ मन हरखं तन उच्छव मोटैं, कियौ बणाव 'अभै' नवकोटैं । सुरंग बसन सुंदर तन सोहैं, देखि रूप रति भूप विमोहैं । —रा. रू.

उ०—३ जुद्ध रा भागळ मरियोड़ा घरे आया सौ पति मरियां पछै विधवा रै कांई **बणाव** । —वी. स. टी.

बणावटी—देखो 'बनावटी' (रू. भे.)

उ०—कोई वीर पुरुष की स्त्री **बणावटी** सूरवीरां नै कहै-हे वणावटी रावतां सीह मत वाजो थांरै मांहै सीह वाजो जैड़ो सकती नहीं । —वी. स. टी.

बणावणौ-वि.—१ जो बनाने योग्य हो, बनाने वाला ।

२ जो बनाने का माध्यम हो, जिससे कुछ बनाया जाय ।

उ० —घाव काळजै घला निजरं, मिनखां घर **बणावणौ** । पर कारजां देव संघेड़ो, अह निस आडो आवणौ । —दसदेव

बणावणौ, बणावबौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वेह समरथ **बणावियौ**, बाथ हाथ जम वरथ । जिण माझल लग जाड़ियां, माय जाय गज मरथ । —बां. दा.

उ०—२ य्यांन ब्रह्म 'जसराज' गुण, पुन उग्र तप करि पाविया । सार 'जसवंत' आदि स्तुतिवर, विविध ग्रंथ **बणाविया** ।

—सू. प्र.

बणावणहार, हारौ (हारी), **बणावणियौ**—वि० ।

बणाविग्रोड़ौ, बणावियोड़ौ, बणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बणावीजणौ, बणावीजबौ—कर्म वा० ।

बणावि—देखो 'बणाव' (रू. भे.)

उ०—गयण दास खवास भणै, अवसर मन भांणी । घर वाल्हौ आप री तिकै पट घूघट ताणी । उण **बणावि** आंमासि प्रभू दरसाव न पासै । सुख छूटी संभारि दीह कट्टो ते सासे । —रा. रू.

बणावियोड़ौ—देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बणावियोड़ी)

बणास—१ देखो 'विनास' (रू. भे.)

उ०—१ 'पाल' तणं ग्रेह पागड़ो, आखी म्है अरदास । अब सूरजमळ आवियौ, वधै न वैर **बणास** । —पा. प्र.

उ०—२ वणाय लाग बाढ़ि वाढ़, ओपवै उजास रा । वणंत बीच नीर वाधि, रूप में **बणास** रा । —सू. प्र.

२ देखो 'बनास' (रू. भे.)

बणासणौ, बणासबौ—देखो 'विनासणौ, विनासबौ' (रू. भे.)

उ०—सु आंनं रे देस मांहै काळ पड़ै, तदै थोरीए एक जिनावर **बणासियौ** । —नैणसी

बणासणहार, हारौ (हारी), **बणासणियौ**—वि० ।

बणासिग्रोड़ौ, बणासियोड़ौ, बणास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बणासीजणौ, बणासीजबौ—कर्म वा० ।

बणासियोड़ो—देखो 'विनासियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बणासियोड़ी)

बणिक–सं. पु. [सं. वणिक] (स्त्री. बणिग्रांणी, बणियांणी) १ व्यापार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने वाला, बनिया, व्यापारी।

उ०—करै बणिक कुळ कसब कर, हित मांहे वित हांण। बणिक दगौ दे विरचियौ, उर इचरज मत प्रांण। —बां. दा.

२ व्यापारी समुदाय।

उ०—महेसदत्त नांमै धनवंत, सहु बणिक मांहे सोभंत। —वि. कु.

३ वैश्य।

उ०—बणिग्रांणी रहसी नहीं, रहसी सूथारी। सोनारी जासी परी, (कह) भाबज कूंमारी। —अज्ञात

रू. भे.—बणक, बणिक, बांणक, बांणिक, वणक, वांणक, वांणजू।
अल्पा.—बणियौ, बनियौ, बांणयौ, बांणियौ, बांण्यौ, वणियौ, वांणियौ, वांण्यौ।

बणिकपण–सं. पु. [स. वणिक+त्व] १ बनिया या व्यापारी होने का भाव।
२ बनिये का स्वभाव।

बणिग्यौ–सं. पु.—सूत खोलने के परीते के ऊपर का डंडा जिसमे संतुलन रहता है।
रू. भे.—बणीग्यौ।

बणिज—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.) (उ र.)

उ०—गज तुरंग नर पालखी, पांच सयां प्रत्येक। कोठा जेहनै पांच सै, वली बणिज सुविवेक। —बि. कु.

बणिजारौ—देखो 'विणजारौ' (रू. भे.)

उ०—जरासिंघ नउ प्राविउ दुउ, कालकुमरु जंई लगइ मुउं। बणिजारा नी वात सांभली, जरासिंधु प्रावइ तूम्ह भणी। —पं. पं. च.

बणिज्ज—देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

उ०—करै बणिज्ज एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए। साखा चौतार मुक्खमल्ल, रेसमी वसत्त ए। —गु. रू. बं.

बणियांणी–सं. स्त्री. १ एक बरसाती कीड़ा।
२ एक पौधा विशेष।
३ वणिक जाति की स्त्री, वणिक की स्त्री।
रू. भे.—बणयांणी, बणियांणी, बनियांणी, बांणण बांणनी, बिणियांणी, बिरांणी, वांणण, वांणणी, विरांणी।

बणियौ—देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—जग प्रपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय। जिम तिम कर बणियौ रहै, बणियौ तेण कहाय। —बां. दा.

बणी–सं. स्त्री. [सं. वनज प्रा. बउणी] १ कपास का पौधा।
१ कपास का डोडा।
३ करघा।
४ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र.)
५ देखो 'वनौ' (रू. भे.)
६ देखो 'वण' (अल्पा., रू. भे.)
७ देखो 'वह्न' (रू. भे.)
रू भे.—वणि बणी।
अल्पा.,—बण, वण।

बणीग्यौ—देखो 'वणिग्यौ' (रू. भे.)

बणीठणी–वि. स्त्री. [अनु.] १ जो बन-ठन कर तैयार हो, सुसज्जित, तैयार।
२ किसी निर्णायक स्थिति में आई हुई, व्यवस्थित।
ज्यूं—बणीठणी बात बिगड़गी।

बणीमग–सं. पु. [सं. वनीपकः, वनीयकः] १ भिक्षुक, भिखारी (उ. र.)
२ याचक।

बणीमगट्ठौ–सं पु.—एक प्रकार का दोष जो दानशाला का भोजन ग्रहण करने से लगता है। (जैन)

बणीमगदोस–सं. पु.—भिखारी जैसी दीनता दिखलाने पर लगने वाला दोष। (जैन)

बणीयण–वि.—१ आतंक फैलाने वाला, आतंकित करने वाला।

उ०—'तेजो' नेजां ऊग्रा, घोरै तेज तुरंग। कहर बणीयण 'चंदकौ' मुहर भणी रण जंग। —रा. रू.

२ बनाने वाला।

बणेव–स. पु.—आभूषण। (अ. मा.)

बणोखड़ो—देखो 'बणोखड़ी' (रू. भे.)

बणोड़ो—देखो 'वणोड़ो' (रू. भे.)

बणोद—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

बण्यौ–वि.—१ अचल, अटल, शाश्वत।
२ देखो 'बणियोड़ो' (रू. भे.)

बत–वि. [सं. वत्] १ किसी वस्तु की सम्पन्नता प्रगट करने के लिये संज्ञा शब्दों के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय।
२ समान, तुल्य।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य। आरण्य-रुदन बत भी अयोग्य। —ऊ. का.

अव्य.—१ कष्ट।

२ दया।
३ विस्मय।
४ मुक्ती।
५ आमंत्रण।
६ देखो 'विन' (रू. भे.)

उ०—सत रा हरचंद सुमत रा सागर, चित रा विलंद सुदत रा चाव। बत रा स्रवण प्रमत रा वाघण, नत रा तार सुक्रत रा नाव।
—र. ज. प्र

७ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—वर्द रिम संग लोभंजर बत। —राम रासौ

अल्पा.—बतौ।

बतक—देखो 'वतक' (रू. भे.)

उ० आवि विदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह। मतवाळा री बतक ज्यूं, पिय नह परहरियाह। —ढो. मा.

बतकलौ—देखो 'बंतल' (अल्पा., रू. भे.)

बतका, बतकौ—देखो 'बात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बतका जग जाहर हुई, सांभ्रत आसुर आय। तनुजा सांम दैन तजी, मिळी देवगत माय। —पा. प्र.

बतकाव, बतगाव—देखो 'बतळाव' (रू. भे.)

उ०—आयौ साथ निबाब रै, कोटै हूंदौ राव। मिळिया सी महाराज सूं, साह कियौ बतकाव। —रा. रू.

बतन—सं. पु. [फा.] १ जन्म-भूमि, स्वदेश।

उ०—सो एक समय उठै काळ पड़ियौ सौ पेट भरणै री जरूरत सूं बतन छोड नीसरयौ। —नी. प्र.

२ देश, राष्ट्र।

उ०—ईराण बतन हिम्मत पनाह। सिरविलंद तुझ सिरखा सिपाह। —वि. स.

बतरणौ—देखो 'बरतणौ' (रू. भे.)

बतळ—देखो 'बंतन' (रू. भे.)

बतळाणौ, बतळाबौ—१ ललकारना।

उ०—तद रैबारियां कही, साहिबी कुंवरसी सांखलै री छै। तिण कही म्हारा रजपूत थां पल्लू में मारियौ। तेरै बैर मे ले जावां छां अर थाना मारा छा। तद अै मोटियार था सताब खड़ कोसां पाचां साता घाय पोहता! आण बतळाया अै घिरिया सो रौठ वागौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'बतळाणौ, बतळाबौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पचाइण तीसां असवारां सूं वीरमदेजी रै ऊपर आयौ। नै वीरमदेजी नूं बतळायौ। —नैणसी

३ देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

बतळाणहार, हारौ (हारी), बतळाणियौ—वि०।
बतळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बतळाईजणौ, बतळाईजबौ—कर्म वा०।

बतळायोड़ौ—१ ललकारा हुआ।
२ देखो 'बतळायोड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बतळायोड़ी)

बतळाव, बतळावण, बतळावणी—देखो 'बतळावण' (रू. भे.)

उ०—१ निबाब थटैरी, दूसरी मौबतखां ठिकांणा सूं-इणांसूं चूक री बतळावण थी। —द. दा.

उ०—२ पछै रांमदासजी बरछी फेरनै बुडी री दीधी इका रै छाती में। सो सास जाती रयौ। तरै बीजा इका रै ने रांमदासजी रै बतलावण हुई। —रा. सा. सं.

बतळावणौ, बतळावबौ—१ देखो 'बतळाणौ, बतळाबौ' (रू. भे.)

उ०—सुणि एम वचन प्रजळै असुर, इसौ तेज दरसावियौ। समरीर साथ बतळावियौ, जांणै नाग खिजावियौ। —सू. प्र.

२ देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

बतळावणहार, हारौ (हारी), बतळावणियौ—वि०।
बतळावियोड़ौ, बतळावियोड़ौ—भू० का० कृ०।
बतळावीजणौ, बतळावीजबौ—कर्म वा०।

बतळावियोड़ौ—१ देखो 'बतळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बतळावियोड़ी)

बतसर—देखो 'वरसर' (रू. भे.)

बतहा—स. पु. [फा.] अरब के मदीना नामक शहर का नाम।

उ०—मदीना रौ नांम बतहा। —बां. दा. ख्यात

बतागर—सं. पु.—सलाह मशविरा करने वाला, परामर्श करने वाला, सलाहकार।

उ०—जरां आपरा उमराव बतागरां नै तेड़ीया। पूछयौ-थांनै तौ म्हाका राज की काई चिंतां फिकर नहीं अर नांनौ मामोजी करै सो हुवै छै। —राव रिणमल री बात

बताणौ, बताबौ—देखो 'बताणौ, बतावौ' (रू. भे.)

उ०—जिम कंकण विघ भूप जताई। बीर अग्र तिम जती बताई।
—सू. प्र.

बताणहार, हारौ (हारी), बताणियौ—वि०।
बतायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बताईजणौ, बताईजबौ—कर्म वा०।

बतायोड़ौ—देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बतायोड़ी)

बतावणौ, बतावबौ—देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

उ०—तमासौ बतावण वीस हत तैलीया, लार रिजवार गोरां सहत लै लीया। झट भुजां ईस डैरू अजब झेलिया, या गजब रीस किण सीस अलबेलीया। —महादांन महडू

बतावणहार, हारौ (हारी), बतावणियौ—वि०।

बताविप्रोड़ौ, बतावियोड़ौ, बताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बतावीजणौ, बतावीजबौ—कर्म वा०।

बतावियौड़ौ—देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बतावियोड़ी)

बती–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

२ बहुत, अधिक, ज्यादा।

३ अक्षय, स्थायी।

सं. पु.—१ सरकारी मकानों में रोशनी के निमित्त प्रजा से लिया जाने वाला कर।

२ देखो 'बत्ती' (रू. भे.)

उ०—नहीं तार, नहिं टैम है, नहीं **बती** में तेल। आ चालै मन रे मतै, मारवाड रा रेल। —अज्ञात

३ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—विसंभर जिका आ केम मांनां **बती**, उडपति समोवड़ आप बाळै। —र. रू.

बतीकर–सं. पु.—कपट। (अ. मा)

बतीत—देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—आया वसियां आपणी, ग्रीखम भई **बतीत**। १७३९ गुण चाळो लागो वरस, चाळो सरस मजीत। —रा. रू

बतीतणौ, बतीतबौ—देखो 'व्यतीतणौ, व्यतीतबौ' (रू. भे.)

उ०—सौ थानक खड़ ऊगिया, किता **बतीता** काळ। औ जायल ऐसा करै, गोखा आफू गाळ। —पा. प्र.

बतीतणहार, हारौ (हारी), बतीतणियौ—वि०।

बतीतिप्रोड़ौ, बतीतियोड़ौ, बतीत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बतीतीजणौ, बतीतीजबौ—भाव वा०।

बतीतियोड़ौ—देखो 'व्यतीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बतीतियोड़ी)

बतूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जिसै एक **बतूळियौ** आयो सू रेत सूं कपड़ा भरीज गया। —द. दा.

उ०—२ रेढ़ां नै माईतां री बात मन परबारी मांनणी ई पड़ी। डुसक्या भरता वै थेह सूं बारै निकळिया अर निकळतां ई **बतूळिया** रै वेग जैसांणै री सींव कांनी दड़बड़ां सोकड़ मनाई। —फुलवाड़ी

बतूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

उ०—एक भरथो ए **बतूळौ** आवौ विनायक, विणजारा के बैल ज्यूं। —लो. गी.

बतेरौ—देखो 'बतेरौ' (रू. भे.)

उ०—खारी मीठै सूं सरस है, भळै वतेरा पांनड़ा। देस विदेस दुवायां वणै, खुसी डाकधर खांनड़ा। —दसदेव

बतं–सं. पु.—प्रकार। (बांकीदास)

बतोकड़–वि. [स्त्री. बतोकड़ी] १ अत्यधिक बोलने वाला, वाचाल।

२ अधिक बात बनाने या कहने वाला।

रू. भे.—बतोकड़।

बतौ—१ देखो 'वत' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वत्तौ' (रू. भे.)

बत्त—देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—१ सुणी कमधा ऊधरां, उत मेवाड़ां **बत्त**। साथै साहस झल्लियौ, घातै हात परत्त। —रा. रू.

उ०—२ इणि परि ऊमा देवड़ी, जांणी मारू-**बत्त**। सु प्रभाति कहिबा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त। —ढो. मा.

उ०—३ मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल,ढंढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त मोगल सपत्त, सम्मळइ मत्त विसथरइ **वत्त**। —रा. ज. सी.

उ०—४ गाइं नट तैडाविया, कही विवस्था, **बत्त**। वाडव को वेम्या जपइ, टालि पहने रत्त। —मा कां. प्र.

बत्तड़ी—देखो बात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सूरा पूरा **बत्तड़ी**, सूरां कांन सुहाय। भागल अदवा राजवी, सुणता ही टळ जाय। —राव रिणमल री वात

उ०—२ हेक थको चौड़ै हुवां, असमर करा अदोस। डेरां डेरां **बत्तड़ी**, डेरां डेरां जोस। —रा.रू.

२ देखो 'वाती' (रू. भे.)

बत्ती—१ देखो 'बत्ती' (रू. भे.)

बत्तीस देखो 'बत्तीस' (रू. भे.)

उ०—**बत्तीस** आखडी रौ निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार। —रा. सा. सं.

बत्तौ–वि० [स्त्री. वत्ती] अधिक, बढ़कर।

उ०—१ साच रै पखै बधण रौ दुख दुनियां रै सरब सुखां सूं घणौ **वत्तौ** है। —फुलवाड़ी

उ०—२ थारै-सूं वत्ती लिखमी और कुण हुसी। —बरसगांठ

रू. भे.—बतौ, वतौ ।

बत्थपुन्न—सं. पु. [सं. वस्त्र-पुण्य] वस्त्र-दान से होने वाला पुण्य । (जैन)

बत्थिरि—क्रि. वि.—विस्तार से ।

उ०—अजितनाथ वर भवण नदि मंडिय गुरु वत्थिरि ।
—अभयतिक

बत्थु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—जिम गंगाजल जलह मझि सुपवित्त भणिज्जइ । जिम मोह गह बत्थु मझि मणहर वन्निज्जइ । —ऐ. जै. का. स.

बत्री देखो 'बात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दगम पिनाक गहल तो दीसै, विगत हमैं गुण बत्री । खडे मैं बसुधा विण खत्री, कोधी बार इकीसें । —र. रू.

बत्रीस देखो 'बत्तीस' (रू. भे.)

वत्स—सं. पु. [सं.] १ बेटा, पुत्र ।

२ गाय का बछड़ा ।

३ किसी जानवर का बच्चा ।

४ छोटा बच्चा, शिशु, बालक ।

५ संतान, औलाद ।

६ इन्द्र ।

७ कंस का एक अनुचर ।

८ एक प्रचीन देश जहाँ का राजा उदयन था । इसकी राजधानी कौशाबी थी ।

रू. भे.—बच्छ, बछ, बछक, बाच, बाछ, वच्छ, वच्छि, वछ, वाच, वाच्छि, वाछ ।

अल्पा—बच्छड़ो, वच्छ, बछड़ो, बछरो, बछवो, बछियो, बछो बाछड़ियो, बाछड़, बाछड़ो, बाछरू, बाछियो, बाछो, वचो, वच्छड़ो, वच्छ, वछरो, वछो वाछड़उ, वाछड़ो, वाछरू, वाछरो, वाछो ।

वत्सक—सं. पु. [सं. वत्सक.] १ छोटा बछड़ा, बच्चा ।

२ कुटज का पौधा ।

३ एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा ।

४ एक यादव वंशीय राजा जो वसुदेव का भाई था ।

[सं. वत्सक] ५ पुष्प कसीस ।

६ कूलज ।

७ निर्गुण्डी ।

८ कंस के अनुचर वत्स का नामांतर ।

रू. भे.—बछक, वछक ।

वत्सनाभ—सं. पु. [सं.] १ हिमालय की तराई में कम ठंडे भागो में पैदा होने वाला वछनाभ नामक एक प्रकार का पौधा ।

२ उक्त पौधे की जड़ से निकलने वाला विष विशेष जो मीठा होता है, मीठा विष ।

रू. भे.—बच्छनाग, वच्छनाभ, बछनाग, बछनाभ, वच्छनाग, वच्छनाभ ।

३ एक महर्षि । (चरित्र कोश)

वत्सर—सं. पु. [सं. वत्सरः] १ द्वादश मास की एक अवधि, वर्ष ।

२ विष्णु का एक नाम ।

३ एक राजा जो ध्रुव राजा का छोटा पुत्र था ।

[सं. वत्सतरः] ४ वह बछड़ा जो जवान व जोतने योग्य हो गया हो ।

रू. भे.—बच्छ, वच्छर, बतसर, बत्सर, वच्छर, वच्छरी, वछर वछरि, वतसर ।

वत्सराज—सं. पु. [सं. वत्स.+राज] १ गाय का बछड़ा ।

२ गौतम बुद्ध का समकालीन कौशाबी का प्रसिद्ध राजा, उदयन ।

३ कौशल देश का एक राजा जो द्रोपदी स्वयंवर में उपस्थित था, वत्स ।

४ संवत् १५६० के लगभग हुए अजमेर के प्रसिद्ध दानवीर गौडवंशीय राजा का नाम ।

रू. भे.—बछराज वछराज ।

वत्सळ वत्सल—वि. [सं. वत्सल] (स्त्री वत्सला) १ जो पुत्र या संतान के प्रति स्नेहालु हो, प्रेम से परिपूर्ण हो ।

२ जो अपने छोटों के प्रति कृपालु, दयालु हो ।

सं. पु [सं. वत्सल] १ अनुराग, प्रेम ।

२ वात्सल्य रस ।

रू. भे.—बच्छळ, बछळ, वच्छळ, वच्छल, वछळ, वाछळ ।

वत्सलता—सं. स्त्री.—१ स्नेहालु या कृपालु होने की अवस्था, भाव ।

२ अनुराग, प्रेम ।

३ कृपा, दया, अनुग्रह ।

रू. भे.—वच्छलता ।

वत्सासुर—सं. पु. [सं.] वत्स नामक असुर जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया ।

रू. भे. बछासुर, बछासुर, वछासुर, वछासुर ।

बथ—देखो 'बाथ' (रू. भे.)

उ०—रथ छाडि राजन उतरया, रूखमण्यौ साहिउ बथ । दड दोट वाजई कोट भाजई, वेग वाल्या हथ । —रुकमणी मंगळ

बथवो, बथूअउ—देखो 'बथवो' (रू. भे.) (उ. र.) (अमरत)

बथूळियो—देखो 'बथूळो' (अल्पा., रू. भे.)

बथूळो—देखो 'बथूळो' (रू. भे.)

बद–सं. पु.—१ किसी विषय का विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का वास्तविक ज्ञान।

२ वृक्ष।

३ चारों वेद।

४ किसी मास का अर्धभाग, कृष्ण पक्ष, जिसमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः ह्रास होता है और पूर्व निशा में अंधकार बढ़ता जाता है।

५ एक रोग विशेष। (भाव प्रकाश)

६ देखो 'बद' (रू. भे.)

रू. भे.—बद।

बदक–वि. [स. वद्] कहने वाला, वक्ता।

बदको–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

२ सज्जन, भला।

३ अधिक, बहुत।

रू. भे.—बदको।

बदखोर, बदखोरो—देखो 'बदखोर' (रू. भे.)

उ०—कर जुध धरा रह्यौ करनांणी। बदखोरौ आयौ चढ बाढ।
—द. दा.

बदगड–सं पु.—दिल्ली का एक नामान्तर।

बदणौ, बदबौ–क्रि. स. [सं वद्] १ कहना।

उ०—१ महा सुगण रूप है सुचित सार आचार में, सखां कवण जोड़-जें, अघट आज संसार में। यळा सह बदै यसो, सुजन रांम साधार है। पुणां जम जिवै पढौ, सुज कथा स अधार है। —र. ज. प्र.

उ०—२ सुनण 'नाथ' 'खेतसी' बदै सांदू खग वाहण। 'वखतौ' लिड़ियौ वदै, रखूं 'अमरा' जेही रण। —सू. प्र.

२ उच्चारण करना, बोलना।

३ वर्णन करना, उल्लेख करना, निरूपण करना।

उ०—सात सहस नव सौ सकळ, ऊपरि रूप अढार। जजसन लघु गुर जांणिजै, बदि गुण रतन विचार। —ल. पिं.

४ बात करना।

५ सूचना देना, बताना।

६ पुकारना, चिल्लाना।

७ महत्व देना, बड़ा मानना, मान देना, इज्जत करना।

उ०—१ सु रावळ घड़सी जगमालनूं कहै छै-ऐ हईया पोहड़ द्रंग बसै छै, तिकै ऐ म्हांनूं लिगार मात्र बदै न छै। ए अठा ताई जैसल-री धरती में छै तितरै म्हानूं धरती री आस कांई नहीं।
—नैणसी

८ किसी प्रकार की मान्यता देना, मानना, किसी श्रेणी में गणना करना।

उ०—१ सो ए पांच दड हुवै तिण नै राजा बदै।
—पंच दंडी री वारता

उ०—२ बदियौ स्वांन बनचरां, नहिं लाज निहारै। मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै। —सू. प्र.

९ मानना, स्वीकार करना।

१०—आज्ञा देना, निर्देश देना।

उ०—१ सांपन्ना भूक हुवै सुख सात, बदौ जो हि देव करूं सो ही बात। सांप्रत सांमी मौ मज्झ सरीर, गोविंद गदाधर ग्यांन गहीर।
—ह. र.

उ०—२ पांवा रहण बदी पतसाहां सिर दावां धावां सहण। दारण रूप बाजिया दारण, बारण नै बारण बहण।
—लिखमीदास गाडण

११ बाजी लगाना, शर्त बदना, होड़ लगाना।

उ०—समंद फाळ कूदै हणू, जहर जारै संकर, सेस ही भुजां धर भार साहै। 'करण' रै 'पदम' जिम साह रै कटंडै, बदू जो कोई तरवार बाहै। —द. दा.

१२ प्रतिस्पर्धा करना।

उ०—बदि रुद्र ग्याग स्रोहयां बाहै। सूर थंभि रथ हाथि सराहै।
—सू. प्र.

१३ बढ़ बढ कर बातें करना, डींग हांकना।

१४ बहस करना, जिद्द करना।

१५ परस्पर निश्चय करना, नियत, मुकर्रर या तय करना।

१६ परिश्रम करना, उद्योग करना।

१७ देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

बदणहार, हारौ (हारी), बदणियौ—वि०।

बदिओड़ौ, बदियोड़ौ, बदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बदीजणौ, बदीजबौ—कर्म वा०।

वदणौ, बदबौ, बधणौ, बधबौ—रू० भे०।

बदन–सं. पु. [स.] १ मुख, मुंह। (अ. मा.)

२ चेहरा, शक्ल, सूरत।

उ०—१ अति रूप क्रांति उजास, प्रफुल्ल बदन प्रकास। आवियौ पह उण वार, मिंदरां राज मझार। —सू. प्र.

उ०—२ पूछ्यां विना पयंपै पापी, घट विच कहै लात सिर थापी। बदन मत दिखाळै बंस द्रोही बळै। —र. रू.

उ०—३ विळखीजै तरुणी बदन, कंथ न आयौ तीज। मावड़ियां आयां मुहम, बदन जाय विळखीज। —बां. दा.

३ रूप, आभा।

४ अग्र भाग, अगला हिस्सा।

५ प्रथम संख्या।

६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

७ देखो 'वदन' (रू. भे.)

रू. भे.—वदन, वदन्न, वदनि, वदन्न, वदीन ।

वदनारविंद-सं पु. [सं. वदन+अरविंद] कमल के समान मुख, मुखारविंद ।

वि.—उक्त प्रकार के मुख वाला ।

वदनि—देखो 'वदन' (रू. भे.)

उ०—वदन चंद महाग्म लेड घडिउं, अमीय गह तणी रसना जडिउं । पवन चंदनगंध हरावतउ, वदनि वासि वसइ दिसि वासतु ।
—सालिसूरि

वदनीत—देखो 'वदनीयत' (रू. भे.)

उ०—वदनीत पाप चल धरम बाध, सब तजे धरम कत दुस्ट साध । मिट पूज देव मरजाद मूक, चळ विचळ अमर सब थान चूक ।
—शि. रू.

वदन्न—देखो 'वदन' (रू. भे.)

उ०—सुणि निबाव समरत्त, जाव छत्रपत्ति जवन्नां । सूर मीर सोचिया, नूर खंचिया वदन्ना । —रा. रू.

वदपख-सं. पु. [सं. वदि-पक्ष] किसी मास का कृष्ण पक्ष ।

उ०—मधि हिमरित वर अघण मास । सनि चतुरदस वदपख सकाज । —सू. प्र.

वदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

वदरंगी—देखो 'बदरंगी' (रू. भे.)

वदरा-सं. स्त्री.—धन, दौलत, वित्त ।

रू. भे.—बदरा ।

वदरीनाथ—देखो 'बदरीनाथ' (रू. भे.)

वदळ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै । झीण वदळ मांझळ रवि भळकै । —सू. प्र.

वदळणौ, वदळबौ—देखो 'बदळणौ, बदळबौ' (रू. भे.)

वदलाड़णौ, वदलाड़बौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळाणौ, वदळाबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळावणौ, वदळावबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळायत—देखो' बदळायत' (रू. भे.)

उ०—वदळायत नायक अग वजै, भय आंगण नायक नोज भजै । चोह चाल भालाळ विचाळ लियौ, किरणाळर झाळ कुंडाळ कियौ ।
—पा. प्र.

वदळी—१ देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेरे पिया के देस बरस वदळी, मेरे पिया के । —लो. गी.

२ देखो 'बदळी' (रू. भे.)

वदळे, वदळै—देखो 'बदळै' (रू. भे.)

उ०—रात गमाई सोयकर, दिवस गमायो खाय । हीरा जलम अमोल था, कोडी वदळै जाय । —अज्ञात

वदळौ—देखो 'बदळौ' (रू. भे.)

वदांन्य-वि. [सं. वदान्य] १ जो मृदु भाषी हो, जिसकी बोली मधुर हो ।

२ जो बहुत उदार चित्त हो, दयालु ।

३ बात चीत करने पर संतुष्टि देने वाला ।

रू. भे.—वदांन्य ।

वदांन्यता-सं. स्त्री. [सं. वदान्यता] १ वदान्य होने की अवस्था या भाव ।

२ उदारता, कृपा ।

वदांम—देखो 'बादांम' (रू. भे.)

वदांमण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे.)

२ देखो 'वदावन' (रू. भे.)

वदांमी—देखो 'बादांमी' (रू. भे.)

वदांवण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे.)

२ देखो 'वदावन' (रू. भे.)

वदाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

वदाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

वदाउ, वदाऊ—देखो 'बधाऊ (रू. भे.)

वदाउड़ौ—देखो 'बधाऊ' (अल्पा., रू. भे.)

वदाड़णौ, वदाड़बौ—देखो 'वदाणौ, वदाबौ' (रू. भे.)

वदाड़णहार, हारौ (हारी), वदाड़णियौ—वि० ।

वदाड़िओड़ौ, वदाड़ियोड़ौ, वदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वदाड़ीजणौ, वदाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वदाड़ियोड़ौ—देखो 'वदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदाड़ियोड़ी)

वदाणौ, वदाबौ-क्रि. स. ['वदणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ कहलाना ।

२ उच्चारण कराना, बोलाना ।

३ वर्णन कराना, उल्लेख कराना, निरूपण कराना ।

४ बात कराना ।

५ सूचना दिराना, बतलाना ।

६ अवाज दिराना, चिल्लाहट कराना ।

७ महत्व, मान व इज्जत दिराना, बडा मनवाना ।

८ किसी को किसी प्रकार की मान्यत दिराना, मनवाना, किसी श्रेणी में गणना करवाना
९ स्वीकार कराना ।
१० आज्ञा या निर्देश दिलवाना ।
११ बाजी लगवाना, शर्त लगवाना, होड़ लगवाना ।
१२ प्रतिस्पर्धा कराना ।
१३ बढ़-बढ़ कर बातें करवाना
१४ निश्चय, नियत या तय कराना ।
१५ बहस या जिद् कराना ।
१६ परिश्रम कराना, उद्योग कराना ।
१७ देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

वदाणहार, हारौ (हारी), वदाणियौ—वि० ।

वदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वदाईजणौ, वदाईजबौ—कर्म वा० ।

वदाणौ, वदाबौ, वदावणौ, वदावबौ, **बिधाणौ, बिधाबौ, वदाड़णौ, वदाड़बौ, वदावणौ**, वदावबौ—रू. भे. ।

वदायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कहलाया हुआ. २ उच्चारण कराया हुआ, बोलाया हुआ. ३ वर्णन कराया हुआ, उल्लेख कराया हुआ, निरूपण कराया हुआ. ४ बात कराया हुआ. ५ सूचना दिराया हुआ, बतलाया हुआ. ६ आवाज दिराया हुआ, चिल्लाहट कराया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिराया हुआ, बड़ा मनवाया हुआ. ८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दिराया हुआ, गणना कराया हुआ. ९ स्वीकार कराया हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिलवाया हुआ. ११ प्रतिस्पर्धा कराया हुआ. १२ बढ़-बढ़ कर बातें करवाया हुवा. १३ बाजी, शर्त या होड़ लगवाया हुवा. १४ निश्चय, नियत या तय कराया हुवा. १५ बहस या जिद् कराया हुआ. १६ परिश्रम कराया हुआ, उद्योग कराया हुआ ।

१७ देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदायोड़ी)

रू. भे.—'बिधायोड़ौ' ।

वदारौ—देखो 'वधारौ' (रू. भे.)

वदावणौ, वदावबौ—१ देखो 'वदाणौ, वदाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

उ०—ल्याई मालण सेहरौ हे सहेली, पनाजी रै सीस गुलाब रौ । रसीलाराज उण राजकंवर नै प्रौर वदावण वेहगौ ।

—रसीलै राज रा गीत

वदावणहार, हारौ (हारी), वदावणियौ—वि० ।

वदाविप्रोड़ौ, वदावियोड़ौ, वदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वदावीजणौ, वदावीजबौ—कर्म वा० ।

वदावन—सं. स्त्री.—१ स्वागत, सत्कार ।

२ अगवाणी ।

रू. भे.—वदांमण, वदावण, बदावन, वदांमण, वदांवन, वद्धांमणी ।

वदावियोड़ौ—१ देखो 'वदायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री वदावियोड़ी)

वदि—अव्य. [सं. वदि] किसी मास के कृष्ण पक्ष की ।

उ०—१ दीमे न न्याय भोगवि दसा, पडछौ सुदि वदि पख री देखें नें साच दाखे दुनी, खांडौ चांदौ ए-खरौ । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ सतरह, मतसठ्ठ, वरीसइ, मिगसर वदि दुतिया दीसइ हो ।

—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—बदि, बदी, वदी ।

वदियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कहा हुआ । २ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ । ३ वर्णन किया हुआ, उल्लेख किया हुआ, निरूपण किया हुआ. ४ बात किया हुआ. ५ सूचना दिया हुआ, बताया हुआ. ६ पुकारा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिया हुआ, बड़ा माना हुआ । ८ किसी प्रकार की मान्यता दिया दिया हुआ, किसी श्रेणी में गणना किया हुआ. ९ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिया हुआ. ११ बाजी, शर्त या होड़ लगाया हुआ. १२ प्रतिस्पर्धा किया हुआ. १३ बढ बढ़ कर बातें किया हुआ, डींग हांका हुआ. १४ बहस या जिद् किया हुआ. १५ निश्चय, नियत या तय किया हुआ. १६ परिश्रम किया हुआ, उपयोग किया हुआ. १७ देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदियोड़ी)

वदी—१ देखो 'वदि' (रू. भे.)

२ देखो 'बदी' (रू. भे.)

उ०—सांसण श्री उथपिया सांभळ, विरड़ कुमंत्री करै वदी । जादव कांनौ दियै नह जग, जादव थाभौ दियै जदी —कविराजा बांकीदास

वदीत, वदीतउ—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—येहड़ौ लाग आहाड़ा हुऐ, तुऊ घर बीयां न होय । दत देतां ग्रीखम दरसाणौ, सीत वदीत हुई सगळोय ।

—जोगिदास कवारीयौ

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

उ०—१ राउन श्री भीम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे । पधारौ जेसलमेरु नइजी, प्रीति घरी निज चित्त रे । —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ वसुधा वीर वदीतउ जीतउ जिणि जरासंघु । तहि हरि अखिल टालए पालए राज सुबंधु । —जयसेखर सूरि

बदीतं—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

बदीतो—वि. [सं. विदित] (स्त्री. वदीती) १ प्रसिद्ध, विख्यात ।

उ०—१ जपियो मिघ्र जिण विध जुध जीता, वधं वंस खैरोंद बदीता । असुर हरण अद वाण अथागा, वर सिधकरि खैरोदा वागा ।
—सू. प्र.

उ०—२ बीजा पूरो मंन बीनो, वजाए जत्राई वाजा । जीती जीती महाराजा बदीतौ जगति । —दूदौ सुरताणोत बीठू

उ०—३ पूज्या मनूं इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासैं दूरैं हो । जिण चौसट योगिनी जीती, वरतइ ए बार बदीती हों । —ध. व. ग्र.

२ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

बदूळ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—सो कंग सांमळं बदूळ पर बीजूजळा का मिळाव । ऐसे भयानक एकलगिड़ बराह ढाए । —सू. प्र.

बदूसणौ, बदूसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे.)

बदूसियोड़ौ—देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बदूसियोड़ी)

बदेस—देखो 'विदेस' (रू. भे.)

उ०—बहु घंघाळ आव घरि, फासू करइ बदेस । संपत सघळी सपजं, सं दिन कदी लहेस । —ढो. मा.

बदोतर—वि. [सं. वृद्धोत्तर] १ बढ़ा हुआ, अधिक ।

२ बढ़ने योग्य ।

३ समाप्त प्राय ।

बदोवद, बदोवदि—स. पु. होड़, प्रतिस्पर्धा ।

रू. भे.—वादोवदी ।

बद्दळ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—गिरि जागि चरण लहि लखत गोम, बद्दळ इळ दरसं छांडि व्योम । जघाळस वदण चित्र जास, किरि जळद इद्र धांनुख प्रकास ।
—रा. रू.

बद्दळी, बद्दल्ली—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

बद्धणौ, बद्धबौ—देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

उ०—लोय लोयण दळं अमिउ वरसंतउ वद्धए सुद्ध जिम बीय चदो । —ऐ. जै. का. सं.

बद्धमांन—देखो 'वरद्धमांन' (रू. भे.)

बद्धांमणी—सं. स्त्री.—१ देखो 'बधांमणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बीतउ कान्ह वात इम सुणी, नगर लोक द्यइ बद्धांमणी ।

मदनभेरि भूंगळ भरहरइ, वरण अढ़ारइ जय-जय करइ ।
—कां. दे. प्र.

२ देखो 'बदांवण' (रू. भे.)

बद्धांमणौ—देखो 'बधांमणौ' (रू. भे.)

बद्धाणौ, बद्धाबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

बद्धापन—देखो 'बूढ़ापण' (रू. भे.)

बद्धायोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बद्धायोड़ी)

बद्धावणौ, बद्धावबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

उ०—वगु विणासी वगु विणासी मीमु आवेइ, बद्धावइ जणु मयलु जीव दांनु तइ देव दिद्धऊ केवलिवयणु जु सच्चु किउ त्रिहुं भुयणि जसवाउ लिद्धउ । —पं. पं. च.

बद्धावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बद्धावियोड़ी)

बद्धियोड़ौ—देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बद्धियोड़ी)

बध—सं. पु. [सं.] १ जान-बूझ कर किसी को मारने की क्रिया या भाव, हत्या ।

२ विनाश, विध्वंस ।

३ विरोध, वैर, वैमनस्य ।

उ०—रांणौ कुंभौ पाट छै । मांहोमांहि भाइयां आसि बध लागौ ।
—नैणसी

४ आघात, प्रहार ।

५ युद्ध ।

रू. भे.—वध, व्रध ।

बधक—सं. पु.—१ मछली पकड़ने का कांटा । (अ. मा.)

२ देखो 'वधिक' (रू. भे.)

उ०—हांणि कहयां कोई न पतीजै, निहचै अग बधक कूं दीजै । जमनिति सदा बधक न हिरणां, चौरासी में दौड्याई फिरणां ।
—ह. पु. वा.

रू. भे.—बधक ।

बधण—सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] बढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि, बढ़ोतरी ।

उ०—बधण सरस वरस वरस, दरस कमंध कुळदाप । अरस लगो छक ऊफणै, पौरस तूझ 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ

बधणौ, बधबौ—देखो 'वधणौ, बधवौ' (रू. भे.)

उ०—१ आभा रूप जोम ऊफांणिक, वणियौ अनग दूसरै वांणिक ।

वीर तदिन कीरति वाधारी, भरथ साख **वधियौ** कुळ भारी ।
—सू. प्र.

उ०—२ पांण जोड़ रिणछोड़ पूजजे, प्रथी चौगणीं वधं प्रमांण ।
—ह. नां. मा.

वधणहार, हारौ (हारी), वधणियौ—वि० ।

वधिग्रोड़ौ, वधियोड़ौ, वध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधीजणौ, वधीजबौ—कर्म वा० ।

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू. भे.)

वधतेरौ - देखो 'वधतौ'

वधतौ—देखो 'वधतौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद पूलै नूं कयौ 'चौधरी इसी दातारगी कर सू पांडू गोदारै सूं नांम वधतौ हुवै । —द. दा.

उ०—२ 'पातळ' दत वीरत पणौं, समंदर तणौं सभाव । **वधती सूं** वधती वणौं, चढ़ती लहर चढ़ाव । —जैतदांन बारहठ

(स्त्री. वधती)

वधरणौ, वधरबौ–क्रि. अ. [सं. वर्धनम्] १ आगे बढ़ना, अग्रसर होना ।

उ०— जेसळ आप वडइ असवार, कोस **वधरइ** वारा वार । जोयण एक घड़ी मइ जाइ, हारइ नहीं न थाका थाइ । —ढो. मा.

२ वृद्धि को प्राप्त होना, वृद्धि होना ।

३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु का त्रुटित होना, टूटना ।

४ काटा जाना ।

५ किसी देवता को चढ़ाने के लिये नारियल आदि को फोड़ा जाना, तोड़ा जाना।

६ विस्तार होना, विस्तृत होना, लम्बा होना ।

७ बोला जाना ।

वधरणहार, हारौ (हारी), वधरणियौ—वि० ।

वधरिग्रोड़ौ, वधरियोड़ौ, वधरघोड़ौ—भू० का० कृ०

वधरीणौ, वधरीजबौ—भाव वा० ।

वधरणौ, बधरबौ—रू० भे०

वधराणौ, वधराबौ–क्रि. स. [वधरणौ क्रि. का प्रे. रू.] १ आगे बढ़ाना, अग्रसर कराना

२ वृद्धि कराना/करना।

३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ाना ।

४ कटवाना ।

५ देवताओं को नारियल आदि फोड़कर चढवाना।

६ विस्तार कराना, लंबा कराना ।

७ बोलाना, बुलवाना ।

वधराणहार, हारौ (हारी), वधराणियौ—वि० ।

वधरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधराईजणौ, वधराईजबौ—कर्म वा० ।

वधराणौ, बधराबौ, बधरावणौ, बधरावबौ, वधरावणौ, वधरावबौ—रू. भे.

वधरायोड़ौ–भू. का. कृ. [स्त्री. वधरायोड़ी] १ आगे बढ़ाया हुआ, अग्रसर किया हुआ. २ वृद्धि कराया हुआ/किया हुआ. ३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ाया हुआ. ४ कटवाया हुआ. ५ देवताओं को नारियल आदि फोड़ कर चढ़वाया हुआ. ६ विस्तार कराया हुआ, लंबा कराया हुआ. ७ बोलाया हुआ, बुलवाया हुआ ।

वधरावणौ, वधरावबौ—देखो 'वधराणौ, वधराबौ' (रू. भे.)

वधरावणहार, हारौ (हारी), वधरावणियौ—वि० ।

वधराविग्रोड़ौ, वधरावियोड़ौ, वधराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधरावीजणौ, वधरावीजबौ—कर्म वा० ।

वधरावियोड़ौ—देखो 'वधरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वधरावियोड़ी)

वधरियोड़ौ–भू. का कृ.—१ आगे बढ़ा हुआ, अग्रसर हुवा हुआ. २ वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. ३ त्रुटित हुवा हुआ, टूटा हुआ. (चूड़ी आदि) ४ कटा हुआ. ५ फोड़ा हुआ, फूटा हुआ, तोड़ा हुआ. (नारियल आदि) ६ विस्तारित, विस्तृत ।

(स्त्री. वधरियोड़ी)

वधरोम, वधरोमौ–सं. पु.—सुग्रर, वराह । (ग्र. मा , ह. नां. मा.)

रू. भे.—वधरोम ।

वधांमण, वधांमणउ—देखो 'वधांमणौ' (रू. भे.)

उ०—जाय हुइ बेटउ, तउ आवइ लोक भेटउ, कीजइ **वधांमणउ**, सकल लोक आंणंदणउं । —व. स.

वधांमणी–सं. स्त्री.—देखो 'वधांमणौ' (अल्पा., रू. भे)

उ०—मागइ मात **वधांमणी**, धव धव धाया लोक । ताहरु माधव आवीउ, आज समाविन सोक । —मा. कां. प्र.

उ०—२ आवी नें वन पालक दीध **वधांमणी** रें, गुरु आगमन प्रघोस । वादिवा चाल्यौ निज परवार सुं रें, हो नृप तेहनें संतोस ।
—वि. कु.

उ०–३ राजडीउ भायाइत जेउ, नइ केल्हण रइबारी वेउ । राउल भणी गया परि सुणी, वेगइ मांगइ **वधांमणी** । —कां. दे. प्र.

वधांमणौ–स पु. [सं. वर्द्धमानकम्] १ स्वागत, अगवानी ।

उ०— तठा उपरांति करि नें राजांन सिलांमति राजांन राजावत ग्रंराव रै रिणखेत हाथी आयौ छै। रिण जीत नगारा घुबै छै ।

फतै रा मैदाना वागा छै। जस जैत रा डंका वाजिया छै। कुसळखेम आगद रा वधाइदार दौड़िया छै। घगा साम्हा फौजा रा मडूम वालीया छै। प्रावै छै सु किरा भात बखाणीजै छै। पातसाह रा डेरा हुसम रतन नवलूआ हुता सु आंगि थागां दाखलि कीआ छै। अजमेर रा थाणा री जमीत कीजै छै। घरि घरि मगळाचार आगद वधांमणां कीजै छै। घणा माल निजराति उवारीजै छै।

—रा. सा. स.

२ आदर, सत्कार, मान सम्मान।

३ आनन्द, उत्साह, खुशी। (उ. र.)

उ०—१ अस्हारा है, आज वधांमणा, सहेली है गावउ मगलच्यार। पहिरउ है मगल माहरउ, सहेली है गावउ अरिहंत देव। तित्थंकर त्रिभुवन तिलो, कर जोड़ी है। नरि सुरनर सेव।

—स. कु.

उ०—२ निबोजी फतै करै नै गाव भिगाले पधारिया, वधांमणा हुवा।

—वीरमदे सोनगरा री वात

४ किसी के स्वागत में या आनन्द या खुशी में गाया जाने वाला गीत।

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नगर, वाजै सुमर वधांमणा। वाजत्र सुताम छत्रीस वगि, सोभै ग्यान सुहांमगा। —रा. रू.

५ शुभ समाचार या शुभ सन्देश सुनाने की क्रिया या भाव।

६ उक्त समाचार सुनाने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार।

रू. भे.—वदावणो, वधांमणो, वधावणो, वद्धामणो, वधामण, वधामणउ, वगावणो।

अल्पा.,—वधामणी।

वधांमणो, वधांमबो— देखो 'वधाणो, वधाबो' (रू. भे.)

वधामणो, वधामबो—देखो 'वधाणो, वधावो' (रू. भे.) (उ. र.)

वधाइ—देखो 'वधाई'।

उ०—वधाइ वधाई जसोदा वधाई। —नागदमण

वधाइदार—देखो 'वधाईदार' (रू. भे.)

उ०—फतैरा मैदाना वागा छै। जस जैत रा डंका वाजिया छै। कुसळखेम आगद रा वधाइदार दौडिया छै। —रा. सा. सं.

वधाई—देखो 'वधाई' (रू. भे.)

उ०—सिवी नदी तिरनै साहजादी नूं ले नीसरियो। सारै वधाई वाली। साहजादी सिवं सू बहोत राजी हुई। बहोत वधाई दीवी। घोड़ो सिरोपाव दियो। —नैणसी

वधाईवार—देखो 'वधाईदार' (रू भे.)

उ० - विलकुलै वधाईवार वधि, आगद उछब अथाह म। आगम्म लवर 'अभगाह' री, जाय कहै 'जैसाह' सू। —सू प्र

वधाउ—देखो 'वधाऊ' (रू. भे.)

उ०—महि बीता दस मास, आम नृप कुंवर जनम्मै। वधाउवां जिणवांर 'अजं' बहु दरब उघमै। —सू. प्र.

वधाउड़ो, वधाऊड़ो—देखो 'वधाऊ' (अल्पा, रू. भे.)

वधाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू. भे.)

उ०—ए उछाह करंता आया, आगै जनक वधाऊ आया।

—रांमरासो

वधाऊहार—देखो 'वधाईदार' (रू. भे.)

उ०—इसो आणंद देखि के कटक मांहे थैं वधाऊहार आगै वदोवदि दोड्या। —वेलि टी

वधाणो, वधाबो—देखो 'वधाणो, वधाबो' (रू. भे.)

उ०—१ इसा रंग उच्छाह सू, रांम आया। वधै मात कौसल्या आए वधाया। —सू. प्र.

उ०—२ साथ मारो अमनां सूं लाल्हरतो थको वहै छै। वधाईदार आगै वधाइया छै। सू वधाई प्रांण दीवी छै। —रा. सा. सं

वधाणहार, हारो (हारी), वधाणियो—वि०।

वधायोड़ो—भू० का० कृ०।

वधाईजणो, वधाईजबो—कर्म वा०।

वधापण—देखो 'बूढ़ापण' (रू. भे.)

वधापो—देखो 'वधापो' (रू. भे.)

वधायक—वि. [सं. बृध्-वर्धयते] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उ०—वधै राज सुख विरुद, वधै हित संपत वधायक। अवर वधै दिन इनो, वधै पल पल वरदायक। —सू प्र.

२ देखो 'विधायक' (रू. भे.)

३ देखो 'विधेयक' (रू. भे.)

वधायोड़ो—देखो 'वधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वधायोडी)

वधारण—वि [सं. वृद्धि-कारः] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

२ खींचने वाला, लम्बा करने वाला।

३ त्रुटित करने वाला, तोड़ने वाला।

वधारणो, वधारबो—क्रि. स. ["वधरणो" क्रिया का प्रे. रू.] १ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना, आगे जाने के लिये प्रेरित करना।

उ०—'रूपा' 'पातां' 'जाधळां' छळ जोधांण नरिंद। वस छत्रीमां झल्लिया, घस वधारण दुंद। —रा. रू.

२ वृद्धि करना, बढ़ाना। (उ. र.)

उ०—१ वनि वनि विकसइं वेउल खेउ लगाडइं चींति । दीठा द्राखह मंडव मंड **वधारइं** प्रीति । —जयसेखरसूरि

उ०—२ देवर माहरि वरि नहीं, ऊठी गिउ म्राखेटि । प्रीऊडा-पंजरि पापीह, जलण **वधारिउ** जेठि । —मा. कां. प्र.

३ विस्तार करना, फैलाना, लम्बा करना ।

उ०—१ वधि रां' ण सुवप **वधारियौ**, असमांण छिबतौ म्रावियौ । —सू. प्र.

उ०—२ सिखा फरहरती, उत्तरासंगी घोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउ जनोइ सिर भद्रिउं तिलक **वधारिउं**, गायत्री साधनुं । —व. स.

उ०—३ ऊणी राजा जोवा गयु, दीठूं खडग रलिया प्रति थयु । वेगि लेई **वधारू** चीर, पिहिरी खंड नीसरयु वीर । —नळाख्यान

उ०—४ राज गरीब निवाज, जेण प्रहळाद उबारै । राज गरीब निवाज, द्रोपदा चीर **वधारै** । —गजउद्धार

४ मान देना, इज्जत देना, सम्मान ।

उ०—१ सु पछै रावळ घड़सी धरती वाळी, तरै सारां विखायतां नूं **वधारिया** तरै महियां नूं कह्यौ—'थे माहरी वडी चाकरी पोहता छौ, सु थे मांगो जितरी धरती म्हे थांनूं दां । —नैणसी

उ०—२ पाछै जिण दिन तख्त बैठियौ छत्र धारियौ ता'हरां बहरांम कवी से ने तेड़ पूरौ **वधारियौ** । —नी. प्र.

५ काटना, कतरना, टुकड़े करना ।

६ किसी देवता को चढ़ाने के लिये नारियल म्रादि को फोड़ना, तोड़ना ।

७ चूड़ी म्रादि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ना, समाप्त करना ।

वधारणहार, हारौ (हारी), वधारणियौ—वि० ।

वधारियोड़ो, वधारियोड़ौ, वधारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधारीजणौ, वधारीजबौ—कर्म वा०

बंदारणौ, बंदारबौ, बंधारणौ, बंधारबौ, बदारणौ, बदारबौ, बधारणौ, बधारबौ, बनारणौ, बनारबौ, बाधारणौ, बाधारबौ, वाधारणौ, वाधारबौ । —रू. भे. ।

वधारियोड़ो-भू. का. कृ.—१ म्रागे बढ़ाया हुम्रा, म्रग्रसर किया हुम्रा, बढ़ने के लिए प्रेरित किया हुम्रा. २ वृद्धि किया हुम्रा, बढ़ाया हुम्रा. ३ विस्तार किया हुम्रा, फैलाया हुम्रा, लम्बा किया हुम्रा. ४ मान, सम्मान व इज्जत दिया हुम्रा. ५ काटा हुम्रा, कतरा हुम्रा, टुकड़े किया हुम्रा. ६ फोड़ा हुम्रा, तोड़ा हुम्रा. (नारियल) ७ तोड़ा हुम्रा, समाप्त किया हुम्रा. (मांगलिक पदार्थ)
(स्त्री. वधारियोड़ी)

वधारौ—देखो 'बधारौ' (रू. भे)

उ०—१ दिम्रा **वधारा** देस दे, हैंवर द्रव्य हसत्ति । पतिसाही । ऊपरां, यू कहिम्रौ म्रसपत्ति । —वचनि

उ०—२ यया हरख सौ गुणा, भड़ां चौगुणा **वधारा** । साज हूं गजराज, किताइ घजराज सिरा रा । —रा. व

उ०—३ म्रावियां सेव पावौ उतन्न । घर सहत **वधारा** विगु धन्न । —सू. प्र

वधाव—देखो 'बधाव' (रू. भे.)

उ०—नितु नितु जोसी पूछोइ, नितु नितु सुकन मुभाव । नित नि निरति विहूणडां, म्राविइ वली **वधाव** । —मा. कां.

वधावणौ—देखो 'वधांमणौ' (रू. भे.)

उ०—महाराय श्री कल्यांणमलजी जन्म महोच्छव मांगळिक **वधाव** कराया । —द. वि

वधावणौ, वधावबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ भलौ भलौ सारो जग भाखै, कही न लाई वात कई मागज धरां **वधावण** मोटां, मोटी पाघ संसार मई । —द. द

उ०—२ सहू महाजन हरखीया, कोण देस कहो कुणि ठांमि रावळी पोळै म्रावीया, पोळघा वेगी **वधावउं** जाह । —बी.

उ०—३ इणि परि राउ **वधावीइ**, मनि म्राण्यां हे परमांणंद नयर लोक म्रासांचरीजि' जउ इम बोलइ ए 'हीराणंद' —हीराणंद सू

वधावणहार, हारौ (हारी), वधावणियौ—वि० ।

वधाविम्रोड़ो, वधावियोड़ौ, वधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधावीजणौ, वधावीजबौ—कर्म वा० ।

वधावधि, वधावधी—देखो 'बढावढी' (रू. भे.)

उ०—**वधावधि** राड़ि करै खगवाह । सत्रां 'परसावत' 'माहवसाह' —सू.

वधावियोड़ो—देखो 'वधायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वधावियोड़ी)

वधावौ—देखो 'बधावो' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीर पुरस री स्त्री नै म्रा वात रुची नहीं, तिण कहै है कि हे सखियां फगत ऊजळा कपड़ा राखण वाळां रा **वधावा** गाम्रो पण वीर पुरस नै पिछांणौ नहीं । —वी. स.

उ०—२ घणौ रस रहियौ बडा **वधावा** हुम्रा ।
—गौड़ गोपाळदास री वार

वधिक-सं. पु. [सं. वधकः] १ हत्या करने वाला, हत्यारा, वध क वाला ।

२ प्रहार, घात व चोट करने वाला, घातक ।

३ जल्लाद ।
४ शिकारी, व्याध ।
५ मृत्यु ।
रू. भे.—बधक, बधिक, वधक ।

बधियोड़ौ—देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बधियोड़ी)

बधिर—देखो 'बधिर' (रू. भे.)

बधिरपणौ—देखो 'बधिरपणौ' (रू. भे.)

बधु, बधू—सं. स्त्री. [सं. वधुः, वधूः] १ ऐसी युवती जिसका विवाह तुरन्त ही हुआ हो, दुलहिन, नव विवाहिता ।
२ पुत्र-वधू ।
३ सम्बन्ध की दृष्टि से छोटे की स्त्री ।
४ पत्नी ।
५ स्त्री, औरत ।
रू. भे.—बधु, बधू ।

बधूवर—सं. पु. [सं. वधू-वर] १ दूल्हा । (उ. र.)
२ पति ।

बधेतौ—देखो 'बधतौ' (रू. भे.)

बधेपौ—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

बधेबधि—देखो 'बढाबढी (रू. भे.)
उ०—समोभ्रम 'दीप' हिंदाळ' सधीर । बधेबधि लोह करै नर वीर ।
—सू प्र.

बधोतरी—देखो 'बढोतरी' (रू. भे.)

बधोबधू, बधोबधौ—सं. पु.—मवेशी को चरने के निमित्त हाकते समय किया जाने वाला शब्द ।

बधौ—देखो 'बाधौ' (रू. भे.)
उ०—धम सनेह कुळ मारग धारा । प्राण हूंत बधि आप पियारा ।
—सू प्र.
(स्त्री. बधि, बधी)

बध्धाणौ, बध्धाबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

बध्धाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

बध्धाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)
उ०—सुणि श्रविया बहु सुधन, दुभ्भळ बध्धाईदारां । सभ्भै प्रवासा डवर, चित्र अवछाडि बजारा ।
—सू. प्र.

बध्धावणौ, बध्धावबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)
उ०—सुमत्रा भ्रनै केकई मात साई । भली भांत बध्धाविया ग्यार भाई ।
—सू. प्र.

बध्धावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बध्धावियोड़ी)

बध्रास—सं. पु.—शाक विशेष
उ०—वालु नइं वेलातरु, वेळ वेतस वांणिए । बध्रास बाहलु लीउ, वाउलीउ वखांणिए ।
—मा. कां. प्र.

बनंचर—देखो 'बनचर' (रू. भे.)
उ०—वदियौ स्वांन बनंचरां, नहिं लाज निहारै । मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै ।
—सू. प्र.

बन—सं. पु. [सं.] १ जंगल, विपिन ।
उ०—कुंजर ज्यूं जो केहरी, तूं लेतौ तालीम । कळ में रखवाळत कवण, संपूरण बन सीम ।
—बां. दा.
पर्या०—अटवी, अरण्य, आरण, ऊंख, कंतारक, कखवा, कछ, कातार, कांनन, खंड, गहन, झंक, रन, रिख, विपन, विलवात ।
मुहा०—वन में जाणौ=दिशा (मैदान) जाना, (साधु के लिये)
२ जल, पानी । (ह. नां. मा.)
३ जल का स्रोत ।
४ वाटिका, बगीचा ।
५ कमल ।
६ कमल के फूलों का दस्ता ।
७ आवास स्थान, घर ।
८ काष्ठ, लकड़ी ।
उ०—आतुर चित्त आगळी, धांम विसरांम सुधारे । बन चंदण बावना, अगर घणसार अपारे । महल-काठ चुणि विमळ, पहल, रूई घ्रत पूरित । श्रोप सदळ श्रोछाड़, अमळ परिमळ आंकूरित । उण भवण बसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।
—रा. रू.
९ किरण, रश्मि ।
१० शंकराचार्य के अनुयायी दशनामी संन्यासियों की एक शाखा ।
रू. भे.—वण, बन, बन्न, वण, वनु, वन्न ।
अल्पा.—बनौ, बणौ, वणौ, वन्नि, वन्हि ।
मह.—वनाळ ।

बनअमावस्या—सं. स्त्री.—श्रावण मास की अमावस्या, हरियाली अमावस्या ।

बनउक, बनओक—सं. पु. [सं. वन+ओकस्, वनौक] १ वानर, बंदर । (अ. मा., ह. नां. मा.)
२ वन्य-पशु ।
३ वानप्रस्थाश्रमी, तपस्वी, मुनि ।

वि.—बन में निवास करने वाला, बनवासी।

रू. भे.—बनउक, बनम्रोक।

बनकर–सं. पु. [सं. वन्यकर] सूर्य, भानु।

रू. भे.—बनकर।

बनखंड–सं. पु. [सं. वनखंड] वन, जंगल।

उ०—१ जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ बनखंड दाह। जिण रित मालवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह। —ढो. मा.

उ०—२ बनखंड गिर झगर नह वसियौ, हूं भौ देख कतूहळ हसियौ। —सू. प्र.

रू. भे.—बणखंड, बनखंड।

बनखंडी–सं. पु. [सं. वनखंड+रा. प्र. ई.] १ साधु, संन्यासी, तपस्वी।

२ वनवासी।

रू. भे.—बणखंडी, बनखंडी।

बनगव, बनगाय, बनगाव–सं. स्त्री. [सं. वनं+राज. गव] १ नीलापन लिये हुए भूरे रंग का गाय के आकार का एक वन्यपशु, नीलगाय।

२ एक प्रकार का तेंदू वृक्ष।

रू. भे.—बनगव, बनगाय, बनगाव।

बनड़ो—देखो 'बनो' (अल्प., रू. भे.)

बनड़ो—देखो 'बनो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—होय रंग हबोळोय मांढहडो। वळियो जनवास हमैं बनड़ो। —पा. प्र.

बनचर, बनचरी, बनचरु, बनचारी–वि. [सं. वनचर] (स्त्री. वनचारण, वनचारिण) १ वनमें विचरण करने वाला।

उ०—हाडा, कूरम राठवड़, गोखां जोख करंत। कहज्यो खाना खांननैं, वनचर हुवा फिरंत। —महाराणा अमरसिंह

२ वनवासी, उदासी।

उ०—अरजुन वनचर लागउ वादु, करउं झूझु ऊतारउं नादु। —पं. पं. च.

सं. पु.—१ जंगली प्राणी, जंगली पशु।

उ०—जळचर वनचर आंतरो, जळचर जळ में जोर। बनचर प्रति वेढीमणी, जो कछु लाभै कोर। —गज उद्धार

२ बंदर, वानर। (अ. मा., नां. मा.)

३ हनुमान, बजरंगी।

उ०—हणु मिलत धुर हर दीध सिर हथ, रिधु बजरंग हुवौ समरथ। चवै रघुवर वयण बनचर, सीत सुध साजै। —र. रू.

४ हरिण।

५ शरभ नामक जंगली जंतु।

६ एक प्रकार का जंगली घास।

रू. भे.—बणचर, बनचर, बनचरी, बनचारी, वणचरि, वनंचर, वनेचर।

बनज–वि. [सं. वन+जन्य, वनज: वनजं] वन में उत्पन्न होने वाला।

सं. पु.—१ कमल २ वृक्ष ३ वनस्पति ४ हाथी। ५ सुगन्ध युक्त तृण। ६ नील कमल का पुष्प। ७ जंगली कपास का पौधा।

रू. भे.—बनज।

बनझंगर–सं. पु.—वन की झाडी समूह।

उ०—इण भांत रा बनझगरां मांहै हरिण, सूअर, सांबर, रोज, खरगोस, गेंडा, खग भांति भांति रा जानवर चरै छै। —रा. सा. सं.

बनडंडकारण—देखो 'दंडकारण्य' (रू. भे.)

बनता—देखो 'वनिता' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बनतुळसी–सं. स्त्री. [स. वनं+तुलसी] तुलसी के समान मंजरी व पत्तियों वाला बर्बर नाम एक पौधा विशेष, बर्बरी।

वि. वि.—यह चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वात रोग और नेत्र रोग नाशक है तथा सुख पूर्वक प्रसव कराने वाली है।

रू. भे.—बनतुळसी।

बनद–स. पु. [सं. वनद:] मेघ, बादल।

रू. भे.—बनद।

बनदरसाव–सं. पु.—इन्द्र। (अ. मा.)

बनदेव–सं. पु. [सं. वनदेवता] (स्त्री. वनदेवी) वन का अधिष्ठाता देवता।

बननाथ–सं. पु. [सं.] १ समुद्र।

२ मलय-वन।

बननिधि–सं. पु. [सं.] समुद्र।

रू. भे.—बननिधि।

बनपत, बनपति, बनपती–सं. पु. [सं. वनपति] वन का राजा सिंह,शेर। (अ. मा.)

उ०—१ कोरण सुभट घटा घट कटकां, त्रजड़ां हय दांमणी तप। 'सूर' तणौ घरहरै नरेसुर, वनपत यर खेंगरै वप—देवराज रतनू

उ०—२ लंक वन पति हंसगति को करमण, मनमंत —ढो. मा.

रू. भे.—बनपत, बनपति, बनपती।

बनपाळ, बनपाळक–सं. पु. [सं. वनपालक:] वन या बगीचे का रक्षक, बागवान, माली।

रू. भे.—बनपाळ, बनपाळक।

बनफळ–सं. पु. [स. वनं+फलं] वन के फल-फूल।

रू. भे.—बनफळ ।

बनबिलाव—स. पु [सं. वन+बिडाल:] १ बिल्ली की जाति का परन्तु कुछ बड़े आकार का एक जंगली हिंसक जंतु ।

वि. वि.—इसके शरीर का रंग मटमैला होता है और कानों का बाहरी भाग काला होता है। यह प्रायः झाड़ियों मे रहता है और चिड़ियों को पकड़-पकड़ खाता है ।

२ उक्त प्रकार के जन्तुओं का वर्ग ।

रू. भे.—बनबिलाव ।

बनभ्रंग—स पु. [स. वनभृंग] वन का भ्रमर ।

उ०—जिम केतकी वनभ्रंग, तिम मुगुण सुं मुफ रंग ।

—समय सुंदरगणि

बनमय—वि. [स. वनं+मय=युक्त] वनों मे युक्त या परिपूर्ण ।

रू. भे.—वनमय ।

बनमानस, बनमानुस—सं. पु. [सं. बन+मानुष] १ एक जंगली जंतु जो बन्दर मे कुछ उन्नत और मनुष्य से कुछ मिलता-जुलता होता है ।

२ उक्त प्रकार के जंतुओं का वर्ग जिसमे गोरिल्ला, चिंपेंजी, ओरंग उटग आदि जतु है ।

रू. भे.—वनमानस, वनमानुस ।

बनमाळ, बनमाळा—स. पु [सं वनमाला] वन के पुष्प एवं पल्लवो की गुंथी हुई कट मे पाव पर्यन्त लटकने वाली माला ।

रू. भे.— बनमाळ, वनमाळा, वन्नमाळा ।

बनमाळी—वि. [स.] वनमाला धारण करने वाला ।

सं. पु.—१ ईश्वर । (नां. मा.)

२ विष्णु ।

उ०—पार प्रहळाद तणी प्रतपाळी । वळ घू अखी कियौ वनमाळी ।

—र. ज. प्र.

३ श्री कृष्ण । (अ. मा.)

उ०—भीमकराय भणइ रुक्मइया, वर वनमाळी जांणु । छप्पन कोडि जादव नौ राजा, वस विसुध वखांणु । —रुकमणि मंगळ

४ बागवान, माली ।

उ०—वन माळी रे पुत्तर आयौ । जिण तुळसां री बन रोपायौ ।

—लो. गी.

रू. भे.—बनमाळी, बनमाली, बनवारी, बनवारी, वन्नमाळी, ।

बनमुरगौ—सं पु यो. [स. वनं+फा. मुर्ग] जंगली मुर्गा जो साधारण मुर्गे की अपेक्षा कुछ बडा होता है, वन-कुक्कुट ।

रू. भे.—वनमुरगौ ।

बनमूत—स. पु [स. वनमूत:] बादल, मेघ ।

बनर—देखो 'वानर' (रू. भे.) (नां. मा.)

बनरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

बनराइ, बनराज, बनराय, बनराव—सं. पु [सं. वनराज] १ सिंह, शेर ।

उ०—पद बनराव न पांमियौ, दुरव दिखाळै दांत । सीहू थयौ वन साहिबौ, ठीगांरी संकरांत । —बां. दा.

२ बड़ा जंगल, विशाल वन ।

[सं. वनराजि] ३ वृक्ष, पेड़, वृक्ष समूह ।

उ०—१ धमक खोद धरणी सहै, काट सहै बनराय । फुटक वचन असली सहै, ओरा सह्या न जाय । —श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणी बनरायौ जी । घुड़ साखा अकुरित थइ, सोह वसतइ पायौ जी । —वि. कु.

४ वृक्ष पंक्ति ।

५ पेड़ पौधे, वनस्पति आदि ।

उ०—२ पोस में ओस पड़ै निस, रुदन करै बनराय । दोस विना पिउ रोस करे, तै सोस ज थाय । —ध. व. ग्रं.

६ वन, जंगल ।

उ०—कोघी परतग्या इसी, मन सेती महाराय । पदमणि परणुं तो घरि रहु, नहि तो गिरि बनराय । —प. च. चौ.

७ वनखण्ड ।

रू. भे.—बणराइं, वणराइ, बणराज, बणराव, बणराव, बनराइ, । बनराज, बनराय, बनराव, बणराइं, वणराइ, वणराई, वणराज, वणराय, वणराव ।

बनरवाल, बनरवालि—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—तलिआं-तोग्ग ऊभीआ घरि-घरि बांधीआं ए वनर वालि । गुहरइं मादल रण कीआं तिहिं नाचइं ए नवरंगि बाल । —हीरांणंद सूरि

बनरावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

उ० --आस्रम चौथे आयके इक बनरावन जावै । आस्रम चौथे आयकै इक तीरथ दिस धावै । —अरजुनजी बाहरठ

बनरुह—सं. पु. [स. वनरुह] कमल का फूल ।

बनरोई, बनरोही—सं. पु.—१ बन, जंगल ।

२ बीहड़वन, दुर्गम जंगल ।

रू. भे.—बनरोई, बनरोही ।

बनलक्ष्मी—सं. स्त्री. [सं.] १ वन की शोभा, वनश्री ।

२ केला ।

बनलौ—देखो 'बनौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वरसंता सहरा वीटांणी, नमव न हुए नराळौ । डांणा आज लगौ डुगरियौ, बनलौ कांठळ वाळौ । —अज्ञात

वनवारी—देखो 'वनमाळी' (रू. भे.)

उ०—सोधन पीवजी साज संवारी, अब वेगि मिळो तन जाइ वनवारी। —दादूबांणी

वनवास–सं. पु. [सं.] १ घर, नगर व बस्ती छोड़ कर जंगल का निवास।

उ०—वस राज (जो) रो रावणी, कुण घणी आयत होयबै। वनवास अती दुख घणा, क्या जांणां क्या जोय बै। —रीसालु री बात

२ उक्त प्रकार के निवास की क्रिया, दशा, व्यवस्था, विधान।

मुहा.—वनवास दैणौ=घर से दूर जंगळ मे उदासी बन कर रहने की आज्ञा देना।

रू. भे.—वनबास, बनवास, वनोवास।

अल्पा.—बनवासौ, वणवासु, वनवासु, वनवासौ।

वनवासी–वि [सं. वनवासिन्] १ वन में निवास करने वाला, बसने वाला।

२ उदासी, तपस्वी।

सं. पु.—१ ऋषि-मुनि, संन्यासी, २ वानप्रस्थी।

रू भे.—बनवासी।

वनवासु, बनवासौ—देखो 'वनवास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बारह ए वरस वणवासु नाठै हींडिवुं तेरमई ए। अम्हि किम ए जांणिसु, तुहितउ वनवासु जू नेतलु ए। —प प च.

उ०—२ वनवासौ चवदै वरसां रो, वांमां राग विळावै। बीते पलही कलप बराबर, जिकै दिवस किमि जावै। —र. रू.

वनविळासिणी–स. स्त्री.—वन में विलास या विचरण करने वाली देवी।

वनवीरोत–स. पुं—राठौड़ वश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

वनसण–सं. स्त्री. [स. वनशण] शण-पुष्पी नामक औषधि विशेष। (निघंटु)

रू. भे.—बनसण।

वनसपति, वनसपती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—१ **वनसपति** फूली फळी, नांना रंग धरंति। तिम तूं यौवन जांणीजै, खिण एक-मांहि खिरंति। —मा. का. प्र.

उ०—२ वनसपती पुहपति विसतारै। भंवर गुंजार करै सुर भारै। —सू. प्र.

उ०—३ वनसपती सूं वेलां लपटनै रही छै। —रा. सा. सं.

वनसी—१ देखो 'बंसी' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'वंसी' (रू भे)

वनासपति, बनासपती – देखो 'वनासपति' (रू. भे.)

वनस्थळि, वनस्थली–स. पु. [सं. वनस्थली] १ वनों से घिरा हुआ प्रदेश। अरण्य देश।

२ वन का भाग।

रू. भे.—बनसथळी, बनस्थळी।

वनस्पति–स. स्त्री. [स. वनस्पतिः] १ जमीन से अंकुरित होकर उत्पन्न होने वाले पेड़, पौधे, लताए, घास आदि।

२ बड़ा जगली वृक्ष जिसमें पुष्प लगे विना ही फल लगते हों।

३ वृक्ष, पेड़।

रू. भे.—बनसपति, बनसपती, बनस्पति, बनस्पती, बनासपति, बनासपती, वनसपति, वनसपती, वनासपति, वनासपती।

वनस्पतिसास्त्र–सं पु [सं. वनस्पति+शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधों की उत्पत्ति, गुणधर्म तथा जातियों का वैज्ञानिक ढग से विवेचन किया हो, वनस्पति-विज्ञान।

रू. भे —बनस्पति-विद्या।

वनागनी, वनाग्नि–स. स्त्री. यौ. [सं. वन+अग्नि] वन मे लगने वाली आग, दावानल।

रू. भे.—बनागनी, बनाग्नि, वनिअगनि।

वनात—देखो 'बनात' (रू. भे.)

उ०– भणी रंग रंग री वनात मुखमल कळाबूती सोने रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजे छै। —रा सा. सं.

वनाती– १ देखो 'बनाती' (रू. भे.)

उ०—वनाती झूला घातिया रहकलां, ढकां, खड़खला जूता छै। सू हालिया थकां घोड़ां री माम पाड़ै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बनात' (रू. भे.)

उ०– घोड़ी तो भीजै, पिया, नवलखोरै, कोई भीजै रे **बनाती**, भीजै रे वनाती, रे साज। —लो. गी.

वनाधिप, वनाधिपति–स पु. [सं. वन+अधिपति] सिंह, शेर।

रू भे —बणाधिप, बणाधिपति।

वनापार–वि.—अत्यधिक, अपार।

उ०—मीसरां तांण घमसांण रै मागड़ै, पागड़ै जैत खाटै **बनापार**। जोधपुर नाथ कर कोप पुठै जकां, ऊनन छूटै तकां हुए आधार। —जवांन जी आढौ

वनायु–स. पु [स.] १ एक प्रचीन देश जहां के घोड़े प्रसिद्ध होते थे।

२ उक्त देश का निवासी।

३ पुरुरवस् राजा का उर्वशी से उत्पन्न पुत्र।

४ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के दस प्रधान पुत्रों में से एक था।

वनायुज–सं. पु. [सं.] १ उक्त देश (वनायु) का घोड़ा। (डिं. को.)

२ घोड़ा (डिं को.)

बनाळ–सं. स्त्री. [स. वन+अलिका] १ सूरजमुखी।
२ देवदाली घघरबेल, बंदाळ। (अमरत)
३ देखो 'वन' (मह., रू. भे.)

बनास—देखो 'बनाम' (रू. भे.)
उ०—चढंती महासमर ,बनास फळंती झोळां, सुभ्र गीडुलती बीरां करीरां सुवास। समीरां हलती बेस गहीरां तरां री साखा, कमोद फूलती नीरां चौगणं प्रकास। —महाराजा मानसिंह

बनासपति बनासपती—१ देखो वनस्पति' (रू. भे.)
उ०—गिरां खळक्कं नीर नदि, भरणा झरै अपार। बनासपति पाखर बणी, विविध प्रकारै भार। —गज उद्धार
२ देखो 'बनासपति' (रू. भे.)

बनि–सं स्त्री. [स. वह्नि] १ अग्नि, आग। (ना. डि. को)
[स वनि:] २ अभिलाषा, कामना।
३ याचना।
४ देखो 'बनी' (रू. भे.)
उ०—१ पंथी एक संदेसडइ, लग ढोलइ पैहच्याइ। विरह-दाघ बनि तनि वसइ, सेहर गाजइ ग्राइ। —ढो मा.
उ०—२ (इमी) जु मालिग छै सु बनि वनि रै विचै केसरि चुगै छै। —वेलि टी
५ देखो 'बनी' (रू. भे.)
रू. भे.—बनि, बन्हि, बन्ही बहनि बहनी बेहनि, बेहनी, वनी, वन्नि, वन्हि, वन्ही।

बनिअगनी—देखो 'वनागनी' (रू. भे)
उ०—आवं सगण अबीत, जेम बनिअगनि सिळगां। सरप विक्ख मोखवा, मत्र आवं सुखमंगां। —रा. रू.

बनिता–स. स्त्री. [सं.] १ पत्नी, भार्या।
उ०—बनिता-पती विदेस गय, मंदिर-मझै अद्धरयणीए बाळा। लिहइ भुयगी, कहि सुंदरि कवण नुज्जेण। —ढो. मा
२ स्त्री, औरत, नारी, रमणी।
उ०—बनिता रूपं रात्रि आमणी। —धरम-पत्र
३ प्रियतमा, प्रिया, प्रेयसी।
४ स्वामिनी, मालकिन।
५ बेटया।
६ दो सगण युक्त छै वर्णों की एक वृत्ति।
रू. भे.—बनता, वनिता, वगता, वनता, वनिता, वनीता।

बनितासुत-स. पु.—मनुष्यों की एक जाति। (मारकण्डेय पुराण)

बनिता सुत–स. पु. [स वैनतेय] गरुड़ (डि. ना. मा.)

बनित्ता – देखो 'वनिता' (रू. भे.)
उ०—वप सोळह सिणगार बनित्ता, लखण बतीस संजुगत ललित्ता। सोमा सारिख किरण सवित्ता, दीपै मंदर राज दुहित्ता। —गु. रू. बं.

बनिस्पत—देखो 'बनिस्पत' (रू. भे.)

बनी–स. स्त्री. [स.] १ छोटा वन, वाटिका।
उ०—वैरि मंदिरि स लाछि सांसही, प्रात्म पोदस बनी समइं दही। भूंटि भूबि मुक्त नारि बिनोई, प्राथमिउं मिहर सूं मुंह जोई। —सालि सूरि
२ बीहड़ व भयावह जगल।
३ वनस्थली, भाड़ी, कुंज।
४ देखो 'बनी' (रू. भे.)
५ देखो 'वनि' (रू. भे.)
रू. भे'—बणी, बनि, बनी, बन्नी, बन्हि, बन्ही, वणी।

बनीत—देखो 'वनीत' (रू. भे.)

बनीता—देखो 'वनिता' (रू. भे)
उ०—सोहन वाम दिसा निज सीता, बादळ बीज प्रभाव बनीता। —र. ज. प्र.

बनीपक, बनीयक–सं. पु. [सं.] भिखारी, भिक्षुक, याचक। (ह. नां. मा.)

बनीसिख–सं. स्त्री. [सं. वह्नि-शिख] केसर। (ह. नां. मा.)

बनु—देखो 'वन' (रू. भे.)
उ०—दह दिसि इम जां वनु आरोडइं। जीव विणासइं तरुयर मोडइं। जां इम दलवइ पारधि लागई तांम असंभमु पेखइ आगइ। —पं. पं. च.

बनेचर—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

बनै—देखो 'बनै' (रू. भे.)

बनोक–सं पु. [स. वनोकस्] वानर।
रू. भे.—'बनोक'

बनोड़ा देखो 'बनोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—ताहरां हेमी बोलियो-कूंभा मालांणी ! कटक बाळ बनोड़ा मतां नाखै। साइया मिळो ! ताहरां कूंभौ घोड़ै हूं उतरियो। —नैणसी

बनोत्सरग–सं. पु [सं. वन+उत्सर्ग] १ देव मन्दिर, वापी, कूप उपवन आदि बनवा कर सार्वजनिक उपयोगार्थ, शास्त्र विधि से दिया जाने वाला दान, उत्सर्ग।
२ उक्त प्रकार के दान की शास्त्रोक्त विधि।

बनोद–सं. पु. [स. वनोदय] १ कमल।
२ देखो 'विनोद' (रू. भे.)

बनोवनंणी–वि. स्त्री.— जिसके नेत्र कमल के सदृश हो, कमल-नयनी।

उ०—नाहरां नु करै जेर जाहरां विनोवनंणी, प्रवा दोय राहरां। नु देर लैणी पेस। दिळी इस जिसा फेर नरां नू ऊथाप दैणी, दीना नाथ 'सैणी' वीस करां नूं भ्रावेस। —नवलजी लालस

वनोळी—देखो 'वंदोळी' (रू. भे.)

वनोळो—देखो 'वदोळो' (रू. भे.)

वनोवास—देखो 'वनवास' रू. भे.)

उ०—किसा दीह ग्रांणद-विन्नोद कीधा। लहै भूप भ्रागया वनोवास लीधा। —सू. प्र.

वनौ—देखो 'बनो' (रू. भे.)

उ०—१ रहियो एकज रात, कोलूमड पाबू कमद। पमंग चढ़ै परभात, वरवा घरा खड़िया वनौ। —पा. प्र.

उ०—२ दुखां रो डेरियो बीकानेरियो दिनां रो दादो, दीठां सीस ढेरियो हेरियो जरादूत। भूखे लोब लाग वनो हेरियो बखाकभंड, पीढ़ी सात मातै पांणी फेरियो कपूत। —उदैभांण बारहठ

वनौकस—सं. पु. [सं.] १ बंदर, वानर।

२ वनवासी।

वनौखद वनौसद—सं. स्त्री. [सं वन+ग्रोषधि] १ जंगल में पैदा होने वाली ग्रोषधि, जड़ी, बूटी।

वन्न—देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—सीहां देस विदेस, सम, सीहां किसा उतन्न। सीह जिकै वन संचरै, सो सीहां रो वन्न। —बां. दा.

वन्नमाळ—देखो 'वनमाळा' (रू. भे.)

वन्नमाळी—देखो 'वनमाळी' (रू भे.)

उ०—तिसी तंत ताती बजी ताल ताळी, मंडयौ पाव ग्रांरभियो वन्नमाळी। —ना. द.

वन्नर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

उ०—मूगले कहिय मुहि मारि मारि, घूरिणयउ कोट काळइ कंधारि। पतिसाह तणै भालिय पखांण, जुधि चडिय लंक वन्नर जांण। —रा. ज. सी.

वन्नरमाळ, वन्नरमाळा, वन्नरवाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दिल्ली नगरी-रै साज-रो ग्राज कांई कैणो। घर घर फरियां ग्रर वन्नरमाळावां बांधीजै है। चारू कांनी वाजा वाजै है। —वरसांगठ

उ०—२ ग्रति ग्रब मौर तोरण ग्रजु ग्रबुज, कळी सु मंगळ कळस करि। वन्नरवाळ बंधांणी वल्ली, तरुवर एका बियै तरि। —वेलि

वन्नि—१ देखो 'वन' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ केसरि कथिन्न सांभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि। 'बीकाहर' राजा ए वखांण। जाळोवळि सीतउ घ्रित्त जांण। —रा. ज. सी.

उ०—२ एकइ वन्नि वसंतड़ा, एवड़ ग्रंतर काई। सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाई। —ग्र. वचनिका

२ देखो 'वनि' (रू. भे.)

वन्निजणौ, वन्निजबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ० जिम चिंतामणि रयण मझि, उत्तम सलहिज्जइ। जिम कणयाचल गिरिहु मझि, किरि धुरहि ठविज्जइ। जिम सोह गह वत्थु मझि, ससहरु वन्निज्जइ, जिम तरुहु मझि वंछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ। —ग्रभयतिक यति

२ देखो 'विणजणौ, विणजबौ' (रू. भे.)

वन्निजियोड़ौ—१ देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विणजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वन्निजियोड़ी)

वन्नीयणौ, वन्नीयबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—तीरणइ थापिउ तिहू यण सारो, बीजउ ग्रमरापुरि ग्रवतारो। हथिणाउरपुरु वन्नीयए। —पं. पं. च.

वन्नीयोड़ौ—देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वन्नीयोड़ी)

वन्य—वि. [सं.] १ वन का, वन सम्बन्धी, जंगली।

२ जंगल में उत्पन्न, जंगल की पैदाइश।

३ बर्बर, हिंसक।

४ ग्रसभ्य, ग्रशिष्ट।

स. पु. १ जंगली सूरन।

२ क्षीर विदारी।

३ वाराही कन्द।

४ राम।

वन्यकर—देखो 'वनकर' (रू. भे.)

वन्या—सं. स्त्री. [सं.] १ बड़ा वन, ग्रनेक वन।

२ जल की बाढ़।

३ ग्रश्वगंध।

६ गोपाल ककड़ी।

(४) मुद्गपर्णि।

(५) गुंजा।

वन्रमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—पूजा-पाठ निराठ, वरै वन्रमाळां मोखी। जागण राती जगां, दसुटण दायजां चोखी। —दसदेव

वन्हि—१ देखो 'वनि' (रू. भे.)

२ देखो 'बनी' (रू. भे.)

३ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

उ०—सीत न तावड मनि गणइ, दिवस न रयणी संक। भूख पिपासा न वह्नि जल, केवल यथा करक। —मा. का. प्र.

वन्हौ—१ देखो 'वणौ' (रू. भे.)

उ०—सबको सीर सपूत में, सब कोई मिल सपूत। कुळरी ढाकण होत है, ज्यू वन्हौ को सूत। —अज्ञात

२ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

वन्हौ—देखो 'बनौ' (रू. भे.)

वप—देखो 'वपु' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

उ०—पेखियौ महर जोधाण-पत, सब जग धणी संपेखियौ। वप आभ परस ज्यारू वरण, लाभ नयण पण लेखियौ। —रा. रू.

उ०—२ राम लखण सत्रघण भरथ, सूरज वंस सिगार। एक अम चत्र वप अवधि, ए चत्रधा अवतार। —सू. प्र.

वपणौ—सं. स्त्री—१ नाईयों के हजामत करने का स्थान

२ देखो 'विपणी' (रू. भे.)

वपन—सं. पु. [सं.] १ बीज बोने की क्रिया या भाव।

२ सिर-मुंडाई, हजामत।

३ वीर्य।

वपराणौ, वपराबौ—क्रि. स. [सं. व्यापरणम्] १ अपने उपयोग के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था करना, उस वस्तु को किसी तरीके से प्राप्त करना। उपलब्ध करना।

उ०—मन करती जका ई मासी गिरै गाय वपराय लेती गाया री ई एक छोटी-मोटी छाग वणगी ही। —फुलवाड़ी

२ व्याप्त करना, सचार करना, फैलाना।

उ०—वपरातौ ठाडोळ, तुठजै वार मंगाळा। दुखिया मेटण दरब बिड़द घण सपत वाळा। —मेघ

३ उपयोग करना, उपभोग करना, इस्तेमाल करना।

वपराणहार, हारौ (हारी), वपराणियौ—वि०।

वपरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वपराईजणौ, वपराईजबौ—कर्म वा०।

वपराणौ, वपराबौ, वपरावणौ, वपरावबौ—रू. भे.।

वपरायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ उपयोग या आवश्यकता पूर्ति के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था किया हुआ, प्राप्त किया हुआ, उपलब्ध किया हुआ. २ व्याप्त किया हुआ, सचार किया हुआ, फैलाया हुआ.

३ उपभोग किया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ।

(स्त्री. वपरायोड़ी)

वपरावणौ, उपरावबौ—देखो 'वपराणौ, वपराबौ' (रू. भे.)

वपरावणहार, हारौ (हारी), वपरावणियौ—वि०।

वपराविप्रोड़ौ, वपरावियोड़ौ, वपराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वपरावीजणौ, वपरावीजबौ—कर्म वा०।

वपरावियोड़ौ—देखो 'वपरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वपरावियोड़ी)

वपरीत—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—'केहर' 'कांदळ' मारकै, ऐ अगलूणी रीत। 'कांदळ' 'केहर' मारियौ, रीत करां वपरीत। —हररांम आसियौ

वपरुच—सं. पु. [सं. वपु.+रुचि=कांति] खून, रक्त। (अ. मा.)

वपा—सं. स्त्री. [सं.] १ चर्बी।

२ मेद।

३ गुफा।

४ चीटियों या दीपक द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का टीला। वल्मीक

५ बाबी।

रू. भे.—वपा।

वपि—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—वपि—केसरिया साज वणाया। उभै सहंस सिंधुर धुज आया। —सू. प्र.

वपु—सं. पु. [सं. वपुस्] १ शरीर, देह, अंग, काया।

उ०—१ खग नीर धीर अंतर खरा, मद कुंजर वपु जिम मयण। मन बसै तेम तूं मांहरै, मो मन वसियौ महमहण। —ह. र.

उ०—२ वपु दस गुणौ, जोर न्रप वधियौ। सो गुण अनंत पराक्रम सधियौ। —सू. प्र.

२ रूप, सौन्दर्य, वरण।

३ आकार, आकृति।

रू. भे.—वप, वपु, वपुख, वप्प, वप्पु, वप, वपि, वपुख, वप्प।

वपुख—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—सिर नासा कान दसन आखै, नख गाळ वपुख ना मल नाखै। भिलणौ लेखौ करै मंत्रणौ, विहचण अपणौ करि घन घरणौ। —वृ. रत.

२ देखो 'वपुस' (रू. भे.)

वपुस—सं. पु. [सं. वपुषः] देवता।

रू. भे.—वपुख, वपुख।

वपुस्टमा—सं. स्त्री. [सं. वपुस्टमा] काशिराज सुवर्णवर्मन् की कन्या जो

जन्मेजय को ब्याही गई थी ।

वि. वि.—इसके शतानीक व शकुकर्ण नामक दो पुत्र थे ।

बपुस्मती—सं. स्त्री. [सं. वपुष्मती] १ सिन्धुराज की पुत्री जो राजा मरुत्त की पत्नी थी ।

२ स्कंद की एक अनुचरी ।

बप्प—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—देवी वाहन नाम के बप्प-वाळी । देवी खग्ग सूलंधरा खप्पर वाळी । —देवि

बप्र—सं. पु. [स. वप्रः, वप्र] १ मिट्टी की दीवाल ।

२ शहर-पनाह ।

३ मिट्टी का टीला ।

४ चोटी या शिखर ।

५ नदी तट ।

६ किसी भवन की नींव ।

७ पहाड़ का उतार ।

८ शहर-पनाह का द्वार या फाटक ।

९ खाई की मिट्टी का उसके किनारे बना हुआ धुस्स ।

१० वृत्त का व्यास ।

११ खेत ।

१२ मिट्टी, धूल, रेणु ।

[सं. वप्रिन्] १३ प्रजापति ।

१४ द्वापर युग के व्यास ।

बप्रवरण—सं. पु. [सं. वप्रावरण] गढ़, किला । (अ. मा., ह. नां मा.)

बप्रौढौ—सं. पु. [स. विवोढृ] १ पति । (ह. नां मा.)

२ दूल्हा, वर ।

बफा—सं. स्त्री. [फा.] १ निर्वाह, पालन, अमल ।

२ सद्व्यवहार, बर्ताव ।

३ प्रेम, मोहब्बत ।

४ निष्ठा, आस्था, भक्ती ।

५ सुशीलता, सज्जनता ।

बफादार—वि. [फा.] १ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, वचन निभाने वाला ।

उ०—हर बात में कौल पालणौ बडी बात छै । बफादार सांच री संग करजै, सांचौ कोल पाळणौ —नी. प्र.

२ स्वामी भक्त, नमक हलाल ।

३ कर्त्तव्य-निष्ठ ।

४ सच्चा ।

रू. भे.—बफादार ।

बफादारी, बफेदारी—सं. स्त्री. [फा. वफादारी] १ बफादार होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रतिज्ञा पालन करने की क्रिया या भाव ।

उ०—तो गोपाळदास नवाब नूं कहाई जे बात तो म्हांसूं ही मालुम हुई छै । नवाब तुम हम सूं सलाह करो तो बफेदारी है । —गौड़ गोपाळदास री वारता

३ स्वामी भक्त ।

उ०—तद गोपाळदास कही बादशाह री चाकरी में बफेदारी कांई नहीं । —गौड़ गोपाळदास री वारता

४ कर्त्तव्य निष्ठा ।

५ सच्चाई ।

रू. भे.—बफादारी, बफेदारी ।

बफारौ—देखो 'बफारौ' (रू. भे.)

बभीखण—देखो 'विभीखण' (रू. भे.)

बभीखणौ—देखो 'विभीखण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—उवै वार बभीखणौ चालि आयौ । लखै ते हणूमांन पावां लगायौ । —सू. प्र.

बभक—देखो 'भभक' (रू. भे.)

बभकणौ, बभकबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चहक पावक बभक चहुं चक । तद अरक रथ थरक कौतिक, उदधि रण अण थाह । —सू. प्र.

उ० २ जळ बड़वानळ जिकौ जळावै, ऊन्हौ तिकौ समदचै आवै । वात एम कहतां नृप वांणी, पहाड़ फोड़ि बभकियौ पांणी ।
—सू. प्र.

उ०—३ घड़ फूटत तूटत सीस धार, पड़नाळ स्रोण बभकै अपार ।

उ०—४ डील ऊकळै बभकि ऊठै, मरद अंवाळा आ गिरै । जाळ भाळो देय वुलावै सुखद छांय सरजित करै । —दसदेव

बभकणहार, हारौ (हारी), बभकणियौ—वि० ।

बभकिअोड़ौ, बभकियोड़ौ, बभक्योड़ौ—भू० का० कृ०

बभकीजणौ, बभकीजबौ—भाव वा ।

बभकाणौ, बभकाबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' ।

बभकाणहार, हारौ (हारी), बभकाणियौ—वि० ।

बभकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बभकाईजणौ, बभकाईजबौ—कर्म वा०

बभकायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बभकायोड़ी)

बभकार—देखो 'भभकार' (रू. भे.)

उ०—सिर भागी तोड़, गज हमगोळ, बवै सरीळ, कर बीळ। बभकार गहीळ, भायो भीळ, होय कंठीळ, हड़हड़त। —भगतमाळ

बभकियोड़ो—देखो 'भभकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बभकियोड़ी)

बभकी—देखो 'भभकी' (रू. भे.)
उ०—ढोल ऊकळं बभकी उठे, मरद नैवांळा भ्रा गिरै। जाळ भ्रामी देय बुलावे, सुखद छांय सरजित करै॥ —हसदेव

बभक्कणो, बभक्कबो—देखो 'भभकणो, भभकबो' (रू. भे.)
उ०—१ लोही घखधक्क बभक्कत लाल। पड़ै घर आणि पतंग पखाल। —सू. प्र.
उ०—२ रोळ गजां गंघड़ा बभक्कै घाव चोळ रत्तां। सळाबोळ कीघां भायो वेताळीस कोघ। —हुकमीचंद खिड़ियौ
बभक्कणहार, हारौ (हारी), बभक्कणियौ—वि०।
बभक्कियोड़ो, बभक्कियोड़ो, बभक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।
बभक्कीजणो, बभक्कीजबो—भाव वा०।

बभक्काणो, बभक्काबो—देखो 'भभकाणो, भभकाबो (रू. भे.)
बभक्काणहार, हारौ (हारी), बभक्काणियौ—वि०।
बभक्कायोड़ो—भू० का० कृ०।
बभक्काईजणो, बभक्काईजबो—कर्म वा०।

बभक्कायोड़ो—देखो 'भभकायोड़ो (रू. भे.)
(स्त्री. बभकायोड़ी)

बभक्कियोड़ो—देखो 'भभकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बभक्कियोड़ी)

बभयंगी—सं. पु. [सं. इन्द्रिय-विभु] इन्द्र। (अ. मा.)

बभाड़—देखो 'विभाड़' (रू. भे.)
उ०—पतसाहां हु भ्रमेल परठीयो, भरीयो सुरत भ्रनत बभाड़। भ्रमर "भ्रमर" तणौ ऊगाड़ो, छत्र घारीयां तणौ भ्रोखाड़। —भ्रमरसिंह री गीत

बभाड़णो, बभाड़बो—देखो 'विभाड़णो, विभाड़बो' (रू. भे.)
बभाड़णहार, हारौ (हारी), बभाड़णियौ—वि०।
बभाड़ियोड़ो, बभाड़ियोड़ो, बभाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
बभाड़ीजणो, बभाड़ीजबो—कर्म वा०।

बभाड़ियोड़ो—देखो 'विभाड़ियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बभाड़ियोड़ी)

बभीखण, बभीखन—देखो 'विभीसण' (रू. भे)
उ०—भ्रवि बभीखण लंक राज रघुवर भ्राविया भ्रवधेस। —सू. प्र.

बभुत—१ देखो 'विभुता' (रू. भे.)
२ देखो 'विभूति' (रू. भे.)

बभूत—देखो 'विभूति' (रू. भे.)
उ०—धू परि भ्राड बभूत तिलक धरि। कदळी पत्र दीप राजा करि। —सू. प्र.

बभूतसिद्ध—देखो 'विभूतिसिद्ध' (रू. भे.)

बभूति—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

बम्भीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)
उ०—उरघ भ्रंबर उद्धरण, वेद ब्रह्मा गावाळण। दळ दांणव निरदळण, भ्रव्व रांमण चौ गाळण। बम्भीखन जग्ग करण, सबळ देतां संघारण। नवनाथ निमघियण, त्रिविघ लोकां ऊपावण। —ज. खि.

बभ्रु—देखो 'बभ्रु' (रू. भे.)

बभ्रुपिंगळा—सं. स्त्री.—शनि। (भ्र. मा.)

बभ्रुवाहन—देखो 'बभ्रुवाहन (रू. भे.)

बमणो, बमबो—क्रि. स. [सं. वमनम्] १ कै करना, वमन करना। (उ. र.)
२ थूकना।
३ उड़ेलना।
४ उगलना, प्रकट करना। (उ. र.)
५ फेंकना।
६ खारिज करना, भ्रस्वीकार करना, त्यागना।
उ०—हिव मिथ्यात्व बमीयउ, मन उपसमियौ भ्रति घणुं। दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुं। —वि. कु.
बमणहार, हारौ (हारी), बमणियौ—वि०।
बमियोड़ो, बमियोड़ो, बम्योड़ो—भू० का० कृ०।
बमीजणो, बमीजबो—कर्म वा०।

बमथु, बमथू—सं. पु. [सं. वमथुः] १ हाथी की सूंड का पानी।
२ कै, उलटी।

बमन—सं. पु. [स.] १ कै या उलटी करने की भ्रवस्था, क्रिया या भाव।
२ कै, उलटी।
३ थूक।
४ उड़ेलना क्रिया।
५ उगलना क्रिया।
६ फेंकना क्रिया।
७ त्याग छुटकारा, भ्रस्वीकृति।

बमर—देखो 'विवर' (रू. भे.)
उ०—एक महामोटौ भ्रवत छै। तण ऊपरां देवळ छै। तठै बमर छै। सो गुपत गेलौ भ्रांपां रा घर वीच नीसरै छै। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कै किया हुआ, वमन किया हुआ। २ थूका हुआ। ३ उड़ेला हुआ। ४ उगला हुआ, प्रगट किया हुआ। ५ फेंका हुआ। ६ खारिज किया हुआ, ग्रस्वीकार किया हुआ, त्यागा हुआ।

(स्त्री. वमियोड़ी)

वमुख, वमुह—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ घर कारण वेहू ग्रावड़ै छत्रधर, पाछट खग दाखवीयौ पांण। कुंभळमेर न दीधौ कूंभै, सेवा वमुख गयौ सुरतांण।
—महारांणा कुंभा रौ गीत

उ०—२ सुजड़ झड़ंतां झाड नृप वेहू ग्रड़तां समर, खत्री ग्रन देख ग्रत वमुह खड़तां। ग्रगाड़ी तणा भड़ खड़ै ग्रस ग्रावीया, पछाड़ी ऊपरै भार पड़तां।
—पहाड़खां ग्राढौ

वमेक—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

उ०—इसौ वमेक सग्रह मत ऐहौ। जोगेसुरां दुलभ ग्रति जेहौ।
—सू. प्र.

वम्मरौ—देखो 'विवर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—देवी वम्मरे डूंगरे रन्न वन्नै। देवी थूंवडे लींबड़े थन्न थन्नै।
—देवि.

वयंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ तूटा गज सिर करै ग्रंग्राका, दांतूसळां बजावै डाका। गत ग्रत करि सिंधू सुर गावै, वयंड सूंड चौ भेर वजावै। —सू. प्र.

उ०—२ पटहसति सूंढि फेरइ प्रचंड, ग्रिख दिसा बोम नांखइ वयंड। पटहसती छाया पक्खरेह, पाहाड़ जांणि हालइ पगेह।
—रा. ज. सी.

उ०—३ निपट खळां ची नार कथ कहै नित नाह नैं, वयंड खळ झाड़ तो देख हथवाह नै। रोस दळ छोड जावै ग्रगम राह नै, समर मत छेड़जै कवर "रणसाह" नै।
—रणसिंह सीसोदिया रौ गीत

२ देखो 'वंडौ' (मह., रू. भे.)

वयंडकनी–वि. स्त्री. [सं. वंड+कर्णिक] कटे कान वाली।

वयडचर–सं. पु. [सं. वितड+चरः] ग्रनलपक्षी।

उ०—वयंडां घड़ा झाडा-खंडां वाढतै, गाढमल जाजमा धकै गाहै। मम्मी समर बीर नारद ग्रछर माल्हिया, माल्हिया वयंडचर समर माहै।
—राव बुधसिंह हाडा रौ गीत

वयंडमुख—देखो 'वितंडमुख' (रू. भे.)

वयंत—देखो 'वियत' (रू. भे.) (ना. मा.)

वय–सं. स्त्री. [स.] १ बीता हुआ जीवन-काल, उम्र, ग्रवस्था। (ग्र. मा.)

उ०—१ ग्रंग सो लियौ कनिक उणहारै। सोळ वरस वय सोळ सिंगारै।
—सू. प्र.

उ०—२ वय किसोर ऊतरै, जोर जोबन परगट्टै। ग्रणमायौ ग्रंग मैं ति किरि रतनाकर तट्टै।
—रा. रू.

२ जवानी, युवावस्था।

३ समय, काळ। (ह. ना मा) (ग्रनेका.)

उ०—पलटै वय पलटै प्रकत, रितु दिन पलटै रंग। पलटै नही "प्रतापसी," विछुटै जे मुख वंग।
—जंतदांन बारहठ

४ क्रम। (ग्रनेका)

५ विस्तार। (,,)

६ बल, शक्ति। (,,)

७ पक्षी, विहग (,,)

[सं. वच्] ८ वचन, वाणी, बोल।

उ०—१ झुक वहणौ नह जांणियौ, दोयण वय मुख दब्ब। "पातल" हुंदा उरघ पण, संघा ग्रनम सरब्ब।
—जंतदांन बारहठ

उ०—२ जांणमतौ वय संसौ राजिद, तात कहूं विघ तोनूं। स्रोपत सेस उचारण,संतां, देह धरी नर दोनूं।
—र. रू.

६ स्वर, ग्रावाज।

उ०—इहंत केळि डाळयं, उपति बंद्रबालयं। बहत दुंदभं वयं जपंत देव जै जयं।
—सू. प्र.

१० छप्पय छंद का एक भेद जिसमें, ४८ गुरु व ५६ लघु कुल १५२ मात्राएँ होती हैं।

उ०—गुर ग्रड़चाळां गाइजै, लघु कर छप्पन लेख। वय छपय वाखांणीयै, सेसौ कहै विसेख।
—पिंगळ सिरोमणि

११—जुलाहा।

१२ वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

वि [सं. वयस्य] समान।

उ०—बाबर बीखरिया ग्रोड़णियें ग्राडै, डाबर नयणां री टाबर वय डाडै।
—ऊ. का.

रू. भे —वय, वय्र, वह्र।

वयग्रभीत–स. पु. [स ग्रभीत-वय] युधिष्ठिर। (ग्र. मा.)

वयकुंठ— देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वयगरण, वयगरणौ—देखो 'व्ययकरणिक' (रू. भे.) (उ. र.)

उ० - मंत्रि महामत्रि राणा स्त्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देव गरणा नायक दंडनायक ग्रंग लेखक भांडागारिक।
—व. स.

वयगरणौ—देखो 'व्ययकरणिक' (रू. भे.)

उ०—क्षण एक जाइ वयगरणी, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण

एक जाइ हस्ति माला, क्षण एक जाइ आयुध साला, क्षण एक जाइ वाहरिण, क्षण एक जाइ राजकुलि। —व. स.

ट्ठणौ, वयट्ठबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—मेज रमतां मारुवी, गिण मेल्हणी मजाड। जांणिक विकसी केतकी, भमर वयट्ठउ आई। —ढो. मा.

वयट्ठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वयट्ठियोड़ी)

वयण—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ चूर कियौ श्री चौसरण, केयौ **वयण** वहंत। वाघ केण छिपिया वचै, कांपिया धरम रहत। —बां. दा.

उ०—२ गांठि रो कोड न लगै गरथ, मिगला हुइ जिण थी सयण। धरम नै करम गहु मे धुरा, बडो वस्तु मीठो **वयण**। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ **वयणै** गाला वरचवै, मूठी गाढा खग्ग। हजरती दरबारमे, थिरताबीयै बग्ग। —गु रू. ब.,

वयणड़ौ—देखो 'वचन' (अल्पा., रू. भे)

उ०—बलिहारी गुरु **वयणड़ै**, बलिहारी गुरमुख चंद रे। बलिहारी गुरु नयणड़ै, परगटा परमाणंद रे। —स. कु.

वयणबूठ-वि —अपने वचनो पर दृढ़ रहने वाला।

उ०—साम धरम रता गण गावै। **वयणबूठ** मुख झूठ न वाचै। —रा. रू.

वयणपुन्न-स. पु. [सं वचन | पुण्य] मुख से शुभ वचन बोलने पर होने वाला पुण्य। (जैन)

वयणसगाई-स. स्त्री.—डिंगल काव्य का एक शब्दालंकार विशेष जिसमें, किसी छन्द के प्रथम चरण के प्रथम शब्द के आदि में जो वर्ण आता है वही वर्ण उस चरण के अंतिम शब्द के आदि में आता है।

उ०—**वयणसगाई वेस**, मिल्यां सांच दोखण मिटै। किणयक समैं कवेस, थपियो सगपण ऊथपै। —र. रू.

वि. वि.—वयण सगाई के प्रमुख तीन भेद माने गये है:—

(१) शब्द-वर्ण वयण सगाई, (२) वर्ण संख्यक वयण सगाई व (३) मित्र वर्ण वयण सगाई।

(१) **शब्द-वर्ण वयणसगाई**—के र. ज. प्र. के अनुसार व र. रू. के अनुसार तीन भेद हैं।

"वयण सगाई तीन विधि आद मध्य तुक अन्त। —र. ज. प्र.

(१) **आदिमेल**—इसमे छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के आदि में होती है।

(२) **मध्यमेल** इसमे छन्द चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के मध्य मे होती है।

(३) **अन्तमेल**—इसमें छंद चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के अंत में होती है। इनके अतिरिक्त इसकी तीन श्रेणियां भीं मानी गई है:—

(१) अत्युत्तम आदि मेल।

(२) अत्युत्तम मध्य मेल।

(३) तथा अत्युत्तम अंत मेल।

(२) **वर्ण-सख्यक वयण सगाई**:—इसमें छंद चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के नियम से न होकर चरणान्त वर्ण संख्या के हिसाब से होती है। इसके निम्नलिखित पांच भेद माने गये है:—१ अत्युत्तम २ उत्तम ३ मध्यम ४ अधम ५ अधमाधम।

(३) **मित्र-वर्ण वयण सगाई अथवा अखरोट**:—इसके अन्तर्गत छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द में होने के स्थान पर उस वर्ण के मित्र वर्ण की आवृत्ति हो जाती है। मित्र वर्ण निम्न लिखित हैं:—

(१) **अधिक मित्र**—आ, ई उ, ए, य, व, ।

(२) **सम मित्र**—ज-झ, ब-व, प-फ, न-ण, ग घ च-छ।

(३) **न्यून मित्र**—त-ट, थ-ढ (ठ), द-ड।

डिंगल काव्य में वयण सगाई का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है। परन्तु इसका निर्वाह अनिवार्य हो ऐसा नही है। इसका निर्वाह न होने से किसी छन्द में दोष आ जाता हो ऐसी बात नही है। गीतों में इसका प्रयोग अनिवार्य माना गया है। १४ वी शताब्दी की रचना मे इसका प्रयोग देखा जाता है। संभवत इसकी शुरुआत इससे पूर्व में हो चुकी थी।

रू. भे.—वयणसगाई, वैणसगाई, वैणसगाई

वयद—१ देखो 'वियत' (रू भे.)

२ देखो 'वैद्य' रू. भे.)

उ०—विद सब करि जिम ग्रंथ वतावै। ओखद ज तूं कहै मुजि आवै। सुणै राज दन हुकम सनेहो। अरज **वयद** कीधी फिर एही। —सू. प्र.

वयवधणा—स. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा।

वरंकरार—देखो 'बरकरार' (रू. भे)

उ०—राठोड़ा मोह वधी, वधी मोह हिंदुसयांना। **वरंकरार** नवकोट, हसम राखिया खजांनां। —गु. रू. बं.

वयर—देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—१ म्हाराजा अहा ससत्र भुज मुदारा, सो-गुणै जोस पंडां कथन सधारा। आज री वार लेसी **वयर** ऊधारा। देखजै आच कण सर घरै दुवारा। —पदमसिह आढौ

उ०—मनि करै कुण इण भांति, खित वयर काढण खांति । इक वयर धरा मबीह, सुजि वंस दूजौ 'सीह' । —सू. प्र.

वयरणीयौ-[सं. पु.] शत्रु, वैरी।

उ०—**वयरणीयौ** रहु वेगली, मुझ-सिउं म करु वात । आठ दीवाली आज थी, ममु लगी भव सात । —मा. कां. प्र.

वयराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—१ धर ध्यांन सुजाय लिये धिप में । **वयराग** सुमाग हुवौ विप में । —पा. प्र.

उ०—२ **वयराग** इ मन वालियउ रे, संयम पालइ सुद्ध रे । —स. कु.

वयरागर—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—१ किहां करीतरु, किहां गुंजाफल, किहां लोहागर, किहां **वयरागर**, किहां गुंजाफल, किहां मुक्ताफल । —व. स.

उ०—२ उत्तम औखधि, सप्त धातुनी खांणि । परवत गंधक हींगलौ, **वयरागर** वखाणि । —मा. कां. प्र

२ देखो देखो 'वइरागर' (रू. भे.)

उ०—१ वांमसऊग्रा मुगवना मांगलियां **वयरागरां** हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडंवर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट । —व. स.

वयरागरी—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे)

उ०—गजराज वंध्याचलि, मोती जयकुंजरि, पदम पदमाकरि, तेजस्विता दिवाकरि, हीरा **वयरागरि**, प्रधांन, स्वरणमदिरि, विवेक गूरजरि, विधि विवेकिया तणइ घरि । —व. स.

२ देखो 'वइरागर' (रू. भे.)

वयरागियौ—१ देखो 'वैरागियौ' (रू. भे)

उ० —देस्य धन जांमात नैं, कन्या परणावेह । व्रत लेम्यै **वयरागियौ** मन धरि परम सनेह । —वि. कु

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

वयरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—माहेली हे **वयरागी** गुरु वालहा, माहेली हे वांचइ सूत्र सिद्धांत । —स. कु

वयराड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

उ०—गावत **वयराड़ी** रागइ, मलापत स्रीसंघ आगइ । —स. कु.

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रू. भे.)

वयराजीउं—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटा सारनाला खासटां अगिहिल **कबीव संजरांमां** मदवी फूलपगरीयां सारीपी तिलवास गरज्मसूत्र राजिउ **वयराजीउं** महिद ग्ररउं । व. स.

वयराट—१ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

२ देखो 'विराट' (रू. भे.)

उ०—**वयराट** रांणी मनि देखि प्रांणी, गई तेह नइं लेविणु मघ पांणि । —सालिसूरि

वयरि, वयरी—देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—१ राउ दांमण ना **वयरि** मारइ । —ड. र.

उ०—२ **वयरि** वारिउ ऊगता, वली वधारि वयर । रोसि रय राखी रहिउ, आदित ग्रे कुण पइरि । —मा. कां. प्र.

उ०—३ जिण दीहे पावस झरइ, समनेहां सुख होइ । तिणि दिन **वयरी** वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ । —ढो. मा.

उ०—४ हूं क्षणि क्षणि क्षीणी थइ, वाधी **वयरणि** ग्रास । वाधइ वली वक्षःस्थली, निसि नइ उर-निसास । —मा. कां. प्र.

उ० – ५ मोटउं कूडउं मागसिरि, वलो विचारी जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, **वयरणी** कांइ विगोइ । —मा. कां. प्र.

(स्त्री. वयरण, वयरणि, वयरणी)

वयळ—देखो 'बयळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ घण खळ असि झोकै खग घाऊं । **वयळ**-मंडळ नट कुंडळ बणाऊ । —सू. प्र.

उ०—२ दूझड़ां रायपाळां दुझळ, **वयळ** घरां सिर दूंद वण । ऐ कहै करौ खग झट इसी, रवि वाखांणै हाथ रिण । —सू. प्र.

वयसंधि-सं. पु. [मं.] दो अवस्थाओं के बीच की स्थिति ।

उ०—सु इह तौ न बाळक अवस्था माहे सूणे छै । नैं यौवण प्रायै जाणै छै । इहि विधि को सधि सु वयसधि कहावै । —वेलि टी.

वयस-सं. पु. [सं वयस्] (स्त्री वयसा) १ उम्र ।

२ जवानी ।

[सं वयस्य] ३ साथी, मित्र ।

४ सहयोगी ।

५ हम-उम्र ।

रू. भे.—बयस, वेस वैस वयस्य, वेस, वै' ।

वयसाख—देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

वयसाही—देखो 'वैसाखी' (रू. भे.)

उ०—वीवइ दीवाली, कालू कात्तिकी,वरस **वयसाही** नितू वधांमणउं, पेटि पेटि आग्रहणी । —व. स.

वयस्थविर–वि. साठ वर्ष की अवस्था वाला । (जैन)

वयस्य—देखो' वयस'

वयांणौ-सं. पु. [देशज] विवाह में गीत गाने के लिये आई स्त्रियों में बांटी जाने वाली मिठाई ।

बयार—देखो 'बयार' (रू. भे.)

उ०—देखो बनरईया फूलन लागी मा, आगम वसंत बहार कै।
ओर की ओर भई छिब बन की, कोउक झोलैं बयार कै।
—रसीलो राज

बयाळ—देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

बयोधर–वि. [सं. वयोधर.] (स्त्री. वयोधरी) युवा, तरुण।

उ०–निसाम-रोज आंननी उरोज धारनी नही। क्रसोदरीय कामिनी बिना बयोधरी नही। —ऊ. का.

बयोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—साहण समद ऊछळिय सारि, गादयर वाउण सकइ सहारि।
रहचवियउ आवइ रोम रोम, वाजा सबहि फाटइ बयोम।
—रा. ज. सी.

बयोबरध, बयोव्रद्ध बयोव्रध, बयोविध–वि. [सं. वयोवृद्ध] जो अवस्था, अनुभव और ज्ञान में बडा हो, वृद्धपुरुष, बूढा।

बरंग–सं. पु. [सं. वर+अंगम्] १ सिर, मस्तक।

२ उत्तम शरीरांग।

३ सुडौल शरीर।

४ देखो 'वराग' (रू. भे.)

[सं. वर+अंगः] ५ हस्ती, हाथी।

६ देखो 'बरग' (रू भे.)

उ०—किता यग वरगा उडै कट किरमरां, मधर धर लड़ै उतबग बोलै सरा। चापडै मचै रिण निगाचर बनचरा, वीर कौतिक रचै जाण बादीगरा। — र. रू.

उ०—घंघमै आरीठ घटा आवटै मघाण पाण, उडै फाड कूभायळा बरगां उरण। राकमा बिभाड़ै पाडै आग्वाडै बजाडै रूक, 'नाथ' रो सूरा रमाडै ऊपाडै निहग। —राव सत्रसाल री गीत

बरंगन—देखो 'वारंगना' (रू. भे.)

उ०—बरंगन कंठ धरै वरमाळ, रूका उडी सीस चढै रुंडमाळ।
अपच्छर सूर जोड़ै हिज आय, जई रथ बैठि वसै सुरगि जाय।
—गू प्र

बरंगी–वि.—बरंग का, बरंग सम्बन्धी।

रू. भे.—बरंगी।

बरंच–अव्य [सं.] १ अपितु, बल्कि।

२ परन्तु, किन्तु, लेकिन।

३ देखो 'विरंचि' (रू. भे.)

बरंड–सं. पु. [सं.] १ समूह, झुण्ड।

२ समुदाय।

३ घास का ढेर, गट्ठर।

४ चेहरे पर होने वाले मुंहासे।

५ जेब, खीसा।

६ बंसी की डोर।

[सं. वितंड] ७ फीलखाने में दो लड़ाके हाथियों के बीच बनाई जाने वाली दीवार जो इनको लड़ने से रोके।

८ हाथी, गज।

९ देखो 'बरडौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—वरंडक।

बरंडक–सं. पु. [सं.] १ हाथी पर रखी जाने वाली अंबाडी, हौदा।

२ मिट्टी का टीला।

३ दीवार।

४ देखो 'वरड' (रू. भे.)

बरंडा–सं स्त्री. [सं.] छुरी, खंजर।

२ सारिका पक्षी।

३ लैंप की बत्ती।

बरंडी—देखो 'भिंडी' (रू. भे.)

उ०—१ पानि तणी परिगह देहरी तण उमहरु, चउकी चउ खडे झलहलइ, उआरे पाणी खलहलइ, पगथिआरां सारुन्यारा, बरंडी उदार लहरीमाला उच्छलइं, मत्तवारणां उपरि पांणी वलइं।
—व. स.

उ०–२ भीवैं मन मांहै जांण्यौ, बावडी मांहे किसूं करै छै। यों जांण बरंडी रा छेकडा मांहे जोवै। तठै देखे तो अस्त्री छै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ देखो 'आडी' (रू. भे.)

बरंडौ–सं. पु [सं. वरंडः] बरामदा।

उ०—निबड लोह तणी अरगला तोडी, पुंतार पाडी, कपाट संपुट फाडी, पडिहारु गांजी, चरण संबंधीया त्रिगडा भांजी, बरंडा पाडतउ, माणस मारतउ राउत रसाडतउ। — व. स.

रू भे.—बरडौ, बिरडौ।

मह.—वरड।

बर–वि. [सं वर] १ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ।

२ उत्तम, बढ़कर, श्रेष्ठ।

उ०—१ लाघै बिखमी चालतां होजी, वाट अनड़ बर वीर प्रबल पराक्रमी। —वि. कु.

उ०—२ वांमा अंग वणी बर सुंदरि, कनकलता जांणै कळप्पतरि।
—गु रू. बं.

३ चुनने योग्य, योग्य, लायक।

४ दानी। (५) सुदर। (६) भला।

सं. पु. [सं. वरः] १ पति, भरतार। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मारू नूं आलइ सखी, एह हमारी बुज्झ। साल्ह कुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुंदरि सउ बर तुज्झ। —ढो. मा.

उ०—२ बेटी इतरी मोटी हुई नै इण रै बर री खबर ही नहीं। न जांणां मुवो किना कठी हो जोगी संन्यासी हुय गयो। —नैणसी

उ०—३ वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउं देखइ, बर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देवरांणी हसइ, नणंद नरनरावइ सासु कांम करावइ। —व. स.

२ वधू-प्रार्थी।

३ स्वामी, मालिक।

उ०—वीर विच्चखण क्रीत तणी बर, ढाहण खाग फरिंदां ढूको। 'नाथ' तणी 'सुरतेस' नरमें नर, चित ठीक नहीं कुळ रीत न चूको। —ठाकर सूरतसिंह चहुवांण रो गीत

४ दामाद, जमाता।

५ देवी-देवताओं से अभीष्ट वस्तु पाने के लिये की जाने वाली प्रार्थना, याचना, विनय, उपासना।

६ उक्त प्रकार से प्राप्त होने वाली संतुष्टि।

७ देवी-देवताओं से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद, वरदान, अनुग्रह, सिद्धि।

उ०—१ मारग मांहे पांणी नहीं। कटक मरण लागो। तद जनी नूं कहयौ-पांणी पैदा कर। सु जती नूं खेतपाळ रो बर हुंतो, रोही मांहे जाइ खेत्रपाळ जी री आराधना करी। —नैणसी

उ०—२ इक धारण तो जिम चित भावै। पूजें भेग जिको बर पावै। —सू प्र.

८ अभिलाषा, इच्छा कामना।

९ भेंट, पुरस्कार।

१० चुनाव य पसंद करने की क्रिया या भाव।

११ चयन, चुनाव।

१२ वरण करने, अपनाने, की क्रिया या भाव।

१३ दहेज।

१४ लंपट व्यक्ति।

१५ गोरैया पक्षी।

[सं. वरं.] १६ केसर। (डिं. को.)

१७ हल्दी।

१८ दाल चीनी।

१९ अदरक।

२० सुगंध तृण।

२१ मौलसिरी।

२२ सेंधा नमक।

२३ मधु मक्खी का छाता।

२४ गुग्गुल।

२५ श्रीकृष्ण।

२६ दो लघु के लगण के भेद का नाम। (डि. को.)

[देशज] २७ रहट के माल की एक लड़ी।

प्रत्य. [फा.] १ संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय।

ज्यूं.—ताकतवर।

अव्य.—२ अगर, यदि, और।

रू भे.—बर, वरु।

बरउमिया—सं. पु. [सं. उमा-वर] महादेव, शिव।

बरकंठ—सं. पु. [सं.] सुग्रीव।

उ०—बरकंठ वामा धरी धांमा किता कांमा बद किया। भय मेट भारी धनुसधारी अरज सारी येह। —र. रू.

बरक—सं. पु. [फा. वरकः] १ सोने या चांदी को कूटकर बनाया हुआ बहुत पतला झिल्ली नुमा पत्तर जो मिठाइयों पर लगा कर खाया जाता है तथा औषधियों में काम आता है।

२ पत्र, पृष्ठ, पन्ना।

३ पत्ता, दल।

४ टिकट, प्रयोग-पत्र।

[सं. वरक.] ५ इच्छा, चाह, वर।

६ चुग्गा।

७ जंगल में उत्पन्न होने वाला मूग, बन-मूंग।

८ तोलिया, दस्तर (डस्टर), झाड़न।

९ कपड़ा, वस्त्र।

१० नाव के ऊपर की छाजन।

११ देखो 'बिरक' (रू. भे.)

रू. भे.—बरक, बरख, बरग, वरग।

बरकरार—देखो 'बरकरार' (रू. भे)

उ०—सांकर प्रथीराजोत। संमत १६७२ अरटियौ गांव २ सूं बरकरार। समत १६८४ पूनासर। —नैणसी

बरकिंगकमेटी—सं. स्त्री. [अं.] कार्य-कारिणी-समिति।

बरक्ख—देखो 'बरस' (रू. भे.)

उ०—श्रोथ तेरस ऊजळी, माह उजाळै पक्ख। 'ईंदावत' ईजत सटै, गो बासटै बरक्ख। —रा. रू.

बरक्रंतु, बरक्रत, बरक्रतु, बरक्रित—सं. पु. [सं. वरक्रतुः] इन्द्र।

(नां. मा., ह. नां. मा.)

बरख—देखो 'बरस' (रू. भे.)

बरखणो, बरखबो—देखो 'बरसणो, बरसबो' (रू. भे.)

उ०—१ बरस बि च्यारि न मेह **बरखि** । पड़े घर काळ लगौ लगि पखि । —रांमरासौ

उ०—२ बेऊं चतुर सुजांण, नेम-रंग-रस पिया । बरखा-रुति घण **बरख** जाणि कु हरखिया । —ढो मा

बरखणहार, हारौ (हारी), बरखणियौ—वि० ।

बरखियोड़ो, बरखियोड़ौ, बरख्योड़ौ.—भू० का० कृ० ।

बरखीजणो, बरखीजबो—भाव वा० ।

बरखम—स पु. [स वर्ष्मन्] १ शरीर, देह । (ग्र. मा.)

२ ऊंचाई, माप ।

बरखा-देखो 'बरसा' (रू. भे.)

उ०—१ माळवणी ढोलउ कहइ, हिव म्हां मील्ह करेह । ऊन्हाळउ **बरखा** बिन्है, रहिया नृह्म सनेह । —ढो. मा.

उ०—२ सुर सैंनीम साथ लै, सुरपत मांम्हौ ग्राय । पोहपन की **बरखा** करी, लीधौ ग्राह बधाय । —गजउद्धार

उ० ३ इणौ समइयौ बरा रह्यौ छै, **बरखा** मंडनै रही छै । बिजळी भिळमिळ करने रही छै, बादळां भड़ लायौ छै । —रा. सा स.

बरखामापक—स. पु. [स. वर्षा+राज. मापक] वर्षा मापने का एक यन्त्र, रेनगेज ।

बरखारत, बरखारित, बरखारिति, बरखारितु बरखाऋत **बरखारुति**—देखो 'बरसारितु' (रू. भे)

उ० -१ **बरखारितु** लागि बिरहणी जागी ग्राभा भरहरै बीजां ग्रावास करै । —रा. सा. स.

उ०—२ बेऊं चतुर सुजांण नेम-रग-रस पिया । **बरखारुति** घण बरख जांणि कु हरखिया । —ढो. मा.

बरखियोड़ो—देखो 'बरसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री बरखियोड़ी)

बरख्यात—स. पु. सरोवर, तालाब । (ह. नां. मा.,)

रू. भे.—**बरख्यान**

बरग—सं. पु. [सं. वर्ग] १ श्रेणी, जमात ।

२ जति, समुदाय, समाज ।

३ एक ही समान धर्म वाली वस्तुओं या प्राणियों का समूह, झुंड, दल, टोली ।

उ०—१ इसे होज तत मे कंवरसो चढियौ सो जाय सांढां रा **बरग** सरब घेरिया । रैबारी बीस पचनीस हाथ ग्राया सो मारिया । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ ताहरां पाबूजी कह्यौ-बाई! हूं तोनूं दोदै सूमरै री सांढां रा **बरग** प्राण देईस । —नैणसी

उ०—३ सो इहां रै गाय भैंस सांढां रा **बरग** घणा । सो सांढां रै लारै रैबारी रहै । सो ग्रति ग्रटावरा रहै, ग्रपजोरा हालै । कही नूं खातर में न ग्राणै । सो जिके ही गांव जाय बरगां रौ पीहो करै, तिकै गांव च्यार पुहर रौ निसवारी पड़ै । —कुंवरसी सांखला री वारता

४ किसी उद्देश्य विशेष के लिये बना हुग्रा कुछ व्यक्तियों का दल, पक्ष ।

५ निश्चित ग्रक्षर समूह मे किसी एक वर्ण से उच्चरित प्राणी का नाम जिसकी मान्यता पशु, पक्षी के नाम मे की जाती है । (फलित ज्योतिष)

७ विभाग, भाग ।

८ न्याय शास्त्र के नो या सप्त पदार्थ विभाग ।

९ व्याकरण में एक स्थान से उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यंजन, वर्णों का समूह ।

१० ग्रंथ विभाग, परिच्छेद, प्रकरण, ग्रध्याय ।

११ दो समान ग्रंको या राशियों का गुणनफल ।

१२ वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौडाई समान हो, समकोण ।

१३ शक्ति, ताकत ।

१४ शत्रु दल ।

१५ पत्र, पत्ता ।

१६ पाच की संख्या । * (डिं. को.)

वि.—पाच ।

रू. भे. – बग बग्ग, बरग, बाग, वग वग्ग, वरग्ग, वाग, ।

बरगड़ो, बरगडु—स. पु —१ सिंह । (सभा)

२ देखो 'बरगड़ो' (रू. भे.)

बरगफळ—सं. पु. [सं वर्गफल] किसी ग्रंक को उसी से गुणा करने पर ग्राने वाला गुणनफल ।

बरगमूळ—स. पु. [स. वर्गमूल] किसी वर्गांक का वह ग्रंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन का वही वर्गांक हो ।

ज्यू०—४×४=१६ । १६ का वर्ग मूल ४ है ।

वि. वि.—ये वास्तविक ग्रौर काल्पनिक दोनों प्रकार के होते हैं ।

बरगळणो, बरगळबो—क्रि. ग्र.—१ गुमराह, होना, भ्रम में पड़ना ।

२ उत्तेजित होना, भड़कना ।

बरगळणहार, हारौ (हारी), बरगळणियौ—वि० ।

बरगळियोड़ो, बरगळियोड़ौ, बरगळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बरगळीजणो, बरगळीजबो—भाव वा० ।

बरगळणो, बरगळबो—रू० भे० ।

बरगळाणौ, बरगळाबौ–क्रि. स. [राज. 'वरगळणौ' क्रि. का प्रे. रू.]
१ गुमराह करना, भ्रम में डालना।
२ उत्तेजित करना, भड़काना।
बरगळाणहार, हारौ (हारी), बरगळाणियौ—वि०।
बरगळायोड़ौ - भू० का० कृ०।
बरगळाईजणौ, बरगळाईजबौ—कर्म वा०।
बरगळाणौ, बरगळाबौ—रू० भे०।

बरगळायोड़ौ–भू. का. कृ. १ गुमराह किया हुआ, भ्रम में डाला हुआ.
२ उत्तेजित किया हुआ, भड़काया हुआ।
(स्त्री. बरगळायोड़ी)

बरगळियोड़ौ–भू. का. कृ. –१ गुमराह हुवा हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ.
२ उत्तेजित हुवा हुआ, भड़का हुआ।
(स्त्री. बरगळियोड़ी)

बरगिरजा–स. पु. [स. गिरिजा-वरः] महादेव, शिव।

बरगोत्तम–स. पु. [सं. वर्गोत्तम] राशियो के वे श्रेष्ठ अंश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं। (फलित ज्योतिष)

बरग—देखो 'वरग' (रू. भे.)
उ०—वर्द असुर गढ न दू बरग्गां। कूंचो दे आपरा करग्गां।
—सू. प्र.

बरघू–सं. पु. देखो 'बरघू' (रू. भे.)
उ०—सबद उग्र करनाळ सवाई। सुर बरघू तुरही सहनाई।
– रा. रू.

बरड़णौ, बरड़बौ—देखो 'बरड़णौ, बरड़बौ' (रू. भे.)
उ०—अघपत "भीम" कुमंत्री आंटै, बरड़ै तीजी वेळा। 'माधव' जिसा खीजाया मार्फी, मडीया ऊथळमेळा। —नवलजी लाळस
बरड़णहार, हारौ (हारी), बरड़णियौ—वि०।
बरड़ियोड़ौ, वरिड़ियोड़ौ, बरड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बरड़ीजणौ, बरड़ीजबौ –भाव वा०।

बरड़ियोड़ौ—देखो 'बरड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वरड़ियोड़ी)

बरड़ी–सं. स्त्री. [देशज] १ लाल रग की मिट्टी विशेष जिस पर पानी बड़ा स्वच्छ दिखाई देता है।
उ०—तिकौ तळाव किण भांत रौ छै। राती बरड़ी री। पांडरौ नीर। पवन री मारियौ फीण आछंटतौ थकौ झौला खाय रह्यौ छै।
—रा. सा. स.
२ देखो 'बरड़ी' (रू. भे.)
उ०—दोय तो म्हांनै छाळी दीज्यौ दोय दीज्यौ लरड़ी। काळी भूरी दोनूं दीज्यौ एक वणाला बरड़ी। —लो. गी.

बरच—देखो 'बरचस' (रू. भे.)

बरचणौ, बरचबौ—देखो विरचणौ, विरचबौ' (रू. भे.)
उ०—संवत चोब पंच्यासीइ ए, बरचोउ चरी रसालू ए, अचल बधांमण ए। —हीराणंद सूरि
बरचणहार, हारौ (हारी), बरचणियौ—वि०।
बरचियोड़ौ, बरचियोड़ौ, बरच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बरचीजणौ, बरचीजबौ—कर्म वा०।

बरचस–सं. पु. [सं. वर्चस्] १ प्रकाश, उजाला, तेज।
(ना. मा., ह. नां. मा.)
२ कान्ती, दीप्ति।
३ रूप, शक्ल।
४ शक्ति, पराक्रम।
५ विष्ठा।
६ वृक्ष, पेड़।
रू. भे.—बरचस, बरच।

बरचियोड़ौ—देखो 'विरचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बरचियोड़ी)

बरछणौ, बरछबौ–क्रि. स. [सं. व्रश्चम्] १ घाव करना, काटना।
उ०—भीम पिंड बरछियौ, वेघ मातौ घरा, खार खुद रांम रिण हाथ लागा खरा। पांण तज मेलिया मांण हुय पाधरा, मिळै दहवाट ग्या थाट मंडोवरा। —द. दा.
२ चीरना, फाड़ना।
३ काट कर अलग अलग करना।
४ देखो 'विरचणौ, विरचबौ' (रू भे.)
बरछणहार, हारौ (हारी), बरछणियौ - वि०।
बरछियोड़ौ, बरछियोड़ौ, बरछ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बरछीजणौ, बरछीजबौ—कर्म वा०।

बरछियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ घाव किया हुआ, काटा हुआ। २ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ। ३ अलग-अलग किया हुआ।
४ देखो 'विरचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बरछियोड़ी)

बरजण—देखो 'वरजन' (रू. भे.)
उ० - महिपत बूढै मेलियौ, बरजण फज असवार। कूक लोक जादा करै, हमें मैं खादौ हार। —पा. प्र.

बरजणीक—देखो 'बरजनीक' (रू. भे.)

बरजणौ, बरजबौ—देखो 'बरजणौ, बरजबौ' (रू. भे.)
उ०—१ खैर नांखै नुगल जोदपुर खजांनै, दुजल हव जकां नै बरज

दीजै। कीत रा मडप री नीव गाढी करण, किसन रा पोतरा मदत कीजै। —कविराजा बांकीदास

उ०—२ जोतिम मगुन बिहूं विध जोगी। पोह ज्यां बरजै लेख प्रमांणी। —सू. प्र.

उ०—३ दिन रयण मुख विधि बरजि, हिम दूध गरजि करण रुख गोहुए। —रा. रू.

उ०—४ एह विख्याता नीलज निमि दमयंनी नि सरजी। प्राकृत नारी नीपाईनि स्रिष्टि जेणि नवि बरजी। —नलाख्यांन

बरजणहार, हारौ (हारी), बरजणियौ—वि०।

बरजियोड़ौ, बरजियोड़ौ, बरज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरजीजणौ, बरजीजबौ - कर्म वा०।

बरजत—वि. [सं. वर्ज्य] जो निषिद्ध हो, निषेध करने योग्य।

सं. पु.—पाप। (म. मा.)

बरजन—सं. स्त्री [स. वर्जनम्] १ निषेध करने की क्रिया या भाव।

२ मनाही, मुमानियत, निषेध, रोक।

३ व्यवधान, बाधा, अवरोध।

४ परित्याग, त्याग।

५ वैराग्य, विरक्ति।

रू. भे.—वरजण।

बरजनीक—देखो 'बरजनीक' (रू. भे.)

बरजाग, बरजागी—देखो 'बजराक' (रू. भे.)

उ०—१ खाग आग बरजाग, प्रिसण बाळै परजाळै। खत्रवाट कुळवाट, पाट परिया उजवाळै। —गु. रू. ब.

उ०—२ जोऐ जुध रीस चढी बरजागि। उठी घ्रत सींचिया जाणिक आगि। —सू. प्र.

बरजाणौ, बरजाबौ—देखो 'बरजाणौ, बरजाबौ' (रू भे.)

बरजाणहार, हारौ (हारी), बरजाणियौ—वि०।

बरजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बरजाईजणौ, बरजाईबौ - कर्म वा०।

बरजायोड़ौ—देखो 'बरजायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री· बरजायोड़ी)

बरजियोड़ौ—देखो 'बरजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बरजियोड़ी)

बरजिस—स स्त्री. [फा· वर्जिश] १ ऐसा कार्य जिसको करने मे शारीरिक श्रम अधिक लगता हो।

२ कसरत, व्यायाम।

३ अभ्यास, प्रयास।

बरजोर—देखो 'बरजोर' (रू. भे.)

उ०—'अजमाल' सुणिजै एह, कर जोड़ एम कहेह। इह्न साह की हुइ ओर, जंग किया हम बरजोर। —सू. प्र.

बरजोरा—स. स्त्री. [देश] राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

बरजोरी—देखो 'बरजोरी' (रू. भे)

बरज्या—देखो 'वज्या' (रू. भे.)

बरट—स. पु. [स. वरटः] (स्त्री. वरटा) १ हस।

२ बरैंया।

३ विर्रा अनाज।

४ कुन्द का फल।

बरटापति—स. पु. [सं. वरटा+पति] हंस।

उ०—बरटापति सुंदर तां दीठू कनक यसू सरीर। एक चरण पाखमाहि (ली) घो, बीजु अवनी मांडी। —नळाख्यांन

बरडौ, बरढौ—देखो 'वढौ' (रू. भे.)

बरण—स. पु. [स. वरण, वरणः] १ इच्छा और रुचि के अनुसार किया जाने वाला चयन।

२ कन्या के योग्य वर के चुनाव की क्रिया।

उ०— सिणगारी मग्राह स, विस कांमणि वरियांम। वरि आई हाला वरण, करण, महा जुध काम। —हा. झा.

३ उक्त चुनाव के पश्चात कन्या द्वारा वर को वरमाला डालने की क्रिया, अंगीकार, विवाह, शादी।

उ०—नरग रथ थिकत घण वहै खागां अतर, अडर कर कर मरै वरण अवरी। पड़ै धड गजाणण कहै इम पचाणण, गजाणण कठै गिण सोभ गवरी। —पीथौ सांदू

४ आदर, सत्कार।

५ यज्ञ आदि के लिये उपयुक्त ब्राह्मण का चुनाव व उसका आदर-सत्कार।

६ उक्त ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान।

७ पूजन, अर्चना, धर्मानुष्ठान।

८ याचना।

९ ढकने या लपेटने की क्रिया भाव।

१० आवरण, आच्छादन।

११ पर्दा, चादर।

१२ शहरपनाह की दीवार, प्राकार।

१३ घेरा।

१४ पुल, सेतु।

१५ आर्या गीति या स्कंधांण (स्कंधक) का भेद विसेश।

१६ गाने में स्वर विस्तार की क्रिया—इसके चार भेद स्थायी,

आरोही, अवरोही, व संचारी ।
१७ पंवार वंश की एक शाखा ।
[सं. अवरण-आगुरे अलोप] १८ ऊंट।
[स. वर्णिणी] १९ स्त्री, पत्नी ।
[सं. वर्ण]—२० रंगरूप ।

उ०—१ कंथड़ा झालि किरमाळ कैड़ी करां । सार झड़ वरण सो सोक सैलां सरां । —हा. झा.

उ०—२ भुज विसाळ लंकाळ, बरण झाळाहळ सुंदर । भरि माते भाद्रवे, जांणि ऊगो भासकर। —गु. रू. बं.

२१ अक्षर, स्वर ।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह । सब वरण वांण सरीर, इम कहत दुरत अधीर । —रा. रू.

२२ अकारादि शब्दों के चिन्ह या संकेत।
२३ प्रार्थना, स्तुति।
२४ गुण ।
२५ आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य समाज के चार विभाग । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
२६ भेद, किस्म ।
२७ यश, कीर्ति । (अ. मा.)
२८ देखो 'वरुण' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—आंबेरी "जैसाह" सूरसागर आसम्मं, वरण दिसा वाग सूं, बणी बूंदी वड धम्मं । 'अभा' आदि उमराव, रांण वाळा मन रक्खे, वरण इद्र धनवंत, इसो "अगजीत" निरक्खे । —रा. रू.

२९ देखो 'व्रण' (रू. भे.)
३० देखो 'वरणन' (रू भे.)

उ०—कांन सुणण भागवत तणो कथ । वरणव करि अवरण वरण । —ह. नां. मा.

रू. भे.—बरण, बरन, बरन्न, ब्रण, ब्रन, ब्रन्न, वंन्न, वरन, वरन्न,

णअढार—देखो 'अढारव्रन्न'

णखंडमेरु—सं. पु. [सं. वर्ण-खंडमेरु] छन्द शास्त्र या पिंगल की वह क्रिया जिससे बिना मेरू बनाये वर्ण-वृत्त व मात्राएं ज्ञात की जा सकती है ।

णजथा—सं. स्त्री.—डिंगल गीत रचना का एक नियम विशेष जिसमें गीत के प्रत्येक द्वाले में नवीन वर्णन किया जाता है ।

णज्येस्ठ—सं. पु. [सं. ज्येष्ठवर्ण] सब वर्णों से बड़ा, ब्राह्मण वर्ण।

णण—देखो 'वरणन' (रू. भे.)

उ०—१ वर विचार मनहूं कहूं, बरणण सुद्ध वणाय । तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय । —र. ज. प्र.

उ०—२ व्हौ मिळण सीता परसपर हर, घणां उतसव उमड़ घर घर। वखत जिण आमोद बरणण, को करै कवराज । —र. रू.

बरणणो, बरणबो–क्रि. स. [सं. वर्णनम्] १ वर्णन करना, (उ. र.)

उ०—१ सबळ करण अगे कुरुपत उच्चरणं । कुळ राठौड़ वळे "मोडो" कव बरणं । —पा. प्र.

उ०—२ मांनव मनसा यूं कहै बरणै जरी जराय । रचना कह (न) विरंच की, उपमा कही न जाय । —गजउद्धार

२ उल्लेख करना।

उ०—सोई ग्रथा थी सुण्यौ, जोई बरणिय जांण। सोई जोई धर सुकवि, आदि अंत अहिनांण । —डिं. नां. मा.

३ रचना करना, लिखना।

उ०—गणपति मोहि सुमत्ति दै, सुभ अख्यर ततसार । मो मत सारू बरणवूं, हरि गुण ग्रंथ अपार । —गजउद्धार

४ व्याख्या करना।

उ०—नारकीइ बरणवउं हउं, जेहां नारकीना दुख संभारता स्मरता हूंना भव्वांण भव्य जीव हुइं हरि विस्णु हर ईस्वर तेह नी रिद्धि सम्रद्धि लक्ष्मीनउ विस्तार उद्धोस उद्धरसण रोमांच जणइ करइ । —षष्टीशतक प्रकरण

५ प्रशंसा करना, सराहना।
६ निवेदन करना ।
७ चित्रण करना।

बरणणहार, हारो (हारी), बरणणियो – वि० ।
बरणिओड़ो, बरणियोड़ो, बरण्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बरणीजणो, बरणीजबो—कर्म वा० ।
बरणणो, बरणबो, वन्निजणो, वन्निजबो, वन्नीयणो, वन्नीयबो —रू. भे. ।

बरणत—देखो 'वरणन' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बरणदूत–स पु.—पत्र ।

उ०—इण रीति रो आदेस सुणि टीले दूत रै साथ सत्कार रो बरणदूत तो अगाऊ भेजियो । —वं. भा.

२ लिपि ।

रू. भे.—बरणदूत ।

बरणन–सं. पु. [सं. वर्णन] १ किसी विषय, व्यक्ति, घटना, दृश्य आदि का विस्तार पूर्वक कथन, वृत्तान्त, हाल, बयान ।

उ०—अलख पुरुस आदेस, देस बचाय दयानिधे, बरणन करू बिसेस, सुहृद नरेस 'प्रतापसी' । —दुरसो आढ़ो

२ रगने की क्रिया या भाव, चित्रांकन ।
३ व्याख्या, उल्लेख ।

४ निवेदन, स्तुति, प्रार्थना।
५ प्रशंसा, श्लाघा, सराहना।
६ बयान।
७ लेखन।
रू. भे.—बरणण, बरणन, वरणाव, बरण, वरणण, वरणत, वरणव, बरणाभ, वरणाव।

वरणनस्ट—स. पु. [स वर्ण-नष्ट] प्रस्तार के अनुसार वर्ण-वृत्तों के किसी रूप को लघु गुरु के विचार से जानने की, छन्दशास्त्र की एक क्रिया।

वरणना—सं. स्त्री. [सं. वर्णनम्] गुण कथन।

वरणनास—स. पु. [सं. वर्णनाश] व्याकरण मे, उच्चारण की कठिनता या किसी अन्य कारण से किसी शब्द के अक्षर या वर्ण के लुप्त हो जाने की अवस्था या स्थिति। (निरुक्तकार)

वरणपताका—सं. स्त्री. [सं. वर्णपताका] वर्ण वृत्तों के भेदों में से लघु-गुरु जानने की क्रिया। (पिंगल)

वरणपात—स. पु. [सं.] किसी वर्ण (अक्षर) का शब्द में से लुप्त होने की क्रिया, वर्णनाश।

वरणपाताळ—सं. पु. [स. वर्ण-पातालः] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे किसी संख्या के वर्ण के वृत्त और उन वृत्तों मे से लघ्वादि, लघ्वंत व गुर्वादि, गुर्वंत एव सर्व लघु ज्ञात किये जा सकते हैं।

वरणपास—सं. पु. [सं. वरुण-पाश वृत्तसभक्तो=पाशवरण] १ वरुण देव, वरुण। (अ. मा.)
२ समुद्र मे रहने वाला एक भयकर जलजतु जिसे अंग्रेजी मे शार्क कहते हैं।
३ वरुण का एक अस्त्र।
४ ऐसा पाश या फदा जिससे बचना बहुत कठिन हो।

वरणपुर—स पु [सं. वरुण-पुरः] १ वरुणलोक।
२ शुद्ध राग का एक भेद। (संगीत)

वरण प्रत्यय—स पु [स. वर्ण प्रत्यय] छन्दशास्त्र या पिंगल की वह प्रक्रिया जिससे वर्ण-वृत्तो के भेद, स्वरूप तथा संख्याएं जानी जाती है।

वरणप्रस्तार—सं. पु. [स. वर्ण प्रस्तारः] छंदशास्त्र की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तो के इतने भेद हो सकते है और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।

वरणमरकटी—स. स्त्री. [स. वर्णमर्कटी] पिंगल या छन्दशास्त्र में एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते है और उनमे कितने लघ्वादि, लघ्वंत तथा गुर्वादि गुर्वंत तथा सब वृत्तों को मिलाकर कितने वर्ण, कितने गुरु-लघु, कितनी कलाएं और कितने पिंड होंगे।

वरणमाता—स. स्त्री. [सं. वर्णमातृका] १ सरस्वती।
२ लेखनी।

वरणमाळा—सं. स्त्री. [सं. वर्णमाला] १ किसी भाषा या लिपि के वर्णों (अक्षरों) की श्रेणी या लिखित सूची।
२ तेसठ की संख्या * (डि. को.)
[सं. वरणमाला] ३ वह माला या पुष्पहार जो दुलहिन दुल्हे के गले मे पहनाती है।

वरणव देखो 'वरणन' (रू भे)

वरणविचार—सं. पु. [सं. वर्णविचार] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का उल्लेख हो।

वरणविपरजे, वरणविपरय्य—सं. पु. [सं. वर्णविपर्यय] निरुक्त के अनुसार किसी शब्द के वर्णों में उलट-फेर होने की स्थिति। (भाषा विज्ञान)
ज्यूं—पकड़णौ=कपड़णौ।

वरणव्यवस्था—सं. स्त्री. [सं. वर्णव्यवस्था] हिन्दुओं की समाज-व्यवस्था जिसके अनुसार समाज को चार भागों में विभाजित किया गया है। वे चारो भाग हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र।

वरणव्रत—सं. पु [स. वर्णवृत्त.] वह पद्य जिसके चरणो में वर्णों की सख्या व लघु गुरु के क्रम में समानता हो।
वि. वि —मात्रावृत्त का उल्टा।

वरणसंकर—सं. पु. [स. वर्णसङ्कर] १ वह व्यक्ति, जाति या कुल जो विभिन्न जाति के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुवा हो। (दोगला)
२ रगों का मिश्रण।

वरणसमांम्नाय—स पु. [स. वर्ण-समम्नायः] वर्ण माला।

वरणसरिक—स पु [स. वर्ण+सरिक] एक आभूषण विशेष। (व. स.)

वरणसूची—स. स्त्री [सं वर्ग-सूची] छन्दशास्त्र या पिंगल की एक क्रिया जिसमे वर्ण वृत्तों की सख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आद्यत लघु और आद्यत गुरु की संख्या जानी जाती है।

वरणस्रेस्ठ—सं. पु. [स. वर्ण-श्रेष्ठ] सब वर्णों में श्रेष्ठ, ब्राह्मण।

वरणांम—देखो 'वरणन' (मह., रू. भे)
उ०—घर रूप भुजां असमांन धरे। कव 'पाल' तणो वरणांम करे।
—पा. प्र.

वरणा—स. स्त्री. [स. वरुणा] १ काशी के उत्तर में बहने वाली एक छोटी नदी।

२ पंजाब की एक नदी, वरुणा नदी।
३ एक आर्य जन पद।
उ०—विदेह संडिल्ल मलय वत्स मत्स [बरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन अंग [वट्टा] कुणाल लाट, केकयमंडल।
—व. स.

बरणागियो—सं. पु. [सं. वर्ण] रूप-रंग, वर्ण।
उ०—तास बरणागिये दीठि मनह तणौ। मलफियौ सांमहौ, कळह बेढ़ीमणौ। —द्वा. भा.

बरणाधिप—सं. पु. [सं. वर्णाधिप] ब्रह्मादि वर्णों के अधिपति ग्रह। (फलित ज्योतिष)

बरणायव—सं. पु.—१ सूर्य. २ इन्द्र. ३ वरुण. ४ जल।

बरणाव—देखो 'वरणाव' (रू. भे.)
उ०—भमरी अळवामणी डाण भरै। कवराव किमो बरणाव करै।
पा. प्र.

बरणासम—सं पु. [सं. वर्णाश्रम] १ आर्य संस्कृति के अनुसार समाज की एक व्यवस्था जिसमें मनुष्य समाज को-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त किया गया है और मनुष्य जीवन के चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास निर्धारित किये गये हैं।
उ०—भ्रंम हरी मुख भ्रंम विचारण, सो वरणासम कारिज सारण।
—जयपुर री गीत
२ उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत निर्धारित नियम या धर्म।
उ०—वरणासम ध्रम मरजाद बेद। भाखा खट नवरस अरथ भेद।
—वि. स.
रू. भे.—वरणासम, ।

बरणि—देखो 'वरणी' (रू. भे.)
उ०—चंद वयणि, चंपक-बरणि, अहर अलत्ता-रंगि। खंजर-नयणी, खीण-कटि, चंदन-परिमळ चंग। —ढो मा.

बरणियोड़ो—भू. का. कृ.—१ वर्णन किया हुआ, निरूपण किया हुआ. २ बयान किया हुआ, उल्लेख किया हुआ. ३ रचना किया हुआ, लिखा हुआ. ४ व्याख्या किया हुआ. ५ प्रशंसा किया हुआ, सराहना किया हुआ. ६ निवेदन किया हुआ. ७ चित्रण किया हुआ।
(स्त्री. वरणियोड़ी)

बरणियौ—सं. पु.—डाभ का बना मोटा रस्सा। (पानी भरने के काम आता है।

बरणी—वि. [सं. वर्णिन्] १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धित।
२ किसी वर्ण से सम्बन्धित।
३ किसी रंग से सम्बन्धित, रंग वाला।
४ रंग रूप से सम्पन्न।
सं. स्त्री.—१ किसी साधनीय कार्य के अनुष्ठान के लिये नियोजित कर बैठाई जाने वाली ब्राह्मणों की मंडली।
उ०—कुंवरसी असवार हुवौ, जिण दिन सूं भरमल एक टंक मध्यांन ढळियां रोटी जवां री खावी, जमी सूती, तीन वखत री सिनांन, आपरै इस्ट री भजन करती रहती। काजळ, तेल, तंबूळ, कूंकू सारौ त्यागियौ। दूध, दही, घिरत मीठौ सारौ छोडियौ। ब्राह्मण पचास बरणी पर बैसांणिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता
२ साधनीय कार्य के अनुष्ठान की विधि।
[सं. वर्णिनी] ३ स्त्री, अर्धांगिनी, पत्नी।
४ नियोजन की क्रिया।
५ हल्दी।
रू. भे—बरणी, वरणि, वरन्नी।

बरणोद्दिस्ट—सं. पु. [सं. वर्णोद्दिष्ट] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे वर्ण वृत्त के रूप एवं भेद की जानकारी की जाती है।

बरणौ—वि. [सं. वर्णिन्] (स्त्री. बरणी) १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धी।
२ किसी वर्ण या जाति से सम्बन्धित।
उ०—कि जोग जाग जप तप तीरथ कि, व्रत कि दांनासम बरणा। मुख कहि क्रसन रुखमिणि मंगळ, कांइ रे मन कलपसि कृपणा।
—वेलि
३ किसी रंग से सम्बन्धित रंग का।
उ०—१ बांवळिया रै सोनल बरणा पीळा फूलां सूं गवाड़ी री छिब सवाई बधगी ही। —फुलवाड़ी
उ०—२ कैतां-कैतां हरी रौ मूडौ तातै बरणौ हुयग्यौ अर होट फड़कण लागग्या। —वरसगांठ
४ रूप-रंग से सम्पन्न।
सं. पु.—वृक्ष विशेष जिसके पत्ते बिल्व पत्र से मिलते झुलते होते हैं।
रू. भे.—बरणौ, वरनौ, वरन्नौ।

बरणौ, बरबौ—क्रि स. [सं. वरणम्] विवाह के लिये चुन कर वरण करना, अंगीकार करना, शादी करना।
उ०—१ 'अभपाल' आप छळि करि अचड़, वप विहंडाय रंभा वरूं। जंग करण महा भारथ ज्युंही, 'करण' नांम साचो करूं।
—सू. प्र.
उ०—२ परण धी पतसाह री, रजवट लागै रोग। वर अपछर वीरम कहै, जांणौ सुर पुर जोग। —बां. दा.
उ०—३ कोई झगड़ा में सूर वीर मारीजिया तिकां नै अपछराआं

बरिया सो स्वरग बधावा हुवां लारै री नारै सतियां पिण सत कर नै गई सौ ग्रपछराग्रा रा बधावणा देव मतियां कहै।
—वी. स. टी.

२ चुनाव करना, पसंद करना।
३ स्वीकार करना, मानना।
४ निगलना, खाना। (उ. र.)
५ वरदान देना, ग्राशीर्वाद देना।
६ मागना, याचना करना।
बरणहार, हारौ (हारी), बरणियौ—वि०।
बरिग्रोड़ौ, बरियोड़ौ, बरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बरीजणौ, बरीजबौ—कर्म वा०।
बरणौ, बरबौ—रू० भे०।

बर'णौ, बर'बौ—देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू. भे.)

उ०-१ भली भाति मू ग्रंत्य बत्या भरै। बिनै इंद्र सामद्र 'जेहौ' बरै'।
—ल. पि.

उ०—२ ग्ररि मुख पारथ बांग बरसिया गहि धमारां। ज्यूं कमळां पर मेघ बरै' थ्रु ग्रणगिणा धारां।
—मेघ

बरत—स. स्त्री. [सं वरत्रा] १ चमड़े का मोटा रस्सा जो हाथी को बांधने,कूए मे मोट खींचने तथा नट के नटक्रीड़ा में काम ग्राता है।

उ०—१ रै चित ग्रन द्रढ एम रख, मूरत स्याम मफार। मेल्ह सुरत नट वांस में, प्रगट **बरत** है पार।
— र ज. प्र

उ०—२ एक बैर जावै छै। सु साठीको कोहर, निर्यै री **बरत** छै सु **बरत** सांवटिनै काख मांहे घाली छै।
—नैणसी

२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

उ०—१ कीजै **बरत** भजन गिणि कीजे। भगत-बछ्ळ रीझै व्रज-भूप।
—ह. ना. मा.

उ०—२ ग्राज मिरति मंगळी, ग्राज पति **बरत** संभाळै। ऊजळौ जग ग्रस, ग्राज गुज बस उजाळै।
—रा. रू.

उ०—३ केहरि तरण पण लडरण ग्रकूणौ। लीधां **बरत** 'जोगपती' 'नूणौ'।
—रा. रू.

उ०—४ तठा उपरांति देव जागिया छै। काती मास रा **बरत** महोछव कीजे छै। घरि घरि दीपमाळिका रा वणाव हुइ नै रहिया छै।
—रा. सा. स.

३ देखो 'विरत' (रू. भे.)

रू. भे.—बरत, भरत, वरतर, वरता, वरत्त।
मह.—बरत्रौ।

बरतण—२ देखो 'बरतरण' (रू. भे.)

२ देखो 'बरतन' (रू. भे.)

उ०—सोर ग्राग सपरस्स, किना वडवाग ग्रकारी। माग हूंत सांमद्र, ध्याग **बरतण** उर धारी।
—रा. रू.

बरतणि, बरतणी—देखो 'बरतणी' (रू. भे.)

उ०—जोधपुर सुपह री चाड मांडै जुड़ण, ग्रापरा लियां परिग्रह उजासै। 'पाल' री खूंद **बरतणि** जूदी पांमतौ, पूजियौ विघन वी वार पासै।
—केसोदास गाडण

बरतणौ—देखो 'बरतणौ' (रू. भे.)

उ०—पाव दोरा रे नेवरणी पांच मसीजरणा, वास कूंपी रे कांबी वारू **बरतणा**।
—स. कु.

बरतणौ, बरतबौ – देखो 'बरतणौ, बरतणौ' (रू. भे.)

उ० – १ सुर तजो चित **बरतौ** ग्रसोक। लंकेस हणूं सुख करां लोक।
—सू. प्र.

उ०—२ तथा खीभाभोजी ग्रापरो वडो मुलायजो **वरतै** है सु हमार फळोधी रा गांव ८४ खालसै किया है।
—द. दा.

उ०—३ देवावत 'लिछमरण' जग दाता, हेळा करण खिताब हुवौ। भिड़जां भडां चारणां भाटां, मुंहगां **बरतणहार** मुवौ।
— बां दा·

उ०—४ मुथरा मांहि **बरतिया** मंगळ। घरण कितूहळ घरोघरि।
— ह. नां. मा.

उ०—५ रूक हू भरत रत्त, करतौ कोप धूहड, बेहडा घड़ा करतौ, **बरतौ** दुवाह।
— दूदौ वीठू सुरतांणोत

उ०—६ सवत सोल चिहुत्तरइ, पोस सुदि तेरस **बरतई**। साग करइ सहि लोक, पूज पहुंता परलोक।
—कविवर खीसार

उ०—७ ससार चक्र तराउ इरा परि ढालु, चडतउ पडतउ **बरतई** कालु। कल्प द्रुम मनवछित होइ जगलाधरम तिहां वरतइ मोइ।
—वस्तिग

उ० – ८ जासी हाट बात रह जासी जग, ग्रकबर,ठग जासी एकार। रे राखियौ खत्री ध्रम रांणै, सारौ ले **बरतौ** संसार।
—प्रथ्वीराज राठौड़

उ० - ९ घर घर मंगळचार, मोहन चढियौ मंडोवर। नाद वेद **बरतिया**, सुकवि बोलै सुभ ग्रक्खर।
-- गु. रू. बं.

बरतणहार, हारौ (हारी), बरतणियौ—वि०।
बरतिग्रोड़ौ, बरतियोड़ौ, बरत्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बरतीजणौ, बरतीजबौ—कर्म वा०।

बरतन—१ देखो 'वेतन' (रू. भे.)

उ०—जगदेवजी कह्यौ, सेर बाजरी नै हीज ग्रायौ छूं। तरै राजा कह्यौ, पटो लेस्यो कै कोरी **बरतन** (वेतन) लेस्यौ। जगदेवजी कह्यौ, कोरी **बरतन** लेस्यूं।
—जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'बरतन' (रू. भे)

बरतनी—देखो 'बरतणी' (रू. भे.)

बरतमांण, बरतमांन–वि. [सं. वर्तमान] १ विद्यमान, मौजूद।

उ०—ज्यूं लारलड़ा वह गया बरतमांण वह ज्याय। काळ-कळत में कळ रह्या, ठीक न 'विसना' ठाय। —विसनौ

२ जीव धारी, जिन्दा।

३ जो अपने अस्तित्व व सत्ता में हो।

४ घूमने-फिरने वाला।

५ सहयोगी।

६ जो प्रभाव में हो, लागू हो (नियम, विधान)

सं. पु–[सं. वर्तमानः] १ व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जो किसी क्रिया का चालू होना सूचित करता है।

२ वर्तमान काल, मौजूदा समय।

उ०—त्रकाळग्यानदरसी निज भ्रमकूं पहिचांणे। भूत भवस्त बरतमान जुगति सौं जणे। —सू. प्र.

३ समय, वक्त, वेला,। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बरतमांन।

बरतमा—देखो 'वरत्म' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

बरतर, बरता—देखो 'वरत' (रू. भे.) (उ. र.)

बरताड़णौ, बरताड़बौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ (रू. भे.)

उ०—वसती सु दळि वरताड़, ग्रनि गाम धाम उजाड़। पहु रोस जोस अपार, लेखवै मेछ लिगार। —रा. रू.

बरताड़णहार, हारौ (हारी), बरताड़णियौ—वि०।

बताड़िग्रोड़ौ, बरताड़ियोड़ौ, बरताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरताड़ीजणौ, बरताड़ीजबौ—कर्म वा०।

बरताड़ियोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बरताड़ियोड़ी)

बरताणौ, बरताबौ– देखो 'बरताणौ, बरताबौ' (रू. भे.)

उ०—नै किसनदासजी गढ में आया। राव कल्यांणसिंघ जी री आंण वरतायी। —द. दा.

बरताणहार, हरौ (हारी), बरताणियौ—वि०।

बरतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बरताईजणौ, बरताईजबौ—कर्म वा०।

बरतायोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बरतायोड़ी)

बरतार –देखो 'बरतारौ' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'भरतार' (रू. भे.)

बरतारी–देखो 'वृतारि' (रू. भे.)

बरतारौ–सं. पु [सं. वृत्तचार] १ प्रयोग, ईस्तेमाल करने की क्रिया।

उ०—पछै संवत १८४१ रै वरस नागोरी लूंकां रा गछ रा स्रीपूज हरखचंद जिन मत रा टीपणा रौ वरतारौ कियौ। —बां. दा. ख्यात

२ समय, वक्त।

उ०—मृग जळ नीर सींग ससियेका, ज्यूं बंझया का बारा। दुख सुख जरा मरण सुपना में, यूं सतोगुण वरतारा। —सुखरांमजी महाराज

३ किसी देवि-देवताओं या देव-योनि में गई हुई मृतात्मा का किसी मनुष्य शरीर में प्रवेश की अनुभूति एवं तदनुसार होने वाली चेष्टाएं।

४ वह पद्य जिसमें कविता या छंदों के रचना संबंधी नियमों का निरूपण हो।

५ आधार, सहारा, आश्रय।

रू. भे.—बरतारौ।

मह.—वरतार

बरताव—देखो 'बरताव' (रू. भे.)

उ०—ऐड़ो बरताव करती जाणै किणी पाड़ोसण रौ टाबर व्हे। —फुलवाड़ी

बरतावणौ, बरतावबौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ'

उ०—१ हिंदुस्थांन का छत्र जगत छाया बरतावण। हिंदुस्थांन में सूरज कवि कमळ-विकसावण। —रा. रू.

उ०—२ स्रीपुर नगर सोहांमणु, तिहां वरतावौ अमार। —स. कु.

बरतावणहार, हारौ (हारी), बरतावणियौ—वि०।

बरताविग्रोड़ौ, बरतावियोड़ौ, बरताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरतावीजणौ, बरतावीजबौ—कर्म वा०।

बरतावियोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वरतावियोड़ी)

बरतियोडौ—देखो 'बरतियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. वरतियोड़ी)

बरतियौ, बरतीयौ—देखो 'भरतियौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै बरतिया कना मेह बंधावण रौ तलास कियौ। तरै वरतिये कह्यौ—एक हिरण मंगावौ। तरै हिरण, आंणजै कागळ? में जंत्र लिखनै वरतिये कोरनै हिरण रै सींग मांहै घात नै कोस र भाखर थौ तठै हिरण रै सहनांण कर छोड दियौ। —नैणसी

उ०—२ हिवै इया रै देस मांहै धांन घणा। वहवारीयां रै लाखै ग्यांन हुवौ। केलैकोट, बगै, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुया। होई नै एक वरतीयै नुं कह्यो, जु "धांन म्हांहरै घणौ। ज्युं करौ

ज्यूं थांन रा पईसा हुवै ।" ताहरां महाजन मेह बधायौ ।
—लाखं फूलांणी री बात

बरतुळ, बरतुल—वि. [सं. वर्तुल] चक्करदार, गोल ।
सं. पु. १ चक्कर, गोला ।
२ चक्र ।
३ वातचक्र ।
रू. भे.—बरतुळ, बरत्तुल ।
अल्पा.,—बरतुळो, बरतुलौ ।
बरतेसरी—देखो 'व्रतेसरी' (रू. भे.)
बरतौ—देखो 'बरतणौ' (रू भे.)
बरत्त—१ देखो 'वरत' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

बरत्तणौ, बरत्तबौ—देखो 'बरतणौ, बरतबौ' (रू. भे.)
उ०—१ मांण प्रताप पड़ै भूपत्ती । विच गढ कमधां आंण वरत्ती ।
—सू. प्र.
उ०—२ धोपट्टै लीध धरत्ती । जिहंगीरे आंण वरत्ती ।
—गु. रू. बं.
बरत्तणहार, हारौ (हारी), **बरत्तणियौ**—वि० ।
बरत्तियोड़ौ, बरत्तियोड़ौ, बरत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बरत्तीजणौ, बरत्तीजबौ—भाव, कर्म वा० ।
बरत्तमांन—देखो 'वरतमांन' (रू. भे.)
बरत्तिकाबिंदु—स. पु. [स. वर्तिकाविंदु] हीरे का एक दोष ।
बरत्तियोड़ौ—देखो 'बरतियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बरत्तियोड़ी)
बरत्तुल, बरत्तुल—देखो 'वरतुळ' (रू. भे.)
उ०—हृदं मूल वरत्तुल इक होइ । दुहु कूखे लांबा द्यौ दोइ ।
—घ. व. ग्रं.
बरत्तुळौ, बरत्तुलौ—देखो 'वरतुळ' (अल्प., रू. भे.)
उ०—दूजो लंबो ग्रीव परि, जहां धरिजै जोत । दो लवणं द्यौ वरत्तुला, च्यारै इहि विधि होत । —घ. वं. ग्र.
बरत्म—सं. पु. [सं. वर्त्मन्] १ मार्ग, पथ, रास्ता, राह ।
२ सड़क ।
३ पगडंडी ।
४ पद ।
५ स्थान ।
६ लीक ।
७ पद्धति, रस्म, चलन, परम्परा ।
८ किनारा, तट ।

रू. भे.—वरतमा ।
बरत्तारि—देखो 'व्रतारि' (रू. भे.)
बरत्नी—सं.स्त्री. [सं. वर्तनिः] मार्ग, रास्ता, सड़क, राह । (ह. नां. मा.)
बरद—वि. [सं.] १ वरदान देने वाला, अभीष्ट की पूर्ति करने वाला, वर-दाता ।
२ शुभ ।
सं. पु.[सं. वरदः] १ देवता (अ. मा.)
२ देखो 'विरुद' (रू. भे.) (अ. मा.)
रू. भे.—बरद ।
बरदउदात—सं. स्त्री. [सं. उदात वरद, वरद+उदात] सरस्वती, शारदा । (अ. मा.)
बरदपत, बरदपति,—देखो 'विरुदपति' (रू. भे.)
उ०—हाथी बहु हेला दिये कर बाहर करतार । वेगा आवौ बरदपत मेरी भीर मुरार । —गजउद्धार
बरदळ, बरदल, बरदळि, बरदलि—[सं. पु.] १ दूल्हा, वर ।
उ०—१ बंधव अनुज 'गजै' री बेटी, लाज सील गुण प्रीत लपेटी । बरदळ लख घर मेळ सवायो, प्रकट तिकण रौ लगन पठायो ।
—रा. रू.
उ०—२ सरीखा छेड़ धरा खुरसांण, मरीखौ राउ अनै सुरतांण । बरदळ बेठौ वडे वीवाह, मिळी घण तुरग महा-रिण मांह ।
—रा. ज. सी.
उ०—३ दळपति कोइ न दूजौ बरदळि । निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियौ । रात्र तणौ घरि लहीस वर ।
—दूदौ
२ वर-पक्ष ।
उ०—ढोलउ-मारु परणिया, बरदळ हुवउ उछाह । आ पूगळ री पदमिणी, अउ नरवर चउ नाह । —ढो. मा.
३ बारात ।
बरदांणी—देखो 'वरदायिणी' (रू. भे.)
उ०—हंस गमण ब्रहमांणी हसा रूप हस आरूढ़ । देवगुरु बरदांणी निधि वाणी तुम्यौ नम । —देवि
बरदांन—स. पु. [स वरदान] १ किसी देवी, देवता या बड़ों द्वारा अभीष्ट की पूर्ति के लिये दी जाने वाली सिद्धी । शुभ कार्य की कामना की पूर्ति के लिये दिया जाने वाला आशीर्वाद ।
उ०—देवी माई हिंगोळ पच्छम माता, देवी देव देवाधि बरदांन दाता । —देवि
२ वह वस्तु, अवस्था या स्थिति जो मगल दायिनी हो, अनुग्रह रूप हो
रू. भे.—बरदान ।
बरदांनी—वि॰ [सं. वरदान+रा. प्र. ई.] १ वर देने वाला, मनोरथ सिद्ध करने वाला ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो, सिद्धिधारी।

वरदा–सं. स्त्री. [सं.] १ कुंवारी कन्या, लड़की।

२ ग्रसगंध।

३ ग्रड़हुल।

४ एक नदी का नाम।

५ सरस्वती, शारदा।

रू. भे.—बरदा।

वरदाइ—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

उ०—वरदाइ पढत गुण कवि वखाणि। मगळीक वयण मोसर प्रमांणि। —सू. प्र.

वरदाइक—देखो 'वरदायक' (रू. भे.)

उ०—वरदाइक 'जाखो' वंसि बधारण वांन। मनमोट महिपती। मेर जिसो ग्रनमांन। —ल. पि.

वरदाई–वि [स. वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदाता।

उ०–नव दुरगा नवै मेट वरदाई, करगि मगळीक रच्चए। वंदिग जैकार बिंद कोळाहळ, विप्रां वेदउ वच्चए। —गु. रू. ब

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सुदि ग्रगसर सतमी वार मगळ वरदाई। ग्रभ परम "ग्रभमाह" विमळ ग्रहि वंस वडाई। —रा रू.

३ यशस्वी।

उ०—१ 'मूजा' पाट सकाज, 'वाघ' कमधज वरदाई। कर दन खग बह कवर, पिता पहिला ग्रत पाई। —सू. प्र.

उ०—२ वीर पाबू समराथ, वीर साचो वरदाई। वीर खाग सिर वहा, वीर चारणियां भाई। —पा. प्र.

४ वीर।

उ०—'सूरा 'ग्रह्रबाळ' गुजड हथ 'सांडा,' 'जैता' 'जगमल' जैत्राई। 'काधिळ' कळिमूळ सदा कळि चालण, 'नैरा' वेढक वरदाई। —गु. रू. बं.

उ०—२ वरदाई भुजे बडाई तमांण सवाई। मिधि पाई जुध जैत्राई सकति सहाई। —ल. पि

५ वरदान या सिद्धि प्राप्त।

उ० -१ 'सांवत' 'माहव' तणो सवाई। 'वीटल' रो 'सकतो' वरवाई। —रा. रू.

उ०—२ पाबू पाट रै रूप राठवड़ां, मेवै तुभ सधीरा। वेगड़ै पाल्ह लीया वरवाई, सिघ तणा माढी रा।

—पाबू राठौड़ धांधळोत रो गीत

६ वरदान से उत्पन्न होने वाला।

उ०—पांण का कपिराज सूरज का बंस। देवी का वरदाई दईव का ग्रस। दिल का दलेळ लहरू का दरियाव। —सू. प्र.

८ ग्रनुकूल, लाभप्रद।

रू. भे—बरदाई, वरदाइ, वरदायी, बिरदाई।

वरदाचतुरथी, वरदाचौथ–स. स्त्री. [स. वरदाचतुर्थी] माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

वरदात–वि. [स. वरदातृ] वर देने वाला, वरदाता।

सं. स्त्री [सं वरदात्री] १ सरस्वती। (ग्र. मा.)

२ पार्वती गिरिजा (ग्र. मा.)

३ देखो 'वरदाता' (रू. भे.)

वरदाता–वि [सं. वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदायक।

उ०—दीनानाथ ग्रभै वरदाता, त्राता सेवग तारणा।

—र. ज. प्र.

सं. पु.—ब्रह्मा।

रू. भे.—बरदाता।

वरदाय, वरदायक–वि.—१ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—जानुकी वर मरम जाणण, तेग ग्ररेसां तायक। 'किसन' भज जन मान रक्खे, दान ग्रभै वरदायक। —र. ज. प्र.

२ सिद्धि देने वाला।

३ यशस्वी, कीर्तिवान, विरुदधारी।

उ०–वधै राज सुख विहद, वधै हित संपत वधायक। ग्रवर वधै दिन इतो, वधै पल पल वरदायक। —सू. प्र.

४ श्रेष्ठ।

उ०—'सुरतो' 'गांगावतां' 'नरां 'पदमो'। नर नायक। ग्रणभंग 'चूंडावता' 'विजो' कमधां वरदायक। —सू. प्र.

५ वीर।

उ०—उदर सुमित्र लछण जीपण ग्ररि, धरै सेस ग्रवतार धुरंधर। बियो सत्रघण सुजस सवायक, दीरघबाह वडो वरदायक।

—र. रू.

६ सिद्धि प्राप्त।

७ वर प्राप्त, वरदान धारी।

उ०–ग्रामो-सामही भटका हुवे उतरिग्रा। ग्राप रखी रा वरदायक हुता। सो मछ री दया वासतै घणा सेहर रा लोक मछ ऊपरा तरवारिग्रा वाहिया। —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ वरदायक सकति रो, कत कीत रो कहावै। उरड़ जोम ग्रंगरो, ग्रवर पह मीढ़ न ग्रावै। —सू. प्र.

८ फलदायक, सफलता देने वाला।

उ०—१ वरदाय 'लखण' रण सूर वीर। धारण प्रवीण ग्रण धार धीर। —रा. रू.

उ०—२ हसा मह चारण क्रोध प्रसाधि। विढं बरदायक वीर-विराध। —सू. प्र.

रू. भे.—बरदायक, विरदाक, वरदाइक, विरदायक

६ देखो 'विरुदायक' (रू. भे.)

बरदायण, बरदायणि, बरदायणी, बरदायिणी,—सं. स्त्री. [स्त्री. वर+दायिनी] सरस्वती। (डि. को.)

उ०—ऐवास विराजै ऊजळा, विध ऊजळ हंस-वाहणी। ऊजळ प्रढोल गाऊ 'प्रभो', दीजै वर बरदायणी। —बखतो खिड़ियो

वि.—१ सिद्धि व सफलता देने वाली।

उ०—पांण बुध 'प्रनावत' तणो जस पायणी, प्रेम बण बायणी तेज प्रांनेक। मीर मक डायणी प्रबखासां मही, प्रसी बरदायणी कटारी एक। —करनीदांनजी कवियो

२ वर देने वाली।

रू. भे.—बरदायण, बरदाणि, बरदाणी।

बरदायी—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

उ०—नांनण छावहडो बरदायी हुवो। पोकरण प्राय वसियो। —बां. दा. ख्यात

बरदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—कप जेह छळ कूदियो, फर वडाळी फाळ। एक कटारी प्रगरंग, बकट, 'कलो' बरदाळ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

बरदाळो—देखो 'विरुदाळो' (रू. भे.)

उ०—जं खळ जठी तठी जुध जीपण, हठी भीम कारज हड़मंत। बणीयो यळ राखण बरदाळा, डाढाळा केसव चो दंत

—किसनो प्राढो

बरदी—सं. स्त्री. [प्र. वर्दी] किसी विभाग, संस्था या वर्ग के कर्मचारियों के लिये निर्धारित पोशाक विशेष, यूनिफॉर्म।

रू. भे.—बड़दी, वड़दी।

बरदेत, बरदैत—देखो 'वरदायक'

उ०—१ कथ 'पाल' तें साची कही, बरदेत झूठ न बात। प्राया समै रा मारिया, एकरैसूं कव उतपात। —पा. प्र.

उ०—१ वडा खळ खाग हणै बरदैत। जुड़ै इम 'भांण' समोभ्रम 'जैत'। —सू. प्र.

बरद्धक—वि. [सं. वर्द्धक] १ वृद्धि करने वाला, बढ़ाने वाला। [सं वर्धक.] २ काटने वाला।

३ विभाजन करने वाला।

रू. भे.—बरधक, बरधकि।

बरद्धन—सं पु. [सं. वर्द्धन] १ वृद्धि, बढ़ोतरी।

२ उन्नति।

३ वृद्धि या बढ़ोतरी होने की प्रवस्था।

४ काटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—बरधन।

बरद्धमांन—वि. [सं. वर्द्धमान] १ जो बढ़ रहा हो, वृद्धिशील हो, बढ़ने योग्य।

२ बढ़ने की प्रवृत्ति वाला।

३ उन्नति के लिये उन्मुख।

सं. पु.—१ जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर, महावीर स्वामी।

२ एक वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण में १४, दूसरे में १३, तीसरे मे १८ व चौथे चरण में १५ वर्ण होते हैं।

३ वार व नक्षत्र सम्बन्धी २८ योगों में से २८ वां योग। (फलित ज्योतिष)

४ देखो 'वरद्धमानतप'

रू. भे.—बधमांन।

बरद्धमांनतप—सं. पु. एक प्रकार का व्रत विशेष

उ०—स्थांन पंचमी, मुकुट सहामी, माणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमण-तप, बरद्धमांनतप, इंद्रियजय, कसायजय। —व. स.

बरधक—सं. पु. [सं. वर्धक: वर्धकि:] १ बढ़ई, तक्षक।

२ देखो 'वरद्धक' (रू. भे.)

रू. भे.—बरधकि, बरधकी, वरधकि।

बरधका—सं. स्त्री. [सं वृद्धा] १ गाथा-छंद का एक भेद जिसमें विप्र गण (चार मात्रा के समूह) का प्रयोग बहुत होता है।

उ०—भगण बहुत सो प्रौढ़ा भणजै। गण बोह विप्र बरधका गिणजै। —र. ज. प्र.

२ देखो 'वृद्धा' (रू. भे.)

बरधकि—देखो 'वरधक' (रू. भे.)

बरधन—देखो 'वृद्धापन' (रू. भे.)

बरधापन—देखो 'वृद्धापन' (रू. भे.)

उ०—ऐ प्रखीयात कीद 'प्रासावत', रीदां सुं तेवड़ै रिण। वप वढीयो बरधापण वढतां, पोरस मछर जवांनपण।

—दुरगादास प्रासकरणोत री गीत

बरन्—प्रव्य [सं.] १ बल्कि २ ऐसा नहीं।

बरन—देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ पसरि पख है पाई, हल्ला उड्डै प्राघंतरि। जरद लाल इक स्याह, बरन वाना विबहुयरि। —गु. रू. ब.

उ०—दुति सोभा दांमणी, बरन प्रादीत वरन्नी। भाव-सिंध सारधू, देव कन्या उतपन्नी। —गु. रू. ब

उ०—३ जप जाप होम कीजै जिगन, **बरन** खट्ट ग्रामै बरो।
जोधपुर ग्राज ग्रजुधापुरी, रांम राज कमधज्ज रो। —गु. रू. बं.

बरनसन-स. पु. [सं. वर्णाऽऽसनः] कवि, पंडित। (ग्र. मा.)

बरना-ग्रव्य. [फा. वर्नः] १ ग्रन्यथा।
२ नहीं तो।
३ ऐसा नहीं हुग्रा तो।

बरनोळी, बरनोली—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बरनोळौ, बरनोलौ—देखो 'बदोळौ' (रू. भे.)
उ०—ताजां नेजां गयणाइ सोहइ, **बरनोलइ** इम मनमोहत।
—कविवर स्रीसार

बरनौ—देखो 'वरणौ' (रू. भे.)
उ०—फौजां डेरा फाबिया, दीसै हद्द विहद्द। सबज **बरना** स्याह ग्रन, लाल सपेत जरद्द। —गु. रू. बं.

बरन्न—देखो 'वरण' (रू. भे.)
उ०—मारू मारइ पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न। बंती, चूड़इ मोतियां, ग्रीयां हेक **बरन्न**। —ढो. मा.
उ०—२ वेधं खळ सावळ चोळ **बरन्न**। कहै रवि झोक लई 'सुमकन्न'। —सू. प्र.

बरन्नी—देखो 'वरणी' (रू. भे.)
उ०—एक खड़ी मुख रूप नियाळै, एक खड़ी सिर चम्मर ढाळै। कांम लता पिण कग्गक **बरन्नी**, पाम खड़ी सुख रास पतन्नी।
—गु. रू. बं.

बरन्नौ—देखो 'वरणौ' (रू. भे.)
उ०—विवह **बरन्ना** कप्पडा, विवह **बरन्नी** पाग।
फजर हुवंदी फूलिया, जांण मलूकां वाग। —गु. रू. बं.
(स्त्री बरन्नी)

बरपूर—देखो 'भरपूर' (रू. भे.)
उ०—तद तरवार म्यान सूं लीवी सू प्यादां झगड़ौ **बरपूर** हुवो।
—द. दा.

बरम-स. पु. [रू. वर्मन्] १ कवच, बख्तर।
उ०—काटसी घणा ग्रघ ग्रोघवाला करम। बेध नह सके जम पहर इसड़ो **बरम**। —र. ज. प्र.
२ घर, मकान।
३ छाल, गूदा।
४ पित्तपापड़ा।
[फा. वरम] ५ किसी ग्रंग पर ग्राने वाली सूजन, पोथ।
६ घाव।
७ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

रू. भे.—बरम, बरम्म, वरम्म।

बरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

बरमा-सं. स्त्री. [सं. वर्म्मन्] १ नाम के ग्रंत में लगाई जाने वाली क्षत्रियों की एक उपाधि।
२ उपनाम।
३ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.) बरमा

बरमाळ—देखो 'वरमाळा' (रू. भे.)
उ०—१ करण ग्रखियात चढियो भलां काळमी, निवाहण वयण भुज बांधिया नेत। पंवारां सदन **बरमाळ** सूं पूजियो, खळां किरमाळ सू पूजियो खेत। —बां. दा.
उ०—२ रांमायण भारथ तणय रंग, जोणियो ग्रमायण विकट जंग। गंठ-जोड ग्रछर मूलाल गंठ। कदणां ग्रंत्रळ **बरमाळ** कंठ।
—वि. सं.

बरमाळणौ, बरमाळबौ—क्रि. स. १ दुलहिन द्वारा वर के गले में माला डालना, वरमाला डालना।
उ०—विध जुत कूरमराज विचारे, स्रीफळ कंचन रतन सिगारै। सुभ दिन लगन घड़ी ले सुंदर, **बरमाळियौ** 'ग्रभौ' प्रथमी-वर।
—रा. रू.
२ जयमाला डालना।
३ वरण करना, विवाह करना, शादी करना।
उ०—वीरम नां **बरमाळतां**, मिटियै रे 'किसमीर'। 'बूकण' री घर बूडसी, नदी वहंते नीर। —वी. मा.
४ स्वीकार करना, ग्रंगीकार करना।
बरमाळणहार, हारौ (हारी), **बरमाळणियौ**—वि०।
बरमाळिग्रोड़ौ, बरमाळियोड़ौ, बरमाळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बरमाळीजणौ, बरमाळीजबौ—कर्म वा०।

बरमाळा, बरमाला—स. स्त्री. [सं. वर+माला] १ दुल्हन द्वारा दूल्हे को पहनाया जाने वाला पुष्पहार, हार।
उ०—१ विच गळ रंभ वरू **बरमाळां**। ग्रोयण मझि उझळतां ग्रत्राळां। —सू. प्र.
उ०—२ इसी बात सुण लाडी **बरमाळा** लेय घणा लोगां री भीड़ सूं उछाह करती ग्राई वरमाळा गळै पहराई।
—पंच दंडि री वारता
उ०—दसण सयण रयण छळ दमगगळ, राख गळौ वळ भीच रहै। धड़ ग्रारती ऊतरै धारा, **बरमाळां** किरमाळ वहै। —दूदो
१ जयमाला।
रू. भे.—वरमाळ, बरमाळा, वरमाळ, **वरम्माळ, वरम्माळा**।

बरम्म—१ देखो 'वरम' (रू. भे.)

उ० – नमसकार सूरां नरां, बिरद नरेम वरम्म । रिजक उजाळे मांम री, पाळे सामधरम्म । —बां. दा.

वरम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे.)

वरमाळियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ वरमाला डाला हुआ. २ जयमाला पहनाया हुआ. ३ वरण किया हुआ, विवाह किया हुआ, शादी किया हुआ. ४ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ।
(स्त्री. वरमाळियोड़ी)

वरम्माळ, वरम्माळा—देखो 'वरमाळा' (रू. भे.)

उ०–१ कवी छंद बोलै प्रभू अग्रकारी । धणी कंठि सीता वरम्माळ धारी । —सू. प्र.

वरयता–सं. पु. [सं. वरयिता] स्त्री का पति, भतार, स्वामी।
(अ. मा., ह. ना. मा.)

वि.—वरण करने वाला।

रू. भे.—वरयिता।

वरयात्रा–सं. स्त्री [सं. वर+यात्रा] १ वर का विवाह के लिये वधू के यहाँ बरात सहित किया जाने वाला गमन।

२ बरात।

वरयेचा–सं. स्त्री.—राठोड़ वंश की एक उप-शाखा।

वररमा–सं. पु. [सं. रमा+वर] १ रामचन्द्र।

उ०—तोड़ खळ जमा चौ आच खग तोलियां, ईस गण नाच घम-घमाचौ ओप । गजब रो तमाचौ अजब रो थको गण, कना सर वररमा चौ कोप । —बद्रीदास खिड़ियौ

वररुचि–सं. पु. [सं] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन पंडित जो व्याकरण और काव्य के मर्मज्ञ थे। सुविख्यात प्राकृत व्याकरणकार।

२ एक प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र प्रणेता।

रू. भे.—बररुचि।

वरल–सं. पु. [सं. वरलः] १ सूर्य, सूरज। (नां. मा., ह. ना. मा.)

२ हंस।

३ बर्रया।

४ प्रकाश, उजाला, रोशनी।

रू. भे.—बरळ।

वरळक–सं. पु. [सं. वरल+रा. प्र. क.] उजाला, चमक।

उ०—तें ध्रवियो घणा भडा बळि तार्के, रिणवट 'कूंपा' रूप रखा । वरळक करें फरें बीरारसि, अहि जिम थांरौ कूंत 'अखा' । —नादण बारहठ

वरलच्छि–सं. पु. [सं. लक्ष्मी-वरः] विष्णु।

रू. भे.—बरलच्छि, वरलाछ।

वरळणौ, वरळबौ—देखो 'विरळणौ, विरळबौ' (रू. भे.)

उ० दादू स्वाद लाग संसार सब, देखत वरळय जाय। इंद्री स्वारथ साच तज, सबै बंधांणैं आई। —दादूबांणी

वरला–सं. स्त्री. [सं] मादा हंस, हंसिनी।

वरलाछ—देखो 'वरलच्छि' (रू. भे.)

वरळियोड़ौ—देखो 'विरळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वरळियोड़ी)

वरळ, वरळु—देखो 'विरळौ' (रू. भे.)

उ०—जनम लगइ विहडइ नहीं, भली नारी जे होइ । एतला ऊफक सार नथी, राखइ ज वरळु कोइ । —नळदवदंती रास

वरवंछक, वरवंछत–वि.— बुरा चाहने वाला, दुश्मन।

उ०—आसीस दीयै 'सुरतांण' अछरा, नृप हां वडा वधारण नेह । वरवंछत लाघा तो वडतां, छत्र पतीयां सुं बाधा छेह । —दुरसौ आढौ

वरवड़ी–सं. स्त्री. [देशज] चारण वंशोत्पन्न एक देवी जिसने महाराणा हमीर को राज्य प्राप्त कराया था।

वि. वि.—यह चखड़ा की पुत्री थी।

रू. भे. बरवड़ी, बिरवड़।

वरवती–वि. (स्त्री) १ सौभाग्य शालिनी, सुहागन।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो।

सं. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति जिन्दा हो, सुहागन स्त्री।

रू. भे.—बरवती।

वरवर—देखो 'बरबर' (रू. भे.)

वरवरण–सं. पु. [सं. वरवर्ण] १ अच्छा वरण, सुन्दर वरण।

२ स्वर्ण, सोना।

वरवरणी–सं. स्त्री. [सं. वरवर्णिनी] १ लक्ष्मी।

२ दुर्गा।

३ सरस्वती।

४ सुन्दर स्त्री।

५ उत्तम स्त्री।

६ लाख।

७ हल्दी।

८ प्रियंगुलता।

वरवरणौ, वरवरबौ—देखो 'वड़वड़णौ, वड़वड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वरवरतौ वेग वरद बीमाळा, ठहतौ खळां घाल तो ठाळ । आबुदसा आवतौ आबू, वेरीयां दळ दीठौ 'विजपाळ' । —दुरसौ आढौ

बरवरियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बरवरियोड़ी)

बरबार—देखो 'बारबार' (रू. भे.)

बरवासण, बरवासणी–सं. स्त्री. [सं. वरवासिनी] कछवाहों की कुल देवी।

उ॰—पछै मलीरणा रै गांव भूंपड़ा खेड़ै सोहड़ भगवंतगढ सेस भारिज्ये मलीरणै रै वीछूं दैनै हुय जीरोतरो गांव हाडोती री हुय-नै आगै खंडारगढ़ चांबळ मेळी हुई तठै देवी **बरवासण** री थान छै। —नैणसी

बरवीर–सं. पु. [सं. वर-वीर] १ श्रेष्ठ वीर, श्रेष्ठ योद्धा।

उ॰—वडो वडग्रार भुजे कुळ भार, धरा सिणगार इसौ लखधीर। वहै खत्रवाट नमावण नाट, विधांसण थाट सत्रां **बरवीर**। —ल. पिं.

२ श्रेष्ठ विद्वान, सुयोग्य पंडित।

उ॰—ह भ ध र ध न ख भ होय, अंक ग्रठ दगध ग्रधीरह। ग्राखर दग्ध ग्रठार बदे, कवसल **बरवीरह**। —र. रू.

३ बुद्धिमान, विवेकी।

उ॰—तुरातुर नौसरजा भव तीर, विसे-विस बीसरजा वरवीर। हमें गुरु वायक मां बुधहार, सभै निज नायक की सुध सार। —ऊ. का.

४ एक छन्द विशेष।

उ॰—चव कळ उरोज थळ च्यार वोज। **बरवीर** छंद, कह यम कव्यद। —र. ज. प्र.

बरवेरण–स. पु. [सं वडवा–रमण] घोड़ा। (नां. डिं. को.)

बरसंत, बरसंति–सं. पु. [सं. वर्ष+ग्रंत] किसी वर्ष या साल का ग्रन्त या समाप्ति।

उ॰—इम करतां हुउं प्रभात, राय भणइ सुणि मुहता वात। ईणि पुरि देवि जईवंत, तेह नी जात्र हुई **बरसंत**। —हीराणद सूरि

बरस–सं. पु. [सं. वर्ष] १ काल-क्रम के ग्रनुसार वह ग्रवधि जिसमें सब ऋतुग्रों की ग्रावृत्ति हो जाती है। बारह महीनों की एक ग्रवधि, वर्ष, साल।

उ॰–१ एता दीह न जाणिया रे, निरगुण जांणी कंत। हिव खिण जातउ **बरस** सउ रे, जाउ मुझ विलवंत। —हीराणद सूरि

उ॰—२ कुंभसुति ते ग्राचमन कीधू, कोटि **बरस** रहु ठालु। ग्रनेकि कुंभि ऊलेचतां ए धरि नही सर चालु। —नळाख्यान

२ किसी संवत्सर की निर्धारित दिन से क्रमशः चलने वाली ग्रवधि।

उ॰—ग्राया वसियां ग्रापणी, ग्रोसम थई वतीत। १७३६ गुण-चाळी लागी **बरस**, चाळी सरस सजीत। —रा. रू.

३ पुराणानुसार सप्त द्वीपों का एक विभाग।

४ भारत वर्ष।

५ बादल।

उ॰—सजै फौज कांठळ घरर घणां निसांण घुर, ग्रनल धूंग्रा रवण रण ऊजाथै। वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा **बरस**, मेरगिर 'गजण' रा तणै माथै। —ग्रजबौ बारहठ

६ एक व्याकरणाचार्य जो पाणिनि का गुरु था।

७ वसुदेव व उपदेवी के पुत्रों में से एक पुत्र।

८ सहस्रार्जुन राजा का पुत्र, एक राजा।

रू. भे.—बरख, बरस, बरिस, बरीस, वरक्ख, वरख, वरसि, वरसी, वरस्स, वरिस, वरिसि, वरीस।

ग्रल्पा.,—बरसड़ौ वरसड़ौ।

बरसकटौ–सं. स्त्री. [सं. वर्ष+कट्य=समूह] १ ऋणी ग्रौर ऋणदाता के मध्य तय होने वाली वह शर्त जिसके ग्रनुसार निश्चित ग्रवधि तक ऋणी की भूमि का उपभोग ऋण दाता कर सकता है।

२ ऋण के ऊपर लगने वाला व्याज या सूद जिसमें व्याज पर भी व्याज जोड़ा जाता हैं।

बरसगांठ–सं. स्त्री. [सं. वर्ष+ग्रन्थि] १ प्रत्येक वर्ष या साल में ग्राने वाला किसी के जन्म का दिन या तिथि, सालगिरह।

२ उक्त दिन को मनाया जाने वाला उत्सव।

रू भे वरसगांठ।

बरसट, बरसठ–सं. पु. [सं. वरिष्ठं] ताम्र, तांबा। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बरसट, वरस्ट।

बरसण–सं. पु [स. वर्षण] बादल, मेघ। (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

वि.—१ बरसने वाला।

२ दानी, दातार।

रू. भे.—बरसण, वरसणी, वरीसण।

बरसणी–सं. स्त्री. [सं. वर्षणि:] १ वृष्टि।

२ व्यवहार, वर्ताव।

३ यज्ञीय कर्म, यज्ञ।

४ क्रिया।

५ एक महाविद्या।

उ॰—ग्राकासगांमिनी सौदांमिनी कांमगांमिनी कांमसांमिनी भुवन-क्षोभिनी कांमरूपिणी मनःस्तंभिनी जलस्तंभिनी ग्राग्नेयी वायवी **बरसणी** कौमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी ग्रवलोकिनी भुजंगिनी············इत्यादि महाविद्या। —व. स.

बरसणो, बरसबो–क्रि. अ. [स. वर्षण] १ बादलों से पानी का बूंदो के रूप में पृथ्वी पर पड़ना, वर्षा होना।

उ० १ यह तन जारौ मसि करू, धूआं जाहि सरग्गि। मुझ प्रिय बद्दल होइ करि, **बरसि** बुझावइ अग्गि। —ढो. मा.

उ०—२ उत्तर गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ **बरसत** जोर। दमकती दांमिनी बहुर भामिनी चमकती निहि ठोर। —वि. कु.

मुहा.— १ आग बरसणी, बहुत तेज धूप होना, कर्कस वाणी निकालना (ऊ. का.) २ दूध रौ मेह बरसणौ=आनन्दोत्सव होना, आनंद ही आनंद होना। ३ पुसपां री बरसा करणी महान कार्य करने पर उसके स्वागतार्थ उस पर फूल उछालना।

२ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिरना।

३ आंखों से लगातार आंसू बहना, अश्रुओं की झड़ी लगना।

४ मुख से मधुर वाणी निकलना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग होना।

उ०—कमला कहउ कि सरसति, **बरसति** अमीरस वाणि। कवणु कुणि किर जावय, पावय मारगपाणि। —जयसेखर सूरि

५ धन या दौलत का चारों ओर से आना, थोड़े से परिश्रम से खूब लाभ होना, अच्छी आमदनी होना।

मुहा.—दूध री बरसा होणी=आनन्द मगल होना।

६ चहरे की कान्ति और ओज का अच्छी तरह से झलकना।

ज्यू—उणरौ चेहरौ नौ अबार बरसै, सिणगार करया पछै तो बात ई छोडो।

७ क्रोध और आवेश के कारण किसी के द्वारा डांटा जाना, फट-कारा जाना।

८ लगातार अस्त्र-शस्त्र प्रहार होना।

उ०—१ अयौ समर सर **बरसतां** अमर नर ऊचरै, आवधां ठेल-फीळा अराणी। पाळि रूपै अवर तूटि पडै, पड्या गमियौ नहीं ताम पाणी। —राव छत्रसाल हाडा रौ गीत

९ तुष्ट मान होना (देने के लिये)

१० दान देना।

बरसणहार, हारौ (हारी), बरसणियौ—वि०।

बरसिओड़ौ, बरसियोड़ौ, बरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरसीजणौ, बरसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

बरसाणौ, बरसाबौ—सक० रू०।

बरखणौ, बरखबौ, बरीसणौ बरीसबौ, बरक्खणौ, बरक्खबौ।

बरखणौ, बरखबौ बर'णौ, बर'बौ, बरीसणौ, बरीसबौ।—रू० भे०।

बरसधर—स. पु. [स. वर्ष-धर] बादल, मेघ।

बरसप, बरसपत, बरसपती—सं. पु. [सं. वर्षप, वर्षपति] वर्ष के अधिपति ग्रह। वह ग्रह जो संवत्सर के वर्ष का अधिपति हो।

(फलित ज्योतिष)

बरसवियांणि, बरसवियांवणी—देखो 'बरसव्यावणी' (रू. भे.)

बरसव्यावणी–सं. स्त्री.—जिसके प्रति वर्ष प्रसव होता हो (प्रायः गाय, भैंस)

रू. भे.—बरसव्यावणी, बरसवियांणी, बरसवियावणी।

बरससत–सं. पु. [सं. शत-वर्ष] सौ वर्ष। (उ. र.)

बरसा–स. स्त्री. [सं. वर्षा] १ बरसने की क्रिया या भाव।

२ आकाश के मेघों से पानी का बरसना, बारिस, बरसात।

उ०–करि पाण सुतांण कमांण कसै। **बरसांण** सरांण तणा बरसै। —सू. प्र.

३ बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।

पर्या.—बरसण, ब्रस्टी।

४ किसी चीज का अधिक मात्रा में ऊपर से गिरना, वृष्टि।

क्रि. प्र.—करणी, होणी।

५ लगातार चलने वाला कोई क्रम, बौछार।

क्रि. प्र.—आणी, पड़णी, होणी।

६ किसी वस्तु की बहुतायत होने की अवस्था।

रू. भे.—बरखा, बरसा, बरिखा, बिरक्खा, बिरखा, वरखा, वरिक्खा, वरिखा।

बरसाऊ–वि. [स. वर्षा+रा. प्र. ऊ] १ बरसने वाला।

२ बरसने योग्य।

३ आभा और कान्ति वाला।

उ०–जोयां घर कर जग, पौहव वीरम जंग पड़ियौ। तद मिळ सळखा तणौ, जग चढनौ जुड़ियौ। कहर बिखौ काढियौ, कमध चूंड काळाऊ। "आलें' जद ओळख्यौ, सही ताळ **बरसाऊ**। मेहवै जाय 'आलो' मिळै, मलीनाथ राखौ मदत। आपणैं गाम चूडो उठै, सुत वीरम रौ तापरत। —राव चूडा रौ छप्पय

रू. भे.—बरसाऊ।

बरसाकरण–स. पु.—इन्द्र।

रू. भे.—बिरखाकरण।

बरसाकाळ–स. पु. [सं. वर्षा-काल] बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु। (उ. र.)

बरसागम–सं. पु. [सं. वर्षा+आगम] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षारंभ।

बरसाणौ, बरसाबौ–क्रि. स.—१ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणों या टुकड़ो के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराना।

२ आंखों से लगातार आंसूं बहाना, अश्रुओं की झड़ी लगाना।

३ मुख से मधुर वाणी निकालना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग करना/कराना।

४ धन या दौलत को चारों ओर से प्राप्त करना, थोड़े से परिश्रम से खूब लाभ कमाना, अच्छी आमदनी करना/कराना।

५ क्रोधवश या आवेश-वश किसी को डाटना, फटकारना।

६ निरन्तर अस्त्र-शस्त्र का प्रहार करना/कराना।

७ खर्च करना/कराना।

८ दान देना, दिलवाना।

बरसाणहार, हारौ (हारी), बरसाणियौ—वि०।

बरसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बरसाईजणौ, बरसाईजबौ—कर्म वा०।

रू. भे.- बरखाणौ, बरखाबौ, बरसाणौ, बरसाबौ बरसावणौ, बरसावबौ, वरीसाणौ, वरीसाबौ।

बरसात—सं. स्त्री. [सं. वर्षा + रा. प्र. त] १ आकाश के मेघों से पानी की वर्षा, जल वृष्टि।

उ०—हरियाळी वांरे वास्तै ई विकसै। वांरे वास्तैई बादळा गरजै, बीजळियां खिवै अर बरसात व्है।

—फुलवाड़ी

२ वह रात या दिन जब वर्षा हो रही हो। (उ. र.)

३ वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

उ० तरै बरसात रा दिन था। कार्च खड़ै पखाळद थको राव धीणोद री पाखती थौ। —नैणसी

रू. भे.—बरसात, बरसाद, बरसायत, बरसाति, बरसाती, बरसायत, वरात।

बरसाति, बरसाती—वि. [सं. वर्षा + रा. प्र. ति. ती.] १ बरसात का. बरसात सम्बन्धी।

२ बरसात की मौसम में होने वाला।

सं. स्त्री.—१ प्लास्टिक या मोमजामे का बना हुआ एक बड़ा कोट जिसको पहनने से शरीर व वस्त्र वर्षा के पानी से भीगने से बच जाते हैं।

२ घोड़ों का एक रोग। (शा. हो)

रू. भे.—बरसाती।

३ देखो 'बरसात' (रू. भे.)

उ०—१ आगलि थी प्रतीहारड़ी, हाथमां सोवन कंब। रिदय कमल विकास हुइ जिम बरसाति कदंब। —नळ दवदती रास

उ०—चद्द सूरय पाखलि कूंडालू थाई छि बरसाति।

—नळाख्यांन

बरसातीबुखार—सं. पु.—वर्षा काल में मच्छरों के काटने से फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमें आरंभ में जाड़ा लगता है, शीत-ज्वर।

बरसाधिप—देखो 'बरसपती'।

बरसाभू—सं. पु. [सं. वर्षाभू] १ मेंढ़क।

२ इन्द्रगोप या बीरबहूटी नामक कीड़ा।

३ रक्त पुनर्नवा।

रू. भे.—बरसाभू।

बरसायत—देखो 'बरसात' (रू. भे.)

उ०—बरसायत आवण की धारी छै, आपकै जावण की त्यारी छै। जमी नीला सिणगार धारसी, 'जसां' सिणगार उतारसी। मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलीगन झणकसी, भमरा भणकसी सीतळ पवन वाजसी, मुधरौ मेह गाजसी —मयारांम दरजी री बात

रू. भे.—बरसायत।

बरसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी पदार्थ को छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ. २ आंखों से लगातार आंसूं बहाया हुआ, अश्रुओं की झड़ी लगाया हुआ. ३ मुख से मधुर वाणी निकाला हुआ, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग किया हुआ. ४ धन या दौलत को चारों ओर से प्राप्त किया हुआ, थोड़े परिश्रम से अधिक लाभ कमाया हुआ, अच्छी आमदनी किया हुआ. ५ क्रोध या आवेश के वशीभूत होकर किसी को डांटा हुआ, फटकारा हुआ. ६ निरन्तर लाठी या अस्त्र-शस्त्र प्रहार किया हुआ, कराया हुआ. ७ खर्च किया हुआ, कराया हुआ. (स्त्री. बरसायोड़ी)

बरसारितु—सं. स्त्री. [सं. वर्षा-ऋतु] वर्षा काल, बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।

रू. भे.—बिरखारत, बरखारत, बरखारित, बरखारिति, बरखारुत, बरखारुति, बरिखारित, बरिखारितु, बरिखारुत, बरिखारुति।

बरसाळ, बरसाल—सं. स्त्री. [सं. वर्षा + आलुच्] १ वर्षा, वृष्टि, बारिस।

उ०—१ खाळ रत्त खळहळै जांण बरसाळ नदी जळ। गज तुरंग गुड़िया, गुडै भड हुवा गूंछळ। —गु. रू. बं.

उ०—२ तोपूं का जंजीरा चौतरफ फेरे। दोऊ तरफ दगी तोपूं अताळ। झालूंका झलहळ गोळूं का बरसाळ। धोमूं का अंधार।

—सू. प्र.

२ वर्षा ऋतु।

रू. भे.—बरसाळ, बरसाळा, बरसाळा, बरसाला।

बरसाळइ, बरसालउ—देखो 'बरसाळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—मीम्रालइ जल-मांहि मरि, उन्हालइ पचागि । बरसालइ वणइ वमइ, कांमकंदला-कांमि । —मां. कां. प्र.

बरसाळा, बरसाला—देखो 'बरसाळ' (रू. भे.)

उ०—**बरसाला** ऋतु गोहामणी, जलधर वरसइ मेह । कदब रूडा वन वांहसीइ, विरहीम्रा जागइ नेह । —नळदवदती रास

बरसाळी—वि [स. वर्षा + म्रालुच्] १ वर्षात का, वर्षा सम्बन्धी ।

२ वर्षात की मोसम में होने वाला ।

सं. स्त्री.—१ वर्षात के मोसम की फसल, खरीफ की फसल ।

उ०—उदैपुर री हवेली रा गाव नजीक निगरो हैसो भोगरो बरसाली हैंगो ३ लाग सूधो म्राधा उनाळी हैंसो ३ म्राध पड़ै । —नैणसी

२ उक्त उपज का मुम्रावजा, हिस्सा, भाग, म्रंश ।

उ०—दौलताबाद रो हुकम म्रायो सु स्रीजी पोस बद३ म्रसवार हुवा तद गुजरात रा परगना री बरसाळी म्रीजी नु दिराई । —नैणसी

३ देखो 'बारसालो' (रू. भे)

रू. भे.—बरसाळी, बरसी ।

बरसाळु, बरसाळू—वि —१ जो बरसने की स्थिति में हो, बरसने योग्य ।

२ जो बरसता हो, बरसने वाला ।

उ०—मोरी तो भीजे ढोला गांग्यड़े जी, कोई म्रालीजो भीजै, म्रालीजो भीजै फोजां माय, हाजी ढोला मांय, म्रब घर म्रायजा, बरसाळू बादळा हो जी । —लो. गी,

३ वर्षा ऋतु सम्बन्धी ।

४ उक्त ऋतु की फसल के लिये चलने वाला (व्यक्ति, हळ)

उ०—कसबै सोजन हळ २०१ दरबार हामलीक बरसाळू जुपै छै । —सोजत रै मडळ री बात

सं. स्त्री.—१ वर्षा, बारिस ।

उ०—मोतिया री लड़िया उची सोवै बुगला विमाळ, रसराज पिया पपिया रै कारण म्राई बरसाळू । —लो. गी

२ वर्षात की मोसम।

३ उक्त मोसम मे होने वाली फसल, खरीफ ।

४ उक्त मोसम में होने वाला बुखार, विषमज्वर ।

रू. भे.—बरसाळू ।

बरसाळे—क्रि. वि —वर्षा ऋतु मे ।

उ०—सुदर स्यांम सरीर, बाघो कट राम पीत पीतबर । काळै बादळ मूं कै, वीटाणी बीज बरसाळै । —र. ज. प्र.

बरसाळो—स. पु [स वर्षा + म्रालुच] १ वर्षा ऋतु, बरसा का मोसम ।

उ०—१ ऊनाळो उतरियो, बरसाळो उतरियो, सीयाळो म्रायो । —नैणसी

उ०—२ बरसा छूट गोळिया बाळै, वणियो मेघ जांण बरसाळै । समड़ै मुड़ै मुड़ै समडावै, म्रसुर सजोस रोस उफणावै । —रा. रू.

२ वर्षा ऋतु के चार मास की म्रवधि, चातुर्मास ।

३ वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

वि.—बरसने वाला, बरसने योग्य ।

रू. भे.—बरसाळो, बरसाळइ, बरसाळउ ।

बरसावरस, बरसावरसी—सं. पु. [सं. वर्ष + वर्ष] प्रति वर्ष, हर साल ।

उ०—१ सीदो उदियासिंघ सूं कीधो रांम करार । सोभत लो बरसावरस, रुपिया सात हजार । —रा. रू.

उ०—२ पछै जांम बात कर मेळ कियो । घोड़ा ५ जांम दिया । घोड़ा १० री जमे म्रागे की, सु बरसावरस दे । म्राय मिळियो । म्रमीखान दिसिया कह्यो-मार ल्यो, थांहरो गुनेगार छै । हमैं घोड़ा ६० बरसावरस दे छै । —नैणसी

रू. भे.—बरसाबरस, बरसावरसी ।

बर्रास—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—कां कलपांत ज म्रादरइ ? गूझ कहूं गुण-रेख । इणि घटि माधव मेलवसि, बरसि दीह विसेखि । —मा. कां. प्र.

बरसिंघ—सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बा. दा. ख्यात)

रू. भे.—बरसिंघ, बरसिह, बरसिंह ।

बरसि —१ देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ० कान्हडदेवि कही परि घणी, किसी बात समोयाणा तणी । केहउ गरव तुम्हे मनि धरउ, सात वरसि लीधउ डुंगरउ । —कां. दे. प्र.

२ देखो 'वरसो' (रू. भे.)

बरसिण—देखो 'बरसण' (रू. भे.)

बरसियोड़ो—भू. का कृ.—१ बूंदों के रूप में पृथ्वी पर पड़ा हुम्रा. (पानी) २ बादलों के पानी की तरह छोटे-छोटे कणों के रूप में गिरा हुम्रा. (कोई पदार्थ) ३ म्रांखो से बहा हुम्रा. (म्रांसू) ४ मधुर वाणी निकला हुम्रा, मधुर भाषित. ५ चारों म्रोर से म्राया हुम्रा, थोड़े परिश्रम से मिला हुम्रा. (धन, लाभ) ६ म्रच्छी तरह से झलकित (कान्ती) ७ किसी को किसी के द्वारा डांटा जाना, फटकारा जाना. ८ म्रस्त्र-शस्त्र प्रहार हुवा हुम्रा, म्रस्त्र-शस्त्र प्रहारित । ९ दान दिया हुम्रा ।

(स्त्री. बरसियोडी)

बरसींघोत—देखो 'वरसिंघ' (रू. भे.)

बरसी—सं. स्त्री. [सं. वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति के पीछे किया जाने वाला प्रथम वार्षिक श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन, दान-पुण्यादि ।

उ०—तद फूलमती कहीं- राजा जो तूं मोनुं हाथ लगायो तो हूं पण मरीस अर तनेंई मारीस । अर एक वरस तांई हर हेके हूं जदेह महल रहीम एतै वरस दिन तांई पुन्य कर कुंवर री वरसी कर पछै थारै ढोलीयै आईस इतरै मनें छेड़े मती । —चौबोली

२ मृत व्यक्ति के पीछे प्रति वर्ष मृत्यु के दिन किया जाने वाला श्राद्ध, ब्राह्मन भोजन, दान ।

३ प्रति वर्ष आने वाली मृतक की मृत्यु तिथि ।

४ द्वादशी तिथि ।

५ देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—रिसभदेव वरसी तप कीधउ, छमासी कीधउ वरधमांन । —स. कु.

रू. भे.—बरसी, वरसि ।

सूवलिया–सं. स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा ।

सेस–सं. पु. [सं. वर्ष+ईश] किसी सवत्सर के किसी वर्ष का अधिपति ग्रह । (फलित ज्योतिष)

सोत, वरसोद–स. स्त्री. [स. वार्षिक वर्षोत्थ, वर्षोदय] १ किसी कार्य के बदले दिया जाने वाला वार्षिक वेतन, साल भर की मजदूरी जो एक साथ दी जाती है ।

उ०—इयै नै म्हां चाकर राखियौ छै, अो कहै छै-मनै साहूकारां कन्हा वरसोद कराय देवो, पछै चोरी काई हुवण देऊ नहीं । —राजा भोज व खाफरा चोर री वात

२ राजा या शासक को प्रति वर्ष भेंट के रूप में दिया जाने वाला लगान, कर ।

उ०—पूनियै रै परगने में हळगणात-आवै । डीडवाणे रा साहूकारां री वरसोत आवै । परबतसर चौरासी मारोठ री दाळ आवै और च्यारूं पासा रो माल खायजै । —सूरे खींवै कांधलोत री वात

३ प्रति वर्ष दी जाने वाली सहायता, अनुदान ।

४ वार्षिक पुरस्कार ।

उ०—बारोटो,देण री, कवल पैला तें कीधो । वचन करे वरसोद,रुकौ हाथां लिख दीधो । रुपीया दोय हजार, धांन मण तीन हजारां,ज्याज पाप री जेम, खोय पीदै जळ धारां । —अरजुनजी बारहठ

रू. भे.—बरसोंद, बरसोद, वरुद, वरुध, वरोद, वरोत्र ।

सोदण–वि. स्त्री. [सं. वर्षोदयन] १ जो प्रति वर्ष फल दायिनी हो । जो प्रति वर्ष फल देने के लिये आती हो ।

उ०—ल्यावणवाळां ने लिचपिच लापसी, जी क काटणवाळां ने गुडळी खीर । ओ क वरसै वरसोदण होळी पावणी जे । —लो. गी.

२ वर्ष भर निभने वाली, वर्ष भर चलने वाली ।

३ प्रति वर्ष उत्थान या उन्नति करने वाली ।

रू. भे.—बरसोदण ।

वरसोदियो, वरसोदीयो–वि. [सं. वर्षोदयन] (स्त्री. वरसोदण) १ प्रति वर्ष प्राप्त होने वाला ।

२ प्रति वर्ष उन्नति देने वाला ।

३ वर्ष भर तक मौजूद रहने वाला, निभने वाला, चलने वाला ।

४ प्रति वर्ष आने वाला ।

रू. भे.—बरसोंदियो, बरसोदियो, बरसोदीयो ।

अल्पा.—बरसोदो ।

वरसोदी–वि.—प्रति वर्ष ।

अल्पा.—बरसोड़ी ।

वरसोळो–स. पु. [स. वर्षोपलः] १ वर्षा की बूंदों के साथ गिरने वाला छोटा हिम खण्ड, ओला । (उ. र.)

२ एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

३ बढ़ई का लकड़ी छीलने का एक उपकरण, औजार ।

रू. भे.—बरसोळो, बरसोलो ।

वरसोह–स. पु.—[सं. वर्ष्मन्] विवाह के समय दूल्हा व दुल्हन के चेहरे तथा शरीर पर आने वाली आभा या कान्ती ।

उ०—करियरि ककण सुकरि, नैत्र बाधो सिखराळह । वीररस्स वरसोह, कंठ लज्जी वरमाळह । विकट रूप वींदणी, सुरम घड कीध आडंबर । लगन अब्ब रणताळ, घमळ-मंगळ सिघू-सुर । घघपति बहूतरि ऊमरा, सतरि खांन सुरतांण रा । दळ-थंभ 'गजण' दुल्लह हुओ, जान सेन जोगणपुरा । —गु. रू. बं.

वि. वि.—देखो 'सोळो' (१)

रू. भे.—वरस्सोह ।

वरस्ट—देखो 'वरसट' (रू. भे.) (अ. मा.)

वरस्वरग–स. पु.—१ मुक्ति । (अ. मा.)

२ जीना ।

३ निश्रेणी ।

वरस्स—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—आयो जाळंधर 'अजो' सुख ऊपनो सरस्स । सुज तिण ऊपर संपनो, पंचावनो वरस्स । —रा. रू.

वरस्सोह—देखो 'वरसोह' (रू. भे.)

उ०—तुरां तोखै मेलवा लोह तातो । मरेवा तणी होड री कोड मातो । वरस्सोह वध्धावळे आक आडो, लखै थाट जांनी हुओ 'भीम' लाडो । —गु. रू. बं.

वरह–स. पु. [सं. बर्ह] १ मोर की पंख ।

२ मोर की पूंछ का चंदोवा ।

३ पक्षी की पूँछ ।

४ पत्र, पत्ता (ग्र. मा.)

५ ग्रनुचर वर्ग ।

६ देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—बरह दावानल ग्राकुली, सखी प्रिय प्रिय भाखइ रे । भाखइ मइ दाखइ, कत किहां गयु ए । —छन दवदती रास

रू. भे.—बरह, बरहुण ।

बरहुण - १ देखो 'बरह' (रू. भे.) (ना. मा.)

२ देखो 'विरहण' (रू. भे.)

बरहमुख—सं. पु. [स. वहिमुख] देवता, देव (ह. नां. मा.)

मि.—ग्रग्नि-मुख ।

बरहार—सं. पु.—एक प्राचीन देश ।

उ०—पचाल गोरत्रर नागद्रह ऊच बरहार मथुरा ग्रवध्या वणारसी चदेरी । व. स.

बरहास—स. पु. [सं. वर+भास] १ घोड़ा, ग्रश्व । (ह. नां. मा.)

उ०—१ बरहास दौड़ै वेगला, किरि खडे नभ उर मडळा । दुह दुमस धम धम है-खुरां, वाजंत धम-धम पाखरां । —गु. रू. बं.

उ०—२ बरहास नास चाचर विसेरि, फारक्का जेम ग्रसि, फिरइ फेरि । ग्रासिरा तणउ ऊजळ इ ग्रासि, वेताळि केल्हु चडियउ ब्रहासि । —रा. ज. सी.

२ ऊंट, उष्ट्र ।

उ०—१ कमळा किया कतार, भर बुडी तंग मार । लेह देह छोडोजे लास, विलोहणै बरहास । —गु. रू. बं.

उ०—२ ढोलौ कहै म सांहणी, वाळो ग्रंतुळ ग्रास । सांभै पुंगळ पुजवै, कोई एहडौ बरहास । —ढो. मा.

रू. भे.—बरहास, बरास, ब्रहास, ग्रहास, वरास, व्रहास ।

बर्हि, बरही—देखो 'बरही' (रू. भे.)

उ०— कोकल परियां गांन घणकिया, ग्रीधां भमर भणंकिया गाढ़ । बरही कपण ढणकिया चहुंवळ, विविध सुबास खणकिया वाढ । —राव चापा रो गीत

बरहीवाह—सं. पु. [सं. वर्हो-वाह] स्वामी कार्त्तिकेय । (नां. मा.)

बरहु—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—बार घडी जीणइ उघउ लीध, बार वरस तीणइ बरहु कीध । पुत्र राजि बइसारी करी, नल दवदती संयम वरी । —नळ दवदती रास

बरांग—स. पु. [स. वर+ग्रंग:,] १ हाथी ।

[सं. वर+ग्रंगम्] २ सिर, मस्तक ।

३ सुडौल शरीर ।

४ विष्णु जिन के सब ग्रंग श्रेष्ठ माने गये हैं ।

५ ३२४ दिनों का एक नक्षत्र वत्सर ।

६ दाल चीनी ।

७ वृक्ष की शाखा, टहनी ।

८ गुदा ।

९ भग, योनी ।

वि. [सं. वर+ग्रंगी] १ सुन्दर ग्रंगों वाला ।

२ उत्तम, ग्रवयव ।

रू. भे.— बरंग, वर-ग्रग, वरंग, वरांगी ।

बरांगना—देखो 'वारगना' (रू. भे.)

बरांगी—सं. स्त्री. [सं. वर+ग्रंगी] १ हल्दी ।

२ मजीठ ।

३ देखो बरांग' (रू. भे.)

बरांसइ, बरांसउ, बरांसिउ, बरांसीयइ—वि. [सं. विपर्यस्त] १ परि-वर्तित, बदला हुग्रा । (उ. र.)

२ भ्रामक ।

सं. पु.—१ ग्रभाव, ग्रनस्तित्व ।

उ०—फरस रांम ग्रापणी माइ तणउ सिर-कमल छेदइ । माघ जेवडौ विद्वांस पग सूजि भूखि मूउ, नागारजुन स सिद्धि पूठिउ, गांगेय जेवडौ सुभट पुत्र नइ बरांसइ पडइ । —व. स.

२ प्रतिकूलता, उलटापन, विरुद्धता । (उ. र.)

३ ग्रदल-बदल, उलट-पलट । (उ. र.)

बरा—सं. स्त्री. [स.] १ पार्बती । २ लक्ष्मी । ३ हल्दी । ४ त्रिफला । ५ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य । ६ ब्राह्मीबूंटि । ७ मजीठ । ८ मदिरा, शराब । ९ गुड़च । १० विडग । ११ चित्रकला १२ मेदा ।

बराक—वि. [स. वराक] १ तुच्छ, नगण्य ।

उ०—काट जिकां कुळ ऊबटै, ग्राठ-वाट इतफाक । वां सबळां ही पुरसड़ा, वैरी गिणै बराक । —बां. दा.

२ नीच, पामर, हीन ।

३ ग्रभागा, दीन, गरीब, बेचारा ।

स. पु. [सं. वराकः] १ शिव महादेव ।

२ युद्ध, लड़ाई ।

३ पापड़, पर्पट ।

४ दूध भरने से उभरे हुए स्तन ।

५ योनि । (पशु)

६ बगला ।

रू. भे.—वराक ।

बराड़—सं. पु. [सं. बरठ्ठर] १ बिचार।

२ चंदा।

उ०—त्रिणज हुग्रौ बिछड़ती वेळा, बळीयौ कर ग्रापरौ बराड़। बिणज करै केईक बावड़िया, गया कतायक मूळ गमाड़।
—ग्रोपौ ग्राढौ

३ देखो 'बराड़' (रू. भे.)

बराड़णौ बराड़बौ—देखो 'बराणौ, बराबौ' (रू. भे.)

बराड़णहार, हारौ, (हारी), बराड़णियौ—वि०।

बराड़िग्रोड़ौ, बराड़ियोड़ौ, बराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बराड़ीजणौ, बराड़ीजबौ—कर्म वा०।

बराचक, बराचख, बराछक—देखो 'बराछक' (रू. भे.)

उ०—हुवा रण छेह हठै न हनोज, कटै हथणापुर ग्रौर कनोज। ग्रणी सिर नांखत खेग ग्रमीर, बराचख जूझत पाबूग्र वीर।
—पा. प्र.

बराट बराटक—सं. पु. [सं] १ कौड़ी।

२ रस्सी, डोरी।

३ कमलगट्टा।

रू. भे.—बराट, बराटक।

बराटिका—सं. स्त्री. [सं.] १ कौड़ी।

२ तुच्छ वस्तु।

बराणौ, बराबौ—क्रि. स. ["वरणौ" क्रि. का प्रे. रू.] १ विवाह के लिये चुनकर वरण कराना, ग्रंगीकार कराना, शादी कराना।

२ चुनवाना, पसंद करवाना।

३ स्वीकार कराना, मनवाना।

४ निगलवाना, खिलाना।

५ वरदान दिलाना, ग्राशीर्वाद दिलाना।

६ याचना करवाना।

बराणहार, हारौ (हारी), बराणियौ—वि०।

बरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बराईजणौ, बराईजबौ—कर्म वा०।

बराड़णौ, बराड़बौ—रू० भे०।

बरात—देखो 'बरात' (रू. भे.)

उ०—'पाल' रौ बरातौ वरन पाल, संभरी हाथ ग्रहियां चडाल। बाचत खत ग्रायौ वडे वेव, दाखूं बरात मझ गोगदेव। —पा. प्र.

बरात—देखो 'बरसात' (रू. भे.) (डूंगरपुर)

बराती—देखो 'बराती' (रू. भे.)

उ०—'पाल' रौ बरातौ वरन पाल, संभरी हाथ ग्रहियां चडाळ। बाचत खत ग्रायौ वडे वेव, दाखूं बरात मझ गोगदेव।
—पा. प्र.

उ०—२ कोई तावड़ियै बळैं या जान-बरातियां। —लो. गी.

बरापूर—देखो 'बरापूर' (रू. भे.)

उ०—मिळै जैत माळा मुदी वैल माळा। बरापूर सूरां बजा संगि माळा। ग्रणी सांमि ग्रागै हसै कांम हूंदा, बणै ऊहड़े बंकड़ा क्रीत बिंदा।
—रा. रू.

बरारक—स. पु. [स. वरारकं] हीरा।

रू. भे.—बरारक।

बराळ, बराल—सं. पु. [स. वाष्प+राज. राळ] १ ग्रग्नि की लपट

उ०—धुबि झाळ बराळ पुरा धूंबाड़े, ज्वाळ कराळ बिसाळ जळै। इक सूर लड़ै रिण चूर हुवै, ग्ररि पूर घकै इक सूर पुळै।
—रा. रू.

२ बाष्प।

३ तीव्र उष्णता।

रू. भे.—बरळ, बराळ।

[सं. वराळः, वरलका] ४ लौंग, लवंग।

बरावणौ, बरावबौ—देखो 'बराणौ, बराबौ' (रू. भे.)

उ०—समोभ्रम 'मांडण' दारुण सूर। हुठी खळ मीर बरावत हूर।
—सू. प्र.

बरावणहार, हारौ (हारी), बरावणियौ—वि०।

बराविग्रोड़ौ, बरावियोड़ौ, बराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरावीजणौ, बरावीजबौ—कर्म वा०।

बरास—देखो 'बरहास' (रू. भे.)

उ०—बैराड़ देस रा के बरास, हालता झांप भरता हुबास। पींडा-स चाक ग्रर तन प्रचंड, हरडा स बाज ताजी हुसंड। —पे. रू.

बरासन—सं. पु. [सं. वर+ग्रासन] १ उच्च व श्रेष्ठ ग्रासन।

२ वर के बैठने का ग्रा ग्रासन। (विवाह)

३ दरबान।

४ ग्रड़हुल।

५ नपुंसक।

बराह—सं. पु. [सं.] १ शूकर, सूग्रर।

उ०—१ केहर रै हाथळ करी, कोघी दांत बराह। सूर काज कीधौ सुजड़, विध करतापण वाह।
—बां. दा.

उ०—२ केताएक दिन पीछै वीसल महाराज कुमार सिकार गया। तहां एक बराह रौ पीछौ कियौ। संग छीछुड़ियौ। ग्रकेला दूर गया।
—सिंघासण बत्तीसी

२ विष्णु के दश अवतारों में से तीसरा अवतार।

उ०—सिर हल्लिय अध गेम, हहर चित्त कछप हल्लिय। हल्लिय दाढ बराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय। —र. ज. प्र.

३ मेढा।

४ सांड।

५ बादल।

६ युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।

७ अष्टादश पुराणों में से एक।

८ शूकर के रूप का व्यूह।

९ घड़ियाल, नक्र, मगर।

१० एक प्राचीनपर्वत।

११ वाराही कन्द।

रू. भे.—बराह, बाराह, बराहउ वराहै, बरांहा, वारा, वाराह, वाराहउं, वाराहर।

बराहउ—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—जइ सूकी तउद वउलसिरी, जइ वोधी तउ मोतिसिरी, जउ भागउं तउ बराहउं, जइ थाकउं, तउइ सोराहउं, जइ खांडउ तउ चंद। —व. स.

बराहक—सं. पु. [सं.] १ कुबेर सभा में उपस्थित एक यक्ष।

२ धृत राष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ था।

बराहजयंती—सं. स्त्री.—भादो सुदि तृतीया की तिथि।

बराहजी—सं. पु. [सं. वराह+रा प्र. जी.] १ विष्णु का वराह अवतार।

२ देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—भीनमाल नगर रतन महेसदासोत रैं समैं स्वप्न दे नै स्री बराहजी प्रथी बाहर आया। —बां. दा. ख्यात

बराहदूहो—सं. पु.—दूहा नामक छंद का एक भेद जिसमें २१ गुरु व ६ लघु होते हैं। इसको भ्रामर या सुभ्रामर भी कहते हैं।

उ०—विस्व दुगण मुनि कहि वरण, रस मुनि त्रिगुण रहोइ। नांम बराह सु छंद वद, जिण फिरि लघु गुर जोइ। —पि. प्र.

बराहमिहिर—सं पु. [सं.] बृहत्संहिता, पंच सिद्धांतिका और बृहज्जातक नामक ग्रंथों के रचयिता ज्योतिष के प्रधान आचार्य।

रू. भे.—बराह मिहिर।

बराहमोती—सं. पु. [सं. वराह+मौक्तिक] एक प्रकार का मोती जो सूअर के मस्तक में से निकलता है।

बराहसंहिता—सं. पु.—बराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्संहिता नामक ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रंथ।

बराहावतार सं. पु. [सं] विष्णु का तीसरा अवतार जो हिरण्याक्ष नामक असुर का वध करने के लिये हुआ था।

रू. भे.—बाराहावतार, वाराहावतार।

बराही—देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—देवी नारसिंघी बराही विख्याता, देवी इळा आधार आसूर हाता। —देवि

बरि—क्रि. वि. [सं. उपरि] १ ऊपर, पर।

उ०—१ कठि निगोदर अवसर नवसर उर बरि हार। कंचण कंकण चूडिय रूडिय बाहु सगार। —जयसेखर सूरि

उ०—२ अणियाळा नयण बांण अणियाळा, सजि कुंडळ खुरसांण सिरि। वळे बाढ़ दे सिळी सिळी बरि, काजळ जळ वाळियो किरि। —वेलि

२ फिर, पुनः बाद में।

वि.—१ समान, अनुरूप।

उ०—वदन कळा सोळह सिसहर बरि, कोमळ वप्प वरन्नी केसरि। वांमा अग वणी वर सुंदरि, कनकलता जांणे कळप्पतरि। —गु. रू. बं.

सं. स्त्री.—तरह, भांति।

उ०—१ संसव तनि सुम्पति जोवण न जाग्रति, वेस सधि सुहिणा सु बरि। हिव पल-पल चढती जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि। —वेलि

उ०—२ मावीत्र अजाद मेटि बोलै मुखि, सुवर न की सिसुपाळ सरि। प्रंति प्रंबु कोपि कुंवर ऊफणियौ, वरसाळू वाहळा बरि। —वेलि

देखो 'वरी' (रू. भे.)

रू. भे—वरि।

बरिग्रांन—सं. पु.—१ एक वर्ण वृत्त जिसमें प्रथम एक दीर्घ, फिर चार ह्रस्व वर्णों के क्रम को तीन बार रखकर अंत में गुरु लघु कुल सत्रह वर्ण होते हैं। —ल. पि.

२ देखो 'वरियाण' (रू. भे.)

३ देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

बरिग्राम—देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

उ०—'प्राग'हर मोटा प्राक्रम जाचणा बगसणौ जगम। अलविषण हीदू ओपम वीरवर बरिआंम। —ल. पि.

बरिखा, बरिखा—देखो 'वरसा' (रू. भे.)

उ०—१ प्रजा राज आणद पूगी परखा। वधं देवतां कीध फूलां बरिखा। —सू. प्र.

बरिखारित, बरिखारितु, बरिखारुत, बरिखारुति—देखो 'वरसारितु' (रू. भे.)

उ०—१ दसराहा लग भी रहयउ, मालवणी री प्रीत । वरिखारति पाछी वळी, आवी सरद सुचीत । —ढो. मा.

उ०—२ ग्रीष वाविग वीरघंटा दादुर बोलै, मुगळ लाल ममोला सा निजरि आवै । वरिखारित वरणी । सरदरित कहणी । —वचनिका

वरिट्ठ—देखो 'वरिस्ठ' (रू. भे.)

उ०—आणंद वरत्या हुया उच्छव, वसुह मांहि वरिट्ठ अो । सो गुरु स्रीजिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठ अो । —स. कु.

वरियण—सं. स्त्री. पृथ्वी, भूमि । (डिं. नां. मा.)

वरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ समभाय एक वरियां सकाज, रण हतां असुर बैनीत-राज —शि. रू.

उ०—२ नून चाहजै सो पद सो नहि, पद निकमो है अधिक पद । पद इक द्वै वरियां सु कथित पद, हव सुण पतत प्रकरस हद । —बां. दा.

वरियांण—सं. पु. [सं. वरियाण] १ ज्योतिष के २७ योगों में से अठारवें योग का नाम । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—वरिआंण, बरीयांण ।

२ देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

वरियांम—वि. [सं. वरेण्य या वरीयस्] १ श्रेष्ठ, उत्तम, शिरोमणि, सर्वोत्तम ।

उ०—१ सहकोय साजत करो सुभडां, विरद भल वरियांम । कुळ जनक कुमरी व्याह करसी, रिघू वरसी रांम । —र. रू.

उ०—२ अखरतो मदां करवा अचडां, वैर बाराह कमंध वरियांम । आअै दळै सांमहो आयो, रूक भुगत करवा बळरांम । —बळरांम राठोड़ रो गीत

उ०—३ चडं वेल वरियांम, सुजळ ते आगळ चचळ । गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर त्रबागळ । —गु. रू. बं

२ प्रवीण, चतुर ।

३ वरण करने योग्य ।

उ०—"आसकन्न" वडो एकाधपत्ति, नींबउत्त नमो आतम सकत्ति । ओपमा करन्नं अणं-नींद, वरियांम कुंआरो घडा-वींद, । —गु. रू. बं.

४ सुन्दर, रूपवान ।

उ०—१ वरियांम लगांण पलांण बणावो, एस उपाडै ऊकडता । परचंड हुसंड किया तहि पक्खर, अंबर सांमां ऊछळता । —गु. रू. बं.

उ०—२ निज कौसल्य केकइ सुमित्रा नांम । वरियांम तणै प्रति हेत वांम । दसरत्थ विमै इम नजर दीध । कांमना पुत्र घरि जिवन कीध । —सू. प्र.

उ०—३ सिणधारी सन्नाह सूं, बिसकांमिणि वरियांम । वरिआई हाला वरण, करण महाजुध कांम । —हा. झा.

५ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—१ ऐ वरियांम निहत्तिया, दोय घड़ी इक जाम । "अजबो" वीठळदास रो, पड़ियो खेत दुगांम । —रा. रू.

उ०—२ सनमुख साह निविद्धियो, कीधो नारद कांम । कळि कमी रट्ठौड हर, मरसी के वरियांम । —गु. रू. बं.

उ०—३ 'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि । मुळकियो मच्छरि वण रोस मज्झि, कमधज कहै कर घूणि तेग । वरियांम विडगां चडो वेग । —गु. रू. बं.

६ जोरावर, जबरदस्त ।

उ०—१ आरब मारघो 'अमरसी,' वड हथ्थै वरियांम । हठ कर खेडै हारणी, कमंधज आयो कांम । —द. दा.

उ०—२ राजकुळी वंस छतीसेइ रावतं, वीरति वंका वरियांम । मारूधर सांम तणै छळि मिळिया, करण कणैगिरि संग्रांम । —गु. रू. बं

७ प्रमुख, मुख्य ।

उ०—१ रहच खळा दळ रोळणा, वीर उभै वरियांम । 'किचनर' 'पातल' रै करां, लंदन तणी लगांम । —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ सू किसा-एक सरदार जुवांन छै ? पाकां पाकां वरियांम नूं, अजरायला नूं खीवरा नूं डांण हुलां, डाकिया नूं ।—रा. सा. सं.

सं. पु.—मन्त्री, वजीर । (डिं. नां. मा.)

रू. भे.—बरयांम, बरियांम, बरीयांम, बारियांम, बारीयांम, वरिआंम वरीआंम, वरीयान, वरीयांम ।

वरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विवाह के लिये चुना हुआ, वरण किया हुआ, अंगीकार किया हुआ, शादी किया हुआ. २ पसंद किया हुआ, चुना हुआ. ३ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. ४ निगला हुआ, खाया हुआ. ५ वरदान दिया हुआ, आशीर्वाद दिया हुआ. ६ मांगा हुआ, याचना किया हुआ ।

(स्त्री. वरियोड़ी)

वरियोवेस—सं. पु.—राठौड़ों की प्रसिद्ध तेरह शाखाओं में से एक । (बां. दा. ख्यात)

वरियौ—देखो 'बड़ियौ' (रू. भे.)

वरिस—देखो 'वरस' (रू. भे.)

वरिसणौ, वरिसबौ—१ देखो 'वरणौ, वरबौ' (रू. भे.)

उ०—इक भव अथवा दोइ भव अनरै रे, वरिस्यो सिवगति नार।
—वि. कु.

२ देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू भे.)

बरिसि—देखो 'वरस' (रू भे.)

उ०—आर बरिसि गोदावरी, ग्रेहवौ ग्रेह जिवार। हूंम हवड छांडद नही, गुण केहा गमार। —मा. कां प्र.

बरिसियोड़ौ—१ देखो 'वरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बरिसियोड़ी)

बरिस्ठ-वि. [स वरिष्ठ] १ श्रेष्ठ, उत्तम, उच्च।

उ०—मिथ्या मंनण मती कर मन तूं, सत् विचार उर धरना। वर बरीयान बरिस्ठ पदवी, पोथा सोई तिरना।
—स्रीसुखरांम जी महाराज

२ पूजनीय, पूज्य।
३ पुराना, बुजुर्ग।
४ तुलना मे किसी से बढ़कर।
५ सबसे बड़ा।
६ सब से अधिक लंबा।
७ सबसे अधिक भारी।
स. पु. [सं. वरिष्ठः] १ तित्तिर या तीतर पक्षी।
२ नारंगी का पेड़।
[सं. वरिष्ठं] ३ ताम्र, तांबा।
४ मिर्च।
५ चाक्षुप मनु के पुत्रो में से एक।
६ स्वर्म सावर्णि मन्वतरों के सप्त ऋषियों में से एक।
७ उत्तमम ऋषि का एक नाम।
रू. भे.—बरिट्ठ, बरिस्ठ, वरिट्ठ।

बरी—स. स्त्री.[सं] १ सूर्य पत्नी छाया का नाम।

२ शतावरी का पोधा।
३ विवाह के समय वर पक्ष की ओर से बधू के लिये भेजी जाने वाली विशेष पोशाक।
४ दुल्हे व दुल्हिन की पोशाक।
५ कुए मे पानी निकालने की छोटी रस्सी।
देखो 'वार' (रू. भे)

उ०—उडै पग हात किरका हुवै अग रा, वहै रत जेम सांवण बहाळा आप आपो बरी जोयनै आड़िया, लड़ै रिण भल-भला निराताळा
—र. रू.

रू. भे.—बरी, वरि, भरो।

बरीयांम—देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

उ०—इण भांति री घघळी तजारो, वांघळीतजारो सो किणनूं जी पाका पाका बरीआंमां जोधारां करड़दंता।
—रा. सा. सं.

बरीयां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ दुपहरा की बरीयां ग्रेसो बीजण होय गयो छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै कैसी भांति जैसी माह की राति होय।
—बेलि टी.

उ०—२ तद राजा कहि साबास आहीज आहीज बरीयां ले आवौ।
—चौबोली

बरीयांण—१ देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

२ देखो 'वरियांण' (रू. भे.)

बरीयांन, बरीयांम—देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

उ०—मिथ्या मंनण मती कर मन तूं, सत् विचार उर धरना। वर बरीयान वरिष्ट पदवी, पोथा सोई तिरना।
—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ बंस विसुद्ध बरीयांम सांम्हौ विढण। घणा दिसि दोइणौ म्हांलियो विरद घण। —हा. झा.

उ०—३ 'पाल' हरा काळ रूपी बीज जिही खीज बडै, अडै भुजा भला गो इसो बरीयांम। —मारवाड रा अमरावां री वारता

बरीस—सं. पु. [सं. वारि+ईश] १ समुद्र, सागर।

उ०—'भीम' भांण सारीख, 'करन' सिवदांन सरीसा। जोधा छळ जोधांण, बोल दळ वेळ बरीसा। --रा. रू.
२ देखो 'वरीसण' (रू. भे.)

उ०—१ वीस च्यार धुर वरणवौ, सुख बरीस ससार प्रथवी सीस पचीसमौ, ईस 'पतौ' अवतार। —जैतदांन बारहठ

उ० --२ माहण समद सेन मीमोदा, गांगा तौमूं रांम रिम। अरथ बरीस करै सिर ऊपर, कळह वरीम न करै किम।
—महरांणा कुंभा मोकळोत री गीत

उ०—३ गढपत्ती मांमण गजां, आपण लाख पसाव। अभो प्रतप्पो कोटि जुग, कोडि बरीस सुभाव। रा. रू.

उ०—४ बिरुदावली हसती बरीस अवनीस, लाख मांसण कोडि वरीस। अडड डडण अगंजी गंजण, अनमी असून नाहि नमी भूत करण। —रा रू.

३ देखो 'वरस' (रू भे.)
उ०—१ जोड़ विराजै वर तरुणि, मोड़ विराजै सीस। कव आसीसै लोड़ घन, जीवौ कोड़ बरीस। —रा. रू.
उ०—२ राजा तुम्ह रहुं हजो, हम गाहरी आसीस। परिकर सहू परिवार-मिउं, जीवै कोडि बरीस। —मा. का प्र.
रू. भे.—बरीस।

बरीसण, बरीसणौ—वि. [सं. वर्षणम्] १ दान देने वाला, दातार, उदार-चित्त।

उ०—१ लख धीर वडो लख लूट बणी वपि लाज, वड चीत **बरीसण** बाज गरीबनिवाज, जदुवस उजाळ महागुण जांण, तप तेज दिनंकर जेम तपै तुडितांण। —ल. पि

उ०—२ आहुई वडो राठोड़ विसरांमियां, तज गया दूसरा न गायन टेक। हसत नित **बरीसण** न को इळ रायहर, हसत बंध कवि नही जगत मैं हेक। —द्वारकादास दधवाड़ियौ

उ०—३ कोडि **बरीसणौ** लखधीर वडाकर, राजिद रूपक रंजणौ। वैर वराहळि आंदळ बादळ, भूप खळां दळ भंजणौ। —ल. पि.

२ दान।

३ उत्सर्ग, त्याग।

रू. भे.—बरीस, बरीसण, वरीस।

बरीसणौ, बरीसबौ—देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू. भे.)

उ०—लाख **बरीसै** भोज तूं, कवित नवा कहणांह। लड़ालूंब वणियौ विहद, गढपत जस गहणांह। —बां. दा.

बरीसणहार, हारौ (हारी), बरीसणियौ— वि०।

बरीसिओड़ो, बरीसियोड़ौ, बरीस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरीसीजणौ, बरीसीजबौ—कर्म वा०।

बरीसियोड़ौ—देखो 'वरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बरीसियोडी)

बरु—देखो 'वर' (रू. भे.)

उ०—१ जो अम्हारूं वयणु सुणेसिइ, निम्चि सो **बरु** मइं परिणेसिइ। खेचरु भूचरु भूमिधरो। —पं. पं. च.

उ०—२ खूटां अरजुन सवि हथियार, माल भूझ बेउ करइं अपार। साहिउ अरजुनि वनचरु पागि प्रकटु हुई बोलइ **बरु** मांगि। —प. पं. च.

बरुऔ—सं. पु. [सं. वटुक, प्रा. बडुअ] १ ब्रह्मचर्यावस्था, बटुक, ब्रह्मचारी।

२ उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत।

३ उक्त संस्कार के अवसर पर गाया जाने वाला गीत।

४ ब्राह्मण बालक।

५ प्रोहित कर्म करने वाला विद्वान् ब्राह्मण।

रू. भे.—बरुओ।

बरुण—सं. पु. [सं.] १ सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता जो जल का अधिष्ठाता, दस्युओं का नाशक व देवताओं का रक्षक माना गया है।

उ०—१ वरुण जाय दीन्हा तहा, रतन पदारथ जाय। आय प्रवंतिका सौ रतन, ब्राह्मण दीधा आय। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ ता पुर में जैतै बसै, सब ही वरुण समांन —गजउद्धार

२ आठ दिक्पालों में से एक, पश्चिम दिशा का दिक्पाल।

३ पश्चिम दिशा।

४ मित्र देवताओं के साथ रहने वाले बारह आदित्यों में नौवें आदित्य का नाम।

५ समुद्र।

६ पानी, जल, नीर।

उ०—**बरुण** येतौ कठा सूं आंण सूं विचारै, चबै इम तरण सूं मूंह चढियौ। करण दरियाव री रीत लख केलपुर, पुरंदर भरण रौ चीत पड़ियौ। —महारांणा राजसिंह रौ गीत

७ सूर्य।

८ आकाश।

९ सौर जगत का सब से दूरस्थ ग्रह (नेपच्यून)

१० एक मरुत, जो मरुतों के तीसरे गण में शामिल था।

११ एक देव गंधर्व, जो कश्यप एवं मुनि के पुत्रों में से एक था।

रू. भे.—वरुण, वरण, वारुण।

बरुणग्रह—स पु —१ घोडो का एक रोग, जिसमें घोड़े की जीभ, तालू, आंख और लिंगेंद्रिय आदि अंग काले पड़ जाते हैं। (शा. हो.)

२ देखो 'वरुण' (रू. भे.)

बरुणदेव—स. पु [सं.] जल के अधिष्ठाता, सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता।

उ०—सै' प्रसन्न होय आसीस देय विदा हुआ। जद समय देख **बरुणदेव** प्रसन्न होय राजा नूं कही-राजा, तूं बडौ उदार, धीर-वीर, हू तो'सूं प्रसन्न हुवौ। —सिंघासण बत्तीसी

बरुणपुरी, बरुणलोक—सं. स्त्री. [सं.] वरुण देवता का निवासस्थान, वरुणलोक।

उ०—बडे महल है वरुण कै, बडे हाट बाजार। जोजन अठी हजार में, **बरुणपुरी** विसतार। —गजउद्धार

रू. भे.—वरुणपुरी।

बरुणालय—स. पु. [सं.] समुद्र, सागर।

बरुथ—देखो 'वरूथ' (रू. भे.)

बरुथणी, बरुथनी—देखो 'वरूथणी' (रू. भे.)

बरुथी—देखो 'वरुथी' (रू. भे.)

बरूथ—स. पु. [सं. वरुथ] १ लोहे की चद्दर या जाली का बना रथ का आवरण जो शत्रु के आघात स रथ की रक्षा करता है।

२ कवच, बखतर।

३ ढाल।

४ सैन्यदल, सेना।

५ समूह, समुदाय।

[सं. वरूथिन्] ६ रथ ।

वि.—१ कवचधारी ।

२ रक्षक ।

३ रथारूढ़ ।

रू. भे.—वरुथ, वरुथी, वरूथ्थ, वरूथ, वरूथी, वरूथ्थ, विरूथ वरुथ, वरुथी, विरुथ्थ, विरुथ ।

अल्पा.,—विरूतो ,वरूथो ।

वरूथणी, वरूथनी वरूथिनी-सं. स्त्री. [सं. वरूथी] सेना, फौज ।
(ह. नां. मा.)

रू. भे —वरुथणी, वरुथनी, वरुथिनी, वरुथी, वरूथ, वरूथणी, वरूथनी, वरूथिनी, विरूथणी, विरूथणी, विरूथनी, वरुथणी, वरुथनी वरुणी ।

वरूथिनी-एकादसी-सं. स्त्री.—वैशाख कृष्ण एकादशी ।

वरूथी—१ देखो 'वरूथ' (रू. भे.)

२ देखो 'वरूथणी (रू. भे.)

वरूथो-वि. [सं. वरूथिन] १ प्रचंड, भयंकर, जबरदस्त ।

२ वीर, योद्धा ।

३ कवचधारी ।

सं. पु.—१ सेनापति ।

२ देखो 'वरूथ' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—वरुथो, विरुथो, विरूथ, विरूथो, विरूतो ।

वरे, वरं-क्रि. वि.—१ अधिकार में, कब्जे में ।

वि.—माफिक, अनुकूल ।

उ०—कुतब, गोस, अबदाळ सूफी अनै कळंदर, पीरजादा मिळे साझ परभात । कोन पातसाह रा भरे एक राह कज, वरै न पड़ै 'जसवंत' जिते वात । —नरहरदास बारहठ

रू. भे —भरै ।

वरोळ-सं. पु. [सं. बर्ह] १ बरं ।

२ देखो 'विरोळ' ।

वरोलण-वि. [राज. वरोळ] १ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—जग करण धमजगर हुए 'नेजळ' जुही, राव रावळ रजा राण रोदा । आवमी नजर जण दन वळै आवगा, हजारा वरोळण वजर होदा । —ठाकुर कुसळसिहजी रो गीत

वरोळणो, वरोळबो-क्रि. स.—देखो 'विरोळणो, विरोळबो' (रू. भे.)

उ०—१ खातुरगी वरोळ धारकै आवळा चमु, भू काज बावळा खळां दाटकै अनेक । आरारा छेड़िया चखा भाटकै खजाग आग, झाटकै बचाळै अवा हेडीया जनेव । — जवांनजी आढी

उ०—२खड़ां वरोळ मार चौधारां,काळ वहंता कमरा कळै । रोळै दळ बोळै रढ़ायण, वळीयो जेम समंद वळै । —महेसदास आढ़ो

उ०—३ देवी मेरगिर रूप सायर वरोळै । देवी सायरं रूप गिर मेर बोळै । —देवि.

उ०—४ 'माल' हरै वध सुछळ महारिण, आलै सह मांनव सुर-ईस । पांणी असुर वरोळै पीधो; मारी दूध तणी 'गज' 'भीम' । —कल्यांणदास महड़ू

वरोळणहार, हारो (हारी), वरोळणियो—वि० ।

वरोळिग्रोड़ो, वरोळियोड़ो, वरोळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वरोळीजणो, वरोळीजबो—कर्म वा० ।

वरोळणो, वरोळबो—रू. भे.

वरोळियोड़ो-भू. का. कृ.—देखो 'विरोळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वरोळियोडी)

वरो-सं. पु. [सं. वराटः] १ कूए, वापी आदि से पानी निकालने की रस्सी ।

२ हाथी को बाधने या गर्दन मे डालने का मोटा रस्सा ।

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति कपोळा रै मदगंध करिनै भोरां रा झोर पड़नैं रहीआ छै । भोरां नूं बैठा सासहे नहीं, सूंडीर वरां बळाका खाइ नै रहीआ छै । —रा. सा. सं.

३ आश्रय ।

उ०—जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट आंमै वरो । जोधपुर अजुवापुरी, रांम राज कमधज रो । —गु. रू. बं.

वळ-सं. पु.—१ भोजन, खाना ।

उ०—१ हाथी १ घोड़ा ६ सोना रूपा सू मांडया नाळेर देनै प्रोहित कांमदार धार मेल्हिया । तिकै धार आया । तद सगळां नै खबर हुई, गोड़ां रा नाळेर आया । तदि डेरो दिरायो वळ रो चारा रो जाबतो करायो । —जगदेव पवार री बात

उ०—२ किसतुरी बिना रहवा री आखडी । फाटा कपडा सीवण री आखडी । साथ नै वळ हुआ बिना जीमण री आखडी । बावडी री पाणी पीवण री आखडी । बेहती नदी रो पाणी पीवण री आखडी । —रा. सा. सं.

२ भोजन की सामग्री ।

उ० —उठी नूं दिन पाच कुंवरसी टिकियो मो ज्यू ही तो भुजाई हुवै ज्यू ही वळ तुलै । लोग सारो आय भेळो हुवै ।
—कुंवरसी साखला री वारता

(मि. पेटियो)

३ बलि ।

उ०—१ ताहिरा भैंसो राकस रूप कर बोल्यो । कहियो-वडा रजपूत । थो राजा तो केहि कांम रो न छै । अर तूं वरदाईसेन रो बेटो छै, सो तू म्हनै सौ बाकरा, सौ भैंसा अर सौ मण दारू री म्हनै वळ दै तो तोनै हूं वर देऊ । —नैणसी ।

उ०—२ सु उठै कोई कसवरण हुवौ, तरै क्यूं पग ठांभिया, उठै उतरिया सवरणो बुलायौ, तरै सवरणी कह्यौ-एक आदमी अठै वळ दियौ जोईजै । तरै रावळ साथै आदमी १२ साख-साख रा था, नै एक रतनूं आसराव बेटो सूघौ थौ, तरै बारठ विचारियौ, विचारनै कह्यौ-सिगळी ही साख रौ एकूको छै, नै म्हे दोय जरणा छां, सु म्हां माहिलौ एक जरणौ वळ चाडो। —नैणसी

४ गोष्ठी, भोज ।

उ०—इतरी थोरियां विचारी । ताहरां पाबूजी तौ कारणीक मरद । तद पाबूजी ईयां रै जीव री लखी । ताहरां पाबूजी बोलिया । कही—रे थोरियां ! थे आ साढ लै जावो, आज री वळ करौ । —नैणसी

५ भोज या बलि पर लिया जाने वाला कर । (नैणसी)

६ दर्द के कारण ऊरु-मूल, कांख या कर्ण मूल में से किसी स्थान पर होने वाली ग्रन्थी, शोथ । (अमरत)

वि. वि. —ऐसा संधि-स्थलों का खुल कर कार्य न करने के कारण होता है।

७ घुमाव, मोड़ ।

८ टेढ़ापन, लचक

९ ऐंठन, मरोड़, बांक ।

उ०—वळ काढि गासियां, परां चाढिजै पंखाळां । वाढ अरणी करि वलक, आब कीजै अरिणयाळा । —सू. प्र.

१० दिशा ।

११ मेघ, बादल ।

१२ एक असुर ।

१३ पार्श्व पहलू ।

१४ सिकुड़न ।

१५ झुकाव ।

सर्व—उन ।

उ०—तूटै कमळ वहै वळ तेगा, तेगी त्रपत करण रिण तेगां । पहिलै धकै पाच सौ पड़िया, मुगलां प्रांण चका सै मुड़िया । —रा. रू.

क्रि. वि [सं. वलन्] १ फिर, और।

उ०—१ धुर तुक मत चोवीस धर, वळ दूजी अकवीस । ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकबीस कवीस । —र. ज. प्र.

उ०—२ मट बहन प्रथम जनमी विसैक, दिल थयौ दुखित वळ सुता देख । मन विकता पडी नह कुटंब माय, अवनरी जोग माया जु आय । —रामदांन लाळस

२ ओर, तरफ ।

३ देखो 'वळ' (रू. भे.)

वलउ, वळक, वलक—सं. स्त्री. [सं. वलक:] १ प्रकाश, चमक । (उ. र.)

उ०—वळ काढिजै गांसिया, परां चाढिजै पंखाळां । वाढ अरणी करि वळक, आब कीजै अणियाळां । —सू. प्र.

२ आभा, कान्ति, तेज ।

३ किरण, रश्मि ।

४ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—वैर वारह वाहरु वैरां, वळकां कर करवा दईवांन । सत्र घर गणी नसां जसवारो, मनखां री लागै मझमांन ।
—रावत अरजणसिंह री गीत

५ आवेश, तेजी ।

६ काष्ठ का लट्ठा ।

७ तामस मन्वन्तर के सप्तर्षियों मे से एक ।

८ कटि, कमर ।

उ०—हार त्रोडती, वलक मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकिणीकलापुच्छोडती, माथउं फोडती, वक्षःस्थल ताडती, कुंतलकलाप रोलती, प्रथ्वीतलि लोलती, सकज्जल बास्पजलि कंचुक सिंचती । —व. स.

रू. भे. —वळक, वलक ।

वळकणौ, वळकबौ—क्रि. अ.—१ बादलों के बीच बिजली का बल खाते हुए चमकना, दमकना ।

उ०—१ डोहत सुडाडड ए, खीलंड सरपक हिंड ए । गज-वाग मत्थै मंगळां, वळकत्त वीजक वद्दळां । —गु. रू. बं.

उ०—२ जिमै कूंत अदभूत, भडा वांकां भूडडै । वादळ वादळ वळकि, वीजलत्ता ग्रहमडै । —गु. रू. बं.

२ किसी वस्तु का चमकना ।

उ०—१ वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूसर साबळ झळहळ ए । अडडै कांछूसळ कुटकै कम्मळ, सोणी रळ-चळ खळहळ ए । —गु. रू. बं.

उ०—२ बाजी हाक वाहदरा, होय वीर हकारां, वळवळ वाढ वळकिया खुरसाण दुधारा । —वी. मा.

३ आभा, कान्ती, या तेज का झलकना, शोभा देना ।

४ प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना ।

वळकणहार, हारौ (हारी), वळकणियौ—वि० ।

वळकिओडौ, वळकियोड़ौ, वळक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वळकीजणौ, वळकीजबौ—भाव वा० ।

वळक्कणौ, वळक्कबौ—रू. भे. ।

वळकती-केळ—स. पु.—भाला, वल्लम । (ना. डिं. को.)

बलका–सं. स्त्री.—संजीवनी बूटी । (अ. मा.)

बळकियोड़ो–भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, दमका हुआ. २ झलका हुआ, शोभित. ३ प्रकाशमान हुवा हुआ ।
(स्त्री. बळकियोड़ी)

बळकी—देखो 'बल्लको' (रू. भे.)

बळक्कणो, बळक्कबो—देखो 'बळकणो, बळकबो' (रू. भे.)

उ०—१ भिदै जाळियां रूप मोभा भळक्की । बगै बीजळी जांण आभै **बळक्की** । —सू. प्र.

उ०—२ बागह घड़क्कै दाढ खडक्कै कंध कड़क्कै कूरम्मं । सम्मूह सळक्कै कुंत **बळक्कै** खेग खळक्कै कैजम्मं । —गु. रू. ब

बळक्कियोड़ो—देखो 'बळकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बळक्कियोड़ी)

बळख–सं. पु. [स. अवलक्ष] १ उज्वल, शुभ्र । (अ. मा.)

२ श्वेत, सफेद ।

बलगणो, बलगबो–क्रि. अ.[सं. वल्गनं] १ लूंबना, लटकना, झूमना ।

उ०—बल करी **बलगइ** बांहड़ी, तई आपी तस बांह । रग बधारइ बली बली, ने तूठउ तनि तांह ।
—गां का. प्र.

२ लिपटना ।

उ०—गोरी गलि **बलगी** रही, बेलि चढी जिम वृक्षि । विनय करीनइ विलपती, विधि-विधि थई विलक्षि । —मा. का. प्र.

३ उछलना, कूदना ।

४ पकड़ना ।

उ०—कटितटि हूती वकड़ी. काढी करि करवाल । तव अग्गीउ आघीकरी, करि **बलगु** ततकाल । —मा. का. प्र.

५ छलांग मारना ।

६ व्यर्थ की उछल कूद करना ।

७ ऊछल उछल कर चलना ।

८ अवलंबन करना ।

९ उलझना, फंसना ।

उ०—**बलता** ब्रहदत्त [ऋखि] बोलि, सांभलि राजा धरम । प्राणि सरव सदाचि दूखिया, [येन्हि] बलगा करम । —नळाख्यान

बलगणहार, हारो (हारी), **बलगणियो**—वि० ।

बलगिग्रोड़ो, बलगियोड़ो, बलग्योड़ो -भू० का० कृ० ।

बलगीजणो, बलगीजबो—भाव वा० ।

बलग्गणो, बलग्गबो—रू० भे० ।

बळगत, बळगताऊ–क्रि. वि. [स. वल्गित] राह चलते हुए ।

बलगा—देखो 'बल्गा' (रू. भे.)

बलगार–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—जादर हीरागर वइरागर फूलपगार, चीर **बलगार** चुनार, पीतांबर चादर रत्तांबर नेत्रांबर । —व. स.

बलगियोड़ो–भू. का. कृ.—१ लूंबा हुआ, लटका हुआ, झूमा हुआ, झूला हुआ. २ लिपटा हुआ. ३ उछला हुआ, कूदा हुआ. ४ पकड़ा हुआ. ५ छलांग मारा हुआ. ६ व्यर्थ की उछल-कूद किया हुआ. ७ उछल उछल कर चला हुआ. ८ अवलंबन किया हुआ. ९ उलझा हुआ, फंसा हुआ ।

(स्त्री. बलगियोड़ी)

बलग्गणो, बलग्गबो—देखो 'बलगणो, बलगबो' (रू. भे.)

उ०—रवि किरणे हू **बलग्गि** चडिय अट्ठावय तित्थहि । निय २ वन्न पमाण बिंब वदिय, जिण भतिहि । —अभयतिक यति

बलग्गियोड़ो—देखो 'बलगियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बलिग्गियोडी)

बळण, बळणि, बळणी–स. पु. [सं. वल] १ प्रस्थान, गमन ।

उ०—मेहां बूठां अन बहुळ, थळ ताढा जळ रेस । करसण पाका कण खिरा, तद कउ **बळण** करेस । —ढो. मा.

२ लौटना क्रिया ।

उ०—सेवगां रंगरळी मेट वसीयो सुरग, रैण सर ऊजळी कीत राहे । वळण करवा तणी हूंस पाछी वळी, मिळी जळ बूंद दरियाव मांहे । —चिमनजी आढ़ो

३ आगमन ।

४ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव ।

५ घूमने या मुड़ने की क्रिया या भाव ।

६ वक्र गति, वक्र चाल, टेढी-मेढी चाल ।

उ०- नदी दो तड पाडती, कचवर उपाड़ती, रूंख उन्मूलती, कुंभिणि घातती, सींव ज हणति, जडि मूलि खणती, मारग लोक खलती, **बळणी** चलती, तरु तोखती, नीचंउ जोअती, महापूरि कल-कलती, कल्लेलि उच्छलती··· । —व. स.

७ भुगतान ।

८ ग्रह, नक्षत्रादि का सायनांश से हट कर चलना (ज्योतिष)

रू. भे.—बळण, वलन ।

बळणो, बळबो–क्रि. अ [सं. वल्] १ वापस लौटना, लौट कर जाना, जाना ।

उ०—१ कमधज पर मांगै जोड़ै कर, हूबै दांन चाहौं सुज हाजर । तथास्तु कहि मुनिंद वळै तुर, रावा दिन मिळमी राजेस्वर । —सू. प्र.

उ०—२ लै 'भोपा' कब कीरत लाडी, बड पौबार बजाड़े। इण मांहठै कई भाला भाला, बळिया ढोल बजाड़े। —भोपो भाठो

उ०—३ एक काठियां रै वास थो, तठै रावळ वाड़ मांहै कूद पड़ियो। लाखै दीठो-जु जु जाइ (?) तरै पाळसेट तरवार वाही, सु गुदड़ो माहे भांगळ बै बैठो। लाखो पाछो बळियो। रावळ काठियां मांमां माहैं गयो। —नैणसी

उ०—४ कहियो भो ठाकुर सुणे, भै लोक सुणे भो नीलो रूंख छै, जै छै मास तांई नायो तो तैं कहियो न मैं सुणियो, मैं कहियो न तैं सुणियो, वाचा भवाचा छै। ताहरां वीजाणद भाघो हालियो। सयणी पाछी बळी। —सयणी री बात

२ प्रस्थान करना, गमन करना।

३ लौट कर आना, वापिस आना।

उ०—१ पछै भांण सिघमुख डेरो कियो। पाछा फतै कर बळिया। पाछा भावतां नै दासू वैहणीवाळ भाय मिळियो। दासू कह्यो—राज म्हारो वैर छै। जो लरावो तो धरती थांहरी छै, सो लेवो —नैणसी

उ०—२ भला पधारो भींचड़ा, गरक सिलह मैं गात। केहर वाळा कळह री, बळता कीजो वात। —बां. दा.

४ प्राप्त होना, आना। (वृद्धा भवस्था)।

उ०—सरधा घटगी सैंग, बेग बिरधापण बळियो,। निकळण री रथ नहीं, कळण ऊंडी मैं कळियो। मगरपचीसी मांय, डोकरो बणगो डाकी, डांगड़ियां निठ डिगै, थिगै टांगड़ियां थाकी। —ऊ. का.

५ घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। (व्यायाम)

६ घूमना, मुड़ना।

उ०—जुड़ै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठां पंचमुख। वाच न क्यू परगह वोळावै, रावत बळियो तेण रुख। —द. दा.

७ बल खाना, वक्रगति चलना।

८ भागे बढ़ना।

उ०—हाथो लख मन हेत, बळियो वेढ लगाय कै। चित उत धरियो चेत, मिळवा कांमण मांणवा। —गजउद्धार

९ ढलना।

उ०—१ छांह गुभाळ बळंती छाया, जको पटंतर देख जुए।। सुबस वसीजे सहर सितारो, हथणापुर में वेढ हुए। —भोपो भाठो

उ०—२ मन जांणी बडलो हुदां, (ऊगां) वेगण री थळियांह। बीभो ढाळै ढोलियो, बळती छाहड़ियांह।

—बीभा सोरठ री बात

१०—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ तरै देवराज कह्यो—भली वात। म्हारै माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतो हूं मोटो हुईस, नै मांहरी धरती गई छै सु वाळीस। मांहरी दावो वरिहाहां मांहे छै, सु बळसी। राज री मैहर था मांहरै सोह वात भली हुसी।

—नैणसी

उ०—२ तरै जोगी खुसी हुय, दवा दीनी कह्यो—थांहरी ठाकुराई दिन दिन बधसी, थांहरै पग सूं भा धरती कदे नहीं जाय, थांहरा दावा बळसी। —नैणसी

११ आकर्षित होना।

१२ अंकन होना, लिखा जाना।

उ०—मन जांणे पीवूं पै-मिसरी, छाछ सुबरणी मिळै न छांट। बळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा भांट।

—भोपो भाठो

१३ आना।

१४ लगना, पड़ना।

उ०—सैणां ठरिया नयण, हिया प्रसणां परजळिया। जस प्रताप वाधियो, धाउ नीसांणां बळिया। —गु. रू. बं.

१५ प्रवेश होना, घुसना।

उ०—दरवाजो तूटण सूं किला में खळबळी माचगी। जेज व्हियां नांकाबंदी होवण री भी हो मो भीमड़ी बिजळी रै पळाका रै ज्यूं किला रै मांयनैं बळियो। पण ड्योढी पूगतां-पूगतां चाफेर सूं घेरीजग्यो। —भमरचूनड़ी

क्रि. म.—१६ ढकना, लपेटना।

१७ लौटाना, देना।

उ०—इण गोरबंधियै रै कारणै मैं तो नव दिन निरणी रह गई रे। म्हारो गोरबंध बळतो कर। —लो. गी.

१८ प्रत्युत्तर करना, उत्तर देना।

१९ भरपाई करना, चुकता करना।

२० देखो 'बळणो, बळबो' (रू. भे.)

उ०—१ करहा लंबी वील भरि, पवनां ज्यूं वहि जाह। भंभ बळंतह दीवळह, घण जागती जाह। —ढो. मा.

उ०—२ सूरज ना किरण पच्छिम ढळया, पंथी सगां नह मिळया। विरही ना होया बळया, गोवाळ घरै वळया। —रा. सा. सं.

बळणहार, हारो (हारी), बळणियो—वि०।

बळिओड़ो, बळियोड़ो, बळयोड़ो—भू० का० कृ०।

बळीजणो, बळीजबो—भाव/कर्म वा०।

बलणो, बलबो, वलणो, बलवो—रू. भे.।

बलणो, बलबो—देखो 'बळणो, बळबो' (रू. भे.)

उ०—१ दांनि धरमि एक बीर विचारै, सइं नरेंद्र न बलइ

प्रगामाऱै। हेम नी गजयटिइ पताका, करणरा जाणिन किसिउ सिराका। —सालि सूरि

उ०—२ करि लज्जा बलतौ कहै रै हां, घर मन अधिक उमग। महाराज रण पाणीयै रै हां, कीधउ मुभ घर भग। —वि. कु.

उ०—३ तुरगम श्रामवतउ, पवन जिम चालतउ, सरप जिम बलतउ मयप जिम पदि पदि स्कलतउ, लीला चालतउ, रभसि माल्हतउ, क्रीडा सेलतु, मूत्कार मेल्हतउ। —व. स

उ०—४ ग्रहदरव रवि ग्रोचरै साभलि, कुंतातंन। पुण्य श्लोक एम बलतु वदि रै मुणीनि वचन।

बलणहार, हारौ (हारी), बलणियौ—वि०।

बलिग्रोड़ो, बलियोड़ो, बल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बलीजणो, बलीजबो—भाव/कर्म वा०।

बळतपूंछ—स. पु. [स. वलित-पुच्छ] श्वान, कुत्ता। (प्र. मा)

बळतासंल—स. पु.—वह छप्पय छन्द जिसमे प्रथम कही हुई तुक की पुनरावृत्ति लाटानुप्रास शब्दालंकार के समान होती है। (र. ज. प्र.)

बलद—देखो 'बळद' (रू. भे.)

उ०—हालो नइ भवि हल खड़्या, फाड़्या प्रथिवी पेट। सूड़ निदाण किया घणा, दीघो बलद थपेट। —स. कु.

बळदार—वि.- जो मुड़ा हुआ हो, घुमावदार, ऐंठा हुआ।

रू. भे.—बळदार।

बळदियौ—देखो 'बळद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मूळ गळघो रोहण गळी, घाद्रा वाजी वाय। हाळी वेच, बळदियौ, खेती लाभ नसाय। —वर्षा-विज्ञान

बळद्दुख—स. पु [स. बलिदक] इन्द्र।

बलन—देखो 'बळण' (रू. भे.)

बलनास—स. पु [सं. वलनाश] अयनाश से किसी ग्रह के वलन अर्थात् हटकर चलने की दूरी का अश। (ज्योतिष)

बळपूरण—वि [स. बल—भोजन+पूर्ण] १ भोजन देने वाला।

स स्त्री.—२ अन्न-पूर्णा।

३ बरवड़ी देवी का नाम।

उ० हू इज बूंट बखरा वीमहथी हू वाजूं। बळपूरण बरवड़ी हू इज सिह वग अग्राजू। —पा. प्र.

रू. भे.—बलापूरण।

बळबंड—देखो 'बळबड' (रू भे)

बलभ—देखो 'बल्लभ' (रू. भे) (प्र. मा.)

बलभउतंग—देखो 'वलभी उतंग' (रू भे) (प्र. मा.)

बलभजन, बलभज्यन—सं. पु. [सं. वल्लभ+जन] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

२ मित्र-वर्ग, मित्रगण।

३ बधवजन।

रू. भे.—बळभजन।

बलभतन—सं. पु. [सं. वल्लभ-तनु] मित्र। (ह. नां. मा.)

बळभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू. भे.)

बळभद्रोत—सं. पु.—कछवाहा वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति (बां. दा. ख्यात)

बळभन—सं. पु [स वल्लभ] भोजन। (ह. नां. मा.)

बलभा—देखो 'वल्लभा' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

बलभाचारी—देखो 'वल्लभाचारय' (रू. भे.)

बळभि, बलभी—स. स्त्री. [सं. वलभिः] १ घर के ऊपर बना हुआ मंडप, गुंबज, गुमटी।

२ घर का सब से ऊपरी भाग, हिस्सा।

३ छत।

४ छप्पर।

५ शिखर।

६ झोंपड़ी। (डिं. को.)

७ काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी।

रू. भे.—बळभि, बळभी।

बलभीउतग—सं. पु. यौ. [सं. वलभी-उत्तुंग] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

रू. भे—बळभउतग।

बलम १ देखो 'बल्लम' (रू. भे.)

२ देखो 'वल्लभ' (रू. भे)

उ०—सो एका-एक बेटौ, फेर कुंवर सरब राजा रौ भार सभाळ लियौ। तेथी राजा नै घणौ बलम। —पलक दरियाव री बात

३ देखो 'बालम' (रू. भे)

बलय—स पु. [स. वलयः, वलयं] १ ककण, कगण।

उ०—ललाट पट्ट मध्यविभागिकृत कस्तूरिकातिलक, बाहुवल्लरी परिहित रत्नमय बलय, स्रवणि तारस्फार झलकता कुंडल। —व. स.

२ सधवा के धारण करने की कलाई की चूड़ी।

उ०—डाकी ठाकर महण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड़ खाय दिखाय थण, थण पण बलय बताय। —वी. स.

३ बाजूबंध।

उ०—१ ललाट तिलक, कने झलक, बांहे वलय अंगुलि अंगुलियक कठि कठिका, गलइ हार । —व. स.

उ०—२ जी हो एक वलय मंगल भणी, जी हो राख्या रमणी बांह । —स. कु.

४ कड़ा, छल्ला ।

५ घेरा, कुंज ।

६ वृत्त की परिधि ।

७ व्यूह रचना विशेष ।

८ वेष्ठन ।

९ कमरपेटी, इजारबंध ।

१० किनारा, छोर ।

११ गल-गंड नामक एक रोग ।

१२ डगरा के प्रथम भेद आदि ह्रस्व मात्रा का नाम (र. ज. प्र.)

१३ एागरा के प्रथम भेद दीर्घ मात्रा का नाम (र. ज. प्र.)

१४ देखो 'विलय' (रू. भे.)

रू. भे.—वलय, वला ।

वलयावळि—सं पु.[स. वलय+अवलि] हाथों मे धारण करने के कंगन ।

उ०—वलयावळि हत्थ में यों दसतान दिपाया । —व. भा.

वळयोड़ो—देखो 'वांळयोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वळयोड़ी)

वळराव—देखो 'बळिराव' (रू. भे.)

उ०—वीड़ा झलै ऊठोयो, लग्गा असमांरा । जांरा त्रीकम वाधिया, वळराव छळाणा । —द. दा.

वलवंड—देखो 'बळबड' (रू. भे.)

वळवंत, वळवंतो—देखो 'बळवंत' (रू. भे.)

उ० -जाधपुरो जोगणिपुरां, जग-जेठी वळवंत । लेण क लका रामचद, हुकारै हणमत । —गु. रू. ब.

वलवत्त—स. पु १ एक दश का नाम ।

उ०—देस संख्याः आदिइं अयोध्या नगरी, उखा मडाल ग्राम च्यारि कोडि, वलवत्ता देस ३ कोडि —व. स.

२ देखो 'वळवत' (अल्पा., रू. भे.)

वळवळ—सं. पु. [सं. वल] १ विलाप, रुदन ।

२ प्रकाश, चमक ।

३ झलक ।

४ जलन, दाह ।

५ कपन ।

क्रि. वि. (अनु.) १ चारों ओर, चहुंओर ।

उ०—वळवळ कंठ विलासं, हार भुजंग गंग सिर खळहळ । —रांमरासौ

२ फिर-फिर कर, रह-रह कर, पुनः पुनः ।

उ०—ग्राह गयंद विढवा लागा, वळवळ दाखै पांण । उदध छोळ यंबर लगा, फेर मथै महरांण । —गजउद्धार

३ क्रमशः ।

४ निरन्तर ।

रू. भे.—वळबळ, बलवळ, बलवळां, वळवळां, वळविळ, वळावल, वली-वली, वल्वल ।

वळवळणौ, वळवळबौ—क्रि. अ.—१ चमकना, प्रकाशमान होना ।

उ०—खळहळ रत खाळ झबकि खग झळ.हळ, कंठल वळवळ वीज कळां । कळ ऊकळ हुए गळोब (ळ) कंदळ, आफळ धाया उभै दळां । —गु. रू. बं.

२ धीरे-धीरे जलना, शनै-शनै जलना ।

३ जलन होना, दाह होना ।

४ झिलमिलाना, झलकना ।

५ कम्पायमान होना, कम्प-कम्पाना ।

वळवळणहार, हारौ (हारी), वळवळणियौ—वि० ।

वळवळिओड़ो, वळवळियोड़ो, वळवळयोड़ो—भू० का० कृ०

वळवळीजणौ, वळवळीजबौ —भाव वा० ।

बळबळणौ, बळबळबौ, बलवलणौ, बलवलबौ—रू० भे० ।

वलवलणौ, वलवलबौ—देखो 'वळवळणौ, वळवळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ टलवलइ जिम निरजलि माछिली, वलवलइ प्रति अंगि वली वली । झखइ लांखइ लावर आकुलउ, विरहि विञ्हल वांतर बाउलउ । —सालि सूरि

उ०—२ वलवलती विञ्हल वदनि, वलती वदइ उदार । 'राजा रूठउ मनाविसुं, सुपी सपति सार ।' —मा. कां. प्र.

वलवलणहार, हारौ (हारी), वलवलणियौ—वि. ।

वलवलिओड़ो, वलवलियोड़ो, वलवल्योड़ो—भू० का० कृ०

वलवलीजणौ, वलवलीजबौ —भाव वा० ।

वळवळां—देखो 'वळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ वण उत्तग वळवळां, छटा घण अदभुत छाजै । जाळी विद्रुम जड़त विवध मण नग विराजै —भोपालदांन सांदू

उ०—२ वळवळां अजस वधै, भड़ां खळां छक मारियौ सुत । 'बाघ' तणौ उछरग सर्भ, गंगराव अप्राजियौ । —सू. प्र.

वळवळाट—स. पु —१ चमक, प्रकाश, रोशनी ।

२ झलक ।

३ जलन, दाह ।

४ झिलमिलाट ।

५ कंपन ।

६ व्यर्थ का प्रलाप, बकभक्त ।

बळवळियोड़ो—भू. का कृ.—१ चमका हुआ, प्रकाशमान हुवा हुआ. २ शनै-शनै जला हुआ ३ जलन हुवा हुआ, दाह हुवा हुआ. ४ मिल-मिलाया हुआ, भलका हुआ. ५ कपायमान हुवा हुआ ।
(स्त्री. बळवळियोड़ी)

बलबलियोड़ो - देखो 'बळवळियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बलबलियोडी)

बळवांन—देखो 'बळवान' (रू. भे.)
उ०—'नरहर' जोगीदास निमै नर, प्राणदमुत कुळ रीत उजागर । बघव ग्रग ग्रागळ बळवाणै, 'ग्रसह' हरा वधै ग्रवसाणै ।—रा. रू.

बळविळ—देखो 'बळ-बळ' (रू. भे.)

बलसणो, बलसबो—देखो 'विलसणो, विलसबो' (रू. भे.)
उ०—ठगीया देवता नर नाग ठगारी, हे लछमी सुण वात हमारी। बलसणहारो "कमो" वैहारी, धूर्त नी जांणू धूतारी ।
—कमा विहारी री गीत
बलसणहार, हारो (हारी), बलसणियो—वि० ।
बलसियोड़ो बलसियोड़ो, बलस्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बलसीजणो, बलसीजबो—कर्म वा० ।

बळसवन—देखो 'बळसदन' (रू. भे.)

बलसाड़णो, बलसाड़बो - देखो 'विलसाणो, विलसाबो' (रू. भे.)
बलसाड़णहार, हारो (हारी), बलसाड़णियो—वि० ।
बलसाड़ियोड़ो, बलसाड़ियोड़ो, बलसाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बलसाड़ीजणो, बलसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

बलसाड़ियोड़ो - देखो 'विलसायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बलसाड़ियोड़ी)

बलसाणो, बलसाबो—देखो 'विलसाणो, विलसाबो' (रू. भे.)
बलसाणहार, हारो (हारी), बलसाणियो—वि० ।
बलसायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बलसाईजणो, बलसाईजबो—कर्म वा० ।

बलसायोड़ो—देखो 'विलसायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बलसायोड़ी)

बलसावणो, बलसावबो—देखो 'विलसाणो, विलसाबो' (रू. भे.)
बलसावणहार हारो (हारी), बलसावणियो—वि० ।
बलसावियोड़ो, बलसावियोड़ो, बलसाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बलसावीजणो, बलसावीजबो—कर्म वा० ।

बलसावियोड़ो - देखो 'विलसायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बलसावियोड़ी)

बलसियोड़ो—देखो 'विलसियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बलसियोड़ी)

बलसूवन—स. पु. [सं. बल+ल्यु-ग्रन] इन्द्र ।

बलहंता—सं. पु.—इन्द्र ।

बळहट—स. पु [राज. बळ=भोजन+सं. हठ] १ हठ पूर्वक कराया जाने वाला भोजन ।
उ०—बळहट देवे 'कुंवरसी,' ग्रावै वरण ग्रढार । पेतीसूं राजा कुळी साख-साख सरदार । —कुंवरसी सांखला री वारता
२ देवड़ा (चौहान) राजपूतों का विरुद ।
३ सोलकी वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।
रू. भे.—बळहट ।

बळहटमल, बलहटमल्ल—स. पु. [राज बळ+हठ+स. मल्लः] १ हठ पूर्वक भोजन कराने वाला व्यक्ति ।
रू. भे.—बळहटमल, बळहटमल्ल ।

बळहळ—सं. स्त्री.—चमक, दमक, चमचमा'ट ।
उ०—कुडळां कांन बळहळ करंत, सुब कळा लोवडी सिर सोहंत ।
—रांमदांन लाळस

बळहणो, बळहबो—क्रि. ग्र.—बढ़ना ।
उ०—रस वन फळ बोह पाय रसाळी, पुत्रां हेत करै रिखपाळी । वणि ससिवेस रमै मांभळ वन, तै बळहती वेल सोवन तन ।
—सू. प्र.

बळहियोड़ो—.भू का. कृ.— बढ़ा हुग्रा ।
(स्त्री. बळहियोड़ी)

बलहो—देखो 'वल्लभ' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—१ वेगाह वळजो बलहा, संपत लच्छी सहेत ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

बळां—क्रि. वि.—१ ग्रोर, तरफ ।
उ०—१ भिड़ फौजा गज दहूं बळां । निज घोर नगारा ।
—द. दा.
उ०—२ चढबळां जोगण खपर चढवै, सिभ कमळां संग । जग गीत चिहूंवै—बळा जाहर, मुजस हुवै सुढंग ।
—र. ज. प्र.
२ दफा, मर्तबा, बार ।
रू. भे.—बळां, बळांई ।

बळांणो—देखो 'बळाणो' (रू. भे.)
उ०—दसरावा रो डूगलो, गणगोरी रो सिरपाव, बळांणो घोड़ो सर्लूंबरसूं भींडर महाराज पावै । —बां. दा. ख्यात

वळांपूरण—देखो 'वळपूरण' (रू. भे.)

उ०—नित वळां अनवळ दियण नर ही, वळांपूरण विरवड़ी मा वळांपूरण विरवड़ी । —वरवड़ी देवी रा छंद

वळांमण—सं. पु.—ढग, तरीका, रीति ।

वळा, वला—क्रि. वि.—१ ओर, तरफ।

उ०—उठै चत्रकोट वळा उजवाळ, करै जुध नाह इंहां कळिचाळ । —सू. प्र.

उ०—२ किलबांइण चंचळ पाय कळा, वघ, सोच खड़ब्भड़ आठ वळा। —रा. रू.

२ बार, दफा, मरतबा ।

उ०— वा दो तीन वळा मासी रै मूंडा सांम्ही जोयो तो उणनै ऐड़ो लखायो जाणै उणरी आंख्यां होठां माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं। —फुलवाड़ी

१ खलिहान।

२ अफगानिस्तान का निवासी, अफगान ।

[अ. वला] ३ लोभ, लालच ।

४ आसक्ति, मोह ।

५ इश्क, प्रेम ।

६ देखो 'वलय' (रू. भे) (उ. र.)

वळाको—सं. पु. [सं. वल्ल+राज. प्र. को] १ एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक लगाया जाने वाला चक्कर, चक्कर, फेरा, ट्रिप ।

उ०—दीवांणजी नगर री गळियां में टपाटप वळाका देवण लागा उण वेळा पूरी सोपो पड़ग्यो हो। —फुलवाड़ी

२ घुमाव मोड टेढ़ापन ।

३ ऐंठन, मरोड़, वट ।

उ० - मुछां रा वळाका दीधां सीमोद गनीमा माथै, धू हाम तमासै मुनिंद्र रीधा धोर। म्यांन हूं उखेलताई कीधा खाग तेढ़ीमणी, वेढी-मणी मेलताई कीधा महावीर। —बद्रीदांन खिड़ियो

४ मोच ।

५ कसक ।

रू. भे.—बळाको, भळाको।

वळानाथ—स. पु. [राज. वळा=अरावली पर्वत+सं नाथः] हाडा राजपूतों की विरुद, उपाधि ।

रू. भे.—वळानाथ।

वळाबंध—सं. पु.—अरावली पर्वत का नाम ।

उ०—ले पाए घातिया, मेर माखा कर वाढ़ै, वळाबंध ढंढोल, 'कमो' अळगां हूं काढै। भड तुरंग वीणार, चडै मामी गज केसर, फौज लगै फूलियै, दीध परराठां पस्सर। —गु. रू. बं.

रू. भे.—बळाबंध ।

वलायत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

उ०—तो वडका दिल्ली तखत, रखी पत केइ वार। ते जुध मदत वलायतां, सह जस कथ संसार। —जैतदांन बारहठ

वलारा—सं. पु. [देशज] अनाज सहित कुचले हुए भूसे के ढेर के दोनों ओर के किनारे ।

वलालो - देखो 'विलालो' (रू. भे.)

उ०—चत लागो जां रो हर चरणा, करै न प्रेत भजन अघकार। सुकव वलाला थनै सेवीयो, सेवूं कम बीजा सरदार। —किसनजी आढ़ो

(स्त्री. वलाली)

वळाव—सं. पु.—१ दिशा।

उ०—वळकति खग्ग चहुंवै वळाव। सिहरे क जांण वीजां सिळाव। —गु. रू. बं.

२ खलिहान ।

३ वह भूमि जहां खलिहान बनाया जाता है ।

वळावणी, वळावबो—देखो 'वोळाणी, वोळाबो' (रू. भे.)

उ०—तंत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह। भल वउळावो दीहड़ा, दई वळावण देह । —ढो. मा.

वळावळ—देखो 'वळवळ' (रू. भे.)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणिमां पधारण, वधारण खड़ग वड़ करणवा वार। वळावळ वाज नै महारिण वाजियो, साद रणं सिर सांघणो मार । —गोरधन गाडण

वळावियोड़ो—देखो 'वोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वळावियोड़ी)

वळावो—देखो 'वोळाऊ' (रू. भे.)

वळाहक—देखो 'बळाहक' (रू. भे.) (सभा)

वळि, वलि—क्रि. वि. [स. वलति] १ फिर, और ।

उ०—१ वळि मालवणी बीनवइ, हुं प्री दासी तुज्झ। का चिंता चित अंतरे, सा प्री दाखउ मुज्झ । —ढो. मा.

उ०—२ पडिउ भीमु आसासिउ राइ गदा लेउ वलि सांम्हउ धाइ। अरजुनु जां भूझेवा जाइ राव सु भीमि रहाविउ ठाइ । —पं. पं. च.

२ पुनः दुबारा ।

उ०—गह स्रंडइ गहिलउ हुअउ, पूछइ वळि पूछंत। मारु तणइ संदेसड़इ, ढोलउ नहु धापंत। —ढो. मा.

३ इस पर भी ।

उ०—मीह ग्रनड बलि पाखरयउ, कहु किम जीपणउ जाय ।
—सहज कीरति

४ तब ।

उ०—लहरी मायर-मदिया, लूठउ-मदउ वाव । वीछुडियां साजग मिळइ, बळि किउ नादउ नाव । —ढो. मा.

५ ग्रोर, तरफ ।

उ०— जातौ किण ही न दीठौ तेह, फिर पाछौ ना' थौ बलि गेह ।
—वि. कु.

६ वार, दफा, मर्तबा ।

स. स्त्री.—१ रेखा, लकीर ।

२ भुर्री, सिकुड़न ।

३ छप्पय नामक छंद का एक भेद जिसमे ४९ गुरु व ५४ लघु मात्राएं होती हैं ।

४ देखो 'बळि' (रू. भे.)

उ०—मंगहुता मज्जण मिळया, हूंना मुझ हीयाह । ग्राजूणइं दिन ऊगरइ, बीजा बळि कीयाह । —ढो. मा.

उ०—२ बळि राजा छळि जैंण बाधियौ । नमौ पराक्रम नारिम्रण ।
—ह. ना. मा.

रू. भे.—बळि, बलि, वलिय, वळी, बली, वलीय ।

बलित–वि [स.] १ गतिशील ।

२ घूमा हुग्रा, मुड़ा हुग्रा ।

३ गुथा हुग्रा ।

४ लिपटा हुग्रा, वेष्टित ।

५ भुर्री पड़ा हुग्रा ।

बळिभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू. भे.)

उ०—बळिभद्र बधव बधव तेडीयौ जी, बीजउ प्रसंन कुमार । यईद्रभा नयरी बीवाह छइजी, रहीय म लावौ वार ।
—रुकमणी मगळ

बलिमधु–सं पु.—मधुप ।

बळिमुख–स. पु. [स.] वानर, बदर । (डि. को.)

बलिय—१ देखो 'बलि' (रू. भे.)

उ०—वरनगा वाक बलिय कमली पाच भलमलि ग्रति भली । वाणना नारिज पाच ठवणी मुहपती पुड पाटली । —स. कु.

२ देखो 'वलित' (रू. भे.)

बळियोड़ो–भू. का. कृ.—१ वापस लौटा हुग्रा, लौट कर गया हुग्रा. गया हुग्रा. २ प्रस्थान किया हुग्रा, गमन किया हुग्रा. ३ लौट कर ग्राया हुग्रा. ४ घूमा हुग्रा, फिरा हुग्रा, चक्कर लगाया हुग्रा । ५ घूमा हुग्रा, मुड़ा हुग्रा. ६ वक्र गति या बल खाकर चला हुग्रा. ७ ग्रागे बढ़ा हुग्रा. ८ ढला हुग्रा. ९ प्राप्त हुवा हुग्रा, मिला हुग्रा. १० ग्राकर्षित हुवा हुग्रा. ११ ढका हुग्रा, लपेटा हुग्रा. १२ लौटाया हुग्रा, दिया हुग्रा. १३ प्रत्युत्तर किया हुग्रा, उत्तर दिया हुग्रा ।

१४ देखो 'बळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बळियोड़ी)

बळियौभंवर–स. पु.—रेगिस्तान की वह भूमि जिसमें चलते समय मनुष्य थम जाता है ।

बळियौ–स. पु.—१ समय ।

२ ग्रवसर ।

३ बैलों के सींगों पर लपेटने की रंगीन डोरी ।

४ बल खाई हुई कोई वस्तु ।

५ देखो 'बळियौ' (रू. भे.)

६ देखो 'वळि' (२) (ग्रल्पा., रू. भे.)

बळिराज, बळिराजा, बळिराव—देखो 'बळिराजा' (रू. भे.)

बळिहारी, बलिहारी—देखो 'बळिहारी' (रू. भे.)

उ०—साग काछि माया मंड्या, हरि विचि भी भारौ । जन हरिदास माया तजै, ताकी बळिहारी । —ह. पु. वा.

बळिवड—देखो 'वळबड' (रू. भे.)

बळींड—देखो 'वळीड' (रू. भे.)

बली–स. स्त्री [सं.] चर्म या चमड़ी की सिकुड़न, झुर्री ।

२ पेट के दोनों ग्रोर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर ।

३ पंक्ति ।

४ रेखा, लकीर ।

५ उत्तराधिकारी, वारिस ।

रू. भे.—बळि ।

बळी, बली–सं. स्त्री. [देशज] १ पहाड़ के नीचे की भूमि, लम्बी भूमि ।

उ०—पंवारा री पैंतीस साख, त्यां माहे एक साख भायलां री, भायला री माथासरौ गांव रोहीसी भगरा नीचै बळी छै तठै नै सिवाणचीनू । —नैणसी

२ रेतीलै टीबै पर प्राकृतिक रूप से बनी लहरनुमा उभरी रेखाएं ।

३ रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड ।

४ सीधा रोपा जाने वाला वह काष्ठ का डंडा जिस पर धनुषाकार लकड़ी रख कर उस पर बैठ कर चक्कर काटा जाता है ।

वि. वि.—देखो 'चकचूंदियौ'

५ रुपया-पैसा ।

सं. पु. [ग्र.] ६ वह धर्मात्मा और महात्मा व्यक्ति जो ईश्वर की दृष्टि में प्रिय और मान्य हो।]

७ शासक, बादशाह।

उ०—ग्रकबर साह जलालदी, खितवा बली खुदाय। बाजदार कर बंदगी, ताजदार हुय जाय। —बां. दा.

८ हाकिम।

९ देखो 'वळि' (रू. भे.)

उ०—१ एक सुयखंघ हरिण ग्रंग नउजी, वरग छइ ग्राठ ग्रभिरांम। ग्राठ उद्देसा छइ बली जी, संख्याता सहस पद ठांम। —वि. कु.

उ०—२ ग्रगनि में बांण छूटा ग्रसंख, बळो वीढ़ चिहुँवै बळां। पछि बांण हुवौ पूठीरुखौ, 'गजण' तांम दिल्ली दळां।—गु. रू. ब.

उ०—३ जासक कटक ग्रांपणइ ठांमि, गूजराति ग्रावमइ ग्रनांमि। करि वीवाह मनि ग्रांणी रुली, छपन कोडि धन देमइ वली। —कां. दे प्र.

रू. भे.—बळी, बली।

बलीग्रयद, बलीग्रहद—स. पु. [ग्र. वलीग्रहद] १ बादशाह के बाद होने वाला उत्तराधिकारी, वारिस, युवराज।

२ राजकुमार, शाहजादा।

३ संतान।

उ०—पातसाह साजिहानजी रै बलीग्रयद सायजादा च्यार हुवा। —द. दा.

बळोगण—सं. पु. [सं. ग्रवलिंगन] ताप पर चढ़ाये जाने वाले रसोई के बर्तनों के पेंदे पर लगाया जाने वाला मिट्टी का लेपन।

बळोट, बळोठ—देखो 'बलिष्ठ' (रू. भे.)

उ०—वरू थोय जोयग ग्रत्र बाथ, हुवौ हव पाबुए एकरण हाथ। वराचक ढाकिय कोट बळोट, परां थट दीठ उगाडिय पीठ। —पा. प्र.

बलीय—देखो 'वलि' (रू. भे.)

उ०—वाहण जेह नै पांच सैं, बलीय पाचसइ हाट। घर गाकुल पिण पाचसै तितला सकट सुघाट। —वि कु.

बली-बली—देखो 'वळ-वळ' (रू. भे.) (उ. र.)

बळू—वि.—१ मददगार, सहायक।

२ रक्षक।

३ पक्षका, तरफ का।

रू. भे.—बळू।

बळे, बले—देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—१ मंगळ बुद्ध मयंक, बळे सनि सुक्र ब्रहस्पति। राहु केत रिख ग्रघण, नवै ग्रह सांति करै नित। —ह. र.

उ०—२ ग्रौ हुव बळे तक्षक हुय ग्रावै। पांण हूंत तो जांण न पावै। —सू. प्र.

उ०—३ ढोलइ करह बलावियउ, करि सिणगार ग्रपार। ग्रास्यां तउ मिळस्यां बळे, नरवर कोट जुहार। —ढो. मा.

उ०—४ मांगी दूं बधावणी तोने, पंथीड़ा लाखपसाव हो राज। बले सघ जोतां बाटड़ी, थे तो ग्रावी ग्राज सुणाय हो राज। —राज

उ०—५ ग्रायत इळा ग्रनळ पुड ग्रायत, समंद ग्रायतां बळे ज सात। लाखां तेथ बहंखिया लाखै, बडा बडा जुग रहसै बात। —महारांणा लाखा री गीत

बळेरण—सं. पु. [देशज] छत पर बनी मुंडेर।

बळेवड़ो—सं. पु. [देशज] १ ऊंट या बैल की गर्दन पर कपर्दिका गूंथा हुग्रा, बांधने का ग्राभूषण।

उ०—इसा ऊंठ झेकजे छै, हाथ फेरजै छै। पीतळ रा गिरबांण रूपे रा कड़ा छै। ता मांहे मोहरा बेळचौ मोहरा घातजै छै लूंबा कवडाळा बळेवडा घातजै छै। —रा. सा. सं.

२ बैलों के दोनों सींगों को लपेटते हुए बांधी जाने वाली डोरी।

बळै—क्रि. वि.—१ फिर, ग्रौर।

उ०—१ सिव नै सिसहर निलै सकति नै सीह चढ़न्नी। बांमण ग्रनियै बळै वाघ बळराजा दोनी। —गु. रू. बं.

उ०—२ कुटबा सहेता हुती नाव कीरं। बळै पाय रैणा तरी रघुवीरं। —सू. प्र.

उ०—३ खुशी भेळी एक बळै खुमी। उच्छब भेळो एक बळै उच्छव। —फुलवाड़ी

२ पुनः, दुबारा।

उ०—१ सं. १६७७ पछै ग्रमरसिंघजी साथै गयौ। पछै बळै ग्राय वसियौ, तरै लवेरा रो पटो दियौ। —नैणसी

उ०—२ तरै सोच घारै कपी देह त्यागं। बळै ग्रावियौ ग्रादि ग्रासोक वाग। —सू. प्र.

३ पीछे, बाद में।

वि.—ग्रतिरिक्त, ग्रन्य।

सं. स्त्री—तरह, भांति, प्रकार।

रू. भे.—बळे, बले, बळै, बिळै वळ, वळे, वले, भळ, भळे, भळै।

बळोवळ, बळोवळी—सं. पु. [राज. वळ] भोजन।

उ०—सांझै भूखा सोई, करै परभात बळोवळ। हाथऊ कूंत उपाड़ि, मार ढाहे मोताहळ। —राव रिणमल री बात

क्रि. वि.—१ चारों तरफ, चहुं ओर।

उ०—१ वाजि घमस ऊडड, वाजि त्रबाळ चहूवळ। द्रोण वाजि है मुरां, वाजि दळ मोक बळोवळ —सू. प्र.

उ०—२ आगरै नमत सुं 'डूगरो' आगतां। बळोवळ लिखांणां जगत बाका। जुहारीसींघ का टाळिया जगत में, डाकुवा हरा रा सुजस डाका। —बुधजी आसियौ

२ जिधर-किधर, यत्र-तत्र, इधर-उधर।

उ०—तद जाटा रौ गारौई साथ भागौ सू बळोवळी मुंडा लेय नै पापै पुनै गया नै कबर स्त्री बीकंजी री वडी फतै हुई। —द. दा.

३ पृथक-पृथक।

४ अपने अपने मन मे।

५ पुन: पुन:, बार-बार।

उ०—करांमनि देखि छति 'नौबदे' कळोधर, खळा भुज बळोबळ जितूं खाडे। चाळबधं जिकै लड़ता चापडै, मागवा बाजरी चाळ माडै। —दुरगादास राठोड़ आसकरणोत रो गीत

६ निरन्तर, लगातार।

रू. भे.—बळोवळ, बलोवली, बळोवळ, बळोवळी, वळोवळ, वळोवळी

बळौ—स. पु.—१ अरावली पर्वत।

उ०—घर हरै पाखरां वाजतं घूघरै, दीह सूझै नही खेहरै डंबरै। रूधियौ बळौ रायसिघरै लस्करै, डूगरै घणा ओनाड़िया डूगरै। —द. दा.

२ पर्वत श्रेणी।

३ स्तंभ, खम्भा।

४ बांस।

५ कच्चे मकानों की छाजन के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, काड़ी।

उ०—खूटा खड़ा बळा डूंचिया, हालां सू हळ ठाटिया। सिरधर अर संनीर माळा, खूड़ मूण थम, पाटिया। —दमदेव

६ हुक्के की नै के ऊपरी भाग पर लगाया जाने वाला सोने या चांदी का छल्ला।

रू. भे.—बळौ।

बळोवळ, बळोवळी—देखो 'वळोवळ' (रू. भे.)

उ०—१ ओघ हळवळ समळ गळळ पळडळ गरां। त्रिसळ सळ बळोवळ कळळ हूकळ तुरां। —महादान मेहडू

उ०—२ बळोवळि ऊछळं सोर साहा विढण, बोल जागी बिचै वसत वूड। उडाडै लोह एकां सिरै 'प्रवा' रौ, 'प्रवा' रा ऊपरा लोह ऊडै। —कमां अखावत पडियार रो गीत

बल्कल—सं. पु. [सं वल्कल:] १ वृक्ष की छाल।

२ उक्त छाल का वस्त्र जिसे ऋषि, मुनि महात्मा, अरण्यवासी पहनते थे।

३ ऋषि मुनि महात्माओं व तपस्वियों के पहनने का वस्त्र।

४ छिलका।

५ ऋग्वेद की वाष्फल नामक शाखा।

रू. भे.—बक्कल, बक्कल, बलकल बल्कल।

बल्गन—सं. स्त्री. [सं. वल्ग-गतौ] १ घोड़े की एक चाल जिसमें वह उछलता कूदता चलता है, दुलकी। (शा. हो.)

[सं. वल्गनं] २ उछाल, फलांग, छलांग।

बल्गा—सं. स्त्री. [स.] लगाम, रास, बाग-डोर।

रू भे.—बल्गा, वलगा।

बल्गित—स. स्त्री. [सं. वल्गितं] १ घोड़े की सरपट चाल।

२ डींग, शेखी।

बल्द—स. पु. [अ.] पुत्र, तनय, सुत, बेटा।

बल्दियत—सं. स्त्री. [अ.] १ पिता के नाम का परिचय।

२ पुत्र होने की अवस्था या भाव।

बल्ल—सं. पु. [सं] १ गिलाफ, आवरण।

२ चादर।

३ तीन घघची के बराबर की तौल।

४ वर्जन, निषेध।

५ गमन, चाल।

बल्लकी—सं. स्त्री. [स.] १ नारद की वीणा का नाम।

२ वीणा।

३ सलई का पेड़।

रू. भे.—बलकी, बल्लकी, वलकी।

बल्लणौ, बल्लबौ—देखो 'वळणौ, वळबौ' (रू. भे.)

उ०—सज्जण बल्लै गुण रहै, गुण भी वल्लणहार। सूकण लागी वेलड़ी, गया ज सींचणहार। —ढो. मा.

बल्लणहार, हारौ (हारी), बल्लणियौ—वि०।

बल्लिओड़ौ, बल्लियोड़ौ, बल्ल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बल्लीजणौ, बल्लीजबौ—भाव वा०।

बल्लभ—वि. [सं.] (स्त्री. वल्लभा) १ प्रिय, प्यारा, स्नेही, प्रेमी।

उ०—प्रति बल्लभ तेहने पुत्री इक, जास मदालसा नांम रे। रूपें करि जीति जाणें रति, अपछर जिम अभिरांम रे। —वि. कु.

२ सुख प्रद, सुखद।

उ०—वपि असह जळ सुख उसण बल्लभ सूर कर हुइ सीतळं।

उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळं ।
—रा. रू.

३ वांछनीय ।
४ सर्वोपरि, उत्तम ।
५ सुन्दर ।
सं. पु.—१ पति, स्वामी, प्रियतम ।
२ प्रिय व्यक्ति, प्रेमी ।
३ स्वामि, मालिक ।
४ मित्र, दोस्त ।
५ अध्यक्ष ।
६ पर्यवेक्षक ।
७ प्रधान या मुख्य ग्वाला, गोप ।
८ वैष्णव सम्प्रदाय का एक आचार्य ।
९ शुभ लक्षणों वाला घोड़ा, अश्व ।
१० पाण्डव पुत्र भीम का एक नाम ।

उ०—दूत लक्षण कला सवि जांणू ; मूं हरइं हुसि राज पराणउ ए युधिस्ठिर नरेंद्र सूयार, नांमि वल्लभ भुजा बलि सार ।
—सालि सूरि

११ ज्योतिष में कर्ण ।

रू. भे.—बलभ, बलम, बल्लभ, बल्लम, वलभ, वलम, वल्लव, वल्लह, वल्लहउ, वल्लहु, वल्ह, वल्हग, वालंभ, वालंम, वालिभ । वालिभि, वालिम, वाल्हम ।

अल्पा.,—वल्लहो, बल्हो, बलहो, बल्लहो, वल्हो, वालमियो ।

वल्लभा—वि. स्त्री. [स. वल्लभ] प्यारी, प्रिय ।

उ०—'जग रूप' मधू 'जगनाथ-कुळ,' पदमणि किरि सूरज प्रभा । बनीतो कुलीण कुरम वडी, परम लछि पती वल्लभा ।
—गु. रू. ब.

सं. स्त्री.—पत्नी, स्त्री, प्रिया ।

रू. भे.—बल्भा, वल्लहा, वल्लहो ।

वल्लभाचारय—सं. पु. [स. वल्लभ-आचार्य] चार वैष्णव सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक ।

रू. भे.—वलभाचारी ।

वल्लव—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—कथ संभर खेड़ नरेंद्र कही । सन मंधिय वल्लव जींद सही ।
—पा. प्र.

वल्लवसिबा—सं. पु. [सं. शिवा+वल्लभ] चदन । (अ. मा.)

वल्लह, वल्लहउ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—१ वच्छा ! वल्लह तुम तणो, गिरुई रिद्धि समेत मासऽम्भितर निच्छइण, मिलस्यं घरो म खेउ ।
—श्रीपाल रास

उ०—२ ठविउ नेमि जिणिइं जग वल्लहउ । परमतेजिहिं तेजलु ते कहउ ।
—जयसेखर सूरि

वल्लहो—देखो 'वल्लभा' (रू. भे.)

उ०—बहु गुणवती गोरडी, कठि विलाइ कंत । मझ-पाहिं तुझ वल्लही, ते कहीइ कुण कंत ।
—मा. कां. प्र.

वल्लहु—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—मुझनइं ते प्रति वल्लहु, सदा न तजतु संग । ते देखतां तुझसिउ, रमतां न रहइ रग ।
—मा. का. प्र.

वल्लहो—देखो 'वल्लभ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जीव उहां पिंजर इहां, हिवड़ै हूला-हेल । रे परदेसी वल्लहा, वेल विहूणा फूल ।
—जलाल बूबना री बात

उ०—२ हा ! बांधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्रांण । पाणी में पड़तो थको, इम स्युं थयो अजांण ।
—वि. कु.

वल्लाह—अव्य. [अ.] १ ईश्वर की शपथ ।

२ सचमुच ।

वल्लियोड़ो—देखो 'वळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वल्लियोड़ी)

वल्ली—स. स्त्री. [सं. वल्लि, वल्ली] १ लता, वल्लरी, बेल ।

उ०—१ सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । त्रण वल्ली विसतरी, वर्ण ग्रह वरी दिसा वन ।
—रा. रू.

उ०—२ वल्ली तसु बीज भागवत वायो, महि थांणो प्रिथु दास मुख । मूळ ताल जड़ अरथ मंडहे, सुथिर करणि चढि छांह सुख ।
—वेलि

२ पृथ्वी ।
३ मिट्टी ।
४ शाल-वृक्ष ।
५ अग्नि-दमयंती ।
६ केवटी मोथा ।
७ काली अपराजिता ।

रू. भे.—वल्लि, बल्ली ।

वल्लुर, वल्लूर—सं. पु. [सं. वल्लुरं, वल्लूरं] १ लता कुंज, लता मण्डप ।

२ पवन ।
३ मंजरी ।
४ अनजुता खेत ।
५ रेगिस्तान ।

६ बीरान जंगल, वन ।
७ उपवन ।
[सं. बल्लूर:] ८ जंगली सूकर का मांस ।
९ सूखा मांस ।

बल्वल—सं. पु.—१ बलराम द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य ।
२ देखो 'बल्वल' (रू. भे.)

बल्ह, बल्हम—देखो 'बल्लभ' (रू. भे.)
उ०—मानवगी जांगी धणा, मारू माथै सल्ल । पिण ढोलौ जांगौ नही, बोल्हीया वे बल्ह । —ढो. मा.
उ०—२ ये म्रादर देगा कूं म्रापही ऊभा हुया छै । जैसें कोई म्रौर भी बल्हम हितू म्रावें छै । त्यो ते ऊभा हुवा छै । —वेलि टी

बल्हौ—देखो 'बल्लभ' (म्रल्पा., रू. भे.)

बव—सं. पु. [सं.] ग्यारह करणों मे एक करण जिसमें जन्म लेने वाले मनुष्य को बलवान, धीर-गंभीर म्रौर विचक्षण होना माना जाता है । (फलित ज्योतिष)
रू. भे.—बब, बव ।

बवकणौ, बवकबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)
उ०—१ मेछ तडफड मारका, म्रीधाण गहकको । पत्र भरै रत पूरिया बीराण बवक्को । —वी. मा.
उ०—२ सुण इम वचन समीर, वीर रणधीर बवक्कै । मतवाळा मदमत्त, घोम भाळा धकधक्कै । —पे. रू.
उ०—३ माहा म्रोपगी गनीमा हुंता हुचकै नरीद 'माधौ' । भूचकै भूलोक बाटी चकै कोम भार । बोमंगी म्रराबा भाळ बेताळ बवकै बकै, बाजद्रा 'बाहदरंग' हूकै जैण बार ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

बवकणहार, हारौ (हारी), बवकणियौ—वि० ।
बवकियोड़ौ, बवकियोड़ौ, बवक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बवकीजणौ, बवकीजबौ—भाव वा० ।

बवड़—देखो 'वधू' (मह., रू. भे.)

बवड़ी—देखो 'वधू' (म्रल्पा., रू. भे.)
उ०—म्हारी म्रे बवड़िया मरवणती, म्रा सासड रै हुकमा मे चाले बवडिया सरवणती । —लो. गी.

बवज—सं. पु.—१ व्यवधान, बाधा ।
उ०—मदमांहि बवज पडचो, लाघ्या परवत दुरघट-घाट । परिदेशां परि-भूमि गयउ, वीरौ जण हन चालइ बाट । —वी. दे.
२ कारण ।

बवणौ, बवबौ—क्रि. म्र. [सं. वपनम्] बोवाई होना, बोया जाना ।

उ०—केहर रा नख रंध्र सूं, गज मोतियां निपात । सूरत कौरत वेल रा, बीज बवै म्रवदात । —बां. दा.

बवयण—सं. पु. [सं. वि+वचन] यश, कीर्ति, प्रशंसा । (म्र. मा.)

बवळाणौ, बवळाबौ—देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)
उ०—सज्जणिया बवळाई कइ, गउखे चढी लहक्क । भरिया नयण कटोर ज्यउं, मुंधा हुई डहक्क । —ढो. मा.
बवळाणहार, हारौ (हारी), बवळाणियौ—वि० ।
बवळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बवळाईजणौ, बवळाईजबौ—कर्म वा० ।

बवळायोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बवळायोड़ी)

बवहाणौ, बवहाबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)
उ०—बवहाय धणी धण खग वही, सेखराव पड़ियो समर । दौलत्तिइ पाव तजि गौ जदिन, गंगाराव धरियो गुमर । —सू. प्र.

बवहायोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बवहायोड़ी)

बवहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बवहाररासि—सं. पु.—जीवाणु समूह का एक म्रंश ।
उ०—किमइ निगोदह जीव नीसरइ, बवहाररासि ते जाई नय वरइ । म्रसख सहर तणउ करइ सहार, जीवह जीव करइ म्राहार ।
—वस्तिग

बवांण—देखो 'विमांन' (रू. भे.)
उ०—'माल' बेम बवाणा मांई, क्रीत जुगा नांई कहलोत । म्रपछर परण गयो इकदांई, गळबाई कीदां गहलोत । —महादांन मेहडू

बवासीर—देखो 'बवासीर' (रू. भे.)

बसग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)
उ०—इद्र वज्र है एक कड़क सारो घर धूजै । गुरड एक बसंग म्रनेक पस म्रापाण न पूजै । —पा. प्र.

बसंत—सं. पु. [सं.] १ षट ऋतुम्रों में प्रथम एवं प्रमुख मौसम जिसका समय चैत्र व वैशाख मास होता है ।
वि. वि.—इस मौसम के म्रागमन के पूर्व पेड़ पौधों के सब पत्ते झड़ जाते है । म्रौर सारी वनस्पती पुन: फलने-फूलने लगती है । इसलिये यह ऋतुम्रों का राजा माना है । यह शिशिर म्रौर ग्रीष्म के बीच का मौसम है, जो म्रत्यन्त सुहावना होता है ।
२ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना है ।
३ संगीत में छ: रागों मे से दूसरा राग ।
उ०—कीजइ म्रवसरि म्रवसरि नवरंसि रागु बसंत । तरुणी दल दोलारस सारस भमइ हसंत । —जयसेखर सूरि

४ एक ताल। (संगीत)
५ माघ सुदी पंचमी को आने वाला पर्व।
वि. वि.—इस दिन से इस ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है।
६ फूलों का गुच्छा।
७ एक वस्त्र विशेष।
उ०—अनेक एक पेखियंति, रूप में चिरत्त ए। वसंत पट्टणं विसाळ, जोति में नखत्त ए। —गु. रू. बं.
८ अतिसार रोग।
९ शीतला या चेचक की बीमारी।
१० मसूरिका नामक रोग।
११ पीला रंग॰। (डिं. को.)
रू. भे.—बसंत, वासंत।
अल्पा.—वसंतड़ो, वसंतो।

वसंतता-सं. स्त्री. [सं.] १ वासन्ती या माधवी लता।
२ सफेद जूही।
३ वसन्तोत्सव।

वसंतड़ो-वि.—१ बसने वाला, रहने वाला।
उ०—ग्रेकइ वांभ्र वसतड़ा, एवड़ ग्रंतर काइ। सीहू कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ। —ग्र. वचनिका
२ देखो 'वसंत' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वसंततिलक-सं. पु. [स] १ वसंत का आभूषण।
२ देखो 'वसंततिलका' (रू. भे.)

वसंततिलका-सं. पु. [सं. वसंततिलकः, वसंततिलका, वसततिलकं] चोदह वर्णों का एक छन्द जिसके, प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण भगण और दो गुरु होते हैं।
रू. भे.—वसंततिलक।

वसंतदूत-सं. पु. [सं.] १ कोयल।
२ चैत्र मास।
३ ग्राम का वृक्ष।
४ पचम राग।

वसंतदूती-सं. स्त्री. [सं.] १ कोयल।
२ पाडर वृक्ष।
३ माधवी लता।

वसंतपंचमी, वसंतपांचम, वसंतपांचिम-सं. स्त्री. [सं. वसंतपंचमी] माघ शुक्ला पचमी, माघ मास के शुक्ल पक्ष की पचमी, इस दिन वसंत तथा रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है।
उ०—प्रथमादि ग्राग वसंतपांचिम, राग फाग परीखिये। हित धांम-धांम धमाळ सुख हुय, उरध भींमळ ईखिये। —रा. रू.
वि. वि.—ग्राज कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है।
रू. भे.—बसंतपंचमी, बसंतपांचम, बसंतपांचिम, बसतपांचिमी, वसतपाचम, वस्तपांचम।

वसंतबंधु-सं. पु. [सं.] कामदेव।

वसंतभैरवी-सं. स्त्री. [सं.] एक रागिनी का नाम। (संगीत)

वसंतमारू-सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों का सपूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)

वसंतमालतीरस—देखो 'सुवरण-मालिनी-वसत' (वैद्यक)

वसंतरत—देखो 'वसतरितु' (रू. भे.)
उ०—मचियो रसवोर वसंतरत मातो, ग्रवध पवन पोह गोळा तीर। कुसुम पात तर जठे 'कुसळ' हर, गहरापण कीधो गजगीर। —ग्रभैराम महीयारियो

वसंतरमण, वसंतरमणि, वसंतरमणी-सं. पु.—एक छंद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण में १९ मात्राएँ होती है तथा शेष तीनों चरणों में १६-१६ मात्राएँ होती हैं तथा ग्रत भगण ग्राता है। इसकी तुकात मिलती है।
उ०—१ ग्राद पाय उगणीस मत, बीजो सोळ वखांण। ग्रंत भगण जिण गीत नं, वसंतरमणि वखांण। —र. ज. प्र.
उ०—२ कर कर ग्राद में हिक नगण सुभंकर, धुर उगणीस मत्त नहचै धर। बे लघु होय तुकंत बराबर, सुसबद रांम कहै मझ मंदर। गीत वसंतरमण कवि गावत, सोळह पद-प्रत मात सुभावत —र. ज. प्र.
रू. भे.—बसंतरमणी।

वसंतरित, वसंतरितु—देखो 'वसंत' (१)
उ०—ऊपर तिठा वसंतरित ग्राई, सोत वितीत हुई ग्रसुहाई। सोभै ग्रब ग्राद तर सारा, वर्ण नीत जिम प्रज चा वारा। —रा. रू.
रू. भे.—बसंतरितु, वसंतरत।

वसंतवाक-स. पु. [स. वसंतवाक्] संगीत दामोदर के चोदह तालों में से एक।

वसंतसख, वसंतसखा-स. पु. [सं वसंत सखः] कामदेव का एक नाम।

वसंति, वसंती-वि. [स वसन्ती] १ वसत ऋतु का, वसंत ऋतु सम्बंधी।
२ वसत ऋतु में होने वाला, चलने वाला।
उ०—ग्रबा डार कोयलिया बोलै, वहत वसंती बयार मा। कुंज-कुंज रमराज दंपत जहा, भंवरन ज्यु मिळ डोलै। —रसीलै राजरा गीत
३ वसंती (पीले) रग का।
स. स्त्री.—१ वसंत ऋतु की देवी, सरस्वती।
उ०—दम मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती वसंति। —वेलि

२ सरसों के फूल के समान हल्का पीला रंग ।

३ जूही ।

रू. भे.—बसती, बासंती ।

बसंतोत्सव–स. पु. [स.] १ वसंतपंचमी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव ।

२ प्राचीन काल में वसंतपंचमी के दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव ।

३ होली का उत्सव ।

बसंतौ—देखो 'वसंत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेलें प्रति ही उलसतौ, वालम विनु कैसो **बसंतौ** हो लाल ।
—घ. व. ग्र.

बसधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

उ०—असुराण प्राण मिटसी इळा, सुर वध पांण **बसंधरा** ।
नवकोट नाथ निसनो निजर, डर घारो हरि ऊपरा । —रा रू.

बसंभर—देखो 'विस्वंभर' (रू. भे.)

उ०—मीर म्हैं जका भीरू **बसंभर**, गाज कुण सकै 'जसवंत' रा गाव । राव एक थाप ऊथापीया रड़मलां, रड़गला पुड़दड़ी राखीया गाव । —दुरसौ आढौ

बस–वि. [स. वश] १ नियन्त्रण या काबू मे आया हुआ, अधीनस्थ ।

२ आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी ।

३ विनम्र ।

४ किसी किसी प्रकार के जादू-टोने के प्रभाव में आया हुआ, वशीभूत ।

मुहा०—बस में होणौ=काबू मे होना, अधिकार मे होना, मुग्ध होना, मोहित होना, मोहजाल मे फसना, भ्रमित होना ।

सं. पु. [स. वश] १ अभिलाषा, कामना सकल्प, इच्छा, चाह ।

२ नियन्त्रण, काबू, अख्त्यार ।

उ०—बस राखौ जीभ कहै इम 'बांको', कड़वा बोल्यां प्रमत किसी ।
लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।—बा. दा.

३ किसी विषय या बात को अपने अनुकूल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति ।

४ प्रभाव, प्रभुत्व, धाक ।

५ पहुंच ।

६ गति, वेग । (अ मा)

मुहा.—१ बस चालणौ=स्थिति काबू मे होना ।

२ बस मे होणौ=कोई कार्य अपने अधिकार-क्षेत्र में होना ।

३ बस री बात=वह स्थिति जहां पर अपनी पहुँच हो, प्रभाव हो ।

७ उत्पत्ति, जन्म ।

८ रंडियो का चकला, रंडी खाना ।

९ देखो 'विस' (रू. भे)

रू. भे.—बस, वसि ।

बसक्कि, बसख—देखो 'विसिख' (रू भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—**बसक्कि** भबक्कि बळक्कै सार । घावां मिळ तिम्मर घोर अंघार । —गु. रू. बं.

बसट–अव्य. [स. वषट्] यज्ञों में अग्नि में आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला एक शब्द ।

बसटकार–स. पु. [स. वषट्कार] १ उक्त शब्द उच्चारण करने वाला व्यक्ति ।

१ एक देवता ।

३ देवताओं के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ ।

बसटक्रत–वि. [सं. वषट्कृत] हवन किया हुआ, होमा हुआ, हुत ।

बसटक्रत्य–सं. पु. [सं. वषट्कृत्य] हवन, यज्ञ, होम ।

बसण—१ देखो 'वसन' (रू. भे)

उ०—१ खंघ **बसण** रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह, घर रखवाळो विन धरण, गिणै न त्रण सम देह । —जैंतदांन बारहठ

उ०—२ आज झगड़ा ऊपरै जावतां भेस करियौ छै–कुसुम फूलां रो मोड अनै **बसण** कपड़ा रंगिया है । —वी. स. टी.

२ देखो 'बसण' (रू भे.)

बसणौ—१ देखो 'बसणौ' (रू भे.)

२ देखो 'वसन' (अल्पा., रू भे)

बसणौ, बसबौ—देखो 'वसणौ, बसबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ हसतौ नृप देखे सिघ हसियौ । विभ्रम तांम नृपति उर वसियौ । —सू. प्र.

उ०—२ पैंड विये अममेद रा, मरै खड़ग री मीच । अच्छरां बांहड़ियां गळै, बसै विमांणां बीच । —बां. दा.

उ०—३ संमत १६६१ अमरसिंघजी सार्थं गयौ । पछै संमत १६—९६ वळै वसियौ । काठमी पटै । —नैणसी

उ०—४ जिणै देसे सज्जण **बसइ**, तिणि दिसि वजउ वाउ । उआं लगे मो लगसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा.

उ०—५ पवन चदनगध हरावतउ, वदनि वासि **बसइ** दिसी वासतु । —शालि सूरि

बसणहार, हारो, (हारी), बसणियौ वि०

बसिओड़ौ, बसियोड़ौ, बस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बसोजणौ, बसोजबौ—भाव वा० ।

बसत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—१ रत घ्रति चंदरण कपूर, सर्फ समसांरण सफाई । विविध भ्रमित सुचि बसत वेहग्नि निमति चलाई । —रा. रू.

उ०—२ वराक कहै भ्रावं बसत, के कूड़ें के गूंरण । चेळे पड़ें सो होय सुध, सैंभर पड़ें स लूंरण । —बां दा.

उ०—३ इतरी बसत कनक घट भ्रांणे। संपुट दिये किये सहनांणे । बाळजती पतिवरता बेवं । सपत निसा जाग्ररण करि सेवं । —सू. प्र.

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

बसतपांचम—देखो 'वसंतपंचमी' (रू. भे.)

बसतर—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—पीढं ताम उठावं ऊपरि । केसर चंदरण भीरण बसतर करि । —सू प्र.

बसति, बसती—स. स्त्री. [स. बशित्व] १ ग्रष्ट सिद्धियों में से एक जिससे सब को वश में करने की शक्ति ग्राजाती है । (डिं. को.)

२ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रोपो ग्राढ़ो कहै ईसवर, नित राखूं चित थारो नांम । तूं छतो मांय देवरण मुख तूंही, ररण तरणी बसती तू राम । —ग्रोपो ग्राढ़ो

उ०—२ बसती मांय मिळै नहीं वासो, खरच पला री खासी । साजरण सैरण सीरवो सुख रा,जीव हेकलो जासी । —भीखजी रतनूं

उ०—३ ऊंडा जळ सूकै ग्रवस, नीलो वन जळ ज्याय ; चुगल-तरणा पग फेरसूं, बसती ऊजड ज्याय । —बां. दा.

उ०—४ ऊग्यो डूंग्व ग्रफीम, नीमरो रूंख निरोगी । बसती होड़ हकीम, नीमड़ो जंगम जोगी । —दसदेव

बसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—ताम्बो, ताव तमांम, पीनरणी मर पुसळाई । नैंड़ी थैंड़ी तरणी जाळ बसतुवा वरणाई । —दसदेव

बसतो—देखो 'बसतो' (रू. भे.)

बसत्त—१ देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—हुंता रज्जरण-होयड़ें, सयरणां हूदा हत्त । जउ सोहरणो सावइ होग्रइ, सोहरणो बडी वसत्त । —ढो मा.

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—करै वरिणज्ज एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए । साग्वा चोतार मुक्खमल्ल, रेसमी बसत्त ए । —गु. रू. ब.

बसत्र—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—भ्रांमी बसत्र सेत तन भासत, वसन लाल खित्ररणी सुवासत —र. ज. प्र.

बसदे—१ देखो 'वसुदेव' (रू. भे.)

२ देखो 'वासदे' (रू. भे.)

बसदेराव - देखो 'वसुदेव' (रू. भे.)

बसदेव—देखो 'वसुदेव' (रू भे.)

उ०—१ सेत ग्रस्व सुभद्द स करण-सत्र · सखा तास बसदेव सुत । —ह. नां. मा.

उ०—२ घन बसदेव तरणे गरधारी, जमदग रै घर फरस जपै । संकर रै गरणपत सारीखो, दूजो 'फतमल' ग्रसो दपै । —मेगराज ग्राढो

२ देखो 'वासदेव' (रू. भे.)

उ०—रुइ घ्रत पूंछ लपेट कर, बसदेव जगाया । देतां का एवास सब, जद भ्राग जळाया । —केसोदास गाडरण

बसधा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—वड पह बहुभार भुजि कुळिभार, घर सिरणगार तपै लखधीर । विलसरण गजवाज कुंग्रर सकाज, बसधा राज करै बरवीर । —ल. पि.

बसधापत, बसधापति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे.)

उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रबंध करै, भुव कंपित भार दिगीस डरै । मन ग्रांन महीपन के प्रजरे, किन पै बसधापति कोप करै । —बा. रा.

बसन—स. पु. [स. वसन] १ वस्त्र, कपड़ा, परिधान । (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ भ्रूटि भूंबिय महोतलि रोली । काढ़िवा बसन कोष । होयाली —सालि सूरि

उ०—२ तन स्याम ग्रंबुद रूप तड़िता, बसन पीत विचार । वासन्न पीत विचार सरवर, घनुख सायक धार । —र. ज. प्र.

२ कफन ।

३ ग्रावरण, गिलाफ, ग्राच्छादन ।

४ स्त्रियों के कमर में धारण करने का एक ग्राभूषरण, करधनी।

रू. भे.—वसना ।

५ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

६ देखो 'बसरण' (रू. भे.)

रू. भे.—बसरण, वसन, बसन्न, वसरण, वसन्न, वासन्न ।

ग्रल्पा —बसरणो ,वसरणो ।

बसनस—सं. पु. [स. वस्नसा] स्नायु, रग, नाड़ी ।

बसना—देखो 'वसन' (३) (रू. भे.)

बसन्न—देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—वर्ग सामळो गात भीगौ वसन्नं । निगी भूखणे जोत मोती मलन्नं । —रा. रू.

वसमगत, वसमगति—देखो 'विसमगति' (रू. भे.)

उ०—हीगे धागेया मान जवान छवनो नहंग, ग्रवर नर वीमरै तगा ग्रम्रभा । वसमगत देव 'जसराज' खग वाहते, रही रथ साह गजगाह रभा । —महाराजा जसवंतसिंह री गीत

वसरांमणो, वसरांमबो—१ देखो 'विसरामणो, विसरांमबो' (रू. भे.)

उ०—बडो सूर दातार रायसींग वसरांमियौ, वडगा गुण वड वडी घड़ा बरगी । कुजस तणी मोनाज करसी कमस, कमरा कोड़ा तणी गीभ करसी । —दुरसो ग्राढ़ो

२ देखो 'विस्रामणो, विस्रामबो' (रू. भे.)

३ देखो 'विसरावणो, विसराबो' (रू भे.)

वसरांमियोड़ो—१ देखो 'विसरांमियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्रामियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'विसरायोड़ो'

(स्त्री. वसरांमियोड़ी)

वसराळ—देखो 'विसराळ' (रू भे.)

उ०—नवक वाग वसराळ गेंगाग जग ग्रानमां, खाग दावायतां ग्राव लूटी । लाय वदी तगत लयंतां लगाई, ग्राग जैपुर नगर जाग ऊठी । —दुरजणसिंह री गीत

वसव—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—सगळी मद वरी सागजादी, मार नार पड जना सगार । वसव ऊपरै येक वखाणा, गारां वीजे सुगग मभार । —मेसदास ग्राढो

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—वसव छाडै भुजंग, मग, ऊलट वहावै, कहावै वेद कुण साच करसी । लग दीया 'भीम' ग्रासुर जकै जुग्रावै, ऊदै रव न थावै वीया 'ग्ररसी' । - जवानजी ग्राढ़ो

वसवान—देखो 'वसीवान' (रू भे.)

उ०—१ घर डुल्लिय परिभार, पहुमि वसवान उचल्लिय । हल भिल्लिय नरि नार, सम ग्रहि फन पर सल्लिय । —ला रा.

उ०—२ गुनगा दासरथ रूप जसवान कोटक समर, समर जसवान ग्रा, सियामाना । नवता नाम नसवान ग्रध भव तणा, भव तणा लिया वसवान भामो । —र. ज. प्र.

वसांमध—स पु.—पाटल नामक वृक्ष । (ग्र मा)

वि. वि देखो 'पाडळ'

वसा—स. स्त्री. [स. वसा] १ ग्रौरत, नारी, स्त्री ।

२ पत्नी, भार्या, जोरू ।

३ लड़की, पुत्री ।

४ पति की बहन, ननद ।

५ बंध्या स्त्री ।

६ गौ, गाय ।

७ बांझ गौ ।

८ हथिनी ।

[स. वसा] ९ मेद । (डिं. को.)

१०—चरबी, मांस ।

११ मस्तिष्क ।

रू. भे.—वसा ।

वसाकेतु—स. पु. [स.] पश्चिम में उदय होने वाला एक धूम केतु, तारक-पुंज ।

वसाड़णो, वसाड़बो—देखो 'वसाणो, वसाबो' (रू भे.)

उ०—जादम जाडा वजिया, 'रामो' नैं ऊदल्ल । विच सुरपुरां वसाड़िया, ग्रछरां तणा महल्ल । —रा. रू.

वसाड़णहार, हारौ (हारी) वसाड़णियौ—वि० ।

वसाड़िग्रोड़ो, वसाड़ियोड़ो, वसाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वसाड़ीजणो, वसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

वसाड़ियोड़ो—देखो 'वसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वसाड़ियोड़ी)

वसाणो, वसाबो—देखो 'बसाणो, बसाबो' (रू भे.)

वसाणहार, हारौ (हारी), वसाणियौ—वि० ।

वसायोड़ो भू० का० कृ० ।

वसाईजणो वसाईजबो—कर्म वा० ।

वसायोड़ो—देखो 'बसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री वसायोड़ी)

वसारेळ—सं पु [सं. वसु=पृथ्वी+राज.रेळ=तरबतर] इंद्र ।

उ०—घटा बांध चमराळ पखराळ फौजां घसण, दुजड़ तड़िताळ छिबभाल दमतौ । ग्राग ग्रणगाळ रो गिरा ग्रग्राजियो, वैरियां काळ वसारेळ 'वमतौ' । —करणीदांन कवियो

वसाळ—स पु —भेड़ ।

उ० - ढोलइ करह विमासियउ, देखे वीस वसाळ । ऊचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ । —ढो. मा.

वसाव, वसावट—देखो 'बसाव' (रू. भे)

उ०—तम महल न पोढ़ै प्रमग नचीता, वमरे गिरै वसाव कीया । वस तणो ऊडाव वीडरे, मीमोदां वक रास कीया ।

—मेपजी बारहठ

वसावणो, वसावबो—देखो 'बसाणो, बसाबो' (रू भे.)

उ०—१ मुलक बसावणहार, चिणावै वेजा भारी । ढूंढा पड़वा साळ, भखारी भींत तिबारी । —दसदेव

उ०—२ घर आंगण मांहै घणा, त्रासै पड़ियां ताव । जुध आंगण सोहै जिके, वालम वास बसाव । —बां. दा.

बसावणहार, हारौ (हारी), बसावणियौ—वि० ।

बसाविग्रोड़ो, बसावियोड़ो, बसाय्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बसावीजणौ, बसावीजबौ—कर्म वा० ।

बसावियोड़ो—देखो 'बसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बसावियोड़ी)

बसाह-सं. पु—नगर या शहर के चौहटे का नाम । (सभा)

बसि—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

२ देखो 'बस' (रू. भे.)

उ०—अंगथीमां चंदन घूम्रों, देह माहारांनि कसि । प्रत्यक्ष जूम्रो पारखूं, विसधर जेणि बहु वसि । —नळाख्यान

बसितव, बसिता—देखो 'वसित्व' (रू. भे.) (ना. मा.)

बसितागाथा-सं. स्त्री—गाथा छंद का एक भेद जिसमें आठ गुरु व ४१ लघु होते हैं । (पिंगल सिरोमणि)

बसित्व-सं पु. [सं. वशित्व] १ वशता, अधीनता ।

२ एक प्रकार की सिद्धि ।

रू. भे.—वसितव, वसिता, वसीता ।

बसिमा—देखो 'वसि' (रू. भे.)

बसियकरण—देखो 'वसीकरण' (रू. भे.)

उ०—मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही, वसियकरण कियो कोइ । रंग दिखालइ हो रालइ जे दुख आपणौ, ते गुण रसिया जोइ । —वि. कु

बसियां—देखो 'वस्ती' (रू. भे.)

बसियोड़ो—देखो बसियोड़ो' (रू.भे)

(स्त्री. वसियोडी)

बसिस्ट, बसिस्ठ-सं. पु. [सं वसिष्ठ] १ एक प्रचीन एवं प्रसिद्ध ऋषि, जो स्वायंभुव मन्वंतर में उत्पन्न हुए ब्रह्मा के दस मानसपुत्रों में से एक माना जाता है ।

उ०—१ होता प्रभु करना जग हरता, कहना गुर बसिस्ट जिम करता । धरि गुर वचन वचन पित धारै, प्रभु सिय जुत वनवास पधारै । —सू. प्र

उ०—२ बसिस्ठ आदि वह्मयं, करत जातकमयं । हळद्द कुंकमं हरी, करंत छोह केसरी । —सू. प्र.

वि. वि.—वसिष्ठ नामक सुविख्यात ब्राह्मण वंश का मूल पुरुष भी इसे ही माना जाता है एवं यही वंश अयोध्या के वैदिक-कालीन सूर्यवंशी (इक्ष्वाकु वंशी) राजाओं का सदियों तक पौराहित्य करता रहा था । इन्हें ही ऋग्वेद के सातवें मंडल के रचयिता माना जाता है ।

२ एक स्मृतिकार ऋषि ।

३ एक ऋषि जो भरतवंशीय सम्राट रंतिदेव सांकृत्य का पुरोहित था ।

४ रैवत मन्वंतर का एक ऋषि ।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि ।

६ श्राद्ध देव का प्रोहित एक ऋषि ।

७ सप्तर्षि मंडल का एक तारा ।

८ आठवा वेद व्यास, जिसे इन्द्र ने ब्रह्मांड पुराण सिखाया था ।

९ एक शिल्प शास्त्रज्ञ ।

१० अगस्त्य ऋषि का छोटा भाई विदेह-राज निमि का प्रोहित था ।

रू. भे.—बसिस्ठ, बसीठ, बासिस्ट, बासिस्ठ, बसोठ ।

बसिस्ठपुरांण-सं. पु. [सं. वसिष्ठपुराण] एक उपपुराण, जिसे लिंग पुराण भी मानते हैं ।

बसी-सं. पु. [सं. वसिः] १ गृह, घर, निवासस्थान । (अ. मा.)

उ०—आयां बसियां आपणीं, ग्रीखम थई वतीत । १७३६ गुण चाळो लागो वरस, चाळो सरस सजीत । —रा. रू.

२ वस्त्र ।

[सं. वश्यः] ३ नौकर, चाकर, दास, अनुचर (परिग्रह)

उ०—१ रावळ नूं डूंगरपुर नेड़ोहोज ठोड़ पाधर में वताई तठै ऐ आपरा गाडा आंण वसी सूधा छोडिया । —नैणसी

उ०—२ ताहरा एक दिनै ऐ चढनै घूघरोट रा पाहड़ां मांहै राव मालदेजी री वसी हुती, तिकै नूं बंध कीवी । —नैणसी

५ जागीरदारों द्वारा लिया जाने वाला कर विशेष जो प्रजा की रक्षा करने के कारण लिया जाता था ।

६ वह व्यक्ति जो जागीरदार का विशेष कृपा पात्र होता था और सभी प्रकार के कर व लागों से मुक्त होता था ।

उ०—हुवै वसी रो वांणियो, पातर हुयै खवास । हुवै कीमियागार ठग, निध हर जावै नास । —बां. दा.

वि. वि.—उक्त कृपा व स्वतन्त्रता के साथ ही इसे जागीरदार की इच्छा का हर वक्त ध्यान रखना पड़ता था ।

७ बसने के लिये दी जाने वाली जागीरी, स्थान ।

उ०—सहसो तेजसी वरसिंघ जोधाउत्त री पोत्रो मेड़तीयौ वास राखीयो थो तिणनु रीया वसी नुं दीनी थी ।

—राव मालदे री बात

८ निवास ।

उ०—जैतो जोधपुर चाकरी करै। कूंपो सोजत चाकरी करै। सु जैतै री वसो बगड़ी मांहै। सु बगड़ी बीरमदे रै बांटै में आई। —नैणसी

[सं. वशि:] ८ अधिकार, कब्जा।

९ अधीनता।

१० मनमोहकता।

वि.—१ बसाया हुआ, २ आकर बसा हुआ, ३ वश में रहने वाला।

रू. भे.—बसि, वसो, बस्सी, वसि।

वसीकर—वि. [सं. वशीकर] १ वश में करने वाला।

उ०—मंत्र वसीकर महलो, वांणी बोयलियांह। कुरजड़ियां गरदन कहूं, कटा कोयलियाह। —पा. प्र.

२ मोहित करने वाला, मुग्ध करने वाला।

रू. भे.—बसीकर।

वसीकरण, वसीकरणि—सं. पु. [सं. वशीकरण] १ वश में करने की क्रिया या भाव।

२ एक मंत्र, जिसके प्रयोग से किसी को वश में किया जा सकता है। (तन्त्र)

३ अष्ट सिद्धियों में से एक सिद्धि। (ह. नां. मा)

४ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

उ०—आकरसण, वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवण हसणि लसणि गति संकुचणि, मुंदरी द्वारि देहरा सच। —वेलि

५ वश में करने का कोई साधन।

उ०—वाजित्र गरथ वसीकरण बीजा सहु अकयथ्थ। जिए चड़या दउ बलरइ, नरणि पसारइ हथ्थ। —व. स.

उ०—२ रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलियलित, वसीकरणि अमूढ़ लक्ष सड़ी। —व. स.

रू. भे.—बसीकरण, वसियकरण।

वसीका—सं. स्त्री. [अ. वसिका] अगर की लकड़ी।

वसीकौ—वि. [अ. वसिक] १ शून्य, रहित।

२ रीता, खाली।

[अ. वसीक:] ३ पेंशन पाने वाला।

[स. पु.] (१) ऋण पत्र। (२) दस्तावेज। (३) इकरार नामा।

४ सरकारी खजाने मे जमा कराया जाने वाला धन जिसका सूद जमा कराने वाले के सम्बन्धियों को मिलता है।

रू. भे.—बसीकौ।

वसीकृत—वि. [सं. वशीकृत] १ मोहित, मुग्ध।

२ वश में किया हुआ।

वसीटाळू—देखो 'विस्टाळू' (रू. भे.)

वसीटाळौ—१ देखो 'विस्टाळौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्टाळू' (रू. भे.)

वसीट्टी—सं. पु.—१ दूत।

उ०—पचे मिलि बात पतीठी, परगच्छी हुआ वसीट्टी। —कविकनक सोम

२ देखो 'वसीठी' (रू. भे.)

वसीठ—सं. पु.—१ संदेशवाहक, दूत।

उ०—हे सखी म्हारै पती कोई जोधार में मारण री इच्छा न होवै तद उणनें उर छाती में भाला री बूड़ी दे अटकावै-रोकै-पण काळ तो उठा सूं प्रांण लेण नें वसीठ दूत भेज देवै। —वी स. टी.

३ राज दूत।

४ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

रू. भे.—बसीठ।

वसीठी—सं. स्त्री.—१ वसीठ का कार्य।

२ संदेश लाने-लेजाने का कार्य।

रू. भे.—बसीठी, वसीट्टी।

वसीता—देखो 'वसित्व' (रू. भे)

वसीतुनीर—सं. पु.—तीर, बांण। (अ. मा.)

वसीभूत—वि. [सं. वशीभूत] १ वश में या काबू में किया हुआ, नियंत्रित, अधीन।

२ दूसरों की इच्छा के अधीन रहने वाला।

३ मोहित, मुग्ध।

रू भे.—बसीभूत।

वसीयत—स. स्त्री. [अ.] १ विदेश गमन या मरणासन्न व्यक्ति द्वारा अपनी सम्पत्ति के विभाग उपयोग के लिये की जाने वाली व्यवस्था।

२ मरणासन्न व्यक्ति का अपनी सम्पत्ति के व्यय एवं प्रबंध के लिए अंतिम आदेश, निर्देश।

३ मरने वाले का अंतिम कथन।

४ सम्पत्ति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला दस्तावेज।

रू. भे.—बसीयत।

वसीयतनामौ—स. पु. [अ. वसीयतनाम:] १ अपनी सम्पति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला कानूनी दस्तावेज।

२ इच्छा-पत्र।

बसीरौ–सं. पु. [सं. सिच क्षरणे+क्त=प्रवसिक्त या शीकृ सेचने+क्त =प्रवशीकित। भागुरी के मत से अ का लोप सिक्त अथवा शिकित=वसीकौ=बसीरौ] प्रजा ।

उ०—१ राव सुरतांण रै **बसीरा** रजपूता रा गांव छै, तिण ऊपर फौज १ पंलीजे ज्यूं रजपूत जुदा जुदा बिखर जाय, पछै सुरतांण नूं कूट मारिस्यां। —नैणसी

उ०—२ चौपदौ घण। सो ईयां री घण लोकां रा खेत खावै । **बसीरा** लोकांरा खेत ऊभा खाईजे। सु लोक बसीरौ भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार घालै । —नैणसी

बसीलौ–सं. पु. [फा. वसील:] १ आश्रय, सहारा ।

उ०—सावळ संत तणी सुण सांमी, ढळवळ सहज न धारै ढील । वचन उसीला तणो **बसीलौ**, वड दरबारां तणो वकील । —ओपो आढौ

२ सम्बन्ध, लगाव।

३ साधन, जरिया, माध्यम ।

उ०—अंग अमोला हो लाल, तुझ नइ दीठां आणंदा । मुगति **बसीला** हो लाल, समता सुरतरु कंदा । —वि. कु.

४ उपकरण ।

५ बिचौलिया ।

रू. भे.—बसीलौ ।

बसीवांन–वि. [सं. वसि+प्र. वत्] १ बसने वाला, निवास करने, वाला, निवासी ।

२ वंश परम्परा के अनुसार जो स्थायी रूप से निवास करता हो ।

रू. भे.—बसीवांन, बसैवान, वसवांन।

बसुंधरा–स. स्त्री. [सं.] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—ए'क तीन वसत निभाइयी विनायक, पवन-पांणी-**बसुंधरा** । —लो. गी.

रू. भे.—बसदरा, बसंघरा, बसुंधरा, वसघरा, वसुघर, वसुघरा।

बसु–सं. पु. [सं.] १ धन, दौलत, द्रव्य। (अने.)

२ प्रकाश, तेज।

३ देवता, सुर ।

४ रत्न ।

५ स्वर्ण, सोना ।

६ एक ही श्रेणी के आठ देवताओं का एक गण (समूह)

उ०—तहां वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मंत्र-बळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इंद्र आदि देवता अड़सठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु, अस्ट परवत दसों दिग्पाल आदि सैं आवाहन करि आहुति कर प्रसन्न किया । —सिंघासण बत्तीसी

वि. वि.—आठ देवताओं के नाम इस प्रकार है:—आप (अह), ध्रुव, सोम, धर या धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास ।

७ कुबेर । (ह. नां. मा.)

(८) इन्द्र । (९) मेघ, बादल । (ना. डि. को.) (१०) सूर्य । (११) विष्णु । (१२)शिव,रुद्र । (१३)जल, पानी । (१४) वायु । (१५) प्रजापति । (१६) तालाब, सरोवर (१७) महद्‌गण । (१८) पदार्थ, वस्तु । (१९) लवण विशेष । (२०) अगस्त्य का वृक्ष । (२१) वक-वृक्ष । (२२) छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ३ गुरु व १४६ लघु होते हैं। (२३) साधु पुरुष, सज्जन । (२४) अधिकार, कब्जा, वश । (२५) आठ की संख्या ।

(डि. को) (२६) दीप्ति, चमक । (अनेका.) (२७) अग्नि, आग । (अ) (२८) किरण, रश्मि । (२९) पृथ्वी, धरती ।

उ०—कछव कछवाह वांसो पलट करै किम, **बसु**-ह वो मांड बिहूं भडां वासै । —मिरजा राजा जयसिंह रौ गीत

(३०) उषा । (३१) अश्वी । (३२) इन्द्र की अमरापुरी । (३३) कुबेर की अलका पुरी । (३४) अमरापुरी व अलका पुरी में बहने वाली एक नदी । (३५) दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम । (३६) मोलश्री । (३७) वृद्धि नामक ओषधि, जडी । (३८) लगाम, रास बागडोर ।

वि. —१ जो सब में निवास करता हो ।

२ जिसमें सबका निवास हो ।

३ अधीन, अवलम्बित ।

क्रि. वि.—अधिकार में, कब्जे मे, अधीन ।

उ० -- माल-बित सारौ सभाळनै हाथ **बसु** कियो । —नैणसी

रू. भे.—बसु, बसू, बिसू, वसुह, वसू ।

बसुचरण–स. पु.—डगण के चतुर्थ भेद का नाम, इसमें आदि गुरु, फिर दो लघु (ऽ।।) होते हैं ।

बसुद–सं. पु. [स. वसु+प्र. द.] १ विष्णु । २ कुबेर ।

बसुदरम–सं. पु. [स. वसुधर्म] इन्द्र ।

रू. भे.—बसुदरम ।

बसुदा—देखो वसुधा' (रू. भे.)

उ०—'जुजा' सुतन जमायौ जबरौ, सत्रहां ऊपर इसौ सधीर । **बसुदा** संग वळा नै वादै, वांदै वळी तोनै नर वीर ।

—ठाकुर इंदरसिंह रौ गीत

बसुदेव–सं. पु. [स] श्रीकृष्ण के पिता एवं यदुवंशियों के राजा ।

(ह. नां. मा.)

उ०—अवळा बाळक एक, अरज करूं ऊभौ अठै । टाबर ध्रुव री टेक, तैं राखी **बसुदेव** तण । —रांमनाथ कवियौ

रू. भे.—वसुदेव, वसुदेव, वसदे ,वसदेव ।

वसुधर, वसुधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.) (डि. नां. मा., नां. मा.)

वसुधान, वसुधा—सं. स्त्री. [सं. वसुधा] पृथ्वी, धरती, धरा । (अ. मा., डि. को., डि. ना. मा., नां. डि. को., ना. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ हिन्दै मरै खळ हाल खगधारा कुळ खोवणा । मूंपै हेकण साथ, सिर बिन घर वसुधा सुजस । —बां. दा.

उ०—२ दत देता धन मागतां, जगि सुणता जसवास । वसुधा इण पर वौळिया, नव कोटी मट-माम । —गु. रू. बं.

रू. भे.—वसुदा, वसुधा, विसुधा, वसधा, वसुध्धा, वसुह, वसुहा, वसूधा ।

वसुधाधर—सं. पु. [सं.] १ विष्णु ।

२ शेषनाग ।

३ पर्वत ।

वसुधाधिप, वसुधाधिपति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे.)

वसुधाभोख—सं. पु. [सं. वसुधाभुक्] पानी, जल । (अ. मा.)

वसुधापति—सं. पु.—राजा, नृप ।

रू. भे.—वसुधाधिप, वसधापत, वसधापति, वसुधाधिप, वसुधाधिपति ।

वसुधारा—सं. स्त्री. [सं.] १ कुबेर की राजधानी, अलकापुरी ।

२ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

३ जैनों की एक देवि, शक्ति ।

वसुधेस—सं. पु. [सं. वसुधा+ईश] १ ईश्वर ।

२ राजा, नृप ।

रू. भे.—वसुधेस ।

वसुध्धा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—वसुध्धा वट्ट । पैमाळ पहट्ट । गोधूळ गरद्द । पाखै गय-मद्द । —गु. रू. बं.

वसुपय—सं. पु.—डगण के चतुर्थ भेद का नाम । (र. ज. प्र.)

वसुप्रसून—सं. पु. [सं. विसप्रसून] १ कमल ।

रू. भे.—वसूप्रसून ।

वसुमता, वसुमति, वसुमती, वसुमत्ती—सं. स्त्री. [सं. वसुमति] पृथ्वी, धरती । (डि. ना. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ डारण समर अडोल, मारण चढ़्यो मेवासिया । तिण कारण खग तोल, बोल उबारण वसुमती ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंह री बात

उ०—२ रजनीचरण करन निरमूळहि, सारदूळ चढि गहिय त्रिसूळहि । जगपति जनिय हलिय वसुमत्ती, लोकरनी जयजयति सकत्ती । —मे. म.

रू. भे.—वसुमति, वसुमती, वसूमती ।

वसुरेता—सं. पु. [सं. वसुरेतस्] १ अग्नि ।

२ शिव ।

वसुरोधो—सं. पु.—शिव ।

वसुह—१ देखो 'वसु' (रू. भे.)

उ०—जिम धायौ जोगेस, वसुह दिख ज्याग विधूसण । जिम धायौ ग्रह बांण, पत्थ गौ ग्रह छाडावण । —गु. रू. बं.

२ देखो 'वसु' (२९) (रू. भे.) (ना. मा.)

उ०—परचंड पराक्रम दाखवै, पित्त बीवनै पच दिन । 'गजसाह' वसुह राखी पगै, डहै भुज्ज डिगियौ गिगन । —गु. रू. बं.

वसुहा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—१ बांमा देवीव अर सुत्ति मंजुल मुत्ताहल । सयल कलावलि कलिकाय कलिमलि वसुहा हल । —स. कु.

उ०—२ वसुहा वर वड वीर धीर दुज्जणजण गंजण, सुभट पणइ सुरतांण स्रीय महिमूद मनरंजण । —व. स.

वसूंलो—देखो 'वसूलो' (रू. भे.)

वसू—देखो 'वसु' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वडी विपत सह वीर, वडी क्रीत खाटी वसू । धरम-धुरंधर धीर, पोरस धिनो प्रतापसी । —दुरसो आढौ

उ०—२ धुजा फरक्की धूहडां, बहरक्की गज वोह । वसू थरक्की काबलौ, मुरधर छक्की मोह । —किसोरदांन बारहठ

उ०—३ पछै पताई रावळ रै साळो सइयो वांकलियो तिकै रो वडो मामलो, वडो इतबार गढ़ी री कूंची तै वसू । —नैणसी

उ०—४ कटोरा माहै फूल लीजै छै । बाकरा होसनाकां वसू कीजै छै । —रा. सा. सं.

उ०—५ तिण कारण मरवौ भलो रे, तिरसारत इण ठांम । पिण न हुवा तेह ना वसू रे, लोक वदै सहु ग्राम । —वि. कु.

उ०—६ मुरधर संखोधार, लियौ लोहां बळि ईडर । वसू लाख छत्तीस, पूठि कन्नौज वडो घर । —गु. रू. ब.

वसूधा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—वसूधा प्रगट दीसती वेस्या, भूकै भूप भुजंग सु भूठ । —ध. व. ग्र.

वसूप्रसून—देखो 'वसुप्रसून' (रू. भे.) (अ. मा.)

वसूमती—देखो 'वसुमती' (रू. भे.) (अ. मा.)

वसूल—वि. [अ.] १ वसूली करने पर जो प्राप्त हुआ हो, जो लिया गया हो, लब्ध ।

२ जो व्यव या श्रम के प्रति फल में मिला हो ।

सं. पु.—१ आय, प्राप्ति ।

२ प्राप्ति की रकम ।

बसूली-सं. स्त्री. [अ.] १ वसूल करने या उगाही करने की क्रिया या भाव ।

२ लोगों से प्राप्य धन लेकर एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

वि.—जो वसूल के लिये हो ।

रू. भे.—बसूली, बसोली ।

बसूलौ-सं.पु. [सं. वासिः] १ लकड़ी छीलने का, बढ़ई का एक औजार ।

उ०—रदोही होवै मती, मती बसुलौ मित्त । होवै करवत मारिसो, बांटण-खाटण वित्त । —अज्ञात

२ ईंट काटने का एक औजार विशेष ।

रू. भे.—बसूलौ, बसेलौ, बसोलौ, बांयलौ, बांसोलौ, बांहोलौ, भसालौ, भासोलौ, भोयलौ, भोहलौ वसूलौ, वसोलौ, वांयलौ, वांसोलौ, वांहोलौ, वासूलौ ।

अल्पा.—बसूली, बसोली, बांसोली, बांहोली, वांयली, वांसोली ।

बसेक, बसेख—देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ पाबूजी अर हरियो थोरी असवार हुयनै सांढियां देने कोळू आया । ताहरां बसेक हुवौ । —नैणसी

उ०—२ दुवार है मरब्ब दाम, जै बसेख दुज्जयं । अतीत ग्रेह तप्प आय, प्रीत हूंन पुज्जय । —सू. प्र.

बसेखौ—देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे.)

उ० मुजरो छै पारस मरदां री, बीरत अंग खत्रवाट बसेखौ । आय जा झटका ईसर सूं, दोय दोय बटका देखौ ।

—पहाड़खां आढौ

बसेरौ—देखो 'बसेरौ' (रू. भे.)

बसेस—देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—प्रिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पूंगळ देस । ढोला म्हां बिच मोकळा, वासा घणा बसेस । —ढो. मा.

उ०—सकारां चुरसां थारां जांणीयो जेहान सारां. बाखांणीयो छत्र धारां जोड़रां बसेस । आडंबरा भड़ाळां सावरा साज ओढ़ा-ड़ीया, अगांछाळां वागंबरां पूजीया महेस ।

—करणजी मईयारीयौ

बसोख-सं. पु [स. विशिखा] राजमार्ग, राजपथ, ग्रामरास्ता ।

उ०—बाजार हाट वाटा बसोख, इण भात दांन द्रव्र ओपत अनोख । हिम मणि जटत सब ग्रह होय, पुर अवर वताओ जोड़ कोय ।

—शि. रू.

बसोलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

बसौ-क्रि. वि.—१ वैसा, तैसा ।

उ०—आप पोढिया था सो हूं तो म्हारै मन री खुसी सूं जसौ दरसाव देखियो बसौ कहियो । —कुंवरसी सांखला री वारता

२ लिये, निमित्त, हेतु ।

बस्त-स. पु. [सं. वस्तु, बस्त] १ वासा, डेरा ।

२ गमन ।

३ मांगना क्रिया ।

४ घायल करना, मारना क्रिया ।

५ नाभि के नीचे का हिस्सा, मूत्राशय ।

६ परवस्ती, कृपा ।

उ०—अंतरजांमी, तूं अछै हो लाल, वाल्हेसर सुबीदीत जि० । साहिब बस्त तिका करौ हो लाल, जिण करि करि आवै चीत जि० ।

—वि. कु.

[सं. वस्तः] ७ बकरा ।

[अ.] ८ बीच का भाग, मध्य ।

९ देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—१ जन हरिदास मन गहि पवन ब्रह्म अगनि विसवन दहौ । अगम बस्त अतरि अगह तहां उनमनि लागा रहौ । —ह. पु. वां

उ०—२ मिळतां रांण घरै महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा । जिती बस्त नित अम्रत जोड़ां, राजै नव नवभांत रसोड़ां ।

—रा. रू.

उ०—३ घणीं प्रीति सूं, अंबिकाजी आपणा हाथ सूं पूजि । जु बस्त आपणा मन नइ प्यारी थी । सु वस्त अपणैं हाथि की । पूजा कौ फळ हाथि आयौ । —वेलि टी.

उ०—४ जे नगर मांहइ दांनसाला, पौसधसाला, धरमसाला, गढ मंदिन प्रकार, चुरासी चुहुटांणी हटस्रेणी, मांहइ बस्त संपूरण वरतइ । —व. स.

उ०—५ संचा बस्त अनेको तणा, का न रहइ मननी कांमिणा । ऊंचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ।

—प. च. चौ.

बस्तपांचम—देखो 'वसंतपंचमी' (रू. भे.)

बस्तर—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—घर घर ग्वालन दही बिलोवै, कर कंगन झनकारै । बस्तर झूमण तन पर धारो, पनियां पेच संवारै । —मीरां

बस्तवत-वि. [स. वस्तु-वत] जो वस्तुओं से भरपूर हो, वस्तुओं से परि-पूर्ण, वस्तु युक्त, सामग्री युक्त ।

उ०—बन ते जे ब्रक्षवंत, नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवंत, देस ते जे प्रजावत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे सुघवंत, हाट

ते जे बस्तवंत, वचन ने जे सत्यवंत मम्य ते जे विनयवंत, प्रशांत ते जे बुद्धिवंत, राजा ने जे न्यायवत, तिम धरम ते जे दयावत ।
—व. स.

बस्ति—सं. स्त्री. [सं. वस्तिः] १ निवास, ठहराव ।
२ नाभि के नीचे का पेट का भाग ।
३ कोष ।
४ मूत्राशय ।
५ पिचकारी ।
६ योग की एक क्रिया जिससे उदर-शुद्धि होती है ।
उ०—नाभि प्रमांण सु वारि मे, उत्कट ग्रासन लाय । नळि दे गुद मंकोच कर, वारि उदर ले जाय । कर सुनौळि फिर त्याग दे, यह ही बस्ति कहाय । बात पित्त कफ जन्य जे, गुल्मादिक गद जाय ।
—स्वामी नारायणदास
रू. भे.—बसति, बसती, बसत्ती, बस्ति, बस्ती, वस्ती ।
७ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)

बस्तिकरम—सं. पु. [सं. वस्ति-कर्म] १ पिचकारी देने की क्रिया ।
२ पेट की आंतें साफ करने या रेचन करने के लिये गुदा मार्ग से पानी चढ़ाने की क्रिया (एनिमा) ।
३ उदर शुद्धि के लिये की जाने वाली योग-साधना ।
रू. भे.—बस्तिकरम ।

बस्तिमळ—सं. पु. [सं. वस्ति-मलं] पेशाब, मूत्र ।
रू. भे.—बस्तिमळ ।

बस्ती—१ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)
उ०—वही साहिबी हुती । तद सैंहर बस्ती घणी हुती । हमें ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै । मुदो वस्ती रो वांणियां ऊपर छै ।
—नैणसी
२ देखो 'बस्ति' (रू. भे.)

बस्तु—सं. स्त्री. [सं.] १ वह चीज या पदार्थ जिसका अस्तित्व हो, सत्ता हो, जिसको देखा व छुआ जा सकता हो, जो अपनी वास्तविकता रखता हो ।
२ सारवान चीज, धन, दौलत ।
३ साधन व सामग्री जिससे कोई चीज बनती हो ।
४ सार, तथ्य ।
५ खाका, ढांचा ।
६ श्रम द्वारा निर्मित कोई चीज ।
७ विषय-वस्तु जिस पर वाद-विवाद व विचार विमर्श किया जा सकता है ।
८ किसी नाटक की कथावस्तु, कथानक ।
रू. भे.—बसत, वस्त, बस्तु, बुसत, बुस्त, वत्थु, वसत, वसतु, वसत्त वस्त, वुसत, वुस्त ।
अल्पा.—बसतड़ी ।

बस्तुनिरदेस—सं. पु. [सं. वस्तु-निर्देश] नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमे कथा का कुछ आभास दिया जाता है ।

बस्तो—देखो 'बस्ती' (रू. भे.)

बस्य—सं. पु. [सं. वश्य] १ अनुचर, नौकर, दास ।
२ देखो 'वस्या' (रू. भे.)
उ०—कहिन बहिन बाई कुण नई एह जाई, करिन मझ पसाई ताहरउं हउ जिभाई । कहइ हिव सुदरसणा बस्य देवंग त्रस्णा, मझ तणी ए सिलिद्री स्रीसमांणी पुरिद्री ।
—सालिसूरि

बस्यकरम—सं. पु. [सं. वश्यकर्म] ७२ कलाओं में से एक ।

बस्या—सं. स्त्री. [सं. वश्या] आज्ञा कारिणी स्त्री ।
रू. भे.—वस्य ।

बस्त्र—सं. पु. [सं.] १ ऊन, रुई, रेशम आदि के धागों से बुन कर बनाया हुआ कपड़ा जो अनेक प्रकार से उपयोग में आता है । (उ. र.)
२ शरीर पर धारण करने का कपड़ा, पोशाक, परिधान । (उ. र.)
रू. भे.—बसत्र, बस्तर, बस्त्र, वसत, वसतर, वमत्त, वसत्र, वस्तर ।
अल्पा.,—बासतो, बामत्थो, बास्तो ।

बस्त्रकार—सं. पु. [सं.] १ वस्त्रों के आगार का अधिकारी ।
उ०—उद्दीसकार धृतिकार रूपकार, करणीकार रसकार क्षीरकार सस्यकार बस्त्रकार विभूसणकार, पुंतार, अस्त्रसिक्षाकार, रथकार ।
—व. स.
२ वस्त्रों का व्यापारी, बजाज ।

बस्त्रगांठ, बस्त्रगांठि—सं. स्त्री. [सं. वस्त्र-ग्रंथि] १ कपडे की गांठ, बडल । (उ. र.)

बस्त्रगोपना—सं. पु.—१ वस्त्रों की रक्षा ।
२ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

बस्त्रपरिधायक—वि. [सं.] वस्त्र धारण कराने वाला, पहनाने वाला ।
उ०—गज वैद्य, वृत्रिवायक, वहीवायक, ग्राचायक, त्रिहायक अंगरक्षक बलबक वस्त्रपरिधायक, काठिया लोहटिया
—व. स.

बस्त्रागार—सं. पु. [सं. वस्त्र+आगार] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहां कई प्रकार के बहुत से वस्त्र हो, वस्त्र भण्डार ।
२ घर का वह कक्ष जहा पहनने के कपड़े रहते हो (ड्रेसिंग रूम)

बहग—देखो 'विहग' (रू. भे.)
उ०—रग रळा दह नमै अढग मै जगन रग, कमध अणभग उछरग कीधो । सोहीयो पलग जग हुचै बान्हन मुन, दुगम उतवंग वहंग त्याग दीधो ।
—ठाकुर जोगीदास री गीत

वहंगपत वहंगपति—देखो 'विहंगपति' (रू. भे.)

उ०—थाळ सारंग न खेग संख कंज पलंग थत, वहंगपत न पूगो चाल बासं। हाल ऊगो लगा नहंग छबतो हरी, पाल अरधग गयो मतंग पासं। —हुकमीचंद खिड़ियो

वहंगराज, वहंगराजा—देखो 'विहंगराज' (रू.) भे·

उ०—१ पतंग ऊगतं रहे थाकै **वहंगराज** पंथ, जाय गग बमुह खाय नहंग भालो। सेस घर तजै पंथ भंजै वागां समग, देत्रगर डगं तो चगं 'दोलो' —नाथजी बारहठ

उ० —२ राहां सकाजा अळगां सग्र दौड़ में **वहंगराजा**। ताव तेज भोड में नहंग राजा तास। रूप रंग घाट थाट देख रीभै रावराजा, वाग माहाराजा असो मोजीयो व्रहास। —हुकमीचंद खिड़ियो

वहंडणो, वहंडबो—देखो 'विहडणो, विहंडबो' (रू. भे)

उ०—जद वारग कहै 'जोगावत', घड़ा वहंड सुरलोक गयो, मह जोधां सळखां रड़माळा, कमदा कुळ ऊजळो कियो। —हर्टसिंग पातावत रो गीत

वहंडणहार, हारो (हारी), वहंडणियो—वि०।

वहंडिग्रोड़ो, वहंडियोड़ो, वहंड्योड़ो—भू० का० कृ०।

वहंडोजणो, वहंडोजबो—कर्म वा०।

वहंडियोडो—देखो 'विहंडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वहंडियोडी)

वहंत—स. पु. [सं. वहन्त] १ हवा, पवन। (२) बच्चा।

वह—सर्व [सं. वह्] कर्तृ कारक प्रथम पुरुष सर्वनाम जो किसी संदर्भ का अनुमान देता है।

सं. पु [स. वहः] १ परोक्ष या दूर की वस्तुओं का संकेत करने का एक निर्देशकारक शब्द।

२ समर्थन, सहमति।

३ लेजाने की क्रिया।

४ वाहन, सवारी।

५ घोड़ा।

६ हवा, पवन।

७ मार्ग, सड़क।

८ नद।

९ बैल का कंधा।

१० कंधा, स्कंध।

११ चार द्रोण भर का एक नाप।

१२ देखो 'वाह' (रू. भे.)

उ०—हरामखोरां नूं नेड़ा आवण देवो। जाहरां तीर-**वह** मांहे आसी, ताहरां म्हे हंकारो करसां। —राजा नरसिंघ री वात

रू. भे.—वह, वहे।

वहकणो, वहकबो—देखो 'महकणो, महकबो' (रू. भे.)

उ०—मंच प्रति मंच तणी रचना हुई। स्वरगपुरी तणी सोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुस्प परिमल **वहकई** नाचई पात्र। राजभवन आवई अक्षत पात्र। —वाग्विलास

वहचरा, वहचराय—देखो 'बहचराय' (रू भे.)

उ०—बहीचरा देवी अरथ कुकुकटवहणी लोक **वहचरा** कहै। —बां. दा. ख्यात

वहजावणो, वहजावबो—देखो 'वजाणो, बजाबो' (रू. भे.)

उ०—रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गजै कूंण गिणावै। खांत लगै केता खळ खाधा, वळै दांत **वहजावै**। —र. ज. प्र.

वहण—वि.—१ वार करने वाला, मारने वाला।

२ चलने वाला, गमन करने वाला।

उ०—उड्डि महाभर कंध, भार भलपण संब्बाहै। वेगड वांमी **वहण** अथी आभो पति साहै। —गु. रू. बं.

३ धारण करने वाला।

सं. पु. [सं. वहनं] १ वाहन, सवारी।

२ रथ।

उ०—जाय जोगण बंद जाजा, प्रजुण वन्ही करै प्राजा। **वहण** आवध होम बाजा, दपि दराजा रोस। —र. रू.

३ नाव, नौका।

उ०—**वहण** पोत (भव महण लंघावण, तरण उदय हरि नांम तराज)। —ह. नां. मा.

४ नदी, सरिता।

उ०—जुग जवदा जोड़या जिम **वहण** वहाई। —केसोदास गाडण

५ समय। (अ. मा.)

६ वार, प्रहार।

७ चाल, गति।

८ देखो 'बहन' (रू. भे)

रू. भे.—बहण, वहणो।

वहणी—सं. स्त्री.—१ चलने की क्रिया या भाव।

२ आचार-व्यवहार, चाल-चलन।

३ बर्ताव।

४ तेज चलने वाली, शीघ्र गामी।

५ चाल, गति।

६ बहने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—**बहणी**, वहनि, वहनी, वहिणि, **वंणी**।

वहणो—वि. [सं. वह्] (स्त्री. वहणी) १ चलने वाला, गतिशील।

२ घूमने वाला, टहलने वाला, विचरण करने वाला ।

उ०—भार प्रठारा पसरि न पोर्व, नभ बहणि पवन धरती नहिं सोर्व । निरभै भया भरम सब भागा, ज्यौ की डोरी उनमनि लागा ।
—ह. पु. वां.

३ तेज चाल वाला ।

४ बहने वाला ।

बहणो, बहबो–क्रि. अ. [सं. वहनं] १ चलकर कहीं जाना, गमन करना, चलना, किसी की ओर निरन्तर चलना ।

उ०—१ धवळ न घटकं घुर रहै, कासूं पांणी कीच । इण री जननी तारही, वैतरणी रै बीच । —बां. दा.

उ०—२ मारवणी मनि रंगि, वाटइ तिणि प्रावी वहइ । कुंझौ एकणि सग, तालि चरती दिट्ठिया । —ढो. मा

उ०—३ वायक वांमांनां सुणी, आकासमारगि प्रणसरी । वेगि वही नि तं गयु रै हंस नलरांनी पुरी । —नळाख्यान

उ०- ४ बहै क बाज पत्थए, अकास में क रत्थए । सीरम साह नरसहै, विवांण उड्डिया वहै । —गु. रू. बं.

२ पास से गुजरना, निकट से होकर चलना ।

३ द्रव्य पदार्थ या पानी का धारा रूप में बहना, प्रवाहित होना ।

उ०—नठै समुद्र मांहे पैठा । पैस प्रर एक वडौ पाटलौ तिण ऊपर भांतेज नूं बैमांण प्रर पाटला नै धकाय प्रर बहू तैपाणी माहे वहाय दियौ । —नैणसी

मुहा.—बहती गंगा मे हाथ धोणा=अवसर का लाभ उठाना, सहज मे ही कार्य साधना, अवसरानुसार परोपकार करना ।

४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहना, प्रवाहित होना ।

उ०—ऊभळं नीर पताळा एहा, जळनिध प्रबळ घटा घण जेहा । राजा दास कुसळह्व थट रहिया, वैरी सकळ सुजळ महि वहिया ।
—सू. प्र.

५ इधर-उधर घूमना, भटकना ।

६ गतिमान होना ।

७ घूमना, मडराना ।

उ०—१ रहियौ रवि कौतिग ताण रत्थ, सिव सुरां कोडि तेतीस सत्थ । अपछर विवाण ऊपरि बहत, हुय भौमर नारद हड-हडंत ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ वहै क बाज पत्थ ए अकास मे क रत्थ ए । सीरम साह नरस है, विवाण उड़िया वहै । —गु. रू. बं.

८ आचरण करना ।

उ०—रहणो एकण रग, बहणो वीरत ढग विच । सचा स्यांम प्रम संग, ताहरै अंग 'प्रतापसी' । —जैतदान बारहठ

९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चल पड़ना ।

उ०—प्रचंड गोळं नाळ प्रचंड, बहंतं हैकंपियौ ब्रहमंड । जुडंत सुरंम घनै जिहंगीर, तिडां किरि प्रबर उडुं तीर ।
—गु. रू. बं.

१० गोली, तीर आदि का छूटना, निकलना ।

११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन करना ।

१२ कीर्ति या विरुद धारण करना ।

१३ स्वाभिमान व अभिमान रखना ।

उ०—नलै जांण्यं 'हूं जीतीस सही, ए प्रखम हारवा प्राव्यु प्रहीं ' कहि 'भालण' 'अभिमांन ज बहि, परि काल तणी गति को नवि लहि ।
— नळाख्यांन

१४ घुसना, धंसना ।

उ०—कह्यो–'पूंहो' । यूं कही नै राव बीजी कांनी जोयौ । तरै लाडक राव नूं पाछा सूं झटको वाह्यौ । राव रै मोरै लागौ । घणो बूहो । सु राव लाडक नूं गाबड़ सूं झालनै नीचं दियो । —नैणसी

१५ कूप का पानी निकाला जाना ।

उ०—जावतां एकै जायगां अरहट बहतो दीठो तेथ आया । आय अर घोड़ा पाया । घोड़ां रा मुंह छांटिया । हाथ धोया । आंख्यां छांटी अर अमल कियो । पांणी पियो । —नैणसी

[सं वह्] १६ प्रचलित होना, फैलना ।

१७ झरना, टपकना ।

उ०—पटा बहंत मद एं, (कि.) घरा मं जळद एं । नेजा बरक्क फब्ब एं (सु) ताड़ ब्रिक्ख पब्ब एं । —गु. रू. बं.

१८ खेत में अनाज बोया जाना ।

उ०—मुहारा रै खड़ीण री उनाव जैसळमेर सूं कोस ६ तथा ७ दिखण नूं वडी ठोड़ कोस ५ माहे उनाव भरीजै । पावसी रा भाखरां रो पाणी प्रावै । माहै गोहूं मण ५००० बीज बहै तितरो भोग प्रावै । पाणी निठै जदी वेरा मांहै २० तथा २५ बयायोड़ा, पाणी घणो मोठो —नैणसी

[सं वध] १९ शस्त्र प्रहार होना, आघात होना, वार होना ।

उ०—१ वाहै खग 'केहर' रोस वधत, वको खग 'केहर' सीस बहंत । फिरै खळ गेहरिया जिम फाग, खिबै घण 'केहरिया' पर खाग ।
— सू. प्र.

उ०–२ सग्राम खडग्ग वाहत सनद्ध, वगं पळ तडळ ऊवळ बद्ध । वडं जग्दंत जडाळ बहंत, तुटन्त गडा किरि साक्खि तति ।
—गु. रू. बं.

२० वीर गति प्राप्त होना ।

उ०—बारा दुहा अभिनमं वीरम, कायर नह जिम कोध किसा ।

बहि दुरवेस दुरंग कीयो बसि, दीन्हो बहियं दुरवेसां ।

—दूदो बारहठ

२१ उछलना ।

उ०—विपरीत विस्सम घात, फिरि बांण बजहे पात । वरजाग बूंग बहति, फिरि ग्रगि द्रस्टि हुवंति । —गु. रू. बं.

२२ वध करना, मारना, समाप्त करना ।

उ०—कुंग्रर पयंपै 'केहरि', करि मोसूं रिगताळ । 'गोइंद' हूंतो साथि मो, मैं बूहो 'गोपाळ' । —गु. रू. बं.

उ०—२ ऊधम किर राळै घर ग्रदर, बाग ग्रसोक लांगडै वांनर । दहुवै जुवां भड़ां खळ बहिया, वीरोचन ग्रंमर दळ बहिया ।

—सू. प्र.

उ०—३ केवी भरड़े वाहि कटारी, केवी दिम उठियो कहै । वळै किणी रा पिता बहै तूं, वळै किणी रा चचा बहै ।

—राठौड़ भरडा बूडावत री गीत

उ०—४ बळ थियो दित हरणाख्य ग्रप्रबळ, तेज मीहर घर रसातळ तांम । ब्रह्म पुकार रघुपत करण मुख कहै । गरुडधुज विप धांम '''गिड़, प्रळय जळ मग गंध सुध पड़ । ग्रांग घरघर देत ग्रणघट, विकट ग्रर बहै । —र. ज. प्र.

२३ प्रहार करना, वार करना, ग्राघात करना ।

२४ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन करना, धारण करना ।

२५ धारण करना ।

उ०—हुं निज बीती हो बात मो दाखवं जी, जांणउ छउ जिनराय । तारक विरुद हो बहियइ ग्रापणो जी, बांह ग्रह्यांनी लाज । —वि. कु.

२६ लाद कर ले जाना, ढोना ।

उ०—करणराइ ग्रापणी जीभइं घोडउं बाध्यउ, विक्रमादित्य काग वाधउ पुण ग्रजरामर न हुउ, नलिराइ रसोइ पची, हरिस्चंद चांडाल तणइ घरि पांणी वहघउं, पुरुसरांमि जननीबधु कीधउ ।

—व. स.

बहणहार, हारो (हारी), बहणियो—वि० ।

बहिग्रोड़ो, बहियोड़ो, बहघोड़ो—भू० का० कृ० ।

बहीजणो, बहीजबो—भाव वा०/कर्म वा० ।

बहणो, बहबो, बहवणो, बहवबो, बुवणो, बुवबो, बुहणो, बुहबो, बूहणो, बूहबो, बे'णो, बे'बो, बेवणो, बेवबो, बंणो, बं'बो, बंवणो बंवबो, बंहणो, बंहबो, वहांणो, वहीबो, बहेणो, वहेबो, बे'णो, बे'बो, बं'णो, बं'बो, बंवणो, बंवबो—रू० भे० ।

बहत-सं. पु. [स. वहतः] १ यात्री ।

२ बैल ।

रू. भे.—बहत, बहत्त ।

बहतिक—१ देखो 'वहित्रिक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

देखो 'बोहित्त' (रू. भे.)

बहतीवांण-सं. पु.—१ सीमा में होकर चलने का महसूल ।

उ०—बीकानेर रै देस था वहै तिणनूं रु० ।।।) देस में बहतीवांण नूं लागै । घोड़ै १ दीठ रु० ४ बहतीवांण कारवांन नै लागै सरब रु० १५००० री [ढोड़ बरस १ री तुलावट बिकरी । —नैणसी

२ देखो 'वंतियांण' ।

बहत्तर, बहत्तरि—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

उ०—पातिसाह ग्रजमेर, ग्राप ग्रायो गुडि पक्खरि, सतरिखांन सीटिया, ग्रनै उबरा (व) बहत्तरि । —गु. रू. बं.

बहत्रक—देखो 'वहित्रिक' (रू. भे.)

बहद—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—है वह होयै सेल थारी हद, बहद खटकै पंच बखत । लोह जसो दूखै नह लागो, ग्रण लागो दूखै ग्रखत । —सगरांम सांदू

बहन-सं. पु. [सं.] १ ग्रहण करने या धारण करने की क्रिया या भाव

२ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी सम्भालने की क्रिया या भाव ।

३ भार या बोझा लादकर लेजाने या ढोने की क्रिया ।

४ सवारी ।

५ नाव या बेड़ा ।

६ ध्वजा ।

७ खभे के नौ भागों में से सब से नीचे वाला भाग (वास्तुकला)

८ देखो 'वह्नि' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

९ देखो 'बहन' (रू. भे.)

रू. भे.—बहण, बहन, वहण ।

बहनट—देखो 'ब्रहनट' (रू. भे.)

बहनि, बहनी—१ देखो 'बहणी' (रू. भे.)

२ देखो 'वहन्य' (रू. भे.)

उ०—जिण न्रप बहनि सुजाव क्रतंजय । जेण सुजाव नरेस रणंजय

—सू. प्र.

३ देखो 'वह्नि' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ग्रडडाट नाद वैराट ग्राज, घट्ट जांणि दूजो घड़ै । वरसाळ झाळ गोळा बहनि, प्रळैकाळ छोळा पड़ै । —सू. प्र.

बहनीसिखा—देखो' वह्निसिख' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बहन्न, बहन्नि—१ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

उ०—१ कपि जेम सुदिढ़ पइ तीख कन्न । बाजिन्न जेम उन्हद

बहन्न । माहमाह दीयउ वाण माहि । पछै गर चढियउ पट्ट माहि
—रा. ज. सी.

उ०—२ केसरि रुधिर मार्थाहि वहि, वाउलि कि वहिन मागउ
बहन्नि । बीरहर राजा ए वखाण, आशीर्वाद सीतउ छिम जाण ।
—रा. ज. सी.

२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

बहन्य-सं. पु.—एक सूर्य वंशी राजा, जिसका पुराणों में शुद्ध नाम वहि मिलता है । दूसरा नाम धर्म भी मिलता है ।

उ०—अ सुत अन्द भोज जगनाहर । अन्दभोज सुत **बहन्य** अनिवर ।
—सू. प्र.

रू. भे.—बहनि, बहनी ।

बहम-सं. पु. [अ.] १ किसी प्रकार के अनिष्ट या हानि के प्रति मन में उठने वाली निराधार कल्पना, संभावना या धारणा ।

२ भ्रम, भ्रान्ति ।

३ शक, संदेह, शंका ।

उ०—दरबार तो आप रै माथै पूरा मेहरबान है । आप नै नाराजगी रो फकत **बहम** है । आप निसंक होयनै किलै पधारो ।
—गमरचूनड़ी

रू. भे.—बहम, वेम, वें'म, वें'म ।

बहमी-वि. [अ.] १ बहम करने वाला, शक करने वाला ।

२ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला, शक्की मिजाज ।

रू. भे.—बहमी, भरमी, वैमी ।

बहरणौ, बहरबौ – देखो 'बैरणौ, बैरबौ' (रू. भे.)

उ०—मोरगजी महाराज था जन गजा हर का । करवत हत्थां **बहर** कै दिय सीस कबर का ।
—दुरगादत बारहठ

बहरणहार, हारौ (हारी), **बहरणियौ**—वि० ।

बहरियोड़ौ, बहरियोड़ौ, बहरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहरीजणौ, बहरीजबौ—कर्म वा० ।

बहरामंद-वि. [फा. बहरामंद] धनाढ्य, संपन्न, भाग्यशाली ।

उ०—किसी रा लाडिला लोक सदा बापारी बहवारिया सोदागर **बहरामंद** मजूर धाया मन नेन में बसै दै ।
—रा. सा. सं.

बहराड़णौ, बहराड़बौ – देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

उ०—पारै राम आरास री पांहुणी, गाथ भूलाड़ियौ म्हार सुरा । पागड़ौ गहा **बहराड़ियौ** सीस पर, भारत बहराड़ीयौ नकौ भुरा ।
—बादरसिंह री गीत

बहराड़णहार, हारौ (हारी), **बहराड़णियौ**—वि० ।

बहराड़ियोड़ौ, बहराड़ीयोड़ौ, बहराड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहराड़ीजणौ, बहराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बहराड़ियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बहराड़ियोड़ी)

बहराणौ, बहराबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

बहराणहार, हारौ (हारी), **बहराणियौ**—वि० ।

बहरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहराईजणौ, बहराईजबौ—कर्म वा० ।

बहरायोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बहरायोड़ी)

बहरावणौ, बहरावबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

बहरावणहार, हारौ (हारी), **बहरावणियौ**—वि० ।

बहराविओड़ौ, बहरावियोड़ौ, बहराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहरावीजणौ, बहरावीजबौ—कर्म वा० ।

बहरावियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बहरावियोड़ी)

बहरियोड़ौ—देखो 'बैरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बहरियोड़ी)

बहरूपियौ—देखो 'बहुरूपियौ' (रू. भे.)

बहळ, बहल—१ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—१ मोरी सइयां ए, रुण झुण **बहळ** जुड़ायी
—लो. गी.

उ०—२ पछै कलो नाडुल **बहळ** बैस नै गयौ ।
—राव चंद्रसेण री बात

उ०—३ भरमल आप री तरफ रो कपड़ो वसत सारी मंगाई, सो ऊठ बीस भरीया । दस **बहलां** तयार कीवी । दस घोडा तयार किया इव कर इण री सबरी महुरत देख भार सभावण लागो ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'बेहळ' (रू. भे.)

उ०—मडै सरट ललाटी जैमल, मगर गहर धु वेद समार ; **बहळां** सपत विपत वैगी रा, मुज 'सुरताण' कळोवर सार ।
—भीमो आसियो

३ देखो 'बळद' (रू. भे.)

बहलवांन—देखो 'बहलवान' (रू. भे.)

बहलि—सं. स्त्री.—१ हाथी या घोड़े को हांकने की छड़ी (उ. र.)

२ देखो 'बहल' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बहली' (रू. भे.)

बहलियौ—१ देखो 'बळद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोटौ, हासल छोटौ दीधौ छै और वाणी पेरणी दासदासी नै रोजगार रख नै **बहलिया** रा समाचार छै ।
—जगदेव पवार री बात

२ देखो 'बहलियौ' (रू. भे.)

बहली—सं. स्त्री, [सं. बहला] १ बड़ी इलायची।

[सं. बहलः] २ ऊख विशेष।

रू. भे.—बहलि।

३ देखो 'बहल' (अल्पा., रू. भे.)

बहव - देखो 'बहू' (रू. भे.)

उ०—रांमापीर ऊबौ रुणेचा रे मांहि मांगू पूत रतनों री जोड़ कुळ में बहवां री जाजौ झूलरौ —रांमदेवजी तुवर री गीत

बहवारियौ—देखो 'व्यवहारीयौ' (अल्प., रू. भे.)

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी बहवारिया सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसं छं।

—रा. सा. स.

बहाडणौ, बहाड़बौ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

उ०—ग्राहवि वाहि बहाड़ि ग्रसिस्मर, महाराज ले जाज्यौ मधुकर।

—वचनिका

बहाडणहार, हारौ (हारी), बहाड़णियौ—वि०।

बहाडिग्रोड़ौ, बहाड़ियोड़ौ, बहाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

बहाड़ीजणौ, बहाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बहाड़ियोड़ौ—देखो 'वहायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहाड़ियोडी)

बहाणौ, बहाबौ—क्रि. स. ['वहणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ कहीं जाने के लिये प्रेरित करना, भेजना, गमन कराना, चलाना।

२ द्रव पदार्थ या पानी को धारा के रूप में बहाना, प्रवाहित करना।

३ उक्त धारा में बहाना, प्रवाहित करना, तिराना।

उ०— तठै समुद्र मांहे पैठा। पैंस ग्रर एक वडो पाटलो तिण ऊपर भांणेज नूं बैसाण ग्रर पाटलानू धकाय ग्रर वहतै पाणी मांहे बहाय दियो। —नैणसी

४ भटकाना, घूमाना।

५ गतिमान करना, गति देना।

६ घूमाना, टहलाना।

७ ग्राचरण कराना।

८ ग्रलग हटाना, दूर कराना।

९ शस्त्र प्रहार कराना, ग्राघात कराना वार कराना।

१० वध कराना, मरवाना, वीर गति प्राप्त कराना।

११ उछालना।

१२ प्रचलित कराना।

१३ टपकाना, झरवाना।

१४ खेत में ग्रनाज बोग्राना, बोवाई कराना।

१५ किसी उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी को वहन कराना, धारण कराना, जिम्मेदारी डालना।

१६ लदवा कर ले जाना, ढोवाना।

१७ शपथ दिलवाना।

बहाणहार, हारौ (हारी), बहाणियौ—वि०।

बहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बहाईजणौ, बहाईजबौ—कर्म वा०।

बहाड़णौ, बहाड़बौ, बहाणौ, बहाबौ, बहावणौ, बहावबौ, बुवाणौ, बुवाबौ, बुहाणौ, बुहाबौ, बूहाणौ, बूहाबौ, बंवाणौ, बंवाबौ, वहाड़णौ, वहाड़बौ, वहावणौ, वहावबौ—रू० भे०।

बहानौ—देखो 'बहानौ' (रू. भे.)

बहायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कहीं जाने के लिये प्रेरित किया हुग्रा, चलने के लिये प्रेरित किया हुग्रा, भेजा हुग्रा. २ बहाया हुग्रा, प्रवाहित किया हुग्रा. ३ भटकाया हुग्रा. ४ गतिमान किया हुग्रा. ५ घुमाया या टहलाया हुग्रा. ६ ग्रलग हटाया हुग्रा, दूर किया हुग्रा. ७ शस्त्र प्रहार कराया हुग्रा, ग्राघात या वार कराया हुग्रा. ८ वध कराया हुग्रा, मरवाया हुग्रा. ९ उछाला हुग्रा. १० प्रचलित कराया हुग्रा. ११ टपकाया हुग्रा, झरवाया हुग्रा. १२ बोवाई कराया हुग्रा, बोवाया हुग्रा. १३ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन कराया हुग्रा, धारण कराया हुग्रा. १४ भरवाया हुग्रा. (स्त्री. वहायोडी)

बहार—देखो 'बहार' (रू. भे.)

उ०—मिळी सहेली महल में, वणी किसीक बहार। चुतर सरद री चद्रमा, नवल चांनणी नार। —र. हमीर

बहाळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

बहालौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहालो)

बहाव—देखो 'बहाव' (रू. भे.)

बहावणौ, बहावबौ—देखो 'बहाणौ, बहाबौ' (रू. भे.)

बहावणहार, हारौ (हारी), बहावणियौ—वि०।

बहाविग्रोड़ौ, बहाविग्रोड़ौ, बहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बहावीजणौ, बहावीजबौ—कर्म वा०।

बहावियोड़ौ—देखो 'बहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहावियोडी)

बहिचणौ, बहिचबौ—देखो 'बंचणौ, बंचबौ' (रू. भे.)

उ०—जाइ उवं तळाव पर घोड़ा बहिचिया।

—कूगरै बळोच री वात

वहिविवयोड़ो—देखो 'वेंवियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वहिविवयोड़ी)

वहि—देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

वहिउ–वि. [सं. व्यूढ] १ फैला हुआ, चौड़ा, प्रशस्त । (उ. र.)
२ वृद्धि को प्राप्त । („)
३ वृद्ध, बूढ़ा । („)
४ दृढ़, मजबूत । („)
५ विवाहित । („)

वहिजणो, वहिजबो—देखो 'वेजणो, वेजबो' (रू भे.)
उ०—नाहरा विजो बोलीयो जी हालो आघो आघ वहिज नेम्यां ।
—चौबोली

वहिविवयोड़ो—देखो 'वेंवियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वहिविवयोड़ी)

वहिण—देखो 'वहन' (रू. भे.)

वहिनि—देखो 'वाहनि' (रू. भे.)
२ देखो 'वहन' (रू. भे.)

वहितिक, वहित्र, वहित्रक, वहित्रिक–सं. स्त्री. [सं. वहित्रकं] १ नाव, जहाज । (ह. नां. मा.)
२ बेड़ा, पोत ।
रू. भे.—वहित्र, वहतिक, वहत्रक ।

वहित्थ–सं. पु. [सं. वाहित्थं] हाथी का मस्तक ।
उ०—भिरै वहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर व्है । भिरै भटाळि भाळ मे, भिलार भूर-भूर व्है । —ऊ. का.

वहित्री–सं. पु.—नगर का चौहटा । (सभा)

वहिन—१ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)
२ देखो 'वहन' (रू. भे.)

वहिनमुख—देखो 'वह्निमुख' (रू. भे.) (अ. मा)

वहिनी–सं. स्त्री. [सं. वहिनी] १ नाव, नौका ।
२ बेड़ा, पोत ।
३ देखो 'वाहनी' (रू. भे.)
४ देखो 'वहन' (रू. भे.)
५ देखो 'वह्नि' (रू. भे)

वहिया–सं. पु.—पवार वंश की एक शाखा ।
(बां. दा. ख्यात)

वहियोड़ो–भू. का. कृ. (स्त्री. वहियोड़ी) १ चलकर कहीं गया हुआ, गमन किया हुआ, चला हुआ, किसी की ओर निरन्तर चला हुआ । २ पास से होकर गुजरा हुआ, निकट से होकर चला हुआ. ३ द्रव पदार्थ या पानी का धारा के रूप में बहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ. ४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ. ५ इधर-उधर घूमा हुआ, भटका हुआ. ६ गतिमान हुवा हुआ. ७ घूमा हुआ, मंडराया हुआ. ८ धारण किया हुआ. ९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चला हुआ. १० गोली, तीर आदि का छूटा हुआ, निकला हुआ. ११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन किया हुआ. १२ कीर्ति या विरुद धारण किया हुआ. १३ स्वाभिमान व अभिमान रखा हुआ. १४ घुसा हुआ, धंसा हुआ. १५ प्रचलित हुवा हुआ, फैला हुआ. १६ झरा हुआ, टपका हुआ. १७ खेत में अनाज बोया हुआ. १८ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ, आघात हुवा हुआ, वार हुवा हुआ. १९ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ. २० उछला हुआ. २१ वध किया हुआ, मारा हुआ, समाप्त किया हुआ. २२ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ, आघात किया हुआ. २३ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन किया हुआ, धारण किया हुआ. २४ धारण किया हुआ. २५ लाद कर ले जाया हुआ, ढोया हुआ.

वहिरंग–सं पु. [सं.] १ अंतरंग का विपर्याय, उल्टा ।
२ शरीर का बाहरी भाग ।
वि.—१ ऊपर-ऊपर का, बाहर का ।
२ अनावश्यक, फालतू ।

वहिरणो, वहिरबो—देखो 'वैरणो, वैरबो' (रू. भे.)
उ०—थांनक, नित्य पिंड कलाल री गांगो वहिरणो आदि छोड, नवो साधपणो पचख्यो, पिण सरधा तो वाहीज पुन री ।
—भि. द्र.

वहिरलापिका–सं स्त्री. [सं. वहिर्लापिका] वह प्रश्न या टेढ़ा वाक्य जिसका श्रोताओं से उत्तर पूछा जाय, पहेली समस्या ।

वहिराणो, वहिराबो—देखो 'वैराणो, वैराबो' (रू. भे.)
वहिराणहार, हारो (हारी), वहिराणियो—वि० ।
वहिरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
वहिराईजणो, वहिराईजबो—कर्म वा० ।

वहिरायोड़ो—देखो 'वैरायोड़ो' (रू. भे.)
उ०—वहिराव्या तिण वस्त्र प्रधांन जो, अनुकंपा कीधी रे त्यारै अगना रे लो । धन धन तुं प्रिय गुण निधांन जो, मुनि पड़िलाभ्या वस्त्र सुचंगना रे लो ।
—वि. कु.

वहिराविवयोड़ो—देखो 'वैरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वहिराविवयोड़ी)

वहिरउ—देखो 'वहरो' (रू. भे.)
उ०—वज्जिय ए तूर गभीर अंबरू वहिरिउ पडिरमन । नाचहि ए अबलिय बाल, रंजिय सुर अवला खेहि । —स्रीधरम कलस मुनि ।

बहिरमांण—सं. पु.—महादि देह क्षेत्र के तीर्थंकर ।

उ०—बहिरमांण सीमंधर स्वांमि, सीधा वि प्राव्यउ सिर नांमी ।
—ऐ. जै. का. सं.

बहिरौ—देखो 'बहरौ' (रू. भे.)

बहिल—१ देखो 'बहल' (रू.भे.)

उ०—१ तठा उपरांत करि नै राजांन कुमार री जांन घणैं आडंबर सूं हाथी घोड़ा बहिल सुखासण रथ पायक रा वणाव कियां थकां बयेल जांनिया रै साथ लियां घणौं मोती जड़ाव जरकसी सूं लड़ालंब हुआ छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ तहरां मींवो भळका लेनै हालियौ । भरमल पासै आयौ अर कह्यौ—थांनै बाघोजी बोलावै छै । तद सहिनाण लेनै बहिल चढि चाली । —ऊमादे भटियाणी री वात

उ०—३ ताहरा साहूकार हूआ बड़ौ लवेस करि थाहे रैस करि वहिल उठ त्यार करि ; कपड़ौ ले नै चालीया । —चौबोली

२ देखो 'बैल' (रू. भे.)

बहिलउ, बहिलु- देखो 'बहिलौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ बहिलउ आण वल्लहा, नागर चतुर सुजांण । तुझ विण धण विलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमांण । —ढो. मा.

उ०—२ राइं कागल मोकलिउ, माधव बहिलु आवि । जिम जांणइ तिम तुं करइ, तेणि सदनि सिधावि । —मा. कां. प्र.

बहिळौ बहिलौ—क्रि. वि [प्रा. वहिल्ल] (स्त्री. वहिली) १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—१ रूनी रने चढेह, जानाहो जोयो नही । वहिला वळण करेह, जुग जीवूं जी जेठवा । —जेठवौ

उ०—२ माधव बहिला आवज्यौ, हुं जोऊं घरि वाट । फल दल जल अन्नि घरू, भूमि सयन नहीं खाट । मा. का. प्र.

उ०—३ किसं जबानं करै प्रघट दाखियो पहिलो । दंत भणै अकरूर विसन नां ल्याव वहिलो —पी. प्र.

उ०—४ मम ढील करौ हल वार म लावौ, वेग चढौ बहिळा वहिळा । —गु. रू. ब.

२ पहले, पूर्व ।

उ०—खट-दस-बीस वस खत्रिया गुरु, खट दरसण आचार खरौ । वाखाणैं ऊगा दिन बहिलो, हरि पहिला किलियाणहरौ ।
महाराजा करणसिंह रौ गीत

वि.—१ उदार, दानी ।

२ प्यारा, प्रिय ।

३ विरला ।

रू. भे.—वहिलउ, वहिलु, वहोलौ, वहेलौ ।

बहिल्ल—१ देखो 'बैल' (रू. भे.)

उ०—उदर दर खण मरै पैस भोगवै भुवंगह । हल वहि मरै बहिल्ल, हरी जव चरै तुरंगह । —नैणसी

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

बहिस—अव्य.—१ अच्छे समय पर ।

उ०—प्रथम दुतिय चवथे पदैं, मोहरा बहिस मिळंत । रह अमेल पद तीसरौ, जो झड लुपत भिलत । —र. रू.

२ देखो 'बहिस' (रू. भे.)

बहीं—अव्य. [राज. वह] १ उसी स्थान या जगह पर ।

२ उसी विंदु स्थान, समय या स्थिति पर ।

३ उसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के प्रति ।

रू. भे.—वहि, वही ।

स. स्त्री. [सं.वयस्] आयु-उम्र ।

उ०—दूत हकीकत कहै छै, जु राजांन कुंअर ऊठती बही री जुवांन आजांनबाहु राज हंस लीलंग छे । —रा. सा. सं.

बहो—सर्व. [राज, वह] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति निश्चित रूप से संकेत करने वाला सर्वनाम ।

उ०—करहा पीपल पान चर, आगं मरसि भूख । जासां उणहीज देसड़े, वे फळ बहीज रूख । —ढो. मा.

रू. भे.—वहि, बाहि, बाही ।

२ देखो 'बही' (रू. भे.)

३ देखो 'वहीं' (रू. भे.)

उ०—तव गोतम आव्या तिहां बहो, लोक सहु हरख्या गह गही ।
—श्रीपालरास

बहीण—देखो 'विहीन' (रू. भे.)

उ०—म्याराजी थे मुरधरा, वालम जाय वसांह । आप बहीणो एक दन, जीवै नही 'जसाह' । —मयारांम दरजी री बात

(स्त्री. वहीणी)

बहीणो, बहीबो—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

बहीर—स. पु.—१ प्रस्थान, गमन, प्रयाण, कूच ।

उ०—१ अरु गढ मैं आदमी हजार दोय हा सूं खरच घणौ, सु जोइया नूं तथा दूजै साथनूं तो घरनूं बहीर कर दीना वा गढ मैं भाटी आदमी पाच सौ रया । —द. दा.

उ०—२ ताहरा विसनदास फोज ले अर बहीर हुवौ । —नैणसी

२ सदा साथ रहने वाले नौकर, अनुचर, परिजन ।

उ०—बेटौ खांन इनात रौ, गढ़ सूं थयौ तगीर । चाली महमद बेग री, दिल्ली दिसा बहीर । —रा. रू.

३ कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार।

उ० - गोकुळ तून गयो ज्यूं गिरधर, ऊभा छोड़ अहीरा। 'भगता' जेम गयो थम साग, नांगे छोड वहीरां। —बुधजी आसियो

४ सेना।

उ०—१ वहती इणी पथि भोरै वहीर, नदी हम धो न चलो जांणि नीर। कतारां कतड़ै चलै जुग काळा, घटै वादळा जांणि भाद्रव-वाळा। —वचनिका

उ०—२ वह गैह हिलै वहीर, पाइक आंटक पडनळा। मिळवा फिर चाली पहग, नदमैं नदि ले नीर। —वचनिका

उ० - ३ रागणी नगारै थाट रग। हल्लै वहीर जिम मलित हेम। —सू. प्र.

रू. भे.—वहिर वहीर, वईग्रर, वईयर, वईर।

वहीलो—देखो 'वहिलो' (रू. भे.)

वहीवेस—स. स्त्री [सं. वय-वयस्] १ युवावस्था, जवानी।

उ० तिण सु लीगाजी साहिब, हुकम करो तो पातिसाहां री उळग करू। इण वहीवेस माहै सारो बिवहार छै। —जलाल बूबना री बात

[सं. वह्+वयस्] २ अल्पाई अवस्था, बीतने योग्य उम्र।

वहु—देखो 'वहू' (रू भे)

वहुग्रड़—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

वहुग्रर—देखो 'बहू (मह., रू भे.)

वहुघड़ो—देखो 'बहू' (ग्रल्पा., रू. भे)

वहुधारो—देखो 'बहू' (ग्रल्पा., रू भे)

वहुबंदोळो—देखो 'बहुबदोळो' (रू. भे.)

वहुरात—देखो 'बहरात' (रू. भे)

वहुराणो, वहुरावणो—देखो 'वेराणो, वेराबो' (रू. भे.)

उ० पुत्र दरसी दरसिन गया, वहुराव्यो पुत्र रतन। धरम लाभ गरु नव दीयो, करजो पुत्र जतन। —कवियण

वहुराविपोड़ो—देखो 'वेरायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री वहुरावियोड़ी)

वहुव—देखो 'बहू' (रू. भे)

वहुग्रड़, वहुग्रर, वहुवड़, वहुवर—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

उ०—१ पाणी भागी पे वहुग्रड़ फागण मास, न स्यम फागण मास घर घर पाण रमी गीगणो पे। —लो गी.

उ० —२ गीगो गीगो ग वहुग्रड़ पाय हली री सूत, वहुग्रड चाकड़ली री सूत गीगो ल्यो थाम। —लो गी.

उ०—३ माय मढ़े वहुग्रर सहित, जीवो कोडि वरीस। ग्रविचल जोड़ी सुहड़ तणी, इम दीधी ग्रासीस। —सीपालराम

उ०—४ हे चार वतर, मिळ म्हारी जच्चा राणी ने, हे किस वहुवड़ किस धीय। —लो. गी.

वहुवासो—देखो 'बहुवासो' (रू. भे.)

वहू—देखो 'बहू' (रू. भे.)

उ०—१ वहू च्यार पगां लगै जेण वारै। सुमंत्रा ग्रनै केकई कोसल्या रै। —सू. प्र.

उ०—२ कद हूं कवी कुमारड़ी, कहि नै कदि परणेसि। वद हूं वाजिंद कोटडै, चीजा वहू कहेसि। —मयणी री बात

वहूग्रर—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

उ०—जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन वीनवीइ किमी, हुं वहूग्रर तू जेठ। —मां. कां. प्र.

वहूदक—सं. पु. [सं.] चार प्रकार के संन्यासियों में से एक।

वहूबंदोळो—देखो 'बहुबंदोळो' (रू. भे.)

वहूरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

वहूवत—देखो 'वधूवत' (रू. भे.) (उ. र.)

वहेड़ो—देखो 'बे'ड़ो' (रू. भे.)

उ०—हरड वहेड़ा ग्रावळा, घी-शक्कर में खाय। हाथी दावै खाख में साठ कोस ले जाय। —ग्रज्ञात

वहेणो, वहेबो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ०—सुंदरि मो मारउ नहीं, कुंग्रर वहेसी मग्ग। साहिब चित्त उपाडियउ, जिम केकांणां वग्ग। —ढो. मा.

वहे़लो—देखो 'वहिलो' (रू. भे.)

उ०—विहांणे नवे नाथ जागो वहेला, हुवा दोड़िवा धेन गोवाळ हेला। —नागदमण

वहो—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—बुधवंत वहो कथ सांच कहो, सुण लीध महो ग्रह पंथ गहो। —र. रू.

वहोत्तर—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे)

उ०—देवळ एक खंभ दोढ जाकै, पाच भाति रंग दीया। दस दरवार वहोत्तर छाजा, गळी गाव 'वहो' कीया। —ह. पु. वा.

वहोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—वहोत जतन करि वाणिक वाण्या, ऊपरि कळस चढाया। ए दोइ रतन उजागर दीसै, वहोत भांति मं लाया। —ह. पु. वा.

वहोड़ि, वहोड़ो—देखो 'बहुरि' (रू. भे)

उ०—माया तजि भजि नाव निरंजन, जीवन ग्रंजली नीर। यहु ग्रौसर भी वहोड़ि न लाभै, जम का काटि जंजीर। —ह. पु. वां.

वह्नि—सं. स्त्री. [सं] १ अग्नि, आग ।

उ०—त्रिभुवन मांहे ए जिन तारण, वारण दुख वन वह्नि जी ।
—ध. व. ग्रं.

२ अन्न को पचाने की शक्ति, पाचन-शक्ति ।

३ भूख ।

४ चिता ।

५ सवारी ।

सं. पु.—६ राम की सेना का एक बन्दर ।

रू. भे.—वहन, वह्नि, वह्नी, वह्नि, वह्नी ।

वह्निकर—वि. [सं.] १ जलाने वाला ।

२ भूख बढ़ाने वाला ।

३ आग पैदा करने वाला ।

सं. स्त्री.—१ विद्युत, बिजली ।

२ चकमक ।

३ पथरी ।

वह्निबीज—सं. पु. [सं.] १ सोना, स्वर्ण ।

२ नीबू ।

वह्निमुख—सं. पु. [सं.] देवता ।

रू. भे.—वहिनिमुख ।

वह्निसिख—सं. स्त्री. [सं.] १ केसर । (नां. मा.)

२ कुसुंभ ।

[सं. वह्नि—सख] ३ पवन, हवा ।

रू. भे.—वनीसिख, वहनीसिख ।

वह्न—देखो 'बहू' (रू. भे)

उ०—जितरै साह री वह्न घर में आयी ।
—राजाभोज अर खापरा चोर री वात

वां—सर्व.—१ उन ।

उ०—१ काट जिकां कुळ ऊबटै, आठ वाट डतफाक । वां सबळां ही पुरसड़ां, वैरी गिणै वराक । —बां. दा.

उ०—२ ज्यांरी जीभ न ऊपड़ै, सेणां मांही सेत । वां रा कर किम ऊपड़ै, खळां धिरयां बिच खेत । —बा. दा.

उ०—३ लाखो वां असवारां मांहे हुय नै भुज आयौ । —नैणसी

२ उन्होंने ।

उ०—१ कैरव ज्यूं आया कमंध, पांडव ज्यूं पतिसाह । वां हरि नांम उचारियौ, वां रहिमाण अलाह । —वचनिका

उ०—२ नारायण रौ नांम ज्यां, नहं लीधौ निरणांह । वां जमवारौ वोळियौ, ज्यूं जगळ हिरणाह । —हरिरस

अव्य.—४ वहां, उस जगह ।

रू. भे.—वां ।

वांइटौ—सं. पु. [सं. वात-घटी] १ शरीर में वात-विकार के कारण होने वाली ऐंठन या शून्यता ।

२ पेचिस आदि के कारण पेट में होने वाली ऐंठन या मरोड़ ।

रू. भे.—बांइटौ, बांईटौ, बांयटौ, बाइटौ, बाईंटौ, वांईटौ, वाइंटौ ।

वांई—सं. स्त्री. [सं. वायी] १ सर्प का बिल ।

२ खाट के पैताने की ओर आड़ा बांधा जाने वाला मोटा बंधन जो खाट की बुनाई व वदावन का आधार होता है ।

वि. वि.—यह रस्सी खाट बुनने वाली मूंज की बनती है । मूंज को पांच-सात बार आड़ी लपेट कर उस पर चिथड़े लपेट दिये जाते हैं जिससे यह एक मोटे रस्से के समान हो जाती है ।

रू. भे.—वांई, मांई, म्यांई ।

३ करधनी ।

वांईटौ—देखो 'वांइटौ' (रू. भे)

उ०—उण नै बूंगी आयगी । डील थर थर धूजण लागौ । मासी है जठै ई हेटै गुड़गी । हाथां पगां वांईटा आवण लागा । —फुलवाड़ी

वांक—देखो 'बांक' (रू. भे.)

उ०—१ रज्जब पारस परस कै, मिटगौ लोह विकार । तीन वात तो ना मिटी, वांक धार अरु मार । —संतकवि रज्जब

उ०—२ आप वस्तुआं नूं तयार कर ऊंट पर घाल गंगाजळी पाणी री एक हांनै घाली । वांक एक पताकै बांधी ।
—साह रांमदत्त री वारता

उ०—३ आदित्य आंखि ज विस्वनी, ऊघाडण ए आंक । पासिइ अघ उलूक तु, सूरि जनु स्यु वांक । —मा. कां. प्र.

उ०—४ तूं रूठइ यइ आपवा पूज जी, राय यकां करइ रांक । मेर यकां सरसव करइ पूज जी, वांकां काढ़इ वांक । —स. कु.

वांकउ—देखो 'वांकौ' (रू. भे.) (उ. र.)

देखो 'बांक' (मह., रू भे.)

वांकड़—देखो 'वांकौ' (मह., रू. भे.)

उ०—घरि बइठा ही आविस्यइ, लाखे लियां लडंग । तिणि मइ लेस्यां टाळिमा, वांकड़ मुहां विडंग । —ढो. मा.

(स्त्री. वांकी)

वांकड़लौ—देखो 'वांकौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. वांकड़ली)

वांकड़ो—१ देखो 'बाकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ भुंअ मजोड़ै दीपै वांकड़ी कबांण नै जीपै हो । मांही-मांही न छीपै ते भाल त्रिसाल समीपै हो । —वि. कु.

उ० —२ कमधजिया लेगं भामा नी । मोहीं मोही बांकड़ी नरं सूं । —रसीलै राज री गीत

२ देखो 'बांकड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'बाकनी' (रू भे.)

बांकड़ीनाळ, बांकड़ीनाळी—देखो 'बाकनी' (रू. भे.)

बांकड़ो १ देखो 'बाकी' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ बांकड़ा कमंध वीर, माकड़ा माया मधीर । ताम सोढि दाखि ताव, पालटै कुरग पाव । —सू. प्र.

उ०—२ पत्साणी पतसाह रा, निस मूकै मेलाण । इण गढ हिंदू बांकड़ौ, कर ग्रहिया केवाण । —नैणसी

उ०—३ दर्ग तीका वहै गोळा रोहळा मोरच्छा दोळा, जो लार सकै सूमा गर ने जगाय । भूरजाळ बांकड़ो बीटियो दूजा गढा भोळै, लोहा जाळ धर्म कहो नमंगो लगाय । —बा दा.

उ० - ४ बाज वई बिवहारीउ, वाहणि घोड़ा साथ । पुरणा पुहुँचा-लगि भरिउ, वेढि बांकड़ा हाथि । — मा. कां प्र.

उ०—५ कढियैं कटारो घरमी रे बांकड़ी, मोरठड़ी तरवार श्रो । —लो गी.

(स्त्री बांकड़ी)

२ देखो 'बांकड़ी' (रू भे)

बांकम, बांकमि—देखो 'बाकम' (रू. भे)

उ०—१ तेज तरह बांकम तोमारा, घर बांकम पाघर कर धूत । अग बाकम रग ते 'ऊदांगी', रग बाकम वांका रजपूत । —जोरावर सिंह ऊदावत री गीत

उ० २ मली प्रमीगो गाहिबौ, बांकम सूं भरियोह । रग विकसै रितुराज मे, ज्यूं तरवर हरियोह —बां. दा.

उ०—३ राजोवाई राव प्राय नेडो ऊतरियो । करां झाल केवांण बीद बांकम बळ भरियो । —द. दा

उ०—४ ऊचा जोर प्रकास ह, पहला प्रप्रमाण । बांकम जोर मरोर प्रग, एहै अहिनांण । —गजउद्धार

बांकल—म. स्त्री.—देखो 'बाकल' (रू. भे.)

उ० राय प्रागण चोगा रमो, महिला सरब सुदाह । लखमी बांकल राज री, चूडी अमर सदाह । —पा. प्र.

३ देखो 'बाक' (मह , रू. भे)

बांकस—देखो 'बाक' (रू भे)

उ० कुना दर पार्व भनक रो बांकस । —र. हमीर

बांकिम, बांकिम्म—देखो 'बाकम' (रू. भे)

उ० – १ नर नोरद प्रणनिद, बिद बांकिम्म बीरवर । गुन सुरिंद हरचंद, कंद काढण केवी हर । —गु. रू. बं.

उ०—१ ऊदो' 'प्रनो' विकट ऊदावत, जोड़ मोड़ दळ बिन्है जगावत । 'रतन' जगावत बांकिम रातो, 'रांमै सुभावत मेळ भरातो। —रा. रू.

बांकियो—१ स्थान विशेष ।

उ०—जूं सहरी भ्रूह नयण भ्रग जूता, विसहर रासि कि प्रलक वक्र । वाळी फिरि बांकिया विराजै, चद रथी तांटक, चक्र । —वेलि

२ देखो 'बांकियौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बांक' (अल्पा , रू. भे.)

बांकी—देखो 'बाकी' (रू. भे.)

उ० – स्वरगो, लुद्रवा कनै । घोड़ां, प्राव, वडी बांकी ठोड़, मुहांरा दिमी जैसलमेर था कोस १६, खडाळ में । --नैणसी

बांकु—देखो 'बाकी' (रू. भे.) (उ. र)

उ०—बल नी वामा बोलि मरम, वांकु छि प्रति मन नु घरम । मनि मांनु ते मानुस देव, जे परिण लविरण करम निखेव । —नळाख्यांन (स्त्री. वांकी)

बांको - देखो 'बांकौ' (रू भे)

उ०—१ सोहिली भोमि बांका सुभट्ट । भूभार दियइ करिमाळ भट्ट । —रा ज. सी.

उ०—२ 'वीकै' दुरंग थापियो बांको । काटा मरण उवेळ करो । ---महाराजा करणसिंह

उ०—३ फूलांरा चोस पेहरियां थका टोय प्रणियाळा काजळ ठासिया थका बांका नेणारी भांक नाखती पायलं रे ठमकै सू घूघरै रे घमकै सू बिछीया रै छमकै सू रमझोळ करतां अगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चाली जाय छै । —रा. सा. स.

उ०—४ दुरजन जे बांका हुता, नार कीया ते जेरी रे । जिम अगपति नें आगलो, न सकै गयवर फेरो रे । —वि. कु.

उ०—५ तूं रूकड ढइ आपदा पूजजी, राय थका करइ रांक । मेर थका सरसव करइ पूजजी, बांकां काढइ वांक । —स. कु.

(स्त्री. वांकी)

बांग—देखो 'बाग' (रू. भे.)

बांगड़—वि.—वीर, बहादुर ।

उ०—प्रबळा रै प्रागेह, तासूं मबळा पण करै । बांगड़ जद वागेह केवा लै खीची कनै । —पा. प्र.

रू भे.—वागड ।

वांगण–स. पु. [सं. अवाञ्जन] १ वह स्निग्ध पदार्थ जो गाड़ी या रहट को आसानी से घूमने के लिये चक्रों की धुरी में लगाया जाता है।

२ उक्त पदार्थ लगाकर वांगने की क्रिया या भाव।

वांगणौ, वांगबौ–क्रि. स. [सं. अवाञ्जनम्] १ गाड़ी या रहट के चक्रों की धुरी में स्निग्ध पदार्थ (ग्रीस आदि) लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाना।

२ पीटना, मारना।

३ संभोग करना, मैथुन करना। (बाजारू)

४ गमन करना।

वांगणहार, हारौ (हारी), **वांगणियौ**—वि०।

वांगिओड़ौ, वांगियोड़ौ, वांग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांगीजणौ, वांगीजबौ—कर्म वा०।

वांगणौ, वांगबौ—रू० भे०।

वांगरी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

वांगळी–स. स्त्री.—१ रेगिस्तान के मैदान में धूल पर पड़ने वाली लहरें।

२ पानी जाने की छोटी नाली।

वांगळौ—देखो 'बांघळौ' (रू. भे.)

उ०—चोळ चख कीयां थण बोळ पंजा चढत, भुज अटत आभ खळ घटत भाळो। बाहरू रसा रौ फतै कर बावड़ै, **वांगळौ** सीह 'वगतेस' वाळो। —मेगराज आढौ

वांगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ संभोग की हुई, मैथुन की हुई (स्त्री)

२ ग्रीसादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाई हुई (गाड़ी)

वांगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ग्रीस आदि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाया हुआ। (रथ, रहट)

२ पीटा हुआ, मारा हुआ।

३ गमन किया हुआ।

(स्त्री. वांगियोड़ी)

वांगौ–सं. पु.—१ प्रवाह, गति, चाल।

२ पानी बहने की गति।

३ पानी के बहने से भूमि पर पड़ने वाले चिन्ह।

४ प्रथा, परंपरा।

वांघळौ—देखो 'बांघळौ' (रू. भे.)

वांचणौ, वांचबौ—१ देखो 'बांचणौ, बांचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिण **वांचै** उच्छब नृप जांणै। आरंभ समर करण थल मांणै। —सू. प्र.

उ०—२ संदेसा मति मोकळउ, प्रीतम तूं आवेस। आंगलड़ी ही गळि गयां, नयण न **वांचण** देस। —ढो. मा.

उ०—३ गीता रौ पाठ होवतौ। आतमा परमातमा एक है री चरचा चालतौ। रांमायण **वांचीजती**। सगळं पूछण आवता पण टुणटुणी बजाय' र टरकत। —बरसगांठ

२ देखो 'वांछणौ, वांछबौ' (रू. भे.)

वांचणहार, हारौ (हारी), **वांचणियौ**—वि०।

वांचिओड़ौ, वांचियोड़ौ, वांच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांचीजणौ, वांचीजबौ—कर्म वा०।

वांचियोड़ौ—१ देखो 'बांचियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वांछियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वांचियोड़ी)

वांच्छित—देखो 'वांछित' (रू. भे.)

वांछक–वि. [सं.] इच्छा, अभिलाषा या चाह करने वाला।

उ०—विधि बतावै छै सूत्रा हुहै पाठक वकता हुऔ। सारस छै स रस **वांछक** छै। —वेलि टी.

वांछणौ, वांछबौ–क्रि. स. [स. वांछनम्] १ चाहना, इच्छा करना, अभिलाषा करना। (उ. र.)

उ०—१ चित सूं आगम चितवै, आ मजबूत उपाव। 'बंक' जुड़ै नहीं **वांछियौ**, इण कारण है आव। —बां. दा.

उ०—२ मनुस्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवै छै। अर रूंखां की छांह **वांछै** छै। —वेलि टी.

उ०—३ जिह घड़ी नै घणुं **वांछता** था घणा दिन लगै। सु घड़ी आंण मिळी। —वेलि टी.

उ०—४ संध्या को समय हुऔ छै। क्रस्णजी रति **वांछै** छै। —वेलि टी.

२ जिज्ञासा करना।

३ प्रेम करना।

वांछणहार, हारौ (हारी), **वांछणियौ**—वि०।

वांछिओड़ौ, वांछियोड़ौ, वांछ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांछीजणौ, वांछीजबौ—कर्म वा०।

वांचणौ, वांचबौ, बांछणौ, बांछबौ, वांचणौ, वांचबौ—रू० भे०।

वांछना–सं. स्त्री. [सं. वांछा] १ चाहना, चाह।

२ इच्छा, अभिलाषा।

३ कामना।

४ जिज्ञासा।

रू. भे.—बांछना, वंछना।

वांछनीय–वि. [सं.] १ जिसकी इच्छा, चाहना या कामना की गई हो।

२ चाहने या इच्छा करने योग्य ।

वांछा-सं. स्त्री. [सं. वांछा] १ इच्छा, चाह ।

उ० – पछै यह मोटी रुई गां पा नी रा म री **वांछा** करै ।

— राजा रा गुर रा बेटा री बात

२ अभिलाषा ।

३ कामना ।

उ० – जर प्राणि हमा बर की **वांछा** करै छै तिहि समय परमेसर रा गुण भोग विकाई इच्छा उपजी छै । —वेलि टी.

४ जिज्ञासा ।

उ० – उवा बहीया म्हान् री मिळण री **वांछा** हुती आइनै मिळीया । — चौबोली

रू. भे.—बंछया बांछा, विछ्या ।

वांछित-वि. [सं.] चाहा हुआ, अभिलषित, इच्छित ।

उ०—१ **वांछित** वर पाया वाछै । आप माहे प्रीति राति दिन दूणी उपजै । —वेलि टी.

उ० —२ माया माग न देव उतर, **वांछित** वस्तु बनावै । वहै जडी कर दवे हाजर, पद ऊंचा जद पावै । —ऊ. का.

रू. भे.—बनत, बांछित, वांछ्रित, वंनत, वछन, वछती, वछती, वांछित, वांचछन ।

वांछियोडो-भू. का. कृ.—१ चाहा हुआ. २ इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. ३ कामना किया हुआ. ४ जिज्ञासा किया हुआ. ५ प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री. वांछियोडी)

वांझ—देखो 'बांझ' (रू. भे.)

उ०—१ दूही रुपटी दाम, जोडणा मो ही जाणमी । ब्यावर-नणी विराम, **वांझ** न जाणै वीभणा । —वीभरा अहीर री बात

उ०—२ **वांझां** सूं घर वास कर, कोई पुत्र मेलावै ।

—कैसोदास गाडण

वांझणाई, वांझणाय-सं. स्त्री. [सं. वन्ध्या-गौ] वह गाय जो बध्या हो, जिसके प्रसव न होता हो । (ड र)

उ० गयै प्राण सरदार, करै दलाली कोगला । है काई नेवणहार, वांझणाय सू 'जसमनिया' । —समेळजी बारहठ

वांझडी, वांझणी, वांझ, वांझिणी—देखो 'बांझ' (अल्पा., रू. भे.)

उ० –निवटी नर जेड मनु-स्वभाव, हुआं जोग जोवन वनीजी वाझणी न जगी वाल । मूरत नही महिला मुखेजी, करतल ऊगै न वाल । —व. स्त.

वांझोपो—देखो 'बांझपो' (रू. भे.)

उ० —नारी बिन न् **वांझोपो** । —घरम पत्र

वांट—देखो 'वंट' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हरदास कहै—एकै जोधपुर रा कासूं दो **वांट** करां ?

—नैणसी

वांटणो, वांटबो—देखो 'वांटणो, वांटबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—नूर सूर सम बदन निहावै, आपै मात रतन धन आवै । सहर गळी प्रत गळी सुहावै, गुळ **वांटै** त्रिय मंगळ गावै । —रा. रू.

उ०—२ चोर च्यार ही डूंगर मे **वांटण** लागा । ततरे देहलगढ़ री धणी सकार रमतौ आय नीसरिआै ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ रुपीया पचास वडारण कनियां मंगाय आप रै हाथ निछरावळ कर वडारण नूं सौंप फुरमायौ 'परभात अतीत फकीर गरीब **वांट** दीजो । —कुंवरसी सांखला री वारता

वांटणहार हारो (हारी), वांटणियो—वि० ।

वांटिओडो, वांटियोडो, वांटयोडो—भू० का० कृ० ।

वांटीजणो, वांटीजबो—कर्म वा० ।

वांटियोडो—देखो 'वांटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वांटियोडी)

वांटो—देखो 'बांटो' (रू. भे.)

उ०—१ कटकां मिळै मेखळां मेर कांनै, खड़ा ऊमरा खांन दीवांण खांनै । विदेवा कियौ साहिजादौ विचारं, अणि फौज **वांटौ** हुऔ अस्वारं, । —गु. रू. बं.

उ०—२ करदंत ताकइं, त्रुटि कार अरिरिकार हाकइं, **वांटं** चडघा योध ताकइं उसरइ, पइसरइ, तीहं वीर तणा नाभिप्रमाण बहुल कूंच । —व. स.

उ०—३ सुंजैते री वसी वगडी वीरमदेव रे **वांटै** में आंन ।

—नैणसी

वांटयोडो—देखो 'वांटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वांटयोडी)

वांठ—१ ....

उ०—द्रस्टि जांणइ क्षीर, मत्स्य जांणइ नीर, **वांट** जांणइ घोडा, स्त्री जांणइ मुह मुचकोडा, गारुडी जांणइ साप, मा जांणइ बाप, वणिग जांणइ माप, मन जांणइ पाप, मुख जांणइ मीठा, द्रस्टि जांणइ दीठा । —व. स.

२ देखो 'वट' (रू. भे.)

वांठि, वांठी-स. स्त्री.—अहंकार, गर्व ।

उ०—गुरभ्रम खोया गांठिस् तन सूं रखै सांढि । हरिया ऐसे पतित की, मिटै न मन की **वांठि** । —अनुभव वांणी

रू. भे.—वांठि ।

बांड-सं. पु.—खंड, टुकड़ा।

उ०—नाराजीम्रांरी भ्रांट पड़ि नै रही छै। वगतरां ऊपरां तरवारीयां रा **बांड** त्रूटि नै रहीग्रा छै। —रा. सा. सं.

बांडणौ, बांडबौ-क्रि. स.—देखो 'बाडणौ, बाडबौ' (रू. भे.)

उ०—उगै पग लगां आंणं भुजंग डांडियौ, सुरंग रंग चडियौ स्रोण गारौ। वार बरछी कही खळां विप **बांडियौ**, बीनडी काडियौ हाथ बारौ। —महाराणा भीमसिंह रे भाला रौ गीत

बांडणहार, हारौ (हारी), बांडणियौ—वि०।

बांडिग्रोड़ौ, बांडियोड़ौ, बांड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बांडीजणौ, बांडीजबौ—कर्म वा०।

बांडियोड़ौ—देखो 'बाडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बांडियोड़ी)

बांडौ, बांढौ-वि. [स वड] २ अविवाहित।

उ०—कोई माई रो लाल हुंकारो भरतो तो या तो पेला पाघडी मांगती अथवा लुगाई टाबरां वाळा नै तो राखग नै तैयार ही पण म्हारै जिसा बांडा कुतकां नै नहीं। —रातवासो

२ मूर्ख, बेवकूफ।

सं. पु —१ अविवाहित व्यक्ति।

२ परिवारहीन व्यक्ति।

३ अपने परिवार से अलग दूर कहीं अकेला रहने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बंडौ, बाढौ।

मह., —बड।

बांण-सं. स्त्री. [स. वाणि] १ बनावट, रचना।

२ मूर्ति।

स. पु [स. वाक्] ३ पडित, कवि।

उ०—वाण सराहै **बांण**, खाग सराहै समर खळ। मौज उभळ महरांण, मारा है रघुवर सुकव। —र. ज. प्र.

४ सिंह, शेर। (ना. डि. को.)

[सं. यान] ५ गाड़ी।

६ वायुयान, विमान।

७ गाय-भैंस आदि मादा पशुओं का ऋतुमति होकर गर्भधारण करने योग्य होने की क्रिया।

क्रि. प्र.—आणौ

८ बुनावट मे कांम आने वाली रस्सी, जेवरी।

उ०—पंचरंग दीया ढोलिया, पुतळी पागो जाण। सेभ सुंहाली अति भली, रेसम वणीयौ बांण। —ढो मा.

९ एक प्रकार का वात रोग विशेष।

क्रि. प्र.—बहणौ।

१० देखो 'बांणी' (रू. भे.)

उ०—१ नांम है रांम कौ, भ्रोक आरांम कौ। साच राघौ कथा, **बांण** दूजी वथा। —र. ज. प्र.

उ०—२ अनु आतुर चढियो 'अजन' रिम सुणि आतां राह। **बांण** नगारां ऊधरी, सारा धरी सनाह। —रा. रू.

उ०—३ जग लोक **बांण** सीखै जवन, पढै ब्रहम मुख पारसी। हित देव सेव आधा हुआ, काई लग्गां आरसी। —रा. रू.

उ०—४ दिलीपति ढीलौ हुवौ, पहुंचै कोई न पांण। अपरिज आसंगी न सकै, बोलै एहवी **बांण**। —प. च. चौ.

११ देखो 'बांण' (रू. भे.)

उ०—१ वडा पुरस री **बांण**, अदना रौ आदर करै। ओछां रा ऐलांण, चुभता बोलै चकरिया। —मोहन लाल साह

उ०—२ बांण्या थारी **बांण**, नर कोई जांणै नहीं। पांणी पीवै छांण, लोही अणछांण्यौ पिवै। —अग्यात

उ०—३ प्यारा पाखर पेम की, कांइ ज पहिरि अंगि। वयण खटक्कइ **बांण** ज्यूं, कोइ न लागइ अंगि। —ढो. मा.

बांणक, बाणक्क-सं. स्त्री.—१ कांती, शोभा, दीप्ति, आभा।

उ०—१ **बांणक** दीठां ही बण आवै। —अग्यात

उ०—२ औ मंद हास किण नं न मोहै है, इण बत्तीसी री हसी **बांणक** है। इण आका गैई मोती माणक है, हसतां फूल झड़ै है।

२ सुंदरता, रूप, सौंदर्य।

उ०—जिहं **बांणक्क** कटाख, चपळ नयणी चंद्राणणि। के कुरंग लोचना, कांम अवली केकाणी। —गु. रू. बं.

३ सूरत, शक्ल, आकृति, स्वरूप, बनावट।

उ०—१ ओपै हाट ओछांडियां, पाटबर अणपार। **बांणक** जांणक वद्दळां, इंद्र धनुस उणहार। —रा. रू.

उ०—२ तारागढ़ छायो रहै, सोर तणै नीसार। आबू जांणक ओपियो, **बांणक** बद्दळ धार। —रा. रू.

४ सजावट, ठाट-बाट।

५ रंग-ढंग।

६ ढंग, प्रकार।

उ०—तदि जोड़ राम लछमणतणी, विध **बांणक** विसतारिया। बहु कळस बांदि घर रजत बहु, पहु मेड़तै पधारिया। —सू. प्र.

७ एक वर्ण-वृत्त जिसमें सर्व प्रथम नगण फिर भगण और अंत में भगण होता है।

उ०—आठ आठ सो वजि उभै, सहस रूप संभळावि। नगण भगण स जगण निरखि, **बांणक** छद वतावि। —ल. पिं.

८ देखो 'वणगत' (रू. भे.)

उ०—राव 'दुरगौ' जोरावर थकौ रहै। राणा सूं मिळै नही। रांणा नै राव दुरगै आपस मे बांणक को नही। —नैणसी

रू. भे.—बांणक, बाणिक, आनक, बाणिग, बाणक।

बांणज, बांणजौ—देखो 'वणियागी' (रू. भे.)

उ०—थळ कनार लायण थटै, ले जिहाज जळ अत। मोळी ढाळी बाणजौ, थटा धूम जगात।' —बां. दा.

बांणप्रस्थ—देखो 'वानप्रस्थ' (रू. भे.)

बांणरस—देखो 'बारागसी' (रू. भे.)

उ०—मंजुन यमन बांणरस सोखा। नागलता मघई पंत्र नोखा। —सू. प्र.

बांणवाहण—सं. पु.—१ नाव, जहाज। (अ. मा)

२ दैवी प्रकोप होने की अवस्था या भाव।

बांणा—देखो 'बाणी' (रू. भे.)

उ०—सोरठ थ गू-प्रमन हुवो, द प्रकार बांणा। —द. दा.

बांणारसी—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—पछै गाम रै धणी राजा रा गुर रा बेटा नै पूछ्यो थे बांणारसी गया था सो का ही भण्या।

—राजा रा गुर रा बेटा री वात

बांणाळ—१ देखो 'बाण' (मह., रू. भे) (डि. नां. मा)

२ देखो 'बाणावळी' (मह., रू. भे.)

बांणावळी—देखो 'बाणावळी' (रू. भे.)

बांणावळी—स. पु.—रथ। (डि. ना. मा.)

बांणास—देखो 'बाणास' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

बांणि—देखो 'बाणी' (रू. भे)

उ०—१ डीभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही बांणि। ढोला एही मारुई, जेहा हंस निवाणि। —ढो. मा.

उ०—२ बांणि अनादह फुट वयण, सुभ भाखा सरजिय। गाहा गरई वर रसाउला, दूहा छद कवित्त। —गु. रू. ब.

बांणिक—देखो 'वांणक' (रू. भे.)

उ०—१ तपत बाण कोधो हर तांणिक। वामी-बुध एरसै बांणिक। —सू. प्र.

उ०—२ आभा रूप जोम ऊफाणिक। वणियो अनग दूसरै बांणिक —सू. प्र.

२ देखो 'वणिक' (रू. भे)

बांणिज—१ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ० बांणिज बिण गाढ, सहर हाटां विण, जळ विण गाव वसै जेहडो। विण मायां [illegible] स, सभा पंडित विण, विण महमा तीरथ तेहडो। —आसो बारहठ

२ देखो 'वणिक'

बांणिजू—१ देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—नाव विच्यारि बांणिजू चालइ, बार लाख उलगांणा। करकटीया हबसी भाथाइत, फरसीधर सपरांणा। —कां. दे. प्र.

बांणिज्य—सं. पु. [सं. वाणिज्य] वस्तुओ का क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यवसाय।

उ०- वांणिज्य वखस फबि जेण वेर। कोटेक जांण वप धर कुमेर —सू. प्र.

रू. भे.—वणज, बणिज, बनज, बिनज, बांणिज, बांणिज्य, बनिज, बिणज, वणिज्ज, वांणिज, वांणिजू, वांनिज, विणण, विणज।

बांणिनी—स. स्त्री. [सं. वाणिनी] १ चालाक स्त्री, धूर्त्त औरत।

२ नर्त्तकी, अभिनेत्री।

३ दूती।

४ स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

५ शराब के नशे में चूर स्त्री, मदोन्मत्त स्त्री।

६ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होते हैं तथा इनका क्रम नगण, जगण, भगण, जगण तथा रगण और एक गुरु होना है।

बांणिया कूटा (बांणियौ)—सं. पु.—लुब्धक नामक तारा।

बांणिया-रौ-बेवळ—सं. पु.—वर्षा ऋतु में होने वाला एक उद्‌भिज पदार्थ जिसे 'लाकी-मूळो' भी कहते है।

बांणियावटी, बांणियावाटी—स. स्त्री. [सं. वणिक-वृत्ति वणिक-पाटी]

१ एक प्रकार की गणित विद्या जो बनियों के व्यापार व लेन-देन मे काम आती है।

२ एक प्रकार की भाषा एवं लिपि जो बनियों की बहियों में लिखी जाती है।

३ बनिये का कर्म।

वि.—१ बनिये की, बनिये सम्बन्धी।

२ महाजनी।

रू. भे.—बांणिआवटी, बांणिआवाटी।

बांणियौ—देखो 'वणिक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गाहे सोदे ग्राहका, ढाहै जे गज ढल्ल। लाहौ लोटै बांणियौ, आ है साची गल्ल। —बां. दा.

बां'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

उ०—धरती रो जित्ती बार काळजो चीरीज बां'णियां लागै उत्ती वत्ती नपै व्है, साख फळै। —फुलवाड़ी

बांणी—सं. स्त्री. [सं. वाणी] १ सरस्वती, शारदा। (अ. मा.)

उ०—मेत मुणा गाय अंब, पामई न महंमेव, इंदसा सुरा अजेव, साफ तास सेव। कीरती वांणी कहैव, दिलां घरै संभदेव; वाह जेण चेत वेव, देव देव देव। —र. ज. प्र.

२ मुंह से निकलने वाला सार्थक शब्द, वचन।

उ०—१ सुणें नृपति हित बात सुहाणी। विधिवत कहण लागो सिध **वांणी**। —सू. प्र.

उ०—२ मन री बात नै **वांणी** मिळतां ही राजाजी नै चेतौ व्हियौ —फुलवाड़ी

३ वाक शक्ति।

उ०—प्रथाह सुख अर दुख दोनूं ई निपट गूंगा व्हैगा। गळा री **वांणी** वांरो भार झेल नी सकै। च्यारूं जणा खासी ताळ तांई बोला-बोला एक दूसरा रो मूंडो जोवता रह्या। —फुलवाड़ी

४ स्वर, ध्वनि, आवाज, नाद।

उ०—परम हंस प्रागद में प्रांणी। ब्रह्म प्रकासि हुई तदि **वांणी**। —सू. प्र.

५ योग के अनुसार च्यार प्रकार की वाणियों में कोई एक

उ०—चार प्रवस्था सप्त भूमिका, पच कोस विगतांना। चार सरीर भाव पुनि च्यारूं, **वांणी** चार सयांना। —श्रीसुखराम जी महाराज

वि. वि.—योग के अनुसार वाणी के च्यार भेद माने गये हैं:—वैखरी, मध्यमा, पश्यती, प्रत्यंता।

६ भाषा, शब्द, वाक्य।

उ०—चांद सूरज गळै मिळ्या। धरती रा कण कण में हरख समायग्यो। पान पान में रस सांचरग्यो। उण मिळण अर प्रागंद री कोई **वांणी** नी ही। —फुलवाड़ी

७ जिव्हा, जीभ।

८ बोलने की क्रिया या भाव।

उ०—१ प्रतस रा मून मिळाप पछै **वांणी** री सुध-बुध बावड़ी। होठ खुलता सा निगै प्राया। —फुलवाड़ी

९ साधु-संतों द्वारा कथित या रचित, उपदेशात्मक पदों, दोहों या सोरठो का संग्रहित ग्रंथ।

उ०—पाप चीकणां भव पैलै मे, खूब करैला स्वारियां। **वांणी** लिखि गया साध बिचारी, मुकति हुवै मन मारियां। —ऊ. का.

१०—प्रायः 'तंदूरा' पर गाया जाने वाला निर्गुण भक्ति का पद।

११ साहित्यिक निबंध।

१२ एक छंद।

१३ केवट, नाविक। (म. मा.)

१४ प्रशंसा।

१५ ध्रुपद की चार वाणियों में से कोई एक या सब:—गौरहारी, नौहारी, डागरी, और खंडारी (संगीत)

रू. भे.—वांण, वांणि, बांणी, बांनी, वांण, वांणा, वांणि।

वांणीखंड—सं. पु. [सं. वाणीमण्ड] दांत। (प्र. मा.)

वांणीरणजोधार—सं. पु.—पंडित, विद्वान। (ब. मा.)

वांणोतरो—सं. पु.—वनिक समाज।

उ०—सो साहूकार री बहू मूंई। पछै कितरैक दिनै साहूकार नै सहर रा **वांणोतरां** कही। साहजी विवाह करो। तद साह वांणोतरां नै कह्यो। प्रबै हूं बरस पचास रो हुयो, हूं विवाह करों नहीं। —साहूकार री वात

वांणो—सं. पु. [सं. वाहन] १ पानी लाने के लिये गाड़ी पर रखे हुए जल पात्रों का समूह।

२ उक्त प्रकार से पानी लाने की क्रिया या ढंग।

३ रू भे.—वाहणो।

वांण्यौ—देखो 'वणिक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**वांण्यौ** मित्र न वेस्या सती, कागौ हंस न बुगलौ जती। —अज्ञात

वांति—सं. स्त्री. [सं. वांतिः] १ वमन, कै।

२ उगाल।

वांतौ—सं. पु.—अंतर, फर्क।

वांथ—देखो 'बाथ' (रू. भे.)

उ०—तद कुंवरसी दीठो माजी छेहड़े प्राय गया। तद ठाढी **बांथ** घात कहण लागो, जो माजी जीव मनै भी प्यारो छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

वांद—१ देखो 'बादो' (मह., रू. भे.)

उ०—ऊंचा नीचां वाक्य बोलइ, प्रही प्राहुणो टलइ, छोरु चाकर भिडइ, **वांद** गुलाम मुहि चडइ, थकी सीकउं त्रोडइ, बोलावी माथुं फोडाडइ, कुटंब सदा दुखि पाडइ। —व. स.

२ देखो 'बांद' (रू. भे.)

वांवणो, वांदबो—देखो 'वादणो, वांदबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ प्रायो चाहता अंगद, मह सेन मझारं। प्रभु पद **वांदै** जोड़ पांण, प्रम मुकट अधारै। —सू. प्र.

उ०—२ प्रब डाळ कुंभ प्रांणि, विमळ वर तरणि वंदावै। **वांदि** कळस तिण वार, भूप द्रब रूप भरावै। —सू. प्र.

उ०—३ **वांदण** प्राव्या स्रेणिक राय, नगर लोक पिण वांदण जाय। प्रापै प्रभु गणधर उपदेस, सजल जलद अनुहार विमेस। —श्रीपाल रास

उ०—४ बळ दुयधार बयण बोगागुर प्रार्य दिन न कीध बधार । बहा बहा गा तोरण बांधै, नवल बना महकार निवार ।
—प्रोपो प्राढो

उ०—५ कृष्ण बनुरद्वगी लगाइ दिनि वनुर्गथ स्नान करइ, मिद्धायतनि ध्यान धरइ, प्रस्वत्थ प्रभ्रांत वनस्पति बांदइ, मकुनध्यानीया बानदइ । —व. स.

बांदरणहार, हारो (हारी), बांदणियो - वि० ।
बांदिग्रोड़ो, बांदियोड़ो, बादयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बांदीजणो, बांदीजबो—कर्म वा० ।

बांदर—देखो 'बानर' (रू भे.)

बांदरपगो—स पु —वह बैल जिसके पिछले पैर के टखने भूमि को स्पर्श करते हों ।

(मि —मोदीपगो)

बांदरमाळ - देखो 'बादरमाळ' (रू. भे)

बांदरी—स स्त्री. [देशज] १ मोट की रस्सी के साथ जुड़ा हुआ एक लकड़ी का उपकरण जिसमे कील डाल कर बैलो के साथ जोड़ा जाता है ।

२ देखो 'बानर' (स्त्री.)

बांदरौ—देखो 'बानर' (अल्पा., रू. भे)

बांदियोड़ो—देखो 'बादियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. बांदियोड़ी)

बांदी—देखो 'बादी' (रू भे)

उ०—नै जोमण री वखत हुवी । तरा ठाकुरां बांदी मार्ग वीरमदे जी री मांजी सोमोदणी नै कहायो जीमण मारू । —द. दा

बांदोळी—देखो 'बदोळी' (रू भे.)

बांबोळी—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बांघणो, बांघबो—१ देखो 'बाघणो, बाघबो' (रू. भे.)

उ० —ना हू सीची सज्जणी, ना बूठउ प्रगाळि । गो ताळि ढोलउ बहि गयउ, करहउ बांध्यउ डाळि । —ढो. मा

बांधणहार, हारो (हारी), बांधणियो वि० ।
बांधिग्रोड़ो, बांधियोड़ो, बांध्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बांधीजणो, बांधीजबो कर्म वा० ।

बांधियोड़ो—१ देखो 'बाधियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री बांधियोड़ी)

बांन—सं. पु.—१ यश, कीर्ति, शोभा ।

उ०—१ कटा वंश झाड़ झाड़ा पहाड़ संलोट कीधा । वस राण मवाड़ा अहाड़ा वाढै बांन । —राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—वाधारण हिंदुसथांन बांन । 'प्रभमाल' जोड़ नह भूप प्रांन ।
—सू. प्र.

उ०—३ ऊभै करण जग ऊपरा, सखरा खरा सहज्ज । बांन वधारण वीरवर, सूर मधीर सकज्ज । —ल. पि.

२ हौसला, साहस, जोश ।

उ०—२ बांन वधारे कमधजां,ग्राघारे असमांन । 'गजबंधी' नवसाहसै, मागा बारह खांन । —गु. रू. बं.

३ उमंग, उत्साह ।

उ०—वाहै खग बोंद जिहो चढ़ि बांन । धरा नवकोट सिरै परधांन ।
—सू. प्र.

४ प्रतिष्ठा, इज्जत, ।

उ०—वित पुढ़ि माहिब खांन हणमंत ज्यूं 'जैता' हरौ, उणि वेळा लागो अरसि, बंस वधारण बांन । —वचनिका

५ तेज, कान्ति, दीप्ति ।

उ०—अळगी वे (व्है) जोहे अली, जोवण दीजो जांन । मालीगर स्यारांम रो, देवण दीजो बांन । —मयाराम दरजी री बात

६ वचन ।

उ०—वहिनीं थई त्रिलोचना, वदै परम्पर बांन । — वि. कु

७ स्वाद, जायका ।

उ०—वळी बीजा प्राणा पकवान, जिमता वाधइ मुख नु बांन, ने कुण जाति, नव नवी भांति, दही वड़ा गदवडा —व. स.

[प्रत्य.] ६ कुछ शब्दो के आगे लगने वाला एक सम्पन्नता सूचक प्रत्यय ।

७ देखो 'बाद' (रू. भे)

रू भे —बान ।

बांनइत—देखो 'बांनैत' (रू भे.)

उ०—पतिसाह सल्ल ऊघाडि प्रोळि, ऊतेड़ि अवि आउध इतोळि । वांनइत जेस रांगिग देव । बोलिया वाघ बिहुं बाह बेव ।
—रा. ज. सी.

बांनक—देखो 'बाणक' (रू. भे.)

बांनगी—देखो 'बानगी' (रू. भे.)

बांनणी—देखो 'बानणी' (रू. भे.)

बांनप्रस्थ—स. पु. [सं. वानप्रस्थ] आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमो मे से एक जो गृहस्थ आश्रम के बाद तथा सन्यास आश्रम से पहले आता है । जीवन की तीसरी अवस्था ।

रू. भे.—बाणप्रस्थ, बानप्रस्त, बांनप्रस्थ, बांणप्रस्थ ।

बांनर–सं. पु. [सं. वानर] १ मनुष्य से मिलती-जुलती शक्ल का एक प्रसिद्ध प्राणी, बंदर, कपि।

उ०—ऊधम किर राळै घर अंदर। बाग असोक लांगड़े **बांनर**। —सू. प्र.

पर्या.—कपी, कीस, प्लवग, प्लवगम, बनचर मरकट मांकड़ लंगूर साखामृग, हरि।

२ दोहा नामक छंद का एक भेद विशेष।

वि. वि.—देखो 'मरकट' (७)

३ राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—'नारण' 'केसव' तणं निर्भ नर। बन्नर नील जिसौ बळ **बांनर**। —रा. रू.

४ भाटी वंश की एक शाखा।

५ बढ़ई का एक औजार विशेष।

रू. भे.—बंदर, बनर, बन्नर, बांदर, बांनर, वनर, वन्नर, वनर, वन्नर, वांदर।

अल्पा.—बंदरियौ, बांदरियौ, बादरौ, बांनरड़ौ, वांदरौ, वांनरौ।

६ देखो 'बंदर' (रू. भे.)

बांनरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—हे पांन अणावौ ए मारी जच्चा राणी रै ताम रा, हे जठै पूरवि छै **बांनरमाळ** ए। —लो गी.

बांनरमुख–सं पु.—नारियळ। (अ. मा.)

बांनरी–वि [सं. वानर+ई प्रत्य.] १ बंदर की, बंदर सम्बन्धी।

२ बंदर के समान।

उ०—हुलारा जूट रामचंद री **बांनरी** सैन्या ज्यौं रीछा री जमात सा निजर आवै छै। —रा. सा. सं.

सं. स्त्री.—१ कैंवाच, कौंछ।

२ देखो 'वानर' (स्त्री.)

बांनरौ—देखो 'बांनर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दादू डोरी हरि के हाथ है, गळ माहि मेरे। बाजीगर का **बांनरा**, भावै तहा फेरै। —दादूवांणी

बांनवासिका–स. स्त्री. [सं. वानवासिका] सोलह मात्राओं का एक छन्द विशेष जिसमे नवीं और बारहवीं मात्रा लघु होती है।

बांना–सं. स्त्री. [स] बटेर, लवा।

बांनायुज—देखो 'बनायुज' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

बांनाबंध, बांनाबंधण, बांनाबंधण—देखो 'बांनाबंध' (रू. भे.)

बांनी–सं. स्त्री.—१ भस्म, विभूति. राख।

उ०—१ **बांनि** अंग वळेट, मेखळी भुज पर मेली। ले मांछंदर नांम, साह तन कंथा सेली। —पा. प्र.

उ०—२ दूध पाय मंडा में बांनी री चिमटी भुरकाती। —फुलवाड़ी

२ कांती, दीप्ति।

उ०—जोम अनंग सौ गुणौ जवांनी। वप व्है कनक सोळिमां **बांनी**। —सू. प्र.

रू. भे.—बांणी।

बांनीर–सं पु [सं. वानीर] १ बेंत।

मर सबळा आगै निबल, नीर धकै **बांनीर**। वाय धकै त्रण जाय वच, भलौ नमण गुण भीर। —बा. दा.

२ पाकर का पेड़। (सभा.)

बांनै–क्रि वि —१ ओर, तरफ।

उ०—हिंदवां छात दोय बात ले हालियौ, बाळग्यौ आंक जुग चिहूं **बांनै**। —दुरसौ आढौ

बांनैत, बांनैत – देखो 'बांनैत' (रू. भे.)

उ०—१ मुख **बांनैत** महीपती, करन' अनै चंद्रभांण। कियौ सकोधां सांम कज, यां जोधां आराण। —रा. रू.

उ० २ तरै अजब' भड़ तेड़िया, वड रावन **बांनैत**। मार मार मुख मुख मुणै, बांह प्रळंब बरदैत।

—कल्यांणसिंह नगराजोत बाढेल री वात

उ० —३ बेनौ सहि बिरदैत, जेठौ गोवरधन जिसा। 'करनाजळ' अणवर कन्है, वडजांनी **बांनैत**। —वचनिका

उ०—४ रिण पावै झगड़ा बिना दुमनौ रहै लाज इतरौ के चित मैं ही नही समावै झगड़ा री वेळा पाछा पग दे नही जांणैं लाज रा लंगर पड़िया है। उण वीर नें **बांनैत** कहणौ। —वी. स. टी.

बांनोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बांनोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

बांनौ—देखो 'बानौ' (रू. भे.)

उ०—१ **बांनौ** देखै वांदियै, क्या करणी सूं कांम। —अग्यात

उ० —**बांना** औरै हद् विहद्, लाल सपेन स्याह जरद्द। —गु. रू. बं.

उ०—३ वीर सिंगार चढै **बांनां**। पहरै अतर अरोगै पांनां। —सू. प्र.

उ०—४ बणिया गजां तणै सिर **बांना**। मिळिया तुरळ रजी असमाना। —रा. रू.

उ०—५ सबजे जरदाई लाल सिहाई **बांनै** छायौ ब्रहमंड। फररा बैरक्कां काबौ कटक्कां जांणक फूलै वन-खंड। —गु. रू. बं.

उ०—६ इंद्र समीवर जांणियै, रिद्धि करी राजा नौ रे। गुनह खमै निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै **बांनौ** रे। —वि. कु.

उ० ३ सिकू चाहीजै मू गरव थान दिखावीस, थाहरा घणा **बांना** करीस, अर थे मांगियो मू राजा देसी। —मयणी री वात

बांबामणो, बांबासबो–क्रि स.—जोश दिलाना।

बांबालियोड़ो–भू. का. कृ.—जोश दिलाया हुआ।

(स्त्री. बांबालियोड़ी)

बांभ– देखो 'भाव' (रू. भे.)

उ० गगनी री हुवै **बांभ**, नठ नह काढणी। कामिनी हुकम हुवै गणी। बांकी निजर री बीह, लुगी न मेलणा, लेना दे करतार फेर नहं वालणा। —अग्यात

बांमण–१ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०– सबळ सेन सायद बहु थट्ट, याचक मगण **बांमण** भट्ट।
— ढो. मा.

(स्त्री बांमणी)

२ देखो 'भाभी' (स्त्री.)

बांमणी–स. स्त्री —१ मेवाड की एक नदी।

उ०—नदी तीन री विगत —१ चावळ, १ वांमणी, १ पगधोई।
— नैणसी

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री.)

३ देखो 'भाबी' (पु.)

बांभी– देखो 'भाबी' (रू. भे.)

(स्त्री. बांमण)

बांमंग—देखो 'वामांग' (रू. भे.)

उ० –१ राठौड़ रनेश रणताळ, **बांमंग** हुई बीजळा झाळ। बाधै कंदोळ मधे विराण, कोमीम भुजै दोना कबाण। —गु. रू ब.

उ०—२ यडफर भुज बांमग, गमे दाहिण भुज मावळ। जाम सिरा भोर जमो, बहसि प्रांग चो प्रजुळवळ। —सू. प्र.

बांम–स. पु [स. वामः] १ शिव, महादेव।

२ एक रुद्र।

३ काम देव। (अनेक)

४ सूर्य।

५ कृष्ण का एक पुत्र।

६ चन्द्रमा के रथ का एक घोड़ा।

७ जन्तु।

८ सर्प।

९ स्तन, कुच।

१० –चौबीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात जगण और एक यगण होता है।

११ छं मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

[स. व्याम] १२ लंबाई का एक नाप जो दोनों भुजाओं को दोनों ओर फैलाने पर एक हाथ की उंगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उंगलियों के सिरे तक की लंबाई का होता है। (उ. र.)

१३ धन, सम्पत्ति।

स. स्त्री.—१४ सर्पाकार चितकबरी मछली विशेष।

१५ पृथ्वी, भूमि। (डि. नां. मा.)

वि. [स. वाम] १ बांया, दाहिने का विपर्याय।

उ० —ऊमसै घणौ उछाह, चाप वांम धरै चाह। **बांम** हाथ लीध वाह, जीमणौ कसीस जाह। —र. रू.

२ बाईं ओर स्थित, वांमभागस्थित।

उ० —दिस दिक्खण सेडिया, पीठ उतराध विचारै। सकन **बांम** सुरराय, सोम दाहिणे सभारै। —रा. रू.

३ उल्टा, ओंधा।

४ विरुद्ध या विपरीत स्वभाव का।

५ कुटिल स्वभाव का। (अ. मा., अनेक)

६ दुष्ट, नीच।

७ मनोहर, सुन्दर। (अ मा., अनेक.)

रू भे —वांम

८ देखो 'वामा' (रू. भे.) (अ मा, ह. नां. मा.)

उ०—१ पाम महेली पीव रै, वण यूं ऊभी **बांम**। निसरे चावक नेह रा, लोपै लाज लगांम। —अग्यात

उ० —२ सुंदर सोभन घणस्याम, तड़िता पट-पीत छिब तांम। वांमै अंग सीता वाम रूप अनंग कोटिक नांम। —र. ज. प्र.

उ०—३ भणो आप री देस री, और **बांम** री नाम। आंमद कुण में देस ने, इत आये को काम। —पंच दंडी री वारता

बांमअरधपादासन–स. पु. [स वामार्धपादासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष।

वि वि.—इसमें बायें पाव की पिंडली दबाकर उसी पांव को दाहिने पाव के घुटने पर रख दिया जाता है, तथा दाहिने पाव की एड़ी दाहिने भाग की जंघा के निम्न भाग के लगाकर बैठा जाता है। इसका विपरीत दक्षिण घंपादासन होता है।

बांमजांनासन–स. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक।

वि वि.—यह दक्षिणजान्वासन से विपरीत होता है।

बांमण १ देखो 'वामन' (रू. भे.) (ह ना. मा.)

उ० —१ असनिकुमार अगनि वन आवी, देवनाथ महि **बांमण** दाखो। समद प्रजापति आदि सुरेसर, कमंधा धणी तणी रक्षा कर। —रा. रू.

उ०—२ सखी अमीणो साहिबो. सूर धीर समरत्थ। जुध में **बांमण** डड जिम हेलो वाधै हत्थ। —बां. दा.

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—बांमण चरण प्रताप विधि, हिम पित गौरी विहून ।
—रांमरासौ

(स्त्री. बांमणी)

बांमणदेव—देखो 'बांमन'

बांमणौ—वि. [सं. वाम] (स्त्री. बांमणी) १ विरुद्ध, प्रतिकूल ।

उ०—सहु को देखो बांमणौ, नृप कन्या स्रीपाल । कुमरी वर वरवा भणी, कंठ ठवी वरमाळ । —श्रीपाळ

२ तिरछा, टेढा ।

बामदक्षिणपादासन—सं. पु.—योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जिसमें बांये पांव को लंबा करके दाहिने पांव पर खड़ा रहना पड़ता हैं ।

बांमदक्षिणस्वासगमनासन—स. पु—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक ।

वि. वि.—इसमें दाहिने पैर के घुटने को दाहिने हाथ की बगल में रखकर शरीर का बाभ उसी पर दिया जाता है, तथा बाये पैर को घुटने से मोड़कर उसकी ऐड़ी उसी तरफ की जंघा के निम्न भाग को लगाकर गुदा ऊची करके बैठना होता है ।

बांमदेव—सं. पु. [स वाम+देव] शिव, महादेव । (ह. नां मा.)

रू. भे.—बांमदेव ।

बांम देवी—स. स्त्री. [सं. वाम-देवी] १ दुर्गा ।

२ सावित्री ।

बांमन—स पु. [स. वामन] १ ईश्वर ।

२ विष्णु भगवान के पांचवे ग्रवतार का नाम, जो वलि राजा को छलने के लिये लिया था । (ग्र. मा.)

उ०—प्रीतांबर सु प्रीति पहिलकी, ते तां मुदई जाणई । मछ कोरंम वाराह नारसिंघ, बांमन फरस वखांणई । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ मछ वाराह धरणीधर, नारसिंह बांमन करुणा कर ।
—गजउद्धार

३ बौना या ठिंगना ग्रादमी ।

४ विष्णु ।

५ शिव ।

६ दक्षिणी दिग्गज का नाम ।

७ ग्रठारह पुराणों में से एक ।

८ काशिका वृत्ति के रचयिता का नाम ।

९ ग्रंकोट वृक्ष का नाम ।

वि.—१ छोटे डील का, ठिगना, बौना, नाटा, खर्व ।

२ नम्र ।

३ नीच, कमीना, शठ ।

रू. भे.—बांमण, बांमन, बांवन, बावन्न, बांमण ।

ग्रल्पा.—बावनियौ, बावनौ, बावन्यू ।

(स्त्री· बांमनी)

बांमनजयंती, बांमनद्वादसी—सं. स्त्री.—भाद्रपद मास के शुक्ल-पक्ष की द्वादसी ।

वि. वि.—यह वामन भगवान का जन्म दिन माना जाता है । इस दिन व्रत रखा जाता है व वामन भगवान की पूजा की जाती है ।

बांमपदग्रपानगमनासन—स. पु.—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक ।

वि. वि.—यह दक्षिणपादग्रपानगमनासन से विपरीत होता है ।

बांमभुजासन—सं. पु.—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक ।

वि. वि.—इसमें बांये हाथ की टेहुनी मोड कर भूमि पर रख दी जाती है तथा उस हाथ की हथेली को गाल पर लगा कर शरीर का बोझ डाल कर बैठा जाता है तथा पीछे दोनों पांवों को संकुचित करके बाये पांव पर दायां पांव रखकर दाहिना हाथ उस पर रख दिया जाता है ।

बांममारग—सं. पु [सं. वाममार्ग] वेद विहित दक्षिण मार्ग के विरुद्ध एक तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मास, व्यभिचार ग्रादि निषिद्ध तत्वों का विधान रहता है ।

रू भे—बांममग ।

बांमराड़—वि.—देखो 'बाबराड़' (रू. भे.)

बांमलोचना—सं. स्त्री. [सं. वाम+लोचन] १ सुंदर-स्त्री ।

२ स्त्री, नारी । (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

बांमवक्रासन—सं. पु.—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक जो दक्षिण-वक्रासन के विपरीत होता है ।

बांमसाखासन—सं. पु.—योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जो दक्षिणसाखासन के विपरीत होता है ।

बांमसिद्धासन—सं. पु.—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक जिसमें बांये पैर की पुड़ी सिवनी में लगाकर दाये पैर के सम्मुख लंबा करके बैठना होता है ।

बांमसर, बांमसुर—स. पु. [सं. वाम-सुर] महादेव, शिव । (नां. मा.)

बांमहथौ—सं. पु.—ग्रयाल में ग्रशुभ भौंरी वाला घोड़ा ।

बांमहस्तचतुस्कोणासन—सं. पु. [स. वामहस्तचतुष्कोणासन] योग के चौरासी ग्रासनो के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जिसमें दाहिने पैर को घुटने से मोड़कर बैठना होता है तथा पीछे बांये पांव के पंजे को बांये हाथ की टेउनी में लगाना तथा दाहिने हाथ की उंगलियों पर परस्पर भिड़ाना होता ।

बामहस्तभयंकरासन–स. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें बांये हाथ को ऊंचा रखकर पलथी मार कर बैठना होता है।

बामांग–वि. [स. वाम-अंग] १ बायें अंग का, बायें अंग सम्बन्धी।

२ बायें अंग की ओर का।

३ देखो 'बामांगी' (रू. भे.)

रू. भे.—बामाग, वामग।

बामांगिनी, बामांगी–स. स्त्री. [स. वामा + अंगी] पत्नी, स्त्री।

रू. भे.—बामाग।

बामा–स. स्त्री [स. वामा] १ धर्मपत्नी, स्त्री।

उ०—देवी काम ही लोचना हाम कामा, देवी वामनी मेर माहेस बामा।

—देवि

२ सरस्वती, शारदा।

३ लक्ष्मी।

४ रमणी, युवती।

उ०—फूटै धीर साबळा नीसांण बार पार फूटै, माथा सत्रा तूटै आगै हारां मोती लाल। स्रकै-पंजै मेख्रा छळै बांमा हुवै अग्रांमा छूटै, सग्रामां प्रजका तूटै बीजो रायासाल।

—रावतेबिसिह मखावत रो गीत

५ सुन्दरी, स्त्री।

६ पृथ्वी। (ना मा.)

८ दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

रू भे.– बामा।

बामाचार–स. पु [स. वामाचार] तांत्रिक मत का एक भेद, जिसमें पंच मकार—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की आराधना की जाती है।

बामादेवी–स. स्त्री. [स. वामदेवी] पारसनाथ जी की माता का नाम।

उ०—अस्वसेन नृप कुल तिलौ रे, बामादेवी को नंद। —वि. कु.

बामासर–स. पु. पारस नामक वृक्ष। (अ. मा.)

बांमी–क्रि. वि. [सं. वाम] बायीं ओर, बाईं तरफ।

उ०—महोदर वजर धुमटरु दाढ़ मसत, दुरीमुख धूमनर धूम बांमी दसत।

—र. रू.

स. स्त्री. [स. वामी] १ घोड़ी।

२ गधी।

३ हथिनी।

४ गीदड़ी।

वि. ५ वाम मार्गी।

रू. भे.—बामी।

बांमीबंद, बांमीबंध–स. पु.—१ राठौड़ों का विशेषण सूचक शब्द।

२ राठौड़ राजपूत।

उ०—तपत बाण कीधौ हर ताणिक। बांमीबंध एरसै वांणिक।

—सू. प्र.

वि. वि.—इनके साफे या पगड़ी का बंध बाई ओर होता है।

३ गौड़ राजपूत।

उ०—बापस बांमीबंध, कंध अवकंध कहांणौ, खांन जिहां भंजियो, पह्र घर बलख पछांणै।

—विलवरासौ

रू. भे.—बंदवांमी, बंधवांमी, बांमीबंद, बांमीबंध।

बांमै–क्रि वि. [सं वाम] बाईं ओर।

उ०—'दुरग' खडे' दक्खिण दिसा, अकबर सूं हित आख। कर धर गुज्जर जीमणौ, छप्पन बांमै राख।

—रा. रू.

बांमौ–वि. [स. वाम] (स्त्री. बांमी) १ दाहिने का विपर्याय, बांया।

उ०—सु लोहार कौ जु बांमौ हाथ। कस्तूणजी रौ डोल हुऔ। रुखमइयै की तरफ की देलै छै तब तपि आवै। रुखमणीजी की तरफ देल्यै सीतळ होय आवै।

—वेलि टी.

उ०—२ पूठी बांमै दाहिणै, आगळि अग्गै-वांण। राजा "गाजी साह" नै, राखदौ रहमांण।

—गु. रू. बं.

२ प्रतिकूल, उल्टा विरुद्ध।

उ०—'बेणौ' वहै जगत स बांमौ, नाहर अमर करण अग नांमौ। सिरै धरा जावतो सोयो, करणौ मौज करारो कामौ।

—वेणीदास साचोरा रौ गीत

३ दुष्ट, शठ, नीच।

रू. भे.—बांमौ।

बांयली–वि. स्त्री. १ पिछली, पीछे की।

२ देखो 'वसूनो' (अल्पा., रू. भे.)

बांयलो–वि.—(स्त्री. बायली) पिछला, पीछे का, शेष।

२ देखो 'वगलो' (रू. भे.)

बांये-देखो 'बासें' (रू भे)

बांरबो–स पु—वात रोग की एक प्राचीन चिकित्सा।

बांस–वि.—१ वंश का, वंश सम्बन्धी।

२ देखो 'बंस' (रू. भे.) (उ. र.)

३ देखो 'वास (रू भे)

उ०—१ चिगता उखेल पखरे चरित, रकतै मेळ अमेळ रुख। वध बेध बळै खळ बांस ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख।

रा. रू.

उ०—३ वेग बांस वांसळी वजावण । चिनो मोहन राधिका वव ।
—ह. नां. मा.

बांसइ–अव्य.—१ पीछे।

उ०—१ के मेहल्या पूगळ दिसइ, किहीं भळाया भार। साल्ह कुंवर करहद चढचउ, बांसइ चाढि नार । —ढो. मा.

उ०—२ असु तरे सलीता अस्सराळ। कांमाळां पूठी के कंठाळ। ऊभारि तइंगी पूरि अभ बांसइ सहारि वूहा विलभ। —रा. ज. सी.

उ०—३ वादल कहै सहू भलो, हुइ मावीसीइ तुम नांम रे भाई। करज्यो बांसइ कुमरजी, सबळी ऊपर सामि रे भाई।
—प. चं. चौ.

२ निकट, समीप, पास।

उ०—सूवा एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुज्झ। प्रीतम बांसइ जाइ नइ, मुई सुणावे मुज्झ। —ढो. मा.

बांसरी—१ देखो 'बंसी' (रू. भे.)

२ देखो 'बासरी' (रू. भे.)

बांसलो–वि. स्त्री. १ पीछे की, पिछली।

उ०—१ रात पोहर १ बांसली थी, सु सासरिया हालण दै नहीं।
—नैणसी

उ०—तरै इण बांसली बात सोह मांडनै कही। —नैणसी

रू. भे.—वाहली।

२ देखो वंसी' (रू. भे.)

उ०—१ क्षण मुखि वाइ बांसली, क्षण करि वेणा ताळ। सीसि मुगट पय घूघरी, गळि मोत्ताहळ माळ। —मा. कां. प्र.

उ०—२ वीणा ताल म्रदग बाज रहिम्रा छै। बांसली वाजि रही छै। ढोलकां वाजि रही छै। —रा. सा. सं.

३ देखो 'बासरी' (रू. भे.)

बांसळो, बांसलो–वि. [सं. वश+रा प्र. लो] (स्त्री. वासली) १ वशज सतान, वंशके।

उ०—१ तारां पातमाजी इण नूं नरवर पटै दीनीं। सू नरवर आसकरण रा बांसला राज करै है। —द. दा.

उ०—२ सोम केहर रो, देवड़ी लाछां रै पेट रो। इण रै को दिन विकूंपुर हुतो। तिण सोम रै बांसला सोम-भाटी छै। —नैणसी

वि.—२ पीछे का, पिछला।

उ०—१ गढ बांसलो भोमियां लीयो रांणी। आंबावरी जात करने गांव नांगदहै बांभण रै आय डेरो कियो। —नैणसी

उ०—२ तिको जखड़ो बांसलै आसण भीलां सांमो बैठो।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

३ शेष, अवशिष्ट।

उ०—राव दूदै सूं लड़ाई कीवी। सु राव दुदो कांम आयो। अर आकूंतखां पण कांम आयो, घड़ी ५ तथा ६ दिन बांसलै थकै।
—नैणसी

रू. भे. -बांसलो।

बांसा–सं. स्त्री. [देशज] १ घोड़े की जीन।

२ देखो 'बासे (रू. भे.)

उ०—१ कासम परलै जोस कमंधां, एक थकै हुयगो ऊबंधां। भाजै आप गयो मझ भीतां, बांसा लोक लखै सुख बीतां। —रा. रू.

उ०—२ बांसा सूं ऊदैजी तरवार काढ़ अर वाही सु बिचड़ हुआ।
—नैणसी

बांसावळी—१ देखो 'वासावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बंसावळी' (रू. भे)

३ देखो 'बांसवाळी' (रू. भे.)

बांसियो–सं. पु.—१ बांस का बना अनाज बोने का एक उपकरण।
(शेखावाटी)

वि. वि.—देखो 'नाई'१

२ एक अर्द्ध चन्द्राकार गोल घड़ा हुआ पत्थर।

रू. भे.--बासियो।

बांसै–क्रि. वि.—पीछे।

उ०—सो प्रोहित चाल जांगळू आयो। माळी रै घर डेरो लियो। रात रहो। परभात खबर लीवी। सो कुंवर तो सिकार चढ गयो। तद प्रोहित पिण बांसै चढ गयो। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

बांसे–क्रि. वि.—१ पीछे से, पीछे।

उ०—१ केहर मत बाळक कहो, देखो, जात सुभाव। बांसे देखे बाहरां, परत न छंडे पांव। —बां. दा.

उ० २ करहो कंथ कुबेरियां, सुगणी मारू संग। बांसे उमर सुमरो, ताता खड़ै तुरंग। —ढो. मा.

उ०–हुरम कबीला रिद्ध तर, माथै मीर प्रचंड। इण बांसे करचलियो, आसा खंड विखंड। —रा. रू.

२ पश्चात बाद में।

उ०—१ 'सत्तो' लूण करणोत, राव रणमल साथै चीतोड़ कांम आयो। 'सत्ता' रो राव रिणमल सू बोल हुतो—"थां बांसे हूं नहीं जीवूं"। —नैणसी

उ०—२ ताहरां सयणी तो हीमाळै नूं हाली। बांसे सात में दिन बीजाणद आयो। —सयणी री वात

३ शेष, बाकी।

४ समीप, पास ।

उ०— राणो अजमेर किनरा एक दिन रहसां । मवारे मोह साथ **वांसै** छै, तिके भेळा करनै जाय अजमेर लेस्यां ।

—राव मालदे री बात

५ साथ मे ।

६ मदद मे, इमदाद मे ।

उ०— बीकाणो देसांणं **वांसै** । करनादे पलटै किम कोट ।

— द. दा.

क्रि. वि.—७ अधीन, अन्तर्गत ।

उ०—१ किसनावत भाटियां रा गांव आगै तो पूगळ **वांसै** हुता हमैं तो बीकानेर वांसै छै । —नैणसी,

उ०—२ आ माड विक्रंपुर सू जुदी जेसळमेर **वांसै**, जुदी चाकरी करै । —नैणसी

रू. भे.—बासा, बांसै वासै, वसै, वाय, वासा ।

बासोलो—देखो 'वसूलो' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र.)

बासोल्यो—देखो 'वसूलो' (रू. भे.)

बांसो—सं. पु.—१ पीछा ।

उ०—१ सोनगरां अर राव नीडैजी रै वेढ हुई । सोनगरा रा पग छूटा । तरै राठोड़ां **बांसो** कियो । —नैणसी

उ०—२ कान्है नु मारणो । तिण रो **बांसो** कियो । सेर ज्यू-ज्यू, लाधा, त्यु मारिया । —नैणसी

२ पीछे का भाग, पीठ ।

उ०—१ तरै राजा रो **बांसै** सु राठो फाडने बाळक काढियो नै पाटो बाध्यो । —रा. व. वि.

उ०—२ कछव कछवाह **बांसो** पलट करै किम । बसुह चो माड बिहु भला वांसै । —महियारियो पुरो

३ साथ ।

४ मदद, इमदाद ।

५ वेट दस्ता, मूठ ।

६ देखो 'बास' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—बासो ।

बाह्—देखो 'बाह' (रू. भे.)

उ०—नागर सूर पऊर गह, बाचर चाडै देग । लगर लहै दुहु बाह बाळि, दुइ दुदं अघे तेग । —गु. रू. ब.

बांहड़ी—देखो 'बाह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रतन मे गागड़ी वाणी बामग जड़ी, सुभरा **बांहड़ी** लहक लोई । स्वाति नो बिदलो नासिका निरमयो, प्राज प्रात्यगन करन कोई । —रूकमणी मगळ

बांहणो—देखो 'वांणो' (रू. भे.)

उ०—तिण गांव कूवो १ छै, तिण पांणी निपट मीठो पालर सारीखो छै, उठारा **बांहणा** पांणी सहर आवै छै । —नैणसी

बांहळी—देखो 'वाळो' (अल्पा., रू. भे.)

वाहली—१ देखो वसी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बांसली' (रू. भे.)

वाहोलो—देखो 'वसूलो' (रू. भे.)

वा—सर्व. स्त्री.—१ वह ।

उ०—१ कुळवंती सु क्रीत रो, उलटो है आचार । वा न तजै घर आपरो, जग इण रो संचार । —बां. दा.

उ०—२ पडसी जद कांम दोड़सी पाळी, दाढाळी असुरां भुजडांण वा आवै ऊपर इकनाळी, देसणोंक वाळी दीवांण । —अग्यात

२ उस, उन ।

उ०—१ राज पद पावै या कहावै राजकुळ में । गायो कवि गुन कै बतायो वा को महावीर । —ऊ. का.

उ०—२ म्हारी गळियां ना फिरै, **वा** के आगण डोले हो । म्हारी अगुळी ना छुवै, वा की बहियां मोड़े हो । —मीरां

अव्य.—१ अथवा, या ।

उ०—मिघासणो **वा** इद्रासणो **वा** प्रिथीपती **वा** सरगपती **वा** । भ्रित मुरो वा भ्रित नरो वा, दिलीसरो वा जगदीस रो वा ।

—गु. रू. बं.

२ और, तथा, भी ।

३ जैसा, सदृश ।

४ विकल्प या सन्देह वाचक ।

५ समाप्ति सूचक अव्यय, इत्यलम, बस ।

उ०—पेट रा आतरा गळै चढै जद बात कहीजै । लारला भौ रो थनै मागत चूकाव । कमसल रा मडा सूं वा तो निकळै ई कोनी ।

—फुलवाडी

सं. स्त्री—१ अवा । (एका.)

२ विरूनय । (,,)

३ प्रेम, स्नेह । (,,)

४ अग्नि । (,,)

५ प्रहार, चोट । (,,)

६ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—पदि चंद देस तां आवी, मि नवी जांणी मासो । **वा** वाइ तेह्वा भालवा लीजि, थई रही तिहा दासी । —नळाख्यांन

रू. भे.—वा ।

बा'—१ देखो 'बाह' (रू. भे.)
२—देखो 'वास' (रू. भे.)

वाग्रणी—१ देखो 'वाहनी' (रू. भे.)
२ देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

वाग्रणो, वाग्रबो—१ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—सीयाळउ तउ सी पड़इ, उन्हाळइ लू **वाइ** । वरसाळइ भुइं चीकणी, चालण रत्ती न काइ । —ढो. मा.
२ देखो 'बावणो, बावबो' (रू भे.)

वाग्रवी, वाग्रवे—देखो 'वासदे' (रू. भे.)

वाग्रळी—देखो 'वाळी' (ग्रल्पा., रू. भे)

वाग्रली—देखो 'वा 'ली' (रू. भे.)

वाइटी—देखो 'वांइटी' (रू भे.)

वाइंवो—सं. पु [देशज] फूस, कचरा.

वाइ—सं. स्त्री. [स. वाद] १ ग्रावाज, ध्वनि ।
उ०—कुंभड़ियां कळिग्रळ कियउ, सुणी ज पखइ **वाइ** । ज्यांकी जोडी बीछड़ी, त्यां निसी नीद न ग्राइ। —ढो. मा.
२ देखो 'वायु' (रू. भे.)
उ०—१ बंदीवाळ घणा सीदाता, दीठा पाडइ हाढि । दिसि ग्रगासई तावडि दाभइ, रातइ वाइ ताढि । —कां. दे. प्र.
उ०—२ माघे **वाइ** माहावठी, सीत करइ सचार । माहरइ माधव सरण थी, लागइ नही लगार । —मा. कां. प्र.
३ देखो 'वापी' (रू. भे)
उ०—सरोवरा तटाक हौद, तीरथं प्रमांण ए । वाग्री ग्रनूप कूप **वाइ**, नीझरैं निवाण ए । —गु. रू. बं.
४ देखो 'वादी' (रू. भे)
उ०—**वाइ** करडि केसरि किसोर, जिणगत्ति जईमू । पुणवि जियोसर सूरि सिद्ध, ग्रारंभिय सीसु । —धरम कलस मुनि
५ देखो 'वाई' (रू. भे)

वाइक—सं. पु.—१ मित्र, दोस्त। (ह. नां. मा.)
२ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)
उ०—तो 'केहर' कहिजें सताब, **वाइक** विगताळा । कूदि पड़ां गज कटहड़ां, चढि गोख विचाळा । —सू. प्र.
३ देखो 'वायक' (रू. भे.)

वाइकचर—सं. पु. [स. वाक्य+चर] श्रवण, कान । (ह. नां. मा.)
रू. भे.—वायकचर ।

वाइड़, वाइड़ि—देखो 'बायड़' (रू. भे)

वाइड़ियौ—देखो 'बायड़ियौ' (रू. भे.)
उ०—मेळो कहै—सिखराजी ! हूं तो **वाइड़ियौ** छूं । कह्यौ—उठो ठाकुर ग्रमल करो । —ऊदे उगमणावत री बात

वाइड़ौ—देखो 'वायड़ौ' (रू. भे.)

वाइणो, वाइबो—१ देखो 'बावणो, बावबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे.)
उ०—ग्रकस्मात् नक्षत्रमाला ग्रद्रस्य थइ, विली **वाउ वाइवा** लागा, तलांनी माटी ऊपरि ग्राणइ। —व. स.

वाइवौ—देखो 'वादौ' (रू. भे)

वाइन—स. पु [ग्रं] शराब ।

वाइफ—सं स्त्री. [ग्रं.] पत्नी, जोरू, स्त्री ।

वाइमल्ल—सं पु.—वादियो में मल्ल ।
उ०—मिगसर बदी छठ्ठ प्रभारइं, मिलिग्रा पतिसाह संघातइं । **वाइमल्ल** बोलायउं पिछांणी, साहि बांन सहु गुदरांणी । —कवि कनकसोम

वाइयोड़ौ—१ देखो 'वाजियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बावियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वाइयोड़ी)

वाइर—देखो 'बैर' (रू. भे.)
उ०—कहियौ जी म्हारा घर सुं उठीया म्हारी **वाइर** थांनुं मूकिया तै म्हारी वडाई । —चौबोली

वाइरियौ, वाइरी—देखो 'बायरौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वाइरौ, वाइलउ—देखो 'बायरौ' (रू. भे.) (उ. र.)

वाइस—१ देखो 'वायस' (रू. भे.)
उ०—ढोला, मिळिसि म वीसरिसि, नवि ग्राविसि ना लेसि । मारू'-तणइ करकड़इ, **वासइ** ऊडावेसि । —ढो. मा.
२ देखो 'बाईस' (रू. भे)

वाइसचांसलर—स. पु [सं.] किसी विश्व विद्यालय का उपकुलपति ।

वाइसचेयरमेन—सं. पु. [ग्रं.] १ उपसभापति ।
२ उपाध्यक्ष ।

वाइसप्रेसिडेंट—स. पु. [ग्रं.] १ उपराष्ट्रपति ।
२ उपाध्यक्ष ।

वाइसराय—सं. पु. [ग्रं] ग्रंग्रेजी शासन-काल का भारत का सबसे बड़ा शासक, जो सम्राट का प्रतिनिधि होता था ।

वाइसी—देखो 'बाईसी' (रू. भे.)

वाईटी—देखो 'वांइटी' (रू. भे.)

वाई—सं. पु.—युवा बैलो को कृषि कार्य व गाड़ी खींचने के लिये शिक्षित करने की क्रिया ।

२ उक्त क्रिया से शिथिल बैल ।

उ०—बाई पय प्राय हुवै, चपल गति निण नाहि । राय कहै वड माहरे, तू तमांगो मन माहि । —वि. कु.

क्रि. प्र.—करणो, काढणो ।

३ देखो 'बाढ़ी (रू भे)

रू. भे —बाई, बाट ।

३ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—मरमै का जैम बार, ग्रकमै का बाई । रहणी मैं जोगस्वर, बहणी मे जगदीस । —रा. रू.

बाईवड़ो—देखो 'बायड़ो' (रू. भे.)

बाईमी—देखो 'बाईसी' (रू. भे)

बाउ—देखो वायु' (रू भे.) (उ. र.)

उ०—१ भिडै राम रावण गही बाउ भल्लै । चतुरबाह रा रत्थ ज्यू पत्थ चल्लै । —वचनिका

उ०—२ ।तिसा ममई न वेदना, करता कोडि उपाय । बाउ विलोलउ बीजणउ, कौ मदन घमी लाय । —मा. का. प्र.

उ० ३ हेमन रित लागी पांलिरो बाउ फिरियो । उतराधो वाउ, बाजियो । —रा. सा. स

बाउकाय—स पु.—वायु के जीव, वायु में रहने वाले जीवाणु ।

उ०—जद स्वामीजी कह्यो—ग्रो पाणी कठै पडसी ? जद तिण कह्यो हेठै पडसी । स्वामीजी कह्यो—इहा पांणी पडतां बाउकाय आदि जीवां री प्रजयणा व्है । —भि द्र

बाउचर—स पु. [ग्र.] हिसाब के ब्योरे का कागज, प्रमाणक ।

बाउदेवता—देखो 'वायुदेवता' (रू. भे)

उ०—लंका राजधानि त्रिकूट परवत गढ जीणइ ग्ररघु बाधी पातालि पाणिउ, नवग्रह खाट तणइ पाईए बाध्या, बाउ-देवता पाणिउ बुहारइ, चउरासी देव द्वार देइ । —व. स.

बाउमंडळ—देखो 'वायुमडळ' (रू. भे)

उ०—भिरतै सूरम 'भीमेण' स्रम दिन मल्लर, विढै वीछोडिया गाजराहै । पडै गज सवळ घरमडळ ऊपरा, मिळै गज-बगळ वाउमरड गाहै । —चतरौ मोतीसर

बाउल—१ देखो 'बबूलौ' (मह., रू. भे.) (उ. र.)

२ देखो 'बाउळ' (रू. भे.)

३ देखो 'बावळ' (रू. भे.)

बाउलउ—१ देखो 'बावळो' (रू. भे.) (उ. र)

२ देखो 'बावळ' (ग्रल्पा , रू. भे)

बाउळि, बाउळो—१ देखो 'बावळो' (स्त्री) (उ र.)

२ देखो 'बांवळी' (रू. भे.)

३ देखो 'बावळ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जीव जंजाळै उलझ्यौ ज्यु जोगि जटा, पाचै पांम मंझार ज्यू भोमर में भटा । नांणै मन में धरम करै साटा नटा, घेरी ज्यासै काल जेम बाउळि घटा । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ केसरि कथन्न सांभळि कन्नि, बाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि । 'बीका' हर राजा ए वखांण, जाळोवळि सीतउ भ्रित जांण । —रा. ज. सी.

बाउलीउ—देखो 'बावळ' (ग्रल्पा , रू. भे)

उ०—वालु नइ वेनातरु, वेउ वेतस वांणि । वधाउ वाहलु लीउ, बाउलीउ वखाणि । —मा. कां. प्र.

बाउळी, बाउलो—१ देखो 'बावळी' (रू. भे.)

उ०—सरसती न सूझै वाउवा हुग्रो कि बाउळो । मन सरिसो धावतो मूढ मन, पहि किम पूजै पांगुळो । —वेलि

२ देखो 'बावळ' (ग्रल्पा., रू. भे)

(स्त्री. वाउळि, वाउळी)

बाउवो—वि [स. वातिक] वात रोग ग्रस्त (लबार) वाचाल ।

उ०—सरसती न सूझै ताइ त सोझै, बाउवा हुग्रो कि वाउलो । —वेलि

बाउसू—देखो 'बावसू' (रू. भे.)

उ०—भारी कटक्क घर धुमइ भारि, ग्रावियां बाउसू सरि उतारि । हलहलिय देस हदबद हुवासि, तड़वागे पड़िया लोक त्रासि । —रा. ज. सी.

बाएक—१ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)

उ०—राद-बाएक । —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

२ देखो 'वायक' (रू. भे.)

बाएरो—देखो 'बायरो' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बाग्रोकळो—स. पु [स. वायुस्थलम्] हवादार व खुला स्थान ।

बाक—स. स्त्री. [स वाक्] १ सरस्वती, शारदा । (ह. नां. मा.)

२ जिव्हा, जीभ ।

उ०—तमख-ग्रगंजी त्रिभनौ कहियो, वड दाता कौरत चौ वीद । बाक तुहाळी करंडी बाळी, काळो भू त्राऊ कासींद । —ग्रोपौ ग्राढो

३ वाणी, वचन, वाक्य ।

उ०—त्रिदेह प्रनग्या कहै एम वाकं । पुत्री जो वरै सो ज तांणै पिनाक । —सू. प्र.

४ ग्रावाज, ध्वनि ।

५ देखो 'बाको' (मह , रू. भे)

रू. भे.—बाक ।

वाकई–क्रि. वि. [अ. वाक़िई] यथार्थ में, वास्तव में, वस्तुतः।

रू. भे.—**वाकेई**।

वाकचपळ–वि. [सं. वाकक्‌चपल] बहुत बोलने वाला बातूनी, लबार।

वाकप– देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

उ०—वांसा थी साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयौ, कांबौ अबु मेड़तै बरस २ रह्यौ छै, उठा रौ **वाकप** छै। —नैणसी

वाकपटु–वि. [सं. वाक्पटु] बातों में या बोलने में चतुर।

वाकपति–सं पु. [स. वाक्पति] १ वृहस्पति।

२ विष्णु।

३ सत्य देवो में से एक।

वाकपतिराज–सं. पु [स वाक्पतिराज] १ भव भूति का समसामयिक एक कवि जो राजा यशोवर्मा का आश्रित था।

२ सीयक का पुत्र मालवा का एक परमार राजा।

वाकफ—देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

वाकफियत–सं. स्त्री. [अ वाकफीयत] १ जान कारी, परिज्ञान।

२ अनुभव।

रू. भे.—**वाकबियत**।

वाकब– देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

उ०—रत्नां इमरती सुं भांत भात पकी कीवी। भिन भिन **वाकब** कर दीवी। भात भात री बुराका चढाई, सूवा ने पढावै इण भात पढाई। —र. हमीर

वाकबकार—देखो 'वाकिफकार' (रू. भे.)

वाकबियत—देखो 'वाकफियत' (रू. भे.)

वाकबौ—देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

उ०—अबै करौं ज **वाकबौ** हगीगत् अबेलेनै। प्रचंड जूंभ मल्लनै बुलाय वीर पानै। —पा. प्र.

वाकयौ—देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

वाकळ–सं. पु. [सं. वाष्पकल] १ कूए का पानी।

२ पवार वंशोत्पन एक देवी। (बां. दा ख्यात)

[स. बल्कल] ३ एक वस्त्र विशेष।

उ०—रत्न कम्मल छाइल मकर्ल अराल साउला उरमाला बाला पटुलां **वाकलां** घनवेलि। —व. स

रू. भे.—**वाकळ**।

वाकळा—देखो 'वाकळा' (रू. भे.)

उ०—**वाकळां** वळां सोह छोडसी वकायत, वायरां वकायत ठीक वहसी। पखां मत्र न मांझी लियौ पाप रौ, राज मंत्र लीलियौ थकौ रहसी। —मेरुदांन बारहठ

वाकवांणी–सं. स्त्री. [सं. वाकवाणी] १ सरस्वती शारदा।

२ वाणी।

रू. भे.—**वाकवांणी, वाकबांनी**।

वाकसाळी–सं. स्त्री. [सं. वाक्+शालिन्] एक देवी जिसकी वाणी प्रभावशाली है।

रू. भे.—**वाकसाली**।

वाकानवीस–वि. [अ. वाकिअः नवीस] १ घटना, वृतान्त या हाल लिखने वाला।

उ०—हलकारा **वाकानवीस** कुफियांनवीस डाक चौक्यां अरज लिखे दिन रात।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ इतिहासकार।

३ संवाद-दाता।

वाकार–सं. स्त्री.—१ ललकारने की क्रिया या भाव।

२ ललकार, वीरहाक।

३ सम्बोधन करने की क्रिया या भाव।

४ बिरुदाने की क्रिया।

५ पुकार।

६ व अक्षर या वर्ण

रू. भे.—**बकार, बाकार, वकार**।

वाकारणौ, वाकारबौ–क्रि. स. [सं. वक्र आकारणं] १ युद्ध के लिये ललकारना।

उ०—१ वैंड तौ पेख पतसाह **वाकारियौ**, टाळ अन करै मन जहीं टाळियौ। —द. दा.

उ०—२ कर हथनाळ कलाइयां दे धनुस टकार। सर गण ऊपर साधनै, वळिया दळ **वाकार**। —पा. प्र.

उ० – ३ विळकुळियौ वदन जेम **वाकार्‌यौ**, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रुकम अउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बंधि। —वेलि

२ उत्तेजित करना, जोश दिलाना।

उ०—वयणे **वाकरियौ** ताम माझी गज केसरी। पवन पूर ऊफणे, जळण जांणे वन अतरि। —गु. रू. बं.

३ आह्वान करना

४ सम्बोधन करना, पुकारना, बुलाना।

५ प्रशंसा करना।

वाकारणहार, हारौ (हारी), वाकारणियौ—वि०।

वाकारिग्रोड़ौ, वाकारियोड़ौ, वाकार्‌योड़ौ—भू० का० कृ०।

वाकारीजणौ, वाकारीजबौ—कर्म वा०।

बकारणो, बकारबो, बाकारणो, बाकारबो, भकारणो, भकारबो, भकारणो, भकारबो, बकारणो, बकारबो —रू. भे.

वाकारियोड़ो—भू. का. कृ.—१ युद्ध के लिये ललकारा हुआ. २ उत्तेजित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आह्वान किया हुआ. ४ सम्बोधन किया हुआ, पुकारा हुआ, बुलाया हुआ. ५ प्रशंसा किया हुआ।

वाकावत—सं. पु.—कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति. —बां. दा. ख्यात

वाकिफ—सं. स्त्री. [अ.] १ जानकारी, खबर, पता।

२ ज्ञान, अनुभव।

वि. १ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू. भे.—वकूफ, वाकफ, वाकप, वाकब, वाकबो।

वाकिफकार—वि. [अ. वाकिफकार] १ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू. भे.—वाकबदार।

वाकिम—१ देखो 'वाकम' (रू. भे.)

उ०—नर समंद साहस गमद नरियंद। जुधि मयद वाकिमि विद रांजिद। —ल. पि.

वाकियौ—सं. पु. [अ. वाकिअ] १ कोई घटना, दुर्घटना।

२ वृत्तान्त, हाल, चर्चा।

३ समाचार, खबर।

रू.—वाकुओ, वाकयो, वाकौ।

वाकी—देखो 'वाकौ' (रू. भे.)

उ०—१ धरिया तन का तणा गुमान है, जम सूं कुण वाकी। —केसोदास गाडण

उ०—२ नद कुंवर कथौ, कई नौ सरदार थो, वैर तो वडो पड़ियो। इव जाणा हा तनौ पूठौ कर वाकी रा काढ़िसूं जावण देवा हा। —कुंवरसी सांखला री वारता

वाकुडिम—सं. स्त्री.—सर्प की कंचुकी ?

उ०—अवसरि संभाळइ गीत गाइं, मामउ जोइं फणा मडावउ, मरीर नी वाकुडिम छुडावइ इसा गारुड़ी। —व. स.

वाकुंभ—सं. पु.—वृक्ष विशेष।

उ०—बदवालु नइ कणि बली, वास वनसरी वेलि। वाकुंभा बाधउ भला वकुल अद्धलय वेलि। —मा. का. प्र.

वाकुंभीय—सं. पु.—कद विशेष।

उ०—अमर कद आद् धलां, सूरण रोक रताल। वच्छुनाग वाकभीया, भेडागारी आलि। —मां. का. प्र.

वाकुर—सं. पु.—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। —बां. दा. ख्यात

वाकेई—देखो 'वाकई' (रू. भे.)

वाकौ—वि. [अ. वाकिअः] १ जो घटित हो चुका हो।

२ घटित होने वाला।

३ देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

उ०—१ मयदा (गज) इम साजिया, उडे वाका अणथाहै। सुणै बहादरसाह, मगळ प्रजळै उर माहै। —सू. प्र.

उ०—२ वाकौ भूठौ आखियौ, दक्खण गयौ मदूर। आप बडाई आप री, आपौ साह हजूर। —रा. रू.

उ०—३ जवन पखी राजा उर जळिया, किळवा अनम सुणै विळ कुळिया। दळ ईरान मकै लग वाकौ, जवना सुणे उर पडै जराकौ। —रा. रू.

उ०—४ आगरै तखत सू दूसरौ आंणतां, बळौ-वळ लिखाणा जगत वाका। जुहांगीरसिंघ का वाळिया जगत मे, डाकुवां रूप रा मुजरा दाका। —बुधजी आसियौ

४ देखो 'बाकौ' (रू. भे.)

वाक्य—सं. पु. [सं.] १ ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो किसी एक विचार या आशय को व्यक्त करता हो।

२ भाषण, कथन।

रू. भे.—वाइक, वायक, वाइक, वायक।

वाक्यकर—सं. पु. [सं.] १ एक की बात दूसरे को कहने वाला संदेशवाहक, दूत।

वि.—बातें बनाने वाला।

वाक्यानवीस—सं. पु.—मुगल कालीन एक ओहदा या पद विशेष।

वि. वि.—कभी-कभी सूबे के बख्शी को वाकयानवीस का कार्य भी करना पड़ता था, वैसे आम तौर पर इस कार्य के लिए अलग ही अधिकारी रखा जाता था। वह अधिकारी अपनी देख रेख में सूबे भर मे प्रमुख-प्रमुख स्थानों पर यहां तक कि सिपहसालार, दीवान, काजी, फौजदार आदि अफसरों के कार्यालयों तक में संवाद-लेखकों और गुप्तचरों को नियुक्त करता था। ये लोग उसके पास प्रतिदिन रिपोर्ट भेजते थे। इन रिपोर्टों का वह सूक्ष्म रूप तैयार करता था और उसे शाही दरबार में भेज देता था। क्यों कि सम्पूर्ण शासन-प्रबंध की सफलता गुप्तचर विभाग के ऊपर भी बहुत कुछ निर्भर होती है, इसलिये इस ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। कभी-कभी केन्द्रीय सरकार भी अपने संवाद-लेखकों

और गुप्तचरों को सूबों और परगनों में भेजती थी, जो उसी की आज्ञा-आदेशों का पालन करते थे।

बाखर—देखो 'बाखर' (रू. भे.)

उ०—१ जिसड़े ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीत तिसड़े ही मूरछा, आइ पड़िया। तिसड़े गोवळजी संबाह्या। पेट री **बाखर** सहु झळकती दीठी। —द. वि.

उ०—२ सुकर घर सर बजर ससतर, गहूर हर बह पथर तर गिर। वहर सिर कर देह **बाखर**। पहर चोसर सुभर अपछर। —र. ज. प्र.

बाखळ—देखो 'बाखळ' (रू. भे.)

उ०—निकळै मिरड़ां लार, गठेळी सूकी साकळ। घरकोटां रै ध्येय, पड़ी लद लकड़ यां **बाखळ**। —दसदेव

बाखांण—देखो 'बखांण' (रू. भे.)

उ०—जस **बाखांण** राज पंख बाजे, अखिळ भुवेण सुणै इम। रांणा अवर घणा दिन रहसी, जुग जुग पंगी चंग जिम।

—रांणा जगतसिंह री गीत

बाखांणण—देखो 'बखांणण' (रू. भे.)

बाखांणणी, बाखांणबी—देखो 'बखांणणी, बखांणबी' (रू. भे.)

उ०—१ पनरै तेरैह मत्त पय, छंद उल्लाल पिछांण। रघुनाथ सुजस सो छंद रच, बीदग मुख **बाखांणजै**। —र. ज. प्र.

उ०—२ दीनां लक्ख जे हाथां न कजै दीधा जग सारी जांणै। वेदां भेदा घाता वीठळ, वारबार रटै **बाखाणै**। —र. ज. प्र.

उ०—३ दूभड़ा रायपाळां दुभ्रळ, वयळ धरां सिर दुंद वणै। ते कहै करी खग झट इसी, रवि **बाखांणै** हाथ रिण। —सू प्र.

बाखांणणहार, हारौ (हारी), बाखांणणियौ—वि०।

बाखांणिप्रोड़ो, बाखांणियोड़ो, बाखांण्योड़ो—भू० का० कृ०।

बाखांणीजणौ, बाखांणीजबौ—कर्म वा०।

बाखांणियोड़ो—देखो 'बखांणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बाखांणियोड़ी)

बागबर—देखो 'बाघंबर' (रू भे.)

बाग—सं. स्त्री. —१ मोट की सूंड के नीचे का वह भाग जिसके रस्सी बांधी जाती है।

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—वाछड़ियां रा **बाग** चरावै चढ चढ घोरा। गाया एवड़ ग्वाळ अगीरै रागां छोरां। —दसदेव

३ देखो 'वाग' (रू. भे.)

उ०—१ ऊपड़ी **बाग** "अरजरा" हरी, सूर धीर सत आगळै। तिण दीह रहै 'डूंगर' तणी, राघव भाटी रिण खळै। —गु. रू. बं.

उ०—२ **बाग** धरि करि ताजणउ, राग-तणइ रसि जाइ। आगलि न रहइ आगल्या, पाछै न नु मिलाइ। —मा. कां. प्र.

उ०—३ रोज सिकारां खेलणी, देखै **बाग** तड़ाग। हूंकळ दळ गज हैवरा, अमरख नरां अथाग। —रा. रू.

उ०—४ सर सरिता बहु **बाग** अडंबर। मझि तिण सिंगी कांम चित्र मंदिर। —सू. प्र.

उ०—५ लेगो सिव वा त्रिय लुगलाणै, उलट गयो आस्रम आपाणै। सुंदर त्रप चित्रमहल बसाई, **बाग** चंद्रिका जेणि वणाई। —सू. प्र.

४ देखो बाज' (५-८) (रू. भे.)

उ०—१ हुग हक्क किलक्क समुक्ख हलां, अग्रंकार घड़ी वण वार भलां। सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम **बाग** डडैहड़ फाग जदै। —रा. रू.

उ०—२ रंग राग **बाग** अंगराग सू न रीजै, पातिसाह महमदसाह चिंता मैं छीजै। —रा. रू.

बागड़—सं. पु.—१ डूंगरपुर-बांसवाड़ा प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

उ०—१ ऐ रावळ करन रै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण मांहै राहप रांणा रा चीतोड़ धणी। रावळ माहप रा **बागड़** धणी। ऐ सदा चीतोड़ रा रांणा री चाकरी करता। पछै सैं दिल्ली रा पातसाहा नूं पिण रजूआत रावै छै। **बागड़** नूं गांव ३५०० सैं लागै। आधा डूंगरपुर वासै आधा बासवाहळा वासै हुवा। पेहली तो ठकुराई डूंगरपुर मुदै हुती। पछै मूं रावळ उदैसिंह गांगै रै सूधी तो **बागड़** एक छत्र भोगवी। —नैणसी

उ०—२ **बागड़** देस विदरा गर नांम, जिहां खट दरसन ना विस्रांम। राजधांनी नूं रुडउ ठांम, देस मध्य गिरि पुर वली गांम। —जय विजय मुनि

२ वर्तमान शेखावाटी तथा बीकानेर-वाटी से मिले हुए प्रदेश (हिसार) का पुराना नाम।

उ०—१ सौडम ज्वर लक्षण सहित, औसध क्वाथ बखांन। कह्या **बागड़** देसाधिपति, न्रप स्त्री दउलतीखांन —दुउलति विनोद सार

उ०—२ वीरा **बागड़** लाट कण्णाट। —धरम पत्र

३ एक वैश्य जाति।

उ०—मोनी नइ मनार पणि, आगड **बागड़** वस। तेली तबोली वली, दोसी उपरि डंस। —मा. कां. प्र.

४ खादर का विपर्याय, एक प्रकार का भू-भाग जो अपेक्षाकृत ऊंचा व कम आबाद होता है, पठार।

उ०—नित वरसौ, मेहा **बागड़** में, मोठ बाजरौ **बागड़** निपजै। गेहूंडा निपजै खादर में, निन वरसौ मेहा, **बागड़** में। —लो. गी.

५ कच्छ राज के एक भू-भाग का नाम।

६ देखो 'बगड़' (रू. भे.)

उ०—जोबन कारमौ रे जोहांणी उठ जासी, ग्रादर भजन तणी भ्रभियास । प्रांणियां न भावें कदे प्रांमणो, बळे न बीजे बागड़ बास । —ग्रोपी ग्राढो

रू. भे.—बागड़, बागड़, बागर, बाघड़, वागर ।

ग्रल्पा.—बागड़ियो ।

बागड़णो, बागड़बो-क्रि. ग्र.—चलना, फिरना ।

उ०—बागड़दि भूत जोगरा गरा भैरव, ग्रागड़दि ग्रमर ग्रपछर गरा ग्राग । पागड़दि प्रबळ परखर पुर पंखत, बागड़दि व्योम सुर-छाया बिमारा । —र. रू.

बागड़णहार, हारौ (हारी), बागड़णियो—वि० ।

बागड़ियोड़ो, बागड़ियोड़ो, बागड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

बागड़ीजणो, बागड़ीजबो—भाव वा० ।

बागड़णो, बागड़बो—रू० भे० ।

बागड़िया-स. स्त्री.—चौहानों की एक शाखा ।

रू. भे.—बागड़िया ।

बागड़ियो-वि.—१ बागड़ का, बागड़ सम्बन्धी ।

स. पु.—१ बागड़ प्रदेश का निवासी ।

२ बागड़ जाति का वैश्य ।

३ रहट की माल में छोटी-मोटी काष्ठ की कीलियां लगाने के समय माल को स्थिर रखने के लिये लगाई जाने वाली मोटी कीली, कील ।

४ बागड़िया जाति का चौहान ।

रू. भे.—बागड़ियो ।

बागड़ो-स. पु.—१ चौहान राजपूत वंश की एक शाखा ।

उ०—दाहळिया री ग्रापर वडो साहिबी थी । नै बागड़ा रजपूता री भाम नागोर थी । —नैणसी

२ बावरियों के समान एक जंगली जाति विशेष जो खेतों की रखवाली का काम करती है ।

३ इस जाति का व्यक्ति ।

रू. भे. बागड़ी ।

बागडोर देखो 'बागडोर' (रू. भे.)

उ०—१ करै पोस जरकसी, कड़ी सोवन कोतल कसि । बागडोर रेसमी, तरह पतरंग घरै तसि । —सू. प्र.

उ०—२ ओमा गाड्जै छै । केसरकी रग-रग री गुथजे छै । पगाड़ो-पछाड़ो पोलनं दें रेसम री बागडोरां सूं ग्राण हाजर कीजै छै । ...किमा हल पोदा छै ... चैंवर भला, ऊंचा ग्रनला कटोरनमा, ग्रारसी सारीसा । —रा. सा. सं.

बागढाल-सं. पु.—घोड़े की लगाम को ढीली करना, विश्राम करना ।

उ०—घोड़ां रा तंग ढीला करो, बागढाल करीजै, मांहै थांहरो चोर छै तौ ग्रबै जाय कठै ही नहीं । —राव रिणमल री बात

बागणो, बागबो—१ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे.)

उ०—१ लाल वदन ग्रंबर सिर लागौ । विक्रमादित जवनां हूं बागौ । —सू. प्र.

उ०—२ ग्रसुर हणे वद वगं ग्रथागा । वर सिधकरि वैगोदा बागा । —सू. प्र.

उ०—३ बारण ग्रहि चौधार, सत्र मारण ग्रवसांण मिध । बागो डाकण 'वैंगाउन' सिरदारां सिरदार । —वचनिका

उ०—४ हुवो ग्रति सींधवो राग, बागी हकां । थाठ ग्राया विसण घाट लागे थकां । —हा. भा.

उ०—५ जोम गाडावाळी प्रळय काळा री उनागी जठै । बागो हाडावाळी नराताळ री बांणास । —दुरगादत्त बारहठ

उ० ६ ग्राडो ग्रडि एकाएक ग्रापड़ै, बाग्यौ एम रुखमणी वीर । ग्रवळा लेइ घणी भुंइ ग्रायो, ग्रायो हूं पग माडि ग्रहीर । —वेलि

उ०—७ धीरवंत कुंवर नें निरखी, धीवर पाइ लागा । स्वांमी पर्ग ग्राव्यो सह मिलवै, जस ना वाजत्र बागा । —वि. कु.

उ०—८ गावय वयराडी रागड़, ग्रालापइ स्त्री सग ग्रागइ । वांसुरी मधुरी बागइ, सुख पावइ सयण । —स. कु.

३ देखो 'भागणो, भागबो' (रू. भे.)

बागणहार, हारौ (हारी), बागणियो—वि० ।

बागिग्रोड़ो, बागियोड़ो, बाग्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बागीजणो बागीजबो—भाव वा० ।

बागमो—देखो 'बागमी' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. ना. मा.)

बागर-सं पु. [सं] १ विद्वान पंडित, गुणी ।

२ ऋषि, मुनि, महात्मा ।

३ शूरवीर, योद्धा ।

४ देखो 'बागड़' (रू. भे.)

उ०—जबू द्वीप देस तहा बागर, नगर फतेहपुर नगरां ग्रागर । ग्रासि पासि तहा गोरठ मारू, भासा भल्ली भाव पुनि सारू । —रूपवती

३ देखो बागर' (रू. भे.)

बागरवाळ-वि. [स. बाग्वर-पालक] कवि, विद्वान, पंडित ।

उ०—१ ढाढी गुणी बोलाविया, राजा तिणही ताळ । नरवर गढ ढोलइ-कन्हेर जावउ बागरवाळ । —ढो. मा.

उ०—२ बागरवाळ विचारीयउ, ए मति उत्तिम कीध । साल्ह-महल हूं ढूकड़ा, ढाढी डेरउ लीध । —ढो. मा.

बागरी—देखो 'बागरी' (रू. भे.)

उ०—धर पंगी, नर चोरटा, **बागरियां** रे वेस । भालड़ियां घिसता फिरै, श्रइ हो श्राबू देस । —श्रज्ञात

बागळ—देखो 'बागळ (रू. भे.)

उ०—कोचर श्रद चमचेरा **बागळ,** श्रौर उलूक श्रग्यांना हो । इनके रवी द्रस्टि नहिं श्रावै, तम का इन कूं ग्यांना हो ।
—श्री सुखरांमजी महाराज

बागळी, बागली—१ देखो 'बागळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बागळ' (रू. भे.)

उ०—वील्हा वायस विंभलां, श्रागलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ **बागली,** ते ऊंघी टंगाय । —मा. कां. प्र.

बागवांणी—सं. स्त्री. [सं. वाग्वाणी] सरस्वती, शारदा ।

उ०—'नाल्ह' रसायण नर भणइ, राजा रह्यौ उड़ीसई जाय । **बागवांणी** मो वर दीयो, श्रस्त्री-रसायण करूं वरखांण ।—बी. दे.

बागसणौ, बागसबौ—देखो 'बकसणौ, बकसबौ' (रू. भे.)

उ०—धनुस धरण श्रवगुण नह धारै, सरण सधार कहै जग सारै । **बागसै** तनै गुणां इण वारै, चित श्रपणौ जो विरद विचारै ।
—र. रू.

बागसणहार, हारौ (हारी), बागसणियौ—वि० ।

बागसिश्रोड़ौ, बागसियोड़ौ, बागस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बागसीजणौ, बागसीजबौ—कर्म वा० ।

बागसियोड़ौ—देखो 'बकसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बागसियोड़ी)

बागांसपूर—देखो 'बागासपूर' (रू. भे.)

उ०—वाटका पोड़ बंजर समांन, घाटका नळी निघोटवान । सुभ लछा श्रछा **बागांसपूर,** लागां स रान वच्चा लगूर । —पे. रू

बागाइत, बागायत—देखो 'बागायत' (रू. भे.)

बागी—देखो 'बागी' (रू. भे.)

उ०—साहजादो खुरम पातसाह जहांगीर सूं **बागी** हुवौ ।
—बां. दा. ख्यात

बागीचौ—देखो 'बगीचौ' (रू. भे.)

उ०—फब हार धार घण फरहरंत । **बागीचां** चादर जळ वहंत ।
—सू. प्र.

बागीस—सं. पु. [सं. वागीश] १ ब्रह्मा ।

२ बृहस्पति ।

३ कवि ।

४ वक्ता ।

बागीसा—सं. स्त्री. [सं. वागीशा] सरस्वती ।

बागीस्वर—सं. पु. [सं. वागीश्वर] १ ब्रह्मा ।

२ बृहस्पति ।

३ कवि ।

बागीस्वरी—सं. स्त्री. [सं. वागीश्वरी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ एक रागिनी विशेष ।

३ एक महाविद्या ।

रू. भे.—बंगेसरी, बगेस्वरी, बागेसरी, बागेसुरी, बागेस्वरी, वंगेसरी, वंगेस्वरी, वागेसरी, वागेस्वरी, वाघेसुरी, वाघेस्वरी ।

बागुर, बागुरि, बागुरी—स. स्त्री. [सं. वागुराः] १ फंदा, जाल ।
(उ. र.)

उ०—१ लागी ब्रिहुं करे धूयणी लीध, केस पास मुगता करण । मन-श्रग चै कारणि मदन चौ, **बागुरि** जांणि विसतरण ।
—वेलि

उ०—२ हंस गतइं चालती, गज गतइ माहालती, कांम कांमनी पालती, श्रांखिनइ मटकारइ मदन नी **बागुरा** घालती कस्तूरी श्रलंकृत भाल पट्ट, तइ (ण) तणां भाजइ मरट्ट । —व. स.

सं. पु. [सं. वागुरिक] २ बहेलिया, शिकारी, चिड़ीमार । (उ. र.)

बागुळि—स. स्त्री. [सं. वल्गुलिका] १ मंजूषा, पेटी ।

२ पिटारी ।

३ कत्थई रंग का पतंग जाति का कीट, तैलपायी । (उ. र.)

बागेलौ—स. पु.—गायों का समूह ।

रू. भे.—बागेनौ ।

बागेसरी, बागेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—१ कमळापति तणी कहेवा कीरती, श्रादर करै जु श्रादरी । जांणे वाद मांडियौ जीपण, वागहीण **बागेसरी** । —वेलि

उ०—२ वारुणी दारुणी भास्करी, संकरी जया विजया घोरा कौवेरी प्रवाही मदनसेना बलमथनी गौदिनी पेसांनी **बागेस्वरी** सिद्धावी श्रजरांमरा इत्यादि महा विद्या । —व. स.

बागोल—देखो 'बागोल' (रू. भे.)

बागोलणौ, बागोलबौ—देखो 'बागोलणौ, बगोलबौ' (रू. भे.)

उ०—वौ होळै होळै हालतौ वखारी रै श्रड़ोश्रड़ पूगग्यौ । वखारी रै श्रेक बाजू श्रेक भैंस ऊभी **बागोलती** ही । वौ भैंस रै पाखती ई हुई बाषण साह्रू श्रापरो वेसलो बिछायो । —फुलवाड़ी

बागौ—देखो 'बागौ' (रू. भे.)

उ०—१ वेहद हद **बागै** वणाव, चम्मीर हीर जांमै जड़ाव ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ सो माथा पर किलगी अने लंबरो केसर मे रंगिया दकूळ-कपड़ा-बागो केसर में रंग दी धाय रा सिरदार ने कहै ।
—वी. स. टी.

उ०—३ बागा वेस सोहामणा, भुजगा मोती माळ । कनक कचोळा जड़ावरा, सुंदर गोवन थाळ ।
—डो. मा

उ० ४ पाग खिण प्रीतम पहे, नवइ भूषण पाय । बागो कीनो धरणजो, मंदर नै बहोत सुहाय ।
—व. स.

वाग्गेयकार-सं. पु.—संगीत एवं पद रचयिता ।

वाग्देवी-सं. स्त्री [सं. वाक्+देवी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ वाणी ।

वाग्दोस-सं. पु. [सं. वाग्दोष] बोलने में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटी ।

वाग्भट-सं. पु. [सं.] अष्टांग संहिता नामक वैद्यक ग्रंथ का रचयिता ।

वाग्मिता-सं. स्त्री.—वाक पटुता ।

उ०—दाने दुर्भिक्षे, पौरुष रणे, स्त्री सील संगमे, धौरेय पथे, **वाग्मिता** सदसि, साहस दुरदामायं, मित्र व्यसने, कलत्रमापदि, पुत्री प्रदत्त स्यागतं ।
—व. स.

वाग्मी-सं. पु. [सं. वाग्मिन्] १ बृहस्पति ।

२ वाकपटु-व्यक्ति ।

वि.—१ वाकपटु, अच्छा वक्ता ।

२ बातूनी, वाचाल ।

३ बहुवादी, बहुत बोलने वाला ।

४ पंडित, कोविद ।

५ कवि ।

वाग्युद्ध-सं. पु. [सं.] १ केवल बोली से ही की जाने वाली लड़ाई, जबानी झगड़ा ।

२ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक ।

वाघबर—देखो 'वाघंबर' (रू. भे.)

उ०—गज अंबराळ हगा अणगिणिया । **वाघबरां** चीर सिर वणिया ।
—सू. प्र.

वाघ—१ देखो 'वाग' (रू. भे.) (उ. र., अ. मा.)

उ०—१ विण जुध कारण, वाघ रै दूजो नावै दाय । एक अनेकां ऊपरां, जनम सरीखा जाय ।
—बां. दा.

उ०—२ भरत वाघ गज रीछ सरीखा, तुंड कुदाळ मगर सम तीखा ।
—सू. प्र

उ०—३ हाथा पांगळ हाक हक, दयणाट हड़दै । **वाघण** व्याई वेट में, फाग दूर करदै ।
—पा. प्र.

उ०—४ दरपइ दीठइ ठोरडइ, साप न आंगइ संक । **वीहइ** बिलाडां-बच्चडइ, **वाघिणी** वालाइ वंक ।
—मा. का. प्र.

(स्त्री. वाघण, वाघणी, वाघिणी)

२ देखो 'बाग' (रू. भे.)

वाघचंब, वाघचरम—देखो 'बाघचरम' (रू. भे.)

उ०—जटा मुगट मांहि गंगा दीठी, अंगि भसमीअ धूल । **वाघचंब** पागुरणुं दीठां, दीठउ वळी त्रिसूळ ।
—कां. दे. प्र.

वाघनख, वाघनखौ—देखो 'बाघनख' (रू. भे.)

वाघनखौ—देखो 'बाघनखौ' (रू. भे.)

वाघमुखौ, वाघमुखौ—देखो 'बाघमुखौ' (रू. भे.)

उ०—वड़ चख ऊजळ वरन, स्रवण मोती वेंडूरज । मुगता फळ गळ मई, कड़ा कर **वाघमुखा** कज ।
—पा. प्र.

वाघमूत—देखो 'बाघमूत' (रू. भे.)

वाघूळ-सं पु [सं. वाह=पानी+घूल] १ बादल, वारिद ।

उ०—तूल जिम उड़ै खळ घूळ गुरजां तड़छ, झूळ चवसठ लगी लेण झपा । सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्यांम **वाघूळ** बिच जांण सपा ।
— बालाबक्स पाल्हावत

२ वात-चक्र ।

वाघेल—१ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

उ०—डर लियां झालां दूर चूड़ासमा बल चूर । **वाघेल** गोहिलवाड़, रस कीघ घाट वराड़ ।
—रा. रू.

वाघेला—देखो 'बाघेला' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

वाघेलौ—देखो 'बाघेलौ' (रू. भे.)

वाघेसुरी, वाघेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—मोर चढ़ै खळ मारणी, महिप चढ़ै भालांण । वाघ चढ़ै **वाघेस्वरी**, नाग चढ़ै नागाण ।
—पा. प्र.

वाड़-सं. स्त्री—१ आड़, ओट

उ०—१ बांवें दयाणुं भोजाया री वाड़ । —पाबूजी रो पवाड़ो

२ देखो 'बाड़' (रू. भे.)

उ०—१ वाघ करै नह काट वन, वाघ करै नह **वाड़** । वाघां रा वघवाव सु, भिनै अगजी झाड़ ।
—बां. दा.

उ०—२ दिवी भोलावण तुम नै घणी, प्रदेसे चाल्यौ मुझ धणी । घर हूंतौ किम उठै घाड, चीभड़ला किम खायै **वाड़** ।
व. व. ग्रं.

उ०—३ वेर हमेस विसावणा, वाड बिना बसणोह । वाघां रै क्यूंकर वणै, मारण आळसणोह ।
—बां. दा.

बाड़लो, बाड़बो—देखो 'बाड़लो, बाड़बो' (रू. भे.)

बाड़मेय—देखो 'बाड़वेय' (रू. भे.) (भ्र. मा.)

बाड़लियो—देखो 'बाड़लो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—महड़ा तो बाड़लिया म्हांरै घर घणा रे, लंजा ग्रोठीड़ा ऐ लो। लूंट्यां टंक्या नवसरहार वाला जो : —मो गी.

बाड़ली-सं. स्त्री.—देखो 'बाड़ली' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—तिमणियै रै बाद ग्राई बाडली, कातरिया नै कड़ोलिया री बारी। —रातबासो

बाड़लो—देखो 'बाड़लो' (रू. भे.)

बाड़व, बाड़वा—१ देखो 'बाड़व' (रू. भे.)

उ०—१ वदन तेज कळपंत रो वयळ बाड़व वर्णं, ऊफणै कोप पोरस ग्रमांमो। मंडांणो हैक राजा घणै मछर सूं, साहजादा दहूं तणै सांमो। —महाराजा जसवंतसिंह रो गीत

उ०—२ देवी कूरम रे रूप तूं मेर पूठी। देवी बाडवा रूप तूं ग्राग ऊठी। —देवि

२ देखो 'बड़वा' (रू. भे)

बाड़वाग, बाड़वाग्नि—देखो 'बड़वाग्नि' (रू. भे.)

उ०—१ भूम वहंती को जण भाळै, बाड़वाग निभ्र समंद विचाळै। —रा. रू.

बाड़वामुख-स. पु.—पाताल। (ह. ना. मा.)

बाड़वेय, बाड़िमेय, बाड़िवेय-सं. पु. [स. वाडवेय] १ बैल,

२ सांड। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बाडमेय, बाड़मेय।

बाड़ि—देखो 'बाड़ी' (रू. भे.)

उ०—नोबत टकोरा पड़ि नै रहिग्रा छै बाहरि डेरा कीग्रा छै। ग्रसपका खड़ी हुई छै। तबू समीग्राणां सिराइचा, रावटी, वाड़ि समेत करणाटी, गूदर तांणीग्रा छै। —रा. सा. सं.

बाड़ियो—देखो 'बाड़ियो' (रू भे.)

२ देखो 'बाड़ो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बाड़ी—देखो 'बाड़ी' (रू. भे)

उ० - १ सखि ए साहिब ग्राविया, मन चाहंदी मोइ। बाड़ी हुवा वधांमणा, सज्जण मिळिया सोइ। —ढो. मा.

उ०—२ सत्तम प्रहरै दिवस कै, घण जु बाड़ियां जाइ। ग्रांणै द्राख-विजोरियां, घण छोलइ, प्रिउ खाइ। —ढो. मा.

उ०—३ वे ग्ररथ छांह पंथी विरथ, हेत कपट हरियावळी। मोकमा कमंघ मोटा मिनख, बाड़ी फूली रावळी

— ग्ररजुणजी बारहठ

उ०—४ नवाब खांनखांनो सारा बेड़ा हुता इण री बीमहीयो कुंही नहीं। सारा री खबरदार बीच नायक बाड़ो फिरता था। पोहोर २ पछै सारा उमराव ग्राया तठै दळथभण नांम पायो। —नैणसी

बाड़ोटियो—देखो 'बाड़ो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बाड़ो—देखो 'बाड़ो' (रू. भे.)

उ०—सूवरा रै, ग्रायै साल वधाया सूं बाड़ो एकड़ री गळाई भरीजग्यो हो। —फुलवाड़ी

बाच-स स्त्री [सं वाक्] १ सरस्वती का एक नाम।

२ जिव्हा। (ग्र. मा.)

३ वांणी, शब्द, ध्वनि, वचन।

उ०—१ इम बाच ज्वाब 'ग्रभमाल' रा, घरि व्रजागि बळधांखियो। घ्रत जेम ग्राग सींचीं घणं, उरस लाग उपड़ांखियो। —सू. प्र.

उ०—२ खावो—विलसो भोगवो, जो जग मांहि किम जांणो साच स्वाद ग्रछै इण वात मां, इम जंपइ हो ते व्रह्मा बाच। —वि. कु.

उ०—३ काचा कुंभ ज्यूं काया जांणै, परायी छठी जागै। रिड़तो तेज, भूखियो लोह लियां रहै, काछ-बाच निकळंक।—रा. सा. सं.

४ बयान, वर्णन, उल्लेख।

५ वादा, कौल, वचन।

उ०—बांण पत्थ बळि भीम, जिसो ग्रहंकार हि रांमण। जिसो बाच जुजठिल्ल, जिसो मांणहि द्रोणोवण। —गु. रू. बं.

६ प्रतिज्ञा, प्रण।

उ०—१ जाय पूछयो महल में, रांणी भाख्यो साच। पदमणि परणेवा सही, चाल्यो पालण बाच। —प. च. चौ.

उ०—निस प्रथम जांम ग्रालोक नर, दारण 'सोनागिर' 'दुरग'। कर बाच वाद ग्रकबर कुसळ, 'ग्रोद' हरै सभिया विड़ंग। —रा. रू.

७ यश, कीर्ति। (ह. नां. मा.)

८ प्रशंसा, स्तुति।

उ०—जिकां भलां धन जोड़ियो, ऊधमियो निज ग्राच। कीरत पोहरै करन रै, बोदग ऊठै बाच। —बां. दा.

९ मछली।

१० मदन नामक, पौधा।

[ग्रं] ११ घटिका, घड़ी।

१२ देखो 'वत्स' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बाच।

बाचक-वि. [सं.] १ कहने वाला, बोलने वाला।

२ बताने वाला, बोध कराने वाला ।

३ वाचन करने वाला, पढ़कर सुनाने वाला ।

४ साधक ।

उ०—माया कथा मिटै नहि माया, यूं **वाचक** तनू कूं नहि पाया । वरद मिटै नहि कोई । —श्री सुखरामजी महाराज

५ द्योतक, सूचक, प्रतीक ।

[सं. वाचिक] ६ वाणी सम्बन्धी ।

७ शाब्दिक ।

८ मौखिक ।

सं. पु. [सं. वाचक] १ वक्ता, व्याख्याता ।

उ०—**वाचक** ग्यानी बुगल बराबर । लक्ष हंस रहता सुख सागर, हीरा चुगत चुगाई । —श्री सुखरामजी महाराज

२ व्यंजक शब्द ।

३ पाठक ।

४ संदेशवाहक, दूत ।

५ समाचार, संदेश, खबर ।

६ भाषा विज्ञान के अनुसार तीन प्रकार के शब्दों में साक्षात्-अर्थ बोधक शब्द, नाम, संज्ञा ।

रू. भे.—वाचक, वाचिक, वाची ।

वाचकधरमलुप्ता—सं. स्त्री. [सं. वाचकधर्मलुप्ता] १ एक प्रकार की उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो । लुप्तोपमा ।

वाचकलुप्ता—सं स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमा-वाचक शब्द लुप्त होता है ।

वाचकवर—सं. पु.—उपाध्याय वर्य ।

उ०—तस सनीश्वर **वाचकवर** रे, हरस कुसल सुजगीस ।

—वि. कु.

वाचकोपमानधरमलुप्ता, वाचकोपमानलुप्ता—सं. स्त्री. [सं. वाचकोउपमानधर्मलुप्ता] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय हो ।

वाचकोपमेयलुप्ता—सं. स्त्री. [सं. वाचकोउपमेयलुप्ता] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक शब्द व उपमेय का लोप हो ।

वाचडणो देखो 'वाछ्डणो' (रू. भे.)

वाचणो, वाचबो देखो 'बाचणो, बाचबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ श्री सुविहाण दीवाण सू हुकम फुरमायो, सेर बिलद गुजरात राज ठहरायो । जिनां नो नाम सुण कमान कूं चाचै, मोरे गुणगाण ठामो न **वाचै** । —रा. रू.

उ०—२ कागज कतीयं एह विसेस, हीयडै धरीज्यो **वाचो** लेख

—वि. कु.

उ०—३ अगा नैणी **वाचजो**, सैणां पत्र सनेह । बैणां हीये बरतजै, नैणां हंदो नेह । —अज्ञात

वाचणहार, हारो (हारी), वाचणियौ—वि० ।

वाचिओड़ो, वाचियोड़ो, वाच्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वाचीजणो, वाचीजबो—कर्म वा० ।

वाचन, वाचना—सं. पु. [सं. वाचनं] १ पढ़ने की क्रिया या भाव ।

२ पढ़ने का ढंग ।

३ पठन, पाठ ।

उ०—परित्त जेहनी **वाचना** रे जिनजी, संख्याता अनुयोग ।

—वि. कु.

४ कथन ।

५ घोषणा ।

६ प्रतिपादन, व्याख्या ।

७ बताना क्रिया ।

८ वाक्य, शब्द ।

रू. भे.—वाचण, वाच्यन ।

वाचनालय—सं. पु. [सं. वाचन+आलय] वह स्थान या कक्ष जहां समाचार-पत्र, पत्रिका आदि पढ़ने की व्यवस्था हो ।

वाचनिकळंक—सं. पु. [सं. वाच+निष्कलंक] युधिष्ठर ।

रू. भे.—बाचनिकळंक ।

वाचबांह—देखो 'बांहबोल' (रू. भे.)

उ०—कवर कहयो—श्री इकलिंग जी री **वाचबांह** छै, ज्यौं थे कह थाळी कहस्यो तो परमांण छै । —राव रिणमल री बात

वाचलो—वि. [सं. वात्सल्य] प्यार करने वाला, प्रेम करने वाला ।

उ०—बीदा तो रण **वाचला**, बीदा वेर बराह । बीये दळ पयली हुवै, बीदां री हथवाह । —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

वाचसपति, वाचस्पति—सं. पु. [सं. वाचस्पति] १ वाणी के प्रभु देव गुरु बृहस्पति की उपाधि । —अ. मा.

उ०—ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्सायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुर वेदायुर वेदादि सास्त्र रत्नसागर कूरवालसरस्वती महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष **वाचस्पति**, इसउ विद्वांस । —व. स.

२ प्रजापति, ब्रह्मा ।

३ सोम ।

४ बहुत बड़ा विद्वान ।

वाचा—सं. स्त्री., ब. व. [सं.] १ वाणी, बोली ।

उ०—दाणवा तणा फाटिगा डाचा, **वाचा** नह ऊपड़ै विचार । अणभग 'सिवो' खाग ऊपाड़ै, हालियो लक लगावण हार ।

—जोगीदान चारण

मुहा.—१ वाचा खुलणी=जबान खुलनी, बोलने की शक्ति आनी ।
२ वाचाबद होणी=बोलने की शक्ति समाप्त होना, शारीरिक शक्ति शिथिल पड़ना ।
३ वाचा बंद करणी, (देणी) निरुत्तर करना, आतंकित करना ।
२ जिव्हा, जीभ । (ह. नां. मा.)
३ वचन, वाक्य, शब्द ।
४ बोलने की शक्ति ।
५ वादा, कौल, इकरार ।

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचंद । साच के अजातसत्र गात रति विंद । —रा. रू.

उ०—२ ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ, अन्य उपरि रहै लीणा । वाचा न काचा हो जे तुफनइक हइ, ते मूरख मतिहीणा । —वि. कु.

उ०—३ समुद्र कना वाचा लीन्ही, लेय नै छोड दीयो । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ धरिया नृप दत्त खाग विरद धज, ग्रह तिण रै इक रंग सैतगज । सुणि नृप सचिव मेल्हिया साचा, वित बहु दियण कहै तिण वाचा । —सू. प्र.

उ०—५ इतरी सुण देवी कही—वर मांग । राजा कही—वाचा पाऊं । देवी कही त्रि वाचा । —सिंघासण बत्तीसी

७ प्रतिज्ञा, प्रण ।

उ०—१ इण भांत 'पतो' रावत अभंग, वाचा सिध आपं बयण । मेवास नास मेलूं मुकर, गुमर धार लागो गयण । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

८ उपदेश ।
९ सिद्धान्त या श्रुतिवाक्य ।
रू. भे.—बाचा, बाया, वचा, वाया ।
अल्पा.,—वायी ।

वाचाइ—सं. स्त्री.—चारण वंशोत्पन्न वाचा की पुत्री एक देवी ।

उ०—लटीयाळ तूं ही लख विरद लेंण, वाचाइ धुंधी साच वेंण । वेछरा काळका तूं अंबाय, मन रंग थळ चाळकनेचराय । —रांमदांन लाळस

वाचाछळ—वि.—किसी के साथ वचन-बद्ध होकर धोखा देने वाला ।
सं. स्त्री.—चौहानों की एक देवी ।
उ०—चहुवांण धणखरा सारा राव लाखण नाडूळ धणी तिण री पीढ़ी आसराव हुवो । तिणरै घरै वाचाछळ देवी जी आया छा । —नैणसी

वाचाबंध—वि. [सं वाचा+बद्ध] जो किसी प्रकार के वचन, कौल या प्रतिज्ञा में बंधा हो, प्रतिज्ञाबद्ध ।

उ०—चोईसा आखड़ी चालणा, सु तौ राव ताल्हण । महाराज मांगियो सो पायो, वाचाबंधो सुरतांण पातसाह आयो । —अ. वचनिका

रू. भे.—वाचबंध, बाचाबंध, बाचाबंधो, वाचाबद्ध ।

वाचाबंधन—स. पु. [सं. वाचा+बंधन] १ प्रतिज्ञा या वचन-बद्ध होने की अवस्था या भाव ।
२ वचन बद्धता ।

वाचाबद्ध—देखो 'वाचाबंध' (रू. भे.)

वाचाळ, वाचाल—वि. [सं. वाचाल] १ जो बोलने में चतुर हो, वाक्पटु ।

उ०—अधिक वाचाल मछराल स्रीपाल इम, घाव घमसांण हैरांण कीधा । घाव ठांमे रुहिर बिंब धारा पडें, अरि तणा जीव कण काढ़ि लीधा । —स्रीपाल रास

२ जो अपने वचनों पर दृढ़ हो, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

उ०—साचाळा वाचाळा बोल जगाळा साचा । भीछाळा ए हाळा हालै हाडा रै सुभाव । —सतमांन हाडा री गीत

३ बहुत बोलने वाला, व्यर्थ बकने वाला, बकवादी ।
४ उद्दण्डता पूर्ण बहुत बढ़ बढ़ कर बातें करने वाला ।
सं. पु.—बहुत बोलने का एक रोग जिसमें अप शब्द भी बोल दिये जाते हैं । (अमरत)
रू. भे.—बाकचाळ ।

वाचाळता—सं. स्त्री.—१ वाचाल होने की अवस्था या भाव ।
२ बकवास ।
३ वाक्पटुता ।

वाचि—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाचिक—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाचियोड़ो—देखो 'बाचियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वांचियोडी)

वाची—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाच्य—वि. [सं.] १ जो पढ़ने व बाचने योग्य हो ।
२ कहने योग्य, जो कहा जा सके ।

उ०—मन बुध अमांन पहुंचे न प्रांन, बाचक न वाच्य वह पद अवाच्य । —ऊ. का.

३ जिसका शाब्दिक संकेत द्वारा बोध हो ।
४ जो अभिधा में जाना जाय, अभिध्येय ।
५ निंदनीय, तिरस्करणीय ।
सं. पु.—१ कठोर शब्द ।
२ कलंक, दोष ।

३ भर्त्सना, निंदा ।

४ क्रिया का बाधक ।

बाछिड़—देखो 'वत्स' (रू. भे.)

बाछिल्ल, बाछिल्ल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू. भे.)

उ०—१ कामगेन किकर गई, सेव करइ गुरिचारी । विधि विधि **बाछिल्ल** विस्तरइ, सर्वारि समप्पइ सार । —मा. कां. प्र.

उ०—२ बाहव घनी विचारत, लिखवा गाथा एक । मार मरम सोहामणी, **बाछिल्ल्य** वचन विसेस । —मा. कां. प्र.

बाछ्यन—देखो 'वाचन' (रू. भे.)

उ०—दळ दूजा री पद दळ दूजे, जाग यवै अभवन मत जोग । कवि वाछन पद **बाछ्यन** करहो, पद अनभीहित वाच्य प्रयोग । —बां. दा.

बाछ—देखो 'वत्स' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

बाछड़उ, बाछड़ो, बाछक, बाछरो—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र) (अ मा., ह. ना मा.)

उ०—१ गो मेंचा नांग करी पगा उठै हीज हचका खावै पगा चले नहीं जद उण हीज वीर धवळा री बाळक **बाछड़ो** निको हीज उण सगळ रै कंध लगाय ने ताडूकी छै । —वी. स. टी.

उ०—२ धवळ धेनुवे धवळइ वरणि, मारीखा **बाछड़ा** सुवरण । धोड़ा-तणी कांठ माहि आणि, पाट गहइ बाध्या तिणि ठाणि । —ढो. मा.

उ० ३ गाया नै घेरी, धरमी, **बाछरू** बाध्या जाय गवाळ भ्रो । —लो. गी.

बाछळ—१ देखो 'वात्सल' (रू. भे.)

उ०—देव राघव दीन पाळ दयाळ वंछित दायक । नाम मानव देव नाम रटत सीय सुनायक । माथ-पंच दुवेण भज अगज भूप महाबळ । यद तू 'किसनेस' पात सुणाय जे जन **बाछळ** । —र ज. प्र.

२ देखो 'वात्सल्य' (रू. भे.)

बाछल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू भे)

उ०—गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या कत सैन नांमी । है जग वाला दग-माथ रता, माहेस **बाछल्य** मुकंठ मीता । —र. ज. प्र.

बाछाट—स. स्त्री. [स. वात-छटा या वायु-छटा] वायु के झोके से मकान या खिड़की से दरवाजे के अन्दर आने वाली वर्षा की बूंदे, बौछार । उ०—पण भोगे मे ई **बाछाट** स गिरिया-गिरिया तक पांणी भरीजग्यो पर सामने रा ठडी टीप वायरो आवतो हो । — रातवासो

रू. भे.—बाछांट ।

बाछिल—देखो 'वत्सल' (रू. भे.)

उ०—१ पुत्र-पांहि प्रीछिउ भलु, **बाछिल** करि विवेक । परठिउ पांणी छांटवा, सही तिणि दीधउ सेक । —मा. कां. प्र.

उ०—२ कोई सखी कौतुक गणी, **बाछिल** जंपइ वांणि । क्षमा करइ तु हूं खरूं, जंपू जोडी पांणि । —मा. कां. प्र.

बाछोड़—स पु. [सं. वात्सकम्] गायों के बछड़ों का समूह ।

बाछोडियो, बाछोलियो, बाछोलो—स. पु.—१ गाय या भैंस का मरा हुआ बच्चा जिसमें मसाला भर कर रक्खा गया हो ।

२ गाय के बछड़े का चमड़ा ।

३ देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

बाछी—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेरा **बाछा** रमै छै गो-ठांण. कूण चुंघावै, बाबल तेरी धीय बिना । —लो. गी.

बाजंत बाजंत्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ हुकम लेर मड हालिया, साह करां समसेर । जेफ न कोयी जादरा, **बाजंत्र** दिया विसेर । —वी. स. टी.

उ०—२ मंगळ धमळ उदमाद, वजै **बाजंत्र** जिण वेळा । ग्रहि ग्रहि उडि गुड्डिया, मिळै सज्जण धण मेळा । —सू. प्र

उ०—३ आरंभ काज गज आरुहै, अनमित सेन उलट्टियो । सुणियो प्रचंड **बाजत्र** सुर, फिर ब्रहमंड पलट्टियो । —रा. रू.

बाजंद, बाजंद्र—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.)

उ०—अनि लोक संपति इद, जिण मांहि दळ **बाजंद** । दइवांण सोबादार, पाठाण सूर अपार । —सू. प्र.

बाज—स. पु. [स.] १ संग्राम, युद्ध ।

२ ध्वनि, नाद ।

३ घृत, घी ।

४ यज्ञ ।

५ अन्न ।

६ जल ।

७ बल ।

८ पलक ।

९ मुनि ।

[फा. वा'ज] १० धार्मिक उपदेश ।

११ सीख, नसीहत ।

वि. [फा. वाज] १ स्पष्ट, खुला ।

२ व्यक्त, प्रकट ।

३ देखो बाज' (रू भे.) (अ. मा., ना. डि. को.)

उ०—१ वहै क बाज पत्थए, प्रकास मैं क रत्थऐ । सीरम साह नस्स है, विवांण उड्डिया वहै । —गु. रू. बं.

उ०—२ ढंच ढाळव्वळा, प्रस्सि ऊतांमळा । वहै वेगागळा, बाज बाहे नळा । —गु. रू. बं.

उ०—३ दिल्लीवै सुरतांण, बाज बंका वेगागळ । सूंटी ले मेल्हीया जूह मद वहता मैंगळ । —गु. रू. बं.

उ०—४ तरै सरव ठाकुर प्रारोगै छै-प्रो ठाकुर हाथ नीचो करै तो बाज नहीं । तरै प्रो बोलियो-ठाकुरै प्रजूं बाज ही नही प्रायी छै काहूं प्रारोगां ।

बाजन—देखो 'बाजरण' (रू. भे.)

बाजणी—देखो 'बाजणी' (रू. भे.)

उ०—सुराही गळारै घाटि सभा सलां पोंडी भीगै गिरीऐ ऊपरि बाजणी पायाल रा घूघरा रमझोळ झणकिया जांणै कळहंस रा बच्चा बकोर करि रहिया छै । —रा. सा. सं.

बाजणूं, बाजणो—देखो 'बाजणो' (रू. भे.)

उ०—१ रंगीलो चंग बाजणूं म्हारै वीरैजी मंढायो चंग बाजणूं ।
—लो. गी.

उ०—२ म्हारी भा री ए जायी विछिया घड़ा चूं ए बाई तनै बाजणा । —लो. गी.

बाजणो, बाजबो—देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे.) (उ. र)

उ०—१ सो पड़िया दूजा सुहड़, प्रन ऊपड़िया खेत । प्रंग नत्रोठा बाजिया, प्राद 'दुरग्ग' सचेत । —रा. रू.

उ०—२ तठै झगड़ो हुवो ठाकर जगरूपसिंघ विहारीदास दोनूं बाज मूवा । —दा. दा.

उ०—३ गहगहिय थाट बेऊं गरोठ. राठउड़ि रउद्रि बाजियउ रीठ । सूरा सघीर वाजइ सरोस, पड़िफाळ ऊडइ जिरहपोस ।
—र. ज. सी.

उ०—४ इम जीपै प्रावियो, गंग' बाजतां नगारां । सुजस वधै घर सिरै' उछक छक वधै प्रपारा । —सू. प्र.

उ०—५ प्रारती उतारीजै छै । केसरि-चंदण चरचीजै छै । प्रगर उखेवीजै छै । पंचसबदा बाजि रहिया छै । झालरियां झणकार हुइ नै रहिया छै। —रा. सा. सं.

उ०—६ के जम नांम तणो तन सज कर, भै जमहूं डर डर मन भाजै । किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां, वीठळनाथ प्रनाथां बाजै ।
—र. ज. प्र.

उ०—७ जिण दीहै पावस झरइ, बाजइ ताढो वाय तिण रिति मेल्है माळविण, प्री परदेस म जाय । —ढो. मा.

उ०—८ मोर सोर मंडे, इंद्र धार न खंडे, प्राभो गाजै, सारंग बाजै । —रा. सा. स.

उ०—९ जुध तणो भरोसो प्रगै ही जांणत, कमध खग चाळ चखचाळ करंता । 'मांनडो' 'वैण' फोजां तणा मोहरी, बाजि वैकूंठ गया डांण भरता । —जगो सांदू

बाजणहार, हारो, (हारी), बाजणियो—वि. ।

बाजिप्रोड़ो, बाजियोड़ो, बाज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बाजीजणो, बाजीजबो—भाव वा० ।

बाजत्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ बाजत्र बजत विमेक, नित गांन करत प्रनेक । सोमंत इंद्र समाज, रविवंस रवि महिराज । —सू. प्र.

उ०—२ धीरवत कुमर नै निरखो, धोवर पाइ लागा । स्वांमी पणै थाप्यो सहु मिलनै, जस ना बाजत्र वागा । —वि. कु.

बाजपत, बाजपति—सं. पु. [सं. वाजपति] प्रग्नि, प्राग ।

बाजपेई, बाजपेय, बाजपेयी—स. पु. [सं. वाजपेयी] १ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

उ०—जोसी जांनी जेतला, पाठक पंड्या पाढि । बाजपेय दीखित दवे, राउल-सरसा राढि । —मा. कां. प्र.

२ प्रत्यन्त कुलीन पुरुष ।

[सं. वाजपेय] ३ एक प्रसिद्ध यज्ञ ।

बाजब—देखो 'वाजिब' (रू. भे.)

उ०—प्रबै ही तो चूड़ो ऊबरै प्रनै हूं ई इण म्हारै सूरवीर धणी नै समझाय नै कहूं की जगत में वळै ही सूरवीर है सो प्रापने प्रबै मांनणो बाजब है । —बी. स. टी

बाजबी—देखो 'वाजिबी' (रू. भे.)

बाजा—सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा । (बां. दा. ख्यात)

बाजाळ—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.) (डि. नां. मा.)

बाजित्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—बजि थाळ सकळ बाजित्र वजै, कुसम सघण सुरियंद किया । वेखियां हीज प्रावै वणै, उण दिन तणो प्रजोधिया । —सू. प्र.

बाजिंद, बाजिंद्र, बाजिंद्रक—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.)

उ०—१ नल नदियां वीजळ निसा, गिणै न जळ थळ घाट । प्रावै राजिंद प्रीतवस, बाजिंद खड़िया वाट । —पनां

उ०—२ थोर पीडा पग्ग थंभ, गात जांणै गजखंभ । सतेज रूप साहणं, बाजिंद्र राज वाहणं । —गु. रू. बं.

उ०—३ घणा जांणिक घट्टा साहणं छुट्टा सातक फट्टा सांमंद्रं । सणणो सीचांणां जेम विवांणां वांनर डांणां बाजिंद्रं । —गु. रू. बं.

उ०—४ हाथा किरि पाउ पलव रहे । वाजित्रक वेग विवाण वहे । —गु. रू. बं.

वाजिंत्रो— देखो 'वाजिंत्री' (रू. भे.)

वाजि—देखो 'वाज' (रू. भे.)   (डि. ना. मा.)

वाजित्र - देखो 'वाजंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ कर उपट करत संगीत केक । घन करत बजत वाजित्र अनेक । —सू. प्र.

उ०—२ निरोह दलीपत नडिया रे । गहरे सुर वाजित्र गुडिया रे । —रावत अचळदास सक्तावत रो गीत

उ०—३ हुई सोनारी सांन हरख्यौ छूटा राव । वाजित्र वाजइ नीसाणौ घाव । —बी दे

उ०—४ पंचसबद वाजित्र वाजई छुई । गलता गीतल रताजणी नागा पखावज धोंकार करइ छुइ । — का दे. प्र.

उ०—५ इण परि उच्छव विस्तरइ, गीत नृत्य वाजित्र । पचाम्रत पकवांन परि, जिकै जिमाड्या मित्र । —मा. का. प्र.

उ०—६ बलि लेहनै जो पाल री, बिकट दुरग विराजै रे । घण वाजित्र सदा धुरै, पन गरजारव लाजै रे । —वि कु.

वाजिनी–स स्त्री. [स.] घोडी ।

वाजिन्न- स पु. [स वाजिन] १ घोडा, अश्व ।

उ०—सप्रहिय सूरा नेगराज सार । वाजिन्न चढिय रिणजय वार । —रा. ज सी

[स. वाद्य] २ बाजा, वाद्य ।

उ० —जेमारगह ऊपरि करनि जाइ । वाजिन्न नेय नीसाण वाइ । —रा. ज. सी.

[स वाज] ३ ध्वनि ।

४ होड ।

५ संघर्ष ।

वाजिब वाजबी-वि [अ] १ ठीक, उचित, मुनासिब ।

२ आवश्यक, जरूरी, अनिवार्य ।

३ योग्य, लायक ।

रू भे.—वाजब ।

वाजिया–स. पु., ब व. –देखो 'वाजिया' (रू. भे.)

वाजी—१ देखो 'वाज' (रू. भे)

२ देखो 'वाजी' (रू. भे)

उ०—बाजीगर वाजी रची माया विसतारा । —ह. पु. वा.

वाजीकरण—देखो 'वाजीकरण' (रू भे.)

वाजीगर— देखो 'बाजीगर' (रू भे)

उ०—बाजीगर वाजी रची, माया विसतारा । बाजी सूं बाजी रमै, बाजीगर न्यारा । —ह. पु. वा.

वाजूंवो— देखो 'वाजिंदो' (रू. भे.)

वाजू— देखो 'बाजू' (रू. भे.)

वाजूबंद, वाजूबंध—देखो 'बाजूबंध' (रू. भे.)   (अ. मा.)

वाजेंद्र—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.)

उ०—अन्न अहार भोजण मांणि, तंबोळ मुख तरणि । वाजेंद्र राह वाहणि आरूढ वळै । रिति वरखा सरद हेमत संसर हद वसन्त ग्रीखम सह सुख सफळै । —गु. रू. बं.

वाजोट - देखो 'बाजोट' (रू भे.)

उ०—वाजोट री ऊपरि रुखमणिजी गादी आय बैठा । सिंगार कै रमि ऊपरै इक सखी आरसी ले मुंह आगइ आय उभी हुई । —वेलि टी.

वाजौ—देखो 'बाजौ' (रू. भे)

उ०— दसवे द्वारि वसै मन राजा, सबद अनाहद वाजै वाजा । —ह. पु. वां.

वाट–सं. स्त्री. [स वाट, वाट] १ मार्ग, रास्ता, राह, सड़क ।   (ह. ना. मा.)

उ०—१ मामठौ हल्लकौ, मेंगळा सब्बळौ । वाट ऊभी वहै, जांण आडौ-वळौ । —गु. रू. ब.

उ०—२ पातरिया वाट न पी'रां पीहर, अबळां रै निरधारां आण । —श्रोपो आढो

उ०—३ नळ नदियां वीजळ निमा, गिर्णै न जळ थळ घाट । आवै गोविंद प्रीत वस, वांजिद नदियां वाट । —पनां

२ प्रतीक्षा, इंतजार ।

उ०—१ ताहरा जैतसी ऊगवन बोलियौ - सीख करो, लोग आपणी वाट जोवै छै । —जैतसी

उ०—२ सखी सहेली मामळै म्हे मन बाध्या वाट । नव दिन कोधा तारना, सो प्रीतम हद वाट । — अज्ञात

उ०—३ माधव वहिला आवज्यो, हूं जोऊ घरि वाट । फळ दळ जळ अग्नि गहू, भूमि सयन नहीं खाट । —मा का. प्र.

उ०—४ तिण द्वारिकाजी माहें लोग चितातुर हुआ वाट जोयं छै । —वेलि टी.

३ दीपक की लौ ।

४ दीपक की बत्ती ।

५ दिशा, कोण ।

६ चक्कर ।

७ घेरा, आहता।
८ बाग, उद्यान।
९ लतामण्डप।
१० समय, वक्त।
११ कमर, कटि, कूल्हा।
१२ पेट में होने वाला मरोड़ा, ऐंठन।
१३ वस्तु।
१४ अस्त्र विशेष।
१५ इमारत।
१६ घोड़े या घोड़ी का पेशाब।
१७ घोड़ी की योनि।
१८ तोलने के प्रावधान, तोल।
१९ विवाह मण्डप में अग्नि की परिकमा (भांवर) देने के पश्चात कन्या को उसके पिता द्वारा पहनाई जाने वाली पोशाक।
वि. वि.—देखो 'घरममंढ'
रू. भे.—बट, बट्ट, बाट, बाटी, वट, वट्ट, वट्टि, वाटि, वाटि वाटो।
अल्पा.—बाटड़ली, बाटडी, बाटली, वाटड़ली, वाटड़ो, वाटली।
मह.—बाटड, वाटड।

बाटकड़ी—देखो 'बाटकी' (अल्पा., रू भे.)
उ०—आटकड़ी नहीं जीमें बाटकड़ी नही जीमें। ऐ तो जीमे वांरा कोडिला सालाजी रा मोटोड़ा थाळ में। —लो. गी.

बाटकड़ो—देखो 'बाटको' (अल्पा., रू. भे.)

बाटकियो—देखो बाटको' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—हरसा वीर मेरा रे, एकै आगण में रै दोन्यू खेलिया, एकै बाटकियै पीयो दूध। —लो. गी.

बाटकी—देखो 'बाटकी' (रू. भे.)
उ०—उपरि सोना ना थाळ अरयत घणु विसाल, विचिमांहि चउसठि बाटकी लगार नहीं जाति काटकी। —व. स.

बाटकीटाळ—देखो 'बाटकीटाळ' (रू. भे.)

बाटकौ—देखो 'बाटको' (रू. भे.)
उ०- मु स्वारां रै चावळ मूंगा री खीचड़ी तयार थी मु बाटका एकण माहे घात ल्याया, मागकराव चढियै हीज खाधी। —नैणसी

बाटड़—स. पु.—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भ.)

बाटड़ली—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—लागै रै भवरजी मेहूड़ा री छीटां, रावळी कटारी रा घाव। पधारो मारवण रा रसिया, मेलां जोऊं बाटड़ली। —लो. गी.

बाटड़ा—स. पु.—राठोड वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)
रू. भे.—बाटड़ा, बाटाड़ा।

बाटड़ी—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ बाडड़ी जोवता थई कन्यका जी, लावण्य गुण रूप तणो जाणे धाम हो। —वि. कु.
उ०—२ सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारंग। जिण वाटइ सज्जण गया, सा बाटड़ी सुरग। —ढो. मा.

बाटणो, बाटबो—देखो 'बांटणो, बांटबो' (रू. भे.)

बाटबड़—देखो 'बाटबड़' (रू. भे.)

बाटपाड़ु, बाटपाड़ो—देखो 'वटपाड़ो' (रू. भे.)
उ०—१ चोर चरड नइ चाडिया, गांठीछोड़ा गाहाट। बाटपाड़ा नइ फांसिया, नाडी त्रोड़ा नाट। —मा. कां. प्र.
उ०—२ चोर चरड बहुल, बाटपाड़ा तणा कलकल, घरम गुरु चपल पापोपदेस कुसल —व. स.

बाटभोजन—सं. पु [सं. वाट+भोजन] यात्रा में मार्ग में, किया जाने वाला भोजन।

बाटर—सं. पु. [अं.] पानी, जल।

बाटरप्रूफ—वि. [अं.] जिस पर पानी का असर न हो, जिसमें से पानी नहीं निकलता या छनता न हो।
सं. पु.—उक्त प्रकार का कपड़ा।

बाटरवरक्स—सं. पु. [अं. वाटरवर्क्स] नगर में पानी की व्यवस्था करने वाला विभाग, जलदाय विभाग।

बाटलउ—देखो 'वाट' (रू. भे.)
उ०—जातु सही जासइ हरी, चोर तणी जिम चाल। वंछित पामिउ बाटलउ, ने पणि त्राटला काल। —मा. कां. प्र.
२ देखो 'बाटलो' (रू. भे.)

बाटली—सं. स्त्री. [स. वर्तुलिका प्रा वट्टुली] १ अंगूठी। मुद्रिका। (उ. र)
उ०—१ मोती-जड़ी ज हाथि, मुरह-सुगंधी बाटली। सूती माझिम रात, जागू ढोलू जागवी। —ढो. मा.
उ०—२ खूणाली खांनि वली, वली बाटली कोट। बाली परवाळी अधर, अमी तणी तिहां ओट। —मा. का. प्र.
रू. भे.—बाटुली।
५ देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)
६ देखो 'वाटी' (अल्पा., रू. भे.)
७ देखो 'बाटली' (रू. भे.)

बाटलीयो—स. पु.—१ वस्त्र विशेष।
उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडीआं सणीआं

कस्तूरीग्रां प्रतापीग्रां, कुमंभीग्रां मोलीग्रां मांडवीग्रां मीणीग्रां, **वाटलोग्रां** जलोदरीग्रां मणीग्रा जोइदरीग्रां प्राणीग्रां। — व. स.

२ देखो 'वाटलो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वाटलु, वाटलो–स. पु. [प्रा. वट्ट] १ प्याला, पात्र।

उ०—थाल कचोला **वाटला**, वामण चरवो चंग। मग गोघूमादि दियं, प्रथवो रतन सुरंग। —वि. कु.

२ वृत्ताकार, गोल।

उ० ईम तुम्हारइ एतलउ, भलउ भणइ ने भूर। क्षिणु वांकउ क्षिण **वाटलु** क्षिणु कालु क्षिण कूर। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—वाटलउ।

ग्रल्पा.—वाटलियो।

वाटवड़—देखो 'वाटवड' (रू. भे.)

उ०—तीतर लउवा **वाटवड़**, वैदांणी बुगलाह। लनै पंखीवण उड रह्या, वा' वा' जो वा'-वाह। —गजउद्धार

वाटवाणो–स. पु.—विवाह मंडप में अग्नि परीक्रमा के पश्चात कन्या के पिता द्वारा कन्या को पहनाई जाने वाली पोशाक।

वाटवालनूं–स. पु.—१ राह चलने या यात्रा करने की क्रिया। (उ. र.)

२ प्रतीक्षा करने की क्रिया या भाव।

वाटा—देखो 'वाटा' (रू. भे.)

वाटाउ, वाटाऊ—देखो 'वटाऊ' (रू. भे.)

उ०—१ मातमी वार गंगोदक रो कावड भरिनै ग्रांणतो हुतो सु किण हेक गहर **वाटाउ** थको किणहेक रै वारणं रै चांतरै उतरियो। — नैणसी

उ०—२ विढण वल्यांण करै **वाटाऊ**, ग्रेती जांणू ग्रावडियो। मत्रां-महेन 'महेवा' माणी, पाछि माझो रण पडियो।

—राव वीरम राठौड़ रो गीत

वाटि, वाटि—देखो 'वाट' (रू. भे.) (उ. र)

उ०—१ मिथिका वइसी गचरइ, घरि थी राउलि जाइ। **वाटि** वली विलोकती, विनता विव्हल थाइ। — मा. कां. प्र.

उ० २ ढोला, मारवणी गुई, तइ सारडो न लाध। दीवा-केरी **वाटि** जिम, मोडी-मोडी दध। —ढो. मा.

२ देखो 'वाटी' (रू. भे.)

वाटिका–सं. स्त्री. [स.] १ फुल, बगिया, बगीचा, उपवन।

उ०—कणकार वेणुकार, चरमकार, मल्लकार खलकार धान्य-पालक वाटक **वाटिक** वापी पुष्करिणी क्रीडातड़ाग सरोवर।

—व. स

२ इमारत।

उ०—क्षण ऐक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ राज-**वाटिका**, क्षण एक जाइ वाटिकां, इसी क्रीड़ा करइ। —व. स.

३ वह भू-खंड जिस पर कोई इमारत खड़ी हो।

रू. भे.—वांटिका, वाटी, वाडि वाडी।

वाटी–सं. स्त्री. [स.] ग्रनाज पीसने की चक्की के चारों ग्रोर का वह घेरा जिसमें पीसा हुग्रा ग्राटा गिरता रहता है।

२ घेरा, ग्राहता।

३ कर, टेक्स।

उ०—दांण पूंछी हल मोल भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक बल चचा चारिका गढ़ **वाटी** छत्र ग्रालहण घोटक कुमारादि सुखड़ी इति क्रमेणाष्टादसा करा जाता। —व. स.

४ कमर, कटि।

रू. भे.—वाडि, वाडी।

५ देखो 'बाटी' (रू. भे.)

उ०—तदनतर लाडता लडसडता इसा पुण्यवंत, लीला कांमदेव जिसा, ग्रारोगिवा बइठा। तदनंतर ग्राट वाटां **वाटी** कचोलां कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। —व. स.

६ देखो 'वाट' (रू. भे.)

७ देखो 'वाटिका' (रू. भे.)

वाटिइ—देखो 'बाटी' (रू. भे.)

उ०—क्षणि क्षणि साकर **वाटोइ**, क्षणि क्षणि कढोइ दूध। क्षणि क्षणि बीडी ग्रापीइ, मुख तबोलि सुध। —मा. कां. प्र.

वाटीकोळो–सं. पु.—वर्षा ऋतु में होने वाला कुष्मांडु।

वाटीपंच—देखो 'पचवटी' (रू. भे.)

उ०—मारे व्याध कबंध ग्रमाई, **वाटीपंच** वसांनूंदा। रांमण तद हरी जांनुकी रांणी, भीलो बेर भखांनूंदा। —र. ज. प्र.

वाटूली—देखो 'वाटलो' (रू. भे.)

उ०—चोसठि व्यजन रूप ग्राहार दइं, एक स्थाल विसाल **वाटूली** सीय कच्चोलां भंगारादिक भाजन सरवे समोपइं···। —व. स.

वाटूलो–स. पु.—पात्र विशेष, कटोरा।

उ०—१ ग्रथ पूग सोपारां, ग्रति फारां, प्रधांन रसनिधांन, स्रीखंडि खरड्यां, करपूर धवलां ग्रांबावना **वाटूलां** सुरंग सुभंग चीकणां क्रोचडीयाला, चाव्यां रस मूंकइं, इस्यां ग्रपूरवोत्तम पूग। —व. स.

उ०—२ सूक्ष्म सकोमल रोमराइ, मघलाइं गुण वसइं जेह तणइ काइ, जांणीइ राखै द्रष्टितउ पाछउ थाइ, **वाटूलां** ग्रकाई चोपड्यां तीन्हा इस्या लग, सुबद्ध मांसल ग्रंग, जेह तणी कुहंदि चग, उज्ज्वल दंत, जेहनी सोभा ग्रनंत सुभ इसउ ग्रमभ। —व. स.

उ०—सौरयवृति जेह नइ समग्र, मूस माहि फिरता सुवरण्ण नी परिइ बाटुलां, बीज सरीलां नयन तेह नइं मइं ऊपजइ पैजनइं रोगक्षयन । —व. स.

बाटौ—देखो 'बाटी' (रू. भे.)

बाड—१ देखो 'बाड़' (रू. भे.)

उ०—यंत्र मत्र मसांण गीध करंकां की बाड मंडी । —म. वचनिका

२ देखो 'वाट' (रू. भे.) (७)

उ०—जठै अमरसिंघजी घोड़ो कुदायौ सो हुमजै रै हाथी रै दांतूसळां ऊपर पग मेलिया । अह अमरसिंघजी रौ डाबौ हाथ होदै री बाड मैं पड़ियौ । —द. दा.

३ देखो 'बाढ' (रू. भे.)

उ०—जमी खेद लागा प्रळै काळ रूपी बीर जुटा, नोराताळा बांण छूटा भ्रातसां नोहाव । कैवांण बाड सूं सत्रां झोकीया मारात कूंपै, 'हरा' वाळै जाडा थडां झोकिया हेराव । —बिसनसिंघ री गीत

बाडगिरी—सं. पु.—पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय पर्वत ।

बाडचर—स. पु.—सूअर, वराह । (अ. मा., ह. नां. मा.)

बाडणौ—देखो 'बाढणौ' (रू. भे.)

उ०—वाहरू घरा आंटायतां बाडणा, पखां जळ चाडणा अखाड़ै पाथ । 'नाथ' री ऊथपै जको राजा नहीं 'नाथ' री थपै सुज जोधपुर नाथ । —हटोजी खिड़ियौ

बाडणौ, बाडबौ—देखो 'बाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—'विड़देस' पवंगं बाडतै, खग नागपुर घर खाटतै । जीवता केहर तणी जांणै, खांच काढी खाल । —रा. रू.

बाडणहार, हारौ (हारी), बाडणियौ—वि० ।

बाडियोड़ो, बाडियोड़ौ, बाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बाडीजणौ, बाडीजबौ—कर्म वा० ।

बाडमेय—देखो 'वाडवेय' (रू. भे.) (अ. मा.)

बाडम—१ देखो 'वडम' (रू. भे.)

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

बाडलौ—देखो 'बाड़लौ' (अल्पा., रू. भे.)

बाडलौ—स. पु.—१ ऊंठ या घोड़े को खुला छोड़ते समय उनके पावों में लगाया जाने वाला बंधन, जिससे पशु चल सकता है पर भाग नहीं सकता ।

उ०—तितरै मारग मांहे ढोलेजी नै चारण मिळीयो । कह्यौ, जे ठाकुरां, ऊंठ छोडावै नें बेऊं जणा ऊपर चढीया । सो इसौ करहा में कासूं खून छै । तारै ढोलैजी छुरी कमर मांहा काढनै दीनी । तारै चारण ऊंठ रै पग माहा बाडलौ काटीयौ । ऊठ क्याहू पगा हुवौ । —ढो. मा.

२ देखो 'बाड़लौ' (रू. भे.)

बाडव—सं. पु.—[स. वाडव्यं] १ ब्राह्मण ।

उ०—१ पणि बाडव बधवु नही, दीजइ देस-निकाल । वार विलंब न कीजइ, ते माटइ ततकाल । —मा. कां. प्र.

उ०—२ दैवइं लिखिउं ते नवि टलइ, बाडव रहिउ विचारि । घीर धरी घर उडिवु, हईडां हवइ म हारि । —मा. कां. प्र.

उ०—३ बाडव संमति वीनती, सूर देवरावूं साखि । यौवन मइं इम जालविउ, रंक रयण जिम राखि । मा. कां. प्र.

उ०—४ घरि घरि दो दो दीसीइ, वरसिइ आभि अगालि । लेई आवै लाख ते बाडव वाचा पालि । —मा. कां. प्र.

बाडवक—सं. पु.—शृंगार में एक आसन विशेष ।

बाडवेय—सं. पु. [सं.] १ सांड ।

२ बैल ।

रू. भे.—बाडमेय, वाडमेय, वाडिमेय ।

बाडहोळौ—सं. पु.—भय का गोला ।

उ०—वैरिया री फौज रै म्हारौ पती जावतां ही दुसमणां री छाती में हौल खाडा पड़ण ढूक जावै बाडहोळा (भै रा गोटा उठै छाती नै) निजर पड़तां ही अर सिपाही ओडो ओळा ताक ताक नै कहै आयौ आयौ । —वी. स. टी.

बाडि—देखो 'वाटिका' (रू. भे.)

उ०—माफळि भूय मतंगा, घण मद मोख खोख घूमंता । ताकि बाडि बिलगा काकीडा, नतै कूदंति । —रांमरासौ

२ देखो 'बाटी' (रू. भे.)

बाडिमेय—देखो 'वाडवेय' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बाडिम—१ देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—देमा सिरोमणि दीपणौं, जुध जीपणौं जमरांण । देसोत बाडिम दाखणौ, घर राखणौ लखबीर । —ल. पि.

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

बाडियोडौ—देखो 'बाढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बाडियोड़ी)

बाडियौ—देखो 'बाड़ियौ' (रू. भे.)

बाडी—स. स्त्री.—१ रथ ।

उ०—इक दिन इक अटवी में ऊभौ, छवि सखरी तरु छाया । बाडी चढि राय दसारण, उणहिज वढि तलि आया । —ध. व. ग्रं.

२ हाथी का हौदा, अंबारी ।

३ देखो 'वाटी' (रू. भे.) (उ. र.)

४ देखो 'वाटिका' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०— वीर जद वाढौ गहि वेगि नीज विस्राम । चपक-नलि चिना ममी, निद्रा धावी नाम । —मा. का. प्र.

वाढौ - देखो 'वाडौ' (रू. भे.)

वाढ—देखो 'वाद' (रू. भे.)

उ०—१ वणाय ध्याग वाढि वाढ, ओपवै उजास रा । वरणत वीच नीर वाणि, रूप म वणाय रा । —सू. प्र.

उ०— २ मरद घममाण पूह लिये आलोमगां, वहगा कज वाढ भंगोजाय वीजळा । रोह घड़ चोवड़ा पलट जग ग्वळा इळां, खत्री गुर री छूगल करै नत धूकळा । —अज्ञात

उ०—३ दाउमळ वजर घजर जमदाढा, वाढो ऊणाढा विहर । घणणलि नजर भनो माफळियो, कुंजर नै नाहर कवर ।

—लिखमीदास गाडण

उ०—४ घणी नरवारधा रा वाढ उछळै छै ।

—कंवरसी साखला री वारता

उ०—५ नड पड़ै फूट खड छाक लोह, खुड पकड जड़ै जमदढ़ द्रोह । झड़ियाल वाढ खग घजर झाट, घड़ियाल फजर गढ नक घाट । —बि. स.

वाढण—देखो 'वाढण' (रू. भे.)

उ०—पायका पद लाग घगू पलकी, हथ लागत 'पाल' नगी हलकी । दोयणा सिर वाढण धान दुग्रो, हरणाखुर 'देव' सवार हुग्रो । —पा. प्र.

वाढणौ - देखो 'वाढणौ' (रू. भे.)

वाढणौ, वाढबौ—देखो 'वाढणौ, वाढबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वहता रगत देखि खळ वाढै । चंद्रप्रहास ग्रहै चक चाढै ।

—सू. प्र.

उ०—२ गज वाढि सीस पुजै मकत्ति । वाढेल कहाया इण विगति । —सू. प्र.

उ०—३ 'वीरम' सलखावत खगा वाण । जोइया वाढि बिढियो प्रमाण । —सू. प्र.

उ०—४ तरै गरीबनाथ कुहाडियो लेनै आवा वाढण नै ऊठियो । तरै नेनै १ कह्यौ हाथा रा पाळिया नाय वाढौ । —नैणसी

उ०—५ राजाजी नै रीस तो ऐड़ी आई के डोकरा रो माथो वाढ न्हाखै । पण पाछा बोल्या—थू भूठो तो है तो काई म्है भूठो हूं । —फुलवाड़ी

उ०—६ सिरदारां तो गुलमा'री री एक-एक रग सगळा सस्तरां सू वाढेला । —फुलवाड़ी

उ०—७ वांक मुहा वाजिद बिवांणां, दाढ़ां पीसै रोस लगांणां । घैरंती घमम तुरा घम घमी, वाढै साढ सेट सीरम्मी ।—गु. रू. बं.

वाढणहार, हारौ (हारी), वाढणियौ—वि० ।

वाढिग्रोड़ौ, वाढियोड़ौ, वाढयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाढीजणौ, वाढीजबौ—कर्म वा० ।

वाढाळ—देखो 'बाढ़ाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—घोराडि जमद्दढ फाटि फटै घट, नीसर सुम्सर सेल नरा । वाढाळ वहै रत खाळ विछूटै, रभ वरै वरमाळ वरा । —गु. रू. ब.

वाढाळी—देखो 'बाढाळी' (रू. भे.)

वाढाळौ—देखो 'बाढालौ' (रू. भे.)

उ०—१ चाढा दहुं वळ चाढवै, झळहळ भूलाळा । खुरसांणां दहुं दळ खिवै, वीजळ वाढाळा । —सू. प्र.

उ०—२ वढियो मुक्लेस 'पतौ' वाढाळौ, वभियो सुरजन देख वढ़ । गढ चित्तौड़ गरव तण गरजै, गाडौ गो रणथंभ गढ ।

अज्ञात ।

उ०—३ बीकानेर भोज वाढाळै, सारा मुंह ओडवै सरीर । 'रूपा' हरै गाखियो रूड़ो, नेहचैई उतरतो नीर । —द. दा.

वाढियोड़ौ—देखो 'बाढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाढियोड़ी)

वाढेली—देखो 'बाढेली' (रू. भे.)

वाढेल—स. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा ।

२ पवार वंश की एक शाखा ।

३ देखो 'वाढेलौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—बाढेल ।

वाढेलौ—वि.—१ वीर, योद्धा, बहादुर ।

सं. पु.—२ पवार वंश की 'वाढेल' शाखा का व्यक्ति ।

३ राठौड़ वश की 'वाढेल' उपशाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—बाढेलौ ।

मह.—बाढेल, वाढेल ।

वाढोवाढ—स. पु.—प्रहार पर होने वाला प्रहार, घाव पर घाव ।

वा'णौ—देखो 'वाहणौ' (रू. भे.)

वा'णौ, वा'बौ—देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

उ०—पाछी री पाछी सुथरा पांणी री लोटी लेय मासी रै गोडै आई । हाथ पग दबावण लागी । पछै नाक री फुरणियां भींच मामी री सास रोक्यो । पांणी रा छाबका दिया । दो तीन तड़ाकां बा'यनै मामी थोडी सी आंख्यां खोली । —फुलवाड़ी

वात—सं. पु. [सं.] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव, आठ दिग्पालों में से एक ।

सं. स्त्री.—२ वायु, पवन, हवा। (म. मा., ह. नां. मा.)

उ०—फागुन फरहरै बात प्रभात नौ सीत अपार। नाह सुं फागन रमैं बहु राग, सुहागणि नारि। —ध. व. ग्रं.

२ शरीरस्थ तीन तत्व-कफ, वात पित में से दूसरा, जिसके कुपित होने से अनेक रोग पैदा होते हैं।

उ०—प्रापि भूतक प्रधिदेव प्रध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित। त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध में, न भवति वेलि जपंतनित। —वेलि

३ शरीर की प्रधान वायु, प्रधो-वायु।

रू. भे.—बत, बात, बाय, बायड।

४ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रहै ग्रंत्रावळि, उड़ि चली ग्रोभणी। त्रिहूं भुवण रही बात सोहड़ां तणी। —हा. झा.

उ०—२ वरि हूं प्राविसी थई रही, मझ लागी हूं मात। मइं माधव-विण एक क्षण, जीव्यानी नहीं बात। —मा कां. प्र.

उ०—३ पिता प्रणाम करू किस्यूं, मोकलावउं किहां वात। करसिइ ते कलपांत कलि, स्रवणि सुणतां बात। —मा. कां प्र.

उ०—४ रावळा प्रासापुरां जांणौ, थां थकां क्युं न जांणां। रावळ टीकै बैठे, तरै म्हां नै रावळ बात। —नैणसी

उ०—मास तीन चार रो प्रावाधांन छै। समुद्र मोहल में बैठो छै। वातां एकांयत करै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

वातकंटक—सं. पु. [सं.] एक वायु रोग जिससे पावों की गांठों (ग्रंथियों) में दर्द होने लगता है।

वातकार—वि [सं] १ वायु उत्पन्न करने वाला।

२ वह खाद्य पदार्थ जिनका उपयोग करने से वायु उत्पन्न होती है।

३ देखो 'बातकार' (रू. भे)

उ०—वंसकार यंत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुंगलकार प्राउजकार पखाउजकार गीतकार बातकार, न्रत्यकार पाडकार। —व. स.

वातकोप—सं. पु. [सं.] शरीर के अन्दर होने वाला वायु का प्रकोप। (वैद्यक)

रू. भे.—वातप्रकोप।

वातगर—देखो 'बातकार' (रू. भे.)

उ०—राजद्वारिक लेखक कथक बातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय बइकार। —व. स.

वातगुल्म—सं. पु. [सं.] १ वात विकार से होने वाला गुल्म रोग (वैद्यक)

२ वात चक्र, प्रंधड़।

वातड़ली, वातड़ी—देखो 'बात' (प्रल्पा रू. भे.)

उ०—१ था वीना सारी बातड़ी, सूनी होयसी सार बै। कुंवर कहहै रै सूवटा, प्राइ राकस हार वै। —रीसालू री बात

उ०—२ मात-पिता सैं वीसरै, बंधू वीसारंह, सूरां पूरां बातड़ी, चारण चीतारंह। —प्रग्यात

उ०—३ सेवै नर सदीना मुरधर, सदा नीरोगी ही रवै। बूठै जांरी बातड़ी नै, वगत वटाऊड़ा कवै। —दसदेव

उ०—४ पंथी नइ पूछूं बातड़ी रे, तुमे प्राया उग्रसेन पुर थी प्राज रे। तिहां दीठा प्रम्ह गुरु राजीया, स्रीजिनकुसल सूरि राज रे। —स. कु.

वातचक्र—सं. पु. [सं.] १ प्राषाढ मास की पूर्णिमा के सूर्यास्त को प्राने वाला ज्योतिष का एक योग।

२ देखो 'बघूळौ' (रू. भे.)

उ०—ऊपड़ी रजी मझि प्ररक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसंति। सद नीसह नीसांण न सुणिजै, वरहासां नासा वाजंति। —वेलि

वातचीत—देखो 'बातचीत' (रू. भे.) (उ. र)

वातज—वि. [सं.] वायु द्वारा उत्पन्न, वायुकृत।

सं. पु.—१ हनुमान।

२ भीम।

वातजात—सं. पु. [सं. वात-जायते] १ हनुमान।

२ भीम।

वातज्वर—सं पु. [सं.] वायु विकार के कारण होने वाला ज्वर।

रू. भे.—वायज्वर।

वातप—सं. पु.—हरिण, मृग। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बातप।

वातपुत्र—सं पु. [सं.] १ हनुमान।

२ भीम।

वातपोत, वातपोथ—सं. पु. [सं. वात पोथः] पलास का वृक्ष।

वातपोस—देखो 'बातपोस' (रू. भे.)

उ०—राव जोधो पोढियो हुतो। वातपोस वात करता हुता। राजवियां री वातां करता हुता। —नैणसी

वातप्रकोप—देखो 'वातकोप' (रू. भे.)

वातप्रकति, वातप्रगति—वि. [सं. वातप्रकृति] १ जिसकी प्रकृति में वायु की प्रधानता हो।

२ जिसके खाने से शरीर में वात-वृद्धि होती हो, जो वायु

कारकहो।

बातरक्त, बातरगत—स. पु. [सं बात-रक्त] कुपथ्य या अयुक्ताहार-विहार से बात विकार के कारण रक्त विकार होने का एक रोग।

बातरोहिणी—स. स्त्री [स.] मुह मे होने वाला एक रोग।

वि. वि.—इस रोग मे जीभ पर चारो ओर काटे के समान मांस उभर आता है।

बातल, बातलो—स. पु. [सं. वातालः] १ चना।

वि.—१ वायु वर्द्धक।

२ बात युक्त, वायु प्रधान।

उ०—अक्षग भोजन निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमरयाद, रहम भेद, रसच्छेद, आऊगा स्तोक निवासित लोक वेह बातलो, भक्ति पातली, अल्प अन्यु, पगि पगि अकृत्य, बाप बेटा तणा मरथ मांतड, आपणां छोरू कुक्षेत्रि घातई। —व. स.

३ देखो 'बातोल' (रू. भे.)

बातलड़ी—देखो 'बात' (रू. भे.)

बातविगत - देखो 'बातविगत' (रू. भे.)

बातवैरी—स. पु.—बादाम।

बातव्याधि—स. स्त्री. गठिया रोग।

बातहडा—स. पु.—कोई जाति या वर्ग विशेष। (सभा)

बाताट—स पु.—१ सूर्य का घोड़ा।

२ मृग या हरिण।

बातात्मज—स. पु [स.] १ पवन-पुत्र हनुमान।

२ भीम।

बातापि, बातापी—स पु. [स. वातापि] १ एक पौराणिक राक्षस जो आतापि का भाई था।

उ०—बातापी गीधू बली प्रगद अरिग प्रशस्ति। इंद्र तणा आयुध नली, हीम दधीचिट अस्थि। —मा. कां. प्र.

२ हरिण, मृग।

बातायन, बातायन—सं पु [सं. बात+अयन] १ खिड़की।

२ झरोखा।

३ रोशनदान।

४ घर के दरवाजे के आगे की पटी हुई जमीन।

५ फर्श, गच।

६ जाली।

[स बात+अयनः] ७ घोड़ा, अश्व।

रू भे —बातायण।

बातायनासन—स पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक।

वि. वि. इसमे बाये पैर की एड़ी दाहिने पैर के जांघ के मूल में लगा कर, घुटना दाहिने पाव के घुटने पर लगाकर खड़ा रहना होता है।

बातायु, बातायू—स. पु. [सं. वातायु] १ हरिण। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ बारहसिंगा।

बातारि—सं. पु. [सं] १ एरंड।

२ अजवायण।

३ बायबडिग।

४ सतावर।

५ बील का पौधा

बाताल—वि.—बातें करने वाला, बातुनी।

बाताळगो—स. पु.—बात चीत, वार्तालाप।

उ०—ताहरां भाटियं कहियो-पांणी पावो, ज्युं बाताळगो करां वैर भाजा। —नैणसी

बाति—सं. स्त्री.—१ घोड़े का मूत्र।

उ०—घोड़ो मोल लेतां डावो पग आघो करै सो न लीजै। जीमणो पग आघो करै सो लीजै। (शुभ) जको घोड़ो मोल लेतां हींसै और खता करै लाद करै सो लीजै। (शुभ) बाति करै सो न लीजै, लाद करै सो सुखदाई। —शा. हो.

रू. भे.—बाती।

बातियो – देखो 'बात्यो' (रू. भे.)

बाती—सं. स्त्री.—१ कच्चे मकानों की छाजन पर लगाया जाने वाला पतली लकड़ियो का बंध।

उ०—बाडै फोग खेतड़ा कढ़ै, सीवां बाड़ बणावता। टापी टाटा टेर बाती, फलसा छांट छवावता। —दसदेव

२ देखो 'बाति' (रू. भे.)

३ देखो 'बाती' (रू. भे.)

बातुनी, बातूंनी—देखो 'बातूनी' (रू. भे.)

बातुल, बातूल—वि. [सं. वातुल] १ उन्मत्त, मस्त। २ पागल। ३ सनकी। ४ वायु से पीड़ित, गाठिया का रोगी।

रू. भे—बातूल।

बातोकळो—१ देखो 'बातूंनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वारतालाप' (रू. भे.)

बातोदर—स पु. [सं.] एक रोग विशेष जिसके कारण हाथ-पांव, नाभि, कांख, पसली पेट, कमर और पीठ में पीड़ा होती है, तथा सूखी खांसी आती है और शरीर भारी रहता है।

उ०—महोदर जलोदर कठोदर बातोदर भगंदर अतिसार। —ब. स.

बातोरमी—सं. स्त्री. [स. वातोर्मी] एक वर्ण वर्त्त जिसमें ग्यारह अक्षर होते है, जिसका क्रम मगण, भगण तगण और अंत में दो गुरु होते हैं।

वातोळ–सं. स्त्री.—रबी की फसल में बोवाई से पहले की जाने वाली खेत की जुताई ।

वातौंण–सं. पु.—बातचीत ।

उ०—बरी सूं वातौंण, कासूं हव भरड़ा करै । इण सात्रव हाथांण, केवा लै जमड़ा कनै । —पा. प्र.

वात्रक–सं. स्त्री.—ईडर राज्य की एक नदी ।

वि. वि.—यह दक्षिण-पूर्व में मेघराज के पास से निकल कर दक्षिण-पश्चिम में जाकर माभम नदी में मिलती है तथा बोथा स्थान पर साबरमती से मिलती है ।

वात्सल्य–सं. पु. [सं. वात्सल्यं] १ संतान के प्रति होने वाला स्नेह, ममत्व । २ प्रेम ।

रू. भे.—वाछळ, वाछल, वाच्छिल, वाच्छिल्य, वाछल, वाछल्य ।

वात्सायन–सं. पु. [सं.] १ कामसूत्र के रचयिता एक ऋषि ।

२ न्याय सूत्रों पर भाष्य रचयिता ।

वात्सायनसास्त्र–सं. पु.—वात्सायन ऋषि द्वारा रचित कामशास्त्र ग्रंथ (व. स.)

वाद–सं. पु. [स.] १ हठ, जिद्द ।

उ०—१ कुंवर मत कर वाद, राव कहै सो सांभळौ ।
—कुंवरसी सांखला री वात

उ०—२ तरै सारै चाकरै नागद्दी रा देवातन री वात राव कनै कही, पण मडळीक मानै नही । वाद लागौ । —नैणसी

उ०—३ दुथणां री जाई नै कितौ कह्यौ के दोनां नै जमाय नै सिधावती वेळा मिळाय दा । चोज राख्यां वातड़ी बिगड़ैला । पण वादीली मांनी ई नीं । भोई कोई वाद है । —फुलवाड़ी

२ वादा, कौल, वचन ।

उ०—वांकिम्म वींद दिन वांकड़ै, वाद न छंडै वंकपण । वांकड़ौ सेर उठै विढण, वदै जीह वंका वयण । —गु. रू. बं.

३ विवाद, प्रतिवाद ।

उ०—१ किसौ वाद रिख सूं करौ, सांभळौ जनक सुगात्र चाप दिखाळौ रांमचंद, भणैं लिखमण भ्रात्त । —राम रासौ

उ०—२ कियौ वाद हाथे जिकां बात इतरी कही । दादि जिण बात री जगत दीधी । —कंवर नरपाळ देवल रौ गीत

४ तर्क, दलील, बहस ।

उ०—साधन काव्य कला सुर साधत, वाद विवाद करै मत वांधत ।
—भ्रग्यात

५ युद्ध, भगड़ा ।

उ०—१ राजा रांणां मेलिया, कीध वकीलां वत्त । वाद वडां सूं छंडियें, एहस आद् मत्त । —गु. रू. बं.

उ०—२ मांणस २ कड़ा मेलनै रार्यासघ नूं कहाडियो—थे नै असैं बेई वाद कियौ छै थे स्यांणा छौ, जसौ मोटियार छै । —नैणसी

६ प्रण, प्रतिज्ञा ।

उ०—१ वीरा रस हेक न मेल्है वाद । निहस्से हेक करै सिहं नाद ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ आप लोगां नै समभावण रौ वाद भगवांन ई करै तौ उण नै हार माननी पड़ैला । —फुलवाड़ी

७ बातचीत, कथन ।

८ वाणी ।

९ शब्द, वचन, वाक्य ।

१० बयान, वर्णन, निरूपण ।

११ टीका, व्याख्या, भाष्य ।

१२ उत्तर ।

१३ अफवाह, किंवदंती ।

१४ तर्क शास्त्र ।

उ०—वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस ।
—धरमपत्र

१५ शास्त्रार्थ ।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद सरवानुवाद पंचावयवि दसावयवि वादीसिउं वाद लिइ छए भासा बोलइ । —व. स.

१६ किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित किया हुआ कोई सिद्धान्त

१७ किसी अभियोग या मुकद्दमें पर विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला मन्तव्य ।

१८ दुराग्रह ।

१९ संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय ।

२०—७२ कलाओं में से एक ।

२१ भैंस के चर्म की पतली रस्सी ।

उ०—लालडो में लूण भराय थांणी में घाल पीलावैला के सूळी चाढ मारैला के माथा रै वाद बंधाय प्रांण काढैला इणरी की ठा' कोनी । —फुलवाड़ी

२२ भेंस का चमड़ा ।

२३ देखो 'वाद्य' (रू. भे.)

रू. भे.—बाद, बाध, वादि, वादी, वाद्य ।

वादक–सं. पु. [सं.] १ गवैया, गायक ।

२ वाद्य बजाने वाला, संगीतज्ञ ।

३ तर्क या बहस करने वाला ।

४ वक्ता ।

रू. भे.—वादक ।

वादण-सं. पु. [सं. वादनं] १ वाद्य बजाने की क्रिया या भाव ।

२ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

३ बाजा, वाद्य ।

४ भैंस के चमड़े की रस्सी जो गाड़ी के हिस्सों को बांधने के काम आती है ।

उ०—दाता भावं दातिया भीजै गज सागाह । थे राणा अवगा थयो **वादण** दो वागाह । —पा. प्र.

५ चाड़ी जाति की स्त्री ।

रू. भे.—वादण ।

वादणौ, वादबौ-क्रि. स. [सं. वादन] १ वाद-विवाद या बहस करना ।

२ वादन करना, बजाना ।

३ युद्ध करना ।

४ देखो 'वाजणौ, वाजबौ' (रू. भे.)

उ० तिम गगन वादि निम निय घरि हि, तांम गन्व पत्तावह चडइ । जिन भद्र सूरि गुरु तणीय, हू न जा कन्नि हि पडई । —जिन भद्र सूरि

वादणहार, हारौ (हारी), **वादणियौ**—वि० ।

वादियोड़ौ, वादियोड़ौ, वाद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वादीजणौ, वादीजबौ—कर्म वा० ।

वादणौ, वादबौ—रू.भे. ।

वादप्रतिवाद-सं. पु.—१ वाद या तर्क से होने वाला परस्पर कथोपकथन, बहस ।

२ वाद विवाद ।

वादरंग-सं. पु. [सं.] १ वट वृक्ष ।

२ अश्वत्थ का वृक्ष, पीपल ।

वादरायण-सं. पु.—वेदव्यास का एक नाम ।

रू. भे.—बादरायण ।

वादरायणि-सं. पु.—१ व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि ।

२ देखो 'वादरायण' (रू. भे.)

वादरौ-सं. स्त्री. चमड़े का तस्मा जो घोड़े के **चारजामे के साथ रकाब** में कसा जाता है ।

वादळ, वादळउ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—१ उडतां जिकां ओप कवि **आंणै** । **अनळ दखिण वादळ** अहिनांणै । —सू. प्र.

उ०—२ एक सोर सारत्ति घोर धूंवा रवि **ढंबर** । **ज्यौं वादळि वादळ** विसाळ ओपै मग अंबर । —रा. रू.

उ०—३ कोट भुरजां रा कोसीस नै **घमळहर घमळागिर पहाड़** ज्यौं **वादळां** रा कोरण सारीखा ऊजळा सौकोट सौं **निजरि आवै** छै । —रा. सा. सं.

वादळांवाळी—देखो 'बादळांवाळी' (रू. भे.)

वादळियौ—देखो 'बादल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सावण आयौ मायडा, कहौ य तो पीवर जाय । पग-पग पांणी पालरौ, **वादळियां** री छांय । —लो. गी.

वादळी—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**आयौ-आयौ सांवण भादवौ, कोई काळी घटा घिर आय** । आज म्हारी **वादळी बरसेगी** । —लो. गी.

वादळौ—१ देखो 'बादळौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसी देख भीवै कह्यौ, क्यूं पांणी छै तो कहौ ज्यूं उजळाई करां । तरै कह्यौ, म्हारा घोड़ा रै हांनै **वादळौ** जळसूं भरियौ छै, सो ल्यौ । —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—२ **अतलस** चरमा ऊमदा, तास **वादळा** त्यार । जसड़ा कसीया जांनीया, कसीयो राजकुमार । —मयगंम दरजी री बात

२ देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

वादविवाद-सं. पु.—१ तर्क वितर्क, बहस ।

उ०—दारू पीलै पदमणी, मत कर **वादविवाद** । दारू में **मारू** दूसरौ, पी कर देख सवाद । —लो. गी.

२ शास्त्रार्थ ।

वादवी-सं. स्त्री. [सं. वाद+वी='वी गति व्याप्ति-प्रजने'] **सेना**, फौज । (अ. मा.)

वादसाह—देखो 'बादसाह' (रू. भे.)

उ०—पछै **वादसाह** जो दिखण में खानजहां लारै बुरहांनपुर गया । —बां. दा. ख्यात

वादसाही—देखो 'बादसाही' (रू. भे.)

वादांम—देखो 'बादाम' (रू. भे.)

वादांमी—देखो 'बादामी' (रू. भे.)

वादानुवाद—देखो 'वादविवाद' (रू. भे.)

वादाळ, वादाळक-सं. पु. [सं. वादाल] १ सहस्रदंष्ट्र नामक **मछली** ।

रू. भे.—बादाळक ।

वावासिर-सं. पु.—वादा, कौल, प्रतिज्ञा के अनुसार।

उ०—रांगा वणवीर रो बडो रजपूत हुवो, जिणनूं कंवर वीरमदे मोळ पातसाह कनै राखनै आप आयो, पछै वीरमदे वावासिर आयो नहीं। —नैणसी

वावि-वि. [सं] १ विद्वान।

२ निपुण, दक्ष।

३ देखो 'वादी' (रू. भे.)

४ देखो 'वाद' (रू. भे.)

उ०—पहुवी पयउ पमांग लखण वर वखांणइं, वावि विवादि विनोदि संक निय चित्त न यांणइं। —जिनभद्र सूरि

वावित्र-सं. स्त्री.—१ चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ अर घणा महोच्छत्र सेती गीत वावित्र, नाटिक, मंगळाचार करि दूलह-दुलहणि रा सोहला गाईजता बीकानेर पधारिया छै। —द. वि.

उ०—२ जिम नरेंद्र माहे रांम, जिम रूपवंत माहे कांम, जिम स्त्री माहै रंभा जिम वावित्र माहे भमा। —वाग्विलास

वादियोड़ो-भू. का. कृ.—१ वाद-विवाद या बहस किया हुआ. २ वादन किया हुआ, बजाया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ।

४ देखो 'वाजियोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. वादियोड़ी)

वादियौ-सं. पु.—सोने-चांदी के आभूषणों पर चमक (पालिस) करने का एक ओजार विशेष।

वावीसिउ-सं. पु.—छः प्रकार के तर्कों में से एक।

उ०—छ तरकि चेष्टानुवाद, अरथानुवाद, सरवानुवाद, पंचावयवि, दसावयवि, वादीसिउं वाद लिइ··· —व. स.

वावी—देखो 'बादी' (रू. भे.)

उ०—१ एरिस जि केवी भुवणिहि भलइ वावी मयगळ गउयडइ। जिनभद्र सूरि केसरि उरिहि त धुज्जवि धरणिहि पडइं। —जिनभद्र सूरि

उ०—२ तिण भाग री कांई देखा अमरसिहजी इसे वावी अहंकारी हुवा। —ठा. राजसिंह री वारता

उ०—३ सो सूरेजी रो बेटो वेरसी वरस आठ रो खीवे री बेटो जागर बरस दस रो सो सयांणो अर वेरसी रो सुभाव वावी, रीसट सो सारा जांणे। —सूरे खीवे कांधलोत री बात

वावीकर—देखो 'बादीकर' (रू. भे.)

वावीगर—देखो 'बाजीगर' (रू. भे.)

उ०—जरमनी जोधार मिटावै मारका। ज्यूं वावीगर वाग अछत्तां आरखा। —किसोरदांन बारहठ

वावीलो—देखो 'बादीलो' (रू. भे.)

उ०—१ पग-पग कांटा पाथरै, वावीलो बनराव। होणीं ज्यूं ह्यूं होवसी, दियै न होणो दाव। —बां. दा.

उ०—२ दुथणी री जाई नै कितो कह्यो के दोनां नै जगाय सिधावती वेळा मिळाय दां। चोज राख्यां बातड़ी बिगड़ैला। पण वावीली मांनी ई नी। ओई कोई वाद है। —फुलवाड़ी

(स्त्री. वादीली)

वावीबाय-सं. पु. [स. वातविकार] ऊटों का एक रोग जिसमें उनका चलना फिरना बंद हो जाता है।

वावू - देखो 'बाधु' (रू. भे.)

वावूमाळा—देखो 'विद्युन्माला' (रू. भे.)

वावे-क्रि. वि. [सं. वाद] शास्त्रार्थ में, विवाद में।

उ०—ब्राह्मण वादै हराविया··· । —धरमपत्र

वावोधुनि—देखो 'वेदध्वनी' (रू. भे.)

वावोवदि—देखो 'वदोवदि' (रू. भे.)

उ०—इसो आणंद देखि कै कटक माहै यै वधाऊहार आगै वावोवादि दौड्या। —वेलि टी.

वावोवाव—देखो 'बादोबाद' (रू. भे.)

वावौ-सं. पु. [फा. वादः] १ किसी कार्य के लिये निश्चित किया जाने वाला समय, नियत समय।

२ किसी कार्य को पूरा करने के लिए किया जाने वाला संकल्प, प्रण, प्रतिज्ञा।

उ०—जो इण भाति नहीं करै छै, सो वावौ खोटो छै। —नी. प्र.

३ कौल, वचन, इकरार।

रू. भे.—बादो, वाइदो, वायदो।

वाद्य-सं. पु. [सं.] १ वाद्ययंत्र, बाजा। (संगीत)

२ उक्त यंत्र की ध्वनि।

३ बहोत्तर कलाओं में से एक।

४ चौसठ कलाओं में से एक।

रू. भे.—वाद।

वाद्यक—देखो 'वादक' (रू. भे.)

वाद्यकळा-सं. स्त्री. [सं. वाद्यकला] वाद्य बजाने की कला। (संगीत) (व. स.)

वाद्ययंत्र-सं. पु. [सं] वह यन्त्र जिसको विविध तरह से बजाकर विविध प्रकार की ध्वनियां निकाली जा सकती है, साज-बाज, बाजा।

रू. भे.—बाजंत्र, बाजत्र, बाजन, बाजित्र, बादन, बादित्र, बाद्यंत, बाद्यंत्र, बजत्र, बजित्र, बजित्र, बाजन, बाजत्र, बाजित्र, बाजत्र, बाजित्र, बादित्र।

बाघ–वि.—१ विशेष, अधिक।

उ०—बीमा सात नगद बांटे बरण, बळे एक रिपिया दस बाघ। बखराव दमरावं दोऊं, प्रगफट खत मांमलो प्रमाघ। —द. दा.

२ बढ़कर, बढ़ती हुई।

उ०—महाराज कुमार आप जे फरमावै या तीसूं सौ विस्वा बाघ नीकळी। —कुंवरसी सांखला री वारता

३ देखो 'बाद' (रू. भे.)

उ०—तरै कह्यो—राज! आदमियां नूं हुकम करो, हूं आयसो मिजोय चौगड़नै बाघ कढ़ाईस, तिण हेठै आवसी तितरी लेईस। —नैणसी

बाघक–वि.—१ वृद्धि कर्त्ता।

२ बढ़िया।

३ देखो 'बाधक' (रू. भे.)

बाघण–स. स्त्री.—१ वृद्धि होने की क्रिया या भाव।

२ वृद्धि होने की अवस्था या दशा।

३ वृद्धि कारक।

बाघणो, बाघबो—१ देखो 'बधणो, बधबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ बयणे नेह बधइ नही रे लो, नयणे बाधइ नेह रे सनेही। —वि. कु.

उ०—२ क्रोध करइ कर कूटना, कायर करडइ मुंख। विधिविध जाइ बाघता, जाणे हनुमत-पुंछ। —मा. कां. प्र.

उ०—३ मारुबं रावता गाजता मेंगला, बाधियो वाद सूं इंद्र रो बादळां। —गु. रू. बं.

उ०—४ विरहानल बाध्यो गोविंद। —धरम पत्र

२ देखो 'बांधणो, बांधबो' (रू. भे.)

बाघणहार, हारो (हारी), बाघणियो वि०।

बाधिग्रोड़ो, बाधियोड़ो, बाध्योड़ो—भू० का० कृ०।

बाघोजणो, बाघोजबो—भाव वा०।

बाघरी–स. स्त्री.—भैंस के चमड़े की डोरी।

उ०—ग्रागै जायनै देखै तो ऊदोजी पोढिया छै। ताहरां मेलै जायनै हथियारा रा बाघरयां वाढी। सेजबंध वाढिया। ग्रस्त्री री चोटी वाढी। —नैणसी

बाधांवणो—देखो 'बधावो' (रू. भे.)

बाधांमणो, बाधांमबो—देखो 'बधाणो, बधावो' (रू. भे.)

बाधांमणहार, हारो (हारी), बाधांमणियो—वि०।

बाधांमिग्रोड़ो, बाधांमियोड़ो, बाधांम्योड़ो—भू० का० कृ०।

बाधांमीजणो, बाधांमीजबो—कर्म वा०।

बाधांमियोड़ो—देखो 'बधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बाधांमियोड़ी)

बाधा—देखो 'बाघा' (रू. भे.)

बाधाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

उ०—सहिए साहिब ग्राविस्यइ, मो मन हुई सुजांण। ग्रागम बाधाऊ हुया, ग्रग तणा ग्रहिनांण। —ढो. मा.

बाधारणो, बाधारबो—देखो 'बधारणो, बधारबो' (रू. भे.)

उ०—१ मोहियो 'ग्रभो' इण विध सकाज, रघुवंस उजागर महाराज। बाधारण हिंदुसथान वांन, 'ग्रभमाल' जोड़ नह भूप ग्रांन। —सू. प्र.

उ०—२ ग्राभा रूप जोम ऊफांणिक, बणियो ग्रनंग दूसरै वांणिक। वीर तदिन कीरति बाधारी, भरत साख वधियो कुळ भारी। —सू. प्र.

उ०—३ म्हारो सुजस ग्रमर 'करणावत', वासुर जग वह हुवै वितीत। बाधारियो पाघड़ी बिढतै, चैराड़ियो नहीं वडचीत। —द. दा.

उ०—४ सदा सोह चाडे समांना मणो, ग्रनमादं ग्रणो जगमा दान। तर्प देस पत्ती तणो मूं ला मारणो वंस बाधारणो बांन। —ल. पि.

बाधारणहार, हारो (हारी), बाधारणियो—वि०।

बाधारिग्रोड़ो, बाधारियोड़ो, बाधारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बाधारीजणो, बाधारीजबो—कर्म वा०।

बाधारियोड़ो—देखो 'बधारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बाधारियोड़ी)

बाधारो—देखो 'बधारो' (रू. भे.)

उ०—रांम राज जोधपुर, सहू हरचंद वारो। मास पंच खट मास, साह ग्रापै बाधारो। —गु. रू. बं.

बाधावणो, बाधावबो—देखो 'बधाणो, बधावो' (रू. भे.)

उ०—१ गज बंध बाधाविजे, मोती उच्छाळेय। लूंण उतारै राह धी, चढियै ग्रट्टाळेय। —गु. रू. बं.

उ०—२ मथाण्यो भाग विन क्रपा फुरमावियो, तोर बाधावियो सुकव तांई। —खेतसी बारहठ

बाधावणहार, हारो (हारी), बाधावणियो—वि०।

बाधाविग्रोड़ो, बाधावियोड़ो, बाधाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बाधावीजणो, बाधावीजबो—कर्म वा०।

बाधाबियोड़ो—देखो 'बधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बाधाबियोड़ी)

बाधि—१ देखो 'बद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

३ देखो 'बाधौ' (पु)

बाधियोड़ो—१ देखो 'बधियोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. बाधियोड़ी)

बाधी—१ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

२ देखो 'बद्धी' (रू. भे.)

३ देखो "बाधौ' (पु०)।

बाधु, बाधू—देखो 'बाधौ' (रू. भे.)

उ०—१ वर्ण रूप वृंदावनं ओप बाधू, सदा सोवतं देवतं वृंद साधू। तरां भार अट्ठार नूं भार तैसो, ग्रनेकां विराजै ब्रखां रूप ऐसो। —रा. रू.

उ०—२ रिधू लाज 'पाता' 'भदा' काजि 'रूपा'। इकां एक बाधू मनूपं अनूपा। —रा. रू.

बाधैपो—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

बाधो—देखो 'बाधौ' (रू. भे.)

उ०—नखत परमांण बाखांण बाधो नरै। ग्रावगो भूंफ री भार भुजि ग्रापरै। —हा. झा.

(स्त्री. बाधि, बाधी)

बापक—देखो 'व्यापक' (रू. भे)

बापणी—वि. स्त्री [स. व्यांपनं] १ भीतर-बाहर, सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति।

उ०—देवी मंत्र मूळं देवी बीजवाळा, देवी बापणी सब्ब लीला विसाळा। —देवि

२ व्यापने वाली।

बापणौ, बापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

बापणहार, हारो (हारी), बापणियौ—वि०।

बापियोड़ो, बापियोड़ो, बाप्योड़ो—भू० का० कृ०।

बापीजणौ, बापीजबौ—भाव वा०।

बापरणौ, बापरबौ—कि. स. [स. व्याप्तरणम्] १ उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम में लेना। (उ. र.)

उ०—१ दांतां लूण ज बापरै, भोजन ऊनो खाय। डावें पसवाड़ें सूवें, जिण घर वेद न जाय। —अज्ञात

उ०—२ गोडीजी इस्ट सोढां रै जिण सूं बीरवाव कोट में मद-मांस बापरै नहीं। —बां. दा. ख्यात

२ लेकर ग्राना, लाना।

उ०—ग्रमारि करावी, सरवत्र मंगलाचार दीजइ, तूर वाजइ, ग्रक्षतपात्र सांचरइ, तंबोळ बापरइ, ग्ररथ व्यय नो सभाल नहीं। —व.स

क्रि. ग्र.—३ व्याप्त होना, फैलाना।

उ०—१ के रोळो बापरियो, वा'वा' रोळो बापरियो। देस में ग्रंग्रेज ग्रायो रे, के रोळो बापरियो। —लो. गी.

उ०—२ गोरसांत भोजन, गजांत दांन, बांधवांत वियोग, विपदांत मैत्री गजांत लक्ष्मी, बापरांत दरिद्र नायकांत युद्ध। —व. स.

४ ग्रागमन होना, ग्राना।

उ०—१ जग में ऊसरियो बापरियो जैंरो। वाल्हा बीछोडण बापरियो वैरी। —ऊ. का.

उ०—२ ग्रति विचक्षण, ग्रम्नायक बापरिउ, करण्ण वारनइ वलइ कुसलोउ वैरजन ग्रनाकलनीउ···। —व. स.

५ उदय होना, पैदा होना।

उ०—भटियांणी री निरोगी देह में दिनां परवांण केई केई मांद-गियां बापरणी। —फुलवाड़ी

६ खुशी या दुख का संचार होना, अनुभूति होना।

उ०—जीव में सोराई बापरी तो वा बापरी! म्हारी बेटी रो नांव परमेस्वर सूं कोई कमती माया थोड़ी ई है। —फुलवाड़ी

७ शुरू होना, प्रारम्भ होना।

उ०—निहसंति जोध नत्रोठि। रिण रूक बापरि रीठ। बे निहस सेन निसंक। किरि रांम रांमण लंक। —गु. रू. बं.

बापरणहार, हारो (हारी), बापरणियौ—वि०।

बापरिग्रोड़ो, बापरियोड़ो, बापरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बापरीजणौ, बापरीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

बापरणौ, बापरबौ, बावरणौ, बावरबौ, वावरणौ, वावरबौ—रू.भे.

बापरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ उपयोग में लाया हुग्रा, इस्तेमाल किया हुग्रा, काम में लाया हुग्रा. २ लेकर ग्राया हुग्रा, लाया हुग्रा. ३ व्याप्त हुवा हुग्रा, फैला हुग्रा. ४ ग्रागमन हुवा हुग्रा, ग्राया हुग्रा. ५ उदय हुवा हुग्रा, पैदा हुवा हुग्रा. ६ खुशी या दुख का संचार हुवा हुग्रा. ७ शुरू या प्रारम्भ हुवा हुग्रा।

(स्त्री. बापरियोड़ी)

बापस—वि. [फा.] १ लौटा हुग्रा, प्रत्यागत।

२ लौटाया हुग्रा, फेरा हुग्रा, प्रतिदत्त।

३ छिपा हुग्रा।

क्रि. वि.—४ पुनः, दुबारा।

बापसी—सं. स्त्री. [फा.] १ लौटने या बापस ग्राने की क्रिया या भाव।

२ लौटाने या फेरने की क्रिया या भाव ।

वि.—लौटने वाला ।

बापार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—पह गहणा लीयं दीयै नह पाचा, सत्र खत्त नह दाखै ग्रह सार । 'मोड' तणा बापार मारखो, पळ मांडीयो 'ग्रखै' वीपार ।
—दुरसो ग्राढ़ो

बापारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—१ लिखमी रा लाडिला लोक बडा बापारी वहवारिया सोदागर महराममद साहूकार घणा मुख चैन सूं वसै छै ।
—रा. मा. स.

उ०—२ जु आदमी खबर दी–जु बापारी लोक छै । पंडै जाय छै ।
—नैणसी

बापि, बापिका—देखो 'वापी' (रू. भे.)

बापियोड़ो—देखो 'व्यापियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बापियोड़ी)

बापी–सं. स्त्री. [स.] एक चौड़ा कुआ, कुण्ड या जलाशय, जिसमें पानी तक पहुचने के लिये सीढ़ियां बनी रहती है । बावली ।

उ०—१ वापिका बापी पुसकरिणी क्रीड़ातड़ाग सरोवर ।
—व. स.

उ०—२ पीयार प्रिथी पुड उद्धरै, मर बापी उद्धरि वरण । 'गजसाह' 'तागे' हर ऊठियो, पतिसाहा छळ उधरण ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—बापि, बापिका, बापी, बिग्रापी, वाइ, वापि, वापिका, वाय, वाय, वावि, वावी, वावीय, वाव्य विग्रापी ।

ग्रल्पा.—बावड़ी, बावड़ी, वावड़ी, वावळि, वावळी ।

बाफणी—देखो 'भापणी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

बाफणी, बाफबी—देखो 'बाफणी, बाफबी' (रू. भे.)

बाफणहार, हारो (हारी), बाफणियो—वि० ।

बाफियोड़ो, बाफियोड़ी, बाफ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बाफीजणो, बाफीजबो—कर्म वा० ।

बाफतो—देखो 'बाफतो' (रू. भे.)

उ० तद नवाब हुकम दियो—जावो, तोसाखानं सै बाफता लावो ।
—पदमसिंह जी री वात

बाफियोड़ो—देखो 'बाफियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बाफियोड़ी)

बामराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू. भे.)

उ०—कावडी नै लुगा में वगाय वा सिघणी ज्यूं रीस में बामराभूत हियोड़ी बारै निकळगी ।
—फुलवाड़ी

बाभी—देखो 'भाभी' (रू. भे.)

उ०—पड़ै न पथ में विघन बिलखती बाभी मिळसी । गिणती दुख रा दिवस जीव रै जतनां घुळती ।
—मेघ

बाभीजी, बाभीसा—देखो 'भाभीजी' (रू. भे.)

उ०—दोरांणी कहै बाभीजी ग्राज पुरस ग्रांपांरा घरै नहीं नै वैरीयां री नगारी सांमें कांकड़ वाजती सुणीजै छै । —वी. स. टी.

बाभो, बाभोजी—देखो 'भाभोजी' (रू. भे.)

उ०—१ तद राव सूजै ग्रापरी माजी नूं कयो, 'मांजी थे बाभेजी वीकैजी नं जावो, नै थां गयां वात सलटसी ।
—द. दा.

उ०—२ तीन चार वळा ग्राडो ग्रचेड़ियो, पण ग्रागळ नीं खुली नवी मां रै साथै बाभोजी वंतळ करता व्हैला, ग्रा सोच थोड़ी ताळ ताईं बोला बोला बारै ऊभा रिह्या ।
—फुलवाड़ी

बाभोसा—देखो 'भाभोसा' (रू. भे.)

उ०—कह्यौ—के बाभोसा नै गाय चींथ न्हाकिया, माथै बैठगी । हाडका कुळै ।
—फुलवाड़ी

बायंगणनेत्र–स. पु.—एक वस्त्र विशेष । (व. स.)

बाय–सं. स्त्री. [फा. वाय:] १ मनोकामना, मुराद ।

२ प्रतिदिन ली जाने वाली ग्रफीम की खुराक, मात्रा ।

[सं. वाय:] ३ बुनन, बुनावट ।

४ सिलाई ।

[सं. वायु:] ५ पश्चिमोत्तर कोण, वायव्य कोण ।

[सं. वचन] ६ वाणी, वचन ।

उ०—१ भगवत बोल्या इणड़ी बाय । देवांगुविया जिम सुख थाय ।
—जयवांणी

उ०—२ ग्राय माता नै इम कहै, मैं सुण्या वीर ना बाय । घन ग्रतारथ तुम पुता ! इम बोली छै माय ।
—जयवांणी

७ देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—पांणी री गांव रै खैड़ै दुख हीज छै, मुहै खारो कूवो सहर मे तेजसी री बाय ऊपर छै, तिण तीण ६ वहै छै ।
—नैणसी

८ देखो 'वायु' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

उ०—१ ऊवां मांहि मिळै 'जैमाह' ग्राय । वैसदर जांणिक भोळ बाय ।
—सू. प्र.

उ०—२ दिन ऊनाळै वोभर भट्ठी, घोरां मौज प्रभात री । कासमीर री ठंड वखेरै, बाय ठगोरी रात री ।
—दसदेव

उ०—३ सुरै बाय वडो लघुनीत तणी । संग्या कुंगुलिया दोस सुंणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनो नाखै चांबडिया ।
—ग्र. स्त.

उ०—४ वायव कूंणं वण रह्यो, पुरी बाय की जांण । ग्रति प्रचड सोभा ग्रधिक, को कर सकै बखांण ।
—गजउद्धार

उ०—५ पंजरि पावक परजळइ, जिम जिम नाखइ बाय । मूंधि न जांणउ एतलुं, तिम तिम अधिकु थाय । —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बाय ।

वायइ—सं. पु. [सं. वातिः] १ सूर्य । २ चंद्रमा । (ड. र.)

३ देखो 'वात' (रू. भे.)

वायक—सं. पु. [सं. वायकः] १ जुलाहा ।

२ ढेर, संग्रह ।

३ समुदाय ।

४ संदेश, खबर, समाचार ।

वि. [सं. वाचकः] १ संदेशा लाने वाला, सूचना देने वाला दूत ।

२ कहने वाला, वक्ता, व्याख्याता ।

३ पढ़ने वाला, पाठक ।

४ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)

उ०—१ **वायक** सतगुर वेद रौ, घणौ करै हित घोस । रे ! इण लालच रोग रौ, सद औसद संतोस । —बां. दा.

उ०—२ अदु **वायक** बोध दियै महिला, प्रिति लागन काळ कियै पहिला । —ऊ का.

उ०—३ बह **वायक** सिंघ जिम बोलंता । तायक भुजां गयण तोलंता । —सू. प्र.

उ०—४ महाराजा रघुवंसमण सुज रांवण समथ रा धनु सर पांण धारै । **वायक** सत सीतावरण न्रप नायक रघुनाथ तूं संतां तारै । —र. ज. प्र.

रू. भे.—वाइक, बाएक, बायक, वाइक, वाएक ।

वायकचर—देखो 'वाइकचर' (रू. भे.) (अ. मा.)

वायकुंडौ, वायकूंडौ—सं पु. [सं वात कुण्ड] १ चन्द्रमा के चारों ओर फीका वर्ण युक्त विशाल वृत्त जो प्रचण्ड वायु का सूचक माना जाता है ।

वि. वि.—इस वृत्त में तारा नहीं होता है ।

२ सूर्य के चारों ओर कभी कभी होने वाला वृत्ताकार घेरा जो, शकुन शास्त्र के अनुसार, वर्षा का अभाव सूचित करता है ।

उ०—कोपै कौल तुंडा कासबांणी छाय **वायकूंडा**, गं अठांणी भुसंडा भमाय भूलै गाज । रथां गेण देव रंभां अथोक अचूंडा रोकै, राजा राड़ीगारौ ऊंडा झोकै बाजराज ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

रू. भे.—वावकूडियौ, वावकूंडौ ।

वायड़—देखो 'बायड़' (रू. भे.)

वायड़ियौ—देखो 'बायड़ियौ' (रू. भे.)

वायड़ौ—सं. पु. [सं. वात-कारक, वातल] १ पागल कुत्ता ।

२ उक्त कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग ।

३ दीवाना, पागल ।

४ वात-विकार से पीड़ित ।

५ ज्वर-प्रलाप ।

६ वात-कारक ।

कहा.—किणी रे वेंगण वायड़ा, किणी रे बेंगन पच्च । किणी रे चढे झांफरौ, किणी रे चढे मच्च । —अग्यात

रू. भे.—बायड़ौ, बायड़ै, बायड़ौ, वाइड़ौ, वाईदड़ौ ।

वायज्वर—देखो 'वातज्वर' (रू. भे.)

वायण, वायणि, वायणी—सं. स्त्री.—१ दुर्गा या देवी का एक नाम ।

उ०—साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि । समळ महा सिध सकति, सकति **वायणी** सिकोतरि । —सू. प्र.

२ गहलोतों की कुल देवी ।

उ०—गहलोतां रै **वायण** चुंडाय दीप देवी, तिलंगापुर पाटण सू उठिया । —बां. दा. ख्यात

३ वाद्य बजाने वाली ।

उ०—पोलि परठिया पोलीया, मांहि माधव बंभ । आगळि नाचइ उरवसी, गायणि **वायणि** रंभ । —मा. कां. प्र.

वायणौ—देखो 'बाजणौ' (रू. भे.)

उ०—समुद्र खारउ, बाउल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ **वायणउ** जन बोलणउ, सुणह भपणउ, ससउ, नासणउ रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ...। —व. स.

(स्त्री. वायणी)

वायणौ, वायबौ—१ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गुण कथीइ गाईइ सुसर, **वाईइ** चंग म्रदंग । पात्र पचारा नाचतां, अहनिसि इणी परि रंग । —मा. कां. प्र.

उ०—२ सेमनाग राज छत्र धरइ, गंगा यमुना चमर ढालइं, ब्रह-स्पति घडिग्रालउं **वायइ**, सुक्र मंत्रि बइसइ...। —व. स.

उ०—३ तीन गढ जीत मन मींत चौथै मिल्या, पांच पचीस मिळ एक पाया । दास हरिरांम कहै राज अणभै भया, नाद अनहद नीसांण वाया । —अनुभववांणी

२ देखो बावणौ, बावबौ' (रू; भे.)

वायणहार, हारौ (हारी), वायणियौ—वि० ।

वायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाईजणौ, वाईजबौ—कर्म वा० ।

वायदौ—देखो 'वादौ' (रू. भे.)

उ०—१ यमन रौ वादसाह मोनूं माल मतौ गांव देणे रौ घणौ **वायदौ** दियौ छै । —नी. प्र.

उ०—२ बायवो पाळणो प्रो छै न्याय गरीब री पन्याई करा मूं मेवै । —नी. प्र.

बायनंद—सं. पु. [सं. वायु + नंदन] १ पवन पुत्र हनुमान ।

उ०—नागंम पनगा सिरै, जनटीयो बायनंद, चवा गोरखेस, ओतारयां सिरै चीन, ऊददां लीरोद सिरै जुधां गुडाकेस प्रांगै । ओनै बाग न्याग सिरै ऊदारो पदीन ।

—ठाकुर सावतसींग नीबाज रो गीत

२ पांडुपुत्र भीम ।

रू. भे.—बायनंद ।

बायपुरी—सं. स्त्री. [सं. वायु+पुरी] पवन देव की पुरी ।

उ०—जोजन प्रठी हजार में, बायपुरी विसतार । सो सब ही कंचन गई, सोभन प्रधिक प्रपार । —गजउद्धार

बायब—देखो 'वायव्य' (रू. भे.) (प्र. मा.)

उ०—कोस ६ बायब कूण माहै वडोवास भेळो छै । जाट बिसनोई बाणीया वसै । —नैणसी

बायबिड़ंग, बायबिडंग—देखो 'बायबिड़ंग' (रू. भे.)

बायर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—तरै भीयो बोल्यो, म्हारा देस एक कुरीत छै । कोई ठावो गांमेती बाणीयो तथा घररो धणी रजपूत मरै, मोटियार कै कांम आवै, तो उण री बायर गाघरांणी करै ।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सूरा नूर दरस्सिया, तोलै सेल करग्ग । बायर ज्यौं लग्गा विग्रह, कायर प्राडू मग्ग । —रा. रू.

बा'यर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—पछ मोहतो रायमल जाय वीरमदे रै ढोलियै प्रदक्षण देय नै बा'यर प्रायो । —द. दा.

बायरियो—स. पु.—१ वायु सम्बन्धी एक लोक गीत ।

२ लड़की को विदा करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

३ देखो 'बायरो' (प्रल्पा., रू. भे.)

बायरी—सं. स्त्री.—देखो 'बायरो' (प्रल्पा., रू. भे.)

बायरो—देखो 'बायरो' (रू. भे.)

उ०—१ रात रा ई बायरो बाजतो तो करसा चूकता कोयनी, कारण के सियाळा रो दिन तो पीलू जितोक व्है ।

—रातवासो

उ०—२ ताहरा राजा ताळो उखेलियो । देखै तो माहै मोर छै । मोर कह्यो धन्य राजा तूं मोनुं संसार रो बायरो लगायो ।

—चौबोली

बाय'रो—देखो 'बा'यरो' (रू. भे.)

बायल—सं. स्त्री.—१ स्त्रियों के पावों में पहनने की चूड़ी जिसके नीचे घुंघरिया या मनका लगे हुए होते हैं ।

२ बढ़िया किस्म का एक बारीक वस्त्र ।

प्रल्पा.—बायली ।

३ हल द्वारा बोया हुआ ग्वार आदि का खेत ।

रू. भे.—वायल, बोयल ।

बायव—देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

उ०—बायव कूंणं वण रही, पुरी वाय की जांण । प्रति प्रचंड सोभा प्रधिक, को कर सकै बखाण । —गजउद्धार

बायबिड़ंग, बायबिडंग—देखो 'बायबिड़ंग' (रू. भे.)

बायवी—स. स्त्री.—१ एक महाविद्या ।

उ०—प्राकास गामिनी सोदामिनी कांमगामिनी कांमसामिनी भुवनक्षोभिनी कांमरूपिणी मन स्तंभिनी जलस्तभिनी प्राग्नेयी बायवी बरसणी कोमारी···। —व. स.

२ वायव्य कोण सम्बन्धी ।

३ देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

बायव्य—स. पु. [सं] १ उत्तर-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण ।

वि.—वायु सम्बन्धी ।

रू. भे.—बायब, बायव, बायवी ।

बायस—सं. पु. [सं. वायस:] १ कौआ, काक ।

उ०—१ बील्हा बायस विंझलां, प्रागलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ वागली, ते ऊंधी टंगाय । —मा. कां. प्र.

उ०—२ बायस बीजउ नांम ते, प्रागळि लल्लउ ठवइ । जइ तूं हुई सुजांण, तउ तूं वहिलउ मोकळे । —ढो. मा.

२ प्रगरू का वृक्ष ।

३ तारपीन ।

४ कौर, निवाला ।

५ सूर्य या चन्द्र ग्रहण ।

६ पकड़ या गिरफ्त ।

रू. भे.—बइस, वाइस, बायस, वाइस ।

प्रल्पा.—वायसड़ो ।

बायसड़ो—देखो वायस' (प्रल्पा., रू. भे.)

उ०—उड बायसड़ा म्हारा पी'यर जा नूंत पि'यर रा मातवी जे ।

—लो. गी.

बायससाम्रव–सं. पु. [सं. वायसः+शाम्रवः] जल कौआ, जल काक ।

बायसूळ–सं. पु. [सं. वायु+शूल] १ घोड़ों का एक रोग जिसमें उनका मलमूत्र रुक जाता है । (शा. हो.)

२ वायु के विकार से शरीर में उत्पन्न पीड़ा

बाया—१ देखो 'बाचा' (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ साचा सबद एक है सोई, दूजां काम सरै नहीं कोई । सो मैं सबद गरु तें पाया, फुरै मंत्र इसरो बाया । —अनुभववांणी

उ०—२ मुनिवर मिलि जिणंद मैं आया, हाथ जोडी नै बोलै बाया । प्रभु ! तमारी आग्या थाय, तो म्हां द्वारिका में गोचरी जाय । —जयवांणी

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सेलि वलइ जल ऊछलइ, सायर छडइ सीम । बाया विण वाजइ सबद, महाभयंकर भीम । —मा. कां. प्र.

बायार—सं. पु. [सं. वातार] वरुण । (अ. मा.)

बायु—सं. पु. [सं.] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव ।

२ पवन, हवा, वात । (डिं. नां. मा.)

उ०—धरणी वीर तेज वायु नभ, सबै सता प्रकासी । निराकार आकार में पूरण, नहिं आवै नहीं जासी । —श्रीसुखरांम जी महाराज

३ त्रिदोषों में से एक ।

उ०—१२ ज्वर, १३ संनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात, ८४ वायु, १६ महावायु दोस, ४५ खाधाविकार, १०८ कोडि ।

रू. भे.—बाव, बाय, वायु, वायू, वा, वाइ, वाई, वाउ, वाय, वाया, वायू, वावू । —व. स.

बायुकाय—देखो 'वाउकाय' (रू. भे.)

बायुकुमार–सं. पु. [सं.]—१ भुवनपति जाति के देव (जैन)

२ हनुमान ।

३ भीम ।

बायुघ्न—सं. पु. [सं.] गुग्गल, गुगुल ।

बायुदेवता—सं. पु. [सं. वायु देव] पवन देव ।

उ०—नवग्रह खाट तणइ पाइ बांधा, वायुदेवता अंगणइ बुहारइ । —व. स.

रू. भे.—वाउदेवता ।

बायुमंडळ–सं. पु. [सं. वायुमंडल] पृथ्वी के चारों ओर का वाष्पीय वायुमंडल आवरण या घेरा, वातावरण, आब हवा, क्लाईमेट ।

रू. भे—वाउमंडळ ।

बायुवाह—सं पु. [सं.] धूंआ ।

रू. भे.—वायुवाह, वायुवाह ।

बायुविरोधी–सं. पु.— गरुड़ । (ना. डि. को.)

बायुसखा—सं. पु. [सं. वायु–सखः] अग्नि, आग ।

रू. भे.—वायुसखा, वायूसखा ।

बायुसुत–सं. पु. [सं.] १ हनुमान ।

२ भीम ।

रू. भे.—बायसुत, वायुसुत ।

बायुहन–सं. पु [सं. वायुघ्न] मंकण ऋषि के पुत्र, एक ऋषि ।

बायू—देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—१ इसडो छै आछो आयू, ज्यू ओस खिरै वागै वायू —जयवांणी

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति प्रोखम रित माहै पवन पावक समान वाजियो छै । प्रथी अप नै वायू अकास च्यारि तत पांचमं अगनी । —रा. सा. सं.

बायेरो—१ देखो 'बायरो' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

उ०—१ बीभणा सूं बायेरो लोजै छै सू किण आंतरा बीभणा छै ? लाहोर रा कियोड़ा छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ कह्यो-भलो हो राजा मांनधाता थारै बिना संसार रो बायेरो कुण दिखावै । —चौबोली

(स्त्री. बायेली)

बायेलो—देखो 'भायेलो' (रू. भे.)

उ०—नैणां रो सिणगार कागळ कूंपळी में रैगो रै, बाळापण रो बायेलो, पीवर में रैगो रे परो बुलावो । —लो. गी.

बायोड़ो—१ देखो 'बाजियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'बावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बायोड़ी)

बायो–वि. [सं. वातल] १ उन्मत्त, मस्त ।

उ०—इण पर तहवरखांन अखायो । विचित्र हुवो लड़तो रस बायो । —रा. रू.

२ बावरा, पागल ।

बारंग–सं स्त्री [स बारंगः] १ तलवार की मूठ,

२ छुरी का दस्ता ।

सं. पु.—३ एक वृक्ष विशेष, जो तणछ से मिलता-जुलता होता है जिसके पत्ते न तो अधिक गोल होते हैं न लम्बे । मध्यम दर्जे का वृक्ष ।

४ देखो 'वारंगना' (रू. भे.)

उ०—१ झमककत बारंग फेर झुकंत, हुबै इम चूक मुनेस हसंत । —सू. प्र.

उ०—२ वर अनेक बारंग पांच वंदे सुरपत्ती । पावण करि पारंग त्रिपुर नारग सकत्ती । —सू. प्र.

उ०—३ बजि अदग घग रग उपग बारंग । अनंग छबि चंग उमंग धग धग । —सू. प्र.

उ०—४ अद बारंग कहै 'जोगावत' यका विहंड सुरलोक गयौ । मह 'जोधा' 'मलखा' सुमाला, कमधा कुळ ऊजळौ कियौ ।
—हरिनाथ जोधा री गीत

बारंगना, बारंगा-सं. स्त्री [सं. वारगना] १ स्त्री, नारी, औरत । (अ मा)

२ अप्सरा, परी ।

उ०—१ बारंगना रही बारै वत, अत स्यामावत्त तणै उमाह । पिटि सुरमार्गे बीद परणियौ, बळि कुंआरणं हुवौ बिमाह ।
—उदैभांण राठौड़ री गीत

उ०—२ उधम होय इचरज घर अमुरां । धम धम तम्बत जड़ाली धार । घम घम विक्रम धरि नरणा धाटा बारगना झमझम जुध बार । —लूणकरण

उ०—हिंदवा राव हयवाह अनरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां, गई स्रग बिवाण बेस दूद भागळी, वुही बारंगना विना वींदां ।
—महाराज जसवंतसिंह री गीत

३ देव कन्या ।

४ गणिका, नर्तकी ।

५ वेश्या, रण्डी ।

रू. भे.—बरगा, बरांगना, बारंग बारंगना, बारंगा, बारांगना, बरंगन, बारग, बारागना ।

बारट-स.पु [अं.] १ आज्ञा-पत्र, अधिकार-पत्र ।

२ अदालत द्वारा पुलिस या किसी राज्य कर्मचारी को दिया जाने वाला वह अधिकार-पत्र जिससे किसी को गिरफ्तार किया जा सके या किसी की तलासी ली जासके ।

३ साधारण माने मे किसी को गिरफ्तार करने के लिये निकाली जाने वाली अदालती सूचना ।

बारंटरिहाई-स पु. [अं. वारट+फा. रिहाई] गिरफ्तार व्यक्ति या बंदी को मुक्त करने के लिये दिया जाने वाला अदालती-आज्ञा-पत्र ।

बारंबार—देखो 'बारबार' (रू. भे.)

उ०—लज्जा छोडी बारबार, ऊंचइ स्वर ते करइ पुकार । मन में धारै अधिकौ सोग, हीयडौ फाटई नाह वियोग । —वि. कु.

बार-सं. पु [सं.] १ दिन, दिवस ।

उ०—१ जकै बार री औधि सोभा जगांणी, ब्रहम सारदा होत जामै वखाणी । —सू. प्र.

२ सप्ताह के सात दिनों में से कोई एक और सब ।

उ०—१ धन दीहड़ौ, धन घड़ी, धन बार, धन मोहूरत धन वेळा जको राज पधारिया ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ सतरै संमत पोस पंत्रीसै, दसमी बार ब्रहस्पत दीसै । सुरधर छत्र 'जसौ' महाराजा, सुरपुर गयौ लियां अद साजा ।
—रा. रू.

३ समय, वक्त ।

उ०—१ वदै मुनेस जेण बार, देखि भूप वीनती । मख सहाय काज मेलि, पुत्र लै रघुपती ।
—सू. प्र.

उ०—२ प्रायै छोरू न लहै सार, मावीत्रां नी किण ही बार । पिण मावीत्र तपै दिन राति, पांणी वल विरहौ न खमात ।
—वि. कु.

उ०—३ पिंगळ राजा नूं मिल्यउ, सउदागर तिणि बार । राज दुवारइ तेड़ियउ, आदर करै अपार । —ढो. मा.

४ देर, विलम्ब ।

उ०—१ जगवासी न सांभलो, ए संसार असार । तिहां तन धन यौवन निफल, जातां न लहै बार । —वि. कु.

उ०—२ तरै कलियांणसिंघ जांणियौ अस्तरी तौ बाहुड़ै नहीं, अर बार घणी लागी । तरां नैणां में गद-गद कंठ वेहां रौ हुऔ । आप असवार होय हालिया । अस्त्री घरै आवी ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ इतरा माहै बात करतां बार लागै । वैकुंठ री रीस गैब री इच्छा सरूप गढ कोट बाजार सतखणा सोव्रन मैं आवास गोख जोख विस्रांम चित्रसाळा रचाई । —र० वचनिका

५ काल, युग ।

उ०—१ द्रोणपुर, भारद्वाज रौ बेटौ द्रोणाचारज नूं थौ, पांडवां कैरवां री बार मांहे । पछै पमार डाहळिया नूं हुंतौ द्रोणपुर ।
—नैणसी

उ०—२ सोयळ पवार लुद्रवा री रैत ज्यौ भोग दे । मुदार रावळ भीम री बार माहै खेतसी मालदेओत नूं थो । पछै रावळ मनोहर-दास मान खीमावतनूं पटै दियौ थो । —नैणसी

रू. भे.—बाहार ।

६ किसी शासन करने वाली जाति के नाम के आगाड़ी लग कर उसके अधीनस्थ भू-भाग का बोध कराने वाला शब्द । ज्यूं-जोइयां री वार, भाटियां री वार ।

७ ऋतु, मौसम ।

८ आघात, प्रहार, चोट ।

उ०—१ पांच कलै परवार सूं, रावळ आलोचेह । आपें भर गढ आपस्यां, बिजड़ां बार करेह । —नैणसी

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, बार चक्रधार तिण बार दीधा । बिळंबै बार समराथ जळ दळ बिगरि, कूंभसुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा । —राव सत्रसाल री गीत

उ०—३ वीतां अघूरां बारां पूरां वेघ सूरां वच्चए । सेले प्रहारं बार सारं मार मारं मच्चए । —रा. रू.

६ युद्ध ।

१० तीर, बांण ।

११ समुद्र, सागर ।

१२ नदी ।

१३ दशा, हालत, परिस्थिति ।

उ०—जळ सह ऊतर जाय, नग सिर पर पावै नहीं । बिगड़ी जांरी बार, बळै न पाछी 'बसतिया' । —समळीजी बारहठ

१४ किनारा, तट, कूल ।

उ०—१ जोय प्रबळ अणपार जळ, बार रह्या भड आंन । निडर उलंघण वारनिध, हुवो त्यार हनुमांन । —र. रू.

उ०—२ अठी रमजांनबेग पंजाब री विजय करि महमद नूं निरबळ निहारि पाछौ जाइ आग्यावरत नूं आंगमण रै काज तैमूर नूं अटक नदी रै बार आणियो । —व. भा.

१५ इस किनारे ।

१६ उस किनारे ।

उ०—आगै आवतां एक खाळ बारह हाथ को चौड़ो, घणों ऊंडो, आडै आयो जठै कुमार दूदो तो सहज मैं सांवळिया नैं भपाइ खाळ रै बार आइ भालो ऊभाइ सांम्हो खड़ो रहियो । —वं. भा.

१७ अवरोध, रुकावट ।

१८ शिव, महादेव ।

१९ क्षण, पल ।

२० कुज नामक वृक्ष ।

२१ एक गज की लम्बाई का नाप ।

२२ सात की संख्या । * (डिं को)

[स. वार्] २३ जल, पानी । (ह. नां मा.)

उ०—नैणां पल पल निरखती, बार पोवती बार । विसरै उवा क्यू विरहणी, अटक रही उणिहार । —अज्ञात

२४ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें पन्द्रह मात्रा पर यति से कुल तीस मात्राएँ हो एवं अन्त में मगण या रगण हो । (र. ज. प्र.) मतान्तर से अन्त में रगण हो (र. रू.)

२५ काम, कार्य ।

उ०—सूवा एक संदेसड़उ, बार सरेसी तुझ्झ । प्रीतम वांसइ आइ नइ, मुई सुणावे मुझ्झ । —ढो. मा.

२६ दफा, मरतबा ।

उ०—१ सुंदरी तहं सच्चउं कहिउ, तैं मुझ प्रांण प्रीयार । तेणी-करी जीवूं अम्हें, जनमिउ बीजो बार । —मा. कां. प्र.

उ०—२ बार सत्त पंचास, गुर्ड़ गैमर गळ गंजै । लक्ख एक तोखार, ठिल्ल अरीयण घड़ भंजै । —नैणसी

क्रि. वि.—२ इस ओर, इस तरफ ।

उ०—आयौ बूंदी आपरौ, अमल दरारै बार । बधियौ रहसीं जतन बिण, प्रतपण म्हांरौ पार । —वं. भा.

प्रत्य. [फा.] ३ क्रमश:, क्रमानुसार ।

४ देखो 'बार' (रू. भे.) (१)

उ०—इसै हीज तत में कुंवरसी चढियौ, सो जाय सांढां रा वरग सरब घेरिया । रैबारी बीस हाथ आया, सो मारिया । बाकी केई था, सो बांठां में गया । सो नाठा, जाय बार घाली । —कुंवरसी सांखला री वारता

५ देखो 'बारी' (रू. भे.)

उ०—१ ओर निधड़क अभिमांन देख रात में सोवै जद नींद वस असावधांन होवै तद सत्रुआं री बार लागै । —बी. स. टी.

उ०—२ तजियै मांन गुमांन, रहाय गुरु गम चली । सिवरौ सिरजनहार, बार आई भली । —श्री सुखरांमजी महाराज ।

उ०—३ बाळ मुकुंद बिरदाधिपति, क्यूं नह सुणौ पुकार । काहै ऐती ढील की, मोहन मेरी बार । —गज उद्धार

बा'र—देखो 'बाहर' (रू. भे)

उ०—१ चौधरी चुपचाप आय'र बैठग्यो अर थाळी में सोगरो ने लूण-मिरच देखनै भट-भट खावण लाग्यो—जांणै लारै बा'र आवती व्है । —रातवासो

उ०—२ चोर लारै बा'र वणाई, आव लारै उपाय वताई । —दसदोख

उ०—३ आया बा'र निदांन री, वीस हजार मुगल्ल । —रा. रू.

बारक—सं. पु [सं.] १ निषेध करने वाला घोड़ा ।

२ घोड़े की चाल ।

३ वह स्थान जहां पीड़ा होती हो ।

४ बाल छड़ ह्रीवेर ।

[सं. वारकिन्] ५ विरोधी, शत्रु ।

६ समुद्र ।

७ शुभ लक्षणों वाला घोड़ा ।

८ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी ।

वि.—अड़चन डालने वाला, रोकने वाला, अवरोध करने वाला।

बारकन्या-सं. स्त्री. [सं.] वेश्या, रण्डी।

बारख—देखो 'बारिख' (रू. भे.)

बारगह, बारगाह-सं. पु.—देखो 'बारिगह' (रू. भे.)

उ०—इभ कुंभ अधारी कुच सु कंचुकी, कवच सम्भु कांम कळह। मनु हरि आगमि मंडे मंडप, बधण दोय कि बारगाह। —वेलि

बारगिरी, बारगीर-वि.- देखो 'बारगीर' (रू. भे.)

उ०—अहा भीम आवगां, वाळ अावे पिड़िहारां, किया त्यार साकुरां, बाग पाखरां अपारां। धन ताना ऊधरां, जात जात रा मिड़जां, बारगीर बाटजे, साख साल रा सकाजा। —बखतौ खिड़ियौ

बारड़-सं पु —देखो 'बारड़' (रू. भे.)

बारड़ौ—१ देखो 'बार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—घानतर मयंक हगू मुक्र धावौ, नरपाळग रुद्र रिख निवड़। एक बारड़ौ 'करन' उठावौ, धन खट तणौ प्रौयागवड़।
—ईसरदास बारहठ

२ देखो बारी (रू. भे.)

उ०—निकमाळं निकमा फिरै ना, लगै कूवटां कारड़ी। मौगेदार मजूरी करं, विध विध अपणी बारड़ौ। —दसदेव

बारचर-सं. पु. [सं. वारिचर] १ जल में रहने वाला जंतु, जल जतु।
२ मत्स्य, मछली (अ. मा., ह. ना. मा.)

बारज—देखो 'वारिज' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा)

उ०—वप वरणस्यांम नैत्र दुति बारज। क्रत अवतार सुरांचे कारज। —सू. प्र

उ०—२ बारज द्रग बारद बरण, गहर धरण गुणगाथ। करुणा-निध अकरण करण, नमो नमो रघुनाथ। —र. रू.

उ०—३ सस्त्र विद्या के आचारज। जळ रूप क्षत्रियां के बारज।
—रा. रू.

बारड़-सं. पु. [अं. वार्ड] १ रक्षा, हिफाजत।

२ अस्पताल या जेल का कोई कक्ष या विभाग।

३ किसी नगर या मोहल्ले का किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत किया हुआ समूह।

बारण-सं. स्त्री. [सं] १ निषेद, मनाही।

२ रोक, रुकावट, अवरोध।

३ बाधा।

४ सुरक्षा, सहायता।

५ न्योछावर होने या बलैयां लेने की क्रिया या भाव।

६ हरताल।

७ सफेद गोरैया।

सं.पु. [सं.] ८ हाथी, गज। (ह. नां. मा.)

उ०—१ मुख मंद हास आणंदमय, आराधित अहि नर अमर। वंश बत तूक मारण दयत, बारण तारण लच्छिवर। —सू. प्र.

उ०—२ कहै तिया सुण कंत, किसी बात तोसूं कहूं। मौलाए गज दंत, बारण पाछौ वळ गयौ। —गज उद्धार

९ हाथी का अंकुश।

१० संयम।

११ कवच, बखतर।

१२ आर्यागीति या स्कंधांण का एक भेद विशेष।

१३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएं होती हैं।

१४ छप्पय का ३० वां भेद जिसमें ४१ गुरु तथा ७० लघु कुल १११ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं।

वि. वि—मतान्तर से इसमें ४१ गुरु, ६६ लघु के अनुसार १०७ वर्ण व १४८ मात्राऐं भी मानी जाती है।

वि.—१ मिटाने वाला, निवारण करने वाला।

उ०—धिन हो दुख बारण, काज सुधारण। भगत उधारण भगवन तूं। —भगतमाळ

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ मना करने वाला, रोकने वाला।

४ जबरदस्त।

क्रि. वि.—५ रोकने हेतु।

६ रक्षा करने हेतु।

रू. भे.—बारण, बारणु, वारिणि।

बारणपति-सं. पु. [सं. वारणः+पतिः] १ महावत।

२ हाथी।

रू. भे.—बारणपति, बारणपती।

बारणवासोत-स पु —भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

बारणा-स. पु., ब. व. —१ बलिहारी जाने की क्रिया या भाव।

२ बलैयां, न्योछावर।

उ० १ आंखिया लाज लोयां अडर, सारा काज सुधारणा। मादक अलीण मेलै न मुख, वारा लेऊ बारणा। —ऊ. का.

उ०—२ राजा अजीत दसरत्थ ज्यौं, सुत सजीत परखं सही। बारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कोसल्या जिही। —रा. रू.

उ०—३ अब वे हीज सिरदार भांमणा बारणा लेवै है पण जेय जठै वांही भड़ां घोड़ां में जै—फतै तौ म्हारा कंत धणी ने मिळी है।
—बी. स. टी.

रू. भे.—बारणा।

बारणावत-सं. पु. [सं.] गंगा किनारे का एक प्राचीन नगर या जनपद। —(महाभारत)

बारणौ-सं. पु. [सं. वारण] १ विवाह के समय दुल्हा-दुल्हिन तथा इनके सम्मुख नाचने वाली के ऊपर रुपये, पैसे आदि न्योछावर करने की क्रिया। (एक प्रथा)

वि. वि.-इस प्रकार की न्योछावर के पैसे ढोल-बाजा वाले या नाई को दिया जाता है।

२ देखो 'वारणौ' (रू. भे.)

उ०—चौरंग पांत फौज चोवड़ती, फूल घार बारणो करै। कुते हुलै मिळै करणावत, काळै भांत मनवार करै।
— बळरांम राठोड़ री गीत

बारणीय-वि.—१ न्योछावर योग्य, उत्सर्ग योग्य।

२ निषेध योग्य।

बारणू, बारणौ-सं. पु.—१ वारणा या वारीजाने की क्रिया या भाव।

२ वारा जाने वाला या न्योछावर किया जाने वाला पदार्थ।

रू. भे.—ग्रंवारणौ

३ देखो 'बारणौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वारण' (रू. भे.)

उ०-१ बोम लागा वहै लोडता बारणू। हल्लवै द्रोण ऊपाड़ जांणै हणू। —गु. रू. बं.

उ०—२ ताहरां वेणीदास, चंदण चोपदार, हरदांन, रांमदांन भ्रोळ-खवां नै साथै ले बजार गयो। जाय हाट रे वारणै आया थका खड़ा रहि देखा किया। —पलक दरियाव री बात

बारणौ, बारबौ-क्रि.स. [सं. वारणं] १ बलिहारी जाना, बलैया लेना, वारी जाना (उ र.)

उ०—१ नर नारि द्वार नरपत्त रै, ईख करै तन बारणै। उमराव परस्सण उल्लसै, कोड़ां दरसण कारणै। —रा. रू

उ०—२ हाथी रै होदै मारियो पती ने देख बीर स्त्री कहै-वारी वालम बारणै जाऊं। —वी. स. टी.

उ०—३ देखै मुख वसुदेव देवकी वार-वार वारै पै वारि। —वेलि

२ न्योछावर करना, उत्सर्ग करना।

उ०—१ त्याग पर बारू भ्रापरी दातारगी रो एक दूहै पर नव लाख रिपिया बगसिया। —द. दा.

उ०—२ चारो नाणू कहै खारी भर वारै, भ्रपणी प्यारी पर प्रांणां तक बारै। —ऊ. का.

उ०—इसड़ी भ्रांखड़ियांह किया भ्रग बारणै। सर मनमथ गा हारि क भ्रंजण सारणै। —बां. दा.

३ देवी-प्रकोप, जादू-टोना या कष्ट निवारणार्थ कोई वस्तु या प्राणी को शरीर पर फेर कर वारना। (उ. र)

उ०—सासुवां रूप भ्रौर तरह देख घणी राजी हुई राई लूण व वारिया। थुथकारा नाखिया। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कंवरजी री डील रूड़ो नहीं, तरै भाटी गोयंददास मोहण दास नूं कंवरजी ऊपर वारियौ। कंवरजी रै डील समाघ हुई, मोहणदास रांम कह्यौ। —नैणसी

४ दूल्हे-दूल्हिन या उनके सामने नाचने वाली के ऊपर से रुपये पैसे आदि वार कर ढोली, नाई आदि को देना।

५ सामना करना, बाधा डालना, रोकना। (उ. र.)

उ०—ऊलटियो सिर भ्रागरै, भ्रबदुल्ला 'भ्रजमाल'। भ्रागै पौहतै भ्रागलौ, बारण खांन दुकाल। —रा. रू.

६ रक्षा करना, सहायता करना, उबारना।

उ०—साहिब रै सहि थारौ सारौ, वडा घिणी जंम भ्रासै वारौ। खोटी बात संसारीह खारौ, भ्रातिमा मुंना पारि उतारौ। —पी. ग्रं.

७ इनकार करना, मना करना। (उ. र.)

८ निवारण करना, छोड़ना। (उ. र.)

उ०—घणा नींदाळवां नींद बारौ घणी। तूंग नहं छै भली हींस घोड़ां तणी। —हा. भा.

९ दूर करना, हटाना, मिटाना।

उ०-तारै दासां त्रिकमाह, भय वारै जम भूप। हूं बलिहारी श्रीहरी, रे! थांनै निज रूप। —र. ज. प्र.

बारणहार, हारौ (हारी), बारणियौ—वि०।

बारिभ्रोड़ो, बारियोड़ौ, बारघोड़ौ—भू० का० कृ०।

बारीजणौ, बरीजबौ—कर्म वा०

भ्रंबारणौ, भ्रंबारबौ, बारणौ, बारबौ—रू० भे०

बारता-सं. स्त्री. [सं. वार्त्ता] १ जनश्रुति, अफवाह, किंवदंति।

२ वार्तालाप, कथोपकथन, सवाद।

३ कुशल-समाचार, हाल, खबर।

उ०—१ रखी सुनमांन दीधो। नरै भ्राप रूजक पगै मेलियौ। टहेल कीधी। रखी बारता पूछी-तरै भ्राप सारा ही क्रम कथा कही। —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ जांमण को ये जाई! मा बाबल बूजें ये थारी वारता —लो. गी.

४ बात।

उ०—हां ये गोरी! भ्रव करस्यां मनुवार। घर भ्राय पूछां मनड़ै री बारता जी। —लो. गी.

५ किसी विषय पर होने वाली चर्चा, बातचीत ।

उ० सदा **वारता** निशिदिन करनें, गुरु भाव की हांन । या जन की मत पतू न करियें, पोतें जो होय भगवान ।

—श्री सुखरामजी महाराज

६ मामला, विषय ।

७ घटना, वृत्तान्त ।

उ०- गतो कहै ने **वारता**, गाडोमल नें नेह । च्यार नगर ना पभ नें, मुके नहीं गुम केह । —घ. व. ग्रं.

८ कहानी, आख्यान ।

९ राजस्थानी का गद्य ।

१० क्रिया-कलाप ।

उ०—तरै चोदस रैं दिन इतरी **वारता** उमादे करसी, थांनुं संपडा-वसी, बागा पहरावसी । —पचदडी री वारता

११ ऐतिहासिक आख्यान ।

रू. भे.—वारता, वारथा ।

वारतालाप-सं.पु. [सं वार्तालाप] परस्पर की जाने वाली बातचीत, कथोपकथन, संवाद ।

वारतिक, वारतिक्क–सं. पु. [सं वार्तिकम्] १ किसी ग्रन्थ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने वाला वाक्य या शब्द, व्याख्या ।

वि. वि.—भाष्य में केवल मूल ग्रंथ का आशय ही स्पष्ट किया जाता है परन्तु वार्तिक में वार्तिककार नई बात कहने के लिये भी स्वतन्त्र होता है ।

२ छन्द शास्त्र के नियमों से रहित एक प्रकार का तुकांत गद्य पद्य मय छन्द ।

३ कात्यायन का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें पाणिनि के सूत्रों की विश्लेषणात्मक व्याख्याएं लिखी हुई हैं ।

[सं. वार्तिक]—४ वृत्तांत, हाल ।

५ जासूस ।

६ दूत, चर ।

७ निशान ।

वि. [सं. वार्तिक] १ वार्ता या संवाद सम्बन्धी ।

२ व्याख्याकारी ।

३ खबर लाने वाला ।

वार्तिय-सं स्त्री [सं. वारस्त्री] वेश्या रण्डी ।

वारथा—देखो 'वारता' (रू भे.)

उ०—म्हारो पती हाथळ रैं जोर हाथी मारै है सो श्रो नाहर इणा ने कहणा चाहीजें इतो भा **वारथा** । —वी. स.टी.

वारद—देखो 'वारिद' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदर तन स्याम स्यांम **वारद** सम । कौटक भा रद कांम सकांम । —र. ज. प्र.

उ०—२ **वारद** विद्युत वरण, पीत भग धरण नीलपट । तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट । —र. रू.

वारदद्रू-सं. पु. [सं. वारिद-द्रु] इन्द्र । (अ. मा.)

वारदा—देखो 'वरदा' (रू भे.)

वारदात-सं. स्त्री. [फा. वारिदात] १ कोई सोचनीय काण्ड, दुर्घटना

उ०—ठोड़ ठोड़ खून अर कतल री **वारदातां** होवती अर रात-दिन करफ्यू लाग्योड़ो रैवतो । —रातवासो

२ दंगा फसाद, मारकाट ।

३ चोरी, डकैती ।

४ वृत्तांत, हाल, हकीकत ।

उ०—सांम्है देख पूछी—क्यों, केसरिया कुंवर किस तरह ? तद केसरसिंहजी सारी **वारदात** जाहिर की । —पदमसिंह री बात

वारद्ध-सं. पु.—१ देखो 'वारिद' (रू. भे.)

२ देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

वारद्धक-सं. पु. [सं. वार्द्धक्य] १ वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

उ०—किताक काळ पछै अठी बबावदा रै नरेस हालू १८२१ अनेक उपाय करि थाको तौ भी रण मरण न पायौ जांणि प्रति-दिन **वारद्धक** नूं वरद्धमांन देखि··· —वं. भा.

२ वृद्धि, बढ़ोतरी ।

३ बुढ़ापे की शिथिलता ।

रू. भे.—वारद्धक ।

वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस—देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

उ०—**वारधेस** जोम गाज गाळीया त्रकूट वासो, राजचीळ जाळीया तारग्गी तेज रूस । —हुकमीचंद खिड़ियो

वारनारी-सं. स्त्री [सं.] रंडी, वेश्या ।

वारनिध, वारनिधि—देखो 'वारिनिधि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—जोय प्रबळ अणपार जळ, वार रहया भड थांन । निडर उलघण **वारनिध**, हुवौ त्यार हनुमांन । —र. रू.

वारनिस-सं पु [अं. वार्निस] लकडियों या लकड़ी के बने फर्नीचर पर चमक लाने के लिए लगाया जाने वाला एक तरल पदार्थ ।

रू. भे.—वारनिस,

वारनिसांणी—देखो 'वार' (२४)

वारपार-सं. पु. [सं. अवर-पार] १ एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक की पूरी चौड़ाई, मोटाई ।

२ पूरा या समूचा विस्तार।
३ सीमा, मर्यादा।
उ०—रूप न रेख अलेख है, कुछ वार न पारा।
—केसोदास गाडण

वि.—१ पारंगत,दक्ष।
उ०—हाथ री उछांग नै पगां री फुरती भर गाढ़ पर भ्रमट। तिको सरदार री वातानों वार। सो म्होकमसिंघ तो च्याराही में बारपार। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
भव्य—२ इस किनारे से उस किनारे तक।
रू. भे.—वारापार,

बारबधू—देखो 'वारवधू' (रू. भे.)
उ०—मार्ग बरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग। हवणी का अलियळ हुआ, बारबधू वप लाग। —बां. दा.

बारबुंद-वि. [सं. वारिबुंद] तुच्छ, सुक्ष्म। (अ. मा.)

बारमुखी-सं. स्त्री. [स.] रण्डी, वेश्या।
रू. भे.—बारमुखी।

बारमौं—देखो 'बारवो' (रू. भे.)
उ०—वरस बारमइ वइठउ राजि। अरि भाजइ संभळि आवाजि।
—ढो. मा.

बारवधु, बारवधू-सं. स्त्री [सं. बारवधू] १ वेश्या, रण्डी। (अ. मा.)
२ नर्तकी, गणिका।
उ०—बरबाजू के ततकार खटरागूं के धीर, बारबधु के न्रतकार त्रिखायतूं के वणाय अत अतरू के डबर......। —र. रू.
रू. भे.—बारबधू, बारबधूटी, वारबधू।

बारबार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)
उ० - हुज रद रदन दसन मुख दीपन, ढळियो कंम पकड़ि गज-दंत। वारबार करतार बखांणो, सुर मिणगार सुधारण संत।
—ह. नां. मा.

बारवाह—देखो 'वारिवाह' (रू. भे)

बारविलासणी, बारविलासनी, बारविलासिनी-सं. स्त्री [स. वारविलासिनी] १ वेश्या, रण्डी।
२ नर्तकी, गणिका।
उ०—चांमरधारिणी बारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्यांन गावन ...। —व. स.
रू. भे.—बारविलासिणी,

बारबिलोवण-वि. [सं. वारि-बिलोवन] समुद्र मंथन करने वाला।
सं. पु.—विष्णु, हरि।
रू. भे. वारिविरोळण।

बारस—१ देखो 'बारस' (रू.भे.)
उ०—आसू वद बारस दिन आसुर। मौत अचित गया कर संमर।
—रा. रू.
२ देखो 'वारिस' (रू. भे.) (मा. म.)
उ०—दिस दिस 'जीदै' रोह उवै न्रोक सह ईखतो। लड़ जिय लीधै रोह, बारस कोइय न आवियो। —पा. प्र.

बारसार—देखो 'वारिसार' (रू. भे.) (अ. मा.)

बारसिक-वि. [सं. वार्षिक] १ एक वर्ष भर या एक वर्ष तक। रहने वाला।
२ सालाना।
३ वर्षा ऋतु या वर्षा सम्बन्धी।
सं. पु.—१ वर्ष के वर्ष दिया जाने वाला कर।
२ वर्ष के वर्ष मिलने वाला लाभ।

बारसिप-सं. पु. [अं. वारशिप] युद्ध पोत, जंगी बेड़ा।

बारसी-सं. स्त्री—१ बाला, युवती।
उ०—पहिलूं परजापति-थिकी परठाइ ए पइरि। भोगवि सोडस बारसी, सुक सिघावीइ धिरि। —मा. कां. प्र.
२ रक्षा, सहायता, मदद, पक्षपात।
वि. स्त्री.—१ वर्ष की, वर्ष सम्बन्धी।
२ देखो 'बारस्त्री' (रू.भे.)

बारसुंदरी-स. स्त्री. [सं.] १ वेश्या, रंडी।
२ गणिका, नर्त्तकी।
रू. भे.—बारसुंदरी।

बारसूळ-स. पु. यौ [सं वार-शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार शूल का विशिष्ट वारों को विशिष्ट दिशाओं में होने वाला निवास।
वि. वि.—इसका सोम, शनि को पूर्व दिशा में, गुरु को दक्षिण में, रवि, शुक्र को पश्चिम में तथा मंगल बुधको उत्तर दिशा में निवास रहता है। मतान्तर से रवि का उत्तर मे भी।

बारस्त्री-सं. स्त्री. [स.] १ वेश्या, रण्डी।
२ नर्तकी, गणिका।

बारहो-स. पु.—यवन, मुसलमान।
उ०—असंख दळ दिली रा भुजां उछवाळतो, समर भर 'भीम' दीठो सबा ही। पेर त्रिच बारहो मंडोवर घातियो, मडोवर घेर आंबेर मांही। —द. दा.

बारांगना—देखो 'वारंगना' (रू.भे.)
उ०—एक एक नै दोय दोय वारांगना धिनु हजार गिणती करी आंमना। —जयवांणी

बारांणसी—स. स्त्री. [सं. वाराणसी] बनारस का प्राचीन एवं प्राधुनिक नाम ।

उ०—वाराणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नाम ए । तेह नो पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जाणे रूपे काम ए । —वि. कु.

रू. भे.—बांणारसि, बांणारसी, बांणरस, बांणारसी ।

बारांह—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—साहिजादौ सुरताण बै, रिण भूभे तिम राह । डार परिग्गह करि मुहरि, नीसरियौ बारांह । —गु. रू. बं.

बारा—स. स्त्री. [सं. वार] १ मदिरा, शराब । (अ. मा.)

२ देखो 'वराह' (रू. भे.)

३ देखो 'बार' (रू. भे.)

उ०—१ बीछुड़ता ई गजजणां, राता किया रतन्न । बारां बिहुं सिहुं नांखिया, प्रासू मोती ग्रन्न । —ढो. मा.

उ०—२ न को मास पख न को तिथ बारा । —प्रनुभववांणी

बाराणसी—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

बाराधिप—सं. पु. [सं. वारि-प्रधिप] समुद्र ।

उ०—बाराधिप सेतां बंधण रौ, कुळ राक्षस जूथ निकंदण रौ । दिल तू 'किसना' जग वंदण रौ, नहचौ रख कौसळ नंदण रौ । —र. ज. प्र.

बारापार—देखो 'वारपार' (रू. भे.)

उ०—उण मुख तै गगो कयो, इण कर मरी दुधार । वार कहण पायौ नही, निकसी बारापार । —द. दा.

बाराह, बाराहउ, बाराहर—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—१ धड़हड़ै सात पंयाळ धूजै, सेसनाग धड़क्क ए । खित भार दाढ बाराह खड़क्कै, कोम कंध कड़क्क ए । —गु. रू. बं.

उ०—२ जइ भागउ तो बाराहउ, जइ थाकउ तो पारकरउ घोडउ जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दावडउ । —व. स.

उ०—३ हूणी आप हयवाह, राव बाराहर भालौ । ले छकड़ां सिर-लार, पुळै बाजू दळ पाळौ । —पा. प्र.

बाराहिकंद—देखो 'बाराहीकंद' (रू. भे.)

बाराही—स. स्त्री. [सं.] १ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आठ देवियों मे से एक ।

२ पृथ्वी ।

३ सूग्रर के रूप मे विष्णु की एक शक्ति ।

४ सूग्ररी ।

५ सप्त मातृकाग्रों मे से एक जिसका वाहन बैल है ।

६ माप विशेष ।

रू. भे.—बाराही, वराहजी, वराही ।

बाराहीकंद—सं. पु. [सं.] एक महाकंद जो ग्रौषधियों में काम ग्राता है ग्रौर जिसे गेंठी भी कहते हैं ।

रू. भे.—बाराहीकंद, बाराहिकंद ।

बारि—स. पु. [सं.] १ पानी, जल ।

उ०—१ बापरै तखत बैठो, धारि छत्र जोम धारि । बीजळां दिलेस देस, मारि कीध थाळ बारि । —सू. प्र.

उ०—२ ग्रहिलइ गयु ग्रवतार, इम, कांमकंदलां नारि । परवत-स गि तलावड़ी, ग्रथा रहिउ जिम बारि । —मा. कां. प्र.

उ०—३ बारि वसंती पद्मिनी, समीहर सूर ग्राकासि । महीपति ! तिम महिला-तणा, मन ते माधव-पासि । —मा. कां. प्र.

२ कोई तरल पदार्थ ।

३ सरस्वती, वाणी ।

४ निसानी छंद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण में ४ गुरु व १५ लघु वर्ण होते हैं ।

५ देखो 'वार' (रू. भे.)

उ०—१ छांना नितु पुहचइ परधांन, रळियात थ्या चिति परधांन । मास दोह ग्रागळि ग्रसवार, ग्राया पूगळि नयरि ते बारि । —ढो. मा.

उ०—२ कहिस्यां तौ तूभ भलौ करणाकर, वपि एकणि सहु घरै बिचारि । रावळ जांम सरीखौ राजा, वळै घड़िस जो बीजी बारि । —ईसरदास बारहठ

६ देखो 'वारी' (रू. भे.)

रू. भे.—वारि, बारीय ।

बारिईस—देखो 'वारीस' (रू. भे.)

उ०—जळेस बारिईस की, सुरेस नेस प्री जिसा । 'ग्रभौ' त्रिलोक में ग्रचभ. भोग भोगवै इसा । —रा. रू.

बारिख—स. पु. [सं. वार्क्षम्] वन, जंगल । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वारख ।

बारिगह, बारिग्रह—देखो 'बारिगह' (रू. भे.)

उ०—जु मन वांध्यौ चाहिजे । त्यं कै कारणै या बारिगह दीधी छै । —वेलि टी.

बारिचर—सं.पु. [सं.] १ जल मे विचरण करने वाले प्राणी, जल-जन्तु ।

२ मछली, मत्स्य ।

३ शंख ।

बारिज—सं. पु. [सं.] १ कमल ।

उ०—रवि ऊगतां जिसो मुख राजै वारिज प्रफुल्लित नैत्र विराजै।
—सू प्र.

२ शंख। (ह. नां. मा)

३ घोंघा।

४ मत्स्य, मछली।

रू. भे.—वारिज, वारज।

वारिजपुंड्र-सं. पु. [सं.] श्वेत-कमल।

वारिजलोचण-सं. पु. [सं. वारिजलोचनं] परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

वारिजात—देखो 'वारिज'

वारिद, वारिद्-सं. पु. [स. वारिद] मेघ, बादल।

उ०—१ रित सारिद वारिद रहित, आगम अघहण मास।'अजन' विदा कीधौ 'अभौ' निरखण ग्रेह निवास। —रा. रू.

उ०—२ किनां कंध धारां झरै मद् काळा। वणी जांणि वारिद् भाद्रव्व वाळा। —रा. रू.

रू भे.—बारद, बारिद, वारद।

वारिद्र-सं. पु. [स.] चातक-पक्षी।

वारिध—देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

उ०—अगीकृत ईस्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ। वारिध वाड्व अगि वहैं पांणी सासंतइ। —प च. चौ.

वारिधर-सं पु. [सं.] १ बादल, मेघ।

२ समुद्र।

३ नागरमोथा।

४ एक समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण और दो भगण होते है।

रू. भे.—बारिधर।

वारिधि-स. पु [स.] समुद्र, सागर।

उ०—१ पदमणि स्युं पांणी ग्रहण, विचि वारिधि अतिकूर। ऊखांणो साचौ हुऔ, बाघ नदी जल पूर। —प. च. चौ.

उ०—२ हूं वारिधि मांहे पड्यो, मीनोदर रह्यौ केम। गणिका घरि सुक किम थयौ, भाखौ जिम छै तेम। —वि. कु.

रू. भे.—बारध, बारधि, बारिधि, वारद्ध, वारध, वारधो, वारधीस, वारधेस, वारिध वारुध।

वारिनाथ-सं. पु [स.] १ समुद्र।

२ वरुण देव।

३ बादल।

वारिनिधि-सं. पु. [सं.] समुद्र।

रू. भे.—वारनिध, वारनिधि।

वारियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—वात वड साळ फरीयां जकण वारियां, भाटी कह 'दांन' 'सादूळ' छक मारीयां। घणी सूंपां सरण मरण संक धारीयां, लाज मन धरै जेसांण गढ लारीयां। —जसो आढो

वारियौ-स. पु —देखो 'वारियौ' (रू. भे.)

उ०—सार्भ स्यारी जूप, ताकड़े रात्यूं रेवै, करै कोलिया राग, वारियौ दूहा देवै। —दसदेव

वारिरुह-स. पु. [सं] कमल।

वारिवारि—१ देखो 'वारंबार' (रू. भे.)

उ०—तु वारिवारि पंथ साहांनि कहुछो राजंन। चरण त्यजवा तह्मारां किम चालि माहारू मन। —नळाख्यांन

२ देखो 'वारीबारी' (रू. भे.)

वारिवाह-सं. पु [सं] बादल, मेघ।

रू. भे.—बारिवाह, वारवाह।

वारिविरोळण—देखो 'वारविलोवण' (रू. भे.) (नां. मा.)

वारिस-स. पु. [फा.] १ किसी की जायदाद का हकदार, जायदाद के लिये मनोनीत किया हुआ या कानूनन अधिकारी।

२ उत्तराधिकारी।

३ वह जिसने अपने आपको किसी अन्य के कार्यों के लिये योग्य बना लिया है।

रू. भे.—वारस।

वारिसार-सं. पु —चन्द्रगुप्त का एक पुत्र, अशोक का पिता, बिंदुसार।

वारिसास्त्र-स. पु [स. वारिशास्त्र] गर्ग मुनि द्वारा रचित फलित ज्योतिष का एक ग्रथ।

वारी-सं. स्त्री.—१ अवसर, मौका, पारी।

उ०—१ थावो केतली रे नर ऊमर थारी। भाखे मुख असहा वच भारी। वचस्यो नही आविया वारी, गावो रे गावो गिरधारी। —बक्सीराम लाळस

उ०—२ सेज संवारी छै तन री तयारी छै। और उवां री वारी छै आज। —रसीलै राज रा गीत

२ न्योछार, उत्सर्ग।

उ०—१ हूं वारी रे माधवा, बिरह जलंती जांणि। तूं तु तापइ दूरि थी, प्रेमि पसारी पांणि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ नीबूड़े री गहरी गहरी छांय औ थां पर वारी रे सैंयां। ढोला नै भरवण सुख भर पोढिया ओ राज। —लो. गी.

३ निवारण, निवृत्ति।

उ०—सदा सेवकां लोक सांनिध्यकारी। प्रभु 'पास' स्तंमनो विघ्न वारी। —स. कु.

४ साधुवाद या धन्यवाद देने की क्रिया या भाव ।

उ०—हाथी रै हौदै मरियो पर्ती नै दस वीर स्त्री कहै वारी वालम वारणै जाऊ धर्णा री चाह रथ वाहनै वारणी । —वी. स. टी.

[सं. वारी] ५ हाथी को बांधने की रस्सी या जंजीर ।

६ हाथी को पकड़ने के लिये बनाया हुआ गड्ढा ।

७ हाथी को बांधने का स्थान ।

८ कैदी, बंदी ।

९ जल-पात्र ।

१० तरल पदार्थ रखने का एक टोंटीदार बर्तन ।

११ सरस्वती का नाम ।

१२ देखो 'बारी' (रू. भे.)

उ० नद भरमल रै रहवासरै उण घड़ी खिड़की कराई । सो रात घड़ी च्यार गया भरमल हजूर आवै, उठै जीमै, सभा विखावै । बारी हावै सो पोहल आवै । रात घड़ी च्यार पाछली रहा वहीर जावै । —कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे. वारि, वारि ।

वारीव—देखो 'वारि' (रू. भे.)

वारीवारी—देखो 'बारी बारी' (रू. भे.)

उ०—दारूड़ा री मनवार आपस री, वस रही बारी बारी । —रसीलै राजरो गीत

वारीस—स. पु. [सं. वारि+ईश] १ समुद्र ।

२ जल के अधिपति वरुण देव ।

रू. भे. वारिस, वारीभ, वरीस, वारिईस ।

वारंवार—देखो 'वारम्बार' (रू. भे.)

वारु—१ देखो 'वारू' (रू. भे.)

उ०—१ वैसाख वारु मास, नही ताढि तड़कउ तास । उन्ही वढि प्रावास, वइसयद केहनउ पास । —स. कु.

उ०—२ पदमाकर धनपुर नगर रे लाल, गुण चुण गढ ग्वालेर । करणसाही लाडु भला रे लाल, वारु बीकानेर । —प. च. चौ.

उ०—३ हउम्रो [हवो] मभानु [मन] मांरू ठारु । सोकागनीजवा [ला लागी] छि, सीतल [वर्नान] वारु । —नळाख्यान

वा'रु—देखो 'वाहरू' (रू. भे.)

वारुण—वि. [सं.] १ वरुण का, वरुण सम्बन्धी ।

२ वरुण को अर्पित किया हुआ, दिया हुआ ।

[सं. पु.] १ नव खण्डों में से एक ।

२ शतभिषा नक्षत्र ।

३ देखो 'वरुण' (रू. भे.)

वारुणास्त्र—स. पु. [सं.] एक अस्त्र विशेष ।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवर्त्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दांनवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र डिंभककारास्त्र नारायास्त्र अस्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणी । —व. स.

वारुणि—स. पु. [सं. वारुणि] १ एक पैतृक नाम जो अगस्त्य, भृगु एवं वाशिष्ठ आदि ऋषियों के लिये प्रयुक्त होता है ।

वि. वि.—ये सब ऋषि ब्रह्मा के यज्ञ से उत्पन्न हुए और वरुण ने इनको पुत्र रूप में माना इसलिये इनका नाम वारुणि पड़ा ।

२ धर्म सावर्णि मनवन्तर का एक ऋषि ।

३ एक पक्षिराज, जो कश्यप एवं वनिता के पुत्रों में से एक था ।

४ वानरों का एक राजा ।

वारुणी—सं. स्त्री. [सं.] १ स्वायम्भुव मनवन्तर के वरुण की पत्नी ।

२ अरण्य प्रजापति की कन्या जो चक्षुष् राजा की पत्नी एवं चक्षुष् मनु की माता थी ।

७ एक महाविद्या ।

उ०—वारुणी दारुणी भास्करी सकरी जया विजया घोरा कौबेरी प्रवाही मदनसेना । —व. स.

८ उपनिषद विद्या ।

९ पश्चिम दिशा ।

१० मदिरा, शराब ।

११ शतभिषा नक्षत्र, जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को पड़ता है ।

१२ उक्त दिन का माना जाने वाला पर्व ।

१३ दूर्वा, दूब ।

१४ घोड़े की एक चाल ।

१५ मादा हाथी, हस्तिनी ।

रू. भे.—वरुणी, वरूणी, वारणी, बारुणी, वारूणी, वारणी ।

वारुध—देखो 'वारिधि' (रू. भे.) (अ. मा.)

वारुसी—सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

(बां. दा. ख्यात)

वारूंवार—देखो 'वारम्बार' (रू. भे.)

उ०—सकति गणेस नवै ग्रह सोई सुर तेतीस सहाय सकोई । वड पहि जतन मूं वारूंवारा, हवौ घरम लख कोड़ हजारां । —रा. रू.

वारू—वि. (सं. वरः) १ वर, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—१ तो वारू राजा रे अहि उसीयां पछी मोहरा साहिबा, अनगसेना इण नांम रे वेस्या विगताली । —वि. कु.

उ०—२ भोग परित्याग प्रव्रज्या परयवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधांन हो । —वि. कु.

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ तुं गुण अनंत करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे। सुंदर तुझ मुख नउ मटको, बारू लोयण नउ लटकउ रे।
—वि. कु.

उ०—२ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, बारू मंडप नीपाईउ, पोइणि ने पांनि छाइउ, कवूना छाबड़ा मोतीना चडक। —व. स.

३ स्वादिष्ठ।

उ०—मोतीआ लाडू, दाखडिआ लाडू, दहीथरां तिलसांकली, फीणा वरसोला, साकरीआ चणा, कोहलापाक, दूध पाक सेलड़ी पाक खरगां पाजां जलेबी हेसमी, बारू पडसूधी तणा आछा मांडा, लगार नहीं खांडा। —व. स.

सं. पु.—१ वह हाथी जिस पर विजय पताका रहती है।

रू. भे.—'वारु'।

बांरू—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

बारूगु, बारूगो—स. पु.—एक कारीगर।

उ०—गलीआरा चीतारा घणा, ताई वणकर तेहनी नहीं मणा। कडीआ जडीआ गणीआ भला, लाभइ बारूगा रूडी कला।
—*नळदवदंती रास*

बारूबार—देखो 'बारबार' (रू. भे)

बारेवौ—स. पु.—त्यागने, निवारण करने की क्रिया या भाव।

उ०—राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौहो। सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार बारेवौ हो। —वि. कु.

बारोत—देखो 'बारोत' (रू. भे.)

बारोवार, बारोवारी—१ देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

उ०—१ तिहा जिनवर मुनि सुव्रत स्वामिनें, देव ग्रह निज आय। बारोवार करें गुण वरणना, मन सुद्ध प्रणमें रे पाय। —वि. कु.

उ० -२ किम रिहिसि ए निराधार, वाघ सघ करसि तां आहार। एणी परि करता बारोवारि, कलियुगि मन प्रेरयू अपार।
—नळाख्यांन

२ देखो 'बारीबारी' (रू. भे')

उ०—तूटै सनाह फूटै तुरस, वाह सरस तरवारियां। सोहै निराट हिंदू असुर, बाहै बारोबारियां। —रा. रू.

बारो—स. पु.—१ कूए से पानी निकालने का चरस, मोट।

उ०—१ ताहरां पाबूजी कोहर तेवण आप लागा। ताहरां एक बारो काढियो। तैसूं कोठा कूड्यां खेळियां भरी। —नैणसी

उ०—२ सो नापो' ऊपर खड़ो थो। कोहर तेवायो सो बारा आठ नो नीसरिया। दसमों बारो खांचतां नाको खुस गयो। वरत ढीली पड़ गई। —नापै सांखलै री वारता

२ कूए के पानी का मोट उड़ेलते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

३ रात्रि के समय मादा ऊंटों के झुण्ड के बैठने का स्थान।

४ उजाड़, जंगल।

५ लघुशंका करने की क्रिया।

६ समय, काल।

उ०—१ राम राज जोधपुर, सहू हरचंद बारो। मास पांच खट मास, साह आपै वाघारो। —गु. रू. बं.

उ०—२ दिन आयां चक्कवै गया सक्कवै समाए · दिन आयां हरिचंद गयो बारो बरताए। —रा रू.

७ किसी काम या बात के लिए वह अवसर जो कुछ अन्तर देकर क्रम से आता है, पारी।

उ०—१ ताहरां जियै वदू री बारो हुंती, सु मारग रोकि ऊभी। ज्यूं हरदास पाछली रात री बाहुड़ियो ताहरां कह्यो—सासूजी। हरदास बाहुड़ै छै। —नैणसी

उ०—२ घड़ी च्यार बैस पूछी बारो कैरो। तव अरज कीवी भरमल री वारो ले असवार हुवा सो इहां रो छै। तव आप उठि भरमल रै मोहल पधारियो। —कुंवरसी सांखला री वारता

८ चेचक।

उ० वणवीर आंणि अर मूंहतै अचळै नूं अर नाई लखमन लाहोरी नूं सूंपियो। आगै भोपतजी समाधिया हुया हुता। काचो पाको बारो ढळियो हुतो। —द. वि.

९ स्कन्दापस्मारादि बालग्रहों से पीड़ित बच्चे के सिर के ऊपर वारा जाने वाला जल जो किसी वृक्ष विशेष की जड़ों में डाला जाता है।

१० बडी तीज के रोज लड़की के पिता के द्वारा उसके ससुराल भेजी जाने वाली मिठाई।

वि. वि.—इसमें बड़े-बडे लड्डू भेजे जाते हैं।

११ बड़ी तीज के रोज लड़के के पिता के द्वारा (शादी होने के पहले) पुत्र वधु के लिए भेजे जाने वाली मिठाई व वस्त्र आदि।

१२ देखो 'वार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मरण तणो डर कोई नहीं, मरना है इक बारो रै। बहुत निवाज बडा करू, इु वहु देस भंडारो रै। —प. च. चौ.

रू. भे.—बारौ।

बालंटियर—सं. पु. [अं.] निस्वार्थ भाव से किसी कार्य में योग देने वाला स्वयं-सेवक।

बालंच—सं. पु.—एक जाती या वर्ग विशेष।

उ०—माली नबोमी छीपा परीयट बघारा तूनारा सोनारा ठाठार लोहार चमार मुई बालंघ कहोया मिलबट उड गाछा कोली टाटिया बाबर ढेढ हू ब। —ब. म.

बालंभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—१ बालंभ एक हिलोर दे, आई मर्क तउ आह । बांहड़िया बे घलिकयां, काग उडाइ उडाइ । —ढो. मा.

उ०—२ प्रीतडी बालम पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे।
कठिन हिय नवि किजियइ, कीजइ गगुण सनेह रे। —स कु.

बाळ, बाल—सं. पु. [स. वल्ल] १ चादर, गिलाफ। (उ. र.)

२ पर्वत की तलहटी।

३ पर्वत की तलहटी में स्थित खेत।

४ घुड़साल, अस्तबल।

५ घोड़ों का समूह।

उ०—धन हाथां हिंदु धणी, कीरत बणी सकाज। बाल तणो छोगो अवी, 'रूपमणी' घजराज। —चिमनजी आढ़ो.

६ तीन धधकी के बराबर एक तोल।

७ निषेध, वर्जन।

८ बारीक खुदाई या जाली काटने का एक औजार।

९ एक प्रत्यय।

१० देखो 'बाल' (रू. भे.) (ह. नां. मां.)

११ देखो 'बाला' (मह., रू. भे.)

उ०—लौकिक न रहइ लोकमां रे लाल, विसय थकी मन बाल मुकुलणो रे। काम भोग भुंडघा कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल मुक्. रे। —स. कु.

रू. भे.—बालइ, बालई, बाळि, बालि, बाळी, बाली।

बालइ, बालई—१ देखो 'बाल' (रू. भे.)

उ०—कान्हडदे पाटनउ धणी, बीजी भूमि भोगवई घणी। राजरिद्धि न किसू वखाण, बालइ पच-वरण केकाण। —का. दे. प्र.

२ देखो 'बाला' (रू. भे.)

बालउ—१ देखो 'बाल' (रू. भे.)

२ देखो 'बालो' (रू. भे.)

उ०—हु किन बालउ माय गहिरि गयंदंतउ मेलउं, हुं किन बालउ माय, गेसफाग विमुहा पिलहउ। —प. व चौ

बाळक—स. पु [देशज] १ जंगल मे स्वतन्त्र चरने वाले पशु, जिनके साथ चरवाहा नही होता।

२ नव प्रसूता मादा ऊंट जो अपने बच्चे को छोड़ कर जंगल मे चरने जाती है।

३ हाथ मे पहनने का कंगन, बाल छुड़।

वि.—१ बंधन रहित, स्वछन्द, मुक्त (पशु)

बाळकी—१ देखो 'बाळी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बालिका' (रू. भे.)

बाळको—देखो 'बाळक' (अल्पा., रू. भे.)

बाळखी—देखो 'बाळछी' (रू. भे.)

बालट्ठावोस—सं. पु.—बालक के खाने के लिये बनाई हुई वस्तु को लेने से लगने वाला दोष। (जैन)

बाळण—वि. [सं वलन] १ रोकने वाला, सामना करने वाला।

२ लौटाने वाला।

३ वापिस लाने वाला।

४ मोड़ने वाला, घुमाने वाला।

५ प्रतिशोध लेने वाला।

६ आने वाला।

बाळणोत—देखो 'बाळणोत' (रू. भे.)

बाळणो बाळबो—क्रि. स. [सं. वलनं] १ वापस लौटाना, लौटा कर लाना।

उ०—१ जुड़े तै बार किता इंद्रजीत, संहार दइत्तां बाळी सीत। —ह. र.

उ०—२ बाळियो वरग गायां तणों बीसहथ, सीर संभाळियो बीर साणी। अरण बिच बरण बिच घटा जिम अोवड़ी, लोवड़ी जाय असमान लागी। —गोपीनाथ गाडण

उ०—३ रतन मंजरी रीस करि कहियो, राजा नर ब्रह्म री आण दीवी छै। जु सांढ पाछी बाळ। —पच दडी री वारता

२ वापस लेना, प्राप्त करना, अधिकार में करना।

उ०—१ म्हारे माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतो हू मोटो हुईस, नै माहरो धरती गई सु बाळीस। —नैणसी

उ०—२ आंपे वेढ सु अलाहिदा रहिस्यां, नै आंपां नूं धरती बाळणी छै। —नैणसी

उ०—३ बाळण दकवण वसुह, कटक बंध चढ़िया कोप्रण। मेरी पचसदद ताम, सुणियै लग जोजण। —गु. रू. ब

३ प्रति शोध लेना।

उ०—खोसेरसाह राव श्रीजैतसिंघ जी रै वैर बाळण रै किये राव मालदे ऊपरि आप पधारि अरु राव मालदे रा रजपूत उमराव घणा मारिया। —द. वि

४ रोकना, सामना करना।

५ वापस बुलाना।

६ घुमाना, फिराना, चक्कर लगवाना।

७ विदा करना, लौटाना।

८ मोड़ना ।

उ०—१ विचै आवतां बंधवां बांह वाळै । रटै रांम बांण जतो छेदि राळै । —सू प्र.

उ०—२ किण रौ ई रह्यौ न हटकियौ, निज हट कियौ निभाव । वाळै ज्यूंइ वळियौ नहीं, बाळापणैइ सुभाव । —जैतदांन बारहट

९ खारिज करना, निरस्त करना ।

उ०—जनम जनम में करज कियौ है माथै करड़ो । मिनख कियौ महाराज काट दे क्यूं नहिं खरड़ौ । यौ खरड़ौ करड़ौ घणौ, कीकर बणै बणाव, निस बासर सगरांम कह, रांमधणी नै ध्याव । रांमधणी नै ध्याव, वाळवै खावंद खरड़ौ । जनम-जनम में करज कियौ है माथै करड़ौ । —सगरांम दास.

१० मिटाना ।

उ०—मन जांणौ पीवूं पै मिसरी, छाछ सूवरणी मिळै न छांट । वळिया सौ पाछां कुण वाळै, उण घर री लेखन रा आंट । —ओपौ आढौ.

११ झुकाना ।

१२ वसूल करना, लेना ।

१३ जेवरी गूंथना ।

१४ हवाकरना, पवन डुलाना ।

१५ पशुओं को एक स्थान पर एकत्र करना ।

१६ देखो 'बाळणौ, बाळबौ' (रू. भे.)

वाळणहार, हारौ (हारी), वाळणियौ—वि० ।

वाळियोड़ो, वालियोड़ो, वाळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाळीजणौ, वाळीजबौ—कर्म वा० ।

वालणौ, बालबौ—रू० भे० ।

बालणौ, बालबौ—देखो 'वाळणौ, वाळबौ' (रू. भे.)

उ०—आऊखा नै अंतपक्ष, अणसण पाली नै । संवत पनरपचीस, मन वैराग वालो नै । —ऐ. जै. का. सं

उ०—२ संद सु सब थई पाडइ, लेख न लिखिउ जाय । पिऊ माहरु परदेसि थि, किणी-परि बालसि वाय । —मा. कां. प्र

उ०—३ माहरौ मन पापी हो, कहूं अवगुण किसा । मन पाछो वाल्यौ हो, एम कहै मदालसा । —वि. कु.

बालणहार, हारौ हारी), बालणियौ—वि० ।

बालिओड़ो, बालियोड़ो, बाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बालीजणौ, बालीजबौ—कर्म वा० ।

बाळथ—सं. पु.—श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)

बालम—१ देखो 'बालम' (रू. भे.)

उ०—१ हेटै दुसमण हाथी रै हौदै मरियौ पती नै देख बीर स्त्री कहै बारी बालम बारणै जाऊं धणी री वाह हय वाहने बारणै । —बी. स. टी.

उ०—२ कहै कुमरी नैं हो ताहरौ भाग्य फल्यौ । मन मांनीतो हो बालम आयो मिल्यौ । —वि. कु.

बालमकाकड़ी—सं. स्त्री.—लम्बे आकार की एक ककड़ी विशेष ।

रू. भे.—बालमकाकड़ी ।

बालमियौ—देखो 'बालमियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बालम' (अल्पा, रू. भे.)

बालमिक, बालमीक—देखो 'बालमीक' (रू. भे.)

उ०—देवी बालमिक व्यास रुपे तूं कर्त्ता । देवी रांमायण पुराणौ भागवंत्त । —देवि

बालर—सं. पु.—हरिण, मृग ।

बालरकाकड़ी—सं. स्त्री. [सं. वल्लूर-कर्कटी] रेगिस्थान में होने वाली एक ककड़ी विशेष । (ड. र.)

बाळलियौ—देखो 'वाळलौ' (अल्पा., रू. भे.)

बाळलौ—सं. पु.—स्त्रियों के गले में पहनने का हंसुली के आकार एक आभूषण ।

रू. भे'—बाळलौ ।

अल्पा.—बाळलियौ, वाळलियौ ।

बालव—सं. पु. [सं. बालव] फलित ज्योतिष में दूसरा करण जिसमें शुभ कर्म वर्जित नहीं है ।

रू. भे.—बालव ।

बाळस—देखो 'बाळस' (रू. भे.)

बालहउ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—संदेे आतीस सांभळी रे, भरम पड्यउ भरतार । एहनउ अनेरउ बालहउ रे, मूंकी दडाकार । —स. कु.

बालहलो—सं. स्त्री. [स. वल्ल फलिका] लता की फली ? (ड. र.)

बाळहौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—बळबळती रेत रै माथै ढाळोढाळ पांणी रळकण लागो । सूखा बाळहा खाळा जीवण सांचरतां ई भरणाटै दौड़ण लागा । —फुलवाड़ी

बालहौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम सालूरां सरवरां, जिम धरणी अर मेह । चंपावरणी बालहा, इम पाळीजइ नेह । —ढो. मा.

उ०—२ माहरा बालहा, ताहरी न तजुंलार तूं हीयड़ा नुं हार । तूं यौवन सिणगार, तूं मोमी भरतार । —वि. कु.

उ०—१ मदन मंजरी बेटी मुझने बाल्ही रे, त मरिली वर जोइ।
—श्रीपाल रास

(स्त्री. बाल्ही)

बाला—म. स्त्री —१ पवार वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

२ वस्त्र विशेष।

उ०—रतन कवच झाइल मकबल प्रगन माउमा उरमाला बाला पटुला बाकमा घनर्वेलि कममवेनि। —व. स.

३ वृद्ध व्यक्तियों द्वारा ममुराल में स्त्रियों के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द विशेष।

२ देखो 'बाला' (रू. भे.) (व. म., अ. मा.)

उ०—नह बाला नह तरणा, ग्रघ परण्या न कवारा।
—केसोदास गाडण

रू. भे.—बाल्हा, वाल्हा।

बालावत—स. पु.—राठोड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

बालिभ - देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—हो बालिभ मइ तुनइ वारियउ, बा' रे, हो जूयटइ रमिबा तू म जाइ। —स. कु.

बालिभि—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—कविन्यातिं कायस्थ वड, बालिंभि विख्यात। पूरुए पद बखतां वीहू थया दह मात। —मां कां. प्र.

बालि—१ देखो 'बाल' (रू. भे.)

उ०—१ कूकड़ा कग कालम्म कन्न, रैवंत जोति दीवा रतन्न। पांगेण गियइ जळ पोथ पथ, मोहइ सरूप धुरि बालि सथ।
—रा ज. सी

उ०—२ गाढव दीह बासणी थाण। बालि मेई बांध्या केकांण।
—का. दे. प्र.

उ०—३ हइ बालि लंभि मोहइ हसत्ति। गढपत्ति जइतसी अउब गत्ति। —रा. ज. सी.

२ देखो 'बाली' (रू भे.)

बालिद—सं. पु. [प्र.] पिता, जनक।

बालिदा—सं. स्त्री. [प्र.] माता।

बालिबध—सं. पु. एक प्रकार का घोड़ा जो उत्तम गिना जाता है।

बालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे)

उ०—बालिम गरथ वसीकरण, बीजा सहू प्रकयत्थ। जिए चडग्या दळ उतरइ, तरुणि पसारइ हत्थ। —ढो. मा.

बाळियोड़ौ, बालियोड़ौ—भू. का. कृ. १ वापस लौटाया हुआ, लौटाकर लाया हुआ. २ वापस लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, अधिकार में किया हुआ. ३ प्रतिशोध लिया हुआ. ४ सामना किया हुआ, रोका हुआ. ५ वापस बुलाया हुआ. ६ घुमाया, फिराया व चक्कर लगवाया हुआ. ७ विदा किया हुआ, लौटाया हुआ, ८ निर्देश किया हुआ. ९ मोड़ा हुआ, बल डाला हुआ. १० खारिज किया हुआ. ११ मिटाया हुआ. १२ झुकाया हुआ. १३ वसूल किया हुआ, लिया हुआ. १४ जेवरा गूंथा हुआ. १५ हवा किया हुआ, पवन डुलाया हुआ. १६ एक स्थान पर एकत्र किया हुआ (पशु)

१७ देखो 'वाळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाळियोड़ी, वालियोड़ी)

बाळी—सं. स्त्री. [स. बाळी] १ कान व नाक का आभूषण विशेष।

प्रत्य.—२ संज्ञा या क्रिया शब्दों के आगे लगने वाला सम्बन्ध बोधक प्रत्यय।

३ देखो 'बाळौ' (पु.) (रू. भे.)

बाली—वि. स्त्री.—प्यारी, प्रिया।

उ०—बोहू सिर दार सीला सूं सवायौ। बाली सासड़लो रौ जायौ।
—रसीले राज रा गीत

देखो 'बाल' (रू. भे.)

उ०—बाळियां—बघइ घरि-घरि प्रहास। ग्रासिया सपूरित ग्रास बास। —रा. ज. सी.

१ देखो 'बाळौ' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'बाली' (रू. भे.)

बाळिवेस—देखो 'बाळीवेस' (रू. भे.)

बालीसा—स. पु.—चौहान वंश की एक शाखा।

उ०—मु लालै रै वैर रा. भाखरसो साहूळोत सूं बो, तिण ऊपर वालीसां री धरती मे रहतौ। —नैणसी

बालीसौ—स. पु.—वालिसा शाखा का व्यक्ति।

बालु—स. पु.—एक शाक विशेष।

उ०—बालु नइ वेलातर, वेऊ वेतस वांणि। बध्रारु वाहलु लीउ, बाउलीउ वखाणि। —मा. कां. प्र.

बालुका—स. स्त्री. [सं.] १ ककड़ी विशेष।

२ देखो 'बालु' (रू. भे)

बाळकाजंत्र—देखो 'बाळ्काजंत्र' (रू. भे.)

बालुकाप्रभा—सं. पु [सं.] एक नरक का नाम।

बाळकायंत्र—देखो 'बाळ्काजंत्र' (रू. भे.)

बाळुचौ, बाळुचौ, बाळूंचौ—देखो 'बाळछौ' (रू. भे.)

वालेय – देखो 'बालेय' (रू भे.) (ह. नां. मा)

वालेसर—देखो 'वालो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ गांव सिधाया ओ मजमो कुण सोवसी ओ राज । थेई ओ मानेतण राणी थेई ओ **वालेसर** राणी । — लो. गी

उ०—२ **वालेसर** हो वली परभातें बात, कहस्युं आइ होसी जीसो जी । दिलीसर हो वांची चीठी वात, सीख करा जावा घरे जी । —प. च. चौ

वालोच–सं. पु.—प्रेम, प्यार ।

वालोत–सं पु. [स्त्री. वालोतणी] चोहान-वंश की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बां. दा. ख्यात)

वालोळ–सं. स्त्री.—सेम की फली जिसकी तरकारी बनती है ।

वाळौ–सं. पु.—१ बरसात में चलने वाला पानी का नाला, जल स्रोत ।

२ नेहरुवा नामक रोग व इसका कीड़ा ।

वि. वि.—देखो 'नारू

प्रत्य. [स. आलुच्] (स्त्री. वाली) ३ क्रिया शब्द के आगे लग कर कर्त्तृवाचकसंज्ञा का अर्थ बोध करने वाला शब्द ।

ज्यूं—करण वाळौ, मरण वाळौ, बोलण वाळौ ।

उ०—मारण वाळा सूं मरण वाळौ वत्तो सूरवीर व्है । मारण **वाळौ** तो कायर ई व्हिया करै पण कोड सूं मरणियौ कायर नी व्है । —फुलवाड़ी

४ संज्ञा, पदार्थ या स्थान-वाचक शब्द के आगे लग कर सम्बन्ध वाचक अर्थ-बोधक शब्द । (ह नां. मा.)

ज्यूं—दूधवाळौ, घर वाळौ ।

उ०—१ साहिजादा अनै रायजादां संगठा, बाधियौ वळै दिखणाद **वाळौ** । —सुभरांम गोड रो गीत

उ०—१ नाडो **वाळौ** तोतक तौ गजब इज रह्यो । आ तौ सूळी चढ़णा बिचै ई सवाई व्ही । —फुलवाड़ी

रू. भे.—आळौ ।

५ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, का ।

उ०—१ उदधि कछवाह **वाळौ** उदक ऊकळै, रूक तण भीम ज्वाळा तणं रोस । —राव दुरजणसाळ हाडा रो गीत

६ देखो 'बाळौ' (रू. भे)

उ०—चमकै बूंदा झमकै वाळा, मोर बुलाक मोती लटकन बाळा । —रसीले राज रो गीत

रू. भे.—बहाळौ, बाळौ, बाहळौ, बाहाळौ, व्हाळौ, वहाळौ, वाळहो, वाहळौ, वाहलौ, वाहल्यौ, वाहाळौ, व्हाळौ ।

वालौ–स पु.—१ पति, खाविंद ।

उ०— तूनै धूप खेवत के हरसंधो, कर हेत । **वाला** बोछड़िया मलै, मनवंछत फळ देत । —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ स्वामी, मालिक ।

३ चुंबन, बोसा ।

उ०—बेटा आगं बाप नै फेर हार मांनणी पड़ी । लुळनै उण रा लिलाड़ माथै **वालो** दियो । —फुलवाड़ी

वि. (स्त्री. वाली) १ प्यारा, प्रिय, स्नेही ।

उ०—१ **वालौ** लागं छं म्हारो देसड़ो ए लो । केम कर जावूं परदेस, वाला जो । —लो. गी.

उ०—२ ज्यां घणूं **वालो** जीवणो, घट तिकां डर व्यापै घणो । महाराजा सूं ध्रम द्वार मांगै, सहर तजि इद्र साह । —रा. रू.

२ मनोहर, मोहक ।

३ मीठा, मधुर ।

रू. भे —बहालो, बालहो, बालौ, बाल्हौ, ब्हालो, वहालौ, वा'लउ, वालहउ, वालहो, वाल्हू, वाल्हो, वाहलउ, वाहलु, वाहलू, वाहलौ, वाहल्यौ, वाह्लु, वाह्लौ ।

अल्पा.,—बालुड़ो, बालूड़ो, वालड़ो, वाहलकड़ु, वाहलकड़ो, वाहिलियौ ।

मह.,—बाल्हेसर, वालेसर, वाल्हेसर ।

वाल्मीक, वाल्मीकि—देखो 'बालमीक' (रू. भे.)

वाल्हम—१ देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—ओ म्हारो झूंपडो लूटनै पुळीजं न्हास जाओ विवेक राख नै, **वाल्हम** जो म्हारो पती आय गयो तो अड़ब-अड़ब रुपीयां रो कर एक एक तिणखलो ही वेचसी । —बो. स. टी.

२ देखो 'बालम' (रू. भे.)

वाल्हा—देखो 'वाला' (रू. भे.)

वाल्हीक–सं. पु. [सं.] १ भारत की उत्तर-पश्चिम की सीमा पर स्थित एक प्राचीव जनपद । (मभा.)

२ आधुनिक बलख का नाम ।

३ बलख देश का घोड़ा ।

४ केसर ।

५ हींग ।

६ एक गंधर्व ।

रू. भे.—बालिक, बाल्हीक, बाहलीक, वाहलीकण ।

वाल्हौ—देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—तुम्ह थी कुण मुझ नइ वाल्हुँ, तु नउ गुण हिज आगि माल्हू हो।
—वि कु.

वाल्हेसर—देखो 'वाल्हो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ **वाल्हेसर** माधी मानि नै तू अनरगामी, मानि नैं मिवगनि गामी, बीनतडी मुझ मानो वा। —प. च चौ

उ०—२ प्रीतडिया न कीजइ हो नारि परदेसियां रे। खिण-खिण दाझइ देह, वीछडिया **वाल्हेसर** मलवो दोहिलउ रे। मालइ मालइ प्रथिम, मनेह। —स. कु.

वाल्हो—देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—१ है नीला मो पहली जुद्ध मे कट पड़ण री उतावळ थने नही करणी हो म्हैं थने घणा **वाल्हा** करा, लखाय पाळियो हो सो म्हने मरण देनै पाछणो होयनी। —वी स. टी

उ०—२ गायण दाम स्याम भणे ग्रवसर मन भाणो। घट **वाल्हो** आपरो किं पर धूघट ताणो। —रा. रू.

उ०—३ ऊंसागद, बारट ग्रागधे, भल गुण थारा ब्यास भणे। वालमीक नू ना ग्रीन **वाल्हो** पीरदास ग्ररदास पणे।
—पी ग्र.

उ०—उणरा लिलाड़ माथे लुळने **वाल्हो** दियो। —फुलवाडी

उ०—५ भूज भरिनै भेटाइ, मिळण्यू जदि मन मेळवा। **वाल्ही** साइ वेलाइ, जनम सफल गिणस्यू 'जमा'। —जसराज

उ०—६ **वाल्ही** नै वलि विनय वहै, गुण सग्रह म्हारा लाल। वहै धरम धमाई जेह जगत म जस लहै म्हारा लाल। —स्रीपाल रास

(स्त्री. वाल्ही)

वाव—स. स्त्री [स. वात] १ पवन, हवा।

उ० १ सनत भाव वेग **वाव** धाव पाव चंचळं। मही कपाळ नीठ पोर, पीठ कोम आकुळं। —रा. रू.

उ०—२ सेना लोगे मही वाव, राज रथ पंखा राव। मेंगळां ऊरध मइ, सेसं ग्राठ भोत सइ। —गु. रू. ब

२ ग्रपान वायु।

उ०—गिलियारिया खेला, तनक सी तान, किरकाट्या सा रग। कागदी जवान, वचन ना कहाव ऊट का **वाव**।
— दुरगादत्त बारहठ

३ पताका, ध्वजा।

उ०—**वाव** फरूकै वेत वळैन वापरै। पांणा चढिया किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोर दान बारहठ

४ देखो 'वावी' (रू भे.)

उ०—१ आसामी हजार ४००० जहर हुवो। सरोवर, कुवा, **वाव** एतला माहे सू बाळक ३००० आळ नखावै काढिया। —नैणसी

उ०—२ देवी देव जाळंधरी सत दीर्घ, देवी कंदरं सखरं **वाव** करै। —देवि.

रू. भे.—बाव।

वावकूंडियो, वावकूंडो—देखो 'वायकूंडियो' (रू. भे.)

वावड़—देखो 'वावड़' (रू. भे.)

वावडणो, वावड़बो—देखो 'बावडणो, बावडबो' (रू. भे.)

उ०—१ वाह वाह 'कुमळा' लघु वेसां, 'हरा' सुतन भेळै वरहास। 'अभा' गुडळ दुरदां आवडीयो, **वावड़ियो** रगीयां बांणास।
—ठाकुर कुसळसिंह रो गीत

उ०—२ ताहरां कह्यो— थे मोनू कोई द्रव्यवत **वावड़ो**।
—सयणी री वात

उ०—३ ताहरा ऊदैरी मां नू बोलाई। कह्यो—वीरम **वावडो** नही तर उदै री खाल कढ़ाऊं छूं, ग्रर भुस भराऊ छू। —नैणसी

वावड़णहार, हारो (हारी), **वावड़णियो**—वि०।

वावड़ियोड़ो, वावड़ियोडो, वावड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

वावडीजणो, वावडीजबो—भाव वा०।

वावड़ियोडो—देखो 'बावड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री वावड़ियोड़ी)

वावड़ी—देखो 'बावडी' (रू. भे.)

उ०—गढाळ सहर गढ कोट बाजार पोळि पगार बाग **वावडी** बगीचा कूपा सरवरा री बडां पीपळा री छिबि सहर री पाखती विराजि नै रही छै। —रा. सा. स.

वावचो—देखो 'बापचो' (रू भे.)

वावणो, वावबो—१ देखो 'बावणो, बाववो' (रू. भे.)

उ०—१ मूळ मोलता मिनख, मिरड़िया घणां घुमावै। हळ **वावतड़ो** वेर फोगडा बीज तुपावै। —दसदेव

उ०—२ रावळजी तो पूसता छै नै नीबो तो मोटीयार छै। कदेस भालो पकड़ने पूठे। रावळजी नै **वावै** तो म्है किसूंण करां।
—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—४ मुघ खेत्र समकित बीज **वावइ**, संघ ग्रानंद ग्रति घणो। जिन सिघ सूरि करउ **चउमासउ**, स्रावण मास सोहांमणो।
—समय सुंदर

उ०—५ सचित पूरव करम नां, फल भोगवीइ पुण्य। जिहां **वाविउं** तिहा ऊगमइ, ग्रण-वाविउ तिहां सून्य। मा. कां. प्र.

२ देखो 'बाजणो बाजबो' (रू. भे.)

उ०—१ घर लुकट मुकट वन वीथिया **वावजे**। बांसरी **वावजै** ग्रहीरां वास। —बां. दा.

उ०—२ मतसागर उनमत्ती, वीणां सुर मधुरे वावत्ती। वाहण हंस विगत्ती, साय सुप्रसन हुम्रो सरसत्ती। —गजउद्धार

उ०—३ डफ ताल चग म्रदंग वावत, उडावतहि गुलाल। इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि बेहाल। —वि. कु.

उ०—४ वरसिंघ बदि हूंता छडावि, म्रजमेरि कोटि नीसांण वावि। —रा. ज. सी.

वावणहार, हारौ (हारी), वावणियौ—वि०।

वाविम्रोड़ौ, वावियोड़ौ, वाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वावीजणौ, वावीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

वावदूक-वि. [सं.] १ बातूनी, बकवादी।

२ वक्ता।

३ वाक्पटु।

वावपोटी-स. स्त्री.-घोड़े का एक रोग जिससे उसके पिछले पैरों में नरम ग्रंथियां हो जाती हैं। (शा. हो.)

वावरणौ, वावरबौ—देखो 'वापरणौ, वापरबौ' (रू. भे.)

उ०१ सुरवीर दोई साथ, बोळ चोळ लूयबाथ। वावरंत रूप वीज, खंजरा कटार खीज। —सू. प्र.

उ०—२ कृपावत पहिलै म्रणी, वावर खग्ग करग्ग। 'भीमाजळ' सारां मुहर, पड़ियौ धारा लग्ग। —रा. रू.

उ०—३ विसन ममरजै मीठी वांणी, वावरजो घन देह वडांणी 'म्रोपा' म्रा ऊपर म्रोचांणी, परबत हूंत विछूटा पांणी। —म्रोपौ म्राढौ

उ०—४ जउ दातार तउ वलि करण म्रवतार, जउ लक्ष्मी न वावरइ तउ प्रच्छन्न पुण्य करइ, जो उणु बोलि तो भोलउ...। —व. स.

उ०—५ श्री संघ मन पुगि रलीए, गुण गाइ गोरडी सवि मिलिए। दक्षीण देव सिरि महलावइए, साहु सुपत्र खेत्रे धन वावरइए। —सिवचूला गणि

वावरणहार, हारौ (हारी), वावरणियौ वि०।

वावरिम्रोड़ौ, वावरियोड़ौ, वावरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वावरीजणौ, वावरीजबौ—कर्म वा०

वावरवौ-वि.—वरदी सहित।

उ०—माहाराजा जसवतसिंघ सात हजारी म्रसवार तिण में पांच हजार दोसपा सेमपा, दोय हजार वावरवी २५८० म्रासांमी ५ कासमखांन वगैरै। —नैणसी

वावरियोड़ौ १ देखो 'वापरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बावड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वावरियोड़ी)

वावरी—देखो 'बावरी' (रू. भे.)

(स्त्री. वावरण, वावरणी)

वावळ, वावल-सं. स्त्री. [सं. वायुगुल्म, वातगुल्म] १ प्रचण्ड-हवा झंझावात 'म्राधी'।

उ०– वावळ म्रागै वीझणौ, की पावै सनमांन। तूझ रीझ म्रागै तिसौ, 'देवा' जग रौ दांन। —बां. दा.

२ म्राधी।

उ०—सिर सिधुर सेरखां, म्रोप म्रंबर सिर लग्गा। वरड वडा ऊपरा, वधै तुरही सुर वग्गा। कायमखान तरीम जोड़ चढ तीन हजारी। म्रलीयार म्रगवार हुवौ, गज सिंघ प्रहारी। म्रारुहै गयंद म्रबदल म्रनी, सैद महाबळ सह्ळा। हाहुळि म्रसंख मिळि हल्लिया, जांणक वावळ वह्ळा। —रा. रू.

३ वायु, हवा, समीर।

वि.—१ मस्त, मदोन्मत्त, उन्मत्त।

क्रि. वि. —२ म्रोर, तरफ।

उ०—'केहर' साहा भंजणां, सक राखण कथ्थां। विहुं वावळ लागा म्रड़े, भुज डंड समथ्थां। —द. दा.

रू भे.—बउल, बाउल, बावल, वाउळ, वावल्ल।

म्रल्पा..—बाउलउ, वाउळउ, वाउळि, बाउळी, वाउळी, वावळि, वावळी वावळो, वावलो।

वावळि, वावळी—१ देखो 'वावळ' (म्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ एक मोर सारत्ति धोर धूवा रवि ढबर। ज्यौ वावळि वादळ विमाळ म्रोपै मग म्रंबर —रा. रू.

२ देखो 'बावड़ी' (रू भे.)

३ देखो 'बावळी' (रू. भे.)

४ देखो 'बावळौ' (स्त्री.)

उ०—२ जोव जडाग म्रभनमी 'जैतौ,' सदा चलै म्रापरै सुभाय। लख दत दीयै भाजगो लाखा, बैंचौ वावळी खुदाय। —तेजसी खिड़ियौ

वावळौ, वावलौ—१ देखो 'बावळौ' (रू. भे.)

उ०—१ मुग मुग मीठी बोलणत, वैठ न वैरी पास। दही भरोसे वावळा, खायै कदै कपास। —म्रज्ञात

उ०—२ धारण मलाह चित नह धरै, म्रारण करण उतावळौ। वावळा गयद ममता विधी, वीफरियौ रिण वावळौ। —सू. प्र.

उ०—३ वप गिगन वावळौ कुंभ वार, जुध गिणैं सती म्रोफळ जुंझार। —पे. रू.

(स्त्री. वावळि, वावळी)

२ देखो 'वावळ' (म्रल्पा., रू. भे.)

वावल्ल—स. पु.—१ एक आयुध या शस्त्र विशेष ।

उ०—बाण चक्र नाराच अर्द्ध चंद्र असिपत्र करपत्र क्षुरप्र क्षुरिका करवाल कुन्त सल्ल **वावल्ल** भल्ल । —व. स.

२ देखो 'वावळ' (रू. भे.)

वावसू-स. पु. [स. वाह वस्] १ दूत, चर, संदेश-वाहक ।

उ०—माग्हा दौड़े **वावसू**, घोडो डाक प्रमाण । माह अकब्बर नयरा सू खबर लियण सुरताण । —रा. रू.

२ जासूस ।

उ०—१ इतरै धम खड़ आविया, साथ **वावसु** मताव । अकबर कहियो आवने, वहियो साह निवाब । —रा. रू.

उ०—२ तठा पछै रावळ देवराज धार ऊपर कटक कियो, सु पवारा रा **वावसू** था त्यां रावळ चढ़िया री खबर दी। —नैणसी

रू. भे.—वासम ।

वावार देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—'पदम' गुण प्राणळी दाखिया पधारण, वधारण खड़ग घड़ करण **वावार** । —गोरधन गाडण

वावि, वाविय- देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—१ जिण वन माहि मालती, वास-विहूणी **वावि** । तिम घट माहक पापीड, एवू कामि न आवि । —मा. का. प्र.

उ०—२ कूआ **वावि**, सरोवर घणा, विवहारीयानी नही कोई मणा तिण नयरी भोगिक नरनाह जिणवर आण धरै उच्छाह । —श्रीपालरास

उ०—३ गढ मढ मंदिर पोळि प्राकार **वावि** सरोवर कूआ खाइ आराम वन राइ त्रिभुंइया त्रिभूइया आवास । —व. स.

उ०—४ मुहि मुहि किय अड दन दतहि दनहि अड वाविय । **वावि**-वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न (ना) विय ।

—प्रभयतिलक यति

वाविवोड़ो—१ देखो 'वावियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'वाजियोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. वाविगाड़ी)

वावी—देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ० सरोवर तटाक हौद, तीरथ प्रमाण ए । **वावी** अनूप कूप वाई, नीभरं निवाण ए । —गु. रू. ब.

वावीसेक—देखो 'बाईसेक' (रू. भे.)

वावु, वावू—देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ चढ़ि परनाळिया, डूगर दीन्हा पूठि । लोजै **वावू** हथ्थड़ा, पूठि भरेसी मूठि । —ढो. मा.

वावेळो, वावेलो—स. पु. [फा. वावैला] १ कोलाहल, शोर गुल ।

२ रोना-पीटना, त्राहि-त्राहि ।

३ चिल्लाहट ।

वावोकळो—सं. पु. [स. वाताकुल्य] वह स्थान जहाँ खुली हवा आती हो।

वावोड़—देखो 'वावड' (रू. भे.)

वावो—स. पु. [स. वपनम्] १ रबी की फसल में बोया जाने वाला बीज ।

२ रबी की फसल की बोवाई या जुताई ।

वाव्य—देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—**वाव्य** कुवा सरोवर जिहा । —धरम पत्र

वासत—स. पु. [अ. वार्सतः] १ ऊट ।

२ हाथी ।

रू. भे.—वासत ।

३ देखो 'वसत' (रू. भे.)

उ०—देवी रूप **वासंत** रे वन्न राजे। देवी आग रे रूप तूं वन्न दाझे । —देवि

वासती—स. स्त्री.—१ एक वर्ण वृत जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते है और ६, ७, ८, व ९ वां वर्ण लघु होता है । शेष सभी वर्ण गुरु होते हैं ।

२ देखो 'वसंती' (रू. भे.)

वासंदर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ रवंद । का **वासंदर** सेवियइ' कइ तरुणी कइ मद । —ढो. मा.

वास—सं. पु. [सं. वास.] १ रहने की क्रिया, निवास, आवास ।

उ०—१ काळ है, अदेस नां सदेस औ करयौ । देसतं बिदेस **वास** त्रासनं दरयौं । —ऊ. का.

उ०—२ हर कोई जीव धालिया हाळो, **वास** सदा जिण मांय वसै । परठण कज रोटी कपडा री, जिको कमावै भोग जिसै ।

—ओरो आढो

उ०—३ लोग मारो तामरो बडो दिलावर पण धूहड गवार लोग सो उघाडो ही जे रहै । पंछी ज्यू **वास** रहै ।

—दूलची जोइयेंरी वारता

२ विश्राम, आराम ।

उ०—१ पण पाबू स्त्री री मुख ही न दीठो नै तरवारां रै धारातीरथ में स्नान कर सती सहेतां सुरग **वास** कीधो ।

—वी. स. टी.

उ०—२ हे प्रभू इण आराम री ठौर रे बणावणे वाला नूं वकुंठ री **वास** देय आराम दीजे । —नी. प्र.

३ रहने का स्थान, डेरा ।

उ०—१ ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पंखी ग्रह वास । उडियर पाछउ भावियउ, माळवणी कइ पास । —ढो. मा.

४ घर, गृह । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ म्हारै तो माता भौ हीज डायजो है म्हनै तो सुख रै वास परणाजे-अरथात ऐडो सुवस होवै किण सूं ह लड़ं न भिड़ं गरीब होवै तो सुख है । —वी. स टी.

उ०—२ अबै राघवदे सासरै गयौ । दिन पांच रह्यौ । भ्रांणौ करि छिपियं भायौ । तिकौ जैतसीजी रै वास वसियौ ।

—जैतसी ऊदावत री वात

५ मोहल्ला ।

उ०—१ भ्रणंद पढीयां रो वास १ रायसळ रो वास १ अचळा जसड़ रो वास । —नैणसी

अल्पा.—बासड़ियौ, बासेड़ौ, वासड़ियौ, वासड़ौ ।

६ जगह, स्थान ।

उ०—नहीं तूं अन्न नहीं तूं भ्रास । नही तु बस्त्र नही तूं वास । —ह. र.

७ शरण, पनाह, आसरा ।

उ०—१ ताहरां हरदास उण वगत बीरमदेजी रो वास छाडियौ । नागोर नूं हालिया, सरखेलखां रै वास रहण नूं । —नैणसी ।

उ०—२ पछै कितराहेक दिने राठौड तेजसी रांणा उदयसिंघ रै वास वसीया । —राव मालदेव री बात

उ०—३ सहर अजमेर वडो गढ । तेथ राजा वीसलदे चहवांण राज्य करे । वीसलदे रे वास हरराम चहवांण रहै ।

—देवजी बगड़ावतां री बात

८ पास मे रखने या बसाने की क्रिया ।

उ०—ताहरा राजा हरराम नुं कहै । हरराम तु भा घरै वास । घरै ले जाह ज्युं थारो दुहुवा रो पण रहै ।

—देवजी बगड़ावता री बात

६ गध, बू ।

उ०—१ अबूझ बाळक नै तो जांणै प्रीत री वास भ्रावै ।

—फुलवाडी

उ०—२ जिण मारग केहर बुवो, लागी वास निगाह । ते खड ऊभा सूखसी, नह चरसी हिरणांह । —अज्ञात

१० सुगध, महक ।

उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणं भ्राणंद चहक्की । संग वेळ सूरमा, वास भ्रगरेळ महक्की । —रा. रू.

उ०—२ सुहड़ा सब भ्रंग चग दिग्गबर' राइ भ्रगण सोभ ए । मधुकर गुंजार डबरी सांमळ, परिमळ वास लोभ ए । —गु. रू. ब.

उ०—३ जावसी देह सोमा न जावसी । वास रह जावसी फूल वाळी । —भोखजी रतनू

अल्पा.,—बासड़ी, वासड़ी ।

११ वस्त्र, परिधान, पोशाक ।

[सं. वाश] १२ गर्जना, दहाड़ना क्रिया ।

१३ चिल्लाहट ।

१४ भूंकने की क्रिया ।

१५ गुंजन, गुजार ।

१६ बुलावा, पुकार ।

१७ वस्तु, पदार्थ ।

१८ जागीर ।

रू. भे —बांस, बास, वासइ, वासई, वासउ, वासि ।

अल्पा.,—बासड़ी, बासड़ो, वासड़ली, वासड़ो ।

वासइ, वासई, वासउ—देखो 'वास' (रू. भे.)

उ०—१ चितामणि निव्रत्ति करिवा भ्राविउ, कल्पतरु जीणइं कारणि वेस्या तैं कांई भक्ति प्रकासइ, जीणइं पिरायुं मन वासइ ।

—व. स.

उ०—२ करहा तो बेमासइउ, मो विण-सारघा काज । भ्रंतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ भ्राज । —ढो. मा.

उ०—३ बाबा म देइस मारुवां, सूधा एवाळांह् । कंधि कुहाड़उ सिरि घड़उ, वासउ मभि थळांह । —ढो. मा.

वासक—स पु. [स. वासकं] वस्त्र, कपड़ा ।

रू. भे — बासक ।

वि. [सं. बासक] १ बसने वाला, निवास करने वाला ।

२ बसाने वाला, आबाद करने वाला ।

[स. वाशक] ३ दहाडने वाला, गर्जने वाला ।

४ ध्वनि करने वाला ।

५ देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—बद्री वासक व्यास वेदा-उग । परम निरंत मुकति सद पावण । —ह. र.

वासड़ो देखो 'वास' (९. १० अल्पा., रू भे.)

वासकसज्जा-स. स्त्री. [स.] वह नायिका जो अपने नायक से मिलने के लिये सज धज कर तैयार बैठी हो ।

रू भे —बासकसजा ।

वासकेट-स. स्त्री [अ. वेस्टकोट] बिना आस्तीन व बिना गले की पट्टी की एक प्रकार की फतुही, जाकिट या बडी जिसके आगे-पीछे के कपड़े में प्रायः भेद होता है ।

वासग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—१ रतन मे राखड़ी बेगां बासग नही, मूभरा बाहरी लहक मांहे । स्यालि नो विरलो नायिका निरखी, प्राज प्राल्यंगन करन कोहे । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ हाली-नगारो कर रह्या छै, मार्गं रा जुदा केमां रा छूटा छै । सु किसा नजर प्रावै जाणै काळा बासग निरै छै ।

उ०—३ गगन तट मसळियै राव पागाळ बासग । मान लोक नं राय कहा रय योत्र बासग । —नैणसी

उ० ४ मैंना नगी गैन प्रवताळी, माथा मुहै पाड़िया खळ । 'जग गजान' ईंद रा जाता, नाग्या बासग भर जुगळ ।
—तेजसी खिड़ियो

बासग नाग - देखो 'बासुकि'

उ० गोग वणी रा गारेळ, मिरणानैणी जी राज । चोरी तो कढ़ियै बासग नाग तो गी म्हारा राज । - लो. गी.

बासगेम—देखो 'वासगी' (मह., रू भे)

उ०- नाद पाना बेरड़ा रूपगा राग नाही लुवै, मनानना दीधा त्याग टाळा तमीर । बासगेम नाग 'मघा' केड रा 'कुमाळ' बाणी, नाणं नोज गांगाम स्रवादा मत्रा लोक । —कविराजा करनीदान

बासड़लो—देखो 'वास' (६ १०) (ग्रल्पा., रू भे.)

उ० कहा बसियो कान्हा गातड़लो । प्रां तेरे मुख बिच प्रावे मोहे बासड़लो । —मीरां

बासड़ियो—स पु [स. वास+रा प्र. ड़ियो] १ गांव के एक मुहल्ले (वास) का जागीरदार ।

उ०- कोई रावो गामेती बासड़ियो तथा घररी धणी रजपूत मरे, माल्यार के काम प्रावै तो उणरी वायर गाधरणो करै ।
जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ देखो 'वास (ग्रल्पा., रू. भे)

३ देखो वासो' (ग्रल्पा , रू. भे)

रू भे - बासड़ियो ।

बासड़े—क्रि वि. --निकट, समीप, नजदीक, पास ।

बासड़ो - देखो 'वास (ग्रल्पा., रू. भे)

उ० - वेरी नाडै बासड़ो, सदा लागवन्त लाग । तो के दिन पावणो, तूंडो भाग सुहाग । -- बां स

बासण—स.पु. [स. वासन] १ सुगन्धित करने की क्रिया भाव या अवस्था

२ सुगन्धित या सुवासित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

३ निवास करने या बसने की क्रिया ।

४ घर, मकान ।

५ कोई पात्र, टोकरा, पेटी आदि ।

उ० - १ ताहरां वेलदारां ऊंडा खिणनै काढिया । देखै तौ भूंजाई रा बासण छै । चरवा, देगां, कुंडिया थाळियां । —नैणसी

उ० - २ नठा उतरायंत ओडयां नै हुकम हुवो छै । भुजाई रा बासण तयार कर राती नाडी चालज्यो । सू बासण तयार कीजे छै
—रा. सा. स.

उ० -- ३ थाल कचोला बाटला, बासण चरवी चंग । सग गोखू-मादि दियै, प्रथवी रतन सुरंग । —वि. कु.

६ वस्त्र परिधान ।

७ चादर, गिलाफ ।

८ आच्छादन ।

९ ज्ञान ।

रू भे —वासण ।

बासणो, बासबो --१ सुगंध लेना, सूंघना ।

उ०—कड़िया मुंवे पाणी मे पैस पगां रा नख भांखे छै, दूध रै मोळावै त्रिलाव बासीजे छै । ऊपर कूजां, सारसां गहकनै रह्यो छै ।
—रा. सा. सं.

२ देखो 'भासणो, भासबो' (रू. भे.)

उ०—गोबर कीडउ किसिउ भ्रमर जिम रण झणइ, धवलउ वक किसिउ राजहंस जिम बालइ, काग किसिउ कोकिला जिम बासइ, मयूर जिम किसिउ टेलि किगाइ । —व. स.

३ देखो 'बासणो, बासबो' (रू. भे.)

उ०—देखी किणा एक भवि मुनि ध्यान जो, निंदा कीधी रै तेहनी घणां घणी रै लो । तसो मीनक नी परि म्लान जो, मल जिम बासै गंध देही तणी रै लो ।
—वि. कु.

४ देखो 'बसाणो बसावो' (रू भे)

उ०- ताहरा ईयै बाभण एक जाटनै फुटरी देखिनै टाळि लीधी । बामण स्रोलो हुतो तिकै प्रापरानै घर बासी ।
—देवजी वगड़ावतां री बात

बासणहार हारो (हारी), बासणियो —वि० ।

बासिग्रोड़ो बासियोड़ो, बास्योड़ो - भू० का० कृ० ।

बासीजणो बासीजबो —कर्म वा. ।

बासत -- स. पु. [स.] गधा ।

बासतपत बासतपति-स. पु. [सं वास्तोपति] १ इन्द्र ।

२ बासतपति ।

बासते बासतै -देखो 'वास्तै' (रू भे)

उ०—१ देस सिध ऊनड दियो, दीधो सिर जगदेव । 'बांका' जस रै बासतै, दाता न कू ग्रदेव । —बां. दा.

उ०—२ ताहरा सुमरो-साळा कहण लागा—ये बाहिर निकळो नहीं, घर माहै बैठा रहो सो किसै बासतै । —नैणसी

उ०—३ तांहरां हरराम कहै। माहाराजा मो मैं दोस कोई छै नहीं। स्रीपरमेस्वरजो जाणं छै हुं भिसं बासते ईयं नुं ले जाऊ।
—देवजीबगड़ावतां री बात

बासवो, बासदे—सं. पु. [सं. विश्वे-देव, वैश्वानर] १ यज्ञ का अधिष्ठाता, अग्नि देव।

२ अग्नि, आग।

उ०—१ रामजी री माळा रै **बासवी** लगाय घणी सू छांनै बचायोड़ी गूंजी हाथ में राखती तो म्हनै ऐ दिन नीं देखणा पड़ता।
—फुलवाड़ी

उ०—२ खाफरां जइत वाहइ खड़ग, **बासदे** जांणि बन्ने विलग्ग। ऊतरा सेनि 'जइतउ' अबीह, सीधरै पईठउ जाणि सीह।
—रा. ज. सी.

रू. भे.—बासते, बासतै, बासदी, बासदे, बासदेव, बास्ती, बास्ते, बाह्दी, बसदे, बसदेव, वाम्रदी, वाम्रदे, वामदेव।

बासदेव—१ देखो 'बासदे' (रू. भे)

उ०—ताहरां खापरै नीचै **बासदेव** जगायो, खांड रा काबा माहै घात पांणी घातियो। —राजा भोज अर खापरा चोर री बात

२ देखो 'वासुदेव' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—वसदेव पिता हुआ तेंके घर बेटो हुओ तो **बासदेव** स्रीक्रस्ण हुओ। —वेलि टी.

बासदेवा—देखो 'वासुदेवा' (रू. भे.)

बासना—सं. स्त्री. [स] १ अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना, चाह। (ह. नां. मा.)

२ जन्मान्तर के जमे हुए संस्कारों से उत्पन्न मानसिक दुःख-सुख के भाव, विचार।

उ०—दादू देह यतन कर राखिये, मन राख्या नहीं जाइ। उत्तम मध्यम **बासना**, भला बुरा सब खाइ। —दादूबांणी

३ भावना, ख्याल, धारणा।

उ०—प्रभणंति पुत्र इम मात पिता प्रति, अम्हां **बासना** वसी इसी। ग्याति किसी राजवियां ग्वाळां, किसी जाति कुळ पांति किसी। —वेलि.

४ न्याय के अनुसार देहात्मक बुद्धि जन्य मिथ्या संस्कार, विचार।

उ०—विमळ हुवै मन मिटै **बासना**, रहि एकत समरिये राम।
—ह. ना. मा.

५ कल्पना।

६ स्मृति।

७ ज्ञान।

८ दुर्गा का एक नाम।

९ अर्क नामक वसु की पत्नी का नाम।

१० भोग-विलास, विषय।

११ गंध, बू।

उ०—१ तद राजा सारा सरदारां ने कही—या किसी **बासना** है। जद सारां ही कही, महाराज या तो सांगै हो मछी री बासना आवै है। —साहूकार री बात

उ०—२ तिहां वली सबळो सिंह विकूरबी रे, ते कहे मैं दीठो इक सींह रे। मांणस नी लेतो **बासना** रे, आवै छै इण वार अबीह रे। —वि. कु.

१२ सुगंध महक।

उ०—१ फूला मर्भ **बासना**, तिल तेल विलोये। —केसौदास गाडण

उ०—२ पछै ढोलोजी ने मारवण ढोलीयै पोढीया छै। तिण समै मारवणीजी रै **बासना** कस्तूरी सरीखो बास रही छै। बिहुं जणा सुख में पोढीया छै। —ढो. मा.

रू. भे—बासना।

बासनी—सं. स्त्री.—शराब, मदिरा।

वि. स्त्री.—निवास करने वाली, बसने वाली।

उ०—देवी कामही लोचना हांम कांमा। देवी **बासनी** मेर माहेस वांमा। —देवि.

बासन्न—वि.—१ सुगंधित, सुवासित।

२ देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—**बासन्न** पीत विचार सरवर। धनुख सायक धार।
—र. ज. प्र.

बासपुज्ज, बासपूज, बासपूज्य—देखो 'वासुपूज्य' (रू. भे.)

बासमती—सं. पु.—सफेद चावलों की एक जाति व इस जाति के चावल जो ऊंचे दर्जे के व स्वादिष्ट होते हैं।

उ०—छूटा चावळ राधण रै पगां **बासमती** मंगायजै छै।
—रा. सा. सं.

बासर—सं. पु. [सं. वासरः, वासर] १ दिन, दिवस। (अ. मा.)

उ०—१ हुवै जेम हरहंम सूं **बासर** कमळ विकास। एम बरम जस व्है उभै, दत सूं बांकीदास। —बां. दा.

उ०—२ **बासर** चित्त न वीसरइ, निसि भरि अवर न कोइ। जइ निद्रा-भरि भोगवूं, तउ सुपनंतरी सोइ —ढो. मा.

उ०—३ इम **बासर** ऊगता डाक बागी दसदेसां। जुध जीता 'अगजीत' मुरां जवनेस नरेसा —सू. प्र.

२ प्रातः काल, सवेरा।

रू. भे.—बासर, बासुर, बासुरी, वासुर, वासूर।

बासरकर, बासरकिरण—स. पु. [स. वासर + कर, वासरः + किरणः] सूर्य, भानु।

रू. भे.—वासरकर, वासरकिरण।

बासरमणि—स. पु. [स.] सूर्य, सूरज।

बासव—स. पु. [स वासव] १ इन्द्र का एक नाम, इन्द्र।

(ना. डि को., नां मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ व्रज राखियौ विरोधी बासव। वडौ प्रवर कृरण विसन वड। —ह. नां. मा.

उ०—२ दीजै ओड किसी न्रप दौलत राज विभौ प्रवरेव। मान मुला भुगतै दिन माजा, बासव हूंत विशेष। —र. रू.

उ०—३ इण बै विधि बासव विध विध भजै, इणरी महिमा कहै महेस। —पी. ग्रं.

२ महादेव, शिव। (ना डि. को)

वि. [स. वासव]—इन्द्र, का, इन्द्र सम्बन्धी।

रू. भे.—बासव, बासव, वासिव।

बासवांणो—स. पु. [स. वस्] निवास स्थान, निवास।

उ०—मेहलौ गाम मांह पडायो, रावळा घरां रा खेत किया महैर साहो दोराणी कन्है बासवांणो कीयो थो। कहै छै कदक तुठा हुआ था। —नैणसी

बासवि, बासवी—स स्त्री [स. वासवी] उपरिचर वसु की कन्या सत्यवती (मत्स्यगंधा), व्यास की माता। (डि. को.)

स. पु.—१ अर्जुन। (डिं को)

२ इन्द्र पुत्र जयन्त।

रू. भे.—वासवी।

बासवीदिसा—स पु. [सं] इन्द्र की दिशा, पूर्व की दिशा।

रू. भे.—वासवीदिसा।

बाससुदुम—सं. पु.—यवन। (नां मा)

बाससुमेर, बाससुमेरु—वि. [सं. वास + सुमेरु] सुमेरु पर्वत पर निवास करने वाला।

स. पु.—देवता।

रू. भे.—वाससुमेर, वाससुमेरु।

बासावळी—स स्त्री [स. वास + अवळी] १ सुगंध, महक।

उ०—१ भवर मोरीजै छै। कूंपळां फूटीजै छै। वणराइ मंजरी छै। बासावळी फूटि रही छै। केसू फूलि रहिया छै। रितिराज प्रगटीयो छै —रा. सा. सं

उ०—२ माहरी पावळी यहा मर मावळां, झीक पड कावळी रोप झंडा। मर गजा खून काडै बिना पावळी, खुलै बासावळी नेण खडा।

—राव ऊदाजी री गीत

२ सुगंधित पदार्थो का समूह।

रू. भे.—बंसावळी, बांसवाळी, बासांवळी, बासावळी, वांसावळी

बासिग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—उठियौ राउ भाटि लागै अंबरि, दोमजि बासिग खांड दहै। जुध सूनौ कुंभ करन्न जगायौ, गोइंददास बाएस ग्रहै।

—गु. रू. बं.

बासिदौ—देखो 'वासिंदौ' (रू भे.)

उ०—भूळ भर रूदियां री रजी सूं भग्वभूरविहियोड़ा भ्रां टपरियां रा बासिदा इण घरनी मायै कोढ ज्यूं रगवगै। —फुलवाड़ी

बासि—स. पु. [स वासि] १ अग्नि देव।

[स. वासि] २ वसूला।

३ कुठार।

४ छैनी।

५ देखो 'वास' (रू. भे.)

उ०—१ साई एहा भीचड़ा, मोलि महूंगै बासि। ज्यां आछन्ना दूरि भौ, दूरि थकां भौ पासि। —हा. झा.

उ०—२ श्रीकस्रगजी जैसे कोई आणि बधाई दे छै। तइसें सोंघा के बासि, अर नूपुर के सबद, आणि बधाई दोन्ही। —वेलि टी.

बासिग देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—१ सिरि वेणी सिरली भ्रमी, जांणइ बासिग नाग। बीहता माटइ बभणइ, कोधु ताहरु त्याग। —मा. कां. प्र.

उ०—२ नान्हड किसनइ नाथियौ, बासिग नाग वडेरौ रे। नास करइ रवि नान्हडौ, अधकार बहुतेरौ रे। —प. च. चौ.

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजान सिलांमति नख सिख सूधो सिणगार वखांणीजै छै। बासिगां सारीखी पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिआरो बणाव वणिनै रहिओ छै। —रा. सा. सं.

बासिट्ठ—देखो 'वासिस्ठ' (रू. भे)

बासिहु—सं. पु.—शिव, महादेव। (डि. ना. मा.)

बासियोड़ौ—भू का. कृ.—१ सुगन्ध लिया हुआ, सूंघा हुआ।

२ देखो 'भासियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बासियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बासियोडी)

बासियौ—वि.—निवास करने वाला, निवासी।

उ०—भुज लगा ऊड़ै नए पोहोर भाराथियां, वासिया सुरग भर कीयां गळ बाथियां। सूर 'सुरतांण' रंग घणा समराथियां, सुज घणा रंग 'सुरतांण' रा साथीयां। —ठाकुर सुरतांण सिंह री गीत

बासिव—देखो 'वासव' (रू. भे.)

उ०—बासिव घर मजलेस, नेस लखि ईस परक्खी । 'धर्म' जिसौ नर प्रवर, राज घर कुंवर निरक्खौ । —रा. रू.

बासिस्टी, बासिस्ठ—सं. स्त्री. [सं. वाशिष्ठी] राजस्थान की बनास नदी का नाम ।

उ०—पंच प्रयुत लय संग दळ, होय किलम हमगोर । कियौ मुकांम उलंघि जळ, खळ बासिस्टी तीर । —ला. रा.

वि.—१ वसिष्ठ का, वसिष्ठ सम्बन्धी ।

२ वसिष्ठ का वंशज ।

रू. भे.—बासिस्टी, बासिस्ठी, वासिट्ट ।

बासींदौ—देखो 'बासिंदौ' (रू. भे.)

बासी—वि. [सं. वासिन्] १ निवास करने वाला, रहने वाला, निवासी ।

उ०—१ नांम तुमारू स्युं प्रछै, किम छोड्या मां बाप । किण नगरी किण देस ना, बासी छौ महाराज । —वि. कु.

उ०—२ प्रळगी-प्रळगी भांय रा बासी प्राप-प्राप री बोली में दाछंट बोलै प्रर सुणणिया दाछंट समझै । —फुलवाड़ी

२ मुहल्ले का, मुहल्ले सम्बन्धी ।

सं. पु.—१ वह व्यक्ति जिसका किसी गांव या कस्बे के केवल एक मुहल्ले पर ही जागीरी सम्बन्धी अधिकार हो ।

२ देखो 'बासी' (रू. भे.)

प्रल्पा.—वासडियौ ।

बासीजवारी—सं. स्त्री.—विवाह के समय दूल्हे को सुसराल की तरफ से दी जाने वाली प्रथम भेंट । (चारण, राजपूत)

रू. भे.—बासीजवारी ।

बासीवड़—स. पु. [देशज] किसी सम्बन्धी या कुटुम्बी के मृत्यु के बाहरवें दिन प्रातः काल स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला रुदन ।

बासु—सं. पु. [सं.] १ जीव, प्रात्मा ।

२ विश्वात्मा, परमात्मा ।

३ विष्णु भगवान का नामान्तर ।

बासुकि, बासुकी, बासुगि—सं. पु. [सं. वासुकिः] १ कश्यप एवं कद्रू के नाग पुत्रों में से एक जो प्राठ नाग राजाओं में से एक गिना जाता है ।

उ०—कांम देव कटारउं बांधइ, बासुगि खाट पहरउ दिइ । —व. स.

वि. वि.—इसकी पत्नी का नाम शतशीर्षा था । देवों व प्रसुरों के समुद्र मन्थन के समय यह मंथनदण्ड की रस्सी बना था । यह शिव के गले पर निवास करता है । त्रिपुरदाह के समय यह शिव के धनुष की प्रत्यंचा व रथ का कूबर बना था । इसके भतीजे का नाम प्रास्तीक था जो एक ऋषि था ।

२ शेष नाग, जो कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक था । यह प्राठ नागराजाओं में से एक माना जाता है ।

वि. वि.—इसे भगवान् का अंशावतार माना जाता है एवं उसके लिए शय्यारूप होकर उसे धारण करता है । इसका निवास स्थान पाताल लोक है । यह समस्त पृथ्वी को प्रपने शिर पर धारण करता है । गंगा के उपासना करने पर इसने उसे ज्योतिष शास्त्र एवं खगोल शास्त्र का ज्ञान दिया था । श्रीकृष्ण जब वसुदेव द्वारा गोकुल ले जाये जा रहे थे उस समय इसने उसकी रक्षा की थी ।

३ एक प्राचीन देवता ।

४ सर्प, सांप ।

उ०—१ प्रावाहन कर बासुकि हि, विक्रम कही सुणाय । ब्राह्मण नूं प्रब हाल हौ, निस्चय देहूं जिवाय । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ कुब्जा नूं करि रूप युत्त, मनसा मम द्रवि थाय । इतरी सुण कर बासुकी, विधा दई बताय । —सिंघासण बत्तीसी

रू. भे.—बासक, बासग, बासिग, बासुकि, बासुकी, बासुग, वासंग, वासग, वासिग, वासिग ।

बासुदे, बासुदेव—सं. पु. [सं. वासुदेव] १ श्रीकृष्ण ।

उ०—१ बासुदेव पिता सुत प्रिया वासुदं, प्रदुमन सुत पित जगतपति । —वेलि.

उ०—२ महासग्रांम रांम रावण तणउ, लवण सागर तणुं, लावण्य तउ वासुदेव तणउं, प्राचारय तप सनत्कुमार तणउ... । —व. स.

उ०—३ भरतेस्वर बाहु बलि प्रापमाहि संग्रांम करइं, बासुदेव बलदेव द्वारिकानउ दाघ ऊवेखइ । —व. स.

२ परमेश्वर, ईश्वर । (ह. नां. मा.)

उ०—रांमकिसन हर नारियण, सचितांनंद गोविंद । बासुदेव बीठळ बिसन, नरहर गोकुळचंद । —ह. र.

३ वसुदेव के वंशज ।

रू. भे.—बासदेव, बासुदे, बासुदेव, वासदेव ।

बासुदेवक—सं. पु.—श्री कृष्ण का उपासक ।

बासुदेवा—सं. पु.—भाटों की एक शाखा ।

रू. भे.—बासदेवा, बासुदेवा, वासदेवा ।

बासुदेवो—सं. पु.—भाटों की वासुदेवा शाखा का व्यक्ति ।

वि. वि.—ये जाड़ों की पिछली रात में गीला कपड़ा सिर पर प्रोढ़ कर बस्ती में फेरी लगाते हैं और याचक वृत्ति करते हैं ।

वासुपुज्य, वासुपूज्य-सं. पु. [सं. वासुपूज्य] जैनियों के बारहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

रू. भे.—वासपुज्य, वासपुज्ज, वासपूज्य।

वासुभद्र-सं. पु. [सं] श्रीकृष्णचन्द्र।

वासुर—देखो 'वासर' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ०—१ कमक वांन कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर। सुबुध बधे मन मग, ग्यांन गुर वांणि उजागर। —रा. रू.

उ०—२ म्हांरो मुजस भ्रमर, 'करणावत' वासुर जग बहु हुवै विनीत। —द. दा.

उ०—३ सुभ वासुर सुक्रम जोग वेळा, तिलक्क निलाट ताण ए। सोमह मुखि कळा चंद सपूरण, द्वादस ऊगति भाण ए।

—गु रू बं

वासुरा-स स्त्री [सं.] १ पृथवी, धरती।

२ रात्रि, रात।

३ स्त्री, नारी।

४ हथीनी।

रू. भे.—वासुरा।

वासू-स. स्त्री. [सं.] १ जवान लड़की।

२ कुंवारी लड़की।

वासूर—देखो 'वासर' (रू. भे.)

वासूळी—देखो 'वसूली' (रू. भे.)

उ०—ऊछळै वळै तज तुरंग एक। वासूळै पूळां सूं विसेख।

—रा. रू.

वासं—देखो 'वासै' (रू. भे.)

उ०—१ तारा कूंपो जोधपुर गयो। नै इण आवता साराई रिण-मलोत गया। श्ररु वासं घोड़ा सात सौ रायमल सनै रया।

—द. दा.

उ०—२ सद इहां कही म्हे वीरभाण कुंवर रा चाकर छां। सु म्हांनै वासं राख हतो सु हमं म्हे कवर रो खबर करण आवां छां।

—चौबोली

वासो-स. पु. [सं. वासः] १ रहने किया या भाव, निवास।

उ०—१ सरस्वती रो वासो सब्दां में। —फुलवाड़ी

उ०—२ गया भ्रम्म भकरम्म, गया जमहंदा पासा। गया सुगति दोड़ पमत्त, थया प्रभ हंदा वासा। —जगो खिड़ियो

२ निवासस्थान।

उ०—सगा पोरस माण भग्गो, पड़ सगर उमराव भग्गो। ताप सुणि भ्रम जेम तासा, वसं खळ गिर-भिगर वासा। —सू. प्र

३ विश्राम।

उ०—१ एक पड़तळ नं बळद। तिकै रजपूत गांव मोतीसर म्राय वासो लियो। रात रहयो। —नैणसी

ऊ०—२ विदेसीड़ा रे आयो छै रे चोमासो, मारग रो 'प्यारो खेद उतारो, म्हांरै डेरै लै वासो। —रसीलैराजरो गीत

४ विश्रामस्थल, डेरा।

५ गांव।

उ०—प्रिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पूंगळ देस। ढोला म्हां बिच मोकळ', वासा घणा वसेस। —ढो. मा.

६ पड़ाव।

७ एक शिकारी पक्षी।

उ०—हमें तीतरां ऊपर वाज छूटै छै। करवांनकां ऊपरै जुररा छूटै छै। तिलोरा ऊपरा वासा छूटै छै। —रा. सा. सं.

रू. भे.—वासौ।

वास्तव-वि. [सं.] १ असली, मूल, सही, सच्चा।

२ प्राकृतिक।

३ सारयुक्त, तथ्य युक्त।

४ निश्चित, निर्दिष्ट।

सं. पु.—निश्चित की हुई कोई वस्तु।

वास्तवा-स. स्त्री. [सं.] उषा काल, प्रातः काल।

वास्तविक-वि. [सं.] १ सत्य, यथार्थ, प्राकृतिक, असली।

२ ठीक, उचित।

रू. भे.—बास्तविक।

वास्तविकता-सं.स्त्री. [सं. वास्तविक+ता. प्र] १ सच्चाई, असलियत।

२ औचित्य।

वास्तुपूजा-स. स्त्री. [सं.] नवीन घर में गृह प्रवेश के प्रारंभ में की जाने वाली वास्तु-पुरूष की पूजा।

वास्तुविद्या-सं स्त्री. [सं.] भवन-निर्माणकला, अभियान्त्रिक, इन्जीनियरिंग।

२ चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

३ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स)

वास्तुसांति-स. स्त्री. [सं. वास्तु-शान्ति] नवीन-गृह-प्रवेश के समय किये जाने वाले शान्ति कर्म आदि।

वास्तुसास्त्र-स. पु. [सं. वास्तु शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें भवन-निर्माण सम्बन्धी सारी बातों को उल्लेख होता है।

वास्तुसिद्धि-स. स्त्री. [सं.] स्त्रियों का चौसठ कलाओं में से एक।

(व. स.)

वास्ते, वास्तै-अव्य. [अ.] १ निमित्त, लिये।

उ०—१ ताहरां नरै कह्यौ–माजी। हूं ईयं नूं गुदरूं छुं थाहरै बास्तै छै ईयं रै घरं। —नैणसी

उ०—२ ताहरां फरवास बजायौ ढोल रै वास्तै। तांहरां पुकार गई। राज ! फरवास वीरमजी रै लोकै वाढियौ। तोई जोईयां गई कीवी। —नैणसी

उ०—३ दीवांणजी कह्यौ–घोडी तो फगत म्हारै बास्तै ई चाहीजै। दूजोड़ा तौ सगळा लुक्योड़ा रैवैला। कठै ई कुचमादी न्हाटग्यौ तो म्हारै मन री मन में रै जावैला। यूं आ बात घणीं चोड़ै किण बास्तै करै। —फुलवाड़ी

२ कारण से, प्रयोजन से।

उ०—ताहरां गोगादेजी मगरां में परांणी घाव दीठा, तद कह्यो भो कासूं छै। ताहरां उठै रजपूत बहुत दिलगीर हुवो। ताहरां गोगादेजी कह्यौ–रे किसै बास्तै ? ताहरां राजपूत सारी हकीकत कही। —नैणसी

उ०—२ कह्यौ रे तूं अठै क्यों ऐकलो रहै छै। सहर तो कोई नहीं। जद सूथार कही जो अठै एक वस्तु हूं वणाऊ छुं तैरै बास्तै रहूं छुं। —चौबोली

रू. भे.—बासते, बासतै, बास्ते, बास्तै, वासते, वासतै।

बास्तौ–सं. पु. [अ. वास्त:] १ सम्बन्ध, लगाव।

२ प्रयोजन, मतलब।

उ०—राजाजी उणरा हाथ सूं पांनो लिय इण भांत जोर जोर सूं बांचण लागा, जांणै नाई नै बांच सुणावै, वांरां सू उणरो की बास्तो नीं। —फुलवाड़ी

३ माध्यम, जरीया।

४ कारण।

उ०—मोटा रूप सूं जठा ताईं सुणनै समझण री सवाल है, आखा प्रात मे बातचीत सारू अटकण री कोई बास्तो कोनीं। —फुलवाड़ी

५ शक्ति, बल।

६ पुरुषार्थ।

रू. भे.—बासतौ, बासत्यौ, बासत्तौ, बासत्यौ बास्तो।

बास्प–सं. स्त्री. [सं. वाष्प] १ आंसू।

२ भाप।

३ कोहरा।

४ लोहा।

रू. भे.—बासप।

बाह–सं. स्त्री. [सं.] १ शस्त्र प्रहार, चोट।

उ०—१ वेणावत 'पातल' वीजळ बाह, गोड़ै गज बाज खळां गजगाह। —सू. प्र.

उ०—२ तठै मांराज फुरमायौ सत्रसालजी नूं कै कहौ तौ सावंतराय पाळां में निजीक है सू इणरी छाती में सांग री बाह करूं। —द दा.

२ आक्रमण, हमला।

उ०—धमूमत्र घडै। सुमांण खडै। खड़ि-बाह कियं। मेल्हांण लियं। —गु. रू. बं.

३ युद्ध।

उ०—तो मोनै धरती री आस छै जो बाह करसी, धरती घेरसी। —ठा. जैतसी री वारता

४ प्रहार की सीमा, परिधि, क्षेत्र।

५ शस्त्र, आयुध।

६ धनुष।

उ०—ऊससे घणं ऊछाह, चाप बांण धरै बाह। वांम हाथ लीध बाह, जीमणं कसीस जाह। —र. रू.

७ गति, चाल।

उ०—मद लख बाह सुपरण तजै माग में, चरण ऊबांहणै धरण चलै। —र. ज. प्र.

८ वाहन, सवारी। (अ. मा.)

उ०—घोडा हस्ती तणी नहीं बाह, लोक नइ धरि न वीवाहना गाह। —नळदवदंती रास

९ घोड़ा, अश्व। (अ. मा., डिं. नां. मा.)

१० बैल।

११ बोझा लादने वाला पशु।

१२ नदी। (अ. मा.)

१३ मदद।

१४ वायु, हवा।

१५ सुगंध, महक।

उ०—घणी वासावली रो बाह लागी नै रहिजो छै। मीर बांट बाट नै पाणी उछाळीजै छै। —रा. सा. स.

१६ बदबू, दुर्गन्ध।

१७ खेत में हल चलाने की अवस्था, दशा, हल चलाने का मौसम।

उ०—कहीयो जु देखां अर्ज लग सत्रा रो साथ सावतो ऊभो छै। वूठै ऊपरि बाह देणरी इहै वेळा छै। —वेलि टी.

अव्य.—१ धन्य, साबास।

उ०—१ जुधं जुध 'नाहर' रो 'जगसाह'। उडावत लोह कहै रवि बाह। —सू. प्र.

उ०—२ 'वीको' 'गाजीसाह' तण, बाह अडोळ कमंध। फट्टा साह समद नू, दियण अघट्टा बंध। —रा. रू.

२ आश्चर्य या घृणा सूचक शब्द ।

३ आनन्द या हर्ष सूचक शब्द ।

वि —खूब, अत्यन्त ।

उ०—सद माल सूर 'दूदे' सगाह । विजपाल दळां जूंभोह वाह ।
—रा. रू.

५ बल ।

रू भे.—वाह, वह वा', वाहा ।

वाहक-वि. [सं.] १ लेजाने वाला, ढोने वाला ।

२ वहन करने वाला ।

सं. पु.—१ कुली, हमाल ।

२ गाड़ीवान ।

३ घुड़सवार ।

४ एक विषैला कीड़ा ।

वाहण—देखो 'वाहन' (रू. भे.) (डि. ना. मा.)

उ०—१ रस वाग कुसम भ्रम वाह रूप । अवतार धरक वाहण अनूप ।
—रा. रू.

उ०—२ कहै-म्हारा वाहण कनारै घोड़ा छै। पछै इण भात करने कटक आयो ।
—नैणसी

उ०—३ तारा-बळ चंद्र-बळ, पखो-पखत साधारण । चतुर पच सह बळी, नाम वाहण सुभ वाहण ।
—गु. रू. बं.

उ०—४ तद गांगेजी वा जैतसी जी जोसी न बुलायो, ने कयो "सवारै जोतसी कांई वाहण छै ।
—द दा.

उ०—५ वाहण जेहनें पावसे, वनीय पावसइ हाट । घर गोकुल पिण पांवसे निरता सकट सुघाट ।
—वि. कु.

वाहणगरुड़-स पु [सं. गरुड़-वाहन] विष्णु ।

वाहणवलभ—देखो वाहनवलभ' (रू भे.) (अ. मा)

वाहणसंभु-सं. पु.—१ नन्दी-बैल ।

२ वृषभ, बैल । (डि. ना. मा.)

वाहणसिखी-सं. पु.—स्वामीकार्तिकेय का एक नाम । (अ मा.)

वाहणि, वाहणी-स स्त्री.—१ खेत की भूमि को बार-बार जोत कर बीज बोनेयोग्य बनाने की क्रिया या ढंग ।

उ०—काकड़ प्रबळ वाहणी काढे, महपत सबळ घणा दळ मांग । सत्र हर ढगळ करे मह सूधा, दळ चावर फेरे दीवांण" ।
—लालसिंह राठौड़ री गीत

२ देखो 'वाहन'

उ०—१ नाव तरिवा सावधान हुआ, हीआहीण अण बूडइ वाहणि मूआ ।
—व. स.

उ०—२ मकरध्वज वाहणि चढयो प्रहिमकर, उत्तर-वाड वाए प्रहर । कमळ बालि विरहिणी बदन किय, प्रंब पालि संजोगि उर ।
—वेलि

३ देखो 'वाहनी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.) (अ. मा.)

रू. भे —वाहणी ।

वाहणौ—देखो 'वाहन' (अल्पा., (रू. भे.)

उ०—अग्रणी हेम-पुत्रीः सरणी कठेगि, वाहणी सांडो । सिला-नंन भाळ चंदो, तम्मै रुद्राय नमो ।
—गु रू. बं.

वाहणौ, वाहवौ - देखो 'वावणौ, वाववौ' (रू भे.) (उ र)

उ०—१ सु मोळ हवा ऊभा हुता, तिकै केई भाला वाही सकिया कै न वाही सकिया, नैं आय ऐ भेळा हुवा ।
—नैणसी

उ०—२ वाहि बुहाय घणी बीजूजळ । तडळ लगां करै व्हां तडळ ।
—सू. प्र.

उ०—३ रिण आगै राजान रै, लग वाहतौ विकट्ट । कवि 'किसनौ' लड केवियां, भड पड़ियो खग भट्ट ।
—रा. रू.

उ०—४ मो गळि घालउ घूघरा, मो मुखि वाहउ लज्ज । हूं ज भलेरउ करहलउ, गंघ मिळाऊ अज्ज ।
—ढो. मा.

उ०—५ वलि ऊखर घर ऊगइ, जउ बीज कउ वाहै रे । अंकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहैं रे ।
—वि. कु.

उ०—६ गाउतां गात बंगाळ रगत्त, करंमर वाहि किया करवत्त । अणी झळबक हुलां ऊझेल, सनाह सुं सुतणं तोडै सेल ।
—गु. रू. बं.

वाहणहार हारौ (हारी), वाहणियौ—वि० ।

वाहियोड़ौ, वाहियोड़ौ, वाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाहीजणौ, वाहीजबौ—कर्म वा० ।

वाहन-स पु [सं] १ वहन करने या ढोने की क्रिया या भाव ।

२ वह पशु, प्राणी या साधन जिस पर बैठ कर कहीं आया जाया जासकता हो । सवारी ।

३ घोड़ा ।

४ हाथी ।

५ रथ ।

६ नाव, जहाज ।

७ सवार ।

८ लक्कड़ बग्घा ।

९ उद्योग, प्रयत्न।

१० सेना।

११ नदी।

रू. भे.—वहांरा, बांहरा, बांहिरा, वाहरा, वाहन, वाहेरा, वाहरा, वाहरिए, वाहरणी, वाहिरा।

अल्पा.—वाहरणो।

वाहनव्रखभ-सं. पु. [सं. वाहन+वृषभ] शिव, महादेव। (नां. मा.)

रू. भे.—वाहणव्रखभ।

वाहनी-सं. स्त्री. [सं. वाहिनी] १ सेना, फौज। (अ. मा.)

२ प्राचीन भारतीय सेना का एक दल जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार, तथा ४०५ पैदल होते थे।

३ आधुनिक सेना का एक विशिष्ठ विभाग, डिवीजन।

वि.—चलाने वाली।

उ०—देवी जम्मणी महख आहूति ज्वाळा, देवी **वाहनी** मंत्र लीला विसाळा। —देवि

रू. भे.—बाग्रणी, बाहणी, वाहनी बाहिणी, बाहिनी, वहिणी, वहिनी, वाग्रणी, वाहणि, वाहणी, वाहिणि, वाहिणी।

वाहपत्री-सं. स्त्री. [सं. पत्रवाह] सर, बांण, तीर।

वाहर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—१ सिया **वाहर** समर दसांणण साभा, अवी उछाहर दीन निवाजा। —र. ज. प्र.

उ०—२ तद कही राज! घोड़ी थांनूं दीवी छै, जो म्हारै कांम पड़ै तद म्हांरी **वाहर** करज्यो। —नैणसी

उ०—३ **वाहर** काज खळां बळवाणां, रैहै जीण पमंग जवनांणां। —रा. रू.

वाहरलो—देखो 'बारलो' (रू. भे.)

(स्त्री. वाहरली)

वाहरवों—देखो 'बारवों' (रू. भे.)

वाहरि—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—तब ये भ्रुहां ही में थोड़ो थोड़ो हसि। अर एक एक होय ग्रह थें स जु **वाहरि** गई। —वेलि टी.

वाहरू—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

उ०—आय पांतियं बैठा। आरोगता हुता। आवाइक जीमिया हुता नै **वाहरू** आया। —नैणसी

वाहरुओ—देखो 'बाहरू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नह सादूळो नीमजै, जुध जिए तिए सूं जाय। जो **वाहरुआं** आफळै, कुंजर हलकां काय। —बां. दा.

वाहरू—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

उ०—१ धीत रा कीत रा रिखी सुकंठ मीत रा धनो। **वाहरू** सीत रा रांम अदीत रा वस। —र. ज. प्र.

उ०—२ बाळियो बैर-बैरां तणो **वाहरू**, 'अमर' मुहरै हुये सर रंग आयो। —अमरसिंह राठोड़ गजसिंहोत री वात

उ०—३ तद इए कह्यो 'कुंवरसी सांखला रो रजपूत छूं, चेतो कर मारजो। म्हारै **वाहरू** सबळा छै। ऐ तो आंधा हुआ वहै कै नै गिणं? सो मार हेठो नाखियो। —कुंवरसी सांखला री वारता

वाहल-सं. पु.—१ घृत परोसने का एक टोंटीदार बर्तन।

२ बैल के पिछले पैरों में होने वाली बालों की पंक्ति या कतार।

३ देखो 'बहल' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

वाहलउ—१ देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—जांम्हवी यमुना बेहू मिलीग्रा, माइ बेटी तेह। आपणउं वाहलउं देखी करीनइ, अधिक ऊपजइ नेह। —नळ दवदंती रास

२ देखो 'वाळो' (रू. भे.)

वाहलकड़ू, वाहलकड़ो—देखो 'वाळो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वाहलकड़ू वाहू गणो, हेलि! न धरीइ हेजि। सेज-थिकी नर नीसरिउ, वली न लीजइ सेजि। —मा. कां. प्र.

वाहळि, वाहळो—देखो 'वालो' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पड़सी **वाहळियांह**। उर घोलै प्री राखियइ, मुवा काहळियांह। —ढो. मा.

उ०—२ वाणिया नाळा माग वहै दुत **वाहळो**। मेह ओसर में वहै, नाळा भर नाहळी। —लो. गी.

वाहलीकजा—देखो 'वाल्हीक' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

वाहळ, वाहळू—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

वाहलु, वाहलू—देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—भमरी भुडा अखनी, मनि मदार न जांणि। एक ज **वाहलु** ऊलखइ, जिम कागी केकांणि। —मा. कां. प्र.

वाहळो—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

उ०—१ आगे पोकरण रा **वाहळा** ऊपर रहता। उरजनोत जोधपुर चाकर। —नैणसी

उ०—२ जउ साहिब तूं नाविवउ, मेहां पहलइ पूर। विचइ वहेसी **वाहळा**, दूर स दूरे दूर। —ढो. मा.

उ०—३ अति रोस करि जैसउ उलटयो ज्यो वरसाला कउ **वाहल्यो** ऊफणइ। —वेलि टी.

वाहलो, वाहल्यो—१ देखो 'वाळो' (रू. भे.)

उ०—कलकलती कल्लोलि उच्छलती लहरि करी सूसूती, **वाहळ** फूफूतो, जिसी कलांत नणी सूरति तिसी गोइ बेउ नट इ आव्ही नदी। —व. म.

२ देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—१ **वाहला** पइ विरहर भलु, हमी करि बली मंन। प्रेम पखगाइ जे हम्यां, ते किम सुख पामंति ? —मा. का. प्र.

उ०—२ सून गागि मकर तिहा, जाव मिली जोगेगि; फालि देई ह पगागटह, **वाहला** ! वाहि पारेमि। मा. का. प्र.

वाहलो देखो वालो' (रू. भे.)

'वा' वा' - देखो 'वाहवाह' (रू. भे.)

वाह-वाह—वि. अव्य. [फा.] धन्य-धन्य, साधु-साधु।

उ०—१ घर सोलखी भागराज प्रतिहार तेजसिंह रो मस्तक उडाय महाराज रा मुख में **वाह-वाह** पढायो। —व. भा.

उ०—२ एसी अनेक बात कही। और ही कवेसर बोल **वाह-वाह** कही। —रा रू.

उ०—३ एक बात ऊबरा, सुणे रीझियो नरेसुर। **वाह-वाह** अखियो, मोल लाग लगै अपतर। —सू. प्र.

वाह-वाही—स. स्त्री. [फा.] १ प्रशंसा, धन्यवाद, साधुवाद।

२ किसी कार्य के प्रति प्रगट किया जाने वाला आश्चर्य।

रू. भे.—वाहवाही।

वाहा—देखो 'वाह' (रू. भे.)

वाहाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू. भे.)

उ०—द्वारकादास, एका हमीर बळू नूं मनावण सारा भाटी नै राव सूरसिंघ आया था। उठै **वाहाऊ** आयो तठै राव सूरसिंघ बळू भा। —नैणसी

वाहादर—देखो 'बहादुर' (रू. भे.)

उ०—तोई भगड़ै री आसग हुई नही। दलपत वडो जमंमरद **वाहादर** देख्यो। —द. दा.

वाहार—१ देखो 'वार' (रू. भे.)

उ०—घर १ राजा स्री गजसिंहजी री **वाहर मांहै** नवो हुवो छै. दडो छै। —नैणसी

२ देखो वाहर' (रू. भे.)

वाहाळो—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

वाहालो—देखो वालो' (रू. भे.)

उ०—१ हा माहा नाथजी, कांहां गया जी, मूंहि एकली मेहेलो वंन रे वज्रमि कठिण ते किम थयू रे, **वाहाला** तम्हारू मंन रे। —नळाख्यांन

उ०—२ वेस्या किणि **वाहालो** करी, भूमंडलि ? भूदेव। कोडि कोटि-ध्वज क्षय गया, करता वेस्या-सेव। —मा. कां. प्र.

(स्त्री. वाहाली)

वाहिण—देखो 'वाहन' (रू. भे.)

वाहिणि, वाहिणी—देखो 'वाहनी' (रू. भे.)

वाहित्थदेस—देखो 'वाहित्थदेस' (रू. भे.)

वाहियात—वि. [फा.] व्यर्थ, निरर्थक।

वाहियोड़ो देखो 'वावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वाहियोड़ी)

वाहिर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—पाचा दिनां पछै महला महां दाढी समराइ अर **वाहिर** पधारिया। —द. वि.

वाहियौ—देखो 'वालो' (अल्पा., रू. भे.)

वाही—१ देखो 'वही' (रू. भे.)

उ०—केतीबार जेठी जोर आगै पेच कीना, पूरै चांपि जेठि नै भ्रमाय नाखि दीना। **वाही** स्याति नीसरिगा जेठां का प्राण। पूरा मल्ल वादिस्याह कीनां फुरमाण। —शि. व.

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.) (जैन)

वाहु—देखो 'वाहु' (रू. भे.)

वाहुड़णो, वाहुड़बो—देखो 'बावडणो, वावड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ वाहुडि गोरी ! तुं घरि जाह, हुं नेद आवऊ थारउ हो नाह। सोना तो बाध्यो गांठड़ी, दीधो सोपारी दोय कर च्यार। —बी दे.

उ०—बोलिन सक्कू वीहतउ, हेक ज बात हुई। राजि अपूठा **वाहुडउ**, मारुवणी मूई। —ढो. मा.

वाहुड़णहार, हारो (हारी), वाहुड़णियो—वि०।

वाहुडिग्रोड़ो, वाहुड़ियोड़ो, वाहुड़योड़ो—भू० का० कृ०।

वाहुड़ीजणो, वाहुड़ीजबो - भाव वा०।

वाहुड़ियोड़ो—देखो 'बावड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वाहुड़योड़ी)

वाहुलु, वाहुलो—१ देखो 'वाळो' (रू. भे.)

उ० १ वाट-वचइ छइ **वाहुलु**, तिहां जाइ नर नारि। नाव नरेसर मेहलि करि, परि परि पार ऊतारि। —मा. कां. प्र.

उ०—१ मारगि मोटा डूंगरा, नद **वाहुला** विसेखि। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रूंखी रूखि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बालौ' (रू. भे.)

बिंचियौ—देखो 'बींछियौ' (रू. भे.)

बिंछियौ—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)

बिछुड़ौ—देखो 'बिच्छुड़ी' (रू. भे.)

बिछ्या—देखो 'बांछा' (रू. भे.)

उ०—कूकर कै मन कांम की, रत सिर बिछ्या होय। कांमी नर कै कांम की, हरीया निसदिन होय। —अनुभववांणी

बिंजणौ, बिंजबौ—देखो 'बींजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)

उ०—हरि ने हलधर दोनूं गज चढ्या, साथे लियौ गज कुमार। छत्र ने चांमर दोनूं बिंजै रह्या, बाजै बाजा रा झणकार। —जयवांणी

बिंजणहार, हारौ (हारी), बिंजणियौ—वि०।

बिंजियोड़ौ, बिंजियोड़ौ, बिंज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिंजीजणौ, बिंजीजबौ—कर्म वा०।

बिंजन—देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)

उ०—१ भूप वधायौ मोतियां, कीधा निजर तुरंग। भोजन भंजाई विवध, बिंजन पाक सुरंग। —रा. रू.

उ०—२ निज मजलस रस सजणां, बिंजन पाक ऊग विहांण। हित करणं जैसाह रै, वरणं को कवि वांण। —रा. रू.

उ०—३ जनकपुरी में जीमिया है, विध बिध बिंजन कोर। भला सरस भोजन हुवा है, पण श्रो आनंद श्रोर। —गी. रां.

बिंजाहरि—देखो 'विजयहरी' (रू. भे.)

उ०—गढ गिरउ भ्रनइ विसमउ, जेह नउ पायउ पातालि पयठउ, महाराज तणा जिसा पाग तिसां कोसीमां, गरुई पोलि निविड कमाड लोहभोगल, बिंजाहरी तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि, ढीकुली तणी परपरा...। —व. स.

बिंजियोड़ौ—देखो 'बींजियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. बिंजियोड़ी)

बिंजुल-सीत—सं. स्त्री. [सं. वञ्जुल-शीतः] १ कुंज, कुंजगलि। (भ्र. मा.)

२ अशोक वृक्ष।

बिंझगिरी—देखो 'विंध्यगिरि' (रू. भे.)

बिंझगिरिपावमूळ—देखो 'विंध्यगिरिपादमूळ' (रू. भे.)

बिंझलौ—सं. पु. [सं. वीजनः] चक्रवाक नामक पक्षी।

उ०—बोल्हा वायस बिंझलां, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊधी टंगाय। —मा. कां. प्र.

बिंझाचळ—देखो 'विंध्य.चळ' (रू. भे.)

उ०—चियो चोळ सिंदूर कुंभाथळयं, वन गेरुम्र जांण बिंझाचळयं। —गु. रू. बं.

बिंट—देखो वींट' (रू भे.)

उ०—अवतार वहै आपै अनंत, सह बिंदु हुय जावै सगा। तक बिंट नांम लो रांम रो, जग समंद तिर तूं 'जगा'। —ज. खि.

बिंटणौ, बिंटबौ—देखो 'वींटणौ, वींटबौ' (रू. भे.)

उ०—एहवौ धातकी खंडए, परदक्षण परकार। अठ लख जोयण बिंटीयो, समुद्र कालो दधि सार। —वृ. स्त.

बिंटणहार, हारौ (हारी), बिंटणियौ—वि०।

बिंटियोड़ौ, बिंटियोड़ौ, बिंट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिंटीजणौ, बिंटीजबौ—कर्म वा०।

बिंटाणौ, बिंटाबौ—देखो 'वींटाणौ, वींटाबौ' (रू. भे.)

बिंटाणहार, हारौ (हारी), बिंटाणियौ—वि०।

बिंटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिंटाईजणौ, बिंटाईजबौ—कर्म वा०।

बिंटायोड़ौ—देखो 'वींटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिंटायोड़ी)

बिंटियोड़ौ—देखो 'वींटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वींटियोड़ी)

बिंट्टणौ, बिंट्टबौ—देखो 'वींटणौ, वींटबौ' (रू. भे.)

उ०—कमनेत नेतबंधी सिपाह, सब सिलह पूर बिंट्टं सनाह। चवगांन जांन रनबीर खेत, ताजी तमांम पक्खर समेत। —ला. रा.

बिंट्टणहार, हारौ (हारी), बिंट्टणियौ—वि०।

बिंट्टियोड़ौ, बिंट्टियोड़ौ, बिंट्ट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिंट्टीजणौ, बिंट्टीजबौ—कर्म वा०।

बिंट्टियोड़ौ—देखो 'वींटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिंट्टियोड़ी)

बिठणौ, बिठबौ—क्रि. अ. [सं. विनष्टनम्] १ नष्ट होना, बरबाद होना।

उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु, ते बिठीया हारि वाहार। तेह रांक नूं वांक किसु, जु दसा पडी अपार। —नळाख्यांन

२ भ्रष्ट होना, बिगड़ना।

३ अदृश्य होना, गायब होना।

बिठणहार, हारौ (हारी), बिठणियौ—वि०।

बिठियोड़ौ, बिठियोड़ौ, बिठ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिठीजणौ, बिठीजबौ—भाव वा०।

विछियोड़ो—भू. का. कृ.—१ नष्ट हुवा हुआ, बरबाद हुवा हुआ. २ भ्रष्ट हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ. ३ अदृश्य हुवा हुआ, खोया हुआ.

(स्त्री. विछियोड़ी)

विण—देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—भावीक पड़ी भाळि, सुंदरि दीठी मास **विण**। जिमि ढळाला विण बाळ, प्रिय जोई पाळ नहीं। —ढो. मा.

विणणो, **विणबो**—१ देखो 'विगणो, विणबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)

विणणहार हारो (हारी), **विणणियो**—वि०।

विणियोड़ो, **विणियोड़ो**, **विण्योड़ो**—भू० का० कृ०।

विणीजणो, **विणीजबो**—कर्म वा०।

विणियोड़ो—१ देखो 'विणियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विणियोड़ी)

वितर—देखो 'व्यन्तर' (रू. भे.)

उ०—पचेंद्रि तिरजच नै मानव, गह पया इकवीसजी। **वितर** जोतिगी नै वैमानिक, इण दडक चोवीस जी। —ध. व. ग्र.

उ०—२ वाघ सिंघ **वितर** घणा, भड़ बीहती चालइ रे। चालइ नद नालः वरगा रत घणा ए। —नळ दवदनी रास

उ०—३ ज्योतिसी भुवणि नो **वितरी** त्री पणे, नैरित कूण जिण वाणि ऊभी सुणै। —ध. व. ग्र.

(स्त्री. वितरी)

वित्तणो, **वित्तबो**—देखो 'बीतणो, बीतबो' (रू. भे.)

उ०—१—सिसु वै सिनो **वित्ती**, उदभी गांगड मद सिणारो। ज्यों प्रचारा तरग, प्रांग लाज सांग पत्तेगम्। —रा. रू.

वित्तणहार, हारो (हारी), **वित्तणियो**—वि०।

वित्तियोड़ो, **वित्तियोड़ो**, **वित्त्योड़ो**—भू० का० कृ०।

वित्तीजणो, **वित्तीजबो**—भाव वा०।

वित्तियोड़ो—देखो 'बीतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्तियोड़ी)

विंद—स पु. [सं] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक, जिसका वध भीम ने किया था।

२ भारतीय युद्ध में कौरव पक्ष का एक केकय-राजकुमार जिसका वध सात्यकि द्वारा किया गया था।

३ अवन्ती देश के राजा जयसेन एवम् वसुदेव की बहिन राजाधिदेवी के दो पुत्रों में से एक पुत्र।

वि. वि.—इसके कनिष्ठ भ्राता का नाम अनुविंद एवं एक बहिन का नाम मित्रविंदा था। यह दुर्योधन एवं जरासंघ का पक्षपाती था। इसकी बहिन का विवाह दुर्योधन से होना तय हुआ था मगर इसकी बहिन की इच्छानुसार श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा से विवाह किया। भारतीय युद्ध में यह एक अक्षौहिणी सेना के साथ कौरव पक्ष में सम्मिलित हुआ था तथा यह दस रथियों में से एक था। अपने दक्षिण दिग्विजय के समय सहदेव ने इसे जीता था। अन्त में यह अर्जुन द्वारा मारा गया।

४ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—१ मत के 'सोनागिर' वाचा हरिचंद। साच के अजातसत्र गात रति **विंद**। —रा. रू.

उ०—वरै रभ वैसि रथां रण **विंद**। अघोअघ राज लियै सुरइंद। —सू. प्र.

उ०—३ विदया भद्रा गोपियां **विंद**। आरती करै ऊभरा इंद। —पी. ग्रं.

उ० ४ नर नरिंद अणंदि, **विंद** वाकिम्म वीर वर। सुत मुरिंद हरचंद, कंद काढण केवी हर। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बूंद' (रू. भे.)

उ०—निज रोग रु छेम से काम नहीं, उर हांम आराम हरांम नहो। गरवै स्तुति निंद समांन गिनैं, हरवै न बनैं नहिं **विंद** हनैं। —ऊ. का.

३ देखो 'बिंदु' (रू. भे.)

उ०—जाय हिमाळै गळत जिंद, उलटि रावत नाद **विंद**। कोटि गऊ दिज दांन देत, मरत कामी मुगति लेत। —अनुभववांणी

४ देखो 'बिंदी' (मह., रू. भे.)

विंदक—वि.—१ जानने वाला, ज्ञाता।

२ जन्म देने वाला।

३ देखो 'बिंदक' (रू. भे.)

विंदगी—देखो 'बंदगी' (रू. भे.)

उ०—गो दैदायण! थे नै आठ ही अपचरां मारी **विंदगी** घणी कीवी, सो थे वर मांगो सो थांनै मे वर देनै गुर-चेलो अलोप होसां। —मयारांम दरजी री बात

विंदण—देखो 'विदग' (रू. भे.)

विंदणो, **विंदबो**—देखो 'वदणो, वदबो' (रू. भे.)

उ०—कोउ येक निंदो कोउ येक **विंदो**, नाम सुधारस पागा। जन मीरां गिरधर वर पायो, भाग हमारा जागा। —मीरां

बिंबणहार, हारो (हारी), बिंबणियो—वि० ।

बिंबियोड़ो, बिंबियोड़ो, बिंब्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिंबीजणो, बिंबीजबो—कर्म वा० ।

बिंबली—देखो 'बिंदी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सोहै भाळ विसाळ, लाल बिंबली सिंदूरं । नैणै काजळ, मुख तंबोळ, वणि वदन सनूरं । —गज उद्धार

बिंदवी—देखो 'बिंदवीं' (रू. भे.)

बिंदसरोवर—सं. पु—गुजरात में पाटण (सिद्ध पुर) से आधा कोस दूर, एक तीर्थ स्थान ।

बिंदावन—देखो 'वृंदावन' (रू. भे.)

उ०—घन गोकळ नंद ग्वाळ घन, घन जसोदा घन । बिंदावन घन सरब वन, वाह वाह मधवन । —पी. ग्रं.

बिंदी—देखो 'बिंदी' (रू. भे.)

उ०—सीसफूल तारा भला रे, अरधचंद सम भाग रे रंग । बिंदी जाणं मणि धरी रे, पीवत अम्रत नाग रे रंग । —प. च. चौ.

बिंदु—१ देखो 'बिंदु' (रू भे.)

२ देखो 'बूंद' (रू. भे.)

देखो 'बिंदी' (रू. भे.)

उ०—स्यांमा तणै लिलाट सोहिया, कुंकुम बिंदु प्रसेद कण । —वेलि

बिंदु आंगिरस—सं. पु.—वेदों के एक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

बिंदुचित्रक—स. पु. [सं] सारे शरीर पर गोल चित्तियों वाला मृग ।

बिंदुजाळ, बिंदुजाळक—सं. पु. [सं. बिंदुजाल] १ सफेद बिंदियों का वह समूह जो किसी हाथी के मस्तक और सूंड पर बनाया जाता है ।

२ पद्मक नामक हाथियों का एक रोग ।

बिंदुतीरथ—सं. पु. [स. बिंदुतीर्थ] काशी के पचनद तीर्थ का एक नाम जहां बिंदुमाधव का मंदिर है

बिंदुत्रिवेणी—स. स्त्री. [सं.] स्वर साधन की एक प्रणाली । (संगीत)

बिंदुमति, बिंदुमती—सं. स्त्री.—राजा शशि बिंदु की पुत्री एवं अयोध्या पति मांधाता की पत्नी ।

बिंदुमाधव—स. पु. [सं] काशी के पचनद नामक तीर्थ मे स्थित एक विष्णु मूर्ति का नाम ।

बिंदुळरथी—स. स्त्री [सं. बिंदुल रथ्या] कुंज गलि । (अ. मा.)

बिंदुलो—देखो 'बिंदी' (अल्पा., रू. भे.)

बिंदुसर—सं. पु. [स.] १ कैलाश पर्वत के दक्षिण स्थित एक सरोवर, जो तीर्थ माना जाता है । (पौराणिक)

वि. वि.—यह सरोवर गंगा के जलकणों से बना था । यहीं पर बैठ कर भागीरथ ने गंगा को भूलोक में लाने हेतु तप किया था ।

२ एक नदी जिसके किनारे कर्दम प्रजापति का आश्रम था ।

बिंदुसार—देखो 'बिंदुसार' (रू. भे.)

बिंदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बिंदोळो—देखो 'बंदोळो' (रू. भे.)

बिंदौ—१ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—अणी सांमि आगै इसै कांम हंदा । वणै ऊहड़ै वंकड़ा कीत बिंदा । —रा. रू.

२ देखो 'बंदो' (रू. भे.)

बिंध—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—जैसे राजहंसनिसौं राजै मांनसर राज, जैसें बिंध भूधर बिराजें गजराज सौं । —ब. व. ग्रं.

बिंधणो, बिंधबो—देखो 'बिंधणौ, बिंधबो' (रू. भे.)

उ०—१ मोसा री मार रो काळजै तीर नीं बिंधतो तो कदास मासी रा बोल उण रै काळजै इण भांत असर नीं करता । तीर बिंधणा रै समचै ई हिवड़ा रै विस री पोटळी फूटगी ही । —फुलवाड़ी

उ०—२ पण आ बात सुणतां ई उण री मुळक रै गै'ण लागग्यो उण री उणियारो काळो धाक पड़ग्यो । माथा में कीड़ी-नगरो कळबळण लागो । मोसा रो तीर पाधरो काळजै जाय बिंध्यो । —फुलवाड़ी

उ०—३ क्रीड़ा खेलतु, सूत्कर मेल्हतउ, परबत जिम दलतउ, पवन जिम चालतउ दंताग्रि बिंधतउ, पाडतउ फोडतउ । —व. स.

उ०—४ मैं नही कहत कहत परिग्यांनुं, सुणि हो सबै सयांणां । मैं तें राग दोस जुग बिंध्या, ए कळि के इहनांणां । —अनुभववांणी

बिंधणहार, हारो (हारी), बिंधणियो—वि. ।

बिंधियोड़ो, बिंधियोड़ो, बिंध्योड़ो—भू. का. कृ. ।

बिंधीजणो, बिंधीजबो—भाव वा. ।

बिंधर—वि.—अशब्दश्रावी ।

उ०—देवमांहि कुण हूं न स्वांमी, न दास, न मूक, न ऊतसूक, न बधिर, न बिंधर, न कूबड़- न वामण, न हूंड, न छोटा, न पांगुला, न आंधला, तिहां डांस मुंसा………… । —व. स.

बिंधाचळ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—घर चौडै सरवर विपन, बिंधाचळ दिस एक । च्यार महूरत उत्तरे, धारस मंत्र विवेक । —रा. रू.

बिंधियोड़ो—देखो 'बिंधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विंधियोड़ी)

विंध्य–स. पु. [सं.] १ उत्तर भारत के दक्षिण में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है, विंध्याचल नामक पर्वत।

उ०– जिको पण वळा **विंध्य** र रा प्रघोस 'राम' भूपाळ ?
— व. भा.

२ रैवत मनु के पुत्रों में से एक।

रू. भे.— विंझ, विंध, विंध्य, वींझ, विंध।

विंध्यकूट–स. पु. [सं. विंध्यकूटन] १ अगस्त्य मुनि की एक उपाधि।

२ विंध्य पर्वत।

विंध्यगिरि–स. पु. विंध्यपर्वत, विन्ध्याचल।

अ. भे.—विंझगिरि।

विंध्यगिरिपादमूळ– विंध्यगिरी पर्वत की तलहटी।

रू. भे.—विंझगिरिपादमूळ।

विंध्यवासणी विंध्यवासिनी–सं. स्त्री. [सं. विंध्यवासिनी] १ मिर्जापुर जिले में विंध्य के एक टीले पर अवस्थित देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति, जो इन्द्र द्वारा स्थापित की गई थी।

२ दुर्गा की एक उपाधि।

विंध्यवासी, विंध्यस्थ–स. पु. [सं.] संस्कृत व्याकरणी व्याडि मुनि की उपाधि।

विंध्याचळ, विंध्याचल–स. पु. [सं. विंध्य+अचल] मध्य भारत की दक्षिणी सीमा स्थित-पर्वत का नाम।

उ०— १ त्रिनयर ! जा द्वारा वती, **विंध्याचळ** जल लिंग। कोटेस्वर कैलास पति, ऊंकारि अभंग। — मा का प्र.

उ०— २ तद लड़की कही-मो सूं रात का प्राय यश मिळै सो मो नु कहै- हूं तो नं **विंध्याचळ** लेय हालस्यूं। —सिंघासण बत्तीसी

उ०— ३ **विंध्याचळ** वाधै तं पग, अबर प्रडकै आज। आदित्य नह ऊगी सकद, सरद असहारा काज। —मा कां प्र.

रू. भे.—वड़मनां, विंध्याचल वींझाजळ, वींझाचल, वींझाजळि, वृंधाचळ, वंधाचळ वंध्याचळि, विंझाचळ, विंझाचळ।

विंध्यावळि विंध्यावळी–स. स्त्री. [सं. विंध्यावलि] दैत्य राज बलि की स्त्री का नाम, जो बाण की माता थी। शकुनी, पूतना आदि इसकी पुत्रियां थी।

विंवार विंभार– देखो 'बंभार' (रू. भे.)

उ०– पाग बांधू रगण डगाण गजे, बिण लेर सुगाक सूणाक वजै। भुरजाळ भसाळ उडार भरै, कर तीर **विंवार** वंभार करै।

— पा. प्र.

विंभौ—देखो 'वैभव'।

विंयासियौ—देखो 'बंयासियौ' (रू. भे.)

उ०—महपति आयो मेड़ते, गढ खाटै नागोर। सिर तिण वरस **विंयासियौ**, आयौ वड मुख ओर। —रा. रू.

विंस–वि. [सं. विंश] १ बीसवां।

२ एक राजा जो क्षुप राजा का पुत्र था।

३ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र जो विविंश का पिता था।

४ देखो 'बीस' (रू. भे.)

विंसतिबाहु–स. पु. [सं. विंशतिबाहु] रावण का एक नाम।

विंसोत्तरी–सं. स्त्री. [सं. विंशोत्तरी] मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

वि. वि.—इसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके भाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है। (फलित ज्योतिष)

विंहचणौ, विंहचबौ—देखो 'बंचणौ, बंचबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

विंहचणहार, हारौ (हारी), विंहचणियौ—वि०।

विंहचिओड़ौ, विंहचियोड़ौ, विंहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विंहचीजणौ, विंहचीजबौ—कर्म वा०।

विंहचियोड़ौ—देखो 'बंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विंहचियोड़ी)

वि–प्रत्य. [सं.] १ किसी शब्द के पूर्व लगकर विशेष अर्थ उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग।

वि. वि.—इसमें इसके निम्न लिखित अर्थ होते हैं:—पार्थक्य, बिलगाव, किसी क्रिया का विपरीत, विभाग, विशिष्टता, अंक, जाच, भेद, क्रम, विरोध, तगी, विचार, आधिक्य।

२ भी।

उ०—१ करणु भणइ सच्चु कहउं, पुणु छइ एकु वि नाणु। दुरयोधन रहि आपणां, मइं कल्पना छइ प्राण। — सालिभद्र सूरि

उ०—२ क्षात्रधरम मन हूतउ छडिउ, कौरवाधिपति गोग्रह माडिउ। सैन्यराय थिहु भागि वि लायउ, तउ सुमरम न्रप दक्षिण धायउ।
—सालि सूरि

३ ही।

उ०—१ भनहलिय सायर रत सुरगिरि, सिंगु सिंगि खडहडी। खणु एकु असरणु हूउ तिहूयणु, राय सयल वि थरहडी।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ सो पनुगु नांमइ कीमु काटकि, धरणि आसकि धडहडी। बभउ वड विराउ थाइ कि, सगि सयल वि रडवडी।
—सालिभद्र सूरि

स. पु. [सं. विः] १ रवि।

२ शशि।
३ रवि।
४ पक्षी।
५ गरुड़।
६ लवा। (एका.)
७ घोड़ा।
८ मांस।
९ आकाश।
१० अन्न।
११ देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—१ कबि बिस सहंस गयंद घज फरहर। घरै महीरि बि-सहंस बाजित्र घर। —सू. प्र.

उ०—२ कहिए माळवणी-नणइ, रहियउ साल्ह बि मास। ऊन्हाळउ ऊतारियउ, प्रगटयउ पावस-मास। —ढो. मा.

बिग्रक्खण, बिग्रक्खणि, बिग्रक्खणु—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—मंत्रीसर घरि प्राविउ, सयल लोक रंजन सुलक्खण। पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिणि, नारि विलसइ बिग्रक्खणि।
—हीराणंद सूरि

बिग्रखरी, बिग्रख्यरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे.)

उ०—सोलह मात्रा पय सकळ, नहीं गुरु लघु नेम। भाखा छद बिग्रख्यरी, इणरी पद्धति एम। —ल. पिं.

बिग्रत—स. पु. [सं. वियत्] आकाश, नभ। (ह. नां. मा.)

बिग्रापणो, बिग्रापबो—देखो 'व्यापणो, व्यापबो' (रू. भे.)

उ०—१ हूं अयांण प्रणबूभ, प्रघळ कपटी बड पापी। कांमी क्रोधी कहर, विळै पर निंदा बिग्रापी। —पी. ग्रं.

उ०—२ बिग्रापै सत्र सदा दल बिंद, प्राभो जिम जाय कहां सुर इंद। —रांमरासो

बिग्रापणहार, हारौ (हारी), बिग्रापणियो—वि०।
बिग्रापिग्रोड़ो, बिग्रापियोड़ौ, बिग्राप्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिग्रापीजणो, बिग्रापीजबौ—भाव वा०।

बिग्रापियोड़ो—देखो 'व्यापियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिग्रापियोड़ी)

बिग्रापी—१ देखो 'व्यापी' (रू. भे.)
२ देखो 'वापी' (रू. भे.)

बिग्रारखम—[स. विप्रतारणम्] पीटना, मारना। (उ. र.)

बिग्रास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—'दीपौ' बाळकिसन्न पण, ऊवरै बिग्रास। साम लियां रिवि साम री, नव हौ रिद्ध निवास। —रा. रू.

बिइगिच्छा—सं. स्त्री—विचिकित्सा। (उ. र.)

बिइत्तु—वि. [सं. विदित्वा] जानकार। (उ. र.)

बिइय—वि. [सं. द्वितीय] १ दूसरा। (उ. र.)
२ विदित।

बिउड—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—बिउड मिउड ताडिउ, तु चपेटा ऊपाडिउ। कूंयरि मनि विराडिउ, बोल बोलइ सु ताडिउ। —सालि सूरि

बिउरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

उ०—रांनल वर बिउरण भणु, तिहुग्रणि पडिउ त्रास। वेस्या विलपति तिहां, सकल मिलिउ सहिवास। —मा. कां. प्र.

बिउल—देखो 'विपुल' (रू. भे.)

बिउलग्रसणपांण—स. पु. [स. विपुलाग्रसनपान] विपुल ग्रशन-पान, पुष्कल खान पान।

बिउलतव—सं. पु. [सं. विपुलतप] विपुलतप।

बिउलधण—सं. पु [सं. विपुलधन] विपुल धन, पुष्कल धन।

बिउलसग्ग—सं. पु. [सं. विपुलसर्ग] व्युत्सर्ग, कायोत्सर्ग, एक तप विशेष।

उ०—प्रणसण तप पहिलो कह्यौ, छेलो बिउलसग्ग जांण। बारे भेदे तपस्या करो, ज्यों पहुंचौ निरवांण। —जयवांणी

बिउलसिरी—देखो 'मौलसिरी' (रू. भे.)

उ०—जिहां किण कमल अपार रे, चांपो मरुवौ रे दमणौ मालती रे। बिउलसिरी सुखकार रे र, जाई जूई रे दुखडां पालती रे।
—वि. कु.

बिऊ—वि [सं. विद्] जानकर, वेत्ता। (जैन)

बिग्रोग—देखो 'वियोग' (रू. भे.)

बिकंपन—स. पु [स.] १ रावण पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो राम-रावण युद्ध में मारा गया था।
२ रुद्रगणों में से एक।

बिकंपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—पुगळ पाळटी, धरकियौ बिकंपुर कहै छूटां कांहि। उदधि राजा सूर उलटौ, जादवां गढ जाहि। —हरग्रौ बारहठ

बिकच—सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार के धूम केतु, जिनकी संख्या ६५ कही जाती है।
२ बौद्ध भिक्षुक।
३ केतु का नामान्तर।
वि. [सं] १ खिला हुआ, फैला हुआ।

२ बिखरा हुआ।

३ जिसके बाल न हों, केश विहीन।

बिकचा—स. स्त्री. [स] विरूपक नामक नैऋत राक्षस की पत्नी, जिस से भूमिराक्षस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

बिकट—वि. [सं.] १ भयंकर, भीषण, विकराल, डरावना।

उ०—बजरंग घाट काळा बिकट, दुरन घाट जमदूत सा'कर जोम गयण ग्रीषम करै, धोम नयण प्रबधून सा। —सू. प्र.

२ चौड़ा, प्रशस्त।

३ विशाल, बड़ा।

उ०—१ थगमग झट झपट बिकट थट आवट, गो गाहट घट गरट गहै। ऊकट थिय काट सुभट लख धारट, लळ लट रिगवट खडग वहै। —गु. रू. बं.

उ०—२ एहनी-प्राघीयो ताम करि जोर बल पोरतो, बखराधीस मन रीस धामी। सुभट थट बिकट साथै करी आपगा, रोस चढीयो वदै असुभ वाणी। —खीपाल रास

उ०—३ इम गढ निकट बिकट थट आया, छपन कोडि जाणै घण छाया। सुजळ आणि ऊभळै समरायं, समद सात नवसै नदि साथै। —सू. प्र.

४ जबरदस्त।

उ०—१ दट प्रगघट अघ बिकट दळां रो, राजा सांचो रांम। बळ सोहै दिन जन निबळां रो, नित जापो तूं नाम। —र. ज. प्र

उ०—२ बिकट बिहारी बंकड़ो, जाळघर गढ राज। सो राठौड़ा घेरियो, जोड़ै मन सकाज। —रा. रू.

उ०—३ कोपमांन नरसिंघ रूप करि, बिकट विराट वदन विकराळ। सोसै रगत असुर हरिणाकस, प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ। —ह. ना. मा

५ बलवान, शक्ति वाली।

उ०—१ काळ हुकम जिम काळ रा, फिकर कहरारै। होय लटा पट्टा हिचै, बिकटा बाकारै। —सू. प्र

उ०—२ असी सहस बिकटा असवारा। बाग उपाडि लडै जिण वारा —सू. प्र.

६ दुर्गम, दुरूह, दुस्साध्य।

उ०—मन जाणै सहल दीयण बित मोजा, मं दोय गण घरीयां अमठ। बेंडा री बाता हज बेंडी, बेंडा रा रंडा ह बिकट।

—अज्ञात

७ कठिन, मुश्किल।

८ बदशक्ल, कुरूप, भोंडा, भद्दा।

९ उग्र, तीव्र।

उ०—मागै घणा चाढिया मथा, त्रिजड बिकट तट गंग तणी। राज' जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियौ किणी।

—किसनो आढो

१० टेढा, वक्र।

११ अहंकारी, अभिमानी।

उ०—दुरवेस बिकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरी। मम हुकम लाज रावण मुदै, महाराज मंडोवरी। —रा. रू.

१२ जंगली, अभद्र।

सं. पु.—१ विस्फोटक।

२ सोमलता।

३ बाल तोड़-फोड़ा।

४ सेना, फौज। (ह. नां. मा.)

५ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

७ रावण पक्षी, एक राक्षस जो अंगद द्वारा मारा गया।

८ रुद्रगणों में से एक।

९ एक राक्षस जिसकी गंगाजल पीने के कारण मुक्ती हुई।

१० सिंह, शेर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बकट, बगट्ट, बिकड, बिकट्ट, बेकट, बेकठ, विकट्ट विकट्टी विगट।

अल्पा.—विकटो।

बिकटांणण, बिकटांनन—देखो 'विकटानन' (रू. भे.)

बिकटा—स. स्त्री. [स.] १ बुद्धदेव की माता का नामान्तर।

२ अशोक वन में सीता पर पहरा देने वाली राक्षसियों में से एक राक्षसी।

रू. भे.—बिकुटा।

बिकटानन—स. पु.—धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

रू. भे.—विकटाणण, विकटानन।

बिकटो—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—ऊंडै जळ में ले चल्यो, गज कूं बिकटो ग्राह। तब ततकार समारियो, राधानागर नाह। —गजउद्धार

बिकट्ट, बिकट्टो—देखो 'बिकट' (रू. भे.)

उ०—१ 'विजपाळ' 'राम' 'केहर' बिकट्ट, 'भीमेण' 'राम' 'फतमल' सुभट्ट। हरिभाण 'नाथ' भाराथ हाम, दढवत साम पेलै दुगांम। —रा. रू.

उ०—२ कट कट अघ दुघट बिकट्ट थट अणघट, झट झट रट रट 'किसन' जिको। —र. ज. प्र.

उ०—३ भाला झलि हुलै भिड़ण, करि फौज बिकट्टी। सार सबा असि लेडिया, धावै बह घट्टी। —सू. प्र

बिकणो, बिकबो—देखो 'बिकणो, बिकबो' (रू. भे.)

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न बिकतौ जोय। हरीया गाहक पेम को, सिर दै लेसी सोय। —अनुभववांणी

उ०—२ हीरौ हाटां मांहि, हरिया बिकतौ देखीयो। पारिख विन कुछि नांहि, कौडी बदलै जात है। —अनुभववांणी

उ०—३ घणीं सीळ सत घणीं, भणीं लालां भटियांणी। किसूं दाव बळ कोप, ग्राव जम हत्थ बिकांणी। —रा. रू

बिकणहार, हारौ (हारो), बिकणियौ—वि०।

बिकियोड़ौ, बिकियोड़ौ, बिक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिकीजणौ, बिकीजबौ—भाव वा०।

बिकत्ता—वि० [स. विकर्त्ता] नहीं करने वाला, अकर्ता।

बिकत्थन—सं. पु. [सं.] १ शेखी, डींग।

२ व्यंग्य।

३ झूठी प्रशसा।

बिकत्था—सं. स्त्री. [सं.] १ अफवाह, जनश्रुति।

उ०—अस्टा दस धातुरं, वात विसतरं बिकत्थां। राह थाह नरनाह, ताहि चिंता समरत्था। —रा. रू

२ झूठी प्रशसा।

३ व्यंग्य।

४ शेखी, डींग।

५ निरर्थक या बेहूदी बात।

६ चुगली।

रू. भे.—विकथा, विकहा, विगहा।

बिकथा—देखो 'विकत्था' (रू. भे.)

उ०—१ राज कथादिक बिकथा राग सू, थाह कहूंम वणाय। समता धरि न करी मन सुद्ध सुं, सूत्र सिद्धांत सभाय। —ध. व. ग्रं.

बिकप्पणा—सं. स्त्री. [सं. विकल्पना] सदेह, भ्रम। (जैन)

बिकम—देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

बिकमाईत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे)

उ०—तइ नरसिंघदास-का कटक-बंध चालितां सांतरि आगळइ दळि पांणी पाछिलइ दळि कादम। तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ। दूसरउ बिकमाईत। —प्र. वचनिका

बिकमायत—सं. पु. [सं. विक्रम+आदित्य] १ राठौड़ों की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

बिकरंद—सं. स्त्री. [स. विकर+गंध] बदबू, दुर्गंध।

रू. भे.—बिकरंद।

बिकर—सं. पु. [सं.] १ रोग, बिमारी।

२ तलवार चलाने का एक ढग।

३ राक्षस।

४ देखो 'बिकार (रू. भे.)

बिकरण—सं. पु. [सं. विकर्ण] १ धातु व प्रत्यय के बीच में होने वाला वर्णागम। (व्याकरण)

२ एक शिवभक्त महर्षि।

३ धृत राष्ट्र का एक पुत्र, जो बडा न्यायी था।

४ कर्ण का एक पुत्र।

५ एक प्रकार का सांप।

६ एक प्रकार का तीर या बाण।

वि. [स वि+करणम्] १ इन्द्रिय रहित।

[सं. वि.+कर्ण] २ जिसके कान न हो, कर्ण रहित।

३ जो सुन न सके, बहरा।

बिकरणक—सं. पु.—शिव का एक व्याड़ि नामक गण।

बिकरतन, बिकरत्तन—सं. पु [सं. विकर्तन] १ सूर्य। (डि. को.)

२ आक, मंदार।

३ वह राजकुमार जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

४ एक सूर्यवंशी राजा जो कोढ से पीड़ित था और साबरमती नदी में स्नान करने से मुक्त हुआ था।

बिकरम—सं. पु. [सं. विकर्म] वेद विहित कर्म के विपरीत कर्म, दुष्कर्म, पाप।

२ विरुद्धाचार।

३ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

बिकरमादित्य, बिकरमादीत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

बिकरमी—वि. [सं. विकर्मन] १ निषिद्ध कर्म व कुकर्म करने वाला।

२ देखो 'विक्रमी' (रू. भे)

बिकरस—सं. पु [सं. विकर्ष] १ बाण, तीर।

२ धनुष की प्रत्यंचा खींचने का कार्य।

३ अन्तर, दूरी, फासला।

बिकरसण—स. पु. [सं. विकर्षणः] १ कामदेव के पांच बांणों में से एक।

[स. विकर्षणम्] २ आकर्षण, खिंचाव।

बिकरांत—देखो 'विक्रांत' (रू. भे.)

बिकरांति—देखो 'विक्रांति' (रू. भे.)

बिकरार—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

उ०—वार बिकरार सिरदार विंध वाहियौ, समर भर भार धर भार सूरै। सार सेलार ऊभार भभार सर, पार चोधार कर पार पूगो। —नाथो सांदू

विकराळ, विकराल–वि. [सं. विकराल] (स्त्री. विकराळी) १ भीषण आकृति वाला, भयंकर, भयावह, डरावना।

उ०—१ भर्ते हिक जोगी गिह भुगाळ। विहै हिक वीर हुवा विकराळ। —गु. रू. बं.

उ०—२ वो हळफळियो भिभकनै बैठो व्हियो। काई देखै कै खुद मायण मांचा रै पगवाडै खडी रौ विकराळ रूप धारयां ऊभी है। —फुलवाड़ी

उ०—३ खैहैचे खड़िया थाट खूर, सत्रवां काळ विकराळ सूर। —वि. स.

उ०—४ ते गात्रेश्वर प्रति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलतो, जठो जाणि कराल। —वि. कु.

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—१ नगा प्रभि नाळ वजै विकराळ। धरा रजि धोम वर्णं नहि धोम। —सू. प्र.

उ०—२ धमुर घणा विकराळ कहो किम मारिया। सतां-सुख उपजाय देवा-दुख टारिया। —गो. रा.

उ०—३ मचक धुन मृदंग विकराळ रज धोम तम, जवाळ धख मसाला नीर ज्वाळा। —महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

उ०—४ ए नीगळ्यो किम जोवनो, वैरी विकराल। वली मुझ थी अधिको धणो होयवे ऊठी झाल। —श्रीपालरास

३ प्रचण्ड, तीव्र, तेज।

उ०—१ माव वताय सांमुहो माळै। अगनि झाळ विकराळ उझाळै। —सू. प्र.

उ०—२ तन पोरस ग्रहिया तुरस, करग धरै किरमाळ। पावक धात सजोग पुण, कोप वधै विकराळ। —मा. वचनिका

उ०—३ जाण जोह नागणी, प्रणी भोपै अतमाळी। तिलो सेल फल नरल, तीर पावक विकराळी। —बखतो खिड़ियो

४ व्याकुल।

५ क्रोधित, क्रोध युक्त।

उ०—१ झाडी गांधै गोळियां री बरखा होवण लागी, तौ सेवट विकराळ व्हियोड़ो सूर बारै निकळियो। झाल्या सू प्राण बरसै ही मर वो मरद जरद करतो दांतरड़ियां घिसै हो। —अमरचूनड़ी

६ जबरो, विशाल दीर्घ, बडा।

उ०—१ भां धनुस बडो विकराळ रघुवर छोटो सो। —गो. रा.

उ०—२ दीहिया लका लियण दारुण, वधै कोप विकराळ। —सू. प्र.

सं. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ युद्ध। (अ. मा.)

रू. भे.—बकराळ, बिकराळ, बिक्कराळ, बिकरार, वकराळ, विकरोळ, विक्कराळ, विक्कराल, विक्करु।

अल्पा.,—बकराळो, वकराळो, बिकराळो, विकराळो, विकरूल्यो।

विकराळो—देखो 'विकराळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तेजावत तिणवार, 'रूप' बोलै मछराळो। विकराळा दळ विचै, करू धमचक कळिचाळो। —सू. प्र.

उ०—२ राजा देखि तरह विकराळै। अहि चित भंचकि दीघ उछाळै। —सू. प्र.

उ०—३ छत्रपतिहूंत सहंस गुण छाजै, वीरभद्र गण तठै विराजै। रोम जटा ऊभा विकराळा, काळा रोम रोम अहि काळा। —सू. प्र.

उ०—४ रीछ खाल अगियां विकराळी। कसि जिम कसै भुजंगम् काळी। —सू. प्र.

उ०—५ तासु वयणु अवहेलइ रामो, अति घणु बल्लइ जीवइ धाउ। कोपि चडिउ तसु बणारखवालो, धनुखु चडावइ जम विकरालो। —सालिभद्र सूरि

उ०—६ पइठउ गढ नइ गिरूई खालि, सरप डम्पउ तेहूं अति विकरालि। घरि आवतउ पडिउ असार, सुर सेना गणिका नइ बारि। —हीराणंद सूरि

(स्त्री विकराळी)

विकरौ—देखो 'विकरौ' (अल्पा., रू. भे.)

विकरूल्यो—देखो 'विकराळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तांम तेज तन सड्यो, विख आवध अत्र घूल्यो। डग डग डैंक वाय, नाद कै विख विकरूल्यो। —सुरजनदास पूनियो

विकरेता—देखो 'विक्रेता' (रू. भे.)

विकरोळ—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

उ०—विडरी असत 'विजो' थियो वांसै, वाजै हाक थई विकरोळ। —नैणसी

विकरौ–सं. पु. [सं. विक्रय:] १ दाम लेकर कोई चीज देना, दाम लेकर किसी चीज के अधिकार का हस्तान्तरण करना, बेचना।

उ०—हाटा पड़ी हड़ताल, हमै मद सूगो हुवो। चूकै घणा कलाळ, विकरौ भागो बाघजी। —आसो बारहठ

२ वस्तु के बेचने से प्राप्त होने वाला धन।

रू. भे.—बिकरौ, विकरी, विक्रौ।

अल्पा.,—बिकरी, बिक्री विकरी, विक्री।

विकळ, विकल–वि. [सं. विकल] (स्त्री. विकला) १ व्याकुल, बेचैन, दुखी।

उ०—१ माळवणी इणि विधि घणउ, विरह बिकळ विलपंति।
ढोलउ पूगळ पंथ सिरि, आणंद अधिक खड़ंति। —ढो. मा.

उ०—२ ज्योतिसियां कही ग्रहां रै योग सू इसी मालूम होय छै जे पांणी री अधिकत कर सहर विकळ होय से। —नी. प्र.

उ०—३ करया पासि कराकं कांमु, वयरी नं हुं फेडउ ठांमु। करया आवी धाई सकल कइ मारूं कइ करूं विकल।
—सालिभद्र सूरि

उ०—४ का तन आळस कर अंघ, का फिर सूंवा करत मुंघ। का मन मूरख विकळ जास, का हुय बैठें वेदव्यास। —अनुभववांणी

उ०—५ विकल हुवा सुक सारिका हे! चुगै न पीवै नीर मियाजी।
—गी. रां.

२ उदास' खिन्न-चित्त।

उ०—व्याकुल सीता सोचत फिरतां, जो यौ नैण जटाऊ जी, नारायणजी परमेसरजी। सुणनें कथा मुगत हरि दीनीं, चाल्या विकळ अगाऊजी, नारायणजी परमेसरजी। —गी. रां

३ भयभीत, डरा हुआ, घमड़ाया हुआ, विह्वल।

उ०—अर गुजरात रो अघोस विकळ थको परीवार सूं चद्रहास लेतौ हो आगै आय पड़ियो। —व भा.

४ क्षोभ युक्त।

५ खडित, भंग।

६ हीन, रहित।

उ०—१ प्रथवी मंद पळ, मत्र सवै निःफळ, जड़ी मूळी रस बिकळ। कुळ स्त्री निरगळ, न्यायी राय तुच्छ दळ। चरड बहुल, वाट पाडा तणा कल कल। —रा. सां. सं.

उ०—२ जैं समजणी हुवै तै उणनें मूरख जाणै। जैं भगी गै मोटी तो न खाधी नें भंगी री कीधी खाधी तिण सू उणनें विवेक रो विकल जांणं। —भि. द्र.

७ कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ।

८ सडा हुआ।

९ प्रभाव या शक्ति से रहित, असमर्थ।

१० क्रोधित, क्रुद्ध।

उ०—ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलतौ, रूठौ जाणि कराल। —वि कु.

११ अस्वाभाविक।

१२ मिथ्या, झूठ, असत्य। (अ. मा.)

१३ चचल, अस्थिर।

१४ अपूर्ण, अधूरा।

१५ जिसमें काल नही हो, कल से रहित।

स. पु.—१ कपट, छल। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ देखो 'वेप्रकल' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जद सुहागण बोली-बामण नें मांहै बसांणं ने कथा वचाई थी सो कथा तो बाछै थोड़ी नै मांहरे सांमो देखै। जो हुं जांणां मूरख है, विकळ है। —गाम रा धणी री वात

रू. भे.—विकळ, वेकळ, बैंकळ, वकळ।

अल्पा,—विकळो।

विकळकांमी-सं पु.—नारद।

उ०—कीयौ रांमायण लंक कुरखेत भारथ कीयौ ग्रोध कोई पेखियौ भीच श्रेहो। त्रिनयण तरग नारद पूछे त्रिण्हे, कहो भगवत भगवत केहो। महारुद्र महाग्रह महामुणी, महाजुध कीया थें महादळ मारि। कहो करणाकरण पूछजै तो कन्हां, ऊथ को ऊदउत तणी उणिहारि। दइत कपि भूझतां पड कुर देखीया, कहि रुद्र कहि रवि विकळकांमी। गागहर आभरण जिसो गजदळ गिळण, साख दे पूछियौ आव सांमी। —दुरसो आढो

विकळचित्त-वि.—१ अस्थिर चित्त।

२ चंचल।

रू. भे —विकळचत, विकळचित्त।

विकळता, विकळताई-स. स्त्री.—१ विकल होने की अवस्था या भाव।

२ बेचैनी।

रू. भे.—विकळता, विकळाई।

विकळप, विकलप-स. पु. [स. विकल्पः] १ भ्रम, भ्रांति।

उ०—जा घट पेम प्रगासीया, विलीया विकळप नांहि। हरीया छांना नां रहै, आया अतर मांहि। —अनुभववांणी.

२ धोखा।

३ विरुद्ध कल्पना।

उ०—अति उतिम नाभी असथानं, मन मकळप विकळप नहीं ठानं। अति उतिम सिवरन सरबगा, अच्छर एक भया अणभगा।
—अनुभववांणी

४ योग शास्त्रानुसार पंच विधि चित्त वृत्तियों में एक, जो ऐसे शब्द ज्ञान की शक्ति है कि जिसकी वाच्य वस्तु नही होती।

५ मन की दुविधा!

उ०—अंतर एक लीया रहै सदत्रत, असतन आखं बोल बचनतो। करत न को सकलप नहीं विकळप, सुख दुख देह न वछै मनतो।
—अनुभववाणी

६ मन मे उत्पन्न होने वाली भांति-भांति की कल्पनाए।

उ०—१ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणं। संसयो नांम मिथ्यात थोपो भणं। —ध. व. ग्र.

उ०—२ मन संकळप बिकळप है मनही, मन आयत मम मूता। मन ही त्याग चलै बोह माया, मन ही लाग विगूता।
—अनुभववाणी

७ निर्णाय।

८ संदेह, हिचकिचाहट, सकोच।

९ इच्छा, अभिरुचि।

१० भूल चूक। ११ अज्ञानता।

रू. भे.—बिकळप, बिकलप।

बिकळांग, बिकलांग—वि. [सं. विकल+अंग] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो, अंगहीन।

रू. भे.—बिकळांग, बिकलांग।

बिकळा, बिकला—सं. स्त्री. [स. विकला] १ वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होना बंद हो गया हो।

२ कला का सातवां अंश।

३ उपद्रव।

४ कलह।

५ बुधग्रह की गति।

उ०—चंद्रकला तै बिकला जांणो, घटत बधत नह नेखह। साहिब नह तउ सबा गुरंगी, वाधह कला विसेखह।
—वि. कु.

६ दुर्गा देवी का नामान्तर।

उ०—दीग्घा लघु वपु दढा, सबेही रूप विरूपा। बिकळा सकळा अजा, उपावण आप आपुपा।
—देवि.

वि.—चचल, अस्थिर।

रू. भे.—बिकळा।

बिकलिंदी—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू. भे.)

उ०—मनुम बिन नव मांहि तेऊ बाऊ बै जावै। बिकलिंदी तै दस मांहि जावै पूठा ही आवै।
—घ. व. ग्रं.

बिकळो—वि.—१ चिरस्थाई, अमिट।

उ०—राजा काम मळावियो, राखं बिकळी कत्थ। कह्यो वजोरा 'गजपतो', नेड़ो साऊ सत्थ।
—गु. रू. ब.

२ देखो 'निकळो' (पू.)

बिकलेंद्रि, बिकलेंद्रिय—वि. [स. विकलेंद्रिय] १ जिसकी इन्द्रिय वश में न हो।

२ जिसकी इन्द्रिय में कोई दोष हो।

सं. पु.—जैन मतानुसार द्वेंद्रिय, त्रींद्रिय और चतुरेंद्रिय जीवों का समूह।

उ०—१ प्राण बिकलेंद्रिय भूत वनस्पति, जीव पंचेंद्रिय जात। चार स्थावर सत्वज काया, भगवतै साक्षात।
—जयवाणी

उ०—२ साते नरक तणो इक दंडक, असुरादिक दस जांणजो। पांच थावर नै त्रिण बिकलेंद्रि, उगणीस गिणती आंण जो।
—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—विकलिंदी, विगलिंदी, विगलिंद्रिय।

बिकळो—वि. (स्त्री. बिकळी) १ अविश्वास-पात्र।

२ बदचलन, दुश्चरित्र।

३ देखो 'विकळ' (अल्पा., रू. भे.)

बिकल्प—देखो 'विकलप' (रू. भे.)

बिकस—स पु. [सं. विकसः] चन्द्रमा, चान्द क. कु. बो.।

बिकसणो, बिकसबो—क्रि. अ. [सं. विकाशनं] १ विकसित होना।

उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी, लहलहे कुंज कुंज बिकसै।
—रसीलै राज रा गीत

२ खिलना, फूलना।

उ०—१ मुख दीसो बिकसं कमळ, चंदन वचन रसाळ। हियड़ै जाग कि करतरी, घूरत चिन्ह ए माल।
—पचदडी री वारता

उ०—२ नाह बिकसं घणो कमळ जिम भड़ निवेड़। भड़ घणा पाडतो सोभियो महा भड़।
—हा. झा.

३ वृद्धिमान होना, बढना।

उ०—नवली भनी कुमदिनी बिकसं, रवि ऊगमते जेण रे। भर यौवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी विकसै एम रे।
—वि. कु.

४ आगे बढ़ना, प्रगतिशील होना।

५ प्रफुल्लित होना, हर्षित होना, आल्हादित होना खुशी में फूलना।

उ० १ उत्तम न्रप मिलियो जई, बाप भणी धरि नेह। मन बिकस्यो तन उल्लस्यो, रमाचित थयो देह।
—वि. कु.

उ०—२ सखी अमीणो साहिबो, बांकम सूं भरियोह। रण बिकसं रितुराज मै, ज्यूं तरवर हरियोह।
—बां. दा.

उ०—३ प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ। जेणि दीठइ उत्तम ना मन बिकसह।
—सभा.

६ प्रकाशित होना।

बिकसणहार, हारो (हारी), बिकसणियो—वि०।

बिकसियोड़ो, बिकसियोड़ो, बिकस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिकसीजणो, बिकसीजबो—भाव वा०।

बिकसणो, बिकसबो, बिगसणो, बिगसबो, वगसणो, वगसबो, बिकस्सणो, बिकस्सबो, विक्कसणो, विक्कसणो, विगसणो, बिगसबो,
—रू० भे०

बिकसाड़णो, बिकसाड़बो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू. भे.)

बिकसाड़णहार, हारो (हारी), बिकसाड़णियो—वि०।

विकसाड़िग्रोड़ो, विकसाड़ियोड़ो, विकसाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विकसाड़ीजणो, विकसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

विकसाड़ियोड़ो—देखो 'विकसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विकसाड़ियोड़ी)

विकसाणो, विकसाबो—[राज. विकसणो क्रि. का. प्रे. रू.] १ विकसित करना/करवाना ।

उ०—मूवां नै हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हे । —गी. रां.

२ वृद्धिमान करना, बढ़ाना ।

३ आगे बढ़ाना/बढ़वाना, प्रगतिशील करना/करवाना ।

४ प्रफुल्लित करना/करवाना, हर्षित करना/करवाना, आल्हादित करना/करवाना, खुशी में फुलाना/फुलवाना ।

विकसाणहार, हारौ (हारी), विकसाणियौ—वि० ।

विकसायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विकसाईजणो, विकसाईजबो—कर्म वा० ।

विकसाड़णो, विकसाड़बो, विकसाणो, विकसाबो, विकसावणो, विकसावबो, विगसाड़णो, विगसाड़बो, विगसाणो, विगसाबो, विगसावणो, विगसावबो, विकसाड़णो, विकसाड़बो, विकसावणो, विकसावबो, विकस्साणो, विकस्साबो, विकस्सावणो, विकस्सावबो, विगसाड़णो, विगसाड़बो, विगसाणो, विगसाबो, विगसावणो, विगसावबो—रू. भे ।

विकसायोड़ो—भू. का. कृ.—१ विकसित करवाया हुआ. २ आगे बढ़वाया हुआ, प्रगतिशील करवाया हुआ. ३ प्रफुल्लित करवाया हुआ, हर्षित करवाया हुआ. ४ आल्हादित करवाया हुआ, खुशी में फुलवाया हुआ. ५ वृद्धिमान किया हुआ, बढ़ाया हुआ.

(स्त्री. विकसायोड़ी)

विकसावण, विसावणो—वि.—१ विकसित करने वाला ।

२ खिलाने वाला, प्रस्फुटित कराने वाला ।

उ०—हिंदुस्थांन का छत्र, जगत छाया वरतावण । हिंदुस्थांन में सूरज, कवि कमळ विकसावण । —रा. रू

३ वृद्धिमान करने वाला, बढ़ाने वाला ।

४ आगे बढ़ाने वाला, प्रगतिशील करने वाला ।

५ प्रफुल्लित करने वाला, आल्हादित करने वाला, खुशी में फुलाने वाला ।

विकसावणो, विकसावबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू. भे.)

विकसावणहार, हारौ (हारी), विकसावणियो—वि० ।

विकसाविग्रोड़ो, विकसावियोड़ो, विकसाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विकसावीजणो, विकसावीजबो—कर्म वा० ।

विकसावियोड़ो—देखो 'विकसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विकसावियोड़ी)

विकसियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विकसित हुवा हुआ. २ खिला हुआ, फूला हुआ (फूल) ३ आगे बढ़ा हुआ, प्रगतिशील हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुआ हुआ, हर्षित हुवा हुआ, आल्हादित हुवा हुआ, खुशीमें फूला हुआ.

(स्त्री विकसियोड़ी)

विकस्सणो विकस्सबो—देखो 'विकसणो, विकसबो' (रू. भे.)

उ०—मेडतिया 'हरियद,' सूर दळ रांम विकस्सै । मांनसिंघ जूंझार, बेळ बोलिया विहस्सै । —रा. रू.

विकस्सणहार, हारौ (हारी), विकस्सणियौ—वि० ।

विकस्सिग्रोड़ो, विकस्सियोड़ो, विकस्स्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विकस्सीजणो, विकस्सीजबो—भाव वा० ।

विकस्साणो, विकस्साबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो (रू. भे.)

विकस्साणहार, हारौ (हारी), विकस्साणियौ—वि० ।

विकस्सायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विकस्साईजणो विकस्साईजबो—कर्म वा० ।

विकस्सायोड़ो—देखो 'विकसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सायोड़ी)

विकस्सावणो, विकस्सावबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू. भे.)

विकस्सावणहार हारौ (हारी), विकस्सावणियौ—वि० ।

विकस्साविग्रोड़ो, विकस्सावियोड़ो, विकस्साव्योड़ो—भू० का० कृ०

विकस्सावीजणो, विकस्सावीजबो—कर्म वा० ।

विकस्सावियोड़ो—देखो 'विकसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सावियोड़ी)

विकस्सियोड़ो—देखो 'विकसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सियोड़ी)

विकहा—देखो विकथा' (रू भे.)

विकाणो विकाबो—देखो 'विकाणो, विकाबो' (रू. भे.)

उ०—१ एकइ वनि वसतड़ा, एवड़ अंतर काइ । मीह कवडी नह लहइ, गइवर लाखि विकाइ । —प्र. वचनिका

उ०—२ तू मरवर की माछळी, कौण पिता कुंण माय । अलप सनेही कारणै, हाटौ हाट विकाय । —अनुभववांणी

विकाणहार, हारौ (हारी), विकाणियौ—वि० ।

विकायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विकाईजणो, विकाईजबो—कर्म वा० ।

बिकाचिनी-सं. स्त्री. [सं] स्कन्द की एक अनुचरी, एक मातृका ।

बिकायोड़ो-भू० का० कृ०—देखो 'बिकायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिकायोड़ी)

बिकार-सं. पु. [सं. विकारः] १ प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होने वाला परिवर्तन ।

उ०—१ बोधक बोध एकही कहिये, निश्चय योंही हमारा । है सुखराम सदा सुध केवळ, नहि कोई माया बिकारा ।
—श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ ब्रह्मांड इकीस ऊपरे आसन, ज्यां पर अविगत योगी । नाद बिंदका नहीं बिकारा, ब्रह्म आनंद का भोगी ।
—श्री सुखरांमजी महाराज

२ किसी वस्तु के आकार, गुण, रंग-रूप, स्वभावादि में होने वाला परिवर्तन जिससे वह काम देने योग्य न रहे ।

३ उक्त प्रकार का परिवर्तन करने वाला तत्व ।

४ क्रोधादि के कारण मुख पर हुई विकृति ।

उ०—हुई दोह हैमरा, नरा ऊपरां करारां । सेल ज्वाळ सल्लळी, कनां सिव चख्ख बिकारां ।
—रा. रू.

५ बीमारी, रोग ।

उ०—जे जळ भीकर, ते उद्वेग कर । जउ सीतळोपचार ते करइ बिकार । इणि परि प्रज्वलित, स्नेह पटळ, विरहानळ नीपजइ ।
—रा. सा. स.

६ वेदान्त व सांख्यदर्शनानुसार किसी पदार्थ के रूपादि का बदल जाना ।

७ मतपरिवर्तन ।

८ मनोवेग ।

९ उद्वेग, विकलता ।

१० दोष ।

उ०—१ सींचे अम्रत अंग प्रति मजम, जोवन लगे बिकार जरा जम । परमहंस आणद में प्राणी, ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वांणी ।
—सू. प्र.

उ०—२ दरसी जोत दिदार, तिरवेणारी ताक में । छूटा सकळ बिकार, माया मन मांग में ।
—श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ मोल सतोख सदा रहै सीतळ, आनंद रूप रहै जाहु तांही । पेम प्रवाह भये तन भीतरि, और बिकार निपै नहीं काही ।
—अनुभववांणी

११ वासना ।

उ०—१ करम कचोडी बेस करि, निजर लगी चहुं दिस । हरीया बिले बिकार में, तन मन रहीयो फिस ।
—अनुभववांणी

उ०—२ परियां तणां न चाले पैंडे, हाले कुपथ बिकार हिये । दांनां मिनख न राखे डेरे, दांनां विन कुण सीख दिये ।
—कविराज बांकीदासजी

१२ अवगुण, बुराई ।

उ०—१ बिखयानंद मलीन बिकारा, यह मान्या सो जुग जुग हारा । बिखयानद जगत का माला, अब भजनानद की केहूं साखा ।
—श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ आसि पासि तन करम का, फळ लागा सुख दुख । माया मोह बिकार की, हरीया मिटे न भूख ।
—अनुभववांणी

१३ वैमनस्य, शत्रुता ।

उ०—अठे रह कांमू बफादारी नेयस्यां । हालो घरां हालां । सो मूरो इसड़ो रग खींवै री दीसो, जें मगा सूं बिकार पैदा हो बिगाड़ हुवै ।
—सूरे खींवे कांधळोत री वारता

१४ परिवर्तन ।

उ०—स्वाति बूंद आकास की, पाये पड़ी समंद । हरीया पेम बिकार का, निज कण खोया कद ।
—अनुभववांणी

१५ बदहजमी ।

उ०—हांम कांम लोचणी उलाळो आकास जावे । चावळ री चौथो हैंमो खावै । तंबोल बिना खायां अहारा बिकार थावै । माडी मोडी कटारी री पडवली समावै ।
—रा. सा. सं.

१६ स्वाद, जायका ।

उ०—आंब स थोहरि ईख वड, एकै घरि अवतार । सांई जिभ्या लख कहै, जिभ्या लख बिकार ।
—सुरजनदास पूनियो

१७ जैन मतानुसार पांच ज्ञानेंद्रियों से होने वाले २४० विकारों में से कोई एक ।

रू. भे.—बिकार, बिकाह ।

बिकारी-वि. [स. विकारिन्] १ जिसमें कुछ विकार हुआ हो, बिकार युक्त ।

२ जिसमें कुछ परिवर्तन हुआ हो या होता रहता हो, परिवर्तनशील

३ विकार उत्पन्न करने वाला ।

उ०—सैलो सीगो घाले नेमा, रांम भगति का नांही पेमा । भरम करम बोह करे बिकारी, साध नही औ वड संसारी
—अनुभववांणी

स. पु.—१ साठ संवत्सरों में से तैंतीसवें संवत्सर का नाम जो विष्णु बीसी का तेरहवां संवत्सर होता है ।

२ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी रचना में बिकार (परिवर्तन) हुआ हो ।

रू. भे.—बिकारी ।

विकाव—देखो 'विकार' (रू. भे.)

उ०—बाहिर हेम रंग का बांना, भीतरि भया भंगार। या तन कूं कारी नहीं लागै, मनवा भरया विकाव। —अनुभववांणी

विकाळ—सं पु. [सं. विकालः] १ वह समय जब देवकार्य व पितृकार्य करने का समय बीत चुका हो।

२ देर, विलम्ब।

३ सन्ध्या का समय, शाम।

विकावणौ, विकावबौ—देखो 'विकाणौ, विकाबौ' (रू. भे.)

उ०—किसी सील सायर सुतन, कोड़ विकावण एक कण (रा)। ताई सोच येही खरी, यौ दुरगा ग्रासकरण रा।

—सुरजनदास पूनियौ

विकावणहार, हारौ (हारी), विकावणियौ—वि०।

विकाविग्रोड़ौ, विकावियोड़ौ, विकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विकावीजणौ, विकावीजबौ—कर्म वा०।

विकावियोड़ौ—देखो 'विकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकावियोड़ी)

विकास—सं पु. [सं. विकाशः] १ प्रदर्शन, प्राकट्य, प्रकटन।

२ आकाश।

३ विस्तार, फैलाव।

४ प्रकाश, रोशनी।

५ प्रस्फुटन, खिलन।

६ उन्नति, बढ़ोतरी, तरक्की।

उ०—घरटी फेरतां हरजस तौ बंद व्हैग्या अर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या-ग्रखिया मिलाकै-जिया भरमाकै-चलै नही जाना हो हो चलै नही जाना। गांम में दो च्यार मुकद्‌दमा इ चालू व्हैग्या जिणसं लोग बाग कई दफां रा जांणकार व्हैगा। कैवण रौ मतलब ग्रो कै गाम रौ मोकळौ सांस्कृतिक विकास व्हैगौ। —ग्रमर चूनड़ी

रू. भे.—विकास, विगास, विगास।

विकासणौ, विकासबौ—क्रि ग्र.—१ विकसित होना।

२ प्रकटित होना, प्रदर्शित होना।

३ प्रस्फुटित होना, खिलना।

उ०—काळी भमरावळि कळी, मूहां बांकड़ियांह कमळ प्रभात विकासिया, इसड़ी ग्रांखड़ियांह। —ग्रज्ञात

४ उन्नत होना।

विकासणहार, हारौ (हारी), विकासणियौ—वि०।

विकासिग्रोड़ौ, विकासियोड़ौ, विकास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विकासीजणौ, विकासीजबौ—भाव वा०।

विकासणौ, विकासबौ, विगासणौ, विगासबौ, विक्कासणौ, विक्कासबौ, विगासणौ, विगासबौ—रू० भे०।

विकासियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रकटित हुवा हुआ, प्रदर्शित हुवा हुआ.

२ विकसित हुवा हुआ. ३ प्रस्फुटित हुवा हुआ, खिला हुआ.

४ उन्नत हुवा हुआ।

(स्त्री. विकासियोड़ी)

विकिर—सं. पु. [सं. विकिरः] १ पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारों ओर फेंके जाने वाले चांवल आदि।

२ पक्षी।

३ कूप, कुआ।

४ पेड़, वृक्ष।

विकीरण—वि. [सं. विकीर्ण] १ जो चारों ओर फैला या छितराया हुआ हो।

२ प्रसिद्ध, मशहूर।

विकुंठ—वि. [सं.] १ अत्यधिक तीक्ष्ण या नुकीला।

२ अत्यधिक, भुथरा।

३ रैवत मन्वन्तर का एक देवता-समूह जिसमें चौदह देव होते थे।

वि. वि.—इस देवता समूह में निम्न लिखित देवता होते थे—१ अजेय २ कृश ३ गौर ४ जय ५ भीम ६ दम ७ ध्रुव ८ नाथ ९ यश १० विद्वम ११ वृण १२ शुचि १३ भेतृ १४ दात।

४ देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

विकुंठा—सं. स्त्री.—एक देवी, जो रैवत मन्वन्तर में उत्पन्न विकुंठ नामक देवताओं की माता व शुभ्र की पत्नी मानी जाती है।

विकुंडभांड—सं पु [सं.] एक दानव का नाम। (पौराणिक)

विकुंडळ—सं. पु.—निषध नगर के एक धनी वैश्य के पुत्र का नाम।

वि. वि.—यह बड़ा पापी पुरुष था। इसने यमुना तीर वासी एक ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के संग दो बार यमुना में माघ स्नान किया था जिससे इसको मुक्ति, हुई थी।

विकुंभ—सं. पु.—एक दानव, जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

विकुच्छ, विकुच्छी, विकुक्षि, विकुख, विकुखी—सं. पु. [सं. विकुक्षी] १ अयोध्यापति सूर्यवंशोत्पन्न इक्ष्वाकु के १०० पुत्रों में से सर्वज्येष्ठ पुत्र जिसे शशाद नामान्तर भी प्राप्त था। यह ककुत्स्थ, जिसके नाम पुरञ्जय व इन्द्रवाह भी थे, का पिता था।

उ०—१ मुत कासिप सूरज तप ग्रमाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। वइवस्तु तणै इक्ष्वाकु वीर, संभ्रम इक्ष्वाकु विकुख सधीर। —सू. प्र.

उ०—२ सुत विकुक्ष सकुनिअ सुत स्वभाव, पुत्र ज ककुत्स्थ अति हित प्रभाव । जे सुत अनन प्रथु पुत्र जास, ता जे प्रथु नंदन विस्टरास । —सू. प्र.

वि.—जिसकी तोंद बढ़ी हुई हो ।

विकुट—स. पु.—राजस्थानी (डिंगल) मे एक गीत छन्द विशेष ।

वि. वि.—इसमे प्रथम चरण मे १४-१४ मात्राओ पर यति से २८ मात्रा फिर दूसरे चरण में २७ मात्रा, फिर ७–७ मात्राओ के २० चरण होते है ।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, तिय सत बीसां मोह । तिण थी मिळ दुव चवद वद, विकुट गीत इम होइ ।

—पिंगळ सिरोमणि

विकुरवी, विकूरवी—वि.—वैक्रिय लब्धि मे उत्पन्न, कृत्रिम, बनावटी । (जैन)

उ०—निहां बळी मबळो सिंह विकूरवी रे, ते कहै मं दीठो इक सीह रे । मांणस नी लेतो वासना रे, आवं छै इण तार अबीह रे ।

—वि. कु

विकेस—वि. [सं. विकेश] १ जिसके सिरके बाल खुले हों ।

२ जिसका सिर बालरहित हो, गंजा ।

स. पु.—१ एक प्रकार का प्रेत ।

२ पुच्छल तारा ।

विकेसी—सं. स्त्री. [स. विकेशी] सिर के खुले बालों वाली स्त्री ।

२ वह स्त्री जिसके सिर में बाल न हो, गंजे सिर वाली स्त्री ।

३ शिव की पत्नी का नाम ।

४ अग्नि की एक पत्नी का नाम ।

५ पूतना राक्षसी का एक नाम ।

६ बालो की छोटी-छोटी लटों को मिलाकर बनाई हुई चोटी या वेणी ।

विकोक—स. पु. [स.] वृकासुर का पुत्र तथा कोक का छोटा भाई ।

विकोदर—सं. पु [स. वृकोदर] देखो 'व्रिकोदर' (रू. भे)

उ०—१ अमरावत अजबसिंघ अमर बोल काजे, जुद्ध आए जुधिस्ठिर बंधव मा गाजे । गोयद का मंदर विकोदर मा बाहां, मगर की मरजाद धरम के राहां । —रा. रू.

उ०—२ पटहथ ऊभंडतो भुज पाणां, बाहां प्रलंभ भेदियो वांणां । ईले साह नवाण आपाणां, जोधाहरो विकोदर जांणां ।

— ईसरदास वीरमदेवोत राठोड़ री गीत

उ०—३ गाजेवा अजमेर गिरव्वर, सं मादूळ मांडवा सम्मर । करण उपाडं 'भीम' किरम्मर, वधियो वामण जेम विकोदर ।

—गु. रू. ब

विकोस—वि. [सं. विकोश, विकोष] १ म्यान से निकला हुआ, बिना म्यान का । (शस्त्र)

२ बिना छिलके या भूसी का, भूसी रहित ।

३ खुला हुआ, अनाच्छादित ।

विक्क—स. पु. [सं. विक्कः] १ हाथी का बच्चा ।

२ देखो 'विक्क' (रू. भे.)

विक्कटा—देखो 'विकटा' (रू. भे.)

उ०—देवी भूरड़ा अम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा । देवी रावसं घोमरं रक्त रूती, देवी दुरजटा विक्कटा जम्म दूती । —देवि.

विक्कमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे)

उ०—१ अभयदाणु जिणि दिनु रायल संघह विक्कमपुरि किय पयट्ठु जिण उसम भुवणि बहुविह उछवु भरि । —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ । गणहर जेम सुहम सामि भवियण दिण बोहइ । —ऐ. जै. का. स.

विक्कय—देखो 'विक्रय' (रू. भे.)

विक्कराळ, विक्कराल—देखो 'विकराल' (रू. भे)

उ०—१ जुट जम्म जाळ, वपै विक्कराळं । बाहूडंड पिडं, बांणासै विखडं । —गु. रू. ब.

उ०—२ ऊछळंत हाथ पाव, घाट सीस दाव घाव । मड ईम रूंडमाळ, वीर नित विक्कराळ । —सू. प्र.

उ०—३ कलू काल रूपी महा विक्कराळं, फणा टोप रोपै महकोप जाल । वलक्के वलातो चलंतो करालं, जिणै फूंकि सूकै तरु माल डालं । —ध. व. ग्रं.

विक्करू—देखो 'विकराळ' (रू. भे)

विक्कसणौ, विक्कसबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—रिणमल राव विमरांमियो, कुंभा की मन विक्कसै । छळियो छदम तें कूड़ कर, जेम सीह आगै ससै । —नैणसी

विक्कसणहार, हारो (हारी), विक्कसणियो—वि० ।

विक्कसियोड़ो, विक्कसियोड़ो, विक्कस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विक्कसीजणौ, विक्कसीजबौ—भाव वा० ।

विक्कसियोड़ो—देखो 'विकसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विक्कसियोडी)

विक्कासणौ, विक्कासबौ—देखो 'विकासणौ, विकासणौ' (रू. भे.)

उ०—विक्कासै हासं मीसै वग्र, मेलै मूछां भ्रूहारं । धारा लंकाळे पांणै धूणं, अभ्रं नभ्भ आधारं । —गु. रू. ब.

विक्कासणहार, हारो (हारी), विक्कासणियो—वि० ।

बिक्कासियोड़ो, बिक्कासियोड़ो, बिक्कास्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिक्कासीजणो बिक्कासीजबो—कर्म वा० ।

बिक्कासियोड़ो—देखो 'विकासियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री बिक्कासियोड़ी)

बिक्खं, बिक्ख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—ग्रावै सघरण ग्रचीत, जेम वनि ग्रगनि सिळगां । सरप बिक्खं सोखवा, मंत्र ग्रावै सुखमंगो । —रा. रू.

२ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—चक्खां झाळ तूटै मुखां झाळ चडां, परस्सो फरस्सो भ्रमाके प्रचडां । वदै रांमहूं रांम वायक बिक्ख, तिकै रांम रा बांण जांणै सतिक्खं । —सू. प्र.

३ देखो 'वीख' (रू. भे.)

उ०—ग्रति सूरिति ग्रावस जेती ऊफरिण, वांमरण रूप जिहीं वधियो । विहवा दळ सांम्ही दोन्हो बिक्खां, जांणै ग्रंतक जागवियो ।
—गु. रू. बं

बिक्खणो—स. स्त्री—सड़क चलते समय घोड़े के पैर की रगड़ लगने से उत्पन्न ग्राग की चिनगारी ।

उ०—खुरताळां बिक्खणो, धणीलगी ग्रायासां । नह सुणीजै नीसांण, वमू वाजी वरहासां ।
—गु. रू. बं

बिक्खधर—देखो 'विसधर' (रू. भे.)

उ०—महर ग्रजैपुर जोधपुर, सोबै राख जवन्न । पूठ ग्रकब्बर वाहरां, थयो बिक्खधर मन्न । —रा. रू.

बिक्खम, बिक्खमी, बिक्खम्म, बिक्खम्मो—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—भारा ग्राकांत हुवदी भूम्मी, वरतंदी सुरवार बिक्खम्मी । ग्रमरू कथ ब्रहमांण ग्रखम्मो, थदै उथ्थल थांनूंदा । —र. ज. प्र.

बिक्खहर—१ देखो 'विसधर' (रू. भे.)

२ देखो 'विसहर' (रू भे)

बिक्खेव—देखो 'विक्षेप' (रू. भे.) (जैन)

बिक्टोरिया—सं. स्त्री [ग्रं.] १ प्राय: फिटन से मिलती-जुलती किन्तु उससे कुछ छोटी ग्रौर हल्की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी ।

२ एक छोटा ग्रह जिसकी खोज हैंड नामक पाश्चात्य ज्योतिषी ने सन् १८५० में की थी ।

बिक्रतंड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे)

उ०—ग्यांन रो गोरख बिक्रतंड बुधांन रो गरणां, सिंधां बांमदेव मानसीरां में समंद । छोळां माधवांन बळाकार गदाधार छाजै, नृप भूपाळ ग्रसो उदीपियो नंद ।
—महाराज सनमानसिंघ हाडा रो गीत

बिक्रत—वि. [स. विकृत] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो गया हो, विकारयुक्त ।

२ जिसका ग्राकार, रूप ग्रादि में परिवर्तन हो गया हो, कुरूप, भद्दा

उ०—वा दो तीन वेळा मासी रै मूंडा सांम्हो जोयो तो उणनै मूंडो लखायो जांणै उणारी ग्रांख्यां होठां माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं, कांन ग्रापरो ठायो छोड लिलाड़ माथै जुड़ग्या ग्रर नाक ठोडी रै हेटै लटूमै । इण भांत मासी रो उणियारो बिक्रत ग्रर विडरूप क्यूं व्हैगो ?
—फुलवाड़ी

३ ग्रस्वभाविक ।

४ ग्रधूरा, ग्रपूरण ।

५ बीमार, रोगी ।

६ ग्रंगहीन, विकलांग ।

७ उद्विग्न ।

८ घृणाजनक ।

९ ग्ररुचिकारक ।

१० ग्रसाधारण ।

स. पु.—१ दस लोककर्ताग्रों में से दूसरे प्रजापति का नाम ।

२ विष्णुवीसी में चौथा व साठ संवत्सरों में से चौबीसवें संवत्सर का नाम ।

३ परिवर्त्त राक्षस का नाम । (पुराण)

४ ब्राह्मण वेशधारी कामदेव, जिसने इसी वेश में ग्रयोध्यापति इक्ष्वाकु के साथ संवाद किया था ।

रू. भे.—बिक्रत, वक्रत, विक्रित ।

बिक्रतस्वर—सं. पु [सं विकृत+स्वर] ग्रपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरने वाला स्वर । (संगीत)

बिक्रता—सं. स्त्री. [सं. विकृता] एक योगिनी का नाम ।

बिक्रति—स. स्त्री [सं विकृति:] १ विकृत होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ विकार या खराबी ।

३ विकार के उपरान्त प्राप्त होने वाला रूप, बिगड़ा हुग्रा रूप ।

४ बीमारी, रोग ।

५ परिवर्तन ।

६ परिणाम ।

७ मानसिक क्षोभ ।

८ २३ वर्णों के छन्दों की संज्ञा । (पिंगल)

९ विकार ग्राने पर होने वाला मूल प्रकृति का रूप । (सांख्य)

१० मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होने वाला शब्द का रूप ।

११ भागवत, विष्णु, एवं वायु के ग्रनुसार एक यादव राजा जो भीमरथ का पिता व जीमूत राजा का पुत्र था ।

रू. भे.—बक्रति ।

विक्रतुंड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे.)

विक्रम–वि.—बिना क्रम का, क्रमरहित।

स. पु. [सं. विक्रमः] १ विपरीत गति।

२ कदम, डग।

३ पराक्रम, बल, शौर्य।

४ बहादुरी, वीरता।

५ चाल, गति।

६ गरुड़ पर सवारी करने वाले भगवान, विष्णु भगवान्।

७ ब्रह्मवीसी या साठ संवत्सरों में से चौदवा संवत्सर।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से बलवर्धन नामक पुत्र।

९ राजा वीर। (म्र. मा.)

[सं. विकर्म] १० दुष्कर्म, पाप-कर्म।

उ०—शुभ करमन का सुख फल स्वरगा, ग्रशुभ करे दुख भोगै नरका। करम विक्रम तणा यह साजा, कबहूं रंक कब ही राजा।

—श्री सुखरामजी महाराज

११ तीन की संख्या।*

१२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

उ०—श्रीरीम कुळ राम सवतार, जैतवार के जैवार। भोज विक्रम करन ते सवाय, ग्राचार की सोभा वरणी न जाय।

—रा. रू.

१३ देखो 'विक्रमसंवत्' (रू. भे.)

रू. भे.—बिकरम, बिक्रम, बीकम, विकम, विकरम, वीकम, बीकम्म।

विक्रमक–स. पु.—स्वामीकार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

विक्रमगढ़, विक्रमनगर, विक्रमनगरि, विक्रमनगरी, विक्रमपुर, विक्रमपुरी

स. पु.—१ राजस्थान राज्यान्तर्गत बीकानेर नामक एक शहर।

उ०—ग्रत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमल विक्रमनगरि राज करै छै।

—द. वि.

२ जयसलमेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन नगर विक्रमपुर।

रू. भे.—बीकपुर, बीकमपुर, बीकमपुर, बीकमपुरी, विक्रमपुर, बिक्कमपुरि, बिक्कमपुरी, बीकनेर, बीकपुर, बीकमपुर।

विक्रमसील–स. पु.—एक राजा, जो कालिन्दी का पति और दुर्गम का पिता था।

विक्रमांत–स. पु. [स. विक्रम+ग्रंत] योद्धा, वीर। (म्र. मा.)

रू. भे.—विक्रमांत।

विक्रमाजीत, विक्रमादित, विक्रमादित्य, विक्रमादीत–स. पु. [सं. विक्रमादित्य] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनकी राजसभा में कालिदास थे और विक्रमी-संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

उ०—१ गया चौतीस वादेसाहु, और केता भुंवाळ। विक्रमाजीत ग्रर भोजराज, गयौ सो मुंज बलाळ।

—ऊदौ नैणसी

उ०—२ भूप विक्रमादित था ऊजेण सहर का, सभ बातां समरत्थ था दुख काटण पर का। दाता भोज पंवार था न्रप धार नगर का, लाख लाख द्रब देत था इक इक ग्रखर का।

—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ विक्रमादित्य जिमउ उपगारी, ग्रहनिसि सेवक नइ सुखकारी। पाच पडव जिम बलवंत, मोह तणइ परि साहसवंत।

—ऐ. जै. का. सं.

रू. भे.—बिकरम, बिकरमाजीत, बिक्रमाजीत, विक्रमारक, बीक, बीकम, बीको, विकमाईत, विकमायत, विकरमादित्य, विकरमादीत, विक्रमारक, वीक, वीकम, वीकम्म।

विक्रमाब्द–स. पु.—विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ संवत्, विक्रमी संवत्।

उ०—धारि कठिनाई धीर गुरु की चराई धेनु, इष्ट वर पाय पुनि पुरनिधि पाई तें। विक्रमाब्द इंदु नद द्वीप मानमोरी मारि चित्रकूट राजधानी जबर जमाई तें।

—कृष्णसिंह बारहठ

विक्रमारक–स. पु. [सं. विक्रमार्क] देखो 'विक्रमादित्य'।

विक्रमि—देखो 'विक्रमी' (रू. भे.)

विक्रमित्र–स. पु.—वज्रमित्र शुंग राजा का नाम।

विक्रमी–वि. [सं. विक्रमिन्] १ वीर, बहादुर, शूरवीर।

२ पराक्रम वाला, पराक्रमी।

३ विक्रम सम्बन्धी, विक्रम का।

स. पु.—१ सिंह, शेर।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

३ विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ संवत्, विक्रमीसंवत्

रू. भे.—बिकरमी, बिक्रमी, विकरमी।

विक्रय–स. पु. [सं. विक्रयः] बिक्री।

रू. भे.—बिक्रय, बिक्रेय, विक्कय, विक्रेय।

विक्रांत, विक्रा-ग्रंत–वि. [स. विक्रान्त, विक्रान्तः] १ शूरवीर, बहादुर, वीर। (ह. ना. मा.)

उ०—कृपा कटाच्छ गोल की, विलोल जाहि धा कर्म। रजै विक्रांत सात में, कृतांत ग्रांत में रमैं।

—ऊ. का.

२ विजयी, प्रतापी, तेजस्वी।

सं. पु.—१ सिंह, शेर।

२ एक प्रजापति जो वालेय गधर्वों का जनक माना जाता है।

३ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

४ एक प्रजाहित दक्ष राजा, जो दम राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम सुधृति था।

५ हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

६ राजा ऋतुध्वज (कुवलयाश्व) के उनकी पत्नी मदालसा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम। (पुराण)

[सं. वैक्रान्त] ७ वैक्रान्तमणि।

रू. भे.—विकरांत।

बिक्रांति–सं. स्त्री [सं. विक्रान्तिः] १ गति, चाल।

२ घोडे की सरपट चाल।

३ विक्रम, बल, शौर्य।

४ वीरता, बहादुरी।

रू. भे.—विकरांति।

बिक्रित—देखो 'विक्रत' (रू. भे.)

बिक्री—देखो 'विकरी' (रू. भे.)

बिक्रुस्ट–सं. पु.—व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर ध्वनि में बोलने की क्रिया या भाव। (संगीत)

बिक्रेता–वि. [सं.] विक्रय करने वाला, बेचने वाला।

रू. भे.—विकरेता।

बिक्रेय–वि.—१ जो बेचने के लिए या बेचने के योग्य हो, बिकाऊ।

२ देखो 'विक्रय' (रू. भे.)

रू. भे.—बिक्रेय।

बिक्रोस–सं. स्त्री. [सं. विक्रोशनं] १ गाली।

२ चीत्कार, चिल्लाहट।

बिक्रो—देखो 'विकरी' (रू. भे.)

बिक्लव, बिक्लव–वि. [सं. विक्लव] १ भीरु, डरपोक।

२ डराहुआ, भयभीत।

३ पीड़ित, दुखित।

४ विह्वल, बेचैन।

५ उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

बिक्षत–वि. [सं.] घायल।

बिक्षम–सं. पु.—कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार।

बिक्षय–सं. पु.—अधिक मद्यपान के कारण होने वाला रोग।

रू. भे.—विक्षय।

बिक्षर–सं. पु.—१ भगवान् विष्णु।

२ कश्यप एवम् दनु का एक पुत्र जो वीर और प्रतापी दैत्य था और आगे चल कर वसुमित्र राजा के रूप में अवतीर्ण हुआ था।

बिखात, बिखातमांन, बिखाति, बिखातिमांन–वि.—प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—१ समुदघात सग नर नें पण गल्मय तिरि देव। मारक वायु नें च्यार सेस में तीनुं भेव। विही दोय विगल में थावर नें मिथ्यात। सेस नें तीन दिहि जिम प्रवचन में बिखात। —वृस्त.

उ०—२ कीरतिथंभि करि, सारदा सरस्वती नदीए करी, देस-देसाउर वदीतुं बिखातमांन छइ, एहवूं एक अणहलपुर पाटण वरणवीतूं सोभइ, अहो सीआलक बोलि। —व. स.

उ०—३ अथ घरम्मप्रभाव, क्षीरसागर बिस्तीरण निस्कलंक कुल, लोकमहि बिखाति विसुद्ध जाति, भवनोद्धारधार, सकललक्षण-प्रधान। —व. स.

बिखिप्त–वि [सं.] १ घबराया हुआ, बेचैन, व्याकुल। २ खारीज किया हुआ, त्यागा हुआ. ३ भेजा हुआ. ४ खण्डन किया हुआ. ५ बिखरा या फेंका हुआ।

६ पागल।

बिखिप्तता–सं. स्त्री. [सं विक्षिप्त+ता] बिक्षिप्त होने की अवस्था या भाव।

बिखेप–सं. पु. [सं. विक्षेपः] १ इधर उधर हिलाने डुलाने की क्रिया या भाव।

२ इधर उधर बिखेरने या छितराने की क्रिया या भाव।

३ झटका देने की क्रिया या भाव।

४ मन को इधर-उधर दौड़ाने या भटकाने की क्रिया या भाव।

उ०—माया में मिसरत मिल्या, चित्त नांम धरांणी। स्वरूप मूल स्वप्ना भयी दोस बिखेप दरसांणी। —श्री सुखरामजी महाराज

५ बाधा, विघ्न।

उ०—मल बिखेप आवरण कर दूरा, वे सदा सुख से लेटैं। सत चित आनंद मिलै हजूरा, गुरु गोदी में बैठे।

—साधु जगदीसरांम

६ एक प्रकार का अस्त्र विशेष। (प्राचीन)

रू. भे.—बिखेप, विक्खेव, विखेप।

बिखोभ–सं. पु. [सं.] विशेष रूप से मन में होने वाला दुःख, उद्विग्नता।

बिखोभण–सं. पु.—कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक दानव पुत्र।

बिखंड–वि.—१ खंड-खंड, टुकड़े-टुकड़े।

उ०—१ खड-खंड बिखंड बीजळां खिमतां, हय गय दळां बिहंडतां हाथ। हय वारां कूदेगा हळका, 'भारे' री रहियी भाराथ।

—केसरीसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ सौ धनुखु नांमइ किमु काटकि, धारणि प्रासकि घडहडी। बमंड खंड बिखंड थाइ कि खगि सयल वि रडवडी।

—सालिभद्र सूरि

२ नाश, संहार ।

उ—१ जठे जनम जाळे वरे विखराळ । नाहडर पिंड, बांणामें बिखंड । —गु. रू. ब.

उ०—२ जिण मत्थे इसा भड न हुवै प्रचंड, 'बाघ'तन रिम घडा करै लागा बिखंड । भभ भभार भड 'राजसी' भळगो, एक अवनाड सोनाळ अवभ्भळगो । —हा. भा

३ मिटाने वाला, खत्म करने वाला ।

उ०—भाऊ आणंदराम तण, उर आणंद प्रचंड । दळ आणंद प्रकासणा, खळ आणंद बिखंड । —रा रू.

रू. भे —बिखर ।

बिखंडण—वि. १ संहार करने वाला, संहारक, नाशक ।

२ तोड़ने वाला ।

बिखंडणो, बिखंडबो—क्रि अ. १ मिट जाना, नष्ट हो जाना ।

१ खण्ड-खण्ड होना, टुकड़े टुकड़े होना ।

क्रि. स.—३ नाश करना, संहार करना, मारना ।

४ खण्ड-खण्ड करना, टुकड़े टुकड़े करना ।

उ०—धरि खबर आणि वे बगवा, मान बिखटा मंडियो । आमुर तरीन राजा 'अभै', खग दुण भान बिखंडियो । —रा. रू.

५ तोड़ना, मिटाना ।

उ०—१ इणइ वचनि खरणी ढलिउ, नर घर पूजइ देह । 'ध्रं ध्रै धस धस हास न, मुभ. बिखडइ नेह । —मा. का. प्र.

उ०—२ मित्र कलत्र स्यु नेह बिखंडिउ, नेह लगाइ परभावइ । राजकुमरि परणीः जि ट्रेकि, जोई न मनइ भावि ।

हीराणद सूरि

बिखंडणहार, हारो (हारी), बिखंडणियो—वि० ।

बिखंडियोड़ो, बिखंडियोड़ो, बिखंडयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिखंडीजणो, बिखंडीजबो—भाव/कर्म वा० ।

बिखडणो, बिखडबो—रू. भे. ।

बिखंडा—वि स्त्री.—नाश करने वाली, संहार करने वाली ।

उ०—देवी कम्खा हालणी धीर कवरी, देवी मात वागेसरी महासरी । देवी दडणी देव वेरी उदडा, देवी वजगा जदा दैता बिखंडा । —देवि.

बिखंडियोड़ो—भू. का. कृ.—१ मिटा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ खण्ड खण्ड हुआ हुआ टुकड़े-टुकड़े हुवा हुआ. ३ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ. ५ तोडा हुआ, मिटाया हुआ ।

(स्त्री बिखंडियोड़ी)

बिख—वि. [सं. विष, .विष्य] १ जिसकी नाक कटी हुई हो, नाक रहित ।

२ देखो 'विस' (रू. भे) (अ. मा., डि. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—भाग बिख अराबां आगि माथै भड़ै, लड़थड़ै अड़ै गैणागि लागो । झपेटा भाग किलमां करै झोबरै, नाग जिम रांम रो खाग नागो । —राव भीमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ हाथा रो जहड़ो हिलोहळ, तहड़ो कहियो जिकै तिकै । "जैसा" हरो जायनै जोयो, बिख अमरत हिक भाव विकै । —नवलजी लाळस

उ०—३ बिख पीजै कुण कारणै, ता सेती मरि जाय । हरीया इम्रत पीव करि, कळि अजरांमर थाय । —अनुभववांणी

उ०—४ साहिजिहान बराड अधप मरप, महि अजमेर दराड मराण । बिख बळ गुमण आसनो बसियो, रहियो तेग अणीयां रांग । —राव सत्रसाळ हाडा रो गीत।

उ०—५ अमिया गरुड दवार थी, ज्यौं बिख निर विख होय ।। बिसन जपना पाप स्यो, वोहडि न करिये कोय । —वील्होजी

उ०—६ नेम काढ़ नही पेम, बड्यो पखवाद मैं । हरिहां दास कहै, हरिराम, रच्यो बिख स्वाद मैं । —अनुभववांणी

उ०—७ इम पतसाह सुणै अकुळायो, अहि जांणै जूवल तळ आयो । भिळियां जांण सुरा बिख भेळा, मोर अगन किर थया समेला । —रा रू.

उ०—८ मिश्री लै अपमांण, मींचौ घोळै घी सहित । बिख सो नीम बखाण, मीठो होवै न मोनिया । —रायसिंह सांदू

३ देखो 'विसय' (रू. भे)

उ० रातो रहै सदा बिख रस मैं, पेम भगति नही भाय । लोक लाज काज कुळ माही, हरि पूज्यौ न सुहाय । —अनुभव वांणी

बिखग्रास—स. पु.—सर्प, सांप ।

उ०— मेळ थया खगराज, हूंत गजराज दहल्लै । गरुडपख गजिया, भाट बिखग्रास न भल्लै । —रा रू

बिखई—स. स्त्री.—१ इन्द्रिय । (अ. मा.)

२ देखो 'विसयी' (रू. भे)

उ०—निज कुंभ सिभ जुग वग धनोप, उत्तग सिखर वण सिखर धोप । कर लोल भुलत अति चपळ कांन, बिखई मन जाणिक उकनिवान । —रा. रू.

बिखउ—देखो 'बिखो' (रू. भे.)

उ०—थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारु आमा लुध्ध । परदेसैं धांधळ घणा, बिखउ न जांणइ मुध्ध । —ढो. मा.

बिखकन्या—देखो 'बिसकन्या' (रू. भे.)

उ०—किलच किलमां वाहि घड़ां कराकरा किया, हूबे हूंकळ कळळ मैंगळ हुवं। बिखकन्या बींदरणी बींद भोजो बिकट, जोजरो वरै मोटियार जोवं। —भोजराज लगारोत री गीत

बिखकर-स. पु. [सं. विषकिरि] मयूर, मोर। (नां. मा.)

बिखकसेन-सं पु. [सं. विष्वक्सेन] १ ईश्वर। (नां. मा.)

२ विष्णु।

३ श्री कृष्ण। (म्र. मा.)

रू. भे.—विखुकसेन।

बिखगामी-वि. [सं. विषमगामी] (स्त्री. बिखगामरण) विषम गति से चलने वाला।

बिखणो, बिखबो—देखो 'वीखणो, वीखबो' (रू. भे.)

बिखणहार, हारो (हारो), बिखणियो—वि०।

बिखियोड़ो, बिखियोड़ो, बिख्योड़ो भू० का० कृ०।

बिखीजणो, बिखीजबो—कर्म वा०।

बिखदातो-सं. पु. [स. विषदान्त] नाखून। (म्र मा.)

बिखधर, बिखधार, बिखधारो—देखो 'विसधर' (रू. भे.)

(म्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—च्यार मजळ प्रजमेर सूं, दाभै 'अवरंग' दुक्ख। ज्यों बिखधर छछूंदर, गिळै न त्यागै मुक्ख। —रा. रू.

उ०—२ चूर त्रिरण तर पसर वनचर, कना मेटरण तिमरण रवि कर। धूप चख हर ज्वाळ, बिखधर धारि सुजहर। —रा. रू.

उ०—३ घर जलियो झाळ 'बबर'हर बिखधर, भर बांधो प्रजमेर भर। नाग दवरण सत्रसल नेडांरणो, डमै न रांणो तेरण डर। —राव सत्रसाळ हाडा री गीत

उ०—४ प्रथी धरणपार, धुजै बिखधार। धूबै घर धोम, कमक्कत कोम। —सू. प्र.

बिखनग-स पु —१ मीग या तेलिया नामक स्थावर विष।

२ बछनाग नामक विष।

बिखनजर-सं स्त्री.—१ कुटिल निगाह, बुरी दृष्टी।

२ शिव, महादेव।

उ०—प्रहारै तिमर बिखनजर छाका पियै, घूमरां सत्रां खग घजर घावं। दिवाकर प्रजर सगरांम सम सुर दुहूं, भ्रवर छत्रधर नको नजर भावं। —कविराजा करणीदान

बिखभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

बिखभधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू भे.) (म्र. मा.)

बिखभ्र—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

उ०—भोळी नाथ भुतेसं, सकर सिव दत रत सुररांणी। गज त्वच बिखभ्र चढेस, वांमदेव तस्मं नमः। —मा. वचनिका

बिखभ्रधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू. भे.)

बिखम—देखो 'विसम' (रू. भे.) (म्र. मा.)

उ०—१ जहर बिखम जारंग, भुजां धारंग भुजंगम। भाल तेज भारग जरा हारंग लसं जम। —सू. प्र.

उ०—२ फुर्क नाग रा सीस ग्रांबाळ तासा फड़ै, पाटवी राग रा बिखम हाका पड़ै। प्रोहि लागं गजब भुजा म्रामा घड़ै, 'अंत' मारु कटी कड़ा सिलहां जड़ै। —महादांन महडू

उ०—३ लाल वदन प्रबर सिर लागो, विक्रमादित जवनांहूं कागो। बिखम धमक साबळ खग वाहै, मुनि छुडाय लीधा पल माहै। —सू. प्र.

उ०—४ ऊंचा डूंगर, बिखम थळ, लागा फिर तारेहि। कूटघड़ करहड़ लखिया, घोड़ा म मारेहि। —ढो. मा.

उ०—५ काळ रो विधेय करम करण पाळा ही चलाया भ्रर बिखम दुरग ग्रोघट घाट रै कारण ग्रापरा घोड़ा सिपाह पाळा ही भलाया। —वं. भा.

उ०—६ वपि असह जळ सुख उसरण वल्लभ मूर कर हुइ सीतळ, उग किरण सिस निस जेम ग्रीखम, बिखम हिम द्रुम विज्जळ। —रा. रू.

उ०—७ भवंग मिळै मलीयागरी, लहरि बिखम की मेट। साध सदा मिळ करत है, रांम नांम सुख भेट। —अनुभववांणी

उ०—८ बांको कहै टळै दिन बिखमा, धरिणयांरणी नै धायां। लोवडियाळ ताप नह लागै, प्रोळै धारै प्रायां। —बां. दा.

बिखमगत, बिखमगति—देखो 'विसमगति' (रू. भे.)

उ०—हियै धारिया खान जुवान छिबतो निहंग, भ्रवर नर विसरै तरणा अचभा। बिखमगत देख 'जसराज' खग वाहतो, रही रथ साह गज-गाह रभा। —गु. रू. बं.

बिखमजुर, बिखमज्वर—देखो 'विसमजवर' (रू. भे.)

उ०— हरि जिरणहूं दांरणव हण्यां, जिकरण बिखमजुर जाइ। बिरह मिटावरण बल्लहा, ग्रब दो उहीज थाइ। —र. हमीर

बिखमता - देखो 'विसमता' (रू. भे.)

बिखमनयण, बिखमनेत्र, बिखमनैण—देखो 'विसमनयरण' (रू. भे.)

बिखमबांण—देखो 'विसमबांण' (रू भे.)

बिखमबांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे.)

बिखमरो—देखो 'विसमरो' (रू. भे)

बिखमवांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे.)

बिखमायुध' बिखमायुध्ध, बिखमायुद्ध, बिखमायुध—देखो 'विसमायुद्ध' (रू. भे.) (म्र. मा., ह. नां. मा.)

विखमारिख–सं. पु. [सं. विषम+ऋक्ष] खोटे नक्षत्र ।

उ०— निग वार वीराग्म संगम, ग्रीष चील्ह नभ छाए विहृगम । कळह का मागम सो **विखमारिख**, मार का काटा सबा पारिख ।
—रा. रू.

विखमावरण–सं. पु. [सं. विषम+वर्ण] विषमवर्ण, बाधाक्षर ।

उ०— किता हुआ दिग्गज कवी, समुझणहार अमेस । धुर रूपक ज्याहूं धरै, विखमावरण विसेस ।
—र. रू.

विखमी— देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ लागो गयण रंभ रण छाजै, **विखमी** पांख पांखणी वाजै । बावन वीर ननणा बहबहिया, ईस जटी चढ डहडहिया । —सू. प्र.

उ०—२ **बिखमो** मैं गाढ़ूळ लिखमीचद ग्यान, मुरार का बाळ-किसन साहस निधान । जहा जहा आप वणी बूझवै सरीखो, कमधा के साथ बात श्याम पास सीखो ।
—रा. रू.

उ०—३ वचन सुणी राजा हरखियो, करमा री हो घणी **विखमी** बात । राय राणी दोनूं यहै घर माहै हो घड़ी सफली जात ।
—जयवाणी

उ०—४ त्रिजउ **विखणो** चोरी पइठउ, मूंकयउ कुंडल नाग जी । बज्रजधन नइ भेद जणाव्यउ, साचउ साहसी राग जी । —म. कु

उ०—५ साचो घणी निरत में सांमी, तैंड्यां आवै तीजो ताळ । **विखमो** वाट तणो वोळऊ, सांई तूं काळा तणो सुगाळ ।
—ओपो आढो

विखमीवार, **विखमोवार**–स. पु.—१ दुर्दिन, बुरे दिन, दुख के दिन, कष्टमय समय ।

२ मरणकाल, मृत्यु समय ।

उ०— धजामेळ जमदळ अगा, बिछटघो **विखमीवार** । कीधो नारायण नहै, पुतर हेत पुकार ।
—ह. र.

रू. भे.— विखम्मीवार, विखम्मीवार ।

विखमेसु–सं. पु. [सं. विषम+ईश] कामदेव ।

विखम्मी —देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ सगा सगा साह दळ, माडेचा परा मंड । वार **विखम्मी** भेजणा, आद नेम प्रचड ।
—रा. रू.

विखम्मीवार, **विखम्मीवार** देखो 'विखमीवार' (रू. भे.)

उ० भड परिगा 'सादूल' रा, वीस **विखम्मीवार** । चंत इग्यारस चानणी अमरा सुणी पुकार ।
—रा. रू.

विखयसत्रु–सं. पु. [सं. विषयारि शत्रु] शिव, महादेव । (ग्र. मा.)

विखय—१ देखो 'विखम' (रू. भे.)

२ देखो 'विसय' (रू. भे.) (अ मा., ह. नां. मा.)

उ०—**विखय** विसहर डसियां, गारुड़ी स्रीगोव्यंद । अति अंग भाजई जहर वाजई, जीवीई जगदानंद ।
—रुकमणी मंगळ

विखयारस–सं. पु. [सं. विषयरस] विषयभोग, विलासिता ।

विखरणो, **विखरबो**—देखो 'बिखरणो, बिखरबो' (रू. भे.)

उ०—१ हरमा म्हारा भाई रे, कुण बूझै मा बिन मन री बात । मोदर रा रै साथी, कुण रे संवारै **बिखरघा** केसड़ा ।
—जीणमाता री गीत

उ०—२ आगै नीली भांक लीआं वधाईदार दोड़िया छै । नगर मांहै ओछव वधाईजै छै । मंगळ गावीजै छै । गळिआं गळिआं फूल **विखरीजै** छै ।
—रा. सा. सं.

उ० ६ ना ना, ओ किसनूं हरगिज न्हीं व्हे सकै । बाळ **बिख-रयोड़ा** हाथा-पगां पर मैल रा थारड़ा जम्योड़ा अर सरीर पर फगत एक मैलोसोक कुडतियो ।
—अमरचूनड़ी

बिखरणहार, हारौ (हारी), **बिखरणियौ**—वि० ।

विखरिओड़ो, **विखरियोड़ो**, **विखरयोड़ो**—भू० का० कृ० ।

विखरीजणो, **विखरीजबो**—भाव वा० ।

विखरतन–स. पु. [सं. विकर्त्तन] सूरज, सूर्य । (नां. मा.)

विखराड़णो, **विखराड़बो**—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

विखराड़णहार, हारौ (हारी), **विखराड़णियो**—वि० ।

विखराड़िओड़ो, **विखराड़ियोड़ो**, **विखराड़योड़ो**—भू० का० कृ० ।

विखराड़ीजणो, **विखराड़ीजबो**—कर्म वा० ।

विखराड़ियोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विखराड़ियोड़ी)

विखराणो, **विखराबो**—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

विखराणहार, हारौ (हारी), **विखराणियो**—वि० ।

विखरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विखराईजणो, **विखराईजबो**—कर्म वा० ।

विखरायोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विखरायोड़ी)

विखरावणो, **विखरावबो**—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

विखरावणहार, हारौ (हारी), **विखरावणियो**—वि० ।

विखराविओड़ो, **विखरावियोड़ो**, **विखराव्योड़ो**—भू० का० कृ० ।

विखरावीजणो, **विखरावीजबो**—कर्म वा० ।

विखरावियोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विखरावियोड़ी)

विखरियोड़ो—देखो 'बिखरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विखरियोड़ी)

बिखवांन–वि. [सं. विषवान्] विषयुक्त, जहरीला।

उ०—सुख सिंगार, मांनि श्रंगार। तिणइ श्रबळा (प्रतरगत) फूला कीधा वेगळा। चंद तपइ पांन, थयां बिखवांन। विरहानळ प्रज्वळइ श्रंगु, सखिजन सूं विरंगू। —रा. सा सं.

बिखवाद–वि. [सं. विषवाद] १ विष के समान, विषतुल्य।

उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक श्रालोटइ श्राडी पडी। थ्यु बिखवाद पांन नइ फूलि, एक रोश्रावि मुहुगि मूलि। —कां दे. प्र.

स. पु.—१ दुःख, पश्चाताप।

उ०—१ श्रजी लगै छोडै नहीं मा मोरी रै, सायर श्रपणी मरजाद सुता हूं तोरी रै। हरख विनोद हीयै घरा मा मोरी रै, परिहरि मन बिखवाद सुता हूं तोरी रै। —श्रीपाल रास

उ०—२ किस्या कहूं गुण महाराजी, किस्या कहूं, श्रपवाद। जेम जेम संभारूं हीयै जी, तेम तेम वधै बिखवाद। —वृस्त

उ०—३ लज्जांणी राजा घणूं, मन धरतौ बिखवाद। नामंता माहरौ थयौ, लोकां विचै श्रपवाद। —श्रीपाल रास

२ कलह, झगड़ा।

उ०—बिखम वांणि बिखवाद, विखयरस श्रंगि न बाधइ। वखत-वत वर विबुध, वांन बिन प्रति वाधइ। --ऐ. जै. का. सं.

३ विरोध।

बिखसुधार–स. पु. [सं. विषसुधार] घृत, घी। (श्र. मा.)

बिखहर–वि.—विष का हरण करने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला।

सं पु.—१ गरुड़। (नां. मा.)

२ विष का हरण करने वाली या विष का प्रभाव नष्ट करने वाली श्रौषधी या मंत्र।

३ देखो 'विसधर' (रू. भे.)

उ०—············फूल बणराय न लग्गै। बिखहर चढै न विख्ख, जळण घ्रत होम न जग्गै। —चोग बीहू

बिखहा–सं. पु [सं. विषहा] गरुड़। (डि. को.)

रू. भे.—बिखहा।

बिखांण—देखो 'विसांण' (रू. भे.)

बिखांणण–सं. पु [सं. विष+श्रानन] जिसके मुंह में विष हो, सर्प, सांप।

बिखांणू देखो 'बखांण' (रू. भे)

उ०—श्रीहरि जै सागरि सूह छि, महीए सर नवि जांणूं। नारायण श्रागलि नारदजी सूं ए सर नवि बिखांणूं ?

—नञाख्यांन

बिखांतक–स. पु [सं विष+श्रन्तकः] शिव, महादेव।

बिखांन—देखो 'विसांण' (रू. भे.)

बिखांनस—देखो 'वैखानस' (रू. भे.)

बिखाइत – देखो 'विखायत' (रू. भे)

उ०—पछै रिणधीर रिड़मल नूं कह्यौ, समझायौ—थे बिखाइत हुवा काय फिरौ, नै बाप री घरती री चींत करौ नहीं, सु कुण वासतै ? तरै रिड़मल कह्यौ—मोनूं राव चूंडै सुंस लीरायौ थौ।

—नैणसी

बिखातौ—देखो 'विखायत' (रू. भे.)

बिखाव—देखो 'विसाद' (रू. भे.)

उ०—श्रवतार श्रंस 'श्रगजीत' ग्रह वस बिखाव पलट्टियौ। रितु एण उदय चहुवांण रै, सुत 'श्रभमाल' प्रगट्टियौ। —रा. रू.

उ०—२ सासा चरम बिखाव वाद, बिपरत बिलूधा।

— केसोदास गाडण

बिखावी—देखो 'विसादी' (रू. भे.)

विखायत बिखायतौ, बिखायतौ–सं. पु—१ किसी कारण विशेष से राज-सत्ता के विरुद्ध होकर बगावत करने वाला व्यक्ति, राजद्रोही, बागी।

उ०—१ 'सूरौ' 'केहर'सिंघ रौ, 'लखधीर' महेस। भाटी श्राइ बिखायतौ, चाड मुरद्धर देस। —रा. रू.

उ०—२ वात वळै श्रसुरां विसतारी, घर दिस श्रसट दिलासा धारी। कितराई सुण श्रमिया काचा, श्रबळ बिखायत रहिया साचा।

—रा. रू.

२ संकटावस्था, विषम श्रवस्था।

३ वह राजा, सामन्त या जागीरदार जिसका राज्य या जागीर किसी राजा या बादशाह द्वारा जब्त कर लिया गया हो।

उ०—१ तरै यां ठाकुरां राणाजी नूं कह्यौ, "हाजीखान भलौ मांणस छै, नै बिखायत थको छै. दीवांण बडो उपकार कीनौ छै। सु हाजीखांन नूं श्रा बात कराड़ियां रो जुगत न छै। —नैणसी

उ०—२ इणै खरच घणौ पूजवियौ हुतौ। सु पछै रावळ घड़सी धरती वाळी, तरै मारां बिखायतां नूं वधारिया। —नैणसी

उ०—३ एक कोई बिखायत सूरवीर किण रै ही गढ मैं रहनै वांनै काढ श्राप गढ श्रपणाय लियौ गढ रा घणियां कयौ जावौ परा तरै कही। · बी. स. टी.

उ०—४ दूमना थयर बिखायतौ, मरतां सांमतसीह। वळ श्रायां वळ श्रोढणा, सोई धमळ श्रबीह। —रा. रू.

वि —१ सकटग्रस्त, संकट से पीड़ित, दुःखी।

उ०—१ नहि दाखण मेवाड़, गढ़ बाढ़ अकबर रचै। विमं **बिखायत** बाड़, प्रथुळ पहाड़ प्रतापसी। —दुरसो आढ़ो

उ०—२ गाथा ३०१ गांधा रा भर चलाया सु जाय गढ़ पोहता, सु बारहठ ग्नानू चंद्र माला रो **बिखायत** थको महैवे रह्यो थो, तिण जाणियो गढ़ माहरा ठाकुरां सु जाय। —नैणसी

२ लुटेरा, डाकू.

रू. भे.—बखायत, बिखाइत, बिखाई, बिखाऊ **बिखायत**. बखाइत, बखात, बखायत, बिखाइत बिख्याती।

बिखारी—देखो 'भिखारी' (रू. भे.)

बिखावण—वि [स विखाण. विषयमनो भोजने इति पत्वम्] १ कष्ट पीड़ित।

२ भूखा।

स. पु—भोजन। (ह ना. मा.)

बिखासह—स. पु.—देखो विखवाण।

उ०—तउ राउ दुरयोधन ए पितामह, हासउ हमीत पडिउ **बिखासह**। 'ए नारिकीए नर राउ कोई, मउ ईण रूपिइ उन पारथ होई।

—सालिसूरि

बिखिक—देखो 'विमिख' (रू भे)

बिखिया—देखो 'विमय' (रू. भे)

उ०—१ दर ग्लोक ईशद मलन, तृष्ण मदाक। मोह तृष्ण रचक अगृ, मो मृग **बिखिया** माग। —अ. मा.

उ०—२ राग भजो **बिखिया** तजो, घर माही घर एक। ता घर मूं लागा रहो, छाजो द्वार अनेक। —ह पु वां.

उ०—३ सहजे जिगा **बिखिया** तजी, पार्छ पमर मिटाय। सहज सोई मरण जांणिये, मतार हुवै महाय। —परमानदजी वणिगाळ

बिख्यात—देखो 'विख्यात' (रू भे.)

उ०—१ इनै सुणा मरद मतराय भड ऊठिया, वसु **बिखियात** कीरत बदीनो। माम भड गोरमा थात मह मेरिया, वात करता इसं रात वीनी। —तिलोकदान बारहठ

उ०—२ मोगियो डसाण वम आमगेण अग जात, वामा **बिखियात** मात जात आवे व द। एकीह अवीह मीह लोपे कुण लीह, एहो जाण मरे धरमसीह गोदीनो जिगद। —घ. व ग्र.

बिखोया—देखो 'विमग' (रू भे.)

उ०—१ जा भर पेम प्रगासीया, **बिलोया** विगळप नांहि। हरीया छूना ना रौ, छाया अतर मांहि। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया भागी पेम की, दूजा दई जगाय। पेम पीयाला पीव नीर, **बिखोया** पाप मिटाय। —अनुभववाणी

बिखुकसेन—देखो 'विसकसेन' (रू भे)

बिखुटणो, बिखुटबो—क्रि. अ —बिछुड़ना।

बिखुटणहार, हारो (हारी), बिखुटणियो—वि०।

बिखुटिग्रोड़ो, बिखुटियोड़ो बिखुटयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिखुटीजणो बिखुटीजबो—भाव वा०।

बिखुटियोड़ो—भू का. कृ.—बिछुड़ा हुआ।

(स्त्री. बिखुटियोड़ी)

बिखेप—देखो 'विक्षेप' (रू. भे.)

बिखेर—स स्त्री.—बिखेरने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'बिखर' (रू. भे.)

बिखेरणो, बिखेरबो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबो' (रू. भे.)

उ०—१ दूजे दिन सासरा माथे दुसमण आया तठै साळो न बहनोई सत्रुआ नै पूगा तठै बीद वरणीयडे हीज झगड़ा रै भूखै तरवारा आगै सरीर पुरजां कर **बिखेरियो** —बी. स. टी.

उ०—२ गाजी भीटा **बिखेरयां** ताचे माथे पकड़योड़ी बैठी है। दातां रै कोडी अर अनेवण चढ रैयी है। ठोडी लाळचां अर थूक ग भीज गयो है। —दसदोख

उ०—३ हुकम लेर भड हालिया, साहू करां समसेर। जेभ न कीधो जादवा, वाजत्र दिया **बिखेर**। —बी. स. टी.

उ०—४ घग चम्मर सीस गयंद घटा, जड-धारक मेर **बिखेर** जटा। गडडति गुडंता मत्त-गयं, गरजतिक जाणय गोरमय।

—गु. रू. बं.

बिखेरणहार हारो (हारी), बिखेरणियो—वि०।

बिखेरिग्रोड़ो बिखेरियोड़ो, बिखेरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिखेरीजणो, बिखेरीजबो—कर्म वा०।

बिखेराणो, बिखेराबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

बिखेराणहार, हारो (हारी), बिखेराणियो—वि०।

बिखेरायोड़ो—कर्म वा०।

बिखेराईजणो, बिखेराईजबो—कर्म वा०।

बिखेरायोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बिखरायोड़ी)

बिखेरावणो, बिखेरावबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

बिखेरावणहार, हारो (हारी), बिखेरावणियो—वि०।

बिखेराविग्रोड़ो, बिखेरावियोड़ो, बिखेराव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिखेरावीजणो, बिखेरावीजबो—कर्म वा०।

बिखेरावियोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बिखेरावियोड़ी)

बिखेरियोड़ो—देखो 'बिखेरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिखेरियोडी)

बिखेरौ–सं. पु. [सं. विकीर्ण] १ बिखरे होने की अवस्था या स्थिति। २ बिखरी हुई सामग्री, अव्यवस्थित दशा में पड़ा हुआ सामान या कचरा।

वि.—फैला हुआ, व्याप्त।

रू. भे.—बिखेरौ, बिखोरौ।

बिखं–क्रि. वि.—१ समय में।

उ० एक दिन रौ समाजोग छै। रात रै बिखै पोढिया छै। तरै रांणी चावड़ी सुहणौ लाधौ—'जु नाहर २ आया छै। —नैणसी

२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीपुर नांम नगर, तिणरै बिखं राजा सालवाहन राज करै छै। यू ईम घणा दिन विता। तरै सालिवाहन देवगत हुवौ। —रीसालू री वारता

उ०—२ आय न्रपति पूछी विध एही, सावधांन हुय घरम सनेही। बिखं अग्यांन घरम वीसारौ, सूरजकुळ चौ घरम सभारौ। —सू. प्र.

उ०—३ पिलंग पथरणा पोढणं, सदा सहेली सग। हरीया होभी भगति विन, बिखै विलासा भंग। —अनुभववाणी

उ०—४ गुर समथ गुर सुख की सीरा, गुर हैं दवन बिखं तन पीरा गुर अघहरण करन आनंदा, गुर तै मिटै भरम भय फंदा। —अनुभववांणी

उ०—५ करत केल वन वन बिखं, मद उनमत्त गयद। ऊभा करे अकासिया, देख देख दिस चद। —गजउद्धार

बिखंआगळ–वि. [सं. विष्+अर्गला] विपत्ति में साथ देने वाला, दुख का साथी।

बिखोड़–सं. स्त्री.—अप्रशसा, निन्दा, हसी।

उ०—१ चारण पाछो वीसळदेजी पासं गयो। जाय नै कह्यौ–'बाप! मूळ आवै नही। तद मूळ रा राजा बिखोड़ किया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा बिसोढौ पाछो आयौ। आयनै राजा नूं कह्यौ-बाप! मूळ कोट में किसी तरह आवै? म्हैं तो घणो ही कह्यौ, पण आवै नही। ताहरा अठै गोरै वादळ मूळ रा बिखोड़ किया-'जु जाहरै, भला रजपूत! आवणो हुंतो। —नैणसी

बिखोड़णौ, **बिखोड़बौ**–क्रि. स.—अप्रशसा करना, निन्दा करना, हंसी करना।

उ०—१ माळव देम बिखोड़िया, मारू किया वखाण। मारू सोहागिण थई, सुंदरि सगुण सुजांण। —ढो. मा.

उ०—२ घध घरै करि द्वेम, वात में हेत वितोड़ै। आप कियौ तैं अवळ, वलं पर किया बिखोड़ै। —घ. व. ग्रं.

बिखोड़णहार, **हारौ** (**हारी**), **बिखोड़णियौ**—वि०।

बिखोड़िओड़ौ, **बिखोड़ियोड़ौ**, **बिखोड़्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

बिखोड़ीजणौ, **बिखोड़ीजबौ**—कर्म वा०।

बिखोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—अप्रशंसा किया हुआ, निन्दा किया हुआ, हंसी किया हुआ।

(स्त्री बिखोड़ियोडी)

बिखोरणौ, **बिखोरबौ**—देखो 'बिखेरणौ. बिखेरबौ' (रू भे.)

बिखोरणहार, **हारौ** (**हारी**), **बिखोरणियौ**—वि०।

बिखोरिओड़ौ, **बिखोरियोड़ौ**, **बिखोरयोड़ौ**—भू० का० कृ०।

बिखोरीजणौ, **बिखोरीजबौ**—कर्म वा०।

बिखोरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोडौ' (रू. भे.)

(बिखोरियोडी)

बिखोरौ—देखो 'बिखेरौ' (रू. भे.)

बिखौ–सं.पु. [सं विष्=घेरना, मुठभेड़ होना] १ किसी राजा, सामन्त या जागीरदार जिसमें उसका राज्य या जागीर किसी अन्य राजा या बादशाह के द्वारा जब्त कर लिये जाने पर पड़ने वाला कष्ट, संकट या दुःख।

उ०—१ राव चद्रसेन बिखं माहे सीवांणा रै भाखरै रहतो तद भींवला देवत कायलांणी रहता जोधपुर तुरक रहता, इतरौ घणौ विगाड़ करता। —राव चद्रसेण री बात

उ०—२ रावळ घडसी राणा रतनसी रौ बेटो मूळराज, रतनसी साको कर मुंवा तद कमालदी नूं आपरो वीज उबारणनूं घड़सी, ऊनड़, कांनड आपरा छोड़ नै एक देवडी भागेज कमालदी नूं सूंपिया था। कमालदी नै मूळराज इण बिखा माहै भाग्ला हुवा था; पाघडी पलटी हुती। सु कमालदी री बैर इणा नूं छाना राखं। —नैणसी

उ०—३ छत्रपती छानो बिखं, अनन्तो हित जोड। दियै धरत्ती आप री, तै खत्री कुल खोड़। —रा. रू.

२ उक्त कष्टावस्था में, राज्य से सकटग्रस्त राजाओ, सामन्तों या जागीरदारो द्वारा की जाने वाली लूटखसोट या राजद्रोह।

उ०—१ तद बादसाह औरगजेब जोधपुर तुरकाणौ कियौ जद राठोड दुरगदास आम करणोत बिखौ कियौ —सुंदरदास विकूपुरी भाटी री वारता

उ०—२ सो तुरक सूबायत रौ अमल नही होवणं दियौ। बादसाही महर मांग्या लूटिया सो वडो बिखौ हुवौ फौजा लारै लागी फिरै पण हाथ न आयौ। —सुदरदास विकूपुरी भाटी री वारता

उ०—३ अै तो पांच मांणस छै सो सगळा ही महाराज रा चाकर छै आ हुवै तो बिखौ करां। —राठोड राजसिंह कूंपावत री बात

३ कष्ट, दुःख, विपत्ति, संकट ।

उ०—१ विखम बिखौ जिण वार, घोम धिखि हुवौ मुरद्धर । दोहण लागा दुभळ, वडा नरवार बहादर । —सू. प्र.

उ०—२ जुग वरन म् जिणणा रै कारण म्हैं खुद भणा तौ बिखौ भुगतियोड़ो हू, पण अबै रोया काई मायो लागै । —फुलवाड़ी

उ०—३ जको बिखौ नांनो, भटियाणीजी अर यू भुगतियो वो म्हांनै नी भुगतणौ पडैला, विस्वास राख । अन्याय रो बदळो हाथो-हाथ मिळैला । —फुलवाड़ी

उ०—४ वळै तै बार किता दहकध, बांध्यो दधि देवां छोडण बंध । बिखौ मैं व्रज पहेली बार, धरै नख बार किता गिर-धार ।

—ह. र.

४ अशान्ति, क्षोभ ।

उ०—धरती माहे बिखौ थो । सगळा ठाकुरा रा गुडा भाहाजण था । उठै राठोड नेजसी डूगरसियोत रो ही गुढो थो ।

—गाव मालदे रो वात

५ संकट का समय, कष्ट का समय ।

उ०—१ या मधकर हर वजिया, आद बिखै धणरेह । ज्या उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलटै देह । —रा. रू.

उ०—२ इण नितनेम रो औ नतीजो निहुयो के थोड़ा ई दिनां में बादळ लुदोलुद नै किसन-भगवान रो अवतार ई मांनण लागग्यो अर काली मासी लारलौ बिखौ भूलनै सांप्रत जसोदा मैया बणगी । —फुलवाड़ी

उ०—३ तासूं भगवांन कहै भार तुम कथे, पे आलम सूं जंग काज तेग हम बधे । बिखै के तुम नायक और सब कै मुदायत, मो जंग की कुल मैं वरम जैसी सायत । —रा. रू.

६ उपद्रव ।

उ०—भाटी पिण आया दळ भेळा, माण घणे चहुवाण समेळा । सरसो जोर हुवौ पतसाहे, मद बिखौ पड़ियो घर माहे । —रा. रू.

७ निर्धनता ।

८ विछोह, वियोग ।

उ०—१ दुनिया मे उण रै नाव री कीरत आप रै काना सुणू । वो दिन देखण वास्तै ई म्है औ बिखौ कबूल करियो हू । सेठां रा बोल फळै । म्हारा बेटा नै लाठो मिनख बणियोड़ो देखू तौ आज रै बिखा री दाझ ठरैला । —फुलवाड़ी ।

उ०—२ हथाळिया मसळो तौ ई निवास नी आयो । अैड़ी बेजा रात तौ वै कदेई नी बिताई । रंगमैल मे मिरक पथरणा रै मांय नवी लुगाई रा कवळा कंवळा बूकिया माथै माथो देय कैड़ा आरांम मं सूवता जै पा पोहरा वाळी तूमन नी कैतौ तौ । दीवाणजी नै आज ठा'पड़ी कै लुगाई रा निवास जैड़ी वासदो रो ई नी व्है । लुगाई रा प्रभाव में वांनै लुगाई री असली पिछाण व्ही । लाख मोहरां माटै ई अैड़ी बिखौ कुण भोगे । —फुलवाड़ी

रू. भे.—बखौ, बिखहौ, बिखौ, वखौ, विखउ ।

बिखख—देखो 'विम' (रू. भे.)

उ०—............फूल बणराय न लागै । विसहर चढै न विखख, जळण घ्रत होम न जगै । —चौथ बीठू

विख्यात—स. पु. [सं.] १ एक राक्षस जो तेरह सैंहिकेयों में से एक माना जाता है ।

२ कवि । (अ मा.)

वि. [सं.] (स्त्री. विख्याता) प्रसिद्ध, मशहूर ।

उ०—१ कमधजां छात जिग वात क्रत, लख विख्यात संकळप लियो । रिखि वयण आद वासिस्ट अग, कहिया तिम उद्यम कियो । —रा. रू.

उ०—२ थळ भाति गात निरतंत थाळि, भ्रम जात अतन तन रूप भाळि । जिग मत्ति परखि लजि तड़िति जात, व्रत गवन पवन मन ज्यौं विख्यात । —रा. रू.

उ०—३ वानरपति विख्यात वर, वेध्यु जाणे वालि । सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइ तिणि तालि । —मा. का. प्र.

उ०—४ गलमेन महीपति बस विभूखण दिनमणी । जुसु सुयसा माता, जगत विख्याता बहु गुणी । —वि. कु.

रू. भे.—बिख्यात, वखात, विखियात ।

विख्याति—स स्त्री. [स] १ प्रसिद्धि, शोहरत ।

२ कीर्ति, सुयश ।

विगंछावात—स. पु. एक प्रकार का वात रोग विशेष ।

उ०—अथ रोगा, कास स्वास ज्वर भगंदर गुलमवात गल्लवात रक्तवात भस्मवात उस्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हरसावात आमवात सोफवात विगछावात कफवात साकिनीवात.. ।

—व. स.

विगंध—वि. [स. वि+गन्ध] १ जिसमें किसी प्रकार की कोई गंध न हो

२ जिसमें विशेष प्रकार की सुगन्ध हो, सुगन्धदार ।

बिगड़णी, बिगड़बौ—देखो 'बिगड़णौ, बिगड़बौ' (रू. भे)

उ०—१ रूपक कुकवी रसणसूं, बिगडै यूं रसवंत ; ज्यूं बिसफोटक रोग बस, वप सोभा बिगडंत । —बा. दा.

उ०—२ राव नूं सराप दियो । कह्यो—'थांहरो गढ जाजो । थारो मत भ्रस्ट हुई, गढ तुरकां नूं देईस । तूं तुरकां री (बहू) नूं सेवीस, अमल पढीस, धूड़ खातो फिरीस ।" औ स्राप हुवो । राव रो मूंहडो बिगड़ियो । —नैणसी

उ०—३ लांनी भोग करम छै रोग ना रे, विलसंतां बिगड़ंत। सुख थोड़ो नै दुख घणौ अछै रे, रीझै कुण मतिवंत। —जयवांणी

उ०—४ घणी खड़ा जब खेत मैं, बिगड़न कुं कुछि नांहि। जन हरीया हरि सा धणी, क्यूं डरपें जुग मांहि। —अनुभववांणी

बिगड़णहार, हारौ (हारी), बिगड़णियौ—वि०।

बिगड़ियोड़ौ, बिगड़ियोड़ौ, बिगड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगड़ीजणौ, बिगड़ीजबौ—भाव वा०।

बिगड़ाणौ, बिगड़ाबौ-क्रि. स.—बिगड़ने के लिए प्रेरित करना।

बिगड़ाणहार, हारौ (हारी), बिगड़ाणियौ—वि०।

बिगड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगड़ाईजणौ, बिगड़ाईजबौ—कर्म वा०।

बिगड़ायोड़ौ-भू. का. कृ.—बिगड़ने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. बिगड़ायोड़ी)

बिगड़ायल—देखो 'बिगड़ायल' (रू. भे.)

बिगड़ियोड़ौ—देखो 'बिगड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगड़ियोड़ी)

बिगड़ी-सं. स्त्री.—दुरावस्था, बुरी अवस्था।

उ०—सुधरी में सौ वार, मदत करै मन मोडिया। बिगड़ी में इक वार, कोइ न रं'वै, किसनिया। —अज्ञात

बिगड़ैल—देखो 'बिगड़ायल' (रू. भे.)

बिगट—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—१ वाटि विगट वैराट की, पहुचैगा कोई सूर। हरीया कायर थकि रह्या, दरगह रहीया दूर। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया घट मे अघट है वाकी ठोड़ बिगट। विन गुर गम खूल्है नहीं, भरम करम का पट। —अनुभववांणी

बिगड्ड-वि.—दृढ।

उ०—गिराव गड्ढ गड्ढ को बिगड्ड छड्डनौ बहै, बकारि बैरि बंद को डकार डड्डतौ बहै। बडे निसंक बंक की बिबक कड्डतौ बहै, रहेसु संक रंक को बिसंक बड्डतौ बहै। —ऊ. का.

बिगत-वि.—१ अन्तिम या बीते हुवे से पहले का।

२ जो कही इधर उधर चला गया हो।

३ निष्प्रभ, कान्तिहीन।

४ रहित, विहीन।

सं. स्त्री.—१ विवरण, ब्यौरा, वृत्तान्त, हाल।

उ०—१ आया दूत सुम्याळी आई, साह मरण चौ बिगत सुणाई। ताता घोड़ां हुई तयारी, अश्वपति सुणत कीध असवारी। —रा. रू.

उ०—२ कहियौ नृप प्रज भय किणसूं, ज्वाळांमुखी न पूजै जिणसूं। भांणउदीप बिगत सुण भारी, विभवत सकति पूजि विसतारी। —सू. प्र.

उ०—३ चितातुरां दुचित, बिगत सुष दाखौ वातां। पुण दंद करग जोड़ै पभण, कहर कळह किसणां कियां। —मा. वचनिका

उ०—४ तै देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि। किह पीहर, किह सासरउ, बिगतइ कहइ विचारि। —ढो. मा.

२ हिसाब।

३ इतिहास।

४ परिचय, जानकारी।

उ०—सब सरीखौ देखी रूपि, बिगत न लही तेहनी भूपि। तै देखी चतुरपणउ ए इस्य, राजा हियडा भीतरि हस्य। —हीराणंद सूरि

५ सूची, नामावली।

उ०—संवत १६१३ हाजीखांन सूं राजाजी रै अदावदी हुई जद राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीखां री मदद मेलिया ज्यांरी बिगत–राठौड देवीदास जैतावत, रावळ मेहराज हाफावत...। —बां. दा. ख्यात

६ वर्णनसूची, तफसील।

७ घटना।

८ संख्या, गिनती।

[स वि.=विशेष+गति=मोक्ष] ९ विशेष मुक्ति या मोक्ष।

[स वि=रहित+गति=मोक्ष] १० वह प्राणी जिसकी मरणोपरान्त गति या मुक्ति नहीं हुई हो।

रू. भे—बिगत, बिगति, बिगती, बिगत्त, बिगत्ति, बिगत्ती, बिगय बिगिति।

बिगतरणौ, बिगतरबौ-क्रि. स.—निंदा करना, अपकीर्ति करना।

बिगतरणहार, हारौ (हारी), बिगतरणियौ—वि०।

बिगतरियोड़ौ, बिगतरियोड़ौ, बिगतर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगतरीजणौ, बिगतरीजबौ—कर्म वा०।

बिगतरियोड़ौ-भू का. कृ.—निंदा किया हुआ, अपकीर्ति किया हुआ।

(स्त्री. बिगतरियोड़ी)

बिगतवार-क्रि. वि.- बगैरेवार।

उ०—या समै आजानग्राह जेतै सरदार, कवि जेतै जांनै मौ बखांनै बिगतवार। पहलै स्येनग साह बिलै के सहायक, जोड़ै दुग्गसाह हस वंस का जो नायक। —रा. रू.

वि.—विस्तार के साथ, विस्तारपूर्वक, विस्तारयुक्त।

उ०—१ म्हैं पूछ्यौ—बाबा, वौ जाट कोकर कुत्ता री कड़ियां भागौ। म्हनै सावळ बिगतवार बात मांडनै बतावौ। थारै मूंडै बात ओपै घणी। —फुलवाड़ी

उ०—२ दीवांणजी तुरत जवाब नी दे सक्या तो राजाजी वांनै पूरी बात विगतवार बताई। तद दीवांणजी कह्यौ अंनदाता, ऐ सगळी जूनी बातां अगै ई मिटावणा म् तो राज में कळियौ मच जावैला। —फुलवाडी

३ क्रमशः।

उ०—१ इण वास्तै म्हारा मूंडा सूं थनै सगळी बातां विगतवार बताई। दूजा तो सगळा म्हारौ ई कसूर बतावै। अबै थूं ई बता म्हैं काई बेजा काम करियो। —फुलवाड़ी

उ०—२ इटरव्यू रा विगतवार समाचार तो पछै सूरज रै मूंडा स् इज सुण्या। बगनै इटरव्यू वास्तै जिकण कमरा में बुलायो वो एक छोटी-सोक कमरो हो। —अमर चूनड़ी

रू. भे.—बगतवार, बिगतवार, बगतवार।

विगताणौ, विगतावौ—क्रि. स.—१ सूचित करना, सूचना देना।

२ समझाना, सतर्क करना।

३ जानकारी देना, समझाना।

उ०—रगण जगण गण रगण रचाइ, वरं जगण गुर लुघ विगताइ अाखर चउदह एण उपाइ, सुणिजो रूप कहा विधिसाइ। —ल. पि.

विगताणहार, हारौ (हारी), विगताणियौ—वि०।

विगतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विगताईजणौ, विगताईजबौ—कर्म वा०।

विगताणौ, बिगतावौ, बिगतावणौ, बिगतावबौ, विगतावणौ, विगतावबौ। —रू० भे०

विगतायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सूचित किया हुआ, सूचना दिया हुआ. २ समझाया हुआ, सतर्क किया हुआ ३ जानकारी दिया हुआ।

(स्त्री. विगतायोड़ी)

विगताळ, विगताळू, विगताळौ, विगतालौ—वि (स्त्री. विगताळी)

१ चरित्र वाला, लीलाधारी।

उ०—१ किसन थयं कूकडा, बाट बांधै विगताळो। दही तणो लै दांण, छाछि ढोळै छोगाळो। —पी ग्र

उ०—२ तादि नको नको जदि तावड, आभ न उडगण अरस न अनड। क्रम न भ्रम नको जदि काळौ, ब्रहमंड रूप नमो विगताळौ। —मा. वचनिका

२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—तो वाळ राजा रै थहि रसीया, पछी माहरा माहिबा, अनरगेना इण नाम रै, वेस्या विगताळी। —वि कु.

३ अपवित्र, अशोच।

उ०—अनि नर नारि पसू पंखि वाळी, वप छाया न पड़ै विगताळी। करि सिनांन अस्टम दिन काढै, चंचळ सोळ मास मझि चाढै। —सू. प्र.

४ सुरुचिपूर्ण।

उ०—साहिबा कांइ मउज करौ नई, साहिबा कांइ मउज करउ। मउज करउ कांइ अंग सुहाता, सुणि सुणि नै विगताली बातां। —बि. कु

५ शौर्यपूर्ण, वीरतायुक्त।

उ०—तो 'कंहर' कहिजै सताब, वाइक विगताळा। कूदि पड़ां गज कटहड़ा चढि गोख विचाळा। —सू. प्र.

६ प्रिय, प्यारा।

उ०—'बाकीदास' कळह विगताळौ, वाघै करा रिणमल वाळो। मामावत खग चद सवायो, दूजा अणी दिसौ दरसायो। —रा रू.

७ वीर, बहादुर।

उ०—ह पिरणासू हिंदवा, तुरका हर टाळै। से कुण हिंदू हम गुणां, जिसकू पिरणाळै। पिरणा सू सगपण करै, वीरम विगताळै। जद पाचौ कहियो 'जसू' आगम अकलाळै। —वी. मा.

रू. भे—विगताळ, विगताळू।

विगतावणौ, विगतावबौ—देखो 'विगताणौ, विगतावौ' (रू भे.)

विगतावणहार, हारौ (हारी), विगतावणियौ—वि०।

विगताविओड़ौ, विगतावियोड़ौ, विगताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विगतावीजणौ, विगतावीजबौ—कर्म वा०।

विगतावळौ—स. स्त्री—सूची।

विगतावियोड़ौ देखो 'विगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगतावियोडी)

विगति, विगती—स. स्त्री.—१ अवस्था व हालत।

उ०—कहा वसै मन उनमनी कहां, कहा क्रम वासो करै। ग्रह-मड रिदि एका विगति, उगस्यांन वेद किम उचरै? —सूरजनदास पूनियो

२ फर्क अन्तर, भेद।

उ०—२ जो मोळह कळा सू पूरण पूरणिमा को चद्रमा थो। सु पणि अपणी उजळता करि आकास सो मिळि गयो है। एती विगति नहीं नाभै छै। जु इह आकास छै कि चद्रमा छै। —वेलि टी.

३ देखो 'विगत' (रू. भे.)

उ०—१ पंच विगति सुत पंच प्रांण तुझ, पंच तत्व अम्है दाखुं। पंचमी ले नइ जे क्रम करता, सिधि सब दई ईम भाखुं। —रुकमणी मंगळ

उ०—४ आवी खबर अचिंत, प्रगट चिता भूपाळां। दळ असेस दूरवेस, सुणै विगतो अडसाळां। —रा. रू.

उ०—३ वेगि लिखीजै विगति, रवद जिम सकै दुरंगा। एक उतन ऊपनां, जुडा द्वापुर जिम जगां। —सू. प्र.

उ०—४ प्रति-प्रकाम गति भेद प्रति, विगति एह विसतार। आदि आदि कहिया इता, सति प्रबंध ततसार। —सू. प्र.

उ०—५ प्रगट गांम पुर घर्खे ग्रप्रबळ, मार-लियौ वहतां पुर मंडळ। ग्रोपत माथा मिळे ग्रलेखं, लूट तणी विगति कुण लेखं। —रा. रू.

उ०—६ पखा पखी सबकौ मिलै, जहर भरचा मुख नाग। जन हरिदास बोल्यां विगति, कहां कोयल कहां काग।

—ह पु. वा

उ०—७ मुहर विगति कीजै दस मात्र, पछै वळै दस दस कविपात्र। सुण चौपै फेरै कल मात्त, वंदिव चरण पुलण विख्यात।

—पि. प्र.

उ०—८ भणि तेरह सौ छासठि भेद, विगति मात्र मोळह ध्रू वेद। ग्राखर लुघू गुरु इगिग्रार, वदां सुभंकर छंद विचार।

—ल पिं

उ०—९ विगति लहै विरहां तणी, विरही मागम नेह। 'लालचद' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रे। —प. च चौ.

उ०—१० ग्रध्यातम मरम विसतार बावन ग्रखर, संसाकित सकति विगति सूझै। पाड़गति गीत संगीत समभण पौंहचि. बहतरी कळा खट भाख बूझै। —ल. पि.

विगत्त, विगत्ति, विगत्ती—वि. [स. वि=विशेष+गति, चाल] १ तेज गति वाली, तीव्रगामी।

उ०—मतसागर उनमती, वीणा सुर मधुरै बावत्ती। वाहण हम विगत्ती, साथ सुप्रसंन हुग्रौ सरमत्ती। --गज उद्धार

२ देखो 'विगत' (रू भे.)

उ०—१ उल्लसै वेळ परसै ग्ररस, ग्यांन न लोक विगत्त रौ। जग करण लोप ग्रंतक जिसौ, इसौ कोप ग्रसपत्त रौ। —रा. रू.

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति, वाढैल कहाया इण विगत्ति। इम लोध मंडळग्रोखो उदार, घर समद कोटि गढ संखोधार। —सू. प्र.

उ०—३ तहं हींदू किया तुरक, विप्र तौ मूल विटाल्या। वणिकै गई विगत्ति, रांक करि लगरि राल्या। —स. कु.

उ०—४ एक हस्ति ग्रारुही, व्रखभ ग्रस उस्ट्र विगत्ती। सरभ चील सादूळ, रीछ बदर तर रत्ती। —रा. रू.

विगन—'विघ्न' (रू भे.)

विगनांन, विगन्यांन - देखो 'विग्यांन' (रू. भे.)

उ०—विगन्यांन ग्यांन तुं हिज विपति तुं ग्रछेद ग्रभेद तन। ग्रविगत नाथ केवळ ग्रलख, पाप निहो तुं कोड पन। —पी. ग्रं.

विगपति—देखो 'विग्यति' (रू. भे.)

उ०—कारण कवण वयण लघु काया, महमा प्रबळ ईस्वरी माया। पुणे भड़ां विगपति घरि पौरस, जुध होसी तौ विजै हुसी जस।

—सू. प्र.

विगय—देखो 'विगत' (रू भे.)

उ०—खेचर चरम रोमपंखी चमचेड कपोत, मनुज लोक थी बाहिर समुग विगय पंख होत। मरवै जळ थळ खचर समुच्छिम गम्भय दोय, कम्म ग्रकम्म भूमि ग्रंतर दीव मणुजोय। —वृ. स्त.

विगर—देखो 'बगैर' (रू. भे.)

उ०—१ वाहां वाधै गठवड, विगर सनाहां ग्रंग। बागा केसर भारिया, हयणा खोण सुरंग। —रा. रू.

उ०—२ कवण ग्रखंवड विग्रार, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण विनां सुखदेव, देव माया नह लोभै। —रा. रू.

उ०—३ हिव कै गाढ घणौ करै। जीमै मत ही। ग्रर तूं जोर घातै, म्हारी बहू हुं ले नै जाइस्यूं। ग्रर जै न मेल्है तौ लाकड़ी बहाई। पिण बहू विगर लीयां घरै मतां ग्राए।

—कांवळी जोइयौ नैं तीडी खरळ री बात

विगल—देखो 'विगुल' (रू. भे)

विगलिंद्रय विगलिंद्रिय—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू. भे.)

विगलित—वि [सं.] १ जो चूकर या टपक कर निकल या गिर गया हो।

२ जो पिघल या घुल गया हो।

३ शिथिल।

४ बिगड़ा हुग्रा।

५ म्लान।

उ०—पनि पवन प्रारथित त्री तत्र निपतित, सुरत ग्रंत केहवी स्त्री। गजेंद्र क्रीडता सु विगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी। —वेलि.

६ विसर्जित।

७ ग्रस्तव्यस्त, बिखरा हुग्रा।

विगवत—वि.—लम्बी यात्रा करने में समर्थ।

उ०—···धरणि ते जे सीलवंति, स्त्रइन ते जे कलावंत, वेस्या ते जे रूपवंति, वस्त्र ते जे पवालसार, द्रव्य ते जे भोगमार, धान्य ते जे ग्राहारवत, साधु ते जे क्षांतिवंत, करह [ते] जे विगवंत, तुरग ते जे वेगवंत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मंत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीरयवंत, राय ते जे प्रमस्य जातिवत। —व. स.

विगसणौ, विगसबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ संबाळ मिळिया ग्रावि ग्रडिया, सुहड़ ग्रंगो ग्रंगि। नर सीस विहसई वदन, विगसई, मेल वाहई सगि। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ हुंस बोलै खेलै ससि हुसि, विगसै कमळ घणा चंद्रवंसी,

जोत बाग भळकै मिळ नवि जळ, चमकै मंगर उछळै चंचळ ।
—मू. प्र.

उ०—३ भावन मृग बिगसै नहो, आवत नहि कमळाय । 'सम्मन' ऐसै नीचके, नीच हुवै सो जाय । —सम्मन

उ०—४ मांगणा नै देख्यां, म्हां रौ कवळ बिगसै, मनीजां नै देख्या म्हां रौ मन हंसै, बीरै रै मांगण आबौ मोरियौ । —लो. गी.

उ०—५ पोह बिगसी पगड़ी हुवौ, कूकड़ै दीन्हो बांग । उठ बंदा कर बंदगी, क्यौं साहिब पास्यो माग । —ऊदो मेंण

उ०—६ थोक पूजा में दिन गया, आन देव कै नांव । जौ' री देख' र बिगसियौ, जाय हमारै गांव । —अनुभववाणी

उ०—७ थगा रूप देख मत बिगसो, मल मंतर की देहा । जन-हरिराम भसम हुय जासी, नांव बिनां सब नेह । । —अनुभववांणी

बिगसणहार, हारौ (हारी), बिगसणियौ—वि० ।

बिगसियोड़ौ, बिगसियोड़ौ, बिगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगसीजणौ, बिगसीजबौ—भाव वा० ।

बिगसाड़णौ, बिगसाड़बौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

बिगसाड़णहार, हारौ (हारी), बिगसाड़णियौ—वि० ।

बिगसाड़ियोड़ौ, बिगसाड़ियोड़ौ, बिगसाड़्योड़ौ - भू० का० कृ० ।

बिगसाड़ीजणौ, बिगसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिगसाड़ियोड़ौ- देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगसाड़ियोड़ी)

बिगसाणौ, बिगसाबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

उ०—घूंघट ओट सलाम गह, कवलि कवलि बिगसाय । हसतो लजति उमगति, ऊभी सनमुख आय । —पनां

बिगसाणहार, हारौ (हारी), बिगसाणियौ—वि० ।

बिगसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगसाईजणौ, बिगसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिगसायोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगसायोड़ी)

बिगसावणौ, बिगसावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

बिगसावणहार, हारौ (हारी), बिगसावणियौ—वि० ।

बिगसावियोड़ौ, बिगसावियोड़ौ' बिगसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगसावीजणौ, बिगसावीजबौ—कर्म वा० ।

बिगसावियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगसावियोड़ी)

बिगसियोड़ौ—देखो 'विकसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगसियोड़ी)

बिगहा—देखो 'विकत्था' (रू. भे.) (जैन)

बिगांनौ—देखो 'बेगांनौ' (रू. भे.

उ०—लैरां लैरां रै लै चल रांभ्रणा, लोक बिगांना थारो मुल्क बिगांना, अपना नही कोई साजणां । —रसीलै राज रा गीत

बिगाड़—देखो 'बिगाड़' (रू भे)

उ०—१ रावळ भोजदे नूं कहाड़ियौ, आगै आदमी मेल-म्हे पवारां ऊपर आबू आवा छा, तूं आगे खबर मत देई । म्हे थारौ बिगाड़ क्यूं नही करा, तू थारा लुद्रवा माहे बैठो रहे । —नैणसी

उ०—२ ऊदो ऊगमणावत ईदो महेवै रावळ मलीनाथजी री चाकरी करै । तद वाघ एक गोयाणा रै भाखरां रहे सो देस मांहे बिगाड़ करै । ताहरा रावळ जी राजपूतांनूं हुकम दियो-'चौकी द्यो' । —नैणसी

उ०—३ तद कुंवरसी कही, "जो थांहरै दाय आवै, सो करो । वात थांनी न रहिसी, जद बिगाड़ हुसी । म्हारो तो जीव हमैं थांहरै हाथ छै । चित में आवै त्युं करो" । —कुंवरसी सांखला री वारता

बिगाड़णौ, बिगाड़बौ—देखो 'बिगाड़णौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ भड भ्रजमाल कमधरा, वळिया देस बिगाड़ । लागै एता लखिया, जेतां मंडी राड़ । —रा. रू.

उ०—२ पाप वधै तिण होण प्रवाड़ै. वळियौ मुलकम वदन बिगाड़ै । आलम धड़िया दक्खण ऊपर, कामबगस ऊपर चढ कुंजर । —रा. रू.

उ०—३ बिगाड़ो ठौड़ जब भिस्टी, अज हूं मरै नही दुस्टी । टूको स्वांन ज्यूं देवै, दुख सुख खबर नही लेवै । —ऊदो नेंग

उ०—४ सु उठै जागळू रा कोट नजीक गूढो छै तठै रहे छै, नै क्रण रा बिगाड़ नूं दौड़े छै । नै अठै सांवला री बेरां पाणी नै जाय सु दहियां रा कवर ४० तथा ५० भेळा हुआ फिरै छै । —नैणसी

उ०—५ राम बिना कुण राखसी, कुण खेती किरसांण । नहो तो चिड़ै बिगाड़िसै, हरीया चेत अनाण । —अनुभववाणी

उ०—६ सो वा सुरग री वेस्या तिकण लोक री चार महीना कुसग रहसी ४ महीना क्यूं कि पेट में आधांन है सो च्यारा महना जनमिया पछै सत कर सुरगा मे जाय पती नै पाछो लेसूं जितरै कुलटा आदत बिगाड़ देसी । —वी. स. टी.

बिगाड़णहार, हारौ (हारी), बिगाड़णियौ—वि० ।

बिगाड़ियोड़ौ, बिगाड़ियोड़ौ, बिगाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगाड़ीजणौ, बिगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिगाड़ियोड़ौ—देखो 'बिगाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगाड़ियोड़ी)

बिगाड़ू—वि.—१ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला, बिगाड़ने वाला।

उ०—कुळ न्यात होता फोटा कुटल, जिकै बिगाड़ू जात रा। मम सेंग वान मुगळयो मती, रहण न दीज्यो रात रा। —ऊ का.

२ विध्वंस करने वाला, विध्वंसक।

रू. भे.—बिगाड़ू, बिगाड़, बिगारू।

बिगाड़ौ देखो 'बिगाड़' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिगाथा देखो बिगाहा' (रू भे.)

बिगार—देखो 'बिगाड़' (रू. भे.)

उ०—जनहगीया मम मिरध ज्यूं, परज्यो केनी वार। काया वाणी वोच मैं, करि करि जाहि बिगार। —ग्रनुभववाणी

बिगारणौ, बिगारबौ—देखो बिगाड़णौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)

बिगारणहार, हारौ (हारी), बिगारणियौ—वि०।

बिगारिग्रोड़ौ, बिगारियोड़ौ, बिगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगारीजणौ बिगारीजबौ कर्म वा०।

बिगारियोड़ौ—देखो बिगाड़ियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. बिगारियोड़ी)

बिगारू, बिगारू—देखो 'बिगाड़ू' (रू. भे.)

उ०—रधू के घममाण जिमक देव लजावै मुधाभुजू के बिमाण, ग्रवरही कारग्वानै निम निस कै ग्रोधायन ग्रपनां ग्रपनी जिनसूं ले ग्राय, जिम मायन परदळ कै बिगारू निज दळ के किवाड़। —र. रू.

बिगास—देखो 'विकास' (रू. भे)

बिगासणौ, बिगासबौ—देखो 'विकासणौ, विकासबौ' (रू. भे)

उ०—ग्रोउं सर सोउं देख्या दोउ, पारब्रह्म परछंदा है। ममाहुय पासै कवळ बिगासै, ग्ररध नांव ग्रावदा है। —ग्रनुभववाणी

बिगासणहार, हारौ (हारी), बिगासणियौ—वि०।

बिगासिग्रोड़ौ बिगासियोड़ौ, बिगासयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगासीजणौ, बिगासीजबौ—भाव वा०।

बिगासियोड़ौ—देखो 'विकासियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिगासियोडी)

बिगाह—देखो 'बिगाहा' (रू भे.)

उ०—गाहा मात्र सनातन गावै, गाही उलट बिगाह गिणावै। चौपन मत गाह उचरीजै, उगाहो मत्त साठ ग्रखीजै। —र. ज. प्र.

बिगाहन—सं. पु.—मुकुटवंश मे उत्पन्न एक कुलागार राजा, जिसने ग्रपने दुर्व्यवहार के कारण ग्रपने जाति बांधवों का एव स्वजनों का नाश किया था।

बिगाहा—सं. पु. [सं. विगाथा] ग्रार्या छन्द का उद्गीति नामक एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण में १२ मात्राऐं, द्वितीय चरण में १५ मात्राऐं, तृतीय चरण में १२ मात्राऐं ग्रौर चतुर्थ चरण में १८ मात्राऐं होती है।

उ०—प्रथम बिगाहा ग्ररध प्रति, वहिकल सत्तावीस। परदळ मांहि ग्रीस परि, तविजै मात्रा तीस। —पि. प्र.

रू. भे.—बिगाथा, बिगाह, बिगाहा।

बिगिति—देखो 'विगत' (रू. भे.)

उ० पगा है मैं मात्र प्रसतार, बिगिति बिधोगति वैत विचार। धुर लें गुर हेठै लुघ धारि, ग्रागळि हुवै तिसी ग्रणुहारि। —र. पि.

बिगुण—वि.—गुणरहित, निर्गुण।

बिगुल—देखो बिगुण' (रू. भे.)

बिगूंचणौ, बिगूंचबौ—देखो 'बिगूचणौ, बिगूचबौ' (रू. भे.)

उ०—तम्हो वनमांहा बिगूंचु, हूँ कहूं पोहरि राज। कथ, तै किम नीपजि, कुलवती थी ए काज। —नळाख्यांन

बिगूंचणहार, हारौ (हारी), बिगूंचणियौ—वि०।

बिगूंचिग्रोड़ौ, बिगूंचियोड़ौ, बिगूंच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगूंचीजणौ, बिगूंचीजबौ—भाव वा०।

बिगूंचियोड़ौ—देखो 'बिगूचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूंचियोड़ी)

बिगूचणौ, बिगूचबौ—देखो बिगूचणौ, बिगूचबौ' (रू. भे.)

बिगूचणहार, हारौ (हारी), बिगूचणियौ—वि०।

बिगूचिग्रोड़ौ, बिगूचियोड़ौ, बिगूच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगूचीजणौ, बिगूचीजबौ—भाव वा०।

बिगूचियोड़ौ—देखो 'बिगूचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूचियोड़ी)

बिगूत—वि. [स विगुप्त] १ छुपा हुग्रा, गुम।

बिगूतणौ, बिगूतबौ—क्रि. ग्र.—१ कष्टमय होना, दुःखित होना।

उ०—१ वैदरभी विरहि विगूती, वनमांहां बोलि बाली। 'ग्रांम एकली मूकी न जाइ, नैखध रा, तम टाळी। —नळाख्यांन

उ०—२ मन ही संकळप विकळप है मन ही, मन जाग्रत मन सूता। मन ही त्याग चलै बोह माया, मन ही लाग बिगूता।

—ग्रनुभववांणी

२ निन्दित होना।

उ०—१ किया उपाय पोखण के तांई, नृपति कदै न सूता। लोकी लाज मरै जां वातै, बोहळि वार बिगूता। —बील्होजी

उ० - २ "गजबंधी" सीह बिरमा, दखणी दळ माजि बिगूता । बग्गातुर महिकर छोडै दखणी दळ माणा ढोहै । —गु. रू. बं.

३ बर्बाद होना, नष्ट होना ।

उ०—सांई राधो मोमणी पान गाळो, ग्यानै मामी य 'किमप्रेम' पाळी । तै भूला रावो, बिगूतो भवि त्यारो, जागमी पीछै वडो भाग ब्यारो । —र. ज. प्र.

उ०—२ चद्र क्षयी, शुक्र कांणउ, मनोहर कूबडउ, आदित्य तापकर, ब्रह्मा गांकूमउ, मंगल वक्र, समुद्र खार, रावण परस्त्री कारणि बिगूतउ, श्रीराम रहइ वनवास, सीता रहइ वियोग, पांडव कौरव विरोध··· ···। —व. स.

४ छुपना, लुकना ।

५ कोसना ।

उ०—विरह मिलिउ बिबि विबि मागउ, हुउ तै हाहाकार । बिबि बिगूती बिलपती, नारि रही निरघार । —मा. कां. प्र.

६ ठका हुवा होना (छोड़ा हुवा होना) ।

उ०— जिम नीद्र भरि हुई सुखि सूता, तेम कौरव नि नीद्र बिगूता । करण मुख्य न्रप मौलि पटउला, वेगि उत्तरि लीया तिणि हेला । —सालिसूरि

बिगूतणहार, हारो (हारी), बिगूतणियो—वि० ।

बिगूतियोड़ो, बिगूतियोड़ो, बिगूत्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिगूतीजणो, बिगूतीजबो भाव वा० ।

बगूतणो, बगूतबो—रू० भे० ।

बिगूतियोड़ो-भू. का. कृ.—१ कष्टमय हुवा हुग्रा, दुःखित हुवा हुग्रा. २ निन्दित हुवा हुग्रा. ३ बर्बाद हुवा हुग्रा, नष्ट हुवा हुग्रा. ४ छुपा हुग्रा, लुका हुग्रा. ५ कोसा हुग्रा. ६ ढका हुग्रा (मोट. हुग्रा) ।

(स्त्री. बिगूतियोडी)

बिगूवणो, बिगूवबो – देखो बिगोणो, बिगोबो' (रू. भे.)

उ०—विहि !इ रहिइ वारी बली, मुझ सिउ मडि म म्राडि । माधवनइं तूं नहीं गमइ, मगूं बिगूविसि माडि । —मा का प्र.

बिगूवणहार, हारो (हारी), बिगूवणियो—वि० ।

बिगूवियोड़ो, बिगूवियोड़ो बिगूव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिगूवीजणो, बिगूवीजबो—कर्म वा० ।

बिगूवियोड़ो—देखो 'बिगोयोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूवियोडी)

बिगो–स. पु.—भोजन के साथ खाये जाने वाले छः पदार्थ ।

१ दूध २ दही ३ घृत ४ तेल ५ मिष्ठान ६ कढ़ाई ।

वि. वि. —उपर्युक्त छः पदार्थों में से एक-एक कर छुड़ाया जाने वाला पदार्थ ।

उ०—२ जद स्वामीजी ग्राठ रोटी काढ दीवी । मयाराम जी मायां नें घांमो पिण कोइ लें नहीं । जब बोल्यौ—परठ देवा रा भाव है । स्वांमी बोल्या—परठ नें दूजे दिन बिगे टाळज्यो । —भि. द्र.

उ०—२ बलि गुरां निखेध्यौ, ग्रागै थांनै वरज्यो थो नी । जद बले बोल्यौ—महाराज ! उपयोग चूक गयो । जद गुरु बोल्या—ग्रबै पग लागै है तो सवेरै बिगै रा त्याग है । थोड़ी वेला सूं फिरतां फिरतां बले पग दे दियो । इम उपयोग चूक नें वार वार पग लागो नो नें कुलाका उपर पग देवाथी नें बिगै टालवा थी राजी नही । —भि. द्र.

बिगोचणो, बिगोचबो—देखो 'बिगोचणो, बिगोचबो' (रू. भे.)

बिगोचणहार, हारो (हारी), बिगोचणियो—वि० ।

बिगोचियोड़ो, बिगोचियोड़ो, बिगोच्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिगोचीजणो, बिगोचीजबो—कर्म वा० ।

बिगोचियोड़ो—देखो 'बिगोचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगोचियोड़ी)

बिगोणो, बिगोबो–क्रि. स.—१ नष्ट करना, बरबाद करना ।

उ०—किया रवाना दोलतो, वीसलनंद बिगोय । क्रपण हिय मंह कांगसी, नहिं फेरै नर-लोय । —बां. दा.

उ०—२ खोयो ग्रासुरी धरम ग्रापो बिगोयौ तैं मीरखांन, जोयी नही तारको न ग्राग लो जबाब । "सवाईसींग" मारियौ धाणा सुं धगाखोर सिंधु, नीत छाडै किता दोड़ जीवसो नीबाब । —नवलजी लाळस

२ नाश करना, निध्वंस करना ।

३ दुःख देना, कष्ट देना ।

उ०—१ मोटउ कुडउ मागामिरि, वली विचारी जोइ । दिन थोहिउ त्यणो घणी वयरणी कांइ बिगोई । —मा का. प्र.

उ०—२ घान न भावै नींद निरोई, दुण वेदन मोनूं खरी बिगोई । नो मों बात कहूं मैं कैसी, मेरे मन में वीचत जैसी । —कंवरसी सांखला री वारता

४ बदनाम करना, निन्दा ।

उ०—१ सपति सहू लेई रहो, वली बिगैयु सेठी । सात लगाइ सात जि दिवस राखी, नालिउ हेठि । —मा कां. प्र.

उ०—२ ग्रोवयराट न्रप साहसूं जोई, विप्ररूपि न्रप बोलई सोई । ताहरइ नयरि नासि न कोई, ए ग्रगाह नारि बिगोई । —सालिसूरि

५ दुर्दशा करना ।

६ छिपाना।

७ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना।

उ०—ग्राखि पलव करमाल ग्रांगळी, उचरियौ तिणि सिर ग्रनड़ व्रज राखियौं बिगोयौ वासव, वडो ग्रवर कुण विसन वड।
—ह. नां. मा.

८ खराब करना, गन्दा करना।

उ०—जीभ न जीभ बिगोयनौ, दव का दाघा कुपळी मेल्ही। जीभ का दाधा नु पांगुरई, "नाल्ह" कहइ सुणजइ सब कोई।
—बी. दे

बिगोणहार, हारौ, (हारी), बिगोणियौ—वि०।

बिगोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगोईजणौ, बिगोईजबौ—कर्म वा०।

बिगोणौ, बिगोबौ, बिगोवणौ, बिगोवबौ, बिगूणौ, बिगूबौ, बिगोवणौ, बिगोवबौ—रू० भे०।

बिगोनौ—सं. पु.—१ कलह, टंटा-फिसाद।

२ देखो 'बेगांनौ' (रू. भे.)

बिगोयोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ, बरबाद किया हुवा. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. ३ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ. ४ बदनाम किया हुआ, निन्दा किया हुआ. ५ दुर्दशा किया हुआ. ६ छिपाया हुआ. ७ खराब किया हुआ, गन्दा किया हुआ. ८ लज्जित किया हुआ, शर्मिन्दा किया हुआ। (स्त्री. बिगोयोडी)

बिगोरणौ, बिगोरबौ—देखो 'बगोरणौ, बगोरबौ' (रू. भे.)

बिगोरणहार, हारौ (हारी), बिगोरणियौ—वि०

बिगोरिग्रोड़ौ, बिगोरियोड़ौ, बिगोरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगोरीजणौ, बिगोरीजबौ—कर्म वा०।

बिगोरियोड़ौ—देखो 'वगोरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगोरियोडी)

बिगोवणौ, बिगोवबौ—देखो 'बिगोणौ, बिगोबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रापणो लोग सगळो एक मतै छै सु मांन नुं इण ग्रापरी मतना करौ। पून रजपूतो न बिगोवै।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ ग्रा वडै घर री बहु हुवै तिसड़ी मोळवंत छै सु मांन नुं इण ग्रापरी धाय मेंल कहाड़ियौ "तु रावळ रौ घर घणोहा बिगोवै छै। नै तू मांणस छै तो म्हारौ नांम मत लेई" ग्रा चकोर थकी रहै छै मांन ग्रांधो हुवो बहै छ सु एक दिन सज नै इण रै घर मांहै ग्रायो। इण दीठौ म्हारो धरम न रहै तद ग्रा ह्राडी पेट मार मूई।
—नैणसी

बिगोवणहार, हारौ (हारी), बिगोवणियौ—वि०।

बिगोविग्रोड़ौ, बिगोवियोड़ौ, बिगोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगोवीजणौ, बिगोवीजबौ—कर्म वा०।

बिगोवावणौ, बिगोवावबौ—क्रि. स. [बिगोणौ क्रि. का प्रे. रू.] १ नष्ट कराना/करवाना, बरबाद कराना/करवाना।

२ नाश करवाना, विध्वंस करवाना।

३ कष्ट दिलवाना, दुःख दिलवाना।

४ बदनाम करवाना, निन्दा करवाना।

उ०—सुणि, राजा! रांणी वदइ, 'राजकुमरि घरि ग्रांणि। बली बिगोवावि घणु ब्राह्मण-केरइ पांणि।
—मा. कां. प्र.

५ दुर्दशा करवाना।

६ छिपवाना।

७ लज्जित करवाना, शर्मिन्दा करवाना।

८ खराब करवाना, गन्दा करवाना।

बिगोवावणहार, हारौ (हारी), बिगोवावणियौ—वि०।

बिगोवाविग्रोड़ौ, बिगोवावियोड़ौ, बिगोवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगोवावीजणौ, बिगोवावीजबौ—कर्म वा०।

बिगोवावियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नष्ट करवाया हुआ, बरबाद करवाया हुआ. २ नाश करवाया हुआ, विध्वंस करवाया हुआ. ३ दुख दिलवाया हुआ, कष्ट दिलवाया हुआ. ४ बदनाम करवाया हुआ, निन्दा करवाया हुआ. ५ दुर्दशा करवाया हुआ. ६ छिपवाया हुआ. ७ लज्जित करवाया हुआ, शर्मिन्दा करवाया हुआ. ८ खराब करवाया हुआ, गन्दा करवाया हुआ.

(स्त्री. बिगोवावियोड़ी)

बिगोवियोड़ौ—देखो 'बिगोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगोवियोड़ी)

बिग्गौ—देखो 'बिगौ' (रू. भे)

बिग्गाहा—देखो 'बिगाहा' (रू. भे.)

बिग्घ—देखो 'विघ्न' (रू. भे)

उ०—प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि व्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वद्धतं सनूर ए। बिजोग सोग रोग बिग्घ ग्रग्घ सिग्घ घायकं। प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायकं।
—घ. व. ग्रं.

बिग्य—सं. पु. [सं. विज्ञ] ब्रह्मा।

वि.—१ बुद्धिमान, समझदार।

२ विद्वान, पंडित।

३ विशेष जानकार।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, बिग्य चतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक।
—वेलि.

बिग्यता—सं. स्त्री. [सं. विज्ञता] १ बुद्धिमता, समझदारी।

२ पांडित्य, विद्वता ।

३ विशेष जानकार होने की अवस्था या भाव ।

बिग्यप्त–वि. [स. विज्ञप्त] जो बतलाया या सूचित किया गया हो ।

बिग्यप्ति, बिग्यप्ती–स. स्त्री. [सं. विज्ञप्ति] १ बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ इश्तहार विज्ञापन ।

रू. भे.—विग्यति, विग्याप्ति ।

बिग्यान–स. पु. [स. विज्ञान] १ जानकारी, ज्ञान ।

२ आविष्कृत सत्यों व प्राकृत नियमो पर आधारित क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान ।

३ विशेषतः भौतिक जगत् से संबंधित उक्त प्रकार का ज्ञान ।

उ०—धरम, बिग्यान, इतियास, पुराण, राजनीति, आचार, विवहार, कळा, साहित्य वेसभूसा, 'पत्र — व्यूहार' कारीगरी नं खेतीबाड़ी भैं मेंग परंपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै । —फुलवाड़ी

४ किसी विशिष्ट विषय के तत्वों या सिद्धान्तों आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संग्रहीत हो ।

यथा—सरीरविग्यान, समाजविग्यान, राजनीतिविग्यान ।

५ आत्मा के स्वरूप का ज्ञान । (बौद्ध)

६ आत्मा ।

७ स्त्रियों की चौसठ कलाओं मे से एक । (व. स.)

८ कर्म ।

९ कला । (व. स.)

१० विशेषतया ब्रह्मसाक्षात्कार से प्राप्त हुवा हुआ ज्ञान ।

११ एक शास्त्र विशेष ।

१२ निश्चयात्मिक बुद्धि ।

उ०—परिपूरण प्रेम, निज न्याय नेम, बिग्यान बिग्य, पूरण प्रतिग्य गभीर ग्यान, चिन्मय विग्यान उद्योग भाग्य, एको उपास्य ।

—ऊ. का.

रू. भे.—बिगनान, बिगन्यान, बिग्यान, विगनान, विगन्यान, विग्यानी ।

बिग्यानकोस—देखो 'विग्यानमयकोस'

बिग्यानपाद–स. पु. [सं. विज्ञानपाद] वेदव्यास का एक नाम ।

बिग्यानमयकोस–स. पु. [स. विज्ञानमयकोश] १ पांचज्ञानेन्द्रिय सहित बुद्धि । (वेद)

२ आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोश ।

बिग्यानवाद–स. पु. [स विज्ञानवाद] १ ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करने वाला वाद या सिद्धान्त ।

२ वह वाद या सिद्धान्त जिसमें केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो ।

बिग्यानवादी–सं. पु. [स. विज्ञानवादिन्] १ योग के मार्ग का अनुसरण करने वाला योगी ।

२ आधुनिक विज्ञानशास्त्र का समर्थक ।

विग्यानी–स. पु.—वह देवी जो किसी विशेष ज्ञान से जानी जाती है ।

वि. [सं. विज्ञानिन्] १ जिसे विज्ञान का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक ।

२ जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, ज्ञानी ।

३ देखो 'विग्यान' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन बिग्यांनीय जानि सबै, विधरूप तपो मन मोह धूनारो । दास कहै हरिराम बिनां हरि, होय नहीं नर को निसतारो ।

—अनुभववाणी

बिग्यापक–वि० [सं. विज्ञापक] १ दूसरों को जानकारी करवाने या जानकारी देने वाला ।

२ समाचार पत्रों आदि में विज्ञापन निकलवाने वाला, विज्ञापनदाता ।

बिग्यापन–स. पु.–[स. विज्ञापन] १ किसी को जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ वह पत्र या सूचना जिसके द्वारा किसी बात की सूचना दी जाय अथवा जानकारी कराई जाय, इश्तिहार ।

बिग्यापणौ, बिग्यापबौ–क्रि. स. [स. विज्ञापनं] विज्ञप्त करना, बतलाना या सूचित करना ।

बिग्यापियोड़ौ–भू. का. कृ.—विज्ञप्त किया हुआ, बतलाया हुआ या सूचित किया हुआ ।

बिग्याप्ति—देखो 'विग्यप्ति' (रू. भे.)

विग्रह–स पु [स. विग्रहः] १ व्याकरण के अनुसार यौगिक शब्दों या समस्त पदो के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग या पृथक करने की क्रिया या भाव ।

२ वैर-विरोध ।

उ०—बध्यो लिलाट राह विग्रह तै, सकर मयक न राखि सकेह । सरणाई 'खेता' सीसोदा, लाज केणी नह कीयो लेह ।

—लाला हाडा रो गीत

३ लड़ाई, झगड़ा

उ०—जाइ नै आगली रजपूताणी नुं तेड़िनै कह्यो, मैं आ—रजपूताणी म्हारै माथै सटै आणी छै । ईयै सं वाद विग्रह मत करिज्यो । —कांवळै जोईयै नै तीडो खरळ री वात

३ युद्ध, समर । (ह. नां मा)

उ०—१ करण तुच्छ केविया अभै कर मुंछ उभारै, आरुहिया नरइद पाव धारै पाधारै । वीख मगह अप्पतै सोभ विग्रह कवि सभरि, क्रिसन डाणि हल्लियौ जांण बांणासुर ऊपरि ।

—रा. रू.

उ०—२ मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट घुजाई लंका।
बाळ सुतण रचायो विग्रह, आयो राघव कर्न असंका। —र. ज.

उ०—३ रावळ दूदो तिलोकसी जसहड़ोत जेसळमेर गढ ऊपर छै।
पातसाही फोज तळहटी छै। वरस १२ विग्रह नै हुवा छै। मांमला
घणा ही हुवा, पण गढ हाथ आवै नही। —नैणसी

उ०—४ अजमखां वांसै लागो आय गढ गिरनार घेरियो।
वरस ३ विग्रह हुवो। अमीरखांन गढरोहा मांहै मौत मुंवो।
—नैणसी

४ नीति के छः गुणों मे से एक।

५ सेना, फौज।

६ किसी के प्रति किया जाने वाला हानिकारक उपाय का प्रत्यक्ष प्रयोग।

उ०—इम देखि अमल जळिया असह, घरा लियै इम धारियो।
जुध करण न व्हे आसण जदि, विग्रह चूक विचारियो।
—सू. प्र.

७ शिव का एक नाम, शिव-लिंग।

८ प्रतिमा, मूर्ति।

९ कोई तत्व विशेष। (सांख्य)

१० शृंगार, सजावट।

११ समुद्र के द्वारा स्कंद को दिये जाने वाले दो पार्षदों मे से पहला पार्षद।

१२ कष्ट, पीड़ा, दुखी।

उ०—बीछड़ियां विग्रह घणां, भव अंतरा पडाहि। नदी विछुटा वाहळा, अवसर कही मिळाहि। —परमानंदजी वंणियाळ

रू. भे.—विग्रह।

विग्रह-चारी—स. पु.—टंटा-फिसाद, लड़ाई-झगड़ा।

उ०—पांचमा आरा ना राजवी, होसी विग्रहचारो रे। वचन कहो फिर जावसी, एहवो जाण विचारो रे। —जयवाणी

विग्रहणौ, विग्रहबौ—क्रि. स.—१ युद्ध करना, लड़ाई करना।

उ०—कमधज्ज सकज्जां कारणा, वळा भुजा मार्ग कवण। त्रिविधांरा धणी इम विग्रहै, गहियो फिर पडतो गयण। —रा. रू.

२ संहार करना, मारना।

उ०—गह घरतो रिणमल जिण गादी विग्रहिया, खाग समवादी।
रिड़मल पाट जोध रिववंसी, इळ रखवाळ थयो प्रम अंसी।
—रा. रू.

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ षड़यन्त्र करना।

५ शृंगार करना, सजावट करना।

६ घेरा डालना, घेरना।

उ०—कमालदी घोड़ा हजार अस्सी ले आयो। गढ घेरियो। दिहाड़ं ढोवा हुवा छै, सु परधांन वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवो थो, सु गढ विग्रहियो सांभळ नै आयो। —नैणसी

उ०—२ पछै मूळराज रावळ हुवो। रतनसी नूं रांणाई रो विरद। मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियो। बरस १२ बा'रै गढ विग्रहियो रह्यो। —नैणसी

उ०—तरै तेजसी तो गढ चढीया। पीरोजी लाख कोठार रावळा थो तेजसी रा हुजदारां नूं सुहलां सा गिण दीया। सीवांणो विग्रहियो। —राव मालदे री बात

७ दूर करना, हटाना।

८ कलह करना, झगड़ा करना।

९ वीरगति प्राप्त होना।

विग्रहणहार, हारौ (हारी), विग्रहणियौ—वि०।

विग्रहियोड़ौ, विग्रहियोड़ौ, विग्रह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विग्रहीजणौ, विग्रहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बग्रहणौ, बग्रहबौ, बीग्रहणौ, बीग्रहबौ—रू० भे०।

विग्रहियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ४ षड़यन्त्र किया हुआ. ५ शृंगार किया हुआ, सजावट किया हुआ. ६ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ७ दूर किया हुआ, हटाया हुआ. ८ कलह किया हुआ, झगड़ा किया हुआ. वीर गति प्राप्त।

(स्त्री. विग्रहियोड़ी)

विग्रही—वि. [स. विग्रहिन्] १ लड़ाई-झगड़ा करने वाला, युद्ध करने वाला।

२ संहार करने वाला, मारने वाला।

३ नाश करने वाला, नष्ट करने वाला।

४ षड़यन्त्र करने वाला।

५ शृंगार करने वाला, सजावट करने वाला।

६ घेरा डालने वाला।

७ दूर करने वाला, हटाने वाला।

विघटण, विघटन—स. पु. [स. विघटनं] १ संयोजक अंगों को अलग अलग करने की क्रिया।

२ तोड़ने-फोड़ने की क्रिया या भाव।

विघटिका—सं. स्त्री. [सं.] घडी का ६० वां अंश, २४ सैकण्ड।

विघटित—वि. [सं.] १ जिसके संयोजक अलग-अलग कर दिये गये हों।

२ तोड़ा-फोड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ।

विघन—सं. पु. [स. विघनः] १ घन, हथोड़ा।

२ देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ जग वीच जाग्रा ज्याग, ग्रनि बिघन मुगन उद्दाम । सब वीज रीम घमार, ग्रन वीत मोन विचार । —रा. रू.

उ०—२ रीत ग्राद जदुवम घराणे, जगा बिघन जिगन सम जांणे। 'जीवण' हरनायोन मजोमो, घामुर व्याधि हरण किर घोसो ।
—रा. रू.

उ०—३ जो मोनूं बपाइस्यो तो भली करिस्यों, नहीं तो हूं सहर रा लोकां नु बिघन करीस । ताहरां कह्यो, "कही विघन न करै हो ? —स्यामसुंदर री वात

उ०—४ वेलि पढता कोई न होइ । कोई बिघन करि सकै नहीं । थळि थळि ग्राकामि कोई न कोई छळ छिद्र होण न पावै । —वेलि टी.

उ०—५ गाडो वहीर व्हैनी वेळा ई उगरो गपनो उगो भांत चालतो हो । पर नी बादळ रा सपना में ई किणी बात रो बिघन पड्यो । —फुलवाडी

उ०—६ दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचंद्र चतुराई । सुणिज्यो ग्राणलि कुमर कुतूहल, तजि मन बिघन बुराई । —वि. कु.

उ०—७ नगरवी कही— दरसण रूप तो तुम ही हो । पण राजा रूप छोड कर एकला फिरो सो उचित नहीं । बिघन ग्राय पड़े तो राज-देह दुर्लभ है । —सिघासण बत्तीसी

बिघनक—देखो 'विघ्नक' (रू. भे.)

बिघनकरण—देखो 'विघ्नकरण' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

बिघकारी—देखो 'विघ्नकारी' (रू. भे.)

उ०—तठै पंडित बोलिया—श्रीमहाराज ! ग्रो बाळक करडा नक्षत्र में जनम्यो छै नै कुडळी मांहे ग्रह खोटा ग्राया छै, वेळा पिण खोटी छै, सो माता पिता नै बिघनकारी छै, मौत-घात जगू छै ।
—रिसाळू री वात

बिघनजीत—देखो 'विघ्नजीत' (रू. भे.)

बिघननायक—देखो 'विघ्ननायक' (रू. भे.)

बिघननासक—देखो 'विघ्ननासक' (रू. भे.)

बिघनपत, बिघनपति, बिघनपती—देखो 'विघ्नपति' (रू. भे.)

बिघनप्राण—देखो 'विघ्नप्राण' (रू. भे.) (नां. मा.)

बिघनराज—देखो 'विघ्नराज' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बिघनविनायक—देखो 'विघ्नविनायक' (रू. भे.)

बिघनहरण—देखो 'विघ्नहरण' (रू. भे.)

उ०—पुरण-पुनीत श्रीराम पद, बिघनहरण त्रैलोक्य वर । परणाम सुकवि ईसर पुणै, संत नाम भव-सिंधु तर । —ह. र.

बिघनेस—देखो 'विघ्नेस' (रू. भे.)

बिघन—देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ बळता नी दीपक भला, टळता भला बिघन्न । मळता तो वैरी भला, बळता भला सुदिन्न । —प्रख्यात

उ०—२ फजरै विकराळ सरूप करै, किम व्याव विचाळ बिघन्न करै । सब घाविय 'पाल' कनै सिधियां, पुणावां तुमनै नथि पार-घियां ।—पा. प्र.

बिघन्नणौ, बिघन्नबौ—क्रि. ग्र.—नष्ट होना, मिटना (मरना)

उ०—यां दावै तरवार उठाई मोरां प्रगटी पीड़ घमाई । बधियो दरद, सु देह बिघन्नी, प्रस्ठ दुम्ट चांदी ऊपन्नी । —रा. रू.

बिघन्नणहार, हारौ (हारी), बिघन्नणियौ—वि० ।

बिघन्निग्रोड़ौ, बिघन्नियोड़ौ, बिघन्नयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिघन्नीजणौ, बिघन्नीजबौ—कर्म वा० ।

बिघन्नियोड़ौ—भू. का. कृ.—नष्ट हुवा हुग्रा, मिटा हुग्रा ।

(स्त्री. बिघन्नियोड़ी)

बिघन्नौ—वि.—विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

बिघात—सं. पु. [सं. विघातः] १ नाश ।

२ ग्राघात, प्रहार, चोट ।

३ बाधा, विघ्न ।

बिघातक—वि.—१ विघ्न डालने वाला, बाधक ।

२ ग्राघात करने वाला, प्रहार करने वाला ।

३ नाश करने वाला ।

बिघातकारिणी—स. स्त्री. [सं.] एक प्रकार की विद्या विशेष ।

उ०—ग्राकासगांमिनी सोदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवन-क्षोभिनी कामरूपिणी मनस्तभिनी जलस्तंभिनी ग्राग्नेयी वायवी वरसणी कोमारी खगरूपिणी नमोरूपिणी बिघातकारिणी गिरि-दारणी ग्रवलोकिनी……। —व. स.

बिघातन—सं. स्त्री. [स.] १ नाश करने की क्रिया या भाव ।

२ हत्या करने की क्रिया या भाव ।

३ बाधा डालने की क्रिया या भाव ।

४ प्रहार करने की क्रिया या भाव ।

बिघाती—देखो 'बिघातक'

बिघ्न—स. पु. [सं.] १ विघ्न, बाधा ।

२ रोक रुकावट ।

३ समर ।

४ ग्रमगल, ग्रशुभ ।

५ नरमासभक्षक एक राक्षस, जो कालि एवं ग्रयोमुखी नामक राक्षस का पुत्र था ।

६ वप नामक राक्षस का पुत्र ।

रू. भे.—बिघन, बिघ्न, विगन, विग्ध, विघन, विघन्न ।

विघ्नक-वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।
२ शत्रु, रिपु ।
रू. भे.—विघनक ।

विघ्नकरण-वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन करने वाला, बाधा डालने वाला ।
२ शत्रु, रिपु ।
रू. भे.—विघनकरण ।

विघ्नकारी-वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।
२ शत्रु, रिपु ।
रू. भे.—बिघनकारी, बिघ्नकारी, विघनकारी ।

विघ्नजित, विघ्नजीत-स. पु. [सं.] श्रीगणेशजी ।
रू भे.—विघनजित, विघनजीत ।

विघ्ननायक-सं. पु. [सं. विघ्न+नायक] श्रीगणेशजी महाराज ।
रू. भे —विघननायक ।

विघ्ननासक-स. पु. [स. विघ्नः+नाशक] श्रीगणेशजी महाराज ।
रू भे.—विघननासक ।

विघ्नपत, विघ्नपति, विघ्नपती-स. पु. [स. विघ्नः+पति] श्रीगणेश जी ।
रू. भे.—विघनपत, विघनपति, विघनपती ।

विघ्नप्रांण-स. पु. [सं] कृष्ण के बड़े भाई बलभद्र, हलधर ।
रू भे.—विघनप्राण ।

विघ्नराज-स. पु. [स. विघ्नः+राज] श्रीविनायकजी ।
रू. भे.—विघनराज ।

विघ्नविनायक-स. पु. [स. विघ्नः+विनायकः] श्रीगणेशजी महाराज ।
रू भे.—विघनविनायक ।

विघ्नसंतुस्ट-सं. पु [स. विघ्नसतुष्ट] चौसट भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

विघ्नहरण-सं. पु. [सं. विघ्नः+हरण] श्रीगणेशजी महाराज ।
रू. भे. --विघनहरण ।

विघ्नेस-स. पु. [सं. विघ्नः+ईश] श्रीगणेशजी महाराज, ब्रह्मांड में इसके इक्कावन नामान्तर दिये गये हैं ।
रू. भे —विघनेस ।

विड़ंग—१ देखो 'विडग' (रू. भे.)
उ०—१ सूरजमाल दुभाल, नेज गज ढाल निहारै । फळ साबळ फोरियो, बिड़ंग श्रोरियो वधारै । —रा. रू.
उ०—२ उभै तरफ ऊपड़ी, वाग तिण वार विड़ंगां । सम्हो सम्हा सुर असुर, जुड़ै सर संभर जंगां । —सू. प्र.
उ०—३ विड़ंगण केसर पाखर भीड़. भुजाळोय बांधव आवध भीड । ग्रहै कर साबळ श्रंग गरीठ, 'पबो' चढतौ जद केसर पीठ ।
—पा. प्र.
(स्त्री. विड़गण)

विड़ंगि, विड़ंगी—देखो 'विडंग' (रू. भे.)
उ०—अगरांण न हालइ उवरि अभ, बाहू असोम जिम तेवि बंभ । जड़लग्ग साहि खेलमी जंगि, वइरा वराह चडियउ विड़ंगि ।
—रा. ज. सी.

विड़-स. पु.—१ बीहड, वन ।
उ०—१ वाटि वटाऊ सब चले, विड़ मैं वासा होय । जनहरीया साई विना, यार न अपणा कोय । —अनुभववांणी
उ०—२ वाट विड़ांणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसो वेसास । —अनुभववांणी
२ विषय, काम, भोग ।
उ०—१ हरीया जग विड़ नीदीयौ, जा कूं भगति न भाय । से रना रहमांण सूं श्रोर न आवै दाय । —अनुभववांणी
उ०—२ वाट विड़ांणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसो वेसास । —अनुभववांणी
३ शत्रु, दुश्मन ।
वि. [सं. विट] विषयी, कामी, भोगी ।
उ०—वाट विड़ांणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसो वेसास । —अनुभववांणी
रू. भे.—बिड़, विड ।
मह.,—विडाण ।

विड़ग्रोजा—देखो 'विड़ूजा' (रू. भे.)

विड़ग्रोजावाह—देखो 'विड़ूजावाह' (रू. भे.)

विड़णौ, विड़बौ—देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे.)
विड़णहार, हारौ (हारी), विड़णियौ—वि० ।
विड़िग्रोड़ौ, विड़ियोड़ौ, विड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विड़ीजणौ, विड़ीजबौ—भाव वा० ।

विड़द—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)
उ०—१ मूळी रो पाना रजवाड़ां में रैणियौ स्यांणो हाजरियौ, राजनीत सूं रंग्योड़ौ—सुधरयोड़ौ मिनख । ख्यात अर जात नै जांणै, विड़द अर बडाई वखांणै । —दसदोख

उ०—२ सरणागत सुख करन कूं, तुमरो बिड़द, बिराज। अपनो ही जन जांन कैं, कृपा करो महाराज। —अज्ञात

उ०—३ निरधार करत न नारियण, समरण सरण बिड़द सूं। कोल कर जोरधा मोतरै, मंडण कला गुर जंम सूं। —कोल्हजी चारण

उ०—४ बिड़द तमारो रामजी, लं बरोरै म्हाराज। हरीये गुण औगुण कीया, नींदै तमा कू लाज। —अनुभववांणी

२ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

बिड़दड़ी—स स्त्री.—१ वृद्धि, बढ़ोतरी।

उ०—गढ रणथंभवर सूं आवो विनायक, करो नी अणचींती बिड़दड़ी। बिड़द-बिनायक दोनूं जो आया, आय तो उतरिया हरियै बाग में। —लो. गी.

२ वह स्त्री जिसके घर में पुत्र या पुत्री के विवाह के मांगलिक कृत्य होते हों।

रू. भे.—बिड़दड़ी, बिरदड़ी, बिरदणी।

बिड़दबड़ी—स. स्त्री. [सं. वृद्धि-वटी] विवाहारंभ में मातृका पूजन के समय दी गई बड़ी, जो वर-वधू को सीख देते समय पका कर भोजन के साथ खिलाई जाती है।

रू. भे.—बिड़दबड़ी, बिड़दवड़ी, बिरदबड़ी।

बिड़दविनायक—स. पु. [सं. वृद्धिविनायक] मांगलिक अवसरों पर प्रथम पूजे जाने वाले विनायक, वृद्धिविनायक।

उ०—**बिड़दविनायक** दोनूं जी आया, आय तो उतरिया हरिया बाग मे। ढूंढत ढूंढत नगरी जी ढूंढी, कोई घर तो बतावो लाडल रै बाप रो। —लो. गी.

रू. भे.—बिड़दविनायक, बिड़दविनायक, बिड़दविनायक।

बिड़दाणौ, बिड़दाबौ—देखो 'बिरदाणौ, बिरदाबौ' (रू. भे.)

बिड़दाणहार, हारौ (हारी) बिड़दाणियौ—वि०।

बिड़दायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिड़दाईजणौ, बिड़दाईजबौ—कर्म वा०।

बिड़दायोड़ौ—देखो 'बिरदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिड़दायोड़ी)

बिड़दावणौ, बिड़दावबौ—देखो 'बिरदाणौ, बिरदाबौ' (रू. भे.)

उ०—धीरा धीरा भड़ दोळा **बिड़दावै**, धोरा धोरा पड़ घोळा मत धावै। बेळू बंतड़ री तानी बळवाळी, रेणा घोळी री राती कर राळी। —ऊ. का.

बिड़दाव—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—चौथ हिसाब कर परा'र लिखया मुजब पांच सौ जमा कर देवण रो हुकम दालै, ब्याज न्यारो राखै है। सागै-सागै आपरी बात मांन ज्यांरी वेगी मारजा री तारीफ अर भरोसै रा ही **बिड़दाव** उडावै है। —दसदोख

बिड़लौ—स. पु.—१ ढेर, समूह।

उ०—१ माता कै भवन में जी औ नारेळा रो **बिड़लो**, जी औ नारेळा रो बिड़लो सुगरया रै बिड़लै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो. गी.

उ०—२ माता कै भवन में जी औ चावळियां रो **बिड़लो**, जी औ चावळिया रो बिड़लो, सगा रै बिड़लै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो. गी.

उ०—३ माता कै भवन में जी औ काजळिया रो **बिड़लो**, जी औ काजळिया रो बिड़लो, गोळी रै बिड़लै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो. गी.

उ०—४ माता कै भवन में जी औ मोळी रो **बिड़लो**, जी औ मोळी रो बिड़लो, महदी रै बिड़लै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो. गी.

२ देखो 'सुहागदार बिड़लो'।

बिड़ांणौ—देखो 'बिड़ांणो' (रू. भे.)

उ०—१ राम नाम नही चेतीयो, करी **बिडांणी** आस। जन हरीया घर गोरिवै, सरिखया सेनी वास। —अनुभववांणी

उ०—२ दुनिया रोवै रोनता, देख **बिडांणो** लाल। नांव सनेही बाहिरो, हरीया होय बिहाल। —अनुभववांणी

उ०—३ माया भई **बिडांणीयां**, भार बिडाणें लोग। जनहरीया नही आपना, विखै बिलासा भोग। —अनुभववांणी

उ०—४ जांणि बूझि गहली भई, प्यारी पिव कै जोग। हरीया गफि करतार सूं भमो बिडांणै लोग। —अनुभववांणी

उ०—५ बाट **बिडांणी** लोक बिड, बिड ही बिड़ में वास। हरीया हरि बिन दूसरा, नाहि किसो वेसास। —अनुभववांणी

(स्त्री बिडांणी)

बिडाळ, बिडाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

बिडाळव्रत—देखो 'बिडाळव्रत' (रू. भे.)

बिडाळव्रतिक—देखो 'बिडाळव्रतिक' (रू. भे.)

बिडियोडौ—देखो 'बिडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिडियोडी)

बिडूजा—देखो 'बिडूजा' (रू. भे.)

बिडूजावाह—देखो 'बिडूजावाह' (रू. भे.)

बिड़ोजा—देखो 'बिडूजा' (रू. भे.)

उ०—तेज नाग मुनीपूर पाड़िया पाथोध तास, नागेम झाड़िया

ज्यूं खगेस बंधे नेत । पढ़े पख बिड़ोजं झाड़िया बज्र बीम बाट, खळां थाट दूजं वळे' बिभाड़िया खेत । —हुकमीचंद खिड़ियौ

बिड़ोजावाह—देखो 'विड़ूजावाह' (रू. भे.)

बिड़ौ-सं. पु.—थोहर के नीचे का भाग ।

उ०—घोड़ा दौड़ रह्या छै । होकारा हगामो हुय रह्यो छै । जितरै बीच थोहर झाड़ा रा बिड़ा माहा खरगोस उठिया छै । —रा. सा. स.

रू. भे.—विड़ौ ।

बिचंमा-क्रि. वि.—बीच में, मध्य में ।

उ०—राय देह पवराय, वार तरण चेह बिचंमा । झळ भग्गी भूलिवा, करण लग्गी परकम्मा । —रा. रू.

बिच, बिचइ—देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ धारण सलज चवां 'चंद' धारै, भ्राच उठाय वडिम उच्चारै । बिच पुर धसै विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चदराजा । —सू प्र.

उ०—२ पूछ्या बिना पयपै पापी, यट बिच कहै लात सिर थापी । वदन मत दिखाले बंस द्रोही वळै । —र. रू.

उ०—३ भाखि सतोगुण भलो, खरो कोई कहिजै खोटो । त्रिविध तणी बिच तीन, त्रिविध तामस गुण ओटो । —पी. ग्र.

उ०—४ जउ साहिब तूं नाविवउ, मेहां पहलइ पूर । बिचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरै दूर । —ढो. मा.

उ०—५ दिलीवै कहर पतसाह रा मांज दळा, सोहिया दळां बिच वीर साजा । सदा जोरावरा तणा नव-साहसो, राह सिर ऊपरै हुम्रै राजा । —देवराज रतनू

बिचकणौ, बिचकबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

बिचकणहार, हारौ (हारी), **बिचकणियौ**—वि० ।

बिचकिय़ोड़ौ, बिर्चकियोड़ौ, बिचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकीजणौ, बिचकीजबौ—भाव वा० ।

बिचकाड़णौ, बिचकाड़बौ—देखो 'बिचकाणौ, बिचकाबौ' (रू. भे.)

बिचकाड़णहार, हारौ (हारी), **बिचकाड़णियौ**—वि० ।

बिचकाड़ियोड़ौ, बिचकाड़ियोड़ौ, बिचकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकाड़ीजणौ, बिचकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिचकाड़ियोड़ौ—देखो 'बिचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिचकाड़ियोड़ी)

बिचकाणौ, बिचकाबौ-क्रि. स.—१ चौंकाना ।

उ०—बापड़ो छोरो रोवरा-खारो होर लकड़ियां भेळी करण लागो । इत्ती में गळी रै छोरां ताळियां वजा वजा'र सांड नै बिचकाय दी । सांड नाठौ । छोरा कणांई सांड पासी दौड़ै कणांई लकड़िया सांमें । —बरसगांठ

२ बिगाड़ना, विकृत करना । (मुख)

बिचकाणहार, हारौ (हारी), **बिचकाणियौ**—वि० ।

बिचकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकाईजणौ, बिचकाईजबौ—कर्म वा० ।

बिचकाड़णौ, बिचकाड़बौ, बिचकाणौ, बिचकाबौ, बिचकावणौ बिचकावबौ, बिचकाड़णौ, बिचकाड़बौ, बिचकावणौ, बिचकावबौ —रू० भे०

बिचकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चौंकाया हुआ. २ बिगाड़ा हुआ, विकृत किया हुआ (मुख) ।

(स्त्री. बिचकायोड़ी)

बिचकावणौ, बिचकावबौ—देखो 'बिचकाणौ, बिचकाबौ' (रू. भे.)

बिचकावणहार, हारौ (हारी), **बिचकावणियौ**—वि० ।

बिचकाविय़ोड़ौ, बिचकावियोड़ौ, बिचकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकावीजणौ, बिचकावीजबौ—कर्म वा० ।

बिचकावियोड़ौ—देखो' बिचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिचकावियोड़ी)

बिचकाक्ष-सं. पु.—एक राजा, जिसने मांस-भक्षण त्याग किया था ।

बिर्चकियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिर्चकियोड़ी)

बिचकिल-सं. पु.—१ कुसुम विशेष २ सुगन्धी वृक्ष विशेष ।(सभा)

(मि.—'बिचकल' ।)

बिचक्खण-सं. पु.—देखो 'बिचक्षण' (रू. भे.)

बिचक्र-सं. पु.—एक दानव का नाम । (पुराण)

बिचक्षण-वि. [स. विचक्षण] [स्त्री. विचक्षणा] १ पारदर्शी ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ बुद्धिमान, चतुर ।

उ०—पट्टकूल पट्टणी देस भोगीधर दक्षण । कुंजर कदळी खंड विप्र तेरोतरी विचक्षण । —ढो. मा.

४ पंडित, कवि ।

५ निपुण, योग्य, काबिल ।

६ अद्भुत, अपूर्व, विचित्र ।

उ०—उत्तम कुलनो ऊपनो, मयग तणउ अवतार । वली विचक्षण परिग घणा, भरिया धन भंडार । —मा. कां. प्र.

७ पुरुष के बत्तीस लक्षणों में से तेरहवां शुभ लक्षण ।

रू. भे.—विचख्खण, बचखण, बचिखण, बिम्रक्खण, बिम्रक्खणि, बिम्रक्खणु, विचक्खण, विचक्षिण, विचखण, विचखणी, विचक्खण, विचख्यण, विचच्छण, विचछन, विक्खण ।

विचक्षणतोइन–सं. पु.—एक आचार्य जो गर्दभी मुख शाण्डिल्यायन का शिष्य व शाकदास भाडितायन का गुरु था।

विचक्षणता–स. स्त्री [सं. विचक्षण + ता प्र.] १ निपुणता, दक्षता, चतुराई, विद्वता।

२ विभिन्नता, अद्भुतता।

विचक्षणा–सं स्त्री.—१ कुंभा नामक ओषधि, नागदंती।

२ चतुर स्त्री।

उ०– चौसठ कला विचक्षणा रूप गुणां करी रंभा रे। देवगुरु धरम री पालनी, गुणधारी हटकभा रे। —वृन्त.

विचक्षिण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०– पटकूल पहरणी, देस भोगी गुर दक्षिण। कुंजर कादळी खंड, विपरीत नीति विचक्षिण। —ढो. मा.

विचक्नु–सं. पु.—एक राजा, जो 'यज्ञकर्म मे अहिंसाव्रत का पालन करना चाहिए' इस तत्व का प्रतिपादन कर इसी मत पर 'विचख्नु गीता' की रचना की जो भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को सुनाई गई थी।

रू. भे.—विचख्नु।

विचक्षु–सं. पु.—वसिष्ठकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

विचखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां मा.)

विचखणी—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचख्खण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ बमहंतरि यह पात विचख्खण, बीर कळोधर गरथ विचार। सिगळी सुजस लियो राइ सोझळ, खट ग्रन कीया······खंगार। —खंगार रायजाळौत रौ गीत

उ०—२ मुश्चिवन बळवन राज, ननगान विचख्खण। भोग जोग गुर भगत, भाग परमाण भुजायण। —रा. मा. म.

विचख्नु—देखो 'विचक्नु' (रू. भे.)

विचख्यण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचड़ण—देखो 'बिछुड़ण' (रू. भे.)

उ०—मिळण भलो विचड़ण बुरो, मिळ बिछड़ो मत कोय। —अज्ञात

विचड़णो, विचड़बो देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो' (रू. भे.)

विचड़णहार, हारौ (हारी), **विचड़णियो**—वि०।

विचड़ियोड़ो विचड़ियोड़ो, विचड़योड़ो—भू० का० कृ०।

विचड़ीजणो, विचड़ीजबो– भाव वा०।

विचड़ियोड़ो—देखो 'बिछुड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विचड़ियोड़ी)

विचच्छण, विचच्छण, विचच्छणी, विचच्छन—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ बरणी उपमा सार, विचारि विचच्छणां। लिया सही अवतार, बनोसा लच्छणां। —बां. दा.

उ०—२ अब कवरी रै पत्रो सिद्धश्री लाल री लड़ी जीव री जड़ी मजीली फबीली लजीली छबीली रमकीली लंकीली कमककीली छकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लच्छणी चौसट कला विचच्छणी केल रस क्यारी प्राणप्यारी जिणसूं सांहरी निज नेह परम भाव मालजे देह। —र. हमीर

विचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—१ लग झपट बे थपट छट खल खट, विकट अविघट विहै गिगिवट। पड़ै घट कटि उलट पालट गरट समरट पहट, गाहट विचत्र खड़ खट तणां दहवट। —ल. पि.

उ०—२ नृप मोराय 'पाल' घड़ी कनरैं, पलसा हिय फौज मिवांण परैं। रवदां वळ लूटन गांम रटै, विचत्रां दळ घेल लाख वटै। —पा. प्र.

उ०—३ केसरी सिंघ राव 'मालदे' कळोधर, चाड़ग्रां गुर सदा लग वडां चेळो। विचत्र साह आलमी जालमी विजुळा,मरण मिळियै कियो ताळ-मेळो। —माधौदास गाडण

उ०—४ विचत्रां देवेस मोच विरांम, तरां हिक रावत बोल्यो तांम। उवारण राका चीत उदार, बसैं भ्रो वीरम जूह विडार। —गो. रू.

उ०—५ मच्छर भ्रोर न संग्रहे, भ्रा मछरीकां भ्राद। भ्रड़ै कमंधां भ्रगाळी, विचत्रां हुंता वाद। —रा. रू.

विचत्रांण—देखो 'विचित्र' (मह., रू. भे.)

उ०—१ नदियां कराग खग वाहतै, रूक जाग चतुरंगिणी। विचत्रांण जुवाणा वज्जियो, इहमांण पहलै अणी। —रा. रू.

उ०—२ जुध जीप पति जोधांण, तड़ भाज भड़ विचत्रांण। पाधा-रियो सिध पाय, 'अभसाह' धांम अकाय। —रा. रू.

विचविम्ब–स. पु. – चांद, चन्द्रमा। (नां. मा.)

विचमां – देखो 'बीच' (रू भे.)

विचरण स पु.—१ पैर, चरण। (अ. मा.)

स स्त्री.—२ चलने की क्रिया या भाव।

३ पर्यटन करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—विचरन।

विचरणौ, विचरबौ–क्रि. अ.—१ व्यापक होना।

उ० १ हम ते सरव मो व्यापक, मो मैं सरव विचरता। जो देखुं सो दीसत मझ मैं, हूं सरव ब्रह्म सरवगता। —श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ देवी जगत करतार भरता संहरता, देवी चराचर जग्ग सब में **विचरता**। देवी चार धांम स्थलं ग्रस्ट साठं। देवी पावियँ एकसौ पीठ ग्राठं। — देवि.

२ गमन करना, घूमना।

उ०—मरजीवा होय जग मैं विचरूं, स्वाल करूं नहिं कोना। जिनकी कळा सकळ में बरतै, सो साहब हम लोना।
—स्रीहरिरांमजी महाराज

३ गुजरना, गमन करना, जाना।

उ०—तठा उपराति करि नैं राजांन सिलामति ग्रतरा माहै पातसाह महमद मुसतफाखान रा चार दून **विचरिया** हूंता त्या हकीकत राजान रा पातसाह ग्रागै पोहचाई। —रा. सा. सं.

४ ग्रवलोकन करना, देखना।

उ०—माईत तौ पाछा ग्रापरै मंसोबां मे रुंधग्या ग्रर टाबर ग्रापरी ग्रबूझ बाळ-प्रीत में तारां रै सागै **विचरतां** विचरता वांनै ऊंघ ग्रायगी। —फुलवाड़ी

५ जैन साधुग्रों का भिक्षा मांगने हेतु जाना।

उ०—'राजग्रहो' नगरी हो ग्रति रलियांमणी 'गुणसिल' नांमै बाग जिणेसर। 'विचरता' वीर जिणंद समोसरचा, भव जीवा रै भाग जिणेसर। —जयवांणी

विचरणहार, हारौ (हारी) विचरणियौ—वि०।

विचरिग्रोड़ौ, विचरियोड़ौ, विचरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचरीजणौ, विचरीजबौ—भाव वा०।

विचरवणौ, विचरवबौ, विछरणौ, विछरबौ—रू० भे०।

विचरन—देखो 'विचरण' (रू. भे.)

विचरवणौ, विचरवबौ—देखो 'विचरणौ, विचरबौ' (रू. भे.)

उ०—सुन तूं सुकमाल सुगात, मत कहिजौ संजम बात। इणि गहग्रइ संजम भारइ, **विचरेवउ** खड़ड़ा धारइ। —जिनराज सूरि

विचरवियोड़ौ—देखो 'विचरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचरवियोडी)

विचरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ व्यापक हुवा हुग्रा. २ गमन किया हुग्रा, घुमा हुग्रा. ३ गुजरा हुग्रा, गमन किया हुग्रा, गया हुग्रा. ४ ग्रवलोकन किया हुग्रा, देखा हुग्रा. ५ जैन साधु का भिक्षा मांगने हेतु गया हुग्रा.

(स्त्री विचरियोड़ी)

विचळ, विचल—वि. [सं विचल] १ जो स्थिर न हो, ग्रस्थिर, डिगा हुग्रा।

२ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुग्रा।

विचळकौ—क्रि. वि.—बीच में।

उ०—तेल **विचळकै** ग्राय रह्यौ, लूम्यां री डोरी। नणदल कूल्हर खाय, वारी ऐ लूम्यां री डोरी। —लो. गी.

विचळणौ, विचळबौ—क्रि. ग्र.—१ विचलित होना।

२ पदच्युत होना।

३ हिम्मत हारना, निरुत्साह होना।

४ कहकर इन्कार होना, मुकरना।

५ प्रतिज्ञा या संकल्प से विमुख होना।

६ विकृत होना, खराब होना।

७ तितर-बितर होना, बिखरना, भाग जाना।

उ०—१ तेथि कछवाहो भोपत राजा भारमल रो दीकरो कांम ग्रायौ। मिरजै इब्राहम री फोज **विचळी**। पीण मिरजै रै तरगसबंधे कहियौ पातिसाह थोड़े साथ सेती छै। ग्राग्रो जिम मारिल्यां। — द. वि.

उ०—२ लोक सारौ गोळा सुं फूट गयौ। सो सांकड़े घेर में लागी। सो एकै-एकै सुं दोय-दोय तीन-तीन फूट गया। बांण लागा, सो घोडा ग्रादमी फूट गया फोज **विचळ** गई। पग छूट गया। सो भाजतां रै पूठै लोक लागौ। —कवरसी साखला री वारता

८ ग्रस्थिर होना, डिगना।

९ घबराना, भयभीत होना।

उ०—१ इयै समटयै हमाऊ पातिसाह काबिल हूंता ग्रायौ। ग्रापस में समरेजसाह री फोज हुता वेढि हुई। फोज भागी। पठांण **विचळिया**। पजाब ली। हमाऊं पातिसाह मींहनद ग्रायौ।
—द. वि.

उ०—२ वांसा पठांणं चप की तीरां री। ताहरा मुगळ **विचळतै** ही ज मार की। तितरै बीजी फोज मुगळां री पठाणा ग्राडी ग्राई।
— द. वि.

उ०—३ इतरै मांही मारवाड़ री धरती मे कहत पड़ियौ लोग सारौ **विचळियौ**। —नापै साखलै री वारता

उ०—४ ताहरा कोटवाळ पूछियो—क्योंकर मोटियार, कासूं कहै छै? ताहरां कुंवर कह्यो—बेटो तो इया रो ही छू। तितरै साह कह्यौ रै कपूत, कास कहै छै के रो तेरो छै? ताहरा फेर कह्यौ—थाहरो बेटो छूं। ताहरा कोटवाळ कह्यौ—रै मोटियार, यूं **विचळियौ** क्युं बोलै छै। —पलक दरियाव री बात

विचळणहार, हारौ (हारी), विचळणियौ—वि०।

विचळिग्रोड़ौ, विचळियोड़ौ, विचळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचळीजणौ, विचळीजबौ—भाव वा०।

विचळणौ, विचळबौ, विचलणौ, विचलबौ, विचळाणौ, विचळाबौ, विचलाणौ, विचलाबौ, विचळावणौ, विचळावबौ, विचलावणौ, विचलावबौ, विछळणौ, विछळबौ—रू० भे०।

लणौ, विचलबौ—देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

उ०—हुकम कीयौ हल्ला करौ रे, विचल्यौ माह बखस । जुझार जाइ झालियौ रे, फतह राम रजस । —प. च. चौ.

विचलणहार, हारौ (हारी), विचलणियौ—वि० ।

विचलियोड़ौ, विचलियोड़ौ, विचल्योड़ौ - भू० का० कृ०

विचलीजणौ विचलीजबौ—भाव वा० ।

ळता, विचलता—स स्त्री.- १ चचलता ।

२ अस्थिरता ।

३ घबराहट ।

४ भयभीत होने की अवस्था या भाव ।

लाड़णौ, विचलाड़बौ—देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे)

विचलाड़णहार, हारौ (हारी), विचलाड़णियौ वि० ।

विचलाड़ियोड़ौ, विचलाड़ियोड़ौ, विचलाड़्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

विचलाड़ीजणौ, विचलाड़ीजबौ—कर्म वा०/भाव वा० ।

लाड़ियोड़ौ—देखो 'विचलायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री विचलाड़ियोड़ी)

ळाणौ, विचळाबौ—१ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे.)

उ०—घननाद करै घमसाण घणौ, विचळाय दियौ दळ राम तणौ । हनुमत निसाचर नाम किया, खल-वृंद खपावण मे मुखिया । —गी. रां.

२ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे)

विचळाणहार, हारौ (हारी), विचळाणियौ – वि० ।

विचळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचळाईजणौ, विचळाईजबौ—कर्म/भाव वा० ।

लाणौ, विचलाबौ—क्रि. स.—१ विचलित करना ।

२ भयभीत करना ।

३ तितर बितर करना, बिखेरना ।

४ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धनु-भजन रौ रव घोर घणौ, विचलायौ है मंड ब्रह्माड तणौ । हरि-नाभिय सू विधि आय डल्यौ, रथ सूरज रौ तज राह चल्यौ । गी. रा.

उ०—२ ग्रघरीस गणायौ, तुज ग्रगणायौ, भजन सवायौ, मन भायौ । दरबारां ग्रायौ ग्राम डरायौ, चक्र चलायौ, विचळायौ । —भगतमाळ

उ०—३ भीव कल्याणदासोत लोहा पड़तै उपड़ियौ फौज विचलाइ । —गोपालदास गौड़ री वारता

विचलाणहार, हारौ, (हारी), विचलाणियौ—वि० ।

विचलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचलाईजणौ, विचलाईजबौ—कर्म/भाव वा० ।

विचलाणौ, विचलाबौ, विचलावणौ, विचलावबौ, विचळाणौ, विचळाबौ, विचलावणौ, विचलावबौ—रू० भे० ।

विचळायोड़ौ- १ देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री विचळायोड़ी)

विचलायोड़ौ—भू का. कृ. १ विचलित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ. ३ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ।

४ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विचलायोड़ी)

विचळावणौ, विचळावबौ—१ टकराना, आपस मे भिड़ना (बर्तन) ।

उ०—कर कम्हूं भाड़ा सामसा विचळावै, बाजै भंभाड़ा वासण विचळावै । चमकंता वागळ गोडा चिक चिकता, जनू जळ चिकता चिकता में चिकना । —ऊ. का. ।

२ ध्वनि करना ।

३ बीच मे आना ।

४ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे.)

५ देखो विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

विचळावणहार, हारौ (हारी), विचळावणियौ—वि० ।

विचळावियोड़ौ, विचळावियोड़ौ, विचळाव्योड़ौ भू० का० कृ० ।

विचळावीजणौ, विचळावीजबौ—कर्म/भाव वा० ।

विचलावणौ विचळावबौ—रू० भे० ।

विचलावणौ विचलावबौ—१ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ (रू. भे.)

२ देखो 'विचळावणौ, विचळावबौ (रू. भे.)

३ देखो 'विचळणौ, विचळबौ (रू भे.)

विचलावणहार, हारौ (हारी), विचलावणियौ—वि० ।

विचलावियोड़ौ, विचलावियोड़ौ, विचलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचलावीजणौ विचलावीजबौ—कर्म भाव वा० ।

विचळावियोड़ौ—भू. का. कृ —१ आपस मे टकराया हुआ. २ ध्वनि किया हुआ. ३ बीच मे आया हुआ ।

४ देखो 'विचळायोड़ौ' (रू. भे.)

५ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. विचळावियोड़ी)

विचलावियोड़ौ—१देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'विचळावियोड़ौ' (रू. भे)

३ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. विचलावियोड़ी)

विचळित, विचलित–वि. [सं. विचलित] १ घबराया हुआ, भयभीत ।

२ पदच्युत ।

३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह ।

४ कहकर इन्कार हुवा हुआ ।

५ खराब हुवा हुआ, विकृत ।

६ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ ।

७ अस्थिर, डिगा हुआ, चचल ।

८ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख ।

विचळियोड़ो–भू. का. कृ.—१ विचलित हुवा हुआ. २ पदच्युत हुवा हुआ. ३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह हुवा हुआ. ४ कह कर इन्कार हुवा हुआ, मुकरा हुआ. ५ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख हुवा हुआ. ६ विकृत हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ. ७ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ. ८ अस्थिर हुवा हुआ, डिगा हुआ. ९ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ.

(स्त्री विचळियोड़ी)

विचलियोड़ो—देखो 'विचळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विचलियोड़ी)

विचलो–वि. (स्त्री. विचली) मध्य का, बीच का ।

उ०—कितरेक भाग इण खंदकं, उतारी हो कायर तणी खोल ।
विचलो गिर काढी लियो, सरायो हो घणी करी किलोल ।
—जयवांणी

उ०—२ ओळग थारै विचलै वीरै ने भेज, वारी घण वारी ओ हजा, चतर चोमासै, ओ राजन, घर बसो जी, म्हारा राज । विचलै वीरै के गोद भड़ला री जात, वारी घण वारी ओ हजा, गठजोड़ै मे ओ जात उतारसो जी, म्हांरा राज । —लो. गी.

उ०—३ हाली हाली मोरयां विचली लाल, कोई, काना केरा हाल्या वाळी-भूंगणा, ए मोरी मइया । हाल्या हाल्या छाती पन्ना-हार, कोई, पायलड़ी तौ खुड़की बिछिया बाजिया, ए मोरी मइयां ।
—लो. गी.

उ०—४ विचलो वात छै—देवड़ै विजै मूजा नै मारनै मूजा री वगी ऊपर साथ मेलियो, उठै मालो मूजा रो मरायो, वसी सारी लूटी । —नैणसी

विचलो-वासो—देखो 'विचलो-वासो' (रू. भे.)

उ० –भेला मिली सजन नै चाल्या, सौड़ो मांय जोड़ो रे । **विचलो-वासो** विचमैं लैरायो, गावड हुवै छै दोरी रे । —जयवाणी

विचवला, विचवल्ला–स. स्त्री.—मध्यस्थता ।

उ०—वीरम तो जोईया विचै, भ्यामै गिणमल्ला, मावज जांणो साकड़ै घड कूअर घला । पला विढ़ाता पालतां-दिन कढता 'दला', वे दला अळगा रहा, करता विचवल्ला । —वी. मा.

विचवाळो–वि.—बीच बचाव करने वाला ।

उ०—इतै **विचवाळो** सूर अपाल, मिणधर आयो रावळ माल । सतोखै वातां वागां साय, जुदा दळ कीधा बेहूं जाय । —गो. रू.

२ बीच का, मध्य का, मध्यस्थ ।

सं. पु.—मध्यस्थता ।

उ० —तरै भाटी कल्याणदासजी कयो थे महाराज रा कांमदार छो नै भडारी रूपचदजी रा बेटा छो सो मेड़तियो बदळै थांनु कोइ मारां नही । इतरै धाधळ गोयदासजी आयनै कयो भडारी रतन चदजी **विचवाळो** करै छै ने स्रोजी रो निसांण छै तरै भाटियां नूं लोथ मगाय दीनी । —रा. वं. वि.

विचा—देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—'सैर' रा करारा वचन 'कुसलो' सुणे, अवनीमो 'पाल' वीरदां उजाळो । वादळां दळा नागोरा **वीचा** सु, अरक जीऊ भळकियो 'हरा' वाळो ।

—सैरसिघ मेड़तिया और कुसळसिघ चांपावत रो गीत

विचार–स. पु. [सं. विचार:] १ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श करने, सोचने या सोच कर निश्चित करने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ पिंडत वेद पुरान कं, वाचं करै विचार । 'हरीया' औरां प्रकलि दै, आप न सुधि बुधि सार । —अनुभववांणी

उ०—२ राजां विचार करण लागो—आज धनतेरस है अर काले रूपचवदस । आ मूनम (असाढ सुद नम) गई तो उणनै परणियां नै पूरा तीन बरस व्हिया अर चौथो बरस लागग्यो ।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ गाम वाळां मिळनै विचार कियो—मास्टर परदेसी पछी-आपणां गाम मे आयो है, कुण तो इणरै पीसैला अर कुण इणरै पोवैला । —अमरचूंनड़ी

२ मन में उठने वाली भावना, ख्याल, इरादा ।

उ० सावण जळहर गाज सुण, खीजै उर धर खार । जग सूं उलटा जाणणा, वाघा तणा विचार । —बां. दा.

मुहा.—विचार में पडणो=चिन्ता मे पड़ना, चिन्तायुक्त होना ।

३ किसी मुकदमे की सुनवाई करने की क्रिया या सुनाई करने के बाद किया जाने वाला फैसला या निर्णय ।

४ विचरने, घूमने या फिरने की क्रिया या भाव ।

५ ज्ञान ।

उ०—१ वहि वहि मूवा मानवी, करि करि लोकाचार । भेद न पायो भगति को, हरीया विना विचार । —अनुभववाणी

उ०—२ मन तै ऊंच न नीच गिन, तन तै लोकाचार । हरीया तन मन मिट गई, पाया ब्रम विचार । —अनुभववाणी

६ ध्यान देने की क्रिया या भाव, अमल करने की क्रिया या भाव ।

उ०—भतीजौ उण नै समझाई—इण में आप री की चूक कोनीं ।

ग्रोळग में की भूल ई व्है जावै तौ भगवान उरा माथै की बिचार नीं करै। —फुलवाड़ी

७ निर्माण बनावट, रचना।

उ०—............राज लोक मिरणगार। व्यावै प्रस्तावै चतुर, बणियौ भलौ बिचार। —रा. सा. सं.

८ निर्णय, फैसला।

९ निश्चय, सकल्प।

उ०—जनवासा में सुख सुविधा रौ पूरौ इंतजाम हो। म्हैं स्नान ध्यान सू निपटनै कपड़ा पलटिया ग्रर थोड़ी ताळ ग्राराम करण रौ बिचार कियौ। कारण कै लगन गोधूळिक हो ग्रर उण बखत उठै म्हनै हाजर रैवणौ हो। —ग्रमरचूनड़ी

१० सन्देह, शका हिचकिचाहट।

रू. भे.—बिचार, बिचारि, बीचार, वचार, विचाक, विचारौ, विच्चार।

बिचारक–वि. [सं. विचारक.] १ विचार करने वाला।

२ विचरने वाला, घूमने वाला।

३ ध्यान देने वाला, ग्रमल करने वाला।

उ०—कळा तिमंगळ किता, वरण गुण दोस बिचारक। पर्वे मिखर इम गुपत, किता गुण ग्रौगुण कारक। —रा. रू.

४ निर्माण करने वाला, रचनाकर्त्ता।

५ निर्णय या फैसला करने वाला, न्यायकर्त्ता।

६ बुद्धिमान, विद्वान।

७ निश्चय या सकल्प करने वाला।

८ शका या हिचकिचाहट करने वाला, सन्देहकर्त्ता।

बिचारकरता–वि. [सं. विचारकर्त्ता] १ वह जो विचार करता हो, सोचने-विचारने वाला।

२ न्यायालय मे न्याय करने वाला, न्यायाधीश।

बिचारग्य–वि. [स विचारज्ञ] १ जो विचार करने मे निपुण हो।

२ ग्रभियोग ग्रादि की सुनवाई कर निपटारा करने वाला।

बिचारचतुर–वि.—जो विचार करने में निपुण हो, बुद्धिमान।

उ०—१ प्रजानइ सुखकारीउ, माइ पिता समान। बिचारचतुर डाहु भनु ए, दिइ यथोचित दान। —नळदवदती रास

उ०—२ बिचारचतुर डाहा भला, डाहा गुणवत रे। भवितव्यता तेहनइ नवइ, जे हुइ बलवत। —नळदवदती रास

बिचारणीय–वि. [स] जो विचार करने योग्य हो।

बिचारणौ, बिचारबौ–क्रि. स —१ किसी बात या विषय पर कुछ बिचार-विमर्श करना, सोचना या सोचकर निश्चित करना।

उ०—१ हियै होळी हुवै दीध दुख हजारां, बिचारै नित मुख सूं वाखाणै। सूरपण "जसा" महराज रो जगत सिर, जिसौ है तिसौ ग्रवरग जाणै। —नरहरदास बारहठ

उ०—२ वीर महाबळ धीर उर, सूरम सूरत धार। ग्रावौ ग्रादर ऊठियौ, भावौ सीस बिचार। —रा. रू.

उ०—३ खारी में सोगरा ग्रर राब घरनै वौ हाळियां सारू भातो ले जावण नै त्यार व्हियौ उण वगत दूजोड़ौ कुत्तौ खारी में मूंडौ घालण साल जुगत बिचारण लागौ। —फुलवाड़ी

उ०—४ ठकरांणी तौ ग्रा इज चावती ही। ठाकर नै वत्ता खरावण साल वळै पूछ्यौ—कौल दोरौ है, राज सूं निभैला नीं। पछै पलटणा बिचै ग्रवारूं पाछौ बिचार कर लिरावौ।

—फुलवाड़ी

२ किसी मुकदमें की सुनवाई करना या सुनवाई करने के बाद फैसला या निर्णय करना।

३ समझना, सोचना-समझना।

उ०—१ ग्रकबर ग्रगम ग्रगाध गह, तै रहिया ग्रजतग्र। वाचै त्यूं ही बिचारियौ, कमधं साचं मग्र। —रा. रू.

उ०—२ चिहुं पखि दल मांडी काइ हो राउ छांडी, हरखि हसीय नारी बोल बोलइ बिचारी। —मालिसूरि

४ ध्यान देना, ग्रमल करना।

उ०—१ ग्रातम भाई जीव सब, एक पेट परिवार। दादू मूळ बिचारियै, तौ दूजा कौन गवार। —दादूवांणी

उ०—२ थें तौ म्हारै दुख री परवा नी करौ, पण म्हनै तौ थांरौ भलो-भूडौ बिचारणौ ई पड़ै। म्हारौ कैणौ मानौ, गंगाजी पाळा मत जावौ, नामी बळदा री कोई गाडी भाडै करलौ। – फुलवाड़ी

उ०—३ ग्रोरगसा पातसाह ग्रालम कूं चितारै, ग्रकबर कै त्रास की चिता ना बिचारै। साह ग्रवरग कै पास या समैं ग्रावै, सो तौ मनसब रीझ इनाम मनवछया पावै। —रा. रू.

५ निर्माण करना, रचना करना।

६ निश्चय करना, सकल्प करना।

उ०—१ फजल सेख खुलतौ फज्जर, ग्रसुर घसं लागौ ग्रति ग्रातुर। ग्रम न खड़े रिणछोड़ उताळौ, चूरण खळां बिचारै चाळौ।

—रा. रू.

उ०—२ थापना मन माहि बिचारी, साध रहै याकै पूजारी। ग्रपणै पूजा कछुव न ग्रावै, साध पथ कै गुरू कहावै।

—मेहोजी गोदारौ थापन

७ सन्देह करना, शंका करना।

उ०—राउ भणइ नइं किसउ पवारउ, हिव तुम्हि मइ सु धरि

पाउधारो। राजु तुम्हारं पूत तुम्हारउ, मजीउ गंग किसुं विचारउ
—सालिभद्र सूरि

८ चिन्तन करना, मनन करना।

उ०—जळ थळ महीयल पेखतां, संसार सुधारै, ब्रह्मायांनी सो वडा, जो ब्रह्म विचारै। कुदरती किरतार की करणी बळिहारै, रिजक पांणी हयात मोत, उस भला सारै। —केसोदास गाडण

९ अनुसन्धान करना, खोज करना।

उ०—सतगुर का सिख जांणि, विचारै ग्यांन कूं। तन मन सौंपै सीस, धरै उर ध्यान कूं —अनुभववांणी

१० सोचना।

उ०—१ हमैं कंवरसी मोहलां में गयौ। सो मन न लागै, रात दिन भरमल मैं जीव वसै। तद वीठू रावजी नुं कही, जो सांवण री तीज रौ कोल कर आयौ छै, सो उठै गयौ रहसी। जिणसुं जतन विचारणौ हुवै सु विचारौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुं पण जांणूं छूं जो बीजौ तो मं सुं पोहचा नाया। तद श्रो घाट विचारीयौ छै, जो आंधी छोहरी घर सुं काढसा, उण नुं मारसां। सो हुं सरब जांणूं छूं।—कुवरसी सांखला री वारता।

विचारणहार, हारौ (हारी), विचारणियौ—वि०।

विचारिश्रोडो, विचारियोड़ौ, विचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचारीजणौ, विचारीजबौ—कर्म वा०।

विचारणौ, विचारबौ, वीचारणौ, बीचारबौ, वचारणौ, वचारबौ —रू० भे०

विचारमांन, **विचारवांन**—वि. [स. विचारवान्] जिसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो।

रू. भे.—विचारमांन, विचारवान।

विचारसकति, विचारसकती, **विचारसक्ति**, **विचारसगति**, **विचारसगती**—स. स्त्री. [स. विचारशक्ति] भला-बुरा पहचानने व सोचने-विचारने की शक्ति, बुद्धि।

विचारसासतर, विचारसास्त्र—स. पु. [सं. विचारशास्त्र] मीमांसा शास्त्र या मीमांसा दर्शन।

विचारसील—वि [सं. विचारशील] जिसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो, विचारवान।

विचारसीलता—स. स्त्री. [स. विचारशील+ता प्र.] विचारशील या विचारवान् होने का भाव, बुद्धिमता, अक्लमंदी।

विचारस्थळ—सं. पु. [सं. विचारस्थल] १ वह स्थान जहां किसी विषय पर विचार किया जा रहा हो।

२ न्यायालय।

विचाराध्यक्ष—सं. पु. [सं. विचारः+अध्यक्ष] १ वह प्रमुख व्यक्ति जो किसी विषय पर विचार करता हो।

२ न्यायालय में किसी विषय पर विचार करने वाला प्रमुख व्यक्ति, न्यायाधीश।

विचारालय—सं. पु. [सं. विचारः+आलय] १ विचार किया जाने वाला स्थान।

२ न्यायालय।

(मि.—'विचारस्थळ'।)

विचारि—देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—१ निमुणि नारि विचारि ठा पयसियइ, प्रीय तणी तडि कडनिगि वयसियइ, सिरि पडिइं भड नइ घड चाउतइं, सुहड कोडि हणी नुझ राउतिइं। —सालिसूरि

उ०—२ पहिउलउ बेटउ करमदोसि बालपणि विवनउ, विचित्र-वीरयु बीजउ कुमार बहुगुणसंपन्नउ। राउ पहूतउ सरगलोकि गंगेयकुमारि, नउ लघु बंधव ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि।
—सालिभद्र सूरि

विचारिका—सं स्त्री —दासी, नौकरानी।

विचारित—वि — १ जिस पर विचार किया जा चुका हो।

२ जो अभी विचाराधीन हो।

विचारियोड़ौ—भू का. कृ.—१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श किया हुआ, सोचा हुआ या सोच कर निश्चित किया हुआ. २ किसी मुकदमें की सुनवाई किया हुआ या सुनवाई करने के बाद फंसला या निर्णय किया हुआ. ३ समझा हुआ. ४ ध्यान दिया हुआ, अमल किया हुआ. ५ निर्माण किया हुआ, रचना किया हुआ. ६ निश्चय किया हुआ, सकल्प किया हुआ. ७ सन्देह किया हुआ, शंका किया हुआ. ८ अनुसन्धान किया हुआ, खोज किया हुआ. ९ सोचा हुआ. १० चिन्तन किया हुआ, मनन किया हुआ.

(स्त्री विचारियोड़ी)

विचारी—सं. पु [स. विचारिन्] १ कबंध राक्षस का एक पुत्र।

स. स्त्री.—२ जिस पर चलने के लिए बड़े बड़े मार्ग बने हों, पृथ्वी।

३ देखो 'बेचारो' (पु०)

विचारु—स. पु. [स.] १ श्री कृष्ण और रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक वासुदेव का पौत्र।

२ देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—पांचइ गाईय सुर सुरलोकि सुरवाट सिरु धूणाविया ए, महीयलें महिलीय करइ विचारु 'कवणु कीउ तपु द्रुपदिय'।
—सालिभद्र सूरि

बिचारी—१ देखो 'बेचारो' (रू. भे.)

उ०—१ नैनवा की चूक कन्हईया, मन बिचारो पाय रह्यो दुख। म्मोलाराज करै सो पावै, रै यो तो भगोलो न्याव कन्हईया। —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊबरै बचग्रा होगा टाळो देर हुवो भाषो, साथो सारो मेलणो सग्राम हेकै साथ। सोढो काज भपेटो भालाळै सताबी सूप्यो, बिचारी सु'रद्दा लोक बणो भ्रा विख्यात।—बादरदान दधवाडियो

उ०—३ हरीया पीर परायती, तन तैं दई लगाय। वेद बिचारा क्या करै, बिन भुगत्या नही जाय। —ग्रनुभववाणी

(स्त्री. बिचारी)

बिचाळ, बिचाल, बिचाळा, बिचाळि, बिचाळी, बिचाळ्, बिचाळै, बिचाळं—देखो 'बिचं' (रू. भे.)

उ०—१ चक्री बिचाळ, रघुवर बिसाळ, जपै जकर, सुण भरथ गूर। हणमंत गह, इण गुण ग्रछेह, सेवा सुमन किनी कपेस। —र. रू.

उ०—२ बीजो निग्रह जुध्र जितू कोप करि नाखै 'बीदा' ग्रंस धरि घड़ा बिचाळ। दळ पुड़ तेण भ्राकरै भ्राहस, पनग कध टाळै पायाळ। —गेहो मीमण

उ०—३ माथो छाडि गयो'सुजा' गुन, तिमियो लोह तरणि रिणताळ। दामणि चमकि भमकितै दुजड़ै, वणीयो गूजर घड़ा बिचाळ। —मेतसी गाडण

उ०—४ चोथो प्रस्न रसाल रै, सुण 'केसो' स्वामी, भरी परिसदा बिचाल रै। —जयवाणी

उ०—५ परदेसे गया पाधरा रे सांभल्यउ जेय सुगाल। मागस सबल विण मूग्रा रे, मारग माहि बिचाल। —स. कु.

उ०—६ दावानल बलतो ग्रलहल नीकलै भ्राल, बहु ब्रक्ष सघन बन बलै पसु पखी बाल। किण हीक कारण नर ग्रायो ग्रगिन बिचाल, जिण नाम जलैं ग्रगि ग्रोल्हाये तत्काल। —ध. व ग्र.

उ०—७ पतिसाह फउज फूटंति पाळि, ग्रहमद 'जइत' गाजइ बिचाळि। ग्रंबहर जइत वरसइ ग्रवार, धुड़ुकिया मोर मुहि खग धार। —रा. ज. सी.

उ०—८ भागा सूर न भजई, भागा गुर मैं गाळि। इणीया एकलमलड़ो, दोउ दळा बिचाळि। —ग्रनुभववाणी

उ०—९ मत्ता मते गुमांन करि. हम ही जळ का जीव। तम ऊगण हम ग्राथवण, इसी बिचाळो पीव। —ग्रनुभववाणी

उ०—१० रिळिया रिणताळां, कट किरमाळां, सीम भुजाळा सूंडाळां, चाले रत खाळां, तेण बिचाळां, पखणियाळा पोखतू। —भगतमाळ

उ०—१० पदमणी दिलोवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ, वेगमा घसै पड़दा बिचाळ। —वि. सं.

उ०—१२ 'मद' ऊपर 'माधड़ै' बळ, मूछां वाळो, 'बीरम' ग्रागळ बीरवर समसेर संभाळी। ऐकण घाव ऊडाड़ियो, गजड़ै त्रिहूंताळी, 'मद' पोढै मारको, रिणखेत बिचाळी। —बी. मा.

उ०—१३ ग्रति घल क्रोध दुहूं दळ ग्रांणे, जूटा खगा झडेहड जांणे। घग खग गजरि जांण घड़ियाळां, वागी फजर कनोज बिचाळां। —सू. प्र.

उ०—१४ तो 'केहर' कहिजै सताब, वाडक विगताळा। कूदि पड़ा गज कटहड़ां, चढि गोख बिचाळा। —सू. प्र.

उ०—१५ वात बिचाळै ग्राविया, ग्रासत खान दिवाण। फिर ग्रजमेर ग्रजीमदी, तिण बिच दयो कुराण। —रा रू.

उ०—१६ भूम 'वहतो' को जण भाळै, वाडवाण निभ्र समद बिचाळै। कमंध खड़ा ग्रागै दम कोमा, दाखै कथ निरदोगा दोमा। —रा. रू.

उ०—१७ हरीया नीको ना हरू, वदो लगो डराय। दोय बिचाळै जोवड़ो, करणी काय न ग्राय। —ग्रनुभववाणी

उ०—१८ तद कुंवर कही, म्है खरळा परणीया पछै तीज दोय बिचाळै गई। जितरै सारो साथ ग्राण पूहतो। तद फुरमावण लागा, म्हा खरळा परणिया पछै ग्रा तीसरी तीज छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—१९ तै ऊपरि पातिसाह ग्रकबर वासो कियो। बि फोजा कियां। मिरजै रै वासै ग्राप पातिसाह पधारिहा। मिरजो बिहूं फोजा बिचाळा ग्रर पातिसाह रा गोडा होइ नीसरियो। —द. वि.

बिचाळो—वि—१ मध्यस्थ।

स स्त्री—२ मध्यस्थता।

क्रि. वि'—बीच में से।

बिचि—सं. स्त्री [सं.] १ तरग, लहर।

२ कटि, कमर।

उ०—चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचग बिचि होण। मंदिर बोली मारुवी, जांणि भणक्की वीण —ढो. मा.

३ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ करि घड वेहड गरा केवियां, हाथू कै गळवाह हिचि। हंस चप हूंत बिछूटि हालियो, वाटियो मुरां विमांण बिचि। —लीकमदास खिड़ियो।

उ०—उपजै प्रेम मन उलसै, वाला लागै लछिवर। माहरै रिदै बिचि मिझिया, चरण तुहारा चक्रधर। —पी. ग्रं.

उ०—३ माहव एक मरद, देव कोई और न दीसं । लाख चौरासी जीव, परम दाढ़ां बिचि पीसं । —पी. ग्रं.

उ०—४ तुम मूं बिचि अंतर घणउ, किम करूं तोरी सेव । देव न दीधि पांखड़ी, पणि दिल महं तुं इक देव । —स. कु.

उ०—५ निम वंस वाळे नूर, करै महाजुध कूंभउत । वगडी धणी विराजिग्रो, सूर सभा बिचि सूर । —र. वचनिका

उ०—६ ऊभी सहु सखिए प्रसंसिता प्रति, भितारथी प्रौ मिळण क्रत । अटत सेज द्वार बिचि आहुटि, स्तुति दे हरि धरि समाखित । —वेलि.

रू. भे.—बिचि, बीचि, बिचो ।

बिचित, बिचित्त—वि. [सं.] १ अचेत, बेहोश ।

२ आनन्द-मग्न ।

उ०—रांम नांम सुख सागर भरीया, चाख्या चित बिचित ह्वय रहीया । चाखि चाखि मैं भया निहाला, पायु जे कोई पीयें पीयाला । —अनुभववाणी

३ देखो 'विचत्र' (रू. भे.)

उ०—वांका बिचित्त पाधोर वक्र, तांणइ कमाण पइतीसटक । आयासि पखि पाड़इ अभुल्ल, मांकड़ामुखल मुड़ा मुघुल्ल । —रा. ज. सी.

बिचित्र—वि. [सं.] १ कई प्रकार के रंगों या वर्णों वाला ।

२ अद्भुत, अनोखा, विलक्षण, विस्मयकारक ।

उ०—१ दूत तिहा एक आवियो, जाग वचन सुपवित्र । कर जोड़ी न्रप आगलें, मेल्हो लेख बिचित्र । —वि. कु.

उ०—२ जिनवर दीधी देसना, बिचित्र प्रकार ना भावो जी । आगार नै अणगार नो, चतुरा सुण्यो धरि चावो जी ।—जयवांणी

३ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—१ प्रजंक घोप तें अनोप रूप चूंप पार में, हुए बिछात सूळि लूब भूल फूल हार में । अनूप ताक गोख स्रीबिचित्र चित्र सूं अटा, घणूं उतंग अग जाणि स्यंग मेघ चो घटा । —रा. रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलामति तिण राजान कुंअर राजाउत माहे ठाकर रै च्यार पटरांणी छै । नाम सिणगार सुंदरी सोभाग सुंदरी, सरूप सुंदरी, मदन सुंदरी। माख्यात देवांगनां पदमणी बिचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसती रो अवतार बारह आभूखन विराजमान हुआ छै । —रा. सा. स

४ चतुर, बुद्धिमान, होशियार ।

उ०—मदिरंतरि किया खिणतरि, मिळिवा, बिचित्र सखिए समाव्रत । कीधं तिणि बीत्र हु सत्तक्रित, करण सु तसु रति संभ्रत । —वेलि.

स. पु.—१ रौच्य मुनि के कई पुत्रों में से एक पुत्र का नाम । (पुराण)

२ देवसावर्णि मनु के पुत्रों मे से एक पुत्र ।

३ महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष का एक राजा, जो क्रोधवश नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था ।

४ धर्मराज (यम) का एक लेखक ।

५ एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसके द्वारा किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है ।

६ मुसलमान, यवन ।

उ०—१ सेना सितर हजार सू, बिचित्र अमित्र बळवांन । कियो विदा रवि चं उदं, मुर्दं तहव्वरखांन । —रा. रू.

उ०—२ इण पर तहवर खांन पछायो, बिचित्र हुवो लड़तां रस वायो । मिर हिंदवाण तणै रीसायो, 'औरंग' पीठ लगे हिज आयो । —रा. रू.

उ०—३ वात हुई ग्रीखम बौळाई, ऊपर धुर बरखा रत आई । अमतखान उर थयो अचींनो, बिचित्रां तणो सोच सुण वीतो । —रा. रू.

उ०—४ बिचित्रां आदर दाख बमेक, आपं दोय तेग अनै अस एक ईखे अस सुद्रव चीज अथाळ, 'मालावत' लोभ धरं जगमाल । —गो. रू.

उ०—५ वेसै बिचित्र सिंदूर अभ, कूंडी कपाळ के छाज कभ्र । कट्टी करगि वाचइ कुरांण, मुसकीण मुलां के मुसळमांण । —रा. ज. सी.

रू. भे.—बिचित्र, वचत, वचत्र, विचत्र, विचित, विचित्त, विचित्रांण, विचित्रायळ, विच्यत्रि ।

बिचित्रता—सं. स्त्री. [स. विचित्र+ता, प्र.] विचित्र होने की अवस्था या भाव ।

उ०—मित्रता मिळापी मेळ प्रीति की पवित्रता त्यौं, त्रिविध बिचित्रता विधांन वड्डन कै । रहन अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधो, कहण सुणण कथा यथा तौर तन कै । —ऊ. का.

रू. भे—विचित्रता ।

बिचित्रवीरज, बिचित्रवीरय, बिचित्रवीरयु, बिचित्रवीरय्य—स. पु. [सं. विचित्रवीर्य] १ चंद्रवंशी राजा शांतनु का सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र जिसका विवाह काशीराज की राजकुमारियां अंबिका एवं अंबालिका के साथ हुआ था । (महाभारत)

उ०—१ पहिलउ बेटउ करमदोसि बालपणि विवनउ, बिचित्रविरयु बीजउ कुमार बहुगुणसंपन्नउ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अयानदग् विदुह नांम् नामि जि मगीयउ, व्हइ मीणउ भुग विचित्रवीरजु पहु राजि प्रतीठिउ। —सालिभद्र सूरि

वि. वि.—यह चित्रांगद का कनिष्ठ भ्राता था। चित्रांगद गंधर्व युद्ध में मारा गया, इसलिए भीष्म ने इसे राजगद्दी पर बैठाया। भीष्म ने काशीराज की कन्याएँ अंबा, अंबिका एवं अंबालिका को स्वयंवर में जीत लिया एवं उनका विवाह इससे करना चाहा। किन्तु उनमें से अंबा ने इससे विवाह करने से इन्कार कर दिया। शेष दोनों राज-कुमारियों अंबिका एवं अंबालिका के साथ इसका विवाह हो गया। असंयमपूर्ण जीवन के कारण, यह राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, एवं अल्पवय में ही अनपत्य अवस्था में इसकी मृत्यु हुई। इसकी मृत्युपरान्त भीष्म ने अंबिका एवं अंबालिका को नियोग-पद्धति से संतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी। तदनुसार सत्यवती के कौमार्यावस्था के पुत्र कृष्णद्वैपायन (व्यास) से अंबिका एवं अंबालिका के क्रमशः धृतराष्ट्र एवं पाण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुए और अंबिका की दासी से विदुर उत्पन्न हुआ। धृतराष्ट्र जन्मांध एवं पाण्डु का रंग पीला था।

२ एक शिव भक्त, जो शिव की उपासना के कारण जीवनमुक्त हुआ था।

३ वीर भद्र नामक एक शिवगण, जिसने दक्षयज्ञ का विध्वंसन किया था।

वि. वि.—यह चित्रांगद(गंधर्व)का पुत्र था जो पूर्वजन्म में एक विधवा ब्राह्मणी तथा चाण्डाल का पुत्र था, पर अनायास शिवरात्रि व्रत के करने से चित्रांगद का पुत्र हुआ। जन्मान्तर में शिवसायुज्य को प्राप्त हो कर यही शिवगण वीरभद्र हुआ। (यह शांतनु के पहले की बात है।)

विचित्रसाळा-स. स्त्री. [सं. विचित्रशाला] जहां अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थों का संग्रह हो, अजायबघर।

विचित्रांण—देखो 'विचित्र' (६) (रू. भे.)

उ०—कामधज्ज गयज्जां कारणां, काळा भुजा मारि कारण। विचित्राण धणी उस विग्रहै, गड़ियो किर पड़तो गयण।

—रा रू

उ०—२ विचित्रांण निवड़ घड़ महण वेळ, मुरधरा हुय नजर मेळ। —रा. रू.

विचित्रा-स. स्त्री.—भैरव राग की एक रागिनी। (संगीत)

विचित्रायळ—देखो 'विचित्र' (६) (रू. भे.)

उ०—कलमी मस देवळ देण कीयूं, लोवड़ी प्रतपाळ यूं गावै लियूं। विचित्रायळ लूटत बार वळा, रत माझळ म्है घन बाळ रळा।

—पा. प्र.

विचित्रित-वि. [सं.] १ विभिन्न प्रकार के रंगों से वचित्रित, रंग-बिरंगा।

२ अनोखा, अद्भुत।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य, आरण्य-रुदन वत भी अयोग्य। प्रिय जाट पुत्रि वत प्रस्नपेस, पितु कति पपीलिका बिल प्रवेस। —ऊ. का.

रू. भे.—विचित्रित

विची—१ देखो 'विचि' (रू. भे.)

२ देखो 'बीच' (रू. भे.)

विचेत—देखो 'अचेत' (रू. भे.)

विचेतन-वि. [सं.] १ जिसमें चेतना न हो, विवेकहीन, बेहोश।

२ जिसमें जीव न हो, जीवरहित, मृत।

विचेटियौ—देखो 'बिचेटियौ' (रू. भे.)

विचेतस-स. पु. [सं.] भव्य देवों में से एक

विचेरण-क्रि. वि.—मध्य में, बीच में।

उ०—क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर। जनहरिया माळा फिरै, विनां विचेरण मेर —अनुभववांणी

विचेस्ट-वि. [सं. विचेष्ट] जो किसी प्रकार की चेष्टा न करता हो, निश्चेष्ट।

विचै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ अंबखास विचै बांणास आछटै, कहर 'पदम' घमजगर करि। 'मोहण'-मरण किया मारहथ, अेकण घाय छ-टूक अरि।

—पदमसिंघ करणसिंघोत राठौड़ रौ गीत

उ०—२ दिन ३ गढ नूं ढोवौ हुवौ। पछै गढ माहिला रा प्रांण छूटा। पछै रा. गोपाळदास, रा. वीठळदास, रा. नाहरखान विचै रावळ सबळसिंघ, भाटी रामसिंघ पवाइणोत फेर नै वात कीवी।

—नैणसी

उ०—३ नगार पण मोटौ हुवौ। वरस २० तथा २२ मांहै हुवौ। साहबी संभाही। तरै माथ करनै रावळ नै या विचै मीर नदी छै, तठै आयौ। पैली कांनी सूं रावळ मांणस हजार सात-आठ सूं आयौ। —नैणसी

उ०—४ मवार हुवै वळै वेढ हुवै। यूं बारै बरस वेढ कीवी। आसापुरा देवी विचै दो नै लीवी, तिण सूं दिन दिन रावळ नूं हार आवती जाइ। —नैणसी

उ०—५ विचत्रां रज धू घर विचै, ऊलां कोध प्रमांण। बहुरंगी चौथा लवी, 'अवरगी' नीसांण। —रा. रू.

उ०—६ गावड़ जांणें खरादी खराद उतारी छै। कमळ नाळसी बांहां लाल चूड़ौ वरणियौ छै। बिचै सोगन चूड़ी विराज रही छै। —रा. सा. सं.

मुहा.—बिचै देणौ=(१) शपथ लेना, सोगन लेना।
(२) मध्यस्थ करना।

बिच्चखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)
उ०—वीर बिच्चखण कीत तणो वर, ढाहण खाग ग्ररिदां दूकौ। 'नाथ' तणौ सुरतेस नमैं नर, चित ठीक नहीं कुळ रीत न चूकौ। —सूरतसिंह चहुवांण रौ गीत

बिच्चार—देखो 'विचार' (रू. भे.)
उ०—पातसाह ग्राळोज, मन्न बिच्चार विमासै। बळ छत्र दळ दखवै, पांण विसाण कळासै। —गु रू. बं.

बिच्छवांन—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)
उ०—सुरंग रंगभोमि में तरंग है न तांन की, ढमक ढोलकी न त्यूं घमक घुघरांन की। छमक बिच्छवांन की दमंक ना दरीन की, भमंक जेहरांन की चमक नां चुरीन की। —ऊ. का.

बिच्छाय, बिच्छाया—सं. पु. [सं. वि.+छाया] १ पक्षियों की छाया।
[सं. वि.=विगत+छाया] २ वह जिसकी छाया नहीं पड़ती हो, भूत, प्रेत, देवता, दानव ग्रादि।
वि [सं. वि=रहित+छाया=कान्ति] कान्तिहीन, चमकरहित।

बिच्छिग्र—सं. पु. [सं. वृश्चिक] बिच्छू।

बिच्छिण, बिच्छिण्ण—वि. [सं. विस्तीर्ण] १ फैला हुग्रा, विस्तृत।
२ देखो 'विच्छिन्न' (रू. भे.)

बिच्छित्ति, बिच्छित्ति—सं. स्त्री. [सं. विच्छित्तिः] १ काट कर ग्रलग करने की क्रिया या भाव, टुकड़े करने की क्रिया या भाव।
२ कविता में या वेशभूषा ग्रादि में होने वाली लापरवाही या बेढंगापन।
३ स्त्री द्वारा थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा का साहित्य में एक भाव।
४ साहित्य का चमत्कार।
५ एक स्वाभाविक ग्रलंकार विशेष जिसके ग्रनुसार माला, वस्त्राभूषणादि के ग्रस्तव्यस्त धारण करने में सौन्दर्यवृद्धि ग्रौर मतान्तर में कान्ति के पोषक किंचित् रचना-कलाप।
रू. भे.—बिच्छित्ति, बिच्छित्ति।

बिच्छिन, बिच्छिन्न—वि. [सं. विछिन्न] १ जुदा, पृथक, ग्रलग।
२ जिसका विच्छेद हुग्रा हो।
३ समाप्त किया हुग्रा।

बिच्छु—१ देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)
२ देखो 'बिछु' (रू. भे.)

बिच्छुड़णौ, बिच्छुड़बौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)
उ०—पड़ी बिच्छुड़ी दाड़मी जांणि पक्की, दिखै ग्रारपारां हजारां दरक्की। वर्घ ग्रग्र सूरां 'ग्रभौ' लग्ग वाहै, सुतौ बाह सी बाह चंडी सराहै। —रा रू.

बिच्छुड़णहार, हारौ (हारी), बिच्छुड़णियौ—वि०।
बिच्छुड़ियोड़ौ, बिच्छुड़ियोड़ौ, बिच्छुड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिच्छुड़ीजणौ, बिच्छुड़ीजबौ—भाव वा०।

बिच्छुड़ियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिच्छुड़ियोड़ी)

बिच्छुड़ौ—देखो 'बिच्छुडौ' (रू. भे.)

बिच्छुड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. बिच्छुड़ी)

बिच्छू—देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)

बिच्छूड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू. भे.)
(स्त्री बिच्छूड़ी)

बिच्छेद—सं. पु. [सं. विच्छेदः] १ छेद कर या काट कर ग्रलग करने की क्रिया।
२ बीच में ही किसी क्रम के टूट जाने की क्रिया या भाव।
३ नाते या रिश्तों को तोड़ने की क्रिया।
४ किसी प्रकार ग्रलग या टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया।
५ ग्रध्याय, परिच्छेद या कविता में यति।
रू. भे.—विच्छेद, बिछेद, विछेद।

बिच्छेदक—वि. [सं.] १ काट कर ग्रलग करने वाला।
२ नाते-रिश्ते तोड़ने वाला।
३ विभाग करने वाला।

बिच्छेदन—सं. पु. [सं.] काट कर या छेद कर ग्रलग करने की क्रिया।
रू. भे.—विच्छेदन।

बिच्छेदणौ बिच्छेदबौ—क्रि. स. —१ छेद कर या काट कर ग्रलग करना।
२ नाते-रिश्ते तोड़ना।
३ किसी प्रकार ग्रलग-ग्रलग या टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना।
४ छोड़ना, मुक्त करना।
५ खोलना।
६ बीच में ही किसी क्रम को तोड़ देना।

बिच्छेदणहार, हारौ (हारी), बिच्छेदणियौ—वि०।
बिच्छेदियोड़ौ, बिच्छेदियोड़ौ, बिच्छेदयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिच्छेदीजणौ, बिच्छेदीजबौ—कर्म वा०।
बिच्छेदणौ, बिच्छेदबौ, बिछेदणौ, बिछेदबौ, बच्छेदणौ, बच्छेदबौ, बछेदणौ, बछेदबौ, बिछेदणौ, बिछेदबौ—रू० भे०।

बिच्छेदन—देखो 'विच्छेदण' (रू. भे.)

बिच्छेदियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छेद कर या काट कर ग्रलग किया

हुआ. २ नाते-रिश्ते तोड़ा हुआ. ३ किसी प्रकार अलग-अलग या टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, विभक्त किया हुआ. ४ छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ. ५ खोला हुआ. ६ बीच में ही किसी क्रम को तोड़ा हुआ।

(स्त्री. बिच्छेदियोड़ी)

बिच्छेदी—वि. [सं बिच्छेदिन्] छेद कर या काट कर अलग करने वाला।

बिच्छोड़णो, बिच्छोड़बो—देखो 'बिछोड़णो, बिछोड़बो' (रू. भे.)

बिच्छोड़णहार, हारो (हारी), बिच्छोड़णियो—वि०।

बिच्छोड़ियोड़ो, बिच्छोड़ियोड़ो, बिच्छोड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिच्छोड़ीजणो, बिच्छोड़ीजबो—कर्म वा०।

बिच्छोड़ियोड़ो—देखो 'बिछोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिच्छोड़ियोड़ी)

बिच्छोटणो, बिच्छोटबो—देखो 'बिछोड़णो, बिछोड़बो' (रू. भे.)

बिच्छोटणहार, हारो (हारी), बिच्छोटणियो—वि०।

बिच्छोटियोड़ो, बिच्छोटियोड़ो, बिच्छोट्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिच्छोटीजणो, बिच्छोटीजबो—कर्म वा०।

बिच्छोटियोड़ो—देखो 'बिछोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिच्छोटियोड़ी)

बिच्छोह—देखो 'बिछोह' (रू. भे.)

उ०—मित्र मनइ मिनह नी धरणी हुतउ अधिकउ मोह। कुणहि कु बोलइ माहोमाहि नीधउ वाग बिच्छोह। —हीराणंद सूरि

बिच्छोहणो, बिच्छोहबो—देखो 'बिछोहणो, बिछोहबो' (रू. भे.)

उ०—घरा मोर मेंगा मुरा जोर घूजै, मरै वाग बिच्छोहिया भाग मूजै। हमल्लां घसा सेस का सीस हल्लै, दिसा मग्र बाजू सकाजू बहल्लै। —रा. रू.

बिच्छोहणहार, हारो (हारी), बिच्छोहणियो—वि०।

बिच्छोहियोड़ो, बिच्छोहियोड़ो, बिच्छोह्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिच्छोहीजणो, बिच्छोहीजबो—कर्म वा०।

बिच्छोहियोड़ो—देखो 'बिछोहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिच्छोहियोड़ी)

बिच्यित्र—देखो 'बिचित्र' (रू. भे.)

उ०—पाड़ारी मामू तणु सणगार वरणवू, पणि कसिउ एक छि जे सामू तणु नणगार? करि कंकण सोवनमि चूडी, रूपइ रंभा पणि रूयडी, चित्र बिच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउलिहार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार,……। —व. स.

बिछणो, बिछंबो—क्रि स.—१ मारना, संहार करना।

उ०—जद जावं रे जद जावे, कठ सेस गयो समझावं। रे मीत नचित हुवो कपराजित, याद हरी नह आवं। तोरो वीर बिछंबै तोरा, या मत मो हिव यावे।—र० रू०

२—देखो 'बिछोड़णो, बिछोड़बो'—रू. भे.

बिछणहार, हारो (हारी), बिछंणियो—वि०।

बिछियोड़ो, बिछियोड़ो, बिछंयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिछंणीजणो, बिछंणीजबो—कर्म वा०।

बिछंयोड़ो—भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ।

२ देखो 'बिछोड़ियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री बिछंयोड़ी)

बिछड़णो, बिछड़बो—देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ मनुष्य मिनखा सहज घर पाया, बिछड़्या हंस मिळाया। उलटा सहज आपमे मिळाया, पद निरवाणी पाया।

—लोहरिरामजी महाराज

उ०—२ तठा उपरात करिनै राजान सिलामति सिकारी ठौड़ पहाड़ा री पायनी वना रा भंगार मिळिनै रहिया छै, जाणै घणां दिना रा बिछड़ै मीत मिळै तिण भाति रा रूंख मिळि नै रहिया छै —रा. सा. सं.

उ०—३ सुंदर आठै मुळकती, ऊभी महला रै माह। इण उणियारै नोयणां, निरख्यो नवला नाह। रहो रहो बलहा बिछड़ो मत इण बार। —जयवाणी

बिछड़णहार हारो (हारी), बिछड़णियो—वि०।

बिछड़ियोड़ो, बिछड़ियोड़ो, बिछड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिछड़ीजणो, बिछड़ीजबो—भाव वा०।

बिछड़ाणो, बिछड़ाबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू भे.)

बिछड़ाणहार, हारो (हारी), बिछड़ाणियो—वि०।

बिछड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिछड़ाईजणो, बिछड़ाईजबो—कर्म वा०।

बिछड़ायोड़ो—देखो बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछड़ायोड़ी)

बिछड़ावणो, बिछड़ावबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

बिछड़ावणहार, हारो (हारी), बिछड़ावणियो—वि०।

बिछड़ावियोड़ो, बिछड़ावियोड़ो, बिछड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिछड़ावीजणो, बिछड़ावीजबो—कर्म वा०।

बिछड़ावियोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिछड़ावियोड़ी)

बिछड़ियोड़ो—देखो 'बिछुड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विछड़ियोड़ी)

विछटणो, विछटबो—१ देखो 'विछूटणो, विछूटबो' (रू. भे.)

उ०—प्रजामेळ जमदळ प्रगा, विछट्यो विसमी वार। कोधो नारायण कहै, पुत्तर हेत पुकार। —ह. र.

२ देखो 'विछुड़णो, विछुड़बो' (रू. भे.)

उ०—प्रैसें छाया विरख सुं, हरीया रही लपटि। जैसें माया ब्रह्म सुं, कैसें जाय विछटि। —अनुभववांणी

विछटणहार, हारौ (हारी), विछटणियौ—वि०।
विछटिग्रोड़ो, विछटियोड़ौ, विछट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विछटीजणो, विछटीजबो—भाव वा०।

विछटियोड़ौ—१ देखो 'विछूटियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'विछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछटियोड़ी)

विछट्टणो, विछट्टबो—१ देखो 'विछूटणो, विछूटबो' (रू. भे.)

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडा भालोड करंत भंभार। एकूकी मूठ विछट्ट असख, परै सर फूटै कोरी पंख।

—गु. रू. ब.

२ देखो 'विछुडणो, विछुड़बो' (रू. भे)

विछट्टणहार, हारौ (हारी), विछट्टणियौ—वि०।
विछट्टिग्रोड़ो, विछट्टियोड़ौ, विछट्टयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विछट्टीजणो, विछट्टीजबो—भाव वा०।

विछट्टियोड़ौ—१ देखो 'विछूटियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'विछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछट्टियोड़ी)

विछण—सं. पु.—दूध दूहते समय, दूध देने वाले पशु के स्तनों को धोने के लिए, दूध दूहने के बर्तन में, ले जाया जाने वाला पानी।

रू. भे.—विछरण।

विछणो, विछबो—देखो 'विछणो, विछबो' (रू. भे.)

उ०—हाथ पग मिटी सूं उजळा कीजै छै। कुरळा कीजै छै। सिझ्यावांदण रो वखत हुवो छै, वनाती भासण विछै छै। पीतळ रा भरत रा धूपिया आगै आंण मेलजै छै। —रा. सा सं.

विछणहार, हारौ (हारी), विछणियौ—वि०।
विछिग्रोड़ो, विछियोड़ौ, विछयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विछीजणो, विछीजबो—भाव वा०।

विछरणो, विछरबो—१ देखो 'विछुड़णो, विछुड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ सखि भारति चिंता अपहरइ, विछरया वाल्हेसर मेलइ रे। रोग सोग गमाड़इ कीनर, दुसमणि नइ ठेलइ रे। —स. कु.

उ०—२ काहै कूं अंखियां लगाई नटनायक। समज मिजाल रूप मन मोह्यो, मिळी विछरं दुखदायक। —रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'विचरणो, विचरबो' (रू. भे)

३ गमन करना, चलना-फिरना।

उ०—१ खंभ गुरु जग देव भेव कोई विरळा पावै, रहै सरण जो जीव बहुर भव जळ नही आवै। विस्णु रूप अवतार परगट पोहमी में आए, सतजुग विछरं जीव उनकूं ग्यांन चिताए।

—कोल्हजी चारण

विछरणहार, हारौ (हारी), विछरणियौ—वि०।
विछरिग्रोड़ो, विछरियोड़ौ, विछरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विछरीजणो, विछरीजबो—भाव वा०।

विछरियोड़ौ—१ देखो 'विछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछरियोड़ी)

विछळणो, विछळबो—क्रि. स.—१ साफ करना, धोना।

२ देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू. भे.)

विछळणहार, हारौ (हारी), विछळणियौ—वि०।
विछळिग्रोड़ो, विछळियोड़ौ, विछळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विछळीजणो, विछळीजबो—कर्म वा०/भाव वा०।

विछळाणो, विछळाबो—१ देखो 'विचलाणो, विचलाबो' (रू. भे.)

उ०—नार घर की दे रही तांनो, राज नै लिखती परवांनो। जावतां समझाया थांनै, फेर मन विछळाया क्यांनै। —लो. गी.

२ देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू. भे.)

विछळाणहार, हारौ (हारी) विछळाणियौ—वि०।
विछळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
विछळाईजणो, विछळाईजबो—कर्म/भाव वा०।

विछळायोड़ौ—१ देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछळायोड़ी)

विछळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ साफ किया हुआ, धोया हुआ।

२ देखो 'विचळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछळियोडी)

विछवाणो, विछवाबो—क्रि. स. [विछाणो, विछाबो क्रि. का प्रे. रू.] विछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाना।

उ०—तब दूसरे रोज रघुनाथसिंघ नै दरीखांना बणाया, रजवाड़ का मुरतब और दस्तूर सब जणाया। पुरांणीसी विछायत गादी विछवाई, फाटीसी मसनद रखी पिछवाई। —दुरगादत्त बारहठ

विछवाणहार, हारौ (हारी), विछवाणियौ—वि०।
विछवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछवाईजणो, बिछवाईजबो—कर्म वा० ।

बिछवायोड़ो—भू का कृ.—बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाया हुआ ।
(स्त्री बिछवायोड़ी)

बिछवावणो, बिछवावबो—क्रि स. (बिछाणो, बिछाबो क्रि का प्रे. रू.) किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराना ।

उ०—अगन कोर प्रति ग्रेह नमीरा, नोख गुलाब छरक घण नीरा । जळ गुलाब केळ का जमावै, विमळ पटी गीलक बिछवावै ।
—सू प्र

बिछवावणहार, हारो (हारी), बिछवावणियो—वि० ।
बिछवावियोड़ो, बिछवावियोड़ो बिछवाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछवावीजणो, बिछवावीजबो—कर्म वा० ।

बिछवावियोड़ो—भू का. कृ —किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराया हुआ ।
(स्त्री बिछवावियोड़ी)

बिछवो—१ देखो 'बिछवो' (रू. भे)
२ देखो 'बिछोह' (रू भे)

उ०—परभो रे राईका, धारोड़ो जो नार मेला रो बिछवो दुसमी पाड़ियो, ओ म्हारा राज ।
—लो गी

बिछड़ो—देखो 'बिछोह' (रू. भे.)

बिछाणी, बिछानी—देखो 'बिछाणो' (रू भे.)

उ०—इला पिगळा नाड़ी मिळकर, सुखमन किया बिछानी । परम परस पीया सु मिली, मगना भई दिवानी ।
—अनुभववाणी

बिछाइत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ नठा उपराति कोरने राजान गिलामनि उबा हमामा महला बाहरि बाग-बगीचा रा रसता लागा छै · चोकीए बिछाइत बणी छै । पाखती जळ फूल छूटि नै रही छै ।
—रा. सा. स.

उ०—२ घणा मगाय पान ताबोल रा रस लीजै छै ऊजळी सपेत बिछाइत ऊपरे ऊजळं बगाव किया ऊजळी रूसनाई लाग रही छै । इण भांति सु हेमत रित माहै रात रा सुख विलास माणीजै छै ।
—रा. सा. स

बिछाणो, बिछावो देखो बिछाणो, बिछायो' (रू. भे)

उ०—१ चौकी कनक पिलग चहाण, विमळ पुहप घण सेज बिछाए । सोभ. पहुप प्रजलित दम सोहै मदन बसत इह मन मोहै ।—सू प्र

उ०—२ अनहदीया बाढ ग्यान गज, आसण अधर बिछाय । आगम सकती पूरत, भुगति मरो भसि जाय ।
—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया अपनै पाव सु, सूनी सक बिछाय । जो राखे मन मोर सु, तो बिभचार न होय ।
—अनुभववाणी

उ०—४ एक बोनै बरडा बोल ए, खेद उपजाय सटकै दे खोल ए । मांनै दूजा कने जाय ए, तरै गिदरो देवे बिछाय ए ।
—जयवांणी

उ० —५ जिकै दिगपाळ रजपूत सामंत अजांनबांह ठाकुर अड़ाबीड़ दरबारे धाइ खड़ा रहिया छै । दरबार दुलीचा बिछाइजै छै ।
—रा. सा. सं.

बिछाणहार, हारो (हारी), बिछाणियो—वि० ।
बिछायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछाइजणो, बिछाइजबो—कर्म वा० ।

बिछात, बिछाति, बिछायत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ प्रजक ओप तें अनोप रूप चूंप पार में, हुए बिछात सूलि लब-भूल फूल हार मे । अनूप ताक गोख स्त्री-विचित्र चित्र सू घटा, घणु उमंग अग जागि स्याम मेघ ची घटा ।
—रा. रू.

उ०—२ मह बैठन जान बिछात सरै, बकियो सुन सारग पूरब रै । बिन मोध जड़ां बसु वासव मै, वरनं गुब बायक आसब मे ।
—पा. प्र.

उ०—३ जिकै दिगपाळ रजपूत सामंत अजांनबाह ठाकुर अड़ाबीड़ दरबारे धाइ खड़ा रहिया छै । दरबार दुलीचा बिछाइजै छै । बिछात बणि नै रही छै । दरबार बणियो छै ।
—रा. सा. सं.

उ० ४ तठै बिलाइत री गथी चटाइ अमोलक बिछाइ रही छै । तिण ऊपरि बैठा खुसोम रोग हरै ऊपरै ढोलिया गिलमां री बिछाति बणिनै रही छै ।
—रा. सा. स.

उ० ५ बिछायत पर बैठे, मरद ही कबीमर, अबरी का केड़, जिसकू सरस्वती का वर । जिस बिछायत पर, थटाव चरचा के घहे । और भी काबीगुरा नै, क्या क्या ग्रंथ कहे ।
—बा. दा.

उ० ६ अबदुल्ला उर मउळ आयत, बणी मिळण कज मौज बिछायत । मंदा मिळण लिया दळ साजा, रीझै गयो [अजो] महाराजा ।
—रा. रू.

बिछायतु—स. पु —बिछाने का वस्त्र ।

बिछायोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बिछायोड़ी)

बिछाळ बिछाल देखो 'बिसाल' (रू भे)

उ०—आछ्यो नयर बिछाल छो, छाडय: सांभरि का रिणवास । येक बलावै बाहड्या, नाह उनरोगो नदीय बनाम ।
—बी. दे.

बिछावण, बिछावणो—देखो 'बिछाणो' (रू. भे)

उ०—२ बसत रै बिन्नै स्त्रीकृस्ण रै घर पुहुप ही का छै । ओढणा बिछावणा परिण पुहपा ही का छै । पुहपांहि कै हीडोळै स्त्रीकृस्ण हीडइ छै । सखी छै सो भी सब पुहपा माहै छै ।
—वेलि टी.

उ०—२ विधि सूं करी बिछावणा, बिच मैं मेल्यो थाल । भोजन की वेला हुई, आय बैठो भूपाल । —जयवाणी

उ०—३ तठा उपरांयंत जाजमां गिलमां रा बिछावणा हुयनै रह्या छै। ऊपरा गदरा चांदणी बिछायजै छै। —रा. मा. सं.

उ०—४ ज्यां रै सास्त्र बिछावणो, ओढण नूं आकास । ब्रह्म पोख सतोख वित, पूरण सुख त्यां पास । —बा दा.

बिछावणो, बिछावबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू. भे.)

उ०—१ हिवकै गाढ घणी करै। जोमैं मत ही । अर तूं जोर घातै, म्हारी बहू हुं लेनैं जाइस्यूं। अर जे न मेल्हे तो लाकड़ी वहाड़ूं। पिण बहू विगर लीयां घर मतां आए। आच बिछाई अर कहु छुं। —कांवळो जोईयो नै तीडो खरळ री वात

उ०—२ एक दिन रजपूत राजा री कुंवर वरस ५.६ रो हुतो, तिकै नुं रांमति लगाईनै डेरै लायो। आणि कुंवर नुं नै ढोलियो बिछाई बिछावणा करि कंवर नु बैसांणियो।

—बाप री सीख री वात

उ०—३ देव तेरी वाटड़ियां बनि जाद, जांह म्हारो सांई सतगुर आवियो । पगि पगि घरू तबोल, वाटड़ियां म्हारै गुर कै फूल बिछावियै। —ऊदोजी नैण

बिछावणहार, हारो (हारी), बिछावणियो—वि० ।

बिछाविओड़ो, बिछावियोड़ो, बिछाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिछावीजणो, बिछावीजबो—कर्म वा० ।

बिछावियोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछावियोड़ी)

बिछिओ—देखो 'बिछियो' (रू. भे.)

उ०—पग री रातीं पींडी खालिमी कूतरा री जीभ सारिखी, लाल कमळ चरण जावक महिंदि रंग सूं विराज रहिया छै। पग अंगुळी राईवेलि री कळी हीरा सा नख आरीसा ज्यों झांखि रहिया छै। ऊपरै अणोट पोल पावटां बिछिआं रो वणाव वणि नै रहिओ छै। —रा. सा. स

बिछियोड़ो—देखो 'बिछियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछियोड़ी)

बिछियो, बिछीयो—देखो 'बिछियो' (रू. भे.)

उ०—१ वाजन लागे आज मनमोहनी, मधुर धुन नूंपर बिछिया किंकनी। चमकन लागे चीर जरी कै, सीसफूल नथ सोहनी ।

—रसोलै राज रा गीत

उ०—२ छुद्रघंटा बिछियों का छूटै खणखणाव, ज्यो हूसं बच्चों की बाणी का बणाव। जांझरू का झणकार व्है जोरै पर जोर, सांवण कै मौसम ज्यौं झिल्ल्यां का सोर —रा. सा. स.

उ०—३ सनो माता, तेरा बिछिया रांगी, घड़िया छै मंगळ वारां जी। अेक ज वार ज पैरिया, रांणी, लीना छै बांमण्यां उतार जी ।

—लो. गी.

उ०—४ चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या नाख लाख री लहण-हार मोळै सिणगार ठविया थकां फूलां रा चौस पैहरियां थकां टोप अणियाळां काजळ ठांसियां थकां बांका नैणां री भोक नांखती पायलां रै ठमकै सूं घूघरै रै धमकै सूं बिछीयां रै छमकै सूं रमझोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती बाजारि चाली जाए छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—५ भुयवग जांणि भुजंग सा, चउकी चाक समान । बीछु सम ए बिछिया, सिज्या अगनि समांनो रै। —प. च. चौ.

बिछुड़णो, बिछुड़बो—देखो 'बिछूटणो बिछुड़बो' (रू. भे.)

बिछुड़णहार, हारो (हारी), बिछुड़णियो—वि० ।

बिछुड़िओड़ो, बिछुड़ियोड़ो बिछुड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिछुड़ीजणो, बिछुड़ीजबो—भाव वा० ।

बिछुड़ाड़णो, बिछुड़ाड़बो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

बिछुड़ाड़णहार, हारो (हारी), बिछुड़ाड़णियो—वि० ।

बिछुड़ाड़िओड़ो, बिछुड़ाड़ियोड़ो, बिछुड़ाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिछुड़ाड़ीजणो, बिछुड़ाड़ीजबो—कर्म वा० ।

बिछुड़ाड़ियोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिछुड़ाड़ियोड़ी)

बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

बिछुड़ाणहार हारो (हारी), बिछुड़ाणियो—वि० ।

बिछुड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिछुड़ाईजणो, बिछुड़ाईजबो—कर्म वा० ।

बिछुड़ायोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछुड़ायोड़ी)

बिछुड़ावणो, बिछुड़ावबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

बिछुड़ावणहार, हारो (हारी), बिछुड़ावणियो—वि० ।

बिछुड़ाविओड़ो, बिछुड़ावियोड़ो बिछुड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिछुड़ावीजणो, बिछुड़ावीजबो—कर्म वा० ।

बिछुड़ावियोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. बिछुड़ावियोड़ी)

बिछुड़ो देखो 'बिच्छूड़ो' (रू. भे.)

बिछुड़ो—देखो 'बिच्छू' (अल्पा, रू भे) (स्त्री बिछुड़ी)

बिछुटणो, बिछुटबो—देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू. भे)

बिछुटणहार, हारो (हारी), बिछुटणियो—वि० ।

विछुटियोड़ो, विछुटियोड़ौ, विछुट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुटीजणो, विछुटीजबो—भाव वा० ।

विछुटाणो, विछूटाबो—१ देखो 'विछूटाणो, विछूटाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'विछुड़ाणो, विछुड़ाबो' (रू. भे.)

विछुटाणहार, हारो (हारी), विछुटाणियो—वि० ।

विछुटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुटाईजणो विछुटाईजबो—कर्म वा० ।

विछुटायोड़ो—१ देखो 'विछूटायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विछुटायोड़ी)

विछुटियोड़ो—देखो 'विछूटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विछुटियोड़ी)

विछुट्टणो विछुट्टबो—देखो 'विछूटणो, विछूटबो' (रू. भे.)

उ०—१ राव राग रागी गहित, सको थया स्वाधीन । या छूटा जग जाळ ज्यो, जाळ विछुट्टा मीन । —रा. रू.

उ० २ आजम दक्खण हूं उलट्टो, विकट धनुख सर जांग विछुट्टो । उतर धरा सु आलम आयो, मौज नौज दळ तेज सवायो । —रा. रू.

उ०—१ प्रोहित केसरसिंघ, सिर किर संकळ छुट्टो । धरि सिर आलमालोत, जाणि रिव गोत विछुट्टो । —रा रू.

विछुट्टणहार, हारो (हारी), विछुट्टणियो—वि० ।

विछुट्टियोड़ो, विछुट्टियोड़ो, विछुट्टयोड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुट्टीजणो, विछुट्टीजबो—भाव वा० ।

विछुट्टियोड़ो—देखो 'विछूटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विछुट्टियोड़ी)

विछुळणो, विछुळबो—क्रि. स.—धुलाई करना, धोना ।

उ०—तरै तरव ठाकुर आरोगै छै—पो ठाकुर हाथ धोनो तरै तो बाज नहीं । तरै पो बोलियो—ठाकुरे ! थज बाज हो नही आयो छै, कांइ धारोला ? तरै परिहार बोलिया-राज ! बाज उरै है. ठाकुर पग विछुळता हुता सू अनूठा फिरिया नही । —प्रतापमल देवड़ा री बात

विछुळणहार, हारो (हारी), विछुळणियो वि० ।

विछुळियोड़ो, विछुळियोड़ो, विछुळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुळीजणो, विछुळीजबो—कर्म वा० ।

विछुळाणो, विछुळाबो—क्रि. स. धुलाई करवाना, धुलवाना ।

विछुळाणहार, हारो (हारी), विछुळाणियो वि० ।

विछुळायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुळाईजणो, विछुळाईजबो—कर्म वा० ।

विछुळावणो, विछुळावबो—रू. भे.० ।

विछुळायोड़ो—भू० का० कृ०—धुलाई कराया हुआ, धुलाया हुआ ।

(स्त्री. विछुळायोड़ी)

विछुळावणो, विछुळावबो—देखो 'विछुळाणो, विछुळाबो' (रू. भे.)

विछुळावणहार, हारो (हारी), विछुळावणियो—वि० ।

विछुळावियोड़ो, विछुळावियोड़ो, विछुळाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुळावीजणो, विछुळावीजबो—कर्म वा० ।

विछुळावियोड़ो—देखो 'विछुळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विछुळावियोड़ी)

विछुळियोड़ो—भू. का. कृ.—धुलाई किया हुआ, धोया हुआ ।

(स्त्री विछुळियोड़ी)

विछुवो, विछुहो देखो 'विछोह' (रू. भे.)

विछू—सं. पु.—१ विशाखा नक्षत्र का एक नाम ।

२ एक प्रकार का घोड़ा जिसकी पूंछ का अग्र भाग वक्र होता है । (शा. हो.)

अल्पा.—विछूड़ो ।

३ देखो 'विच्छू' (रू. भे.)

विछूड़ो—१ देखो 'विच्छू' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'विछू' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. विछूड़ी)

विछूट—सं स्त्री.—छूटने की क्रिया या भाव ।

विछूटणो, विछूटबो—१ देखो 'विछुड़णो, विछुड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया हुमन को कहे जोड़ विछूटि जांणि । सायर का सामा पड्या, छीलर बगीयो आंणि । —अनुभववाणी

उ०—२ मन विछूटो टोळीयां, ताहि न घातो घात । आप मतो मरि जावसी, तळफ तळफ जीव जात । —अनुभववाणी

२ देखो 'विछूटणो विछूटबो' (रू. भे.)

उ०—१ को लाहै लोभिया, मौन चाहै अणछूटी । कमण पांण पाकड़ै, बीज असमाण विछूटी । —रा. रू.

उ०—२ जगदूता री जमात उठीया छै, जाणे सांकळा हूती सीह विछूटिया छै । घोड़ां राउ छूटा लीजै छै । अमल पीजै छै —पनां

उ०—३ कुटुंबी लोक माचइ, महात्मा बैठा पुस्तक वाचइ । परबत तउ नीझरण विछूटइ, भरिया सरोवर फूटइ । इसिइं वरसा कालि । —रा. सा. सं.

उ०—४ जठै जादव राम रै सबधी भ्राता जादव देव रा किवांण करि चालुक्य राज रा गज रो सुंडाडंड बाहिरय देस सु विछूटि भाड़ियो । —वं. भा.

उ०—५ जांणूं तिलहि न बिछूटूं रे, जनि पछतावा होई । गुण तेरे रसना जपूं, सुणसी सांई सोई रे । —दादूवांणी

उ०—६ समय घणउं स्रम स्रांत थ्या, सयरि विछूटि स्वेद । प्रडप घणी अळगां थयां, सांसइ पड़ियां दुभेद । —मा. कां. प्र.

उ०—७ असमांन विछूटै सर असख । घकारव गाजै गुण घनख । सूरज्ज बोम छायौ सरेय, किरि जांण काळ छाया करेय । —गु. रू. बं.

उ०—८ कुदरत्त विछूटा कुहकबांण, प्राकंप हुआ पुड आसमांण । गोळियां ताड विपरीत गत्त, ओघड़ै गडै किरि मेह अत्त । —गु. रू. ब.

उ०—९ पूठिली परि तं गलगलै, पिण नहीं कोई उपाय । सगलै जी कहै जल नै बिना, जीव बिछूटौ जाय । —वि. कु.

उ०—१० मुख साह मुहां मुहि हुकम बिछूटा, छूटा पड़ियाळा खजर । समकै गजां सांकळा तूटा, जूटा 'अरजण' अनै 'अमर' । —अरजण गोड वीठळदासोत री गीत

बिछूटणहार, हारौ (हारी), बिछूटणियौ—वि० ।
बिछूटिग्रोड़ौ, बिछूटियोड़ौ, बिछूट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछूटीजणौ, बिछूटीजबौ—भाव वा० ।

बिछूटाणौ, बिछूटाबौ—१ देखो 'बिछूटाणौ, बिछूटाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिछुड़ाणौ बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)
बिछूटाणहार, हारौ (हारी), बिछूटाणियौ—वि० ।
बिछूटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछूटाईजणौ, बिछूटाईजबौ—कर्म वा० ।

बिछूटायोड़ौ—१ देखो 'बिछूटायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछूटायोड़ी)

बिछूटियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछूटियोड़ी)

बिछूट्टणौ, बिछूट्टबौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—हुए मीर सघार, सोक सर पूर बिछूट्टै । प्रळै-काळ आग्रत, फौज फौजां मुहि जुट्टै । —गु रू. ब.

बिछूट्टणहार, हारौ (हारी), बिछूट्टणियौ—वि० ।
बिछूट्टिग्रोड़ौ, बिछूट्टियोड़ौ, बिछूट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछूट्टीजणौ, बिछूट्टीजबौ—भाव वा० ।

बिछूट्टियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछूट्टियोड़ी)

बिछेड़ौ—सं. पु.—विछोह, वियोग, जुदाई ।

बिछेव—सं. पु.—१ विछोह, वियोग, जुदाई ।
२ देखो 'विच्छेद' (रू. भे.)

उ०—मूरमो लूंण जात ए, पुहवी काय बिछेव । भूमि प्रा तास प्रोस हिय, करग प्राऊ ना भेद । —बं. स्त.

बिछेवौ—सं पु.—भंग होने की क्रिया, नाश ।

उ०—'देव विमांण वल्यौ' छळै, तिणरौ सुणौ राय भेदौ रे । जंघा विद्या चारणी, जामौ लब्धि बिछेवौ रे । —जयवांणी

बिछेरियौ—देखो 'बछेरौ' (अल्पा., रू. भे.)

बिछेरौ—देखो 'बछेरौ' (रू. भे.)

उ०—सिखरै-री घोडी अर ऊदै री घोडी बेऊं अेक छांन मैं बधै । सू उवा घोड़ी री उवा बिछेरी मास इग्यारह री । सू घोड़ै ही आगै चरै । सिखरौ चढि अर नीसरियौ ताहरां बिछेरी घोड़ै रै लार हुयी । —ऊदै उगमणावत री वात

(स्त्री. बिछेरी)

बिछोई—वि.—वियोगी ।
रू. भे.—बिछोई ।

बिछोड़णौ, बिछोड़बौ—क्रि स.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियों या प्राणियों को एक दूसरे से पृथक कर देना ।

उ०—मां थी बिछोड़्या वाछड़ा, नीरी नहीं चारि । ऊनालै तिरस्या मूग्रा, कोधी नहीं सारि । —स. कु.

२ वियोग में डालना ।
३ साथी से अलग कर देना ।
४ काटना ।

उ०—पड़ै रीठ पाडोसां गरीठ वज्ज भालां पूर, धीठ सूर जड़ै वज्ज प्रावधां क्रोधार । ऊधड़ै बरम्मां कड़ा नत्रोठा बिछोड़ै अंगां, जठै आकारीठ 'दूदौ' आहुड़ै जोधार । —ठाकर जवानीसिंघ पालड़ी री गीत

बिछोड़णहार, हारौ (हारी), बिछोड़णियौ—वि० ।
बिछोड़िग्रोड़ौ, बिछोड़ियोड़ौ, बिछोड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछोड़ीजणौ, बिछोड़ीजबौ—कर्म वा० ।
बिछोवणौ, बिछोवबौ—रू० भे० ।

बिछोड़ियोड़ौ—भू का. कृ.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियों या प्राणियों को एक दूसरे से पृथक किया हुआ. २ वियोग में डाला हुआ. ३ साथी से अलग किया हुआ. ४ काटा हुआ.
(स्त्री. बिछोड़ियोड़ी)

बिछोटौ—सं. पु.—छुटकारा, मुक्ति ।

उ०—दोयं कोरड़ा देह दोला दबोटा, वदै बोल बांका भर्फ्रै मंत मोटा । पड्या बदिखानै महा दुक्ख मोटा, प्रभू नांम थी वेग पायै बिछोटा । —ध. व. ग्र.

बिछोड़णो, बिछोड़बो—देखो 'बिछोड़णो, बिछोड़बो' (रू भे.)

उ०—प्रत बेला प्रभणाह' दृगम बळ बाह उच्छै, भरू घाह भरिया। बि फिर बवबाह मच्छै। प्रथम बिराम ग्रमळी श्रांणि प्रगटत घरे दाम, कना 'गरव' बोलियौ नरप तें थ' बिछोड़ण —रा. रू

बिछोड़णहार, हारौ (हारी), बिछोड़णियौ—वि०।
बिछोड़ियोड़ौ, बिछोड़ियोड़ौ, बिछोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिछोड़ीजणौ, बिछोड़ीजबौ—कर्म वा०।

बिछोड़ियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिछोड़ियोड़ी)

बिछोणौ—देखो 'बिछोणौ' (रू भे.)

बिछोवौ, बिछोबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

बिछोणहार, हारौ (हारी), बिछोणियौ—वि०।
बिछोयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिछोईजणौ, बिछोईजबौ—कर्म वा०।

बिछोयोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछोयोड़ी)

बिछोव—देखो 'बिछोह' (रू भे.)

बिछोवणौ, बिछोवबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाणौ' (रू. भे.)

बिछोवणहार, हारौ (हारी) बिछोवणियौ—वि०।
बिछोवियोड़ौ, बिछोवियोड़ौ बिछोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिछोवीजणौ, बिछोवीजबौ—कर्म वा०।

बिछोवियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिछोवियोड़ी)

बिछोवौ—देखो 'बिछोह' (रू भे.)

उ०—१ नागजी, भली निभाणी प्रीत, रे बैरी, रैण बिछोवौ कर चाल्यो म्हां नागजी। —लो. गी.

उ०—२ प्रीतम दलिया कर गया, सुख लेगया साथ। रैण बिछोवा कर गया, मळतो रह गई हाथ। —अज्ञात

बिछोह—सं. पु.—१ जुदाई, वियोग, विरह।

उ०—१ रजनि भान ढळकयौ, मनु अंधकार मुलकयौ। बिछोह चकक चकक्यं, अनेक नैर बबरय। —ला. रा

उ० २ मिलण इक जउ तुझ नइ गजू रे बि० मउ ऊपजै अदोह। धरती पिण फाटइ हियो रे जि० पाणी तणउ बिछोह। —वि. कु.

उ०—३ झूरई महोबर राव का, कुळी लनोसर झूरड सोहो। बार झूरई राजा भोज सूं, मामरघर राव सो पड़यो बिछोह। —बी: दे

उ०—४ फाटि रे हिया! मोबासूबा, पापरी घड़ियो, के भीपट लोह। भाग्यभ नीयौ फूटइ नही. सगुणां प्रीतम तणो बिछोह। —बी. दे.

२ वियोग का समय।

रू. भे. बिछवौ, बिछायौ, बिछवौ. बिछेवौ, बिछोडौ, बिछोव, बिछोवौ बिछोह, बिछोही, बिच्छोह, बिछवौ, बिछहौ, बिछुरौ, बिछुड़ौ बिछाव, बिछोयौ, बिछोहौ।

बिछोहणौ, बिछोहबौ—क्रि. अ.—बिछुड़ना, दूर होना, जुदा होना।

उ०—१ दाढ़ी मं टळियाह, बाला हर हु बिछोहियां। थोरी हाथ मयाह, मा किम जीवै जेठवा। —जेठवा

उ०—२ पनरह बरस बिछोहउ हुम्रो घणइ कम्टि मेळावउ। थयउ। वळे बिछोही जउ करतारि, तउ इण भगि मुझ एह ज नारि। —ढो मा.

उ०—३ नली मन पविजणो नहश्रो दुख्याम, जिणै बिछोहया मा बाप ग्राम जिणै भाग मयम भुगाल। —म. कृ.

उ०—४ राम बिछोही बिरही, फिर मिलन न पावै। दादू तलपै मीन ज्यौं, तुम दया न आवै। —दादूवाणी

बिछोहणहार हारौ (हारी), बिछोहणियौ—वि०।
बिछोहियोड़ौ बिछो, योड़ौ बिछोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिछोहीजणौ बिछोहीजबौ—भा० वा०।
बिछोहणौ, बिछोहबौ, बछोहणौ, बछोहबौ—रू० भे०।

बिछोहियोड़ौ—भू का. कृ.—बिछुड़ा हुआ, दूर हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ।

(स्त्री बिछोहियोड़ी)

बिछोही—वि.—वियोगी, बिरही।

उ० ढोला बिछोही यम भ्रमणो तिम नरि आक्रंद, वन वन जोतां कथ न देखि दीन हामणो मद। —नळाख्यान

बिछोहौ—देखो 'बिछोह' (रू भे.)

उ०—१ इक चनै सूंड प्रदोळता प्रघ ऊरध सावळ प्रविळ। तम सुभट बिछोहौ जाणि तिम दिवस चहै करि इग बळि। —रा. रू.

उ०—२ सुपनह प्रीतम मुझ मिळया, हूं लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मतिहि बिछोहउ होइ। —ढो. मा.

उ०—३ पनरह बरस बिछोहउ हुम्रो, घणइ कम्टि मेळावउ थयउ। वळे बिछोहो जउ करतार, तउ इण भवि मुझ एह ज नारि। —ढो. मा.

उ०—४ केसर काढ़ कुकडा, बोल्यो मुझ प्रभात, सेजां थारा सजन रे, सूति छो गळ लाग। मोताहळ सीतळ हुवा रैण गळंती दीठ प्रात बिछोहौ सज्जा ऊठी बिरह अंगीठ। —पना

उ०—५ वाला वाली रै मेरा इलाही तूं, रसराज एक रांझै दा बिछोहा, दूजी वेस मतवाळी रे। —रसीलै राज रा गीत

उ०—६ आंगण देस्यां जी नहीं थांनै आलीजा जी मेलो बिछोहो माछ म्हांसू नही नीसरै। —लो. गी.

बिछोनो—देखो 'बिछाणो' (रू. भे.)

उ०—हरिमों संकेत करी राधिकै बिलोकै मग, प्रेसं धाई बैठी सखो एक ही बिछौन है। राधै बोली सुनि बेल मोसं नैन बाट जोवै, पलनिमेल दौ मैं हारी साई दासी हौन है। —ध. व. ग्र.

बिज—१ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—गडि गडि गोळा नाळि, बिज खड्ड किरि अबर। भ्रमत बाण ऊछळै, घोम धूंहा रव डंबर। —गु. रू. ब.

२ देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बिजई देखो 'बिजयी' (रू. भे.)

बिजउरो—देखो 'बिजोरो' (रू. भे.)

उ०—करहा, नीरू सोड चर, वाट चनन उ पूर। द्राख बिजउरा नीरती मो धण रही म दूर। —ढो. मा.

बिजकणो, बिजकबो—देखो 'भिचकणो, भिचकबो' (रू. भे.)

उ०—साधु सगनि कया करै, जो मन बिजक्यो होय। ज्यूं हरीया हरीवधण, वाग न भालै कोय। —अनुभववाणी

बिजकणहार, हारो (हारी), बिजकणियो—वि०।

बिजकिओड़ो, बिजकियोड़ो, बिजक्योड़ो भू० का० कृ०।

बिजकीजणो, बिजकीजबो—भाव वा०।

बिजकाणो, बिजकाबो—देखो 'भिचकाणो, भिचकावो' (रू. भे.)

बिजकाणहार, हारो (हारी), बिजकाणियो—वि०।

बिजकायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिजकाईजणो, बिजकाईजबो—कर्म वा०।

बिजकायोड़ो—देखो 'भिचकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकायोड़ी)

बिजकावणो, बिजकावबो—देखो 'भिचकाणो, भिचकाबो' (रू. भे.)

बिजकावणहार, हारो (हारी) बिजकावणियो—वि०।

बिजकाविओड़ो, बिजकावियोड़ो बिजकाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिजकावीजणो, बिजकावीजबो—कर्म वा०।

बिजकावियोड़ो—देखो 'भिचकाबोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकावियोड़ी)

बिजकियोड़ो—देखो 'भिचकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकियोड़ी)

बिजड़—१ देखो 'बीजळा' (ना. डि. को., ह. नां. मा.)

उ०—पाच कलं परवार सूं, रावळ आलोचेह। आंपै मर गढ आपस्यां, बिजड़ां वार करेह। —नैणसी

२ देखो 'बीजळी' (मह., रू. भे.)

बिजड़ली—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (अल्पा, रू. भे.)

बिजड़हत, बिजड़हतो, बिजड़हतौ, बिजड़हत्थ, बिजड़हत्थो, बिजड़हत्थौ, बिजड़हथ, बिजड़हथो, बिजड़हथौ देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—१ घणं भुज लगा घोड पांगा दयं मुच्छौ परै। रगा जूभो राठोड बिजड़हथो फिर बोलियो। —पा. प्र.

उ०—बीक विदेसज चालियो, बिजड़हथो बळ बांध। मूळं तोड़ी मुगल सुगर, साहि आलम सूं सांध। —नैणसी

बिजड़ाहत, बिजड़ाहतो, बिजड़ाहतौ, बिजड़ाहत्थ, बिजड़ाहत्थो, बिजड़ाहत्थौ, बिजड़ाहथ, बिजड़ाहथो, बिजड़ाहथौ, बिजड़ाहथ्थ, बिजड़ाहथ्थो, बिजड़ाहथ्थौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—बिजड़ाहत घाघळ पूत बकै, सत्र कोण घकै पग माड सकै। घट सूर ढहै विप खड घणा, तन चक्र बहै नव लाख तणा। —पा. प्र.

बिजड़ो—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—हव वेरन कोजिय वेग हकै मुगियाळ मिळी भड़ 'पाल' घकै। बिजड़ो जड़ भाघल नाथ बिनै, कड़ भीड़ कलहुन 'पाल' कनै। —पा. प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजड़ोहथ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—लखियो हयळे व प्रमाण लघो, बिजड़ोहथ घाघल मोडवधो, बिखना भ्रक मेटण की वरणं, पह 'पाळ' जतिद्र जको परणं। —पा. प्र.

बिजड़—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.) (अ. मा., ना. डि. को.)

उ०—१ सूर धीर गम्मत, बिजड़ झटण बगाळा। राणा हाथळ टोप, पैहरि जरदा छकडाळा। —गु. रू. बं.

उ०—२ ताल वैरि तनताळ, लियो जिग चालुक लोहै। जिग 'मेहरा' मारियो, बिजड़ बडो घट बोहै। —गु. रू. बं.

उ०—३ घावां घाव प्राहाडा घायं, बिजड़ां बाढ़ं चाढ धज-बंध। लेगो सुरग वरं रभ लारा, कमधज सारां करै कबध।

—अमरो बारहट

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजड़ो—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—१ पायकां भिलंमां पर तेग पड़ै, भलहो दरियां जड मूल गड़ै। दुनहो फरकी चव दूनि फिरै, बिजड़ो रत चाकिय 'पाल' वरै। —पा. प्र.

उ०—२ मेघ बाजत घेर नवं लयरी, लावळा पर रूप बंधे मयरी। बिजळी हुय आपाय चोह वकी, भिड़जा चढ़ टाप करै भमकी।
—पा प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजति–वि.—जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

उ०—सूर्यां बिजति नासिकी, गुळलि छोलनी बहे। बिजेत नत रैन दे, सजैन थांमनो बहे।
—ऊ का.

बिजन–वि [स] एकान्त, जनशून्य।

[स. व्यजन] १ हवा करने का पंखा, बीजन।

२ देखो 'व्यजन' (रू. भे.)

रू. भे. –बिजन।

बिजनस–स. पु. [अ. बिजिनिस] १ व्यवसाय, व्यापार।

२ व्यापारिक सगठन, व्यावसायिक सगठन।

३ दृढ़ निश्चय।

उ०—कवराणी मभियो मिलो, बिजनस मरण विचार। किलो रहयो राणी कलम, लाज किला रे लार।
— निरमीदान बारहठ

वि.– वास्तविक, बिल्कुल।

(क्रि वि)—निश्चय ही, अवश्य ही।

उ०—१ नंगा हूं घाई निरख, जिण रो तो हूं जीव। ऊनो बिजनस वाव ही, प्रीतम प्यारो पीव।
—र० हमीर

उ०—२ कळजुग रो मानै कहर, बिजमस लागै बाव। रिखां कहो प्रण देह रो, परत करां पलटाव।
—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ दूजरै एक चारण बोलियो, तीज तो पूगळ री देखी जे। अठ लोक भय नै सुरलोक रीमीजै। जद कवर बोलियो, इयोंहु तो बिजनस देखवा चालसा। एक वार पगळ रा बागां मे मालसां। कवर पूगळ मे चालसा इतरो कह नै महिलां पधारिया।
—पनां

रू. भे.—बिजनस, बिजनिस, बिजनस, बिजिनस, बिजिनिस, बिजनेस, बिजनिस, बिजनेस, बिजिनस, बिजिनिस, बिजिनेस।

बिजनांळियो–स. पु.—एक प्रकार का नकुल की जाति का जानवर।

बिजनिस, बिजनेस—देखो 'बिजनस' (रू.भे.)

उ०—बरसै बह किरणाठ बिराजै, स्याह सपेत लालरंग साजै। बिजनिस वाव सूरियो बाजै, घड़ी पलक मांय मेहा गाजै।
—बरसा बिग्यांन

बिजपंजर—देखो 'बिजणंजर' (रू. भे.)

उ०—पारहरिय प्रजा जिम नीर पाळ, भाखरै माजि चड़िया भुवाळ आगळी प्रजा आई अबोह, सरणाइ बिजपंजर 'अहतमोह'।
—रा. ज. सी

बिजय–स. पु. [सं विजयः] १ पराजय का विपरीत, जय, जीत।

उ०—फतेसाह साह आए बांह गंग धारै, विजावत बिजय रूप पराजय निवारै। 'मधकर' 'दयाल' का सो साह भै न धारै, अधकार जान जंमै भाण के उजारै।
—रा. रू.

२ विवाद, युद्धादि मे जीत।

३ विष्णु के जय-विजय नामक दो पार्षदों (द्वारपालों) में से दूसरा।

४ कुंति पुत्र अर्जुन के दस नामों में से एक, जो उसने अज्ञातवास के समय धारण किया था।

५ यमराज।

६ देवरथ, स्वर्गीय रथ।

७ बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष।

८ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

९ मगध निवासी एक ब्राह्मण, जिसने महीसागर-संगम तीर्थ में अनेको सिद्धियां प्राप्त की थी और बाद में सिद्धसेन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

१० राजा रोमपाद के वंशज जयद्रथ और सम्भूति के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो धृति का पिता था।

११ महाराज दशरथ के एक मन्त्री का नाम।

१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

१३ एक राजा, जो पुरूरवस एवं उर्वशी का पुत्र एवं भीम या काचन का पिता था।

१४ शिवजी के त्रिशूल का एक नाम।

१५ एक दिव्य धनुष जो परशुरामजी द्वारा कर्ण को दिया गया था

१६ हरिश्चन्द्र के वंशज सुदेव के पुत्र एवं भुरुक का पिता।

१७ एक राजा, जो बृहन्मनस एव सत्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

१८ भागवतानुसार जय राजा का पुत्र एवं कृतु का पिता।

१९ भागवतानुसार सृंजय का पुत्र और वायु के अनुसार संृजय का पौत्र, और जय राजा का पुत्र था।

२० एक यादव राजा, जो वसुदेव एव उपदेवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

२१ एक क्षत्रिय विजेता सम्राट, जो भागवतानुसार चप राजा का एवं वायु तथा विष्णु के अनुसार चंचु राजा का पुत्र था।

२२ कृष्ण एव जाबवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

२३ यशश्री राजा का पुत्र एव चद्रविश का पिता एक आन्ध्रवंशीय राजा।

२४ पृथुक देवों मे से एक।

२५ मणिवर एव देवजनी का पुत्र एक यक्ष।

२६ लौकाक्षि नामक शिवावतार का एक शिष्य।

२७ भैरववंश में उत्पन्न एक वाराणसी नगरी का राजा, जो

उपरिचर का पिता था और जिसने खाण्डवी को नष्ट कर खांडव वन का निर्माण किया था।

२८ छप्पय छंद का द्वितीय भेद जिसमें ६६ गुरु १४ लघु से ८३ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। मतान्तर से १४८ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

वि. वि.—जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २६, २६ मात्राओं के होते हैं, उसमें १४८ मात्राएँ होती हैं। अर्थात २४×४=९६+२६×२=५२ कुल १४८ और जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २८, २८ मात्राओं के होते हैं, उसमें १५२ मात्राएे होती हैं अर्थात २४×४=९६+२८×२=५६ कुल १५२ मात्राऐ।

रू. भे.—विजय, विजै, विजयु विजै, विज्जै।

विजयएकादसी—देखो 'विजयाएकादसी' (रू. भे.)

विजयक–वि. [सं. विजय+कन्] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयकुंजर–सं. पु.—१ राजा की सवारी के काम आने वाला हाथी। २ युद्ध में काम आने वाला हाथी।

विजयकेतु–सं पु. [सं.] विजयपताका।

विजयखार—देखो 'विजयसार' (रू. भे.)

विजयघंट–सं पु.—१ मन्दिरों में लटकाया जाने वाला घण्टा। २ हाथी की झूल के साथ बंधा रहने वाला घंटा।

विजयछंद–सं. पु. [सं. विजयः+छन्द] पाच सौ लड़ियों का हार।

विजयजात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

विजयडिंडिम–सं. पु. [सं] युद्ध के समय युद्ध क्षेत्र में बजाया जाने वाला एक ढोल।

रू भे.—विजयदुंदुभ विजयदुंदुभि।

विजयतीरथ–सं. पु [सं. विजयतीर्थ] एक तीर्थ विशेष। (पुराण।

विजयदंड–स. पु. [स. विजयदण्ड] सैनिकों का एक विभाग विशेष जो हमेशा विजयी रहता है।

विजयदसम, विजयदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—१ सन विजयदसम वधियौ संग्राम, धिखियौ अहमदपुर धांम धांम। सजियौ क्रोधानळ वियौ 'सीह,' दावानळ दमगळ तीन दीह।
—वि. सं.

उ०—२ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगिजीत सरव विद्या जिनै। विजयहरस विद्यमांन सिस्य तिनकै सही, परिहां कवि धरमसी उपगारं दस क्रिया कही। —ध. व. ग्रं.

विजयदुंदुभ, विजयदुंदुभि—देखो 'विजयडिंडिम' (रू. भे.)

विजयनंदन–सं. पु. [सं.] भागवतानुसार, अयोध्यापति इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न राजा जय का नामान्तर।

विजयपजर–स. पु. [स. विजयः+पञ्जर] विजय प्राप्ति हेतु पढा जाने वाला स्तोत्र।

रू. भे.—विजपंजर, विजयपंजर, विजैपंजर, विजपंजर, विजैपंजर।

विजयपताका–स. स्त्री. [सं] विजय की सूचक फहराई जाने वाली ध्वजा या इसी का सूचक कोई चिन्ह।

विजयपरपटी–सं. स्त्री. [स. विजयपर्पटी] वैद्यक में, संग्रहणी रोग के लिए दी जाने वाली एक प्रकार की औषधि विशेष

विजयपूनम, विजयपूरणिमा–सं. स्त्री. [सं. विजयपूर्णिमा] विजयादशमी के बाद आने वाली पहली पूर्णिमा, जिस दिन बंगाल में लक्ष्मी का पूजन होता है। (पुराण)

विजयभैरव–स पु.—वैद्यक मे, सब प्रकार के रोगों और दुर्बलता को दूर करने वाला एक प्रकार का रस।

विजयभैरवतेल–स पु.—वैद्यक मे, मालकंगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को पेर कर निकाला जाने वाला एक प्रकार का तेल विशेष, जो सब प्रकार के वायु रोगों का नाशक माना जाता है।

विजयमंड—देखो 'विजैमंड' (रू. भे)

विजयमरदल–स. पु. [सं विजयः+मर्दल] प्राचीन काल में होने वाला एक प्रकार का ढोल।

विजयमाळा, विजयमाला–स स्त्री. [स. विजयमाला] विजय प्राप्त करने वाले को पहनाई जाने वाली माला।

रू. भे.—विजयमाळा, विजैमाळा, विजैमाळा।

विजयमेरु–स. पु [स.] सुमेरु पर्वत का एक नाम।

उ०—पूरब पच्छिम थान की, खंड गिणीजै दोइ। विजयमेरु पूरब दिसैं, पच्छिम अचलमेरु जोइ। —ध. व. ग्रं.

विजययात्रा–स. स्त्री. [सं.] किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा।

उ०······नीली रहरही इक्षुवाडमडली, फूलिइ उज्ज्वल कास, दीसइं सतच्छद पुष्फविकास, करइं नरेंद्र विजययात्रा रंभ।
—व. स.

रू. भे.—विजययात्रा, विजैयात्रा, विजयजात्रा विजैजात्रा, विजैयात्रा।

विजयरत्नाकरि–सं. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयरस–सं. पु. [सं.] वैद्यक में एक प्रकार का रस विशेष जो पारे,

गंधक और सीसे के योग से बनता है और प्राय. अजीर्ण रोग में दिया जाता है।

विजयकपपवध—स पु [स विजयकल्पध] एक प्रकार का घोड़ा जिसके दो पैर सफेद व सिर मे तिलक होता है। (शा हो.)

विजयलक्ष्मी, विजयलखमी, विजयलक्ष्मी, विजयलिखमी, विजयलिछमी—स स्त्री. [स विजयलक्ष्मी] एक देवी जो विजय की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

रू. भे. विजयलछमी, विजयलाछमी, विजयलखमी, विजयलिखमी, विजयलिछमी, विजैलछमी, विजैलखमी, विजैलछमी, विजैलिखमी, विजैलछमी, विजैलछमी, विजैलखमी, विजैलछमी, विजैलिछमी, विजैलिछमी।

विजयवसंत-स पु [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष (संगीत)

विजयसखमी—देखो 'विजयासखमी' (रू. भे.)

विजयसरमती, विजयसरस्वती—स. स्त्री [स. विजयसरस्वती] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयसामथ—देखो 'विजयासमथी' (रू. भे.)

विजयसामत, विजयसारग-स पु. [स] कर्नाटकी पद्धति का एक राग विशेष। (संगीत)

विजयसार—स. पु. [स] १ एक प्रकार का उत्कृष्ट लोहा, जिससे तलवारें बनती हैं।

२ एक वृक्ष विशेष, जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।

रू. भे.- विजयसार विजैसार, विजयस्वार, विजैस्वार, विजैसार।

विजयसाही—स. पु —मारवाड़ राज्यान्तर्गत बसने वाला जोधपुर के राजा विजयसिंह के द्वारा प्रचलित एक चांदी का सिक्का विशेष। (मा. म)

रू. भे.–विजयसाही, विजैसाही, बीजैसाही, विजैसाहई, विजैसाही।

विजयसिद्धि—स स्त्री. [सं. विजयः + सिद्धी] विजय, जीत सफलता।

विजयसील—स. पु. [स. विजयशील] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयसूर—स पु. [स.] एक सूर्यवंशी राजा, जो मनु का प्रथम पुत्र था। (पुराण)

उ० रोहिताम तणो हित चतुराय, ता सुत सुदेन तणो सुत ताय।
संभाग सुदे ताम विजयसूर, पुत्र जास रवकतात तेज पूर।
—सू. प्र.

विजयस्री—स स्त्री. [स. विजयश्री] १ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

२ देखो 'विजयलछमी'

विजयहार, विजयहरी, विजयहारी—स पु.—सुदृढ़ एव सुरक्षित मोर्चा, शत्रुओं के लिए दुर्गम्य मोर्चा।

उ०—गढ कैलास जिम ऊचउ, गुरुई पौलि, सबर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, यत्र तणी मेलि, ढीकली तणी परम्परा, गाई गढ,......। —व. स.

रू. भे.—विजाहरी, विजहारी।

विजया—स. स्त्री. [स.] १ गौतम की एक कन्या का नाम।

२ पार्वती की एक सखी, जिसे पार्वती का मानसपुत्र वीरक को लाने हेतु भेजा गया था। (पुराण)

३ दुर्गादेवी का एक नाम।

उ०—स कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा तनया, सोह सोह सभया अभया, आई अजया विजया उमया। —देवि.

४ यम की पत्नी का नाम।

५ हरड़े, हर्रे।

६ सात प्रकार की हरड़े में से एक प्रकार की हरड़े।

७ एक योगिनी।

८ दक्ष की एक कन्या का नाम।

९ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत् की माता का नाम।

१० श्रीकृष्ण के पहनने की एक माला।

११ भाग।

१२ दुर्गा देवी की एक सहचरी।

१३ एक विद्या विशेष, जो श्रीरामचन्द्र जी को महर्षि विश्वामित्र ने सिखाई थी।

१४ मद्र राजा की कन्या का नाम, जो पाण्डु पुत्र सहदेव की पत्नी और सुहोत्र की माता थी।

वि० वि०—इसके लिए मतैक्य नहीं है महाभारत के अनुसार यह मद्रदेश के द्युतिमत् राजा की कन्या थी और भागवत के अनुसार यह पर्वत राजा की कन्या थी।

१५ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

१६ सम्राट भुमन्यु की पत्नी और सुहोत्र की माता, जो दशार्ह राजा की कन्या थी।

१७ श्रीकृष्ण की एक माता का नाम।

१८ कश्मीर में स्थित एक पवित्र तीर्थ का नाम।

१९ एक शुभ मुहूर्त विशेष।

२० एक प्रकार का शमी वृक्ष।

२१ आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त विशेष, जिसके अन्त में लघु और गुरु या नगण भी होते हैं।

२२ एक सम-मात्रिक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में १०-१०

की यति पर ४० मात्राएं होती हैं और अंत में रगण भी होता है। मतान्तर से प्रत्येक चरण में १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएं होती हैं।

२३ देखो 'विजयादसमी'

२४ देखो 'विजयाएकादसी'

रू. भे.—बिजया, बिजिया, वज्जया

विजयाएकादसी–सं. स्त्री. [सं. विजयाएकादशी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

२ फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

रू. भे.— विजयएकादसी।

बिजयाणंद–सं.पु [सं. विजयानन्द] संगीत के मुख्य साठ तालों में से एक ताल विशेष।

रू. भे.—विजयांनद।

विजयादसम, विजयादसमी—सं. स्त्री. [सं. विजयादशमी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।

२ उक्त दशमी को मनाया जाने वाला पर्व जिसकी गणना हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौहारों में की जाती है।

वि० वि०—आश्विन शुक्ला दशमी को श्रवण का सहयोग होने से विजयादशमी होती है। यह पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध तथा श्रवणयुक्त सूर्योदय व्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। यह हिन्दुओं, विशेषकर क्षत्रियों का बड़ा त्यौहार है। इसे नवरात्री या दशहरा के नाम से भी पुकारा जाता है और आश्विन शुक्ला प्रथमा से दशमी तक मनाया जाता है। इन दिनों देवी, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा होती है। क्षत्रिय इस दिन देवी घोड़े हाथी. खड्ग, आदि की पूजा करते हैं और नीलकठ पक्षी के दर्शन करते है और हिन्दू,दुर्गा आदि देवी के साथ अपने कुलदेवता की पूजा करते हैं और कहीं कहीं पर शमी वृक्ष की पूजा भी करते हैं। कहते है इस दिन श्री रामचंद्र ने लकापति रावण को मार कर लंका- विजय की थी इसी लिए इसे विजयादशमी कहते हैं। और इसी दिन दुर्गा ने महिषासुर का बध कर विजय प्राप्त की थी इस लिए भी यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन को एक शुभमुहूर्त भी मानते हैं और इस दिन प्रारम्भ किया हुआ हर कार्य सिद्ध होता है। नवरात्रि के प्रथम दिन जौ या गेहूँ घरो म बो दिये जाते हैं। और इस तिथि को जयती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु तं।।' यह मत्र पढ कर कान पर रखते हैं। इस दिन दश महाविद्याओं की पूजा होती है।—घोड़ी, शमी, पुस्तक, लेखनी, अस्त्र, शस्त्र, आदि की भी पूजा करते हैं।

रू. भे.—बिजयदसम, बिजयदसमी, बिजयादसम, बिजयादसमी, बिजैंदसम, बिजैंदसमी, विजयदसम, विजयदसमी, विजैंदसम, विजैंदसमी, विजैंदसम्मी विर्जैदसम, विर्जैदसमी।

विजयानंद—देखो 'विजयाणंद' (रू. भे.)

बिजयाभखी—देखो 'बिजियाभखी' (रू. भे.)

बिजयाभरखी–स. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

विजयारध–सं. पु. [स विजयार्ध] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

बिजयासप्तमी,बिजयासातम–सं.स्त्री. [सं विजयासप्तमी] फलित ज्योतिष के अनुसार, किसी मास की, रविवार के दिन पड़ने वाली शुक्ल पक्षकी सप्तमी। इस दिन श्रीरामचन्द्र की पूजा की जाती है। (पुराण)

रू.भे —विजयसप्तमी, बिजयसातम, बिजयासप्तमी, बिजयासातम, बिजैंसप्तमी, बिजैंसातम, विजयसप्तमी. विजयसातम, विजैंसप्तमी, विजैंसातम।

विजयी–वि०—जिसने विजय प्राप्त की हो, विजय प्राप्त करने वाला।

विजयु—देखो विजय' (रू. भे.)

उ०—एतल ए पंडु नरिंदो त्रूठिलो पाटि प्रतिठिउ ए। बंधवि ए विजयु करेवि राय सर्व वसि प्राणिया ए। —सालिभद्र सूरि

विजयेस–सं. पु [सं. विजय+ईश] १ शिव, महादेव।

२ विजय के अधिष्ठाता देवता।

विजयोत्सव–सं पु. [स विजय+उत्सव] आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाने वाला उत्सव।

बिजर–सं. पु.—अनायुषा नामक राक्षसी का पुत्र और ज्वर एव कालक नामक राक्षसों का पिता, एक राक्षस।

रू. भे –बिज्वर।

बिजरा–सं स्त्री. [स.] ब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्मलोक की एक नदी।

बिजराज–देखो 'ग्रजराज' (रू. भे)

उ०—१ तूं हीज अकाज काज भगतां री लाज तना, बिसरियो केम परी बिजराज वाज। आविम्यं अनन आज गजराज उबारिवा, निध मार्थ गाज करै निवाइयो नाज। —पी. ग्र.

उ०—२ भूनिज्यो मति कदेई भूधर, जोइ लखं राखै बिजराज। तूझ तणो निसदीह त्रीकमा, मुजरो पीर करै महाराज। —पी. ग्रं.

बिजळ—१ देखो 'बीजळा' (मह,. रू. भे)

२ देखो 'बीजळी' (मह,. रू भे.)

बिजळड़ी—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा,. रू. रू.)

२ देखो 'बीजळी' (अल्पा,. रू. भे.)

बिजळी—देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (प मा.)

उ०—दरवाजी नजर मूं किला मे खळबळी मावगी। जेज छिदियां आकासरी हावरण रो सो ही सो भीमड़ी बिजळी रे पळाका रे ज्यूं किलारे मायने मळियो। पए मिरे ज्योंही पूगता पूगता चांफेर मूं पेरीजग्यो। —प्रमर चूनड़ी

बिजहारी—देखो 'बिजयहरी' (रू. भे.)

उ०—गढ गरुड़ घनह विसमो ओहू तरगी पाय पातालि पइठउ, पर-बतनइ स्रग बइठउ, उच्चतर पोलि लोहमय कपाट, महाकाय मांगल बिजहारो तरगी पद्धति, यत्र तरगी स्रेणी, ढींकुली तरगी परम्परा,...... । —व. स.

बिजानु-स. पु. [सं. विजानु] तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक।

बिजा-सं. स्त्री—विद्या।

बिजाई स. पु. [सं. विजयिन] १ बराज।

उ०—१ सग्रांमां सभावें बीजुजला कमा आय सामे, रेग धेक घोड़ा नाचे थाबे धमी गोन। न मानें फिरगी हिंदूथांन कोधो नाय-माथे, आपनाम नाज राखो बिजाई 'प्रजीत —नवलजी लालस

उ०—२ मिळे दनाळा फरजा जोई नेजाळा घटा ज्यूं मेघ, नेजाळा मपोही हमें नेग पूगनाल। सबाळी छडाळी आभ छ्राजतो 'सवाईसीव', गाजाता ग्रंबाला ऊठो बिजाई 'गोपाळ' —नवलजी लाळस

वि.—विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

रू. भे.—बिजाई, वजाई।

बिजात-वि. [सं.] १ जिसके माता पिता को जाति अलग २ हो, वर्णं-सकर, दोगला।

२ जन्म लिया हुआ।

३ प्रत्येक चरण मे ५, ५, ४ के विश्राम से १४ मात्राओं का; सखी छंद का एक भेद विशेष जिसके अन्त मे मगण या यगण होता है और पहली और आठवीं मात्राएं लघु होती हैं।

बिजाता-सं. स्त्री. [सं.] १ वह युवती जिसने हाल ही मे बच्चे या बच्ची को जन्म दिया हो।

२ वर्णंसंकर या दोगला की स्त्री।

बिजाति-सं. स्त्री [सं.] १ भिन्न या दूसरी जाति।

उ०—१ नाही है के नव है सोई, ज्यां को आदि अंत नहि कोई। जाति विजाति न भेदाभेद, कहा ध्यान अध्यान को लेदा खेद। —श्रीसुखरामजी महाराज

२ देखो 'बिजातीय'।

बिजातीय-वि. [सं.] १ जो भिन्न या दूसरी जाति का हो।

२ पौष्टिक पदार्थों का अधिक सेवन करने पर शरीर मे अधिक बढ़ने वाला चर्बी आदि पदार्थ।

बिजावत-सं. पु.—राठोड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

बिजासण, बिजासणी—देखो 'मावलिया'।

उ०—अठे गुवाळ री माउ भगो ने घणो ई समजावे पण यो गुवाळ घर मांहे आवे नही। कहे सो आपणा तो घर मांहे बिजासण बैठी रहे है सो हूं घर माहे आवूं तो मोने खाय जाय। —गांम रा धणी री वात

बिजिट-स. स्त्री [अ.] १ भेंट, मुलाकात।

२ किसी चिकित्सक द्वारा किसी रोगी को देखने जाने का कार्य।

३ उक्त कार्य हेतु दी जाने वाली फीस।

बिजिटरसबुक-स. स्त्री [अ. विजिटर्स बुक] किसी संस्था की वह पुस्तक जिसमें वहां आने जाने वाले अपना नाम अथवा सम्मति लिख सकें।

बिजिटिंगकारड-स. पु. [अ. विजिटिंग कार्ड] किसी से मिलने जाने पर अपने आगमन की सूचना देने या परिचय देने का एक कार्ड जिस पर अपना नाम, पता, पद आदि छपे होते हैं।

बिजितास्व-सं. पु. [स. विजिताश्व] राजा पृथु के पांच पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र।

वि. वि.—राजा पृथु और अर्चि के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जिसके शिखण्डिनी एवं नभस्वती नामक दो पत्नियां थी और शिखण्डिनी से पावक, पवमान और शुचि नामक तीन पुत्र और नभस्वती के गर्भ से हविर्धानि और मारीच नामक दो पुत्र हुवे थे। मतान्तर से हविर्धानि शिखण्डिनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ बताते हैं। इसने भी अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया और निन्यानवे अश्वमेध यज्ञ पूरे कर लिये। इससे इन्द्र को अपने पद की चिन्ता हुई और उसने अश्वमेधीय अश्व चुरा लिया। तब इसने इन्द्र से युद्ध कर उसे परास्त कर अश्व वापिस ले आया। ऐसा कई बार करने से इसे 'विजिताश्व' नाम प्राप्त हुआ। इन युद्धों से इन्द्र ने प्रसन्न हो कर इसे अन्तर्धान होने की विद्या सिखायी इससे इसे 'अन्तर्धान' नाम प्राप्त हुआ। इसे अग्नि देवता मानते हैं और वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लिया ऐसा मानते हैं।

बिजिस्वरा-स. स्त्री. [स.] भगवती का एक नाम विशेष।

बिजिनस, बिजिनिस, बिजिनेस—देखो 'बिजनस' (रू. भे.)

बिजियाभखी-स. पु.—शिव, महादेव।

रू. भे.—विजयाभखी।

बिजुळ, बिजुळा, बिजुभळ, बिजुभळा—१ देखो 'बीजूभळ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजुळा—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—केसरी सिव राव 'मालदे' कळोधर, चाडग्रां गुर सदा लग बडां चेळो । विचत्रसाह आलमी आलमी बिजुळा, मरण मिळिये कियो ताळ- मेळो । —माधोदास गाडण

बिजुळी-सं. स्त्री.—१ एक देवी का नाम । (पौराणिक)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजू—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

उ०—कोडां ग्रतज काढिया, पिड थाको प्राणांण । दुरसो बिजू झंखियो, बैठ गयो सुरतांण । —रंगरेळो बीठू

बिजूजळ, बिजूजळा, बिजूझळ, बिजूझळा—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.) (नां. डि. को.)

उ०—१ रत खाळ रळ-तळ पालर प्रग्घळ, हो हुं हूकळ घट्ट हुवै । वळकत बिजुजळ बीजक वट्ठळ, ढोल त्रिमगळ बोम घुवै । —गु. रू. बं.

उ०—२ सांमठी धाक पड साबळांह, बळवळै धार बिजूजळांह । गजबाज गडो-थळ भड गुडत, निरलग श्रंग धड नीजुडत । —गु. रू. बं.

उ०—३ करै करिमाळ झटां पति कांम जळाहळ 'रांम'तणौ 'जगरांम' बिजूजळ झाट करै जिण वार, सुरो 'श्रणंदेस' तणौ' सिरदार । —सू. प्र.

उ०—४ वाजै त्रंबाळ सिंघू विखम दुमग हाक वाजै दळां । वाजियां 'ध्रमौ' सिर बिलंदखां, जळांबोळ बिजूजळां । —बखतो खिड़ियो

बिजूहो—सं. पु.—दूहे-छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ३ गुरु और ४२ लघु होते हैं ।

उ०—बिजू नेत्रां सिव वदो, मास दिवस भर मास । इण विधि छंदो आखियै, भणो महा बुध भास । —पिंगळ सिरोमणि

वि. वि.—देखो 'विडाळ' ।

बिजेत, बिजेता—वि —विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला ।

उ०—१ सळी विजति तत्तिकी, सुख्खति छोलती वहै । बिजेत नेत रेत पै, सजेत बोलती वहै । —ऊ. का.

उ०—२ रिपुग्ग देस्य कंस सी, प्रजेत सुल्लती रहै । बिजेत वीर बंध की, बिजेत घल्लती बहै । —ऊ. का.

उ०—३ श्रौ तो सदा सियावर रौ संगी, श्रौ तौ विस्व बिजेता बजरंगी । इण रो किण हो पार न पायौ रे, हनुमत हरि मन भायौ रे । —गी. रां.

बिजै—देखो 'विजय' (रू. भे.)

बिजैउच्छब, बिजैउच्छव, बिजैउछब, बिजैउछव—देखो 'विजयोत्सव' ।

बिजैकारी—वि.—विजय कराने वाला ।

उ०—देवी कौमारी चामुंडा बिजैकारी, देवी कुबेरी भैरवी क्षेमकारी । देवी श्रगस ब्रह्म हस्ती मयर्ल, देवी पंख केकी गरुड बिरट पंखं । —देवि.

बिजैखार—सं. पु [सं. विजय+क्षार] १ विजयसार का क्षार निकाल कर बनाई गई औषधि ।

२ देखो 'विजयसार' (रू. भे.) (श्रमरत)

बिजैजात्रा – देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

बिजैदसम, बिजैदसमी, बिजैदसम्मी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—वाहनपुर दसरावौ थप्पै, जोसी तिलक मुहूरत श्रप्पै । बिजैदसम्मी होम करावै, विप्रा कन्ना वेद वचावै । —गु. रू. बं.

बिजैमंड—सं. स्त्री. [सं. विजय + मण्ड] विजय की शोभा ।

रू. भे.—बिजयमंड, बिजैमंड, विजयमंड ।

बिजैमाळा देखो 'विजयमाळा' (रू. भे.)

बिजैयात्रा —देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

बिजैलछमी, बिजैलखमी, बिजैलक्ष्मी, बिजैलिछमी, बिजैलिखमी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रू. भे)

बिजैसप्तमी—देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

बिजैसाई—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

उ० -जंडी खुराक व्हैडा ई करार । जांणो ईज हो छिमटी सूं बिजैसाई रिपिया रा आकर मिटाय देता । —फुलवाड़ी

बिजैसातम - देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

बिजैसार—देखो 'विजयसार (रू. भे.)

बिजैसाहो—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

बिजोग—सं. पु.—१ तप्त, गरम । (डि. को.)

२ देखो 'बिजोग' (रू. भे.)

उ०—आठूं दिस पुर ऊजड़ै, पड़े तड़े सब लोग । सभियो मढ बके मड़े प्रज ग्रामड़ै बिजोग । —रा. रू.

३ देखो 'वियोग' (रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ थारो वच्छ्र वाल्हु नही रे, लिण मात्र नो बिजोग तिण कारण माहरा डोकरा रे, विलस काम नै भोग रै । —जयवांणी

उ०—२ प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि वृद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वढ्ढतं सनूर ए । बिजोग सोग रोग विघ्न श्रग्ध सिग्घ घायक, प्रगट्ट देव नित्त सेव सेव पाय नायकं । —व. व. ग्रं

उ०—३ हूं सेवक थी माहिबो हो, सदा रह्यो संजोग । कोइक म्हारा पाप सूं हो, उणरो बिसम **बिजोग** ।

—गी रां.

उ०—४ इसणा आवो रालड़ो, जाणे प्रोग न लोग । कै तो जाणे मन मन, कै निध निसै **बिजोग** । —अज्ञात

उ०—५ कमर नै माल्हौ मूंडो करनै इत्या सुर मे बोली—हकनाक बापड़ा जीव नै मेह री ठायी छुडायो, भोळा मानरिया नै मां री **बिजोग** दियो अर गूमर नै इण बिध लोह सूं पूर करियो ।

फुलवाड़ी

उ० ६ कामी नै कूकर भलो, रति बिन रहै **बिजोग** । कामी नर के काम भो, हरीया सदा संजोग । —अनुभववाणी

उ०—७ माचो बातां व्हैतो तो बिमाण रा लोभ में लुगाई री आ माया छोडनी भळा । काई यो बिजोग देवाा माळ हूं वी चवरी में हाथ मास आग मारे लागो । —फुलवाड़ी

बिजोगई–क्रि वि —निमित्त, लिए ।

बिजोगण, बिजोगणो—देखो 'वियोगणी' (रू भे)

उ०—१ जोबन पिगघर घर भर दोय, **बिजोगण** ऊभी या पिणिहार डुबोवै घर सूरज घट अेक, मसाळ किम घण दूणो भार ।

—माघ

उ०—२ जरै मनसा मणणी मय जाण, करै कायणी काय कै गुजराण । कुमीव कुमण कहां कुमळान, **बिजोगण** पीव मजोगण बाण । —ऊ का.

उ०—३ उत्तर आज म उत्तरइ, बाजइ लहर असाधि । सजोगणी सोहामणइ, **बिजोगणी** घण दाधि । —ढो. मा.

बिजोगाल—देखो 'वियोगाल' (रू. भे)

बिजोगिण, बिजागिणी, बिजोगिन, बिजोगिनी—देखो 'वियोगणी' (रू.भे.)

बिजोगी—देखो 'वियोगी' (रू. भे.)

बिजोरी–सं स्त्री —बिजौर का फल या वृक्ष ।

उ०—सतम प्रहरं दिवस कै, घण जु वाड़िया जाइ । आगै द्राग-**बिजोरियां**, घण छोलइ, प्रिउ लाइ । —ढो मा

बिजोरो—देखो 'बिजोरी' (रू भे.)

उ०—रसं मागुरे री जमीरी **बिजोरा**, भूरं माख फूलां भारि भारा । सनी मी मधु दाग अनार सज्ञा, दियो आलि लवे सुना जालि देखा । —रा. रू.

बिजोळियो—देखो 'बीजोळियो' (रू. भे.)

बिजोहा–स. पु [सं. विमोहा] प्रत्येक चरण मे दो रगण सहित छः वर्णों का एक छंद विशेष । (र. ज. प्र)

रू. भे.—विमोहा ।

बिज्ज—१ देखो 'बीजळी' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बिज्जइ—देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बिज्जमाल, बिज्जमाळा, बिज्जमालि, बिज्जमाली—देखो 'विद्युन्माली' (रू भे.)

उ०—इस मच्छइ रहतू पुर राउ, **बिज्जमालि** तै लहुडउ भाउ । चपलू भगा नइ काढिउ गाइ, रोमि चडिउ राखसपुरि जाइ ।

—मालिभद्र सूरि

बिज्जळ, बिज्जल—१ देखो 'बीजळा' (मह., (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ० १ वपि प्रमद जळ मुख उसग वल्लभ, सूर कर हुइ सीतळ । उण किरण सिम निस जेम ग्रीखम, बिखम हिम द्रुम **बिज्जळं** ।

—रा. रू.

उ०—२ प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टं, इन तल थल उदवट्टं । झलझल विज्जल खड़ग झपट्टं, छट्टा बाण आछट्टइ हो । —वि. कु.

बिज्जा—देखो 'विद्या' (रू. भे)

उ०—१ गुण तक्क कव्व नाडय पमुह, **बिज्जा** नाम पसिद्ध घर । परिहरवि आवि विहि पयइ कइ, पुहवि पससिजइ सुपरपरि ।

—ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ पढे क्रमि आगम वेद छंद, नाटक गण लक्खण । पंच वरिस **बिज्जा** विचार, मणि हूम वियक्खण ।

—ऐ. जै. का. सं.

बिज्जादोस–सं. पु.—१ विद्या या सिद्धि द्वारा प्राप्त किये जाने वाले आहार पर लगने वाला दोष । (जैन)

२ विद्या या सिद्धि द्वारा रूप बदल लेने पर लगने वाला दोष ।

(जैन)

बिज्जाहर—देखो 'विद्याधर' (रू भे)

उ०—१ नमिर सुरासुर खयर राय किन्नर **बिज्जाहर**, मणुय राइ विराय माण पय पकय सुंदर । महिमल महिमामेय मणि वंछित दायक, जय जय थभण पासनाह भुवणत्तय नायग । —स. कु.

उ०—२ दुरयोधन चित्रांगदह, मेल्हावी उहि पत्थि । **बिज्जाहर** रायह नमइ दुरयोधनु लेउ सत्थि । —सालिभद्र सूरि

बिज्जु, बिज्जू—१ देखो 'बिज्ज' (रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

बिज्जूमाली–स पु. [सं. विद्युन्माली] १ पश्चिम मे स्थित एक पर्वत विशेष ।

उ०—आर्ध पुष्कर में पूरब दिसं, मदर नामै मेरु तिहां वसै । पच्छिम **बिज्जूमाली** मेरु ए, दहां किण इतरो नाम फेर ए ।

—ध. व. ग्र.

बिखूर-स. पु.—खजूर का पेड़। (सभा)

बिखै—देखो 'विजय' (रू. भे.)

उ०—राठौड़ कुंमर पक्खर रवद, कवरण (झ) समवड़ करै। जम-दाढ़ छोड़ बिखै लई, कना राउ ग्ररवद रै। —गु. रू. ब.

बिखैवसम, बिखैदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—देवी मनाई बिखैवसम, चतुरंग दळां चढियौ भरगि। कह ताज मेर माफी, 'कमौ, गयौ आजि मेरां सरणि। —गु. रू. ब.

बिख्या-स. स्त्री.—आर्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम चरण में २३ दीर्घ वर्ण सहित ४६ मात्रायें और ११ ह्रस्व वर्ण सहित ११ मात्राऐं इस प्रकार कुल ५७ मात्राएं होती हैं। —ल. पि.

बिझगिर, बिझगिरि-सं. पु.—विंध्याचल पर्वत।

उ०—घरि वौह मंत्र जंत्र चित धारगि, कर इलाज देवी वर कारगि। चव इम सुणी दियै वर चाहै, माता-देवी बिझगिर माहै। —सू. प्र.

बिझासणि, बिझासणी—१ देखो 'मावलियां'

२ देखो 'ग्रावड़'

बिझोहा—देखो 'विजोहा' (रू. भे.)

उ०—दोइ रगण गण देखिजें, पाय जेण संप्रत्त। बिझोहा एही बिगत्ति, तवां रांमगुण तत्त। —पिं. प्र.

बिटंब—देखो 'बिटंब' (रू. भे.)

उ०—१ जे कबहु सतक चलै, तो बोचि बिटब कोई ग्रोर। जन हरिदास मुवा पछै, नहीं कुटंब मे ठोर। —ह. पु. वा.

उ०—२ मया करीनइ मुहनइ, दीधउ देस नीकाल। तिणि खणियी खीण थयु, विरह बिटबइ व्याल। —मा. का. प्र.

बिटंबरण, बिटंबणा, बिटंबन बिटंबना-स. स्त्री.—१ कष्ट, दुःख, पीड़ा।

उ०—१ विरह बिटंबन विधि घणी, मो मइं सहीय न जाय। मुझ मरवानुं सोहिलुं, वाडव म मारं, माय। —मा. का. प्र.

उ०—२ मयरण मरीखइ माधवइ, चिंति लगाडी चाव। वली बिटंबनन् करइ, वारु भई वैभाव। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'विडंबना' (रू. भे.)

उ०—१ प्राणी सीत ज मंत्र ग्रनेमो, कोय बिटंबण कारण केमो। कहतो कोय कुबंण केहेसो, रोह मदोवरि काय रहे सो। —सुरजनदास पूनियो

उ०—२ प्रियु मोरा ग्रचरिज पाम्यउ रांम, प्रियु मोरा ग्रहो ग्रहो कांम बिटंबणा हो। प्रियु मोरा द्रिब हु सारू कांम, प्रियु मोरा ध्यान सुकल हियडइ धरयउ हो। —स. कु.

उ०—३ चचल जोब रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप। कांम बिटबन सी कहुंजी, तै तू जांणइ सरूप। —स. कु.

बिटंबौ-वि.—१ दुःखी, पीड़ित।

उ०—विरह बिटबौ वीनवउं, सुणि किरणागर क्रूर। मेखिइं राशि बाधयु, तु किम चालइ सू? —मा. कां. प्र.

२ लपट।

बिट-वि. [सं. विट] १ अधिक काम वासना रखने वाला, कामुक।

२ वेश्याओं से सम्बन्ध रखने या उन्ही के साथ रहने वाला, लपट।

उ०—वाणिजा वधू गो वाछ असइ बिट, चोर चकव विप्र तीरथ वेळ। सूर प्रगटि एतला समापिया, मिळियां विरह विरहिया मेळ। —वेलि

३ बहुत बड़ा धूर्त या चालाक।

उ०—मोटा छोटा माछळा, ग्राप भर्खं ग्रणपार। बिट वाकी वाकम घणी, ग्राप धरै ग्रहंकार। —गजउद्धार

४ वह जो मैथुन करवाने का ग्रादि हो।

सं.पु.—१ साहित्य मे एक प्रकार के नाटक का नायक,जो विषयभोग मे ग्रपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर किसी भोगविलासी राजा या धनवान व्यक्ति के साथ रह कर ग्रपनी वासना भी मिटाता हो।

२ नारंगी का पेड़।

३ मल, विष्ठा।

४ एक प्रकार का वर्ग विशेष।

उ०—१ नट बिट नाडी ग्रोडणा, ति ग्रावइ त म बारि। धूतो जाइ धूत कौ, उत्तिमनी उगारी। —मा. कां. प्र.

उ०—२ नाचकर, भोजकर, कवीश्वर, करीष वेस्यादि बत, योगि, भोगि, विरागी, नट, बिट, खुर, खरट, नाट, मीठा, जूगनू सिगार, वालहडा, रसिक···। —सभा

रू. भे.—बिट, विट, बिड।

बिटक-स. पु. [म] १ ग्रार्यावर्त के दक्षिण मे स्थित नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश। (पुराण)

२ उक्त प्रदेश में रहने वाली एक जाति विशेष।

बिटचर-स. पु. [सं. विट:=विष्ठा+चर=खाने वाला] गबसूरि, ग्रामशूकर।

रू. भे.—बिटचार।

बिटणौ, बिटबौ-क्रि. अ.—ग्रावेष्टित होना।

उ०—तितरै चोर ग्राया। सो तीन तो तरवार सु पाड़ीया नै हण भात लोह वायो, ग्रागलै जांणीयो नहीं। पछै चौथो पेई वाळो नाठो, तिण नुं छूटी गेडी वाही सु कड़ियां मांहै भागो। गेडी दोळी बिटांणी। —राव मालदे री बात

विटणहार, हारो (हारी), विटणियो—वि० ।
विटियोड़ो, विटियोड़ो, विट्योड़ो—भू० का० कृ० ।
विटीजणो, विटीजबो—कर्म वा० ।

विटप-स. पु. [स. विटप:] १ वृक्ष, पेड़ । (प्र. मा, ना. मा)

उ०—मिल विकट फरस सुमेग रै, निरमूल ग्यायक तेग रै । भिड़पाल गजगत विटप भड़, पिल गदा वभीखण उवरधर । —र. रू.

२ पेड़ या लता की शाखा ।

उ०—विस्णु रूप अवतार परगट पोहमी में आए, सतजुग विकरै जीव उनकूं ग्यान सिखाए । विस्णु वरम परगट कियो ग्यान परम विटप विहृदम, संमरथळ परगट सही जोत रूप जग मझनं । —कोल्हजी चारण

३ अण्डकोष का मध्यस्थ परदा ।

रू. भे.—विटप ।

विटपतटी-स. स्त्री.—कुंज गली । (प्र मा.)

विटपी-सं. पु. [स. विटपिन्] १ जिस वृक्ष में नई शाखायें या कोंपलें निकली हों ।

२ पेड़, वृक्ष । (ह ना. मा)

उ०—छिति रजपूतन छाह रचै, घर घर बितरन रन । जिनमे बहु रान जिम, बढत बहु जिम विटपी वन । —व. भा.

३ वन, जंगल ।

४ वट वृक्ष ।

५ अजीर का वृक्ष ।

रू. भे.—विटपी ।

विटब-स. पु.—प्रपंच, झगड़ा ।

उ०—घरीया भेख भगति सुं भागा, ग्रोर भरम अघकेरा लागा । पेम भगति का कठण पंडा, विटब न कोई मावै फंडा । —अनुभववांणी

विटभूत-स. पु [सं] वरुण की सभा में रहकर उनकी उपासना करने वाले एक असुर का नाम ।

विटळ, विटल-वि.—१ बिगड़ा हुआ, विकार युक्त ।

२ पतित, पथ भ्रष्ट, भ्रष्ट ।

उ०—१ भक्त सन्यासी भेखधारी ए, लग्या परिग्रह री लार के । विटल हुवा घणा ए, गया जमारो हार के । —जयवांणी

उ०—२ अकबर कुटिळ अनीत, ग्रोर विटळ सिर आदरै । रघुकुळ उत्तम रीत, पाळै राण 'प्रतापसी' । —दुरसो आढो

३ व्यभिचारी ।

उ०—ते रात्रेचर अति विटल, विकल वदन विकराल । विखम वचन मुख बोलतो, ऊठो आणि कराल । —वि. कु.

४ दुष्ट ।

उ०—वेलि विहूणा पत्र परि, हूं हुइ छउं हीण । विटल रहि रे वेगलु, आगलि थिका अमीण । —मा. कां. प्र.

५ बिगड़ा हुआ, बिगड़ैल ।

उ०—१ अबै लोक हमसि कंहसी सो ठकुरांणी विटळ है सो ख्याल तमासो देखता थकां ठाकुर नें माहे बुलाय लीयो है आप पधारजै । —राजा रा गुर रा बेटा री वात

उ०—२ परभाता हरि पैल, वगडावत गावै विटळ । चूंथै काती छैल, मैल जगत री मोतिया । —रायसिह सांदू

रू. भे.—विरळ ।

अल्पा. विटळो, विटळियो, विटळो, वियटल ।

विटळणो, विटळबो-क्रि. अ.—१ विचलित होना, अस्थिर होना ।

उ०—अर उठीनै मगरै ढळता ई असवार रो मन विटळियो । माळणो केडो अबूभणो करियो । हाथ आयोड़ी सपत नै ठुकराय दी । बापड़ी डोकरी नो नावधाव की नी पूछया । —फुलवाड़ी

२ मर्यादा रहित होना, कुनीतिपूर्ण होना ।

उ०—अर बात नै मावळ समभता ई राजाजी घांटी रो लटको करता कैवण लागा—नी यूं वना, सावळ समभाया बिना कीकर समभ मे आवै । देखो जमानो विटळियो । सगो बेटी ई मां रै साथै धोखो करयो । —फुलवाड़ी

३ पथ भ्रष्ट होना, धर्मच्युत होना ।

विटळणहार, हारो (हारी), विटळणियो—वि० ।
विटळियोड़ो, विटळियोड़ो, विटळयोड़ो—भू० का० कृ० ।
विटळीजणो, विटळीजबो—भाव वा० ।
वटळणो, वटळबो, विटळणो, विटळबो, वटळणो, वटळबो, विटलणो, विटलबो—रू० भे० ।

विटलणो विटलबो—देखो 'विटळणो, विटळबो' (रू. भे.)

विटलणहार, हारो (हारी) विटलणियो—वि० ।
विटलियोड़ो, विटलियोड़ो, विटल्योड़ो—भू० का० कृ० ।
विटलीजणो, विटलीजबो—भाव वा० ।

विटळाणो, विटळाबो-क्रि स. (विटळणो, विटळबो क्रिया का प्रे. रू.)

१ विचलित करना या कराना, अस्थिर करना या कराना ।

२ मर्यादारहित होने को प्रेरित करना या कराना, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित करना या कराना ।

३ पथ भ्रष्ट होने को प्रेरित करना या कराना, धर्मच्युत होने को प्रेरित करना या करना ।

बिटळणहार, हारौ (हारी), बिटळणियौ—वि०।
बिटळायोड़ो—भू० का० कृ०।
बिटळाईजणौ, बिटळाईजबौ—कर्म वा०।
बिटळाणौ, बिटळाबौ, बिटळावणौ, बिटळावबौ, बिटळावणौ, बिटळावबौ—रू० भे०।

बिटळायोड़ो-भू. का. कृ.—१ विचलित किया या कराया हुआ, अस्थिर किया या कराया हुआ. २ मर्यादारहित होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित किया या कराया हुआ. ३ पथभ्रष्ट होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, धर्मच्युत होने को प्रेरित किया या कराया हुआ।
(स्त्री. बिटळायोड़ी)

बिटळावणौ, बिटळावबौ—देखो बिटळाणौ, बिटळाबौ' (रू. भे.)
बिटळावणहार, हारौ (हारी), बिटळावणियौ—वि०।
बिटळाविप्रोड़ो, बिटळावियोड़ो, बिटळाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिटळावीजणौ, बिटळावीजबौ—कर्म वा०।

बिटळावियोड़ो—देखो 'बिटळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिटळावियोड़ी)

बिटळियोड़ो-भू का. कृ.—१ विचलित हुवा हुआ, अस्थिर हुवा हुआ. २ मर्यादारहित हुवा हुआ, कुनीतिपूर्ण हुवा हुआ. ३ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, धर्मच्युत हुवा हुआ।
(स्त्री. बिटळियोड़ी)

बिटलियोडो - देखो 'बिटळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिटलियोड़ी)

बिटळियौ, बिटळौ—देखो 'बिटळ' (रू. भे)

बिटाणौ, बिटाबौ-क्रि. अ.—सिकुड़ना।
उ०—तेह पुरुस जरजर हवो जी, सिथिल पडी छै जी काय। लोलरी पड़ै सरीर मे जी, चांमडी हाड बिटाय। —जयवांणी
बिटाणहार, हारौ (हारी), बिटाणियौ—वि०।
बिटायोड़ो—भू० का० कृ०।
बिटाईजणौ, बिटाईजबौ—भाव वा०।

बिटायोड़ो-भू का. कृ.—सिकुड़ा हुआ।
(स्त्री बिटायोड़ी)

बिटाळण, बिटाळणौ-वि.—१ लज्जित करने वाला, कलंकित करने वाला।
उ०—सीहणि हेकौ सीह जणि, छापरि मडै आळि दूध बिटाळण कापुरस, बोहळा जणै सियाळि। —हा. झा.
२ भ्रष्ट करने वाला।

बिटाळणौ, बिटाळबौ-क्रि. स.—१ विचलित करना, अस्थिर करना।
उ०—बीरम चित बिटाळियो, उलटी मत आंणी। सात हजारह सांढियां, दिन हेक वगांणी। आबै उण री ओठियां, कळ कूक कराणी। धींगां धींगां ढोलकी, सहवाण बजांणी। —वी. मा.
२ पथ भ्रष्ट करना, धर्मच्युत करना।
उ०—लाजइ राजगोत्र अहिठाण, लाजइ चाचिगदे चहूंआंण। हूं ता नही बिटाळ आप, हिव लाजइ कान्हड़दे बाप। —कां. दे. प्र.
३ कलंकित करना।
४ बदनाम करना, निन्दित करना।
बिटाळणहार, हारौ (हारी), बिटाळणियौ—वि०।
बिटाळिप्रोड़ो, बिटाळियोड़ो, बिटाळ्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिटाळीजणौ, बीटाळीजबौ—कर्म वा०।
बटाळणौ, बटाळबौ, बिटाळणौ, बिटाळबौ, बटाळणौ, बटाळबौ, बिटालणौ, बिटालबौ, बिट्टालणौ, बिट्टालबौ—रू० भे०।

बिटालणौ बिटालबौ—देखो 'बिटाळणौ, बिटाळबौ' (रू. भे.)
उ०—१ लइ हिंदू किया तुरक, विप्र तो मूल बिटाल्या। वणिकं गइ विगति, राक करि लंगरि राल्या। —स. कु.
उ०—२ पिण हुं सीलवती सती रे हां, केम बिटालुं देह। जिम तिम करी ए भोलवी रे हां, राख्यो सील अभग। —वि. कु.
उ० —३ दिवस कित लेकै गयें, गोखें बेठो भूप। मल भूखित क्रसकाय मुनि, दीठो गहूवो रूप। सीख वयण गयो वीसरी, सेवक नें कहै राय। नगर बिटाल्यो इबडे, काढौ परो धकाय।—स्रीपालरास
बिटालणहार, हारौ (हारी) बिटालणियौ—वि०।
बिटालिप्रोड़ो, बिटालियोड़ो, बिटाल्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिटालीजणौ, बिटालीजबौ—कर्म वा०।

बिटाळियोड़ो-भू का कृ.—१ विचलित किया हुआ, अस्थिर किया हुआ. २ पथभ्रष्ट किया हुआ, धर्मच्युत किया हुआ. ३ कलंकित किया हुआ. ४ बदनाम किया हुआ, निन्दित किया हुआ।
(स्त्री. बिटाळियोड़ी)

बिटालियोडो—देखो 'बिटाळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिटालियोडी)

बिटाळो-वि. देखो 'बटाळो' (रू भे.)
(स्त्री बिटाळी)

बिटियोड़ो-भू का. कृ.—आवेष्टित हवा हुआ।
(स्त्री. बिटियोडी)

बिटोप-सं. पु—रण क्षेत्र में सिर पर धारण किया जाने वाला लोह का टोप।
उ०—जिणसाल जुआंण करंत जरादी, जूसण बाधै जम्मजडा।

हुव चौन बिटोप रतावळि हाथळ, मुगाचा करि मिद्ध मगा ।
—गु. रू. ब

बिट्टाळणौ, बिट्टाळबौ— देखो 'बिटाळणौ, बिटाळबौ' (रू. भे.) (उ. र)

बिट्टाळणहार, हारौ (हारी) बिट्टाळणियौ—वि० ।

बिट्टाळिप्रोड़ो, बिट्टाळियोड़ो, बिट्टाळ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिट्टाळीजणौ, बिट्टाळीजबौ—कर्म वा० ।

बिट्टाळियोड़ो—देखो 'बिटाळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिट्टाळियोड़ी)

बिट्ठळ—सं. पु.—१ विष्णु की एक मूर्ति का नाम जो दक्षिणी भारत मे स्थित है ।

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

३ श्री कृष्ण ।

रू. भे. बिट्ठल, बीठळ, बीठ्ठल, बिठळ ।

अल्पा—बिट्ठळौ बिट्ठलौ ।

मह.—बिठळेसर, बिठळेस्वर ।

बिट्ठळनाथ, बिट्ठलनाथ—स. पु.—१ भगवान श्री विष्णु का नाम ।

२ पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी एव 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता' तथा 'चोरासी वैष्णवन की वार्ता' के रचयिता, प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य वल्लभाचार्य के पुत्र ।

रू. भे.—बीठळनाथ, बीठलनाथ ।

बिट्ठळौ, बिट्ठलौ—देखो 'बिट्ठळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बदुरी माहारा बिट्ठळा ! का सिर कापिउ राहु ? हद् गनिउ राहु उदार, तु मुझ देत न दाहु । —मा. का. प्र.

बिठळ—देखो 'बिट्ठळ' (रू. भे.)

उ०—प जो पावत थया पमेळा, बिठळ धाव तो जिसी वेळा ।
—सिवदान बारहठ

बिठळेसर, बिठळेस्वर—देखो 'बिट्ठळ' (मह., रू. भे.) (प्र. मा.)

बिठायत—स. पु.—बैठने का स्थान बैठक ।

उ०—हुवै बारमगळा, नाद सुर हुवै नवाळा, हरख बिठायत हुवै हुवै दरबार भूजाळा । हग हक लजागरा, हुवै घोम्राह धमला, हुवै बाग रूपगा, हुवै सिणगार महलां । —बलतौ खिड़ियौ

बिडग, बिडगक—सं पु. [स बिडुङ्ग] १ अश्व घोड़ा ।
(ध. मा., ना. डि. को.)

उ०—१ बोलै दिन बागा चर्क, तोलै रत खड़ग । धाम्हा साम्हा धाहुड़ै बिडग उपाड़ै बाग । —रा. रू.

उ०—२ पान मोबायता गिळै ऊभो मुराह, बिरोळै घोकळै करै बाहा । बिडग पादेसियो दळै बहळायता, सार पादेसियो पातसाहा ।
—ठाकर हरनाथसिंघ करमसोत रो गीत

उ०—३ गई घवि क्रोध मळाहळ जागि, उभै चख छूटि मळाहळ प्रागि । बिडगक भाळि पवत्रिय वाग, मळाहळ सेल ग्रहै मध्य माग । —सू. प्र.

उ०—४ छछुवा मद रा छाकिया, रहो प्राछा सिरदार । बिडंगा चढीया वीर वळ, मडगा प्राया लार । —पना

२ ऊट । (ह ना. मा.)

उ०—तुरग प्रेक खरचं रतन, लगस तोड़ लडग । प्रभग भूप उबारगा, वड गज बाज बिडंग ।
—कल्याणसिंघ नगराजोत बाढेल री वात

३ वायविडग नामक एक जड़ी विशेष ।

वि.—१ मस्त, उन्मत्त ।

२ बेपरवाह निडर ।

३ प्राजाद, स्वतत्र ।

४ उदासीन ।

५ वीर, बहादुर ।

रू. भे.—बडगी, बिडग, बिडंगि, बिडंगी, बिडगि, बिडगी, बिरणंग ।

मह.—बडग, बिडगाळ ।

अल्पा—बिडगौ ।

बिडगळी—स. स्त्री.—गाड़ी के अग्र भाग (ऊध) से लगे और लटकते हुए से दो लम्बे लकड़ी के डडों में से एक जो जमीन पर लगकर गाड़ी को जमीन से ऊची रखते है ।

बिडगाळ—स. स्त्री.—१ घोड़ी ।

उ०—घणै फेट प्रो भोग सू मेल धोवै, जठी वाग वाळै तठी 'पाल' जावै । बिडगाळ झाकै करै प्राठ वाटा, चलै वायरै दोट सू मेघ छाटा ।
—पा. प्र.

२ देखो 'बिडग' (मह., रू. भे.)

बिडगि, बिडगी—देखो 'बिडग' (रू. भे.)

बिडंगौ—देखो 'बिडग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भला बिडंगा तिणी फोजा वणावौ, भला प्रादमा दळ मुसां प्रणावौ । भला चंचळा ऊरा मोर चाढौ, भला दाणवां विसै वागा उपाड़ौ । —पी. ग्रं.

बिडब—स पु [स. विडब:, विडम्ब:] १ नकल ।

२ कष्ट, पीड़ा, सन्ताप ।

३ हसी. उड़ाने की क्रिया ।

रू भे.—बिडब ।

बिडंबक—वि [स.] १ समान अनुकरण करने वाला, नकल करने वाला ।

२ अपमानित करने या निन्दा करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने वाला।

३ हंसी उड़ाने वाला।

४ कष्ट देने वाला, सन्ताप देने वाला।

रू. भे.—बिडबक।

बिडंबणी, बिडंबबौ—क्रि. स.—१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारना।

२ चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारना।

३ उपहास करना, हंसी-मजाक करना।

४ प्रपंच या जाल फैलाना।

५ उद्वेग या दुःख उत्पन्न करना।

६ वेष बदलना।

उ०—१ मत्स्यदेसि जाई नइ रमउ, ए तेरमउ वरसु निगमउ। म्या वइराटह राय ममयांनि, वेस बिडंब्या नीय अभिमांनी।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राइ बोलावि वह हिडब, अम्हि वसीसइ वेस बिडबि। तुम्हि सिधावउ तायह राजि, समरी आवं अम्हउ काजि।
—सालिभद्र सूरि

बिडंबणहार, हारौ (हारी), बिडबणियौ—वि०।

बिडंबियोड़ौ, बिडबियोड़ौ बिडंब्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडबीजणौ, बिडबीजबौ—कर्म वा०।

बिडंबन, बिडबना—सं. स्त्री. [सं. बिडंबनं, बिडम्बनम्, बिडम्बना]—

१ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने की क्रिया।

२ चिढ़ाने या अपमानित करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने की क्रिया।

३ उपहास, हंसी-मजाक।

४ प्रपंच, जंजाल।

५ उद्वेग, दुःख।

रू. भे.—बिडंबना, बिटबण, बिटबणा, बिटंबन, बिटंबना।

बिडंबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारा हुआ. २ चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारा हुआ. ३ उपहास किया हुआ, हंसी-मजाक किया हुआ. ४ प्रपंच या जाल फैलाया हुआ. ५ उद्वेग या दुःख सपन्न किया हुआ. ६ वेष बदला हुआ।

(स्त्री. बिडबियोड़ी)

बिडंबी—वि. [सं. बिडम्बिन्] १ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारने वाला।

चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल करने वाला।

३ हंसी उड़ाने वाला, उपहास करने वाला।

बिड—देखो 'बिड' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ खसम बिसारया बिड भज्या, बिचार न जोया।
—केसोदास गाडण

उ०—२ जठै पनां बोली मैं तो पांन को बीड़ो छूं, रखावस्यो ही। मन का मनोरथ हुवा थका, बधाइ पावसो हीज। खवास आय कवर ने हकीकत कही। बावनां चंनण के बिडं, ग्रेहै रूप मिलजै तो सही।
—पनां

बिडग्रोजा—देखो 'बिहूजा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बिडणौ, बिडबौ—देखो 'बिडणौ, बिढबौ' (रू. भे.)

बिडणहार, हारौ (हारी), बिडणियौ—वि०।

बिडियोड़ौ, बिड़ियोड़ौ, बिड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडीजणौ, बिडीजबौ—भाव वा०।

बिडद—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—होद लोह गोला मुगल, दोला जोर जुड़िया जंग। हैंवरा गलि गज गाह बांधे रह्या बिडद अभग।
—प. च. चौ.

बिडदड़ी—देखो 'बिड़दड़ी' (रू. भे.)

बिडदबड़ी—देखो 'बिड़दबड़ी' (रू. भे.)

बिडदविनायक—देखो 'बिड़दविनायक' (रू. भे.)

बिडदाव—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

बिडदावळ, बिडदावळी—देखो 'बिरुदावळी' (रू. भे.)

बिडरणौ, बिडरबौ—क्रि. अ.—१ क्रोध होना, गुस्सा होना।

२ नाश होना, नष्ट होना।

३ डरना, भयभीत होना।

उ०—बिडरी अमज 'बिजौ' थियौ वांसे, बाजे हाक थई बिकरोळ। चालां चालणहार न चूकी, खत्रवट लगवाही खेसोल। —नैणसी

बिडरणहार, हारौ (हारी), बिडरणियौ—वि०।

बिडरियोड़ौ, बिडरियोड़ौ, बिडरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडरीजणौ, बिडरीजबौ—भाव वा०।

बिडरणौ, बिडरबौ—रू० भे०।

बिडराणौ, बिडराबौ—क्रि. स—डराना, भयभीत करना।

उ०—१ रोवत-कूकत घूजी माताजी रै गेया, माता लै घूजी नै कंठ लगाया। कांई कांई रे घूजी तनै कुण रुमायो, कांई कांई रे घूजी तनै कुण बिडरायो।
—लो. गी.

उ०—२ मनै म्हारा पिताजी गोद खेलायो, मनै म्हारी माई-मा बिडरायो। तैं नहिं भजियो वाला मैं नहिं भजियौ, भजियां बिना सुख कांय सूं होवै।
—लो. गी.

बिडराणहार, हारौ (हारी), बिडराणियौ—वि०।

बिडरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडराईजणो, बिडराईजबो—कर्म वा० ।

बिडराणो, बिडराबो, बिडरावणो, बिडरावबो, बिडराड़णो, बिडराड़बो—रू० भे० ।

बिडरायोड़ो—भू. का. कृ.—डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री. बिडरायोड़ी)

बिडरावणो, बिडरावबो—देखो 'बिडराणो, बिडराबो' (रू. भे.)

बिडरावणहार, हारो (हारी), बिडरावणियो—वि. ।

बिडराविथोड़ो, बिडरावियोड़ो, बिडराय्योड़ो—भू. का. कृ. ।

बिडरावीजणो, बिडरावीजबो—कर्म वा. ।

बिडराविथोड़ो—देखो 'बिडरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. बिडराविथोड़ी)

बिडरियोड़ो—भू.का.कृ.—१. क्रुद्ध हुवा हुआ, गुस्सा हुवा हुआ. २. डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ. ३ नष्ट हुवा हुआ ।

(स्त्री. बिडरियोड़ी)

बिडरो—वि.—१. कायर, डरपोक ।

२. दुखी, व्याकुल ।

रू भे.—बिडरौ

बिडरूप—वि.—१ कुरूप, बदसूरत, सुन्दरता-रहित ।

उ०—१ बादळ राबमू पे'ला सूवटा रा पीजरा रै गोडै गियो । सूवटा उणनै कागलो मू ई बत्ता बिडरूप निगै आया । आखी गवाड़ी री भळाको दियो । की चोज दाय नी आई ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ उण टेलमटेल पैला रै मार्ग बादळ राज-दरबार में पूगो जणा राजाजी कोजी अर बिडरूप लुगाया री परख करणा मे मगन हा । हेड री हेड ऊभी ही । —फुलवाड़ी

उ० —३ बानै लुट हाया लगतगाय बारै काढो । पछै डावड़ियां नै कह्यो कै सगळी बिडरूप लुगायां नै राज-मैल सू बारै लगड दे ।

— फुलवाड़ी

२ भयंकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ बा दो तीन वेळा मामो रै मूडा सामो जोयी तो उणनै मेंडो लगायो जाणै उणरी आख्यां होठां माथै चिप्योड़ा व्है ज्यू, कान पापरी ठायो छोड लिलाड माथै जुड़ग्या अर नाक ठोडी रै हेटै लटूबै । इण भात मामी रो उणियारो विकत अर बिडरूप क्यू व्हैगो ? —फुलवाड़ी

उ०—२ बिडरूप बनं वसि बदि कुबाति, जागिया प्रेत रणखेत जाति । दरसाव रूप हु कोस दोय, जगमुकट कोच वेरास जोय ।

—सू. प्र.

रू. भे.—बिडरूप, बिडरूपी, बीरूप, वडरूप, बिडरूपी, ।

बिडरूपता—म. स्त्री.—१ कुरूपता, बदसूरती ।

उ०—तद कानो मासो हमनै कंवण लागो—बेटो, औ कुदरत री नेम कै भाटो ई रूपाळी चीज मूं मोह करै अर बिडरूपता सू चिमकै ।

—फुलवाड़ी

२. भयानकता, भयंकरता ।

उ०—निपट मधूक अर अग्यानी व्हैना थकां ई बेटा नै थारै रूप री परख है अर वो म्हारी बिडरूपता सू डरपै । —फुलवाड़ी

बिडरूपी—देखो 'बिडरूप' (रू. भे.)

बिडलूण, बिडलून—स. पु. [सं. बिडलवण] एक प्रकार का सांचर नामक नमक । (अमरत) (उ. र.)

बिडलो—देखो 'बिड़लो' (रू. भे.)

बिडस—सं. पु. [स. बडिश] मछली फसाने का यंत्र विशेष । (अ. मा.)

रू भे.—बडस ।

बिडांण—देखो 'बिड' (१) (रू. भे.)

उ०—चित बाल डरयो तक देख मही, मिळियो सिधराव बिडांण मही, भ्रण लेमिय जागिय माग भणां, पडियो भ्ररडो डर दोड़ घणां । —पा. प्र.

बिडांणो—वि. (स्त्री. बिडाणी) १ भयंकर, भयावह ।

२ पराया, दूसरे का ।

उ०—१ आवड़िया डबर हुई, नयण गमाया रोय । सै साजण परदेसमह, रह्या बिडाणा होय । —ढो. मा.

उ०—२ सारा बिडांणा हित हुवा, जासी हमारा सीम वै । सीस घणा रा हूंचीया, अब आया मूझ चोर वै । —रीमालू री बात

उ०—३ राम नाम निस दिन भजै, तजो बिडांणी तात । जनहरिया नर देह को, औसर बीतो जात । —अनुभववांणी

२ नाशवान ।

उ०—गाफल मूढ न चेतिया, आ देह बिडांणो ।

— केसोदास गाडण

३ अन्य ।

उ०—कता फिरज्यो एकला, किसा बिडांणा साथि । थारो साथी तीन जग हियो कटारि हाथि । —जवडा मुवडा भाटी री बात

४ दुस्मन को शत्रु का ।

उ०—१ मादूनो आपा समो, बियो न कोय गिणत । हाक बिडांणी किम सहै, घण गाजियै मरत । —हा. झा.

उ०—२ सहर गमे व्रत दुज्जड़ा, सहर करै दहवाट । आया थांणा 'अजन' रा, लूट बिडांणा राट । —रा रू.

रू. भे.—बिडाणो, विडाणो, विरांणो ।

बिडांमण—वि.—भयंकर भयावह ।

उ०—रेवतां वाजिया पोड़ रहक, घराघर धुजीय कोम धड़क।
विडांमरण डंबर दीह बिचाळ, मिळै निस भाद्रव नी मेघमाळ।
—गो. रू.

बिडार-सं. पु.—नाश, संहार।

वि —नाश करने वाला, संहार करने वाला।

उ०—अेकण पमर तखत बैं ऊपर, होमल मला मनावी हार।
पगी तरण वाजिया प्रघळा, वडै दुरंग सिर राय बिडार।—द. दा.

बिडारक-स. पु.—बिल्ली, बिड़ाल। (व. भा.)

वि.—नाश करने वाला, संहार करने वाला।

बिडारणी, **बिडारबी**-क्रि. स —१. चीरना, फाड़ना।

उ०—करकं तरवार ग्रहे हिरणाकुम, मूढ़ निरोम निवारमुडै। मुत कै बळ एक मुरार तणो सज, थंभ बिडार निलार थड़ै। —भगतमाळ

२ नाश करना, ध्वंस करना, मिटाना।

उ०—१ तो पिण आपणी उकति सार, असुरां बिडार, धूमर सघार, चंड मुंड चगाळ, रगनबीज, खेगाळ सभ निसभ सहारण, भारथ खग मेरण, तिण री वखाण देवी दीवांण, सुकवि कहै सुणावै परम मन वंछित पावै। —मा वचनिक

उ०—२ जेमल कारण मड जुध, वड सेन बिडारै। तिनका कीर पठावणी, वैकुंठ दवारै। —भगतमळ

उ०—३ निय निय तेज सुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईस मुनेसर। अप्रम सुज तेज प्रगट पूर आराण, विमन तेज भुज देयत बिडारण। —मा वचनिका

उ०—४ रिणमालोत कहै रिण हघा, अचड़ तियागी बोल इसो, जूह बिडार किसो जीव-रखो, केहर हघा साथ किसो। —द दा.

उ०—५ प्रति दिन मंगळ गीत, देवता तणा गुवावै। विघन बिडारण काज, विनायक नूत बुलावै। — दमदेव

ऊ०—६ एकलड गुरुड पन्नग खाइ, सीह एक गज ना सइ घाइ। पारथ एक दल कोडि बिडारइ, ईशह सिउ को नवि मलइ अखाडइ। —सालिसूरि

३ निवारण करना, मिटाना।

उ०—१ हगीया हमतो दन सुं। तोडै कोट किवार। साध बिडारै सबद सुं, भरम करम का डार। —अनुभववाणी

उ०—२ हगीया भांजे बयार कु। हगती मातो मट्ट। साध बिडारै भरम कु सो गातो अनहद। —अनुभववाणी

४ बर्बाद करना, बिगाड़ना।

उ०—मीरा नै रांणाजी बरजै, मतना जन्म बिडारै। थे संगत साध की सीख्या, मत आवो म्हैल हमारै। —मीरा

५ मारना।

उ०—१ काठ कांण करवत्त, बंट किय दंत विहारै। पछट वीर भुज पाण, चीर जुरसंघ बिडारै। —रा. रू.

उ०—२ देवी दसरथ रूप स्रवण बिडारी, देवी स्रव्वण रूप पितु मात तारी। देवी केकयी रूप तै कूड कीधा, देवी रांम रै रूप बनवास लीधा। —देवि.

उ०—३ सिंहमल सिलकिया करमट कूबिया, कटकां हुई ज हालीहाल। सेखा दुरजनसाल समोभरम, रोपो पग बिडारण माल।
—अमरसिंह राठोड़ री बात

६ तोड़ना।

उ०—१ करीउ प्रतिग्या चडीउ भूमि जयद्रथु रणि पाडइ। भूरिस्रवा नउ नीण समइ सरि बाहु बिडारइ —सालिभद्रसूरि

उ०—२ वीर कोडि विहु पांडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भोमि बिडारी। तु विराटनृप भीमि ऊहालिउ, दाउ देविण विलेच्छु मुवालिउ। —सालिसूरि

७ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक करना, दूर हटाना, दूर करना, चीर देना विभक्त करना।

उ०—वन थाहर नाहर वसै, बाहर थाट बिडार। नरवर गुलम समीर विण, न को नमावणहार। —बां. दा.

८ कुपित करना, क्रोधित करना।

९ तितर-बितर करना, बिखेरना।

१० त्याग करना, छोडना।

उ०—१ करिय्या भरम करम क कानै, भरिय्यां भगति भडारी। खरचत खावत सहज खजीना, लालच लोभ बिडारी।
—अनुभववांणी

उ०—२ जामण रा रै जाया, किस विध बिडारी रै छोटी भांण नै। —जीण माता री गीत

उ०—३ हरमा वीर मेरा रै, जै मेरी होती जग तें माय। जामण का रै जाया, अखन कंवारी नै नांय बिडारती।
—जीण माता री गीत

११ उजड़ करना, निरावाद करना।

उ०—चुण्या मजारघा ढह पडै, ढहिया संवारै, भरिया सरवर रीतवै, रीता जळ भारै। सूना देस बसावही, वसिया बिडारै, सीत रखंदा जळ कवळ, थळ आक मधारै। —केसोदास गाडण

बिडारणहार, **हारो** (**हारी**), **बिडाररणियो**—वि०।

बिडारिओड़ो, **बिडारियोड़ो**, **बिडारयोड़ो**—भू० का० कृ०।

बिडारीजणो, **बिडारीजबो**—कर्म वा०।

बिडारणो, **बिडारबो**, **बिडारणो**, **बिडारबो**, **बिडारणो**, **बिडारबो**
—रू० भे०।

विडारियोड़ो–भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ निवारण किया हुआ, मिटाया हुआ. ४ बर्बाद किया हुआ, बिगाड़ा हुआ. ५ मारा हुआ. ६ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, दूर किया हुआ, चीरा हुआ ७ कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ. ८ तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ९. त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ, १० निराबाद किया हुआ, उजाड़ किया हुआ।

(स्त्री विडारियोड़ी)

विडाळ, विडाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—१ जम चोळ भाल विकराळ चख, कळ चाल प्रकट दाढाळ कंध। गोमाळ मिळै प्रीतम रतन, बिना **विडाळ** नाहर बगन्ध।
—वि. स.

उ०—२ बद **विडाळ** नदि गुणाह नलि, मह इकबीस मुणाइ। हार घटै हुइ लुघ हुवै, तिम तिम नाम वसाइ।
—पिं. प्र

विडाळग-वि.—बिल्ली के समान आंखों वाला।

स. पु.—यवन, मुसलमान।

उ०—ममसां चाढ माळ कराळ सकै, घटकै नह चित्त नकाळ धकै। विकसै रणताळ ममाळ वगा, दमकै त्रिजि त्याळ विडाळ-द्रगा।
—मे. म.

रू. भे.—बिडाळद्रग, विडाळद्रग

विडालव्रतिक–वि.—बिल्ली के समान वृत्ति वाला।

रू. भे.—बिडाळव्रतिक, विडाळव्रतिक

विडालाक्ष–सं. पु. [स] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा।

विडाळो—देखो 'बिडाळ' (मत्या., रू. भे.)

विडाव–स. पु.—विशेष प्रकार का दाव।

उ०—मैं इस आगियो महाराज, कोइक डाव-**विडाव** करूं। मार मर्हं बदको मोरजे, मोरजो मार'र पछै मरूं।
—बगनो सिंदियो

विडावणो-वि.—जो सुहावना न हो, अप्रिय, अशांतिकर।

उ०—आवै नहीं ज भात, लागै जिगाज **विडावणो**। रोरावै दिन-रात, रोटघा कारण, राजिया।
—किरपाराम

विडियोड़ो—देखो 'विडियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विडियोड़ी)

विडुद—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

विडूजा–स. पु. [स. विडोजस्] इन्द्र। (अ. मा., ना. मा.,)

रू. भे.—बड्डजा, बिडोजा, विड्डजा, बडूजा, बिडग्रोजा, विड्जा, व्रिडोजा, विडग्रोजा, विडोजा, विडौजा।

विडूजावाह–सं पु [सं. विडोजस + वाहनं] इन्द्र का वाहन, हाथी, ऐरावत।

रू भे—बडूजावाह, बिडोजावाह, विड्डजावाह, बडूजावाह, बिडग्रोजावाह, विड्जावाह, व्रिडोजावाह, विडग्रोजावाह, विडोजावाह, विडौजावाह।

विडूरथ–सं. पु.— १ एक यादववंशी जो श्वफल्क के भाई तथा चित्ररथ के पुत्र थे।

२ दन्तवक्त्र का भाई जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था।

३ एक पुरुवंशीय सम्राट्, जिसे उसकी माता ने, जब परशुरामजी पृथ्वी निःक्षत्रिय कर रहे थे, उस समय ऋक्षवत् पर्वत पर एक ऋषि के आश्रम में छिपा कर रखा था।

४ अनश्वन का पिता, मधुकुल में उत्पन्न सप्रिया का पति और कुरु राजा एवं दाशार्ही शुभागी के समर्ग से उत्पन्न, एक राजा।

विडोजा—देखो 'विड्डजा' (रू. भे.) (ना. डि. को)

विडोळ–वि.—आकार रहित, बिना आकार का।

विडोळणो, विडोळबो–क्रि. स —कम्पायमान करना, कम्पित करना, भयभीत करना।

उ०—अमोल तोल मोल कै, अचोळ चोळ अग्र कै। अडोळ डोळ काघ कै, **विडोळ** नै असह कै।
—ऊ का.

विडोळणहार, हारो (हारी), **विडोळणियो**—वि.।

विडोळिओड़ो, विडोळियोड़ो, विडोळयोड़ो—भू का कृ.।

विडोळीजणो, विडोळीजबो—कर्म वा.।

विडोळियोड़ो–भू. का. कृ.—कम्पायमान किया हुआ, कम्पित किया हुआ भयभीत किया हुआ।

(स्त्री विडोळियोड़ी)

विडौ—देखो 'विडो' (रू. भे)

विडौजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे)

विडौजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू भे)

विडुारणो, विडुारबो—देखो 'विडारणो विडारबो' (रू. भे)

उ०—१ रान राय रनपाळ, राव रहडण रिम राहा। राव कुळप हराय, राव वैरी पनसाहा। राव रोर **विडुार**, राव संमार उघारै। राव गम्म ऊपरै राव इकंतर तारै।
—नैणसी

उ०—२ सळलहर राउ सिरि वघी रेस, दळपत्ति हुअउ सिरि दस्या देस। मडोवर लियउ मल्लेछ मारि, **विडुारि** सत्र सिग्या वहारि।
—रा. ज. सी.

विडुारणहार, हारो (हारी), **विडुारणियो**—वि०।

विडुारिओड़ो, विडुारियोड़ो, विडुारयोड़ो—भू० का० कृ०।

विडुारीजणो, विडुारीजबो—कर्म वा०।

विड़ारियोड़ौ—देखो '**विडारियोड़ौ**' (रू. भे.)

(स्त्री. विड़ारियोड़ी)

विड़णौ, विड़बौ—देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे.)

उ०—मुडिया पिड मैंगळ अम्मि उछंछळ, रावत विम्मळ लडि पडिय। दुजडा दूनै दळ विड़ै सब्बळ, कदळ पेखै रवि खडियं।
—गु. रू. बं.

विड़णहार, हारौ (हारी), **विड़णियौ**—वि०।

विड़िग्रोड़ौ, विड़ियोड़ौ, विड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विड़ीजणौ, विड़ीजबौ—भाव वा०।

विड़ियोड़ौ—देखो 'विढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विड़ियोड़ी)

विढ, विढक, विढण, विढणि—स. पु.—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ छिळ बहत धक धक ग्रछक छक, अतराळ गरळक दुळ दुधक। फोफरडक नद फरक, हुय **विढक** हुक हक, वीरहक।
—र रू.

उ०—२ थर थक्का बलवार **विढण** वयूं वीसरै, लग्ग लोह लकीर नमता नीसरै। बाव फरुकै वेढ वळै नह वापरै, पांणा चढियां किलम जिकै 'परताप' रै।
—किसोरदान बारहठ

उ०—३ अमपति राव चमकि ग्रोटकियौ, सेड़ैचै वाही करि खीज सुकरि आकास हूंत मेलारा, वीजुल **विढण** क वुहौ वीज।
—केसौदास गाडण

उ०—४ इम कहि **विढण** दीध नृप आयस, दळ हालिया वाग पद-मणि दिस। रोस चढै विढिया रखवाळा, ग्रठ छ हजार तेजमिण वाळा।
—सू प्र.

उ०—५ वडो सूर मुदतार रायसिंघ विसरांमियां, **विढण** कुण कवारी घडा वरसी। कूंजरां तणी मोहताद करसी कवण, कवण कोडां तणी मोज करसी।
—दुरसौ ग्राढौ

उ०—६ आलम तइ आयाह विग्रह हुवइ कीधइ **विढणि**। अचळेसर गढ अवळड़े जिव लै मोकळि जाह।
—अ. वचनिका

उ०—७ वूर पड़ि जवूर विहुं घड़, भुरज वीछड़ि पड़ै खडभड़। **विढण** धरि ग्रड़ सुहड़ समवड़, वडवडै पिड चार।
—रा. रू.

विढणौ, विढबौ—क्रि. ग्र.—१ युद्ध करना, संग्राम करना।

उ०—१ग्रादुग्रा चाढतां चकै सावळ ग्रणी, खलना घसळ खत्रवाट ग्राखेट। विढंतां मेस मणगयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट।
—नाथौ सांदू

उ०—२ परठि पांच पौरिस तणी भणणियौ पाखरै, चमरबंध करण नमि वंति चेजौ। विधूसै सैद फुलत्रादि रूका **विढण**, त्रविध घड़ वाग विचि भमर 'तेजौ'।
—तेजसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—३ आया साह ग्रलावदी, **विढ** कटकां सूं वीर। मांझी रिणथंभर मुग्रौ, हठ निरवाह हमीर।
—बा. दा.

उ०—४ सहै खग संभ्रम 'सांमतसाह', विढै 'ग्रनपाळ' करै हय-वाह। सझै करिमाळ झटां समरेस, **विढै** 'करनेस' तणौ 'वखतेस'।
—सू. प्र.

२ लड़ना, झगड़ना।

उ०—एकदा प्रस्ताव। जोईयौ दलौ गुजरात चाकरी गयौ हुतौ भाईयां सूं **विढनै**। उठै गुजरात घणा दिन रह्यौ। ग्रोध वींमाह कियौ, घणा दिन रह्यौ।
—नैणसी

३ भिड़ना, टक्कर लेना।

उ०—रे राक्खस मुझ ग्रागलि बान, मारिसि तउ तूं पूगउ कालु। रूप ऊपाडी बेई **विढई**, दह दिसि गाजइं डूंगर रडइ।
—सालिभद्र सूरि

४ युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुवे मारा जाना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ घसै वरियांम वहै खग-धार, **विढति** सुवण्ण घडंत विहार। नडै हिक सांमां लोह लियंत, दियै हिक पाव चडै गज-दंत।
—गु. रू. ब.

उ०—२ कोटा ग्रोट घणा जुध कीया, फौजा घणा किया पग-फेर। राउ राठोड जिही सूं रोढ़ां, ग्रघ-पत **विढियौ** न कौ ग्रनेर।
—केसौदास गाडण

उ०—३ केतौ बार हुई कछवाहा, घाय मचता धममांगां। दाखै परौ हरी-चंद दूजा, **विढ** पोहौ ग्राव विवाणा।
—जैसिंघ नरूका कछवाहा रौ गीत

उ०—४ भागा साथि न भागौ ग्रणभग, ग्राप विढै भाजिया ग्ररि। केहरि सरगि पहुतौ ग्रणकळ, 'करन' हरौ ग्रखियात करि।
—नाहरखान चौहाण रौ गीत

५ फटना।

६ कटना।

उ०—भुड़ां भिड़ि मल्ल चख्खा विकराळ, काळै ग्रसि ग्रोरंवियौ कळिचाळ। दियं खग भाट 'गिरद्धरदास', **विढै** ग्रसवार सहेत ग्रहास।
—सू प्र.

विढणहार, हारौ (हारी), **विढणियौ**—वि०।

विढिग्रोड़ौ, विढियोड़ौ, विढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विढीजणौ, विढीजबौ—भाव वा०।

विढणौ, विढबौ, विढवणौ, विढवबौ, विड़णौ, विड़बौ, विडणौ, विडबौ, विडढणौ, विडढबौ रू० भे०।

विढाळ—स. पु.—योद्धा।

उ०—**भड़ घनह भाड़ भांगे उपाड़,** रळ मिळ दूठ रिण मिटे कठ, तेगा अनाळ बागौ **बिढाळ,** तिण वयण तात अड नखत्त आन, चल मगन सोर लग गई लोर,······। —र. रू.

बिढियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. २ लड़ा हुआ, झगड़ा हुआ. ३ भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ. ४ युद्ध क्षेत्र में लड़ता हुआ मरा हुआ, वीरगति प्राप्त हुवा हुआ ५ फटा हुआ. ६ कटा हुआ।

(स्त्री. बिढियोड़ी)

बिणग—देखो 'बिहंग' (१) (रू. भे.)

उ०—जे उडळिया 'पाल' नै, भूप तणौ लव भाळ। **बिणग** चढे श्रीगबिया, कोळ दिस ततकाळ। —पा. प्र.

बिणगणौ—देखो 'बिणगणौ' (रू. भे.)

बिणंठणौ, बिणंठबौ—देखो 'बिणट्ठणौ, बिणट्ठबौ' (रू. भे.)

उ०—राम नाम बिना जाणिया, यात **बिणंठी** मूळ। हरीया जब होसी कहा, मन भयो समसूळ। —अनुभववाणी

बिणठणहार, हारो (हारी), बिणंठणयो—वि०।

बिणंठियोड़ौ, बिणंठियोड़ौ, बिणठयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिणंठीजणौ, बिणठीजबौ—भाव वा०।

बिणंठियोड़ौ—देखो 'बिणट्ठियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिणठियोड़ी)

बिण—१ देखो 'बिना' (रू भे.)

उ०—१ कंध वगन रग हाथ खग, मोहा ऊपर गेह। घर हथाळौ **बिण** धरण, गिणे न श्रण सम देह। —जैतदान बारहठ

उ०—२ पट तेज अनोपम वंग पगू, **बिण** कारज तुज्ज बिडग वगू। रमसू कर मोद घणौ रळिया, उण नू असमान री ऊडळिया।

—पा. प्र.

उ०—३ कोकिल सोर मोर नर्डावे करत, नटवर गांन सगीत करै धन। गान गांन द्रुमत मम गावें, ईस्वर **बिण** दुतिया नह आवे।

—सू. प्र.

उ०—४ दीपक **बिण** मंदिर किसौ, यौवन बिण सिणगार। नेह बिना सी प्रीत जिम, तिम कंत **बिण** नार। —वि. कु.

उ०—५ अमुर बांणियौ कुबोल पतसाह मह आगळो, राज **बिण** लखी धरा कणगा राखे। दूसरा 'माल' बरदान तोनू दियूं, 'अमर' मौ काढ जम-दाढ आगे। —केसोदास गाडण

२ देखो 'बण' (रू. भे.)

उ०—१ रज बरघर नट रज गिलय, **बिण** रज भरियौ बट्ट। रज उछाळ गजराज घण, रण बाटै रजवट्ट। —रैवतसिंह भाटी

उ०—२ देवीदास स्रो ठाकुरा नै परणांम कियौ। तद भीतर सूं आवाज हुई—पलक दरियाव तमासौ दीठौ? कुंवर कहै—आपरी किरपा सूं। फेर अवाज हुई—तै आ भगवान री बात किणी नै कही तो **बिण**-सायत थाहरी देह छूटसी, तैसूं खबरदार रहे।

—पलक दरियाव री बात

उ०—३ कृष्ण हाथ कृपा, किया **बिण** आडा कारण। ज्यां आगे अगराज, धरै गजराज न धारण। —रा. रू..

बिणग—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—कारिज कीधूं जोईइ, [विक्रम करइ विचार]। **बिणग** विचक्षण मोकलु, सायद सगति सार। —मा. कां. प्र.

बिणज—स. पु.—१ पकाए हुए मोठे चांवल।

२ सिरहान, सिराई। (बीकानेर का उत्तरी पूर्वी भाग)

३ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—१ ठकुरो साह सरसै माहे रहै। मुद्दय रै सताह रौ छेह कोड नहीं। अर ईयै रै बीजौ **बिणज** कोई तिकै समुद्र माहे जिहाज ठेलै तिका री जोखम श्रो लेवै। इण भांत रहै। —ठकुरै साह री बात

उ०—२ दान भोग बिन धन ज सच्यौ, सैनौ **बिणज** में पाई रे अतकाल में कुटंब न श्रोल्यो, लगा भगड नै जोई रे। —जयवाणी

उ०—३ गुर सिख मिळीया नया हुवै, मिळ अर पाड़ौ वाटि। हरीया खोटा **बिणज** कै, ठग मिळ ल्यावै खाटि। —अनुभववांणी

उ०—४ लख चौरासी हाट मैं, वसत अमोलिक एक। हरीया खोटा जाणी **बिणज** कै, लोया लाभ अनेक। —अनुभव वांणी

रू भे.—बणज, बनज, बिणज, बिनज, बिरज, वणज, विणज,।

बिणजणौ, बिणजबौ—क्रि. स.—१ व्यापार करना, व्यवसाय करना।

उ० –१ **बिणजै** सासू अर बहू, घणे तनपर धूत। ठग नह जो गणिका ठगै, बाणियाणी रा पूत। —बा. दा.

उ०—२ अगाहन भाठे सूं काठी हुवै। विरिया देख' र **बिणजै** नी सो वाणियौ हा गिवार। आतौ काठी करी है। जं जिसौ दिन नहीं आवे। —दसदोख

उ० —३ एक अमोलिक वसत का, विरळा **बिणजणहार**। जनहरीया गो **बिणजसी**, लाहे अंत न पार। —अनुभव वाणी

उ०—४ तन तोला मन ताकड़ो, **बिणजणहार** वचन। राम रतन कू छांडि कै, साध न मचै धन। —अनुभववाणी

२ रुपय कर्ज देना, उधार देना।

३ रुपये का व्यापार में या अन्य कहीं विनियोग करना।

उ०— **बिणजै** व्यापार वनि विवहार, लछमी आप वहै लार। परिघन परिवार पुण्य प्रकार, बोलै बहु जस बाजार।

—घ. व. ग्रं.

बिणजणहार, हारो (हारी), बिणजणियो —वि. ।
बिणजिग्रोड़ो, बिणजियोड़ो, बिणज्योड़ो—भू. का. कृ. ।
बिणजीजणो, बिणजीजबो,—कर्म वा. ।
बणजणो, बणजबो, बिणजणो, बिणजबो, वणजणो वणजबो, बणिजणो, बणिजबो —रू. भे. ।

बिणजार—१ देखो 'बिणजार' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणजारो' (मह, रू.भे.)

बिणजारड़ो—देखो 'बिणजारो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—ग्रला हम बिणजारा पूरं साह का, बिणज करण बोपारो। हम बिणजारड़िया। —दीन सुदरदी

(स्त्री बिणजारडी)

बिणजारण-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की भैंस विशेष।

उ०—सूघो सींघणिया ग्यारा घण सोघं, बिमनी बिणजारण कारण परबोधं। बाल्ही वेगड़ नें वेगड़ दे बाळं, भोळी माळी नें भींडी नें माळं। —ऊ. का.

२ देखो 'बिणजारी' (स्त्री.)

रू. भे—बणजारण, बिणजारण, वणजारण।

बिणजारा—देखो 'बिणजारा' (रू. भे.)

बिणजारियो-सं. पु.—१ देखो 'बिणजारो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ च्यार पहरदा काम है बिणजारिया, तेरा जागण दा छक एहवं। सोवण दी बिरियां नहो बिणजारिया,तुं नांव निरंजन लेहवं। —रैदास धत्तरवाळ

उ०—२ तीजं पहर रैण कै बिणजारिया, तेरा ढीला पडया पुराण वं। काया लीबोनी क्या करं बिणजारिया,गढ भीतरि वस्यो ग्रजाण वं। —दीन सुदरदी

२ देखो 'बिणजार' (ग्रल्पा, रू. भे.)

बिणजारो-स. पु—१ कमजोर जोवात्मा।

उ०—१ रे बिणजारा चूको तूं, फिर फिर क्यू दे कूको। वस्तु भरी पर देस न रै, वेला बिन लद जाय। दुरमत डांणी मार्ग खड़ी, लेसी माल लुटाय। —लोहरिरांमजी महाराज

२ देखो 'बिणजारो' (रू. भे.)

उ०—१ पीछोलो रांणा लाखा री वार माहे किण ही बिणजारं बंधायो, पांणी कोस च्यार रै फेर में छं। —नैणसी

उ०—२ कालो मासी रै पंछी जिनावरा रा इण लांठा कड़ूंबा में फगत इण घोड़ा री इज खांमी ही। मारग.वेवता बिणजारां कना सूं मासी केई कुत्ता बपराय लिया हा। —फुलवाड़ी

उ०—३ घुर तो जावं बोहरा रे, मिलिया ठोडां ठोडां रे। हाकम लटारा रे, बिणजारा सोढारा रे। —जयवांणी

उ०—४ बिणजारण म्रं लोभण, ग्रोरां के पल्लं छं दाम। म्हा रै तो पल्लै कोय नहीं, बिणजारी म्रं। —लो. गी.

(स्त्री. बिणजारण, बिणजारी)

बिणज्ज—१ देखो 'बिणज' (रू. भे.)

२ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—करखी बिणज्ज ग्राकरांणि, पसू चौपदी चरणी। ग्रनेक संपदा उपाउ, लाछि चतुरगणि। —गु. रू. बं.

बिणटूणो, बिणटूबो—देखो 'बिणटूणो, बिणटूबो' (रू. भे.)

उ०—१ जीव बिणट्टा बिणास हुवां पछं गढ बारै नीकळं जिकां रा नेक नांम वे है, ग्ररथात जीव रै तन हे ज्यूं रजपूतां रै गढ है सो मरियां गढ छोडं। —वी. स. टी.

उ०—२ जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नाही ग्रज्ज। माथि त्रिसूळउ, नाक सळ, कोड बिणट्टा कज्ज। —ढो. मा.

बिणटूणहार, हारो (हारी), बिणटूणियो—वि०।
बिणटूग्रोड़ो, बिणटूयोड़ो, बिणटूयोड़ो—भू० का० कृ०।
बिणटूीजणो, बिणटूीजबो—भाव वा०।

बिणटूयोड़ो—देखो 'बिणटूयोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणटूयोडी)

बिणठ्ठो—देखो 'बिणठो' (रू. भे.)

उ०—हे संवळो ग्रांखियां कंवळो जांण मत्त खाये कारण के म्हारे पती सूं ग्रण (वचन) करीयोड़ो हो के-ग्रापनं एकला छोड़ नहीं ग्राप जुद्ध में मारीज सो तो हूं लारं सत करसूं सो ग्राज ग्रौ मोको है तू ग्रांख खायजासी तो नैंण ग्रांख बिणठ्ठो विनां म्हारो ग्रण कोकर देखला इण साफ ग्रांखियां नहीं खाण रो कहे है। —वी. स. टी.

(स्त्री. बिणठ्ठी)

बिणठणो, बिणठबो—देखो 'बिणटूणो, बिणटूबो' (रू. भे.)

उ०—रजा साघवो रोग ऊपनो, बिणठो कोढ सरीर जी। भव ग्रनंत भमी दुख सहती, दोख दिखाडयउ नीरि जी। —स. कु.

बिणठणहार, हारो (हारी), बिणठणियो—वि०।
बिणठिग्रोड़ो, बिणठियोड़ो बिणठ्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिणठीजणो, बिणठीजबो—भाव वा०।

बिणठियोड़ो—देखो 'बिणटूयोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणठियोड़ी)

बिणठो-वि. (स्त्री. बिणठी)—१ खराब, बुरा।

उ०—वलि बिणठी वारं साफ सवार, दंडाकारं कांतार। सात्रव सिरकार, सिंह सिकार, दावौदारं दरबारं। गिण बैठि वेगारं कारागारं, जय सहु ठांमि जयकार। —घ. व. ग्र.

२ बिनष्ट, नाश हुवा हुआ।

रू. भे.—बिणट्ठो।

बिणणी, बिणबो—१ देखो 'बिणणो, बिणबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बणणो, बणबो' (रू. भे.)

उ०—१ अजपा जाप ओंकार एक, ओंकार कमल बिणयौ अनेक। अजपा जाप आसण अवास, सुर-भुवण माहि सब भूत भास।
—पी. ग्र.

उ०—२ असमय बात रिखि आप रिखि, धोम रिखी धनधन। मेघ रिखी रै माहहै, बिणयौ बींद बिगन।
—पी. ग्र.

उ०—३ मरमनी हुंनि बिचा सिरै, बिमळ सकळ कहिजै बिमन। सूर सा नेज बिणियौ सरस, कोड़ि कोड़ि बधतो किमन।
—पी. ग्र.

बिणणहार, हारौ (हारी), बिणणियौ—वि.।

बिणिग्रोड़ो, बिणियोड़ो, बिण्योड़ो—भू. का. कृ.।

बिणीजणी, बिणीजबो—कर्म वा.।

बिणति, बिणती—देखो 'बीणती' (रू. भे.)

बिणपक्ख—स. पु. [सं. बाण-पक्ष]—बाण, तीर। (डि. ना. मा.)

बिण-मणा—वि.—जिसमें किसी प्रकार की कमी न हो, पूर्ण।

उ०—तवो रायो रायो करम अब दाखो तन तणा, महाराजा सीता-वलभ कुळ-मोता बिण-मणा। यरा जैता जगा सहर अक-रगा जग अवं, सकोगाबो जोहा अवस निस-दीहा अज सवे।
—र. ज. प्र.

बिणय—देखो 'बिनय' (रू. भे.)

उ०—हकु अरजुन आगमऊ अनइ करणु होयइ हरालउ, गुर बूवइ बिणियइ लगइ धणुहवेदु दाखउ सरालउ।
—सालिभद्र सूरि

बिणयाणी—देखो 'बणियाणी' (रू. भे.)

उ०—साहरा मळद उपर सलरा बोझावणा, तिण उपर बिणयाणी नै सोहरी वंगाणी। चालीया जावै छै। चालता-चालता आगै मजल आय देरो कोयो।
—रळै गढवै री वात

बिणवाट, बिणवाठ—वि.—मूर्ख। (ध्र. मा.)

बिणसणकाळ—देखो 'विणसिणकाळ' (रू. भे.)

उ०—अकबर नेम प्रमाणै, तहवर महत राज लोभाणै। आयो चित अधोती, बिणसण गा (का) ळ बुद्धि बिपरीत।
—रा. रू.

बिणसणो, बिणसबो—क्रि. अ.—१ नाश होना, नष्ट होना, मिटना।

उ०—जिमि बिलंब बिणसइ काज, कुठाकुरी बिणसइ राज। कुमगति बिणसइ सतान, स्वर पाखइ बिणसइ गान।
—रा. सा. सं.

उ०—२ दीयो नीं व्है जित्तै तो अंधारो रं'वै, पण दीया रै चानणै अंधारा नै बिणसतां कोई जेज थोड़ी ई लागै। चानणा रै समचै ई अंधारो बिणस जावै। फगत इत्ती जेज ई बेटी रै समझणा म लागी।
—फुलवाड़ी

उ०—जीहो काया माया कारमी, जीहो मानो सतगुरु वेण। जीहो जेमो सुपणो रेण। जीहो बिणसतां देर लागै नहीं।
—जयवाणी

उ०—४ जग मोई रग पतग है, बिणसत लगै न बार। नांम रूप अड जाणीयै, ध्यालो मबर कर धार
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—५ जाग्रत में स्वप्न नही पावै, स्वप्न में जाग्रत बिसरैरी। स्वप्न मे जावै न जाग्रन में बिणसै, अनुभव सता करैरी।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

२ बिगड़ना, खराब होना।

उ०—१ जिमि बिलंब बिणसइ काज, कुठाकुरी बिणसइ राज। कुमगति बिणसइ सतान, स्वर पाखइ बिणसइ गांन।
—रा. सा. सं.

उ०—२ जो मत पाछै संचरै, सो मत पहली होय। काज न बिणसै आपणो, दुरजण हसै न कोय।
—अग्यात

३ मरना, खत्म होना।

उ०—सो दोमै सो बिणससी, ऊगै आथमि जाय। जनहरीया सो जनममो, जम लै जासी आय।
—अनुभववाणी

क्रि. स.—४ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—१ तम बिणसण व्हैं बो त्वरित, तेज किरण वण ताप। त्यां दरसण पातल तणां, सबं हरण सताप।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ च्यार जणा नै सुणि चतुर, मोहै जग सिगार। राजा मुहतो वैद रिखि,गरढ पणै गुणकार। गरढ पणै गुणकार, सार बहु बुद्धि रसायण। बिणसै मल्ल वेसीया, गिणो तिम चाकर गायन। करै पणो जो कला, मद्य तोइ किणै न मानै। कहै धरमसी यूं करै, जरा भाड च्यार जणा नैं।
—ध. व ग्र.

उ०—३ दैवज धणु बिणामियौ, कियो ज पाप अपार। मारू तन बिणसियौ, कन रह्यो निरधार।
—ढो. मा.

५ मारना, सहार करना।

उ०—बिणसतां जीव न गिनर न करै जिको, चौथी उट्टीआ दोख ऊपजै तिको। अनुक्रमै च्यार ए अधिक इक एकथी, दोख धरि प्राय-चित लेइ बिवेक थी।
—ध. व. ग्र.

६ बिगाड़ना, खराब करना।

बिणसणहार, हारौ (हारी), बिणसणियौ—वि.।

बिणसिग्रोड़ो, बिणसियोड़ो, बिणस्योड़ो—भू. का कृ.।

बिणसीजणी, बिणसीजबो—भाव वा. कर्म वा.।

बिणसणो, बिणसबो, बीणसणो, बीणसबो, बणसणो, बणसबो, — रू. भे.।

बिणसाड़णो, बिणसाड़बो देखो 'बिणसाणो, बिणसाबो' (रू. भे.)

बिणसाड़णहार, हारो (हारी), **बिणसाड़णियो** — वि.।

बिणसाड़ियोड़ो, बिणसाड़ियोड़ो, बिणसाड़योड़ो — भू. का. कृ.।

बिणसाड़ीजणो, बिणसाड़ीजबो — कर्म वा.।

बिणसाड़ियोड़ो — देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणसाड़ियोड़ी)

बिणसाडणो, बिणसाडबो — देखो 'बिणसाणो बिणसाबो' (रू. भे.)

उ० १ हीरादेवि भणइ चंडाळ, सं मुख देखाडइ तूं काळ। जेह पसाइ कीधां राज, तेह तणउं बिणसाडिउं काज। — का. दे. प्र.

उ० — २ छक देखि खेलोजें एम कहो छ छें, पछतावो जिण काज सही न हुवै पछें। आखर जै घरममोह हवै उतावला, परिहां बिणसाडै निज काज सही तै बाउला। — ध. व. ग्रं.

बिणसाडणहार, हारो (हारी), **बिणसाडणियो** — वि०।

बिणसाडियोड़ो, बिणसाडियोड़ो, बिणसाडयोड़ो — भू० का० कृ०।

बिणसाडीजणो, बिणसाडीजबो — कर्म वा०।

बिणसाडियोड़ो — देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणसाडियोड़ी)

बिणसाणो, बिणसाबो - क्रि स. — १ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना। २ बिगाड़ करना, खराब करना। ३ मारना, खत्म करना।

बिणसाणहार, हारो (हारी), **बिणसाणियो** — वि.।

बिणसायोड़ो — भू. का. कृ.।

बिणसाईजणो, बिणसाईजबो — कर्म वा.।

बिणसाणो, बिणसाबो, बिणसावणो, बिणसावबो, बीणसाणो, बीणसाबो, बिणसाड़णो, बिणसाड़बो बिणसाडणो, बिणसाडबो, बिणसावणो, बिणसावबो, बिसणाड़णो, बिसणाड़बो बिसणाडणो, बिसणाडबो — रू. भे.।

बिणसायोड़ो — भू. का. कृ. — १ नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ, मिटाया हुआ। २ बिगाड़ किया हुआ, खराब किया हुआ। ३ मारा हुआ, खत्म किया हुआ।

(स्त्री. बिणसायोड़ी)

बिणसावणो, बिणसावबो — देखो 'बिणसाणो, बिणसाबो' (रू. भे.)

बिणसावणहार हारो (हारी), **बिणसावणियो** — वि.।

बिणसावियोड़ो, बिणसावियोड़ो, बिणसाव्योड़ो — भू. का. कृ.।

बिणसावीजणो, बिणसावीजबो — कर्म वा.।

बिणसावियोड़ो — देखो बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणसावियोड़ी)

बिणसिणकाळ — सं. पु. [सं. विनाशकाल] — बुरा समय, विनाशकाल।

उ० — क्रूर पिंड वेध वसुधा, अपरा सभेळा भुजभयो उभए। कुसमेत जद्र समयो, बिणसिणकाळ बुद्ध विपरीतो। — गु. रू. बं.

रू. भे. — बिणसणकाळ।

बिणसियोड़ो — भू. का. कृ. — १ नाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ। २ बिगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ। ३ मरा हुआ, खत्म हुवा हुआ। ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, ५ मारा हुआ, संहार किया हुआ। ६ बिगाड़ा हुआ, खराब किया हुआ।

(स्त्री बिणसियोड़ी)

बिणा — देखो 'बिना' (रू. भे.)

बिणाठणो, बिणाठबो — देखो 'बिणटणो, बिणटबो' (रू. भे.)

उ० — खड़िय न खाटो देह बिणाठि फिरि न पवणां पाऊं। अहनिस आवा जाय घटती, तेरी साम ही कसवाऊं। — अज्ञात

बिणाठणहार, हारो (हारी), **बिणाठणियो** — वि०।

बिणाठियोड़ो, बिणाठियोड़ो, बिणाठयोड़ो — भू० का० कृ०।

बिणाठीजणो, बिणाठीजबो — भाव वा०।

बिणाठियोड़ो देखो 'बिणटियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिणाठियोड़ी)

बिणायक — देखो 'विनायक' (रू भे.)

उ० — ......चमन दिइ, जीमूत रिखि छोरु खेलावइ, कांमदेव कटाक्ष बधावइ, वैश्वानर वस्त्र पखालइ, कारत्तिकेय तलारु करइ, चांमुंडा चाउरि संचारि, बिणायक गादह चारि, अनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ, हसिउ त्रिभुव [न] मल्ल महामल्ल रावण। — व. स.

बिणावट, बिणावटी — देखो बनावटी' (रू. भे.)

उ० — पीछै गोपाळदास असवार बूंदी रा वा आपरा हजार च्यार लेय नै मुगळां री फोज में गया। घरां वा पूछियो तद कयो मामलत रा रुपिया लाया छां घोड़ां पर बिणावट थैली दिखायी। तरां मुगळां रै तबू लाई गया। — द. दा.

बिणास — देखो 'विनास' (रू. भे.)

उ० -- १ गोत्र द्रोह थी जम नहीं, नृपद्रोह नीति बिणास। बाल द्रोह थी गति नही, त्रिण्हे करया अभ्यास। — श्रीपालरास

उ० — २ सामी सिर दावा किसा, दावें मांहि बिणास। जुग निरदावै जांणीयै, सोई हरि वा दास। — अनुभववांणी

उ० — ३ पाछा नि घरो ठाकुरें, घिरीया हुवै बिणास। घिरीया वेवू काढिया, दूदो देवीदास। — जैनमाल पुमार री बात

उ०—४ कं नो हर घर लोभ रै कारण पेटा री बात होठा घडै कोनी घर के मायलो धनस ई एक-मेक व्हैगो । मिनखीचारा री सिरै भावनाघा रो बिणास व्हैगो । —फुलवाड़ी

उ०—५ छोकरी वारै आई हाथा लेबनो थकै केवण लागी-लुगाया रो बिणास करिया नो था मिनखा रो पं'ला बिणास व्है जावै इण वास्तै खुद रो स्वास्थ पूरण साऊ थं वानै जीवतो राखो, खुदरै मन रो आणद पोखण साऊ वानै मिणगारियोड़ी राखो । —फुलवाड़ी

बिणासणो, बिणासबो—क्रि. स.—१ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ लोक आखो कहै नही, लडता लिछमी नागै रे । दुख दारिद्र घर म घसै, गुण रा पूर बिणासै रे । —जयवाणी

उ०—२ बितह अनुर स चिततउ, धरतउ मरति अगार । बिलय बिणादि बिणासिइं, हासइ जीव गमार । —जयसखर सूरि

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ बल थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल । बानर बाघ बिणासियो, एकलडइ सीयाल ।

—प. च. चौ.

उ०—२ खिण इक मा तै पकडि बिणास्यो, तीखण कठिन कुहाडै । याड्रम आचरणादिक ताइस, फल तेहनै न गमाडै ।

—वि. कु.

उ०—३ दतरा मे गुजरात रिय रो कुळोधर, उतराध रो वजीर, लिछमी रो निवास, मांभी दिगपाळ, कुमेर बोलियो—आगै ही लकापति रावण सीता री चोरी करी ले गयो । तरै आप चत्रभुज मांनवी देह धार नै बिणासियो । —मा. वचनिका

उ०—४ असुर बिणासी किउ वणगारू, इहि लोकि हउ जगजय-कार । इह तण, ए कीध काज, अमर बिणासी लीधउ राज । —सालिभद्र सूरि

३ बिगाड करना, नुकसान करना ।

उ०—ताहरा राजाजी भोपत ऊपरि वहण लागा । ताहरा राणीजी जसवतदेजी राजि मं बीनतियो । राज दोहरा को हुवो, हू जाइ घर भोपति नूं ले आविस । ताहरा राणीजी चढि चढिया । चढि नै नागोर पधारिया । आगै देखै तौ भोपतिजी किण ही रो बिणा-सियो मर्गं नही उजाडियो बैठा छै । —द वि.

४ बुरा करना ।

उ०—देवज धण बिणासियो, कियो ज पाप अपार । माक तन बिणासियो, कत रह्यो निरधार । —ढो मा.

बिणासणहार, हारो (हारी), बिणासणियो—वि० ।

बिणासिओड़ो, बिणासियोड़ो, बिणास्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिणासीजणो, बिणासीजबो—कर्म वा० ।

बिणासणो, बिणासबो—रू० भे० ।

बिणासियोड़ो—भू. का कृ.—१ नष्ट किया हुआ. नाश किया हुआ. २ मारा हुआ. ३ बिगाड़ किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ ।

(स्त्री बिणासियोडी)

बिणासो—देखो 'विनासी' (रू भे.)

बिणासु—देखो 'विनास' (रू. भे.)

उ०—पडव तणउं चरीतु जो पढए, जो गुणइ मभलए । पाप तणउ विणासु तसु रहइ, ए हेला होइसि ए । —सालिभद्र सूरि

बिणि—१ देखो बिना' (रू. भे)

उ०—१ बिणि रोटी बिणि लाकडी, बिणि पाणी बिणि पाळ । परचो पगु परमेरवा, थल्य बैठो प्रतपाळ । —सुरजन जी

उ०—२ नल राजा बिणि, सरवि विख्यात मा [हारि] पिता अनि ना भ्रात । मद हास्य करी रा उच्चरि 'नारी, मूरखता आदरि ।

—नळाख्यांन

उ०—३ बिणि ठोडि रहै जायो कठं, धणी पहचि दातार धण । बि ण रूप रेख बिणि दिसि वसै, निमो निमो तु नारीयण ।

—पी. ग्रं.

उ०—४ हैतम दान करि मन कहि, अमर धुन्नि बे वयन गनि । दीठो न कोइ रवि चक्र नगि, अलावदी सुलतान बिणि ।

—प. च. चौ.

रू. भे—बणी, बिणी ।

बिणियांणो - देखो 'वणियाणी' (रू. भे.)

उ०—माऊ इण मनवार मै, रग वीनै रात । परतांनै दारू पीवसा, गै बिणियांणी जात । —पना

बिणियोड़ो—१ देखो 'वणियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बिणियोडी)

बिणो—देखो 'वणी' (१) (रू. भे.)

उ०—ठाकर री नार म्है तौ खुणिया सूधा हाथ जोड़नै कह्यो थायी थारै वेम मूं बिणियां रै खेत बारै काढ —फुलवाड़ी

२ देखो 'बिणि' (रू. भे.)

बिणीयाणो—देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

उ०—वाणियो तो चुप रह्यो । सूता भाख फाटी । तद उठिया । तणै सारा सु पेहली रळो उठि नै पोठियो एकलै होज लादियो ।

पछे वांणियां ही लादियौ। हमैं बिलीयांणी कहे,बेटा, पोठियै चाढौ।
—रतनै गडवै री बात

बिणु, बिणू—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ निहसै वूठौ घण बिणु नीळांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधै किरि ग्रहणा लसइ।
—वेलि

उ०—२ जिण दीध जनम जगि मुखि दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, स्रम कीधा बिणु केम सरै।
—वेलि

उ०—३ विरह बियापी रयण भरि, प्रीतम बिणु तन खीण। बीण अलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही बीण।
—ढो. मा.

उ०—४ कंती अनु द्रौपदी म्र कधि करीउ मारगि चलावइ, कुंती जल बिणू तूंछोड तेहि हिडंब जलु लेउ आवइ। —सालिभद्र सूरि

बिणोकड़ो, बिणोखड़ो—सं. स्त्री. [सं. वाणियष्टि] कपास का पौधा।

रू. भे.—बिणोकडो, बिणोखडो।

बिणोद, बिणोदि—सं. पु.—१ एक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ रगण होते हैं।

उ०—आठ रगण आवै उचित, पायै एह प्रमाण। गुण बिणोद इणि भांति, गणि वदि लखपति वखाण।
—ल. पि.

२ देखो 'विनोद' (रू. भे.)

उ०—१ फाग गाइजै छै। फाग खेलीजै छै। नाचीजे छै। हास बिणोद कीजै छै। हास रस हुइ नै रहीयौ छै। फागोटां रा मुख सवाद लीजै छै। घरि घरि बसंत राग हुलरावीजै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ रंग राग बिणोद बिसातरयं बहुयं, चडि चाडति सुंदर मिदरयं सहुयं। मिण माणक कुंदण कंकणमं दिपत, मोताहळ हार विभूखणय वणित।
—गु. रू. बं.

उ०—३ राग छत्तीस तरग अनग, रूप अनूप अनोपम रग। बोलीजै सुख निस-वासर, आणद गीत बिणोद अवसर।
—गु. रू. ब.

उ०—४ चितइ चतुर म चितवउ, घरतउ अरति अपार। विखय बिणोदि विणासिइ, हासइ जीव गमार। —जयसेखर सूरि

बितंड—सं. पु. [सं.] १ हस्ती, हाथी।

२ घोड़ा, अश्व। (अ. मा., डि. को., ह. नां. मा.)

उ०—तेजी बितंड ऊडंड तेव, विख्यात वाग अख्यात वेव। परवत पंख पवन प्रचंड, एराकी पिठ खुरसाण खंड। —गु. रू. बं.

३ सूरज, सूर्य।

४ चटखनो।

वि.—१ जबरदस्त, जोरावर।

२ मनमौजी, मस्त।

३ मूर्ख।

४ पागल।

५ उद्दण्ड, झगड़ालू।

उ०—बसू प्रचंड दडते प्रचड दंडते वहे, बितंड चंड दंड दे अदंड छडतै वहैं। विमोह मोह मोह मैं विद्रोह द्रोहियं वढै, कृतांत भांत कोह मैं कुकोह कोहिको कढैं। —ऊ. का.

रू. भे.—बयड, बितड, बितुड, बेतंड, बेतुंड, बइड, बयंड, बितुंड।

बितंडमुख—सं. पु. [सं. वितण्डः+मुख] गजानन, विनायक।

रू. भे.—मुखबयंड, बयंडमुख।

बितंडा—सं. स्त्री. [सं. वितण्डा:] १ अपने मत की स्थापना करने हेतु दूसरे पक्ष को दबाने की क्रिया।

२ व्यर्थ का झगडा या कहा सुनी।

यौ—वितंडावाद।

बितंडावाद—सं. पु. [सं. वितण्डा+वाद] १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ दूसरो के पक्ष को दबा कर अपने मत की स्थापना करने की क्रिया।

३ व्यर्थ का झगडा या कहा सुनी।

रू. भे.—वितंडावाद।

बितंती—देखो 'वितत' (रू. भे.)

उ०—सुराचार घटारव तार साजै, वणै नौबती सोभती गीत वाजै। विराजै मुखावाय तती बितंती, वदै आरती राग वांणी वणती।
—रा. रू.

बित—वि. [सं.] चतुर, निपुण, ज्ञाता।

सं. पु. [सं. वित्त] १ मवेशी, पशुधन।

उ०—१ ओजी हुं आज चूक अवमांण, वर्क नह वेद मुखां ग्रहमांण। जावै बित ऊभां मंझ जीवार घरा नह छोळ दियै इंद्रधार।
—गो. रू.

उ०—२ सं. १५५३ रा बरसाद काळ पडीयो। घास चारो नही मेह थोडो वूठो। बित घणो मुवो। पड रा गांवां में तथा थळ में मिनख गोळ तर नै ढोर चारवा नै नई पड रा घास चार मे आवै, उणां ऊनाळू रा गावा मे कोमीटा, नै साव बाजरी।
—मारवाड़ री ख्यात

उ०—३ रावळ भीम जेसळमेर पाट छै। ऊहड़ गोपाळदास रै बेटै उरजन, भोपत, मांडण, पोकरण रा गांव घणा मारनै बित लै नीसरिया। —नैणसी

उ०—४ घठे जैत सिकार रमतो आयो, वास छोडीया थका । सु जैत रै नीजर प्रमवार आया, मादीया घोडा लीया । नाहरा चाकर नूं बोलायो, "मादीयो कैरांरा ?" नाहरा रैबारी १ साथ हुंतो । तिहारा नोड चडीयो परवाडै मारो आवै छै । नाहक सू रैबारी कहीयो "मादीयो राजवीया छै । सु नोड न घाडवी जोगो छै, तु रैबारो मार नै नोड लेवा । सु तोट मैह रै चौखल रै कैड री, हथ बिहथी कांबडी, नवहथी भोजणी । चौखल फारहो भंजनो नहा भेलो । नोर त्रिहाग नो काम आयो । देखो जैत नूं मुसपाल मांहै घातीयो, पूरै माह पडीयो, मु लोहा री छाक मांहै गम नही । अचेत थको नू हकार ल्यायो । सु अचेन थको नाहरा बोलै, नाहरा कहै, "राजा रो वित जावरा न पावै । —जैतमाल पुमार री वात

२ धन, दौलत, द्रव्य, सम्पत्ति ।

उ०—१ मद कोई बडा नो मोटा हुना, सु तिकै तो जाय कही देस रै राजा रै चाकर रह्या । अर छोटो बेटो रजपूत नाभै । ऊ पण गोरो हतो । घर वित काई हुतो सो मरब खायो ।

—बूढो ठग राजा री वात

उ०—२ बारवधू ही हरगा वित, नेह जणावै नेण । सिर लेवा ऊभरै, बैरी मीठा बेण । —बां. दा.

उ० ३ मुजन वित देगो लेगो, कौन गाय मगार है । हरगा दुख कहै मता, मात-पिता रघुबीर है । —र. ज. प्र.

उ० —हरीगा मुन वित बीह भया, मिमता अब अघाय । कीडा हामी करम का, चुडिक्ष चुडिग्र तन खाय । —अनभववाणी

रू. भे. —वित, वित्त, बीत, वत, वितु, वित्त ।

अल्पा. —वितडो, वितडो ।

वितकर्‌—स. पु.— कपट, धोखा । (अ. मा.)

वितड़णो, वितड़बो—क्रि. अ.— विकारयुक्त होना, विकृत होना । (दूध, दही आदि)

वितड़णहार, हारो (हारी), वितड़णियो—वि० ।

वितड़िओड़ो, वितड़ियोड़ो, वितड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वितड़ीजणो, वितड़ीजबो—भाव वा० ।

वितड़ियोड़ो—भू. का. कृ.— विकारयुक्त हुवा हुआ, विकृत हुवा हुआ । (दूध दही आदि)

(स्त्री वितड़ियोड़ी)

वितडी—स स्त्री. —देखो 'वित' (अल्पा. रू भे)

उ० —दादू कहै ऊगो आवै त्यौं जाइ विचारी । विलसो वितडी न माणै मारी । —दादूबाणी

वितड़ो—देखो 'वित' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सतगुरु दीया राम धन, रहै सु बुद्धि बनाइ । मनसा वाचा करमणा, विलसै वितडै खाय । —दादूवांणी

वितणो, वितबो—देखो 'बीतणो, बीतबो' (रू. भे.)

उ०—वितए आमोज मिळै नभि वादळ, प्रथी पंक जळि गुडळपण । जिम सतगुरु कळि कलुख तणा जग, दीपति ग्यान प्रगटै दहण । —वेलि

वितणहार, हारो (हारी), वितणियो—वि० ।

वितिओड़ो, वितियोड़ो, वित्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वितीजणो, वितीजबो—भाव वा० ।

वितियोड़ो—देखो 'बीतियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. वितियोड़ी)

वितत—स. पु. [स वितत] १ तांत अथवा तार वाद्य ।

२ मृदंग व ढोल आदि वाद्यों से उत्पन्न होने वाला शब्द ।

रू. भे. —वितती ।

विततपक्ष—सं. पु.—१ एक पक्षी विशेष । (सभा)

वितत्य—स. पु [स.] गृत्समदवंशीय विहव्य ऋषि का पुत्र और सत्य का पिता, एक ऋषि ।

वि वि —इसे कहीं-कहीं राजा भी कहा गया है ।

वितथ—सं. पु [सं.] १ मिथ्या, झूठ, असत्य । (ह नां. मा)

२ भरद्वाज ऋषि का एक नाम । ये दुष्यन्त के गोद गये हुए थे और इनके पुत्र का नाम मन्यु था ।

वि वि —कहीं-कहीं ऐसा लिखा भी मिलता है कि ये दुष्यन्त-पुत्र भरत राजा के गोद गये थे । ये बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण थे किन्तु बाद में क्षत्रिय हो जाने के कारण इन्हें "ब्रह्मक्षत्रिय" भी कहते हैं । अनेक पुराणानुसार, भरत राजा ने भरद्वाज ऋषि को गोद नहीं लिया था बल्कि उनके वितथ नामक पुत्र को गोद लिया था और इसे भरत राजा के गोद देने के बाद भरद्वाज ऋषि स्वयं वन चले गये थे ।

रू. भे — वितथ, वितथ ।

वितदाता—स. पु. पिता । (अ. मा.)

वि —धन देने वाला, दातार ।

वितस्तु—स. पु. [स.] १ पंजाब की झेलम नदी का एक नाम ।

२ एक यादव, जो यादवों के सात प्रधानमंत्रियों में से एक गिना जाता है ।

वितपन्न—वि [स व्युत्पन्न] शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता । (मा. म)

वितरक—वि [स]वितरण करने वाला ।

स. पु. [सं. वितर्क] १ एक तर्क के बाद दिया जाने वाला दूसरा तर्क ।

उ०—तरक न प्रतरक्य कपि करत बितरक यांमें, धरक गिरि प्ररक उर धरक प्रमरेस कै। दलित पहार हलमलित सुमेरुधार, दिग्घस-पतस्व प्रस्वचलित दिनेस कै। —ना. द.

२ संदेह, शक।

३ एक राजा जो कुरुवंशीय धृतराष्ट्र का पुत्र था।

बितरन—सं. पु. [सं.]—१ दान। (ह ना. मा.)

२ अर्पण करने की क्रिया।

३ बांटने की क्रिया।

४ दान देने की क्रिया।

रू. भे.—बितरण, वितरन।

बितरणवांन, बितरणवांनो—सं. पु.—दातार, दानी। (अ. मा.)

बितरणो, बितरबो—क्रि. स.—१ अर्पण करना।

३ बांटना, वितरण करना।

४ दान देना।

५ पुण्य करना।

बितरणहार, हारो (हारी), बितरणियो—वि०।

बितरिप्रोड़ो, बितरियोड़ो, बितरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बितरीजणो, बितरीजबो—कर्म वा०।

बितरणो, बितरबो, बितरणो, बितरबो—रू० भे०।

बितरदन—सं. पु. [सं. वितर्दन]—रावणपक्षीय एक राक्षस।

बितरन—देखो 'बितरण' (रू. भे.)

बितरां—क्रि. वि.—इतने में।

उ०—बितरां मांहे मारवणीजो विलंब करता पांन बीड़ो आरोगता सहेलीयां संघाते प्रावण लागी। —ढो. मा.

बितरित—वि. [सं.] १ बांटा हुआ।

२ दान दिया हुआ।

३ अर्पण किया हुआ, अर्पित।

बितरेक—सं. पु—एक उपमालंकार विशेष जिसमें उपमेय में (उपमान की अपेक्षा) उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाने के द्वारा उपमेय की उत्कृष्टता (विशेषता) का वर्णन हो।

क्रि. वि. [सं. व्यतिरिक्त]—छोड़ कर, सिवा, अतिरिक्त।

बितरेकजथा—सं. पु. स्त्री—डिंगल में गीत रचना का वह नियम जिसमें व्यतिरेक अलंकार हो। (क. कु बो)

बितळ, बितल—सं. पु [सं. वितल]—१ सात पातालों मे से तीसरा पाताल। (पौराणिक)

उ०—१ सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठ नि पिट्ठि भर। घर धुज्जि तळातळ तळ बितळ सेस सलस्सल छुड्डि घर। —ला. रा

वि वि.—उक्त पाताल में शिवजी को हाटकेश्वर कहते है। इन्हीं की शक्ति से हाटकी नदी निकलती है जिसे वहां की वायु से उत्पन्न अग्नि देव पीते हैं और पुनः फुफकारने से हाटक (सोना) निकलता है।

२ पाताल।

उ०—बहळ ससियळ धमक सायळ, वहै कळकळ प्रबळ बीजळ। वहै चक्कळ दळतळ बितळ चळचळ, मगळ भळ धमळ मंगळ। बिढै सूर व्रजागि। —सू. प्र.

वि.—नीच, अधम, पतित। (अ. मा.)

बितसारू—अव्य. यथाशक्ति।

उ०—अवनी में जिके भलाई आया, करै सदा सुकरत रा कांम दान सदा बितसारू देवै, नित रसणा लेवै हरिनांम। —र. रू.

बितस्ता—सं. स्त्री. [सं.] पंजाब की झेलम नदी का एक नाम।

बितांन बितांनक—सं. पु. [सं. वितानं या वितानः] १ विस्तार, फैलाव।

उ०—१ उठै बै दळ जोध अकारा, माझ सरीर तणा भ्रम सारा। कहि गंगा तन मजन कीधा, दान बितांन मान करि दीधा। —रा. रू.

उ०—२ चौसलि चालता सकट स्खलइ, लोक तणा मन धरम ऊपरि वलइ। नदी महा पूरि प्रावइ, प्रथ्वी पीठ प्लावइं नवा किसलय गहगहइ, वल्ली बितांन लहलहइ। —रा. सा. स.

२ बड़ा चन्दोवा।

उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन बितांन वणाए। चिग पड़दासू पाल चमंकै, दामण जांण सिळाउ दमंकै। —सू. प्र.

उ०—२ मिळ थाट लुटै अमीर हिम जड़ित भूखण हीर। तारख सरखत बितांन, मूंकेस जरियसि मांन। —सू. प्र.

३ यज्ञ, हवन। (अ. मा, ह. ना मा)

४ सूर्य, सूरज। (नां. मा) (क. कु बो.)

बितांना—सं स्त्री [सं. वितान] भौत्य मन्वन्तर के बृहद्भानु अवतार की माता।

बिताणो, बिताबो—देखो 'बिताणो बिताबो' (रू. भे.)

उ०—अरण आग्याकारी मूझ नायक अवध, अवध बितानै वेग आवां जांनकी! रहोला अठै मो जनक रे, जनक रे कना पोहचाय जावां। —र. रू.

बिताणहार, हारो (हारी), बिताणियो—वि०।

बितायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिताईजणो, बिताईजबो—कर्म वा०।

बितायोड़ो—देखो 'बितायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बितायोड़ी)

बिताव-वि. [सं. वि+ताव]—मंद, ठंडा, नम्र. जोश या क्रोध रहित ।

उ०—धनि सोचै पतसाह घणानै, मिरग मज्या मिरग सारंगवानै उठ रहियौ मन भाग घलगै, गुडी जाग भ्रमै गयणगै । ऊभा वाम बिजमती घागी, नाव बिताव लखै त्याटगी । —रा. रू

बितावणौ, **बितावबौ**—देखो 'बिताणौ, बितावौ' (रू. भे.)

बितावणहार, हारौ (हारी), **बितावणियौ**—वि० ।

बितावियोड़ौ, बितावियोड़ौ, बिताव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बितावीजणौ, बितावीजबौ—कर्म वा० ।

बितावियोड़ौ—देखो 'बितायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बितावियोड़ी)

बिति-स. पु. [सं] १ तुषित अथवा साध्य देवों में से एक ।

उ०—समुद्र भुजादंडि तरीइ, तीक्ष्ण खड्गधारा संचरीइ, निरास्वाद वालुकापिंड कवलीइ, पंचमेरु पंचांगुलि तोलीइ, लोहमय चिणा दांत बिति चावीइ, वज्रानलज्वाला मुखि पीजइ, आकाश निरालंब चडेवउ...... । —व. स

बितिक्रम—देखो 'व्यतिक्रम' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिम लच्छ प्रच्छ में कलित भई रिन विच राजधानी मानी मन मापी को । करम्मचारी बितिक्रमी करम्मसब बितिक्रम बिरायव चवन बितिक्रम ऊथापी को । —ऊ. का.

बितिक्रमी—देखो 'व्यतिक्रमी' (रू. भे.)

उ० अस्टचत्वारिम लच्छ प्रच्छ में कलित भई, रिन विच राजधानी मानी मन मापी कौ । करम्मचारी बितिक्रमी करम सब बितिक्रम, बिरायव चवन बितिक्रम ऊथापी कौं । —ऊ. का.

बितिपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

बितिहोतर, बितिहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.)

बितीत, बितीति—देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—१ तद दिन तौ बितीत हुवौ, रात पड़ी । तठै ठकरै रै बेटै नै सूतै नै जानीयां उठाय नांखीयो समुद्र । तिकौ ईयै नु एकै मछी गिलीयौ । —ठकुरै गाह री बात

उ०—२ गैमव सु ज सिसिर बितीत पायौ मह, गुण गनि मनि धनि एह गिणि । धाप नमो परिगह लै आयौ, तरुणापो रितुराउ तिणि । —वेलि

उ०—३ प्रभा नहना नाति सो चद्रमा को गई । जब राति बितीत होण लागी । तब चद्रमा जिसो दीसै छै । जिसो भरतार असमाध्या थका नारी को मुख देखिजै । —वेलि टी.

उ०—४ म्हारौ गुजस अमर, 'करणावत', बासुर जग बहु हुवै बितीत बाबारियौ पापड़ौ बिढतै, बैराड़ियो नहीं बडनीत । —द. दा.

उ०—५ यौ वहतां मग आवतां, ग्रीखम हुवौ बितीत । मिटिया मुख महराब रा, घायो धरा 'अजीत' । —रा. रू.

बितीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

उ० —साचरै मेल सिसपालनां सांमटा, अपसकुन घनै अवजोग थया एकटा । दसामूळ भद्रा बितीपात महूरत दीयौ, क्रमियौ काळ चंद्रकाम सनमुख कीयौ । —रुकमणी हरण

बितीपाती—देखो 'व्यतीपाती' (रू. भे.)

बितंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

उ०—प्रचंड लोट पिंड कै धकै प्रचंड कै परै, बितुंड तुंड लौं भगै त्रभंड व्है भरै । अजोध कुप्पि कै अघात घप्पि देपरैं, महा गरूर-पूर सूर दूर दूर तै मरैं । —ऊ. का.

बितुंडावाद—देखो 'वितंडावाद' (रू. भे.)

बितु—देखो 'वित्त' (रू. भे.)

उ०—वाहण वखारि आपणी, ऊतरिनां तै सेठि । आवि देवाह आगणइ, बितु करंता वेठि । —मा. कां. प्र.

बितोड़णौ, बितोडबौ-क्रि. स.—तोडना ।

उ० —घघ घरै करि द्वेस, वात में हेत बितोड़ै । आप कियौ तै अवल, वनै पर किया विछोड़ै । —ध. व. ग्र.

बितोड़णहार, हारौ (हारी), बितोड़णियौ—वि० ।

बितोड़िओड़ौ बितोड़ियोड़ौ, बितोड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बितोडीजणौ, बितोडीजबौ- कर्म वा० ।

बितोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ—तोड़ा हुआ ।

(स्त्री बितोड़ियोड़ी)

बितोल-वि [सं.वि + तुल]अतुल्य, बलशाली ।

उ०— घुमाव तोल गोल को प्रघत्त बोलतो घलं, हगोळ गोल धोलदं चदोळ बोलतो हलं । विथ्य जनेच्छनी अचोळ गोळ धोलही बहै, सतोल तोल तोल में बितोल तोलनी बहै । —ऊ. का.

बित्त-स. पु [सं] १ कृशुभि नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य ।

२ प्रतर्दन देवों मे से एक ।

३ सुख देवों मे से एक ।

४ देखो 'वित्त' (रू. भे.)

उ०—१ क्याही कर वाहरो हुवै, क्याही कर व्है मित्र । क्याही कर चाकर हुवै, बणिक हरेवा बित्त । —बां. दा.

उ०—२ तिण समय माहै तेजसी उठै गयौ । तरै उण तीनै ही उमरावै आपणा होज विचार नै उण बित्त रा च्यार हिस्सा कीया । एक हिस्सो लै तेजसी नु दीयौ । —राव मालदे री बात

उ०— ३ खिन जामिय ऊपर पाय सहो, नभ सूरज चद भुगोळ नहो । जिदगाव लेजामिय बित्त जठै, कह 'पान' वत्तामिय मूह कठै ।

—पा. प्र.

विद्द—१ देखो 'विदा' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्ध' (रू. भे.)

उ०—नरांक कोप मल्ल रा, कोटिक्क मौत कांकरां। रजी धरक्क विद्द ऐं, पूरण (मा) कै चंद ऐं। —गु. रू. बं.

विद्दत-सं. पु. [ग्र. वहदत] ग्रद्वैत-भाव।

उ०—महदी री ग्रौलाद सूं ग्राल बहोत है। महदी रै वंश रा पीरजादां कनै महदवियां रा दीन री किताब है। पठांणा महदवी विसेस है। कुराण रा हदीस रा मरा री विद्दत मेटण महदी जनमियौ मह दवी कहै। —बां. दा. ख्यात

विद्दमांन—देखो 'विद्यमांन' (रू. भे.)

विद्दा—देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—सत्तोल बोल मुक्ख दक्खे, मेलेवा ग्रत्रं-घोड। साहिजादै माथै विद्दा हुग्रौ, हिंदू-पत्ती राठोड। —गु. रू. बं.

विद्दस-वि.—१ जो कठिनता से सहा जा सकै।

२ देखो 'विदुस' (रू. भे.)

उ०—गुण सागर दुस्तर ग्रगाध, ग्रति बाध ग्रपारण। वेळ निजर विद्दसां, ग्रसह कवि भ्रमर ग्रकारण। —रा रू.

विद्ध्स—देखो 'विध्वंस' (रू. भे.)

विद्धंसण—देखो 'विधुसण' (रू. भे.)

विद्ध-सं पु.—१ कलह, झगडा।

उ०- 'सख' तजो दळ समर, रैण वंट कहिक रखावो। तजै विद्ध कुळ तणो, मिळो चित खत मिटावो। —सू. प्र.

२ युद्ध, समर।

उ०—गया राव राठोड, विद्ध देवै परपूरण। प्रेत सिला भरि पिंड, पीर रिण हुहुइ ऊरण। —गु. रू. बं.

वि. [स.]—१ बीच में से छेद किया हुग्रा।

२ जिसमें बाधा पड़ी हो, बाधाग्रस्त।

३ जिसको चोट लगी हो।

४ देखो 'विध' (रू. भे.)

उ०—तनि ग्रोप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जळद विद्दति प्रकास। ग्रति चलति सुगति दुति ग्रमित विद्ध। पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा. रू.

विद्धि—१ देखो 'विध' (रू. भे.)

उ०—करि ग्रठ जगण बत्रीस कल, वरण वीस चत्र विद्धि। गति इणि मोतीमाळ गुण पणि लखपत्ति प्रसिद्ध।

—ल पिं.

२ देखो 'विधि' (रू. भे.)

विद्यमांन-वि. [स. विद्यमान] उपस्थित, मौजूद।

उ०—१ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगि जीत सरव विद्या जिनै। विजयहरख विद्यमान सिस्य तिनकै सही, परिहां कवि धरमसी उपगारै दभ क्रिया कही। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ कल्याणमल पुत्र महाराजाधिराज श्रीरायसिंघजी विद्यमान, तत्पट्टाभिसेक महाराजकुमार चिरंजीवी कुंवर श्रीदळपतजी विजयराज्यं तत्स्यात्मज सभाश्रृंगारहार कुंवर श्रीउदयसिंघ, कुंवर श्रीसबळसिंघ, कुंवर तुळसीदास सहित सरवे चिरंजीयात्। —द. वि.

रू. भे.—विदमान, विदमांन, विद्दमान।

विद्यमानता-स स्त्री. [स. विद्यमानता] विद्यमान होने का भाव, उपस्थिति, मौजूदगी।

विद्य-सं. पु —१ महर्षि विश्वामित्र के कुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार,

२ देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—दुपदी नु नचावणहार, ए वृहन्नट कलासिणगार। ग्रस्वबध एह वीर नकीजइ, ग्रस्व विद्य सघली हरइ हईह। —सालिसूरि

विद्या-स स्त्री. [सं.] १ शिक्षा ग्रादि के द्वारा मिलने वाला ज्ञान।

२ मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि दिलाने वाला ज्ञान।

३ दुर्गा देवी का नामान्तर।

४ दुर्गा देवी का मंत्र।

५ सीता की एक सखी का नाम।

६ वैदिक साहित्यानुसार तीन वेदों के ज्ञान का एक देवता।

७ चौदह की संख्या।

८ इल्म, हुनर, कला।

उ०—ग्यारू सिरदार उण सूं धीजग्या हा। पूछ्यौ, केम गुरुड़णा तौ थां री पीळ्यां री ग्रेलम, पछै उठै कांई नवी विद्या सीखणा सारू गियौ। ऊंचां पाचणा सूं मड़ण री सीखनै ग्रायौ दीसै।

—फुलवाड़ी

८ जादू, मंत्र।

उ०—१ हिवै थे राज सभो भात रागीया। ठाम ठांम ग्रापो ग्राप री खिजमत मैं सावधान रह्या। घरनी रजपूता नुं भळाई छै। म्हां मैं विद्या छै म्है गवरि करि ग्रावा। लोका कह्यौ भला, म्है वासली जावता करिस्या उवे तिन्है गावळ्यां हुइ नै उडीया उडत्यां उडत्यां ऊवै गाम ग्राया जेथ स्यामंदिर परमोज नै रह्यो तौ, तेथ तीयै घर ऊपरि ग्राय बैठ्या। —स्यामसुंदर री बात

उ०—२ जतर-मतर टांणा टूणा, कामण टूमण जाणं। वीर मूठ विद्या बोहूतेरी, ग्रानम देव ग्रजाणं। —ग्रनुभववांणी

९ किसी विशेष व गम्भीर विषय का विभाग या शाखा।

१० किसी विषय का व्यवस्थित ज्ञान।

११ व्यापार या विशेष कार्य को संचालन करने का ज्ञान।

१२ आर्या छन्द का भेद विशेष, जिसमें २३ गुरु और ११ लघु अर्थात ३४ वर्ण या ५७ मात्राएँ होती हैं।

१३ निसांणी छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें प्रत्येक चरण मे ३ गुरु और १७ लघु अर्थात २० वर्ण या २३ मात्राएँ होती है।

उ०—वीणा, लीला, विप्र, कुंआरी, वीणा, रसी, वर्णी, वारि। विद्या, गाळा, वाळा, वाम, नीसाणी रा बारा नांम। —पि. प्र.

रू. भे.—विज्ञा, विजा, विदिया, विदीया, विद्या, विध्या।

१४ देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—१ तद बीकेजी वा कांधळजी मुजरो कर जोधपुर सूं विद्या हुवण री त्यारी करी। नारां मंडळंजी अर बीदेजी वा कामदारां आय रावजी नूं कयो, "महरबांन, म्हारें तौ आपरी ठोड़ कंवर बीको है, सू म्हे तौ बीकै सागे रहस्यां। —द. दा.

उ०—२ गांव ४१ बरसलपुर लारै त्या। गांव ८४ बीकूंपुर लारै रावियां। पीछै यां व्यारांई ठाकरां नूं मील रा सिरपाव देयनै विद्या कीया। व्यार घोड़ा दिया। —द. दा.

उ०—३ बणारण उदास सो जाय भीतर भरमल नूं कहयौ, जो प्रोहित घरज कराई छै-हलाणी कोई करै नही। मनें विद्या हुई छै. सो कागद लिखावज्यो। इन रो सुण भरमल अति उदास हुई। —कवरसी सांखला री वारता

विद्यागाथा—देखो 'विद्या' (१२)

विद्यागर—सं. पु. [सं. विद्या + गृह] विद्या पढ़ाने का स्थान, पाठशाला।

विद्याचंद्र—सं. पु. [स. विद्याचन्द्र] सुदरिद्र नामक ब्राह्मण के एक पुत्र का नाम।

विद्याचारण—सं. स्त्री २८ प्रकार की लब्धियों में से दसवीं लब्धी का नाम।

उ०—१ जिण लबधि प्रभावै उडी जाय आकास, तै जघा विद्याचारण लबधि प्रकास। जसु वचन सरापै मिरत में घेह थाय, ए लब्धि इग्यारमीं आसी विलय कहाय। —वृन्त

उ०—२ ......संभिन्न स्रोतो लब्धि जघाचारण विद्याचारण लब्धि अक्षीणमहाणसी लब्धि क्षीरास्रव लब्धि मध्वास्रव लब्धि, बीज-बुद्धि, कोस्टबुद्धि, पादानुसारिणी लब्धि। —ब म.

विद्याता—देखो विधाता' (रू. भे)

विद्यातानाथ—देखो विधाता' (रू. भे.)

उ०— बस सपतास छब गात दीअ वर्ण, बयानें जगत गज लाल वाता। अरोहक दुवौ आराध नीली ऊडंड, हद घड़ै विद्यातानाथ हाथां। —माधोसिंह सिसोदिया रो गीत

विद्यातीरथ—सं. पु. [सं.] वह प्राचीन तीर्थस्थान जहां स्नान करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

विद्यादान—सं. पु. [सं. विद्यादान] विद्या पढ़ाने का कार्य।

विद्यावाता—सं. पु [सं विद्यादातृ] विद्या पढ़ाने वाला, शिक्षक।

विद्यादेवी—सं. स्त्री. [सं] १ सरस्वती।

२ सोलह जिन देवियों में से एक। (जैन)

विद्याधन—सं. पु [सं.] १ विद्या रूपी धन।

२ अपनी विद्या द्वारा उपार्जित धन।

विद्याधर—सं. पु. [सं.] १ एक देवयोनि विशेष। (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ जिण सभा रै मांहै ब्रह्मादिक सिवादिक इंद्रादिक आद तेंतीस कोड देवता इठ्यासी हजार रिख विद्याधर गंध्रप जक्ष आद देस देस रा राजा बैठा है तिण बखत स्रीरघुनाथजी लिछमणजी रा बखाण स्रीमुख सूं किया। —र. रू.

उ०—२ घरत घ्यांन चारन विद्याधर, करत गांन गुन अप्सर किन्नर। गुह्यक यक्ष रक्ष गंधरबह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरबह। —मे म.

२ कवि, पंडित। (अ मा.)

उ०—१ विद्याधर वड वखतावर, महियल मैं हो महिमा महिमाय। राउ राणा मोटा राजीया, पुहवीपति हो लागै जसु पाय। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ गुण गजबंध तणा कव गावै, दूरस परायण श्री दरसावै। आम धरै विद्याधर आया, कवि सुज हमतीत्रध कहाया। —रा. रू.

उ०—३ दांन कै प्रमांण हुई राजा नं कै पांण, मेघ कै मंडांण कहा मानूं मेहराण देस देस के विद्याधर सूत मागध बंदीजण, आसा धर आए सो भए पूरण। —रा. रू.

३ एक रसोपधि विशेष। (वैद्यक)

४ काम शास्त्रानुसार एक आसन, रति-बन्ध।

५ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते है और कुल बारह अक्षर होते है।

उ०—मगण च्यार पायै मही, बूझव आखर बार। सेस कहै रूपक सरस, विद्याधर विसतार। —पि. प्र.

रू. भे —विज्जाहर, विदियाधर, विद्याधरु, विद्याधारी।

विद्याधररस—सं. पु. यौ. [सं.] वैद्यक मे एक प्रकार का रस विशेष, जो कि पारे, गंधक, तांबे, सोंठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि के सम्मिश्रण से बनता है।

(स्त्री. विथारियोड़ी)

बिथित--देखो 'व्यथित' (रू. भे.)

बिथुरणौ, बिथुरबौ देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तेल सिंदूर बिथुरियं, सुनही असवार ममत अंराकं । चामुंड सुत लथरिय, खेत्राधीसर तुभ्यौ नमः । —मा. वचनिका

उ०—२ प्यारी के चिहुर बिथुरे मांनो मांनो धाराधर को स्याम घटा उनई, ता मध्य पहुप छुटि परैं ते में बड़ी बड़ी बूंदें । लाल सारी पहिरैं हरी कोर मघायनिमो घूंघट करि चली, पीठ पाछैं ते तरकं कचुकी तनीकी फूंदें । —मीरा

उ०—३ दूनौं तटा जु नदी उपरि वही छै सु जांणे चोटी बिथुरी छै । बिथुरी कहै तें । प्रथी जु स्त्री त्यें नें धाराहर मेघ जब भरतार मिळीयौ छै । तब चोटी बिथुरी । —वेलि टी.

उ०—४ पाका दाडिमां का बीज । यु छिटकि पड़्या छै । एही वसंत पाट बैठे नैं निवछावळि कीया छै । मु ए मानुं नग जवाहर बिथुरे छै । और यु भांति भांति का फळ व्रखां के बिखे लागा छै । —वेलि टी.

बिथुरणहार हारौ (हारी), **बिथुरणियौ**—वि० ।

बिथुरिम्रोडौ, बिथुरियोड़ौ, बिथुरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिथुरीजणौ, बिथुरीजबौ -भाव वा० ।

बिथुरियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिथुरियोड़ी)

बिथ्य—सं पु. [सं वीथि] पथ, मार्ग, रास्ता ।

उ०—घुमाव लोल गोळकी प्रथम बोलती घलें, हगोळ गोल घोल दें नगोल नोलती हलें । बिथ्थ जंतरछनी प्रचोळ गोळ घोलही वहैं, मनोल तोल तोल सें बिनोल नोलती वहैं । —ऊ. का

बिदंड—स. पु.— द्रोपदी स्वयंवर मे अपने पुत्र दण्ड के साथ उपस्थित एक राजा ।

बिद—स. स्त्री. [स. विद:] १ जानकार, पंडित, कवि । (अ. मा.)

२ वेद ऋषि के पिता, एक प्राचीन ऋषि ।

३ देखो 'विध' (रू भे.)

बिदकणौ, बिदकबौ—क्रि. अ.— चौंकना, चमकना ।

उ०—मूळी कोभी, कटहल, ओगणां री त्याग ! जावै जठीनै ही रात मिळैं । हमैं जद चोढ गो चीरै । चालै तो खोलो सो भाजै, दडबडाट ऊपडै । बोलै तो गधा बिदक जावै । —दमदोस

बिदकणहार, हारौ (हारी), **बिदकणियौ**—वि० ।

बिदकिग्रोडौ, बिदकियोडौ, बिदक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिदकीजणौ बिदकीजबौ—भाव वा० ।

बिदकाउ—देखो 'बिदकौ' (रू. भे.)

बिदकियोड़ौ—भू. का. कृ.—चौंका हुआ, चमका हुआ ।

(स्त्री. बिदकियोड़ी)

बिदकौ—वि. (स्त्री. बिदकी) बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ ।

रू. भे.—बिदकाउ ।

बिदग, बिदग्ध—देखो 'वीदग' (रू. भे.)

बिदग्धछप्पय, विदग्धछप्पय—स. पु.—पयोधर छप्पय का दूसरा नाम, जो ४४ गुरु और ६४ लघु अर्थात् १५२ मात्राओं का होता है । (पि. सि.)

बिदग्धता—स. स्त्री. [स. विदग्ध:+ता. प्र.] पांडित्य, विद्वता ।

बिदग्धसाकल्य—स पु. [स. विदग्धशाकल्य] १ विदेह जनक की राजसभा मे, याज्ञवल्क्य के साथ वाद-विवाद करने वाला एक आचार्य, जो पूर्व नियोजित शर्तानुसार, वाद-विवाद में पराजित होने के कारण, मृत्यु को प्राप्त हुआ था ।

२ एक आचार्य, जो वायु के अनुसार व्यास की यजु:शिष्य परंपरा मे से याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य था ।

बिदग्धा—स. स्त्री [स] १ हंगितादि के साथ पर पुरुष को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली परकीया नायिका ।

२ चातुर्य से युक्त देवी ।

बिदग्धाजीरण—स. पु. [सं विदग्धाजीर्ण] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का अजीर्ण रोग ।

बिदगा—सं. पु. [स विदग्ध:] १ कवि ।

उ० जै जगा सबद बिदगा भणै, वयणै राजा वांमहा । लाखीक खडै अकबर लियां, 'दुरगै' दक्खणा मामहा । —रा. रू.

२ पंडित ।

रू भे—बिदग ।

बिदत—१ देखो 'विद्युत' (रू भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

बिदरसब, बिदरस्व—सं. पु.—तरंत एवं पुरमीढ नामक राजाओं का पिता, एक राजा ।

बिदमांन—१ देखो 'विद्यमांन' (रू भे.)

२ देखो 'विद्वान' (रू. भे.)

उ०—मोटोड़ा मायो ई नाक मे गुणगुणावतो—क्यू नी सा इंगरेजी बोलणो काई बडी बात है, मास्टर बडा बिदमांन है । कितरा तो इणां नै फनमी गाणा आवै अर कितरा इणां नै नाच आवै । —अमरचूनड़ी

बिदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे)

उ०—मत कर, मत कर बिदरंग थारो भेस, सूलं रै केसां ना फिरै ।

आय मिळेगो थारो स्यांम, दिन दमनै, झूरझुर ना मरै।
—मो. गी.

बिदर—१ देखो 'बिदरी' (रू. भे.)

२ देखो 'बिदुर' (रू. भे.)

उ०—१ बोलां में ओछा बिदर, मोलां में नह मोट। पोला मे 'परताप' रै, गोळा वाळी गोट।
—ऊ. का.

उ०—२ बडा जो न करत बिदर, जग मांहि जगजीत। अमल नगल गो ऊघड़न, रूपापो किण रीत।
—बां. दा.

उ०—३ बिदर बहादर बाजबा, कड़ बांधै केवांण। कर जोडण लटका करण, बिदर न छोडै बांण।
—बां. दा.

उ०—४ प्रथम बिदर पूजिया, मान केकइ मनां मैं, पीव मरण पामिया, पूत वामिया बनां में। पछै बिदर पूजिया पडव कैरवां सदाइ, माहू माहू कट मुवा, दिलो जीवता न पाइ। बिदर नै पूज बगडावतां,जैचंद 'पीथल' जूझीया, 'मोकमा' कमध मोटा मिनख, जिकै बिदर नै पूजिया।
—अरजुनजी बारहठ

उ०—५ पै'ला पेट वधाय पछै बिदरो परणीजै, दुलहो नावै दाय पेर फस जावै बोजै। दूध चूडै दोवडे कदै नह लागो काय, नाकारो नह करै जेण कुळ पद जो जाय।
—अरजुनजी बारहठ

(स्त्री. बिदरांणी, बिदरी)

बिदरण—देखो 'बिदीरण' (रू. भे.)

बिदरणो, बिदरबो—देखो 'बिदीरणो, बिदीरबो' (रू. भे.)

बिदरणहार, हारो (हारी), बिदरणियो—वि०।

बिदरियोड़ो, बिदरियोड़ो, बिदरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिदरीजणो, बिदरीजबो—भाव,कर्म वा०।

बिदरभ—सं पु. [स. विदर्भ] १ नोखडाधिपति ऋषभदेव के नौ पुत्रों में से एक, जो राजा भरत के भाई और निमि के पिता थे। अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा को इसी की कन्या मानते हैं।

२ आधुनिक बरार प्रदेश का एक प्राचीन नाम। (सभा)

उ०—दखिण दिसि देस बिदरभति दीपति अति कुंदणपुर, राजति एक भीखमक राजा, गिरहर आंहि नर अमुर सुर।
—वेलि

वि. वि.—यहा के राजा भीष्मक थे। रुक्मिणी उनकी पुत्री थी। जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी। राजा नल की पत्नी दमयन्ती का पिता भी इसी प्रदेश का राजा था।

३ एक राजा, जो यदुवंशीय ज्यामघ राजा का पुत्र था।

वि. वि.—नारदपुराणानुसार इसका पैतृक नाम 'काश्यप' था और इसकी माता का नाम 'शैव्या' या 'चैत्रा' औशिनरी था। इसका विवाह भोजराज कन्या उपदानवी या भोज्या से हुआ था, इसी से इसे कुश, क्रथ, रोमपाद आदि पुत्र और कौशिनि एवं सुमति नामक दो पुत्रियां प्राप्त हुई थी जो सगर राजा को ब्याही गई थी।

४ कार्तवीर्य अर्जुन का मित्र एक राजा, जो परशुराम द्वारा मारा गया था।

५ एक ऋषि का नाम। (पुराण)

रू. भे.—बिदर, बिदरभ, बिदरभति, बिदभ, बिद्रभ।

बिदरभजा—स. स्त्री. [स. विदर्भजा] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का एक नाम।

२ विदर्भ नरेश भीष्म की पुत्री और निषधदेश के राजा वीरसेन के पुत्र नल की पत्नी दमयंती का एक नाम।

३ श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणि का एक नाम।

बिदरभति—देखो 'बिदरभ' (रू. भे.)

बिदरभराजतनया—स स्त्री. [स. विदर्भराजतनया] दमयन्ती और रुक्मिणी का एक नाम।

बिदरभा—स. स्त्री. [स. विदर्भा] विदर्भ देश की राजधानी।

उ०—निमख रो विलब रो नाथ अवसर नथी, स्रीकस्ण मांगीयो आण रथ सारथी। स्रीकिसन ब्राह्मण तीसरो सारही, बिदरभा नगर ततकाळ आया वही।
—रुखमणी हरण

रू. भे.—बद्रभा।

बिदरभि—सं. स्त्री. [स. विदर्भि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बिदरभि कौंडिन्य—स. पु [स विदर्भिन्+कौंडिन्य] वत्सनपात बाभ्रव्य का शिष्य और गालव का गुरु, एक आचार्य।

बिदरांणी—स. स्त्री—दासी, सेविका।

उ०—रजपूताणी रहै रिजक बिन, धरम पतिव्रत धारी रै। बिदरांणी पड़दा में बैठी, किसब कमावै सारो रै।
—ऊ का.

बिदरियोड़ो—देखो 'बिदीरियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिदरियोडी)

बिदरी—सं. स्त्री.—१ हुक्का।

उ०—ताठा उपरायत हुका री होस कीजै छै। चाकरां नै हुकम हुवो छै। हुका तयार कीजै छै। किण भातरा हुका छै? सोनै रा, रूपै रा, बिदरी, नारेळ ठाटा पाणी सूं भरजै छै। नीचै सुथरा बिछायजै छै। ऊपर हुका मेलजै छै। तमबा सरद कीजै छै।
—रा. सा सं.

२ देखो बिदुर' (स्त्री.) (स. मा.)

बिदरोह—देखो 'बिद्रोह' (रू. भे.)

बिदरोही—देखो 'बिद्रोही' (रू. भे.)

बिदळ, बिदल—सं. पु. [सं. वि.+दल] १ पेशेवर हीजड़ा।

२ शत्रु-सेना ।

उ०—धाडं पुकार पड़ लाखि धाड़, रवि उदय अस्त लग पच राड
सालुळै बिवळ कंदळ ससत्र, रग सेल खगं न मिटै रगत्र ।
—रा रू.

३ एक राक्षस, जो काशीनगर में पार्वती द्वारा गेंद प्रहार से मारा गया था ।

[स.] लाल रंग का सोना ।

बिवळणौ, बिवळबौ—क्रि. स—दलित करना, नष्ट करना ।

बिवळणहार, हारौ (हारी), बिवळणियौ—वि० ।

बिवळिप्रोड़ौ, बिवळियोड़ौ, बिवळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिवळीजणौ, बिवळीजबौ—कर्म वा० ।

बिवळियोड़ौ—भू का. कृ.—दलित किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।
(स्त्री बिवळियोड़ी)

बिदल्ल—सं. पु—ध्रुवसन्धि नामक राजा का मन्त्री ।

बिदवता देखो 'विद्वता' (रू भे.)

बिदवांन—देखो विद्वांन' (रू भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

बिदवौं—वि—सुन्दर, मनोहर ।

उ०—जंगळ जाळा माथ, छा रघौ बिदवौं वेलां । फूलां चियां फळीज, भिळोरा भिलवं केलां । गूदी रंग गिलोय, पिलूंदी पमरै चढणं । ऊट फोग जड ऊग, पगोठा देवं वढणं । —दसदेव

रू. भे—बिदवौ ।

बिदवेस—देखो 'विद्वेस' (रू. भे.)

बिदवेसक—देखो 'विद्वेसक (रू. भे.)

बिदवेसणी, बिदवेसिणी—देखो 'विद्वेसिणी' (रू भे)

बिदवेसी देखो 'विद्वेसी' (रू भे)

बिदांत, बिदांतौ—देखो 'वेदांत' (रू. भे.)

उ०—दिगंमां लौं दोरै मचन मन मोरैं मृदमुदो, बिदांतौ भंभोरैं विसय विष बोरैं बुदबुदो । पळा रे पापा को त्रितय भव तापां त्रुटि तलैं, मिळावं मेवा को विधि विधि निमेवा फत मलै । —ऊ. का.

बिदांम—सं. पु.—१ मारवाडी (महाजनी) का एक छोटा सिक्का ।

२ देखो 'बिदांम' (रू. भे)

३ देखो 'बादांम' (रू भे.)

उ०—साग साल मलियागरी, वळि नाळेर बिदांम । सोपारी खिरणी सरस, हेम हुवा तिहि ठांम । —गजउद्धार

बिदांमी—देखो 'बादांमी' (रू. भे.)

बिदा, बिदाई, बिदायी—स. स्त्री. [अ. वदाअ] १ प्रस्थान, रवानगी, रुखसत ।

उ०—१ अरि पालग रावण अवनि, विध सुण मरब विचार । भोम सुनण भर भार भळ, बिदा हुग्रो तिण वार । —रा. रू.

उ०—२ ताहरां पातसाहजी सू सिवं अरज कीवी—'आमंद देस में आतरी रो परगनौ छं सु म्हारो उतन छं ।' तिण उपर सिवा नू उतन रो पटौ कराय दियो । घोडो सिरपाव दियो । घणी दिलासा देनै देस न बिदा कियो । —नैणसी

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति उणि भांत सूं राजान री बात सुण नं अजमेर रै थाणै री हकीकत सांभळ नै अ दि वंर उगराह नूं असुराग तुरकांण रा दळ राजांन ऊपरै बिदा हुआ सो किण भांत रा कहीजै छं । —रा. सा. सं.

क्रि. प्र.—करणौ, दैणौ होणौ ।

२ कहीं से रवाना होने या प्रस्थान करने की अनुमति ।

उ०—१ ताहरां पाबूजी गोगोजी भेळा हुयनं घोड़ा नू गया । आगै देखै तो कासूं ? ऊभा छूटा चरै छै । तद अं घोड़ा लेय लगांमा देनै असवार हुयनै गोगोजी री कोटड़ी आया । पछै पाबूजी नूं भगत जीमाय नें बिदा दीवी । —नैणसी

उ०—२ उठा जोधपुर हुंता राव कल्यांणमल जी कन्हा बिदा करि नै कुंवर पदवी थका महाराजाधिराज महाराजा स्रीराय-सिंघजी मिरजं इब्राहम रो वांसौ कियौ । —द. वि.

उ०—३ साथै मृधरी पवन बहता मन बिलमावै, डावा चातक बोल सुरगा मोद जनावै । गरभीजण असमान बुगलियां मिळवा आई, हदका हुवा सुगन लेवता मेघ बिदाई । —मेघ

क्रि. प्र—करणौ, लेणौ, दैणौ ।

३ कहीं से प्रस्थान करने की क्रिया ।

उ०—१ ताहरा पातिसाह उमरावां सगळां नूं बिदा करण लागा सु उमराव को बीडो झालै नहीं । ताहरां महाराजाधिराज महाराजा स्रीरायसिंघजी बीडो झालयो । राज बिदा हुआ । —द. वि.

उ०—२ दुहाग वाळी रात तो कबराणी नं नीद आयगी ही, पण आज इण बिदाई री रात उणनें नीद नी आई । ढोलिया माथै सूनी सूनी पसवाड़ा पलटती री पण उणरी नीद तो जांणै तारां रै मांय ई चापळगी ही । —फुलवाड़ी

४ बिदा करने या होने पर, दिया जाने या प्राप्त होने वाला, धन पुरस्कार, रुपया आदि ।

उ०—नारेळ नरसंघ री हंतो नरसंघ रै हाथ दीयो । वडो हरख हुवो । प्रोहित साहो पूछियो प्रोहित साहो लिख दीनो । प्रोहित न वडो बिदा दीवी, घोडो सिरपाव । तूटा तो पण अजमेर रा

बगी। बगी मनोहार कर प्रोहित न वही बिदा दे सीख दोवी।
—राजा नरसिंह री बात

क्रि. प्र.—मंगणी, देणी।

५ भेजने या रवाने करने की क्रिया।

उ०—१ बात अकब्बर आगली, अबको हाथ मिळाय। दूत बिदा करकै दियो, मार 'सुरग' बुलाय। —रा. रू.

उ०—२ आमतखा मुगल कमध अमामा. मुत सिर बिदा कियो घर सामा। हलिया जवन अजंगन हूंता, दारुण सहस बीस जमदूता। —रा. रू.

उ०—३ राजान राजावत। मारू घरे पधारिया छै। चौकि कळळ फूटि नै रहो छै। माया रा उमराव बहोडावीजे छै। कवि राजांनां बिदा कीजे छै। —रा.सा. स.

रू. भे.—बिदा, बिदाई, बीदा, बिद्, बिद्दा, विदा, विधा।

बिदारक–वि.—१ विदीर्ण करने वाला, फाड़ने वाला।

२ नाश करने वाला, संहार करने वाला।

रू. भे.—विदारक।

बिदारण–सं पु. [सं विदारण.] १ अधर्मियों को नष्ट करने वाले भगवान विष्णु।

२ मिथुनरेखा जयद्रथ राजा के भाइयों में से एक।

३ युद्ध संग्राम।

बिदारणौ, बिदारबौ–क्रि स. [सं. विदारण] १ मारना, संहार करना।

उ०—केहर कुंभ बिदारियो, गजमोती खिरियाह। जांणे काळा बादळ मूं, ओळा ओसरियाह। —बां. दा.

२ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—रिषि पत्नी पर किरपा कीन्ही, बिप्र सुदामा की बिपति बिदारण। मीरां के प्रभु मो बदी परि, एती बेरि भई किण कारण। —मीरां

३ चीरना, फाड़ना, विदीर्ण करना।

उ०—१ द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो, दूसासन को मांन-मद-मारण। प्रहलाद की प्रतिग्या राखी, हिरणाकुस नख उदर बिदारण। —मीरां

उ०—मगर गळतो कांठो आयो भीवर नायो, काळयो पेट बिदारी रे लो। तुरू पुत्र पर वेलि लोभजनो आयो चालतो, परणायो तिण वारी रे लो। —वि. कु.

बिदारणहार, हारो (हारी), बिदारणियो—वि०।

बिदारियोड़ो, बिदारियोड़ो, बिदारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिदारीजणौ, बिदारीजबौ—कर्म वा०।

बिदारणौ, बिदारबौ—रू० भे०।

बिदारिकंद—देखो 'बिदारीकंद' (रू. भे.)

बिदारिका–सं. पु.—बगल, जंघा आदि के संधि स्थान पर होने वाला फोड़ा विशेष। (अमरत)

बिदारिगंधा—देखो 'बिदारीगंधा' (रू. भे.)

बिदारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

(स्त्री. बिदारियोड़ी)

बिदारीकंद–स. स्त्री. [सं.] एक प्रकार की लता और उक्त लता का कंद, जो औषधि के काम आता है, भुंईकुम्हड़ा।

रू. भे.—बिदारीकद, बिदारिकंद।

बिदारीगंधा–सं. स्त्री. [सं.] शालपर्णी नामक एक क्षुप विशेष, जिसके फलियां लगती है।

रू. भे.—बिदारिगंधा।

बिदावण–स. पु.—चंपकनगरी का एक दुष्ट राजा।

वि. वि.—इसने ब्राह्मणों व वेदों की निंदा की थी. इस कारण से इसके शरीर में कोढ़ उत्पन्न हुआ था, जो वेत्रवती नदी में स्नान करने के कारण नष्ट हुआ।

बिदावत–स. पु—१ कुटिल युक्ति, पेच, कपट, छल, गुप्त रहस्य।

उ०—'अरजन' प्रछन मिळे उमरावां, दाव बिदावत घणा दरियावां। वाता 'मुहकम' तणी वणावे, साहू दियो अति कुरब सुणावे। —रा. रू.

२ राठोड़ वंश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

बिदाह–स. पु. [सं.] १ पित्त के प्रकोप से शरीर में उत्पन्न जलन।

२ किसी अन्य कारण से हाथ पैर में होने वाली जलन।

३ उत्सर्ग, दान। (डि. को.)

बिदाहक–वि. [सं.] विदाह उत्पन्न करने वाला।

बिदाही–सं. पु. [सं. विदाहिन्] वह पदार्थ जिसमें जलन उत्पन्न हो, दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ।

बिदित–स. पु. [सं.] अवगत, ज्ञात।

उ०—१ विप्र वन्नु बोलियु, 'वैदरभ देस विसाल। परमात्मा एक भीम नामि, विदित ता भूपाल। —नळाख्यांन

उ०—२ सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, छीनातिछीन चित बिदित

चीन। पद परम पून्य संकल्प सून्य, निरबांण नित्य अंतर अनित्य।
—ऊ. का

वि.—१ सूचित किया हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

उ०—पैंतीस जुध लै जय प्रकट, हत्थी सत्तरि रीझ हत्ति। सांमण पचास दीधा सहज, बगसरिया कीधा बिदित। —वं. भा.

३ इकरार किया हुआ।

रू. भे.—बदीत, बिदित, वदीत, वदीतउ, वदीतै, विदत।

बिदिया—देखो 'विद्या' (रू. भे)

उ०—भूपति पुंजतणे दुति अद्भुत, सजणविनोद नांम पचम सुत। उग्रबोधि पितरै अहिनांणे, बोध जोम बिदिया सब जांणे।
—सू. प्र.

बिदियाधर—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.)

उ०—पूछे मोपां बांभणा, विरमोटी वीरतंत। बिदियाधर वीरोटिया, चेला होय चालत। —अज्ञात

बिदिस—१ देखो 'विदिसा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिदेस' (रू. भे)

बिदिसा, बिदिसि—सं. स्त्री. [सं. विदिशा] १ मालवा में स्थित परियात्र पर्वत से निकली एक नदी। (पौराणिक)

२ दशार्णव देश की राजधानी।

उ०—बिदिसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसी प्रीत जताता। वेत्रवती जळ पीय लहरती घण गरजता, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर घण पान करंता। —मेघ

३ दो दिशाओं के बीच की दिशा, उपदिशा।

उ०—१ पहिलो जबू द्वीप समह विचि थाल आकार, लाबउ पिहुलउ इक लख जोइण नें विस्तार। मोटो तेहनैं मध्य सुदरसण नांमैं मेर, तिण थी दस बिदिसांनो गिणती च्यारैं फेर।
—ध. व. ग्रं.

उ०—२ कठठ्यो घमसाण प्रमांण किसा, दहल्यो हिंदवांण दिसा बिदिसा। त्रिदसालय चाव वधचा तरुण्यां, समचार यळी छत्रधार सुण्यां। —मे. म.

उ०—३ अण चपळ नैंण लघु जोम अत्ति, संगि अहूं बिदिसि चेतन सकत्ति। दीपत जुगळ कळ अमळ दत, सुत अरक पाणि लखि जांणि संत। —रा. रू.

रू. भे.—बिदिस, बिदिसा, विदिस।

बिदीया—देखो 'विद्या' (रू. भे.) (वं. भा.)

बिदीरण—वि. [स. विदीर्ण] १ बीच से चीरा हुआ, फाड़ा हुआ.

२ तोड़ा हुआ, नाश किया हुआ. ३ मारा हुआ, संहार किया.

रू. भे.—बिदीरण, बिदरण।

बिदीरणौ, बिदीरबौ—क्रि. स. [स. विदीर्णम्] १ फाड़ना, चीरना।

२ मारना, संहार करना।

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ मिटाना।

उ०—पर पीर बिदीरन पीर अपा, तुलसी तसबीर कबीर कृपा। गुपि नानक बांनक भी सरसी, दुति दादुदयाळ समी दरसी।
—ऊ. का.

बिदीरणहार, हारौ (हारी), बिदीरणियौ—वि०।

बिदीरियोड़ौ, बिदीरियोड़ौ, बिदीरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिदीरीजणौ, बिदीरीजबौ—कर्म वा०।

बिदरणौ, बिदरबौ, बीदरणौ, बीदरबौ, बिदरणौ, बिदरबौ
—रू. भे.।

बिदीरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फाड़ा हुआ, चीरा हुआ। २ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ.

४ मिटाया हुआ।

(स्त्री. बिदीरियोड़ी)

बिदु—सं. पु. [सं.] १ घोड़े के कान के नीचे का हिस्सा।

२ हाथी के मस्तक के बीच का भाग।

वि.—विद्वान, पंडित।

उ०—अतवार वहै आपं अनंत, सह बिदु हुय जावै सत। लक विट नाम स्रीराम रो, जग समद तिर तूं 'जगा'। —जगौ खिड़ियौ

बिदुख—देखो 'विदुष' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ उचारै वेद बिदुख अनेक। —रांमरासौ

उ०—२ दूसरा द्रस्टांत जिसउ कैंलि को पेड़ होय। बिपरीत लख कहतां उलटउ कीयउ। आगइ पींडो कइसी जैंमो केलि को गरभ। बिदुख कहता पंडित सुवचना करि वखाणैं। वेलि टी.

उ०—३ श्री असपत दसमें ग्रह आयो, बिदुख तिकां दुण लाभ बतायो। कुळ नृप उग्र थयो न्है कोई, सुतन प्रताप चौगुणो सोई।
—रा. रू.

(स्त्री. बिदुखी)

बिदुत, बिदुति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (ह. ना. मा)

बिदुत्तम—सं पु.—विष्णु भगवान का एक नाम।

वि.—सब बातो का जानकार, सर्वज्ञाता।

बिदुर, बिदुरु—म. पु. [स विदुर] १ कौरवो व पांडवों के प्रसिद्ध मंत्री, जो राजनीति, अर्थनीति व धर्मनीति मे निपुण थे और महाराज धृतराष्ट्र के भाई थे।

वि. वि.—इन्हें धर्मराज का अवतार मानते हैं। इनका जन्म विचित्रवीर्य की पत्नी की दासी और व्यास ऋषि के समर्ग द्वारा हुआ था। ये श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त और निष्पक्षी थे। इन्होंने भीष्म से शास्त्राभ्यास, आयुधाभ्यास, धनुर्विद्या और वेदाभ्यास किया था। पाण्डवों के द्वारा सही नीति का मार्ग अपनाने के कारण इन्होंने उनकी रक्षा करने के अनेक बार प्रयत्न किये। चन्द्रवंश की रक्षार्थ दुर्योधन की कुटिलताओं का उल्लेख धृतराष्ट्र के सामने करते हुए उसे अपने पुत्रों (दुर्योधन आदि) का त्याग करने को कहा था इसी कारण धृतराष्ट्र ने इन्हें देश से निष्कासित किया था। भीष्म की मृत्यु और श्रीकृष्ण बलराम के स्वर्गारोहण के पहले ही ये धृतराष्ट्र, संजय व गान्धारी के साथ तपस्या करने वन में चले गये और वहीं यदुवंश के नाश की बात सुनकर पार्थिव शरीर छोड़ कर धर्मदेव का रूप धारण किया।

उ०—१ आदमं विदुरह दीघउ राह, दह दिसि जसवड जोवा चाहं। मोवनथंभे मंच बधावइ, रांणी रासि नै मह य आवइ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राखिउ ए राउ त्रूठिलु विदुरह वयण न मांनीउं ए। हारीयां ए हाथिय थाट भाईय हारीय राजि गउं ए।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ पंचानंदरणु विदुर नांम नामि राजि मरीखउ। इ श्रीगाट पुण विचित्रवीरय पंडु राजि प्रतीठिउं। —सालिभद्र सूरि

२ बहुला नामक स्त्री का पति एक वेश्यागामी ब्राह्मण, जिसने अपनी पत्नी के द्वारा किये गये पुण्यकर्मों के कारण मुक्ति प्राप्त की थी।

३ सोमवती अमावस्या के दिन प्रयाग के गंगासंगम में स्नान करने से ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हुआ, पांचाल देश का एक क्षत्रिय।

४ पंडित या ज्ञानी पुरुष।

५ दासी-पुत्र, सेवक।

६ स्वांग बनाने वाला विदूषक।

उ०—विविध पाठक सुक मारग रग वंछक, कोविद खञ्जरीट गति-कार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।

—वेलि

रू. भे.—बिदर, बिदुर विदर।

विदुला–सं. स्त्री. [सं.] सौवीर देश के राजा की पत्नी और संजय की माता।

वि. वि.—यह बड़ी ही वीर स्त्री थी। इसका पति, इसके पुत्र की बाल्यावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसी कारण से सिन्धु-नरेश ने सौवीर देश पर चढ़ाई की थी और संजय को रणभूमि से भागना पड़ा था। मगर इसने अपने पुत्र संजय को घर में नहीं घुसने दिया और कड़ी फटकार सुना कर पुनः युद्धार्थ प्रोत्साहित किया था।

विदुस–वि. [सं. विदुष] (स्त्री विदुसी) १ विद्वान, पंडित। (डि. को.)

२ कवि। (अ. मा.)

३ चतुर, होशियार।

४ अग्रराज वंशीय एक राजा।

५ मत्स्यानुसार, धृत राजा का पुत्र एक राजा।

६ ज्योतिषी।

रू. भे.—विदष विद्‌स।

विदुसणौ, विदुसबौ देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ (रू. भे.)

विदुसणहार, हारौ (हारी), विदुसणियौ—वि०।

विदुसिय़ोड़ौ, विदुसियोड़ौ, विदुस्योड़ौ - भू० का० कृ०।

विदुसीजणौ, विदुसीजबौ - कर्म वा०।

विदुसियोड़ौ–देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विदुसियोड़ी)

विदूण–सं. पु. - रावण के छोटे भाई विभीषण का एक मंत्री।

विदूर–वि. [सं.] बहुत दूर।

सं. पु.—१ गुरु राजा विदूरथ का एक नामान्तर।

२ महाराज कुरु द्वारा दशार्ह कुलोत्पन्न कन्या शुभांगी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो मधुवंशीय कन्या सुप्रिया का पति था, जिसके गर्भ से अनश्वा नामक पुत्र हुआ था।

३ एक पर्वत, जहां वैदूर्य मणि मिलती है।

विदूरथ–सं. पु. [सं.] १ यदुवंशीय श्वफल्क के भाई चित्ररथ का पुत्र, जिसके पुत्र का नाम शूर था।

२ पुरुवंश का एक राजा जिसके पुत्रों का पालन-पोषण ऋक्षवान नामक पर्वत पर रीछों द्वारा किया गया था।

३ भजमान राजा का पुत्र एक यदुवंशीय राजा।

४ सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

५ सुरथ राजा का पुत्र व सार्वभौम राजा का पिता एक राजा।

६ नामक नगरी के हंसध्वज राजा का भाई।

७ दक्षिण भारत का एक राजा जिसने अपनी कन्या का विवाह दिष्टवंशीय राज्यवर्धन राजा के साथ किया था।

८ उपदर्व व दाशार्ह नामक एक यादव राजा, जो लोमपादवंशीय विधृति राजा का पुत्र था।

वि. वि.—मत्स्यानुसार ये निर्वृत्ति राजा का पुत्र तथा दशार्ह राजा का पिता था।

९ रुक्मिणी व द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित एक वृष्णिवंशीय

क्षत्रिय, जो वृद्धशर्मन व वसुदेव भगिनि श्रुतदेवा का पुत्र एवं दन्तवक्र का भाई था।

वि. वि.—इसके भाई दन्तवक्र, शाल्व, शिशुपाल आदि का वध श्रीकृष्ण द्वारा किये जाने पर इसने अपने भाईयों का बदला लेने हेतु श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया था मगर श्रीकृष्ण ने इसका वध कर दिया था।

१०—भलंदन ऋषि का मित्र एक राजा, जिसके सुनीति एवं सुमति नामक दो पुत्र थे, एवं मुदावती नामक एक कन्या थी।

वि. वि.– कुजृंभ राक्षस का वध करने हेतु, इसके दोनों पुत्र निकले थे मगर कुजृंभ राक्षस ने उन्हें कैदी बना लिया और इसकी पुत्री का हरण भी कर लिया था। इसके दोनों पुत्रों व पुत्री मुदावती को, इसके मित्र भलंदन ऋषि के पुत्र वत्सप्रि ने कुजृंभ राक्षस का वध करके मुक्त कराया था। इसी कारण से इसने अपनी पुत्री मुदावती का विवाह वत्सप्रि के साथ कर दिया था।

११ राम-रावण युद्ध के समय राम की सेना का एक बन्दर।

विदूसक–सं. पु. [सं. विदूषक] (स्त्री. विदूसिका) १ दूसरों के दोष बतला कर हंसी उड़ाने वाला व्यक्ति।

२ विभिन्न प्रकार की नकलें, वेशभूषा बनाकर अथवा बातचीत द्वारा लोगों को हंसाने वाला व्यक्ति, मसखरा।

३ साहित्य में चार प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक, जो अपने कौतुक और परिहास आदि के द्वारा कामकेलि में अधिक आनन्द उत्पन्न कर देता है।

४ कामुक या विषयी व्यक्ति।

विदूसण–सं. पु. [सं. विदूषण] विशेष रूप से किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव।

विदूसणौ, विदूसबौ–क्रि. स.—१ कलंकित करना, दोष लगाना।

२ कष्ट देना, दुःख देना, सताना।

विदूसणहार, हारौ (हारी), विदूसणियौ—वि०।

विदूसियोड़ो, विदूसियोड़ौ विदूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विदूसीजणौ, विदूसीजबौ—कर्म वा०।

विदूखणौ, विदूखबौ, विदूसणो, विदूसबो, वदूसणौ, वदूसबौ, विदुसणौ, विदुसबौ विदोखणौ, विदोखबौ, विदोसणौ, विदोसबौ —रू० भे०।

विदूसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कलंकित किया हुआ, दोष लगाया हुआ. २ कष्ट दिया हुआ, दुख दिया हुआ, सताया हुआ।

विदेघ–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विदेघमाधव–सं. पु.— विदेघ लोगों का प्रमुख मनुवंशीय एक राजा। विदेघ लोग भी आगे चलकर विदेह कहलाये।

वि. वि.—इसने अपने मुख में अग्नि को बंदकर रखा था और इस भय से कि बोलने से अग्नि बाहर आयेगी, यह किसी से बात भी नहीं करता था। इसके पुरोहित रहूगण गौतम ने अनेक प्रकार से अग्नि स्तुति करके इस अग्नि को बाहर निकालने का प्रयत्न किया मगर कुछ असर नहीं हुआ।

एक बार गौतम के मुंह से 'घृत' शब्द का उच्चारण हो गया और इसके मुख में बंध अग्नि अपनी अनेक जिह्वायें फैलाकर बाहर निकला और सारे संसार के साथ २ विदेघ एवं गौतम को जलाने लगा। साथ ही साथ सृष्टि की नदियों को भी जलाने लगा। अग्नि के इस दाह से मुक्ति कराने के लिए विदेघ राजा ने अपने राज्य की सीमा पर बहने वाली नदी में कूद गया यहां आकर अग्नि का दाह शान्त हुआ।

विदेस–सं. पु. [सं. विदेश] अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश, परदेश। (अ. मा.)

उ०—१ वूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेस नी वाट भागी। जळ भरिया निवांण, प्रथ्वी प्रवरती मेह नी प्रांण। आदि। —रा. सा. सं.

उ०—२ देवी निरझरै तरवरै नगै नेसै, देवी दिसै अवदिसै देसै विदैसै। देवी सागर बेटडै आप सगै, देवी देहुरै घरै देवी दुरंगै। —देवि.

रू. भे.—विदेस, विदिस, विदेसि, विदेसी।

विदेसि, विदेसी–वि.— परदेश का, परदेश सम्बंधी।

सं. पु.—१ परदेश का निवासी व्यक्ति, परदेसी।

२ देखो 'विदेस' (रू. भे.)

उ०—१ लोभी ठाकुर, आवि घरि, कांई करइ विदेसि। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि। —ढो. मा.

उ०—२ रांम लक्षमण मही दुखि पाव्या, पांच पांडव विदेसि भमाड्या। इव नइं घरि जल वहिउं हरचंदिहं, आलडी मरण लाध मुकुंदिहं। —सालिसूरि

अल्पा.—विदेसीड़ौ।

विदेसीड़ौ—देखो 'विदेसी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ घरां नै पधारौ विदेसीड़ा, छोटी सी नाजक धण रा पीव। यौ सावणियौ उमड़ रह्यौ छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव। —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ विदेसीड़ा बेटा राव हो, ऊतरधा कोठैं सूं आय। चुकल्या सात सीस पर म्हारै, छुटतो दे गजरो बांध।

—रसीलै राज रा गीत

विदेह–सं. पु. [सं.] १ मिथिलानरेश सीरध्वज जनक का एक नाम।

उ०—१ मुनिदेस जोगेस कथ्थेस मेळा, मुखगेस देवेस अल्वेस मेळा। विदेह प्रतग्या कहै एम वाकं, पुत्री जो वरं सो ज तागे पिनाक। —सू. प्र.

उ०—२ ब्रह्मानंद नै बिसरयो बिदेह हो रघुवरजी, काई प्रेमानंद पूरण छायो, छक रह्यो हो राज। मुनिवरजी नै वूकै विदेह हो मुनिवरजी, कांई ए कुण आणां रा प्यारा पावणा हो राज। —गी. रा.

२ मिथिला नरेश निमि का नाम।

३ विदेह नगरी, जनकपुरी, मिथिलापुरी। (सभा)

उ०—१ मगध कोसल अंग बंग कलिंग कासी कुरुदेस, सोरठ कच्छ विदेह जांगल कुसावरत्त कहेस। अंग सोवीर वैराट मलय मालिव सूरसेन। बरण पचाल दसारण कंगाल देस मे चैन। —वृन्त.

उ०—२ मगध मरुल अंग बंग कलिंग कासी [कोसल कुरु] कुमट्ट पंचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह सहिल्ल मलय······। —व म

४ विदेहवंशीय राजाओं द्वारा प्रशासित एक लोक समूह जिसे पाण्डु राजा ने दिग्विजय के समय अपने अधीन कर लिया था। इसी विदेह वंश में हयग्रीव व कृमागार नामक राजा उत्पन्न हुये थे।

५ मिथिला-निवासी, विदेह देश के नागरिक।

६ देह-परिवर्तन, दूसरी देह।

उ०—इणरो कहणां लारै दोनूं भाई गदगद कंठ होय सिलाम करण लागा, फिर पछिया। देवीदास पण कभी-कभी देखी घर ऊळखिया। देह रो विदेह होय गयो पण नाक री टोसी सं ओळख लियो। तांहरै देवीदास कह्यो आंख्या आगळ देह रो विदेह होय गयो। ओळखणी आवै नही, ताहरा आंख्या सूं ही सलाम कीवी। —पलक दरियाव री वात

वि.—१ देह-रहित, शरीर-रहित।

२ अचेत, बेहोश, चेतना-रहित।

३ शारीरिक चिंताओं से मुक्त।

४ मरा हुआ, मृत।

विदेहक—स. पु. [स.] एक पर्वत का नाम (पुराण)

विदेहकुमारी—सं. स्त्री [स. विदेह:+कुमारी] राजा जनक की पुत्री सीता।

विदेहपो-सं. स्त्री [स. विदेह+पोता] जनकसुता, जानकी, सीता। (डि. को)

विदेहपुर, विदेहपुरी-स. स्त्री. [स. विदेह+पुर या पुरी] जनकपुर, मिथिलापुरी।

विदेहा, विदेही,—स. स्त्री [स.] १ जनकपुरी, मिथिलापुरी।

उ०—विदेही तणो दिवाण, ईस चाप धरै आंण। तोड़वा अनेक तांण, ऊठिया करै अपाण। —र. रू.

२ जानकी, सीता।

उ०—आली रग भूमि पै विदेही को अनूप रूप, आज अविलोक्यो देवदृगतै अलख स। नयन निकाइ सो जुन्हाइ कै कुरंगमेंन, खंज में 'हमीर' भलनेनू कै न भान मे। —हमीरदांन मोतीसर

[स. विदेहिन्] ३ ब्रह्म।

रू. भे - विदेही।

विदेहेश—स. पु [स. विदेह+ईश] राजा जनक।

उ०—अवधेस रानेस जानेस आया, विदेहेस मांम्हैस आंणी वधाया। कुंवारां बिन्है धाय उदार कीधा, लगं प्रीत छाती पिता भीड़ि लीधा। —सू. प्र.

विवंत—स. पु. - हरिवीर नामक क्षत्रिय जो अगले जन्म में पिशाच बना क्यों कि वह नास्तिक था।

विदोखणो, विदोखबो—क्रि. स. - अवलोकन करना, देखना।

उ० —प्रोपद दान देवी कवण, कवण नेणां विदोखियै। हय हय सरीर ··· रो नहीं, रायसिंघ आपरोखियै। — नैणसी

२ देखो 'विदूखणो, विदूखबो' (रू. भे.)

उ०— सूर। री मढो ··· विना जीवण री आवळी। महडा सू ···मैं गाढ़ ··· री आवळी। चारण भाट नै विना कांम विदोखण री आवड़ी। लुगाई नै विना खूंन मारवा री आवड़ी। —रा. सा. स.

विदोखणहार हारो (हारी), विदोखणियो—वि०।

विदोखिओड़ो, विदोखियोड़ो, विदोखयोड़ो—भू० का० कृ०।

विदोखीजणो, विदोखीजबो—कर्म वा०।

विदोखियोड़ो—भू. का. कृ.—१ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ।

२ देखो 'विदूखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विदोखियोड़ी)

विदोगत, विदोगति—देखो 'विदोख' (रू. भे.)

उ०—पछै ··· चवड़ै रो हुवो जदी राजा रा गुरु रा बेटा नै परसू···। जदै सारा विदोगत करै नै बेटा वहै नै घरे लै आयो। —राजा रा गुर रा बेटा री वात

विदोसणो, विदोसबो—देखो 'विदूसणो, विदूसबो' (रू. भे.)

विदोसणहार हारो (हारी), विदोसणियो—वि०।

विदोसिओड़ो, विदोसियोड़ो, विदोस्योड़ो—भू० का० कृ०।

विदोसीजणो, विदोसीजबो—कर्म वा०।

विदोसियोड़ो—देखो 'विदूसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विदोसियोड़ी)

उ०—४ परभात चढ़िया सो गांव दूजो वळै जाय मारियो । पछै बीजा गांवां नूं पासरणा छूटा सो वित्त सारो घेर ले आया । गांव दोय री तो जमा ऊठण दीवी । —अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—५ खेचै लाग राव खीचो चारणां वित्त नूं खंच्यो, खंच्यो मनां चायो इसो आयो यूं चौसांण । पूकारो देवळा अबै आपरा पखेत पावू, पांणां जोस हूं तो आय लै जाऊ अमाण । —बादरदांन दधवाड़ियो

उ०— डोकरी कह्यो-गूजरां रै घरै आयोड़ा नै दूध पायां आपं ई वित्त घर दूध री बधापो व्है । म्हारी बेटी नै घरै आयोड़ा री मरबरा रो ध्यांन है इज घणो । —फुलवाड़ी

वित्तगोप्ता-सं. पु. [सं.] कुबेर के भण्डारी का नाम ।

वित्तग्यान-सं. पु. [सं. वित्त+ज्ञानं] ७२ कलाओं में से एक ।

वित्तणौ, वित्तबौ—देखो 'बीतणौ, बीतबौ' (रू. भे)

उ०—लगी हांम विलासं, वित्ती प्रयात प्रात मह्शांन । सायंकाळ निसीतं, रतं भूप चूपं मदनाय । —रा रू.

वित्तणहार, हारौ (हारी), वित्तणियौ—वि० ।

वित्तिओड़ौ, वित्तियोड़ौ, वित्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्तीजणौ, वित्तीजबौ—भाव वा० ।

वित्तदा-सं. स्त्री. [सं] स्वामी कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका ।

वित्तनाथ-सं. पु [सं. वित्त+नाथ]—कुबेर ।

वित्तप, वित्तपत, वित्तपति, वित्तपती-सं. पु. [सं. वित्तप, वित्तपति] धन की रक्षा करने वाला कुबेर, धनपति । (डिं को.)

वित्तपाळ, वित्तपाल-सं. पु. [सं. वित्त+रा पाळ] कुबेर का एक नाम ।

वित्तपुरी-सं स्त्री. [सं.] कुबेर की अलकापुरी ।

वित्तरणौ, वित्तरबौ—१ देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—इदबधू अणपार, क बसुधा वित्तरी । मनु तूटी मणिमाळ, मदन महिपत्त री । —कविवर सिवबक्स पाल्हावत

२ देखो 'वितरणौ, वितरबौ' (रू. भे.)

वित्तरणहार, हारौ (हारी), वित्तरणियौ - वि० ।

वित्तरिओड़ौ, वित्तरियोड़ौ, वित्तरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्तरीजणौ, वित्तरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

वित्तरियोड़ौ—१ देखो 'विस्तरियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'वितरियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वित्तरियोड़ी)

वित्तहीण, वित्तहीन-वि. [सं. वित्तहीन] दरिद्र, निर्धन, गरीब ।

वित्ति—देखो 'वीति' (रू. भे.)

वित्तिकर-वि. [सं.] वृत्ति कर्ता ।

उ०—अभयदेव नव अंग वित्तिकर, पासु पसायणु, पउमएवि करणिद पमुह, सुर साहिय मासणु । —ऐ. जै. का. सं.

वित्तेस-सं. पु. [सं. वित्त+ईशः] धन का पति, कुबेर ।

वित्तेसर, वित्तेसुर, वित्तेस्वर-[सं. वित्त+ईश्वर] कुबेर ।

वित्तौ-सर्व.—इतना ।

उ०—बस केवळ नाम सही है, वो मोटो रांम सही है । जित्तौ तप में म्हें तपस्या, वित्तौ ही कांम सही है । —करणीदांन बारहठ

वित्थर, वित्थरि—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—गंगतडा तडि प्रखइ जोयणु, वित्थरि दोरघि बारह जोयणु । पासहरा वागुरीय बहुय, पइठा वणि कोलाहलु हुय । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्तर' (रू. भे.)

वित्थरणौ, वित्थरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे)

उ०—१ दत कुळी अंगुळी, करी कोपरी कपाळां । बीच खेत वित्थरी फरी विहरी किरमाळां । —रा. रू.

उ०—२ पांनां मुख वाजित्र हिलै वांनां बैरक्कां, मेघ रंग मातंग वीह ऊडंग कटक्कां । पलो जेम साद्ळा हिली फोजां धमसांणां, व्योम रजो वित्थरी धमस वज्जी केकांणां । —रा. रू.

उ०—३ सेर खान भर समर कहर परखै घर कवळ, लोथ लोथ ऊपरा गरा भिडजां गज तडळ । दंत कुळी अंगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा, अंत तंत वित्थरी, हत दाढ़ाळ हठाळा । —रा. रू.

वित्थरणहार, हारौ (हारी), वित्थरणियौ—वि० ।

वित्थरिओड़ौ, वित्थरियोड़ौ, वित्थरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्थरीजणौ, वित्थरीजबौ—भाव वा० ।

वित्थरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वित्थरियोड़ी)

वित्थार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वित्थारणौ, वित्थारबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाहोर नयर उच्छव हुया, विहुं खडि जस वित्थारिया । कर जोडि समयसुंदर भणइ, गोपूज्य भलइं पधारिया । —स. कु.

उ०—२ पण मन वेय मयक वरसि माहह छाण वासरि, मांगुसलिल वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि । नंदी ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचंद गणहरि, सूरि मतु जमु दिद्धि किद्धु मंगलु विवहु प्परि । —ऐ. जै. का. सं.

वित्थारणहार, हारौ (हारी), वित्थारणियौ—वि० ।

वित्थारिओड़ौ, वित्थारियोड़ौ, वित्थारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्थारीजणौ, वित्थारीजबौ -कर्म वा० ।

वित्थारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्थारियोड़ी)

बिथुरणौ, बिथुरबौ—देखो 'बिखरणौ, बिखरबौ' (रू. भे.)

उ०—असी प्रकास घूमगी, कि थान मेन बिथुरो। निमांण पांण नहयं, सुधोर जोर मह्य। —रा. रू.

उ०—बमुधा त्रोण मूरंगी, नुरियां घमळ बिथुरो रैणा। घ्राहू चपळ गरायो, हूंद रतो हद ध्रमारतह। —गु. रू. ब.

उ०—३ बिमाळ भाल लोग को बिगाळ जाळ बिथुरं, धमंक भ्रू भुजाबणी धमक मेघ मौं गुरै। महान रज दब्बुनो ध्ररीम दब्बुनो गहो, कथै कवीर नै कहो बिराव की वहो वहो। —ऊ. का

बिथुरणहार, हारौ (हारी), बिथुरणियौ—वि०।

बिथुरिम्रोड़ौ, बिथुरियोड़ौ, बिथुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथुरीजणौ, बिथुरीजबौ—भाव वा०।

बिथुरियोड़ौ—देखो 'बिखरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथुरियोड़ी)

बित्रप्त—वि. [सं. वितृप्त] जो तृप्त न हुआ हो, असन्तुष्ट।

बित्रभव—सं. स्त्री—पूर्व और ईशान दिशा के मध्य की दिशा जिस ओर कृत्तिका नक्षत्र उदय होता है। इसका दूसरा नाम 'लाली' भी है।

बित्रस—वि. [सं. वितृष] जिसमे किसी प्रकार की तृषा न रह गई हो, तृप्त।

बित्रसण—वि. [सं. वितृष्ण] १ जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न हो, तृप्त २ निस्पृह, उदासीन।

बित्रहोत, बित्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बित्रा, बित्रासुर—देखो 'वृत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—समर तजे बित्रा सहित, हलमै ओर्हे हाथ। घेठो घमुरा को धणी, कहे गुसाई कथ। —मा. वचनिका

बिथ—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

बिथक—वि.—थका हुआ।

बिथकणौ, बिथकबौ—क्रि. अ.—थकना, थकावट महसूस करना।

उ०—मैळ गज चंद जहीं अनेकारा, हेत कळा छांडे चित हेत। बिथके नहीं उगता अवसर, ... कामिम नर रथ ग मुबेत। —बीरमदे राठौड़ रो गीत

बिथकणहार, हारौ (हारी), बिथकणियौ—वि०।

बिथकिम्रोड़ौ, बिथकियोड़ौ, बिथक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथकीजणौ, बिथकीजबौ—भाव वा०।

बिथकियोड़ौ—भू. का. कृ.—थकावट महसूस किया हुआ, थका हुआ।

(स्त्री. बिथकियोड़ी)

बिथत—देखो 'वितथ' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बिथरणौ, बिथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कळि मचंड प्रमात उठै मेजक कुहर, रेण मेचक संक व्हौ रात्र राणी। बिथरतौ तेग दिन जाप 'सूजा' बिया, जग दुड़िद तणौ प्रताप जाणै। —ऊमेद सिंघ सिसोदिया रो गीत

उ०—२ दंताळां दड़काय, मोताहळ बिथरं मही। स्याळां मती संताय, लंकाळां गज भक्ष 'लछा'। —भगवानजी रतनू

बिथरणहार, हारौ (हारी), बिथरणियौ—वि०।

बिथरिम्रोड़ौ, बिथरियोड़ौ बिथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथरीजणौ, बिथरीजबौ—भाव वा०।

बिथराणौ, बिथराबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

बिथराणहार, हारौ (हारी), बिथराणियौ—वि०।

बिथरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथराईजणौ, बिथराईजबौ—कर्म वा०।

बिथरायोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथरायोड़ी)

बिथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथरियोड़ी)

बिथा—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

उ०—१ जिण दिन तो तुम देखीया जिमवा मजसरि साह। तिण दिन थी पदमिणि मन बसिउ तुम्ह माही रे। सुण आलिम धणी, बिरह बिथा न खमायो रे, बात किसी घणी। —प. च. चौ

उ०—२ हरि सुमरण हिरदै धरो, बिथा न पहुंचै बीर। कायर ठठि नाठै चल्या, लग्या न गुण की पीर। —ह. पु. वा.

उ०—३ जैंग अगनि काग्द मे रहै काटि कटै न काठै दहै जन हरिदास अब ऐसी भई, भजता राम बिथा सब गई। —ह. पु. वा.

उ०—४ पग परसै पावन हुवो, गई बिथा सब भाज। राज बडै ही रामजी, गहर गरीबनिवाज। —गजउद्धार

उ०—५ करता करण सदा सगि जाकै, चितवनि कहौ कहां घूं ताकै। करण कुठार बिथा हरि कापै, जन हरिदास नरहरि जापै। —ह. पु. वा.

बिथार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

बिथारण—वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

बिथारणौ, बिथारबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

बिथारणहार, हारौ (हारी), बिथारणियौ—वि०।

बिथारिम्रोड़ौ, बिथारियोड़ौ, बिथारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथारीजणौ, बिथारीजबौ—कर्म वा०।

बिथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

विद्याधरराज-वि.—विद्वान, पंडित, चतुर।

उ०—कामेति करै सब राज काज, धुन कायथ वड़ विद्याधरराज। सला रै कांम मेहा सधीर, बुधवत वीरबळ सा वजीर। —पे. रू.

विद्याधरेंद्र-सं. पु [सं. विद्याधरेन्द्र] जाम्बवान् नामक रीछ, जो सुग्रीव का मंत्री तथा रीछों का राजा था।

वि वि.—इसे ब्रह्मा का पुत्र मानते हैं तथा भागवतानुसार इसकी पुत्री जाम्बवती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ किया गया था। राम-रावण युद्ध में इसने राम की सहायता की थी।

विद्याधरेसुर, विद्याधरेस्वर-सं. पु. [सं. विद्याधर+ईश्वर] शिव की एक मूर्ति का नाम। (पुराण)

विद्याधह—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.)

उ०—विद्याधह वनि कुणिहिं एकु मेल्हिउ छइ बांधी। छोडिउ पंडुकुमारि पासि तसु मुद्रा लाधी। —सालिभद्र सूरि

विद्याधारी—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.)

विद्याधिदेवता-सं. स्त्री. [सं.] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधोस-स. पु [स. विद्याधोष] सौराष्ट्र नरेश के प्रधान का नाम।

विद्यानुवाद-सं. स्त्री. [सं.] ७२ कलाओं में से एक।

विद्यापति-स. पु.—१ गुरु, शिक्षक।

विद्यापात्र-वि.—विद्वान, पण्डित।

उ०—१ राणा रौ पुरोहित पालीवाळ १ नै मेवड़ पुरोहित प्रठी म् और ४ ब्राह्मण जूना विद्यापात्र वेद पढ़ै छै। लागबाग दीजै छै। —राव रिणमल री बात

उ०—२ ······पचोली डवगर बाबर फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया मिगडिया भोई कंदोई देसाली वलाली गोली गवाल पमूयाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र। —व. स.

विद्यापुरी-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवद राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडोआं, सणीआ, कस्तूरीआ,······चंपकदुर्गीआं, विद्यापुरीआ, देकापाटकीआ, कास्मीरीआं, धूमराई, खीरोक······ —व. स.

विद्यापीठ-सं. पु [सं.] १ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र।

२ महाविद्यालय।

विद्यामंदिर-सं. पु. [स] विद्यालय, पाठशाला।

विद्यामय-वि.—विद्वान, पंडित।

विद्यामहेसुर, विद्यामहेस्वर-स. पु. [सं विद्यामहेश्वर] शिव, महादेव।

विद्यारंभ-सं. पु. [सं. विद्यारम्भ] विद्या पढाना प्रारम्भ करने के पूर्व किया जाने वाला एक प्रकार का संस्कार।

विद्याराज-स. पु. [स.] भगवान विष्णु की मूर्ति।

विद्यारथी-सं. पु. [स. विद्यार्थिन्] विद्या का अध्ययन करने वाला, शिष्य।

उ०—१ सुस्वारथी स्वारथी जे स्वसुख दुख आरथी बथ सदै, बढै जो विद्यारथी विसद परमारथी वथ वदै। प्रचड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमड प्रद विभौ, वितड प्रोदड प्रनत दुख खड प्रद विभौ। —ऊ. का.

उ०—२ सूरजमल लिछमी रा लाडका सेठ फूलचद रौ एकाएक बेटौ हो अर म्हारा छाकटा सूं छाकटा विद्यारथियां में सूं एक टाळमी रकम। जरूरत सूं ज्यादा हुंसियार। कारण कै चढती जवानी अर पैसो पल्लै रामजी चलावै तौ इज गेलै चलै। —अमर चूंनडी

विद्यारासि-सं. पु. [सं. विद्याराशि] शिवलिंग।

विद्यालय-सं पु [सं.] वह स्थान जहां पर विद्या पढाई जाती है, पाठशाला।

विद्यावांन-वि [सं. विद्यावान्] विद्वान, पंडित।

उ०—१ महाराज सामोरां री जात सूं ऊदावत हुवा। महेसदास रौ भतीजो हेमौ गणेसदास रौ बेटौ जोबनेर जाळपादेवी री क्रिपा सूं विद्यावांन हुवौ। भाखा- चत्र-रूपग महाराज रौ बणायौ। —बा. दा. ख्यात

उ०—२ तद उण री लुगाई कयौ पदमसिंघजी जिसा हुमार री वखत मैं दातार अर आपां भूखा मरा। तद गोगादान लुगाई नै कयौ के मा'राज तौ विद्यावांन नूं देवै है मू हू तो भणियौ नहीं। —द. दा.

विद्याविलास-वि.—विद्यारसिक।

उ०—विद्याविलास नरिंद पवाडउ, हीयडाभितारि जांणी। अतराय विणु पुण्य करउ, तुम्हि भाव घणेरउ आंणी। —हीराणदसूरि

विद्यावेता-वि. [सं. विद्या+वेता] विद्वान, पण्डित।

उ०—निंदा नेता री भवभव मे भूंडी, विद्यावेता बिण प्रवगत गत ऊंडी। वसुधा बीजांकुर बिध बिध बिसतारै, न्याईसुर आसुर बिध बिध निसतारै। —ऊ. का.

विद्याव्रत-स. पु. [स.] १ विद्या अध्ययन के उद्देश्य से, गुरु के घर रह कर, किया जाने वाला व्रत या तपस्या।

२ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—यह १२ महीने तक प्रत्येक शुक्ल पक्ष की एकम को किया जाता है और इस दिन गौ-दान भी किया जाता है। इसके

बाद १२ वर्ष तक अध्ययन किया जाता है। इस व्रत को करने से महाविद्वान बन जाता है।

विद्यासंजीवन—सं. पु. [सं. विद्या+सञ्जीवन] दैत्य-गुरु, शुक्र। (प्र. मा.)

विद्यासिद्धि, विद्यासिद्धी—स. स्त्री. [स.] विद्या का निष्पादन करने की क्रिया।

उ०—बहुया मारभि बांभण मगाइ, ए विवहार नर्यरि प्रमह नगी। विद्यासिद्धी रावस हूउ, बकनामि छइ नम नउ हूउ।

—सालिभद्र सूरि

विद्युजिह्व—देखो 'विद्युज्जिह्व' (रू. भे.)

विद्युजिह्वा—देखो विद्युज्जिह्वा' (रू. भे.)

विद्युज्जिह्व—सं. पु. [स.] १ व्यथा राक्षसी का पुत्र और रावण की बहन सूर्पणखा का पति जो पूर्वजन्म में कालकेय नामक दानव था और राम के द्वारा मारा गया था।

२ रावण का एक प्रधान, जिसने अपनी माया-जाल से राम का टूटा हुआ मस्तक व धनुष सीता के सामने प्रस्तुत कर रावण को पति स्वीकार करने का अनुरोध किया।

३ एक यक्ष का नाम।

४ महातल नामक पाताललोक में स्थित अर्वकतलम् नामक नगर का निवासी एक राक्षस जो विश्रवस् व वाका के पुत्रों में से एक था।

५ भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का साथी एक राक्षस जिसका वध दुर्योधन ने किया था। मतान्तर से यह घटोत्कच का पुत्र था।

६ विद्युत के समान जिव्हा वाले, अमृत की रक्षा करने वाले, दो सर्प।

रू. भे.—विद्युजिव्ह, विद्युतजिव्ह, विद्यातजिव्ह, विद्युरिजव्ह, विद्युत्जिव्ह।

विद्युज्जिव्हा—स. स्त्री. [स.] १ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

रू. भे.—विद्युजिव्हा, विद्युतज्जिव्हा, विद्युरिजव्हा, विद्युरिजव्ह,

विद्युद्वप्र—सं. पु.—मार्गशीर्ष माह में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक राक्षस।

विद्युत—स. स्त्री. [स. विद्युत्] १ बिजली।

उ०—१ बारद विद्युत वरण, पीत अरु धरण नीलपट। तरह मदन रत लगी, देत दिन दरप जाय दट। —र. रू

उ०—२ आसन स्यंघ धटा तन स्याम, पटंबर पीन सु विद्युत है। चाप सिलीमुख पान विमोह सु, बाम विभाग सिया जुत है।

—र. ज. प्र.

२ एक प्रकार की वीणा।

३ वज्र।

४ सहिष्णु नामक शिवावतार का एक शिष्य।

५ यातुधान नामक राक्षस का पुत्र व रसन नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

६ एक छंद विशेष, जिसमे दो नगण, दो तगण व अन्त में एक गुरु होता है तथा सात व छः वर्णो पर यति होती है।

वि. वि. —इसको चंद्रिका, उत्पलिनी, व कुटिलगति भी कहते हैं।

वि.—जिसमें बहुत अधिक दीप्ति हो।

रू. भे.—विदन, विदुत, विदुति, विद्युना, विद्योत, विद्योता, विद्युति, विद्युन।

विद्युतकुमार—सं. पु.—दस भुवनपतियों में से एक भुवनपति। (जैन)

वि. वि.—इनके शरीर का वर्ण लाल और वस्त्र का वर्ण हरा तथा मुकट का चिन्ह वज्र का होता है।

विद्युतकेस—देखो 'विद्युत्केस' (रू. भे.)

विद्युतजिव्ह, विद्युतजिव्ह—'देखो विद्युजिव्ह' (रू. भे.)

विद्युतजिव्हा, विद्युतजिव्हा—देखो 'विद्युजिव्हा' (रू. भे.)

विद्युतपताक—देखो 'विद्युत्पताक' (रू. भे.)

विद्युतपरणा—देखो 'विद्युत्परणा' (रू. भे.)

विद्युतप्रभ—देखो 'विद्युत्प्रभ' (रू. भे.)

विद्युतप्रभा—देखो 'विद्युत्प्रभा' (रू. भे.)

विद्युतलता—देखो 'विद्युल्लता' (रू. भे.)

विद्युता—सं. स्त्री. [स.] १ कुबेर की सभा में नृत्य करने वाली एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनि के स्वागत समारोह अवसर पर नृत्य किया था।

२ देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू. भे.—विद्योता।

विद्युनाक्ष—सं. पु. [सं.] कुमार कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

विद्युति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (नां. मा.)

विद्युत्केस—स. पु. [सं. विद्युत्केश] १ हेति नामक राक्षस जो भयासुर की पुत्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

वि. वि.—सन्ध्या की सालकटंकटा इसकी पत्नी थी। इससे उत्पन्न गर्भ मंदर-पर्वत पर छोड़ दिया गया था जिसका पालन-पोषण शिव ने किया था। कहीं २ इसकी पत्नी का नाम पौलोमी भी मिलता है।

२ सुकेशी नामक राक्षस का पिता, एक राक्षस राजा।

रू. भे.—विद्युनकेस।

विद्युत्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे.)

विद्युत्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युत्त्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे.)

विद्युत्त्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युत्पताक-सं. पु. [सं.] प्रलय-काल के सात मेघों में से एक मेघ का नाम।

रू. भे.—विद्युतपताक।

विद्युत्परणा-सं. स्त्री [सं. विद्युत्पर्णा] कश्यप ऋषि व प्राधा के गर्भ से उत्पन्न एक अप्सरा, जिसने अर्जुन के जन्ममहोत्सव पर नृत्य किया था।

रू. भे.—विद्युतपरणा।

विद्युत्पात-सं. पु. [सं.] वज्रपात होने की क्रिया, बिजली गिरने की क्रिया।

विद्युत्प्रभ-सं.पु. [सं.] १ एक दानव, जिसे रुद्रदेव से वरदान स्वरूप,एक वर्ष तक तीनों लोकों का आधिपत्य, शिव का नित्यपार्षदपद, एक करोड पुत्र एवं कुशद्वीप का राज्य आदि मिले थे।

२ 'पापमोचन' एवं "सूक्ष्म-धर्म" के सम्बन्ध में इन्द्र से चर्चा करने वाला एक ऋषि।

रू. भे.—विद्युतप्रभ।

विद्युत्प्रभा-सं. स्त्री. [सं.] १ उत्तर दिशा में रहने वाली दस अप्सराओं का गण।

२ दैत्यराज बलि की एक पोती का नाम।

रू. भे.—विद्युतप्रभा।

विद्युत्प्रिय-सं. पु. [सं.] १ कासा नामक धातु।

२ उक्त धातु का बना कोई बर्तन।

वि. वि.—उक्त कांसा या उक्त धातु से बना हुआ कोई बर्तन बीजली को अपनी ओर जल्दी खींचता है।

विद्युत्माला—देखो 'विद्युन्माळा' (रू. भे.)

विद्युत्माळी—देखो 'विद्युन्माळी' (रू. भे.)

विद्युत्लता-सं स्त्री. [सं.] बिजली की कौंध या चमक।

रू. भे.—विद्युतलता।

विद्युद्गौरी-सं. स्त्री. [सं. विद्युद्गौरी] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युद्ध्वज-सं. पु. [सं. विद्युद्ध्वज] एक असुर का नाम।

विद्युद्वक्ष-सं. पु. [सं] स्कन्द का एक सैनिक।

विद्युद्वाक्ष-सं पु. [सं.] एक राक्षस का नाम। (पुराण)

विद्युद्दंष्ट्र-सं. पु. [सं. विद्युद्दंष्ट्र] राम-रावण युद्ध में राम की सेना का एक वानर।

विद्युद्रूप, विद्युद्रूप-सं. पु. [सं. विद्युद्रूप] १ लंका का एक राक्षस।

२ कुबेर का सेवक, एक यक्ष।

वि. वि.—मेनका की पुत्री मदनिका इसकी पत्नी थी। यह एक बार अपनी पत्नी के साथ कैलास पर्वत पर मद्यपान कर रहा था। वहां कंक नामक गरुड़ वंशीय पक्षी से इसका झगड़ा हुआ और इसने उसे मार दिया। कंक के भाई कदर ने आकर इससे युद्ध किया और इसका वध किया। इसके वध कर दिये जाने के कारण इसकी पत्नी ने कदर के साथ विवाह कर लिया।

विद्युद्वर्चस-सं. पु. [सं. विद्युद्वर्चस्] एक सनातन विश्वदेव।

विद्युन्माळ-सं. पु.—राम-रावण युद्ध के समय राम के पक्ष का एक बन्दर।

विद्युन्माळा-सं. स्त्री [सं.] १ एक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ गुरु वर्ण अथवा दो मगण और दो गुरु होते हैं तथा चार-चार वर्णों पर यति होती है।

२ बिजली की कौन्ध या चमक।

रू. भे.—बिज्जुमाळा, बीजूमाळा, वादूमाळा, विद्युत्माळा।

विद्युन्माळि, विद्युन्माळी-सं. पु. [सं. विद्युन्मालिन्] १ तारकासुर राक्षस के तीन पुत्रों में से मझला पुत्र। (पुराण)

वि. वि.—इसके अन्य दोनों भाईयों का नाम ताराक्ष एवम् कमलाक्ष था। इसने भगवान् शंकर की आराधना कर एक सोने का विमान प्राप्त किया था जिस पर चढ़ कर यह रोजाना सूर्य के पीछे-पीछे घूमता रहता था। इसलिए उस विमान में कभी अन्धेरा नहीं होता था। सूर्य ने उस विमान को अपने तेज से गला दिया। इसने धर्म के पुत्र सुषेण से भी युद्ध किया था।

इसने अपने दोनों भाइयों के साथ ब्रह्मा की तपस्या कर सन्तुष्ट किया और यह वर प्राप्त किया कि सोने, चांदी व लोहे के तीन नगर में हम तीनों एक बार पास-पास और हजार साल अलग-अलग रहेंगे तथा हमारा वध उसी समय किया जा सकेगा जब कि हम तीनों पास-पास हों। मगर वध के लिए इन्होंने मांगा कि हम तीनों का एक साथ वध एक ही बार में हो। इस वर प्राप्ति के बाद इन्होंने देवताओं व मनुष्यों को बहुत सताया। इस लिए देवताओं ने शिव की स्तुति की और इनका वध करने हेतु कहा। शिव ने अपने त्रिशूल से इनके तीनों नगरों को छिद्रित कर दिया और विष्णु बाण, जिसकी नोक पर अग्नि और पीछे वायु थी और मन्दर पर्वत धनुष से, जब ये तीनों एक साथ थे, इनके नगरों सहित इन्हें भस्म कर दिया।

२ राम-रावण युद्ध में रावण-पक्षीय राक्षस जिसे राम-पक्षीय सुषेण नामक वानर ने मारा था।

३ एक राजा (प्राचीन)

४ तारका-मय युद्ध में मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पार्षद नन्दिन के द्वारा हुआ था।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल में रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—विद्युन्माळी, विज्जमाळ, विज्जमाळा, विज्जमाळि, विज्जमाळी।

विद्योत—सं. पु. [सं.] १ धर्मऋषि एवं दक्षकन्या लंबा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि।

२ एक अप्सरा का नाम।

३ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

विद्योतन—सं. पु. [सं.] सूर्य, सूरज। (ना. मा.)

विद्योता—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्युता' (रू. भे.)

विद्योपरिचर—सं. पु. [सं.] वायु के अनुसार, कृत नामक वसु का पुत्र।

विद्रधि, विद्रधी—सं. पु. [सं. विद्रधिः] १ एक प्रकार का फोड़ा।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घातक फोड़ा। (अमरत)

विद्रभ—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

विद्रम—देखो 'विद्रुम' (रू. भे.)

उ०—१ नासिका सुक चंच सरिखी सुगरण्ठ सजोति। अधिर विद्रम ओपमा, जेहा हसण हीरा जोति। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ गति गयंद, जघ केळिथंभ केहरि जिम कटि लंक। हीर दसण, विद्रम अधर, भाल-अकुटि मयंक। —ढो. मा.

उ०—३ (जाणे) मोती लड़ पोई परसारै, अधर विद्रम विचित्त रे। सघणां नैणां सारिखा रे, दाडिम कूलीय दीपत रे। —प. च. चौ.

विद्रमान—देखो 'विद्यमान' (रू. भे.)

विद्रमो—देखो 'विद्रुमो' (रू. भे.)

विद्रब—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

उ०—मिळै कोटि तेतीस सुर भीम रै मांडळो, अविनि आण करा अधिक ओछाह। जानि उधमन अनिरुद्ध जिसा जानिया, विद्रबां तणो घर हुओ वीमाह। —पी. ग्रं.

विद्रवण—वि.—देने वाला।

उ०—अपणो ख्यातो संगति जगत कूं सुनावै, लख लहण सवालख विद्रवण का बिरद बुलावै। वडे जंगू में बिरद बोल लोह बाहू को ओप अति लहावै। आप सवमें आप वो उजळ वांहै। —सू. प्र.

विद्रवणो, विद्रवबो—क्रि. स.—१ दान देना, धन लुटाना।

उ०—उदर दर खग मरै पंख ओगळै भुयंगह, हुए अहि मरै वरिहा हरी जब चरै तुरंगह। गूंब धन सच मरै वीर विद्रवै विग्रह पर, पडित पढ गुण मरै मूढ भूख गयाहर। —नैणसी

२ बांटना, देना।

उ०—जोगी तेल माहे पड़ीयो। सोनै रो पोरसो हुवो। हिवै ईयां पोरसो घर में आणि राखियो। सोनो वेचीजै। खाईजै वीद्रवीजै। हिवै दारू काढीजै। अठघा राति दिन तपत्यां रहै। —देवजी बगड़ावतां री वात

क्रि. अ.—३ द्रविभूत होना।

४ दौड़ना, भगना।

विद्रवणहार, हारो (हारी), विद्रवणियो—वि०।

विद्रविओड़ो, विद्रवियोड़ो विद्रव्योड़ो—भू० का० कृ०।

विद्रवीजणो, विद्रवीजबो—कर्म, भाव वा०।

विद्रवियोड़ो—भू. का. कृ.—१ दान दिया हुआ, धन लुटाया हुआ. २ बांटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुवा हुआ. ४ दौड़ा हुआ, भागा हुआ।

(स्त्री. विद्रवियोड़ी)

विद्रावण—सं. पु.—कश्यप एवं दनु के पुत्रों में एक।

विद्रावी—सं. पु. [सं. विद्राविन्] १ भागने वाला।

२ फाड़ने वाला।

विद्रुत—सं. पु.—ययाति वंशीय एक राजा।

विद्रुम—सं. पु. [सं. विद्रुमः] १ नव रत्नों में से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल। (अ. मा.)

उ०—१ पाका बिंब सधु समा रे, ओपित विद्रुम जांण रे। मामोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खाण रे। —प. च. चौ.

उ०—२ फटिक-रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मणसिल पारो गुजरस आदि धातु नीहाल। मही बड़ो अरगोटो पलेवो पाषाण, ओदन तुरी ओम भूमि पाहण जे खाण। —वृम्न.

२ मूंगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष।

३ कोपल।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

रू. भे.—विद्रम।

विद्रुमलता—सं. स्त्री. [सं. विद्रुमः + लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य।

२ मूंगा।

विद्रुमाभा—सं. स्त्री. [सं.] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी।

२ ज्ञान रूपी देवी।

विद्रुमी—वि.—१ मूंगे का, प्रवाल का।

२ लाल रंग का।

रू. भे.—विद्रमी, विद्रुमी, विद्रमी ।

विद्रोह—स. पु. [सं.] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है ।

उ०—बसू प्रचंड दंडतं प्रचंड दडतं वहैं, वितंड चंड दंड दं ग्रदंड खंडतं वहै । बिमोह मोह मोह में विद्रोह द्रोहि पें बढे, कृतांत भांत कोह मैं कुकोह कोहि को कढे । —ऊ. का.

२ वह ग्राचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति ग्रविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी ग्राज्ञा, विधान ग्रादि के विरुद्ध किया जाता है ।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव ।

रू. भे.—विदरोह ।

विद्रोही—वि.—१ विद्रोह से सम्बन्धित ।

२ विद्रोह करने वाला ।

रू भे.—विदरोही ।

विद्वता—स. स्त्री. [स.] १ विद्वान या पंडित होने का भाव ।

२ जानकारी, ज्ञान ।

रू. भे.—विदवता, विद्वत्ता ।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

उ०—तनि ग्रोप करण कवि वरण तासु, प्रति नवळ जळद विद्वति प्रकास । व्रति चलनि मुगति दुति ग्रमित विद्ध, पदमगिय हम किरि गुरु प्रसिद्ध । —रा. रू.

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू. भे.)

विद्वस—वि [सं. विद्वस] १ पंडित, विद्वान ।

२ कवि ।

३ चतुर, होशियार ।

विद्वांन, विद्वांस—स. पु. [स. विद्वान, विद्वन] १ ग्रपनी ग्रात्मा का स्वरूप जानने वाला ।

२ बहुत ग्रधिक विद्या पढ़ा हुग्रा, सर्वज्ञ ।

उ०—······छपंन लिपि तणी ग्रलवि करइ, पात्रीस महाकाव्य तणा सुभाषित भणइ, स्वदरसन परदरसन तणा भाव प्रकासइ, ग्रागमारथ ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्स्यायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुरवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नसागर करवालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वांस । —व. स.

३ पंडित ।

उ०—टाबर ग्रागं नी तो मोट्यार रै डील रो करार कांम ग्रावै, नीं किणी बकवा राजा री जोर हालं ग्रर नी किणी विद्वांन री समझ के ग्रकल ई कांम देवै । ग्रबूझ बाळक सू दुनियां री कोई ताकत जीत नी सकै ग्रर जे कोई ग्रकलहीण उण सू जीतणरो थोथो गुमांन ई करै तो हारणिया नै ग्रापरो हार री ग्रणं ई बेरो नी व्है । —फुलवाड़ी

रू. भे.—विदमांन, विदमांन, विदवान ।

विद्विस—सं. पु. [स. विद्विषः, विद्विष] शत्रु, रिपु ।

विद्वेस—सं. पु. [स. विद्वेष] शत्रुता, दुश्मनी, वैर ।

रू. भे.—विदवेस ।

विद्वेसक—स पु. [स. विद्वेषक] शत्रुता करने वाला, शत्रु ।

रू. भे.—विदवेसक ।

विद्वेसणी विद्वेसिणी—सं. स्त्री. [सं विद्वेषिणी] दुःसह नामक यक्ष की निर्म्माष्टि के गर्भ से उत्पन्न ग्राठवी ग्रौर ग्रन्तिम कन्या । (पौराणिक)

वि.—विद्वेष करने वाली या रखने वाली ।

रू. भे.—विदवेसणी, विदवेसिणी ।

विद्वेसी—वि. [सं विद्वेषिन्] विद्वेष करने वाला, शत्रु ।

रू. भे.—विदवेसी ।

विधंस—देखो 'विध्वस' (रू भे.)

उ०—जांणों बादळा माहै बीजड़ियां रा मिला ऊपड़िया पाखरां ऊपरै सारधारां फूलधारां वाजी सु ठणणणाण जाणै परभात री झालर ठणकी, नर बगतर विधंस हुग्रा । —रा. सा. सं.

विधंसक—देखो 'विध्वसक' (रू. भे.)

विधसण—वि.—नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सडण पडण विधंसण देहणी, तिण री किसडी रे ग्रास । खिण एक मांही रे जासी विगड़ी, जिम पांणी मांहै पतास । —जयवांणी

२ देखो 'विधूंसण' (रू. भे.)

विधसणो—वि.— नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला ।

विधसणो, विधसबो—देखो 'विधूंसणो, विधूंसबो' (रू. भे.)

विधंसणहार, हारो (हारी), विधसणियो—वि० ।

विधंसिग्रोड़ो, विधंसियोड़ो, विधस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विधंसीजणो, विधंसीजबो—कर्म वा० ।

विधंसियोड़ो—देखो 'विधूंसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विधंसियोड़ी)

विध—सं. पु. [स विधः] १ तरह, प्रकार, भांति ।

उ०—१ ग्रटकाई नह ग्राय बळ, ग्राई जरा ग्रगूढ । ग्रासी जद तू ग्रटकसी, मांन किसी विध मूढ । —बां. दा.

उ०—२ भड़ां वात सगळे, एण विध हूंत ग्रकारां । बहसि 'गजण' बांनियो, वर्ध पौरस जिण वारां । —सू. प्र.

उ०—३ भगमत जेम नेम बळ भोवा, ग्यान दिलो दळ जळ बिण छोवा। 'लखो' 'महेस' कहै बिध माळां, रवद घवंग वंस त्रिम माळा।
—रा. रू.

उ०—४ घमान राव भोमीकियो, बिध जिण बांकम होइ। कुमति पण ऊपर कहै, कहो गुमतो कोइ।
—गु. रू. ब.

२ ढंग, तरीका, प्रकार।

उ०—१ मारि न को पूरखा, जमर न मूरखा, वेद न ख्यारि बखंदा है। मगभं पद बोल्या, घमर खोल्या, बिध बिरळा बूमंदा है।
—मनुभवबाणी

उ०—२ बार बिकार सिरदार बिध गाहियो, मगर मर मार पार मार मूरै। मार समार ऊपार अभार मर, पार खोघार कर पार मूरै।
—नाथो गाडू

उ०—३ हिवै ईयै तर चोर करायो। साथ मरब लोक हुता, सु घरै ही ज रह्या। ईयै री माहिवी हुई। माळधा रा बरन कीया। सु माळघा नै प्रिथीराज रो साग दीयो। माळघा रा बरग घणा हुवा इणं बिध तम रहै।
—जागळ री वात

३ वृत्तान्त, हकीकत।

उ०—१ भागो 'गोंदं' 'इंद' सूं, बिध सारी बगमीर। तुरत बिचारी कूच री, मोच न भारी भीर।
—रा. रू.

उ०—२ सो वाचिया मुगो बिध सारी, माई लिखी प्रवस्था भारी। माह मुगळ पूरो गरसावं, ग्रवर 'सवाई' वेध उठावं।
—रा. रू.

४ कारण।

उ०—मुणी हास्य बिध कहै नरेसुर, गनिका प्रेह ग्रामण जोगेसुर। धनमय गिर भंगर नह बसियो, हू यो देख कतूहळ हसियो।
—सू. प्र.

५ संधि। (घ. मा.)

६ समूह, व्यूह। (घ. मा)

७ देखो 'बिघि' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ करै तांम कमधज, सुणी साहिब छत्रपती। बिध विचार धारियो, सको तिण भार सुमत्ती।
—रा. रू.

उ०—२ भवनी रोग मनेक, ज्यांरा बिध कीना जतन। इण प्रकृति री येक, रची न भोखद राजिया।
—किरपाराम

उ०—३ कवि प्रोहित मत्री प्रधांन, बिध मंत्र बिचारै। रहो मात बहुवाण, घरज हुत बात उचारै।
—रा. रू.

उ०—४ बिध रा जाण गाथ रा बोकम, पारिख वांण हाथ रा पाथ। जुध रा भीम खळां रा गजण, 'भाष' रा बुध गणनाथ।
—भाईदांन पाल्हावत

८ देखो 'बिधु' (रू भे.) (घ. मा.)

रू. भे.—बिद्ध, बिघ, बिवि, बिद, बिद्व, बिढि।

बिधमंक–सं. पु—देखो 'बिधिमंक' (रू. भे.) (घ. मा.)

बिधकर - देखो 'बिधिकर' (रू. भे.) (घ. मा., ह. नां. मा.)

बिधचूक, बिधचूड–स पु. [सं-विधाचूण्ट] कपट, धोखा। (घ. मा.)

बिधत—देखो 'बिधाता' (रू. भे.)

उ०—वण ब्रहम बिधत री मरव कुसुत री तूं गंगा गावतरी। पारबती सिमो हेम री पुतरी सीतामाता सावतरी जो सीतामाता सावतरी।
—पी. ग्रं.

बिधनयण—देखो 'बिधिनयण' (रू भे.) (क कु. बो.)

बिधना–स. पु [सं. विधि] ब्रह्मा, विधाता। (डि. को.)

उ०—१ नहचै होय निसक, चित नह कीजै चळ-विचळ। ग्रै बिधना रा ग्रंक, राई घटै न राजिया।
—किरपाराम

उ०—२ सुदर बदन नयन ग्रग मांनो, बिधना ग्राप संवारो। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीतै हम हारी।
—मीरां

उ०—३ ग्रब तो जिय ऐसी बनि ग्राई, बिधना रचो सोइ होय री। ग्रगो जे मेरो यह लोक जात है, वह परलोक जिन जाव री।
—मीरां

उ०—४ कै ग्रा पटकी ऊपर पडगी कैग्रा भावी रच्ची रांम। कै ग्रा बिधना लेख लिखागो, कै ग्रा तन्नै जच्ची राम।
—करणीदांन बारहठ

रू. भे—बिधना।

बिधरम—देखो 'बिधरम्म' (रू. भे.)

बिधरमो—देखो 'बिधरम्मो (रू. भे.)

बिधरम्म–स. पु [सं. विधर्म] पराया या दूसरा धर्म।

वि.—१ जो धर्मशास्त्र मे निन्दित हो।

२ जिसका कोई धर्म न हो।

रू. भे.—बेधरम, विधरम, बिध्रम, बिध्रम्म।

बिधरम्मो–वि. [सं. विधर्मिन्] १ ग्रपने धर्म के विपरीत ग्राचरण करने वाला।

२ पराये धर्म का ग्रनुयायी, धर्मभ्रष्ट।

रू. भे.—बिधरमो, बिध्रमो, बिध्रम्मो।

बिधरेख, बिधरेखा–सं. स्त्री. [सं. विधि+रेखा] भाग्य में लिखा हुग्रा लेख, विधाता की रेखा, कर्मरेख।

उ०—पिण भावी ग्रति प्रबळ, सकळ बस प्रांण ग्रमेखा। हुग्रणहार सिध करै, वार न धरै बिधरेखा।
—रा. रू.

बिधवत—देखो 'बिधिवत' (रू. भे)

उ०—१ कहियो न्रप प्रज भय किण सूं, ज्वाळामुखी न पूजे जिण सूं। भांणउदीप विगत सुण भारी, बिधवत्त सकति पूजि बिसतारी।
—सू. प्र.

उ०—२ नाळिग्र सूर ससि ग्रर मुनिंद्र, प्राविया वरुण कुम्मेर इंद्र। विप्र वेद मंत्र बिधवत विचार, प्राहूत वेद सुरमुख ग्रपार।—सू. प्र.

बिधवा-सं. स्त्री. [स] वह स्त्री, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया हो, पतिहीना स्त्री।

उ०—१ बांरी ग्रेक बिधवा भूवा ग्रणूंती धनवती ही। वें उण मार्थ ठगाई रो पासो फेंकणो चायो। ग्रेक भाई मोको देखनें छांनें भूवा रै पाखती गियो। भूवा री हाजरी में ग्रेक पग रै पांण ऊभो रै'तो। —फुलवाड़ी

उ०—२ उण बिधवा बांमणी री गळ.ई कळजुग री धरम निभायां ई ग्रापांरो जमारो सुधरैला ग्रर सतजुग रै मरियोड़ा ढोर री पूंछ झालियां धन ग्रर बेटा दोनां सूं हाथ धोणा पड़ैला। —फुलवाडी

उ०—३ सगळा मिनख ग्रर बस्ती री तूमार जोयां पछै ई म्हैं फगत धन मार्थं ग्रास गडाय राखी ही। बेटी! बिधवा रो सासरो, पीवर, माईत ग्रर भगवान फगत धन इज है। —फुलवाड़ी

उ०—४ बापड़ी भोळी- ढाळी किन्यावां नै कुड़कै में नांख'र वेगीसी बिधवा बणा देवै। सुवाग री नीं रडापै री चंवरी चाढै।
—दमदोख

रू. भे.—बधवा, बिदवा, बिधवा।

बिधवापण, बिधवापणूं, बिधवापणौ-सं. पु.—विधवा होने की अवस्था वैधव्य।

उ०—१ ग्राप एकलो मरनै फकत म्हनै हीज बिधवापणो नहीं देसी घणी जणियां विधवा हुसी तद म्हारो ही चूड़ो ले जासी। चूड़ा रो दूसरो प्रयोजन लेजावणो सो हूं सती होवसूं सो चूड़ा सहत सार्थं ले जासी। —वी. स. टी.

उ०—२ गाढै बिधवापण ग्रहूं, हू न करू' तन हांण। पींह जिण लाजै ग्रमरपुर. सूरजमल सुरताण। —पा. प्र.

रू. भे.—बिधवापण, बिधवापणूं, बिधवापणौ।

बिधवा-बियां, बिधवाबिवाह-सं. पु.—पुनर्विवाह।

उ०—''तो कोई परणीजियोड़ी ई परणीजै है क्या! धरम डूब को जावै नी?'' ''थोंनै धरम री टांग पूंछ री तो ठा ग्री कोयनी, पराया घर ऊनै पांणी-सूं बाळता फिरो हो।'' ''तो थें कराय दिया बिधवा-बियां? हूं घो देखूला?'' —वरसगांठ

बिधवासरम, बिधवाश्रम-सं. पु. [सं. विधवा+ग्राश्रम] वह स्थान, जहां विधवा स्त्रियों के पालन-पोषण एवं शिक्षा ग्रादि की व्यवस्था हो।

बिधबिधान-क्रि.—विधिपूर्वक, विधिवत्।

उ०—बांणातरां साह नें परणायो। जठै सारो बिध-बिधांन करनें सगां डायचो दीधो। —साहूकार री बात

बिधब्रख-सं. पु. [सं. विधि-वृक्ष या वृक्ष-विधि] पलास नामक वृक्ष।
(ग्र. मा.)

बिधस्रवा, बिधस्रवा-स. पु. [सं. वृद्धश्रवस्, वृद्धश्रवा] इन्द्र।
(ग्र. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

बिधांण, बिधांन-सं. पु. [सं. विधान] किसी कार्य का ग्रायोजन।

२ कार्य करने की रीति, व्यवस्था व सम्पादन।

३ ढंग, तरीका।

उ०—मालती सेवती केतकी प्रफूलमांन। फूलूं की सोभा ग्रसमांन के ताक्ं का बिधान। केवड़ू की वाड़ी सिफ्ं का विकास। नाफरमां हजारा ग्रौरै गुलहूवास। —सू. प्र.

४ तरकीब, उपाय।

५ धर्मशास्त्र की ग्राज्ञा।

उ०—छत्रप्पती उछाह में, धनेस माल ऊढमैं। वेदोगतं बिधांनयं, दुजां ग्रनेक दांनय। —सू. प्र.

उ०—२ तपवंत भूप निज धांम तत्र, छज कनक सिंघासण चमर छत्र। दुतिवंत करै सन्नांन दान, विध राज रीत सासत्र बिधांन।
—सू. प्र.

६ हाथी को मस्ती में लाने हेतु खिलाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

७ धन, सम्पत्ति।

८ पूजा, ग्रर्चन।

उ०—विदा हुए पाधारियो, पुहकर मुरधर-पत्त। दांन सिनांन बिधांन दिन, पुनि मनि इंद्र प्रकृत्त। —रा. रू.

९ ग्राज्ञा, ग्रादेश।

१० किसी देश के सर्वोच्च कानूनों का संग्रह।

११ वाद्य।

१२ रचना बनावट।

१३ सुख देवों में से एक।

१४ नियम, कानून।

१५ कारण।

उ०—ग्राहार मांहे ग्रावतां हो, जीव हता दिन ज्यांन। कीड़ी तो निरबुद्धि करै, वलि माखी वमन बिधांन। —घ. व. ग्रं.

उ०—जिन्है पख क्रस्ण सुकल बिधांन, जिन्है वपु ग्रंग सुदक्खिण वांम। ब्रह्मा दक्षण ग्रग वदीत, निपायो दक्ष प्रजापति मीत।
—रा. रू.

१६ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (ना. द.)

वि.—१ समान, तुल्य।

२ रचनाकर्त्ता, रचयिता।

उ०— म्है सबळ सकळ जगती प्रांणी, तूं सबळ सत्व है नकिरांण । म्हे दास सदा तेरा स्वांमी, प्रारंभ जग रो है तूं बिधांन।

—करणीदान बारहठ

रू. भे. बिधान, बिध्यांन, विहांण ।

बिधांनसपतमी, बिधांनसतमी, बिधांनसातम—सं. पु. [सं. विधानसप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी से प्रारंभ करके अगले वर्ष की पौष शुक्ल सप्तमी तक पूरे एक वर्ष तक किया जाने वाला सूर्यदेव का व्रत विशेष ।

बिधांनीक—सं. पु.—डिंगल गीतों की रचना का ढंग विशेष जिसमें क्रम-क्रम से प्रथम द्वाले के तीन चरण में जो बात कही जाती है उसका स्पष्टीकरण चतुर्थ चरण में किया जाता है ।

उ०— तुक तुक में क्रम सो तवै, सबर सबर बिध जोण । सभ चौथी तुक नाम सो बिधांनीक बाखांण ।

—र. रू.

बिधांसणौ, बिधांसबौ—देखो 'बिधूंसणौ, बिधूंसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सठा उगरान करि नै राजान सिलांमति मांचिया अकासिया सूधर भाखरा रा मोढा फाड़ फाड़नै निकळिया छै । सूमरै राते सून कियो छै । सूरै गुलबाड़ि बिधांसिया छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—२ भूधर न भाइयो भगता रो, सं दानार नहीं छिगता रो । बिज रै नेम बजाड़ी बांसी, बहै भगत काज बांधि बिधांसी ।

—पी. ग्र.

उ०—३ बडी बड ग्रारभु ज कुळ भार, घरा सिणगार हसो लख-बीर । धहे लख-धाट नमावण थाट, बिधांसण थाट सत्रां बर बीर ।

—ल. पि.

उ०—४ बिधांसइ रेसद राकस बंस, कीयो ते कंस । दहकंध कियो बहै सुरलोक तणो सहि थट, बडो कोइ डोल नमो बैराट ।

—पी. ग्र.

बिधांसणहार, हारो (हारी), बिधांसणियो—वि० ।

बिधांसिश्रोड़ो, बिधांसियोड़ो, बिधांस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिधांसीजणो, बिधांसीजबो—कर्म वा० ।

बिधांसियोड़ो—देखो 'बिधूंसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० बिधांसियोड़ी)

बिधा—सं. स्त्री. [सं.] १ ढंग, तरीका ।

२ तरह, प्रकार, भांति (सभा)

३ किस्म, जाति ।

४ धन, सम्पत्ति ।

५ हाथी या घोड़े का चारा ।

६ किराया, भाड़ा ।

७ मजदूरी ।

८ रचना ।

उ०—नारी, सोवै है सपणै घर, सांई रै साथ सुहांणी है । नारी है विधि री अनुप बिधा, नारी री अलग कहांणी है ।

—करणीदांन बारहठ

९ देखो 'विद्या' (रू. भे.)

१० देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—अरि मागां हरि पंखां आवै, जोघ बिधा सकबर छळ जाण । बिहू चोतीस कुळां क्रम वधण, भाग भांण-हरै कुळ भांण ।

—गोपाळ मीसण

बिधातनताका—सं. पु. [सं. विद्योतन+ताका या विद्या+तन+ताका] चन्द्रमा । (डि. को.)

बिधाता—वि. [सं. विधातृ] १ रचना करने वाला, सृष्टिकर्त्ता ।

उ०—पैली परमेसर याद करयो, 'हैं जगत पिता है जगदीसर । तू सग जग भाग बिधाता है, तू ही बाहर तू ही भीतर ।

—करणीदांन बारहठ

२ देने वाला, दाता ।

उ०—गुर दयाळ दीन गुर दाता, गुर सबहन के थांन बिधाता । गुर हैं दया पाल गुर देवा, या गुर की मिळ करीयै सेवा ।

—अनुभववांणी

३ प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला ।

सं. पु.—१ ब्रह्मा । (ना. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ अजमे कनक भूखण पहर त्रत अवर, कनक मे बिधाता मुकुट कीधी । लहर हिक सरण हित भभीखण रंक लख, दांन गढ लंक सणसत्र दीधौ ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ इण भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूखण बिराजिया छै । जाणै इन्द्र-लोक री अपछरा, रूप री रंभा, आसमान री ऊतरी पड़ी । चित्राम री पुतळी, बिधाता हाथ सूं संवारी ।

—रा. सा. सं.

उ०—३ देवी मभ्रसा गाइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवींद संभु बिधाता । देवी सिद्धि रै रूप नव-नाथ माथै, देवी रिद्धि रै रूप धनराज हाथै ।

—देवि.

उ०—४ दमकधर आता बुध के दाता, वचन बिधाता कंवाता । सो नाह सुहाता, परजळ गाता, उग्ने, ताता, मुरझाता ।

—भगतमाळ

२ विष्णु ।

३ शिव, शंकर ।

४ कामदेव ।

५ विश्वकर्मा ।

६ भृगु एवं ख्याति के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र ।

वि. वि.—इसके दूसरे भाई का नाम धाता था । इन दोनों ने

नियति और आयति नामक मेरु पुत्रियों से विवाह किया था। विधाता व नियति के गर्भ से मृकण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। कमलों में निवास करने वाली विष्णु पत्नी लक्ष्मी इनकी बहिन थी। मतान्तर से विधाता व नियति के गर्भ से प्राण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

७ प्रारब्ध, भाग्य।

८ पचचित नामक अग्नि का पिता व क्रिया का पति एक आदित्य, जो आषाढ या मार्गशीर्ष मास मे प्रकाशित होता है।

स स्त्री. [सं. विधातृ] ९ मदिरा, शराब।

१० ब्रह्मा की पत्नी सरस्वतीरूपा।

रू. भे.—विधाता, वेहा, विद्याता, विद्यातानाथ, विधत, विधातानाथ, विधात्र, विधात्रा, विधात्री, विध्याता वेह वेहा।

विधातानाथ—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—विधातानाथ वरण लेख अवरी वरी, बिया राघव करी अचळ वातां। हार ग्रीवा तणा देख झाला हियै, हार वारण लियां रही हातां। —कल्याणसिंह झाला रो गीत

विधात्र, विधात्रा, विधात्री—२ देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ अेगो न्याति नारद हवउ, उत्तम अवर विधात्र। जिहां जिमतु तिहा ऊठतु, भांजी भोजनपात्र। —मा. कां. प्र.

उ०—कुअरी कारण हीयडइ घरइ, थई ऊपराठी आंसू भरइ। कुंअरी तणउं अंग खळभळइ, लिख्यउ विधात्रा तैं किम टळइ। —कां. दे प्र

विधायक–वि. [स. विधाकः] १ कानून बनाने वाला।

२ व्यवस्था करने वाला।

३ रचना करने वाला, सृष्टि कर्त्ता।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक। मरवजीव विस्वकृत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि.

स. पु.—विधान सभा का सदस्य।

रू भे.—वधायक।

विधारा–सं. स्त्री.—दक्षिण भारत मे बहुतायत से मिलने वाली एक प्रकार की लता।

विधि–स. पु. [सं. विधिः] १ काम करने की रीति, क्रिया या व्यवस्था।

उ०—१ आगळि पित मात रमती अगणि, कांम विरांम छिपाड़ण काज। लाजवती अंगि एह लाज विधि, लाज करती आवै लाज। —वेलि.

उ०—२ प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज फळ। —मे. म.

२ तरह, प्रकार भांति।

उ०—१ दियौ सेत वरदान तू, परमेसरि प्रस्ताव। राजान रो रस कथा, विधि कहि वात वणाव। —रा. सा. स.

उ०—२ दुविधि अन पल त्रिधा, साग पंच मांस धारण। गौ रस जुग विधि गिणित, मिस्ट गति ए कवि चारण। —रा. सा. स.

उ०—३ आप इसी हित चित इकतारी, नृपती कहौ आंण सुजि नारी। देतां दव करतां जुध दावै, आंणो जेण तेणि विधि आवै। —सू. प्र.

३ आज्ञा, आदेश।

४ कार्यक्रम, प्रणाली, ढग, नियम, कायदा।

उ०—१ मिळि मत्री परधान मैं, विधि दवळै विच्चार। जळ रखण गढ जोधपुर, के रक्खौ जोधार। —गु. रू. ब.

उ०—२ तब रुखमणीजी डावै पासै वैसाण्यां। ज्यौं विधि छै त्यौं बोल वाचा लै। ज्यौं कही छै त्यौं करि नै विवाह पूरण कीयौ। तिहि वेळां वेद का पठणहारां मुंहमांगी मु नवही निधि पाई। —वेलि टी.

उ०—विधि सहित वधावै वाजित्र वावै, भिन भिन अभिन वांणि मुख भाखि। करै भगति राजान क्रिसन री, राजरमणि रूखमिणि ग्रह राखि।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा।

६ ढग।

उ०—सहिजि उलवयइ सूर सरी, नीकन नेडी थाइ। बग्र तणी विधि अंगमइ, कुसुम सरीखी काय। —मा. कां. प्र.

७ धार्मिक विधान।

८ भेद, रहस्य।

उ०—ताहरा आ बोली, "न हूं सासरै वहू, ना पीहर बेटी, अय विचाळै ऊभी छूं। ताहरा औ बोलियौ, 'ईयै रो जाब कीमू? यूं क्यू ऊभा? मोनू थाहरै मन री विधि कहौ।" —कावळो जोईयो नै नोडी खरळ री वात

९ सृष्टि, रचना।

१० सृष्टिकर्त्ता, विधाता, ब्रह्मा। (ह. ना. मा.)

उ० - १ बोल नवाब सरस दृढ वधै, सुन पितु हूंत महा छळ सधै। यू रिम सूरत सून प्रवर्ते, नेम लियौ विधि जेम निमंधै। —रा. रू.

उ०—२ जोग नीद बस भयै निरजन, गज्जै असुर पितामह गजन। आकृति विकट निकट चलि आयै, काढि दसन विधि ग्रसन धिकायै। —मे. म.

उ०—१ नारी सोवं है घरणी घर, मांह ? माय मुहाणी है। नारी है बिधि री प्रनुप बिधा, नारी रो प्रमग कहांणी है।
—करणीदान बारहठ

११ भाग्य, प्रारब्ध।
१२ वैद्य, हकीम।
१३ विष्णु का नामान्तर।
१४ विधान, नियम।

उ०—१ उरदेव समरथ एक, इतपात देख प्रनेक। प्रसहाय थांन प्रापार, बिधि परम क्रम बिसतार। —रा रू.

उ०—२ करता प्रक प्रकरता तिरगुण, तत ब्रह्म मांई प्रगुणनिरगुण। बिधि निसेध सगम होई, सब्द ब्रह्म द्रस्टा निज सोई।
—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ बिधि निसेध करम नहिं किया, बुद्धि उगत बकांणी। संत सुखरांम परम प्रकासी, प्रापी कू प्राप पिछांणी।
—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—४ मयणा कहै कर जोडि नै,भगवन ! प्रभु मुझ, ऊजमणां नी बिधि कहो, समझावीनै मुझ। मुनि कहै सांभळ स्राविका, एह नी बिधि छै भूरि,नांम मात्र तुझ नै कहू,तांमिस सुख भरपूरि।
श्रीपाल रास

१५ कानून, कायदा।
१६ साहित्य मे एक प्रर्थालंकार।
१७ व्याकरण में किसी को कुछ करने के लिए दी गई प्राज्ञा का स्वरूप।
१८ पीला।● (डिं. को.)
१९ श्वेत।● (डिं को.)
२० देखो 'बिध' (रू. भे.)
२१ देखो 'बिधु' (रू भे.)

रू. भे.—बिद्ध, बिध, बिधि, बिहि, बधी, बिठि, बिध्य बिह।

बिधिअंक—स. पु. [स. बिधि + अंक] प्रारब्ध, भाग्य।

रू. भे.—बिधयंक।

बिधिकर—स. पु.—चाकर, नौकर, सेवक। (प्र. मा., ह ना मा.)

रू. भे.—बिधकर।

बिधिग, बिधिग्य—स पु. [सं. विधिज्ञ] शास्त्रोक्त एव बिधि के विधान को जानने वाला, पंडित। (ह. ना. मा.)

बिधिनयण—सं पु [स. बिधिनयन] सूरज, सूर्य। (ह. ना. मा.)

रू. भे.—बिधनयण।

बिधिपाट—स. पु [स.] मृदंग के चार बर्णो मे से एक।

बि. बि.—इसके चारों वर्णों के नाम-पाट, बिधिपाट, कूटपाट, और खण्डपाट है।

बिधिपाठक—सं.पु.[स.]शास्त्ररीति का पाठ करने वाला या बताने वाला।

उ०—बिधिपाठक सुक सारस रस वक्तक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगल्भ लाग दाट पारेवा, बिदुर वेस चक्रवाक बिहार। —बेलि.

२ प्राधुनिक कानून का प्रध्ययन करने वाला या कानून बताने वाला, वकील।

बिधिपुत्र—स पु [सं बिधि + पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि।

बिधिपुर, बिधिपुरी—स पु. [स बिधि + पुरी] ब्रह्मलोक।

बिधिपूजा—स. स्त्री [सं.] धन प्राप्ति हेतु पौष मास की शुक्ल पक्ष की द्वितिया को की जाने वाली ब्रह्मा की पूजा, नक्त व्रत।

बिधिभेद—स. पु. [स. बिधि + भेद] साहित्य में उपमा-अलंकार का एक दोष विशेष जो उपमेय और उपमान के धर्म, गुण आदि का मेल ठीक नही बैठने पर माना जाता है।

बिधिरांणी, बिधिरानी—स. स्त्री. [सं. विधिरानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

बिधिलोक—सं. पु. [सं. बिधि + लोक] ब्रह्मलोक, सत्यलोक।

बिधिवत—क्रि. वि. [सं. विधिवत्] उचित पद्धति के अनुसार, बिधिपूर्वक।

रू भे.—बिधवित।

बिधिबदन—स. पु [स] चार की सख्या।●

बिधिवधू—स. स्त्री. [स. बिधि + वधू] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

बिधिवाहन—सं. पु [स बिधि + वाहनम्] ब्रह्मा की सवारी, हंस।

बिधिसार—स. पु.—बिम्बसार नामक राजा, जो क्षेत्रज राजा और मतान्तर से क्षत्रोजस राजा का पुत्र था।

बिधी—१ देखो 'बिधि' (रू भे.)

२ देखो 'बिधु' (रू. भे.) (प्र मा.)

बिधुंसणौ, बिधुंसबौ—देखो 'बिध्वसणौ, बिधुंसबौ' (रू. भे.)

बिधुंसणहार, हारौ (हारी), बिधुंसणियौ—वि०।

बिधुंसिप्रोड़ो, बिधुंसियोड़ो, बिधुंस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिधुंसीजणौ, बिधुंसीजबौ—कर्म वा०।

बिधुंसियोड़ौ—देखो 'बिधुंसियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिधुंसियोडी)

बिधु—स. पु [स] १ चन्द, चन्द्रमा। (ना. मा, ना. डिं. को.)

उ०—१ प्रमरत दध नह तिम प्रखर, बिधु बिसरत न बखाण। कंजन प्रजरामर करण, जस हर विसरत जांण। —र. ज. प्र.

उ०—२ विधु झळमळ मणि वासं, त्रिय त्रिपुरारि तुभ्यौनम।
—रामरासौ

२ ब्रह्मा।
३ विष्णु।
४ ब्राह्मण।
५ एक राक्षस का नाम।
स. स्त्री. [सं. वधु] ६ नवविवाहित दुल्हन।
रू. भे.—बिधु, विध, विधि, विधौ, विधू।

विधुकाल-सं. पु. [सं.] संगीत का एक ताल।

विधुत—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (अ. मा.)

विधुतुंद-सं. पु [सं.] राहु का एक नामान्तर।

विधुप्रिया-सं. स्त्री [सं] चन्द्रमा की स्त्री, रोहिणी।

विधुम-सं. पु. [सं.] अष्टवसुओं में से एक वसु जो अलंबुसा का पति था।

विधुर-सं. पु [सं.] कष्ट, दुख। (अ. मा.)
वि.—१ व्याकुल, दुखी।
२ वह जिसकी पत्नी का देहान्त हो गया हो।
रू. भे.—बिधुर।

विधुरा-स. स्त्री. [सं.] कानों के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि।

विधुवदनी-स. स्त्री. यौ. [सं. विधु+वदनी] चन्द्रमुखी, सुन्दर-मुख वाली स्त्री।

विधुंस—देखो 'विध्वंस' (रू. भे)

उ०—१ चावदंतदीह अगां दीह समां जुभ लाग चाळै, नरा नाळै मांमध्रमी तणौ साचौ नेम। क्रोध चाळै रूप गनीमांण रौ विधूंस कीधौ, 'जोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम। —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ वारबीस-गात जीम गाळिया त्रिकूट वासी,राजबीळ जाळिया तारखी तेज रूंस। कोपखी कुलेमां इद्र डाळिया पहाड़ काळा, वीर 'सिवा' वाळै सत्रां राळिया विधूंस। —हुकमीचद खिड़ियौ

विधूंसण-सं पु. [सं. विध्वंसन] नाश, सहार।

उ०—ज्यां प्रतपाळण हात निज, वहा रुखवाळण आप। कवण विधूंसण कर सकै, तो जै सरण 'प्रताप'।
—जैतदांन बारहठ

रू. भे.—विधूंसण, विधूसण, विद्धंसण, विधंसण, विध्वसण।

विधूंसणौ, विधूंसबौ-क्रि. स. [सं. विध्वंसनम्] १ नाश करना, विध्वस करना।

उ०—१ बासठि हजार फौजा रा भाजणहार। छ खड खुरसाण रा विधूंसणहार। मैंमत हाथियां रा मारणहार। पातिसाहां रा बिभाड़णहार। पातिसाहां रा पड़िगाहण। —र. वचनिका

उ०—२ सू मच जेठ कळायर सारी, आयौ रवि ज्यों किरण अकारी। पड कोपियौ किनां भार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूंसण। —रा. रू.

२ मारना, सहार करना।

उ०—१ सारां मोहर हुऔ 'सबळावत', रिण गज वड़ा विधूंसण रावत। सुत 'जालम' दोनूं अड़साळा,'सूजौ' 'अनौ' 'बिनौ' 'सिव' ज्वाळा। —रा. रू.

उ०—२ पातल घड़ पतसाह री, प्रेम विधूंसी आंण। आंण चढी कर बंदरां, पोथी वेद पुरांण। —महाराज मानसिंह

उ०—३ ओपम तिकां अमंता अच्छर, पमंगां जांण फेर आई पर। जंग छत्रदळां विधूंसे 'चद' जुड़ि, महिपुड़ि भार गया अहि फुण मुड़ि। —सू. प्र.

३ तोड़ना, भग करना।

उ०—सगै केहर रांम रै, मिळियौ जंगे भीम। 'सबळांणी' सोभां तणी, सार विधूंसे सीम। —रा. रू.

४ लूट-खसोट करना।

उ०—विधूंस्यौ देस किया सहि चकित, कमध्य न दिट्ठा मेख कटकित। महम्मद मारण मोटिममल्ल, ढढोलण डिल्लिउ भ्रेकम-ढल्ल। —राउ जैतसी रौ रासौ

५ बर्बाद करना, तहस-नहस करना।

उ०—पांन विधूंस्या रसपियौ, सुख पायौ इण डाळ। तुम जळौ'र हम उड चलें, जीणौ कितेक काळ। —अग्यात

६ रति क्रीड़ा करना, मैथुन करना।

विधूंसणहार, हारौ (हारी), विधूंसणियौ—वि०।
विधूंसिप्रोड़ौ, विधूंसियोड़ौ, विधूंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विधूंसीजणौ, विधूंसीजबौ—कर्म वा०।

विधंसणौ, विधसबौ, विधूसणौ, विधूंसबौ, विधूसणौ, विधूसबौ, बीधूंसणौ, बीधूंसबौ, बीधूसणौ, बीधूसबौ, विधंसणौ, विधंसबौ, विधांसणौ, विधांसबौ, विधुंसणौ, विधुंसबौ, विधूसणौ, विधूसबौ, विध्वंसणौ, विध्वसबौ—रू० भे०।

विधूंसिप्रोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ. २ मारा हुआ, सहार किया हुआ. ३ तोड़ा हुआ, भंग किया हुआ. ४ लूट-खसोट किया हुआ, ५ बरबाद किया हुआ, तहस-नहस किया हुआ. ६ सभोग किया हुआ।
(स्त्री. विधूंसियोड़ी)

विधू-१ देखो 'विधु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
२ देखो 'वधु' (रू. भे.)

उ०—१ मन भाव स्रंगारम वीर मढै, कमधां गुर तांम रिकांम

चढ़े । बरबाबर पाबुस राज बिधू, मिलगारिन मृगजमाल विधू ।
—पा. प्र.

विधूसणी, विधूसबो—देखो 'विधू सणी, विधूसबी' (रू. भे.)

उ०—१ जिम मागो जोगिय, बगह दिथ ज्यान विधूसण । जिम मायो ग्रह बाल, पल्य गो ग्रह छुड़ावण । —गु. रू. बं.

उ०—२ बाजै बंकी गोह कै मथाई बधो ब्लानवाडा, जगो हादां मूथा कै पनागा गाड़ै तुथ । जोम धाड़ै मागो चोटि धाड़ै झाड़ै विध्रु-जळा, विधूसे विभाडै नाड़ै ननीमा बिकथ । —हुकमीचंद खिड़ियो

उ०—३ दिलो माहा मजगो गजगो दिलो माग दावे, टाळै न को जीव लागा बादोबाद टेक । केका यहा विधूसे कवागा चिले ग्रहै केका, पागगै ग्रनेकां प्रेहो भूगो बाप टेक ।
—किरपाराम कवियो

उ०—४ जोगणी नकारा नागा मावळा भळाका लेती, मुडगा जोगणा बाजा पाग्यरा मानैन । वीर प्रगा पीन घगा नीसाण मेघ्र घहा चगी, विधूसे पिलगा घा प्रगा 'मद' रो बानैन ।
—रतन देवीसिंघ सनावत रो गीत

उ०—५ गीध गीध बरा बरा बारमा रमाड़ै रमा, जोगणी घमाड़ै जगा जमाड़ै न तुण । नेग धाड़ै लागो मोटै धाड़ै गळा झाड़ै तू ही, बोभाडै विधूसे पाड़ै नट्टागा बकथ । —हुकमीचंद खिड़ियो

विधूसणहार, हारो (हारी), विधूसणियो—वि० ।

विधूसिप्रोड़ो, विधूसियोड़ो विधूस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विधूसीजणो विधूसीजबो—कर्म वा० ।

विधूसियोड़ो—देखो 'विधूसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विधूसियोड़ी)

विधेय—वि [सं] १ जिसका करना उचित हो, विधान के योग्य, कर्तव्य ।

२ जिसे जानने का विधान हो ।

३ आज्ञा के वशीभूत, आज्ञापालक ।

४ व्याकरणानुसार वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय ।

५ योग्य । (व. भा.)

६ प्रेयसी के द्वारा प्रिय के मान-मोचनार्थ किये जाने वाले दा उपचार विशेष, जिसमें उपेक्षा, धृष्टता, भय, हर्ष आदि दिखला कर प्रकारान्तर से अनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है । (साहित्य)

रू. भे.—विधेव ।

विधेयक—सं. पु [सं विधेय + कन्] विधान बनाने वाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला विधान या कानून का प्रस्तावित रूप ।

रू. भे — बधायक ।

विधेयकरम—सं पु [सं विधेय + कर्म] १ उचित कार्य, कर्त्तव्य ।

२ नियमपूर्वक कार्य, वैधानिक कार्य ।

३ शास्त्रोक्त नियमानुसार कर्म ।

उ० — दोही महोदरा एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सांयकाळ रो विधेयकरम करण पाळा ही चलाया । —व. भा.

विधेयाविमरस—सं पु [सं विधेय + अविमर्श] साहित्य में, विधेय अंश को अप्रधान अंश प्राप्त होने पर उत्पन्न होने वाला वाक्य दोष ।

विधोगत, विधोगति—सं पु —१ ढंग, तरह, प्रकार ।

उ० — वाविसा जिके इसरा विचार, समझे लखाति समझवार । प्रसतार कहा साहा प्रकार, हवि सुणो विधोगति सुणणहार ।
—ल. पिं.

२ विधिपूर्वक, नियमपूर्वक ।

उ० —१ पुत्र जिगिड जे जे हुइ, ते परि सघली कीद्ध । कोडि भरिउ कुंगदत्त, दान विधोगति दीद्ध । —मा. कां. प्र.

उ० २ बहुगणउ गमि व्यासनुं, माधव महोपति वासि । कथा विनोद विधोगति रीझविनु गुण- रासि । — मा. कां. प्र.

उ० ३ ऊभिउ चिउ आदर करी, भूप करइ अभिवाद । वलतु दीइ विधोगतिइ, माधव आसीरवाद । —मा. कां. प्र.

उ० —४ वैध विधोगति जे लहइ, ते ते करइ उपाय । काचा सोनां कापीइ रजवीइ रस-राय । — मा. कां. प्र.

विधोरणो, विधोरबो—क्रि स —मिट जाना, मिटना ।

उ०—प्राखर पिय रै नाम के, लिखं कळेजा मांहि । हरनी पाणी ना पिऊ, मनहि विधोरा जांहि । —जलाल-बूबना री बात

विधोरणहार, हारो (हारी), विधोरणियो—वि० ।

विधोरिप्रोड़ो, विधोरियोड़ो विधोरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

विधोरीजणो, विधोरीजबो—कर्म वा० ।

विधोरियोड़ो—भू का कृ. मिटा हुआ ।

(स्त्री. विधोरियोड़ी)

विधोविध, विधौविध—क्रि. वि. —१ विविध प्रकार से, भिन्न-भिन्न प्रकार से ।

उ०—१ राव नर साद अनो छत्रगीत, मतोमत छोड में कूंता, सीन । विधोविध पूरट दाख वचन, मेलै नह चाल रागी वढमन ।
—गो. रू.

उ०—२ विधोविध दीठो माय विभूत, घुनाई छोड़ परी सब धूत । माहिलो ठाकुर लाधो माय, पुजावै पारोग्राप ही पांय । —ह. र.

२ यथाविधि, विधिवत् ।

३ यथार्थ ।

रू. भे.—बिधोबिध ।

बिध्य—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—तेहनूं रूप तै तुह ज लहं, जु थाइ तुभ पटरांणी । ब्रह्मा बिध्य नु स्त्रम थाइ साचु, चतुरपणि रहि पांणी । —नळख्यांन

बिध्यांन—देखो 'विधान' (रू. भे.)

उ०—खट भासा नव व्याकरन, विद्या वेद बिध्यांन । हरीया ग्रक्षर एक बिन, सब ही थोथा ग्यांन । —ग्रनुभववांणी

बिध्या—देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—भांण तेजगीरां तीरां बिध्या मेघा जैं भाखा, जांण मछंन्द्राणी जोग मत्ती रौ बोधांण जो भार । जम्मीरां जोलीरां वीरां वीरभद्र जेम, जोयजो हम्मीरां ग्रेम 'खेम' रौ जोधार । —हुकमीचंद खिड़ियौ

बिध्याता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—नैमध नर नि जु नूं नारी, सरखी सरखी जोड । नही तरि बिध्यातानि लागि, रूप रच्यांनी खोड । —नळाख्यांन

बिध्रत, बिध्रति—सं. पु [सं. विधृति] एक सूर्यवंशीय राजा, जो खगन का पुत्र ग्रौर हरिण्यनाभ का पिता था ।

उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तै सुत बिध्रत नरेस उग्र तप । सुत जय हरिणनाभ सुभियांणं, पुख न्रप जै सुत इद्र प्रमाणं । —सू. प्र

२ ग्रभूतरजस् देवों में से एक देवता ।

सं स्त्री.—३ वैधृति नामक देवता समूह की माता ।

बिध्रम—देखो 'विधरम्म (रू भे.)

बिध्रमी—देखो 'विधरम्मी (रू. भे.)

बिध्रम्म—देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

बिध्रम्मी—देखो 'विधरम्मी (रू. भे.)

बिध्वस—सं पु. [सं.] १ विनाश, नाश ।

उ०—बहै जु बाट बाट में पिता पिता महा वदै, सुखी सुबाट तै सदा दुखी दुबाट मैं वहैं सरीर समकार सार वीर छीर सै सनै, बिध्वंस वेरि वंस को प्रसंसनीय तै बनै । —ऊ. का.

२ तहस-नहस, बर्बाद ।

३ संहार, नाश ।

रू. भे—बिध्वस, भस विद्धंस, विघस, विधूंस ।

बिध्वंसक—वि. [सं.] १ विनाश करने वाला, नाश करने वाला ।

२ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

३ सहार करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला ।

रू. भे.—विघसक ।

बिध्वंसण—देखो 'विधूंसण' (रू. भे.)

बिध्वंसणो—वि.—(स्त्री. बिध्वंसणी) १ नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सड़न पड़न बिध्वंसणीए, जतन करंतां जाय । कुण जांणै पेहली पछै ए, दौ ग्रनुमत सुख दाय । —जयवांणी

२ मरने वाला ।

३ तहस-नहस होने वाला, बर्बाद होने वाला ।

४ नाश करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला ।

५ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

बिध्वंसणौ बिध्वंसबौ—देखो 'विधूंसणौ, विधूंसबौ' (रू. भे)

उ०—१ मांही मांही नगर बिध्वंस्या, पांडव दवदंत राय जी । मुनि दवदंत टटालै मारधो, कौरव न तज्यो व रवाय जी । —स. कु.

उ०—२ ताहरां वडी फोज कर मालदेजी ग्राया हीज । गांम गंगा-रड़ै ग्राय डेरा किया । फोज च्यारूं ही तरफ दोड़ी छै । मेड़तै री रैत लोग खसीजै छै । देस मारीजै छै । देस बिध्वसीजै छै । —नैणसी

बिध्वंसणहार, हारौ (हारी), बिध्वंसणियौ—वि० ।

बिध्वंसियोड़ौ, बिध्वंसियोड़ौ, बिध्वंस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिध्वंसीजणौ, बिध्वंसीजबौ—कर्म वा० ।

बिध्वंसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिध्वंसियोड़ी)

बिध्वस्त—वि. [सं] १ नाश हुवा या किया हुग्रा ।

२ संहार हुवा या किया हुग्रा, मरा या मारा हुग्रा ।

३ तहस-नहस हुवा या किया हुग्रा, बर्बाद हुवा या किया हुग्रा ।

बिनत—देखो 'वनिता' (रू. भे.)

उ०—भणीजै र जसोमति माता, बलिभद्र भाई भुजाळौ । बिनत स्त्रिया जांणिजै, नंद पिता घणी ग्रभ वाळौ । —पि. प्र.

बिन—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—जन हरीदास हरि सूं कहै, तुम बिन तन छीजै । 'प्रेम' पियाला पाय करि, ग्रपणां करि लीजै । —ह. पु. वां.

उ०—२ जोबनियां रो जोरो छै जी म्हांरा राज, नैण भळक्यो नेहरो तोरो । यांरै मिळण बिन जी म्हांरो दोरो, रसराज थे मत म्हां सुं दिल मत चोरो । —रसीलैराज रा गीत

उ०—३ प्रथम सेव गुरुदेव की, पीछै हरि की सेव । जनहरीया गुरुदेव बिन, भगति न उपजै भेव । —ग्रनुभववांणी

उ०—४ नांव लीया गुण नां मिट्या, मिटर न भागा तेज। हरीया ग्यांन विचार बिन, रही जेज की जेज। —अनुभववांणी

बिनउ—देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—कुमर, थउ नइ पतरो, पांकउ बिनउ वहेसि। मायर लंघी ग्री मिळउ, ग्री मिळि पाछो देसि। —ढो. मा.

बिनड़णौ, बिनड़बौ—क्रि. ग्र.—१ विनष्ट होना।

उ०—विरधं नही पदम बिनड़ंतां, घणी बात जस मोम घणी। वे मामण पूरेवा देवै, घर जगळ जांगळ-धणी। —द. दा.

२ देखो 'विग्नड़णौ, विग्नड़बौ' (रू. भे.)

बिनड़णहार, हारौ (हारी), बिनड़णियौ—वि०।

बिनड़ियोड़ौ, बिनड़ियोड़ौ, बिनड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिनड़ीजणौ, बिनड़ीजबौ—भाव वा०।

बिनड़णौ, बिनड़बौ, बिनडणौ, बिनडबौ—रू० भे०।

बिनड़ियोड़ौ भू. का कृ.—१ विनष्ट हुया हुआ।

२ देखो 'विनड़ियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिनड़ियोड़ी)

बिनडणौ, बिनडबौ—क्रि. स.—१ दुःख देना, कष्ट देना।

उ०—१ बालउ ज माय गुझ वयु करउ, ग्रवर राय रखउ जोड। मूनताणि सेन बिनडउ नही, तउ रे माय गुड्डइ होउ। —प. च चौ.

उ०—२ ग्रनेकि परिहइं तैं बिनडत, दीणवयण जीव विलवत। मरण मणां दुक्ख ग्रनी निहालि, तैं मेल्हउ करवत कालि।

—वस्तिग

२ वेष बदलना।

उ०—कवण तउ कवण भूमनि राउ, कवण नांमु कवण भूमनि जाउ। कवण काजि बिनडिउ तइं सयर, कवण भूमनि मिउ तुझ वयर। —सालिसूरि

३ देखो 'विनडणौ, विनडबौ' (रू. भे)

४ देखो 'विग्रडणौ, विग्रडबौ' (रू. भे.)

बिनडणहार, हारौ (हारी), बिनडणियौ—वि०।

बिनडियोड़ौ, बिनडियोडौ, बिनड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिनडीजणौ, बिनडीजबौ—भाव वा०।

बिनडियोड़ौ—भू का. कृ.—१ दुःख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ.

२ वेष बदला हुआ।

३ देखो 'विनडियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'विग्रडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बिनडियोड़ी)

बिनत—सं. पु. [सं.] १ एक बन्दर का नाम, जो सुग्रीव की सेना में सेनापति था।

वि. वि.—यह सीता की खोज हेतु पूर्व दिशा की ग्रोर गया था। इसके पिता का नाम श्वेत था। यह स्वयं पर्वताकार था। इसकी गर्जना मेघ गर्जना के तुल्य थी ग्रौर इसकी सेना में साठ लाख वानर थे।

२ वैवस्त मनुपुत्र इल का पुत्र।

३ पुलह एवं श्वेता के पुत्रों में से एक दिग्गज।

४ देखो 'विनीत' (रू. भे)

बिनतक—सं पु. [सं] एक पर्वत का नाम।

बिनतड़ी—देखो 'विनती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिनतवत—वि. [सं] विनय से युक्त, विनयवान्।

उ०—कहिज्यो ग्ररथ हियाली केरउ, वहिलउ हियइ विमासी। बिनतवत गुणवंत तुम्हारी, नहि तउ थास्यइ हांसी रे। —स. कु.

बिनता—सं. स्त्री. [सं] १ व्याधि लाने वाली एक राक्षसी।

२ ग्रशोक वाटिका में, रावण द्वारा, सीता को समझाने हेतु नियुक्त एक राक्षसी।

३ प्राचेतस दक्ष प्रजापति व उसकी पत्नी ग्रसिक्नी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्री जो ग्ररिष्टनेमी कश्यप ऋषि की पत्नी थी ग्रौर पक्षियों की माता थी।

वि वि.—कश्यऋषि ने इसे वरदान दिया था कि तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होंगे जो तुम्हारी सौत कद्रु के नाग पुत्रों से भी बलशाली होंगे। इसी वरदान के फलस्वरूप इस के गरुड़ व ग्ररुण नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। ये दोनों पुत्र ग्रण्डों से उत्पन्न हुए थे। एक ग्रण्डा समय से पूर्व फूट जाने के कारण ग्राधे शरीर का पुत्र उत्पन्न हुआ था जो ग्ररुण था। इसी कारण से ग्ररुण ने इसे ग्रपनी सौत की पाच सौ वर्षों तक दासी रहने का शाप दिया। इस शाप से गरुड़ स्वर्ग से ग्रमृत लाकर मुक्त किया था। गरुड़ व ग्ररुण के सिवा इसके ग्ररिष्टनेमि तार्क्ष्य व ग्रारुणि नाम दो पुत्र व छत्तीस पुत्रियां थी।

[सं वनिता] ४ स्त्री, ग्रौरत। (डि. को., ह. नां. मा)

उ०—१ वचन बिनता उच्चरि रै, विद्वग सूं विरी थयु। गुण कहघा नलराय निभावमनउ ताहा गयु। —नळाख्यांन

५ स्त्री, पत्नी।

६ प्रेमपात्री, स्त्री।

रू. भे.—विनिता, विनियां, बिनीता।

बिनताक, बिनताग—सं. पु [सं· वृन्ताकि] एक प्रकार का शाक, बैंगन।

रू. भे.—बिननाक, बिनताग।

बिनतासुत बिनतासुनु—सं. पु [सं.] विनता के पुत्र गरुड़ व ग्ररुण।

रू. भे.—बिनतासुत, विनितासुत।

बिनतस्व—देखो 'बिनत' (रू. भे.) (२)

बिनति, बिनती—सं. स्त्री [सं विनतिः] १ ग्रनुनय-विनय, प्रार्थना।

उ०—सतनाराण सिवरियै, सिवरां सदा सहाय। ब्रह्म सुता सूं बिनती, ग्रक्षर द्यो समझाय। —ग्रग्यात

२ नम्रता, विनम्रता।

रू. भे.—बिनती, बीणती, बीनती।
अल्पा.—विनतड़ी

विनम्र–वि. [सं.] नम्रता से युक्त, नम्र।

विनय–सं. स्त्री. [सं. विनयः] १ नम्रता, विनम्रता।

२ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

३ ७२ कलाओं में से एक कला। ४ शील, सतीत्व। ५ शिष्टोचित व्यवहार। ६ जितेन्द्रिय पुरुष।

७ गुरु आदि पूज्य पुरुषों का भक्ति से अभ्युत्थानादि के द्वारा आदर-सत्कार देने की क्रिया। (जैन)

रू. भे.—बीन, विणय, विनउ, विना, विनै।

विनयवंत–वि. [सं] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।

उ०—१ जग मांहै सुभद्रा सती रे, सती रे सिरोमणि जांण। विनयवंत स्रावक सुगण जी, सील रयण गुण खांण। —स. कु.

उ०—२ तास सीस प्रति दीपतां रे, विनयवंत जसवंत। आचारिज चडती कला रे, स्री जिनसिंघ सूरि महंतो रे। —स. कु.

उ०—३ तसु बंधव डुंगरसी तै पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भाण। विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जाण। —प. च. चौ.

विनयवान–वि [सं. विनयवान्] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।

विनयशील–वि. [सं. विनयशील] विनयवांन, विनम्रता से युक्त, विनीत।

विनयी–वि. [सं. विनयिन्] विनम्रता से युक्त विनयशील, विनीत।

विनयोक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू. भे.)

विनरावन, विनराविन—देखो 'व्रदावन' (रू. भे)

विनवणौ, विनवबौ–क्रि. स.—विनय करना, प्रार्थना करना।

विनवणहार, हारौ (हारी), विनवणियौ—वि०।
विनविग्रोड़ो, विनवियोड़ो, विनव्योड़ो—भू० का० कृ०।
विनवीजणौ, विनवीजबौ—कर्म वा०।
बिनवणौ, बिनवबौ, बीनवणौ, बीनवबौ—रू० भे०।

विनवियोड़ो–भू. का. कृ.—विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ। (स्त्री. विनवियोड़ी)

विनस–सं. पु.—सरस्वती के अदृश्य रहने का स्थान, जो पुण्य तीर्थ माना जाता है।

विनसण–सं. पु. [सं] १ विनाश, बर्बादी।

२ संहार।

विनसणौ–वि.—विनष्ट होने वाला, बर्बाद होने वाला, नाशवान्।

विनसणौ, बिनसबौ–क्रि. अ.—१ विनाश होना, नष्ट होना, मिट जाना।

उ०—१ जै उपज्या सो बिनस है, जै दीसै सो जाइ। दादू निरगुण रांम जप, निस्चल चित्त लगाइ। —दादूवांणी

उ०—२ तन तो राख्यौ नां रहै, जतन करतां जाय। यु हरीया पांणी ग्रोस का, बिनसत बार न लाय। —अनुभववांणी

उ०—३ सबद संत का थागिला, हसती का सा दंत। ताग न टूटै भरम का, मैं देही बिनसंत। —अनुभववांणी

२ संहार होना, मरना।

३ तहस-नहस होना, बर्बाद होना।

विनसणहार, हारौ (हारी) विनसणियौ—वि०।
विनसिग्रोड़ो, विनसियोड़ो, विनस्योड़ो—भू० का० कृ०।
विनसीजणौ, विनसीजबौ—भाव वा०।
बिनसणौ, बिनसबौ—रू० भे०।

विनसति, विनसती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया उन देसड़ै, बारै मास वसंत। सदा फळैगी बिनसती विलंब्या जीव निचंत। —अनुभववांणी

विनसाड़णौ, विनसाड़बौ—देखो 'विनसाणौ, विनसाबौ' (रू. भे.)

विनसाड़णहार, हारौ (हारी), विनसाड़णियौ—वि०।
विनसाड़िग्रोड़ो, विनसाड़ियोड़ो, विनसाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
विनसाड़ीजणौ, विनसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

विनसाड़ियोड़ो—देखो 'विनसायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री विनसाड़ियोड़ी)

विनसाणौ, विनसाबौ–क्रि. स.—१ नाश करना, नष्ट करना।

२ संहार करना, मारना।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

विनसाणहार, हारौ (हारी), विनसाणियौ—वि०।
विनसायोड़ो—भू० का० कृ०।
विनसाईजणौ, विनसाईजबौ—कर्म वा०।

बिनसाड़णौ, बिनसाड़बौ, बिनसाणौ, बिनसाबौ, बिनसावणौ, बिनसावबौ विनसाड़णौ, विनसाड़बौ, विनसावणौ, विनसावबौ—रू० भे०।

विनसायोड़ो–भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगाड़ा हुआ। २ संहार किया हुआ, मारा हुआ। ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ।
(स्त्री. विनसायोड़ी)

विनसावणौ, विनसावबौ—देखो 'विनसाणौ, विनसाबौ' (रू. भे.)

विनसावणहार, हारौ (हारी) विनसावणियौ—वि०।
विनसाविग्रोड़ो, विनसावियोड़ो, विनसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
विनसावीजणौ, विनसावीजबौ—कर्म वा०।

विनसावियोड़ो—देखो 'विनसायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. विनसावियोड़ी)

बिनसियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विनाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ संहार हुवा हुआ, मरा हुआ। ३ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ।

(स्त्री. बिनसियोड़ी)

बिनस्ट—वि. [सं. विनष्ट] १ जो नाश को प्राप्त हो गया हो, नष्ट हुवा हुआ।

२ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ।

३ मरा हुआ, मृत।

४ बिगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ।

बिनस्वर—वि. [सं. विनश्वर] १ नष्ट होने वाला, नाशवान्।

२ जो बहुत दिनों तक न रह सके, अनित्य।

बिनस्वरता—सं. स्त्री. [सं. विनश्वरता] १ नाशवान् होने की अवस्था।

२ अनित्यता, अस्थायित्व।

बिना—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ मनहरीया माई बिना, पाणी खलक न कोय। एक धरे ताह एक है, दूस करे ताह दोय। —अनुभववाणी

उ०—२ कवण मलेवड़ बिगर, प्रडै सायर सिर सोभै। कवण बिना सुखदेव, देव माया नह लोभै। —रा. रू.

उ०—३ अब तो मेरो बळ घटयो, हटयो सग को साथ। राखण हारो को नहो, राज बिना रघनाथ। —गजउद्धार

उ०—४ सुरंगारगरा रूखां रा ओला छाकं छै। तरवरां रा पान भड़िया छै। सु जाणे वस्त्र बिना नागा डिगंबरा सरीका नजर आवै छै। निवाण रा पाणी नीठिया छै। —रा. सा. सं.

बिनांण, बिनांणि, बिनांणी—सं. पु.—१ विचार।

२ तरकीब, उपाय।

४ चिह्न, लक्षण।

५ रूपक।

६ व्याख्या, विवेचन।

उ०—त्रकाळ ग्यान दरसी निज ब्रम कूं पहिचानं। भूत, भवस्त, वरतमान जुगति सो जांणै। च्यार वेद नो व्याकरण खट सासत्र के बिनांण। निरत किया मैं पारावार जाणै नवदूण पुराण। —सू. प्र.

७ विश्वकर्मा, नारा।

उ०—घन कुट कोघो घाण, वळि नारनोळ बिनांण। नरनयर रा परचक, दो नगर भंगे भुजदड। —सू. प्र.

८ रहस्य भेद।

उ०—परमोम पसे जिकै आप प्राण, वडा जुद्ध रा बध जाणं बिनांणं। हणं मारि पाडै पखो वोम हुआ. साहै चाळि सूं जागवै काळ सूता। —र. वचनिका

[सं. विज्ञान] ६ ज्ञान, जानकारी।

उ०—मघतुंब जळमां तरै जो, बूडं काग पाहांण। पंख जाजि गयणें फिरैजो, इण परै महिज बिनांण। —वृस्त

९ भेद, प्रकार।

उ०—महरि अंनि लुघवि गुर मझि, बार चिम्रार बिनांण। पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनांग। —ल. पि.

१० तरह, प्रकार।

उ०—१ अत्रा खग भाट निराट अलग्ग, पड़ै बि बि जंघ पड़ै झड़ि पग्ग। पड़ै रिणि उच्छ्रति प्रेम प्रवग्ग, कुंडा चढि जाणि बिनांणि कृग्ग। —र. वचनिका

उ०—२ जिम जिम गुरु घटतो जाइ, तिम तिम दोइ वधै लुघनाइ। नाम जूजुयो एण बिनांणि, वगतो अंसो जि वखाणि। —ल. पि.

वि.—१ समान तुल्य।

उ०—भुजां दुय च्यारि भुजां बळ भूप, रचै गजग्राह त्रियावर रूप। वहै खग गाबंग तात बिनांण, करै जरदाग जुवाण केकांण। —सू. प्र.

२ अद्भुत, अनोखा।

[सं. वैज्ञानिक] ३ ज्ञानी, जानकार।

उ०—सो सुगु मुगियां मन बिनांणो, बिजळी चमकै बादळ गरजै, चढ़या अपूठा पाणी। —ह. पु. वा.

४ देखो 'बैनाणी' (रू. भे.)

उ०—१ रहमाण बिनांणी हाथ तै, भजण घड़ण समार जग। सुरताण हुओ सुरताण गिरि, मेड़पती हुआ खड़ग। —गु. रू. बं.

उ०—२ कुण तेजमहाळ अणी काढावै, वाडाळा मुहि वाढ पडै। जिणमाल तियार करत जरादी, घाय बिनांणिय लोह घड़ै।

—गु. रू. बं.

रू. भे.—बिनाण, बिनाणी, बीनाण, बीनाणी, बिनान, बिन्नांण, बिन्नाणी।

बिनांन—देखो 'बिनाण' (रू. भे.)

उ०—मैं जाण्यो मन एक था, मन का बोहत बिनांन। हरीया मन छिनछिन फिरै, डाळी डाळी पान। —अनुभववाणी

बिनांनी—देखो 'बिन्यानी' (रू. भे.)

बिनांम—वि.—जिसका कोई नाम न हो, बिना नाम का।

बिना—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—पुछया बिना पयपै पापी, चट बिच कहै लात सिर थापी। वदन मत दिखाळै वंस द्रोही वळै। —र. रू.

उ०—२ सरस तणी पसाव सोधिया, बयण बिना बाखांणण वग। "बूड" हरा आकास चित्रणी, सेंदचा तहरी खग।

—केसोदास गाडण

उ०—३ हिंदवाराव हयवाह अचरज हुई, न सारी मुरोति चीत नरंदां। गई स्रुग बिवांणां बैस इद्र आगळी, बुही वारगना बिना वीदां।

—महाराजा जसवंतसिंह री गीत

उ०—४ हांम कांम लोचणी उलाळी आकास जावै। चावळ री चोथी हैंसी खावै। तबोळ बिना खाधां आहारा विकार थावै। माडी मोडी कटारी री पड़दड़ी समावै।

—रा सा. स

उ०—५ जसवंत बिना जिहांन, पांन चळ जांणे पवनं, कना केतु साकप, यथा मन हिंदसथानं। घटै किया बांभणां, मिटै झालर पर-सादां, ईत प्रभा ऊपजै, निरख दुर रीत निसादां।

—रा. रू.

२ देखो 'बिनय' (रू. भे.)

उ०—तरां जगमाल दीठो, "हूं उजर करूं, रांणी वांसै साथ चाढै, वै कठै ही उतरिया होय तो कांई काबाइन होय, "तरै जगमाल घणा बिना सूं बोलियो "मांनसिंघ दीवांण रो चाकर छै म्हांनु किसो उजर छै, जांणै सु धरती दीवांण नै, जांणै सु मानसिंघ नु दे। —नैणसी

बिनाइक—देखो 'बिनायक' (रू. भे.)

उ०—१ लील विलास सुरां मा लाइकि, नियो पुलदर देव बिना-इकि। संकर नां विणि करां सलांमा, गोविंद रा आदेस गुलामा।

—पी. ग्र.

उ०—२ हूं मांगां देवी हुयो, अविरळ वांणि उकत्ति। वळै बिनाइक वीनवूं, सिद्ध बुद्ध द्यो सुमत्ति। वह बिनाइक देवता, नमो बिनाइक नाथ। तू सिद्धदायक रूप सुभ, तूं सत्तगुर समिमाथ।

—पी ग्रं

बिनाई—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—राजो राव रक भूप, नारि ही पुरख राजो, भूठ सी बिनाई वाजो, खुनी आप खाल मैं। सिन्यासी दुहा दन, जोगी आदिनाथ जांनै, जती ही बखांनै जैन, रता मता ख्याल मैं। —अनुभववांणी

बिनाथ—वि [सं] जिसका कोई रक्षक न हो, अनाथ।

सं. पु.—वह बैल, जिसके नाथ न डाली गई हो।

बिनादी—क्रि. वि.—आदि काल से।

उ०—बादसाह हूंत कहयो छोड जं दगानै वेघा, ऐ न छडै हिंदू घरम बिनादी आफेक। कहयो साज भाग नद पातवां छुडावो किसां। एक एक प्रती चहां माथो एक-एक।

—गोकळदास सकावत रो गीत

बिनायक—सं. पु [सं. विनायक:] १ गणों के ईश व विघ्नविनाशक गणेश जी। (ध. मा., ह नां. मा.)

उ०—एक दंतो महाबुद्धि, सरब गुणो गणनायक। सरब सिद्धि करो देव, गवरी पुत्र बिनायक। —अग्यात

वि. वि.—पुराणानुसार, विनायक चार प्रकार के होते हैं (१) दवद्धि विनायक, (२) कोण विनायक (३) हस्ती विनायक (४) सिन्दूर विनायक।

२ गरुड़।

३ सिंह, शेर आदि के समान मुखाकृति वाले शिवगणों का समूह जिसमें कुष्मांड गजतुंड, जयंत और मदगण समाविष्ट हैं।

४ कपड़ा बुनने का एक औजार। (जुलाहा)

५ सुथार, बढ़ई।

६ विवाह अवसर पर कुम्भकार द्वारा लाई गई मिट्टी की बनी गणेश की मूर्ति।

७ विवाह आदि मांगलिक शुभ अवसरों पर गणेश जी को सम्बोधित कर गाये जाने वाले गीत।

८ यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार के शुभ अवसर पर गृह शान्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ एवं इस दिन किया जाने वाला भोज।

(मा. म.)

उ०—बिरध बधाई नांव समूरथ माय सगाई। व्याह बिनायक बेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा-पाठ निराठ, वरै बनमाळा मोखी। जागण रातीजगा, दमुटण दायजा चोखी। —दसदेव

९ बौद्ध, आचार्य।

रू. भे.—बणाक, बिनाइक, बिनायक, बिनायक, वणाक, बिणायक, विनाइक, विन्यायक।

बिनायकचतुरथी बिनायकचौथ—स. स्त्री. [सं. विनायकचतुर्थी] १ माघ मास म शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, जिस दिन गणेशजी की पूजा की जाती है।

२ भादो मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

३ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

बिनायकण—स. स्त्री.—बढ़ई जाति की स्त्री।

बिनायकथाटियो, बिनायकथाटो—देखो 'थाटियो' (जैतारण)

बिनायकहेतु—स. पु. यौ [सं] गरुडध्वज, श्रीकृष्ण।

बिनायकियो—सं. पु—१ विवाह के समय दूल्हा के साथ रहने वाला दुल्हे का छोटा भाई।

२ देखो 'बिनायक' (अल्पा, रू. भे)

बिनायिका—सं. स्त्री. [सं] १ विनायक की पत्नी।

२ गरुड़ की पत्नी का नामान्तर।

बिनास—स. पु. [सं. विनाश] १ नाश, ध्वंस।

२ बिगाड़ने का भाव, बिगाड़।

३ हानि, नुकसान।

४ कलह, झगड़ा।

५ एक असुर, जो कश्यप एवं उसकी पत्नी काला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था एवं यह अपने अन्य भाईयों की तरह अस्त्र-शस्त्र विद्या में यम के समान था।

रू. भे.—बनास, बिणास, बिनास, बणास, बिणास, बिनास।

बिनासक-वि. [सं. विनाशक] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला। (प्रथा)

३ हानि, नुकसान या बिगाड़ करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ संहार करने वाला, मारने वाला।

बिनासकारी-वि. [सं. विनाश+कारिन्] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, बिगाड़ करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ संहार करने वाला, मारने वाला।

बिनासणो-वि [सं विनाशनम्] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, या बिगाड़ करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ संहार करने वाला, मारने वाला।

बिनासणो, बिनासबो-क्रि. स. [विनाशनम्] १ नष्ट करना, ध्वंस करना, २ मारना, संहार करना।

उ०—१ इस बिगाड़बो रा रो, फेर **बिनासो** फोज। उर बैठा काम हुवै, राजा लागया मोज। —डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—२ आगे देखे तो छापरे हेठै पालणो राखीयो तोय सीहणी भाय चूंधावण लागी। ताहरा माता साहू दीठो। ताहरा कहे हे सीहणी तैं म्हारो बाळक **बिनासीयो**। ताहरा सीहणी थळगी हुई ऊभी रही। ईस जाय टाबर उरलो लीयो। पालणो भीला रै कांधे दीयो। सामा हालिया। पीहर गई उण सुख सु रहै।

—देवजी बगड़वतो री वात

३ बिगाड़ करना, नुकसान करना।

४ बुरा करना।

५ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

बिणासणहार, हारो (हारी), बिणासणियो—वि०।

बिणासिश्रोड़ो बिणासियोड़ो, बिणास्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिणासीजणो, बिणासीजबो—कर्म वा०।

बिणासणो, बिणासबो बिनासणो, बिनासबो, बणासणो, बणासबो —रू० भे०।

बिनासियोड़ो-भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ, ध्वंस किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नुकसान किया हुआ, बिगाड़ किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ, ५ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ.

(स्त्री बिनासियोड़ी)

बिनासी-वि. [सं विनाशिन्] १ नष्ट होने या करने वाला, विध्वंस होने या करने वाला।

२ मारने वाला, संहार करने वाला।

३ बुरा करने वाला।

४ बिगाड़ करने वाला, नुकसान करने वाला।

५ मरने वाला, मिटने वाला, नाशवान्।

६ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

७ मिटाने वाला, हटाने वाला।

रू. भे.—बिणासी।

बिनाह-सं पु. [सं] कुए के मुख का ढकना।

बिनिग्रह-सं. पु. [सं] १ संयम, दमन प्रतिबंध।

२ बाधा, अवरोध।

३ परस्पर-ईर्ष्या।

बिनिता—देखो 'बिनता' (रू भे)

बिनितासुत—देखो 'बिनतासुत' (रू. भे.)

बिनिद्र-सं. पु. [सं] १ वह व्यक्ति जिसे निद्रा नही आती हो।

२ निद्रित या मूर्छित व्यक्ति की निद्रा या मूर्छा को दूर करने का एक अस्त्र विशेष।

बिनिपात-सं पु [सं] १ विनाश, ध्वंस।

२ अपमान, अनादर।

३ मृत्यु।

४ नाश, बर्बादी।

५ नरक।

६ कष्ट, पीड़ा।

७ बड़ा कष्ट, या संकट पैदा करने वाली स्थिति।

८ गर्भपात।

बिनिपातक-वि. [सं.] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ अपमान करने वाला, अनादर करने वाला।

३ कष्ट उत्पन्न करने वाला।

विनिमय-सं पु. [सं.] १ किसी एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेने का व्यवहार, दो वस्तुओं का एक दूसरी के बदले अदल-बदल ।

विनिया--देखो 'विनता' (रू. भे.)

उ०—विड़दसिंह उण देस विच, रीतविया राजद । सात सलामां नित सजै, विनियां अग्गा विंद । —जतीरासौ

विनियुक्त-वि. [सं.] १ लगा हुआ, नियुक्त ।

२ आदेशित ।

विनियोग-सं. पु [सं.] १ किसी वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग ।

२ व्यापार आदि में पूंजी लगाना ।

३ त्याग ।

४ भक्त द्वारा इष्टदेव का ध्यान कर दायें हाथ में लेकर मंत्र बोल कर जमीन पर छोड़ा जाने वाला पानी जो पूजा करने हेतु बैठने के बाद सबसे पहले छोड़ा जाता है ।

विनियोजन-सं पु. [सं] १ विनियोग करने की क्रिया ।

२ अर्पित करने की क्रिया, अर्पण ।

३ नियुक्ति ।

विनिहत, विनिहोत-सं. पु. [सं. विनिहतः] १ देवप्रेरित या भाग्यदोष से आया हुआ कष्ट, या संकट ।

२ अपशकुन, बुरे शकुन ।

विनीत-वि. [सं.] १ जिसमें शिष्टता व नम्रता हो, शिष्ट, नम्र ।

२ जितेन्द्रिय, संयमी ।

३ प्रिय, मनोहर ।

४ ग्रहण किया हुआ ।

सं. पु —१ उत्तम मनु का एक पुत्र ।

२ पुलस्त्य का प्रीति के गर्भ से उत्पन्न तीन पुत्रों में से एक पुत्र ।

रू. भे —विनीत, विनत ।

विनीतता-सं. स्त्री.—विनीत होने का भाव, नम्रता ।

विनीता- देखो 'विनता' (रू भे.)

विनूर-वि.—कायर, भीरू ।

उ० - धारा रति घरहर, दळपळ डाल्हर, झटकै पै कर सीस झड़ै । धड़डै धाइ बगतर, फाटै बड़फर, रुकै विनूर रीठ पड़ै । —गु. रू. बं.

विनेत-सं पु. [सं. विनेतृ] १ आज्ञा, आदेश, हुक्म ।

२ सिखाने वाला, शिक्षक ।

३ दण्डविधान का निर्माण करने वाला ।

[सं. विज्ञप्ति] ४ सूचना ।

विनै-सं. स्त्री. [सं. विनयः] १ कृपा महरबानी ।

उ०—तीन लक्ष द्रब रोकड़ा, चचल उच्च पचीस । निपट विनै धारी निजर, नृपति निवारी रीस । —रा. रू.

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—यां साहिजादै आखियौ, सहित विनै हित संध । मेरै काज निवाह की, लाज कमधां कंध । —रा. रू.

३ देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—विकट करौ तीरथ वरत, धरा भेख कै धार । विनै नांम रघुवीर रै, परत न उतरै पार । —र. रू.

४ देखो 'विनै' (रू. भे.)

उ०—१ अठी रांम रा सुभट नै सुभड़ रावण उठी; लंक रै जोरवर खेत लड़िया । तीर सेना छूरा झोक तरवारिया, बाजिया विनै ही रंभ बरवा । —र. रू.

उ० --२ नमधौ औरंगसाह रौ, विनै मुगळ विसतार । महाराजा उण सू मिळै, आदर कियौ अपार । —रा. रू.

विनैनी-सं. स्त्री.—विनम्रता, नम्रता ।

उ०—साख्यात देवांगनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जांणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसती री अवतार बारह आभूखन विराजमान हुआ छै । आठै पोहर सोळ सिणगार किआ रहै छै । —रा. सा. स.

विनोक्त, विनोक्ति-सं पु [सं. विनोक्ति] एक अलंकार विशेष, जिसमें, किसी वस्तु के बिना अशोभन या किसी के बिना शोभन कहा जाय यानि किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता का वर्णन किया जाय ।

रू. भे.— विनयोक्ति, विनोक्ति ।

विनोद-सं. पु. [सं. विनोदः] १ ऐसा कार्य जिसका प्रमुख उद्देश्य मनबहलाव करना होता है ।

२ उक्त कार्य से होने वाला, मनबहलाव, आनन्द ।

३ हंसी-मजाक ।

उ० —प्रधान मनोहर परिवत, सुभट स्रेणि, विनोदीया ना विनोद साहस मो बोलाना समूह, उचितबोलानी श्रेणि, कलावंत नी क्रीड़ा-भूमि, वृबड़ांनी कोडि,……। —व. स.

४ आनन्द, आल्हाद हर्ष, प्रसन्नता । (अ मा, ह. ना. मा.)

उ०—१ जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरड़ भड़ अणपार ए । मिटि जळण धरणि विनोद मानव, भूरि मर जळ भार ए ।

—रा. रू.

उ०—वहै बीजूजळ हद-विहद, नचत विनोद करंत नारद । तमासै भांग हुऔ रथ तांग, कहक्कह वीर हसै कनियांण । —गु. रू. बं.

उ०—कवितु विनोदिहि सिरिजय, सिरिजय मेहरसूरि जै । लेलइ तै अरह पद, सपद पांमइ पूरि । —जयसेखर सूरि

५ उत्सुकता, उत्कण्ठा ।

६ खेल-क्रीडा, आमोद-प्रमोद।

उ०—१ किही रै बाथै घर्ड, किही रा हाथ खेंचै, चपळता आमग-गिरी करबो करै। या लोग राजा री खुसामद रा पगा महबो करै। टाबर नै किही बातै गुणी नहीं। मगळा हाथा ऊपर विनोद करायो करै। टाबर लाड में घणो अनीतो।

—मुरै-पीपै कामठौत री बात

उ०—२ उचित बोलांगी ओति, कलावतनी क्रीडाभूमि, कुवडानी कोडि, बामणाना विनोद, पुण्यवंत रहइ प्रमोद, बयरीह विखाद, कविना कल्लोल, नाटीनउ विवाद, वैदेशिक विलास। —व. स.

७ सोलह प्रकार के शृंगारों में से एक प्रकार का शृंगार विशेष। (रा. सा. स.)

८ एक प्रकार की राग विशेष। (संगीत)

उ०—सगत स्री विनोदयं, नल्यांग केक मोदयं। सभायची पटगय, वर्णमरो लिहृयय। —रा. रू.

९ पायन, सखी।

उ०—विनोद गीत नाद भेद, मद मद भालरी, प्रसाद देव पंजिदन, अर्चिका हरोहरी। लिया जळ न दीपजात, मिदर उजाळ ए। मदा सरब्बदा हुवस, जागा दीपमाळ ए। —गु. रू. ब.

१० रतिक्रिया का एक आलिंगन विशेष। (कामशास्त्र)

रू. भे.—वनोद, बनोद, विणोद, विणोदि, विनादन, विन्नोद।

विनोदक—वि. [स.] विनोद करने वाला, खेल-क्रीडा करने वाला।

विनोदन—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

विनोदित—वि. [स.] १ हर्षित, खुश, आह्लादयुक्त।

२ हंसी-मजाक किया हुआ।

३ ऐसा कार्य किया हुआ, जिससे आनन्द उत्पन्न हो।

४ विनोद प्रकार से युक्त।

विनोदी—वि. [स. विनोदिन्] १ अपना या दूसरों का मनबहलाव करने वाला।

२ हंसी-मजाक करने वाला।

३ विनोद सम्बन्धी।

४ आनन्द व हर्ष उत्पन्न करने वाला।

५ खेल-क्रीडा करने वाला।

६ विनोद प्रसार करने वाला।

७ मस्त, हंसोड़, मसखरा।

अल्पा.—विनोदीयो।

विनोदीयो—देखो 'विनोदी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पयान मनोहर परिवार, सुभट सोगि, विनोदीया ना विनोद, साहस सो बोलना समूह, उचित बोलांनी ओति, कलावतनी क्रीडाभूमि, कुबडानी कोडि, बामणांना विनोद, पुण्यवंत रहइ प्रमोद,······। —व. स.

विन्नक—स. पु. [स. विन्नकः] अगस्त्य का एक नामान्तर।

विन्नडियोडो—भू. का. कृ.—कष्ट दिया हुआ।

विन्नवणा—स. स्त्री [स. विज्ञापना] काम वासना पूर्ण करने हेतु कामी पुरुष के सम्मुख अपना अभिप्राय प्रकट करने वाली स्त्री।

वि. वि.—कामी पुरुष जिसके प्रति वह अपना अभिप्राय प्रकट करती है "विन्नवण" कहलाता है। (जैन)

विन्नांण, विन्नांणि विन्नांणी—देखो 'विनाण' (रू. भे.)

उ०—१ पातसाह आळोज, मन्न विच्चार विमासै। बळ छळ दळ दरसवै, पाण विन्नांण कळासै। —गु. रू. बं.

उ०—२ मद्दिकर घेरो सबळ, कियो दखणाधि कटकका। गढ दुरंग घेरियो, प्रजा भागी परिचक्का। नको प्रांण विन्नांण, नेस फीका खुरसाणी। गयणगण डोलियो, सीम चपी सुरताणी। —गु. रू. ब.

उ०—३ लखणगांग विन्नांण सन्नाग मेह, कलाभि कलाभिरयुनाः हणीय देह। सगण्ण कला केलि गयागसार, स्तुवैं पारस्वनाथं गुण स्रोगि सार। —स. कु.

उ०—४ "हरीया मत लाग्गो" एहवी कन्या दोइ भगावियै, भणि वा अवसर एह रै। दोइ कन्या (भगावीयै) भणी, बालपणै सहू आवडै, नाम विन्नांण अछेह रै। —स्रीपाळ रास

उ०—५ पती जिम विण पगडी, फोरी न सकै प्रांण। प्रीतम दरीया में पडयो, कीजै किसो विन्नांण। —स्रीपाळ रास

उ०—६ हियै नांण विन्नांन न सूजै, छाती घहडहड इम धूजै। अम्ह थी दादुर गुण जाण, पाणी सरिसा जसु प्रांण। —स्रीपाळ रास

उ०—७ गरउ गमाड न नाव कुपात्र ज पात्र न जांण, स घरइ ए भगति न कीजइ ए भोजइ ए भक्ति विन्नांणि। —जयसेखर सूरि

विन्नोद—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

उ०—किसा दीह आणद विन्नोद कीवा, लहै भूय आग्या वनोवास लीधा। जती गांम मार्ग सिरा वांम जोड़ै, जिकां नांम लेतां अघा ओघ तोड़ै। —सू. प्र.

विन्यांनी—वि. [स. वैज्ञानिक] जानकार, ज्ञानी (उ. र.)

रू. भे.—विनानी।

विन्यायक—देखो 'विनायक' (रू. भे.)

उ०—यह घणा दुख कर नै ईया नूं नाळेर भलाया। सात दिन

रो बिन्यायक बैठो। परणीया, घणा हरख-कोड कीया। दिन १५ राखीया। बिदा किया। —पीठवं चारण री वात

बिन्यायको—देखो 'विनायक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिन्यास-सं. पु. [सं.] १ स्थापित करने की क्रिया।

२ समूह, संग्रह।

३ यथास्थान रखने की क्रिया, सजावट।

४ जड़ने की क्रिया।

बिन्योक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू. भे.)

बिन्ह, बिन्हइ, बिन्है—१ देखो 'बिनै' (रू. भे.)

उ०—१ माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हा सीख करेह। ऊन्हाळउ, वरखा **बिन्है**, रहिया तुझ्झ सनेह। —ढो. मा.

उ०—२ प्रेमी 'प्रणंद' प्रमायं पांणी, प्रघवत सुरुळि **बिन्है** 'ग्रमरांणी'। 'माहव' तणो 'विजो' रण मोटा, कळहै ढाल थको नवकोटा। —रा. रू.

उ०—सुतन 'सुजांण' 'ग्रनो' 'प्रिय' संभ्रम, 'ग्रखो' **बिन्है** ग्राया जम ग्रोपम। 'ग्रनै' तणो करि कोप प्रकारो, 'गजन' ग्रावियो चाळा-गारो। —रा. रू.

उ०—४ 'ऊदो' 'ग्रनो' विकट ऊदावत, जोड़ मोड दळ **बिन्है** 'जगावत'। 'रतन' जगावत वाकिम रातो, 'राम' 'सुभावत' मेळ ग्ररातो। —रा. रू.

उ०—५ रिणमल 'कुंभा' **बिन्है** रायंगणि घणं चीतवं ध्रोह घणा। फूटा लोह पछा फिटकारां, ताइवां राघव देव तणा। —हरीसूर बारहठ

उ०—६ **बिन्है** पख क्रस्ण सुकळ विधांन, बिन्है वपु ग्रग सुदक्खिण वाम। ब्रह्मा दक्षण ग्रग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत। —राठौड वंशावळी

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

बिपंचिका, बिपची-स. स्त्री. [सं.] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो वीणा की तरह का होता है।

२ क्रीड़ा-खेल, ग्रामोद-प्रमोद।

बिप—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—१ सेवगां दुखियां री कूक सुणी, काळवी ग्रसवार गो दीपकणी। राखी अद खावद लाज रहै, **बिप** डूबां ऊपर वास वहै। —पा. प्र.

उ०—२ किलमापति भेंटै कारीगर, कारी घाव निहाव कर। बाळ बाळ जुड़ियो थारो **बिप**, पंवद ग्राइस तणो पर। —जगतसिंघ सिसोदिया रो गीत

२ देखो 'विप्र' (रू. भे.)

बिपक्क-वि. [सं.] १ पूर्ण रूप से पका हुग्रा, परिपक्व।

२ पूर्ण उबला हुग्रा, रधा हुग्रा।

३ उन्नति की चर्मसीमा तक पहुँचा हुग्रा।

४ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

बिपक्ख—देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

बिपक्खी—देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

बिपक्व-वि. [सं.] १ ग्रच्छी तरह या पूर्ण रूप से पका हुग्रा।

२ ग्रधपका या कच्चा।

स. पु.—एक देवता, जो मरीचिगर्भ देवताओं में से गिने जाते हैं।

बिपक्ष-वि. [सं.] १ विरुद्ध, खिलाप प्रतिकूल।

२ उलटा, विपरीत।

सं. पु.—१ दूसरा पक्ष। २ विरोधी पक्ष।

रू. भे.—विपक्ख, विपख, बिपच्छ, विपक्क, बिपक्ख, विपख, विपच्छ।

बिपक्षी-स. पु. [सं.] १ दुदमन, शत्रु।

२ दूसरे पक्ष का, विरोधी या प्रतिपक्षी व्यक्ति।

उ०—बनिम्ट धूम्र भक्ष को तुहीं विपक्ष नी, भई तुही महिख्ख रक्त-बीज भक्षनी। निसंभ शुभ चंड मुंड तू निकदनी,नमामि मात 'इंदरा' 'समद' नदनी। —मे. म.

वि—दूसरे पक्ष का, विरोधी पक्ष का।

रू. भे.—बिपक्खी, बिपच्छी, विपक्खी, विपख, विपखी, त्रिपच्छ विपच्छी।

बिपख—१ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

बिपखी-सं. पु.—१ ग्रश्व, घोड़ा। (डि. ना. मा.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

बिपखणी-स. स्त्री.—विरोधी की स्त्री।

वि—विरोधी पक्ष की, प्रतिद्वंदिनी।

बिपच्छ—१ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

उ० गनीम गढ्ढ गव्वतीय गब्भ को गमावनी, जहांन ग्रांन मांन जोर मोर तें जमावनी। रही प्रतच्छ रच्छमी दृगच्छ गच्छ दच्छ-वनी, लगें **बिपच्छ** लच्छ पें भुजाण बच्छ भच्छनी। —ऊ. का.

बिपच्छी—देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

बिपण-स. पु [सं. विपण.] १ छोटा व्यापार।

२ बिक्री।

बिपणक-वि. [सं.] क्रय-विक्रय करने वाला, व्यापार करने वाला, व्यापारी।

रू. भे.—विपणक।

विपणन—स. स्त्री. [सं. विपणनम्] क्रय-विक्रय करने की क्रिया, व्यापार करने की क्रिया।

रू. भे.—बिपणन।

विपणी—स. स्त्री. [सं. [विपणिः, विपणी] १ बाजार २ हाट, दुकान।

३ व्यापार हेतु रखा हुआ माल।

स. पु. [सं. विपणिन्] ४ व्यापार करने वाला, व्यापारी।

रू. भे.—बिपणी, वणणी।

विपत, विपता, विपति, विपती, विपत्त, विपत्ता, विपत्ति विपत्ती—सं. स्त्री. [सं. विपत्तिः] १ आपत्ति, संकट। (हि. को.)

उ०—१ सगा सनेही और सर, सुख में मिळै अनेक। विपत पड़्यां दुख बांटलै, सो लाखन में ऐक। —अग्यात

उ०—२ आगळ सुरग कपाट अघ, दोजग अगुओ देख। संपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेल। —बा. दा.

उ०—३ दूधां न्हासी, पुतरां फळसी, विपता बळसी, सुखड़ रळसी। थारी काळी जीभ नै थोड़ी थाको, मुंडै सूं सगा थोड़ी थूक नाखो। भळै इसो नावो कदै ही मुंडै सूं मतो काढ्या। म्हांनै थी ही ना देया। बीन रै बाप कयो। —दसदोख

उ०—४ नदी पार सपजै, पोत द्रढ लंबट पाया। विपति विलै हुय जाय, जेम घर संपत आया। —रा. रू.

उ०—५ विसा दिसान मान तांण माननीय को दगै, अडोळ चक्र नक्र मक्र माननीय श्री अगै। विपत्थ पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, सिजे समत्थ मत्थ पे समत्थ प्रत्थ लावनी। —ऊ. का.

उ०—६ प्रहलाद की प्रतिग्या राखी, हिरणाकुस नख उदर विदारण। रिखि पतनी पर किरपा कीन्ही, विप्र सुदामा की विपति विदारण। —मीरां

उ०—७ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख संपति, आपत नाहि विपत्ती। —मे म.

मुहा.—१ विपत्ति आणी=आपत्ति आना, संकट आना। २ विपत्ति उठाणी=संकट या दुःख सहना। ३ विपत्ति काटणी=संकट मिटाना, संकट में समय व्यतीत करना। ४ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति उठाणी'। ५ विपत्ति टळणी=संकट या आपत्ति टलना। ६ विपत्ति ढाणी=देखो 'विपत्ति आणी'। ७ विपत्ति पड़णी=देखो 'विपति आणी'। ८ विपत्ति मोल लेणी=आपत्ति मोल लेना। ९ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी'।

२ कष्ट, पीड़ा।

मुहा.—१ विपत्ति भुगतणी=कष्ट और पीड़ा सहन करना। २ विपत्ति सहणी=कष्ट और पीड़ा सहन करना। ३ विपत्ति होणी=कष्ट व पीड़ा होना।

३ झंझट, बखेड़ा।

उ०—जाव खड सवयाता किया ए, दिण अग्नि देखाला ना दिया ए। कहे फाटोफिटो होय ए, आ किसी विपत मूपी मोय ए। —जयवांणी

मुहा.—१ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी'। २ विपत्ति मोल लेणी=व्यर्थ में झंझट या आफत मोल लेना। ३ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी'।

४ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन।

उ०—१ लोक चुगळ वातं लगै, घू घू बोल्यो गेह। भाया मूं मेळप नहीं, विपत लिखी त्याव वेह। —बा. दा.

उ०—२ मिनख मौत आवै है, जकी घड़ी ऊमर भर री आछीमाड़ी लारली सारी वातां काच दाईं साफ होय जाया करै है। दुख अर विपती में भी। आपरै भला-बुरा कांमां री ठा पड़ै बिना नी रैवै। —दसदोख

मुहा.—१ विपत्ति आणी=बुरे दिन आना। २ विपत्ति काटणी=बुरे दिन काटना या बिताना। ३ विपत्ति टळणी=बुरे दिन खत्म होना। ४ विपत्ति भुगतणी या भोगणी=देखो 'विपत्ती काटणी'।

५ मृत्यु, मौत।

उ०—सबळा खळ मूं सांधियां, निबळ जाय खळ नास। मूसो मेळ मजार कर, वंचियो विपत विनास। —बा. दा.

मुहा.—१ विपत्ति आणी=मौत आना। २ विपत्ति टळणी=मौत से बचना, मौत टलना।

६ थकान से उत्पन्न पीड़ा, थकान।

उ०—आळ सेजड़ा झाड़स्या झट, खनै बुला स्वागत करै। मरु दातार देव वना विच, छाय सुला विपता हरै। —दसदेव

रू. भे.—बपत, बपता, बिपत, बिपता, बिपति, बिपती, बिपत्त, बिपत्ता, बिपत्ति, बिपत्ती, बिपद, बिपदा, बीपत, बीपता, बीपति बीपती, बीपत्त, बीपत्ता, बीपत्ति, बीपत्ती, ।

विपत्थ, विपथ—स. पु.—१ भयंकर मार्ग।

उ०—दिसा दिसान मान तांण माननीय को दगै, अडोल चक्र नक्र मक्र माननीय व्है अगै। विपत्थ पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, सिजे समत्थ मत्थ में समत्थ प्रत्थ लावनी। —ऊ. का.

२ कुमार्ग, बुरा रास्ता।

विपद, विपदा, विपदि, विपदी—स. स्त्री. [सं. विपद्, विपदा] १ आपत्ति, संकट, कष्ट।

उ०—१ मर पछै ठकराणी ठाकर माथै आयोड़ी विपदा री सगळी

घरामूळ सूं भांडनै मुणाय दी। बात री गंभीरता नै समझ नै उणां इं ठकराणी नै प्रश्न करी—आप म्हांनैं इण जोग समझिया औ आपरौ बडपणौ है। —अमरचूनड़ी

उ०—२ सियावर नैं तू बन में निकार मती, म्हारा जिवड़ा नै बिपदा में डार मती। राज तिलक रौ म्हे साज सझायौ, बणती बात बिगार मती। —गी. रां.

२ मानसिक दुख या सन्ताप।

उ० १ मानखा देहो माथै इसी आफत आय जावै तौ इण आफत री कांई माप ? इण विपदा री कांई थाग ? कोई रौ एकाएक मोट्यार बेटो भूडापा मे दगौ देय जावै तौ उण जांमण रौ कांई हवाळ ? उण बाबल रौ कांई अवस ? मायड रा उण दुख नै कुण माप सकै। बाप री उण बिपदा नै कुण जांण सकै ?

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ घरवाळा घणा ई रोया,घणा ई कळपिया। पण होणहार रै कांन कठै, नैण कठै ! जीयो जितरै बेटो, मरिया पछै माटी। बाप थकां बेटो जावै, इण बिपदा रौ पार कुण पावै। —फुलवाड़ी

३ कष्ट, पीड़ा।

४ झंझट, बखेडा।

५ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन।

६ मृत्यु, मौत।

७ थकान से उत्पन्न, पीड़ा, थकान।

रू. भे.—बपत, बपता, बिपद, बिपदा।

विपवेस—सं. पु. [स. व्यपदेश] कपट, छल, धोखा। (ह. ना. मा.)

विपन—देखो 'विपिन' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ धर चौड़ सरवर बिपन, विंधाचळ दिस एक। च्यार महूरत उत्तरै, धारस मत्र विवेक। —रा. रू

उ०—२ अंब आद व्रख जात अपारां, आप रूप किर भार अठारां। सुपह समेत भडां मिळ सारां, राज बिपन जोयौ राजा रौ।

—रा. रू.

उ० — ३ मदार पारजाती कलप, हरिचंदन संतान तर परसियौ 'अभै' वंदा बिपन, कुज पुंज तरवर निकर। —रा. रू.

उ०—४ कीं सरमावै फिर लुक ज्यावै,पग थाम पट साम जप ज्यावै। जै दिख ज्याव् तौ हस ज्यावै, जद विपन गुदगुदी बिखरावै।

—करणीदांन बारहठ

विपनतिलका—देखो 'विपिनतिलका' (रू. भे.)

विपनबिहारी—वि.—वन में घूमने वाला, वन-विहार करने वाला।

उ०—हेमाणी मरु हाट, नरम तनड़ौ उपकारी। ऊपर चढ देखै, दूर तक बिपनबिहारी। ना ऊमळणं जोग, बाळका व्रत कर खेलै। हिवडै सेवै चोट, कदै ना पाछौ मेलै। —दसदेव

सं. पु.—श्रीकृष्ण का एक नाम।

रू. भे.—विपिनविहारी।

बिपर—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—१ पातुर नाचए धरम दुवार, मेरी माय भलौ ए राजन पार उतार। बिपर पोथी बांचिया-तेरै भवन बिध होय पूजा बार⋯⋯। —लो. गी.

उ०—२ सूद्र वैस्य क्षत्री बिपर, कहुं मछली कहुं मीर। कहूं निरभै निर बैरता, कहुं जाळी कहूं नीर। —ह. पु. वा.

उ०—३ जद हरियाळी वनड़ो फेरां पधारयौ अै, फेरां में बिपरां सरायौ, अै बाई जी म्हारा राज। —लो. गी.

विपरजय—देखो 'विपरय्य' (रू. भे.)

उ०—सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारांत बिहुं जांण। संख्य बिपरजय संख्य थळ, उलट पच्छ लघु आंण। —र. ज. प्र.

बिपरत—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

बिपरब—स. पु. [स. विपर्व] बुरा दिन।

उ०—कांम क्रोध लोभ मोह पास में परयौ, आसको बिनास कै निरास नां अरयौ। गरब मे अखरब खरब गरब नां गरयौ, परब में बिपरब परब बासनां भरयौ। —ऊ. का.

विपरयय, विपरय्य, विपरय्यय—सं. पु. [स. विपर्ययः] १ व्यत्तिक्रम।

२ उलट-पलट, हेर-फेर।

३ विरुद्धता, प्रतिकूलता।

४ भूल, गल्ती, अशुद्धि।

५ अव्यवस्था, गड़बड़ी।

६ वैमनस्य, शत्रुता।

७ भ्रम, सन्देह।

८ सन्देह के कारण विचार बदलने की क्रिया।

रू. भे.—बिपरजय।

बिपराणौ, बिपराबौ देखो 'वपराणौ, वपराबौ' (रू. भे.)

बिपराणहार, हारौ (हारी), बिपराणियौ—वि०।

विपरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विपराईजणौ, विपराईजबौ— कर्म वा०।

बिपरायोड़ौ—देखो 'वपरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विपरायोड़ी)

बिपरावणौ, बिपरावबौ—देखो 'वपराणौ, वपराबौ' (रू. भे.)

बिपरावणहार, हारौ (हारी), बिपरावणियौ—वि०।

बिपरावियोड़ौ, बिपरावियोड़ौ, बिपराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिपरावीजणौ, बिपरावीजबौ—कर्म वा०।

विपरावियोड़ी—देखो 'वपरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विपराबियोड़ी)

विपरित, विपरितो, विपरीत–वि. [सं. विपरीत] १ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध।

उ०—१ राग रंग हुवै छै, छत्रकटा खिलवत रा माथ मूं बैठा छै। तिण समै चाचोमेरो आपरो साथ लै साजबाज सूं चढीया। राणाजी दिसा ऊनाळी, ऊभी माहै चालीया। तरै राणं मोकलजी देख कह्यो—आज थानगण वाळा विपरीत दीसै, मेळ में तो नहीं।
—राव रिणमल री बात

उ०—२ ओईद अथव्वण मात्रव स्रावण, कस्सम कोरण कंठाळय। विपरीत करस्सण कट्टक कोप्रण, गैन महाघण सम्माळय।
—गु. रू. बं.

उ०—३ घड गांर नवी परि नाखियो, दखण्ण फौजां आइयां। 'गजबंध" मेह विपरीत गति, बूठो सिरि वेगाइयां। —गु. रू. बं.

उ०—४ पातिसाह पाति कागळ पठ, सुणो बात विपरीत परि। सुरताण मेर वहा सुरम, कासमीर आई खबरि। —गु. रू. बं.

२ उलटा, विलोम, विपरीत।

उ०—१ जेथि दीप दीपता तेथि प्रजळै हुतासण। जेथि हसति मुजता, तेथि गुंजै पचाइण। जेथि रंग-आवास, तेथि क्रीडति कुरं गंह। जेथि रमति बैसता, तेथि उड्ढंत विहंगह। त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भूखण तेथि भरिया भसम। खेडपति कीध खिडको-खलत, वसुह रीत विपरीत इम। —गु. रू. बं.

उ०—२ कुदरत्त विछूटा चाकप कुहकबाण, हळा पुर आसमाण। गोळियां नाळ विपरीत गत्त, ओघठं गहै गिरि मेह अत्त।
—गु. रू. बं.

३ अनिष्ट साधन में तत्पर, क्रूर।

४ जो उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त।

५ उल्टा, कुटिल।

उ०—हिवै सहस्वर खान रै, आगो थो विपरीत। दाह अकब्बर भोगयो, 'नौरंग' साह नचीत। —रा रू.

६ असत्य, झूठा, मिथ्या।

उ०—जेह एकांत नय पख थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती तै कहै। अथ ऊथापि थापै कुमति आपणो, कहै विपरीत मिथ्यामती ते भणो। —ध. व. ग्रं.

७ अप्रिय, अशुभ।

८ भयंकर, भयावह।

उ०—ताहरां झोटिंग भैसे रो रूप कर आयो। मो ठाकुर बोलियो होज नहीं। गिरधरो पाछो आयनै तरवार लै बाकरो मारियो। बाकरो मारियां पछै झोटिंग एक विपरीत रूप करनै आयो। अकास सीस, पग धरती, इसो भूत आवतो दीठो। —नैणसी

९ नियम-विरुद्ध, परम्परा के विरुद्ध।

उ०—१ निकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तो। विपरीत कुळह अतो, इजगूरं या डिभरु गिळ ए। —गु. रू. बं.

उ०—२ जद स्वांमीजी कह्यो—सासरै आंणो लेवा जमाई जावै जद स्त्री तो रोवै। पिण उण रै देखा देख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक में भूंडो लागै। ज्यूं साधपणो लेवै जरै उण रा न्यातीला रोवै तै तो आपरै स्वारथ पिण उण री देखा देख दीक्षा लेणा वाळो रोवा लाग जावै तो बात विपरीत। —भि. द्र.

उ०—३ कोढी पति छोडी करी, अवर पुरुष सूं प्रीत। तजि आचार सतीतणो, कीधो इण विपरीत। —स्रीपाल रास

१० चित सोधा।

उ०—स्राण झील कमकमै, कियै करिमरां चडाए। रचै संज रिणभोम, कुसम अरि कमळ विछाए। नखत तिक्ख सर कूंत, गहै अन-संघ अचागळ। पांण पयोहर कठण मयै मैगळ कुंभा-थळ। विपरीत रहसि वीरारसहि, रिण दूमळ इड रट्टवड। सुतो सग्रांम करि स्रोण-हर, भूप माण सग्राम घड। —गु. रू. बं.

रू. भे.—बिपरीत, वपरीत, विपरत, विपरीति, विपरीतो, विपरूत।

विपरीत-रति–सं. स्त्री. [विपरीत:+रति] रति-क्रीडा का एक ढंग विशेष, जिसमें संभोग करते समय पुरुष चित्त लेटकर स्त्री को अपने ऊपर उल्टी लेटाता है।

विपरीत लक्षण–सं. स्त्री —ऐसी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति, जिसमें परस्पर विरोधी गुणों, लक्षणों आदि का उल्लेख हो।

विपरीता–सं. स्त्री [सं.] दुश्चरित्रा स्त्री, बदचलन स्त्री।

विपरीति, विपरीतो—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—१ अकबर लेख प्रमाणं, तहवर महत राज लोभाणं। भावी चिन अचीतो, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीतो। —रा. रू.

उ०—२ किण परि राखै सुख चीत रे, भय मरण तणो विपरीति रे। निहा दूरि रही तै प्रीति रे, पछै सहु को नो रीति रे। —वि. कु.

विपरूत–देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—पग्ग जंग कूंत केता धरम पालटै, हटै विपरूत गत सूं तंग हीयो। कळह विच मजबूत अडिग रोकै कदम। राह रजपूत साबूत रहियो। —रावत संग्रामसिंह सक्तावत रो गीत

विपळ, विपल–सं. पु. [सं. विपल] १ एक पल के साठवें अंश के बराबर समय का एक बहुत छोटा विभाग।

सं. स्त्री. —२ समय की गणना की एक इकाई।

विपळव, विपलव—देखो 'विप्लव' (रू. भे.)

विपळा, विपला—देखो 'विपुला' (रू. भे.)

(अ. मा., नां. मा., ह. ना. मा.)

विपळौ, विपलौ–वि.—जिसका विश्वास न किया जाय, अविश्वास पात्र।

स. पु [सं. विप्लव] १ भूत-प्रेत आदि के उपद्रव।

२ भूत-प्रेत।

उ०—पळा भरतै गळा बांमणी प्रजाळी, रुदन करतौ छळा वयण रहटौ। कैइ विकळा कळा वळवळा करतौ, छळा विपळा जोरही भाण चंटौ। —भैरुदान बारहठ

विपसचित, विपसंचि–स पु [सं. विपश्चित] कवि, पंडित।

(अ मा., ह नां. मा.)

विपसचित, विपश्चित–स. पु. [सं पश्चित] १ स्वारोचिष मन्वन्तर का इन्द्र।

२ एक राजा, जो अपनी पत्नी के साथ पापकर्म किये जाने के कारण नरक में गया था। इसकी पत्नी का नाम पीवरी था जो विदर्भराज की कन्या थी।

३ दक्षजयन्त लौहित्य का वंशज एवं शिष्य, जो स्वयं आचार्य था।

४ आषाढ उत्तर पाराशर्य नामक आचार्य का वंशज एवं शिष्य, जो एक आचार्य था।

विपांडु, विपांडुर–वि. [सं] पीला, पीत।

विपाक–स. पु [सं विपाकः] १ किये हुए कर्मों का फल, परिणाम, नतीजा।

उ०–१ सूत्र सिद्धांत वखांणतां जी, सुणतां करम विपाक। खिण इक मन माहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग। —स. कु.

उ०—२ कांम, भोग संयोग सगला, जांण फल किंपाक रे। दीसतां रमणीक दीसइ, अति कटुक विपाक रे। —स. कु

२ स्वाद, जायका।

३ कठिनाई, तकलीफ।

४ परिपक्व होना, पकना।

५ पूर्ण दशा को पहुंचने की क्रिया, चरम उत्कर्ष।

विपाकसूत्र–सं. पु —एक सूत्र ग्रन्थ का नाम। (जैन)

वि. वि.—ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों के शुभ-अशुभ परिणामों को विपाक कहते हैं और ऐसे कर्मविपाक का वर्णन जिस सूत्र में किया जाता है वह विपाक सूत्र कहलाता है। यह ग्यारवां अंगसूत्र है।

विपाट–सं. पु. [सं. विपाटः] १ एक प्रकार का लंबा तीर या बाण विशेष।

२ कर्ण के एक भाई का नाम जो महाभारत-युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—विपाठ।

विपाटल–वि.—गहरा लाल।

विपाठ—देखो 'विपाट' (रू. भे.)

विपाठा सं. स्त्री.—दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

विपाद–स पु —१ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव।

२ एक पिशाचगण।

विपादिका–स. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का कुष्ठ रोग। (अमरत)

विपाप–सं. पु —शिवावतार के एक शिष्य का नाम जिसको दमन के नाम से भी पुकारा जाता है।

विपापमन, विपाप्मन–स पु [सं. विपाप्मनः] १ अग्नि का एक पुत्र, जिसका एक नाम शिवनन भी था। यह वास्तुकार्य में अधिष्ठाता देवता माना जाता है।

२ मत्स्यानुसार, आयु राजा का एक पुत्र।

विपास, विपासा–सं. स्त्री [सं. विपाश] पंजाब में बहने वाली व्यास (आधुनिक शतलज) नदी का एक नामान्तर।

वि वि.—इस नदी को विपास या विपासा नाम प्राप्त होने का कारण है कि एक बार वशिष्ठ ऋषि आत्महत्या के उद्देश्य से अपने हाथ-पैर बांध कर उक्त नदी में गिर गये। नदी ने उन्हें पाशमुक्त कर किनारे पर फेंक दिया।

विपिन, विपुन–सं. पु. [सं. विपिन] १ वन, जंगल। (नां. मा.)

उ०—१ अत अमतुन घर परम अपारै, चलै विपिन तप चाहै। इम घट सहित सुवेस उमाहे, पुर अवधेस पधारै। —र. रू.

उ०—२ ग्रीखम गिर नास्या जरन, सरवर निकट पुलीन। वृभंगो कंमे विपिन, परस्या विना प्रवीण। —प्रवीणसागर

२ उपवन, वाटिका।

उ०–विरचइ विपिनि विचक्षण तक्षण दस वि दसार, नव नव निरमल भूखण दूखण रहिय अंगार। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—विपन।

विपिनचर–वि. [सं] वन में रहने वाला या विचरण करने वाला, जंगली।

विपिनतिलका–स स्त्री —१ प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण वाली वर्णवृत्ति।

२ एक प्रकार का मात्रिक छंद विशेष जिसमें १०, १० मात्रा पर यति हो और अंत में रगण हो।

रू. भे.—विपनतिलका।

विपिनपत, विपिनपति, विपिनपती–स पु. [सं. विपिनं+पति] वन का राजा, सिंह।

बिपिनबिहारी—देखो 'विपनविहारी' (रू. भे.)

बिपुळ, बिपुल—वि. [सं.] १ बहुत बड़ा, विशाल।

२ अधिक, प्रचुर।

उ०—सीत काळ ऊतरै, ग्रब मयरै गिर ग्रागम। रम ग्रायो नर-बरै, भयो ग्रमरै गुर संगम। दुरम चरम मधु भरै, पत्र ग्रंकुरै बिपुल बन। फाग राग माधुरै, मुरै नर नारि हरै मन। —रा. रू.

३ अगाध, गहरा।

४ रोमांचित।

सं. पु.—१ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग।

२ महाभारत युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया, सौवीर देश का एक राजा, जिसे देवमित्र व सुमित्र नाम भी प्राप्त थे।

३ रोहिणी एवं वसुदेव के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, बलराम व कृष्ण का भाई।

४ एक पर्वत, जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला है।

५ देवशर्मन ऋषि का शिष्य एक भृगुवंशीय ऋषि।

वि. वि.—इसकी गुरुपत्नी 'रुचि' पर इंद्र आसक्त हुआ, उस समय इसने रुचि की इन्द्र से रक्षा की थी। इसी कारण प्रसन्न होकर देवशर्मन ने इसे अनेक वर प्रदान किये।

६ एक पर्वत विशेष, जो मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास है।

रू. भे.—विउल।

बिपुळता, बिपुलता—सं. स्त्री.—१ प्रचुरता, बहुतायत।

२ महानता, विशालता।

बिपुळमति, बिपुलमती—सं. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों में से नवमी लब्धि का नाम।

उ०—सूंतरण मानुखखेत्रै संयावंत, पचेंद्रिय जे छै तसु मनवाता तन। सूक्षमतरजाये जाणैं सहू परिणाम,ए नवमी कहियै बिपुळमती सुभ नाम। —वृ. स्त.

बिपुळस्वांन—सं. पु.—सुकृष एवं तुंबुरु के पिता, एक ऋषि।

बिपुळा, बिपुला—सं. स्त्री. [सं. विपुला] १ जमीन, पृथ्वी, भूमि। (डि. ना. मा.)

२ विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी।

३ एक प्रसिद्ध बहुला सती का नामान्तर।

४ विपुला देवी का सिद्ध पीठस्थान।

५ एक प्रकार का छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं।

६ आर्याछंद का एक भेद विशेष, जिसके चारों चरणों में १८, १२ १४ और १३ के क्रम से ५७ मात्रायें होती हैं।

रू. भे.—बिपुला, बिपळा, बिपला।

बिपोहणौ, बिपोहबौ—क्रि. स. [सं. वि=विगत, रहित+पोषणं]

१ मिटाना, नाश करना, समाप्त करना।

उ०—समोसरण सांमी दपइ देसणा, भविक जीव पडिबोहइ। केवलग्यानी धरम प्रकासइ, वयर विरोध बिपोहइ। —स. कु.

२ दूर करना, हटाना।

बिपोहणहार, हारौ (हारी), बिपोहणियौ—वि०।

बिपोहिग्रोड़ौ, बिपोहियोड़ौ, बिपोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिपोहीजणौ, बिपोहीजबौ—कर्म वा०।

बिपोहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मिटाया हुआ, नाश किया हुआ, समाप्त किया हुआ. २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ.

(स्त्री. बिपोहियोड़ी)

बिप्प—१ देखो 'विप्र' (रू. भे.)

२ देखो बिप्पळौ।

उ०—बिप्पळां पळां ग्रावळां वाढ, ग्रीधळां खळां सावळां गाढ। मावळां हुळां मेगळां सल्ल, ढेवळां ढळां तुराह दल्ल। —गु. रू. बं.

बिप्पोसहि, बिप्पोसही—सं. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों में से दूसरी लब्धी।

उ०—१ ग्रामोसहि बिप्पोसहि खेलोसहि जल्लोसहि सव्वोसहि लब्धि वैक्रिय लब्धि, पुलाक लब्धि, तेजोलेस्या लब्धि, ग्रासीविख लब्धि, संभिन्नस्रोतो लब्धि......। —व. सं.

उ०—२ जासु मळमूत्र तराय समा जाणीयै, ग्रौख बिप्पोसही लबधि वखांणियै। ग्रनिवम उत्तधि सारिखौ जेहनौ, तीजी खेलोसही नाम तेहनौ ठवै। —वृ. स्त.

बिप्फरणौ, बिप्फरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)

बिप्फरणहार, हारौ (हारी) बिप्फरणियौ—वि०।

बिप्फरिग्रोड़ौ, बिप्फरियोड़ौ, बिप्फर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिप्फरीजणौ, बिप्फरीजबौ—भाव वा०।

बिप्फरियोड़ौ—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिप्फरियोड़ी)

बिप्फुरणौ, बिप्फुरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)

उ०—जासु सुजसु जगि भिगमिगै ए, चहुंजग निकलंक। प्रभु प्रताप गुण बिप्फुरइ, हरइ डमर ग्ररि संक। —पुण्यसागर

बिप्फुरणहार, हारौ (हारी), बिप्फुरणियौ—वि०।

बिप्फुरिग्रोड़ौ, बिप्फुरियोड़ौ, बिप्फुर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिप्फुरीजणौ, बिप्फुरीजबौ—भाव वा०।

बिप्फुरियोड़ौ—भू. का. कृ.—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिप्फुरियोड़ी)

विप्र—सं. पु. [सं.] १ ब्राह्मण।

उ०—१ नहीं तूं विप्र नहीं तू बैस, नहीं तू खत्रिय सूद न खेस। नही तू मूल नहीं तू डाळ, नहीं तू पत्र नहीं जु पराळ। —ह. र.

उ०—२ चित मांहि इम चितवैजी, निरदय विप्र चडाल। करै परोसो साधनै जी, दे मुख सू घणी गाल। —जयवांणी

उ०—३ ब्राह्नपुर दसरावो थप्पे, जोसी तिलक मुहूरत ग्रप्पे। विजै दसम्मी होम करावै, विप्रां कन्ना वेद बचावै। —गु. रू. वं.

उ०—४ तिलक हुग्रा-दस वसत्र वखबर, करै सदा खट करम निर। तर। राजा वदन कीध उभै कर, ग्रासी-वाच विप्रां इम उच्चार —गु. रू. ब.

२ ब्राह्मण या पुरोहित जाति।

३ उक्त जाति का पुरुष।

४ कर्मनिष्ठ पुरुष।

५ पीपल, सिरस ग्रादि पेड़ों का नामान्तर।

६ ध्रुव वंशीय एक राजा।

७ मगध नरेश मृत्युञ्जय के पुत्र व शुचि के पिता एक राजा।

८ डगण के पांचवे भेद का नाम।

९ विद्वान या मेधावी व्यक्ति।

रू. भे.—बिपर, बिप्र, विप, विपर विप्र।

विप्रक—स. पु [स.] नीच या धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण।

विप्रकार—सं. पु. [स] १ हार, पराजय।

२ ग्रनादर, तिरस्कार।

३ ग्रपकार।

विप्रचरण—स. पु [सं.] भगवान् विष्णु के हृदय पर ग्रंकित भृगु मुनि की लात का चिन्ह। (पुराण)

विप्रचित्त, विप्रचित्ति विप्रजित्त, विप्रजित्ति—सं. पु. [स. विप्रचित्ति]

१ व्यष्टि नामक ग्राचार्य का एक शिष्य।

२ हिरण्यकशिपु का सेवक एक राक्षस।

३ एक दानव राजा।

वि. वि.—यह कश्यप एवं दक्षपुत्री दनु के सौ पुत्रों में से एक पुत्र था। इसका विवाह हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका से हुग्रा था। सिंहिका के गर्भ से इसे सौ पुत्र प्राप्त हुऐ थे जिनमें राहु ज्येष्ठ-पुत्र था जो कि ग्राजकल ग्रह माना जाता है। कहीं-कहीं इसके पुत्रों की संख्या चौतीस या तेरह भी दी जाती है। इसने ग्रसुर-इन्द्र युद्ध व ग्रमृतमन्थन ग्रादि में भाग लिया था। इसके पुत्रों का सैंहिकेय नामक समूह था जिसमें एक सौ राक्षस थे जो सभी इसके पुत्र थे। उक्त समूह में एक राहु एवं सौ केतु थे।

४ राहुग्रह। (डि. को.)

विप्रणी—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

उ०—पीत दुकूळ वैमणी पहरण, गाह सुदरणी स्यांम वसन गण। गोरे वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा। —र. ज. प्र.

विप्रता—सं स्त्री.—ब्राह्मण होने की ग्रवस्था, ब्राह्मणत्व।

उ०—जे इह गहन विचार रे सुकनै पूछीजै, निस्चय ए कीजै। सूं विप्रता रै ग्रम्हनै सूवटा, जेहवौ छै तेहवौ दाखि रे। —वि. कु.

विप्रबिसार, विप्रतीसार—सं पु. [स.] १ रोष, क्रोध, गुस्सा।

२ दुष्टता।

विप्रपद—देखो 'विप्रचरण'।

विप्रबंधु—सं. पु [सं.] १ धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण।

२ मत्रद्रष्टा मुनि।

विप्रबुद्ध, विप्रबुध—वि. [स] ज्ञानी, जानकार।

विप्रराम—स. पु. [स.] परशुराम का एक नामान्तर।

विप्रलंभ—सं. पु. [स. विप्रलम्भ] १ धोखा, कपट।

२ विछोह, वियोग।

३ प्रेमी, प्रेमिकाग्रों का विछोह।

४ साहित्य में एक प्रकार का ग्रलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाग्रों के विरह का वर्णन होता है।

वि. वि.—यह शृंगार रस का एक भेद है, जिसमें ग्रनुराग तो ग्रति-उत्कंट होता है किन्तु नायक नायिका का समागम नहीं होता है। पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, ग्रादि इसके चार भेद हैं। इसमें ग्रभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता ग्रौर मृति (मरण) ग्रादि दश काम दशायें होती हैं ग्रौर इन सारी काम दशाग्रों के लक्षण भिन्न भिन्न होते हैं।

विप्रलब्ध—वि. [सं] १ धोखा दिया हुग्रा, छला हुग्रा।

२ हताश, निराश।

विप्रलब्धा—सं. स्त्री. [स] वह नायिका जो ग्रपने प्रेमी द्वारा बताये संकेत स्थान पर प्रेमी के न पहुंचने पर निराश या दुःखी हुई हो।

विप्रलाप, विप्रवाद—स. पु. [स] १ व्यर्थ की बकवास।

२ विवाद, झगड़ा।

विप्रस्ट—सं. पु [स विप्रष्ट] वसुदेव एवं धृतदेवी के पुत्रों मे से एक पुत्र, बलराम का छोटा भाई।

विप्रस्न—स पु. [सं. विप्रश्न] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रि, विप्री—स. स्त्री.—ग्रार्याछन्द मे एक गाथा जिसमें १३ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—१ विप्री तेरह लघुव दीजै, लघ यकवीस छित्रणी लीजै सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सूद्रणी होई।—र. ज. प्र.

उ०—२ भीने रग वैसणी सुभायक, लख सूद्रणी स्याम रग लायक। सुगता भूखण विप्री सोहत, सुज छित्रिणि हिम भूखण सोहत।
—र. ज. प्र.

रू. भे.—विप्रणी।

विप्लव—स. पु. [स.] १ उपद्रव, बलवा, हगामा, विद्रोह।

२ युद्धकाल मे उत्पन्न अशांति, उथल-पुथल।

३ अग्निकाण्ड, विपत्ति।

४ घोड़े की अत्यधिक तेज चाल।

५ सीमोल्लघन, अतिक्रमण।

रू. भे.—विपळव, विपलव।

विप्लुत—वि. [सं.] जिसके उच्चारण मे प्लुत से भी अधिक समय लगे।
उ०—एक लघु प्लुत विप्लुत कहै, व्यजन वरण विमल। सुया मात्रा अक्षमत्ता नाल-नरगा निरा नेम। —पा. का. प्र.

विप्सा—देखो 'वीपसा' (रू. भे.)

विफंद, विफदो—स. पु.—जाल, पाश, फन्दा, फास।

उ० राज के विहीन सत्यासतु मे रह्यो। भाज के अधीन दीन-बधु के भयो। छद रहे सुछद भी अनद को न हयो, म.नमी "ऊमरो" विफद मे पयो। —ऊ. का.

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू. भे.)

विफरणो, विफरबो—क्रि. अ. [स. विस्फुरणम्] १ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगड़ना।

उ०—बिफरं जैमाल तद वन बड बावळा, सुधारै जावळा वत सारा। ऊपटै अटी कमाण पड आवळा, भड़ण उतावळा हुति नारी। —प्रतापसिंघ री गीत

२ गरजना, दहाड़ना।

३ फैलना, बिखरना।

४ प्रगट होना, स्फुरित होना।

विफरणहार, हारो (हारी), विफरणियो—वि०।

विफरिग्रोड़ो, विफरियोड़ो, विफरयोड़ो—भू० का० कृ०।

विफरीजणो, विफरीजबो—भाव वा०।

बिप्फरणो, बिप्फरबो, बिफरणो, बिफरबो, बीफरणो, बीफरबो, बीभरणो, बीभरबो, भीफरणो, भीफरबो, विप्फरणो, विप्फरबो, विप्फुरणो, विप्फुरबो, वीफरणो, वीफरबो—रू० भे०।

विफरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ क्रोधित हुवा हुआ, गुस्से से युक्त हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ. २ गरजा हुआ, दहाड़ा हुआ. ३ फैला बिखरा हुवा हुआ, ४ प्रगट हुवा हुआ, स्फुटित हुवा हुआ.
(स्त्री. विफरियोड़ी)

विफरैल विफरैळ—वि.—क्रोधित, क्रुद्ध, गुस्से से युक्त।

रू. भे.—बिफरेल, बिफरैल, बीफरेल बीफरैल।

विफळ, विफल—वि. [स. विफल] (स्त्री. विफळा, विफला) १ जिसके फल न लगते हो।

२ व्यर्थ, निरर्थक।

३ असफल, नाकामयाब।

४ हताश, निराश।

५ परिणाम रहित।

स. पु. पान, ताम्बूल। (अ. मा.)

रू. भे.—बिफळ।

विफळणो, विफळबो—क्रि. अ.—१ हताश होना, निराश होना।

उ०—तद कवरसी कह्यो, जो सोनू फेर वरजियो तो हू पेट में मार कटारी मरोस, का राज घात सांमी हुय जाईस। तद वीरू रंग देख विफळियो, पाछो खीवसीजी नं कह्यो, मानै कोई नही।
—कंवरसी सांखला री वारता

२ घबराना, भयभीत होना।

विफळणहार हारो (हारी), विफळणियो—वि०।

विफळिग्रोड़ो, विफळियोड़ो, विफळयोड़ो—भू० का० कृ०।

विफळीजणो, विफळीजबो—भाव वा०।

विफळता विफलता—स. स्त्री. [स विफलता] १ व्यर्थता, निरर्थकता।

२ असफलता, नाकामयाबी।

३ हताश, या निराश होने की अवस्था या भाव।

विफळियोड़ो—भू. का. कृ.—१ हताश, निराश। २ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ।
(स्त्री विफळियोड़ी)

विबक—स पु.—१ वीरता, बहादुरी, बाकापन।

उ०—सिराब गड्ढ गड्ड को विगद्द छड्डती बहै, बकारि बैरि अद को डकार डड्ढती बहै। बडे निसक बक की विबक कढ्ढती बहै, रहसु सक रक की विसक बड्ढती बहै। —ऊ का.

२ कुटिलता।

३ टेढ़ापन, तिरछाई, वक्रता।

४ वीर, बहादुर।

विबध—स पु [स] १ कब्जी होने की अवस्था, कब्जी, मलावरोध।

२ अवरोध, रुकावट।

३ बन्धन, हथकड़ी।

विबंधवरत्ति—स. स्त्री [स. विबधवर्ति] घोड़ो का रोग विशेष जिसके कारण उनका पेशाब बद हो जाता है।

बिबरजित—देखो 'बिबरजित' (रू भे.)

विबरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

विबळ, विबल—वि. [सं. विबल] १ अशक्त, शक्तिहीन, बलहीन ।

२ विशेष बलवान, शक्तिशाली ।

रू. भे.—विबळ ।

विबहुथरणौ, विबहुथरबौ—क्रि. अ.—लहराना, फहराना ।

उ०—पमंगि पख हैं पाई, इळा उडुं आघनरि । जरद लाल इक स्याह, वरन वांना विबहुथरि । —गु रू. बं.

विबहुथरणहार, हारौ (हारी), विबहुथरणियौ—वि० ।

विबहुथरिग्रोड़ौ, विबहुथरियोड़ौ, विबहुथरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विबहुथरीजणौ, विबहुथरीजबौ—भाव वा० ।

विबहुथरणौ, विबहुथरबौ—रू० भे० ।

विबहुथरियोड़ौ—भू. का. कृ.—लहराया हुआ, फहराया हुआ ।

(स्त्री. विबहुथरियोड़ी)

विबाई, विबाही—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

विबिखण, विबिसण, विबीखण, विबीसण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

विबुद्ध, विबुध—वि. [सं. विबुद्धः] १ जाग्रत, सचेत ।

२ ज्ञानप्राप्त, जानकार ।

३ चतुर होशियार ।

सं. पु. [सं. विबुधः] १ चन्द्रमा, चांद ।

२ देवता ।

उ०—तिथ चतुरदसी सनवार तत्र, स्यण पहर बीता अरध । 'अग-जीत' ग्रेह जनम्यौ 'अभौ', बांण वेद हरखं विबुध । —रा. रू.

३ विद्वान पुरुष, बुद्धिमान जन, पंडित ।

उ०—पूरण ग्यांन दसा मन आंणी, वेधक वांणी वखांणीजी । विबुध भणी अवबोध समांणी मूरख मति मूझांणीजी ।—वि. कु.

४ कृति राजा का मतान्तर से देवमीढ राजा का, विसृत मतान्तर से विश्रुत नामक पुत्र, एक राजा ।

५ शिव, महादेव ।

रू. भे—बिबुध, विबध, विबधा, विबह, विबुध, विबुह ।

विबुधतटणी, विबुधतटनी, विबुधतटिणी, विबुधतटिनी—सं. स्त्री. [सं. विबुध+तटिनी] १ देवताओं की नदी, आकाश गंगा । २ गंगा नदी ।

विबुधतर, विबुधतरु—सं. पु [सं. विबुधतरु] कल्प-वृक्ष का एक नाम ।

विबुधधेन, विबुधधेनु—सं स्त्री. [सं विबुधधेनु] काम-धेनु ।

विबुधनद विबुधनदी—सं. स्त्री. [सं. विबुधनदी] १ आकाश-गंगा ।

२ गंगा ।

उ०—जिण री मै 'मा जोय, नर मूरख नावै नहीं । हाड पड्यां गत होय, विबुधनदी में 'बसतिया' । —समेळजी बारहठ

विबुधपत, विबुधपति, विबुधपती, विबुधपत्त, विबुधपत्ति विबुधपत्ती—सं. पु. [सं विबुधपति] सुरपति, देवराज इन्द्र ।

विबुधप्रिय विबुधप्रिया—सं. स्त्री. [सं. विबुधप्रिया] चचरी या चर्चरी नामक छंद का नामान्तर ।

रू. भे.—विबुधप्रिय, बिबुधप्रिया ।

विबुधबन—देखो 'विबुधवन' (रू. भे.)

विबुधलता—सं. स्त्री. [सं] कल्प-लता ।

विबुधवेल, विबुधवेलि, विबुधवेली—देखो 'विबुधवेलि' (रू. भे.)

विबुधवन—सं. पु. [सं] देवराज इन्द्र का वन ।

रू. भे.—बिबुधबन, विबुधबन विबुधवन ।

विबुधविलासण, विबुधविलासणि, विबुधविलासणी विबुधविलासिनि, विबुधविलासिणी—सं. स्त्री. [सं. विबुधविलासिनी] १ देवता की स्त्री, देवांगना ।

२ अप्सरा ।

विबुधवेल, विबुधवेलि—सं स्त्री. [सं. विबुधवेलि] कल्प- लता ।

रू. भे.—बिबुधवेल, बिबुधवेलि, विबुधवेली ।

विबुधवैद्य—सं. पु [सं.] देवताओं के वैद्य, अश्विनी कुमार ।

विबुधान—सं पु [सं. विबुधान] १ देवता ।

उ०—थांनंली स्याग धार मेर विबुधान पांणां, किन्नरां अम्मरां नरां धरा ओपवै सुधाक । अंग रजै राजवै सुपाट धाम येण पांणां, जटीस वसु स्यांम धाम 'छतारौ' जोधाक ।

—भगतरांम हाडा रौ गीत

२ पंडित, विद्वान ।

विबुधाचारय, विबुधाचारिय—सं. पु. [सं. विबुध+आचार्य] देवताओं के आचार्य, बृहस्पति ।

विबुधाधिप, विबुधापत, विबुधापति, विबुधापती—सं. पु. [सं. विबुध+अधिप, पति] देवराज इन्द्र ।

विबुधापगा—सं. स्त्री. [सं] १ आकाश-गंगा । २ गंगा नदी ।

विबुधालय—सं. पु. [सं. विबुध+आलय] देवता का मन्दिर ।

२ स्वर्ग ।

रू. भे.—बिबुधालय, बिबुधालय, विबुधालय, ।

विबुधावास—सं. पु. [सं. विबुध+आवास] १ देवताओं का निवास स्थान स्वर्ग ।

२ मन्दिर ।

विबुधेंद्र—सं. पु. [सं. विबुध+इन्द्र] देवराज इन्द्र का नामान्तर ।

विबुधेस—सं. पु. [सं. विबुध+ईशः] १ देवताओं के स्वामी भगवान्

विष्णु ।

उ०—विमळानन विबुधेस-बिहारी, संख चक्र धारी भुमग । भव तारण भूधर भय-भंजण, हिरणागरभ भय-भग हुए ।

—र. ज. प्र.

२ देवराज इन्द्र ।

रू. भे.—विबुधेस, विबुधेम ।

विबोध-सं. पु. [स विबोधः] १ जागृति, जागरण ।

२ चेतना, होश ।

३ अलंकार साहित्य के अनुसार व्यभिचारी भाव ।

४ चैतन्यलाभ जो निद्रा दूर करने वाले कारणों से उत्पन्न होता है।

५ निर्वहणसन्धि के चौदह अंगों में से एक ।

६ कार्य का अन्वेषण करने की क्रिया ।

विबोधन-सं. स्त्री. [सं: विबोधन्] १ जागृति या जागरण पैदा करने की क्रिया ।

२ चेतना या होश में लाने की क्रिया या भाव ।

३ व्यभिचार करने की क्रिया ।

बिभाड़णो, बिभाड़बो—देखो 'बिभाड़णो, बिभाड़बो' (रू. भे.)

उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर । भ्रासां किति नव खड, ग्रदल कीधी दुनीयप्पर । मल बीसल बिभाड़ि उदधि कर पाइ पखाळिय । अतेउर रति रम, रूप रभा सुर टाळीय । हेतम दान कवि मल्ल कहि, अमर मुक्ति वे बखत गति । दोठो न कोइ रवि चक्क लगि, ग्रलावदी सुलतान तिणि ।

—प च. चौ.

बिभाड़णहार, हारो (हारी), बिभाड़णियो—वि०— ।

बिभाड़ियोड़ो, बिभाड़ियोड़ो, बिभाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिभाड़ीजणो, बिभाड़ीजबो—कर्म वा. ।

बिभाड़ियोड़ो—देखो 'बिभाड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिभाड़ियोड़ी)

बिभाड़णो, बिभाड़बो—देखो बिभाड़णो, बिभाड़बो (रू. भे.)

उ०—पछिम देस पारंभ, लियो लोहा उप्पाडे । पूरब दिस पतिसाह, लियो खग दळ बिभाडे —गु. रू. बं.

बिभाडणहार, हारो (हारी), बिभाडणियो—वि० ।

बिभाडियोड़ो, बिभाडियोड़ो, बिभाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिभाडीजणो, बिभाडीजबो —कर्म वा० ।

बिभाडियोड़ो – देखो 'बिभाड़ियोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. बिभाडियोड़ी)

बिभाणो, बिभाबोदेखो 'बिमाणो, बिभाबो' (रू. भे.)

बिभाणहार, हारो (हारी), बिभाणियो—वि० ।

बिभायोड़ो—भू० का० कृ०— ।

बिभाईजणो, बिभाईजबो—कर्म वा० ।

बिभायोड़ो—देखो 'बिमायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिभायोड़ी)

बिभंग-सं. पु [स.] १ भौंहों द्वारा की जाने वाली चेष्टा, भ्रू-भंग ।

२ किसी चीज को यथास्थान रखने की क्रिया, विन्यास ।

३ खंडित होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

बिभंज, बिभंजण-स. पु. [स. वि+भंज्] १ नाश, विनाश ।

२ संहार, नाश ।

रू भे.—बिभंजण ।

बिभंजणो, बिभंजबो—क्रि. स. [सं. विभजनम्] १ नाश करना, विनाश करना ।

२ संहार करना ।

३ मारना, वध करना ।

उ० —१ रघुराज सिहायक संत रहै, कथ भेद जिको ब्रज वेद कहै । दसमाथ बिभंज भराथ दख, पहनाथ समाथ अनाथ पखं ।

—र. ज. प्र.

उ० —२ दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणां खळ घायक सेवग-पाळ । वडै दसमाथ बिभंजण वक, लछीवर देण भभीखण लक ।

—र. ज प्र.

४ मिटाना ।

उ०—धर मुकर सायक धानुख, लड समर रहचण लख । दुजराज गरब बिभंज दम्मत, सरब जग सरणं । —र. ज. प्र.

बिभंजणहार, हारो (हारी), बिभंजणियो वि० ।

बिभंजियोड़ो, बिभंजियोड़ो बिभंज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिभंजीजणो बिभंजीजबो—कर्म वा० ।

बिभंजणो, बिभंजबो—रू० भे० ।

बिभंजियोड़ो-भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, विनाश किया हुआ ।

२ संहार किया हुआ ३ मारा हुआ, वध किया हुआ । ४ मिटाया हुआ ।

(स्त्री. बिभंजियोड़ी)

बिभ – देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—भड़ राम दससिर भंजिया, दत लंक सरणागत दिया । बिभ प्रबख सिय लै ग्राविया, कळ बंदनाम किया । —र ज. प्र.

बिभकर—स. पु.—एक प्रकार का रत्न विशेष । (व. स.)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकांत चद्रकात, नील, महानील, इद्रनील, सवकर बिभकर ज्वरहर रोगहर

लेलहर, बिलहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरब्भ पुलक ग्रक ग्रंजन ग्ररिस्ट चिंतामणि । —व. स.

बिभक्त—वि. [सं.] ग्रलग-ग्रलग किया या हुवा हुग्रा, बंटा या बांटा हुग्रा ।
सं. पु. [सं. विभक्तः] स्वामी कार्त्तिकेय का नामान्तर ।
रू. भे.—विभगत ।

बिभक्ति—सं. स्त्री. [सं.] १ विभक्त करने या होने की किया या भाव, पार्थक्य, ग्रलगाव ।
२ व्याकरण के ग्रनुसार शब्द के ग्रागे लगा हुग्रा वह प्रत्यय या चिन्ह जिससे उस शब्द का क्रिया पद के सम्बन्ध का पता चलता है ।
रू. भे.—विभगति ।

बिभगत—देखो 'विभक्त' (रू. भे.)

बिभगति—देखो 'विभक्ति' (रू. भे.)

बिभगन, बिभग्न—वि [स. विभग्न] १ टूटा फूटा हुग्रा ।

बिभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू. भे.)

उ०—१ विभचारी बिभचार कर, कुळ-धम खोय कुमोज । खूट गया इण खळक में, खुडको हुवो न खोज । —ऊ. का.

उ० —२ चपळ मती दुरचारणी, चित्त भाव बिभचार । सीघ्र त्याग कर सुर सभा, कर नर ग्रंगीकार । —पा. प्र.

उ०—३ भाग जागे कहै किसी भांत सूं दांमोदर मांय चित राख दीघां । रुकमणी ग्रादि तो पतिवरत सूं ऊधरी, कूबड़ी ग्रादि बिभचार कीधां । —भगतमाळ

उ०—४ हरीया ग्रपनें पीव सुं, सूती सेझ बिछाय । जो राखै मन ग्रोर सु, तौ बिभचार कहाय । —ग्रनुभववांणी

बिभचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू. भे.)

उ०—१ बिभचारी विभचार कर, कुळ-धम खोय कुमोज । खूट गया इण खळक में खुडको हुवो न खोज । —ऊ. का.

उ०—२ चांद किरण संकुड़ी थी सु पसरी । कुलटा कहतां बिभचारिणी की द्रस्टि सकुड़ी थी सु पसरी । निसाचर कहतां रात्रि कै विखै जु विचरै छै । त्यांह की द्रस्टि पसरी । ग्रभिसारिका कहता जिह नै सहेट वदी थी । त्यांह की द्रस्टि पसरी । —वेलि टी.

उ०—३ पतिवरता बिभचारिणी, संगति सुख नहि कोय । तेल नीर सूं ना मिळै, ल्हसण चंदन भी दोय । —ह. पु. रा.

उ०-४ पतिवरता बिभचारिणी, दोऊ ग्रनत न बैसै एकै साथी । फटकिमणि तब लग भली, जब लग हीरा ग्रावै न हाथी । —ह. पु. वां.

उ०—५ होय बिसावर एक वर, कहो कौण दिस जाय । ग्रनहरीया बिभचारणी, पति बिन गोता खाय । —ग्रनुभववांणी

(स्त्री.—बिभचारण, बिभचारणी, बिभचारिणी)

बिभच्छ, बिभछ, बिभत्स—देखो 'बीभत्स' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बिभत्सरस—देखो 'वीभत्स' (१) (रू भे.)

बिभत्सु—१ देखो 'बीभत्सु' (रू. भे.)
२ देखो 'वीभत्स' (रू. भे.)

बिभनो, बिमनो, बिभन्नो, बिभन्नौ—[सं. वि+भंज] मरा हुग्रा मृत ।

उ०—१ बिभनौ तू गज गांम बरीसण, हुई तेण खट बरणां हांण । ग्रणमिळण सो हुवो एम तो, मिटसी किम सोजां महराण । —बां. दा.

उ०—२ घमळ बिमन्नौ घुर तजै, देख दुमन्नो साथ । उण वेळा तांहै 'ग्रजो' मूछां घालै हाथ । —रा. रू.

उ०—३ 'ग्रजबै' वीठळदास रै, देख बिमन्नौ बंध । भुजडंडे बळ झल्लियो, तिण घुर ग्रोडे कंध । —रा. रू.

उ०—४ यूं कमधां सुण ग्रखियौ, माड़ेचो ग्रर मोड । रांम बिभन्नौ को कहै, जां ऊभो रिणछोड़ । —रा. रू.

उ०—५ कमध ग्रगंजी बिभन्नो कहियो, वड दाता कीरत चो वींद । वाक तुग्राळी करंडी-वाळो, काळो झूबाऊं कासींद । —ग्रोपो ग्राढो

बिभरणो, बिभरबो—क्रि. ग्र.—१ चमकना, चौंकना ।
२ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगड़ना ।
३ भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना ।
बिभरणहार, हारो (हारी) बिभरणियो—वि० ।
बिभरिग्रोड़ो, बिभरियोड़ो, बिभरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिभरीजणो, बिभरीजबो—भाव वा० ।

बिभरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ चमका हुग्रा, चौंका हुग्रा . २ क्रोधित हुवा हुग्रा, बिगड़ा हुग्रा . ३ भ्रम में पड़ा हुग्रा, भ्रमित हुवा हुग्रा .
(स्त्री. बिभरियोड़ी)

बिभळ, बिभळी—सं. स्त्री.—१ बिल, गुफा ।
१ ग्रांख, नयन, नेत्र । (ना. डि. को.)
वि.—१ निर्मल, साफ, स्वच्छ ।
२ सुन्दर, मनोहर ।
रू. भे.—बिभळ, बिभळी, भिभळ, भीभळ, भीभळी, बीभळ, बींभळी, बीमळ, वीभळी ।

बिभव—स. पु. [सं.] १ छत्तीसवें सवत्सर का नामान्तर ।
२ देखो 'वैभव' (रू. भे.) (ना मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ बरस दोय होतां छता सारी बिभव खिच गई ।
—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ रूप हुइ न चतुर नुहि, प्रथवा नहीं उदार । तैं हुइ तु बिभव नुहि, कै लपट हुइ ग्रपार । —नळाख्यांन

बिभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

बिभववांन—देखो 'वैभववान' (रू भे.)

बिभवसाळी बिभवसाळौ—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे)

बिभांड सं. पु. [सं.] गरशय्या पर लेटे हुए भीष्म से मिलने हेतु उप स्थित जनों में से एक ऋषि ।

बिभांडक—सं. पु. [सं.] एक ऋषि का नाम जो कश्यप का पुत्र तथा ऋष्यशृंग ऋषि का पिता था ।

वि. वि. इसके पुत्र ऋष्यशृंग ऋषि के जन्म एवं अंग देशाधिपति चित्ररथ की कन्या शान्ता से उसके विवाह के सम्बन्ध में अनेक चमत्कारपूर्ण कथाएं मिलती हैं । कश्यप के पुत्र के नेत्र-पीले रंग के थे तथा इसे ब्रह्मज्ञान की शिक्षा हिमालयवासी सनत्कुमार ने दी थी ।

बिभांडक काश्यप—सं पु. [सं. विभाण्डक काश्यप] ऋष्यशृंग ऋषि का पुत्र एवं शिष्य ।

बिभात, बिभाति,—सं. स्त्री. [सं. विभाति] १ प्रकार, भेद, किस्म ।

वि.—अनेक प्रकार का ।

बिभा—सं. स्त्री [सं.] १ दीप्ति, प्रभा, कान्ति ।

२ छवि, शोभा, सौंदर्य ।

३ किरण, रश्मि । (अ. मा., नां. मा., ह. ना मा.)

४ अग्नि आग । (अ. मा)

५ कावेरी की पत्नी एवं दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम ।

रू. भे विभा ।

बिभाकर—सं. पु. [सं विभा + करः] १ सूरज, सूर्य (ह. नां. मा., अ. मा. ना.)

२ चांद चन्द्रमा ।

३ राजा ।

४ मदार ।

५ अग्नि, आग ।

वि.– प्रकाश करने वाला, अन्धेरा मिटाने वाला ।

रू. भे.—विभाकर ।

बिभाग—सं. पु. [सं. विभागः] १ बंटवार, अंश, हिस्सा ।

२ अंश, प्रकरण ।

३ कार्यक्षेत्र ।

४ कार्यालय, महकमा ।

५ परिच्छेद, खण्ड ।

रू. भे.—विभाग, वभाग ।

बिभागात्मकनक्षत्र, बिभागात्मकनखत्र—सं. पु. [विभागात्मकनक्षत्र] प्रकाशमय आठों नक्षत्रों का नाम ।

वि. वि.—उक्त आठों प्रकाशमय नक्षत्रों के नाम निम्नलिखित हैं —१ रोहिणी, २ आर्द्रा, ३ पुनर्वसु, ४ मघा, ५ चित्रा, ६ स्वाती, ७ ज्येष्ठा और ८ श्रवण ।

बिभागी—सं. पु. [सं. विभागिन्] हिस्सेदार, भागीदार ।

वि.—विभाग करने वाला ।

रू. भे.—विभागी ।

बिभाड़—सं पु.—१ नाश, ध्वंस ।

२ बिगाड़, हानि ।

३ कळह, झगड़ा ।

४ मारने की क्रिया, संहार ।

५ तहस नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया ।

वि.– १ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—हगा जिसा बिकराळ पधोर के बकरा हल्लां, जुधां जीत अनंक रा रोडणा जोधार, । रोळ लैंण लंक रा निसंक रा बिभाड़ राम, हाथा झोक रक रा लंक रा दैणहार । —र ज. प्र.

२ विनाश करने वाला ध्वंस करने वाला ।

३ चीरने वाला, फाड़ने वाला, विदीर्ण करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

उ०—१ नाळेरउ प्रापट त्रिणी नक्ख, मूरउ सनेज सुरिज्ज मक्ख । पाखरि पलाणि काळउ पहाड़, वग्जाग चढ़िय वइरां बिभाड़ । —रा. ज. सी.

उ०—२ जुड़ै खग गेद जही तळजोड़, 'ग्रनावत' गीधउमेद ग्ररोड । वहै घज सावळ गेद बिभाड़, 'ग्रजावत' माह वगां ग्रवनाड़ । —सू. प्र.

उ०—३ तुजी-मठार ग्रमली तुरग, 'दीप धूप माणळ दिया । मात्रव बिभाड़ रछक गुरा, कर सलाम हाजर किया । —वखतौ खिड़ियौ

५ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला ।

६ कळह करने वाला, झगड़ा करने वाला ।

७ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

८ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

९ मारने वाला, वध करने वाला ।

१० तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला ।

११ त्यागने वाला, छोड़ने वाला ।

रू. भे.—बिभाड़, वभाड़, विभाड़ ।

अल्पा.—बिभाड़ौ, विभाड़ौ

बिभाड़ण, बिभाड़णि बिभाड़णौ बिभाड़णौ—वि.—१ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ हानि करने वाला, बिगाड़ करने वाला।

३ कलह करने वाला, झगड़ा करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ संहार करने वाला, मारने वाला।

उ०—'सुरतौ' 'अनै' तणौ पण साचैं, जुध कजि सदा सकतियर जाचै। 'किरतावत' बुधसिंघ करारौ, गजा बिभाड़णि राढ़ौ (टो) गारौ।
—रा रू.

६ चीरने वाला, फाड़ने वाला, विदीर्ण करने वाला।

७ पराजित करने वाला, लूटने वाला।

६ तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला।

१० त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

रू. भे.—विभाडण, विभाडणि, विभाडणौ, विभाडणौ।

बिभाड़णौ, बिभाड़बौ—क्रि. स.—नाश करना, ध्वंस करना नष्ट करना।

उ०—वडवीर सधीर रेणापुर राजिद, धोम तजागर धाडि। पहाड़ अौनाड बिभाड़ पघोरै, राहां चक्कर राडि। —मा. वचनिका

२ संहार करना, (मारना)।

उ०—१ उठै रिणछोड़ सुजाव अरोड़, घटा व्रळ वेघत मेल घमोड। बिभाड़त रोद घड़ा 'हळवाह', सराहत राह दुहूं दळ साह। —सू प्र.

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं, नह घायल बरड़ाय, वाळू नखी ऊ द्रगड़ौ, भड़ बापड़ा कहाय। बाळू ऊ द्रगड़ौ, बसै भड़, बापड़ा नाम अग सहै नह बिभाड़ै अरि घड़ा। घणा जमवल रा, जोध विहसै घणा, मांटिमी सही, मतिवाळा वेढीमणा। —हा. भा.

उ०—३ ऊगमणा वराहूं एम आय, जुध कीध आथमणा धरा जाय। वाहे खग गोहिल दळ बिभाड़ इम लोध गेड़ धर मारवाड़।
—गू. प्र

उ०—५······वत्तीस आयडी रौ निवाहणहार. वैरिया बिभाडण-हार, परभोम पचायण, धण दियण, जस लियण, वळायगौ मौर, मूंछे भीनै गात, केसरिया पौसाग किया, पाच हथियारा बाधा अाण घोड़ै असवार हुवे छै। —रा. सा स

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

४ हानि करना, बिगाड़ करना।

५ चीरना, विदीर्ण करना।

उ०—१ चौधारां लाखौक चाडतौ, किलम पखाहर कीयां कर। राड़ बिभाड़ सोढ़ियौ राजा, अरक ज्यूं ई दळ फाड़ अर।
—चावड़दान बारहठ

उ०—२ जेज न कीध ऊतावळ जूटौ, बावळ फोजां हो थाट बिभाड़ै आयौ काम महि भट ऊपर, चावळ वंस चुहांणा चाडै।
—ठाकुर सूरतसिंह चहुवाण रौ गीत

६ टुकड़े टुकड़े करना, काटना।

उ०—लोहा झट वाढत रोद लगस्स, 'बहादर' 'पीथळऊत' बंगस्स। 'राघावत' आणदसिंघ दुबाह, बिभाड़त मुग्गळ बीजळ बाह।
—सू. प्र.

७ तितर-बितर करना, बिखेरना।

उ०—सूर बाहर चढै चारणां सुरहरी, दतै जस जितै गिरनार आंवू। विहड़ खळ खीचिया तणा दळ बिभाड़ै, पोढियौ सेज रण भोम "पावू"। —बां. दा.

८ मारना, वध करना।

उ०—१ जळ माहै जगदीस विढै मयकीट बिभाड़ै। बतळावै वेमासि, पछै दाणवा पछाड़ै। —पी. ग्र.

उ०—२ भगत थारा जिकै तिकां दरसण भयौ, जमदगन तणा जगदीस तैंना जयौ। बिभाड़ी रेणुका वडौ कीधौ विघन, जमदगिनि तणौ परमेस माड़ै जिगिन। —पी. ग्रं.

उ०—३ बिभाड़ पंचदृणमाथ आथ देण वेस रे, मभार ध्यांन कंज सो वसै सदा महेस रे। सदा नमंत अोघराय पाय धू सुरेस रै, बदा नरेस आंन कृण जोड़ रायवेस रै। —र. ज. प्र.

६ युद्ध के सम्बन्ध में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव जीत कर अधिकार में लेना।

उ०—बिभाड़ै जादवा-कोट धरकोध बस, सबळ ब्रद खाटिया अभा साम्ह। तर-वळी अभनमा "माल" "गंगेव" तो, ममारक पोकरण गाव साम्ह। —गु. रू. बं.

१० गिराना।

११ विजय करना, जीतना।

उ०—आवै दाव वळतणा दुनियान सौह ऊवरै, बडी घर राव तणा बिभाडो उथापा गाढ रजपूत आधेरि धरि, पहाडी कांमा लै भोम पाडी। —राव राजा फतैसिंघ नरूका कछवाहा रौ गीत

१२ त्याग करना, छोड़ना।

उ०—गिणै न जळ थळ विकट गिर, आंधी ज्यूंण उजाड़। भय बिभाड़ 'पातल' बहै, पमगा धरा उपाड़। —जैतदान बारहठ

१३ सजा देना, दण्डित करना।

१४ पराजित करना, हराना।

उ०—वामदि हजार फोजा रा भाजणहार। छत्रबंध सुरताण रा विधुंसणहार। मैंमंत हाथिया रा मारणहार। पतिसाहा रा बिभाड़णहार। पतिसाहा रा पाड़णहार। —र. वचनिका

विभाड़णहार, हारौ (हारी), विभाड़णियौ —वि० ।
विभाड़ियोड़ौ, विभाड़ियोड़ौ, विभाड़योड़ौ —भू० का० कृ० ।
विभाड़ीजणौ, विभाड़ीजबौ —कर्म वा० ।
विभाड़णौ, विभाड़बौ, बीभाड़णौ, बीभाड़बौ, बभाड़णौ, बभाड़बौ, बिहभाड़णौ, बिहभाड़बौ, बिहभाड़णौ, बिहभाड़बौ, विभाडणौ विभाडबौ —रू० भे० ।

विभाड़ियोड़ौ—भू० का० कृ० —१ नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ, नष्ट किया हुआ २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ हानि किया हुआ, बिगाड़ किया हुआ. ५ विदीर्ण किया हुआ. ६ टुकड़े टुकड़े किया हुआ, काटा हुआ. ७ तितर-बितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न हुआ ८ मारा हुआ, वध किया हुआ. ९ युद्ध के सम्बन्ध में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव जीत कर अधिकार में लिया हुआ १० मिटाया हुआ. ११ त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ १२ दण्डित किया हुआ, सजा दिया हुआ. १३ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १४ विजय किया हुआ, जीता हुआ.
(स्त्री. विभाड़ियोड़ी)

विभाड़ौ—देखो 'विभाड़' (अल्पा., रू भे.)

उ०—पट्टा पूग जोगणी समदा वेग जान घट्टै, घट्टै पाट जोगणी समदा लेण सांह। भलै गाडौ गाहणौ नमा रो अर्थ जोगणी भीनो, दोयणा विभाड़ौ हालै दला रो दाह। —र हमीर

विभाजक—वि. [सं.] विभाजन करने वाला, बांटने वाला।

सं. पु.—वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या को विभाजित किया जाता है, भाजक। (गणित)

विभाजण—देखो 'विभाजन' (रू. भे.)

विभाजणौ, विभाजबौ—क्रि. स.—१ अलग-अलग करना।

२ बटवारा करना, हिस्से करना।
विभाजणहार, हारौ (हारी), विभाजणियौ वि०।
विभाजियोड़ौ, विभाजियोड़ौ, विभाज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विभाजीजणौ, विभाजीजबौ —कर्म वा०।

विभाजन—सं. पु [सं] १ विभाग या हिस्से करने की क्रिया या भाव।

२ पात्र, बरतन।
रू. भे.—विभाजण।

विभाजित—वि. [सं] जिसके विभाग हिस्से या खण्ड किये गये हों।

विभाजियोड़ौ—भू० का. कृ —१ अलग-अलग किया हुआ. २ बंटवारा किया हुआ, हिस्से किया हुआ।
(स्त्री. विभाजियोड़ी)

विभाज्य—वि. [सं] जिसका विभाजन करना हो या कर दिया गया हो, विभाजन करने योग्य।

विभाडण, विभाडणि, विभाडणौ, विभाडबौ—देखो 'विभाड़ण' (रू. भे.)

उ०—कन्हराव कुळ तिलक, जोध जग जेठी 'जाल्हव', 'छाडौ' 'तीडौ' 'सलख', वीर वैरी विभाडण। —गु. रू. बं.

विभाडणौ, विभाडबौ—देखो 'विभाड़बौ, विभाडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ विभाड गयद मयंद विध, महि सांमंद इधकै मच्छरि। 'सूरजन' प्रगट नवनंद गिर, गहप्रनि मेर गिरद मिरि। —गु. रू बं.

उ०—२ जिम धायौ हणमत, द्रोण पव्वै उप्पाडण। जिम धायौ भीमसण, दैन लंक मीर विभाडण। — गु. रू. बं.

उ०—३ रूठो सीम विहारियां, दिल्लीपति सुरताण। खांन पहाड विभाडियौ, बैठा फिरै पठाण। —गु. रू. बं.

उ०—४ इथारै खोहणी, खान बारैह विभाडै। अरि उलाळ रिणनाळ, गज्ज गयणाग भमाडै। —गु. रू. बं.

विभाडणहार, हारौ (हारी), विभाडणियौ—वि०।
विभाडिग्रोड़ौ, विभाडियोड़ौ, विभाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विभाडीजणौ, विभाडीजबौ —कर्म वा०।

विभाडियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री विभाडियोड़ी)

विभाणौ, विभाबौ—क्रि. अ.—१ चमकना, झलकना।

२ शोभा युक्त होना, शोभा पाना।
विभाणहार, हारौ (हारी), विभाणियौ —वि०।
विभायोड़ौ —भू० का० कृ०।
विभाईजणौ, विभाईजबौ—भाव वा०।
विहभाणौ विहभाबौ— रू० भे०।

विभाभानु, विभाभांनु-सं पु [सं. विभा+भानु] अग्नि, आग। (अ. मा.)

विभायोड़ौ—भू० का. कृ.—१ चमका हुआ, झलका हुआ. २ शोभा-युक्त हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ।
(स्त्री. विभायोड़ी)

विभाव—सं. स्त्री [सं. विभाव:] १ रति या रस-विधान (साहित्य) में भावों का शरीर या मन को किसी विशेष परिस्थिति में पहुंचाने वाली अवस्था विशेष।

वि. वि.—आलंबन और उद्दीपन इसके दो भेद है।
२ देखो 'वैभव' (रू.भे.)

विभावन—सं. पु. [सं] १ विवेक, विचार।

२ वाद विवाद।
३ साहित्य में वह अवस्था जिसके कारण पात्र में प्रदर्शित भाव पाठक या दर्शक अनुभव करता है।

बिभावना-सं. स्त्री. [सं.] साहित्य में एक अर्थालंकार विशेष इसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबंध होने से भी कार्य की सिद्धि प्रदर्शित की जाती है।

वि. वि.-इसके छः भेद कहे गये हैं—(१) जिसमें कारण के अभाव में भी कार्योत्पत्ति हो. २ जिसमें कारण की अपूर्णता में भी कार्योत्पत्ति हो, ३ जिसमें प्रतिबंधक तत्व के उपस्थित होते हुए भी कार्योत्पत्ति हो (४) जिसमें कारणांतर से जिस कार्य का जो कारण हो, उसके अभाव में किसी अन्य कारण के द्वारा कार्योत्पत्ति हो। (५) जिसमें विपरीत कारण से कार्योत्पत्ति हो। (६) जिसमें कार्य से कारण की उत्पत्ति हो।

बिभावरि, बिभावरी-सं. स्त्री. [सं. विभावरी] १ रात, रात्रि। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—रज डवर अवर मग्ग चढं, भ्रम कोक बिभावरि सोक बढं। नभ देव विमांन न की अवली, उडि गिद्धनि के गन संग चली। —ला. रा.

२ वेश्या। ३ चतुर व मुखरा स्त्री। ४ कुटनी, दूती स्त्री ५ पतिता स्त्री, पथभ्रष्ट स्त्री। ६ व्यभिचारिणी स्त्री। ७ पहली पत्नी के जिन्दावस्था में लाई गई दूसरी स्त्री, रखैल।

रू. भे.—बिभावरी।

बिभावरिस, बिभावरीस-सं पु [सं विभावरी+ईश] १ चन्द्रमा, चान्द। २ उल्लु घुग्घु।

बिभावसु बिभावसू-सं पु [सं विभा+वसु] १ वह वस्तु जो अधिक प्रकाशमय हो।

२ सूरज, सूर्य। (नां, मा., ह. नां. मा., क. कु बो.)

३ चान्द, चन्द्रमा।

४ अग्नि, आग। (ह. नां. मा.)

५ गले का आभूषण, हार।

६ आठ वसुओं में से एक वसु, जो दक्षपुत्री वसु तथा धर्म के आठ पुत्रों में से अन्यतम थे। ये व्युष्ट रोचि, आतप आदि के पिता व उषा के पति थे।

७ विवस्व का एक पुत्र।

८ युधिष्ठर को विशेषादर देने वाला एक ऋषि।

९ मुर नामक दैत्य का पुत्र, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।

१० नरकासुर के सात पुत्रों में से एक।

११ सुप्रतीक ऋषि का एक भाई जो स्वभाव से क्रोधी था. वक्त महर्षि के शाप के कारण कछुआ हुए थे, और इसी अवस्था में गरुड़ ने इसका भक्षण किया था।

१२ एक गंधर्व, जिसने गायत्री से देवताओं का सोम छीन लिया था।

१३ वृत्र-इन्द्रयुद्ध के समय वृत्र-पक्ष का एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

१४ द्युति का पति एक वसु। सोम से प्रीति के कारण द्युति ने इसका त्याग किया था।

१५ एक वैश्य, जिसे पूजापाठ के समय अभद्र घंटा का निनाद करने के कारण मृत्युपरान्त घटा के आकार का मुख प्राप्त हुआ था।

रू. भे.—बिभावसु, बिभावसू, विभोवस, बिभोवसु।

बिभास सं. पु [सं.]-१चमक, तेज, प्रकाश, दीप्ति।

२ सवेरे के समय गाया जाने वाला एक राग विशेष। (संगीत)

उ०—१ छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोबती। भजे बिभास भैरवी, रळी कळी कळी रवं। —रा. रू.

उ०—२ दोय घड़ी रात लारली रहै सो ब्रह्म मुहूर्त्त। इण वेळा बिभास वेळावळ में लालो-फूलांणी गवीजै—प्रह लालो सु विहांण। —बां. दा. ख्यात

उ०—३ रात तो इण रंग मैं विदित हुई। इतरै परभात हुवो। भैरु बिभास। विलावलि को वखत आयो। गुणीजनां राग झिलायो। —पनां

३ एक देवयोनि विशेष।

बिभासक-वि. [सं] १ चमकने वाला, प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्। २ चमकाने वाला, प्रकाश युक्त करने वाला।

बिभासणौ, बिभासबौ-क्रि. अ.—१ चमकना, झलकना।

क्रि. स.—२ चमकाना, झलकाना।

बिभासणहार, हारौ (हारी); बिभासणियौ—वि०।

बिभासिओड़ौ, बिभासियोड़ौ, बिभास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिभासीजणौ, बिभासीजबौ—कर्म, भाव वा०।

बिभासा-सं स्त्री [सं.] चमक, आभा, कान्ति, दीप्ति।

बिभासियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, झलका हुआ. २ चमकाया हुआ, झलकाया हुआ।

(स्त्री. बिभासियोड़ी)

बिभिंदु, बिभिंदुक-सं. पु [सं.] एक दानशूर राजा, जिसने मेधातिथि काण्व नामक आचार्य को ४८ हजार गायें दान में दी थी।

बिभिखण —देखो 'बिभीसण' (रू. भे)

बिभिन्न-वि. [सं] १ तोड़ा या टूटा हुआ, छिदा या छेदा हुआ।

२ पृथक जुदा।

३ घायल, बिधा हुआ, विद्ध।

४ उद्विग्न, विकल, हताश।

५ अनेक प्रकार का, कई प्रकार का।

बिभिखण—देखो 'बिभीसण' (रू. भे.)

बिभीखण—देखो 'बिभीसण' (रू. भे.)

उ०—१ परी दधि पाज पहाड़ा पार, पवन्न प्रकार उतारे पार। पड़े तद प्राण बिभीखण पाय, लियो जद राघव कंठ लगाय।

—ह. र.

उ०—२ नमो रण रावण-मारण-राम, नमो किय सिद्ध बिभीखण काम। नमो कन्ह रूप निकंदण कंस, नमो व्रजराज नमो जदुवंस।

—ह. र.

बिभीत-वि. (स्त्री. बिभीता) डरा हुआ, भयभीत।

सं. पु.—बहेड़ा या बहेड़े का वृक्ष।

बिभीतक-सं पु.—[सं. विभीतकी, विभीता] बहेड़ा या बहेड़े का वृक्ष।

बिभीसण-वि. [सं विभीषण] डरावना, भयावह।

सं. पु.—१ एक यक्ष।

२ रावण का कनिष्ठ भाई, जो ब्रह्मा के महामति विद्वान पुलस्त्य ऋषि का पुत्र विश्रवस् ऋषि एवं सुमालि राक्षस की लक्ष्मी देवी के समान रूपवती पुत्री कैकसी के तीन पुत्रों में से एक पुत्र।

वि. वि.—यह धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार एवं जितेन्द्रिय था। इसने अपने बड़े भाई रावण को राम की पत्नी सीता को वापिस लौटाने का अनुग्रह करने पर रावण ने क्रुद्ध हो कर इसे अपमानित किया था। इसीलिए यह अपने अनल, संपाति, पनस और प्रमाति नामक राक्षस मित्रों के साथ राम की शरण में आगया था। इसने राम को रावण का वध करने के लिए अनेक परामर्श दिये एवं रावण के कार्यों व गुप्त सूचनाओं का परिचय राम को देकर युद्ध में सहायता प्रदान की थी। इसने ब्रह्मा की अनन्य भक्ति की थी। शैलूष गन्धर्व की पुत्री सरमा इसकी पत्नी थी जिसके गर्भ से कला नामक पुत्री उत्पन्न हुई थी। रावण वध के बाद राम ने इसे ही लंका का राजतिलक किया था।

३ विभीषणवंशीय लंका का एक नरेश जिसे पाण्डवों ने अपने दक्षिण दिग्विजय के समय परास्त किया था।

रू. भे.—बभीखण, बभीछण, बभीसण, बभीख, बभीखण, बभीसण, बभीखण, बभीछण, बभीसण, बिभीखण, बिभीसण, वीभीखन, भभीखण, भभीसण, भभीखण, भभीसण, बभीखण, बभीसण, बभीखण, बभीसण, बिबिखण, बिबिसण, बिबीखण, बिबीसण, विभिखण, विभिसण।

अल्पा.—बभीखणी।

बिभीसणा-सं. स्त्री. [सं. विभीषणा] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

बिभीसिका-सं स्त्री. [सं. विभीषिका] १ भय प्रदर्शन।

२ भयंकर बात या भयानक कांड।

बिभु, बिभू-वि. [सं. विभु] १ जो सर्वगत एवं सर्वव्यापक हो।

२ बहुत बड़ा, महान्।

३ अटल, दृढ़।

४ बलवान्, शक्तिशाली।

५ आत्मसंयमी, जितेन्द्रिय।

सं. पु. [सं. विभुः] १ उड़ायी तरल पदार्थ विशेष।

२ आकाश, व्योम।

३ ब्रह्मा।

४ भगवान् श्रीविष्णु।

५ शिव, महादेव।

६ प्रभु, ईश्वर, स्वामी।

उ०—नमो अग्राहूपाक श्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा-श्रम विजयलक्ष्या पत नमो। नमो विश्वाधारी अनन्त अघहारी बिभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विश्वंभर नमो। —ऊ. का.

७ नौकर, सेवक।

८ काल, समय।

९ सौवीर देश के राजा शकुनि का भाई जो अपने चार भाइयों सहित भीम के साथ हुए रात्रि युद्ध में मारा गया था।

१० रैवत मन्वन्तर का इन्द्र।

११ स्वायंभुव मन्वन्तर में हुआ भगवान् श्रीविष्णु-अवतार।

१२ स्वायंभुव मन्वन्तर के तुषित देवों में से एक।

१३ साध्य देवों में से एक।

१४ ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंशज प्रस्ताव और नियुत्सा के पुत्रों में से एक जिसकी पत्नी का नाम रति और पृथुसेन का पिता था।

१५ यज्ञदेव एवं दक्षिणा के पुत्रों में से एक देव।

१६ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक दानव।

१७ एक राजा जो सुविभु का पिता एवं सत्यकेतु का पुत्र था।

१८ वरेण्य नामक ऋषि, जो भृगु वारुणि का पुत्र था।

१९ भग एवं सिद्धि के पुत्रों में से एक भव देव।

२० जिताजित देवों में से एक देव।

२१ अभिताप देवों में से एक देव।

२२ मगधवंशीय महाबाहु राजा का नामान्तर।

२३ स्वायंभुव मनु के एक पुत्र का नाम जिसे कहीं-कहीं पर स्वयंभुव मनु का पौत्र भी मानते हैं।

२४ नृप, राजा। (ह. ना. मा)

रू. भे.—बिभु, बिभू।

बिभूखण- देखो 'बिभूसण' (रू. भे.)

उ०—१ कापड माल प्रसंख हेम मिण रयण विभूखण। परिमळ चदन प्रगर, पांन कप्पूरह प्रस्सण। —गु. रू. बं.

उ०—२ रग राग विणोद विसातरय बहुय, चडि चाडति सुदर सिदरयं सहय। मिण माणक कुदण ककणमं दिपतं, मोताहळ हार विभूखणय वगितं। —गु. रू. बं.

विभूखणो, विभूखबो—देखो 'विभूसणो, विभूसबो' (रू. भे.)

विभूखणहार, हारो (हारी), विभूखणियो—वि०।

विभूखिप्रोड़ो, विभूखियोड़ो, विभूख्योड़ो—भू० का० कृ०।

विभूखीजणो, विभूखीजबो—कर्म वा०।

विभूखा—देखो 'विभूसा' (रू. भे.) (प्र. मा., नां. मा., ह. ना. मा.)

विभूखित—देखो 'विभूसित' (रू. भे.)

विभूखिप्रोड़ो देखो 'विभूसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विभूखियोड़ी)

विभूत—देखो 'विभूति (रू भे.)

उ०—ग्रसटग विभूत सनाह उपावै, लोह छतीस सिघार लिय। सिध बारह पथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप कियं। —गु. रू. बं.

विभूतसिद्ध, विभूतसिध, विभूतासिद्ध, विभूतासिध—स. पु. [सं. विभूति+सिद्ध] १ शिव, महादेव।

२ सिद्धिप्राप्त महात्मा।

३ एक लोक देवता विशेष।

वि. वि.—यह विभूतासिद्ध पश्चिमी राजस्थान के चारणवासी नामक गाव का निवासी सोलकी राजपूत था। यह जगल मे रवड़ (भेड़ व बकरियों का झुण्ड) चराया करता था एक बार जगल मे इसे 'पीणो' सर्प ने डस लिया। जिसमे यह मर गया। मरन के बाद इसने अपनी बहन को ससुराल से पीहर पहुंचाई थी और भी कई चमत्कार बताये थे। इस कारण इसे देवता मान कर पूजा जाने लगा। बीकानेर डिवीजन के नोहर सरदार शहर और महाजन के क्षेत्र मे इसकी बड़ी मान्यता है। साप के काटे जाने पर घायल को इसके स्थान पर ला कर ढोल वादन के साथ उसकी मनौती मनाते है व रात्रि जागरण देते है जिसमे इसका सिरलोका गाते है। रेवड़ के ग्वाले एक गीत भी गाते है जिसमें अकाल मृत्यु और चमत्कारो का वर्णन एव प्रशसा है।

रू. भे.—बभूतसिद्ध, बभूतसिध, बभूतासिद्ध, बभूतासिध, भभूतासिद्ध भभूतासिध, वभूतासिद्ध, वभूतासिध।

विभूति—स. स्त्री. [सं विभूतिः] १ बड़ा होने की अवस्था, बड़प्पन।

२ स्वस्थ होने की अवस्था।

३ समवृद्धि, बढोतरी।

४ वैभव, ऐश्वर्य।

५ धन, दौलत, सम्पत्ति।

६ अधिकार, प्रभुत्व।

७ कान्ति, दीप्ति, चमक।

८ भगवान् श्रीविष्णु का नित्य और स्थायी माना जाने वाला ऐश्वर्य।

९ दिव्य या अलौकिक शक्तियां, जिसके अन्तर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व, आदि आठ सिद्धिया मानी जाती है।

उ०—निमो निमो नारायणा, भगवन निमो विभूति। तुझ तणी वसदेव तणा, कुण जाणं करतूति। —पी. ग्रं.

१० शिव और शैव आदि लोगो के सिर व शरीर पर लगाई जाने वाली वह राख या भस्म जो यज्ञादि के बाद बचती है।

उ०—कांनं मुद्रा कनक की, ग्रामण चीता चरम। लगाय विभूति तप जप करे, नं साधं सिव धरम। —प. च चौ.

११ भस्मी या राख।

उ०—१ जगन बिदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल। अंग विभूति गळं ग्रगछाळा, तू जन गळिया खोल। --मीरा

उ०—२ बदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊ कपोळ। सेली-नाद विभूति न बटवा, अजु मनी मुग खोल। —मीरां

१२ सिद्ध पुरुषो के अग्निकुण्ड (धूणी) की वह भस्मी जो रोग निवारणार्थ शरीर पर लगाई जाती है।

१३ राम का एक दिव्य अस्त्र जो विश्वमित्र ने दिया था।

१४ चमत्कार युक्त पुरुष।

१५ मूर्खों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक व्यग्य पूर्ण सम्बोधन सूचक शब्द।

१६ एक प्रकार का शारीरिक क्षुद्र रोग जिसमे शरीर पर हलके भूरे-भूरे दाग या चिन्ह बन जाते है। (शुभ-अशुभ)

१७ विश्वामित्र का एक ब्रह्मवादी पुत्र।

रू. भे.—बभूत, बभूति, बभूती, विभूत, विभूति, बिभूती, भबूत, भबूति, भबूती, भभूत, भभूति, भभूती, वभूत, वभूति, वभूति, वभूती, विभूत, विभूती।

विभूतिद्वादस, विभूतिद्वावसी—स. स्त्री. [सं विभूति+द्वादशी] प्रत्येक शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष।

विभूतिमान, विभूतिवान—वि. [सं. विभूतिमान] १ शक्तिशाली, बलवान।

२ वैभवशाली, ऐश्वर्ययुक्त।

३ धनी, सम्पत्तिशाली।

४ कान्तियुक्त, चमकीला।

बिभुतिसिद्ध, बिभु'तसिध—देखो 'बिभूतासिद्ध' (रू भे)

बिभुती—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

उ०—पीनाकी चक्रधारिया ज्यू प्रेम आर्प तेरा पाणा, गणा मध्य देवां बीचा रामर्व अंग। बिभूति अग पीतपट गुथारे जेहो बनो, संभूनाथ माधव ज्यूं हुवो उद तेग।

—महाराज मानसिंह हाडा री गीत

बिभूती—वि.—१ राख या भस्मी लगाया हुआ।

२ देखो 'बिभूतासिद्ध'।

रू. भे.—भभुती।

बिभूवस, बिभूवसु—सं. पु.—जिन ऋषि के पिता, एक ऋषि।

बिभूखण—सं. पु. [स. विभूषणम्] १ अलंकार आभूषण, जेवर।

२ अलंकृत, या आभूषित करने की क्रिया।

बिभूखणकरता, बिभूखणकार—सं. पु. [स. विभूषण+कर्ता] १ आभूषण जेवर आदि बनाने वाला, स्वर्णकार।

उ०·······पावकार तुंबिकार प्रारामकार मान्त्रकार मंत्रकार मृद्ध-कार उद्दीसकार धूनिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षौरकार गन्धकार वस्त्रकार बिभूखणकार पंतार अन्यभिक्षाकार रथकार साध्वकार······। —व. स.

वि अलंकृत या आभूषित करने वाला।

बिभूखणो, बिभूखबो—क्रि. स.—१ अलंकृत होना, शोभित होना।

क्रि. स.—२ अलंकृत करना, शोभित करना।

बिभूखणहार, हारो (हारी), बिभूखणियो—वि०।

बिभूखियोड़ो, बिभूखियोड़ो, बिभूख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिभूखीजणो, बिभूखीजबो कर्म, भाव वा०।

बिभूखणो बिभूखबो—रू० भे०।

बिभूखा—स. स्त्री [स विभूषा] १ शोभा, सुन्दरता।

२ शोभित होने वाली स्त्री, सुन्दरी।

रू. भे. बिभूसा, बिभूखा।

बिभूखित—वि. [स विभूषित] (स्त्री. विभूखिता) १ अलंकृत, सुशोभित।

२ सजाया हुआ, सुसज्जित।

३ कान्ति युत, आभा युत।

उ०—महाराज श्रीकल्याणमल जी जन्म महोच्छब मांगळीक वधावणा कराया। महाराजकुमार श्री दलपतिजी दिन-दिन स्वेत पक्ष चन्द्रमा री ज्यूं परिवर्धवत होता पूर्णिमा रे चन्द्रमा री परि-सकळ कळा भरित बिभूखित गात्र नीपना छै। —द. वि.

रू. भे.—बिभूखित।

बिभूखियोड़ो—भू. का. कृ.—१ अलंकृत हुवा हुआ २ अलंकृत किया हुआ, शोभित किया हुआ।

(स्त्री. बिभूखियोड़ी)

बिभेद—स पु [सं.] १ विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला तत्व, अन्तर, फर्क।

२ अनेक भेद-प्रभेद।

३ अंश, खण्ड, विभाग।

४ काटने की क्रिया, छेदने या तोड़ने की क्रिया।

बिभेदक—वि. [स] १ खण्डन, छेदन या भेदन करने वाला।

२ अन्तर, फर्क, विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला।

बिभेदण—स. पु. [स विभेदन] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने की क्रिया।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने की क्रिया।

३ अंश, खण्ड या विभाग करने की क्रिया।

४ काटने छेदने या तोड़ने की क्रिया।

वि (स्त्री. बिभेदणी, बिभेदिणी) १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने वाला।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने वाला।

३ खण्डन या विभाजन करने वाला।

४ काटने वाला, छेदने वाला, तोड़ने वाला।

रू. भे. -बिभेदण, बिभेदन।

बिभेदणो, बिभेदबो—क्रि. स. [स. विभेदनम्] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करना।

२ अनेक भेद-प्रभेद करना।

३ खण्डन या विभाजन करना।

४ काटना, छेदना, तोड़ना।

५ घुमाना, घमाना।

६ ईर्ष्या उत्पन्न करना।

बिभेदणहार, हारो (हारी), बिभेदणियो—वि०।

बिभेदिओड़ो, बिभेदियोड़ो, बिभेद्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिभेदीजणो, बिभेदीजबो कर्म वा०।

बिभेदियोड़ो—भू. का. कृ.—१ अन्तर फर्क या विभिन्नता प्रकट किया हुआ। १ अनेक भेद-प्रभेद किया हुआ। ३ खण्डन या विभाजन किया हुआ। ४ काटा हुआ, छेदा हुआ, तोड़ा हुआ। ५ घुमाया हुआ घमाया हुआ। ६ ईर्ष्या उत्पन्न किया हुआ।

(स्त्री बिभेदियोड़ी)

बिभेदी देखो 'बिभेदक'।

बिभोग—स. पु.—१ राज्य कर।

२ जागीरदारों द्वारा कर स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अंश, हिस्सा, हासिल।

३ प्रेमपूर्ण आमोदप्रमोद, विलास।

उ०—राति दिवस रंगे रमैं, नवरस भोग बिभोग। सारीखी जोड़ी मिळी देव तणै संजोग। —ढो. मा.

रू. भे.—बीभोग।

अल्पा.—बिभोगौ।

बिभोगौ—देखो 'बिभोग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—देलवाड़ौ बिभोगौ लेतौ सु नहीं लें, दांण लेतौ सु लेसी।

—नैणसी

बिमोर–वि [सं] १ आनन्द मग्न, लीन।

२ मदमस्त, मत्त।

३ विकल, विह्वल, व्याकुल।

बिभोवस, बिभोवसु—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

बिभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—१ जर जवहर घर जोरवां, लूंटांणी सम लाज। मेछां ग्रीमडियौ बिभौ, मुण चडियो महाराज। —रा. रू.

उ०—२ हिंदुवें छात लायौ हियें, वडौ जतन पायौ विभें। नवकोट सोच मिटियौ नरा, इसो भात मिळता 'अभैं'। —रा. रू.

३ परसी कमधा मधुपुरी, जंमण किया मिनांन। वूठा भड़ मडें बिभें करें उमडें दांन। —रा. रू.

उ०—४ दसरत्थ बिभें इम नजर दीध, कांमना पुत्र घरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अमाप, आविया ब्रहम सिव विसन आप। —सू. प्र

उ०—५ बिभचार मांय पायौ बिभौ, जाता जुगां न जावसी। नित स्वाद लियौ पर नार में, याद घणा दिन आवसी। —ऊ. का.

उ०—६ दीजें जोड किसौ न्रप दौलत, राज बिभौ अवरेख। सात सुखा भुगतें दिन साजा, वासव हूंत विसेख। —र. रू.

उ०—७ इद्र प्रभत इंद्रह बिभौ, इंद्र छभा अनेनाण। इद्र समोवड रट्ठवड, हिंदूवें सुरताण। —गु. रू ब.

उ०—८ हीर चीर हेम तार घडी मैं विराण होसी, लाखां द्रव्य बिभौ सबै हाथी घोडा लाठ। गांम धाम झूठा जाणे धर्षे झूठा लागा नग, गार रा मिरग रैं पड़ी वायरा री गाठ।—ओपो आढो

बिभ्रंस–सं. पु [सं. विभ्रंश] १ अवनति, पतन।

२ बिनाश, विध्वस।

३ हानि, नुकसान।

४ ऊंचा कगार।

५ पहाड़ के शिखर पर का चोरस मैदान।

बिभ्रंसण–स. पु. [सं. विभ्रंशन्] १ विनाश करने की क्रिया, विध्वंस करने की क्रिया।

२ हानि करने की क्रिया, नुकसान करने की क्रिया।

३ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया।

बिभ्रंसणौ, बिभ्रंसबौ–क्रि. स. [सं. विभ्रश] १ विनाश करना, विध्वंस करना।

२ हानि करना, नुकसान करना।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

४ संहार करना, मारना।

बिभ्रंसणहार, हारौ (हारी), बिभ्रंसणियौ—वि०।

बिभ्रंसिओड़ौ, बिभ्रंसियोड़ौ, बिभ्रंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिभ्रंसीजणौ, बिभ्रंसीजबौ—कर्म वा०।

बिभ्रंसियोड़ौ–भू. का. कृ—१ विनाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. २ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ संहार किया हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री. बिभ्रंसियोड़ी)

बिभ्रम–सं. पु [सं. विभ्रमः] १ घूमने की क्रिया, भ्रमण, चक्कर।

२ भूल, गलती।

३ उतावलापन, उद्विग्नता।

४ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—१ उमा कह्यौ इम ईस नें, उपज्यौ बिभ्रम एह। किंकरि ऊपर मह्र कर, संकर! मेट संदेह। —र. रू.

उ०—२ भूपति हसें देखि सिघभेसा, अमि करि वाग कीध आदेसां। हसतौ न्रप देखें सिध हसियो, बिभ्रम ताम न्रपति उर वसियौ।

—सू. प्र.

उ०—३ करि सनान धम करें, धरें अमध्यान स्यामधम। काया जोग अनेक, भोग माया तजि बिभ्रम। —सू. प्र.

५ वह क्रिया जिसमें काम वासना उत्पेरित हो, प्रीतिद्योतक हाव-भाव।

६ आश्चर्ययुक्त, चकित।

उ०—१ गज कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतंग महल अटाळा। सपंख धाम धाम, बिसकमा बिभ्रम भवेत। —गु. रू. ब.

उ०—२ बिभ्रम बिमोह चित्त, मपन तुरग ताणिय संविता। वासर विसाळ नहिय, चक-वाणी मगळ भवण। —गु. रू. बं

७ संयोग शृंगार के प्रसंग में स्त्रियों का एक हाव-भाव जिसमें वह कभी क्रोध, कभी हर्ष प्रकट करती है और उत्सुकतावश उलटे-पुलटे वस्त्राभूषण पहन लेती है (साहित्य)

उ०—चित्रसालि चउमास रहै लहै गुरु आदेसा, कोमि कामिनी नृत्य करइ सुर सुंदरी जेसा। हाव भाव बिभ्रम करइ कुं भयै निठुर निटोल, पूरव प्रेम संभाल प्रियु न मान हमारो बोल कै।

—स. कु.

रू. भे.—विभ्रम्म।

बिभ्रमणो, बिभ्रमबो–क्रि. अ. [सं. विभ्रमण] १ घूमना, चक्कर लगाना।

२ चितातुर होना, चिंतित होना।

उ०—भूपति प्रायौ पुर बिभ्रमियं, मारगबिचै मिळै सिरण समियै आसीवाद करै हम असलै, राजा किण कारण भ्रम रवलै।

—सू. प्र.

३ भूल या गलती में आना।

४ भ्रमित होना, शकायुक्त होना।

५ आश्चर्ययुक्त होना, चकित होना।

६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित होना।

७ उतावला या उद्विग्न होना।

क्रि. स.—८ भ्रमित करना, शंकित करना।

९ आश्चर्यान्वित करना, चकित करना।

१० चितातुर करना, चिंतित करना।

११ गल्ती करना, भूल करना।

बिभ्रमणहार, हारौ (हारी), बिभ्रमणियौ—वि०।

बिभ्रमिप्रोड़ो, बिभ्रमियोड़ो, बिभ्रम्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिभ्रमीजणो, बिभ्रमीजबो—कर्म, भाव वा०।

बिभ्रम्मणो, बिभ्रम्मबो - रू. भे.।

बिभ्रमा–स. स्त्री.—१ आभा, कान्ति, शोभा, सुन्दरता। (अ. मा., ना.-मा., ह. ना. मा.)

२ बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

बिभ्रमियोड़ो–भू. का. कृ.—१ घूमा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. २ चितातुर हुवा हुआ, चिंतित हुवा हुआ. ३ भूल या गल्ती में आया हुआ. ४ भ्रमित हुवा हुआ, शंकायुक्त हुवा हुआ. ५ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ, चकित हुवा हुआ. ६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित हुवा हुआ. ७ उतावला या उद्विग्न हुवा हुआ ८ भ्रमित किया हुआ, शंकित किया हुआ. ९ आश्चर्यान्वित किया हुआ, चकित किया हुआ. १० कामवासना की ओर उत्प्रेरित किया हुआ. ११ चितातुर किया हुआ, चिंतित किया हुआ. १२ गल्ती किया हुआ, भूल किया हुआ।

(स्त्री. बिभ्रमियोड़ी)

बिभ्रम्म—देखो 'विभ्रम' (रू. भे.)

उ०—गड़ै पुर जोह महा जुड़ मोह। बोरं बार नभ्भ, सबित्ता बिभ्रम्म।

—ग रू. ब.

बिभ्रम्मणो, बिभ्रम्मबो—देखो 'बिभ्रमणो, बिभ्रमबो' (रू. भे.)

बिभ्रम्मणहार हारौ (हारी), बिभ्रम्मणियौ—वि०।

बिभ्रम्मिप्रोड़ो, बिभ्रम्मियोड़ो, बिभ्रम्म्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिभ्रम्मीजणो, बिभ्रम्मीजबो—कर्म, भाव वा०।

बिभ्रम्मियोड़ो—देखो 'बिभ्रमियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिभ्रम्मियोड़ी)

बिभ्रस्ट–वि. [सं. विभ्रष्ट] १ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, पतित।

२ नष्ट किया हुआ, ध्वस्त।

बिभ्रांत–वि. [सं.] १ घूमा हुआ, चक्कर खाया हुआ।

२ भ्रमित हुवा हुआ, शंकित।

३ चितातुर, चिंतित।

४ आश्चर्यान्वित, चकित।

५ उद्विग्न।

बिभ्रांतसील–वि. [सं. विभ्रान्त+शील] १ चितातुर, खिन्नचित्त व्याकुल।

२ नशे में चूर।

सं. पु. [सं. विभ्रान्त+शीलः] १ बन्दर, वानर।

२ सूर्य मण्डल।

३ चन्द्रमण्डल।

बिभ्रांति–सं स्त्री. [सं. विभ्रान्ति] १ भ्रमण, चक्कर।

२ भूल, गलती।

३ सौन्दर्य, शोभा।

४ शंका, शक, सन्देह।

५ भ्रान्ति, धोखा।

६ घबराहट, उद्विग्नता।

बिभ्राज–सं. पु. [सं.] १ ययाति वंशज एक राजा।

२ सुकृत या सुकृति राजा का पुत्र एक राजा।

३ अनघ नामक पांचाल देश का राजा, जो ब्रह्मदत्त राजा का पिता था।

बिभ्राजसोरय–सं. पु. [सं. विभ्राजसौर्य] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नामान्तर।

बिमत्री–सं. पु.—आर्या गीति या खधांण (स्कंधक) का एक भेद विशेष।

उ०—नद भइ भगि नाम मेघ मारग सिव बंभह, वारण वरण बखाणै नील मंदनह ताटकह। सेखर सरपिणि सोइ गगन गिरिण सरभ बिमंत्री, खोर नयर नर निधि भाखि निहल हण भती।

—पिं. प्र.

बिमणो–वि.—१ अद्भुत, अनोखा।

२ बिना माना हुआ।

उ०—सुणा नाम नर देव सकोई, बिमणी दांन अपूनी बात। कोसी किणी न कोई करसी, 'पदम' जिसी लैणायत पात।

—पदमसिंघजी रो गीत

बिमची–स. स्त्री.—एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष।

रू. भे.—विचची।

बिमणउ, बिमणो–स. पु.—१ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष विशेष।

२ देखो 'दूं णो' (रू. भे.)

३ देखो 'विमन' (रू भे.)

उ०—पहिली होय दयांमणउ, रवि आथमणउ जाइ। रवि ऊगइ विहृगइ कमळ, खिण इक बिमणउ थाइ। — ढो. मा.

बिमता–सं स्त्री.—१ आपत्ति, विपत्ति।

२ नम्रता, धैर्य।

[स. वि=रहित+रा. मता=धन, दौलत] ३ कगाली, गरीबी, निर्धनता।

उ०—**विमता** का वाग, भूतू का भडार, सिकोतरियु का महायक, डाकणिया का दार। रोग का रजवाडा, भोग की सिरकार, कायरा की कुटी, चोरू का आधार। —दुरगादत्त बारहठ

बिमति–वि. [सं.] बुद्धीरहित, मूर्ख।

बिमद–वि. [स] जो मनवाला न हो, मद-रहित।

स पु —मत्यसन्ध राजा।

बिमधु–स. पु. [स. वि=विशेष + मधु=मीठा] अमृत पियूष।

उ०—लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानंतर। वेद चंद्र मिण क्रिया, भूम रभा बळ कुंजर। धेन पूज सुरधेन, **बिमधु** चरणांम्रत वदा। धनुख मांण न्रप कळप, सख जस मद्द विरद्दा। —रा. रू

वि.—१ विशेष मीठा।

[स वि रहित+मधु=मीठा] २ कडवा।

[स. विमुग्ध] ३ अज्ञानी, मूर्ख।

४ विशेष मोहित, उन्मत्त।

५ विकल, व्याकुल।

[सं विमुद] ६ उदासीन, खिन्न।

बिमन–वि.—१ उदासीन, खिन्नचित।

२ व्याकुल, उद्विग्न।

३ चिंतित, दुखी।

४ क्रूर क्रुद्ध, निर्दयी।

रू. भे —विमन, बिमनो, बिमन्न, विमन्नो, विमणउ, विमणो, विमनो, विमन्न, विमन्नो।

बिमनुस्या–सं स्त्री. [स. विमनुष्या] कश्यप एवं दनु की कन्याओं में से एक कन्या, अप्सरा।

बिमनो, बिमन्न, बिमन्नो—देखो 'विमन' (रू. भे.)

बिमर–१ देखो 'बिवर' (रू. भे)

उ०—१ पछै देवी संणी धारणो दिल्ली आई तरै मालदे ही देवो साथै दिल्ली आयो, पछै देवी संणी **बिमर** मांहि पैठी तठै मालदे ही बिमर मांहे साथै पैठो। —नैणसी

उ०—२ पवखं गोरखनाथ, कमण जाइ पैसे **बिमर**। पखं रांम दहकंध, कमण वेधै एकै सर। —गु. रू. बं.

उ०—३ उतराधो वाउ वाजियो। हेमत रा बरफ ऊपडिया टाढो टमकियो, पाळो पडण लागो। जिकै धरती रा धणी पताळ वासी भुयंग नै धण रा धणी दोलतवत औ विन्है एकै वग हूंता सु धरती रो पुड भेद ने **बिमरै** पैठा। उठै रहण लागा। —रा. सा. स.

उ०—४ तै 'भाण' तणो अवसाण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण **बिमर**। जोधार पखर लक्ख जिसो, निरो एक पक्खर निडर।

—गु. रू. बं.

उ०—५ 'अमरसी' **बिमर** पैठो अरांण, 'रामाउत' साधक रूप पाण। साहिब्ब-खान 'नाहर' सुजाव, घण भूंभो वाहै सत्रां घाव। —गु. रू. बं.

उ०—६ बैरी हुओ **बिमर** में बैठो, पल लागी सूतो सुख पोढ। थाको गुरड डाकरो थू थयो, ऊपर लीवी रजाई ओढ।

—टीकमदास

२ देखो 'विमळ' (रू. भे.)

उ० --रुघवसी राठौड हर, तेरह माख कमध। **बिमर** सकत्तो बरगाश्रा, बधै रूपक बध। -- गु. रू. बं.

बिमरद–स. पु [सं. विमर्दः] १ अच्छी तरह मलने, ममलने की क्रिया, उबटन करने की क्रिया।

२ छूने की क्रिया, स्पर्श।

३ रगडने या रौंदने की क्रिया।

४ युद्ध, सग्राम।

५ नाश या बरबादी।

६ मारने, सहार करने की क्रिया।

७ कष्ट देने की क्रिया, दुःख देने की क्रिया।

८ खग्रास नामक ग्रहण का नामान्तर।

९ वह व्यक्ति जिसकी मूत्रेन्द्रिय बेकार हो या नहीं भी हो, नपुसक हिजड़ा।

१० सामर्थ्यहीन व्यक्ति।

११ किरात राजा।

१२ सूर्य-चन्द्र समागम।

रू. भे —विमरद्द।

बिमरदक–वि. [सं. विमर्दकः] १ मर्दन करने वाला, ममलने वाला, उबटन करने वाला।

२ रगड़ने या रौंदने वाला, कुचलने वाला।

३ नाश या बरबाद करने वाला।

४ मारने वाला, संहार करने वाला ।

५ युद्ध करने वाला, संग्राम करने वाला ।

सं. पु —चन्द्र-सूर्य ग्रहण या समागम ।

विमरदण—सं. पु. [सं विमर्दनः] १ मसने, मसलने या उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने या स्पर्श करने की क्रिया ।

३ रगड़ने, रौंदने या कुचलने की क्रिया ।

४ युद्ध, संग्राम ।

५ नाश, बरबादी ।

६ मारने या संहारने की क्रिया ।

७ दुःख या कष्ट देने की क्रिया ।

विमरदित—वि. [सं विमर्दित] १ मसा हुआ, उबटन किया हुआ ।

२ छूआ हुआ, स्पर्श किया हुआ ।

३ कुचला या रौंदा हुआ ।

४ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया ।

५ नाश किया हुआ, बरबाद किया हुआ ।

६ मारा हुआ, संहार किया हुआ, मृत ।

७ पीड़ित, दुःखी ।

देखो 'विमरद' (रू. भे.)

विमरस—सं पु. [सं. विमर्श] नाटक की पांच संधियों में से एक संधि विशेष, मुख्यफल का उपाय गर्भसंधि की अपेक्षा अधिक उद्भिन्न होता है किन्तु शापादि के कारण अन्तराय युक्त होती है ।

वि. वि. —इस संधि के तेरह अंग अर्थात भेद होते हैं जो निम्न-लिखित हैं अपवाद, संफेट, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान, और छादन ।

विमरोर—वि. —जबरदस्त, महान्, शक्तिशाली ।

उ०—१ गाजै घरा वाजै त्रंबाळ, दुगम रूप विमरोर सर्फ दळ । हुरख सनेह करै भ्रम हित नू, पदम राज दोष प्राहित नू —सू. प्र

उ०—२ प्रति भूळ गहमह ग्रावळा, विमरोर भड रिण ग्रावळा । लग धार ग्राखट है खुरा, घर भागवता धुरधरा । —सू. प्र

उ०—३ इम कहै पौरस ऊफणै, विमरोर भळहल दळ बणै । चढि तुरंग थाट चलाविया, इम वही सह पुर ग्राविया । —सू. प्र.

उ०—४ वह मई राजा मेघाडंबर, कठठै ग्रारावा सकळ । तन मसत्र कसै चढिया तुरां, दुगम सूर विमरोर दळ । —सू. प्र.

विमळ, विमल—वि. [सं विमल] १ मल रहित, निर्मल ।

२ सफेद, साफ, स्वच्छ, चमकीला, उज्जवल ।

उ०—जिण दिन वार तेजमणि जादव, वर बुगलाण पुरी नव साधव । इम लिखि सुकळ वाग न्रप पाए, विमळ छत्रका साज बणाए । —सू. प्र.

३ जिसमें ग्रार-पार देखा जा सकता हो, पारदर्शक ।

४ जिसमें कोई दोष न हो, दोष रहित, निर्दोष ।

५ सुन्दर, मनोहर, शोभायुक्त ।

उ० १ ग्रधरा हसणां मुं उदै, विमळ हास दतिवंत । जो संध्या मु चंद्रिका, फैली जाण फवंत । —बां. दा.

उ०—२ मूंछां वाय फुरुकियां, रमण भरूकै दंत । सूनी सैलां घोकै हूं बलिहारी कंत । कंत बाळहारी लै मनाविय कांमणी । घरै मन धू-धड साथि सकळा घणी । पाड़ि मत्र लोहड़ा चौकरै पोढियो, विमळ मुछा मिळै फरूकै बाधियो । —हा झा.

६ पावन, पवित्र ।

उ० १ ग्रांकामंडळ विमळ थळ, जळ ग्राग्रत जगवंद । धुज उज्जळ देवळ ग्रमळ, निरख नमैं नरयंद । —रा रू.

उ० —२ परै कोट कहति एक एक प्रति, विमळ मंगळ ग्रह एक वगि । पूणि तवण सुभ क्रम ग्राचरता, जागियै वेलि जपति जगि —वेलि

उ० ३ नाथ ग्रनाथ निराळ तू नारीयण सदा सिवि तू होज तू भगत कीधो सघण । चराचर निमो चत्रभुज तूं हीज, चिदांनंद, विमळ ब्रह्मग्यान ग्रथ ग्यान तूं गोपि ब्रिदि । —पी. ग्र.

उ०—४ छकन्ति प्रेम भाव सत्त छाजै, विमळ इसा मुनि तठै विराजै । थिर करि पाट विसट जळ थाटै चंदणादि लै पर बह चाटै । —सू. प्र.

उ०—५ लोहित चंदण देव वलभा धरकाळे य कहै कवि धीर । केसर तणो तिलक नित कीजै, विमळ भजन कीजै बळिवीर ।

—ह नां. मा.

७ स्वच्छ, साफ ।

उ० १ ग्रानि होट मुख विमळ करै तदि, जुत मुखवास ग्रग्र धारै जदि । मिरच सीत एलच भवि पावै, त्रितपति पान कपूर खुवावै —सू. प्र.

उ०—२ पावन विमळ सलोप प्रपारा, नौतुनादि दियै तिण वारां । एहिज सदन मिसर हिमवना, प्रामाण पनो पसम प्रनतां ।

—सू. प्र.

८ शुद्ध । (वाणी)

उ०—ऐसी विध पंडतराज चातरध कला प्रवीण त्रिलोकू का प्रबंध अनेक विध विमळ वाणी सैं उच्चरै जिनैं सैं रीझ स्रीमहाराज कनक जग्योपवीन चढाया । — सू. प्र.

सं. पु.—१ चांदी ।

२ सेंधा नमक ।

३ मणिवर एवं पुण्यजनी के पुत्रों में से एक यक्ष ।

४ जीमूत राजा का पुत्र एव भीमरथ राजा का पिता, एक राजा।

५ इल राजा का पुत्र, जो दक्षिणापथ का राजा था।

६ राम के अश्वमेधीय यज्ञ के समय शत्रुघ्न का सहायक रत्नातट नगरी का एक राजा।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें छत्तीस मात्राऐं होती हैं।

उ०—नाइ सातसौ छंनालीस, बदिया रूप बरणवा बीस। मात्रा छत्रीस एह प्रनमान, विमळ छंद सुणिजो गुणवान। —ल. पि.

८ देखो 'विमलनाथ'

उ०—१ विमल जिनेसर सुणि प्रलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनडौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधो रे कमल मधूप।—वि. कु.

उ०—२ केवलग्यानी नइ निरवांणी, सागर महायस विमल वर वांणी। सरवानुभूति स्रीधर दत्त नामी, दामादर स्री सुतेज स्वामी। —स. कु.

उ०—३ रिसहु थप्पिउ जेण सु निरम्मलो, विमल नांमु वहइ गुणि उज्जलो। ठविउ नांम जिणिइ जगवल्लहउ, परमतेजिहि तेजसु तै कहउ। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—विमळ, विमल, विमळा, विमर, विम्मळ, विम्मल।

विमलक—सं. पु. एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, नग।

विमलकथ—वि.—सुयशधारी, कीर्त्तिवान।

विमलगिरिंद, विमलगिरि—शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम।

उ०—१ तासु दुरगति न व्है नरक त्रियंच री, सुगति सुर नर लहै सुगति सारी। विमल आतम तिकौ विमलगिरि निरखसी, घनौ धन सीधरमसील धारी। —ध. व. ग्र

उ०—२ संघ अनेक दिहा आविया, भेटण विमलगिरिंद। लोकतणी सख्या नही, साथि गुरु जिणचंद। —ऐ. जै. का. सं.

विमलजिन—देखो 'विमलनाथ'।

उ०—दिव्य नाद सुर दुंदुभि बाजइ, पुष्प वृष्टि सुर विरचीजइ री। समयसुंदर कहइ तेरै विमलजिन, प्रातीहारज पेखीजइ री। —स. कु.

विमळता, विमलता—सं स्त्री. [सं. विमल+रा प्र. ता.] १ निर्मलता स्वच्छता, उज्ज्वलता।

२ पावनता, पवित्रता।

३ सुन्दरता, मनोहरता।

४ मधुरता, मीठापन।

विमलतीरथ—स. पु. [सं. विमलतीर्थ] एक पवित्र तीर्थ स्थान, जहां तालाबों में स्वर्ण एव रजत वर्ण की मछलियां पाई जाती हैं। उक्त तालाबों मे स्नान आदि करने से इन्द्रलोक की प्राप्ति होती है।

विमळदान—सं. पु. [विमल+दान] १ देवताओं का चढ़ावा, प्रसाद।

२ नित्य नैमित्तिक के अतिरिक्त केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाने वाला दान। (पुराण)

विमळध्वनि—स. पु. [स] १ सिंहावलोकित रीति से रखे हुए दोहे और समान सवैये मे मिलकर बनने वाला एक छन्द, जिसमें छः चरण होते हैं।

सं. स्त्री.—२ मधुर आवाज, सुरीली आवाज।

विमलनाथ—स पु.—एक तीर्थंकर, जो उत्सर्पिणी के पांचवे व अवसर्पिणी के तेहरवें अर्हन् माने जाते हैं।

वि. वि.—इनका जन्म कम्पिलपुर नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम कृतवर्य राजा था तथा माता का नाम श्यामा देवी रानी था।

विमलपिंड, विमलपिंडक—सं. पु [सं] कश्यप एव कद्रू के नाग पुत्रो मे से एक नाग पुत्र।

विमळरूप—स. पु.—हंस। (नां. मा.)

विमळा, विमला—स. स्त्री [स विमला] १ वासुदेव की नायिका एक देवी।

२ सुरभि की पुत्री रोहिणी की दो कन्याओं मे से एक कन्या, गाय।

वि वि —दूसरी कन्या का नाम अनला था जिससे पिण्डाकार फल देने वाले सात वृक्ष हुए।

३ देवी का एक विशेषण।

उ०—धवा धवळागर धव गू धवळा, क्रसना कुबजा कचत्री कमळा चळाचळा चामुंडा चपळा, विकट विकट भू बाळा विमळा। —देवि.

४ पुरोत्तम नामक तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी।

५ सरस्वती देवी का नामान्तर।

६ एक ग्रह का नाम।

वि. स्त्री.—निर्मल, साफ, स्वच्छ।

विमळाचळ, विमलाचळ, विमलाचल—स. पु. [स. विमलाचल] शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम। (डिं. को.)

उ०—हां रे मोरा लाल गिरि तन सेत्रुंजी नदी, जोवौ आणि विवेक। इणि परि विमलाचल तणी, तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल। —वि. कु.

विमलात्मा—वि. [स. विमल+आत्मा] जिसकी शुद्ध आत्मा हो।

स. पु.—चन्द्रमा, चांद।

विमलावरी, विमलाद्रि, विमलाद्री—देखो 'विमळाचळ'।

बिमळापत, बिमळापति, बिमळापती ब्रिमलापत, बिमलापति,-
बिमलापती—स. पु. [सं. विमलापति] १ ब्रह्मा।

२ स्वायंभूव मनु।

३ दधीचि ऋषि।

४ आदित्य।

५ रन्ति राजा।

बिमली—सं. स्त्री. कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

बिमलेसर, बिमलेसुर, बिमलेस्वर—स. पु. [सं. विमलेश्वर] एक पवित्र तीर्थ का नाम विशेष।

उ०—पुस्कर पांच प्रभास पण, कालिंजर कास्मीर। **बिमलेस्वर** बरजा वली, गंगा-सागरतीर। —मा. का. प्र.

बिमांण—स. पु. [सं. विमान] १ देवताओं अप्सराओं आदि का वह यान, रथ या उड़नखटोला जो आकाशमार्ग से चलता है।

उ०—१ चामरा ढुळता चोजां अमरां **बिमांणां** चढ़े, बढ़ै कौन अथी सारी करता बाखांण। इंद्र रा आवास मुरा लोक में आगद आयो, पायो देव अंसी मारा वेवा में प्रमांण। —बादरदान दधवाड़ियो

उ०—२ ज्यार गही वाजी मुजड, भड मत्तो मर बाग। चढ़िया हिंदू पार मह, वरिया अछर **बिमांण**। —रा. रू.

उ० ३ देवा रथ्य रेवत मारंग राजे, देवी **बिमांण** पालखी पीठ ग्राजे। देवी प्रेत आरूढ आरूढ पंथ, देवी सागर भूमेस गूढ गंथ। —देवि

उ०—४ सेंदाला मयर सा सजिया अमर **बिमांण** सी प्रबारी रे। चवळ हय चित चाल भुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे। —गी. रा.

उ०—५ गुमरां चवळ अप्रमाण जव, को **बिमांण** पनमाण कथ। गुनतांण गुमल मार्थ मज्या, राजमान वीकाण रथ। —मे. म.

२ आधुनिक वायुयान जो आकाश में उड़ते है और पेट्रोल से चलते है।

३ मृत व्यक्ति के शव की वह अरथी जो फूलमाला आदि से सुसज्जित होती है।

४ सोने, चांदी या झोल की लकड़ी से बना हुआ पालकीनुमा वाहन जिसमें प्राय: भगवान् की सवारी निकाली जाती है।

५ ऐसा मकान जिसमें सात खण्ड हो।

६ वह देव मंदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊंचा व लम्बोतरा हो।

७ वाहन और सवारी।

उ०—अऊत रो धन लेवा री आखड़ी खटवत रो मान लेवा री आखड़ी। गाव फिलसो देवा री आखड़ी। सोत माहू सूं बळद गाव में लावा री आखड़ी। विखै **बिमांण** गांव छांडवा री आखड़ी। —रा. सा. स.

रू. भे.—बमाण, विवाण, विमांण, बिमांणण, बिमाणणी, बिमांणाण, बिमान, बिवाण, बीमाण, वेवाण, ववांण, बिमांणण, बिमांणी, बिमान विवाण, विवाणि, बिवांणी, विव्वाण, विव्वाणी।

बिमांणण—देखो 'बिमाण' (रू. भे.)

उ०—वारणा उमणां रंगा **बिमांणणां** सोक बाज, रारणां अभंगां भड़ां दमणां रो मार। पनणा विहंगां ढंगां नारंगां अभीच पड़ा, मारणा खनणां अंगा मानणा दू मार। —बद्रीदास खिड़ियो

बिमाणणी—स. स्त्री.—एक लोक देवी जिसके प्रकोप से वातरोग होना माना जाता है। (अमरत)

बिमाणिक—देखो 'वैमानिक' (रू. भे.)

उ० 'भवनपति' 'व्यंतर' नैं जोतिसी 'भेद' **बिमांणिक** पावै। सुर नर तें मिलतै सगला, नाम 'निनाणु' ग्रावै। —जयवांणी

बिमांणी, बिमांणीक बिमांणीय देखो 'वैमानिक' (रू. भे.)

उ० -१ भवनपती इंद्र वीसै भिल्या जी, मोल दू वितर मार। जाइम दू दम **बिमांणी** जुड्या जी, चउसट्ठि इंद्र सुविचार। —ध. व. ग्र.

उ० २ त्रिह तणा पति वायु कुमार जाण ए, सुर **बिमांणीय** नर नारि ईसाण ए। वार परिखद मद मच्छर छोड ए, भूल त्रिव वीसरे सुणो कर जोड ए। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ प्रदक्षणा रूप थी प्रगति कूणे करी, गणधर साधवी तिम **बिमांणी** सुरी। ज्योति तो लुवनिनी विंतरी पी पणी, नैरित कूण जिण वाणि ऊभी सुणी। —ध. व. ग्र.

बिमांणी देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०—१ सुर भाणी सुरलोक भ्य, ऊतरे अमर **बिमांणो** रे। अपछर आरतीगा करह, कामणि कचन वांनो रे। —प. च. चौ.

उ०—२ जामो सवारथ सिद्ध **बिमांणो**, चवि महाविदेह वखांणो जी। मनुग हूसी बहु चतुर सुजाणी, दढपइण्णा नो परिमाणो जी। —जयवाणी

बिमांन—देखो 'बिमाण' (रू. भे.)

उ०—१ निजर परख्खै राठवड, अकबर तेज दिराद। जाणै व्योम **बिमांन** सम, भोम प्रगट्यो इद। —रा. रू.

उ०—२ साभलउ सोधरमेंद्र तणी स्थिति, सोधरमी रत्नमय भूमि सिक सिंहासन सूरय जम झलकतउ तिहां बसइ सक इमि नामिद्द सोधरमेंद्र दक्षिण लोकारद्धस्वांमी, एरावणवाहन, बत्रीस लाख **निमांनराउ** आधिपत्य पालइ लीला लगइ''''''। —व. स.

उ०—३ ······दिसदिसइ वहकइ कस्तूर, हसिउ **विमांन**, माहि सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि रत्नमय पूतलीना सरभ, असंख्य गवाक्ष मत्तवारण मगरमुहां······, । —व. स.

विमांनिकदेव—देखो 'वैमांनिकदेव' (रू. भे.)

विमांस—स. पु. [सं.] वह मांस जो खाने योग्य न हो, अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित मांस ।

विमांह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति रितिराज वसंत वैसाख मास रा मगळाचार **विमांह** रा सुख विलास करतां सरद रित आई छै । आसोज मास माह सप्रापति हूआे छै । —रा. सा. स

विमात, विमाता, विमात्र, विमात्री—स. स्त्री. [सं. विमातृ] जन्म देने वाली माता के जीवित अवस्था में या मृत्युपरान्त अपने पिता द्वारा परणीता दूसरी नारी, सौतेली मां ।

विमारग—स. पु. [स. विमार्ग] १ बुरा रास्ता, कुमार्ग ।

२ बुरे आचरण, कुआचरण ।

विमाळ, विमाल—सं. स्त्री.—देरी, विलम्ब ।

उ०—चढिया कटक्क त्रांबक्क चाळ, वेढिसी 'जइत' न करइ **विमाळ** । असराळां ताजी ऊमगेहि, पन्नगां नेस धूजइ पगेहि ।

—रा. ज. सी.

सं. पु.—विचार ।

वि.—चुप, शान्त ।

उ०—मिरजे खबर निबाब नूं पहुंचाई ततकाळ । आयो फिर महमदअली, सुण नह रह्यो **विमाळ** । —रा. रू.

रू. भे.—विमाळो ।

विमाळणो, विमाळबो—क्रि. स.—विचार करना ।

उ०—उण वात **विमाळे** अखियां, चाळे कज हल चल्लिया । भूपाळ भनें मोटां भुजां, नवकोटै छळ भल्लिया । —रा. रू.

विमाळणहार, हारो (हारी), विमाळणियो—वि० ।

विमाळिओड़ो, विमाळियोड़ो, विमाळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

विमाळीजणो, वीमाळीजबो—कर्म वा० ।

विमाळियोड़ो—भू. का. कृ.—विचार किया हुआ ।

(स्त्री. विमाळियोड़ी)

विमाळो—देखो 'विमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दुम्मह भांण भला जूथ देखै, पाली गो बांणी गिर पेखै । विढवा नह को ताळ **विमाळे**, चाळो जग मातो गुणचाळे । —रा. रू.

उ०—२ माहव मांन तणो पट मोटै, कियो सवाय 'अमै' नवकोटै । भगवत 'मुहकम' तणो भुजाळो, विढता न धरै ताळ **विमाळो** ।

—रा. रू.

विमास, विमासण—सं. पु.—विचार ।

उ० —१ जोरइ पिण हिव ताहरइं सखी, गलि माहि घालिस बाह । जे मिलवा नें उलहसे सखो, किसो विमासण ताहिरै ।

—वि. कु.

उ०—२ कहतां वे हाथे करि नांखियो रे, वांनर ऊडि गयो आकास रे । सोह सरूपी लागो मारवा रे, रहीयो मन मां **विमास** रे ।

—वि. कु.

उ०—३ भारत खेतर में सांमठा, किण मां बेटा जाया रे । तीन सघाडे आविया, मैं हाथा सूं बेहराया रे । करै **विमासण** देवकी ।

—जयवाणी

उ०—४ कुण कहिस्यै मुज मायड़ी जी, घड़ी घड़ी नैं छेह । कहसू केहनैं नानडोजी, सबल **विमासण** एह-रे आया । —जयवाणी

उ०—५ विरत्तो वेग न काइ विमास, विढेवा राउ खड़े वरहास खुरा रवि फीण उमट्ट्यो खांणि, लगोडै लागै लाल लगांण ।

—राव जैतसी रो रासो

विमासणो, विमासबो—क्रि. स.—१ विचार करना ।

उ०—१ तं ऊपरि ए पदमणी, आई आपां पासि । स्युं करिवो सूधो मतो, वेगो कहो **विमासि** । —प. च. चौ.

उ०—२ सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार । रांणी राय **विमासियउ**, तेडइ साल्हकुमार । —ढो. मा

उ०—३ ढोलइ मनह **विमासियउ**, एक करीजइ एम । करहउ चढि आपां खड़ां, नरवर पहुंचां जेम । —ढो. मा.

उ०—४ विद्या हीणा विप्र, तूं हीइ **विमासी जोइ** । तुरकां-केरइ बोलडै, चिण न ढूंटइ कोइ । —मा. कां. प्र.

उ०—५ पानाळ जानो गम राग्वी, मनि **विमास्यूं** आहि । देवतां नी दया आणी, मूकी ई माहि माहि । —रूकमणी मंगळ

२ समझाना ।

उ०—ढोलइ करह **विमासियउ**, देग्वै वीस वसाळ । ऊंचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ । —ढो. मा.

विमासणहार, हारो (हारी), विमासणियो—वि० ।

विमासिओड़ो, विमासियोड़ो, विमास्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विमासीजणो, विमासीजबो—कर्म वा० ।

विमासियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विचार किया हुआ. २ समझाया हुआ ।

(स्त्री. विमासियोड़ी)

विमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ ईम रम्म अहिपेगा, अरथ आगम डर ठाहै । पांनां वग, मजीठ रंग, उछरग **विमाहै** । —ह. र.

उ०—२ दळ मुकि लखन सीस पहिवाळा, मद कटक त्वहिया कळ वाळा। अगन सत्रविस मिळे जवाबा, मतो बिमाह कि समर मतावा। —सू. प्र.

उ०—३ आइ राजा नैं मुजरौ कीयौ। कहियौ महाराज घरां री खबर आई छै। बेटी रो बिमाह छै। राजा सिरपाव दे बिदा कै उवै चोर कन्है गया कहयौ हैतो बिहयौ। —चौबोली

उ०—४ महाराज बिमाह रै प्रागम मगळ धमळ प्रभाती कीजै। जिण भौ महाभाग्य रो प्रागम। अेक वार मूगं पुर। प्रत्मागमित भित्रिया रा बडा राग माहै बडा दूहा गवाडो। —र वचनिका

बिमाहणौ, बिमाहबौ—देखो 'बिवाहणौ, बिवाहबौ' (रू. भे.)

बिमाहणहार, हारौ (हारी), बिमाहणियौ—वि०।

बिमाहियोड़ौ, बिमाहियोड़ौ, बिमाहयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिमाहीजणौ, बिमाहीजबौ—कर्म वा०।

बिमाहियोड़ौ—देखो 'बिवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिमाहियोड़ी')

बिमाहौ—देखो 'बिवाह' (रू. भे.)

उ०—बसंतपंचमी करो बिमाहौ, गुण निरदोस वेद बिध माहौ। इम ठहराय महल नृप आए, पदमणि नाम महागुण पाए। —सू. प्र.

बिमुंहौ—२ देखो 'बिमुख' (रू. भे.)

बिमुक्त—वि. [सं.] १ छूटा हुआ, मुक्त। २ आजाद, स्वतन्त्र।

३ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ४ फेंका हुआ, छोड़ा हुआ।

५ दायित्व या कार्यभारादि से मुक्त।

रू. भे.—बिमुगत।

बिमुक्ति—सं. स्त्री. [सं.] १ छूटने या मुक्त होने की अवस्था, छुटकारा।

२ आजादी या स्वतन्त्रता।

३ अलगाव, बिछोह।

४ मुक्ति, मोक्ष।

रू. भे.—बिमुगति।

बिमुख—वि. [सं.] १ जो किसी कार्य, विषय या बात आदि पर दत्त-चित्त न हो।

उ०—मैं लख चौरासी धार जौन, का बान का गहत मौन। जनम जनम इन कीन्ह पाप, जब राम नाम तें बिमुख थाप। —अनुभववाणी

२ विलाप प्रतिकूल, विरुद्ध।

उ०—१ हरीया गुर तें बिमुख नर, पारा दरगै नाहि। अैसे भागा सूरवा, दफतर नांहमी नांह। —अनुभववाणी

उ०—२ आप गुरदेव का दरसन राखै नहीं, और कूं ध्यान उपदेस देवै। आप ही पोहर हरिनांव कूं उचरै, साच नहीं जाणि गुर बिमुख सेवै। —अनुभववाणी

उ०—३ रामजी री माळा रै वामदी लगाय धणी सूं छांनै बचायोड़ी गजी हाथ में राखती तो म्हनै अे दिन नी देखणा पड़ता। आज म्हारा बटा ई म्हारा सूं बिमुख व्हैगा। मा रै बिना कोई इण दरद नैं समझ नी सकै। —फुलवाड़ी

उ०—४ जिमा स्वामीजी कहना था जिसाइ निकळिया। पछै सिवरामदासजी मनोकचदजी दोनूं सूलभ परो रहया। उवै दोनूइ बिमुख रहया तो पिण स्वामीजी उणारी गिणत राखी नहीं। —भि द्र.

३ उल्टा, विपरीत।

४ पुनरावर्तन, प्रत्यावर्तन।

५ उलटा, औंधा।

६ रहित, बिना।

७ जिसके मुंह न हो, मुख-रहित।

सं. पु.—दक्षिणी भारत का एक ऋषि। (प्राचीन)

रू. भे.—बमुख, बमुह, बेमुख, बमुख, बमुह, बिमुहौ बिमुह, बिमुह।

अल्पा.—बिमहौ, बिमहौ, बेमुहौ, बमुहौ, बिमुखौ, बिमुहौ, बिमुंहौ, बिमूंहौ।

बिमुखता—सं. स्त्री. [सं.] १ विरोध, प्रतिकूलता।

२ अप्रसन्नता।

३ विरक्ति।

बिमुखौ—देखो 'बिमुख' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—कराणा जग भावै करै, विधि बिमुखां नूं वेद। 'बाका' भोजन नह करै, ज्यारै वण जबर खेद। —बां. दा.

बिमुगत—देखो 'बिमुक्त' (रू. भे.)

बिमुगति—देखो 'बिमुक्ति' (रू. भे.)

बिमुग्ध—वि. [सं.] १ मोहित हुवा हुआ, आसक्त।

२ भ्रम में पड़ा हुआ, भ्रमित, भ्रान्त।

३ उन्मत्त, मत्त, मस्त, मतवाला।

४ घबराया हुआ, विकल, परेशान।

५ पागल हुवा हुआ, बावला।

बिमुग्धकारी—वि. [सं.] १ मोहित करने वाला।

२ पागल बनाने वाला।

३ उन्मत्त या मस्त करने वाला।

४ हैरान करने वाला, परेशान करने वाला।

५ भ्रम में डालने वाला।

बिमुदर, बिमुद्र—वि. [सं. विमुद्र] खिला हुआ, विकसित।

रू. भे.—बिमुद ।

बिमुह—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ बिमुह करण रण साह दळ, 'मुहकम' का 'हरियंद' । सोच निमेड़ण निय दळां, खळां उखेलण कंद । —रा. रू.

उ०—२ मूरां नूर दरस्सिया, तौलै सेल करग्ग । वायर ज्यों लग्गा बिमुह, कायर म्राठूं मग्ग । —रा. रू.

बिमुहाळ–वि —ग्रौंधा, ऊल्टे मुख ।

उ०—बिमुहाळ काघाळ विचाळ विपे, उवचाळ बगाळ सिगाळ ग्रप । घड घाव वडाळ ग्रोलाळ घडै, पड नाळ प्रनाळ चगाळ पडै । —पा. प्र.

बिमुहि—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०— कळि चालि लंकाळ कहै इम 'केहरि', विढिवा कजि ऊछजि केवांण । चलियै दळै बिमुहि क्यू चालूं, चालियो विमुहि नको चहुवाण । —नाहरग्वान चोहान किसनदासोत रो गीत

बिमुहो—देखो 'विमुख' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—१ ऊसर्स ग्राभ लगां ग्रावना, राव तणो रज देख रथ । रैवंत रोक न रहियो रांणो, पुळिया बिमुहा पाटपन । —चांनण खिडियो

उ०—२ सांमो 'जोध' तणं सं जूतं, साम्भी सलह मजतै सग । थय कुंजर बिमुहा कुंभाथळ, कागमुहा दीठा "कुंभेण" । —गेहो खिड़ियो

उ०—३ रहियो पण लावत जेतरती, जुघ धान विमा सत 'पाल' जती । किम जावत 'बूड़ाय' राव कहै, विमुहो रण मारग 'पाल' वहै । —पा. प्र.

उ०—४ ग्रौरंगसाहि पातिसाहि रा तपतेज ग्रपरबळ दईवार ग्रवतार जिण ग्रागै जमरासो विमुहा खड़ै । तिण मू तीन पौहर हाथू कै महाराज जमराज ही लड़ै । —र वचनिका

उ०—५ एक घड़ी वग्गी सुजड़, धड़ धड़ लग्गी धार । पिसण थया विमुहा पगा, गहि वग्गा तोवार । —रा. रू.

उ० - ६ 'करन' 'प्रताप' तणो जुध कारण, बिमुहा करै जिसो ग्ररि वारण 'ग्रजबावत' जोघो' दळ ग्रागळ, केवी गळै जेम जळ कागळ । —रा. रू.

बिमूंहो—देखो 'विमुख' (ग्रल्पा रू. भे.

उ०—ग्राभ बिमूंहां मांणमा है घर भेलण हार । घरणीघर घर छंडिया, ग्रच्छै तु ग्राघार । —ह र.

बिमूढ–वि. [सं. विमूढ] १ मूर्ख, नासमझ ।

२ विशेष रूप से मोहित, ग्रत्यन्त मुग्ध ।

३ भ्रमित, भ्रान्त ।

४ चेतना-रहित, चेतना-शून्य ।

बिमूढगरभ–स. पु यौ. [सं. विमूढ़गर्भ] वह गर्भ जिस में बच्चा मर गया हो ग्रौर प्रसव बहुत कठिनाई से होता हो ।

बिमूळ–वि. [सं. विमूल] १ मूल रहित, बिना जड़ का, निर्मूल ।

२ बरबाद, नष्ट ।

बिमूळण–सं. पु. [सं. विमूलन] १ समूल उखाड़ फेंकने की क्रिया, उन्मूलन ।

२ नाश करने की क्रिया, ध्वस करने की क्रिया ।

बिमूहो—देखो 'विमुख' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिमेक, बिमेख—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

उ० १ तिलोई न जाणं ताहरा, ब्रह्मा जिसा बिमेख । काइम तूं सबलो करै, ग्रबलो मारग एक । —पी. ग्रं.

उ०—२ विमव कियो तै बीस हथ, कियो बिमेख विचार । इम्यां ग्रिदि लीघो इसो, कीधो लै करतार । —पी. ग्रं.

उ०—३ उचारै वेद विदुख ग्रनेक, विचारै जिण सू विधि बिमेक । —रांमरासौ

उ०—४ पिगळ भरह पुरांग पराक्रत, बिध बिध जाणग सयळ बिमेक । 'जेसा' हरो न भगवट जांणै, ऊतर करै न जाणै ग्रेक । —ईसरदास बारहट

बिमोक्ख, बिमोक्ष बिमोख–सं. पु. [सं. विमोक्ष] १ बन्धनमुक्त करने की क्रिया, मुक्तिदेने की क्रिया ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष ।

३ सूर्य एवं चन्द्र का ग्रहण से मुक्त होना ।

४ सुमेरु पर्वत ।

बिमोखण–स. स्त्री. —१ बधन मुक्त करने की क्रिया, रिहा करने की क्रिया ।

२ तीर ग्रादि छोड़ने की क्रिया ।

वि.—१ बधन मुक्त या रिहा करने वाला ।

२ तीर ग्रादि छोड़ने वाला ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाने वाला ।

बिमोखणो, बिमोखबो–क्रि. स. [सं. विमोक्षणम्] १ बधन मुक्त करना, रिहा करना ।

२ तीर, गोली ग्रादि छोड़ना ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाना ।

बिमोखणहार, हारो (हारी), बिमोखणियो—वि० ।

बिमोखिग्रोड़ो, बिमोखियोड़ो, बिमोख्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिमोखीजणो, बिमोखीजबो—कर्म वा० ।

विमोछियोड़ी–भू. का. कृ.—१ बन्धन मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ.
२ तीर, गोली आदि छोड़ा हुआ। ३ जन्म मरण से मुक्ति दिलाया हुआ।
(स्त्री. विमोछियोड़ी)

विमोचक वि.—१ बन्धन मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म मरण के बंधन से मुक्ति दिलाने वाला।

विमोचण–सं. पु. [सं. विमोचन] १ बन्धन-मुक्त करने की क्रिया, मुक्ति। छुटकारा।
२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष।
३ एक तीर्थ का नाम जो कुरुक्षेत्र में है, जिसमें स्नान करने से क्रोध एवं इन्द्रियों के वशवर्ती न होने वाले पुरुष को प्रतिग्रहजन्य पाप से मुक्ति मिल जाती है।
४ नाश करने की क्रिया, नष्ट करने की क्रिया।
वि.—१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति दिलाने वाला।
३ नाश करने वाला।
रू. भे.—विमोचन।

विमोचणी, विमोचबौ–क्रि. स.—१ बन्धन-मुक्त करना, रिहा करना।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करना।
विमोचणहार, हारौ (हारी), विमोचणियौ—वि०।
विमोचिओड़ौ, विमोचियोड़ौ, विमोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विमोचीजणौ, विमोचीजबौ—कर्म वा०।

विमोचियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बन्धन-मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ। २ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त किया हुआ।
(स्त्री. विमोचियोड़ी)

विमोद–सं. पु. [सं. वि=विशेष+मोद=प्रसन्नता] १ अत्यन्त हर्ष, मोद, प्रसन्नता।
उ०—सिरतै सिर अंग भागी मोहणौ, रवि मोद **विमोद** दर्श रोहणौ। चमत्कार तिना अग शुभ घणी, गत्राम कियौ न मोद गणी। —पा. प्र.
वि. [सं. वि=रहित+मोद=प्रसन्नता] हर्ष रहित, मोद रहित, प्रसन्नता रहित।

विमोह–सं. पु. [सं. वि=विशेष+मोह] १ अत्यन्त मोह।
उ०—विरत्ता विमोह निज, सात तुरन नागिनं अनिता। वासर विमाळ अहिन, चक राणं मगह भवण। —रा. रू. ब
२ मोह, अज्ञान, भ्रान्ति।
उ०—१ अईयौ ईस अनत नाम अन्यारण निरजण, देव विमन दीणान आन दईसा सब गंजण। अलख नील ऊजौल विसव विमोह विययां, जाणै मदि जीतूवा माल मेरौ घन घानु। —पी. ग्रं.
उ०—२ सुभ दिवस समन समोह, मिट रयण सघ **विमोह**। रवि किरण अनुक्रम रेख, वाधेत तेज विसेख। —रा. रू.
उ०—३ अद्रु रूप सिखर थळ द्रुम **विमोह**, स्रंगार चमर किर पूछ मोह। निज तेज मरति चत्र जुवल नालि, भव कमळ जत्री सूची कि भाळि। —रा. रू.
३ एक नरक का नाम।
वि.—१ बेसुध, अचेत।
[सं. वि=रहित+मोह] २ मोह रहित।
उ०—अैसै नर अरसी भयौ, अग सिघ को मोह। हेत विगवास न होत है, बाना करत **विमोह**।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

विमोहक–वि. [सं.] १ मोह उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, आकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ अचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह-रहित या प्रेम रहित करने वाला।

विमोहण–सं. पु. [सं. विमोहन] १ मोहित करने की क्रिया, आकर्षित करने की क्रिया।
२ लोभ उत्पन्न करने की क्रिया, ललचाने की क्रिया।
३ अचेत या बेसुध करने की क्रिया।
४ कामदेव के पांचों बाणों में से एक बाण।
५ एक नरक का नाम।
६ मोह रहित करने की क्रिया।
वि.—१ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ अचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह रहित करने वाला।

विमोहणी–वि. (स्त्री विमोहणी) १ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला।
उ०—देवी गोर रूपा प्रमा नत्र निद्रि देवी सकळा सकळा सब्ब सिद्धि। देवी व्रज विमोहणी वोह वाणी, देवी तोतला गुणला कत्तिवाणी। —देवि.
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला
३ भ्रमित या भ्रान्त करने वाला।
४ अचेत या बेसुध करने वाला।
५ मोह रहित करने वाला।

बिमोहणौ, बिमोहबौ—क्रि. अ. [सं. बिमोहनम्] १ मोहित होना, मुग्ध होना।

उ०—१ अंबा आदि तरण आभासं, परम कवर लखि हरख प्रकासं। सुंदर चख मुख कर पद सोहै, मंजु रूप लख कज बिमोहै।
—रा. रू.

उ०—२ मन हरखं तन उच्छव मोटं, कियौ बणाव 'अभं' नवकोटं। सुरंग बसन सुंदर तन सोहै, वेखि रूप रति भूप बिमोहै।
—रा. रू.

उ०—३ सुंदर पाघ मोड़ सिर सोहै, मुगति पंति लख अगत बिमोहै। वचन सहास हुलास विहारै, नयण हरखजुत भिरत निहारै।
—रा. रू.

२ आकर्षित होना।

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुखधर न पत उदत सवाई। सरवर अचळ निमळ जळ सोहै, मघ पूरत विधु रसमि बिमोहै।
—रा. रू.

३ लालायित होना, ललचाना।

उ०—१ फल कदळी श्रोय स्वादं अफारा, छयै स्रोय बादाम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारंगिया रग सोहै, महादेव देवेस मेवै बिमोहै।
—रा. रू.

उ०—२ अनेकं फळं भारिया अक्ख ओपै, लियं चाहि सेवा न को जाय लोपै। सुगधकरं सुदर फूल सोहै, महाथंभ सौरंभ सिंभू बिमोहै।
—रा. रू.

४ भ्रमित या भ्रान्त होना।

५ अचेत होना, बेसुध होना।

६ मोह रहित होना।

क्रि. स.—७ मोहित करना, मुग्ध करना।

उ०—१ सूर धीर साखंत नीर तें सोहै, कायर नर कपं सांघ कूं बिमोहै। श्रीमहाराज को रूप अंसो निजर आयो, जांणं रोहिणी को संग बिरोचन पायो।
—रा. रू.

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटं, जेठी गयंद कुरंग नह जूटं। मभि जळ क्रीड़ न सहल बिमोहै, अस सिबका गज रथ न अरोहै।
—सू. प्र.

उ०—३ लसै तें ताहि विनाकंथ लेघ, बधाड़िय देवां आदू बेघ। जटाधर अघ दहत्त जळाय, बिमोहै रूप अनूप बणाय।
—ह. र.

उ०—४ हर पवन आवै छै। कवळ करा मै। नवरतन की पोवां सोहै छै। मनरग लोभ पराग बिमोहै छै। आम ऊभी जोसी देव रभा। उरबसी लजाय। सुर राज अचभा।
—पनां

८ लालायित करना, ललचाना।

९ भ्रमित या भ्रान्त करना।

१० अचेत करना, बेसुध करना।

११ मोहरहित करना।

बिमोहणहार, हारौ (हारी), बिमोहणियौ—वि०।

बिमोहियोड़ौ, बिमोहियोड़ो, बिमोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिमोहीजणौ, बिमोहीजबौ—कर्म, भाव वा०।

बिमोहणौ, बिमोहबौ—रू. भे.।

बिमोहा—सं. पु.—प्रत्येक चरण में दो रगण वाला एक छंद विशेष जिसमें ६ वर्ण होते है। (रूपदीप पिंगळ)

बिमोहित—वि. [सं.] १ मोहित, आकर्षित।

२ ललचाया हुआ, लालायित।

३ भ्रमित, भ्रान्त।

४ अचेत, बेसुध।

बिमोहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मोहित हुवा हुआ, मुग्ध हुवा हुआ. २ आकर्षित हुवा हुआ. ३ लालायित हुवा हुआ, ललचाया हुआ. ४ भ्रमित हुवा हुआ, भ्रान्त. ५ चेतना रहित हुवा हुआ, बेसुध हुवा हुआ. ६ मोह रहित हुवा हुआ. ७ मोहित या आकर्षित किया हुआ. ८ लालायित किया हुआ, ललचाया हुआ. ९ भ्रमित या भ्रान्त किया हुवा. १० अचेत किया हुआ, बेसुध किया हुआ. ११ मोह रहित किया हुआ।

(स्त्री. बिमोहियोड़ी)

बिमोही—वि. [सं. बिमोहिन्] १ मोहित या आकर्षित होने या करने वाला।

२ लालायित होने या करने वाला, ललचाने वाला।

३ भ्रमित या भ्रान्त होने या करने वाला।

४ चेतनारहित या बेसुध होने या करने वाला।

५ मोह रहित होने या करने वाला।

बिमौदगल—सं. पु. [सं. विमौद्गल] अगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार।

बिम्मर—देखो 'विवर' (रू. भे.)

उ०—झगरां गिरां सहरां थका झाटकै, बिम्मरां गिरां हूतो बिचाळै। नव नवा प्रसण नवकुळ जहीं नीवड़ै, किया आहूत पल-पल काळै।
—राजा अनिरुद्धसिंघ गोड़ रो गीत

बिम्मळ, बिम्मल—देखो 'विमळ' (रू. भे.)

उ०—१ मुडिया विहमंगळ अम्मि उथंग्रळ रावत बिम्मल लडि पडियं। दुबडा दूनं दळ विहूडे तब्बळ, कदळ पेलं रिम खडियं।
—गु. रू. बं.

उ०—२ पूजे पग बिम्मळ वेद पुरांण, अलीयळ नाथ लियं अधांण। रमै पग-छांह मधुकर रिक्ख, तयं पग नाग सरीमा तक्ख
—ह. र.

बिय—देखो 'बिय' (रू. भे.)

वियद्मणि—सं. पु. [सं. वियद्मणि] सूरज, सूर्य ।

वियटल—देखो 'विटळ' (रू. भे.)

उ०—बाप वियटल वैसाखना, आहां वी अलगु बाय । पांगरणां परनारिनां, ऋदाचितु थाय । —मा. कां. प्र.

वियत—सं. पु. [सं. वियत्] आकाश, व्योम, गगन । (अ. मा.)

उ०—जग सीत प्रगटत पंथ चख जग, अगनि दिसि अनुक्रमै । संगि जगत जण प्रति सुखद, अंबर वियत जळधर वेस मैं ।

—रा. रू.

रू. भे.—बियत, वयद, वयव, वियद ।

वियतमणि, वियतमणी—सं. पु. [सं. वियत्+मणि] १ सूरज, सूर्य ।

२ चान्द, चन्द्रमा ।

वियति—सं. पु. [सं.] नहुष राजा का एक पुत्र ।

वियद—देखो 'वियत' (रू. भे.)

वियदगंगा—सं. स्त्री [सं.] आकाशगंगा ।

वियांण—देखो 'ब्यांण' (रू. भे.)

वियांणी—वि. स्त्री—जन्म देने वाली ।

वियान—१ देखो 'ब्यांन' (रू. भे.)

२ देखो 'वियोन' (रू. भे.)

उ०—विमान आसमान में निमान सै रहै नही, वसुधरा वियान सी अगोलगी बहै नही । खगग बाहक घड न उब्बरं चरे चिरे फलग भंचकी थकी न नंचकी चकी फिरै । —ऊ. का.

वियाई—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

वियाज—देखो 'ब्याज' (रू. भे.)

उ०—आगै जाइ आलि केलि ग्रह अंतरि, करि अगण मारजण करेग । सेज वियाज खीरसागर सजि, फूल वियाज सजै तसु फेण । —वेलि

वियाणौ, वियाबौ—देखो 'ब्याणौ, ब्याबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू बभ वियाई आतमा, उपज्या आनंद भाव । सहज सील सतोख सत, प्रेम मगन मन राव । —दादूवांणी

उ०—२ तीणि पातिसाहि आया सातरि कुण सहइ ? कुणइ सहिजइ ? कुण की जुवती, कुण की आसी ? कुण माइ वियाणी, जू सांमउ रहइ अणी पाणी ? —प. वचनिका

वियापणौ, वियापबौ—देखो 'ब्यापणौ, ब्यापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चौथे पहरै रैणिदे, बणिजारिया तू पक्का हूवा पीर वे । जोबन गया जरा वियापी, नाही सुधि सरीर वे । —दादूवांणी

उ०—२ माधव ऊमा देवड़ी, संभळि पिंगळ राद । विरह-वियापी मारुई, नहि रावण कउ दाह । —ढो. मा.

वियापणहार, हारौ (हारी), वियापणियौ—वि० ।

वियापियोड़ौ, वियापियोड़ौ, वियाप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वियापीजणौ, वियापीजबौ—भाव वा० ।

वियापियोड़ौ—देखो 'ब्यापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वियापियोड़ी)

वियापि, वियापी—देखो 'ब्यापी' (रू. भे.)

उ०—१ सकल वियापी संगि बसै, हरि समथ सिरजणहार । साहिब ही तैं पाइए, साहब का दीदार । —ह. पु. वां.

उ०—२ त्रिविध ताप सासौं न सूळ, परमभेद आनंदमूळ । उदै अस्त आवै न जाय, सकळ वियापि सहजभाव । —ह. पु. वां.

उ०—३ मनसा मटी मिटी सब दौर, गहि गुर ग्यांन बसै निज ठौर । जन हरिदास गोविंद गुणगाई, सकळ वियापी रांम सहाई । —ह. पु. वा.

वियायोड़ौ—देखो 'ब्यायोड़ौ' (रू. भे.)

वियार—१ देखो 'विकार' ।

२ देखो 'विचार' ।

वियाळू—देखो 'ब्याळू' (रू. भे.)

वियाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

वियास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—वियास भट्ट के महंत, जोतिकी ब्रह्मण । कथा पुरांण भागवंत, भारथं गंमाइण । —गु. रू. ब.

वियासियौ—देखो 'बंयासियौ' (रू. भे.)

उ०—रतन पाट बैठौ रघू, देखौ सांईदास । गमत गनर वियासियै, प्रेमरौ चदभास । —सांईदास रौ गीत

वियासी—देखो 'बयासी' (रू. भे.)

वियोग—सं. पु. [सं.] १ संयोग का अभाव । (डि. को.)

उ०—१ कोइक पूरब भव सबंध सूं रे आइ मिल्यौ संजोग । भवितव्यता रइ जोग मिलइ हुस्यौ रे, वणियौ एम वियोग ।

—प. च. चौ.

उ०—२ रहै नहीं नामै कोई रोग, वलौ मट्ठ जायै सोग वियोग । सदा हुवै भोग संयोग सवेश, दीयै सुख वंछित रीखभदेव ।

—ध. व. ग्रं.

२ विच्छेद, अलगाव ।

उ०—१ स्वामीजी नवी दिक्षा लीधां पछै केतलेएक वरसै तीन जणियां दिक्षा लेवा त्यारी थइ । जद स्वामीजी बोल्या थे तीन जणियां माथै दिक्षा लेवौ अनै कदाचित एकण री वियोग पड़ जावै तौ थांनै कल्पै नही सो पछै संलेखणा करणी पड़ै । —भि. द्र.

उ०—२ अर्क व्यापार करै छै। त्याह की स्त्री, गाय अर बछड़ा। बिभचार ही करणहारी स्त्री अर लंपट। ये तीन्यो रात्रि कै मर्म भेळा हुता त्याह नै वियोग हुयो। —वेलि टी.

उ०—३ नाह वियोगं दुखणी तेह, भूरि क्रस कीधो छै देह। रहै एकांतै लेइ आवास, धरम ध्यांन मन मांहै जास। —वि. कु.

३ अवसर, मौका।

४ विरह, जुदाई।

उ०—१ दसरथ राय दियो देसवटउ, रहघउ वनवास जी। वलि वियोग पड़घउ सीतानउ, आठं पहर उदास जी। —स. कु.

उ०—२ खसबोय लगाई। आप ढोलियै पोढियो। भरमल पवन करै छै। वडारण पगै हाथ देवै छै। वातां करै छै। खुस-वखत छै हसै छै। घणां दिनां रौ वियोग भागो, सो दोनूं परम राजी छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाओं के विरह का वर्णन होता है।

वि.—बिना, रहित।

क्रि. वि.—अलग, वियोग में।

रू. भे.—बिप्रोग, बिजोग, बियोग, बिवोग, वजोग, विप्रोग, विजोग।

अल्पा.—विजोगौ, वियोगौ।

वियोगण, वियोगणी—स. स्त्री [स. वियोगिनी] वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम उससे अलग या दूर हो, विरहणी।

रू. भे.—विजोगण, विजोगणी, विजोगिण, विजोगिणि, विजोगिणी विजोगिन, विजोगिनि, वियोगिण, वियोगिणि, वियोगिणी, गिणी, विवोगण, विवोगणि, विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी।

वियोगांत—वि. [सं.] जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।

रू. भे.—विजोगांत।

वियोगिण, वियोगिणि, वियोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

उ०—सीलवंती नै हो एहिज जोगता, धरम पणं दढ थाय। वलि विसेख हो जेह वियोगिणी, धरम करइ मन लाय। —वि. कु.

वियोगी—वि. [स.] जो अपनी स्त्री या प्रिया से अलग या दूर हुआ हो, विरही।

स. पु.—वह नायक जो प्रिया के वियोग के कारण दुःखी हो।

रू. भे.—विप्रोगी, विजोगिय, विजोगी, वियोगन, वियोगी, विजोगी।

वियोगौ—देखो 'वियोग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रांणी माळ्या ऊपला नै सोगो रे, म्हारै व्हालां पड़ै वियोगो। हा हा करूं हिवै कांमूं रे, म्हारो हिवड़ो फटै मां सूं। —जयवांणी

वियोजक—वि [स.] १ वियोग उत्पन्न करने वाला।

२ दो संयुक्त वस्तुओं को अलग करने वाला।

वियोजन—सं स्त्री. [स. वियोजन] १ दो संयुक्त वस्तुओं को अलग करने की क्रिया, पृथक करने की क्रिया।

२ गणित में किसी बडी संख्या में से छोटी घटाने की क्रिया, बाकी।

वियोजित—वि. [सं.] अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ।

स स्त्री.—किसी बडी सख्या मे से छोटी सख्या के घटाने के बाद आई हुई सख्या।

वियौ—देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—१ चहुवांणां कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय। चाड न घट्टै चंद की, सीस पलट्टै तोय। —रा. रू.

उ०—२ अति गढां विसम भ्रम ऊपजै, खळ त्यां उद्यम खभियो। 'गजसाह' वियौ गुज्जर सिरै, 'अभैसाह' आरंभियो। —रा. रू.

उ०—३ कत सोभति रेसम लूंब करै, धुरवा किर फूलिय संझ धरै। अत उग्र तुरंगम अग वियै, क्रम सोभत आवत झोर कियै। —रा. रू.

वियौवन—स. पु.—१ युवा-अवस्था के बीच का समय।

२ युवा अवस्था के बाद का समय।

विरग, विरगु, विरंगोड़ो, विरंगौ—वि. [स. विरग] (स्त्री. विरंगी) १ अप्रिय, असुहावना।

उ०—१ नतखण माळवणी कहइ, मारुळि कंत सुरंग। सगळा देस सुहांमणा, पाह देस विरंग। —ढो. मा.

उ०—२ सेझ यावो सुंदरी, ज्यो सोभा दे सेझ। तौ बिन सेझ विरंगियां, कहो न लागै जेह। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ छूटो नीर चख्या सतराम ऊवरता छेला, सरूपदास री छानी उभेला समंद जामी आज म्हानै छोड अकेला कठीनै जावो, कोयला विरगा हेला दे रहो कमध। —स्वरूपदास

२ जो समय के प्रतिकूल हो।

३ कड़वा, बेस्वाद।

४ बदशकल, बदरूप, कुरूप।

५ वदरंग, बुरे रंग का।

६ अनेक रगो वाला, अनेक रगों का।

उ०—कंपू मार तेगा तीखी ताळी सो कुरंगी कीधी, जका बाद नौरंगी प्रबाळी भुर्जा जोम । मांनू तारकी बिरंगी काळी घड़ा मार्थ, भूप 'दुर्ग' बिरंगी फिरगी बाळी मोम । —गिरवरदान कवियो

७ भयकर, भयावना, भयावह, डरावना ।

उ०—घटा टोप मेघा गरह न गाजै, हुबक्कं तरंगा बिरगांह बाजे । निवाणिच्छ लागी घड़ी नाम भाजे, मझी कोह राखै घटै अम्ह काजे । —घ व. ग्र

८ उदासीन, खिन्न ।

उ० - १ नाह मिळियो सही बिरग रंग नीमरै, कमतां अथी सिर जेज नह को करै, रीमियै 'जसै' भट रिमां घट रोळिया, भूड़ि अस धमधरां रुधिर झकझोळियां । —हा झा.

उ० —२ नयगह खागलि गयउ कुरगू, राय वींनि जां हुयउ बिरगू । नोह वाम् दाहिणउ । —सालिभद्र सूरि

९ अशुभरग (वर्ण) ।

१० फीका, नीरस, आनन्दरहित ।

उ०—बड़ो लियां भट धमक कम तुरग समतै विभो, अभंग जंग जीत अद भुजां ओपै । सूर वड सुरग रग चढियो धमधमरा, किया नवरंग बिरंग दुरग कोपै । —सबळो मांदू

११ अनुराग या इश्क रहित ।

१२ दुःखपूर्ण, पीड़ायुक्त, सन्तापयुक्त ।

उ०—बरसण लागा बैण बिरंगा, तरसण लागा तीठा । परसण लागा पाव दुहेला, दरसण झेला दीठा । —ऊ. का.

१३ प्रभावरहित, रोबरहित ।

१४ प्रतिष्ठा रहित बेइज्जत ।

१५ जोश रहित, आवेशरहित ।

१६ शोकसूचक, शोकजनक ।

१७ भद्दा, बुरा ।

उ०—१ मूरधर छोड परधरा बसै, लगै प्रधांणां धोवरा । बांसडा रै सारै बिरंगा, जांणै दरखत तोप रा । —दमदेव

उ०—२ वे बिरगोडा रूख, जठै सूम्बी झाड़ली हांण-फांग सी घास, काय काया री ढिगली । —मक्तिदांन कवियो

१८ शुष्क, सूखा, निर्जल ।

उ०-देस बिरंगउ ढोलणा, दूजी तुगा इहां स्वाद । मन गमता पाम्या नहीं, ऊंट कटाळा स्वाद । —ढो मा.

१९ कड़वा, कर्णकटु ।

२० विकट ।

उ०—साय सुरंग बात कहिनै तणी, दोंग बिरंगी दहन री । उर जेज घरो म करो उरड, ऊनो तेज अगन्न री । —रा. रू

२१ जिसका रंग बदल गया हो, परिवर्तित रंग का ।

उ०—दव लग्गां बन प्रतरै, छूटै पवन अछेह । धूम दिसा तिम धुबळै, व्योम बिरंगै वेह । —रा. रू.

रू भे.—बिरंग, बिरंगो ।

बिरंच—स. स्त्री.—१ एक औषधि का नाम ।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति गोळी, चूरण, आसण, कवळ, कुटी, नागासिगो बिरंच, मुफर, तांबेसर, मदन कांमेसर, जिता मारिग्रा औखध फेरीजै छै । —रा. सा. स.

२ देखो 'बिरंचि' (रू. भे.)   (हि नां. मा.)

उ०—१ बाचै चत्रवेद बिरच बखांण, प्रकासै व्यास अठार पुरांण । ग्यानी दुज बैस गया सुद्ध खोज, हुंतो ज हुंतो ज हुंतो ज हुंतो ज । —ह. र.

उ०—२ महा मनोहर महल छबि, अति ऊचा आवास । रतन-जटत राजत अधिक, तहा बिरच निवास । —गज उद्धार

उ०—३ अैसी पुरी बिरंच की, का पै बरणी जाय । मत परवांण बखांणियै, अपणी अपणी भाय । —गज-उद्धार

उ०—४ जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां बिरंच जांणै, धूरजटी तावा ऊन मावां मेर धोग । आवा लोम रिखी रांम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊन, सांभवेद वेदांगां वीरावां संभू सींग । —हुकमीचद खिड़ियो

बिरचनाथ—देखो 'बिरचि' (रू. भे.)

बिरंचमुत - देखो 'बिरंचिमुत' (रू. भे.)

बिरंचि—सं. पु [सं विरच: विरचि] ब्रह्मा का नाम, विधाता ।

उ०—सकनवूर साखात सराहैं सहचरी, काम बिरंचि बिमास क स्त्री हथ सू करी । जेहरि घूघरमाळ पगां भुणकं जियां, कुंजै बारिज पुंज वना कलहंसियां । —बां. दा.

रू. भे बिरच, बिरंचनाथ, बिरंचि, बिरंचिय, बिरंची, बरच, बिरच, बिरंचनाथ, बिरंचिनाथ, बिरज, बिरजो ।

बिरंचिनाथ देखो 'बिरंचि' (रू. भे.)

बिरंचिसुत—स. पु [सं. विरंचि+सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद का एक नाम ।

रू. भे.—बिरचसुत ।

बिरज, बिरंजो—स. पु.—१ चावल के साथ बनाया जाने वाला मांस विशेष ।

उ०—तठा उपरायन सीरो-पूडी बणै छै । सोहितै साथ देवजीमि जोयजं छै । बिरजै साथ चोखा मगायजं छै । पुलाव साथ कमोद बोणजै छै । काठां गोहुवां रो आटो मंगायजै छै । सू नाळेर-गरा गोळवां रोटा बणायजं छै । —रा. सा. सं.

२ चावल का बनाया जाने वाला, मीठा व्यंजन विशेष।

३ देखो 'विरंचि' (रू. भे.) (नां. मा.)

बिरंडी—१ देखो 'ग्रांडी' (रू. भे.)

२ देखो 'भिंडी' (रू. भे.)

बिरउ-वि.—हल्का, तुच्छ।

उ०—ग्रम्हे किसा छां ? मिच्छत्वास मिथ्यात्वनउ संस्कार तिणि करी निकृष्ट बिरउ भाव तेहतउ गलिउ गुरु गुरुउ विवेक तत्वातत्वविचार जेहनउ छइ। —षष्ठीशतक

बिरक-सं. पु. [सं. वृक] भेड़िया।

उ०—सीकोतरि सककरणी,प्रेत डककरणी ग्रपारां। विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां। गिरघ चील गोमायु, बिरक जबू रसवाया। काक कंक की गिरणं, ग्रास पळ संभळ ग्राया। —रा. रू.

रू. भे.—वरक।

बिरकत—देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—१ नदी ताळ जहां नहीं जहां बापी सर कुवा। सबही उजड़ देस देख मन बिरकत हुवा। —दूलजी ओझै री वारता

उ०—२ ग्रेसे नटवा बांस चढि, उलटा खेलै दाव। जनहरीया यं जगत मैं बिरकत मलै पाव। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ रीती देख न बिरचियै, भरी न घरीयै चित्त। हरीया रीती ग्रर भरी, दोऊ सुं बिरकत्त। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ वैरागी बिरकत भलो, जुग सु न्यारा मन। हरीया गिरही सो भलो, सब सुं दासा तन। —ग्रनुभववाणी

उ०—५ हरीया हिरमच लायकै, बैठे बिरकत होय। बिरकत सोई जाणियै, बिखै बिरता सोय। —ग्रनुभववाणी

बिरक्ख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—नमो हयग्रीव निगम्म निवान, बडा कवि ब्रह्म बदै बड रमात। नमो प्रथु राजा ग्रादि पुरुक्ख, नमो बर लच्छि परम्म बिरक्ख। —ह. र.

बिरक्त-सं. पु. [सं.] १ रामस्नेही साधुग्रों का एक भेद विशेष, जिसके साधु नंगे बदन, नंगे शिर ग्रौर नंगे पांव रहते है। (मा. म.)

२ केवल ताल देने के काम ग्राने वाले बाजे।

वि. [सं.] १ ग्रत्यन्त लाल, गहरा लाल।

२ सांसारिक प्रपंचो ग्रादि से दूर रहने वाला, सांसारिक बन्धनों से मुक्त।

३ उत्तेजनायुक्त, उत्तेजित।

४ भोग विलास से दूर रहने वाला, जिसे कामवासना न हो।

५ बदले हुए रंग का, बदरंग।

६ ग्रनुराग या ग्रासक्ति रहित।

७ कर्मानुष्ठान के फल की ग्राशा न रखने वाला, त्यागी।

उ०—१ मिथ्यादृस्टि तणी उत्थापक, व्यक्त गुणी सुविलासी। बलि बिरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति ग्रभ्यासी। —वि. कु.

उ०—२ पण राजा को दांन लेऊ नहीं बिरक्त नूं ग्रण बराबर छौ। —पचदडी री वारता

८ खिन्न, उदासीन।

रू. भे.—बिरकत, बिरक्त, बिरगत, विरकत, विरगत, विरत, विरता, विरत्त, विरिकत, विरिक्त, विरित।

बिरक्तता, बिरक्ति-सं. स्त्री, [सं] १ उत्तेजना।

२ खिन्नता, उदासीनता।

३ ग्रनुराग या ग्रासक्ति का ग्रभाव, विमुखता।

४ भोग विलास ग्रादि से परे रहने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—विरगता, बिरगति विरता, बिरति, बिरती, बिरत्ति, विरत्ती।

बिरख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०-१ तरवर सदा पुराणा पातां, पायां नवा पखै बिण पात। सब जागण सु बिरख नव सहमी, पूजै नवा पुराणा पात। —हरीराम ऊहड़ रो गीत

उ०—२ बट तमाल पीपल बिरख, ग्ररुजन समी ग्रपार। ईख तर्जै पत्र एक री, मुगन पांचेइ सार। —रा. रू.

उ०—३ विनां पेड जांह बिरख है, विन फूलां फळ लाय। विनां पंख जांह भवर है, ग्रधर बिलंबै भाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ हरीया चदण बावनो, वाकै पासि बिरख। सोई चंदण दूसरा, कीया ग्राप सिरख। —ग्रनुभववाणी

बिरखभांण, बिरखभांनु, बिरखभांन, बिरखमांनु—देखो 'व्रखभांनु' (रू. भे.)

उ०—मेरे गोपाळजी कूं रोटी बनाय देऊं, एक छोटी दूजी मोटी। मेरे गोपाळजी का व्याह करूंगी, बिरखभान की बेटी। —मीरां

बिरखा—देखो 'वरखा' (रू. भे.)

उ०—१ किमन मिर फूल बिरखा करै, ग्रमर तमामै ग्राइया। निहंग घरि बीच मावै नही, सुरै विवाण सबाहिया। —पी. ग्रं.

उ०—२ गड मुंड से खत्र, गुडे गज मांगकडदह। ग्रगनि बांण ग्रारिकल, बीज बिरखा ब्रहमदह। —गु. रू. बं.

उ०—३ विनां नीर जांह कवळ है, विन बिरखा बरसाळ। विनां मास जांह रुत है। मात पिता बिन बाळ। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ उलटिया पेम चहु ग्रोर बिरखा लगी, गिगन घनघोर विन इंद गाजै। खळकिया नीर तन तठ नाडा भरया, ब्रह्म परफूळ खट कवल छाजै। —ग्रनुभववाणी

उ० —५ रसीद भाई कह्यौ—जद तो बामा थें घणा फोड़ा भुगतिया पंछी ठा'व्हैती तो म्हैं मकानानै गाड़ो लियग्यो । घणी ई बाट जोई । सेवट बिरमा देवनै रवांना व्हैणो ई पड्यो ।

—फुलवाड़ी

बिरमाकरण—देखो 'बरमाकरण' (रू. भे.)

बिरगत—देखो 'बिरक्त' (रू. भे.)

बिरगता, बिरगति—देखो 'बिरक्तता, बिरक्ति' (रू. भे.)

बिरगरावणौ, बिरगरावबौ—क्रि. स.—दीनता दिखाते हुए दीन वचन बोलना; गिड़गिड़ाना ।

उ०—ऊजळौ सुभाव, चढ़ूत चल्लौ, गाव री बेटी पण मगळां सूं घूंघटो पल्लौ । सूधी गऊ रा ऊगरला दात । बिरगरावतो मी बोलै लीलड़ी सी काढै । कीसू ही लेहै नी ग्राखै मिनखां नै हस'र दांत दिखाळै ।

— दमदोव

बिरगरावणहार, हारौ (हारी), बिरगरावणियौ—वि० ।

बिरगराविग्रोड़ौ, बिरगरावियोड़ौ, बिरगराय्योड़ौ—भू० का० कृ ।

बिरगरावीजणौ, बिरगरावीजबौ—भाव वा० ।

बिरगराविग्रोड़ौ—दीन वचन बोला हुआ, गिड़गिड़ाया हुआ ।

(स्त्री. बिरगरावियोड़ी)

बिरड़क—सं. पु.—१ बाधा, विघ्न, रोक, रुकावट ।

२ कुएं से पानी खींचने में कोई रोक ।

बिरड़णौ, बिरड़बौ—क्रि. अ.—१ घुसना, धसना ।

उ०—बिरड़ ऊरड़ मुरड़ बड बड हूर हड़ हड रभ हड हड, बोजड़ ग्रोफड़ कध बड़ बड़ दडड रतपड मुंड दड़ दड़ । —जगो खिड़ियो

२ कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ०—वारण बिरड़ियौ दरबार विचाळै, कायरां हुई करारी । 'बाघा' हरे आगरै बाई, कुंवरपणै कटारी ।

—रतनसिंह राठौड़ रो गीत

३ लड़ना, झगड़ना ।

४ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोही होना ।

उ०—कवर बिरड़ियौ मरड अमराव फिरिया सको, अंरसी वार बिलमी बणी आण । पाट चीत्तौड़ रो हुवो ऊथळपथळ, 'दुरग' नूं सिमरियो तई दीवाण । —दुरगादास आसकरणोत रो गीत

बिरड़णहार, हारौ (हारी), बिरड़णियौ—वि०— ।

बिरड़िग्रोड़ौ, बिरड़ियोड़ौ, बिरड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिरड़ीजणौ बिरड़ीजबौ—भाव वा० ।

बिरडणौ, बिरडबौ—रू भे. ।

बिरड़िग्रोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घुसा हुआ, धसा हुआ. २ कुपित हुवा हुआ, क्रोधित हुवा हुआ. ३ लड़ा हुआ, झगड़ा हुआ । ४ राजसत्ता के विरुद्ध हुवा हुआ, विद्रोही हुवा हुआ ।

(स्त्री. बिरड़ियोड़ी)

बिरचणौ, बिरचबौ—क्रि. अ.—१ पलटना, बदलना, विमुख होना ।

उ०—१ स्वारथ नी सगाइयां, जोड़जो इण संसार । किण विधि बिरचै सं, कत सं 'सूरिकंता' नार । —जयवांणी

उ०—२ साजनिया समार, जे कीजै तो जोड़नै । नेह निबांहणहार, 'जसा' न बिरचै जीवतां । —जसराज

उ०—३ करै वणिक कुल कमब कर, हित मांहे वित हांण । वणिक दगौ दै बिरचियौ, नर इधरज मत आंण । —बां. दा.

उ०—पामी 'बोका ! पाट, करनादै स्रीमुख कह्यौ । थारो रहसी थाट, म्हारा सूं बिरचै मती । —अग्यात

२ पीछे हटना ।

उ०—हरीया ग्रेसा ह्य रहो, परबत कैसे भाय । धका धंम केता सहै, बिरच कबू नही जाय । —अनुभववांणी

३ विरुद्ध होना, प्रतिकूल होना ।

उ०—कूळ ऊच मईजन पेम कियौ, दिल चेतन सूध बिरचै न दियौ । ब्रजडो धकधूण तको नरखौ, बुरचीतोय देवळ नां बिरचौ ।

—पा. प्र.

४ क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—१ मेटण परजापत जिगन मद्द, भव हुकम बिरचियौ वीरभद्द । जुग्गिम भोम तजि बाहुजुद्ध, फिर सेन बंधि जूटा सक्रुद्ध ।

—रा. रू.

उ०—२ बिरचि राव सत्रसाळ 'ग्रोरंग' पडै बाथियां, जाथियां अनचळै बदन जरदै । राळियौ साथियां लोक त्रय लोक रै, हेम रौ हाथियां बीच हरदै । —हरदैनारायण हाडा रो गीत

५ रचना, बनाना ।

उ०—तत्खिण तिहां मिलिया चलियासण सुर कोडि, प्रभुना पद पंकज प्रणमइ बेकर जोडि । बेकर जोड़ी मछर छोडी समवसरण बिरचति, माणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय झलकंति ।

— स. कु.

६ आयोजन करना, मनाना ।

७ विरक्त होना, उदासीन होना ।

उ०—रीती देख न बिरचीयै, भरी न धरीयै चित । हरीया रीती घर भरी, दोऊ सूं बिरकत । —अनुभववांणी

८ कम होना, घटना ।

उ०—माया खरची खूब है, जो कुछ्छ खरची जाय । हरीया खरचत खावतां, बिरच कबु नही जाय । —अनुभववांणी

९ त्यागना, छोड़ना।

उ०—साजन प्रेसा कीजिये, आमैं लखण बतीस। भीड़ पड़यां विरचं नहीं, सीस करै बगसीस। —अज्ञात

१० धोखा देना, छलना।

उ०—म्याराजी, विरचो मती, प्याराजी कर प्रीत। न्याराजी रहतां नमव, यो वैराजी चीत। —मयाराम दरजी री वात

विरचणहार, हारो (हारी), विरचणियौ—वि०।

विरचिम्रोड़ौ विरचियोड़ौ, विरच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरचीजणौ, विरचीजबौ—भाव वा०।

विरचणौ, विरचबौ विरच्चणौ विरच्चबौ, विरछणौ, विरछबौ वरचणौ, वरचबौ, वरच्चणौ, वरच्चबौ, वरछणौ, वरछबौ —रू० भे०।

विरचयिता—वि. [सं.] बनाने वाला, रचना करने वाला।

रू. भे—विरचियता।

विरचित—वि. [सं.] रचित, निर्मित।

विरचियता—देखो 'विरचयिता' (रू. भे.)

विरचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पलटा हुआ, बदला हुआ, विमुख हुवा हुआ. २ पीछे हटा हुआ. ३ विरुद्ध हुवा हुआ, प्रतिकूल हुवा हुआ. ४ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ. ५ रचा हुआ, बनाया हुआ. ६ आयोजन किया हुआ, मनाया हुआ. ७ विरक्त हुवा हुआ, उदासीन हुवा हुआ. ८ कम हुवा हुआ, घटा हुआ, ९ त्यागा हुआ छोड़ा हुआ. १० धोखा दिया हुआ, छला हुआ।

(स्त्री. विरचियोड़ी)

विरछ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ विरछां लूंबी वेलियां, फूलोफलो फवेह। सीतळ छांह सुहावणी, दिणियर किरण दवेह। —र. हमीर

उ०—२ मेली पवित्रा सीम, किता रेसम सुंवरणी। फूल क्यारी री झणी, खवा दोनूं उपरणी। चौसर चोघड़ गंध, वर्ण फूलां री गहणो। विरछ वसंत री वर्ण, निजर तिरछी मूं वहणो। —अग्जुणजी बारहठ

उ०—३ सोम सरग सातमें परम मातमे पयाळें। अरणव माते उदर, विरछ रोमांच विचाळें। —र. रू.

उ०—४ विरछां वेलां पर चढ़णं बुधि वाही, उर में अलबेलां बेलण सुध आई। आंगा नेवण नैं अंधूळा आया, दरसण देवण नैं मोमी मूळकाया। —ऊ. का.

विरछी—सं. पु.—बबूल की फली।

विरज—सं. पु [सं. विरजः] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

२ शिव, महादेव।

३ वीर्य बीज।

४ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण।

६ त्वष्ट एवं विरोचना के पुत्रों में एक एक पुत्र राजा, जो विषुचि का पति और शतजित् का पिता था।

७ पूर्णिमत राजा का एक पुत्र।

[सं. विरजस्] ८ भगवान् नारायण का एक मानसपुत्र, जो कीर्तिमत का पिता था।

९ शिवावतार का एक शिष्य।

१० वसिष्ठ एवं ऊर्जा के सात पुत्रों में से एक पुत्र ऋषि।

११ कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों मे से एक नाग पुत्र।

१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

१३ वारुणि कवि ऋषि के आठ पुत्रों में से एक पुत्र, प्रजापति।

१४ कला (कर्दम प्रजापति की पुत्री) एवं मरीचि महर्षि पूर्णिमा नामक पुत्र का पहला पुत्र। दूसरे पुत्र का नाम विश्वग था।

वि.—१ जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो। (स्त्री)

२ धूल, गर्द से रहित, निर्मल, स्वच्छ।

३ सुखवासना से मुक्त, अनुराग रहित।

विरजमंडळ—देखो 'व्रजमंडळ' (रू. भे.)

विरजस्क—सं. पु. [सं.] सावर्णिमनु के एक पुत्र का नाम।

विरजा—सं. पु. [सं. वीर्य+ज] १ पिता। (ह. नां. मा.)

२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

३ बीसवें कल्प में उत्पन्न श्री ब्रह्मा का रक्त नामक एक मानस पुत्र।

४ शिव का एक नामान्तर।

५ वसिष्ठ एवं ऊर्जा के आठ पुत्रों मे मे एक।

६ भगवान् नारायण का एक पुत्र।

सं स्त्री.—७ शुभ पुत्र ऋक्ष वानर की पत्नी जो विरजस् नामक प्रजापति की कन्या थी।

वि. वि.—बाली एवं सुग्रीव क्रमशः इन्द्र व सूर्य से इसे पुत्र प्राप्त हुए थे।

८ श्रीकृष्ण की एक प्रिय सखी जो राधा के भय के कारण नदी बन गई। कही २ पर राधा के शाप से भी इसका नदी बनना स्वीकार्य है।

९ नहुष की पत्नी एवं ययाति की माता, जो सुस्वधा पितरों की कन्या थी।

१० अदितिपुत्र महोत्कट का वेशधारी श्रीगणेशजी का भक्तए

करने वाली राक्षसी, जिसका उदर विदीर्ण कर श्रीगणेशजी बाहर आ गये थे।

बिरजाक्ष—स. पु. [सं.] मेरु पर्वत के पास उत्तर में स्थित एक पर्वत।

बिरजाक्षेत्र, बिरजाखेत, बिरजाखेत्र—स. पु. [सं. विरजाक्षेत्र] उड़ीसा में जाजपुर के पास माना जाने वाला एक पवित्र तीर्थ।

बिरजामित्र—स. पु. [सं विरजस्+मित्र] वसिष्ठ के पुत्र विरजस् का नामान्तर।

बिरड़णौ, बिरड़बौ—देखो 'बिरहणौ, बिरहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वळि भरियौ बिरड़ियौ, कुरम माझौ गहवतौ। भ्रंत चढ़ै चख चिढ़ै, रोम हूं मेंह हद रातौ। —गु. रू. बं.

उ०—२ ब्राह्मण पूतळी देखि नै मन मैं विचारियौ। आगलै साथियै पूतळी तैयार कीवी। हिवै श्रीपरमेस्वर री भजन करू ज्यूं जीव पड़ै। ताहरां पूतळी फिरण लागी। तद उवै च्यारै ही बिरड़ीया। ऊ कहै म्हारी बाहर, ऊ कहै म्हारी बाहर।
—चौबोली

उ०—३ हकळ पौळ बिरड़ियौ हाथी, नीछट भीळ निराळी। 'रतन' पहाड़ तणौ सिर रोपी, धुबड़ियो धाराळी।
—रतनसिंह राठौड़ री गीत

बिरड़णहार, हारौ (हारी), बिरड़णियौ—वि०।
बिरड़िअोड़ो, बिरड़ियोड़ौ, बिरड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिरड़ीजणौ, बिरड़ीजबौ—भाव वा०।

बिरड़ियोड़ौ—देखो 'बिरहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिरड़ियोड़ी)

बिरणियौ—वि.—वीर, बहादुर, योद्धा।
उ०—घाव घण घरा प्रत विसम दळ घालणौ, पाव सं पाखरया धूकळो पालणौ। राव जसवंत रौ रातिया बिरणिया, हाक वागां नं दुदिना हिरणिया। —हा. झा

बिरतंत, बिरतांत—देखो 'वृतांत' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढा मिलि प्रारी हुई, साभळि ए बिरतंत। जे दिन मारू बिण गया, दई न त्यान गिणंत। —ढो मा.

उ०—२ ताहरां राणी पूछियौ-जु महाराज, कैसा वारतै हसीया। राजा नटियौ। राणी बहुत गाढ करि पूछण लागी। जु महाराज मोनुं हसीया रो बिरतंत कहीजै। —चौबोली

उ०—३ हिव बिरतंत सुणौ सहू आदरवंत मनुक। सेठ तिहां आवी परै, पड़ियौ पाड़ै कूक। —वि. कु.

उ०—४ पहचौ भूं कुण परदेसी, उण ठाँ वयं आयौ। तिण आरा पार देव त्रिवानो, गट्ट बिरतंत सुणायौ। —ध व. ग्र.

उ०—५ तेहनं कह्यौ निविसियै जी, बाल पणं निमंत। जणसी पुत्र मुवा थका जो, रत्न तणौ बिरतंत। —जयवाणी

बिरत—सं. पु.—१ भूठ, असत्य। (अ. मा.)
२ यति, विश्राम। (पिंगल शास्त्र)
३ देखो 'व्रती' (रू. भे.)

उ०—१ डूम-डल्ला कोरत गावै, मंगता-भिखारी बिरत चावै कोटयौ, कोडयौ प्रायौ बाद रै चांनणै में बुहार झाड़'र खायग्या, लेग्या अर केई मांगता ही गया। —दसदोख

उ०—२ सवणा वयण सभळं, नयण बिळकुळं निरमळ। जोत वदन झळहळं, लाज भुजि भळं स उज्जळ। सूर बिरत सल्लळं, ज्वाळ झळहळं फुणधर। वना प्रळंकति करण, किरण परजळं दिणकर। —रा. रू.

५ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—१ बूढा तैं किम बाल कहीजइ, बिरत नहीं जांणउ कोई। एक रूपइयउ खोटउ बाध्यउ, दोड्यउ करंय दगाई रे। —स. कु.

उ०—२ रात्रि भोजन करतां थकां ए, मन मांनै खाय कै। बिरत काई नहीं ए, मरने दुरगति जाय कै। —जयवांणी

६ देखो 'व्रत' (रू. भे.)
रू. भे.—बिरत, वरत।

बिरतांत—देखो 'वृतांत' (रू. भे.)

उ०—१ सोना ना दीठा दांत रे, जांणउ पूरव बिरतांत रे। अणसण लीधउ एकांत रे, बाघण पण थइ उपसांत रे।
—स. कु.

उ०—२ राजा स्यामसुंदर सारौ बिरतांत दीठौ। उवै उडीया पछै आ बोली, 'हिमै खबरि पडी ? ताहरां राजा कह्यौ 'खबरि पडी'। फिर कहण लागी, 'मथारै ने आविसौ'।
—स्यामसुंदर री वारता

उ०—३ आलो नु कहो अो कासु बिरतांत ? तद आली डर मा री बात सारी स्वांमीजी नुं कहि दीवी—जिण तरै मा कांमण कराया, आ नदी में नाखिया, सो सरब मालम कीवी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ कवरसी रथ सु उतर घोड़ै असवार हुवौ। घोड़ै नुं गजदा सुबाई, सो हाथ चाळीस-पचास उपर जाय खड़ौ। वरछो सिलार छै, सो तरल मारा देखता रह्या—जो अो कांसु बिरतांत? कुण छै?' —कुंवरसी सांखला री वारता

बिरता—१ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—भोल ही भगत थारै भला, कंयै ना मोआ करै। हुमां सत बूकि बिरता हुवै, थेरै काजि अवतरै। —पी. ग्रं.

२ देखो 'बिरक्तता' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया हिरमच लायकै, बैठे बिरकत होय। बिरकत

सोई जांणिये, विर्ल विरता सोय । —अनुभववांणी

उ०—२ अपनं केवलनांग सांमीय ए नेमि जिणेसरह ए, सांभली सांमि वखांण विरता ए सावयवतु धरइ ए । —सालिभद्र सूरि

विरति, विरती-स. स्त्री. [स. विरतिः] १ अन्तिम अवस्था, अवसान, समाप्ति ।

उ०—अवं त्वरयो अस्यो बकत नह व्यरथो अति यहीं, अयोनी योनी की विरति चित होनी रचि यही । —ऊ. का.

२ अन्तिम छोर, सिरा ।

३ देखो 'विरक्ति' (रू. भे)

उ०—१ विरति नहीं नहीं आंखडी, नही पोही सो नही आदरी दीख । तै पिण सेरिण करायनें, तै कीधो ही स्वांमी आप सरीख । —वृ स्त.

उ०—२ केइ उपाय करी मेलण करू, परिग्रह विविध प्रकार । विरति करूं पिण मन न रहै वलि, तौ किम हुवं भव पार (निस्तार) —ध. व. ग्रं.

४ देखो 'व्रति' (रू. भे)

उ०—नयतै निय सेन तणी नागद्रह, भारत भू भड़ विरती भीर । पग किम रावत परठै पाछा, जड़िया परियां तणां जंजीर । —रावत रत्नसिंह सिसोदिया रो गीत

वि.—५ क्रोधपूर्ण ।

उ०—जोधपुरी जुध जीपवा, गढ लेवा 'गजसाह' । विरती कोडी विळकुळे, रीसांणो रिमराह । —गु. रू. बं.

विरतीचख, विरतीचखु, विरतीचख-सं. पु.—मंत्री । (डिं. नां. मा)

वि. [स. विरत्त+चक्षु] लाल आंखों वाला, क्रोधपूर्ण आंखों वाला ।

विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी—देखो 'व्रतेस्वरी' (रू. भे.)

विरतौ—देखो 'विरत्तौ' (रू. भे.)

उ०—घर में मत खा फिरतौ घिरतौ, न कहै मरम बोलीजै निरतौ । तारू सुं मत तोड़ै तिरतौ, बडां रै कांम म थाए विरतौ । —ध. व. ग्र.

विरत्त—१ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—एक एक मुनिवर एहवाजो, सूत्र में कहियै निरत्त । संकल्प प्राथमियां पछे जी, उगियां पछे विरत्त । —जयवांणी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

विरत्तणौ, विरत्तबौ-क्रि. अ.—१ कुपित होना, क्रुद्ध होना ।

उ०—दिल्ली साह विरत्ते, रण अगाध जम्मण उपकंठे । रैणायर' रण मंडै, गौ दीवांण रांम खळ खंडै —रा. रू

२ पीड़ित होना, दुःखी होना ।

३ उदासीन, होना, खिन्नचित्त होना ।

उ०—'ईदौ परव परब आकाळो, भोज सुतन अनसाह भुजाळो । जैत सुआव जोत जगपत्ती, वधे लोब फिर बीज विरत्ती । —रा. रू.

विरत्तणहार, हारौ (हारी), विरत्तणियौ—वि० ।

विरत्तिओड़ौ, विरत्तियोड़ौ, विरत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरत्तीजणौ, विरत्तीजबौ—भाव वा० ।

विरत्ति—देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

३ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—जै कहै नौ कोरत्ति, त्यां वधे वसुं विरत्ति । निवाज सुं रयत्ति पत्ति, अस गज दिया पुरबर अत्ति । —मा. वचनिका

विरत्तियोड़ौ-भू. का कृ.—१ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ. २ कष्टमय हुवा हुआ, पीड़ित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ उदासीन हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ ।

(स्त्री. विरत्तियोड़ी)

विरत्ती—१ देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

३ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

विरत्तौ-वि. [सं. विरक्त] (स्त्री. विरत्ती) १ कष्टमय, पीड़ित, दुखी ।

उ०—चढि वेगौ चक्र धरि, करै कांई ढील करत्ता । गळौ वढै गाय रौ, वळै ब्राह्मण विरत्ता । —पी. ग्र.

२ क्रोधयुक्त, क्रुद्ध, कुपित ।

उ०—१ "गजबंधी" सोह विरत्ता, दखणी दळ भाजि विगूता । बालापुर महिवकर छोडै, दखणी दळ भागा होडै । —गु. रू. बं.

उ०—२ साह विरत्तौ मारवा, ग्राह जहो गज वार । जठै सुदरसण चक्र ज्यां, रिणमल्ला पणधार । —रा. रू.

उ०—३ बस वखांण झल्लणौ, वडुवाणी 'चुतरेस' । रत्तौ माहा जग कज, जांण विरत्तौ मेस । —रा. रू.

उ०—४ जोस भुजां दरसवै रोम वीरा रस रत्तौ । गजराजां ऊपरां जांणि म्रगराज विरत्तौ । —रा रू.

उ०—५ विरत्तौ वेग न कांइ विसाम, विढेवा राउ खडै वरहाम । खुरां रवि फीण उमटट्यौ व्यांणि. नंगोडै लागै लाल लगांणि । —राव जैतसी रो रासौ

३ उदासीन, खिन्नचित ।

रू. भे.—विरतौ, विरत्त, विरतौ, विरत्य, विरत्यौ, विरथौ ।

बिरथ-वि. [सं] १ बिना रथ का या रथ से गिरा हुआ ।

२ नगजय के पुत्र बहूरथ का नाम ।

३ देखो 'ब्यरथ' (रू. भे.)

रू. भे.—बिरथ ।

बिरथा—देखो 'व्रथा' (रू. भे.)

उ०—पदमण वाली पीवता, **बिरथा** कीदी वाद । छकिया मद री छाक रो, मनमि नहीं मवाद । हरख उजाली खिन हुवे, पीदा प्याली नेम । पीव बिनाली पिलन परि, वाली लागै वेस । —पना

बिरद—१ देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

२ देखो 'बिरद' (रू. भे.)

उ०—१ दळ-थभ तुझ दुवारि भंभारि घवळ तणा, घणां **बिरदां** लहण आविया धरि घणा । घणा नीदाळवा नींद वारी घणी, तुंग नह छै भली हीम थोहां तणी । —हा. झा.

उ०—२ गेगाक छाक दुरवल आघार, पावगां हत सांमा पधार । धति **बिरद** बहादर तव प्रबूज, तरवार बहादुर बिरद तूज ।

—वि. स.

उ०—३ पाछै गे ही नाहक का नाहर दरसावै, 'भीमाजळ' हाथ रघनाथ सा कहावै । जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के कंकण सा बिरद जिण पाया । —रा रू.

उ०—४ उभै काबिया **बिरद** 'जमराज' मगि ऊजळा, भुजां भारथ दिली भार भल्यिो । वाळियो वाक 'मोरग' सरिस वाजतै, बळै ही गुरडतै भाक-वाळियो । —नरहरदास बारहठ

उ० ५ गढ नींगतर बिरद प्रघागा, वरियावर कमधज दूध धागा । बागो गुन पुंज महाबळ कपासिघु जिण नाम प्रगुकळ ।

—सू. प्र.

बिरदघण, बिरदभल, **बिरदभलू**—वि —१ बिरुदधारी, यशस्वी ।

उ०—यह कामं।या जो हुकम सहकार रवाना होग, प्रवर जनेतिया जो माजन कीजियो महकोय । महकोय माजन करो मुभहा **बिरदभल** वांरधाग, कळ जनक हमरो ब्याह करसी रिघू वरमी राम । —र ह.

२ वीर, बहादर, योद्धा ।

उ०—याय हुई मम एकठी, कथ जेम कहाणी, **बिरदभलू** जगमाल री, पमरा कमनाणी । भली बापूकारनं, कथ ऐम कहांणी, गे गोजणिया स एकठी, घाई आपाणी । —वी. मा.

रू. भे.—बिरदघण, बिरदभल, बिरदभलू, बिरदाभलो, बिरदाभल, बिरदाभलो ।

बिरदधार, बिरदधारी, बिरदधारू—देखो 'बिरुदधारी' (रू. भे.)

उ०—१ लग प्रगट नृप मज तुटियै लाव, आ घात सुणत उन छूटियै प्राव । कर बंब निन कीनी पुकार, घाइयौ मा करनल **बिरदधार** । —रांमदांन लाळस ।

उ०—२ गांव दुघोड हुवौ राव स्रीरिडमलजी रै पुत्र वेरोजी हुवा, वेरोजी रै पुत्र रांमदासजी हुवा । गांव दुघोड़ रै खेड़ै थापना कोनी । वडो एक आस्वादमिध रजपूत हुवौ । **बिरदधारी** रजपूत हुवौ । —रा. सा. सं.

बिरदपगार-वि. [स. विरुद+रा. प्र. पगार=रक्षक] विरुद की रक्षा करने वाला, यशस्वी ।

उ०—जिम रावण भूंभार, कमधज रांमाइण करै । 'पाल' तणी बाहां प्रळंब, पडिमो **बिरदपगार** । —र. वचनिका

बिरदपत, बिरदपति, बिरदपती—देखो 'विरुदपति' (रू. भे.)

उ०—१ 'पतो' 'जगा' रो **बिरदपत**, 'वीरम' रो 'जैमाल' । केल पुरो कमधज दुहूं, हुआ चीत गढ ढाल । —बां. दा

उ०—२ पुंडरीक नभ पाटि **बिरदपति**, सुज पुत्र खेमधन्व वायक मति । देवांनीक तास पुत्र दीपम, सुर दातार अनीक तास सुत ।

— सू. प्र.

बिरदांभलो—देखो 'बिरदभल' (रू. भे.)

बिरदांणो-वि.—विरुदधारी, यशस्वी ।

बिरदाई—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

बिरदाभल, बिरदाभलो - देखो 'बिरदभल' (रू. भे.)

बिरदाणो, बिरदावो—देखो 'विरुदाणो, विरुदावो' (रू. भे.)

उ०—१ भड थका अवर न भागै भूपत, कवि **बिरदायं** बोहोत कथ । काढं कुण तो थिन 'केहरिया', रावत कवि खूंचियो रथ ।

—चतुरभुज बारहठ

उ०—२ चोपड रमता इमा समाचार मीयां रै नै महेचो रै हुवा । तरै महेचो चारण घर रो बुलायनै रामदासजी रै कनै मेलियो नै कयो, इसी तरै-**बिरदायनै** कहेजो वाद लाडु रै मीयां जुढण रै चोपड रमतो इसी बतळावण हुइ छै, सो जाणम् । —रा. मा. स.

बिरदाणहार, हारो (हारी), बिरदाणियो - वि० ।

बिरदायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिरदाईजणो, बिरदाईजबो—कर्म वा० ।

बिरदाधिप, बिरदाधपत, बिरदाधिपति, बिरदाधिपती—देखो 'विरुदपति' ।

उ०—हसी राघव वळ हाथ, ग्राह तणै माथै दियो । सदा रहो निज साथ, तार लियो **बिरदाधिपत** । —गजउद्धार

बिरदायक—१ देखो 'वरदायक' (रू. भे)

उ०—धांनस मुख जिके रसण गुण धारणा, पांण बचन तीखा

अप्रमांण। रांमकरण महड्ड रा रूपक, बिरदायक अरजुण रा वांण।

—रांमकरण महड़ रो गीत

२ देखो 'बिरुदायक' (रू. भे.)

उ०—नायका पाठडा हूंत आवे नहीं, लायका छदा री अतर लाहां। कोइक बिरदायकां मांय जाणे सुकव, वायका सायकां तणी वाहां।

—नवळजी लाळस

बिरदायोड़ो—देखो 'बिरुदायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिरदायोड़ी)

बिरद'ळ, बिरदाळो—देखो 'बिरुदाळो' (रू. भे.)

उ०—१ भगतवछल बिरदाळ तुम, जांनू दीन्हो खोय। मो बाहर धायो नहीं, बैठ रहे चुप होय। —गजउद्धार

उ०—२ सूरिजि चद्रमा मारिखा, बैठा छै बिरदाळ। खेतपाळ हणमंत खरा, कोटवाळ किरणाळ। —पी. ग्र.

उ०—३ बै भाई बिरदाळ, औरंगसाहि मुराद वे। हैवैपति भेळा हुआ, जुध मंडण जमजाळ। —र वचनिका

उ०—४ फैल क्रोध चममा कराळां आग झाळा फुणां, ताळा दे भुजाळा त्यूं गुपाळा तीरवांन। बिरदाळा मिधाळा अडाळा जोध चाळाबंध, जूटा बिहुं काळा नै बिचाळा जोरवांन। —र ज. प्र.

उ०—५ बिहूं कूरमा साथ बिरदाळा, जोध हजार बीस जरदाळा। त्रिह रावळ गहलोत भांण तड़, भीम हठो उग्रसेन महाभड़।

—सू. प्र.

उ०—६ पाघ तिहारा पांव मैं, रिड़मल भ्रा भट राळी। कियो छत्रपति रक नै, दियो राज बिरदाळी। —हिंगळाजदांन बारहठ

(स्त्री बिरदाळी)

बिरदावणो, बिरदावबो—देखो बिरुदाणो, बिरुदावो' (रू. भे.)

उ०—१ ईहगां घणो बिरदावियो, मारू अमलीमांण नूं। आपरो करे दोधो उतन, तरे राव मुग्ताण नूं। —सू. प्र.

उ०—२ जो घण दोहो सागड़ी, ह्वं बिरदावणहार। सोगाळो बळ सोगुणो, जाणावं जिण वार। —बां. दा.

उ०—३ धूंणे सिर पकड़े धरा, असह सहे जे भार। बौहळिया बिरदाविया, गरज सरे नह तार। —बां. दा.

उ०—४ रात रै हाथ लाहोरी वबाण री छै। बडी खपरियां रा तीर च्यार तो मूठ में छै और तरकस दोय होदा में छै। राव राजपूता नूं बिरदावे छै, ललकारे छै, सो घोड़ा रा सवार हाथी मूं पांवडा बीस तीस अगल बगल ऊभा छै। —डाढाळा सूर री बात

उ०—५ रट्टौड़ रूप राए दीनो, सुरतांण नाम दळथमण। हिंदुवै मुसळमांणो, बिरदावियं जोध बिरदैता। —गु. रू. ब.

बिरदावणहार, हारो (हारी), बिरदावणियो—वि०।

बिरदाविओड़ो, बिरदावियोड़ो, बिरदाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिरदावीजणो, बिरदावीजबो—कर्म वा०।

बिरदावळी—देखो 'बिरुदाळी' (रू. भे.)

बिरदावियोड़ो—देखो 'बिरुदायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिरदावियोड़ी)

बिरदूं—देखो बिरुद' (रू. भे.)

उ०—दातार मूरूं राजू का पुत्र जैसे प्यारे। सूंबूं कायर राजूं को त्रिल जैसे खारे। राजसभा के भूखण दिल के उदार। बिरदूं के भारे समसेर बहादरूं के समसेरूं के चितारे। —सू. प्र.

बिरदेत—देखो 'बिरुदैत' (रू. भे.)

उ०—१ दिपै चढ भूपत तांम दुबाह, रिड़म्मल तांम चढै अरिगाह। 'बुधो' चढ तांम दळां बिरदेत, 'सहण' चढै अरि भांज सचेत।

—सि. सु. रू.

उ०—२ कायरा चेत उड प्रेत जोगण किलक, उप्रवट भूभट बिरदेत अडिया। 'जेत' हर जीत पाई समर जीतियो, पांच अर घसी जुधखेत पड़िया। —तिलोकदांन बारहठ

बिरदै—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—दूदसिंघ दक्खण थी आयो, साथ लियो कर तोल सवायो। रांणसुतण बिरदै समराथै, संग गयो पहुंचावण साथै। —रा. रू.

बिरदैत,—देखो 'बिरुदैत' (रू. भे)

उ०—१ वेताळ वीर आगै बधै, चालै भूचर खेचरा। बिरदैत पेखि वंदण भणै, जैत जैत जोधांहरा। —रा. रू.

उ०—२ चगाळ फूलंत खेलन चौघार, प्रह फट्टिय चढ मुंहां पधार। बिरदैत कोड़ि करमेत बंस,, साखैन जैत जू वीर संस।

—मा. वचनिका

उ०—३ 'अभावत' क्रोध सभै अणथाह, मिधां धरि साधक व्है मिध साह। दळां निजहूंत वधै बिरदैत, खळा मभि हाकळियो पखरैत। —सू. प्र.

उ०—४ बाप इना बिरदैत छळि, धरि कुळी छतीस माँह। चाल्या स्वामि समांणसा, मउ मांगाम मावैन। —म. वचनिका

उ०—५ साखेना मुहडा सामतां, बिरदैता जोधा वळवंतां। 'गाजीसाह' सिरै गैमता रांणो-राणा मिळै रावता। —गु. रू. ब.

बिरद्—देखो 'बिरुद' (रू. भे)

उ०—१ धेन पूज सुर धेन, बिमधु चरणाम्रत बंदां। धनुख मांण न्रप कळप, संख जस मद् बिरद्दां। —रा. रू.

उ०—२ सुकवि देख संभरे, कोड़ उच्चरै बिरद्दां। रीत 'अजन' राठौड़, जोड़ लम्बि हद् समंदां। —रा. रू.

उ० —३ मुत बांधळ ढाल बग्र नहीं, नटबा राय तुझ बिरद नही। भुगनं दूस बाद थयो माहयो बिरदाबोय 'ताल' बनो बाडया।
—पा. प्र.

उ०—४ जोधां गाकमै जरद गंगला उमारे मद बांहाळो बाटै बिरद मरदां मरद। रिमा ध्यागं थ:रे रद, बहू लिये मू मबद, होदू गेहद बिहद जद जद जद।
— न पि.

बिरध— १ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

उ० – १ बिरध बधाई नांव, ममूरथ माम सगाई। ब्याह बिनायक बेळ, महोछब मेळ बिदाई। पूजा पाठ निराठ, बरै बनमाळा मांबी। जागण रातीजगा, दगूटण दायजां चोखी।
— दसदेव

उ० —२ आला-गीला बांस कटा र बंबरी रा गीत गा दिया। बी दिन ही बिरध ग्रर बी दिन ही बनोरी, बी दिन ही मान ग्रर सागी दिन ही ग्रमांरो।
—दसदोख

उ०— ३ भैरव काळा ग्रोर भैरव गोरा ग्रो बेगंरो ग्राव। तो बिन ग्रो भैरव तो बिन बिरध न होवसी। जो तो बिन ग्रो भैरव ग्रो बिन बनोई न होय।
—लो गी.

२ देखो 'बिरद' (रू. भे.)

उ०—१ ग्राखी दुनिया म्हारी बाता सुगने माथो धूणं रीझै। जगो जगो म्हारो बिरध बखाणै। सुण-सुणनै कायो व्हैगो। नांमन सूं ग्रोख्या बैठगो। पण ग्रबै जायता बाग रा सिरै मरम नै मावळ समझ्यो।
—फुलवाडी

उ०—२ एक फिरत लनकं ठरव, गनि जग बिरध बिमोह। नटपट्टी दीसै निपट, घटो पलट्टी मोह।
—रा. रू

३ देखो 'बिरुद्ध' (रू भे)

४ देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)

उ० १ बिरध जिता उहां दारण बन, नहां रिखो रग नगोधन तन।
—रामरासो

उ० – २ जु धनो गणो बिरध छै दण रे सेवा करण वाळो कोइ नही छै।
—पचदडी री वारता

उ०—३ पेर कुवर री राणी नं फुरमायो—जे राज रो काम कुण चलावसी, राजा तो बिरध हुवा। कुंवरजी री प हुई दंपाळदे बाळक छै। राज राखणो छै तो ग्रापनै बिराजणो छै।
—गलक दरियाव री बात

बिरधा—देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे)

उ०—बालपणैं नहो भतियो, तन तरणापो थाय। जनहरिया बिरधा भयो, भजू न गोविंद गाय।
—ग्रनुभववाणी

बिरधापण, बिरधापणो—देखो 'ब्रद्धता'।

उ०—सरधा घटगी सेग, बेग बिरधापण बढ़ियो। निकळण रो रथ नही, कळण ऊंडी में कळियो।
—ऊ. का.

बिरधि, बिरधी—देखो 'व्रद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ कनक दान कुरखेत बिरधि, गुणि वासुर-वासुर। सुबुध वधै सतसंग ग्यांन गुर वांणि उजागर।
—रा. रू.

उ०—२ म्हैं तो ग्रांगण गार गिलोवस्यां, म्हारी बिरधी रा कोडा। चोखो रै मादळ घुळ रह्यो, रग रातो रै मादळियो, थारो रै सबद सुहावणो।
—लो. गी.

बिरबोर—देखो 'बराबर' (रू. भे.)

बिरम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

२ देखो 'वरम' (रू. भे.)

बिरमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

बिरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

बिरमणो, बिरमबो—देखो 'बिलमणो, बिलमबो' (रू. भे.)

बिरमणहार, हारो (हारी), बिरमणियो—वि०।

बिरमिग्रोड़ो, बिरमियोड़ो, बिरम्योड़ो – भू० का० कृ०।

बिरमोजणो, बिरमीजबो—भाव वा०।

बिरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे.)

उ०—बांणिया रो धरम वधावै ग्रर बिरमपुरी सराध खावै है। ग्रा बात ग्रांतरै ताई जावै, ज्यूं बाहरला बांमण ग्रठैरा टाबरां बेटां नै ग्रापरी बेटी देवण ग्रावै है। जांणै मोठो पांणी ग्रर मोकळी बिरमपुरी, ग्राटो मागं जकारै ही हजार धूवां री वसती है, भानै नै सेर मात पनको घरां लेय र बई है।
—दसदोख

२ देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे)

उ० —दोनूं मिळ' र बात करै, वेगराजजी रा बेटा-पोता सुणै है। वेगराजजी बाजतो हो! साल में एक बिरमपुरी किया करतो, सेठ नाव धरावतो, ग्राया गया जिमावतो।
—दसदोख

बिरमांड – देखो 'ब्रह्मांड' (रू भे.)

बिरमांणी —देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ० —पोलूड़ा पुरसाद देवै, भाड़ो लेवै बाळका। बिरमांणी धिरांणी जाणी, जाळां जूनी काळका।
—दसदेव

बिरमा -देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ ग्रो तो गहरो गहरो बिरमाजी रो छावो वालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाब रो। ग्रो तो गहरो गहरो नणदळ बाई रो बीरो वालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाब रो।
—लो. गी.

उ०—२ उण कुमार नै ग्रापरै खांमखोपणा रो तो ग्रणूंतो मोद हो। वो ग्रापरी घरवाळो नै केई वेळा कैवतो कै बिरमाजी नै ग्रेकर इण दुनियां रा जीव जिनावर, पंखी ग्रर मिनख घड़तां देखलूं तो वो

दूजं दिन ई वांरी हूबोहूब सांचो उतार दं। —फुलवाड़ी

उ०—३ इड कमंडळ बिरमा दीनो, सदासिव दीनो झारी। भगवा वसतर विसनु दीना, विचरौ विरमाचारी। —प्रयात

बिरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

उ०—इड कमंडळ बिरमा दीनो, सदासिव दीनो झारी। भगवा वसतर विसनु दीना, विचरौ बिरमाचारी। —प्रयात

बिरमाणौ, बिरमाबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

बिरमाणहार, हारौ (हारी), बिरमाणियौ—वि०।

बिरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरमाईजणौ, बिरमाईजबौ—कर्म वा०।

बिरमायोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री- बिरमायोड़ी)

बिरमावणौ, बिरमावबौ—देखो 'विलमाणौ, बिलमाबौ' (रू. भे.)

बिरमावणहार, हारौ (हारी), बिरमावणियौ—वि०।

बिरमाविश्रोड़ौ, बिरमावियोड़ौ, बिरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरमावीजणौ, बिरमावीजबौ—कर्म वा०।

बिरमावियोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिरमावियोड़ी)

बिरमियोड़ौ—देखो 'विलमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिरमियोड़ी)

बिरमौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का प्रोढने का वस्त्र, दुसाला।

उ०—मारत, रै नं वीरा, भावज ओढाया, म्हांनै घणमोला री चूनड़ी जे। सुसराजी नै, वीरा, बिरमौ ओढाय, सासूजी नै साड़ी सांपड़ जे। —लो. गी.

२ देखो 'बरमौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बरम' (रू. भे.)

बिरम्म—देखो 'बरम' (रू. भे.)

उ०—घरारी वाहर कोप घियांन, बिरम्मां वेढि नगं वरदांन। भमाड़े रड़ा भारथि भल्ल, रांयां राउ जोध प्रनै रिणमल्ल।

—राव जैतसी रो रासो

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

बिरयां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिरियां' (रू. भे.)

बिरळ, बिरल, बिरलउ—स पु.—१ सूर्य, सूरज। (ना. डि. को.)

२ देखो 'विरळौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अंधकार फोटउ। गाय तणा गाला छूटा, तारागण बिरल हुउ, चंद्रमा विछाय थिउ। कूकड़ां तणी उलि लवइ देव तणा बार ऊघडिया, प्राभातिक तूरय वाजियां। —रा. सा. सं.

उ०—२ को बिरलउ तुम आदरइ, छांडइ सहु संसार। एक आपनं भाजतउ, बीजा भांजइ च्यार। —स. कु.

उ०—३ बिरलउ पुण्यवत कोइ साहु बेटा, रिद्धि तणउ समदाय। धरमवत विनयवत होइ, भविय कुड़ंबउ भणीइ सोइ। —वस्तिग

बिरळणौ, बिरळबौ—क्रि. स.—१ तहस-नहस करना, नष्ट करना।

२ आकर्षित करना।

३ पथभ्रष्ट करना, गुमराह करना।

४ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अंग कभी ऊपर और कभी नीचे करना।

५ चीरना, फाड़ना।

६ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर और ऊपर वाला भाग नीचे करना, नीचे ऊपर या ऊपर-नीचे करना।

७ अस्त-व्यस्त करना, इधर-उधर करना, बिखेरना।

क्रि. अ.—१ तहस-नहस होना, नष्ट होना।

२ आकर्षित होना, मोहित होना।

३ पथभ्रष्ट होना, गुमराह होना।

बिरळणहार, हारौ (हारी), बिरळणियौ—वि०।

बिरळिश्रोड़ौ, बिरळियोड़ौ, बिरळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरळीजणौ, बिरळीजबौ—कर्म/भाव वा०।

बिरळणौ, बिरळबौ, वरळणौ, वरळबौ—रू. भे.।

बिरळाणौ, बिरळाबौ—क्रि. स.—दिखाना।

उ०—भायं भळहळिया भुरटां रा भारा, अघ अग ऊलळिया उरगा रा आरा। बिरळा दाना री पाना बिरळातो, चोड़ै चाचर री चौड़ै बिरळाती। —ऊ. का.

बिरळाणहार हारौ (हारी), बिरळाणियौ—वि०।

बिरळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरळाईजणौ, बिरळाईजबौ—कर्म वा०।

बिरळाणौ, बिरळाबौ, बिरळावणौ, बिरळावबौ, बरळाणौ, बरळाबौ, बरळावणौ, बरळावबौ, बिरळावणौ, बिरळावबौ—रू० भे०।

बिरळायोड़ौ—भू. का. कृ.—दिखाया हुआ।

(स्त्री, बिरळायोड़ी)

बिरळावणौ, बिरळावबौ—देखो 'बिरळाणौ, बिरळाबौ' (रू. भे.)

बिरळावणहार, हारौ (हारी), बिरळावणियौ—वि०।

बिरळाविश्रोड़ौ, बिरळावियोड़ौ, बिरळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरळावीजणौ बिरळावीजबौ—कर्म वा०।

बिरळाबियोड़ो—देखो 'बिरळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिरळाबियोड़ी)

बिरळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ तहस-नहस हुवा या किया हुवा, नष्ट किया या हुवा हुवा. २ आक्रान्त किया या हुवा हुवा ३ पथ-भ्रष्ट किया या हुवा हुवा. ४ गुमराह किया या हुवा हुवा. ५ चौरा या फाड़ा हुवा. ६ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीज या वस्तु का कभी ऊपर और कभी नीचे किया हुवा ७ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर व ऊपर वाला भाग नीचे किया हुवा. ८ अस्त व्यस्त किया हुवा, इधर-उधर किया हुवा, बिखेरा हुवा।

(स्त्री. बिरळियोड़ी)

बिरळ, बिरलु, बिरळौ, बिरलौ—वि. [सं. विरल] १ जो बहुतायत में नहीं मिलता हो, थोड़ा, कम, दुर्लभ।

२ जिसके अंग आदि पास-पास न हों, घना न हो, सघन का विपर्याय।

उ०—आगै भळहळिया मुरड़ां रा भारा, अब अंग ऊजळिया उरगां रा भारा। बिरळा दाना री नाता बिरळाती, चोड़ै चावर री चोड़ै बिरळाती। —ऊ. का.

३ गाढ़ा का विपर्याय, पतला।

४ जहां कोई नहीं हो, निर्जन, शून्य।

५ जहां कुछ भी नहीं हो, खाली, रिक्त।

६ सैकड़ों हजारों या लाखों में से एक, कोई एक, अद्वितीय।

उ०—१ जैसे सरणागी करम कुहाड़ा, बधीया जगत जगत खाई। थोटा बार गहया सोई जीता, यं बिरळा बन जाई।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ कारज दिखा कर बरसणा, पर काज मेहा-मिट्ठ। दिस-सुरा जग बल्लभा, सो मैं बिरळा दिठ। —पवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दादू पखा पखी संसार सब, निरपख बिरळा कोइ। सोई निरपख होइगा, जाकै नाम निरंजन होइ। —दादूवाणी

उ०—४ जाइजो रे समकित नो परमायो रे, जिन मारग नै चाखो सोभ रे। इसड़ी ममता केई बिरला करै रे, जीतवा सुं मोह असणा नै लोभ रे। —जयवाणी

उ०—५ अरध उरध मैं कीया गमागा, जाणै बिरला जोगं। मन पवना पछिम की घाटी, आपा आव नरोगं। अनुभववांणी

उ०—६ सोकह नवि संगति मिलइ, हरख बरइ नवि जाइ। हरख-सोग-समचित तै, बिरला जगत माई। —मा. का प्र.

रू. भे.—बिरळौ, बरळ, बरलु, विरळ, विरल, विरलउ।

बिरवड़, बिरवड़ी—देखो 'बरवड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ बिरवड़ मात रमत बाया में, बरवड़ मात चढाई। थणीं खमा राजा नोघण री, जानी फौज जिमाई। —मे. म.

उ०—२ आवड़ बिरवड़ चाहण चाळक, मारी सकति सहाय। अमरा व्रद सदा प्रतपाळै, मेहाई महमाय। —राघवदास भादो

बिरस—वि. [सं.] १ जिसमें रस न हो, स्वाद या जायके रहित, रसरहित।

उ०—१ जिन मारग मे अनुरताजी, अरस नैं बिरस आहार। तक तक घर जावै नहीं जी, तप कियो न करै जहार —जयवांणी

उ०—२ अरस बिरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पंच आहार। ए जीमी जीवं मुनि, धन मोटा अणगार। —जयवांणी

२ कष्ट, पीड़ा सन्ताप।

३ प्रेम या प्रीति रहित, अनुराग रहित।

उ०—पातर वाळो प्रीत, गीठी लागै प्रथम मन। मंद हुआ धन मीत, हुए बिरस कारवी हुवै। —बां दा.

४ रति-क्रीडा से विरक्त, काम-केलि से दूर या विषय-वासना रहित।

५ उमंग रहित, जोश या उत्साह रहित, मनोवेग का अभाव।

६ मीठास का अभाव, कड़वाहट।

७ रक्त हीन, रुधिररहित।

८ तरलता रहित, आर्द्रता रहित, शुष्क।

९ गुणों का अभाव या तत्वरहित, सार रहित।

१० नाराज।

उ०—अकस नगरा भांनरो छै, सु राणाजी नुं कहाडिया, राजा मानसिंह सुं मन मिळो थो तकरा भाव रो घररो छै। रांणो वरजियो रयो नहीं। आप मिळियो। मैहमांनी करी। जीमण रगा बिरस हुवो तद मांनसिंह दरगाह गयो। —नैणसी

११ शत्रु, दुश्मन।

उ०—संमत १६६२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैसिंघ बाघोतरै दावै हमीर भाटियां ऊपर दोड़िया हुता। तिण दिन राव सूरजसिंघ नै कवर बलू बिरस हुवो थो, सु बलू विकपुर में छाडनै कोरड़गार री पातनी आयो थो। —नैणसी

१२ कलह, झगड़ा।

१३ जो अच्छा न लगे, अरुचिकर।

१४ चिन्तातुर, चिन्तामग्न, उदास।

उ०—पाधारै नृप जोधपुर, गढ चाढिया कमध। आप बिरस हुए चीतियो, धरा नहं दिस धध। —रा. रू.

१५ जो दयालु न हो, निर्दय।

१६ निष्ठुर हृदयहीन।

१७ पीड़ाकारक, कष्टप्रद।

सं. पु.—रीस, क्रोध।

उ०—रांमसिंघजी गाडा नवहर सै जाइ राखिया । कुंवर रिणी सिधाया । तिसड़ै सै वांसै सीरोही राजाजी कन्हा सुरतांण प्रिथी-राज पणि बिरस करि घरे आया । घरे आइ रहिया । —द. वि.

रू. भे.—बिरस, बिरसाळो, बिरसालो ।

बिरसपत, बिरसपति, बिरसपती - देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

बिरसाळो, बिरसालो-वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—ग्रोप साह ऊहड ग्रभंग, कमधज करिणाळा । हाथ जोड हरजी हसै, साहिब बिरसाळा । —पी. ग्र.

२ देखो 'बिरस (रू. भे.)

उ०—सभालो त्यं वडां सोह, सुचालो कलत्त मुत्त, क्या करै ककालो नालो ग्रनालो कपूत । वांणी कै रसाली वदै बिरसालो एका बात, कलो कालि उजवालि ग्रापरी करतूत । —ध. व ग्रं.

(स्त्री बिरसाळी, बिरसाली)

बिरस्पत, बिरस्पति, बिरस्पती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

बिरह-सं. पु. [सं.] १ संयोग का ग्रभाव, वियोग ।

२ विच्छेद, ग्रलगाव ।

३ दो प्रेमियों के ग्रलग-ग्रलग होने की ग्रवस्था, जुदाई ।

उ०—१ मैं कीधी सांचै मतै, नायक तोसं नेह । बरा ग्रावै सो देह चित, दाह बिरह मत देह । —बां. दा.

उ०—२ बिरह पीर तन भीतरै, पलक न बिसरी जाय । जनहरिया हरी कारणी, नैणां नीझर लाय । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ रोम रोम मैं बिरह की, बिथा बियापी एक । जनहरिया कैसै कटै, ग्रोखदहार ग्रनेक । —ग्रनुभववांणी

४ उक्त वियोग या जुदाई से उत्पन्न मानसिक कष्ट, दुःख या पीड़ा ।

उ०—१''''''काळ रा नेवर पद्मरिग्रां, केळिग्रभ वंदण री छूंडो रतना री रासि, ग्रंधारै रो ग्रादीत; ग्ररस री ग्रभरी, मरग री झांप, बिरह रो समूह रूप रो निधान, थाका हंस री टोळी, निवाये री होळी, घणे हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराजमान होइ नै रही छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ बैर मही तोटो वसै, वसै नफो नह 'बंक' । सिया बिरह राघव महघो, रावण पलटी लंक । —बां. दा.

उ०—३ जद सुध ग्रावत पीव की, बिरह उठत, तन जाग । ज्यूं चूने की कांकरी, जद छिड़को तद ग्राग । —ग्रग्यात

उ०—४ वडारण कन्है बैठी थी, सो दिलासा दीवी । सो मरमल नं तो सारी वात वीसर गई । जीव तो कुंवरजी कन्हैं गयो, देह पड़ी छै । सो इसो बिरह ऊठीयो, सो राखीयो न रहै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

५ ग्रनुपस्थिति, गैरहाजरी ।

६ छोड़ने की क्रिया या त्याग ।

वि.—१ तप्त, गर्म ।* (डिं. को)

२ बिना, रहित, हीन ।

देखो 'बिरहौ' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू भे.—बिरह, ब्रह, बरह, बरहू, बिरहि, विह्र ।

बिरहण, बिरहणि, बिरहणी-सं. स्त्री.—वह स्त्री या प्रेयसी, जो ग्रपने पति या प्रियतम से ग्रलग या दूर हो ।

उ०—१ पाजे पांणी न थांहरै, थरहर कंपै देह । हाथ सुंहाळी मारवण, बिरहण, पाडै तेह । —ढो. मा.

उ०—२ सहियां सोइ बिदेस पिव, तनहि न जावै ताप । बाबहिया ग्रसाढ जिय, बिरहण करै विलाप । —ग्रग्यात

उ०—३ कबहूं नैन निरख नहि देखै, मारग चितवत तोर । दादू ऐसैं ग्रातु बिरहणि, जैसैं चद चकोर । —दादू बांणी

उ०—४ माती खेती पाती नीपनी काती मास, कातीय बिरहणि छाती में काती वहै नहीं जास । दीप दीवालीय वलिय सुहालिय मैं पकवांन, खलक रचै पिण मूझ नै न रुचै खांन नै पांन ।

—ध. व. ग्रं.

उ०—५ बाबहियउ नइ बिरहणी, दुहुवां एक सहाव । जब ही बर-सइ घण घणउ, तब ही कहइ प्रियाव । —ढो. मा.

उ०—६ तिणि वाउ कमळ था मु बाळि इसा कीया जु । जिसी बिरहणी को मुख । ग्रांब था सु इसा कीया जिसो संजोगिणी को उरस्थळ । —वेलि टी

वि.—जो ग्रपने प्रिय या पति से ग्रलग या दूर हो ।

रू भे.—बरहण, बरिहण, बिरहण, बिरहणी, बिरहन, बिरहनी, बरहण, बिरहन, बिरहनि, बिरहनो, बिरहिण, बिरहिणि, बिरहिणी, बिरहण, बिरहणि, बिरहणी, बिरहण, बिरहणि, बिरहण, बिरहणि, बिरहणी ।

बिरहणो, बिरहबो-क्रि. ग्र. [सं.] १ वीरा जाना, विदीर्ण किया जाना ।

उ०—मैं कांमी कपटी क्रोध काया मे, कूप परत नहि डरतै । कर-बत कांम सीस धर ग्रपनै, ग्र'पहि ग्राप बिरहतै । —दादूबांणी

२ संयोग का ग्रभाव होना, वियोग होना ।

३ विच्छेद होना, ग्रलग होना ।

४ दो प्रेमियों का ग्रलग-ग्रलग होना ।

५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट होना ।

६ छोड़ना, त्यागना ।

बिरहणहार, हारौ (हारी) बिरहणियौ—वि० ।

बिरहियोड़ो, बिरहियोड़ौ, बिरहयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिरहीजणौ, बिरहीजबौ—भाव वा० ।

बिरहुन, बिरहुनि, बिरहुनी —देखो 'बिरहुग' (रू. भे.)

उ०—१ मैणां मीभर लाविया, इह तन दाझै मास । हरिया बिरहुन राम कुं, एक न विसरै सास । —अनुभववाणी

उ०—२ उन्मनित होयरी करि पपीयरो, करत प्रिय प्रिय सोर । बिरह मई पीगे मनि मधीरी, हरत बिरहुनि जोर । —वि. कु.

उ०—३ बिरहुनि तेरी प्राण झुरत है, दाधी बेलि सिंचाई । मीरा को प्रभु दरसन दीजे, प्राण रह्यो मरणाई । —मीरा

उ०—४ बिरहुनी ऊभी बरच मुं, मबला सूं क्या मांग । कै मिलिहो कै तन तजुं मुलिहो कन सूजाग । —ह पु वा.

उ०—५ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नहीं भरि सोय । राम बिसूरै बिरहुनी, मांसु कर सूं धोय । —मनुभववाणी

बिरहमण —देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—चोपदार की मारफत रुघनाथसिंह से मिळने का इरादा किया, उसने साल भर पहले मौरत के मरने की मातमी का बहाना लिया । नेक वगत एक बिरहमण ने स्यांम को मरज गुजराई, है तो मिळण कै लायक मेक कारण गुजराई । —दुरगादत्त बारहठ

बिरहमांत, बिरमांन —देखो 'बिहरमांण' (रू. भे.)

बिरहामण —देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

बिरहाग, बिरहागन, बिरहागनि, बिरहाग्नि—सं. स्त्री [सं. विरह+अग्नि] बिरहानल ।

उ०—१ व्यथा बिरहाग वियोग बिहाय, मबागत मान संयोग सहाय । मनाग्रह भुल्लित भांन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय । —ऊ. का.

उ०—२ बिलोचना कुमरी तिण वार, दुख सपूरित हृदय मझार । दुखणी दुग भरि करै बिलाप, प्रीय बिरहागनि तन तनाप । —वि. कु.

उ०—३ पीहर तो परतटै रहिया, प्रीतम बिरहागनि दहिया । प्रमदा दणि परि बिलखती, दुख रोई राति गलती । —भीपाळरास

बिरहानळ, बिरहानल, बिरहानलि—सं. स्त्री. [सं. विरह+अनल] बिरहाग्नि ।

उ०—१ काळी काठळ में दामणियां चमकी, चित मैं कामणियां बिरहानळ चमकी । छूटी माभारा कासारां छिलती, पइनी परनाळा पहुंची पिलपिलती । —ऊ. का.

उ०—२ जेठ दोहाड़ा जेठ ना, लागइ ताप मबाहो जी । बिरहानल तपइं दियउ, प्रियु तुम चंदन बांहो जी । —वि. कु.

उ०—३ दिन सुद्ध प्रणमु नेमि जिनेसर परमदयाल । रोक्या जीव तै मूक्या तोरण थी रथ वाल । राजिमति सती नेह वस किय विविध बिलाप, तो पिण तसु तणु नाह नवरो बिरहानल ताप ।

उ०—४ जे जळ सीकर, ते उद्वेग कर । जउ सीतलोपचार, ते करइ विकार । इति परि प्रजवलित, स्नेह पटल, बिरहाळ नीपजइ । —रा. सा. सं.

उ०—५ दवदंति बिरहानलि हा तलि नडिय अपार । प्रिय मेलउ केतै वासरै, भामरै वडिय ससारि । —जयसेखर सूरि

रू. भे.—बिरहानळ, बिरहानल ।

बिरहाळी, बिरहाली—सं. स्त्री.—सौंफ, शतपुष्पा ।

उ०—१ जायफळ लांग इळायची मिरच बिरहाळी मजुं नागकेसर मगरटटी नज तमालपत्र तंबोळ प्रत संधी । मौर ही ममाला मंगायजै छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ लाभइ खांड तेल नइ मिरी, करइ मालणां लाभइ सुरी । मजमा जोरां लाभइ बहू, वेसण बिरहाळी लइ सहू । —कां. दे. प्र.

बिरहि—देखो 'बिरह' (रू. भे.)

उ०—१ त्यांहां जई तेहनि बिरहि लगाइं प्रीत करि यम नारि । गुण मोसीकल थायि नहीं, राई, विक तेहनु मवतार । —नळाख्यांन

उ०—२ वीणा एक महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पचम राग । तरुणी तरुण बिरहि जण दूनरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग । —वेलि

उ०—३ बिरहि बिरागीय तणा मझारि, जाईउ मणि झायइ । लवणिय तुवणु रूपरेह तां मालिहि जाइ । —सालिभद्र सूरि

बिरहिण, बिरहिणि, बिरहिणी—देखो 'बिरहणी' (रू. भे.)

उ०—१ रूप सुरगा सांवरो, मुख निरखण जावां । मीरा व्याकुळ बिरहिणी, मापनी कर ल्यावां । —मीरा

उ०—२ मारति तेरी मतरी मेरै, मावो मपनी जांण । मीरां व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्राण । —मीरा

उ०—३ मान ममोहा-माहिं घर हँस तणइ जिम गग । हूं बिलपती बिरहिणी, स्वामि ! म छंडिसि संग । —मा. का. प्र.

उ०—४ 'को बिलवती बिरहिणी, थाणी मन्मथ धाय । ससिहर नट साहमु निखो, निह देलाडइ कांय । —मा. का. प्र.

बिरहियोड़ो—भू. का. कृ.—१ चीरा हुमा, बिदीर्ण किया हुमा. २ मयोग का मभाव हुवा हुमा, बियोग हुवा हुमा. ३ विच्छेद हुवा हुमा, मलगाव हुवा हुमा. ४ दो प्रेमियों का मलग-मलग हुवा हुमा. ५ उक्त जुदाई मे मानसिक कष्ट हुवा हुमा. ६ छोड़ा हुमा, त्यागा हुमा ।

(स्त्री. बिरहियोड़ी)

बिरही—वि. [सं.] १ जो मपनी पत्नी या प्रियतमा से मलग या दूर हो या मलग या दूर होने के कारण दुःखी हो ।

उ०—१ ताम थयौ प्रारंभ रै थंभ जिसा रे तरुवर पालवै रे। दुखियां नै दुरलभ रे, बिरही लोकां रै होयई सालवै रे। —वि. कु.

उ०—२ सूरज ना किरन पच्छिम ढळया। पथी सगा नइ मिल्या। बिरही ना हीया बळया, गोवाळ घरै वळया। चौपूं लाव्या, प्राप आपना घरै आव्या। —रा. सा. स.

उ०—३ हाथे न लेवइं वस्त्र। आधा प्रोढ़ै वस्त्र। लोक सीसिम्राट करइं, चौपूं उछरइ, ताढइ न वरइं। धूजै बाळगोपाळ, बिरही मां पड़इ हवाल, सहु बैठा चोसाळ, साबव्या देहुरा नइ पोसाळ, एहबौ सीतकाळ। —रा. सा. सं.

२ कठोर। (डिं. को.)

३ देखो 'बरही' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू. भे.—बिरहो।

बिरहोबीर-वि.—बीरों में बीर, महावीर।

सं. पु.—श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम। (नां. मा.)

बिरहुण, बिरहुणि, बिरहुणी—देखो 'बिरहणी' (रू. भे.)

उ०—गिरि गिरि वाधइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास। मंडइ मोर कला घणी, बिरहुणियां-तन त्रास। —मा. कां. प्र.

बिरहोत्कंठिता-स. स्त्री. [सं. विरह+उत्कंठिता] विरह से व्याकुल वह नायिका जिसे अपने नायक के आने का पूरा-पूरा विश्वास हो किन्तु वह किसी कारणवश न आ सके।

बिरहो—देखो विरह' (रू. भे.)

उ०—१ प्रायै छोरू न लहै सार, मावीत्रा नी किण ही वार। पिण मावीत्र तपै दिन-राति, पांणी वल बिरहो न समात।
—वि. कु.

उ०—२ प्रधिको बिरहो प्रंग में रे लाल, तै किम दूरै थाय है सहेली। जमवारो जल मैं वसै रे लाल, चकपावि अगन उल्हाय है सहेली। —ध. व. ग्र.

उ०—३ संजोग रो विजोग पड़ जावै। सारीरिक मांनसिक दुख ऊपजै। अठै भगवांन मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुखां रो कदेइ बिरहो पड़ै ईज नहीं। ए स्वामीजी रा वचन सुणनै संतोस थाय गयो। —भि. द्र.

उ०—४ बिरहो मो दाहै सदा, कासूं करु पुकार। प्रीतम प्रब कोजै क्रपा, लीजै हाथ पसार। —कुंवरसी सांखला री वारता

बिरांण—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

उ०—१ उण धूमर क्रोध भळा ऊफळी, प्रड़िया असुरांण प्रचार प्रळी। सयदांण जूवांण बिरांण सजं, गुमरांण उफांण प्ररोह गजं। —सू. प्र.

उ०—२ बिरांण मीर प्रोठा विलख, नीसांण फील दीठा नरिंद। घरहड़ै कोप घरवड़ धूप, भुज झड घड़ै ब्रहमंड भूप। —वि. सं.

२ देखो 'बीरान' (रू. भे.)

बिरांणी—१ देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

२ देखो 'विडाणी' (स्त्री.) (रू. भे.)

उ०--सुणबाला, इक रंग पोढती कठ लगांणी, जागी जजकां नैण बिलखता नीर भरांणी। पूछंतां, मुळकाय कहया ये बोल सयांणी। छळिया! पेख्यो तूझ विलमणी नार बिरांणी। —मेघ

बिरांणौ—देखो 'बिडांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ हीर चीर हेम तार घड़ी मैं बिरांणा होसी, लाखां द्रव्य विभो सबै हाथी घोड़ा लांठ। गाम धाम झूठा जाणै धंधै झूठा लागा नरा, गार रा मिरग रै पड़ी वायरा री गांठ। —ग्रोपो आढो

उ०—२ लाणां पीणां खरचणां, प्रौर न चालै सथ। जसवंत धर पोढावियां, माल बिरांणा हथ। —महाराजा जसवंतसिंह

उ०—३ वपु माया नै जांण बिरांणी, पांव न धर खोटी दिस प्रांणी। रघुवर साचौ दास रसांणी, बोल 'बकसिया' प्रमरत वांणी।
—बकसीरांम लाळस

(स्त्री. बिरांणी)

बिरांन—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'बीरान' (रू. भे.)

उ०—मूळी दाखै, रूसै मत रीस रखै। पेमजी जूर्भै, कुढै मत गुंग में गळै। गठजोड़ो तो जुड़यो पण मन-मेळ जोड़ो मिल्यो नहीं। मूळी लांबी प्रर जुवांन। पेमजी प्रोछो, गटमींगणियो बूढो बिरांन। दो-दो दुख सागै रळग्या। —दसदोख

बिरांम-सं. स्त्री. [स. विराम] १ क्रिया, गति, चाल आदि में होने वाला ठहराव, प्रटकाव।

२ अन्तिम प्रवस्था, समाप्ति।

३ आराम, विश्राम।

४ कार्य, सेवा आदि से मिलने वाला अवकाश, निवृत्ति।

५ वाक्य व छन्द में वह स्थान जहां बोलते या पढ़ते समय कुछ समय के लिए रुकना पड़ता है।

६ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—हरि है दाता देह का नाते भया मकांम। गुरु है दाता ग्यांन का, मन का मेट बिरांम। —ग्रनुभववांणी

७ विराम चिन्ह।

८ चिन्ह, लक्षण।

उ०—माता पिता के आगे खेलना। काम रा नु बिराम छै। गु छिपाया चाहिजे। सु कांम रा बिराम कुण। जु ठेक नव कुच प्रगट हुया। नेत्रां चचलता हुई। नितंब भारी होमें लागा। ए कांम का बिरांम। —वेलि टी.

६ घबराहट, क्षोभ, खलबली, अशान्ति।

उ०—कमधा पत दरकूच कर, धरि मेड़तै मुकाम। धर दिल्ली धूजी उरै, पुर आगरै बिरांम। —रा. रू.

१० उत्पात, उपद्रव।

उ०—माया मोह न कीजियै, माया बडौ हरांम जनहरिया निह लोक मैं, केता करै बिरांम।

११ कष्ट, पीड़ा, संकट।

उ० - १ दुहौ दपटौ दाम, जोड़ता नो ही जांणसी। ब्यावर तणा बिरांम, वाकू न जाणी बीकरा। —बीकरै अहीर री वात

उ०--२ अभिखा अक आहवय अविधा, नांमधेय साथा हरि नांम। आठई पहर रात्रि उर अंतर, वेग टळै दुख दळिद्र बिरांम।

—ह. नां. मा.

उ०—३ भगवत्ति भावौ भाई, मुझ मदत सोमहामाई। निज पढ़ै प्रहस में नांम, त्यां रोगि भजि बिराम। —मा वचनिका

१२ निवास-स्थान।

१३ अवसान।

उ०—मैं मन कु नही जांणिया, मन का बोहत बिरांम। हरीया इनकु उलटि कै, सदा सिवरिगै रांम। —अनुभववांणी

रू. भे.—बिरांम।

बिरांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ रळपा गुळपा रजपूत, बिरांमण मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कूळ रळगा मिटळा। चोड़ै धाड़ै चोर ठग बिन ठेरन लेती। जिकै नही किण जोग मिळधा घर घर रा मेती।

--ऊ. का.

उ० — २ हिमै बिरांमण जोवण जमावत रो नै मनोहर रामावत छै। चार रजपूत वाभण वाणिया वसे। —नैणसी

(स्त्री बिरामणी)

बिरांमणी—स. स्त्री —१ ब्रह्मचारणी देवी, ब्राह्मणी।

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री.) (रू. भे)

बिरांमणौ, बिरांमबौ—क्रि. स --१ शर्मिन्दा करना लज्जित करना।

उ०—सुनि भरत समाप मदन घणा कपणा तणौ बिरांमियौ। कर भू पर गौरव करणसी, रायसिंघ विसरांमियौ। --नैणसी

२ विश्राम देना, विश्राम करना, आराम करना।

३ कष्ट देना, दुःख देना, पीड़ित करना।

४ रोकना, ठहराना।

क्रि. अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

२ पीड़ित होना, दुःखी होना।

३ रुकना, ठहरना।

४ मरना, अवसान।

उ० - पतळा नमीब पाता मुरां, परज करमफळ पावियौ। प्रतपाळ 'सिवौ' माता पिता, वड दातार बिरांमियौ।

—माहवदान सुरतांणियौ

५ हटना।

उ०—चिंतामणि पारस पौरसौ, मुवा मगोवर कांमणा। संपजै तांम मृत संपनै, ग्रह मुर धाम बिरांमणा। —रा. रू.

बिरांमणहार, हारौ (हारी), बिरांमणियौ—वि०।

बिरांमियोड़ौ, बिरांमियोड़ो, बिरांम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरांमीजणौ, बीरांमीजबौ—कर्म, भाव वा०।

बिरांमब्रह्म—सं. पु. [स. बिराम-ब्रह्म] ब्रह्म ताल का एक भेद विशेष। (संगीत)

बिरांमियोड़ौ—भू. का. कृ. १ शर्मिन्दा किया या हुवा हुआ, लज्जित किया या हुवा हुआ. २ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ. ३ पीड़ित किया या हुवा हुआ, दुःखी किया या हुवा हुआ ४ रोका हुआ, ठहराया हुआ. ५ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ६ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ७ हटा हुआ। (स्त्री बिरांमियोड़ी)

बिरांमौ—वि.[स बिराम] १ विश्राम करने वाला, आराम करने वाला।

२ व्याकुल बेचैन।

३ शर्मिन्दा करने या होने वाला।

४ पीड़ित होने या करने वाला दुःखी होने या करने वाला।

५ रुकने या रोकने वाला।

६ मरने वाला।

७ हटने वाला।

बिराग—सं पु.—१ एक मे मिला हुआ दूसरा राग। (संगीत)

२ देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

बिरागणौ, बिरागबौ—क्रि. स —१ वैराग्य ले लेना, संन्यास ले लेना।

उ०—तितरै राणेजी रो टीकरो रामसिंघजी री बहु नांम आंबां रांम कहियौ। तिण ऊपरि रामसिंघजी बिरागिया। दाढी न मुंडाडै। कपड़ा न धोवाडै। वागो न पहिरै। आरासि न करै। —द. वि.

२ त्यागना, छोड़ना।

बिरागणहार हारौ (हारी), बिरागणियौ —वि०।

बिरागियोड़ो, बिरागियोड़ो, बिराग्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिरागीजणो, बिरागीजबो—कर्म वा० ।

बिरागियोड़ो—भू. का. कृ.—१ वैराग्य लिया हुआ, संन्यास लिया हुआ. २ त्यागा हुआ. छोड़ा हुआ ।
(स्त्री. बिरागियोड़ी)

बिरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.) (सभा)

बिरागीय—देखो 'वैराग्य' (रू. भे)
उ०—विरहि बिरागीय वरण मझारि जाईउ मणि झायइ । नवणिम जूवणु रूपरेह तां झालिहिं जाइ । —सालिभद्रसूरि

बिरागो—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)
उ०—सावउ जांणइ जिणधरममागो, तउ मनि जूवण लगइ बिरागो । गंगानदणु वणि बसार । —सालिभद्र सूरि

बिराड़—सं. पु.—१ हिस्सा. बंट । (मा. म.)
२ देखो 'वराड़' (रू. भे)

बिराज—सं. स्त्री.—१ शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य ।
उ०—डोहत सूंड सिघळी, घटा बिराज सांमळी । घमकि घट घुग्घर, सिंदूर सीस चम्मरं । —गु. रू. ब.
स. पु.—२ राजा, नृप ।
३ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।
४ क्षत्रिय जाति का व्यक्ति ।
५ स्वयंभुव मनु का नामान्तर ।
६ नर राजा का पुत्र एक राजा ।
७ एक वैदिक छन्द विशेष ।
८ कुरुवंशीय राजा अविक्षित के पुत्र ।

बिराजणो, बिराजबो—क्रि. अ. [सं. विराजनम्] १ शोभित होना, शोभायमान होना ।
उ०—१ अौर ही अनेक भात रा फूला री माळा किलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै । सू सारै साथ नै बकसजै छै । फूला रां चौसरा घातजै छै । छड़ी हाथां में बिराज रही छै । —रा. सा. सं.
उ०—२ बांको मुकट काछनी सुंदर, ऊपर जरद किनारी । गळ मूतियन की माळ बिराजै, कुंडळ की छबि न्यारी । —मीरां
उ०—३ समर्प अनड़ दाढाळ सहट्टां, देतां दहण करण दहवट्टां । रातंबर तन रोम बिराजै, भळकंत तेज सुरां मझि भ्राजै । —मा. वचनिका
उ०—४ बिंदलो सीस विराजही, मांग ज भरी सिंदूर । नथ बिराजै नासिका, रही सोभ भरपूर ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ निवास करना, रहना ।
उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत बिराजणो आप । वोहि बंगळो मणआवणी, तौ बिण वणी 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ
उ०—२ दूर दिसावर जेहनो पिऊ वसै जी, तै नार सुहागण कहाय । महाविदेह में भणिय बिराजियाजी, तिकै निरधणिया किम थाय । —जयवांणी
उ०—३ सोजत रा बजार में छत्री त्यां स्वामीजी बिराज्या ।
—भि. द्र.
उ०—४ अजमेर में आंनासागर ऊपर बाग में मेल रंवास रा कराया, ऊठै बिराजता जद । —मारवाड़ री ख्यात
३ बैठना । (आदर-सूचक, सम्मान सूचक)
उ०—१ कसतूरी केसर अरगजो, चदन तिलक लिलाटि । करै स्रीपति री आरती, किसन बिराज्या पाटि । —पदम भगत
उ०—२ अेकदा प्रस्ताव राव जोधोजी दरबार कियां बिराजै है नै सारा भाई वा अमराव वा कंवर हाजर है । —द. वा.
उ०—३ ताहरां गोगैजी कह्यौ—घोड़ा हूं ले आऊं छूं, ज्यूं आंपां घरै हालां । ताहरां पाबूजी कह्यौ—राज ! आप बिराजौ । हूं लै आईस । —नैणसी
उ०—४ उन्हाळै चोमासै सिरयारी पक्की हाटै स्वांमीजी बखांण देता, भीखणजी स्वांमी भारमलजी आगै जोड़ै बिराजता, पाखती कंठ मिलावण वाला आया बेठता, बीजा साध मांहै बेसता ।
—भि. द्र.
उ०—५ पौळि पौळि उच्छव प्रबळ, वेदोकति विसतार । राजा तखत विराजियो, सुभ चौकी सणगार । —रा. रू.
उ०—६ डोढी रै बारणै वेहळ सु उतर भीतर नु चाल्यौ, सो आगै रांणोजी मूढै ऊपर बिराजिया छै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
४ होना ।
उ०—१ चक्रवरती दर्स हुआ, धरम तणै परताप । आरंभ परिग्रहो त्यागनै, मोख विराज्या आप । —जयवांणी
उ०—२ आंदेसरजी' एड़ी कह्यो, 'भरतादिक' सौ भाय । धरम तणै परभाव सूं, मुगत बिराज्या जाय । —जयवांणी
५ उमड़ना, छाना, आच्छादित होना ।
उ०—चिहुं ओर घोर घटा बिराजत, गुहिर गाजत गहन । बरि अधिक गाढ अखाढ उलध्धउ, घध्धउ, चित सै बदन । —वि. कु.
६ रहना ।

उ०—१ गांम रे बारनै भार ई काई है। गांमसाऊ रुपिया आपरै मनै दंड है। आप जोधपुर जाय नै रेडियो ने पधारो। अठै बिराजो जितरै खूब धूधावो अर बदळी व्हैनै पधारो जद रेडियो आपरो नै आपरै बाप रो। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ राजा दक्षिण बिराजियौ, गा दक्षणी हद रह। माह सुमारिम सांभळै, की फतै मरहद। —गु. रू. बं.

७ जीवित रहना। (सम्मान, आदर)

उ०—१ ताहरां सरब हजूरी, पासवान, खवास नेक हता तिके सरब तळाब ढंढियो। घणो ही जोयो पण हाथ न आयो। इतरै में कुंवर रो मस्तक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तो देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सबद हुवो। साथ सारो ही रोवण कूकण लागो। राजा नै जाय खबर हुई सो सुण नै मुरछा-गति हो गई, विव्हळ होय गयो। कंवर संदरदास दोटो कै कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटै तो राज जाय छै। ताहरां कुंवर देपाळदे नै उठाय छाती सूं लगायो। नाक भीच सावचेत कियो। राजा सावचेत हुवो। फेर कूकण-पुकारण लागा। तद महतै अरज कीवी-जै कुंवरजी री आ दसा हुई। देपाळ निराठ दिलगीर हुवो। पु कारीज सूं कुळराइत गयो, कह्यो-महाराज दिलासा करो। इण ऊपर जोर रैवो अर परमेस्वरजी आईज कीनी किण रो ही दोस नहीं। यूं कहि दूहो कह्यो-

सुख मे दुख सचारवो, दुखिया सुख दयाल।
देवज रूठो दागवै, हरि रूठा बेहाल॥

यूं कहि राजा नूं समझायो। सावचेत कियो अर कह्यो-महाराज, थाहरै मारो दोलत छै, कुटब छै। इण तरै राजा नै धीरज बधाय जनानी ड्योढ़ी गयो। जनानै सारै ही मे धीरज दीवो। कंवर री मा अर महल दोनूं ही हठ झालियो-कंवर री मूंहडो देखा। ताहरा कंवर री मा नै तो कह्यो-थे तो सुगपानी छो। इनरा सास्तर सुणिया छै। कथा सुणी छै सो इतरो ही हठ सुणियो छै। यूं कहि रांणी री हठ छुडायो। फेर कंवर री रांणी नै फुरमायो-जै राज रो काम कुण चलावसी, राजा तो बिरध हुवा। कंवरजी री यूं हुई। देपाळदे बाळक छै। राज रावणो छै सो आपनै बिराजणो छै। परमेस्वरजी निमित धरम-पुन करो। घणी सोच करणो तो असमझ रो काम छै। हठ छोड अर लारै रहि कर राज करो।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ इणी भूंळ पर आप ५३ बरस रै अडींगदै बिराजिया अर सवत् १९५१ मे सिवलोक सिधारिया।

—सत सेठ स्रीरामरतन डागा री बात

८ ठहरना, रुकना।

उ०—१ गुणगढ़ रा मास चवदै माधा सू तथा चवदै भादवा सूं देवगढ मे भीखणजी स्वामी बिराज्या हुंता, तिहां तीन ... आय बोल्या — भीखणजी म्हे तीन जणां स्यानेइ पूरो आहार नहीं मिल्यो तो थानै इनरा ठाणा नै आहार किण रीतै मिलै। —भि. द्र.

उ०—२ अतरपट कर महैल्यां हथबोळणी रो कसार मूंह आगै आंण धरियो। ताहरां भरमल अरज होळै सै कीवी, जो आज रात चाकर ऊपर किरपा कर बिराजै तो मोटी करै।

—कुंवरसी सांखलै री वारता

९ निवास करना।

उ०—औघड़ एक न पायो औघड़, आक धतूरा खाय हुवो तड़।
बुरा भला खावै किम काजै, तेरै भीतरि राम बिराजै।

— अनुभववांणी

१० स्थित होना।

उ०—थांन नेहनै चो पाखती, विकट दुरंग बिराजै रे। घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे। —वि. कु.

११ उपस्थित होना, विद्यमान होना।

बिराजणहार, हारो (हारी), बिराजणियो—वि०।
बिराजिओड़ो, बिराजियोड़ो, बिराज्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिराजीजणो, बिराजीजबो—भाव वा०।
बराजणो, बराजबो, बिराजणो, बिराजबो—रू० भे०।

बिराजमान-वि [सं. विराजमान] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—१ नारद तुंबर गान सुर संगीत किया। अपछरा मिळ ग्रंधप ध्यान किया। रग पोहप बरखा कीधी। तिण विरिया बारै आदीत सुसा कमळ बिराजमान हुवा। —मा. वचनिका

उ०—२ तठा उपरायत देवीन राजान आपरा टोळी मजल रा तवान लिया बिराजमान हुवा छै। कमरां खोलजै छै बरछी रा भूना कीजै छै। —रा. सा. स.

२ उपस्थित, विद्यमान।

उ०—निस तेहा आदरी गवति। जोति री धणियाणी। सुरां री सहाय। मुक्ति री वाहक। खत्र री संपाळ। चवदै भवणा री प्रतिपाळ। पाट बिराजमान हवा। इदलोक मे नछाह हुवा।

—मा. वचनिका

३ बैठा हुआ। (सम्मान सूचक, आदर-सूचक।

उ०—बांगा बणाइ करि। संख चक्र गदा पदम धारि। वैजयंती माळ मोर मुगट कुंडळ विसाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर बिराजमान हुआ छै। मांणमाणिक जडित छत्रपाट सिंघासण बिराजमान दीसै छै। झळळाट करि जगाजोति जागी छै।

—र. वचनिका

४ स्थित।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति सुखमनी जरबाफती,

मखतूल. रेसम री कलाबतू जरकस लपेटिया लूबा समेत गादी तकिया बिराजमांन कीजै छै। —रा. सा. स.

सं. पु.—१ बैठाने की क्रिया, बैठाना। (सम्मान सूचक, आदर सूचक)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति तोरण बांधीजै छै। घणा गज डबर पेमाल करि मंडोवर महलें पधराया छै। सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मुहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा मांहि ग्रांशि पाट सिंघासण बिराजमांन किया छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर दुळै छै। —रा. सा. सं.

२ बैठने की क्रिया, बैठना। (सम्मान-सूचक)

उ०—१ दोय-दोय बाकरां री सिल्हाड़नै ठरका हुवै छै। तरवारां रा झणकार हुयनै रह्या छै। चौरंगा री खाटखड हुयनै रही छै। कटोरां मांहै फूल लीजै छै। बाकरा होमनाकां वधू कीजै छै। टेमोत रवां घोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर बिराजमांन हुवा छै। —रा. सा. स.

उ०—२ त्यां उमरावां रा वखांण। लोह री लाठ। चालता कोट। प्राक्रर घो घा। अनेक भारथ किया। भाति भाति रा लोह चाखिया नै चलाया। ईसा दुवाह। श्रांण बिराजमांन हुवा। —मा. वचनिका

उ०—३ ब्रहमा त्रिसन महेस इंद्र सुर साथै बिराजमांन हुआ छै। आप विसन चत्रभुज रूप धारि। बागा वणाव करि। संख चक्र गदा पदम धारि। वैजयनीमाळ मोरमुगट कुंडळ विमाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यांमसुंदर ठाकुर विराजमांन हुआ छै। —र. वचनिका

३ पत्रो आदि में अपने से बड़ों के लिए लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द।

उ०......सरब ओपमा बिराजमांन अनेक ओपमा लायक भाबोसा दुरगजी नै लिखी तेजा री जय स्रीरघुनाथजी री बंचावसी। घणा मांन सूं करनै उपरन्त समाचार एक बांचसी के उतराद में झगड़ो चेतग्यो है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण री हुकम मिळयो है। आप कोई बात री चिंता फिकर करसी नी वुजी नैं म्हारा पांव धोक अरज करसी अर टाबरां माथै हाथ फेरसी। म्हारी कानी सूं अमलां री मनवार मनासी। —अमर-चूंनड़ी

रू. भे.—बिराजमांण, बैराजमांन।

बिराजित—देखो 'बिराजिमोड़ो'

उ०—१ वर तुरग उत्तंग, कणं साकति बिराजित। मदोमत्त मातंग, जांण जळ वादळ गरजित। —गु. रू. बं.

उ०—२ पूठि भिड़ज्जां आरुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसै त्रिज्जड। सत्तरि खांन बहुत्तरि ऊमर, सीस बिराजित मेघाडंबर। —गु. रू. बं.

बिराजियोड़ो–भू. का. कृ.—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभित हुवा हुआ. २ निवास किया हुआ, रहा हुआ. ३ बैठा हुआ (आदर सूचक) ४ हुवा हुआ. ५ उमड़ा हुआ, छाया हुआ, आच्छादित हुवा हुआ. ६ रहा हुआ. ७ जीवित रहा हुआ (आदरसूचक) ८ ठहराहुआ, रुका हुआ. ९ निवास किया हुआ. १० स्थित हुवा हुआ.

(स्त्री. विराजियोड़ी)

बिराजी—देखो 'बेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ तीं सूं बादसाह घणी महरबांनगी राखै और जबरदस्त घणां तीं सूं पण भय राखै जे बिराजी हुवो तो फोजां धावै। —महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

उ०—२ सं. १५३५ तळाव ऊपर कोट घालण री तजबीज करी। तद राव सेखै कहायो, "गढ अठै मती घालज्यो, परै जागळू री हद मैं घालो। सू या मांनी नही। पीछै राव सेखो मनमैं बिराजी तो हुवो पण यानै क्यूं ई कयो नही। —द. दा.

उ०—३ ना पछै पातसाहजी भला मांणस मेल दळपतसिंघजी नं दिली बुलाया सू गया नहीं। हजरत रा मांणस पाछा गया। तठै पातसाहजी बडा बिराजी हुवा। पण दळपतसिंघजी इण बात नै थापी नहीं। —द. दा.

बिराट–स. पु. [सं. विराट] १ महाभारत के एक पर्व का नाम।

२ एक प्रदेश जो जयपुर, अलवर व भरतपुर के बीच है। जहां पांडवों ने अज्ञातवास का समय (एक वर्ष) बिताया था।

उ०—बळी न्रप जैत करां बळिहार, पत्री प्रणमीज परां खळ पार। बांणां थट कैरव रांण बिराट, ग्रहप्पट जांण करै द्रहवाट।—मे. म.

३ उक्त प्रदेश का राजा।

वि. वि.—इसकी पुत्री उत्तरा का विवाह पांडव-पुत्र अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था। इसके पुत्र उत्तर व इसकी स्वय की मृत्यु महाभारत युद्ध मे पाडवपक्ष की ओर से लड़ते हुए हुई थी। इसके साले व सेना का सेनापति कीचक का वध पाण्डव पुत्र भीम ने इनके अज्ञात वास के समय द्रोपदी पर कुदृष्टि डालने के विरोध में किया था।

४ स्वयंभू मनु का नामान्तर।

५ महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को कृष्ण द्वारा दिखाया गया विश्व स्वरूप।

६ बलि को छलने हेतु विष्णु द्वारा किया गया त्रिविक्रम रूप।

७ विश्वशरीर रूपी अन्त पुरुष।

८ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।

९ एक देवयोनि, गुह्यक ।

१० प्रतर्दन देवों में से एक ।

११ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण और अन्त में लघु होता है ।

१२ देखो 'वैराट' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रू. भे.—बराट, बिराट, बैराट, बइराट, बयराट, वैराट ।

विराटक—सं. पु. [सं.] विराट नगर में निकलने वाला एक प्रकार का निम्नकोटि का हीरा या नग ।

विराटपरब—सं. पु. [सं. विराट + पर्वन्] महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटरूप—देखो 'विश्वरूप'

विराड—देखो 'वैराट' (रू. भे.)

उ०—इसै विचारणा चौगा चाट बैठा । देखिनै कह्यौ इंडो बाटो । खोयो बालियो बारणौ कासू । विराड भाग छ करिस्या । ताहरा नाचिया वाळो बालियो ना जो णा कहियो हुतो । ईयै नु दूसरी भुइ चाढ़ै काढ़िया आणो । —चौबोली

विराडन—सं. पु.—अग्निरा कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ।

विराडणौ, विराडबौ—क्रि. अ.—डरना, भयभीत होना ।

उ०—भिउड भिउड ताडिउ नु चांटा उपाडिउ । कुंअरि मनि विराडिउ बोल बोलइ सुनारिउ । —सालिसूरि

विरादर—देखो 'बिरादर' (रू. भे.)

उ०—१ यम लिख दौलतजीरनै, पुरजा पहुंचाया । ब्यान विरादर लोकको, सबको बुलवाया । सबकै बीच मसूरत्था, पुरजा बचवाया । फिर काजीद जबानदा, समचार सुनाया । —ला. रा.

उ०—२ आगेही वडे महाराज 'अजमाल' से मभर कै खेत हमारै विरादर हमसर्मा मिरदला टूसेनपानै जग कर सच्चै दिल से सिर दिया । जिन्हून कै मरणे सें तारीफ कै सवाल सब आलम पर जिया । —सू. प्र.

विरादरी—देखो 'बिरादरी' (रू. भे.)

उ०—सात हजारी सामंतो, जाको नाम 'मजीत' । दाखो पेर विरादरी, मह आदरी मजीत । —रा. रू.

विराध—सं. पु. [सं.] १ विरोध, प्रतिकूलता ।

२ अनादर, अपमान ।

३ कष्ट, पीड़ा, तकलीफ ।

४ दण्डकारण्य में राम या लक्ष्मण के द्वारा मारा जाने वाला एक बलवान राक्षस जिसे रंभा पर अत्याचार करने के कारण गन्धर्व से राक्षस योनि प्राप्त हुई थी ।

५ कश्यप एवं दनु के दानव पुत्रों में से वितल नामक पाताललोक में रहने वाला एक पुत्र दानव ।

वि. [सं. विरुद्ध] १ विरोधी, प्रतिपक्षी ।

२ अपमानित, तिरस्कृत ।

३ कष्टमय, पीड़ित, दुखी ।

रू. भे.—विराध ।

विराधक—वि.—१ विरोध करने वाला, विरोधी, प्रतिपक्षी ।

उ०—उदायन दीघउ केमी नइ, भाणेजा तइ राजभार जी । वैर वहतउ थयउ विराधक, अपीचि असुर कुमार जी । —स. कु.

२ अनादर करने वाला, अपमान करने वाला ।

३ कष्ट देने वाला, दुःख देने वाला ।

विराधणौ, विराधबौ—क्रि. स.—१ विरोध करना, विरुद्ध कार्यवाही करना ।

२ अनादर करना, अपमान करना ।

३ रोकना, अवरुद्ध करना ।

उ०—तै मुझ मिच्छामि दुक्कड, अरिहंत नी साख । जे मइ जीव विराधिया, चउरासी लाख । —स. कु.

४ कष्ट देना, दुःख देना ।

५ नाश करना, नष्ट करना ।

उ०—सीगु मिथ्यात्री तणाउं तासु छेदीउ छलु साधीउ, पाप पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ । —शालिभद्र सूरि

विराधणहार, हारौ (हारी) विराधणियौ—वि० ।

विराधिग्रोड़ो, विराधियोड़ो, विराध्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विराधीजणौ, विराधीजबौ—कर्म वा० ।

विराधियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विरोध किया हुआ, विरुद्ध कार्यवाही किया हुआ. २ अनादर किया हुआ, अपमान किया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ, दुःख दिया हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री. विराधियोड़ी)

विराधी—देखो 'विराधक'

उ०—इत्यादिक बहला हुआ, मर्मकिन धरम विराधी रे । मरनै केई नरकै गया, केई नीचो गती तिम लाधी रे । —जयवांणी

विराळ, विराल—सं. स्त्री—उफनना, बाष्प ।

उ०—अंबर तणा गिरवर डगमगइ, यस्र अजूआलं सायर लगइ । दिग्गज आठ रहया अवलोकि धूम विराल गई सुरलोकि । —कां. दे. प्र.

विराळी—देखो 'बिराळी' (रू. भे.)

विराव—सं. पु. [सं.] १ हल्ला गुल्ला, शोरगुल ।

२ ध्वनि, शब्द ।

३ अमिताभ नामक देवयोनि ।

रू. भे.—बिराव ।

बिरावणौ, बिराववौ–क्रि. स.—१ हल्ला-गुल्ला करना, शोर करना ।

२ ध्वनि या शब्द करना, बोलना ।

बिरावणहार, हारौ (हारी), बिरावणियौ—वि० ।

बिराविग्रोड़ौ, बिरावियोड़ौ, बिराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिरावीजणौ, बिरावीजबौ—कर्म वा० ।

बिरावणौ, बिराववौ—रू० भे० ।

बिराविन–स. पु. [सं. विराविन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

बिरावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हल्ला-गुल्ला किया हुआ, शोर-गुल किया हुआ. २ ध्वनि या शब्द किया हुआ, बोला हुआ ।

(स्त्री बिरावियोड़ी)

बिराह–स. पु. [सं. वि + फा. राह] १ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

२ बिना रास्ता, रास्ता विहीन । ३ उल्टे मार्ग ।

उ०—कै भागा अजमेर नूं, रिम दळ राह बिराह । कै छिपिया 'किरनेस' रै, कै पुर घर घर मांह । —रा. रू.

३ देखो 'वराह' (रू. भे.)

बिरंच, बिरंचन, बिरिंचि–सं. पु. [स. विरञ्च, विरञ्चि] १ ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

३ महेश ।

बिरकत, बिरक्त– देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

बिरिक्ष, बिरिख, बिरिखि— १ देखो 'वृक्ष' (रू भे)

२ देखो 'वरस' (रू. भे.)

बिरित–स. पु. [सं. व्रतिन्, व्रत्ति] १ श्वान, कुत्ता । (ह ना. मा)

२ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

बिरिद, बिरिदि—देखो 'विरुद' (रू. भे)

उ०—१ बळिभद्र बुध तूं ना बिरद, मबळा चढिमे मेस । पगे उघारे प्राणियौ, 'पीर' कहै परमेस । —पी. ग्र.

उ०—२ चौरी बैठे चकधर, बळि मुहिद्रा रो वीर । बाबै ना मबळा बिरिद, पुरण कवेसर' पीर' । —पी. ग्र.

उ०—३ अरण गुरड़ ओळगे, दियै परिकरमा दिगोंबर । सिनिकादिक समरां, बिरिद दे बारट ईसर । —पी. ग्र.

उ०—४ बावा तूं बाळा बिरिदि, अदग्यौ पुरिषि अलाह । सहसाबाहु सारिखा, गिळिया कितरा ग्राह । —पी. ग्र.

बिरिध—देखो 'वृद्ध' (रू. भे)

बिरिधि—१ देखो वृद्ध' (रू. भे.)

२ देखो 'वृद्धि' (रू. भे.)

बिरियां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ एक बिरियां मुख बोलौ रे, धुता रा जोगी । कांनन कुंडळ गळ बिच सेली, अब तेरी मुख खोलौ रे । रास रच्यौ बंसीवट जमुना, ता दिन कोनौ कोलौ रे । —मीरां

उ०—२ उण बिरियां 'अभमाह' रौ, नरपति पेखे नूर । मर सोखिम करिवा मत्रां, ग्रीखम सूर करूर । —रा. रू.

उ०—३ पर उपगारो परम करुणा पर, सेवक अपणौ संभारौ । भगत अनेक भवोदधि तारै, हम बिरियां क्यूं बिचारौ । —सं. कु.

उ०—४ लोक व्यवहार राखण भणी, वीर समीपे जाय । पूछण री बिरियां हुई, तरै लाज आई मन माय । —जयवांणी

उ०—५ अणहूंत भाठै मूं काठी हुवै । बिरियां देख'र विणजै नीं सो वाणियौ ही गिवार । छाती काठी करी है । जै जिसो दिन नहीं आवै । —दसदोख

उ० –६ फाजल ही आपरी साधना सरू करी, करणं मायं हृदफेरी करणी पेलाई । पाच-सात बिरियां, छूटो विसरांम रै बखत, करणं नै जमी पर सूंवो सुवाण्यौ, ऊपर चादर उढाई तथा मिंतर पढायौ । —दसदोख

बिरिस, बिरिसि—१ देखो 'बरस' (रू. भे.)

२ देखो 'वरीस' (रू. भे.)

बिरी– १ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०– सदा मद स्रोवमे तना आवड सकति, भाग हुइ से जिको जुड़िसै भगति । आगइ बिरी करी कनां इंद री भली, टळि गयौ परौ जगराउ वाळो टलौ । —पी. ग्रं.

२ देखो 'बीड़ौ' (रू भे.)

३ देखो 'वैरी' (रू भे.)

उ०—वचन विनता उच्चरि रे, विहंग, तूं बिरी थयु । गुण कहया नळरायना नि, भाव मननू तोहा गयु । —नळाख्यांन

बिरुवौ—देखो 'बिरूवौ' (रू भे)

उ०—१ बिरुऔ दुरमुख ऊपरै होजो, पिण जिन धरम करंत । रयण दिवस रहौ, समकित सुद्ध सुरमा अहो होजो, मजं सदा भगवंत । —वि. कु.

उ० २ मान गहेली मानती, बिरुअउ बोल्यौ वयण । बिरु आवर न रहै कदे, सिह सूर नै सयण । —प. च. चौ.

उ०—३ पाणी निहा नवि नीकलै रे, सोकातुर सहू जात । बितवणा गहुवो करै रे, एनौ बिरुइं वात । —वि. कु.

(स्त्री. बिरुई)

बिरभणी, बिरभबो—क्रि. म.—उलझना, फसना।

बिरभणहार, हारौ (हारी), बिरभणियौ—वि०।

बिरभियोड़ो बिरभियोड़ो, बिरभ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिरभीजणी, बिरभीजबो—भाव वा०।

बिरभणी, बिरभबो—रू० भे०।

बिरभियोड़ो—उलझा हुआ, फसा हुआ।

(स्त्री. बिरभियोड़ी)

बिरत, बिरत्ती—देखो 'बिरतो' (रू. भे)

उ०—आयो सुरग बिनाण अर्वार, पूरे पारस है मं पवमर्दि। उता-वेह ह्वरग प्राप्तवरि, जाणे मीह बिरत्ती प्रगार। —गु रू. ब.

बिरत्य, बिरत्थौ, बिरथ—देखो 'बरुथ' (रू. भ)

उ०—दावे लाला जमी घणा हिये दूलिया दोयणा दूठ, प्रवा वा सबूकिया में भूखड़ा पाहीम। जुवारी 'मोगाळ' 'डूंगो' दुहवा भूलिया जगा, मला वाळी तूकिया बिरत्थी गोग मोल।

—सकरदान सामौर

२ देखो 'बिरती' (रू. भ.)

बिरदत, बिरदती, बिरदनी—देखो 'बरुथणी' (रू. भे.)

बिरद—सं. पु [सं.] १ किसी के गुण, यश प्रताप आदि का वर्णन।

उ०—अमर मत्र उर धरै, बिरद ऊचरे महाबत. सक साह सपणे, वयण न भणे अगुहावन। आप दाग क्रमि भरे पाय लगर खरळ-वकै। रैंद बंद अविमल तीठ दोय गेद सरवकै। —रा. रू.

२ राजा लोगो द्वारा प्राचीन काल मे धारण की जाने वाली यश या प्रशसासूचक पदवी।

उ०—बेराजी रे पुत्र रामदासजी हुवा गाव दूधोड़ रै मेह थापना कीधी। बडो एक आलाडसिंघ रजपूत हुवो। विरदधारी रजपूत हुवो। रामदास बेरावत नै उगणीस बिरद हुवा। जिकै विरदा रा नाव—प्रथम पाखारिया बिना रहणो नही। दूजो गबला उगाण। तीजो नियळा थापण। चाथो जाचक जग तरवर। पांचमो परनारी सहोवर। छठो बरगुगाळ। सातमो सुधो······ । —रा. सा. स.

३ यश, कीर्ति, गुण।

उ० १ गोपाळ ब्रिज रा बाल गोवाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साथ। जादवा उजाळ नमो बिरदा विमाळ जूना, डाग यागे काळ माथे ससिपाळ डाव। —पी. ग्र

उ०—२ छत्र, चामर, नीसाण, कुकमानर री राज दीधौ। कागळ देसनो राजा मारयो। लक्ष हाथी, नवनव अस्व पायणा हुई। अनेक बिरद विराजमान राठौड़ कमधज्यम री थापना कीधी।

—रा. व वि

उ०—३ हाडां घर गरमह हुई, जाडा बिरद लुभाग। गाडा भरि जाडां गळां, धाडां तुरक-खपाण। —वं. भा.

४ यशस्वी या यशपूर्ण कार्य, कीर्ति के कार्य।

उ०—बाप जिम बडा ही बडा बणिया बिरद, "सूर" हर आभरण भरा माल। महाराजा जु नै माड कीधो विग्रह, मंडोवर अंजसै राव माल। —गु. रू. बं.

५ कर्त्तव्य।

उ०—१ नृवर दातण मेलिया, धर्म करे 'अभमाह'। सांभरि सिर आयो सगह, नरपति बिरद निबाह। —रा. रू.

उ०—प्रबहण नारया कस्ट निवारया, प्रत्वी माहि उबारया राज। बिरद संभारया धरमसी धारया, सेवक काज सुधारया राज।

. ध. व. ग्रं.

७ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

रू. भे.—बड़द, बरद, ब्रिड़द, ब्रिरद बिरद, बिरद् विरिद, बिरिदि, बिरुद, बीड़द, ब्रद, ब्रिद, ब्रिदि, बिरद, बिड़दाव, बिड़द, बिड़दाव, बिड़्द, बिरद, बिरद्द, बिरदै, बिरद्द, बिरध, बिरिद, बिरिदि, बिरुद्द, रिहद, ब्रद।

बिरदधार, बिरदधारी-वि. [स. बिरुद + धारिन्] बिरद धारण करने वाला, बिरदपति।

उ०—प्राना किसन नंद लहु बिध हूं अधक, चोजवान बिरदधार नडना। कहर ससमाथ दस पाट लाधे कवण, पथ उतराद गुण ग्रंथ पढना। —हुकमीचद खिड़ियौ

रू. भे.—बिरदधार बिरदधारन. बिरदधारी।

बिरदपत, बिरदपति, बिरदपती—वि. [स. बिरुद + पति] बिरुद धारण करने वाला, बिरुदधारी।

रू. भे - बड़दपत, बड़दपति, बड़दपती, बरदपत, बरदपति, बरदपती, बिड़दपत, बिड़दपति, बिड़दपती, बिरदपत, बिरदपति, बिरदपती, ब्रिरदपत, ब्रिरदपति, ब्रिरदपती, बिड़दपत, बिरुदपति बिरुदपती, बिरदाधिप, बिरदाधिपत, बिरदाधिपति, बिरदाधिपती, बिरधाधि-पत, बिरधाधिपति, बिरधाधिपती, बरदपत, बरदपति, बरदपती, बरदाधिपत, बरदाधिपति, बरदाधिपती, बिरदपत, बिरदपती, बिरद-पती, बिरदाधिप, बिरदाधिपति, बिरदाधिपती।

बिरदाणी, बिरदाबो—क्रि. स.—१ जोश दिलाना, उत्साहित करना।

२ कीर्तिगान करना, यशगान करना, गुणगान करना।

३ ललकारना।

बिरदाणहार, हारौ (हारी), बिरदाणियौ—वि०।

बिरदायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिरदाईजणो, बिरदाईजबो—कर्म वा०।

बड़वाणो, बड़वाबो, बड़वावणो, बड़वावबो, बरवाणो, बरवाणो, बरदावणो, बरदावबो, बिड़वाणो, बिड़वाबो, बिड़वावणो, बिड़वावबो बिडवाणो, बिडदाबो, बिडदावणो, बिडदावबो, बिरदाणो, बिरवाबो बिरवावणो, बिरदावबो, बिरुदाणो, बिरुवाबो, बिरुदावणो, बिरुदावबो, बरवाणो, बरवाबो, बरदावणो, बरवावबो, विड़वाणो, विड़दाबो, विड़वावणो, विड़दावबो, विडवाणो, विडवाबो, विडवावणो विडदावबो, विरवाणो, विरवाबो, विरवावणो, विरवावबो, विरुवावणो, विरुदावबो — रू० भे० ।

बिरुवायक—वि.—१ कीर्तिगान, यश गान या गुणकथन करने वाला ।

२ जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला ।

रू. भे.—बरदायक, बिडदायक, बिरदायक, बिरुदायक, वरदायक, विरदायक ।

बिरुदायोड़ो—भू का. कृ.—१ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ २ कीर्तिगान किया हुआ यशगान किया हुआ. ३ ललकारा हुआ. ४ गुणगान किया हुआ ।
(स्त्री. बिरुदायोड़ी)

बिरुवाळ—देखो 'बिरुदाळो' (मह., रू. भे.)

बिरुवाळी—सं स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

रू. भे.—बरदाळी, बिरदाळी, बिरद्दाळी, बिरिदाळी, बिरुदाळी, विरदाळी बदाळी, ।

बिरुदाळो—वि. (स्त्री. बिरुदाळी) १ बिरुदधारी, यशस्वी ।

२ वीर, बहादुर ।

३ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू. भे.—बरदाळो, बिरदाळो, बिरद्दाळो, बिरिदाल, बिरिदाळो, विरुदाळ, बिरुदाळो, बदाळो, विरदाळो ।

मह.,—बरदाळ, बिरदाळ, बिरद्दाळ, बिरिदाळ, बिरुदाळ, बदाळ, विरदाळ ।

बिरुदावणो, बिरुदावबो—देखो 'बिरुदाणो, बिरुदाबो' (रू. भे.)

बिरुदावणहार, हारो (हारी), बिरुदावणियो—वि० ।

बिरुदाविम्रोड़ो, बिरुदावियोड़ो, बिरुदाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिरुदावीजणो, बिरुदावीजबो—कर्म वा० ।

बिरुदावळी, बिरुदावली—स. स्त्री. [सं.] १ कीर्तिगान, यशवर्णन, प्रशंसा ।

उ०—१ राजनियां नै ओळखै रे, जाणै देस विदेस रे । बंस तणी **बिरुदावळी**, संभळावै सुविसेस रे । —स्रीपाळरास

उ०—२ देवकी माता आदै रांणियां, साथै सहू परिवार । बोलै **बिरुदावलियां**, चारण सुजब सब, जय जय शब्द अपार ।
—जयवांणी

उ०—३ रथ बेठी नै सचरी, हुवो खाड़ेती भात । भाटण देवै **बिरुदावली**, आरीसो लेई हाथ । —जयवांणी

२ बिरुदों या गुणों का संग्रह, गुणावली ।

उ०—**बिरुदावळी** हसनी वरीस अवनीस, लाख सांमण कोड़ि वरीस अडड डडण अगजी गजण, अनमी अमूत ताहि नमी भूत करण । सबळ रायथान उथापण, निरजोर राय सहाय करि थापण । खंड खड खुरामाण को मांण हीण करण, वेद मुजाद की मजाद प्रसरण के सरण । —रा. रू.

रू. भे.—बिरदायळी, बिरुदावळी, बदाळी, विडदावळ, विडवावळी, विरदावळी ।

बिरुवावियोड़ो—देखो 'बिरुदायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. बिरुदावियोड़ी)

बिरुवेत, बिरुदंत—वि.—१ बिरुदधारी, बिरुदपति, बिरुदवान, यशस्वी ।

उ०—पांचे रतन तणुं वले, जिहां तिहां पामै जैत । बीजा तै सहु बापडा, कुमर वडो **बिरुदंत** । —वि. कु.

२ बिरुद या यश का वर्णन करने वाला ।

रू. भे.—बरदेत, बिरदेत, बिरदैत, बिरुदेत, बिरुदंत, बरदेत, बरदंत, बिरदेत, बिरदंत ।

बिरुद्द—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—१ बंडा जुवा गयदा ढाळबै खेत बेडीगारो, चाळबै समथां पंजा बिरुथो सचाळ । लूथबत्था अंगरेजा सू, सूर काळ रूपी लड़ै, उनागा खड़गा मोह बिरुद्दां उजाळ । —बुधसिंह सिढायच

उ०—२ इसा कमधज्ज बिरुद्द अधार, महारिण मेछां मारणहार । ढढोळण ढिल्ली हैवं ढाण, मकोड़िम जेह बडा सुरतांण ।
—राव जैतसी रो रासो

२ देखो 'बिरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—नाथिया उनथा नत्थां बिरुद्दां बळोठ नाथ । मिथ टोळा माथिया सबोळा लोथा सग । घामाहरां दीधा घेर बिभाड़ै हाथियां घड़ा, बेध लागा नीवा धू बिनातियां बरग ।
— डुगजी जवारजी रो गीत

बिरुद्ध—वि. [सं] १ जो प्रतिकूल हो, बैरी दुश्मन । (हि, नां. मा.)

उ०—मिळ थाट कमधा दळ अनमधा, बधक सधां ऊबंधा । प्रति वेध बिरुद्धां परस उरद्धा, किलंब दगधा अनुकधा । —रा. रू.

२ विपरीत, उल्टा ।

उ०—१ जिण री स्रद्धा-हिंसा में धरम । सम्यक्त्वी नै पाप न लागै । सरब जगत रा जीव मारथा एक समो ससार बधै नही । सरब

जीव री दया पाळणां तक मारी गमार पड़ै नहीं । ओगणहार हुवै ज्यू हुवै । करणी रो थांम नहीं रेवणो देणो अद मोख परहो जासी । इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामी री बनै रही । — भि. द्र.

उ०—२ माथां नाथा समान रो मा भ्रात तिरै कोग नें मारैं। फूटी नावा समान भेखधारी, श्राप डूबै भोला नें डबावै । पत्थर की नावा समान नीन सो तेमठ पाखंडी नें प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसैं ।
—भि. द्र.

३ अवरुद्ध, अटका हुया ।
४ घेरा हुआ, बन्द किया हुआ ।
५ जो मम नहीं खाता हो, बेमल, असगत ।
६ जो विरोध करे, विरोधी ।
७ अशुभ, बुरा ।
८ अनुचित, बुरा ।

उ०—परउपगारी रे सद्गुरो तूं हतो, शिष्टाचार न चोर रे। केहनें दुख नवि दीघो काई विरुद्ध न कीघो, हा हूं जाण्यो रे मैं इणहीज भवैं । कीघो पातक घोर रे, न रहयो तूं मीघो मैं मुजस न लीघो ।
—वि. कु.

९ जो वर्जित हो, निषिद्ध ।

स. पु.—१ दसवें मन्वन्तर ब्रह्मसावर्णि का एक देवगण ।
२ युद्ध ।

रू. भे.—बिरुद, विरद्ध, विरध, विरूद, विरुद्द, विरध, विरुद्द, विरुध, विरुड, विरुध ।

विरुद्धकरमा—वि. [सं. विरुद्ध+कर्मा या कर्मन्] विपरीत आचरण वाला, बुरे चाल-चलन वाला ।

स. पु.—उक्त प्रकार का व्यक्ति ।

विरुद्धता—सं. स्त्री.—विरुद्ध होने की अवस्था या भाव, विपरीतता, प्रतिकूलता ।

विरुध, विरुधि—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ वाचक दोस प्रतिकूल वरण वद, प्रगट वरण जिए रस प्रतिकूल । मुख लछण मति अरब हुए मुण, मति विरुध रस अनहूंत मूळ । —बा. दा.

उ०—२ सरिखा मू बळभद्र सोह साहिमै, वडफरि उसजतै विरोध । भला भलो सनि तो इज भजिया, जरासेन सिसुपाल जुधि ।—वेलि

विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि—देखो 'विरूपाक्ष' (रू. भे.)
(रू. कु. बो., ना. मा.)

विरुयउ, विरुयो—देखो 'विरूवो' (रू. भे.)

उ०—१ सत गिरुयउ रे, लोसम गुणे करि गिरुयउ रे । मात पिता सरिखउ हित वल्लभ, तिम हो करई नहीं विरुयउ, रे ।
—स. कु.

उ०—२ मन मा कुमर इम चिनवै, ए थई तीजी वार । पीड़ा करि इं वारियो, विरुयो कोई वेकार । — वि. कु.

उ०—३……इव अवाधउ, आगणइ कुउ अनइं कुटंब बांधव, वानर अनइ थीछी लावत, काणी अनइ रिसाणी, साप अनइ पंखालउ, कादम अनइं कटालउ, वांझ अनइ विरुया बोली, सरडी अनइ म्हेस्माणी । —व. स.

विरुहण, विरुहणि, विरुहणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे.)

उ०—बीज खवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी नेस । विरुहणिआं नवि वेदना, सावण ! सरइ विसेस । —मा. कां. प्र.

उ०—२ गरद-निसाकर ममममद, श्रं गइ जातिउ भेउ । तहां मरी निद्रा ग्रमीम जिमइ, विरुहणियां विस देय ।
—मा. कां. प्र.

विरूअउ, विरूउ विरूप्रो—वि. [सं. विरूपक] (स्त्री. विरूई) १ बुरा, खराब, भद्दा ।

उ०—१ आज इस्यां नु का लवइ, विरूयां विरूयां वायस ? हुसहणो, वायस भागो जागि म जावा ताकि ! —मा. कां. प्र.

उ०—२ लोक गहूं लाणां लवइ, चित्त न राखि ठाहि । फागुण ना गुण स्या कहु ? विरूपो वसुधा मांहि । —मा. कां. प्र.

उ०—३ जउ श्रं विरूउ प्राचरइ, तउपण ब्रह्म पवित्र । परमेस्वर श्रं पूजीइ, श्रं निकळंक चरित्र । —मा कां. प्र.

उ०—४ नवि मानिउ नृपिइ हूं एह वात मनि हुई विरूई । अनु मुझ घरि आविया पहु पुत्र इह वात सहई । —सालिभद्र सूरि

२ बुरा, अहित ।

उ०—जा देव दुर्योधन बांह वाही, नहीत तइ जेमिइं पारथ साही । किसई विरूअउं करिसिइं न पारथ, ए उचि पुणी हिव हुइ कृतारथ । --सालिसूरि

३ बद शक्ल, कुरूप ।

४ बद जबान ।

रू. भे.—विरूपो, विरुव, विरुयउ, विरुयो ।

विरूउ—देखो 'विरूप्रो' (रू. भे.)

उ०—जउ श्रं विरूउ प्राचरइ, तउ पण ब्रह्म पवित्र । परमेस्वर श्रं पूजीइ, श्रं नीकळंक चरित्र । —मा. कां. प्र.

विरूठक—स. पु. [सं.] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा ।
२ एक लोकपाल ।

विरूढ—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—भिड़ियो रुघनाथ भूपाळ समोभ्रम, चार पहार विरूढ घडै । पहला वरियाम इता पड़िया, ता पाछै गोदंदास पडै ।—गु. रू. ब.

बिरुणां-वि —वीरों का, वीर-रस से सम्बन्धित ।

उ०—जोधा रणां बारणां बिरुणां नाद सामाजतो, जटी-रू भजोणां नाद साभतो जगेव । बाजता बिढोणां नाद बाजियो राणं-स बाबो, गुणा नाद भग्राजनो गाजियो गगेव । —हुकमीचंद खिड़ियो

बिरुप—देखो 'वरूथ' (रू. भे.)

बिरूथणी, बिरूथनी, बिरूथिनी—१ वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

२ देखो 'वरूथणी' (रू. भे) (ह नां. मा.)

बिरूथी—१ देखो 'वरूथी' (रू. भे)

उ०—भुकै भूल बारणां वरक्क गजा पीठ भंडा, 'वेहरी' हूबक्कं बठै ऊबक्कं जोधार । मामधमी केम चूकै जेण भांटै चूकै मुरी, 'जगाणी' न बकै भूरो बिरूथी जोधार । —किरपाराम कवियो

२ देखो 'वरूथ' (भ्रल्पा., रू. भे)

बिरूद—१ देखो 'विरद' (रू. भे.)

उ०—संकट माहै समरतां, दादोजी करै दुख दूर रे लाल । बेडो राखी बूडती, परसिद्ध ए बिरूद पडूर रे लाल । —ध. व. ग्रं.

बिरूध-१ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—दूव बिरूधां मंदचळ, रोहा लग्गा राह । यां जाळंधर आवियो असुर आलमसाह । —रा. रू.

बिरूप-वि. [स] १ बदशक्ल, बदसूरत, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ तेहनें रमणी चार सरूप जो, लखमी तो लाखें गानें गेह मांरे लो । कितलें दिवसें थयो विरूप जो, कवड़ी नो वित्त मिनें नहीं जेहना रे लो । —वि. कु.

उ०—२ सोना को नाम छै रुक्मइयो निराउध कीयो । आवध काटि नाख्या । पकड्यो पकडि केस उतारया । तब बिरूप दीसै लागो । आपणो जीव विज्या थका जु रुक्मइया को जीव छोड्यो सु रुक्मणीजी को अंतकरण जाणि कै । — वेलि टी.

२ जिसके अनेक रूप हो, बहुरूपी ।

३ अप्राकृतिक, अद्भुत ।

४ कान्ति, आभा, शोभा, आदि से रहित ।

५ जिसका रूप बदल गया हो, बदले हुए रूप का ।

६ दूसरे या भिन्न प्रकार का ।

७ भयंकर, भयावह, डरावना ।

स. पु.—१ श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया एक असुर ।

२ क्रोध का मानवी रूप, जिसमें उसने इक्ष्वाकु राजा से तत्त्वज्ञान पर संवाद किया था ।

३ श्रीकृष्ण का एक महारथी पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ अंबरीष राजा का एक पुत्र जो पृषदश्व राजा का पिता था ।

६ बिगड़ी हुई या बदली हुई सूरत ।

रू. भे.—बीरूप ।

बिरूपआंगिरस-सं. पु. [स. विरूप+आंगिरस] ऋग्वेद में वर्णित एक वैदिक सूक्तद्रष्टा, जो अंगिराकुलोत्पन्न एक मंत्रकार था ।

वि. वि —यह अंगिरस् ऋषि के आठ पुत्रों में से एक था । इसके सात भाइयों के नाम—बृहस्पति, उतथ्य, पयस्य, शान्ति घोर, संवर्त्त एवं सुधन्वन् थे ।

बिरूपक-सं. पु.—१ पृथ्वी का शासक एक दानव । (प्राचीन)

२ प्रालबेय राक्षसों का अधिपति, जो नीलकन्या विकचा का पति व दंष्ट्राकराल आदि का पिता था ।

बिरूपचक्ष, बिरूपचक्षु, बिरूपचख-सं. पु. [स. विरूप+चक्षुस्] शिवजी का नाम ।

बिरूपता-स. स्त्री.—१ विरूप होने की अवस्था ।

२ भयकरता, भयावहता ।

बिरूपपरिणाम-स. पु.—एक रूपता से अनेक रूपता की ओर परिवर्तन । (दर्शन)

बिरूपरूप-वि. [स विरूप+रूप] भद्दा, बेडौल, बदसूरत ।

उ०—उरध केस बिरूपरूप, सुज निसा समाणं । भ्रूह बंका विकराळ है, द्रढ दंत केवाण । —गज-उद्धार

बिरूपा-वि. स्त्री. [सं.] बदसूरत, बेडौल, भद्दी ।

सं. स्त्री.—यम की एक पत्नी ।

बिरूपाक्ष, बिरूपाख, बिरूपाखि-वि. [सं. विरूप+अक्ष] बेढंगे या डरावने नेत्र वाला ।

सं. पु.—१ शिव, शंकर । (अ. मा.)

२ शिव का एक गण ।

३ एकादश रुद्रों मे से एक ।

४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

५ राम-रावण युद्ध में रावण का सेनापति जिसका वध सुग्रीव ने किया था ।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

७ महिषासुर का अमात्य, एक राक्षस ।

८ महाभारत युद्ध मे घटोत्कच का सारथि जो कर्ण-घटोत्कच युद्ध में कर्ण द्वारा मारा गया था ।

९ नरकासुर का सेनापति एक राक्षस, जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

१० एक दिग्गज । (पुराण)

११ इंद्र-वृत्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक दानव जो कश्यप एवं दनु के चौंतीस पुत्रों मे से एक था ।

१२ एक राक्षस जो हनुमान द्वारा प्रमदावन उजाड़ते समय मारा गया था।

१३ एक नाग।

स. स्त्री.—१४ एक देवी का नाम।

रू. भे.—विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि।

बिरूपाक्षपूजन-सं. पु. [सं. विरूपाक्ष+पूजन] पौष शुक्ला १४ को किया जाने वाला विरूपाक्ष देवी का पूजन।

वि. वि.—उक्त पूजन के बाद उपकरण सहित महोक्ष का दान किया जाता है। इस प्रकार वर्षभर प्रत्येक शुक्ल, १४ को पूजन किया जाता है इसके करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है और राक्षसादि का भय नहीं रहता है।

बिरूपिक बिरूपी-वि. (स्त्री. विरूपिका) बदसूरत, बदशक्ल का।

सं. पु.—कुरूप व्यक्ति।

बिरूहण, बिरूहणि, बिरूहणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे.)

उ०—१ माठी थाइ मालती, कमल तणा फुल नास। बिरूहणियां बुल चालविह, मार तूं मारणमास। —मा. का. प्र.

उ०—२ मगाहर मउमद कारग्यु. विरूहणिया मुखि जेह। मामव मनि आलाप करि, करसी अधिकी नेह। —मा. का. प्र.

बिरेक, बिरेचक, बिरेचण, बिरेचन-स. पु. [स. विरेक, विरेचक व विरेचन] दस्त लाने वाला पदार्थ या औषधि, जुलाब।

बिरेफ-स पु. [सं.] १ जल की धारा, जलस्रोत, नदी।

२ 'र' वर्ण।

बिरोगी-वि.—रुग्ण, बीमार।

उ०—विरह बिरोगिण हुय रही, रोग न जाणे कोय। जनहरिया हरि कारणै, भुरि भुरि पजर होय। - अनुभववाणी

(स्त्री. विरोगण, विरोगणी, विरोगिण, विरोगनी)

बिरोचण, बिरोचन-स पु [स विरोचन] १ सूरज, सूर्य।

(क. कु. बो., डि. को., ना. मा., ना. डि. को.)

२ चन्द्रमा, चांद।

उ० सूर धीर सालैन नीर तें सोहै कायर नर करै साथ कू बिमोहै। श्रीमहाराज की रूप अैसो निजर पायो, जाणे रोहिणी को संग बिरोचन पायो। —रा. रू.

३ आग, अग्नि। (अ. मा., ह. नां. मा.)

४ अरक, आक, मदार।

५ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो महाभारत युद्ध मे भीम के द्वारा मारा गया था।

६ हिरण्यकश्यप के पुत्र भक्त प्रह्लाद का पुत्र व अवंकितनम् नामक पाचवे पाताल लोक के अधिपति बलि का पिता।

वि. वि.—पृथ्वीरूपी गौ को दूहते समय यह बछड़ा बना था। यह ब्रह्मा के पास देवराज इन्द्र के साथ असुरों की ओर से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु गया था। यह 'तारकामय युद्ध" में असुरों की सेना का सेनापति था एव इसी युद्ध मे मारा गया था। इसके विशालाक्षी एव देवी नामक दो पत्नियां थी। यह यशोधरा का पिता व विरोचना का भाई था। इस के कुंभ, निकुंभ, आयुष्मत, शिबि एवं वाष्कलि नामक पाच भाई थे।

रू. भे.—विरोचन, वीरोचन, वैरोचन, वीरोचद, वीरोचन।

बिरोचनसुत-स पु [सं. विरोचन+सुत] १ प्रह्लाद पुत्र विरोचन का पुत्र राजा बलि।

२ सूर्य पुत्र राजा कर्ण।

रू. भे.—वीरोचदसुत, वीरोचनसुत।

बिरोचना-स. स्त्री —१ भक्त प्रह्लाद की कन्या और विरोचन दैत्य की बहन, जो त्वष्टृ को ब्याही गई थी जिससे इसे विरज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

२ स्कंद की एक अनुचरी का नामान्तर।

बिरोटियो -देखो 'वीराटियो' (रू. भे.)

(स्त्री. विरोटण, विरोटणी)

बिरोणी बिरोबो-क्रि. स.—पिरोना।

उ०—लक्ष्मीवलनाद ग्रहि एकि स्त्री अचछद, हार अरद्धहार पिरोती, एकि सूंई मुंहे बिरोती, देखीइं आमलक प्रमाण मोती विमाल, सुवर्णमय थाल, तेहनां अपार झमाल, रूपानी कचोली, देखीइं दहीमाहि झबाली······। —व स.

बिरोद, बिरोध-सं. पु. [स. विरोध] १ बेमेल होने की अवस्था, बेमेलपन।

उ० —साहसी सु संतोष करीजइ, बयर बिरोध निवार जी। सगपण नैं जैं साहसी केरउ, चतुर सुणो सुविचार जी। —स. कु.

२ शत्रुता दुश्मनी, वैर।

उ०—१ साका विगर नाम न रहै सु एक साको कीजै। तरै मूळराज, रतनसी नै दूदै साकै री निसर्चं करी, नै पातसाह सू बिरोध वधावण री करै। पिण बीकमसी करण न दै। —नैणसी

उ०—२ बळोवळी बीरहक नौपता नगारा बागी, सेना पीठ लागी जोम धारिया सक्रोध। उवरा आममांण भुजाटा मेल री अण्यां, देखो कस बस माथै तड़िता बिरोध। —बादरदांन दधवाडियौ

उ०—३ मागना जाळंधर महाजोधार सारिखा रा वैर कळियां काढां। असमासुर रा बिरोध माहे इंद्रादिक देवता वाढा।

—मा. वचनिका

३ लड़ाई झगड़ा, युद्ध।

उ०—१ आदर बिरोध अवरंग सूं, बिरस बोध सुर बप्पियो।

ऊवरां भड़ां 'अजमाल' रां, असुरां डर ऊपप्पियो। —रा. रू.

उ०—२ यं कंमधज धरे पू अंबर, ज्यूं गगा मेळ जोगेसर। आदर जोध विरोध असंका, बंट रतन ज्या सुर बका। —रा. रू.

४ वह प्रयत्न जो किसी कार्य आदि को रोकने हेतु किया जाता है।

उ०—बरसाळं रो मौको, ऊंट री असवारी, सा'बनै समैरी भेंट दाय आयगी। ई रै सागं चुनाव रै विरोध हाळी दरखास्त जकी म्हैं अगरवाळां रै कै'णै सूं फाड़ दी जकै रो ही जिकर करचौ अर मनै दोसी साबत कर दियो। —दमदोख

५ अनबनी, वैमनस्यता।

६ बाधा, रुकावट।

७ भिन्न-भिन्न तथ्यों मे पाया जाने वाला तत्व जो स्वभाविक रूप मे एक दूसरे के विपरीत हो। ज्यूं दूध अर नीबू

८ विपरीत स्थिति।

९ नियत्रण, दमन।

१० विपरीतता, प्रतिकूलता।

११ मुकाबला, सामना।

१२ एक अर्थालकार, जिसमे, जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी के साथ विरोध पाया जाता हो।

१३ अनान्तक का पिता व वात नामक राक्षस का पुत्र।

रू. भे.—बरोद, वरोध, विरोध।

विरोधक-वि.—विरोध करने वाला, विरोधी।

उ०—है नह 'पाबु' हाथ ताव अबध 'जींदं' तणी। वेध विरोधक वात कर, कोय विघन करावसी। —पा. प्र.

विरोधणौ, विरोधबौ-क्रि स. [स. विरोधनम्] १ बेमेल करना, असगत करना।

२ शत्रुता करना, दुश्मनी करना, वैर करना।

३ लड़ाई करना, झगडा करना, युद्ध करना।

४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न करना।

५ अनबनी करना, वैमनस्य करना।

६ बाधा डालना, रुकावट डालना।

७ नियत्रण करना, दमन करना।

८ मुकाबला करना, सामना करना।

उ०—मांडव सुरम अडप्पियो, हालाविया हमल्ल। साह विरोधण कळि मथण, दळ करिवा ऊथल्ल। —गु. रू. बं

९ खण्डन करना।

विरोधणहार, हारौ (हारी), विरोधणियौ—वि०।

विरोधियोड़ौ, विरोधियोड़ौ, विरोध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरोधीजणौ, विरोधीजबौ—कर्म वा०।

विरोधणौ, विरोधबौ—रू० भे०।

विरोधाचरण-सं. पु. [सं. विरुद्ध+आचरण] १ हित के प्रतिकूल आचरण।

२ शत्रुता का व्यवहार।

३ सामान्य आचरण के विरुद्ध आचरण।

विरोधाभास—देखो विरोध' (१२)

विरोधिता-स. स्त्री —१ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैर।

२ नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)

विरोधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बेमेल किया हुआ, असगत किया हुआ.
२ शत्रुता किया हुआ, दुश्मनी किया हुआ, वैर किया हुआ.
३ लड़ाई किया हुआ, झगड़ा किया हुआ, युद्ध किया हुआ.
४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न किया हुआ. ५ अनबनी किया हुआ, वैमनस्य किया हुआ. ६ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ. ७ नियत्रण किया हुआ, दमन किया हुआ.
८ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ. ९ खण्डन किया हुआ।

(स्त्री. विरोधियोड़ी)

विरोधी-वि. [सं विरोधिन्] १ विरोध करने वाले पक्ष का, विपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी।

उ० – मांहीमांहि विरोधियां, सोला ऊपरि सूर। भवसिद्धि भीखारी थया, भूप तणि हारी भूर। —मा. कां. प्र.

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ बाधा डालने वाला, बाधक।

४ शत्रु, दुश्मन, वैरी। (अ. मा, ह. नां. मा.)

५ दमन करने वाला, नियंत्रक।

६ युद्ध करने वाला, झगडा करने वाला।

७ खिलाफ, प्रतिकूल।

उ०—क्रस्णजी का जुदा जुदा रूप देखण लागा। कांमिनी कहइ काम आयौ। मत्रु कहण लागा काळ आयौ। अौर जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्रीनारायण को सरूप जांण्यौ। —वेलि टी.

स. पु —साठ सवत्सरो में से २३ वां और विस्णुवीसी में से तीसरे संवत्सर का नाम।

रू. भे.—विरोधी।

विरोधोपमा-स. स्त्री. [स.] उपमा अलकार का एक भेद विशेष, जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती हो।

विरोळ-सं. पु.—१ भ्रम, भ्रान्ति।

२ नाश, समाप्ति।

३ विघ्न, बाधा।

४ अव्यवस्था, गड़बड़ी।

५ युद्ध, झगड़ा।

उ०—ऊगा सूर ममो ऊदावत, बढ़े वस खळ बोल बिरोळ। चलु-घम मरी तणी चीलोड़ा, चद्रग्रहाम रहै नव चोळ।

—प्रथ्वीराज राठौड़

६ मथन की क्रिया, मन्थन।

उ०—ढाळा दळ दिल्ली वाळा, पखबर करि प्रब्बत-माळा। सांमंद बिरोळ मकउळे, धमधमक निया धमधउळे। —सु. प्र. व.

वि.—नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

उ०—हाम प्राग ममाबा उरणी प्रथीनाथ होदू, बाज मीधू ग्रेराक मे झ भड़ां बिरोळ। मदा लागो खीजियो खूमांण खगा झळा मार्थ, छंदा लागो रीझियो पुरद्व बाळी झोळ।

—भीमसिंह सीसोदियो रो गीत

रू. भे.—बरोळ।

बिरोळण-वि.—१ तहस-नहस करने वाला।

२ अस्त-व्यस्त करने वाला।

३ मारने वाला, संहार करने वाला।

४ मथने वाला, बिलोड़ित करने वाला।

बिरोळणौ, बिरोळबौ-क्रि. स. [स. विलोडन] १ तहस-नहस करना, बरबाद करना, ध्वंस करना।

उ०—सज दळ सबळ मोस पतसाहा, दिली बिरोळण 'करण' दुवौ। पोढाप तरवार पाकडे, होमत करे जवान हुवौ।

—वीर दुरगादास राठौड़ रो गीत

२ अस्त-व्यस्त करना, अव्यवस्थित करना।

३ संहार करना, नाश करना, मारना।

उ०—१ विभाड़ै गोळ फिरगांण रा ट्रहवटा, गैमटा बिरोळण जोम गाढ़ै। ल्योग म त्याग झकझोळ नवसाहसौ, चौळ गरकाब रंग दवा चाढ़ै। —सिवनाथसिंह कुंपावत रो गीत

उ०—२ थाठ सं खळां नै हेक ढाबड़ै बिरोळणा धाचा दरोळणा देयता दैतां मनायौ खीगोध। मचायौ दिखायौ तोर सारंगां खगेस धायौ, सिम्भाणौ पिनाकी बीरभद्र सा विरोध।

—बादरदान दधवाड़ियौ

उ०—३ पाव सोबायना मिळ ऊभौ सुपह, बिरोळे धोकळ करे बाहा। बिडग प्रादेसियो दळे बहलावता, मार प्रादेसियो पातसाहा। —हरनाथसिंह करमसोत रो गीत

उ०—४ घड़ा सिर जोम नाजे घडा धमाधम, कांगुरा तरफ बाजे कुहाड़ा। किलौ तिरधरण धाळे रयण बध कड़ा, बिरोळे चोवडा फिरंग वाड़ा। —कविराजा बांकीदास

४ मथन करना, मथना, बिलोड़ित करना।

उ०—१ रिण रोहिड दधि मथांण, बिरोळे लीधा रतन लाल। रत रद सुपांण विमाण, विडारे हरां कीधा हाल। —मा. वचनिका

उ०—२ समहर गजबोळ रोळिग्रे साबळ, बैसर बैसर तोलतो बळ। दिली सहायत 'ग्रचळ' दूसरो, 'दूद' बिरोळे दिखण दळ।

—दूदा नगराजोत रो गीत

५ उपभोग करना।

६ बिखेरना, छितराना।

७ समाप्त करना, मिटाना।

उ०—नउ बीस हथि बिरोळि, तइ वीस हथि बिरोळियइ। मावळि मागइ तू नगाद हिज्यउ सु काइ हिंगोळि। —ग्र. वचनिका

८ गुजरना, पार करना।

उ०—करहा, चरि चरि म चरि चरि, चरि चरि म चरि म भूर। जै वन कालिह बिरोळियउ, तै वन मेल्है दूर। —ढो. मा.

९ पराजित करना, हराना।

उ०—जतराव जणी पुल वाग मले, हय थाट बिरोळण भोल हले। काळ चाळ रोमाळ बुहा कड़चे, यण ताळ धेनाळ लया अड़चे।

—पा. प्र.

१०—रस लेना।

उ०—भमरि मालति जेम बिरोलियइ, तिम न केतकि केलि घघोलियइ। अणह काजि न डुगर ढोलियइ, जडह कालु करी कुल बोलियइ। मालिसूरि

बिरोळणहार, हारौ (हारी), बिरोळणियौ—वि०।

बिरोळिग्रोड़ो, बिरोळियोड़ो, बिरोळयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिरोळीजणौ, बिरोळीजबौ—कर्म वा०।

बरोळणौ, बरोळबौ, बिरोळणौ, बिरोळबौ, बिरौळणौ, बिरौळबौ, बरोळणौ, वरोळबौ, वोरोळणौ, बोरोळबौ—रू० भे०।

बिरोळियोड़ो-भू का कृ.—तहस-नहस किया हुआ, बरबाद किया हुआ, ध्वंस किया हुआ २ अस्त-व्यस्त किया हुआ, अव्यवस्थित किया हुआ ३ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ४ मथन किया हुआ मथा हुआ, बिलोड़ित किया हुआ. ५ उपभोग किया हुआ ६ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ. ७ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ. ८ गुजरा हुआ, पार किया हुआ. ९ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १० रस लिया हुआ.

(स्त्री बिरोळियोड़ी)

बिरोहण—सं. पु.—१ एक नाग विशेष जो तक्षक कुल में उत्पन्न हुआ था।

२ वह सन्तान जिसकी माता का वर्ण पिता की अपेक्षा उच्च हो।

बिलंद-न. पु.—१ बालिश्त।

उ०—सुद्दया सांकळी रूपे रा चमकनै रह्या छै। सात-सात बिलंबां री लांबी खोळी मेग कपड़ री सूं बाहर काढजै छै। बादळ मांह वोज नीसरी आकास री, कना तीज रै तमासै माह पातळी कांमणी पोसाख कर नीसरी, इण भांत री बंदूकां मोटयार तिरता-तिरता लेय उण घड़नांवां आया छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बुलंद' (रू. भे.)

उ०—१ विरांण मीर धोठा विलंद, नीसांण फोल दीठा नरिंद। घरहड़ै क्रोध परचंड धूप, भुज डंड अड़ै बहुमंड भूप। —वि. स.

उ०—२ वडवडे भी वडवडे, बड पुरख बिलंदे, जांण पिछांण जाहरां, दिल अंदर दंदे। सीधां आगम च्यार वेद, कतेब कहंदे, पुतलिया नट हदियां, क्या आदम गंदें। —केसोदास गाडण

रू. भे.—बिलंद बुलद।

बिलंब-सं. पु. [सं. बिलम्ब] १ आवश्यक, उचित या सामान्य समय से अधिक समय लगने की स्थिति।

उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया, गेम गमाया गुण गाया। घिणीयाणी धाया बिलंब न लाया, आरावां ना सुणि आया। —पी. ग्रं.

२ आवश्यक उचित या सामान्य समय से अधिक लगने वाला समय, देर, अति काल।

उ०—घरिये भोग बिलंब न करियें, मेरी मांन पियारी। जीमें म्हारो प्यारो गिरधर, साधां नै बेग बुला री। —मीरा

३ आलस्य, दीर्घसूत्रता।

रू. भे.—बिलब, बिलम, विलभ, विलम।

बिलबण, बिलंबन-स. स्त्री. [सं. विलम्बन] १ देर करने की क्रिया, विलब करने की क्रिया।

२ लटकने की क्रिया।

३ आश्रय लेने की क्रिया, आश्रित होने की क्रिया।

बिलंबणो, बिलंबबो-क्रि. स. [स. विलम्बनम्] १ देर करना, विलम्ब करना।

उ०—गढ थी मांड सेना लगे जी, करचो हारा डोर। बार घणी बिलबयो जी, जतन करेयो जोर। —प. च. चौ.

२ आलिगन करना।

उ०—सावण आयउ साहिबा, पगइ विलंबी गार। अच्छ विलबी वेलड़या,, नरा बिलबी नार। —ढो. मा.

२ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ पवन जु चाल्यौ छै। सू नदि नदि कै विखै तिरतौ आवै छै। रूंख छै त्या कै विखै बिलंबतौ आवै छै। वेल्यां सौं लपटातौ आवै छै। दक्षण हुंना जु उत्तर दिसा नै चाल्यौ छै। —वेलि टी.

उ०—२ हरीया अैसा हरि भया, तैसा भया न कोय। बाकै पाय बिलंबियै, पारि उतारै सोय। —अनुभववांणी

३ पकड़ना, ग्रहण करना।

उ०—१ गाडर पूंछ बिलंब कर, कोइ पार लंघावै, रंक चलंदा मार कर, कोइ मल कहावै। वेतर भुन आराध कर,कोइ देव मनावै, डाकण का मंत्र सीख कर, कोइ साध कहावै। —केसोदास गाडण

उ०—२ केईक पांना फूलड़ां, केईक बिलब्यां डाल। हरीया मूल बिलंबिया, फल पाया असराल। —अनुभववांणी

क्रि. अ.—१ देर होना, विलम्ब होना।

२ फसना, घसना।

उ०—माया को कादो विन्यो, अंध बिलंब्या आय। हरीया नर आधा घसै, ज्यूं ज्यु कळता जाय। —अनुभववांणी

३ आश्रित होना, सहारा लेना।

उ०—सजण, गुणी समुद्द तू, तर तर थक्की तेण। अवगुण एक न सांभरइ, रहूं बिलंबी जेण। —ढो. मा.

४ मग्न होना, लीन होना।

५ रत्त होना, आसक्त होना।

उ०—दादू खाटा मीठा खाइ कर, स्वाद चित्त दीया। इनमें जीव बिलबिया, हरि नाम न लीया। —दादूबांणी

६ लगना, लिपटना।

उ०—सांवण आयउ साहिबा, पगइ विळंबी गार। अच्छ बिलंबी वेलड़्यां नरां बिलबी नार। —ढो. मा.

७ उलझना, फसना।

८ सहारा लेना, लटकना।

९ रुकना, अवरुद्ध होना।

१०—चिपकना।

उ०—१ सांवण आयउ साहिबा, पगइ बिलबी गार। अच्छ बिलबी बेलड़चा, नरा बिलंबी नार। —ढो. मा.

उ०—२ पावस मास प्रगट्टियउ, पगइ बिलंबइ गारि। घण की आही वीनती, पावस पंथ निवारि। —ढो. मा.

११ हर्षित होना, खुश होना।

१२ भ्रमित होना, भूलना।

उ०—हरीया मिरघ बिलंबियो, हरया देख वन घास। जीवण का सासा पड़चा, इण आजूणे वास। —अनुभववांणी

१३ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त होना, लगना।

उ०—सांई सौं सहजें रमू रे, और नही आंन देव। तहां मन बिलंबिया, जहां अलख अभेव रे। —दादूबांणी

१४ देखो 'बिलूंबणौ, बिलूंबबौ' (रू. भे.)

बिलंबणहार, हारौ (हारी), बिलबणियौ—वि० ।

बिलंबियोड़ो, बिलबियोड़ो, बिलब्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलंबीजणौ बिलंबीजबौ—कर्म, भाव वा० ।

बिलबणौ, बिलबबौ, बिम्बणौ, बिलमबौ—रू० भे० ।

बिलंबिका-सं. पु.—एक प्रकार का अजीर्ण रोग । (अमरत)

बिलंबित-वि. [सं. विलम्बित] १ लटका हुआ, झूलता हुआ ।

२ जिसमें देर हुई हो ।

३ देर करने वाला ।

४ सुस्त या धीरे चलने वाला ।

बिलंबियोड़ो-भू. का. कृ.—१ देर किया हुआ, विलम्ब किया हुआ. २ आलिंगन किया हुआ. ३ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. ४ पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ. ५ देर हुवा हुआ, विलम्ब हुवा हुआ. ६ आश्रित हुवा हुआ, सहारा लिया हुआ. ७ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ८ लगा हुआ, लिपटा हुआ. ९ उलझा हुआ, फंसा हुआ. १० सहारा लिया हुआ, लटका हुआ. ११ रुका अवरुद्ध हुवा हुआ. १२ चिपका हुआ. १३ रत हुवा हुआ, आसक्त हुवा हुआ. १४ हर्षित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ. १५ भ्रमित हुवा हुआ. १६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, लगा हुआ ।

१७ देखो 'बिलूंबियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलंबियोड़ी)

बिलंभ—देखो 'बिलंब' (रू. भे.)

उ०—बीरभाण विचारद रे, मन बैर सभारद रे, इण सोहाग उतारयौ मुझ माता तणौ रे, जो परही दीजयै रे, सहिजइ छूटीजयै रे, कीजयै न बिलंभ इण बातै घणौ रे । —प. च. चौ.

बिळ, बिल—१ देखो 'बिल' (रू. भे.)

२ देखो 'बळ' (रू. भे.)

बिलउ—देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—किसू पहुतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि बिलउ । अरजुन बोलइ ए अकुलीन, अरजुन भूझिसि मइ सूं हीन । —सालिभद्र सूरि

बिलकणौ, बिलकबौ—देखो 'बिलखणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—बहुत डोलै बिलकती, कर कर छूटा केस । भसम लगाऊ अंग पर, ऊपर बरसै मेस । —श्री हरिरामजी महाराज

बिलकणहार, हारौ (हारी), बिलकणियौ—वि० ।

बिलकियोड़ो, बिलकियोड़ो, बिलक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलकीजणौ, बिलकीजबौ—भाव वा० ।

बिलकल—देखो 'वल्कल' (रू. भे.)

बिळकळणौ, बिळकळबौ—देखो 'बिळकुळणौ, बिळकुळबौ' (रू. भे.)

उ०—अकळर घरे आया अनंत, बिळै मात पिति बिळकळै । कूबड़ी हुति कीधी क्रिपा, माहव भगता सा मिळै । —पी. ग्रं.

बिळकळणहार हारौ (हारी), बिळकळणियौ—वि० ।

बिळकळियोड़ो, बिळकळियोड़ो, बिळकळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिळकळीजणौ, बिळकळीजबौ—भाव वा० ।

बिळकळियोड़ो—देखो 'बिळकुळियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिळकळियोडी)

बिलकियोड़ो—देखो 'बिलखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री· बिलकियोडी)

बिलकुल—देखो 'बिलकुल' (रू. भे.)

बिळकुळणौ, बिळकुळबौ-क्रि. अ.—१ व्याकुल होना, विह्वल होना ।

उ०—हय हय सिरजणहार, ढोलौ बीछोहौ बिळकुळै । —ढो. मा.

२ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

उ०—१ बिळकुळै राजरमणी वदन, निरखै रूप नरचंद रौ । जांणे विकास प्रामै जळज, देखि प्रकास दुदिद रौ । —रा. रू.

उ०—२ धरापति आज लखधीर रज घणौ, घणौ मुद जास जस-बास रिधि घणौ । कवी निति देखि मन माहि बिळकुळै, भलो विधि तेज रवि जेम भळहळै । —ल. पि.

उ०—३ सळा रा सीस महारुद्र में पेस कीजै । दुस्ट मरै सरगा-पुर रौ दुवा टळै । इनरौ माभळ, बिळकुळतै वदन पुरंदर बोलियौ— जांणे कर उजळा, अमोलक मोताहळ मा वचन भड़ै ।

—मा. वचनिका

उ०—४ खळहळा खल चळचळा खापर, बीमहथ भर बिळकुळै । मह वळा चव रघुनाथ अमला, मड सुसबद मंडळी । —र. ज. प्र.

उ०—५ मन मैं तो देखिया नै घणौ बिळकुळी । चौड़ै सोच की सूरत कीदी । जवै सायण्या नै कह्यौ, अबै हूं काइ करूं । मनै तो देखि लीवी । पवन बी वैरी हुवौ । —पनां

३ आतुर होना, उतावला होना ।

उ०—१ भड़ कोस छूता मद गै मरियौ, भ्रौ 'गोगौ' लखुसर उत-रियौ । सवरां सत नंडोय सभरियौ,कळ चालण 'धीर' बिळकुळियौ ।

—गो. रू.

उ०-२ बीरनि विदा बिळकुळेय, मुख राग मूंछ भ्रूहां मिळेय । चख लाल कोप मुख कीध चोळ, कळकळै तेज विकसै कपोळ ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ बिळकुळै उछाईदार बधि, आणंद उछब अथाह सू ।

आगम्म खबर अमसाह' री, जाय कहै 'जैसाह' सूं। —सू. प्र.

४ प्रफुल्लित होना, फूलना।

उ०—१ हणमंत द्रोण हिल्लोळवा, वीरा-तन किरि बिळकुळै। दळ-थंभ विढण दखणाधि सूं, ऐम ऊठियौ भुज आंमळै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ बिळकुळियौ वदन जेम वाकारचौ, संग्रहि धनुख पुणच सर सधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बधि। —वेलि.

५ दैदिप्यमान होना, चमकना।

उ०—१ वीरति मुख सूरति बिळकुळिय, कमधज तेज कमळ कळमळयं। किसन वरण माझिल कंठलिय, सूरज किरण जांण झळहळियं। —गु. रू. बं.

उ०—२ स्रवण वयण संभळै, नयण बिळकुळै निरंमळ, जोत वदन झळहळै, लाज भुजि झळै स उज्जळ। सूर विरत सल्लळै, ज्वाळ झळहळै फुणंधर, कनां प्रळैकति करण, किरण परजळै दिणंकर।

—रा. रू.

६ चुनौती देना, ललकारना।

७ उत्साहित होना, जोश में आना।

उ०—१ सुज आप सपंड वसंभ लीय, बप वाधंय जोस बिळकुळियं। कथ थापळ रखत दूर कियौ, दाखं मुख ग्रदळ गांम दियौ।

—गो रू.

उ०—२ जोगावत 'पेमौ' तिण जांमळ, दिल बिळकुळै मिळै जद कंदळ। 'वछराजोत' 'अखौ' वरदाई, पायां कळह जांणि रिध पाई।

—रा. रू.

उ०—३ जोधपुरो जुध जीपवा, गढ लेवा 'गजसाह'। विरती कोडी बिळकुळै, रोसाणो रिमराह। —गु. रू. बं.

८ चचलता के साथ हिलना-डोलना।

९ निकलना।

उ०—मारवणी मुख-ससि तणइ, कमतूरी महकाइ। पावस पन्नग पीवणउ, बिळकुळियउ तिणि ठाइ। —ढो. मा.

बिळकुळणहार, हारौ (हारी), बिळकुळणियौ—वि०।

बिळकुळिओड़ौ, बिळकुळियोड़ौ, बिळकुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिळकुळीजणौ, बिळकुळीजबौ—भाव वा०।

बिळकुळणौ, बिळकुळबौ, बिल्कुळणौ, बिल्कुळबौ—रू० भे०।

बिळकुळियोड़ौ—भू. का कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, विह्वल हुवा हुआ. २ प्रसन्न हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ. ३ आतुर हुवा हुआ, उतावला हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ. ५ दैदिप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ. ६ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ. ७ उत्साहित हुवा हुआ, जोश में आया हुआ. ८ चचलता के साथ हिला-डुला हुआ।

(स्त्री. बिळकुळियोड़ी)

बिलक्खणौ, बिलक्खबौ—देखो 'बिलखणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कर मूठ धनखं छूट बिसखं, लेखा पकव सर नक्खं। वध सूर हरक्खं और बिलक्खं, चाव परक्खं रवि चक्खं। —रा. रू.

उ०—२ स्वजन वेवाहिय धूरइ भूरइं निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आंणीय गेहि। भूनलि भंभरभोलिय डोलिय जिम न चडत, विलवइ कुमरि बिलक्खिय देखिय तं व्रत्तांत।

—जयसेखर सूरि

बिलक्खणहार, हारौ (हारी), बिलक्खणियौ—वि०।

बिलक्खिओड़ौ, बिलक्खियोड़ौ, बिलक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलक्खीजणौ, बिलक्खीजबौ—भाव वा०।

बिलक्खियोड़ौ—देखो 'बिलखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिलक्खियोडी)

बिलक्खौ—देखो 'बिलखौ' (रू. भे.)

उ०—साजूरा पांणी विना, रहइ बिलक्खा जेम। ढाढी साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण एम। —ढो. मा.

बिलक्ष—वि. [स.] १ विशेष चिन्हों या लक्षणों रहित, लक्षणहीन।

२ जिसका कोई लक्ष्य न हो, लक्ष्य रहित।

३ विकल, व्याकुल।

४ अद्भुत, अनोखा, अनूठा, असाधारण।

५ लज्जा से युक्त, लज्जित।

६ आश्चर्ययुक्त चकित, विस्मित।

रू. भे.—बिलखि।

बिलक्षण—वि. [सं.] १ चिन्हों या लक्षणों से रहित, लक्षणहीन।

२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र।

उ०—वीर पणौ पनो रो दिखाण साह कहै छै-थें जिका रा वधावा गावो छौ तिका रा सुभाव सुं म्हारा धनी रो सुभाव बिलक्षण छै-किसो कि दमगळ (जुद्ध) विना दूचितो रहै अनै जुद्ध में कगळ बगतर रा जत कडिया ही नही जई इसा वीरगणा रा सुभाव हे।

—वी. स. टी.

३ अशुभ लक्षणों वाला।

४ विशेष लक्षणों वाला।

रू. भे.—बिलच्छण, बिलच्छन, बिलख, बिलखण, बिलखणौ, विलच्छण, विलच्छन।

बिलक्षणता—स. स्त्री.—बिलक्षण होने की अवस्था या भाव।

बिलक्षि—देखो 'बिलक्ष' (रू. भे.)

उ०—गोरी गलि लगी रही, वेलि चढ़ी जिम वक्षि । विनम करी-नइं विलपती, विधि विधि वई बिलखि । —मा. कां. प्र.

बिलख, बिलखरण-वि.—खिन्न, उदास, विकल, व्याकुल ।

उ०—नमांमी मरवेसा बिलख नयसम्बाक्षर नमो, नमो नरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमो । नमो स्रस्टा त्वस्टा प्रगम उतकस्टा मह नमो, नमो स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमो । —ऊ. का.

रू. भे.—बिलख, बिलखरण ।

बिलखरणौ-वि. [स्त्री. विलखरणी] १ व्याकुल, बेचैन ।

२ रोने वाला ।

३ व्यथित, दुःखी ।

४ मुरझाने वाला ।

५ भयभीत, घबराया हुआ ।

रू. भे.—बिलखरणौ ।

बिलखरणौ, बिलखबौ-क्रि. प्र.—१ व्याकुल होना, बेचैन होना ।

उ०—साळूड़ो साळूड़ो गोरी कांई बिलखे, मेह बिना धरती तरसे, मेहड़ो हुवरण दे । —लो गी.

२ व्यथित होना, दुःखी होना ।

उ०—थारा जीव अर म्हारा जीव रो मन मिळग्यो, पछे परवास में कांई खांमी । मानै तो थारी मरजी, नींतर म्हे थनै जावरण तो नीं दू । म्हारे हिवड़ा री नागरण थारै बिना तड़फे, बिलखे ।

—फुलवाड़ी

३ अभाव की स्थिति मे प्रत्याशा से ताकना ।

४ मुरझाना, कुम्हलाना ।

उ०—मेरे सांम सुहाग का, क्षांना न रहै नूर । बिलखै बदन दुहागिनी, हरीया ऊगै सूर । —अनुभववाणी

५ विलाप करना, रोना ।

६ भयभीत होना, घबराना ।

उ०—बिलखीजै रिगतूर बाजियां, अदग बाजियां हरख मचै । थारा तीरथ चढै, धुजरणी, थारा तीरथ करण पचै ।

—कविराजा बांकीदास

बिलखरणहार, हारौ (हारी), बिलखरिणयौ—वि० ।

बिलखियोड़ो, बिलखियोड़ो बिलख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलखीजरणौ, बिलखीजबौ—भाव वा० ।

बिलखरणौ, बिलखबौ, बिलखारणौ, बिलखाबौ, बिलखाणौ, बिलखाबौ, बिलखावरणौ, बिलखावबौ—रू० भे० ।

बिलखारणौ, बिलखाबौ—देखो 'बिलखरणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

बिलखारणहार, हारौ (हारी), बिलखारिणयौ—वि० ।

बिलखायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलखाईजरणौ, बिलखाईजबौ—भाव वा० ।

बिलखायोड़ो—देखो 'बिलखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलखायोड़ी)

बिलखावरणौ, बिलखावबौ—देखो 'बिलखरणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—महा मांडियो जाग उज्जैण खागां मचै, रुदन बिलखावती रही रोती । हेळवी "अमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपछर रही वाट जोती । —नरहरदास बारहठ

बिलखावरणहार, हारौ (हारी), बिलखावरिणयौ—वि० ।

बिलखाविग्रोड़ो, बिलखावियोड़ो, बिलखाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलखावीजरणौ, बिलखावीजबौ—भाव वा० ।

बिलखावियोड़ो—देखो 'बिलखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलखावियोड़ी)

बिलखियोड़ो-भू का. कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ अभाव की स्थिति में प्रत्याशा से ताका हुआ. ४ मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ. ५ विलाप किया हुआ, रोया हुआ. ६ भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ ।

(स्त्री. बिलखियोड़ी)

बिलखूं—देखो 'बिलखौ' (रू भे.)

उ०—कोलाहल सांभळयउ अपार, कटक मांहि वूठउ अंगार । कटक माहि सह दखोऊ हूऊ घोडूं मांणस बिलखूं थयूं । —कां. दे. प्र.

बिलखोड़ो—देखो 'बिलखौ' (अल्पा., रू. भे.)

बिलखौ बिलखयौ-वि (स्त्री. बिलखी) १ उदास, खिन्नचित, व्याकुल ।

उ०—१ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजांण । तुझ विण घण बिलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमांण । —ढो. मा.

उ०—२ निरखे अवासा भर निजर, नह देखे दसरथ नृप निजर । निज देखे नह दसरथ निजर, नर दीठा बिलख्या सह निजर ।

—र. रू.

उ०—३ प्राव हमारे आंगणै, 'अह' त्रिभुवन राइ । तुम्ह विन मैं बिलखी फिरौं, अब रह्यौ न जाइ । —ह. पु. वां.

उ०—४ मन जांणी कोकर ई हैग्यो । मूडो उतरग्यो अर कंठ जांणै चेंठग्यो । घरे आयां ठांम उतरावता जेठांणी पूछयो—बिनणी आज बिलखा कियां ? —अमरचूनड़ी

२ दुःखी, व्यथित ।

उ०—१ प्रभू गो कांय उपावियो, किम स्नेह करांण । अत ही चित आतुर हुवो, बिलखे प्रह्लांणं । —गजउद्धार

उ०—२ मां रै मूंडा सूं बाप रै बेटा री बात सुणनै राजी व्है जातौ अर बांरै सौत री बात सुणनै अणूंतौ बिलखौ व्है जातौ। इण सूं आगै उण री समझ नीं ही। —फुलवाड़ी

३ मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

उ०—१ प्यारी चितियौ पीव दिस, वदन बिलखौ देख। अब कैसे अतर परघो, कौन हमारो लेख। —गजउद्धार

उ०—२ काळो तो कोयल भई, काळा जिसका रंग। हरीया हरि बिन विरहनी, वदन बिलखै अंग। —अनुभववांणी

४ घबराया हुआ, भयभीत।

५ वीरान, रिक्त, शून्य।

उ०—अमरांणै में घोर अंधार हां रे म्हांरा सोढा रांणा, अमरांणै में हो घोर अंधार हो जी हो। बिलखा नैं लागै रै मेहल माळिया हो, म्हारा रतन रांणा एकर तो अमरांणै पाछो आव।—लो. गी.

६ कान्तिहीन, तेज रहित, चमक रहित।

उ०—१ भूखा मांस अहारी भालै, बिलखै रग ऊजारै बांणी। बांको बालण फोज वहडण, अोल वडग गयो 'अमरांणी"।
—सुखजी खिड़ियौ

उ०—२ कुदरत ई साव अलूंणी कै बाड़ी लागती। चांद पीळिया रै रोगी ज्यूं बिलखौ लागतौ। ऊगता अर आथमता सूरज री गुलाल उणनै काळस सूं ई सवायौ माड़ौ लागतौ। —फुलवाड़ी

७ निराश, उदास।

उ०—१ ऊमर मन बिलखउ हुयउ, चारण बचन सुणेह। तणि हिज पंथ पाछउ वळघउ, सल्ह निषत करेह। —ढो. मा.

उ०—२ लोग पुजारीजी नैं सागैड़ौ जीमायौ। घड़ा देय घर सूं बारै काढियौ। वौ घणौ ई कूकियौ पण कीं सुणवाई व्ही नीं। बिलखौ होय टुळक-टुळक बगेची तांई नीठ पूगौ। —फुलवाड़ी

उ०—३ भाई सा तौ रोज कैवै कै अबै उणनैं सफाखांना सूं छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मांमोसा उणनैं लेयनै आवेला। वौ अठी-उठी देखनै बिलखौ पड़ग्यौ अर म्हनै जबाब देवणौ भारी पड़ग्यौ।
—अमरचूनड़ी

रू. भे.—बिलकौ, बिलक्खौ, बिलखौ, बिलख्यौ, विलक्खौ, बिलखूं। अल्पा.,—बिलखोड़ौ।

बिलग-वि.—अलग, पृथक।

रू. भे.—बिलग।

बिलगणौ, बिलगबौ-क्रि. अ.—१ लगना, लिपटना।

उ०—मन विसहर तन बंबही, ऊठि बिलगै पाय। जनहरिया तिहु लोक में, जांह जांउ तांह खाय। —अनुभववांणी

२ अलग होना, पृथक होना, जुदा होना।

उ०—हरीया अंसा को मिळै, सहजां रहै समाय। बाहरि बाजा बचन बोह, चित न बिलगै जाय। —अनुभववांणी

३ छूना, स्पर्श होना।

४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ना।

५ चिपकना, लगना, जुड़ना।

उ०—१ फल तर तैं तूटा पछै थर्प न बिलगै आय। गुर वेमुख नही नीपजै, भावै गोबिंद गाय। —अनुभववांणी

उ०—२ तन ऊतरिया नां चढ़ै, करिहो कोड़ि विचार। ज्यूं तरवर फळ ऊतर्‍यौ, फेर न बिलगै डार। —अनुभववांणी

६ लगना, होना।

उ०—बाहर किस सूं झगड़ियै, घर झोड़ बिलगा।
—केसोदास गाडण

७ आवेष्टित होना, लिपटना।

उ०—ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ केळि। जांणे चंदन-रूंख-ड़इ, बिळगी नागर वेलि। —ढो. मा.

८ कार्यारंभ होना।

९ पकड़ना, ग्रहण करना।

१० किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना, लगना।

११ आलिंगन होना, लिपटना।

उ०—१ वेस्या वेस बिलूण-समी, बोलि सोस-मझारि। नेह विना बिलगइ गलइ, मूरख, ! भव म म हारि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ पडखतउ हसि मं नइ स्वांमी, मेल्हिसी कवण स्त्री नइं नांमी। कंत कंठि बिलगी तनु बालउ, आपणा कुल कहं अजूयालउ। —सालिसूरि

बिलगणहार, हारौ (हारी), बिलगणियौ—वि०।

बिलगिओड़ौ, बिलगियोड़ौ, बिलग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलगीजणौ, बिलगीजबौ—भाव वा०।

बिलगणौ, बिलगबौ बिलग्गणौ, बिलग्गबौ, बिल्लगणौ, बिल्लगबौ, बिलगाणौ, बिलगाबौ, बिलगावणौ, बिलगावबौ, बिलागणौ, बिलागबौ, बिल्लगणौ, बिल्लगबौ—रू० भे०।

बिलगाणौ, बिलगाबौ-क्रि. स.—१ लगाना, लिपटाना।

२ अलग करना, पृथक करना, जुदा करना।

३ छूना, स्पर्श करना।

४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ाना।

५ चिपकाना, लगाना, जोड़ना।

६ लगाना, करना।

७ आवेष्टित कराना, घेरना, लिपटाना।

८ कार्यारंभ कराना।

९ पकड़ाना, ग्रहण कराना।

उ०—आंगणियै न करावो फेरो, कन्हैया। आगळिया बिलगाय रे। हाऊ बैठो छै तिहां, कन्हैया, पलणो तूं मति जाय रे।

—जयवांणी

१० देखो 'बिलगणो, बिलगबो' (रू. भे.)

बिलगाणहार, हारो, (हारी), बिलगाणियो—वि०।

बिलगायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिलगाईजणो, बिलगाईजबो—कर्म वा., भाव वा०।

बिलगाणो, बिलगाबो, बिलगावणो, बिलगावबो—रू० भे०।

बिलगायोड़ो—भू. का. कृ.—१ लगाया हुआ, लिपटाया हुआ. २ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ, जुदा किया हुआ. ३ छुआ हुआ स्पर्श किया हुआ. ४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ाया हुआ. ५ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ, जोड़ा हुआ. ६ लगाया हुआ, किया हुआ. ७ आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ, लिपटाया हुआ. ८ कार्यारम्भ किया हुआ. ९ पकड़ाया हुआ, ग्रहण किया हुआ.

१० देखो 'बिलगियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिलगायोड़ी)

बिलगाव—सं. पु.—१ लगाव, लिपटाव।

२ अलगाव, पृथकता।

३ किसी अन्य स्त्री के साथ जुड़ा हुआ, अनैतिक सम्बन्ध।

४ घेराव।

५ कार्यारम्भ।

६ पकड़ाव पकड़।

बिलगावणो, बिलगावबो—१ देखो 'बिलगणो, बिलगबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलगाणो, बिलगाबो' (रू. भे.)

बिलगावणहार, हारो (हारी), बिलगावणियो—वि०।

बिलगाविओड़ो, बिलगावियोड़ो, बिलगाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलगावीजणो, बिलगावीजबो—भाव वा कर्म वा०।

बिलगावियोड़ो १ देखो 'बिलगियोड़ो' (रू भे)

२ देखो 'बिलगायोड़ो' (रू. भे.)

बिलगियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लगा हुआ, लिपटा हुआ. २ अलग हुआ हुआ, पृथक हुआ हुआ, जुदा हुआ हुआ. ३ छूआ हुआ, स्पर्श हुआ हुआ. ४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ा हुआ. ५ चिपका हुआ. लगा हुआ, जुड़ा हुआ. ६ लगा हुआ. हुवा हुआ. ७ आवेष्टित हुवा हुआ, लिपटा हुआ. ८ कार्यारम्भ हुवा हुआ. ९ पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ. १० किसी अनिष्ट या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध हुवा हुआ. या उसके सम्पर्क में आया हुआ, लगा हुआ.

(स्त्री. बिलगियोड़ी)

बिलग्गणो, बिलग्गबो—देखो 'बिलगणो, बिलगबो' (रू. भे.)

उ०—१ जड़ पयाळ पै जुगल, सीस ब्रहमंड बिलग्गै। कळूवाउ ऊझळ, डिगै नह डोलै जुग्गै। —गु. रू. बं.

उ०—२ 'गजपती' दिस मेल्हियो, असपती फुरमांण। खुरम बिलग्गी राह हुई, तो छूटै सुरतांण। —गु. रू. बं.

उ०—३ 'दूद' मदतियो राव, आय गुर पाय बिलग्गो। रावळ जैसलमेर, परतला गामो भग्गो। —बीठ्ठोजी

उ०—४ टक नर वयस बिलग्गियै, टक कर लग्गिय लाज। वय कह जोगनिपुर चलहु लाज कहै भिड़राज।

—महाराजा मानसिंहजी

उ०—५ हर हर करतो हरख कर, आळस म कर अयांण। जिण पाणी सूं पिंड रच, पवन बिलग्गो प्राण। —ह. र.

उ०—६ सुणि सुंदरि, सम्बउ नवौ, भाजइ मन चौ भ्रंति। मौ मारू मिळिवा तणी, खरी बिलग्गी खंति। —ढो. मा.

उ०—७ कड बिलग्गी मारवी, करि कंचूआ दूर। चकवी मनि आणंद हुवउ, किरण पसाऱ्या सूर। —ढो. मा.

बिलग्गणहार, हारो (हारी), बिलग्गणियो—वि०।

बिलग्गिओड़ो, बिलग्गियोड़ो, बिलग्ग्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलग्गीजणो, बिलग्गीजबो—भाव वा०।

बिलच्छण, बिलच्छन—देखो 'बिलक्षण' (रू. भे.)

बिलछणो, बिलछबो—देखो 'बिलसणो, बिलसबो' (रू. भे.)

उ०—बार न लायौ बिलछतां, म्लेछा मन रत्ता। ईश्वर रूप अलाव-दीन, जिण आलम जित्ता। —लूणकरण कवियो

बिलछणहार, हारो (हारी), बिलछणियो—वि०।

बिलछिओड़ो, बिलछियोड़ो, बिलछ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलछीजणो, बिलछीजबो भाव वा०।

बिलछियोड़ो—देखो 'बिलसियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री बिलछियोड़ी)

बिलणो, बिलबो—क्रि. स—आवेष्टित करना, घेरना।

उ०—दल सभ्भ सुरतांण, आय चित्रकोट बिलिज्जइ, भेजउ वेगि विसिट, बात मिलणे की कीजइ। —प. च. चौ.

बिलधणो, बिलधबो—देखो 'बिलूंबणो, बिलूंबबो' (रू. भे.)

उ०—मन मध्या सोई इंद्रिया, सो स्वाद बिलधा।

—केसोदास गाडण

बिलधणहार, हारौ (हारी), बिलधणियौ—वि० ।
बिलधिय़ोड़ौ, बिलधियोड़ौ, बिलध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलधीजणौ, बिलधीजबौ—भाव वा० ।

बिलधियोड़ौ—देखो 'बिलूंधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलधियोड़ी)

बिलपणौ, बिलपबौ—क्रि. अ.—१ उदास होना, खिन्नचित्त होना, बेचैन होना ।
२ व्याकुल होना, दुःखी होना, व्यथित होना ।
उ०—१ दातण मिळबौ दुलभ, सघन वन वनै जितै सह । बिलपत जळ विन बाळ, भरै सर नळ उभळत वह ।
—जैतदान बारहठ
उ०—२ नगर मांहि नर नारि नइं, अतिघणं अंगि उचाट । बिल-पइ बमण वांणीया, वली विसेखि भाट । —मा कां. प्र.
३ विलाप करना, रोना ।
उ०—१ विनिता विधिविधि बिलपती, टोलै टोलै जाय । आगलि थातां श्रेकनइ, बीजो वढवा धाय । —मा. कां. प्र.
उ०—२ ग्राव, अमोडा-माहि धरु, ईम तणइ जिम गंग । हुं बिल-पंती विरहिणी, स्वामि ! म छडिसि संग । —मा. कां. प्र.
उ०—३ इम बिलपती देखि नै, आवै सेठ निलज । मुवचन कहे सतोखनै, एहवी करै अरज । —वि. कु.
बिलपणहार, हारौ (हारी), बिलपणियौ—वि० ।
बिलपिय़ोड़ौ, बिलपियोड़ौ, बिलप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलपीजणौ, बिलपीजबौ—भाव वा० ।

बिलपाणौ, बिलपाबौ—क्रि स.—१ व्याकुल करना, दुःखी करना, व्यथित करना ।
२ विलाप करने के लिए प्रवृत्त करना, रुलाना ।
बिलपाणहार, हारौ (हारी), बिलपाणियौ—वि० ।
बिलपायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलपाईजणौ, बिलपाईजबौ—कर्म वा० ।
बिलपावणौ बिलपावबौ—रू० भे० ।

बिलपायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ व्याकुल किया हुआ, दुःखी किया हुआ, व्यथित किया हुआ. २ विलाप करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, रुलाया हुआ ।
(स्त्री. बिलपायोड़ी)

बिलपावणौ, बिलपावबौ—देखो 'बिलपाणौ, बिलपाबौ' (रू. भे.)
बिलपावणहार, हारौ (हारी), बिलपावणियौ—वि० ।
बिलपाविय़ोड़ौ, बिलपावियोड़ौ, बिलपाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलपावीजणौ, बिलपावीजबौ—कर्म वा० ।

बिलपावियोड़ौ—देखो 'बिलपायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलपावियोड़ी)

बिलपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।
(स्त्री. बिलपियोड़ी)

बिलब्ध—वि. [सं.] १ पाया हुआ, प्राप्त किया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

बिलब्धणौ, बिलब्धबौ—क्रि. स. [सं. विलब्धनम्] १ प्राप्त करना, पाना
२ अलग करना, पृथक करना ।
बिलब्धणहार, हारौ (हारी), बिलब्धणियौ—वि० ।
बिलब्धिय़ोड़ौ, बिलब्धियोड़ौ, बिलब्ध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलब्धीजणौ, बिलब्धीजबौ—कर्म वा० ।
बिलभणौ, बिलभबौ—रू० भे० ।

बिलब्धियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।
(स्त्री. बिलब्धियोड़ी)

बिलभणौ, बिलभबौ—देखो 'बिलब्धणौ, बिलब्धबौ' (रू. भे.)
बिलभणहार, हारौ (हारी), बिलभणियौ—वि० ।
बिलभिय़ोड़ौ, बिलभियोड़ौ, बिलभ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलभीजणौ, बिलभीजबौ—कर्म वा० ।

बिलभियोड़ौ—देखो 'बिलब्धियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलभियोड़ी)

बिलम—सं पु.—१ मनबहलाव की क्रियाएं ।
२ देखो 'बिलब' (रू. भे.)
उ०—१ राई वेगई चढि आवौ, बिलम न करो बार । सोल सइ-यर रुकमणी सारीखी लेज्यो साथ । —रुकमणी मंगळ
उ०—२ बिलम बिना बिलुंबौ मेरो, नहीं अधर नहिं धरता । आद न अंत मध्य नही मेरै, नहिं उरै परै मेरी सुरता ।
—श्री हरिरामजी महाराज
३ देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—भंवरा घेर र भूवन मैं, राख्यो विना रहूं न । बाडी म्हांरी रौ बिलम, सूनो कर गयो सूंन । —अग्यात
४ देखो 'बिलोम' (रू. भे.)
उ०—महण वन दहण 'केसर' गहण मंडियौ, तेण खग वहण

घण सघण तणियो । महा तम विलमा उडावण माफवो, वडखती तरण थै रूप वणियो । —किसोरदांन बारहठ

विलमणो–वि. – १ प्रेमासक्त ।

उ०—मुण बाळा, इक रंग पोढ़ती कठ लगांणी, जागी जमकां, नैण विनळना नीर भरांणी । पूछना, मुळकाय कह्या थै बोल सयांणी, 'छळिया ! पेल्यो तूभ, विलमणी नार विरांणी ।' – मेघ

२ भोग-विलास मे रत ।

३ कार्य मे लग कर भूलने वाला ।

४ मग्न, लीन ।

५ कार्य मे लीन ।

विलमणो, विलमबो–क्रि. अ.— १ प्रेमासक्त होना ।

२ भोगविलास म रत होना

३ कार्य मे लीन होना ।

४ कार्य में लग कर भूलना ।

५ मग्न होना, लीन होना ।

६ ठहरना, रुकना ।

७ देखो 'विलूंबणो, विलूंबबो' (रू. भे.)

उ०—म्हांरा बगा मारु थानै रंू विदेस, जिण रुत केसू फूलै घाली । कळियां मं भवर विलम रया छै, सूवटां घावा डाळी घाली । —रसीलै राज रा गीत

८ देखो 'विलबणो, विलंबबो' (रू. भे.)

विलमणहार, हारो (हारी), विलमणियो – वि० ।

विलमिग्रोड़ो, विलमियोड़ो, विलम्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विलमीजणो, विलमीजबो —भाव वा० ।

बिरमणो, बिरमबो, बिलमणो, बिलमबो, बिरमणो, बिरमबो, बिलम्मणो, बिलम्मबो —रू० भे० ।

विलमाणो, विलमाबो–क्रि. स.—१ बातें करने हेतु प्रवृत्त करना, बातो में लगाना, बहलाना ।

उ०—'मयू' मार्थं मारको, अत वेद अघाया, गुड घर धूज पहाईयै, 'दलजी' चढ आया । वाता मू विलमायनै, ज्यां नै जजमाया, 'सीहै' कहिया भेद सो, नाही मन भाया । —वी मा

२ मोहित करना, लुभाना, मोहना ।

उ०—१ मद भागणि मो मारमी, राज छैलं लोराय । कोइक गुर की कामणां, रखं लो विलमाय । —पना

उ०—२ पलका रै ऊपर पग धर आजो, तो हिवडा रै आसण आप विराजो । कहो जी ! प्रभूजी ! थानै किण विलमाया, तो दासी रै महलां बिलब सूं आया । —गी. रा.

उ०—३ बागां मे घूमण गयो म्हारो रावतियो सरदार, बागां मायली कोयल म्हारो लियो छै भंवर विलमाय, दासी, कण विलमायो थं, रावत नही आयो अब तक बारणे । —लो. गी.

३ धैर्य देना धीरज बधवाना ।

४ फुसलाना, बहकाना ।

उ०—गालवणी ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पिण ढोलोजी रहै नही । ताहरां मालवणी कहै । —ढो. मा.

५ देरी लगाना, विलम्ब करना ।

६ रोकना, ठहराना ।

उ० – १ तद ओळंगुवा बोलिया- भुजनगर रो राजा रावळ जालम, बडो पातसाह तिण रांणी रा चाकर म्हां घरा तो कांई कमाण न छै, पण दातारां नै देखण नै मूलकगिरी करता फिरां छा । सो बरस अेक हुवो, महाराज विलमाय राखिया । —पलक दरियाव री वात

उ० – तद खीवो ऊठ घोड़ै सवार हुवो । सूरेजी नूं कहियो – थै काढी, माथ माफक छै, हू इहा नू विलमायस्यूं । तद सूरंजी कही– हमें काढिया किसी गत छै । —सूरे खीवै काधळोत री बात

उ०—३ ओठक नू त्रित सापियो सो भगायो श्रोर कही जं हूं बाहर नू विलमाऊ छू । —सुन्दरदास भाटी बीकपुरी री वारता

विलमाणहार, हारो (हारी), विलमाणियो—वि० ।

विलमायोड़ो भू० का० कृ० ।

विलमाईजणो, विलमाईजबो—कर्म वा० ।

बिरमाणो, बिरमाबो, बिरमावणो, बिरमावबो, बिलमाणो, बिलमाबो, बिलमावणो बिलमावबो, बिरमाणो, विरमाबो, बिरमावणो, विरमावबो, बिलमावणो, विलमावबो, बिलम्माणो, बिलम्माबो, बिलम्मावणो, बिलम्मावबो—रू० भे० ।

विलमायोड़ो–भू. का. कृ. – १ बाते करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, बातो मे लगाया हुआ. २ मोहित किया हुआ, लुभाया हुआ, मोहा हुआ ३ धैर्य दिया हुआ, धीरज बधाया हुआ. ४ फुसलाया, हुआ बहकाया हुआ. ५ देरी लगाया हुआ, विलम्ब किया हुआ. ६ रोका हुआ, ठहराया हुआ.

(स्त्री विलमायोड़ी)

विलमावणो, विलमावबो– देखो 'विलमाणो, विलमाबो' (रू. भे.)

उ०—१ पाणी पी-पी जापो काढ्यो, हियै दूध री सूखी धार । टाबर रोयो भूखा मरतो, मन विलमावण लागी नार । —चेतमांनखो

उ०—२ "मेह-मामो म्हानै काई देसी, दादो ।"
"लाडू ।"

मळे ?''
''दूध, दही, रमतिया, गेंगा ।''
''साचै ई, दादी।''
''हां, बेटा।''
''नहीं तू बिलमावै है।'' —बरसगांठ

उ०—१ तद बहुवां सारी मुजरो कर बोहड़ो, डेरै आई । आय सारी जणी एकठी बैस कहण लागी—''आपां कुंवरजी नूं किण भांत बिलमावस्यां, वात विसारै घातस्यां ?'' —कुंवरसी सांखला री वारता

बिलमावणहार, हारो (हारी), बिलमावणियो—वि० ।
बिलमाविप्रोड़ो, बिलमावियोड़ो, बिलमाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलमावीजणो, बिलमावीजबो—कर्म वा० ।

बिलमावियोड़ो—देखो 'बिलमायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलमावियोड़ी)

बिलमियोड़ो—भू. का. कृ.—१ प्रेमासक्त हुवा हुआ. २ भोग-विलास में रत्त हुवा हुआ. ३ कार्य में लीन हुवा हुआ. ४ कार्य में लग कर भूला हुआ. ५ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ.. ६ ठहरा हुआ, रुका हुआ।

७ देखो 'बिलूंबियोडो' (रू. भे.)
८ देखो 'बिलंबियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलमियोडी)

बिलम्मणो, बिलम्मबो—देखो 'बिलमणो, बिलमबो' (रू. भे)

उ०—स्रोण भू में खळाकै कसूंबा माट फूटा सा-क, उठै सूरां गंदना बिलम्मै केक आंग । घणां घावां बीच घूमै कलाळी हाट ज्यूं गोरा, अंग्रेह रोसवाई उभै रचावो आरांण । —जमो आढो

बिलम्मणहार, हारो (हारी), बिलम्मणियो—वि० ।
बिलम्मिम्रोड़ो, बिलम्मियोड़ो, बिलम्म्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलम्मीजणो, बिलम्मीजबो—भाव वा० ।

बिलम्माणो, बिलम्माबो—देखो 'बिलमाणो, बिलमाबो' (रू. भे.)

बिलम्माणहार हारो (हारी), बिलम्माणियो—वि० ।
बिलम्मायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलम्माईजणो, बिलम्माईजबो—कर्म वा० ।

बिलम्मायोड़ो—देखो 'बिलमायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलम्मायोड़ी)

बिलम्मावणो, बिलम्मावबो—देखो 'बिलमाणो, बिलमाबो' (रू. भे)

बिलम्मावणहार, हारो (हारी), बिलम्मावणियो—वि० ।
बिलम्माविम्रोड़ो, बिलम्मावियोड़ो, बिलम्माव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलम्मावीजणो, बिलम्मावीजबो—कर्म वा० ।

बिलम्मावियोड़ो—देखो 'बिलमायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलम्मावियोड़ी)

बिलम्मियोड़ो—देखो 'बिलमियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलम्मियोड़ी)

बिलय, बिलयन—सं. पु. [स. बिलयनम्] १ पानी में पदार्थ के घुलने की क्रिया।

२ पदार्थ के परिवर्तित रूप में दूसरे पदार्थ में मिलने की क्रिया ।
३ आत्मा का परमात्मा से मिलन ।
४ सृष्टि का अन्त, प्रलय ।
५ मौत, मृत्यु ।
६ दो राज्यों का आपसी विलन ।
७ नाश, समाप्ती ।

उ०—आप तो धरम करण नैं नाथा, करो काया रो निस्तारो रे । म्हारै आंगणै पगल्या करतां पाप बिलय जावै म्हारो रे । —जयवांणी

रू. भे.—विलउ, विलै ।

बिलळणो, बिलळबो—क्रि. अ. [सं. विलपनम्] १ उदास होना, खिन्न होना, बेचैन होना ।

२ व्याकुल होना, दुःखी होना ।
३ विलाप करना, रोना ।

उ०—पंथी हाथ संदेसड़उ, धण बिलळंती देह । पग सूं काढइ लीहटी, उर आंसुआं भरेह । —ढो. मा.

बिलळणहार, हारो (हारी), बिलळणियो—वि० ।
बिलळिप्रोड़ो, बिलळियोड़ो, बिलळ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलळीजणो, बिलळीजबो—भाव वा० ।

बिलळाणो, बिलळाबो—क्रि. अ. [सं. विलापनम्] १ उदास होना, व्याकुल होना, खिन्न होना ।

२ व्यथित होना, दुःखी होना ।
३ विलाप करना, रोना ।

उ०—छांटां पांणी कुमकुमां, वीझण वीझ्या वाइ । हुई सचेती मारुवी, प्री आगळि बिलळाइ । —ढो. मा.

४ समाप्त होना, नाश होना, मिटना ।

बिलळाणहार, हारो (हारी), बिलळाणियो—वि० ।
बिलळायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलळाईजणो, बिलळाईजबो—भाव वा० ।
बिलळाणो, बिलळाबो, बिलळावणो, बिलळावबो, बिलळाणो, बिलळाबो, बिलळावणो, बिलळावबो, बिललावणो, बिललावबो—रू० भे० ।

बिललाणो, बिललाबो—देखो 'बिलळाणो, बिलळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ मोरगायो रथ फेरि चलै रथ फेरि चलै दोस पमु दै जान। त्यारउ तिहू मनाई, मुगति वधू मन गइ बसी, मन मइं बसी हमहि रहै बिललात।
—स. कु.

उ०—२ ओर आदमी तणो मारग्यो मूल ए, देखनो देखतां हुय गई धूल ए। गाढ नै जोम हूं तो घट गाय ए, रिद्धि थोड़ा मे गई बिललाय है।
—जयवाणी

बिललाणहार, हारो (हारी), बिललाणियो—वि०।

बिललायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिललाईजणो, बिललाईजबो—भाव वा०।

बिलळाप—देखो 'बिलाप' (रू. भे.)

बिलळापणो बिलळापबो देखो 'बिलापणो, बिलापबो' (रू. भे.)

बिलळापणहार हारो (हारी), बिलळापणियो—वि०।

बिलळापियोड़ो, बिलळापियोड़ो बिलळाप्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलळापीजणो, बिलळापीजबो—भाव वा०।

बिलळापियोड़ो—देखो 'बिलापियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलळापियोड़ी)

बिलळायोड़ो—भू. का. कृ.—१ उदास हुवा हुआ, व्याकुल हुवा हुआ खिन्न हुवा हुआ. २ व्यथित हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ४ समाप्त हुवा हुआ, नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री बिलळायोड़ी)

बिललायोड़ो—देखो 'बिलळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिललायोड़ी)

बिलळावणो, बिलळावबो—देखो 'बिलळाणो, बिलळाबो' (रू. भे.)

उ०—बाळ रहै बिलळावता, 'पातल' पाक प्रताप। मन जरमना मगध रो, म्हा पोहर मलाप।
—किशोरदान बारहठ

बिलळावणहार, हारो (हारी), बिलळावणियो—वि०।

बिलळावियोड़ो, बिलळावियोड़ो, बिलळाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलळावीजणो, बिलळावीजबो—भाव वा०।

बिललावणो, बिललावबो—देखो 'बिलळाणो, बिलळाबो' (रू. भे.)

उ०—मै तो जाणी ए काचो माया, बिललावै जिम बादल छाया। ऐसी जाणी कहो कुण रीझै, मोनै धरम तणो मार्ग प्रेमी।
—जयवाणी

बिललावणहार, हारो (हारी), बिललावणियो—वि०।

बिललावियोड़ो, बिललावियोड़ो, बिललाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिललावीजणो, बिललावीजबो—भाव वा०।

बिलळावियोड़ो देखो 'बिलळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिलळावियोड़ी)

बिललावियोड़ो—देखो 'बिलळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिललावियोड़ी)

बिलळो—देखो 'बिलळो' (रू. भे.)

उ०—१ हमसा री भात श्रेक दिन मळै दोनां में राड़ पजमी। माव बिलळो राड। बिणियांणी कह्यो—म्हाड बिना म्हारो गळो अदीठो लागै, थे सोनार रै घरै जाय इण बीटी री म्हाड गड़ायलो।
—फुलवाड़ी

उ०—२ थारै केणा मुजब कलम री दात तो व्हैगो माच अर जबान अर हाथरी बात व्हैगी भूठ। किणी दूजा रै मूंडागै श्रेड़ी बिलळी बात करज्यो मती, लोग हसैला।
—फुलवाड़ी

उ०—३ गोफणियो सुणावतो वा मोमा सुर मे बोली भाटिया सूं हाल थारो पातो नी पड़ियो दीसै, इणी खातर श्रेड़ी बिलळी बात करो।
—फुलवाड़ी

उ०—४ सेठा रै मूंडा साम्हो देख केवण लागा—सेठा, इत्ता समझदार होय थे श्रेड़ी बिलळी बात कीकर करो। थारै को नी बच्यो तो कांई व्है, राज रो खजानो तो हाल भर्यो है।
—फुलवाड़ी

(स्त्री बिलळी)

बिलवणो, बिलवबो—क्रि. अ.—१ उदास होना, खिन्नचित्त होना, बेचैन होना।

२ व्याकुल होना, दुःखी होना, व्यथित होना।

उ०—१ पीहर नो परत है रहिया, प्रीतम विरहागनि दहिया। प्रमदा इणिपरि बिलवती, दुख रोई राति गलंती।
—स्रीपाल रास

उ०—२ इम बिलवती सुंदरी, रोवती न रहाय। धवल अघरमी तिण समै, भासै पासै आय।
—स्रीपाल रास

३ विलाप करना, रोना।

उ०—१ करि मन धीर करार, बिलवै काइ विरही थयो। सयणै न लहो सार, जावण दे परहा 'जसा'।
—जसराज

उ०—२ बिलवइ बै सती कीजइ कंकण भंग। उछइ नीरि जिम माछलो तिम विरह दहइ अम्ह अंग। बिलवई बै सती।
—कां. दे. प्र.

उ०—३ अन्न दिवसि बभणु सकुटंब, रल जिम बिलवई पाडइ बुंब। पूछइ भीमु करी एकंतु, आविउं दूखु किसुं अचितु।
—सालिभद्र सूरि

४ निर्भर होना, प्राश्रित होना ।

उ०—४ जनहरिया उं न देसड़ै, बारै मास बसत । सदा फलंगी बिनसतो, बिलब्या जीव निचत । —प्रनुभववांणी

५ पकड़ना, ग्रहण करना ।

उ०—केईक पांनां फूलड़ां, केईक बिलब्या डाळ । हरिया मूळ बिलंबिया, फळ पाया प्रसराळ —प्रनुभववांणी

बिलबणहार, हारौ (हारी), बिलबणियौ—वि० ।

बिलबिप्रोड़ौ, बिलबियोड़ौ, बिलब्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलबीजणौ, बिलबीजबौ—भाव वा० ।

बिळबळणौ, बिळबळबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ (रू. भे.)

उ०—खिण रोवै खिण बिळबळै, मारु……मिट । बळि घण दीसै नाह विण, घण विण नाह म दिठ । —ढो. मा.

बिळबळणहार, हारौ (हारी), बिळबळणियौ—वि० ।

बिळबळीप्रोड़ौ, बळबळीयोड़ौ, बिळबळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिळबळीजणौ, बिळबळीजबौ—भाव वा० ।

बिलबलणौ, बिलबलबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे)

उ०—जाण्यं प्राड़उ माडस्यइ जी रे जी वीरजी गौतम लेस्यइ केवल भाग रे । बिलबलतां, मूंकी गयउ जी, रे जी, वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे । —स. कु.

बिलबलणहार, हारौ (हारी), बिलबलणियौ—वि० ।

बिलबलिप्रोड़ौ, बिलबलियोड़ौ, बिलबल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलबलीजणौ, बिलबलीजबौ—भाव वा० ।

बिलबळियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिलबळियोड़ी)

बिलबलियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबलियोड़ी)

बिलवांमणी—स. स्त्री.—छिपकली की जाति का एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष ।

रू. भे.—बिलग्रांमणी ।

बिलबियोड़ौ—भू. का: कृ.—१ उदास हुवा हुआ, निराश्रित हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री. बिलबियोड़ी)

बिल-बिल—देखो 'बिल बिल' (रू. भे.)

उ०—१ माता पिता भुरता रहया, वलि बांधवा नी जोड़ रे । बाल त्रिया बिलबिल करै, तै तो गयोज ऊभा छोड़ रे । —जयवांणी

उ०—२ प्रचेतन थई देवकीजी. कुरडै सा प्रसराल । हीन दीन बिलबिल करै जी, दोहली पेट री झाल । —जयवांणी

बिलबिळणौ, बिलबिळबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वउळावू सगळा बिलबिळइ, ढोलउ किसही पाछउ वळइ । साथी मारू दागण-भणी, घणूं कहइ पणि न रहइ धणी । —ढो. मा.

उ०—२ भाई सुत रांणी बिलबिळइ, हाथ झाली कहइ तेह गहिला राजा । एक पारेवइ नइ कारणइ, स्यू कापउ छउ देह गहिला राजा । —स. कु.

उ०—३ स्रावण मास में विरहणि जांमनी जांम न जात, सजि प्राडबर अंबर दांमिणी मिलै बरसात । मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दीध निरास, बिलबिळै राजुल प्रांखीय भरि भरि नाखी निरास । —ध. व. ग्रं.

उ०—४ मात पिता पाल्या घणा रे लाल, एतो रह्या नी लोगार हो, भविक जन । नारयां बिलबिलती रही रे लाल, नहीं प्रांण्यो मोह ति वार हो, भविक जन । —जयवांणी

बिलबिळणहार, हारौ (हारी), बिलबिळणियौ—वि० ।

बिलबिळिप्रोड़ौ, बिलबिळियोड़ौ, बिलबिळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलबिळीजणौ, बिलबिळीजबौ—भाव वा० ।

बिळबिलाट, बिलबिलाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू. भे.)

बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ—१ देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

बिलबिलाणहार, हारौ (हारी), बिलबिलाणियौ—वि० ।

बिलबिलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलबिलाईजणौ, बिलबिलाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बिलबिलायोड़ौ—१ देखो 'बिलबिलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबिलायोड़ी)

बिलबिलावणौ, बिलबिलावबौ—देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

बिलबिलावणहार, हारौ (हारी), बिलबिलावणियौ—वि० ।

बिलबिलाविप्रोड़ौ, बिलबिलावियोड़ौ, बिलबिलाव्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

बिलबिलावीजणौ, बिलबिलावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बिलबिलावियोड़ौ—१ देखो बिलबिलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबिलायोड़ी)

बिलबिलियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबिलियोड़ी)

बिलबामणी—देखो 'बिलबावणी' (रू. भे.)

बिलसण, बिलसणौ-वि.—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता।

२ आमोद-प्रमोद करने वाला।

३ भोग-विलास करने वाला।

४ दान देने वाला, दातार।

उ०—१ बप पहु बहुग्रार भुजि कुळि भार, घर मिणगार तपं लखधीर। बिलसण गज बाज कंमर सकाज, वसधा राज करै बर बीर। —ल. पि.

उ०—२ बिलसण गज वाजि निवाजण खट ध्रन, काइम राज अजाद सकाज। घर ओपम प्रतपै पाटोधर 'लखपति' कुंमर भुजै कुळ लाज। —ल. पि.

स. पु.—दान। (अ. मा., ह. ना. मा.)

बिलसणौ, बिलसबौ-क्रि. अ.—१ शोभा पाना, शोभित होना।

उ०—म्हारै पती जांणै कोई पाळख खुद देह धारी एं सर्व सुभावी को होज बिलसतो सोभतो होवै जिसो है पण सिंधुराण जुद री राग सुणतांई तो सो गुणो अग फूल पोरस बध जाय अनें सरीर बगतर में ही मावै नहीं। —वी. स. टी.

२ कलंकित होना, कलंक लगना।

क्रि. स.—१ विलास करना, आनन्द मनाना।

उ०—१ राति दिवस रमइ रमइ, बिलसइ नवरस भोग। जोड़ी नारीनी जुड़ी, केसव लणइ सजोग। —ढो. मा.

उ०—२ प्रति दिन विलास नवकोटपति, 'अभैसाह' बिलसै इसा। चाहै धनेस निरगै चरस, द्रद सराहै सुरसा। —रा. रू.

उ०—३ कवी कहै है कि—नाग हाथी सोभागवांना नें दाम रुपिय्या देण सूं मुसकळ हाथ आवें वे हाथी वीर पुरख बिना दामा विनां रुपिया वीधां दसमणां सूं खोस लेहै नें बिलसै सुख लेवै है। —वी स. टी.

उ०—४ सुगति मांहे बेहु गिन्या रे लाल, बिलसै सुख वरदाय है सहेली। प्रणमैं पडित धरमसी रे लाल, नमता नव निधि थाय है सहेली। —ध. व. ग्रं.

२ उपभोग करना, भोगना।

उ०—१ अम्रत भोजन रांम रस, काहे न बिलसै खाइ। काळ बिचारा क्या करै, रम रम रांम समाइ। —दादूबांणी

उ०—२ बिन बिलसण री वार, नर सठ बित बिलसै नहीं। जावै बीत जियार, जेहल पछतावै जिकै। —बां. दा.

उ०—३ बिलसो धन काढो तै बात टली, तजो नारी तणी संगति सगली। परभव दुरगति वेदन दुहिली, बोलइ मत कोसा तै बात बलि। —स. कु.

३ आमोद-प्रमोद करना।

उ०—धाइं धसइं ति उधमइ, बिलसइं हमइं प्रवाहु। खधि चडइ खधागली आकली न सकइ नाहु। —जयसेखर सूरि

४ दान देना।

उ०—वास अोया बिलसंत न विरचै, सुरतर सुपह बिन्है सारीक। सोरमनरि अहि बंस सुखी सहि, मागण सुखी कन्ही मछरीक।

—नांदण बारहठ

५ भोग करना, संभोग करना, मैथुन करना।

उ०—१ स्रावण हास्य रमइ करी, बिलसउ प्रीतम प्रेमइ जी। योगी भोगी नइ घरै, आवण लागा केमइ जी। —वि. कु.

उ०—२ मंत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक रंजण सुलक्खण, पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिण्णि, नारि बिलसइ बियक्खणि।

—हीराणंद सूरि

उ०—३ पदमणी परिमल पांम नै, भोगी भ्रमर नाह! सुख बिलसौ मोमु बालहा! लीजै-जोबन-लाह। —जयवांणी

उ०—४ वर बिलसइं अनवेसर केसर हेठि सुवेस, अघ पुगइं ऊनरायणि रायणि फलिय प्रवेस। —जयसेखर सूरि

६ उत्सव मनाना।

उ०—१ जिणि जगि जीतउ समरगि समर सिरोमणि कांमु, बिलसइ सिद्ध सयंबर मबरगुणि अभिरामु। निरुपम निपुण निरंजन रंजन जनमन चारु, पामीय मुह गुरु आइमु गाइमु नेमि कुमारु। —जयसेखर सूरि

उ०—२ दोरइ बद्धइ सुयडउ छूटइ महतउ होइ इण परि बिलसइ विवहु परि सुद्धि न जाणइ कोइ। —हीराणंद सूरि

बिलसणहार, हारौ (हारी), बिलसणिग्रौ—वि०।

बिलसिग्रोड़ौ, बिलसियोड़ौ, बिलस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलसीजणौ, बिलसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बलसणौ, बलसबौ, बिलसणौ, बिलसबौ, बेलसणौ, बेलसबौ, बळसणौ, बळसबौ, बीलसणौ, बीलसबौ—रू० भे०।

बिलसाणौ, बिलसाबौ-क्रि. स [बिलसणौ क्रिया का प्रे. रू] १ शोभित करना, शोभायमान करना।

२ कलंकित करना, कलंक लगाना।

३ विलास करना, आनन्दित करना।

उ०—पैंसठ मोम पोलां ऊारै, तेतीस नै मोम नै माय ह-भवियण। सिहासन सक इंद्र नी, जीव सुख बिलसाय हो-भवियण।
—जयवांणी

४ उपभोग या भोग कराना।

५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित करना।

६ दान दिलाना।

७ संभोग करने के लिए प्रेरित करना, मैथुन करने के लिए प्रेरित करना।

बिलसाणहार, हारौ (हारी), बिलसाणियौ—वि०।

बिलसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलसाईजणौ, बिलसाईजबौ—कर्म वा०।

बिलसाणौ, बिलसाबौ, बलसाड़णौ बलसाड़बौ, वलसाणौ, वलसाबौ, वलसावणौ, वलसावबौ—रू० भे०।

बिलसायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शोभित किया हुआ, शोभायमान किया हुआ. २ कलंकित किया हुआ, कलंक लगाया हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्दित किया हुआ. ४ उपभोग या भोग कराया हुआ. ५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित किया हुआ. ६ दान दिलाया हुआ. ७ संभोग करने के लिए प्रेरित किया हुआ, मैथुन करने के लिए प्रेरित किया हुआ।
(स्त्री. बिलसायोड़ी)

बिलसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ. २ कलंकित हुवा हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्द मनाया हुआ. ४ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ. ५ दान दिया हुआ. ६ भोग किया हुआ, संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ. ७ आमोद-प्रमोद किया हुआ।
(स्त्री. बिलसियोड़ी)

बिला–अव्य. [अ. बिला] बिना।

बिलाइत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

उ०—घणै सीतळ पांणी सूं सींचिआ थका बीझणां बाइ भांपा सूं हींफा खाइ रहीआ छै। तठै बिलाइत री गूंथी चटाई अमोलक बिछाइ रही छै। तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरै ढोलिआ गिलमां री बिछाति बाणि नं रही छै। —रा. सा. स.

बिलाइति, बिलाइती—देखो 'विलायती' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति उण बागाइत मांहै ग्रीखम रित रा बिलाइती वालेरा खस खांनां, ऊंची ठौड़ रा बगळां, रावटी बालाबध रा ठांसा रा गूंथिआ भांति भांति खसखांनां बणाया छै। —रा. सा. स.

बिलाड—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—जिहा सिव,तणा फेरकार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घूरहराट, न लांभइ बाट नइ घाट। लांघता दोहली खड़, चीत्रा बुरकइ, वेडि बिलाड घुरकइ। —सभा

बिलाग–वि.—१ पृथक, अलग, भिन्न।

२ संलग्न, लगा हूआ।

बिलागणौ, बिलागबौ–क्रि. अ.—१ चिपकना, लिपटना।

२ पहूंचना।

३ स्पर्श होना, छूना।

उ०—१ आयौ सुरम बिलागं अंबरि, पूरै पारंभ है गै पक्खरि। ऊपाडेह छरा आघतरि, जाणं सींह बिहत्तौ छप्परि।
—गु. रू. बं.

उ०—२ बाघा लं वाघियौ, बडौ ब्रहमंड बिलागौ। चलण हेक हरि चांपियौ, भलौ भूगोळ सभागौ —पी. ग्रं.

४ देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

बिलागणहार, हारौ (हारी), बिलागणियौ—वि०।

बिलागिओड़ौ, बिलागियोड़ौ, बिलाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलागीजणौ, बिलागीजबौ—भाव वा०।

बिलागणौ, बिलागबौ—कर्म वा०।

बिलगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. २ पहुंचा हुआ. ३ स्पर्श हुवा हुआ, छूपा हुआ।

४ देखो 'लागियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलागियोड़ी)

बिलाणौ, बिलाबौ–क्रि. अ.—१ विलीन होना, विलय होना।

२ लोप होना, लुप्त होना।

उ०—बिलावलि को वखत आयो। गुणी जनां राग भिलायो। चकवा चकवी को मिळाप। कुकड़ा बोलिया। जवार सीतल हुवा। हरक वाल फूलिया। रातंबर प्रगासियो। तारा बिलाया चिड़या चहकि। —पनां

३ नाश होना, मिटना।

उ०—१ कांम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खड्ग लै सबी संघारा। जड़ अरु अमत् क्लेस बिलाया, सत् चेतन आनंद पद पाया। —स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ जड़ चेतन कू जोय, हम निरभै थया। तन मन गया बिलाय, ब्रह्म केवल रया। —स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ गुरु का सब्द सुणत ही जाग्यां, माया मोह बिलाय गया। स्वप्ना माथै अनंत भरम देख्या, जागत ही निज स्वरूप लया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ उत्पति थिति लय नहीं ज्यांमैं, कारण कारज बिलाणी।

सत् सुखरांम आतमारांमी, निरालब निरवांणी ।
— श्री सुखरामजी महाराज

४ व्यतीत होना, बीतना ।

बिलाणहार, हारौ (हारी), बिलाणियौ — वि० ।
बिलायोड़ौ —भू० का० कृ० ।
बिलाईजणौ, बिलाईजबौ —भाव वा० ।
बिलावणौ, बिलावबौ, बीलाणौ, बीलाबौ, बीलावणौ, बीलावबौ रू० भे० ।

बिलात—देखो 'बिलायत' (रू. भे.)

उ०—काबल कनम करीह, कायम चीणा बिलात कै । भाळै क्रोध भरीह, नयन 'पता' किण मिर निजर । —पाबूदान आसियौ

बिलाति, बिलाती —देखो 'बिलायती' (रू. भे.)

उ०—१ मामी मीर बलक्की मल्ल, मीर सैद पठ्ठाण मुगल्ल । ख्वारी घोर मजोर बुखारी, घर काबलो बिलाति खंधारी ।
—रा. रू.

उ० - २ परचंड गात कव्रिअ प्रगट, रेवत यट्ठ बिलाती रा । नव माजि किया हाजर नरा, भिड़ज नवल्ली भांति रा ।
—रा. रू.

उ०—३ तुरकी ताजी तुरग, बिलाती देसी बिहग । धूना बिलातिया धंग, भेड़ रा नीपना खंग । —गु. रू. ब.

उ०—४ बिहग तुरक्की तेराकी बिलाती, मचै पाखरा रोळि है-हींस माती । मिणगारिया पीलवाणं सुंडाळा, असमान साम्हा दियंता उभाळा । —गु. रू. बं.

बिलाप-सं. पु. [सं.] १ उदास, व्याकुल या व्यथित होने की क्रिया ।
२ कष्ट, दुख, पीडा ।

उ०—१ जिण मगतसिंह जी मार राणाजी नै हेलो पाड़ कयो घोड़ो नीला पगां है तद देख जीण उतारतां ही घोड़ो छूटो । राणोजी घणा बिलाप कियौ । सत्ता (सक्तिसिंह) भाई उपकार कर आपरो घोड़ो दियो । —बां. स. टी.

३ रुदन, क्रन्दन ।

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या — यूं न करणो । रोगादिक ऊपना गाढो रहणो । ज्यूं किण हि रै माथै देणो हो । देवारा परिणाम नही हुंता । जिण पेलै जवरी म लिया । जद मूरख तो बिलाप करै । —भि. द्र.

वि.—तात, गम ।® (डि को.)

रू. भे —विलाप, बिलाल्लाप, बिलापात, बिलोपात ।
अल्पा., बिलापातौ ।

बिलापणौ, बिलापबौ–क्रि. अ —१ उदास होना, बेचैन होना, खिन्न-चित्त होना ।
२ व्याकुल होना, व्यथित होना, दुःखी होना ।
३ रुदन करना, रोना ।

बिलापणहार, हारौ (हारी), बिलापणियौ — वि० ।
बिलापियोड़ौ, बिलापियोड़ौ, बिलाप्योड़ौ — भू० का० कृ० ।
बिलापीजणौ, बिलापीजबौ—भाव वा० ।
बिलापणौ, बिलापबौ—रू० भे० ।

बिलापात - देखो 'विलाप' (रू. भे)

उ०—१ इनरा बिलापात करण लागी तद सहेल्यां बोली—इक म्हा मन अचरिज भयौ, साभळ बात स प्रेम । त्यां अण दीठां सज्जणां, क्यूंकर लागो प्रेम । —ढो मा.

उ०—२ मारवणी बांमै इण भांत बिलापात करै छै ढाढी उहड़ सोलखी नखा चालिया हुंता सो किनरा हेक दिनां में नळवरगढ जाय पहुंता । — ढो. मा

उ० — ३ केतलै एक कालै प्रदेश में भरतार काल कीधो । सुणनै धरम मे न समझै तै तो रोवै बिलापात करै । समझै तै रोवै नही समता धारनै बैठी । —भि. द्र.

बिलापातौ--देखो 'विलाप' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कुण वीरो कुण बहनड़ी रे, ओपजो मोहरी बान । इण भव मुगति सिधावणी रे, एम करै बिलापातो रे । —जयवांणी

बिलापियोड़ौ–भू. का. कृ.— १ उदास हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ ।
(स्त्री. बिलापियोड़ी)

बिलायत–सं. पु. [अ.] १ दूसरा या पराया देश, विदेश ।

उ०—हूं किसी विलायत वसै हो ? जको थे ओजूं ताईं ठा ही नही करयौ । हूं किसा हाथी-घोडा थोडा ही मागूं हो ? अर जै मांगू तो ही किसो बदै मूं आछो हुवै । — दसदोख

२ इग्लैण्ड ।

उ०—१ नांव किसनजी, कोटै धणी रै आगै रेवै । गडीकंप अर पराईवेट वाजै । देस रा दौरा पूरा करावै, आबू अर बिलायत सागै जावै । हरखां-कोडा हंसै-कुदै, गाळ्या ग्वा-ग्वा ऊंचा चढै ।
—दसदोख

उ०—२ अग्र दुरग खिसारा नवळ सारा गोरां बजै, दहल पुड़ रसा रा हल हमल दुंद । लक दिस प्रभंजण सारा वेग लागा, बिलायत दिसा रा उडै घणां बंद । —चैनकरण सादू

उ०—३ उतन बिलायत किलकता कानपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा । यलम धुर वहण अगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा । —कविराजा बांकीदास

उ०—४ सज दूजा 'प्रभमाह', महि रज मंडळ मावतां। हड़ां लोधा राह, बिकटा दूर बिलायतां। —पाबूदांन ग्रासियो

३ दूरस्त यूरोपीय देश।

४ ईरान, तुर्किस्तान।

रू. भे.—बलायत, बिलायत, बिल्लायत, वलायत, बिलाइत, बिलात, विल्यायत, विल्लायत।

बिलायति, बिलायती-वि.—दूसरे देश का, विदेशी।

२ इग्लैण्ड का।

३ यूरोप का, यूरोपीय।

उ०—१ सू छुरी किण भात री छै? पेमकवज चकचको हमी बिलायती म्यांनां मांहां काढजै छै। —रा. सा. म.

उ०—२ सु तरवारचा किण भांत री छै? सीरोही री नीपनी, वे ग्रागळ बाढ जेगिया थका जनेव मगरेब पुडनकाळ सेफ बिलायती भुजरी बिराणपुरी हबसानी फिरंगी। —रा. सा सं

४ ईरान का, तुर्किस्तान का।

उ०-ग्रटक पार मो ग्रगे उला नहिं नमे बिलायति। जवन वसै जिण माहि, ग्राठ मगहरा ग्रसपति। —सू प्र.

रू. भे.—बिलानिय, बिलायती, बिलाइति, बिलाइती, बिलाति, बिलाती।

बिलायतीकद्दू-स. पु.—तरकारी के काम ग्राने वाला एक विशेष प्रकार का कद्दू।

बिलायतीकासनी-स. स्त्री.—एक प्रकार की कांसनी, जिसकी पत्तियां दवा के काम ग्राती है।

बिलायतीकीकर-सं. पु—हिमालय मे पांच हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाने वाला पहाड़ी कीकर।

बिलायतीछछूंदर-सं. पु.—इंग्लैण्ड के पश्चिमी प्रदेशों में बहुतायत से पाया जाने वाला एक प्रकार का छछूंदर।

बिलायतीनील-सं. पु—चीन से ग्राने वाला एक विशेष प्रकार का नीला रंग।

बिलायतीप्याज-सं. पु.—बिना गांठ का एक प्रकार का प्याज जिसमें केवल गूदेदार जड़ होती है।

बिलायतीबैंगन-सं. पु—१ एक प्रकार का बैंगन विशेष जिसका पौधा यूरोप से ग्राया हुग्रा कहा जाता है।

२ टमाटर।

बिलायतीमेंहदी-सं. स्त्री.—मेंहदी की जाति का एक प्रकार का पौधा विशेष।

बिलायतीलसन, बिलायतीलसुन, बिलायतीलहसन, बिलायतीलहसुन- सं. पु.—मसाले के काम ग्राने वाला एक प्रकार का लहसुन।

बिलायतीसिरिस-सं. पु—विदेश से ग्राया हुग्रा एक प्रकार का सिरिस ग्राजकल यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है।

बिलायतीसेम-सं. स्त्री.—एक प्रकार की सेम जिसकी फलियां साधारण सेम से कुछ बड़ी होती है।

बिलायन-स. पु. [सं.] प्राचीन भारत में पाया जाने वाला एक प्रकार का ग्रस्त्र विशेष।

वि. वि.—उक्त ग्रस्त्र के प्रयोग से शत्रु सेना को विश्राम करने हेतु प्रवृत्त किया जाता था।

बिलायोड़ो-भू. का. कृ—१ विलीन हुवा हुग्रा, विलय हुवा हुग्रा. २ लोप हुवा हुग्रा, लुप्त हुवा हुग्रा. ३ नाश हुवा हुग्रा, मिटा हुग्रा. ४ व्यतीत हुवा हुग्रा, बीता हुग्रा।

(स्त्री. बिलायोड़ी)

बिलालो-वि. [स्त्री. बिलाली] १ रसिक, रसिया।

उ०—१ पदमण बोली पीवता, विरथा कीदो वाद। छकिया मद री छाक री समझी नही सवाद। हरख जलालो चित हुवै, पीदां प्यालो नेस। पीव बिलालो पिलंग परि, वालो लागै वेस। —पना

उ०—२ दारू री प्यालो भलो दुपट्टै री झालो। मारवण तो पतळी भली, मारू बड़ो बिलालो। पीग्रोनी दारुड़ी। —लो. गी.

२ उदार, दातार, दानशील।

उ०—१ ताकवां निमाला खूनै भेटियां बिलंद ताळा, बिलाला नरिंद इंद सा रूप वाखाण। पांणां धारा ग्रंमरेस' नवीतो चीतोड़पती, खांडै धारै दुचीनो छ खडो खुरसांण। —ग्रमरसिंघ सिसोदिया रो गीत

उ०—२ प्रगट धूपटे दरब ग्राठ पहर ग्रणपार रे, बडम कुळ भार रे भुजा लोधा। बिलाला खड़ै निन तुरग इण बार रे, माग ग्राचार हुवा 'माधा'। —मेघजी गहड़

३ ग्रद्भुत, विचित्र, विलक्षण।

उ०—कर्न वखांण घणा हूं कासूं, जीव कियो मपतास जिसो। लाखवरीस बिलालो लाखो. ग्रायस कीधो रीभ इसो। —नवलजी लाळस

४ छैल-छबीला।

उ०—खेलण दो गणगौर भंवर म्हांनै पूजण दो गणगौर। हो म्हारी सइयां जोवै बाट, बिलाला म्हाने खेलण दो गणगौर। —लो. गी.

५ युद्धोन्मत्त, मस्त।

उ०—१ कमरां कस ग्रायो रण काळो, बांधण माथै मोड़

बिलालो । मूजड़ह पकड़ ऊठियो भालो, 'रंग भचक रुठियो मालो । —बगड़ावई

उ०—२ माला हथां जोध मीमांणी, वाल्हा मुरधुरवामी । पान बिराज **बिलाला** पाना, प्याला मद कुण पामी ।

—महाराणा जवानसिंहजी रो गीत

रू. भे.—बिलालो, बलालो ।

बिलाव– देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—निको तळाब किण भातरो छै । रानी वरही रो । पाहरो नीर । पवन रो मारियो पोयण प्रासूटनो थको झोला खाय रह्यो छै । लहरा लियै छै । घघण होव छै । माछियां मंडै पाणी मे पैठा पगांरा नख भाखै छै । दूध रै भोळावै **बिलाव** चामोजै छै ।

—रा. सा. स.

बिलावणो, बिलावबो—देखो 'बिलाणो, बिलाबो' (रू. भे.)

उ०—१ बनवागी चत्रदै नरमा रो, वामा गण बिलावै । चोनै पलल्ही कल्ल बराबर जिकै दियण विधि जावै । रे मुघ प्रानै, रे गध प्रावै, तिण विध नीजिगै । —र. रू.

उ०—२ दिया 'मूजा' नगां पेंड तोपा बिगा, सफीला नगा नह लिया सरणा । श्रीमला रोळ, गावै सभा **बिलावै**, बिजा करपूर करपूर वरणा ।

—कविराजा बाकीदास

बिलावणहार, हारो (हारी), बिलावणियो—वि० ।

बिलाविग्रोड़ो, बिलावियोड़ो, बिलायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलावीजणो, बिलावीजबो—भाव वा० ।

बिलावळ, बिलावळि, बिलावळी–स. पु.—१ एक राग विशेष जो केदार और कल्याण के योग से बनता है यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है । यह सवेरे के समय गाया जाता है [संगीत]

उ०—१ नवंन पेक रंग राग, विमळ **बिलावळ** । करन गोप जोव केक, हेम पै गळाहळ । —सू. प्र.

उ०—२ रात तो उण रग मे बितित गई । उरै परभात हुवो । अंग विभास । **बिलावळि** को वरणन आयो । गुणी जना राग भिलायो । —पना

२ हिंडोल राग की स्त्री एक रागिनी । (संगीत)

रू. भे.—बिलावळ बेलावळ वेलावळ ।

बिलाविग्रा, बिलाविया–स पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—पाटबर नीलबर जरबसो रा वगाव कीजै छै । प्राडिग्रा फाणिग्रा मुखमली खासा **बिलाविया** पका जालोरी साडू, खुरासाणी भळकं मोतिग्रं ऊठ सोदागर रं घोड़ै चालविग्रं पठाण ग्ररडै ग्रागै पीघड़िग्रं रूठै, गाम धणी सा लोचनां किग्रा, वाळि वाळि मोतिग्रा ठविग्रः थका,…। —रा. सा. स.

बिलाविग्रोड़ो—देखो 'बिलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलावियोड़ी)

बिलास–स. पु. [स. विलास] १ क्रीड़ा, खेल ।

उ०—१ ग्रप मुख ग्रीखम निरखतां, वधि बरसात **बिलास** । मातो कादव मेदनी, ग्रायो भाद्रव मास । —रा. रू.

उ०—२ सबळा खळ सूं सांधियां, निबळ जाय खळ नास । मंसो मेळ मंजार कर, वचियो विपत **बिलास** —बां. दा.

२ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा, ग्रामोद-प्रमोद ।

उ०—१ यो नरपति पुर ग्रापरै, नित प्रति महल निवास । मुख ग्रनुराग छ राग सुख, वाग तड़ाग **बिलास** । —रा. रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजान सिलांमति रितिराज बसंत वैसाख मास रा मंगळाचार विमांह रा मुख **बिलास** करता सरदरित ग्राई छै । ग्रागोज मास ग्राइ संप्रापती हूई छै । —रा. सा. स.

उ०—३ इण भांत सुख-सेजै पोढियां । रात्ति विहांणी । प्रभात हुवो छै । रानी का काम उजागर नैण घुळि नै रहिया छै । कपोळां काम सुहाग री छाप लागी छै । खुलि नै रही छै । इण भांत सुख **बिलास** करता छै रित वारै मास मांणीजै छै ।

—रा. सा. स.

३ शोभा, सुन्दरता, मनोहरता ।

उ०—वळवळ कंठ **बिलास**, हार भुजंग गग सिर खळहळ ।

—र. ज. प्र.

४ स्त्रियोचित हाव-भाव नाज-नखरा आदि जो काम-वासना को उत्तेजित करने वाली होती है ।

उ०—वर नारि निज निज वदन **बिलासा**, जाणियो ग्रंतहकरण जई । हसि हसि भ्रू हैं हेक हेक हुइ, ग्रह ग्राहरि सहचरी गई ।

—वेलि.

५ ग्रानन्द प्रसन्नता, हर्ष ।

६ कांत, चमक ।

७ मनोरंजन, मनोविनोद ।

उ०—१ सु ग्रापली सखिग्रा नू जावतो लखै नही छै । लखाव नही पड़तो छै । तिणि सौधैरे डोरै लगी जाए छै । ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतम सु जाइ जाइ मिळै छै । इण भांति सरद चांदणी रग **बिलास** माणीजै छै । —रा. सा. स.

८ संयोग शृगार का एक भाव विशेष, जिसमें नायक के सामने नायिका उसके मन मे अपने प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न करने की क्रियाएं या चेष्टाएं करती है । (साहित्य)

९ भोग विलास, विषय भोग, मैथुन ।

उ०—१ बोलै बंधव रूपसी, बोलै मोकमदास । तज अवसांण बिलास पद को मांनै ध्रम जास । —रा. रू.

उ०—२ निस बसियो सुख ग्रेह निज, भाघै रमणि बिलास । प्ररज करै सुख भोगतां, हित रिति गरम हुलास । —रा रू.

उ०—३ कुसमित कहतां फूली । कुसमायुध कहतां कांम देवतै कै उदै करि केलि बिलास खेल तै कै अरथि जांहका भरतार घरै छै । सु तौ वसंत विखै फूली छै । —वेलि टी:

१० सुख भोग, आनन्द भोग ।

उ०—१ स्रीनरनाथ बिलास सूं पूरण कियो वसंत । देखैवा दिल्ली नयर, भायो कूच निभ्रंत । —रा. रू

उ०—२ ध्रम बंभ लघु भ्रात हेत धरि. कासीराज तेणि दीधो करि । हित देखै नृप राग हुलासी, करै बिलास इंद्र जिम कासी । —सू. प्र.

उ०—३ सोरंभा सोंधा सरस, राग रग अति हास । ब्रह्मा ब्रह्मांणी सहत, निज पुर करत बिलास । —गज-उद्धार

उ०—४ राजपाट सुत वित सबै, सूंदरि महल बिलास । हरिया हरि सुख बाहिरो, ज्यूं जंगळ का घास ।

—अनुभववांणी

११ महक, सुगध ।

१२ एक तपस्वी जिसकी मुक्ति'विमल ज्ञान' की प्रप्ति से हुई थी ।

१३ प्रिय वस्तु के दर्शनादि से गति, स्थिति आसन आदि की तथा मुख, नेत्रआदि के व्यापारों की विशेषता या विलक्षणता ।

१४ पिंगल के सत्ताईस अंगों में से एक ।

रू. भे.—बिलास, बेलस, बेळास, बिलासा ।

अल्पा,—बिलासो, बिलासु ।

बिलासक–वि.—१ इधर उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, मैथुन करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, आनन्द भोग लूटने वाला ।

५ क्रीड़ा-खेल करने वाला ।

६ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा करने वाला, आमोद प्रमोद करने वाला ।

७ मनोरजन करने वाला, मनोविनोद करने वाला ।

क्रि. वि. [अ. बिला+शक] बिना शक, बेशक, निस्संदेह ।

उ०-जै तूं अरब जा हर भांत कर हातिम न मारचावैतो तोनूं मोटो कर्क दूणा पापी कही बिलासक मार आस्यूं । —नी. प्र.

बिलासण–वि.—१ इधर-उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, भोग विलास करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, आनन्द भोग करने वाला, उपभोग करने वाला ।

उ०—रूप भूप रतिराज, प्रांण अगराज प्रकासण । कोरवराज घन करण, विमळ सुरराज बिलासण । —सू. प्र.

५ क्रीड़ा-खेल करने वाला ।

६ अनुराग या प्रेमपूर्ण क्रीड़ा करने वाला ।

७ मनोरंजन या मनोविनोद करने वाला ।

८ देखो 'बिलासी' (पु.) (रू. भे.)

बिलासणौ, बिलासबौ–क्रि. स. [विलासनम्] १ क्रीड़ा करना, खेल करना ।

२ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा करना, आमोद-प्रमोद करना ।

३ काम वासना को उत्तेजित करने हेतु स्त्रियोचित हाव-भाव, नाज-नखरे करना ।

४ मनोरजन करना, मनोविनोद करना ।

५ भोग-विलास करना, विषय भोग करना, मैथुन करना ।

उ०— तिलोतमा मेंणका सची उरवसी सरोतरि, सुरपत्ती सेवतां ईढ न धरै तिण ओसरि । कता सहित कुबेर वरण निज तर्राण बिलासत, सरस लेख 'अभसाह' पेखि साराह प्रकासत । —रा. रू.

६ सुख भोग करना, आनन्द भोग करना ।

क्रि. अ. – ७ अनुरक्त होना, लीन होना ।

उ०—पाठ प्रबंध किताक प्रकासत, वेद पुरांण विचार बिलासत । पडत द्वीत अद्वीत प्रकासत, भासत देव जिसा दुज भासत ।

—जैपुर नगर री तारीफ रो गीत

८ शोभित होना, सुन्दर लगना ।

९ आनन्दित होना, हर्षित होना ।

बिलासणहार, हारो (हारी), बिलासणियो—वि० ।

बिलासिओड़ो, बिलासियोड़ो, बिलास्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलासीजणौ, बिलासीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बिलासणौ, बिलासबौ —रू० भे० ।

बिलासनी—देखो 'विलासिणी' (रू. भे)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति अनेउरी आगै चार बडारणां सहेलिग्रां रहै छै । अनगमंजरी, मदनमजरी, रतनमजरी, पदुमजरी । तांह बडारणां सहेलिग्रां आगै चार पात्रां सिंगारणी खवास्यां रहै । गुणमाळा, फूलमाळा, विजैमाळा,दीपमाळा । तिकां सिंगारणी खवास्यां आगै चार बिलासनी दासी रहै छै । —रा. सा. सं.

बिलासा–सं स्त्री.—१ अभिलाषा, इच्छा ।

उ०—पेम पियाला पीजियै, मावा करि भरिपूर । जनहरिया पीयां पछै, विखै बिलासा दूर । —अनुभववांणी

२ देखो 'बिलास' (रू. भे.)

उ०—१ सखी री मन धारै बारै मासा, प्राणी वैराग उलासा। गुरु विषयहरण अग वासा, वधतं परमसीन विलासा हो लाल।
—ध. व. ग्र.

उ०—२ माया भई बिराणिया, भए बिराणे लोग। जन हरीया मही आपना, विर्थे बिलासा भोग। —अनुभववाणी

उ०—३ पिलग पथरणा पोढणां, सदा सहेली सग। हरीया होसी भगति बिन, विर्थे बिलासा भग। —अनुभववाणी

उ०—४ वर नारि नत्र निज वदन बिलासा, जाणियौ अंतहकरण जई। हसि हसि अ है हक हेक हुई, ग्रह बाहरि सहचरी गई।
—वेलि

बिलासि—देखो 'बिलासी' (रू. भे.)

उ०—वैकंठ बिलासि अगन्य प्रकासि अपार अपार अप्रम परं, निरकार नर मधुकटक मारण विघन बिडारण केवल रूप वराह कर। भर दाठ धर करि दैन कण कण रे पण रांमण लक लई दधि लोग लज, अविगति अज हमीर गमरि हरना सि निरतर, ग्राह वेह ऊपाहि गजधज पक्ष धज। —नि. प्र.

बिलासिणी, बिलासिनी—स. स्त्री. [स. विलासिनी] १ विलास करने वाली, कामुक, भोग बिलास में अनुरक्त या लीन स्त्री।

२ देवी का विशेषण।

३ वेश्या, गनिका।

४ विशेष शक्ति से युक्त।

५ सुंदरी, युवा स्त्री।

६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग होता है।

रू भे.—बिलासनी।

बिलासी—वि. [सं. विलासिन्] (स्त्री. बिलासण) १ दानी, दातार।

२ सुखभोग या आनन्द भोग करने वाला।

३ क्रीड़ा-खेल करने वाला।

४ प्रेमपूर्ण क्रीड़ा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला।

५ मनोरजन या मनोविनोद करने वाला।

उ०—सोभत (न) जांण मिले सुखकारी, नरपति तिकरण प्रसोभा न्यारी। रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणौ बिलासी। —रा. रू.

६ विषय भोग, भोग बिलास या मैथुन करने वाला।

७ कामी, रसिक।

रू. भे.—बिलासण, बिलासि।

स. पु.—१ आग, अग्नि।

२ श्री कृष्ण का नामान्तर।

३ भगवान श्रीविष्णु।

४ चान्द, चन्द्रमा।

५ साप, सर्प।

६ शिव शकर, महादेव।

७ कामदेव।

८ वरुण वृक्ष।

९ एक प्रकार का वर्णिक छंद विशेष जिसमें मगण तगण फिर दो मगण और अन्त में गुरु होना है तथा पाच, तीन व पाच पर यति होती है।

बिलासु—देखो 'बिलास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—समुद्रविजय सिवानदन चंदन वचन बिलासु, नेमि जिणेसर निनु निनु जग्रन महिम निवासु। —जयसेखर सूरि

बिलासौ—देखो 'बिलास' (रू. भे.)

उ०—१ जाणे ते चौसठि कला, निरुपम वचन बिलासौ रे। चद्रवदन मृगलोयणी, गय गजराज उल्हासौ रे। —वि. कु.

उ०—२ चाकर चौकीदार ज्यूं, बहुला राखै पासौ रे। काम करावै ते कन्हा, विलसै आप बिलासौ रे। —ध. व. ग्र.

बिलास्य—स. पु.—तार लगा हुआ प्राचीन काल का एक बाजा।

बिलि—देखो 'बळ' (रू. भे.)

उ०—हिवइ वडा आवइ तं केहवा ! बिलि मरिचनां वडां, काजी ना वडां, घोल वडा, उडदनी दालि ना वडा, मुगनी दालिना वडां कुलथीनी दालिना वडा. घणुं घोलणे भीनां, घणि तेलें सीना चमत्कारिया अत्यत, मुहडि घाल्या तुरत गलइ, घणू स्युं कहीइ स्वरग ना देव देवता पणि खावा नइ टलवलि। —व. स.

बिलिखित—वि. [स.] १ लिखा हुआ।

२ खोदकर अंकित किया हुआ।

बिलिप्त—वि —पुता हुआ, लिपा हुआ।

बिलियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—देखण लागी पख आवडी आंमूं भरियां, चीतै मन कुरळाय आज आ किसड़ी बिळियां। निरख्यां अेडां मेघ संजोगी चचळ होवै, वांरा कांई हवाल, कामणी कठ न होवै ? —मेघ

बिलियोड़ौ—भू. का. कृ.—आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ।

(स्त्री बिलियोड़ी)

बिलिबिलियौ—स. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—अग वस्त्र, देवदूष्य चीनमुक गोजी चउडसी नीलनेत्र सचोपा पाटणिया हीरपट्ट साउला बिलिबिलिया नरम्म खमी उभयखरम्म वामखरम्म वांमसऊआ मुगवनां मांगलिआं वयराग

रां हीरागरां पुस्पागर जादर मेवाडंबर नेत्रपट्ट घोतपट्ट ।
—व. स.

विलीजणी, विलीजबी–क्रि. अ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाड़ा' रोग ग्रस्त होना।

विलीजियोड़ी–भू. का. कृ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाड़ा' रोग ग्रस्त हुवा हुआ।

(स्त्री. विलीजियोड़ी)

विली—देखो 'वळी' (रू. भे.)

उ०—अथ प्रव [ह] ठाभंगावसर जलकल्लोल गगनमंडल व्यापिवा लागा अकस्मात् नक्षत्रमाला अदृश्य थई, विली वाउ वाइवा लागा, तलानी माटी ऊपरि आंणइं, दुर्गंध ऊछलिउ क्षार जलनउ छुइ द्रु न लागइ, जलचर जीव आवी प्रवहणि वाजइं ।
—व. स

विलीन–वि. [सं.] १ आपस में घुले-मिले हुए, जो वापस अलग २ नही किये जा सकें ।

२ जो गायब लुप्त, अदृष्य या ओझल हो गया हो :

३ नष्ट हुवा हुआ, नष्ट ।

४ मरा हुआ, मृत ।

विलुद्ध–वि. [सं. वि.+लुब्ध] १ मोहित, आकर्षित ।

२ लालायित ।

३ उलझा हुआ, फंसा हुआ ।

विलुद्धणी, विलुद्धबी—देखो 'विलूंबणी, विलूंबबी' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मंदिर मालिया, मुलकंतौ नेह विलुद्ध । पूरै हाथै पूजियो, परमेस्वर मन-सुद्ध । —जयवांणी

विलुद्धणहार, हारौ (हारी), विलुद्धणियौ—वि० ।

विलुद्धिग्रोड़ौ, विलुद्धियोड़ौ, विलुद्ध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलुद्धीजणौ, विलुद्धीजबौ—भाव वा० ।

विलुद्धियोड़ौ—देखो 'विलूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलुद्धियोड़ी)

विलुप्त–वि. [सं.] १ जिसका नाश हो गया हो, नष्ट ।

२ जो लोप या अदृश्य हो गया हो ।

३ जो टूट फूट गया हो, नष्ट, बरबाद ।

विलुप्तायोनि–स. पु. [सं.] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग विशेष जो कि वायुदोष के कारण होता है ।

विलूंधणी, विलूंधबी–क्रि. अ.—१ झंझटों में उलझना, फंसना ।

उ०—बडो दुरगमी देस जोधै विलूंधो, सुधै अंगदं अतरानेर सूंधो ।
तरै खेद होतां अथा देह तांणी, प्रळ वेस लाधौ नहीं पाख पांणी ।
—सू. प्र.

२ मोह में फसना, मोहित होना, आकर्षित होना ।

उ०—१ सुरा मोरं झकोळियै, भवर न जाणै काय । प्रेम विलूंधौ भवरो, सलि मरंतो जाय । —अग्यात

उ०—२ विखियारस विखलेर विलूंधो, सेवै क्रपण धेनुगत सूंधो ।
—अग्यात

३ लालायित होना, लालच में फसना ।

विलूंधणहार, हारौ (हारी), विलूंधणियौ—वि० ।

विलूंधिग्रोड़ौ, विलूंधियोड़ौ, विलूंध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूंधीजणौ, विलूंधीजबौ—भाव वा० ।

विलूधणौ, विलूधबौ, विलुद्धणौ, विलुद्धबौ, विलूधणौ, विलूधबौ
—रू० भे० ।

विलूंधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ झझटों व तकलीफों में उलझा हुआ, फसा हुआ २ मोह में फसा हुवा, मोहित हुवा हुआ, आकर्षित हुवा हुआ. ३ लालच मे फंसा हुआ, लालायित हुवा हुआ ।

(स्त्री. विलूंधियोडी)

विलूंधौ–वि.—१ झझटों व तकलीफों में फसा हुआ ।

२ मोह में फसा हुआ, मोहित ।

३ लालच में फसा हुआ, लालायित ।

विलूंबणी, विलूंबबी–क्रि. अ.—१ लटकना ।

उ०—१ खीवा यूं खुरसांण, घण तेगौ तरवार रौ। मुखमल हुंदै म्यांन, खंवै विलूंबै खीवजी । —खीवजी री बात

उ०—२ करहो काचौं ना चरै, पाकी दिसां न जाय । अधर विलूंबी बेलड़ी, तिण नै घणी भुराय । —अग्यात

२ मेघ या घनघटा आदि मंडराना, छाना, झुकना ।

उ०—कुण थांनै चाळा चाळिया, हो पनामारू जी हो, किण थांनै दीवी, रे ढोला, सीख । मोरा, हो गिया प्यारो रा ढोलाजी हो, हां रे, सांवणियौ विलूंब्यो रै बीकानेर । —लो. गी.

३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित होना ।

४ छूना, स्पर्श होना ।

५ लिपटना, चिपकना ।

६ लस्तोबस्त होना ।

क्रि. स.—७ आलिंग करना, गले लगना. या लगाना ।

उ०—यूं करतां इतरा मे तो हुइ फजर । कूकड़ा बोलिया । वाजी गजर । तद कवर वाग नूं सीख कीवी । तो पिण रतना आंखियां भरी चाळां लूंबी, गळै विलूंबी । बोलणी न आयौ, गळौ गहरायौ । —र. हमीर

८ रोकना, अवरुद्ध करना।

९ देखो 'विलवणो, बिलंबबो' (रू. भे.)

बिलूंबणहार, हारो (हारी), बिलूंबणियो—वि०।

बिलूंबियोड़ो, बिलूंबियोड़ो बिलूंब्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलूंबीजणो, बिलूंबीजबो—कर्म वा० भाव वा०।

बलूंबणो, बलूंबबो, बिमूंबणो, बिलुंबबो, बिलूंबणो, बिलूंबबो, बिलूंमणो बिलूंमबो, बिलमणो, बिलमबो, बिलूंमणो, बिलूंबबो —रू० भे०।

बिलूंबियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लटका हुआ. २ मेघ या घनघटा आदि मंडराया हुआ, छाया हुआ, झुका हुआ. ३ स्मृद्धि या विशालता युक्त शोभित हुवा हुआ. ४ छूआ हुआ, स्पर्श हुआ हुआ. ५ लिपटा हुआ, चिपका हुआ, ६ लम्बोवस्थ हुवा हुआ. ७ आलिंगन किया हुआ, गले लगा या लगाया हुआ. ८ रोका हुआ, अवरुद्ध किया हुआ।

९ देखो 'विलंबियोड़ो' (रू भे.) (स्त्री. विलंबियोड़ी)

बिलूंमणो, बिलूंमबो—देखो 'विलूबणो, विलूबबो' (रू भे.)

उ०—विरहा बिलूंबो पिया वेलड़ी, नरां विलूंबो विलूंबो नार, होमी ढोला नार, अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी।
—लो. गी.

बिलूंमणहार, हारो (हारी) बिलूंमणियो—वि०।

बिलूंमियोड़ो, बिलूंमियोड़ो, बिलूंम्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलूंमीजणो, बिलूंमीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

बिलूंमियोड़ो—देखो 'बिलूंबियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलूंमियोड़ी)

बिळू—देखो 'वळू' (रू. भे.)

उ०—१ डालू बाळा धणी रै पखै नीं बंधै तो बात रै है जठै ई मूंघो लाग जावै। सगळा आगण री मठ मर जावै। इण आगण री लाब लेवण माक मतै ई जणो जणो डालू बाळा गोत्यार रै बिळू बळ्यो।
—फुलवाड़ी

उ०—२ बस्ती रा सगळा मिनख मळिया रै बिळू रह्या। मर वो हाकोबाको गयूं अर लाखला री आघी पातो पटकायली।
—फुलवाड़ी

उ०—३ ओ तो साचांणी दूध ई निकळियो। जे कोई लफगो व्हैतो तो केड़ीक माहेरो सजतो! आज तो भगवांन नांमी बिळू रह्यो। दोयती रा भाग है।
—फुलवाड़ी

उ०—४ उतरतां ई पैला तो बेटी सूं लम्मावणी करी। पछै मोहरी भाल वागोळता ऊट री गळाई बगळ बगळ कंवण लागा-भाग बिळू व्है जद यूं बिहुगा करै।
—फुलवाड़ी

बिलूघणो, बिलूधबो—देखो विलूंधणो, विलूंधबो' (रू. भे.)

उ०—१ सांमाधरम विखादवाद, विपरीत बिलूधा।
—केसोदास गाडण

उ०—२ विमल जिनेसर मुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनड़ो विलूधो रे ताहरै रूप, जेम विलूधो रे कमल मधूप।
—वि. कु.

उ०—३ सेठ तणै मन माहि उदधि मां कुमरी वसै निसदीस, विरह बिलूधो रे बिसवावीस। नलिनी देखि भमर जिम भटकै, तिम तसु मिलण जगीस।
—वि. कु.

उ०—४ तीखा लोयण, कटि करळ, उर रसड़ा बिबोह। ढोला, थाकी मारुई, आणि विलूधउ मोह।
—ढो. मा.

बिलूधणहार, हारो (हारी), बिलूधणियो—वि०।

बिलूधियोड़ो, बिलूधियोड़ो, बिलूध्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलूधीजणो बिलूधीजबो—भाव वा०।

बिलूधियोड़ो—देखो 'विलूंधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलूधियोड़ी)

बिलूरणो, बिलूरबो—क्रि. स.—१ नोचना।

उ०—गुरु पूछी रे वन माहि गयउ, काउसग्ग रह्यउ समसानो रे जी। स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही असमांनो जी।
—स. कु.

२ छीनना, झपटना।

बिलूरणहार हारो (हारी), बिलूरणियो—वि०।

बिलूरियोड़ो, बिलूरियोड़ो, बिलूरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिलूरीजणो, बिलूरीजबो—कर्म वा०।

बिलूरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ नोंचा हुआ. २ छीना हुआ, झपटा हुआ।

(स्त्री. बिलूरियोड़ी)

बिलेच्छ, बिलेच्छु—देखो 'म्लेच्छ'

उ०—वीर कोडि जिह पांडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि बिडारी। तु बिराटनृप भीमि ऊदालिउ, दाउ देविगु बिलेच्छु सु बालिउ।
—सालिसूरि

बिळे—देखो वळै' (रू. भे.)

उ०—१ भला बुध अवतार तू बाप बावा, निमो धरम नां कीध निरबळ नियावा। जुध धिणी जगत केणि भांति जीतो, बिळै लाफर जिसो दइत बीतो।
—पी. ग्रं.

उ०—२ सीत परणियो मांम, गरब दुजरांमि गमायो। हुवो अयोध्या हरख, बिळै कोसल्या वधायो।
—पी. ग्रं.

उ०—३ प्रकह्वर घरें भाया भनंत, बिळे मात पिति बिळकुळें। कूबड़ो हुंति कीधी क्रिपा, माहव भगतां सां मिळे। —पी. ग्रं.

बिलेप, बिलेपण, बिलेपन—स. पु. [सं. विलेपः, विलेपनं] १ लेप ग्रादि करने की क्रिया।

उ०—१ कंचरण कंकरण केउर नेउर पह भुयदंडि, चंदनि देह बिलेपनु लेप न लागइ पिंडि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ बेरणी पवित्र करिस निलमोबर, मसतग चाढ़ै तुलसी-मंजर। तुव इम पवित्र करिस दसरथ-तरण, चरच बिलेप करै हर चंदरण। —ह. र.

२ शरीर ग्रादि पर चुपड़ने या लगाने की वस्तु, चन्दन, केसर या ग्रन्य सुगन्धी द्रव्य ग्रादि।

बिलेपनग्रह—स. पु [सं. विलेपनं+गृहं] वह स्थान जहां चन्दन ग्रादि का लेपन किया जाता है।

उ०—मज्जनग्रह बिलेपनग्रह प्रसाधनग्रह ग्रलंकारग्रह ग्रादरसग्रह ग्रंतःपुरग्रह क्रीडाग्रह रसवतीग्रह भोजनग्रह ग्रास्थानग्रह कोसचैत्य प्राय मंदिरपरिकरित विसाली प्रणाली चित्रसाली। —व. स.

बिलेसय—देखो 'बिलेसय' (रू. भे.) (द्वि. नां. मा.)

उ०—ग्रर प्रणिहल पुर बंबी मैं पावरो हो जाय पंठण रो सकल्प घरतो नहीं परंतु इसड़ा राग रा रिझवार ग्रलगरद बिलेसय तो कठै न जाणिया। —वं. भा.

बिळै, बिलै—१ देखो 'बळै' (रू. भे.)

उ०—१ बिमळ करेसर बिलै, साधु सुखदेव सरीखा। बालमीक जैदेव, नाम नरहर कवि नीका। —पी. ग्रं.

उ०—२ बिहो केम घणनांम, हेक हैग्रीव बिलै हुंम। सेत बाराह, ग्राप बिरिण रूप तणौ ग्रम। —पी. ग्रं.

२ देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—१ फेर रावजी सूं कही कुंवर घणा कहीं बिलै लगावौ। भाई पण बिलै लगावौ। —नापे साखले री वारता

उ०—२ केसव गुण गावण करूं स्री गुरुदेव सहाय। ऊजळ घट बुध ऊपजै, बिघन बिलै हुय जाय। —भगतमाळ

उ०—३ दादू देखि देखि सुमिरण करै, देखि देखि लै लीन। देखि देखि तन मन बिलै, देखि देखि चित दीन। —दादूबांणी

उ०—४ तन मन बिलै यौं कीजियै, ज्यौं पांणी में लौण। जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहियै कौंण। —दादूबांणी

उ०—५ नदी पार संपर्क, पोत द्रढ खेवट पायां। बिपति बिलै हुय जाय, जेम घर संपत ग्रायां। —रा. रू.

बिलोक—वि. [वि=रहित+लोक] १ जन रहित, निर्जन, शून्य।

२ दृष्टि, नजर।

बिलोकण—सं. स्त्री. [सं. विलोकन] १ देखने की क्रिया, या भाव।

२ जांचने की क्रिया, परीक्षण।

३ तलाश करने की क्रिया, तलाशी।

रू. भे.—बिलोकन।

बिलोकणि—स. स्त्री.—दृष्टि, नजर।

उ०—सत के सोनागिर' बाचा हरिचंद, साच के ग्रजातसत्र गात रति बिंद। क्रपा की द्रस्टि ग्रस्रित के भाय, कोप की बिलोकणि काळ तें सवाय। —रा. रू.

बिलोकणौ, बिलोकबौ—१ ग्रवलोकन करना, देखना।

उ०—१ नरां मही ग्रंमरां उछंडे थंडे थाळ नीर, मही रसां तळी घोर धडै ग्रासमांण। महावीर देवांसाल बिलोकै रोस में मडै, पुळे कपी भाळ छडै पलाळी पीठांण। —र. रू.

उ०—२ रवि रथ थांभि बिलोकै राजा रो ग्रापरा जोध सिर-ताजा। दं दं पाव गजा दांतूसळ, वाघा जेम चढां वीजूजळ। —सू. प्र.

उ०—३ जिण बिलोकि कहियौ जगजांमी, सिव छै सुखी सिवा तौ स्यांमी। कहि इम प्रभु ग्रातिथ-ध्रम कीग्रो, दखि प्रमांण ग्रासण ज्रण दीधो। —सू. प्र.

२ निरीक्षण या परीक्षण करना, जांचना।

३ ढूंढना, तलाश करना।

४ विचार करना, विचारना।

बिलोकणहार, हारो, (हारी), बिलोकणियौ—वि०।

बिलोकिग्रोड़ो, बिलोकियोड़ो, बिलोक्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलोकीजणौ, बिलोकीजबौ—कर्म वा०।

बिलोकणौ, बिलोकबौ, बिलोकवणौ, बिलोकवबौ—रू० भे०।

बिलोकन—देखो 'बिलोकण' (रू. भे.)

बिलोकवणौ, बिलोकवबौ—देखो 'बिलोकणौ, बिलोकबौ' (रू. भे.)

उ०—सब तमस मिटचो प्रगटचो सराह, वरस्यो सुभ ग्यांन प्रकास वाह। जित कोक बिलोकवै करत चाह, सब सुर नर जिनकी करत सराह। —ध. व. ग्र.

बिलोकवणहार, हारो (हारी), बिलोकवणियौ—वि०।

बिलोकविग्रोड़ो, बिलोकवियोड़ो, बिलकव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलोकवीजणौ, बिलोकवीजबौ—कर्म वा०।

बिलोकवियोड़ो—देखो 'बिलोकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलोकवियोड़ी)

बिलोकियोड़ो—भू. का. कृ.—१ ग्रवलोकन किया हुग्रा, देखा हुग्रा. २ निरीक्षण या परीक्षण किया हुग्रा, जांचा हुग्रा. ३ ढूंढा

हुआ, हताश किया हुआ. ४ विचार किया हुआ, विचारा हुआ ।
(स्त्री. बिलोकियोड़ी)

बिलोड़णौ, बिलोड़बौ—देखो 'बिलोडणौ, बिलोडबौ' (रू. भे.)
बिलोड़णहार, हारौ (हारी), बिलोड़णियौ—वि० ।
बिलोड़ियोड़ौ, बिलोडियोड़ौ, बिलोड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलोड़ीजणौ, बिलोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिलोड़ियोड़ौ—देखो 'बिलोडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बिलोड़ियोड़ी)

बिलोचण, बिलोचन-स. पु. [स. विलोचन] १ आंख, नेत्र ।
(अ. मा., ह. ना. मा)
२ एक नरक जहां जाने से प्राणी अन्धा हो जाता है ।
वि.—बिना आंखों का, अन्धा ।

बिलोचनअंबु-स. पु. [स. विलोचन+अम्बु] आंखों का पानी, आंसू ।

बिलोडणौ, बिलोडबौ-क्रि. स.—१ विलोडित करना, मथना ।
उ०—'''कल्लिगहन ओहतउ,पाताल रोडतउ समुद्र आच्छोडतउ गिरिमदौ बिलोडतउ, महाद्रह डोहतउ, साहारिमक तणा मन मोहतउ, तुरगम नामवतउ, पवन जिम चालतउ ।''' —व. स.
२ हिलाना, डुलाना ।
३ युद्ध आदि मे शत्रु सैन्य को तितर-बितर करना ।
४ उथल-पुथल करना ।
बिलोडणहार, हारौ (हारी), बिलोडणियौ—वि० ।
बिलोडियोड़ौ, बिलोडियोड़ौ, बिलोडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलोडीजणौ, बिलोडीजबौ—कर्म वा० ।
बिलोड़णौ, बिलोड़बौ, बिलोडणौ, बिलोडबौ, बिलोणौ, बिलोबौ बिलोवणौ, बिलोवबौ, बीलोणौ, बीलोबौ बिलोड़णौ, बिलोड़बौ बिलोणौ, बिलोबौ, बिलोवणौ, बिलोवबौ, बीलोणौ, बीलोबौ ।
—रू. भे.

बिलोडियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ २ हिलाया-डुलाया हुआ. ३ युद्ध आदि मे शत्रु सैन्य को तितर-बितर किया हुआ, हताश किया हुआ, ४ उथल-पुथल किया हुआ ।
(स्त्री बिलोडियोड़ी)

बिलोणौ—देखो 'बिलोवणौ' (रू. भे.)
उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, बिलोणा तणा झरड़का उपजइ, पथिक मारगि थया । ब्राह्मण तणे घरि वेद ध्वनि बिस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया । —रा. सा. सं.

बिलोणौ, बिलोबौ—देखो 'बिलोडणौ, बिलोडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हूओ हंस रो रूप औ रांम हुअं, वडौ कच्छ अवतार दरिया विलोअं । दिवं दांन रतनां तणौ सरिसि देवां, जक दुख दे दांणवां राह जेवा । —पी. ग्रं.

उ०—२ विलोअं वार बळिराव, वहि सुरां अंत सीता वरे । रुघनाथ तिकै दिन राह रो, घड़मां सिर अळगौ धरे ।
—पी. ग्रं.

उ०—३ दूहिजे उत्तम दूध जतन करि दही जमावै । वलि परभात बिलोइ, उदिम सेती घ्रत आवै —ध. व. ग्रं.
उ०—४ मिळ मथाण धाराळ तणं मुंह, अत्र कत्र सत्र होयै जणौ जग । वार वार दध जेम बिलोअै, ताईयां दळ नगराज तण ।
—दूदा नगराजोत रो गीत

बिलोणहार, हारौ (हारी), बिलोणियौ—वि० ।
बिलोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिलोईजणौ, बिलोईजबौ—कर्म वा० ।

बिलोप-स. पु. [सं.] १ बाधा, रोक, रुकावट ।
२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागने की क्रिया ।
३ हानि, नुकसान ।
४ नाश, संहार ।
उ०—आयौ सकोप दळ ऊपरा, प्रबळ तोप गोळं सु पर । कारण बिलोप जग चौ करण, धायौ काळक कोप धर ।
—रा. रू.
५ उल्लंघन करने की क्रिया ।
६ अदृश्य या आंखों से ओझल होने की क्रिया ।
वि—गवाने वाला, खोने वाला ।
उ०—औरंग कोप बिलोप भू, गिरां अकब्बर साह । सांम्हा चढिया बावसू, चढ़िया पिच्छम राह । —रा. रू.

बिलोपक-वि.—१ बाधा डालने वाला, रुकावट डालने वाला ।
२ चोरी से या बलात वस्तु लेकर भागने वाला ।
३ हानि या नुकसान करने वाला ।
४ नाश करने वाला ।
५ अदृश्य या विलुप्त होने वाला ।
६ गंवाने वाला, खोने वाला ।
७ उल्लंघन करने वाला ।

बिलोपणौ, बिलोपबौ-क्रि स.—१ बाधा डालना, रुकावट डालना ।
२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागना ।
३ हानि करना, नुकसान करना ।
४ उल्लंघन करना ।
५ नाश करना, मिटाना ।

६ नाश करना, संहार करना।

क्रि. अ.—७ नाश होना, मिटना।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अंबर औपयं। फिरि सुबुधि वधि सतसंग कारण, लुबुध होत बिलोपयं।
—रा. रू.

८ संहार होना।

९ अदृश्य होना, विलुप्त होना।

१० गवाना, खोना।

११ विमुख होना, पलटना।

बिलोपणहार, हारौ (हारी), बिलोपणियौ—वि०।

बिलोपिग्रोड़ौ, बिलोपियोड़ौ, बिलोप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलोपीजणौ, बिलोपीजबौ—कर्म वा, भाव वा०।

बिलोपात—देखो 'विलाप' (रू. भे.)

उ०—ऊपरां सांम्हौ राति आई। ताहरां मन मैं विचार कियौ, हुं केथो जाऊं ? मैं आगै कदे सासरौ आंखं दीठौ नहीं। हिवैं म्हारी कौण गति हुसी ? आ मन मैं बिलोपात करणै लागी।
—कांवळौ जोईयै नै तीडो खरळ री वात

बिलोपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ. २ चोरी से या बलात् वस्तुएँ लेकर भागा हुआ ३ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ उल्लंघन किया हुआ. ५ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ संहार किया हुआ. ७ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ८ संहार हुआ हुआ. ९ अदृश्य हुवा हुआ, विलुप्त हुवा हुआ. १० गवाया हुवा, खोया हुआ. ११ विमुख हुवा हुआ, पलटा हुआ।

बिलोपी-वि.—विलोप करने वाला।

बिलोभ, बिलोभन–वि. [सं.] १ जिसमें लोभ का अभाव हो, लोभ से रहित।

२ मोहित, आकर्षित, लालायित।

उ०—सिणगार गज असि सोभ, लखि हुवै इंदर बिलोभ। मिळ मत्रि सुभड़ समाज, साजंत निज रस साज।
—सू. प्र.

सं. पु.—१ मन को ललचाने वाला, लालच।

२ आकर्षण।

३ बहकावा, फुसलाहट।

४ गुणकथन।

बिलोम–वि. [सं.] १ जिसके बाल न हो, लोम रहित।

२ सामान्य रीति, नियम, स्वभाव आदि के विपरीत क्रम में होने वाला।

३ विपरीत क्रम यानी ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला।

४ विपरीत, उल्टा।

उ०—घनै उतंग अंग के मतंग घूमते नहीं, चलंत से बिलोम लोम व्योम चूमतै नहीं। झपेट देत झक्कै ब्रह्मंड व्यापतै नहीं, छलंग देत छोनि है, मलंग मांनतै नहीं।
—ऊ. का.

५ शत्रु, दुश्मन।

उ०—सबळ कळ आदित्या बिलोमां साभतां, बाजतां त्रंबागळ कहर वेळा। 'पतौ' ईडरपती दिलीवै पलायत, हुवौ दळ छत्रियां छत्र हेळा।
—किसोरदांन बारहठ

सं. पु.—१ स्वान, कुत्ता।

२ सर्प, सांप।

३ वरुण का एक नामान्तर।

४ कुए से पानी निकालने का एक प्रकार का साधन, रहट।

५ स्वरों का अवरोहात्मक साधन।

६ संगीत में ऊंचे स्वर से नीचे स्वर की ओर उतार, ऊचे स्वर की ओर से नीचे स्वर की ओर आने की क्रिया।

७ पर्दे के वाद्यों सतार आदि में एक प्रकार का मीड़ विशेष।

वि. वि.—इसमें "सा" के पर्दे पर ही बिना तार बजाए तार को अदाज से खींच कर 'रे" के स्थान तक ले जा कर मिजराब से प्रहार किया जाता है तथा फिर तार को वापस !"सा" पर ले जाया जाता है।

८ कपोतरोमा राजा का एक पुत्र।

रू. भे.—विलम,।

बिलोमसोमायन–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का व्रत विशेष, जिसके करने से व्रतीसोमलोक प्राप्त होता है।

वि. वि.—यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से आरम्भ कर, ३ दिन चार स्तनों का, ३ दिन दो स्तनों का, ३ दिन एक स्तन का दूध पीये फिर ३ दिन १ स्तन का, ३ दिन २ स्तनों का, ३ दिन तीन स्तनों का, और तीन दिन चार स्तन का दूध पी कर कुल चौबीस दिन तक यह व्रत किया जाता है।

बिलोयोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलोयोड़ी)

बिलोळ, बिलोल–वि. [सं. विलोल] १ हिलने-डुलने वाला, लहराने वाला।

२ चंचल सुन्दर।

३ ढीला, शिथिल।

उ०—भवि भवसउ नै बोलइ बोलइं गिरिसिर टोल, सहजिइं परभव भेदन वेदन वदन विलोल।
—जयसेखर सूरि

४ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ।

सं. पु.—ऐश-आराम।

उ०—विमल शरद बिलोळ, हरांमखोर जो नर हुवै। पावै जम री पोळ, भूरवसिंगा 'भंडिया'। —महाराजा बलवंतसिंह रतलाम

बिलोळणो, बिलोळबो—देखो 'बिलोलणो, बिलोलबो' (रू. भे.)

बिलोळणहार, हारो (हारी), बिलोळणियो—वि०।

बिलोळियोड़ो, बिलोळियोड़ो, बिलोळयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिलोळीजणो, बिलोळीजबो—कर्म वा०।

बिलोलणो, बिलोलबो-क्रि. स.—१ ऐश-आराम करना।

२ हिलाना-डुलाना।

३ हवा करना, हवा डालना।

उ०—वनिता समद न वेदना, करतां कोडि उपाय। बाउ बिलोलइ बीजणइ, को चंदन घसो लाय। —मा. कां. प्र.

बिलोलणहार, हारो (हारी), बिलोलणियो—वि०।

बिलोलियोड़ो, बिलोलियोड़ो, बिलोल्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलोलीजणो, बिलोलीजबो—कर्म वा०।

बिलोळणो, बिलोळबो—रू० भे०।

बिलोळियोड़ो, बिलोलियोड़ो-भू का कृ.—१ ऐश-आराम किया हुआ.

२ हिलाया-डुलाया हुआ. ३ हवा किया हुआ, हवा डाला हुआ।

(स्त्री बिलोळियोड़ी, बिलोलियोड़ी)

बिलोवणउ—देखो 'बिलोवणो' (रू. भे)

उ०—दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे। जिम बिलोवणउ बिलोवतां थकां, सरीर नउ संस्थान रे। —स. कु.

बिलोवणी-सं स्त्री.—१ मिट्टी का बना वह छोटा पात्र जिसमें दही मथा जाता है।

२ दही मथने वाली स्त्री।

रू. भे.—बिलोवण, बिलोवणी।

बिलोवणूं, बिलोवणो-सं पु.—१ मिट्टी का बना वह बड़ा पात्र जिसमे दही मथा जाता है।

उ०—मुधा पड़्या रे बिलोवणा, रीती रै'वे जाय छछियार। वारी, म्हारा गुमा, मन रही थो। —लो. गी.

२ दही आदि मथने की क्रिया या भाव।

उ०—१ माय बिलोवै बिलोवणूं, बहुन रसोई के माय। सोदागर महदी रायणी। —लो. गी.

उ०—२ हवद्द पूरड़ा बोल्या, नणारेक नीदली डोल्या। नीदई भकोल्या, मूको सभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या। आवइ नारि, बारि उगारि, रालि अघारि। दही सभाल्युं, बिलोवणो घाल्यु। —रा. सा स.

उ०—३ आंभरके नांनी-मां रै ई साथै ऊठ्यो। जोड़ै बैठ दुबारो करी। घोही ताळ बिलोवणो ई घमोड़्यो। पछै सूरज रो प्रेक वामड़ा ऊंचो चढ्यो जणां खाखरा माथै माखण मिसरी लेय कलेवो करण लागो। —फुलवाड़ी

उ०—४ यूं ई घणा रै मूंडै सुणियो व्हैला कै पुन्न री जड़ सदा हरी रै'वै। म्रै काला मिनखां री काली बातां है। बारो मासी तो पिचियासी बरसां में बिखा रो बिलोवणो करनै फगत इण ग्यांन रो मासण निकाळियो कै धन री जड़ सदा हरी रैवै। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणो, घमोडणो, घालणो, होणो।

रू. भे.—बिलोवणी, विलोणो, विलोवणउ, विलोहणो।

बिलोवणो, बिलोवबो—देखो 'बिलोडणो, बिलोडबो' (रू. भे.)

उ०—१ माय बिलोवै बिलोवणूं, बहुन रसोई के मांय। सोदागर महदी रायणी। —लो. गी.

उ०—२ दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथांन रे। जिम विलोवणउ बिलोवतां थकां, सरीर नउ सस्थान रे। —स. कु.

उ०—३ एक बाई कह्यो स्वांमीजो म्हारै भेंस व्याव जब पधारो तो लाहो लेवूं। तै किम भेंस व्याया एक महिनां तांइ दूध दही बावर देवै, पिण बिलोवै नही। तै देवी रै टांणे पधारज्यो। —भि. द्र.

उ०—४ पोसण खांडण प्रसिद्ध, वलै गो दूहि बिलोवै। जीमण राधि जिमाव, लाज सू जिमै लुकोवै। —ध. व. ग्रं.

बिलोवणहार, हारो (हारी), बिलोवणियो—वि०।

बिलोविप्रोड़ो, बिलोवियोड़ो, बिलोव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलोवीजणो, बीलोवीजबो—कर्म वा०।

बिलोवियोड़ो—देखो 'बिलोडियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बिलोवियोड़ी)

बिलोहणो—देखो 'बिलोवणो' (रू. भे.)

उ०—कमळा किया करतार, भर बुडो तण मार। लेह देह छोडोजै लास, बिलोहणं वरहास। —गु. रू. ब.

बिलोहिल-स. पु. [सं.] १ तीन सिर, तीन पैर एवं तीन हाथों वाला एक राक्षस जो कश्यप एवं खशा का पुत्र था।

२ कश्यप एवं सुरभि के पुत्रों मे से एक रुद्र।

बिलो-सं. पु.—१ वर्षा ऋतु में हरे घास या पानी में होने वाला कीड़ा विशेष।

२ उक्त कीड़े के पेट मे चले जाने से गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं को होने वाला रोग विशेष।

वि. वि.—इस रोग से पशु का अंग अकड जाता है। अगर कीड़ा नाक मे चला जाये तो पशु मर भी जाता है।

बिल्कुल—देखो 'बिलकुल' (रू. भे.)

बिल्कुळणौ, बिल्कुळबौ—देखो 'बिळकुळणौ, बिळकुळबौ' (रू. भे.)

बिल्कुळणहार, हारौ (हारी), बिल्कुळणियौ—वि०।
बिल्कुळिप्रोड़ौ, बिल्कुळियोड़ौ बिल्कुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिल्कुळीजणौ, बिल्कुळीजबौ—भाव वा०।

बिल्कुळियोड़ौ—देखो 'बिळकुळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिल्कुळियोड़ी)

बिळपा—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—कोट किला करतांह, विखरतां लागं बिळपा। मानव नै मरतांह, वार न लगे वसतिया। —समेळजी बारहठ

बिल्यायत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

बिल्यो—देखो 'बिल्यौ' (रू. भे.)

बिल्लगणौ, बिल्लगबौ—देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

बिल्लगणहार, हारौ (हारी), बिल्लगणियौ—वि०।
बिल्लगियोड़ौ, बिल्लगियोड़ौ, बिल्लग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिल्लगीजणौ, बिल्लगीजबौ—भाव वा०।

बिल्लगियोड़ौ—देखो 'बिलगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिल्लगियोडी)

बिल्लभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

बिल्लल—स. पु.—एक देश का नाम।

उ०—सगवण गज्जण सबर बरबरकाय चिलाय तुरड गुंड उडकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल अज्जल बिल्लल पारस खस लउस हारो समोसहिम रोम मरुग। —व. स.

बिल्लायत—देखो 'विलायत' (रू भे.)

उ०—जुदा मिसल जग हूंत, अमल बिल्लायत वाळा। इसड़ा बार हजार, चूंच चढिया कळिचाळा —सू. प्र.

बिल्लौ—देखो 'बिल्लौ' (रू. भे.)

बिल्वपत्र—सं. पु [स.] वह बेल का पत्ता जो प्राय: शिवजी की पूजा में चढ़ाने के काम में आता है।

बिल्वमंगळ—स.पु. [स.बिल्वमंगल] श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त एक ब्राह्मण पुत्र।

वि. वि.—इसके पिता कृष्णवेणी नदी के तट पर रहते थे। यह पहले तो शांत व शिष्ट स्वभाव के थे। मगर पिता की मृत्युपरांत दुराचारी हो गये व एक वेश्या के पास भी जाने लगे। पिता के श्राद्ध के दिन भी चिंतामणि नामक वेश्या के पास रात को गये। नदी में किसी मृत स्त्री के शव को लकड़ी समझ कर उसी से नदी पार की तथा वेश्या के द्वार बंद होने पर एक सांप को रस्सी समझ कर उसी से दीवार फांद कर अन्दर गये। उसी दिन वेश्या के फटकार भरे उपदेश को मान कर उसी को अपना गुरु बनाया तथा अपनी आखें फोड़ ली और कृष्ण की भक्ति में लीन हो गये। इसीने 'श्रीकृष्ण कर्णामृत्त जिसे" "लीला गुरु" भी कहते हैं, की रचना की थी।

बिवंत—सं.—१ स्थिति, हालत।

उ०—जो नरसंघजी की बाजी सावूत रहसी, यै साबत लोकां नूं लै नीसरसी तो। वळै पठांण नूं वेगौ धकौ देसां। बिवंत देख दुसमण कन्है नीसरै, बिवंत देख लड़ै, तिकां धरती रहै। अर आखता हुय नै काबू बिना लड़ मरै तिकां री धरती जाहि। —राजा नरसिंघ री वात

बिवक्ष—सं. पु. [स.] कौरव वंशीय निमिचिक राजा का नामान्तर जो अधिसीमकृष्ण का पुत्र था।

बिवची—देखो 'विमची' (रू. भे) (अमरत)

बिवत्स—वि. [स.] सन्तान हीन, जिसके सन्तान न हो।

बिवध—१ देखो 'विबुध' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—विवध घणमाळ नभचक्र माभल वसी, रवि ससी न दीसै दिवस रजनी। मनोभव लगाडै बांण मोहण मदन, सहंस वाता सजन प्राण सजनी। —बां. दा.

२ देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—१ जग ईख स्वाद पी ऊखरस, जिम अवर वार अनारयं। सुख परम दिनपति न्रपति सेवत, विविध भोग विहारयं। —रा. रू.

उ०—२ बिविध सामग्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा श्री ब्रह्माजी वनै मिधाई जै दरद सुणाईजै, कहै तिकां विध कीजै असुर विहंडीजै, क्रोत कांनै सुणीजै। —मा. वचनिका

उ० — ३ कहो घरा पूर घुर कथा, विसवामित्र बिवध। —रांमरासौ

बिवधा—१ देखो 'विबुध' (रू. भे)

२ देखो 'विविधता, (रू. भे.)

बिवधाजांण—देखो 'विविधजांण' (रू. भे.) (अ. मा.)

बिवधि—देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—आगम आवण हरख उमडै, मांडहि कोड नरूकां मंडै। छत्रपति हित मारग छडकाया, विवधि राज मगि फूल विछाया। —रा. रू.

बिवनउ—देखो 'त्रिवनौ' (रू भे.)

उ०—१ घण थाटि लियइ आयउ घरेहि, छांणिया मेछ घर घाति छेहि। जणियार जोध बिवनउ जियार, ताडिया वच्छ वधांणि तियार। —रा. ज. सी.

बिवनणौ, बिवनबौ—क्रि. अ.—मरना, अवसान होना।

उ०—१ नर बिवनै वा नह रहै, जग मैं भ्रम रह जाय। कुळवन्ती सूं कीत रो, नखटी गति हुण आय। —बां. दा.

उ०—२ बिवनै 'जाध' घरै मंडा बळ, बैठौ गादी 'गज' महाबळ। 'माल' 'गज' गादी राव माभ, सबळा किया अपरै माह। —रा. रू.

उ०—३ ताण जाग पाग नय कुळ तणौ, गीधै भार घाचा मही। अभिनमौ 'अम्र' दानेसवर रायसिघ बिवनौ म कही।

—करमसी आसियौ

उ०—४ मारण बिकम गयौ राव माफ, पाळी नह देखा पगन। नौ बिवनै चांपा बड त्यागी, अन भ्रट रो तूटी वरन।

— संकरदांन दघवाड़ियौ

बिवनणहार, हारौ (हारी), बिवनणियौ - वि०।

बिवनियोड़ो, बिवनियोड़ौ, बिवन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिवनीजणौ, बिवनीजबौ—भाव वा०।

बिवन्नणौ, बिवन्नबौ, विबिनणौ, विबिनबौ बिबिन्नणौ, बिबिन्नबौ

—रू० भे०।

बिवनियोड़ो—भू. का. कृ.—मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ।

(स्त्री. बिवनियोड़ी)

बिवनौ—वि. (स्त्री. बिवनी) १ जिसका अवसान हो गया हो, मरा हुआ, मृत।

उ०—जोड़ै नांणौ जगत में, कर कर करड़ा काम। बिवनौ जीवै बाणियौ, नांणा रो सुण नाम। — बां. दा.

उ०—२ गिणजै मत दांमण बोळ गनौ, मुफ बंधव सानेय भाव मनौ। बिवनौ बर जीवत रूप नर्ता, चारण कुळ सकट 'पाल' सुणौ। —पा. प्र.

उ०—३ सुण बाधव बिवनौ समर, राव किया कर रेठ। दन हूतो नभ दुघड़ी, जूफ रह्यौ पिड जेठ। —गा. प्र.

उ०—४ मैंकलौ जाय अतीत, जनौ काय अकेलौ जासी। घण बिवनौ रो घणी, गरब जासी अभवासी। —अरजुणजी बारहठ

२ उदास, खिन्नचित्त।

३ विपत्तिग्रस्त, संकटापन्न।

रू. भे.—बिवनउ, बिनन्नउ, बिवन्नौ, बिबिनौ, बिबिन्नौ वीवनौ, वीवसौ।

बिवन्नउ—देखो 'बिवनौ' (रू. भे.)

उ०—सीगिळ उरथेहरण सवा जोम बिवन्नउ जागि। धांकलु वाढिउ ऊठियउ विक्रमादतु वर्याणि। —रा. ज. सी.

बिवन्नणौ, बिवन्नबौ—देखो 'बिवनणौ, बिवनबौ' (रू. भे.)

उ०—वेगडउ मांड 'वीकउ' बिवन्न, कुळभाण तेणि उदियउ 'कांम'। ऊघरिय छत्र फेराबि धांण, तांई मंडोवर मूलतांण।

—रा. ज. सी.

बिवन्नणहार, हारौ (हारी), बिवन्नणियौ—वि०।

बिवन्नियोड़ो बिवन्नियोड़ौ, बिवन्नयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिवन्नीजणौ, बिवन्नीजबौ - भाव वा०।

बिवन्नियोड़ो—देखो 'बिवनियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिवन्नियोड़ी)

बिवन्नौ—देखो 'बिवनौ' (रू. भे.)

उ०-महाराजा 'अजमाल', बडौ भ्रपिसाल बिवन्नौ। गयौ रांम सुर लोक, दुमौ इक जोग उपन्नौ। हिंदू धरम निबाह, सरम गजे गढ़ांणां। चक्रवती चालियौ, प्रगट वैकुंठ पयांणा। —रा. रू.

(स्त्री. बिवन्नी)

बिवर—स. पु. [स] १ सांप, चूहों व चींटियों के रहने का स्थान, छिद्र बिल।

उ०—१ इक कहै चीटी एह, छित लखौ सुख अणछेह। बस रह्यौ संग परवार, घर बिवर घर निरधार। —रा. रू.

उ०—२ सीह जिम अडर डर अनमि 'सिवसाह' हर, रिमां बिखधर जिहि समर गाहै। तेज खग-ईस री टकर लागी तिकां, रहै नह वारधर बिवर माहै। -- राव देवीसिंघ मेलावत री गीत

२ कन्दरा, गुफा।

उ०—१ च्यार घड़ी तलक च्याऊं रेढ़ा घणा सवरा लड़िया। आदमी घणौ घायल हुवौ। सारा थाण रहिया अर आबू रा बिवर पण भूंडण व रेढा री नजर आया। तद सारौ साथ उठै ऊभौ रहियौ। कुंअर नूं सभाळ घोड़ै सवार कियौ छै। इतरै भूंडण-रेढौ। बिवर जा बड़िया। —डाढाळा सूर री बात

उ० —२ विखम घाट गोरख पखै, कवण पैसै बिवर। चीत कुण रुदर वण जहर चाढै, असक देता वचै जोधपुर 'ऊदला', कहर दरीया वसु तुह-भ काढै। —मालौ सादू

३ छेद, छिद्र।

उ०—नाभि-बिवर अति रुग्रडु, घण नलीआरइ पेटि। उन्नत उर विसाल, पण भल तइ सकइ न भेटि। —मा. कां. प्र.

४ गर्त, गड्ढा।

उ०—१ मन बिवर तनसीत गुतो सब तीरथ न्हावै। कामो छाडै देह हेम बसि हाड गमावै। —ह. पु. वा.

उ० —२ कनिया भोमि बिवर लघु काया, आयस जेम दास घरि आया। वदियौ वळि घर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय। —सू. प्र.

५ दरार, खाई।

६ पाताल। (डिं. नां. मा.)
७ त्रुटि, गल्ती।
८ किसी ठोस पदार्थ में होने वाला खोखला स्थान।
९ घाव।
१० मूर्ख, नासमझ, विवेकहीन व्यक्ति। (ह. नां. मा.)
११ भूगर्भ, तहखाना।

उ०—अर उहि रिति कै आवर्णं भुजंग जु सरप था। अर धनवंत मनुष्य था त्यां प्रथी का पुड़ विवरण करि ऊंडी ठोड़ा सबारि तहा ए दून्यों वरग बिवर कहता भुंहिरा निखात ठोड़ तहां जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी.

१२ समुद्र, सागर। (डिं. नां. मा.)
१३ ब्यौरा, हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—१ आखी जग तणी कथ एती, सारी बिवर अवळवर सेती। अै राठोड़ हुवै ज्यां आगै, भिड़तां ऊला पैला भागे —रा. रू.

उ०—२ वाको ग्यो अजमेर सूं, साह हजूर सताब। पत्र पत्रखि (ठि) या साह डर, लिखिया बिवर नबाब। —रा. रू.

उ०—३ विगत सुणी सारी बिवर, आया हितू हजूर। अरि भमराणी आवियो, दळा न वै था दूर। —रा. रू.

उ०—४ कुवजा नारद विदर री, बिवरां संजुत बात। हरि रा दासां ज्यूं हुए, दासां नूं सुख दात। —बां. दा.

१४ धोखेबाज, कपटी व्यक्ति।
१५ दूत, खबरनवीस।

उ०—अबदुल्ला सुण वधु अत्राजा, रीत कही सुणतां महाराजा। पत्र दिया हित हूंत पठाया, समाचार सहि बिवर सुणाया। —रा. रू.

१६ नौ की संख्या।*

रू. भे.—बिबर, बिभर, बिवर, बिव्वर, बिमर, बिम्मर, वमर, ववर, विमर विम्मर, विवरण।

अल्पा..—वम्मरो।

विवरजत, विवरजित, विवरजिति–वि. [सं. विवर्जित] १ वर्जित, निषिद्ध, मना किया हुआ।

उ०—बहू राणा राव विवाद बिवरजित, "जोध" कळह कथ जिका जुई। बैरायतां तो वाळी भगवट, हव जाणै कुळवाट हुई। —महम्मदजी बारहठ

२ अपेक्षित, वंचित।
३ रहित, बिना।

उ०—१ भाई नांऊ बळद पियारो, तिह के गळै करद क्यों सा' री? विणि चीन्ह खुदाई तरस बिवरजत, केहा मुसलमांणो? —अज्ञात

उ०—२ उदै अस्त आवै न जाय, सकल वियापि सहज भाय। मोह दोह आसा न पास, बरण बिवरजित सु प्रकास। —ह. पु. वां.

उ०—३ सकल रूप रस रूप बिवरजित, सकल रूप तैं कीया। सकल रूप करि रावतै न्यारा, साधां कूं सुख दीया। —ह. पु. वां.

उ०—४ सतगुरु सरणि गई सब दुबध्या, एक निरंजन पाया। करम बिवरजिति सकल वियापी, सो मेरै मन भाया। —ह. पु. वां.

४ रुका हुआ, अवरुद्ध।
५ वर्णन किया हुआ, कहा हुआ, वर्णित।

रू. भे.—बिबरजित, बिबरजित।

विवरजितदे, बिवरजितदेह–सं. पु. [सं. विवर्जित+देह] निराकार, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—अनाथां-नाथ अनंत अछेह, दयाळ मूरत्ति बिवरजितदेह। बिना बपु रूप अनत विथार, अमूळ विरक्ख सु विस्वाधार। —ह. र.

रू. भे.—बिवरजितदेह।

विवरण–स पु. [सं विवरणं] १ प्रकट करने की क्रिया, प्रकटन, प्रदर्शन।

२ सविस्तार वर्णन, विवेचना, व्याख्याभाष्य, टीका।

उ०—विवरण जो वेलि रसिक रस वछो. करो करणि तो मूझ कथ। पूरै इतै प्रांमिस्यो पूरो, इम्है ओछैं ओछो अरथ। —वेलि.

३ छेदने की क्रिया, छेदन।

उ०—तब सुहव जु नायिका तांह का उरस्थळ वैकुंठ प्राय हुई रहीआ छै। अर उहि रिति कै आवर्णं भुजंग 'सु सरप था। अर धनवंन मनुष्य था त्यां प्रथी का पुड़ विवरण करि ऊंडी ठोड़ां सबारि एहां ए दून्यों वरग विवर कहतां भुंहिरा निखात थोड तहां जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी.

[सं. विवर्णं] ४ जातिच्युत या जाति से बहिष्कृत व्यक्ति।
५ मन्तव्य, स्पष्टीकरण।
६ साहित्य में एक भाव जिसमें नायक या नायिका के मुख का रंग भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण बदल जाता है।

वि. [सं. विवर्णः] १ नीच, कमीना, निम्न जाति या कुजाति का।

२ बुरे या बेमेल रंग का, बदरंग ।

उ०—विवरण बरण स्याबवरण नबकरण ऐहै विन्है, मही न घरन बरन मरन उतमरन कै मिलै । गर्नो रंगीन ग्यान की गद बिग्यान की गर्मी, छुनो परी करी मदा घनी जगमगी सभी ।

—ऊ. का.

३ मूर्ख, नासमझ । (अ. मा.)

४ कांतिहीन, शोभा व चमक रहित ।

५ अनेक रंगों का, रंग-बिरंगा ।

६ देखो 'विवर' (रू. भे.)

रू. भे.—विवरण, बिवरण, विउरण, विव्वरण ।

विवरत—स. पु. [सं. विवर्त] १ चक्कर, फेरा, घुमाव ।

२ वापिस लौटने की क्रिया, प्रत्यावर्तन ।

३ भ्रम, भ्रान्ति ।

४ नृत्य, नाच ।

५ परिवर्तन ।

६ समुदाय, समूह ।

विवरतकलप, विवरतकल्प—स. पु. [सं. विवर्तकल्प] एक कल्प विशेष जिसमें लोक क्रमश उन्नति की ओर से अवनति की ओर अग्रसित होते है । (जैन)

विवरतवाद—स. पु. [सं. विवर्त+वाद] वेदान्तियों के अनुसार वह सिद्धांत विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म ही सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति स्थान है व संसार माया व मिथ्या है ।

विवरतस्थायीकलप, विवरतस्थायीकल्प—स. पु. [सं विवर्तस्थायीकल्प] वह समय जब लोक अवनति को प्राप्त कर शून्य दशा में भ्रमण करता है, कल्पान्त, प्रलय ।

विवरधन—स. पु. [सं. विवर्धन] १ मणिवर एवं देवजनी का एक पुत्र, यक्ष ।

२ युधिष्ठर की सभा का एक राजा ।

विवराणौ, विवराबौ—क्रि. स.—उत्खनित करवाना ।

विवराणहार, हारौ (हारी), विवराणियौ—वि० ।

विवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विवराईजणौ, विवराईजबौ—कर्म वा० ।

विवरावणौ, विवरावबौ—रू० भे० ।

विवरायोड़ौ—भू. का. कृ.—उत्खनित करवाया हुआ ।

(स्त्री. विवरायोड़ी)

विवरावणौ, विवरावबौ—देखो 'विवराणौ, विवराबौ' (रू. भे.)

उ०—सखियां राणी सूं मकळ, **विवरावै** सह वाणि । साल्हकुंवर सपनै मिळे, पदमण मन कुमलाणि ।

—ढो. मा.

विवरावणहार, हारौ (हारी), विवरावणियौ—वि० ।

विवराविग्रोड़ौ, विवरावियोड़ौ, विवराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विवरावीजणौ, विवरावीजबौ—कर्म वा० ।

विवरावियोड़ौ—देखो 'विवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विवरावियोड़ी)

विवरि, विवरौ—स. पु.—सन्देश व सूचना लाने व ले जाने वाला, सन्देशवाहक, दूत ।

उ०—'मेर' अरज माने सुख पायौ, 'अमर' पास निज मंत्री आयौ । मेर विलंद तणौ विध मारी, 'अमरै' सूं तिण **विवरि** उचारी ।

—रा. रू.

वि.—वर्णन करने वाला ।

विवरौ—स. पु.—१ भेद, रहस्य ।

उ०—१ नव दिन नासी ध्यान को, **विवरौ** देह बताय । जन हरीया ररकार सूं, सहजा ताळी लाय ।

—अनुभववांणी

उ०—२ कहन सुनन की बात का, हरिया **विवरा** नाय । कोई महरम हुय दाखवै, को कहै वात बनाय ।

—अनुभववांणी

उ०—३ पण परभात रै पोहर राज दरबार करो छो, ताहरां रावळो मुंह उतरियो लागै सु कासूं जाणीजै ? ताहरा लाखेजी कह्यौ हड़ा मारोज ! तोनू कहीस, पण एकात कहीस इण वात रौ **विवरौ** छै ।

—नैणसी

२ कारण ।

३ विवरण, ब्यौरा, वृतांत, हाल ।

उ०—१ उर प्रगटै सुख ऊपरै, सुणि **विवरौ** 'अभैसाह' । ज्यौं जिण कांम तपोवनां, राम कियौ ओछाह ।

—रा. रू.

उ०—२ नृपत समेळ पधारिया, **विवरौ** थयौ विख्यात । आवी अरज उकील री, आ मत मानो बात ।

—रा. रू.

उ०—३ तिसै चौकी पोहरै उमराव था, त्यांने कह्यौ, चौकी किण किण री छै । जिकै उमराव था तिण रा नांम लै लै नै कह्यौ । तरै राजा कह्यौ, देखा ऊगुण दिसि नै कोई गावै छै, कोई रोवै छै । तिणरौ **विवरौ** ल्यावौ । —जगदेव पवार री वात

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ अंतर, फर्क ।

उ०—१ सूर लड़ै जब कध सिर, कमंध लड़ै बिण सीस । हरिया सूर कमध बिच, **विवरौ** बिसवा बीस ।

—अनुभववांणी

उ०—२ घड़ो तूंबड़ो तांबणो, घड़िया घाट अनेक । कुल करमा **विवरौ** कियौ, हरीया माटी टेक ।

—अनुभववांणी

उ०—३ जस न हुवै धन जोड़ियां, धन दीधां जस होय । बीसलदे बीकम तणौ, जग में **विवरौ** जोय ।

—बां. दा.

उ०—४ जाति पांति बिवरौ करै, भांणै भांणै भिन । हरिया इन परसाद मैं, पाप न कोइ पिन । —अनुभववांणी
उ०—५ दमड़ी चमड़ी बीच में, हरिया बिवरौ होय । दमड़ी मुं दावा किसा, चमड़ी मा करि जोय । अनुभववांणी

६ व्याख्या, टीका ।

७ संक्षिप्त जानकारी, परिचय ।

उ०—कोडीधज साहरी कवर, गांहरी नाव पनीज । आईछ उदमाद सुं, तरै खेलवा तीज । किण घर सो आया कहो, जास्यौ सिव जोवार । म्हांरौ बिवरौ म्है दियो, कुण छौ राज कवार । —पना

७ बयांन ।

रू. भे.—बिवरौ, बीवरौ, बीवरौ ।

विवस–वि. [सं विवश] १ जिसका कोई बस नहीं चलता हो, बेबस, लाचार ।

उ०—लुटेही लेत विवेक का डेरा, बुद्धिबळ यदपि करूं बहुतेरा । हाय रांम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूं विवस प्रभु धावउ सवेरा । —मीरां

२ जो अपने या किसी के काबू में न हो, बेकाबू ।

३ जिसे होश न हो, बेहोश ।

४ मरा हुआ, मृत ।

५ कारण ।

उ०—आदर कियौ भिळै असुरेसुर, दियौ नांम न्रप तेग बहादुर । भावौ विवस जोधपुर आयौ, जगर्थ खां महराव चलायौ । —रा. रू.

रू. भे'—बिवस, बेबस, विवसि ।

विवसता–स स्त्री. [सं. विवशता] विवश होने की अवस्था या भाव ।

विवसवत–सं. पु. [स. विवस्वन्] १ एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

२ चौदह सौ किरणों वाला एक सूर्य जो ज्येष्ठ माह में प्रकाशित होता है ।

३ मनु एवं यम का पिता, प्रथम यज्ञकर्त्ता ।

४ चाक्षुष मन्वन्तर के महर्षियों में से एक ।

५ गरुड़ के द्वारा मारा गया एक असुर ।

६ उदित होने वाले सूर्य का प्रतिनिधित्वकर्त्ता एक देवता ।

७ देखो 'विवसवांन' (रू. भे.)

रू. भे.—भिवस्वत ।

विवसवांन, विवसांण, विवसांन–स. पु. [स. विवस्वत्] १ सूरज, सूर्य । (अ. मा., क. कु. बो., नां. मा., ह. नां. मा.)

वि. वि.—यह बारह आदित्यों में से एक है, जो कश्यप प्रजापति व दक्षकन्या अदिती के बारह पुत्रों मे से एक है । बारह पुत्रों के नाम निम्न हैं–विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, मित्र, वरुण, शक्र व वामन या उरुक्रम ।

२ अरुण ।

३ अर्क, मदार ।

४ पद्रहवा प्रजापति ।

५ एक सनातन विश्वदेव का नाम ।

रू. भे.—विवसवत, विवस्वान ।

विवसाइ, विवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू. भे.)

उ०—काछू नाछू नइ विवसाई, आवइ वरण अढार । पाए लागी-नइ कांमा सारइ, आयस करइ जुहार । —कां. दे. प्र.

विवसाइयौ, विवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—गच्छा छीपा नइ तेरमा, विवसाईया वसइ । नगरमां आपा-पणि काजि सहू मिलइ, चहुटइ हईइ हईउं दलइ । —कां. दे. प्र.

विवसाय—देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

उ०—१ च्यारि वरण उत्तम जांणिया, विवहारिया वसइ वांणिया । कुहरइ बीकइ चालइ न्याय, देसाउरि करइ विवसाय । —कां. दे. प्र.

उ०—२ पुरसोतम चितवै स्रस्टि, व्यापार रचीजै । इम चितवतां आप, सयन निद्रावसि सूजै । किता जुग विवसाय, परम निद्रा भर पोढ्यौ । जोगनिद्रा जोगेस, आठ क्रम पवनह उठ्यौ । — रा. वसावळी

विवसायौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—हाटां तणउ पार नवि लहइ, घणा लोक विवसाया वहइ । खांडां तरकस तीर कमांण, जरहजीण पुग्ग दीवांण । —कां. दे. प्र.

विवसि—देखो 'विवस' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिण वेल तर आछादि गिर तन, अवनि पंथ अंगम ए । मन जांणि तापसि विवसि थाय्या, भ्रमन फिर पडि भ्रंम ए । —रा. रू.

उ०—२ विवसि हुओ मुनि वेस्या वसि । ––रांमरासौ

विवस्था—देखो 'व्यवस्था' (रू. भे.) (अमरत)

उ०—१ राड नट तेडाविया, कही विवस्था वत । बाडव को वेस्या जपड, टालि पहु तै रत्त । —मा. कां. प्र.

उ०—२ विवस्था विखाद वादा वादकौ विवाद वाढ्यौ, मेटन फिसाद याद कीनौं जस जापी को । प्रबळ प्रधांनपणौ दैन जसवंत प्रभू, जैपुर तै लीनौ टेर 'पातल' प्रतापी को । —ऊ. का.

बिवस्वत—देखो 'विवस्वत' (रू. भे.)

बिवस्वान—देखो 'विवस्वान' (रू. भे.)

बिवहु—स. पु.—१ देवराज इन्द्र । (ना हिं को.)

२ अत्यन्त वेगवान् वायु, तूफान ।

३ देखो 'विबुध' (रू. भे.)

४ देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—दीसइ बिवहु चगोय, जालिज्जइ मयण दुज्जण गहावो । अप्पाण म कलिज्जइ, हंअज्जइ नेग पुहवीए । —ढो. मा.

उ०—२ केता भंडा नियाजम कीजै, दान प्रसन मन पाता दीजै । अतरै दूत खबर ले आया, समाचार सह बिवहु सुणाया ।

—रा. रू.

उ०—३ सोमण्डळ रवाब सार सद्वीणा अलंकार, तन मंझि घोर तार ग्रामा त्रिहूणे । ताळ कंसाळ झालरी अघोटी कच्छिवी एक, आगळी बाजै अनेक, बिवहु वणे । —गु. रू. बं.

उ० ४ धनि अधीर जवाधि, बिवहु अनेक परिम्मल, चपक दल केतकी कुसम मवती सुगळ । नोसाण सहु सुणियै नहीं, भेर नाद मरदग घणा, आघाण महहलै अग रहण, उम अलिग्रर गुंजार-वण । —गु. रू. बं.

उ०—५ बिवहु बरसा कप्पड़ा, बिवहु वरसो पाग । फजर हुवदी फूलिया, जाण मलूकां बाग । —गु. रू. बं

बिवहुधरणो, बिवहुधरबो—देखो 'बिवहुधरणो, बिवहुधरबौ' (रू. भे.)

बिवहुधरणहार, हारो (हारी), बिवहुधरणियो—वि० ।

बिवहुधरियोड़ो, बिवहुधरियोड़ो, बिवहुधरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिवहुधरीजणो, बिवहुधरीजबो—भाव वा० ।

बिवहुधरियोड़ो—देखो 'बिवहुधरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिवहुधरियोड़ी)

बिवहुपरि, बिवहुपरी, बिवहुप्परि—क्रि वि—विविध प्रकार से ।

उ०—१ ता ? उन्हुउं सोमलु जयह जसु, कामुय वण्णिय बिवहुप्परि । निज्जिणिउ विजयाणद ति (लि) हिं, अभयतिलकि चउ-पट्टि धारि । —ऐ. जैं. का. स.

उ०—२ दोरइ बद्धइ सूयडउ, छूटइ महतउ होइ । इण परि बिलसइ बिवहुपरि, सुद्धि न जाणइ कोइ । —हीराणद सूरि

बिवहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—१ हू रावळो चाकर, सू चूक पड़ि, तकसीर माफ करसी । यू करता घड़ी अेक हुई । रुदन करण लागो । देही परसोज गई । बिवहल होय गयो, ज्यो प्राण छूटै । ताहरा लक्ष्मीजी स्रीभगवान सूं अरज करी—जै साहूकार बहोत दीन छै बिवहल हुयो सै इण रा प्राण छूटै छै । इण री पइसो लीजै ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ इतरै मे कुंवर रो मस्तक देही ऊपर तिर आई । तरै भरब लोग देखण लागा । देखै तो देही निरजीव देखी । तद हाहा-कार सबद हुवो । साथ सारो ही रोवण कूकण लागो । राजा नै जाय खबर हुई सो सुणनै मुरछागति हो गई, बिवहल होय गयो ।

—पलक दरियाव री बात

बिवहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ धरम, विग्यान, इतियास, पुराण, राजनीति, आचार, बिवहार, कळा, साहित, वेसभूसा, परब-त्यूंहार, कारीगरी नै खेतीवाड़ी अे सैंग परंपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ हुन्नर करो हजार, स्यांणप चतराई सहित । हेत कपट बिवहार, रहै न छांनो, राजिया । —किरपाराम

उ०—३ वरतीजै बिवहार, कदे मिज रुढि न कीजै । सदाचार धरममीह, लीह कहो केम लंघीजै । —घ. व. ग्र.

उ०—४ विणजै व्यापार वलि बिवहार, लक्ष्मी आप वहै लार । परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोलै बहु जस बाजार ।

—घ. व. ग्र.

उ०—५ अबै रिणमलजी मोकळ रो बिवहार बाप चाचामेरा नै प्रधानगी सूंप पाछा मडोवर आया । अठै मोकळ रै आगै चाचोमेरो चलावै छै । —राव रिणमल री बात

उ०—६ कत घणा है सातरा जाणै जी बिवहार । मन समझी मोटा घणा, करै न जण सत्कार । —करणीदान बारहठ

बिवहारिउ बिवहारियो, बिवहारियो—देखो 'व्यवहारियो' (रू. भे.)

उ०—राजग्रहि नउ बिवहारिउ रे, गोभद्र तणउ रे मल्हार । भद्रा माता कुंअर रे, सालिभद्र गुण भंडार । —स. कु.

बिवहारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

उ० -त्रिणि दिहाडा वरला वरसीउ, बिवहारी चालिउ परदेसि । नारी एकली वली रे तिहां थई, छई ते योवन वेसि ।

—नळदवदती रास

बिवहारीउ, बिवहारीओ, बिवहारीयो—देखो 'व्यवहारियो' (रू. भे.)

उ०—१ नाक थई बिवहारीउ, वाहणि घोडा साथ । पूरण पुहुवा लगि भरिउ, वेढि वांकडा हाथि । —मा. का. प्र.

उ०—२ सरकिरि सघ्या समइ, रथि बइसीनइ राय । वेल घरी बिवहारिया, वेग्यानइ घरि जाय । —मां. कां. प्र.

उ०—३ प्रधान लोक बिवहारिया, राजलोक सहुअे सुखी ।

ज्यार बरण गढ महि बसइ, जतौ मुनि नहीं कोय दूजौ ।
—प. च चौ.

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

विवहालु, विवहालौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे)

उ०—बहुया सांभलि बांभण भणइ, ए विवहार नयरि अम्ह तणी। विद्यासिद्धी राखसु हूउ, बकनामि छइ जम न इ दूउ ।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो विवाह' (अल्पा., रू. भे.)

विवहु—देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—पण सग वेय मयंक वरसि माहह छण वासरि, भाग्णमल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि। नदि ठविय विस्थारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिद्ध किद्धु मगलु विवहु प्परी ।
—अभय यतिक यती

विवांण—देखो 'विमांण' (रू. भे) (अ. मा , नां. मा)

उ०—१ सोंठ सुहावै जायजे, चढजे गुध विवांण । रजी न लागै लूगड़ां, पंथ तूठै असांण । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सातमै पाताळ वासंग नाग रै माथै टपूकड़ा खाईनै रहिया छै। त्यांरी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोड़ि देवता सरग सूं हलूस नै उतरै देवासुरां रा विवांण हिलोरव खाइ नै रहिया छै ।
—रा. सा सं.

उ०—३ झळहळ खेड़ि विवांणां झोका, सुर हुय इम जाऊं सुर-लोकां। इम बोलै मेडनिया अडुर, धुर जोधार पुछै पाटोधर ।
—सू. प्र.

उ०—४ दुरत गत डांण असरांण सिर दियतौ, लियंतौ फुरलबौ थाट लाहौ । सुतन 'गजबंध' सुर कांमणी संपेखै, विवांणां ठांभियो खाग-वाहौ । —अग्यात

उ०—५ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहंग घरि बीच मातै नहीं, सुरै विवांण संबाहिया । —पी. ग्रं.

उ०—६ इळ वाज बजावै ऊपडता, रिणतूर नसां भिळनै रुडता । डांणां किरि पाउ पलव डहै, वाजिद्रक वेग विवांण वहै ।
—गु रू. ब.

विवांणणौ, विवांणबौ—क्रि. स.—प्रसव करना ।

उ०—इमउ हिंदू राजा उपकंठि कउण जिकइ मनि पातिसाह की रीस वसी, कउण का माथा तइ खिसी ? कउण हइ दई रूठउ ? कउण की माई विवांणी, जु सांमउ रहइ अणी पांणी ?
—अ. वचनिका

विवांणियोड़ो—भू. का. कृ.—प्रसव किया हुआ ।

विवांणि, विवांणी—सं. स्त्री.—१ अप्सरा ।

उ०—विवांणी झंप उरघ्घी कुाळ, विहंगम रंभ मिळी वेताळ ।
विली खुरसांण विभाड़ची ढाल, मनाव्यौ मोटौ राउळ 'माल' ।
—राऊ जैतसी रौ रासौ

२ देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—चीत्रांग दमूडी छोहि चक्कि, फरहरइ फउरि फिरियउ फरक्कि । वाघुलउ वाघ वांणी वखांणि, वाजिन्नि चडिय चडिसइ विवांणी । —रा. ज. सी.

विवाई—देखो 'बिवाई (रू. भे.)

विवाद—स पु. [सं.] १ किसी बात या विषय हेतु किया जाने वाला तर्क, वाद, झगड़ा ।

उ०—१ विवस्था विखाद वाद वाद को विवाव बादचौ, मेटन फिसाद याद कीनौ जस जापो को । प्रबळ प्रधान पणौ देण जसवन प्रभू, जैंपुर तैं लोनौं टेर 'पातल' प्रतापो को । —ऊ. का.

उ०—२ बनी दोय साधां रै आपस में झड़बौ लागौ अनै ऊ कहै तूं लोलपी । ऊ कहै तूं लोलपी । इम परस्पर विवाद करता करता स्वामी जी कनै आया तौ पिण विवाद छोडै नहीं ।
—भि. द्र.

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ ।

२ शास्त्रार्थ ।

उ०—१ द्वादश गुरु, द्वादस सिस्य, जुमलै चौबीस कापालिक हुवा है । उगर भैरव कपालिक रै नै संकराचारय रै विवाद हुवो है ।
—बां. दा. ख्यात

उ०—२ साधन काव्य कळा सुर साधत, वाद-विवाद करै मत बाधत । देह अनेह किता तप दाधत, विद्ध हरि गुण वाधत वाधत ।
—जैंपुर नगर रो बरणण

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ ।

३ सोच-विचार ।

उ०—थारा दिन घणै पड़्या है, म्है घणी दुनियां दीठी, फगत थांरो उणियारो निरखण साल जीवण री साध पूरता हा । पण इण साध री आज माठ आयगी दीसै । आ विवाद री बेला नीं है । —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ ।

४ जिद्, आग्रह ।

उ०—औ सिरदार डाकी नहीं है परंत अरियां नै खावण वाळो है अौर डाकी होवै सो तो केवळ फकत वार आयां अरथात सनेसर नें ही ज मारै नै औ सिरदार तो सदैव ही मारै अौर डाकी आपरां री रिछ्या करै नै दूजां नै मारै पण औ डाकी सिरदार वदावदी विवाद कर निज आपरा रजपूत भाई बेटा तिकां नें जुद्ध में माराय

मांखं हण वामतं वाकी वाकी नही वाकी मो सिरदार है सारा नै युद्ध में मारावण वाळो। — वी. स टी.

क्रि. प्र.—करणो।

५ युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।

उ०—१ ओपमा 'कमां' हुरनाथ प्राद, वरवीर लड़ां मेटण विवाद। मछरीक फतै' गज वह मरोड़, 'अजवेस' 'लाल' पानल अनोड। — रा. रू.

उ०—२ 'दोलो' गोयद हरां दुबाहो, सुत जैसिंघ विवाद मगाहो। 'सूरो' 'खांन' तणो रवज सूरां,साहब न वदै जिणो अ.ूरां —रा रू

क्रि. प्र.—करणो, चालणो, होणो।

६ न्यायालय में चलने वाला वाद, मुकदमा।

७ प्रतिस्पर्धा, होड़।

उ०—एक करइ रथ वाहिय, वाहिय माहि विवेकि। कुसुम वियावइ, चूंटइ, खूंटइ पल्लवि एकि। —जयशेखरसूरि

क्रि. प्र.—करणो, चालणो, होणो।

रू. भे.—बिवाद, बिवादु, विवादो।

विवादक—देखो 'विवादी'

विवादी—वि. [स. विवादिन्] १ किसी बात या विषय पर तर्क, वाद या झगड़ा करने वाला।

२ शास्त्रार्थ करने वाला।

३ सोच-विचार करने वाला।

४ जिद्द करने वाला, जिद्दी।

५ युद्ध करने वाला, झगड़ा करने वाला।

उ०—सेवा कामख्यानी कूम दोनूं एम रूठा, दोनूं ही बिवादी यो बिवादी धारि ऊठा। —शि व

६ न्यायालय में वाद चलाने वाला।

७ राग के स्वरूप को बिगाड़ने वाला वर्ज्य या वर्जित नामक स्वर। (संगीत)

८ संगीत का वह पक्ष जिसका किसी राग मे बहुत कम व्यवहार होता है।

रू. भे.—विवादो।

विवादु—१ देखो 'विवाद' (रू. भे.)

२ देखो 'विवादी' (रू. भे.)

विवादो—१ देखो 'विवाद' (रू भे.)

उ०—सेवा कामख्यानी कूम दोनूं एम रूठा, दोनूं ही विवादो यो विवादो धारि ऊठा। —शि व.

रू. भे.—बिवादु।

विवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—लाडणू वसै महाजन्न लोक चौपड़ां पड़ै बाजार चोक। है दरब जहं लक्खूं हजार, वांणियां तणां चालै विवार —पे. रू.

विवाह—सं. पु. [स. विवाह] १ हिन्दू धर्म के सोलह संस्कारों में से वह संस्कार जिसमें वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते है।

वि. वि.—ये विवाह निम्न आठ प्रकार के माने गये हैं—

(१) ब्राह्म विवाह—वह विवाह, जिसमें शीलवान् और वेदाभ्यासी वर को बुलाकर कपड़े व अलंकारों से वर-वधू का पूजन कर कन्या का विवाह किया जाता है।

(२) दैव विवाह:—वह विवाह जिसमे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ मे ऋत्विज (यज्ञ का कार्य कराने वाले) को विधि-पूर्वक अलंकारादि से सत्कार कर कन्या का दान किया जाता है।

३ आर्ष विवाह:—वह विवाह जिसमें कन्या का पिता वर से गाय व सांड का एक या दो जोड़े अपनी लड़की को देने हेतु धर्म-भाव से (लड़की के मूल्य के रूप मे नही) लेकर कन्या का दान करता था।

४ प्राजापत्य विवाह: — वह विवाह जिसमे कन्या का पिता पहले से ही संकल्प कर लेता है कि अमुक वर के साथ अपनी पुत्री का विवाह करूंगा तथा कन्यादान करते समय वर-वधू का पूजन कर अपने मुंह से कहता है कि तुम दोनो साथ रहकर धर्माचरण करो।

५ आसुर विवाह:— वह विवाह जिसमे वर की ओर से कन्या व कन्या के पिता को धन देकर स्वच्छन्दतापूर्वक कन्या को ग्रहण किया जाता है।

६ गन्धर्व विवाह:—वह विवाह जिसमें वर व कन्या कामासक्त हो कर स्वेच्छा से (माता पिता के बिना दान किये) एक दूसरे के साथ संयोग कर लेते है।

७ राक्षस विवाह:— बल पूर्वक कन्या का हरण करके किये गये विवाह को राक्षस विवाह कहते हैं।

८ पैशाच या पैशाच्य विवाह—वह विवाह जिसमें एकान्त स्थान व समय पाकर बेखबर, नींद में या नशे में बेहोश कन्या के साथ संभोग कर लिया जाता है। इसे अधम विवाह मानते है।

राजस्थान में विशेषत: राजपूतों व चारणों में एक विशेष प्रकार का विवाह किया जाता है। जिसमें वर को कन्या पक्ष वाले धोखे से पकड़ कर ले जाते है, और घर लेजाकर विवाह कर देते है।

२ उक्त संस्कार के अवसर पर मनाया जाने वाला उत्सव।

३ वह उत्सव जिसमें पुरुष व स्त्री वैवाहिक बन्धन में बन्धते हैं।

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या— किण ही सहर में च्यार बजाज री हाटां हुती । तिण में तीन तो विवाह गया । पाछै कपड़ादिक नां ग्राहक घणां आया । हिवै एक बजाज रहियौ तै राजी हुवै कै बेराजी । —भि. द्र.

उ०—२ हेमजी स्वांमी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वांमीजी नें कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रौ व्यसन है । जद स्वांमीजी बोल्या—काचरियां रौ अटक्यौ किसौ विवाह रहे है । —सू. प्र.

४ उक्त उत्सव के अवसर पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य ।

५ बीसवें कल्प में उत्पन्न ब्रह्मा का रक्त नामक पुत्र ।

रू० भे०—बिबाह, बिमां, बिमाह, बिया, बियाव, बियाह, बिवाह, बींया, बीवाह, बीमा, बीमाह, बीयाव, ब्यांव, ब्याव ब्याह, भियाव, भ्याव, विमांह, विमाह, विमाहौ, वियाव, विहां, विहा, विहाव, वीमां, वीमांह, वीमाह, वीवा, वीवाह, वीहा वीहाव, व्यांह, व्याव ।

अल्पा.,—विवहालु, विवहालौ, विवाहलु, विवाहलौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, व्यावड़ौ ।

विवाहणौ, विवाहबौ–क्रि. स. [सं. विवाहनम्] १ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करना ।

२ उक्त अवसर पर उत्सव मनाना ।

३ पुरुष व स्त्री का वैवाहिक बंधन में बंधना ।

उ०—१ तब घणौ आंणदित होई ससिपाल विवाहण चाल्यौ । ज्यौ ग्रंथि विखै गायौ छै । जितनौ एक परिगह कह्यौ छै । तिहिं भांति होय चाल्यौ । —वेलि टी.

उ०—२ जिम थांरौ खूनी जिको, किर बळभद्र कबंध । अठै विवाहण आणियौ, सरणं में बळसंध । —व. भा.

४ उक्त अवसर पर धार्मिक कृत्य करना ।

विवाहणहार, हारौ (हारी), विवाहणियौ—वि० ।

विवाहिओड़ौ, विवाहियोड़ौ, विवाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विवाहीजणौ, विवाहीजबौ—कर्म वा० ।

बिआणौ, बिआबौ, बिवाहणौ, बिवाहबौ, बियाणौ, बियाबौ, बिहांमणौ, बिहांमबौ, बिहाणौ, बिहाबौ, बिहावणौ, बिहावबौ ब्याणौ, ब्याबौ, ब्यावणौ, ब्यावबौ बिमाहणौ, बिमाहबौ, विहाणौ, विहाबौ, विहावणौ, विहावबौ, वीवाहणौ, वीवाहबौ वीहाणौ, वीहाबौ, वीहावणौ, वीहावबौ—रू० भे० ।

विवाहलु, विवाहलौ–सं. पु [विवाह+लाप] १ किसी व्यक्ति विशेष के विवाह से सम्बन्धित काव्य ।

वि. वि.—कई उक्त काव्यों में जीवन से सम्बन्धित लीलाएं भी दी हुई होती हैं ।

उ०—सासनदेव तै मत धरिए, चउवीस जिन पय अनुसरीए । गोयस्वामी पसायलुए, धर्म गा (इ) सि लीगुरुणी विवा लु ए । —ऐ. जै. का. स.

रू. भे.—बियावलौ, ब्यावलौ, विवहालु, विवहालौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, वीवाहलै, वीवाहिलु, वीवाहिलौ, व्यावलौ ।

२ देखो 'विवाह' (अल्पा.,रू. भे.)

विवाहित–वि. [सं. विवाहिता] वह जिसकी शादी हो गई हो ।

रू. भे.—व्याहत ।

विवाहियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार किया हुआ । २ उक्त अवसर पर उत्सव मनाया हुआ । ३ स्त्री व पुरुष का वैवाहिक बन्धन में बन्धा हुआ । ४ उक्त अवसर पर धार्मिक कृत्य किया हुआ ।

(स्त्री. विवाहियोड़ी)

विवाहिलु. विवाहिलौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (अल्पा., रू भे.)

विविंध्य–सं पु. [सं.] श्री कृष्ण के पुत्र चारुदेष्ण द्वारा मारा गया एक दानव ।

विविंस–सं. पु. [सं. विविंश] १ विदर्भ राजकुमारी वदिनी व वीर राजा का पुत्र तथा सुप्र व प्रथमा का पौत्र एक सूर्यवंशी राजा, जो खनीनेत्र आदि पंद्रह लड़कों का पिता था ।

विविंसति–सं. पु. [सं. विविंशति] धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भारतीय युद्ध में महारथी था और भीम के द्वारा मारा गया था ।

२ चाक्षुष राजा का पुत्र एक राजा जो रंभ राजा का पिता था ।

विविक्त, विविक्तनांमा–सं पु. [सं. विविक्तनामा] हिरण्यरेतस के सात पुत्रों मे से एक, जो कुशद्वीप का राजा था ।

विविक्षु–सं. पु [सं] अधिसोमकृष्ण का एक पुत्र जो शतानीक का पौत्र था ।

विवित्त–सं. पु. [स] वह स्थान जहां पर स्त्री, पशु और नपुंसक नही हो । (जैन)

विवित्ताहार–स. पु. [स. विवित्त+आहार] विकृति रहित आहार । (जैन)

विवित्स, विवित्सु–सं. पु [सं.] धृतराष्ट्र के शतपुत्रों में से एक, जो भीम के द्वारा मारा गया था ।

विविद, विविध–स. पु. [स विविंद] कंश का अनुचर एक राक्षस ।

वि [सं. विविध] तरह-तरह का, अनेक प्रकार का, भांति-भांति का । (सभा)

उ०—१ आदि अगम अविकार, एक ईश्वर अविणासी । पछै प्रकति तत पच, विविध सुर इळजवासी । —रा. रू.

उ०—२ सुभ बित्र मदिर चोक सुदर, चौगि रचि राय अगणं । तन मदन सोभित करण तरणी, बिबिध मनि उद्दम वर्णं ।
—रा. रू.

उ०—३ आपणा परि कादम फेडइ, बीजा काज मेटई । पार पार न लीइ, माघ बिहार न करीइ । अनेक जीव नीपजे, बिबिध धान्य ऊगी । लोकनी ग्राम पूजे, गाय गंम दूजे । इत्यादि ।
—रा. मा. म.

उ०—४ ग्यान ब्रह्म 'जसराज' गुण, उग्र तप करि गाविया । सार जसवंत आदि सुनिवर, बिबिध ग्रंथ बणाविया । —सू. प्र.

उ०—५ वरणाव करू सुमेर को, सब ही कचन सार । रतन स्रग राजत बिबिध, लख जोजन विस्तार । —गज-उद्धार

रू. भे.—बिबिध, बीबध, बिवध, बिवधि, बिवह, बिवहु, बिविधि, बिविह ।

बिबिधजांण-वि. [स. विविध+ज्ञान] १ कवि, पंडित । (अ. मा)

२ जिसने बहुत बातें सुन ली हो, बहुश्रुत ।

रू. भे.—बिवधाजांण ।

बिबिधता-सं. स्त्री. [सं. विविध+ता प्रत्यय] विविध होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे.—बिविधा ।

बिबिधबिस्रांम-स स्त्री [स. विविध=विबुध+विश्राम] स्वर्ग । (अ मा.)

बिबिधि—देखो 'बिबिध' (रू. भे)

उ०—इद कहि 'वरदान चौ, देतसि नहीं प्रतिहार । ईश्वाद सूं दरसन देज्यै, देखो बिबिधि बिहिवार । —नळाख्यान

बिबिधेस, बिबिधेसर, बिबिधेसुर, बिबिधेस्वर-सं. पु. [सं. विबुध+ईश, विबुध+ईश्वर] १ कवि, पडित, विद्वान ।

उ०—बिरहो वरहत्त ससमूह व्यापो, केको सुकळापग कळापो । रथकुमार एक बिभर आया, बिबिधेसुर स्वत नाम बताया ।
—ना. मा.

२ ईश्वर ।

बिबिनणौ, बिबिनबौ—देखो बिवनणौ, बिवनबौ' (रू. भे.)

बिबिनणहार, हारौ (हारी), बिबिनणियो—वि० ।

बिबिनियोड़ौ, बिबिनियोड़ौ, बिबिन्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिबिनीजणौ, बिबिनीजबौ—भाव वा० ।

बिबिनियोड़ौ—देखो 'बिबनियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री बिबिनियोड़ी)

बिबिनौ—देखो बिवनौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिबिनी)

बिबिन्नणौ, बिबिन्नबौ—देखो 'बिवनणौ, बिवनबौ' (रू. भे.)

उ०—'सूरजम' (ळ) गो सरणि, साहु निळवाज बिबिन्नौ । मन तुरकां हिंदुवां, तांम वैराग उपन्नौ —सु. रू. बं.

बिबिन्नणहार, हारौ (हारी), बिबिन्नणियो—वि० ।

बिबिन्नियोड़ौ, बिबिन्नियोड़ौ, बिबिन्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिबिन्नीजणौ, बिबिन्नीजबौ—भाव वा० ।

बिबिन्नियोड़ौ—देखो 'बिबनियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री बिबिन्नियोड़ी)

बिबिन्नौ—देखो 'बिवनौ' (रू. भे.)

बिबिह—देखो 'बिबिध' (रू. भे.)

उ०—१ बारभट्टुनरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ, जिणेसर सूरि पइसरइ संघु सयलु बिबिह सज्जइ । सूरिमतु सिरि सव्वएवसूरहि जसु दिनउ, बालउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव कीनउ,
—ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ इण परि बिहूं तीरथंकराए, चिरपालीराज बिबिह पराए । जांणी अवसर सार ए, बिहु लीधौ संजम भारए ।
—वृ. स्त.

बिबुध—देखो 'बिबुध' (रू. भे.)(अ. मा., डि. नां. सां., ह. नां. मा.)

बिबुधपुर-स. पु. [सं. विबुधपुर] स्वर्ग ।

बिबुधप्रिय, बिबुधप्रिया-सं. स्त्री. [स. विबुधप्रिय] १ अप्सरा, देवांगना ।

२ देखो 'बिबुधप्रिया' (रू. भे.)

बिबुधवन, बिबुधबन—देखो 'बिबुधवन' (रू. भे.)

बिबुधबंद्य-सं. पु. [स. विबुधवंद्य] देवताओं के वंद्य, अश्विनिकुमार ।

बिबुधालय—देखो 'बिबुधालय' (रू. भे.)

बिबुधेस—देखो 'बिबुधेस' (रू. भे)

बिबुह—देखो 'बिबुध' (रू. भे.)

बिवेक-स पु [स.] १ भले-बुरे या सत-असत का ज्ञान ।

२ भले-बुरे या गुण अवगुण को पहिचानने की शक्ति ।

उ०—जे भगी री भींटी तो न खावो नें भंगी री कीवी खाधी तिण सू उणानें बिवेक रो विकल जाणें । ज्यूं ग्रहस्थ कमाड़ खोलनें देवै ने तो लेवै नहीं अनें अंधारी रात्रि में हाथ सूं कमाड जडे उघाडे तिण री सक आंणें नहीं । —भि. द्र.

३ समझ, ज्ञान, बुद्धि ।

उ०—१ भव सह हरै निजर भर, कर कर गहर बिवेक । सर 'प्रताप' नर तौ समो, अवर आज नह एक ।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ लूटेहि लेत बिवेक का डेरा, बुद्धिवळ यदपि करूं बहु-

तेरा ' हाय रांम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूं बिवस प्रभु धावड सवेरा । —मीरां

उस—३ घर चोई सरवर विपन, विधाचळ दिस एक । च्यार महूरत उत्तरे, धारस मंत्र विवेक । —रा. रू.

उ०—४ माठूं ई मिसल कै कमंध महाबाह, जाको सुण मांनी वांनी विखं की सलाह । चाळें में मग्रकारी मनेक सा एक, रांम दळां मेळ जांणं नीत को विवेक । —रा. रू.

४ सत्यज्ञान ।

क्रि. प्र.—करणौ, धरणौ, धारणौ, राखणौ, होणौ ।

रू. भे.—बवेक, बमेक, ववेक, बिवेक, बिमेक, बिवेक, वमेक विमेक, विमेख ।

अल्पा.—विवेकौ ।

विवेकजोग, विवेकजोग्ग—सं. पु.—स्त्री पशु व नपुंसक अर्थात मन में विकृति पैदा करने वाले किसी पदार्थ का संसर्ग न होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे.—विवेगजोग, विवेगजोग्ग ।

विवेकता—सं. स्त्री. [सं. विवेक+ता प्र०] विवेक की अवस्था या भाव ।

विवेकनारायण—वि.—विवेकशील ।

उ०—तीणि नगरि, सामत मडलेस्वर मंत्रि महामंत्रि स्रेस्ठि सारथवांहपुत्र दडाधिपति ग्रहकप्रमुख लोक सेव्यमान मनीति निरनासन गवयारंभ परनारीसहोदर बुद्धिमयरहर विवेकनारायण दानं कव्यसन''' । —व. स.

उ०—२ '''एर अनेक रूप नरेंद्र, सच्चवाचां हरिस्चंद्र, निरभय भीम, मापन्न जीमूतवांहन, वाग्देवी विलास कास्मीर, विवेकनारायण, मोदार्यि बलि, सेवकजन कल्पतरु चतुरंग वाहिनी सेनासमुद्र, इसिउ राजा । —व. स.

विवेकवांन—वि. [सं. विवेक+वांन्] जिसमें विवेक हो, मच्छे-बुरे को पहिचानने वाला, बुद्धिमान ।

विवेकी—वि. [सं. विवेकिन्] १ विवेकधारी, भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला ।

उ०—कहू सुखरांम सुणो भाई साधो, भेख भेख सब एक । त्याग बैराग गुरु गम गाढा, सोई जाए विसेख । भेद विवेकी रे'''
.... —स्रीसुखरांमजी महाराज

२ बुद्धिमान, ज्ञानी ।

३ न्यायप्रिय, न्यायशील ।

रू. भे.—विवेकी ।

विवेकौ—देखो 'विवेक' (मल्पा., रू. भे.)

उ०—लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेको जो । मिच्छामि दुक्कडं दीजियइ, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येको जो ।
—स. कु.

विवेग—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

विवेगजोग, विवेगजोग्ग—देखो 'विवेकजोग' (रू. भे.)

विवेचक—वि.— विवेचना करने वाला, विवेचनकर्त्ता ।

विवेचन—देखो 'विवेचना' (रू. भे.)

विवेचना—सं. स्त्री. [सं.] १ भली-बुरी, सत्-असत् मादि का ज्ञान, विवेक ।

२ तर्क-वितर्क, वाद-विवाद ।

३ निर्णय, फैसला ।

४ मीमांसा ।

५ मनुसन्धान, मन्वेषण ।

६ परीक्षण, निरीक्षण ।

रू. भे.—विवेचन ।

विवोगण, विवोगणि, विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

उ०—विरहणि विरह विवोगणी, दरसन कारणि पीव । विकळ भई विलबैं कहां, ताला बेली जो । —ह. पु. वा.

विवोढ—सं. पु. [सं. विवोढु] १ पति, खाविंद, भरतार ।
(म. मा., ह. नां. मा.)

२ दुल्हा ।

विव्वड़ा—देखो 'वरवड़ी' (रू. भे.)

विव्वांण, विव्वांणो—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—बाज पख सीचांण, बाज विव्वांण उडाया । पवन मातुर पेरियै, जळद जांणं फिरि धाया । —गु. रू. ब.

विव्वोक—सं. पु. [सं.] स्त्रियों के द्वारा सयोग के समय प्रिय का मनादर हेतु किया गया हाव । (साहित्य)

विव्हार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ लगती लहंगो पहरि सुहागण, बीतो जाइ विव्हार । धन जोवन दिन च्यार का, जात न लागै बार । —मीरां

विसंटुल—वि. [सं. विसटुल] १ चंचल । (उ. र.)

२ विषम, विकट ।

विसंड—सं. पु.—गणों के ईश, गणेश, गजानन । (क. कु. बो.)

विसंदरो—देखो 'विसूदरो' (रू. भे.)

उ०—जळ मनळग वन वन गहन जाय, डाकणी पसु प्रेत न डराय । खेचरी चोर नाहर न खेद, विसंदरा वैरी दंबी विवाद ।
—रांमदांन लाळस

बिसंन—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ कमळी मगत जीतौ कळह, त्रिपुरासुर जिमतांन तन । ह्मिरित वाचि सोसी प्रलखि, बिसभ रूप वणियौ बिसंन ।
—पी. ग्रं.

उ०—२ बम्रांगं जांगे एक बिसंन, कहे मति कूरम मच्छ किसंन । कहै दत देव कपिल कल्यांण, नवे दसरथ तणं तुहिताण ।
पी. ग्र.

उ०—३ वडो सहि चोकी हुनि बिसन, प्रमेसर मूझ समायो पुन । प्रमेसर पार अपार अपार, नारायण नेह निमो निरकार ।
—पी. ग्रं

२ देखो 'व्यसन (रू. भे)

बिसंभ-सं पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ समांणो तूझ मही घनस्यांम, रावव्व आल्हीणो आतमराम । मेवाण पयंपे तेजस मोह, बिसंभ रखे हिव थाय बिछोह ।
—ह. र.

उ०—२ बिसंभ तूझ मां निमो लीला विलास, केहर तूझ वाल्हो घणो कविलास । निगुण नाथ आवेस बलिराम नाग, त्रिगुण किसन रा बीर तूं सरब त्याग ।
| पी. ग्रं.

२ श्रीकृष्ण ।

३ ऋषभावतार ।

उ०—१ पहि फरसराम लखमण कपिलि, रिदे मूझ बळिराम रहि । नारीयण बिसंभ अवतार निजि, क्रिसन बुधि निकलंक कहि ।
—पी. ग्र.

उ० २ कमली मगत जीतो कळह, त्रिपुरासुर जिमतांन तन । ह्मिरित वाचि सोसी प्रलखि, बिसंभ रूप वणियो बिसन ।
—पी. ग्र.

वि.—भयंकर, डरावना ।

उ०—फौडा बिसंभ फाड ए, तुरग कोमंड ताड ए । कटूक फौज कठळा, अणो निबंन साबळा ।
—गु रू. ब.

रू. भे.—बिसभ, बिसंभ ।

बिसंभर—देखो 'विस्वंभर' (रू भे.) (म. मा., ह. नां मा.)

उ०—१ बम्रभ कपिळ हैग्रीव बिसंभर, दत्तात्रेय हंस दामोदर । राव बंकुठ धनंतर रिखभ, गरुड़ारूढ बिसन प्रसणीप्रभ । —ह. र.

उ०—२ भोर म्है जकां श्रीरी बिसंभर, गांज कुण सकै जसराज रा गांव । राव एक थाप ऊथापियां रिडमल्ला, रिडमलां पुढ़दडो रालियां राव ।
—दुरगादास राठोड़ रो गीत

उ०—३ धन रहसं, रहसं धरा, खिस जासे खुरसांण । 'अमर' बिसंभर ऊपरं, राख नहच्चो, रांण ।
—रहीम

उ०—४ श्रीधर श्रीरंग सियावर श्रीपत, करणाकर कारण-करण । व्रज नायक विसवेस बिसंभर, घणनांमी भ्रमणदमण । —र. ज. प्र.

उ०—५ या प्रीमर हरि का होय गहियं, भवर रख्या सो भूधर कहिय । नाव बिसंभर बिसपति राबा, पूरण ब्रह्म परसि पति पाबा ।
—ह. पु. वां.

बिसंभरा – देखो 'विश्वभरा' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां मा)

बिसंवाद-स. पु. [सं.] वाद-विवाद, बहस ।

उ०—प्रीति परस्पर अतिघणी, एक जीव तनु दोइ । पिण निज निज मत नै विखै, बिसवाद नित होइ ।
—स्रीपालरास

बिस-स पु. [सं. विष] १ शरीर में पहुँचने पर प्राण लेने या हानि पहुंचाने वाला पदार्थ, जहर, गरल । (ह. नां मा)

उ० १ इयें भांत रहितां दो एक दिन नायण चले कहो कुंवर नू एक गोली बणायां छां तेसूं थे राजी हुसो । तद कुंवर कह्यो गोली बणाय । तद नायण बिस गोली बणाय हर कुंवर नूं दीवो ।
—चोबोली

उ०—२ रावळ दुरगसिंघ जगतसिंघ रो पाट बैठो । पछै दुरगसिंघ नै कहै छै सौनळा नोसरी थी, तिण में बिस हुवो । तठा पछै रावळ तेजसिंघ जसवतसिंघ रो पाट बैठो ।
— नैणसी

उ०—३ घर रा बेटा रै सिवाय दूजो कुण चावतो । बाप री डील चाख्या पछै दोनूं बेटा रै डील मे बिस फूटग्यो, सेवट मरियां लार छूटी ।
—फुलवाड़ो

उ० – ४ ऊमड घटा अभियांवणी, बीज छटा खिव बाह । बिस जिमडी लागै बुरी, निस पावस बिण नाह ।
—र. हमीर

२ सुख शांति मे बाधा पहुंचाने वाला तत्व या बात ।

उ० –१ पथी एक संदेसडइ, लग ढोलइ पौहच्चाइ । विरह महा बिस तन बिसइ, श्रोखद दियइ न श्राइ ।
—ढो. मा.

उ०— २ चिड़णा अर कूटणा बिचे ई बेटी नै बाप री इण सुभराज अर कुरब कायदा रो घणो दुख व्हियो । मिनख री आ गुलामी तो हवा अर उजास में ई बिस घोळ देवैला ।
—फुलवाड़ी

३ कुटिलता ।

उ०—१ तो ई जीवूंला जितै गुण मांनूंला कै थांरी प्रीत रै कारण म्हारै हिवड़ा रो बिस इमरत मे बदळग्यो । लुगाई रै रूप री अर पुरख रै प्रेम री आ इज तो छेहली मरजादा ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ तद वो बळगी भांम जायनै श्रेक दूजा गांव मे आपरा डेरा-डंडा जमाया । नवां गांव में पेठ जमावण सारू वो मिसरी सूं ई मीठो बोलण लागो तो ई उण रै अंतस री बिस लोगां सूं छांनो नीं रह्यो ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ भ्रा कालाई तो बरसां तांई जूतां मारियां ई ठांणै नी म्रावै, इण वास्ते म्हूं तो मुळगी ई माठ भ्रालली । भ्रबाकूं ई भ्रा सोचनै मून धारी के देखूं भ्राप लोगां री जीभ में कित्तोक बिस भरयौ है । —फुलवाड़ी

४ वैदय, बनिया ।

५ दनायुष नामक भ्रसुर का पुत्र ।

६ एक प्रकार के देवगण ।

७ नकुलि देवी के द्वारा मारा गया एक भ्रसुर ।

८ कमल की नाल ।

९ जल, पानी ।

१० घी, घृत ।

११ सर्प, सांप ।

१२ भ्रमृत ।

१३ सात उपधातुभ्रों में से एक ।

१४ कड़वा या तीक्ष्ण तत्व या बात ।

क्रि. प्र.—उगटणौ, करणौ, खाणौ, घोळणौ, भ्ररणौ, टपकणौ, देणौ, मारणौ, लेणौ, होणौ ।

रू. भे.—बख, बखम, बिख, बिस, बिसिया, बिस्व, वख, वस वसव, विक्ख, विख, विसिया, विसु, वेख ।

१५ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—विस सुख मांहि रम रहे, माया हित चित लाइ । सोइ सत जन ऊबरं, स्वाद छाड गुण गाइ । —दादूबांणी

बिसइ, बिसई—१ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—भलां वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सांमांन्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरो भ्रांमवातीउ, कालो तो कबाडि, कां वेचि तो त्वात्रपाडउं, न वेचइ तो भडंग, बिसइ तो मद्धरम बहिस्कृत, बिसइ हीन तो नपुंसक । —व. स.

२ देखो 'विसयो' (रू. भे.)

उ०—१ थोडुं जमइ तो भूंडउ ऊणाटउ, भलां वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सांमांन्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरो भ्रांमवातीउ, कालो तो कबाडि, का वेचि तो त्वात्रपाडउ, न वेचइ तो भडग बिसइ तो सद्धरम बहिस्कृत, बिसइ हीन तो नपुसक । —व. स.

बिसकंठ—सं. पु. [स. विपकठ] १ शिव, महादेव ।

२ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

मि०—"नीलकठ" ।

बिसकंभक—देखो 'विस्कंभ' (रू. भे.)

बिसक—देखो 'विसिख' (रू. भे.)

उ०—पेख जण पोखता भ्रगन भ्राळां पडं, छछाळा सीत मंद सुगध छूवै, कंपै नवजोबना इसक चाळा करै, फूलबाळा बिसक पार फूटं । —लच्छीराम बारहठ

बिसकन्या—सं. स्त्री. [सं. विषकन्या] १ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ संभोग करने से संभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर में एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

२ नाग कन्या ।

उ०—१ दळपति कोई न दूजौ वरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि बिसकन्या कहियो, राव तणां घरि लहीस वर । —दूदौ बिसराळ

उ०—२ मैं परणंती परखियो, सूरति पाक सनाह । घडि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह । नाह नीठि पड़िसी खेत मांझी निवड़, गयंद पड़िस गहर करड़ घड़ भड़ गहड़ । बिढंतो 'जसो' बिसकन्या बाखांणियो, परणती कथ घो मुरड़ पहचांणियो । —हा. झा.

रू. भे.—बिसकन्या, विखकन्या ।

बिसकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

उ०—राजमहलूं कै भ्रडाव भ्ररस सेती भ्रड़े, मनू धवळागिर बिसकरमा जड़ाव सूं जड़े । जिस नगरी का राव दिल का दरयाव जिसकै भडार परवरदिगार । —र. रू.

बिसकांमणि, बिसकांमणी—सं. स्त्री. [सं. विषकामिनी] नाग कन्या ।

उ०—१ सिणगारी सन्नाह सूं, बिसकांमणि वरियांम । वरि भ्राई हाला वरण, करण महा जुध कांम । कांम संग्राम चो हांम जुध कांमणी, घणा नर जोवती भोमि भ्राई घणी । महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तूं, सबळ घड़ कड़तळी घणा सन्नाह सूं । —हा. झा.

उ०—तूटै हार भ्रयार तुरंगम, पहुटति मांग भ्रनंग पड़ो । कमधज 'रतनै' स्यूं बिसकांमणि, चाचरि चवरंग पलंगि चढि । —दूदौ बिसराळ

२ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ संभोग करने से संभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर मे एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

रू. भे,—बिसकांमणि, बिसकामणी ।

बिसकुंभ—सं. पु. [सं. विपकुम्भ] फलित ज्योतिष के २७ योगों में से प्रथम योग का नाम ।

बिसकुट, बिसकूट, बिसकूठ—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

बिसक्ख—१ देखो 'विसिख' (रू. भे.)

उ०—उभै दळं उचारयं, मचै मु मार मारयं । बिसक्ख पारवारयं, भडां सनाह भारयं । —रा. रू.

उ०—२ कर मूठ घनंखं छूट बिसक्खं, लेखा पक्खं मर लक्खं । वध सूर हरक्खं, भ्रोर विलक्खं चाव परक्खं रवि चक्खं ।—रा. रू.

२ देखो 'बिसेस' (रू. भे.)

उ०—१ आठ गुरु पद आद, जिण विद्युन्माळा अक्ख । गुरु लघु क्रम अठ बरग पद, सौ मल्लिक बिसक्ख । —र. ज. प्र.

उ०—२ भेद च्यार जिण रा भणो, आद वेलियो अक्ख । कवी सोहणो खुड़द कह, वळ जागड़ौ बिसक्ख । —र. ज. प्र.

बिसकमा–स. पु. [सं. विश्व+कर्मिन्] १ सूर्य, सूरज, भानु । (क. कु. बो, नां मा.)

२ देखो 'विश्वकरमा' (रू भे)

उ०—१ द्रणि भांति आइना बारह दिनां रो मुकाम कीजै । ज्यूं इनरा माहे अगनि मिनान करी सति ही आवै । महाराज मांनी । हाजी दुलह बद् चालै बिगर जानी । वैकुंठनाथ बिसकमा कूं हुकम किया । —र. वचनिका

उ०—२ गज कोरि राज द्वारो, मिंदर उतंग महल अटाळा । रापेम थांन धाम, बिसकमा विभ्रम भवेत । —गु रू. ब.

बिसख–देखो 'बिसिख' (रू. भे)

उ०—१ बहि सुबाह पवांग बिसख, मारीचं मुरभाय । —रामरासो

उ०—२ दिम किरण पुन्ज अरक दरसै, दिस्सगा कमधज दरसिया । अनुराग दळ गिर अमय मगगम, बिसख घण जिम बरसिया । —रा. रू.

उ०—३ आगै मेर बिलंद सेन मनमुक्ख चलायौ, दळ जादव ऊपरा जाण नाळव दरसायौ । कुहक बांण हथनाळ बिसख बरखै तिण वारां, कति स्रावण भड़ला जांण घण मसौ धारां —रा. रू.)

उ० ४ तौ कळ धरियण नैण कण कण, हरख माळ बिसख हण हुण १ बिकट पुरू मनाबळन गहर गुण गाजै । —र. रू.

बिसखघांम–सं पु [सं. विशिख धाम] १ तरकश । (अ. मा.)

बिसखपर, बिसखपरौ, बिसखप्पर–सं. पु. [सं. विषकर्परा] • कीचक के लिये प्रयुक्त विशेषण सूचक शब्द ।

उ०—बिसखप्पर कीचका बकु, हिडबु कमीरू मारिउ । लहु बंधवि अरजुनि दुंस, वार तुह जीउ ऊगारिउ । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'बिसखपरौ (रू भे.)

बिसखुट, बिसखूट—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

बिसघातक, बिसघाती–वि [सं. विष+घातक] जिससे विष का प्रभाव दूर हो जाय ।

बिसटर देखो 'बिस्टर' (रू भे)

बिसटाळ बिसटाळु बिसटाळु, बिसटाळू, बिसटाळौ—देखो 'बिस्टाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ केय कहै भिड आयौ कंठीर । बिस्टाळ कहै कोय वडौ वीर । जिण वार तमक पावु जवान, बिसताळ भडै खंग रीठ वांन —पा. प्र.

उ०—२ जगपत जोय जहाज, कुळ जोड़या कतळत करत । ए बिसटाळ आज । दाखै कुण मेलत 'दला' । —गो. रू.

उ०—३ बिसनसिंघ जद भेजिया, बिसटाळू असवार । कमध हूंत कंहाबिया, चोकस सम्माचार । —पे. रू.

उ०—४ बिसटाळू आया वहै, जींद करै सब जांण । कहिया बूढे रा कथन, बकियौ जायल राण । —पा. प्र.

उ०—५ आलोची रातै रे, कहस्यां परभातै रे, जातै रहवातै मुख हम तुम रही रे । पानघारैंड डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे, बिसटाळ घर पाछा फिरै हम कही रे । —प. च. चौ.

उ०—६ धरा सहरि ऊधमै, जोध खिजिया जमजाळा । कूंभरांण ओदकै, बीच फेरै बिसटाळा, —सू. प्र.

उ०—७ विरै एम बेखियौ, हता एकण घर वाळा । वड वड भडां विचारि, बीच फेरै बिसटाळा । —सू. प्र.

उ०—८ 'सूर' पान लै माह रा, भयौ करण अखियात । घर मुदफर सिर छत्र धर, बिसटाळा री वात । —सू. प्र.

उ०—९ अम्ह बिसटाळै आवियौ, लग ज्यां हिज लारै । कंटक सुणि अगद कहै, पित तूभ प्रकारै । —सू. प्र.

बिसटियौ—देखो 'बिसटी' (अल्पा. रू. भे.)

उ० विन ले जावै बिसटिया, पाण चकारां पाड़ । मारौ ज्यांनै मोटवी, सगन असूलां चाड । —पा. प्र.

बिसटी–स. पु [सं. विष्टि] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणों में से सातवें करण का नाम ।

२ पुरस्कारहीन या बिना पारिश्रमिक का कार्य, बेगार ।

वि —१ दुष्ट आततायी ।

२ देशद्रोही, उपद्रवी ।

३ डाकू, लुटेरा ।

रू भे. बिसटी ।

अल्पा.,—बिसटियौ ।

बिसटौ—देखो 'बिस्ठौ' (रू. भे.)

उ०—कागा केरी चाच ज्यूं, चुगलां केरी जीह । बिसटा ज्यूं परचो बुरो, चूंथै सबही दीह । —बा. दा.

बिसठ–सं. पु [सं. विशठ] बलराज एवं रेवती के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

बिसठौ –देखो 'बिस्ठौ' (रू भे.)

बिसण—देखो 'बिसणु' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा **बिसण** महेमवर तो मेव कराही । गत भ्रमांमी ताहरी, को जांणं नाही । —गज उद्धार

बिसणाड़णौ, बिसणाड़बौ—देखो 'बिगमाणौ, बिगमाबौ' (रू. भे.)

बिसणाड़णहार, हारौ (हारी), **बिसणाड़णियौ**—वि० ।
बिसणाड़िग्रोड़ो, बिसणाड़ियोड़ो, बिसणाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिसणाड़ीजणौ, बिसणाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिसणाड़ियोड़ो—देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिसणाड़ियोड़ी)

बिसणाडणौ, बिसणाडबौ—देखो 'बिणसाणौ, बिणसाबौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रलूखांनि **बिसणांड़िउं** काज, कटक मगावी ग्राव्यउ ग्राज । करद वात इम मारूं राज, ग्रलूखांनि जो ग्राणी लाज । —कां. दे. प्र.

बिसणाडणहार, हारौ (हारी), **बिसणाडणियौ**—वि० ।
बिसणाडिग्रोड़ो, बिसणाडियोड़ो, बिसणाडयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिसणाडीजणौ, बिसणाडीजबौ—कर्म वा० ।

बिसणाडियोड़ो—देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसणाडियोड़ी)

बिसणु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

बिसतंत्र—सं. पु. [सं. विषतंत्र] सांप ग्रादि विषैले जानवर के विष को दूर करने की क्रिया । (वैद्यक)

बिसत—देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)

उ०—ग्रपनें काज करै भउ बिसमल, जीव गरै पुंहचावै । काजी **बिसत** हाथि है तेरे, तो कुन दोजख वगुं जावै । —ग्रनुभववांणी

बिसतर—देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—लाखा भाटी की ग्रर्ज साखा **विसतर** का, काटै मोती पोथिया वन हैम वर का जल्ला महाणी जिसा जग कीरत कर का, गावै जिस दा गीतड़ा ग्रब ही घर घर का । —दुरगादत्त बारहठ

बिसतरणौ, बिसतरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रसनां नाभ सबद संचरिया, तन मन वचन सहज **बिसतरिया**, उलटि ग्रछर ग्रणग्रछर होई,सुरता बकता लहै न कोई । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ **बिसतरी** बात सारी बिसव, ग्रगणकारी उतपात सो । ग्रजमेर कांन ग्रवरग ने, गुण लग्गी ग्रत घात सो । —रा. रू.

उ०—३ महा ढहोलो मेदनी, **बिसतरियौ** तिण वार । साह तपस्या ग्रागलो, ग्रकबर गेन ग्रपार । —रा. रू.

उ०—४ गम पडै एम इण गीत री, इम पिंगळ कवि उचरै । हेक गुर घटै दुइ लुघ दुई तिम तिम नाम **बिसतरै** । —पि. प्र.

उ०—५ कमघज्ज तजै मनमोह कायाचो थीर तिसोह **बिसतरियं** तत लै निरबांण क राज तियाग, गोपीचद भरत्थरिय । —गु. रू. बं.

उ०—६ दाडिमी बीज **बिसतारया** दीसै, निउछावरि नांखिया नग । चरणे लुचित खग फळ चुंबित, मधु मुंचति सीचति मग । —वेलि

बिसतरणहार, हारौ (हारी), **बिसतरणियौ** वि० ।
बिसतरिग्रोड़ो, बिसतरियोड़ो, बिसतरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिसतरीजणौ, बिसतरीजबौ—कर्म भाव वा० ।

बिसतरबंद देखो 'बिस्तरबंद' (रू. भे.)

बिसतरियोड़ो—देखो 'बिस्तरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसतरियोड़ी)

बिसतरियौ, बिसतरौ—देखो 'बिस्तर (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—पाछो पड़उथलो मिल्यो—कदै ही नहीं ! कदै ही नहीं ! तो रहै ग्रठै वयूं हूं ? दूजी दुनियां बळगी के ? एक दिन री बात थोडी ही है ? जिंदडी रो मवाल है । मूलो बोरिया-**बिसतरा** उठाया, बाध्या ग्रर चढी, रातरै पल्लै ! पेमजी ग्रापरै तल्लै-बल्लै । —दसदोख

बिसतार—सं. पु.—१ समूह, भुण्ड । (ग्र. मा.)

उ०—सीकोतरि सकरणी प्रेत डकणी ग्रपारां, विवध भूत वेताळ वीर पळचर **बिसतारां** । गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कंक को गिणै, ग्रास पळ संभळ ग्राया । —रा. रू.

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ मु वसंत ग्राउ दिन देनं दुख दूरि कीयो । वेली ची सु व्याई । साखा त्रव्यां ही पसरी छै । सु जांणा धाहा की ग्रोल.दि वंसाख हुई । वैसाख माथि साखा को **बिसतार** हुग्रो । —वेलि टी.

उ०—२ रांम नाम निज मूळ है, ग्रौर सकळ **बिसतार** । जन-हरिया फल मुगति कू, लीजै सार संभार । ग्रनुभववांणी

उ०—३ तीन लोक मडप **बिसतारा**, जा बिच ग्राय जाय ससारा । बाकै परै ग्रभंगीराया, ग्रासण एक ग्रटल मट छाया । —ग्रनुभववांणी

उ०—४ ग्रौरंगसा पानसा ग्रासुर ग्रवनार, तास्या कै तेजपुंज एक से **बिसतार** । माप का विहाई सा प्रताप का निदांन, मारतंड ग्रागै जिसी जोतसी जिहांन । —रा. रू.

उ०—५ पोळि पोळि उकट्ठ प्रबळ, बंदोकनि बिसतार। राजा तखत बिराजियौ, सुभ चोकोस्रंगार। —रा. रू.

उ०—६ बड़ी रिधि तणौ बिसतारं, पुर बाहिर दिव पधारं। प्रावै घरता प्रासाद, जिहा त्रिगड़ै गोवीर जिगद। —ध. व ग्र.

उ० ७ आठ गायत्री ब्रह्मा नै दीवी, ग्योपुण बिसतारा। चार वेद सिखाड़ी दीना, कर उत्पति ससारा।

—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०— दमिटै जोर मारग्ग, जोर प्रगटै ग्रपारा, वधि बमती रज, बनै बेळ वरसी ऊदारां। वहै क्रोस बिसतार, गीध मांबर घर रोगा। जठै सिप मडुवा, तठै गरज्जंत बिलोगा। —रा. रू.

उ०— ६ प्रागै जाइ गुजराति री वेढ़ि की। वेढ़ि जीति प्रर पातिसाहजी मोकरी फतेहपुर पधारिया। इण वात रो बिसतार ग्रागै कहीजसी। —द. वि.

बिसतारक—देखो 'विस्तारक' (रू. भे.)

बिसतारण —देखो 'विस्तारण' (रू. भे.)

उ०— १ कुळ देवी यह पूज मकारण निजन नव नेवज बिसतारण। धूप प्रगर दीपक सुभ धारण, प्रत देवा मन मेव धपारण। —रा. रू.

उ०—२ घर प्रबर वनिकारण, वेद तणा बिसतारण। त्रिभुवन तारण-तरण, सरण धारण साधारण। —ह. र

बिसतारणौ, बिसतारबौ —देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पुगली बिसतारत पुलन, सांप्रत हाग सधेत। मो मरदार सरीर रौ, नट मुख भाभल नेत। —वां. दा.

उ०—२ वात बळै प्रसुरा बिसतारी, पार दिस गनत रिनमा चारी। लिगाई सुग्र प्रमिया काना, सबळ सिखागर रथिया माना। —रा. रू.

उ०—३ गर हुता जिम पसर, घरा फायबर उर धारै। पवन जा मेरियौ, वहै वट्ठ बिसतारं। नाग राग गेरियौ, ग्राम मैला चीत धर्पौ। दास हुकम पस्थिौ, जाण पति मरे गवर्पौ। —रा. रू.

उ०—४ भार उतारै भोम, प्रवधि मेर उधारै वणै राम वैकंठ, विमळ जस जग बिसतारै। —सू. प्र.

उ०—५ हाथी सह पहिरी हलकारै, ललाट ना हारै। मन दढ सबल बिसतार, मद उनमत्ता मारे हो। —वि I

बिसतारणहार, हारौ (हारी), बिसतारणियौ —वि०।

बिसतारिप्रोड़ो, बिसतारियोड़ो, बिसतारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसतारीजणौ, बिसतारीजबौ कर्म वा०।

बिसतारियोड़ौ -देखो 'विस्तारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसतारियोड़ी)

बिसतारी—देखो 'विस्तारी' (रू. भे.)

बिसनारो—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—चारित्र ऊपर चाव हमारो, वचन न लोप्यो एकज थांरो। निग म गह हुवो बिसतारो, पिण विरक्त नै कुण राखणहारो। —जयवांणी

बिसत्तरणौ, बिसत्तरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—करि भान छठै प्राकृत कहूं, विधि ग्रा घणी बिसत्तरूं। गत रवि प्रकाश 'प्रभमाल सहं,' दस खटभाखा उच्चरूं। —सू. प्र.

बिसत्तरणहार, हारौ, (हारी), बिसत्तरणियौ—वि०।

बिसत्तरिप्रोड़ो, बिसत्तरियोड़ो, बिसत्तरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसत्तरीजणौ, बिसत्तरीजबौ—भाव वा०।

बिसत्तरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसत्तरियोड़ी)

बिसथरणौ, बिसथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—भरदियां जेम जगमल्लमल्ल, ढंढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत गोतइ रायत्त, संभळइ सत्त बिसथरई वत्त। —रा. ज. सी.

बिसथरणहार, हारौ (हारी), बिसथरणियौ—वि०।

बिसथरिप्रोड़ो, बिसथरियोड़ो, बिसथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसथरीजणौ बिसथरीजबौ—भाव वा०।

बिसथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिसथरियोड़ी)

बिसथार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ० १ नमो नर सुरा नाथ निरगुण नरेसं, नमो मेरू थारै हरी नाम सेसं। नमो बिमल बिसथार ग्रघिवो वणायो, निमो जोनि ब्रह्मा जिसो पुत्र जायो। —पी. ग्रं

उ०—२ करतार मेह करंति, ब्रम चिहुं रसा वरसति। परमेसर पार अपार, वैराट घट बिसथार। —पी. ग्रं

बिसथारणौ, बिसथारबौ देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

बिसथारणहार, हारौ (हारी), बिसथारणियौ - वि०।

बिसथारिप्रोड़ो बिसथारियोड़ो, बिसथारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसथारीजणौ, बिसथारीजबौ —कर्म वा०।

बिसथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसथारियोड़ी)

बिसद-वि. [स. विशद] १ निर्मल, साफ, स्वच्छ, पवित्र।

उ०—कह् कारखांना गिणत कुण कुण, संभ्रमैं तिहूंलोक सुण सुण । बिसद जग उजवाळ बिरदां, सत्रा सांभण सूर ।
—र. रू.

२ सफेद रंग का, चमकीला, उज्जवल (प्र. मा., नां. मा., ह. नां. मा)

३ स्पष्ट ।

४ शान्त, स्थिर, निश्चिन्त ।

उ०—मूवारथी स्वारथी जे स्वमुख दुख प्राग्थी बव सदे, बढे जो विचारथी बिसद परमारथी वच सदें । प्रचड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमंड प्रद प्रभो, त्रिनड प्रोद्दंड प्रनत दुख खड प्रद विभो —ऊ. का.

५ सुन्दर, मनोहर ।

सं पु —१ सफेद रंग ।

२ शख । (ग्र. मा.)

३ जयद्रथ राजा का पुत्र एवं सेनजित राजा का पिता एक राजा ।

रू भे —बिसद ।

बिसदता–स. स्त्री [सं. विशद+ता प्रत्य] विशद होने की अवस्था या भाव ।

बिसदसरीर–स पु [सं. विशद+शरीर] चन्द्रमा, चान्द । (ना. मा.)

बिसधर–सं पु. [स. विष+धर] १ सर्प, साप ।

उ०—हण बिसवर बिसधर बचो, श्राग बुझाय अंगार । पिसण मार सुन पिसण रो, असमभ लियो उबार । —बां. दा

२ गोह ।

३ शेषनाग ।

४ महादेव, शिव, शकर ।

रू. भे.—ब्रखधर, वखधारी, विक्वधर, बिखधर, बिखहर, बिसधर, बिसहर, विक्खहर, विखधर, विग्वधार, विग्वधारी, विखहर, विसधार, विसधारी ।

बिसधात्री–सं स्त्री.—मनसादेवी जो जरत्कारु ऋषि की स्त्री थी ।

बिसन–सं. पु [स. वैश्वानर] १ आग, अग्नि ।

उ०—मैं तो प्रीत करी परमातम, पावक देख पतंगा । परमातम पर दुख निवारै, उ जळन बिसन के सगा । —अनुभववाणी

२ देखो 'बिसण' (रू. भे.) (ना. मा., ह. नां. मा.)

उ०–१ राम नांम सब ही कुं भाख्यो, ब्रह्मा बिसन महेसुर भाख्यो । सांई नाव कह्यो पारबती, भायो भेद रिख नारद ती ।
—अनुभववाणी

उ० - २ भगवत मुनण हुओ अहूँ भुवणे, घण दोहाँ लग नांम घणो । ब्रहमा बिसन महेस बदीतो, तप तुंगिम जस तूझ तणो ।
—गोपाळ मीसण

उ०—३ ताणं मूंछ तोले तिजड, बिसन सकति कर वद । घूघ नगारा हुय कटक, चढे हुकम जयचंद । —सू. प्र.

उ०—४ सुणे पौकार बिसन सळसळिया रत चखि प्रकट कोट धोम रळिया । प्रळै काळ रो धिखतो पावक, प्रगटे जोति पिंड प्रम भावक । —मा. वचनिका

उ०—५ ब्रहमा बिसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वप्प किय । रिदय निलाट परि नाभि हूं, ब्रहमां बिसन महेस थिय ।
—रा. बंसावळी

३ देखो व्यसन' (रू. भे.)

उ०—१ कइ अम्है सत बिसन आचरियां, कइ परनंदा कीधी । कइ अम्है दीनदया नवि पाळी, लाच अयुगतो लीधी ।—कां. दे. प्र.

उ० —२ एक शहर, तै मांहे वडो राजा । पिण राजा नू सिकार रो घणो बिसन । नित्य सिकार चढै । मारै तो हेक हिरण पिण सारी ही रोही रा हिरण वेचै, चरण देवै नही ।
--तुही ठग राजा री वात

उ०—३ माभी मिजाज, बे अदबी सातूं बिसन । लोभ घणो तम लाज, पैला घर वांछे पिसण । —बां. दा.

उ०—४ जग माफल चुगली जिसो, हीण बिसन अन है न । विण चुगली भुगतै विथा, चुगली कीधां चैन । —बां. दा.

बिसनदेव देखो विस्णु'

उ०—नागै हुय अमनांन कराया, बिसनदेव का नांव धराया । तूं तो आस पास कू ताळै, अनख रह्यो आखि दे टाळै ।
—अनुभववाणी

बिसननाथ—देखो 'विस्णु' ।

उ०—नग नाद वाजता नगारां, आयो पुहकर दळां अपारां । बिसननाथ आया दिन बळिया, पुहकर गुरा तणा दुख पुळिया ।
—रा. रू.

बिसनपथ देखो 'विस्णुपथ' (रू. भे.)

बिसनपद--देखो विस्णुपद' (रू. भे.) (अ. मा, ह ना. मा)

बिसनपरो—देखो बिस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

बिसनपरी—देखो 'विस्णुपुरी' (रू भे.)

उ०—भूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का काम । हरीया सुवचन सांचका, बिसनपरा बिसराम । —अनुभववाणी

बिसनपुर—देखो विस्णुपुरी' (रू. भे.)

बिसनपुरो—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

बिसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी (रू. भे.)

बिसनप्रिया—देखो 'विस्णुप्रिया' (रू. भे.)

बिसनर, बिसनह—१ देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.) (ड. र)

उ०—१ दूखणियां गटबड़े, थाव डूगा घळ जावै। बिसनर सूं बळ जाय, लाल लोई कढ आवै। जळ मे पांन उकाळ, धणटवा घाव धुवावै। कीड़ा पड़ै न कोय, पीड़ आघी झड़ जावै।
—दसदेव

उ०—२ बिहुंगे हुवो न चीनो बिसनर, भव हो तणों न आयो भागि। घड़ 'धमळीत' तणो खग-धारां, लिगि लिगि गयो अगारा लागि।
—ईसरदास बारहठ

उ०—३ राति मान्हइ राउ मागि गुरगह कुणबि सउ, दियउ पुरोहितु दाउ लाव्हइरइ बिसनह ठवइ। —मालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—सिव ब्रह्मा बिसनर कहै, संत भरै सब साखि। राम नाम एको भला, हरीया हिरदै राखि। —अनुभववांणी

बिसनसामी-स. पु.—वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी।

उ०—१ तळाव मोतीसंद बिसनपुरा कनै पहला तो खान कटणा ग हुयो थो नै पछै मोती बाई करायो जिण में बेरी १८६६ मे बिसनसामियां गारा गाघर होय नै कराई। —मारवाड़ री ख्यात

बिसनासन-स पु. [सं. विस्णु+आसन] १ गरुड़।

२ शेषनाग।

वि. पु. [स विस+नाशन] विष का नाश करने वाला।

बिसनिर, बिसनिह—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

बिसनी, बिसनीउ—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

उ०—१ बिसन बिनां दस बीस बरस, बिच मरणो मूरग सिधांणो। बिसनी नर सौ बरस जियै वपु, पूरे नरक पयांणो।
—ऊ का

उ०—२ गवबी बाह गालड़ा, अनड करमाड़ काय। आगलि ऊभउ बिसनीउ, थूंकत थकत जाइ। —मा. का प्र.

बिसनु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.) (अ मा.)

बिसनुकवच—देखो 'विसनुपजर'।

बिसनुपञ्जर, बिसनुपंजर-स. पु. [सं. विष्णु+पजर] १ विष्णुस्तोत्र जो रक्षार्थ पढ़ा जाता है।

२ विष्णुस्तोत्र जो तावीज के रूप मे भुजा पर धारण किया जाता है।

रू. भे.—पजरबिसन, पजरबिसनु।

बिसनोई-सं. पु.—१ एक सम्प्रदाय विशेष, जिसके प्रवर्त्तक जाम्भोजी थे।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे.—बिसनोई, बिश्नोई।

बिसनौ—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—बिन भजन कहै तूं बिसनौ, वडो थूळ सरिखो छां। पीरदास कूड़ बोलै प्रभु, दास नही कहैं दास छां। —पी. ग्रं.

बिसन्न—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ क्रपाळ बिसाळ सिघाळ किसन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ बिसन्न। मुणाळ भुग्राळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस। —ह. र.

उ०—२ वदै पग लच्छि सहेत बिसन्न, समीपमुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अनै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तूझ तणो अत भाग। —सू. प्र.

उ०—३ उदोत तपोनिध त्रेगुण ईस, अजीत जरा अत जोग अधीस। बिसन्न त्रिमोह बिसळ्ळ विग्यांन, रतीपति तात प्रकत्त राजान। —ह. र.

२ देखो 'व्यसन' (रू भे.)

उ०—जावै साहस जाणियो, ईसै आफत तन्न। बाघ डरै नह बैर सूं, बाघा बैर बिसन्न। —बां. दा.

बिसन्नर—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

२ देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

उ०—फौजां गजडंबर लीरा लसक्कर दक्खण उत्तर आहूटियं। बहै आग बिसन्नर धिखियो घोमर ताळ भयंकर तावडियं।
—गु. रू. बं.

बिसन्नु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

बिसपत बिसपति बिसपती—१ देखो विस्वपति' (रू. भे.)

उ०—या ओसर हरि का होय रहियै भवर रच्या सो भूधर बहिए। नांव बिसभर बिसपति रावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा। —ह. पु वां.

२ देखो व्रहसपति' (रू. भे.)

बिसपाळ—देखो 'विस्वपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ चद्र सूर किया दोय दीपक, करि तारामंडळ करितार। अनत लोक बिसपाळ बिसभर, सकळ सछाया नो सार।
—ह. पु. वा.

उ०—२ अरि भजन अनरथ हरन गरब हरन गोपाळ। जन हरि-दास अकरन करन हरि अकळ सकळ बिसपाळ। हरि अकळ सकळ बिसपाळ नाथ निरभै निरधारं। निराकार निरलेप वार नहि लाभै पारं। —ह पु. वां.

बिसप्रसून-स. पु. [सं. विषप्रसून] कमल। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बिसप्रसून।

बिसप्रस्थ-सं. पु. [सं. विषप्रस्थ] एक पर्वत का नाम।

बिसफळ-सं पु. [सं. विष+फलं] १ वह जहरीला फल जिसके सेवन करने पर सेवनकर्त्ता की मृत्यु हो जाती है।

रू. भे.—बिसफळ।

बिसफोटक—देखो 'विस्फोटक' (रू. भे.)

बिसब, बिसब्ब—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—उदोत तपोनिध त्रेगुण ईस, अजीत जराम्रत जोग अधीस। बिसब्र विमोह बिसब्ब विग्यांन, रती पति तात प्रकत्त राजांन।

—ह. र.

बिसबावीस—देखो 'विसबावीस' (रू. भे.)

उ०—ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि। बुद्धि ग्रह्य बिसबावीस, अंतकरण कहीजै ईस। —पी. ग्रं.

बिसमंत्र-स. पु. [स. विष+मंत्र] १ विष उतारने वाला मंत्र।

२ उक्त मत्र को जानने वाला व्यक्ति।

बिसम-वि. [स. विषम] १ जो समान न हो, असमान।

२ जिसमे दो का भाग देने पर एक शेष बचे।

३ जो सरल न हो, कठिन, रहस्यमय।

उ०—अब वार गत तोह थोई अग, करि स्नीक्रसन तणा कैबार। उत्तम होई जनम क्रम आतम, सगम तरै दधि बिसम संसार।

—ह. नां मा.

४ जो व्यवस्थित न हो अव्यवस्थित।

५ जहां कोई नही जा सके, दुर्गम्य।

उ०—बंदइ इसी करी अरदास इणि गढि राउलनउ छइ वास। विसमउ गढ विसमा भूझार, ऊपरि बिसमा पोलिपगार।

—का. दे प्र.

६ भयंकर, भीषण।

उ०—१ उल्कापात हूउ विकराळ, बिसम धूम धूधूइ विराळ। वलिउं कटक छाडिउ मेल्हाण, ढीली भणी चल्यउ सुरताण।

—का दे. प्र

उ०—२ सत्य कू छेदिउ बलिहि, सीमु तमु दिणी चऊरमइ, रातिहि भूभइ बिसम, भूंभ गुरु पडइ कीमइ। —सालिभद्रसूरि

उ०—३ बिसम ढाक स टूकस ढमढमी भग्हरी भर भेरि बिहा-मणी। उच्चरि तुररी कुहरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्दसी। —सालिसूरि

७ कष्ट देने वाला, कष्टप्रद।

८ टेढा, तिरछा, बांका।

९ प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत।

१० अद्भुत, अनोखा।

११ बुद्धिमान, चतुर, चालाक।

१२ तीव्र, तेज।

१३ वीर, बहादुर।

१४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—बंदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउलनउ छइ वास। बिसमउ गढ बिसमा भूझार, ऊपरि बिसमा पोलिपगार।

—कां. दे. प्र.

१५ ऊबड़-खाबड़, असमतल।

उ०—सुगुरु साथिय हीण घणुं भमिया, बिसम वाट किहाइ न वीसमिया। वसइ जं जिनमदिरि सोयलइ, बिहु परं तींहु तापु सही टलइ। —जयसेखर सूरि

१६ दृढ, मजबूत।

१७ उल्टा, विपरीत।

उ०—तैं जाणी हुं ताहरी, थई रही स्यूं घीर। अक्षर सहू कीजै समा, बिसमा टाली वीर। —मा. कां. प्र.

१८ टेढा, अनुचित, बुरा, कर्ण कटु।

उ०—पातिसाह मूछइ वळ घालो, बिसमा बोल्या बोल। जै को माहरी आण न मांनइ, चूकइ ठांम निठोल। —कां. दे. प्र.

स. पु.—१ वह संख्या जो दो से बराबर-बराबर नही बटे।

२ तकलीफ, मुसीबत, विपत्ति, संकट।

३ फौज, सेना।

४ अग्नि, आग।

५ वायु, पवन, हवा।

६ शिव, शंकर, महादेव।

७ वह वर्णवृत्त जिसके चारो चरणों मे समान वर्ण न होकर किसी चरण मे अधिक व किसी चरण में कम हो।

८ दो परस्पर विरोधी वस्तुओं या दोनों की विषमताओं का वर्णन करने वाला एक प्रकार अर्थालंकार विशेष। (साहित्य)

९ एक प्रकार का ताल विशेष। (संगीत)

१० वायु प्रकोप के कारण उत्पन्न होने वाली चार प्रकार की जठराग्नियों मे से एक।

[सं. विषम.] ११ भगवान श्रीविष्णु का एक नामान्तर।

रू. भे.—बयम, बिखम, बिखमी, बिम, बिसम, बीसम, बखम, वखमी, विखं, विखम, विक्खम, विक्खमी, विक्खम्म, विक्खम्मी, विस्सम, विखमी, विक्खम्म, विखम्मी, विसमउ, विसमिउ, विसमी, विसमु, विसमै, विसमो, विसम्म, विसम्मी, विसम्य, विस्सम, वीसम, वीसमउ, वीसमी, वीसमै वीसमो।

बिसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ गढ गिरुउ अनइ बिसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ महागज तणा जिसा पाग तिसां कोसीसा, गरुई पोलि, निविड

कमाव, मोहमोगल, विमाहरि तणी पद्धति, यत्र तणी स्रे लि,'''।
—व. स.

उ०—२ बंदह हुमी करी अरदास, इणि गढि राउळनउ छह वास।
विसमउ गढ विसमा भूभार, ऊपरि विसमा पोळिपगार।
—का. दे. प्र.

विसमगत, विसमगति, विसमगती, विसमगत्त, विसमगत्ति, विसमगत्तो—स. स्त्री.—विकटस्थिति।

उ०—हळवळ दळ भकळ 'जसा' होलोहळ, भळहळ कूंत हुव बीज भत्त। भळहळ भाग दोयण ग भाडण, गढ भरियण घरां विसम-गत्त।
—माडूळजी खिड़ियो

रू. भे.—वसमगत, वसमगति, विखमगत, विखमगति।

विसमजुर, विसमज्वर—स. पु. [स विषम+ज्वर] प्राय: वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमें यकृत और तिल्ली बढ़ जाती है।

रू. भे.—विखमजुर, विखमज्वर, विखमजुर, विखमज्वर।

विसमत—स स्त्री. [सं. विष+मति] दुर्बुद्धि, खराब बुद्धि।

वि.—१ ऊबड़ खाबड़, असमतल।

२ कठिन या दुर्गम्य।

३ सकुचित, सिकुड़ा हुआ।

देखो 'विस्मत' (रू. भे.)

रू. भे. विसमत, विसममत।

विसमता—स. स्त्री. [स. विषम+ता प्रत्य] विषम होने की अवस्था या भाव।

उ० अठै धरिणपाल रा अन्वय में 'गभोर' री दसमी पीढी राजकुमार देवसिंह हुवो जिकण चालुक वंश में भोलाराय भीम री तेवीसमी पीढी गोड्‌दराज टाक रो अधीस हुवो जिकण रा ग्यारह अगजा में बडा ही बडा कुंभराज कन्हड़ दो ही बंधवां नू आपरा सगोत्र गोळवाळ असराज री दो ही पुत्रियां बिवाही इण कारण मागध लोका रा घणां ग्रथां में एक ही लेख जांणि मोहो प्रमांण इण ग्रंथ में राखियो परंतु पीढियां रो विसेस ही विसमता हूं विरोध आवै।
— व. भा.

रू. भे.—विखमता।

विसमनयण, विसमनयन—स. पु. [स. विषमनयन] शिव, महादेव।

रू. भे.—विखमनयण, विखमनैण, विखमनयण, विखमनैण।

विसमनेतर, विसमनेत्र, विसमनैण—स. पु. [स. विषमनेत्र] शिव, महादेव।

रू. भे.—विखमनेत्र, विखमनेत्र।

विसमपण, विसमपणो—स. पु. [स. विषम+रा. प्र. पण, पणो] विषम होने की अवस्था या भाव, विषमता। (अमरत)

विसमबांण—सं. पु. [सं विसम+बाण] कामदेव के पांच बाणों में से एक बांण।

रू. भे.—विखमबाण, विखमबांण, विसमबांण।

विसममत—देखो विसमत' (रू. भे)

विसमय—सं. पु [स. वि.=बुरा+समय] बुरा समय, खराब समय।

वि.—[सं. विष+मय] १ विषयुक्त, जहरयुक्त।

रू. भे.—बिसमय, बिसमै, बिस्मय।

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

उ०—कमनै तीरन तानिकै पखरैत बेधन पांनि कै 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय बय छपय रन सुम अभय अतिसय विसय चय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अजय सयकर अव्यय जय भय उभय सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।
— वं. भा.

विसमर—देखो 'विसमरो' (रू. भे.)

विसमरण, विसमरमण—देखो 'विस्मरण' (रू भे.)

विसमरणो, विसमरबो—देखो 'विस्मरणो, विस्मरबो' (रू. भे.)

विसमरणहार, हारो (हारी), विसमरणियो—वि०।

विसमरिओड़ो, विसमरियोड़ो, विसमर्योड़ो—भू० का० कृ०।

विसमरीजणो, विसमरीजबो—कर्म वा०।

विसमरियोड़ो—देखो 'विस्मरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विसमरियोड़ी)

विसमरो—स. पु. [सं. विषमर] विषैला जन्तु, छिपकली। (अमरत)

रू. भे.—बिसमर, विखमरो, विसमर।

विसमल, विसमला, विसमल्ला, विसमल्लाह्—देखो 'बिस्मिल्लाह्' (रू. भे)

उ०—१ मूला मुंनित तै, करो तैं कीया विसमल। खलड़ी गला कटाय कै, क्या कीया वेकल्ल।
—अनुभववांणी

उ०—२ काया विसमल क्या करें, मन कुं विसमल कीन। हरीया मन विसमल बिनां आतम सधे न चीन।
—अनुभववांणी

उ०—३ अपनै काज करै गउ विसमल, जीव मरै पुंहचावै। काजी विमत हाथि है तेरै, तो कुल दोजख क्युं जावै।
—अनुभववांणी

उ०—४ अपनै हाथि कीया मन मांनी, हरि का कीया दाय नहीं आनी। मारै गऊ कहैं विसमला, युं तो खुसी खुदाय न अला।
— अनुभववांणी

विसमबांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे)

विसमविसिख—सं. पु. [सं. विषम+विशिख] कामदेव का एक नाम।

बिसमव्रत—सं. पु. [सं. विषम+वृत्त] एक प्रकार का वृत्त विशेष जिसके चारों चरणों में पद असमान हों।

बिसमसि—स. पु. [सं.] आलम्बन सहारा।

उ०—तें मिच्छदिट्ठी मिथ्यात्वी दृस्टि आंणिउज आंणिवउ, जे पतित धरम हूंता भ्रस्ट हूया तेहना आलंबन ओठभ लिइं, भ्रस्टनो बिसमसि करइं। —षष्ठीशतक

बिसमागनी, बिसमाग्नि—सं. स्त्री. [स. विषम+ अग्नि] वैद्यक में चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक जठराग्नि।

बिसमाजुद्ध, बिसमाजुध, बिसमाजुध्ध, बिसमायुद्ध, बिसमायुध—स. पु. [स. विषमायुद्ध] कामदेव का नामान्तर।

रू. भे.—विखमाजुध, विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध।

बिसमासन—स. पु. [स. विषमाशन] ठीक समय पर भोजन न करके थोड़ा पहले या थोड़ा पीछे भोजन करना जिससे शरीर में आलस्य उत्पन्न होता है। (वैद्यक)

बिसमिउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—विसमिउ कटक कौरव केरउ, दंव चक्र किम कांइं फेरिउ। नारि सइरि सर संप्रति आवइ, कइ अगास पडता एउ भावइ।

—सालिसूरि

बिसमिल, बिसमिला, बिसमिल्ला, बिसमिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

बिसमित—देखो 'बिस्मित' (रू. भे.)

बिसमी—देखो 'बिसम' (रू. भे.)

उ०—१ रतनसेन साथै हुग्रो, बिसमी विसमो ठोड़। देखायो सुलतान नैं, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड़। —प. च. चौ.

उ०—२ चमरी जिम चल लखमीय, बिसमीय विसय नी वात। नारीय नेह विण दीविय, जीविय बहु उपघात। —जयसेखर सूरि

बिसमु—देखो 'बिसम' (रू. भे.)

उ०—१ दैव जिहा बिसमु थयु, तव नही काई बलप्राण। वली वेला सरव साचूं, जांणनें निरवाणि। —नळाख्यांन

उ०—२ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमरो, करणिहि सरिसउं माडइ वयरो। वे भाथा बिहूं खवे वहेई, करयलि बिसमु धणुहु धरेई।

—सालिसूरि

बिसमै—१ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

उ०—१ आवी खबर अचींतिया, बिसमैं जैसी वत्त। तद राठौड़ बूझियो, 'दुरगं' आसावत्त। —रा रू.

उ०—२ मेड़तिया 'मधकर' हर मेडतै सहायक, सांइस के सादूळ बंस के नायक। जाकी रीत को प्रमांण द्वापुर दरसावैं, कहनें मैं बिसमैं सो देखैं बन आवैं। —रा. रू.

२ देखो 'बिस्मित' (रू. भे.)

उ०—रात घड़ी दोय गयां थाळी में सेर च्यार वस्त घात, रुमाल सूं ढक राजा री हजूर गयी। जाय मुजरो कियो। थाळी मुंहडे आगं मेल्ही। राजा सांम्हो देख बिसमैं रह्यो।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

३ देखो 'बिसम' (रू. भे.)

उ०—१ सांम धरम रत्ता पण साचै, वयण झूठ मुख झूठ न वाचै। पड़तो गयण ग्रहे निज पांणी, बिसमैं समैं एक रस बांणी।

—रा. रू.

उ०—२ 'सोनागिर' चांपावत हाथ खग तोलै, बिसमैं मैं दृढ देण कोप वैण बोलै। समैं पाए सूर सोई वीरता बिचारै, समैं कै निदांन आए आसमांन धारै। —रा. रू.

बिसमौ—१ देखो 'बिसम' (रू. भे.)

उ०—गढ गरुउ अनइ बिसमौ जीह तणी पाय पातालि पइठउ, परबतनइ संगि, बइठउ उच्चस्तर पोलि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पद्धति,...। —व. स.

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

बिसम्म, बिसम्मी—देखो 'बिमम' (रू. भे.)

बिसम्य—१ देखो 'बिसम (रू. भे.)

उ०—दसा बिसम्य सम्य हा अगम्य गम्य है नही, रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं। गवाक्ष तें अगास की कटाक्ष तें निगै नहीं, थिराभ चंद्रसाल चद्रसाल पै थिगै नही। —ऊ. का.

२ देखो विस्मय' (रू. भे.)

बिसय—स. पु. [स. विषय] १ कोई तत्व या बात जो विचारणीय, विवेचनीय या अध्ययन करने योग्य हो।

२ स्त्री के साथ किया जाने वाला संभोग या मैथुन।

उ०—१ धुरतें सील फरसधर धारयो, बिसय विकार विहाई। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार इकीस बनाई। —ऊ. का

उ०—२ वैरागी बिसया रस त्यागै, रागी कर आसक्ती लागै। दोई तजै सो निरदावै, सम द्रस्टि पावै। —श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ बिलार बिसया लालची रे, ताहि भोजन देत। दीन हीन व्है छुधा रत सैं, राम नांम न लेत। —मीरां

उ०—४ परदारा सु पापियउ, भोगवइ कांम भोग। बिसया रस लुब्धउ थकउ, न बीहइ पर लोग। —स. कु.

३ बड़ा प्रदेश या राज्य।

उ०—कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनि कै 'बुध' तनय

हित जय प्रगाम नय बय छाय रन मुम प्रभय प्रतिसय बिसय बय मुब बलय बिसमय प्रलयमय भय समय निरदय, उदय रवि नय-निभय प्रतिरय प्रजय भयकर प्रबय जय प्रय उभग नय पय हृदय प्रपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार ।

—ब. भा.

४ भोग-विलास व मैथुन से प्राप्त आनन्द ।

५ पचज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त आनन्द या सुख ।

६ जगह, स्थान ।

७ वीर्य, बीज ।

८ प्रियतम या पति ।

९ सम्पत्ति ।

१० गर्त, माग ।

११ सल्तनत, बादशाहत ।

१२ सासारिक पदार्थ ।

क्रि वि —१ नित, प्रति ।

२ मध्य, अन्दर, मे ।

रू भे.—बिखै, बिखइ, बिसई, बिसिया, वखै, विख, विराय, विखिया, विर्ग, बिस, बिसइ, बिसई, बिसिया, विसै ।

बिसयक-वि. [सं. विषयक] विषय का, विषय से सम्बन्धित ।

रू. भे.—बिसयक ।

बिसया-सं. स्त्री. [स. विषया] चन्दनावती नगरी के दुष्ट बुद्धिप्रधान की कन्या का नाम ।

बिसयी-स. पु. [स. विषयिन्] १ कामदेव ।

२ भोग-विलास मे बहुत अधिक आसक्त व्यक्ति, कामी व्यक्ति ।

३ बहुत अधिक विषय या धन सम्पत्ति वाला व्यक्ति, धनवान ।

रू. भे.—बिसई, बिसइ, बिसई ।

बिसर-स. पु.—१ अपशब्द, कटु शब्द, अपमान सूचक शब्द ।

उ०—असुर बोलियो बिसर पतसाह मुह आगळी, राज बिण खत्री ध्रम कवण राखै । दूसरा 'माल' वरदान तोना देऊं, अमर' मो काज जमदाढ आखै । —अमरसिंघराठौड़ री गीत

२ अप्रशसासूचक कविता, निन्दा सूचक या दुत्कारयुक्त कविता ।

उ०—१ मुकव आविया नजर मेळाय भटकै सदा, कसर सूं चलै मछरा कराता । अदावा बिसर बिण लागै नह आमटी, तुगी बिण चामटी न बहै ताना । —पीरदान आढ़ी

उ०—२ पराणी बिसर वाजे घणा ऊरा, पेड चालै नही पैल पूरा । रीत बळ भाडै थाका सको रामणा, भामणा लेऊ धुर ज्रूप भूरा । —हरनाथसिंह चांपावत री गीत

३ एक प्रकार का विषैला जन्तु विशेष ।

४ युद्ध, समर ।

५ एक प्रकार का घोड़े का चारजामा ।

[स. वि: सर] ६ समूह, झुण्ड । (अ. मा.)

वि.—भयकर, भयावह ।

उ०—१ विहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर । धरर लका जिसा धाहर, बिसर त्रंबक बाज । —र. ज. प्र.

उ०—२ बिसरि गड़गडै तूर सूरां चढै वीर रसि, अछर वरिवा करै चित उमेवा । सांमि छळ देस छळ वेस छळ सांमठां, सांपना ताहरै भागि मेवा ।

—मेवा दुर्जनसालोत पातावत राठौड़ री गीत

रू. भे.—बिसर, वसर, विस्वर, वीसर ।

बिसरग-स. पु. [स. विसर्ग] १ व्याकरण के अनुसार ऊपर नीचे अर्थात खड़े दो बिन्दुओं वाला वह वर्ण जिनका उच्चारण अर्द्ध 'ह' के समान होता है ।

२ दान ।

३ संहार, नाश ।

बिसरण, बिसरन-स. पु. [सं. विसर्जन] १ परित्याग, त्याग ।

२ दान या भेट । (अ. मा., ह. नां. मा.)

३ प्रस्थान, विदा ।

४ मल का परित्याग करने की क्रिया ।

५ पूजन मे अन्तिम उपचार, षोडशोपचार ।

६ सभा आदि की अन्तिम कार्यवाही के बाद सभा के विसरजन की क्रिया ।

७ उक्त के आधार पर पूजनोपरान्त देव मूर्ति का जलाशय में किया जाने वाला प्रवाह ।

८ विस्मरण, भूल ।

९ समूह, व्यूह । (अ. मा.)

वि. [स. विशरण] आश्रयहीन, अनाथ ।

बिसरणौ, बिसरबौ-क्रि. अ.—१ गल्ती होना ।

२ फैलना ।

उ०—एक आवाहिया देवराए, गाजि ब्रहमड धाए निहाए । सीजिया जोध ताहे खडग्ग, बिसरि किरि जीह वासिग्ग नग्गं ।

—गु. रू. ब.

३ कुपित होना, क्रोधयुक्त होना ।

उ०—वाही गजसिघोत बिसरिअ, असुरां फुटा अफर अणी । मुगळा तणे पडी किर माथे, त्रिजड़ी तडित अकाळ तणी ।

—केसोदास गाडण

४ विस्मरण होना, भूलना ।

उ०—१ वर उपदेस करै बिन पूछ्या, निगमा उगत उचरना ।

हंसा होय चुगो मुक्तावळ, विसया रस बिसरना ।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ सघण, स्नेह, वायक न सुणावी, लाखाउत प्रागळी लहेइ । तू बिसरिस तइयां जइयां तिण ढिग हुइसै रज तणो घिलेइ ।

—ईसरदास बारहठ

उ०—३ हियै धारियां खांन जुबांन छिवतो निहंग, अवर नर बिसरै तणा अचभा । बिखम गत देख 'जसराज' खग वाहतो, रही रथ साह गजगाह रंभा ।

—गु. रू. बं.

उ०—४ पीया निसदिन तोकूं ध्यांउं, उनमुन ताळी लांउ, तो बिसरयां दुख पांउ ।

—अनुभववाणी

उ०—५ मांडणियां नै इबारत बोलै, बांचणियां रै दूहां रा अरथाव खोलै है । विलम्या बैठ्या है । घरनै सफा बिसर रैया है ।

—दसदोख

उ०—६ वरज्या सतगुर सांम्य, कुमत कुकरणी करता । मद मास पोसतो, भांग खाहि बिसरंवा ।

—अग्यात

बिसरणहार, हारो (हारी), बिसरणियो – वि० ।

बिसारिग्रोड़ो, बिसरियोड़ो, बिसरयोड़ो —भू० का० कृ० ।

बिसरीजणो, बिसरीजबो—कर्म वा० ।

बिसरणो, बिसरबो, बीसरणो, बीसरबो, वीसरणो, वीसरबो, वीसूरणो, वीसूरबो — रू० भे० ।

बिसरप–स. पु. [सं. विसर्प] १ रेंगने, फिसलने या सरकने की क्रिया । २ अनिष्ट फलदायक प्रारब्ध कर्म ।

३ एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें एक साथ बहुतसी छोटी-छोटी फुन्सियों के साथ बुखार भी आता है, शीतला, चेचक । (अमरत)

बिसरमो–वि. [स. वि.=रहित+शर्म=लज्जा] जिसे शर्म नही आती हो, बेशर्म, लज्जाहीन ।

उ०—कासुं व्है बहु कह्या वदै नही वदै बिसरमा । सुगुरु तणी धरम सीख, करै नहीं भारी करमा ।

—ध. व. ग्रं.

बिसरांत–सं. पु.—मथुरा का विश्राम घाट ।

उ०—तद प्रथीराजजी कयो, "महाराज मास छठै मथुराजी मैं बिसरांत घाट ऊपर होवंगी । जद्दा घोळा काग आवैगा ।—द. दा.

बिसरांम–सं. पु. [सं. विश्राम] १ सहारा, आश्रय, पनाह ।

उ०—१ सांवरिया ! तूं भूला री बाट है, राम प्यारा रै ! हारयां रो बिसरांम ।

—गी. रां.

उ०—२ देस मालम सुतण देसल नर सघर दुंह पखं निरमल, अतुलबल अति कमल ऊज्जल वरन खट बिसरांम ।

—ल. पिं.

उ०—३ मछली नै जळ कोई मिळावै, के कोयलड़ी नै ग्रांम । अब तो वेग मिळै उवो सांवळ, हारयां रो बिसरांम ।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ बांह कोई ऊंच न नीच है, नांम न कोई ठांम । हरीया हेको ब्रह्म है, सबहुन के बिसरांम ।

—अनुभववांणी

उ०—५ सतगुरु सोई जाणियै, कहै कहावै रांम । हरीया गुर गोविंद सा, और न को बिसरांम ।

—अनुभववांणी

उ०—६ जिण अरबद ऊपर अठारह भार बनस्पती झुक रही छै । घणो ही चपो, चमेली, मोगरी, जुही फूल रहिया छै । फेर अड़सठ तीरथ आय बिसरांम लियो छै ।

—डाढाळै सूर री बात

२ आराम, चैन ।

उ०—१ अर इत्तो उस्ताद रांमूजी ! थांनै ई करणो पड़ैला, कोई सभाषभा आळी आवै तो कै दिया—अबार तबियत ठीक को रै वैनी, डागदर बिसरांम लेवण रो कयो है ।

—बरसगांठ

उ०—२ नारी क्यारी कांम की, सींच्यां करै विरांम । जनहरीया तन मन धरै, ताहि नही बिसरांम ।

—अनुभववांणी

उ०—३ लख चौरासी जोनि मैं, मातो मोह सकांम । हरीया ऐसै जीव कुं, कहां नही बिसरांम ।

—अनुभववांणी

उ०—४ गजराज सूका सरोवर ढूढता फिरै छै । सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ अगनी सूं बळता थकां बोझा बनरा हाथियां री पेट री छाया सूता बिसरांम करै छै ।

—रा. सा. स.

उ०—५ हां रै राज इंद्र घडूकै हो, हां रै राज, औ तो इंदर घडूकै हो, हां हो म्हारा घड़ी नै, घड़ी रा बिसरांम अंवरजी इंद्र घडूकै हो ।

—लो. गी.

३ सुख-शान्ति, आनन्द ।

उ०—१ जनहरिया है मुगति कुं, नीसरणी निज नांम । चढि चापरि सु सिवरियै, जो चाहै बिसरांम ।

—अनुभववांणी

उ०—२ रांम नांम कुं सिवरतां, पाया मन बिसरांम । जनहरिया तै नांव का, मैं हूं सदा गुलांम ।

—अनुभववांणी

उ०—३ जै कोई चीन्है सहज कुं, सहजां आतम रांम । जनहरिया सहजां भया, मन इंद्री बिसरांम ।

—अनुभववांणी

४ आश्रमव्यवस्था में चौथा आश्रम, संन्यासाश्रम ।

उ०—हरीया ग्रेसा को मिळै, चित चौथै बिसरांम । ताप त्रिगुण सूं रहत है, निज भगता निहकांम ।

—अनुभववांणी

५ अवसान, मौत, मृत्यु ।

६ कार्य-काल के बीच आराम एवं जलपान हेतु मिलने वाला अवकाश ।

उ०—फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणं मायं हुथफेरी

करणी पैलाई। पास-मास विरिया, छुट्टी बिसराम रै वखत, करणी नै जमी पर सूंवो सुवांणवो, ऊपर चादर उढाई नथा सिनर पढाणो।

—दसदोष

७ ठहरने का स्थान, विश्रामस्थान।

उ०—१ हरिया हरी जीव है, मुख सागर बिसराम। मुगति हमारी सीपड़ी, निज धण मोती नाम। —अनुभववाणी

उ०—२ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ लेग बिसराम। हरीया जग में जावगा, वेग मिलायै राम। —अनुभववाणी

उ०—३ भूठा माया बकणा, ए जमपुर का काम। हरिया गुवचन साच का, विसनपुरा बिसराम। —अनुभववाणी

उ०—४ हरि बगतो हरि मन है, हरि है ठामो ठांम। हरिया हरि हिरदै मया, नाहि नही बिसराम। —अनुभववाणी

८ ठहराव।

उ०—१ सहजा सम दै सम्य किया, मन मोहादिक काम। जनहरिया मोरग जलां, सहज किया बिसराम। —अनुभववाणी

उ०—२ राम राम रस।। लिया, सास दास बिसराम। हरिया हिरदै कठ मे, सागर वरस मुकाम। —अनुभववाणी

उ०—३ सामी दास अगाहजे, कै मारीजे ग्राम। ... दीना रामपुर तिम कीधा बिसराम। —रा. रू.

उ०—४ म्हनै बडो अचूंभो आवतो हो कै कंबोई जिसी मोटी नगरी में जठै कै आभा सा चाला करता भेत माळिया, उणा हा पग दो मिनखा नै बिसराम करण जाग छ हाथ जमीन मिळणी कठण व्हैगी ही। — रातवासो

क्रि. प्र.—करणी, पाणी, मिळणी, लेणी।

९ अपमान, प्रभाव।

१० वाक्य के अंत में लगाई जाने वाली बिन्दु या खड़ी रेखा।

११ छन्द शास्त्रानुसार कविता, पद्य आदि के चरणों में वह स्थान जहां पढ़ते समय लय ठीक रखने हेतु थोड़ा विराम या ठहराव किया जाता है, यति।

उ०—१ दस दस पर बिसराम चव, मत न ठेना तुवन। गुरु लघु भर नियम नहि, उछत छद भखत। —र. ज. प्र.

उ०—२ पळ दस पर फिर अठ ठकाम, मभ तुक विसम दोय बिसराम। सम अठ अंत रगण आचार, मनुर गीत हिंचाळ उचार। —र. ज. प्र.

उ०—३ ते निसाणी छद ए, ... अतीस सुराम। मास अेक तुक बदल दस, वे दोय बिसराम। —र. ज. प्र.

रू. भे.—बिसराम, विसाम, विसामु, बिसाराम, विस्सांम, वीसाम, वीसामउ।

मह.—विसरामो, विस्सरामो, वीसामो।

अल्पा.—बिसरामी, विसरामी, विस्सरांमी।

बिसरामणो–वि.—१ विश्राम करने वाला।

२ विश्राम देने वाला।

३ सहारा देने वाला, सहायक।

रू. भे.—विसरावणो।

बिसरामणो, बिसरामबो–क्रि. अ. [सं. विश्रमण] १ आराम लेना, विश्राम लेना।

२ मरना, अवसान होना।

उ०—१ गतिभरम सभारमदन घणा, करणा तणो विरांमियो। नर भू पर कीरत करमणो, रायसिंघ बिसरांमियो। —नैणसी

उ०—२ स नरना राव सूजोजी कितरै हेकै दिनै बिसरांमियो। स हरा टीकै री नगारी हुई। साहरा ईंया ठाकुरां वीरमदे नूं पकड़ बाह अर गढ सूं हेठो उतारियो, नै सागै नू टीको दियो —नैणसी

उ०—३ लाखो देसवटै फिरै छै। फूल री चोथी दसा हुती। तै वासतै लाखैजी आ यान नही हुती, फूलजी री मोनूं गत कोई गणावा। स फूलजी बिसरांमिया। लाखै नू कोई कहे नही। —लाखै फूलांणी री बात

३ युद्ध में वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ रण मारग बिसरांमियो, नह धूडो नमियोह। गोल तणो काहयो गुणो, सूरज्ज सांमियोह। —पा. प्र.

उ०—२ आहुई बडो राठोड बिसरामियां, तज गया दूसरा न सायन सा। हसा नित वरीसण न को इळ रायहर, हसत बध कवि नही जगत म हेर। —द दा.

४ ठहरना, रुकना।

५ सहारा देना, आश्रय देना।

बिसरामणहार, हारो (हारी), बिसरांमणियो –वि०।

बिसरांमिग्रोड़ो, बिसरांमियोड़ो बिसराम्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिसरांमीजणो, बिसरामीजबो—भाव वा०।

बसरांमणो, बसरामबो, बिसरामणो, बिसरामबो, बसरांनणो, बसरामबो, बिस्रामणो, बिस्रांमबो, वीसामणो, वीसांमबो —रू० भे०।

बिसरामियोड़ो–भू. का. कृ.—१ आराम लिया हुआ, विश्राम लिया हुआ. २ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ३ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ४ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ. ५ युद्धक्षेत्र में वीरगति प्राप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. बिसरामियोड़ी)

बिसरांमी-वि.—१ विश्राम करने वाला।

उ०—सुखदाइ सीतल स्वांमी रे, प्रभु सुमता रस **बिसरांमी** रे। उपकारी गुण अभिरांमी रे, नमियें एह नें सिर नांमी रे।
—ध. व. ग्रं.

२ विश्राम देने वाला।

३ देखो 'बिसरांम' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—बिसरांमी, विस्रांमी।

बिसरांमो—देखो 'बिसरांम' (मह., रू. भे.)

उ०—उतिम सिवरन हिरद सयांनुं, मांहीमांहि भया घर घ्यानुं। रसनां लीया रांम का नांमा, उर भीतरि पाया **बिसरांमा**।
—अनुभववांणी

उ०—२ दूख पाऊं छूं आप, पापां रे परताप। तौ तूं जांणदे ए, **बिसरांमो** रांणदे ए।
—जयवांणी

बिसराइणौ, बिसराइबौ—देखो 'बिसराणौ, बिसराबौ' (रू. भे.)

बिसराइणहार, हारौ (हारी), बिसराइणियौ—वि०।
बिसराड़ियोड़ो, बिसराड़ियोड़ो, बिसराड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बिसराड़ीजणौ, बिसराड़ीजबौ—कर्म वा०।

बिसराड़ियोड़ो—देखो 'बिसरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसराड़ियोड़ी)

बिसरायाण-सं. पु.—दान। (अ. मा.)

बिसराणौ, बिसराबौ-क्रि.स.—१ विस्मरण करना, भूलना।

उ०—१ सोख सुनत ही सुधि भई, तन आपो बिसराय। जन-हरिया मन गरक हुय, तरक फरक नहीं थाय। —अनुभववांणी

उ०—२ बेटै बाप **बिसराया**, भाई वीसारेह। सूरां पूरां गल्लड़ी, चारण चीतारेह। —रा. सा. सं.

उ०—३ बीटू कवल न चूकजे, लगी जीव कै लार। **बिसराई** नहीं वीसरै, केवळ प्राण अधार। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ गल्ती करना।

३ त्यागना, छोड़ना।

बिसराणहार, हारौ (हारी), बिसराणियौ—वि०।
बिसरायोड़ो—भू० का० कृ०।
बिसराईजणौ, बिसराईजबौ—भाव वा०।

बसरांमणौ, बसरांमबौ, बिसराड़णौ, बिसराड़बौ, बिसराणौ, बिसराबौ, बिसरावणौ बिसरावबौ, बीसराणौ, बीसराबौ, बीसरावणौ, बीसरावबौ, बोसराणौ, बोसराबौ, बोसरावणौ, बोसरावबौ बिसराड़णौ, बिसराड़बौ, बिसरावणौ, बिसरावबौ, बिसराहणौ, बिसराहबौ, बीसराणौ, वीसराबौ, वीसरावणौ, वीसरावबौ
—रू० भे०।

बिसरायण-सं. पु.—दान। (अ मा.)

बिसरायोड़ो-भू. का. कृ.—१ विस्मरण किया हुआ, भूला हुआ. २ गल्ती की हुई, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

(स्त्री. बिसरायोड़ी)

बिसरारण—देखो 'बिसरायण' (रू. भे.) (ह नां. मा.)

बिसराळ, बिसराळो बिसराळी-वि. [सं. विष+रा. प्र. राळो] १ विषैला, जहरीला।

२ क्रोधी, क्रोधयुक्त।

३ रसहीन, कड़वा, नीरस।

४ जोशपूर्ण, जोशयुक्त, जोशीला।

उ०—नीधसिया **बिसराळ** न धांबै, दळ पड़ धोकै तीरमदाज। भटकां बह सांमुहा भोकै, रोकै कुण एकल गिड़ राज।
—महादांन मेहडू

५ भयंकर, भयावह।

उ०—**बिसराळ** अंबाळ धुरै रवि बीहस, लाह अखेट लंकाळ। अजेरा जेरण घेर असंगां, फेर दुहाई फाळ। —मा. वचनिका

६ निन्दाजनक काव्य की रचनाएं करने वाला।

७ कर्णकटु कड़वा।

उ०—वायक **बिसराळाह**, मुणिया थें मांमी मनै। वे धांधळ वालाह, केवा मैं मह काविया। —पा. प्र.

सं. पु. निन्दायुक्त कविता।

रू. भे.—बिसराळ, वसराळ, विस्राळ, विस्राल, विस्राळी, विस्राली, बिसराळी, बिसराली।

बिसरावणो—देखो 'बिसरांमणौ' (रू. भे.)

बिसरावणौ, बिसरावबौ—देखो 'बिसराणौ, बिसराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुमरो री माळा पहरावो, जनम मरण मेटै बिन जाय। विध विध रा भोजन **बिसरावै**, बयबो जाय खाय मा-बाप।
—भगतमाळ

उ०—२ गांव में ही पी'र, गांव में ही सासरो। पूटरी आवै-जावै अर आंणद सूं ओपै है। कुणीभ्या री कांम नी, आछो नांव-नांमून कर राख्यो है। सासू सुसरो सरावै, वास रा मांणस बडाई करै। कोई ही बिसरावै नहीं सगळा मोभ्या करै। —दसदोख

उ०—३ सुगी वात मुविहांण, पुत्र सुरसांण अप्रबळ। दरद जीव मो दहै, करद जिम महै विना कळ। असपती ऊचरै, वेध छत्री **बिसरावौ**। छडि हंस महि छोड, भेग अहि मक्कै जावो। —रा. रू.

उ०—४ मारो मार मचायां मनवो, आप अेक घर आवै। अेक ठोड आयां मैं अनुभव, बस सुघ बुध **बिसरावै**। —ऊ. का.

बिसरावणहार हारौ (हारी) बिसरावणियौ वि० ।
बिसराविप्रोड़ौ बिसराबियोड़ौ, बिसराय्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिसरावीजणौ, बिसरायीजबौ —भाव वा० ।

बिसराबियोड़ौ—देखो 'बिसरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिसराबियोड़ी)

बिसराहणौ, बिसराहबौ देखो 'बिसराणौ, बिसराबौ' (रू भे.)

बिसराहणहार, हारौ (हारी), बिसराहणियौ - वि० ।
बिसराहिप्रोड़ौ बिसराहियोड़ौ बिसराह्योड़ौ भू० का० कृ० ।
बिसराहीजणौ बिसराहीजबौ - कर्म वा० ।

बिसराहियोड़ौ देखो 'बिसरायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिसराहियोड़ी)

बिसरियोड़ौ-भू. का. कृ —१ कुपित हुवा हुआ, २ कुपित हुवा हुआ, क्रोधयुक्त हुवा हुआ. ३ फैला हुआ ४ विस्मरण हुवा हुआ, भूला हुआ ।

(स्त्री. बिसरियोड़ी)

बिसलूमौ-स. पु. एक प्रकार का हिंदवाना से मिलता-जुलता कच्चा फल । (शेखावाटी)

बिसल्या-स. पु. [स विशल्या] १ रामानुज लक्ष्मण की पत्नी ।

२ एक नदी जो वरुण की सभा में रह कर वरुण की उपासना करती थी ।

३ एक औषधि का नाम जो शरीर में लगे बाणों को निकालने के लिए लगाई जाती है ।

बिसव-स पु. [सं. विश्व] १ पृथ्वी, धरती, भूमि ।

(अ. मा., ना मा.)

२ स्वभाव आदत, प्रकृति । (ह. ना. मा.)
३ देखो 'विश्व' (रू. भे.)

उ०—१ अमतरी वाता मारी बिसव, अणकारी उतपात सो । अज-मेर काज 'आरंग' नै, सुण लागी मन धात मो । —रा. रू.

उ०—२ पातसाह रावत रहै, जालंधर महाराज । बिसव अवर जवनां वसू, करै सको गिल काज । —रा रू

उ०—३ पृथ्वी पह आग बाळपण बारे, साई त्या ततकाळ सभारे । यो पतसाह तिसो अन्याई, बिसव अनीत जोन बरताई । —रा. रू.

उ०—४ निरख छूटै रिपु प्रद समिनदण, कुळ मातुळ मुख अरो-निकंदण । राजभवन सुरगुर सुभ राजै, बिसव एक छत्र आण बिराजै । —रा. रू.

उ०—५ आलम बाळौ मंगणां, उर मगणां बदार । बक उदारा बिसव मै, बाळौ जस बिसतार । —बा. दा.

उ०—६ नं करता नं भोगता, रहै अकिरिता रांम । बिसव घड़ै भांजै बिसव, बिसव तणौ बिसरांम । —पी. ग्रं.

बिसवकसेन—देखो 'विस्वकसेन' (रू. भे.)

बिसवक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.) (अ. मा.)

बिसवजूण, बिसवजोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे.)

बिसवतरेखा-स. स्त्री [सं. विषुवरेखा] पृथ्वी के ठीक मध्य में पूर्व या पश्चिम की ओर चारो ओर मानी जाने वाली एक कल्पित रेखा । (भूगोल, ज्योतिष)

रू. भे—बिसुवरेखा ।

बिसवनाथ— देखो 'विस्वनाथ' (रू. भे.)

उ०—१ भिरजो पैठो डेरां मांहे, सुज कर अरज घणां पग साहै । बाजै तेज नौबतां वाजै, बिसवनाथ निज तख्त बिराजै । —रा. रू.

उ०—२ वीठुल बिसवनाथ घन जदपत्त केसव स्रीवरं, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहर । अविगत आदि जुगाद उपावण अकळ अपपर, समरि जगदीस भगत साधार प्रेमेसरं । —पि. प्र.

बिसवयोनि - देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे)

बिसवाद-स. पु. [स. विषवाद] ७२ कलाओ में से एक ।

२ देखो 'विसवाद' (रू भे)

उ०—१ जगहरिया हरि कारनै, सो परमारथ स्वाद । आप सुवारथ हरि बिना सो स्वारथ बिसवाद । —अनुभववांणी

उ०—२ दादा दादा जग जस वादा, सोह्या सह नर मादा राज । टलइ अल्हादा गइ बिसवादा कुसल कुसल परसादा ।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ दुसम काल तणै परभावै, हुइ मांहो मां बिसवाद जी । तो पणि तुरत खमावी लीजइ, पंडित गुरु परसाद जी । —स. कु

उ०—४ विकथा चार कोधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद । इस्ट वियोग पख्या किया, रोदन बिसवाद । —स. कु.

बिसवाबीस —देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ० तन मन मोन संसार सब, राखे बिसवाबीस । सो साहिब सुमिरै नही, दादू मान हदीस । —दादूवांणी

बिसवामंत्र, बिसवामित, बिसवामितर, बिसवामिति, बिसवामित्र, बिसवा-मित्रि—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे)

उ०—१ किसन री मूरै दरसण कियौ, कर जोड़ै कीरति कहै । करतार काजि दसरथ कन्हौ, बिसवामिति आया वहै । —पी. ग्रं.

उ०—२ बिसवामित्रि कारणै, प्रभु चडियो जिगि पालण । जां मारै ता मुगति, आज ताडका उधारण । —पी. ग्रं.

बिसवाबीस-अव्यय.—१ निश्चय ही, अवश्य ही, जरूर ।

उ०—सूर लड़ै जब कब सिर, कमंध लड़ै विण सीस । हरिया सूर कमंध बिच, विवरो विसवावीस । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ चलणा है, रहणा नहीं, चलणा विसवावीस । ग्रैसै सहज सुहाग पर, कुंण गुंथावै सीस । —ग्रग्यात

उ०—३ रीझ लडिवां तीज री, पदमण वचन प्रमांण । ग्रास्यां विसवाबीस मैं, सिव सगत री ग्राण । —पनां

२ सत्य, ठीक ।

उ०—१ ग्राह पकड़ै खांच गाढो, सलल फिरगो सीस । तज गरुड़ गजराज तारै, बात विसवाबीस । तो जगदीस जी जगदीस, जन काज दोड़णा जगदीस । —भगतमाळ

उ०—२ राजा ग्रति ग्रातुर थयो, तेहनैं कीधी रीस । उत्तम तिहां किण ग्राविनै, बोलै विसवावीस । —वि कु.

३ निस्सन्देह ।

उ०—कहियो न्रप कारिज सिघ कीजै, दत वर मूझ पदमणी दीजै । वदै सिद्ध न्रप विसवाबीसां, पदमण ग्रांगूं दीह पचीसां । —सू. प्र.

४ निश्चयपूर्वक, यकीनन ।

वि. वि.—किसी बात के ग्रौचित्य को मान लेने के लिये जिस प्रकार यह कहा जाता है कि "यह बात सोलह ग्राने खरी है।" या यह शत-प्रतिशत सही है । "बीस-विसवा" ठीक इन्हीं ग्रर्थों में बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होता है । कभी-कभी बीस विसवा के स्थान पर 'सौ विसवा' भी बोला जाता है । पर दोनों का ग्राशय एक ही है ।

५ पूर्णरूप से ।

उ०—पेठ तणैं मन मांहि उदधि मां कुमरी वसै निसदीस, त्रिरह विलूधो रे विसवावीस । नलिनी देखि भमर जिम ग्रटकै, तिम तसु मिलण जगीस । —वि. कु.

रू. भे.—बिसवाबीस, बिस्वाबीस. बीसबसा, बीसबिसवा, बीस-बिस्वा, बीसवाबीस, बीसविसा, बीसांबीसै, बीसाबीस, बीसुबसा, मिसबावीस, विसवाबीस, बिसवाहीवीस, बिसव्वावीस, बिसहवीस, बीसविसवा, बीसविसा, बीसवीसा, बीसवीस्वा ।

बिसवाबीसइ—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—पटणी पारिख सूरजी सघ सुं, जात्र करी लाभ सुजगीसइ । समयसुंदर कहइ साथउ मंइ जांण्यउ, बीतराग देव विदा बिसवा-बीसइ । —स. कु.

बिसवास—देखो 'बिस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ जां जीतो सारो सगत, त्यां सब ग्राई रास । भाग जिन्हां दा जांणियै, जै राखै बिसवास । —गजउद्धार

उ०—२ ग्रैसै नर ग्रस्वो भयो, ग्रग सिंघ को मोह । हेत बिसवास न होत है, बातां करत बिमोह ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ स्यांणप सूं सौदो पटायो, बेटै रो बाप नाव-नांमून में ग्रायो । डांगै रो बिसवास जम्यो ग्रर दायजै टीकै रो मोल मांग्यो न थम्यो । सगै-सगै री रळग्यो जो मीठा हुया ज्यूं सक्कर घी । —दसदोख

उ०—४ मा'रजा नैं ग्रापरी मितर बता-बता मार नांख्यो । पण ग्रोजूं बात रो बिसवास करै साच कूड़ रो बेरो पट जावै तो किसो नदलाल नैं माड़ो बता देवे । —दसदोख

उ०—५ लांधूरांम राजदरबार रो हतो वडो निधड़क चौधरी होवतां थकां भी भूत-पलीत, डोरा-डाडा, देई-देवता ग्रर डाकण-स्यारी नै कदै ही कूड नी बतावै । ग्रांधो बिसवास राखतो थको हिड़दै में मानतो रै'वै । —दसदोख

उ०—६ पूरणदस ग्रामियां, जनम होसी जोधाहर । वधै वंस बिसवास, ग्रास तै उग्रास मुरद्धर । —रा. रू.

उ०—७ सुत 'गोयद' धांधळ सकज, दुझल बिहारीदास । राजा निज पुर रखियो, वचन जिकै बिसवास । —रा. रू.

बिसवासघात—देखो 'बिस्वासघात' (रू. भे.)

बिसवासणो, बिसवासबो—देखो 'बिस्वासणो, बिस्वासबो' (रू. भे.)

बिसवासणहार, हारो (हारी), बिसवासणियो—वि० ।

बिसवासिग्रोड़ो, बिसवासियोड़ो, बिसवास्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिसवासीजणो, बिसवासीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिसवासिग्रा—सं स्त्री.—ग्रार्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिलाकर ६ गुरु ग्रौर ३६ लघु वर्ण सहित ५७ मात्राएं हों ।

बिसवासियोड़ो—देखो 'बिस्वासियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसवासियोडी)

बिसवासो—स. पु. [सं. विश्वाची] एक प्रकार का वात रोग विशेष जिससे कंधे से लेकर ग्रंगुलियों तक सारा ही हाथ न तो सिकोड़ा जा सकता है ग्रौर न ही फैलाया जा सकता है । (ग्रमरत)

२ देखो 'बिस्वासी' (रू. भे.)

उ०—ग्रंब बिसवासो मिनख, हरेक ग्रादमी री कैयोड़ी बात नै सांची मांनण खातर ही वण्यो है । नटणैं खातर हरगिज नहीं । चावै कोई ग्रफंड करो तथा जाळ । —दसदोख

बिसवाहोवोस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—दिल ग्रंतर एह विचारी दसरथ, धर पदवी जुवराज सधीर । सो देणी बिसवाहोबोसै, राज जोग दीसै रघुवीर । —र. रू.

बिसबि—देखो 'बिस्व' (रू. भे.)

उ०—१ वीठुल बरदाई बडो बडाई, बिसबि सराई ब्रजवासी। मेरगिर ग्रांमी सुर नर मांमी, ग्रंतरजांमी ग्रविणासी। —पि. ग्रं.

उ०—२ बडा ही बडा ग्राचार दीपै बिसबि, बहै सनळां खळां लेनि बागं। जग हथं बधियं 'गजण' गो जैत-हथ, जग हथा बंधपण बिरद जागै। —केमोदास गाडण

बिसवेस—देखो 'बिस्वेस' (रू. भे.)

उ०—स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करुणाकर कारण-करण। व्रज नायक बिसवेस बिसंभर, घणनांमी प्राणदघण। —र. ज. प्र.

बिसवो—स. पु.—१ जमीन को नापने का एक नाप विशेष जो एक एकड़ के पचासवें भाग के बराबर होता है।

उ०—थावं कोई ग्रफंड करो तथा जाळ। बींरै वास्तै तो बीघै भूत ग्रर बिसवै सांप हाळी कैवत मांची है। खेजड़ी-खेजड़ी गोगा ग्रर खेतरपाळ खड्या दीसै। —दसदोख

२ अंगुली की गांठ या जोड़ जहां से वह मुड़ सकती है।

३ अंगुली के जोड़ के स्थान पर पड़ी रेखा।

४ पूर्णता के माप का निश्चित अंश।

उ०—हिवै वीरमजी जाय जोइयै रह्यो, जोईयां घणो ग्रादर दियो, घणा होड़ा किया कह्यो वीरमजी विगै में ग्राया छो, बेतरच छो। ताहरां दाण माहे बिसवो कर दियो। —नैणसी

५ ग्रन्न पदार्थ ग्रादि यत्किंचित्।

६ पिंगल प्रकाश के अनुसार एक वर्णिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम नगण फिर सगण फिर यगण होता है।

७ सार्वजनिक पशु (धाकल) के लिए गेहूं ग्रादि की हरी फसल में से लाया गया चारा जो कि प्रत्येक दिन ग्रलग २ कुए से लाया जाता है।

रू. भे.—बिस्वो, विसोवा, विसोवा, विस्वो।

बिसब्बावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—घन सूरातन धन ग्रडप, घन राठोडां ईस। मुणि सुरताण कबूल की, वात बिसब्बावीस। —गु. रू. ब.

बिससन—स. पु. [सं. विशसन] एक नरक का नाम।

बिसहर—सं. पु. [स. विषधर] सर्प, सांप।

उ०—१ तन बंबही मन बिसहर माही, इस्य रम्य आहि सकळ जुग तांही। विसम लहरि ऊठं ग्रग ग्रगा, ता तैं होय सकळ जुग भगा। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ मैलो ग्रत ग्रदमार मन, रच जस तणौ रहै न। तन काळो बिसहर तणो, कनुक मेत सहै न। —बां दा.

उ०—३ सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह निसांण। पालंखी बिसहर भई, मंदिर भयउ मसांण। —ढो. मा.

उ०—४ मूल मंत्र जाणै कुछ नाही, बिसहर ले मेलै गल मांही। जैसा फुनि गति सो है माया, जै खाया तैं बहोड़ि न ग्राया। —ह. पु. वा.

वि. [स.] विष के प्रभाव को दूर करने वाला, विष के प्रभाव को हरण करने वाला।

रू. भे.—बिखहर, बिसहर, बिक्खहर, बिसहरि।

बिसहरतिथ, बिसहरतिथि—स. स्त्री.—नागपंचमी।

रू. भे.—बिसहरतिथ, बिसहरतिथि।

बिसहरा—सं. स्त्री. [स. विषहरा] मनसा देवी का नामान्तर।

बिसहरि—देखो 'बिसहर' (रू. भे.)

उ०—सब जीव भुवंगम कूप में, साधू काढ़ै ग्राइ। दादू बिसहरि बिस भरै, फिर ताही को खाइ। —दादूवाणी

बिसहरी—सं. स्त्री. [सं. विषहरा] मनसादेवी का नामान्तर।

बिसहविसा, बिसहवीसा—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिसांई—देखो 'बिस्रांति' (रू. भे.)

उ० ग्रेक पेड रै नळै बिसांई ली। गंगलो लकड़ियां चुग लायो डोकरी रोटियां पोवण लागी। —वरसगांठ

बिसांगणा, बिसांगना—सं. स्त्री. [सं. विष+ ग्रंगना] १ विषकन्या।

२ नाग कन्या।

बिसांण—सं. पु. [सं. विषाण] १ हाथी दांत।

२ पशु का सींग।

३ सूग्रर का दांत।

रू. भे. बिसाण, विखाण, विखांन।

बिसांणण, बिसांगन—स. पु. [सं. विष+ग्रानन] सर्प, सांप।

बिसांणिन—स. पु. [स. विषाणिन्] एक जातिसमूह, जो दाशराज युद्ध में सुदासराजा के पक्ष में था।

बिसांणी—देखो 'बिस्रांति' (रू. भे.)

बिसांणो—स. पु. [स. विषाण] विवाह के लिए खरीदा गया हाथीदांत का चूड़ा।

उ०—सोममी सांखलै मारी सभाई कीधी। बरी बिसांणो रावजी लेनै ग्राया गोधूळक समै परणिया। रातिवासै पोढिया। प्रभातै सुखपाल में बैसाण नै गढ जालोर लै ग्राया। —वीरमदे सोनिगरा री बात

रू. भे.—बिसाणो।

बिसांतक—बि. [स. विष+ग्रंतक] १ विष को नष्ट करने वाला, विष के प्रभाव को दूर हटाने वाला।

स. पु.—शिव, महादेव।

बिसांनी-स. स्त्री.—शरपुंखा।

रू. भे.—बिमांनी, बिसूनी, बिहांणी, बिहांनी, बिहूंणी, बिहूणी, बिहूनी।

बिसाइत—देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—प्रथम तौ द्रव्य हुवै तौ देवैं, म्हारै घर मैं पांच लाख री **बिसाइत** छै, गढ गिरनार रौ धणी तियै रै पाच लाख री माया तौ बीजा राजां रै कठा द्रव्य ? —सयणी री बात

बिसाइति, बिसाइती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'विसाती'

बिसाऊ-वि.—खरीदने वाला, क्रेता, खरीददार।

उ०—१ कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवदा। विणज **बिसाऊ** कुण वेस, कुण सुद्र कहदा। —केसोदास गाडण

उ०—२ महि मातौ मैंगळा, विडग ताता कारवांनां। किसतूरी कुमकुमा, अतर गांवियां दुकानां। केसर चनण कपूर, अंग अरगचा अबीरां। और बिहद अेवास, सुगंध चील पर समीरां। वादळा तास थिरमा वसत्र, बासतां ऊंच बजाज रां। **बिसाऊ** 'सेर' महगी बुसत, गौ गाहिक सोदागरां। —पहाड़खां आढो

बिसाख-सं. पु. [सं विशाख:] १ स्वामीकार्त्तिकेय।

(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

२ शिव, महादेव।

३ इंद्र-सभा का एक महर्षि।

४ स्वामी कार्तिकेय का छोटा भाई।

५ आयु राजा का एक पुत्र, एक राजा।

बिसाखा-स. पु. [स. विशाखा] सत्ताईस नक्षत्रों मे से सोलहवां नक्षत्र, जिसमें चार तारे होते हैं।

उ०—१ नखत **बिसाखा** तिथ्रो चवद्दस, घड़ी च्यार पळ वीस गयां निस। मिथुन लगन सोभन मिळ जागै, सकुन करण दुख हरण सजोगै। —रा. रू.

उ०—२ तदि निसा च्यार घटिका वितीस, ऊपरा वळै पळ सताईस। वणि नखित्र, **बिसाखा** जेणि वार, 'अभमाल' जनम लीधौ उदार। —सू. प्र.

रू. भे.—बिसाख, बिसाखा।

बिसाग—देखो 'बिसाद' (रू. भे.)

उ०—बिहूं रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सभै जग विस्वामित्र सहाय। जनंक तणौ वळि जोयौ ज्याग, भांगै धनुख कट्टण सीय **बिसाग**। —ह. र.

बिसाड़णौ, बिसाड़बौ—देखो 'बिसाणौ, बिसाबौ' (रू. भे.)

बिसाड़णहार, हारौ (हारी), बिसाड़णियौ—वि०।

बिसाड़ियोड़ौ, बिसाड़ियोड़ौ, बिसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसाड़ीजणौ, बिसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बिसाड़ियोड़ौ—देखो 'विसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसाडियोड़ी)

बिसाजुद्ध, बिसाजुध—देखो 'बिसायुद्ध' (रू. भे.)

बिसाणौ, बिसाबौ-क्रि. स.—१ छितराना, फैलाना, बिखेरना।

२ खरीदना, मोल लेना।

उ०—१ काच कथीर **बिसाय** कर, कोई कनक घड़ावै।

—केसोदास गाडण

उ०—२ खुरासांण उतपन्न, सोझ ऐराक **बिसाया**। कर दरियावां पथ, जिकै नावां सिर आया। —रा. रू.

उ०—३ काछौ करह बियूँभिया, घड़ियउ जोइण जाइ। हरणाखी जउ हसि कहइ, आणिसि एथि **बिसाइ**। —ढो. मा.

३ निवास कराना, ठहराना।

उ०—छांडि गयौ अब कहां **बिसासी**, प्रेम की बाती बराय। बिरह समुद्र में छांडि गयौ पिव, नेहकी नाव चलाय। —मीरां

४ बेचना, बिक्री करना।

उ०—१ नठा उपरांत करि राजांन सिलांमति तिण सहिर मांहै छत्रीस पवन जाति रहै छै। तिण सहिर मांहै बाजार चौहटा मंडिया छै। सोना रूपा जवहर जड़ाव कपड़ा पटकूल रेसम पसमरा बाब भांति भांत्ति **बिसाईजे** छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ किरचा फाक्यां री कोथळी, बीड़ी सिगरेटां री डबी अर बेटरी, वाजां री पेटी रासभिया रै पेटा मायँ लटकायां खोड़ में विसायत खांनो सो **बिसाया** फिरै है। —दसदोख

५ स्थापित करना।

बिसाणहार, हारौ (हारी), बिसाणियौ—वि०।

बिसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसाईजणौ, बिसाईजबौ—कर्म वा०।

बिसाणौ, बिसाबौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ, बिसाड़णौ, बिसाड़बौ, बिसावणौ, बिसावबौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ—रू० भे०।

बिसात—१ देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—मायँअेक देस मैं रावजी रौ अमल छै। थांणां सूं हमेसा राड़ां हुवै छै। जिणां दिनां वीरमदे दूदावत सूं मेड़तौ छूटौ सू **बिसात** थकां राव कल्यांणमलजी कनां आयौ सू आ वात इण तरह छै। —द. दा.

२ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

बिसाति, बिसाती–सं. पु.—१ व्यापार करने वाला व्यापारी।

उ०—'मूज' हर मिळै अधिपांमणां माज मूं, जैतखंभ आज रो किला जेरै। वारणां लियण हेरै नह बिसाती, हैवरा हूंकळां वळां हेरै। —उम्मेदसिंघ सीसोदिया रो गीत

२ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

बिसाद–स. पु. [स. विषाद] १ दुःख, शोक।

उ०—तुरत देय अम्रत कळस, मेट्यो सत्रु बिसाद। इसो उदार बिक्रम न्रपति, सुणो भोज संवाद। —सिघासण बत्तीसी

२ निराशा या हताश होने की अवस्था या भाव।

३ दुर्बलता, कमजोरी।

४ मूर्खता, अज्ञानता।

५ उपायों के अभाव में पुरुषार्थहीनता।

रू. भे.—बिखाद, बिमाद, बिखाद, बिसाग।

बिसादी–बि. [स विपादिन्] जिसे विषाद हो, विषादयुक्त, विषादग्रस्त।

रू. भे.—बिखादी।

बिसाबीस—देखो 'बिसवाबीस' (रू. भे.)

बिसायत–स. पु.—१ देखो 'बिसाती'

२ देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—१ सो रावजी रै नांनाणै दिमा सौ साथ हुतो, सु रावजी जुहार कहायो। त्यां खीरावजी ने भीतर बोलाया निछरावळां कीवी। अर कह्यो—बाबा! रिजक, बिसायत दीसै छै सु थाहरो छै। भोजन करो। —नैणसी

उ०—२ राम मरोखा नांव न कछि मैं, गायां पातिग जात। पूरी एक बिसायत पाई, लूटै कबुयन खात। —अनुभववाणी

उ०—३ साह रै एक बेटो हुतो। तठै भो आदमी आयो हुतो, तिको ठकुरै रै माळियै बिसायत देय राजी हुवो। इयै मन माहै बिचारी, जु साह तो बडो साह दीसै छै।

—ठकुरै साह री वात

३ देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायत पाछलै पोहर री ढळती छाया री बिसायत कीजै छै। देसोत सिरदार जाजलमां पधारै छै। केस सुंवारै छै।

—रा. सा. स.

उ०—२ चौरंगां री छाटखड़ हुयने रही छै। कटोरां मांहै फूल लीजै छै। बाकरा होसनाकां बसू कीजै छै। देसोत रवां घोय हाथ ऊजळा कर बिसायतां ऊपर बिराजमांन हुवा छै। —रा. सा. स.

बिसायति, बिसायती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'बिसाती'

बिसायुद्ध, बिसायुध–सं. पु. [सं विषायुद्ध] १ सर्प, सांप।

२ विष मे बुझाया हुआ अस्त्र।

वि.—विष म बुझाया हुआ, विषैला।

रू. भे.—विखाजुद्ध, विखाजुध, बिखायुद्ध, बिखायुध, बिसाजुद्ध, बिसाजुध।

बिसायोड़ो–भू. का. कृ—१ छितराया हुआ, फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ। २ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ। ३ निवास कराया हुआ, ठहराया हुआ। ४ बिक्री किया हुआ, बेचा हुआ। ५ स्थापित किया हुआ।

(स्त्री. बिसायोड़ी)

बिसार–स. स्त्री. [स] १ मछली। (अ. मा., ह नां. मा.)

२ देखो 'बिस्तार' (रू. भे.)

बिसारण, बिसारणो–वि. (स्त्री. बिसारणी) विस्मरण कराने वाला, भुलाने वाला।

रू. भे.—बीसारण, बीसारणो।

बिसारणो, बिसारबो–क्रि. स.—१ विस्मरण करना, भुलना।

उ०—१ सो सपूत जै पीढ़ी राखै, दुरजन होण कदे ना भाखै। बैरा तिणा बिसारै बेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा।

—डाढाळै सूर री बात

उ०—२ थे तो नाभि नरिंद कुल चंदा, राजि थांनइ सेवै सुर नर इंदा। थांरो ध्यांन हिया विच धारूं, राजि थांनइ निसि दिन कही न बिसारूं। —वि. कु.

उ०—३ ढोला, ढीली हर किया, मुंक्या मनह बिसारि। संदेसउ नह पाठवइ, जीवां किसइ अधारि। —ढो. मा.

उ०—४ भाम गांम धांम ठांम ठहांम नकूं भ्रांम, तमाम निहार साम लै अराम ताम। दांम दाम बिसार निकांम छोड़ ह्वै उदांम, नरा जाम जाम मै उचार रांम नांम। —र. ज. प्र.

२ परित्याग करना, त्यागना।

३ गलती करना।

४ आरम्भ करना, शुरू करना।

उ०—सीकोतरि मककणी प्रेत डककणी अपारां, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारा। गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कंक को गिणै ग्रास पळ संभळ आया। अछरां स्रंगार धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियो। महि मयण संग खेलां मिळै, आगम जंग बिसारियो। —रा. रू.

बिसारणहार, हारो (हारी), बिसारणियो—वि०।

बिसारियोड़ो, बिसारियोड़ो, बिसारघोड़ो—भू० का० कृ०।

बिसारीजणो, बिसारीजबो—कर्म वा०।
बइसारणो, बइसारबो, बिसारणो, बिसारबो, बीसारणो, बीसारबो, बोसारणो, बोसारबो—रू० भे०।

बिसारद—वि. [सं. विशारद] १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, विशेषज्ञ।
२ विद्वान, पंडित, कवि। (अ. मा., ह. नां. मा.)
३ चतुर, होशियार, कुशल, निपुण।
उ०—सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। षदसारद पारद उकति, करण बिसारद बुद्ध। —रा. रू.
४ प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर।
५ श्रेष्ठ, उत्तम।
रू. भे.—बिसारद।

बिसारियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विस्मरण किया हुआ, भुलाया हुआ. २ परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ. ३ गलती किया हुआ।
(स्त्री. बिसारियोड़ी)

बिसारो—सं. पु.—विस्मृति, भुलावा।
उ०—१ तद बहुवां सारी मुजरो कर बोहड़ी, डेरै आई। सो आप एकठी बैस कहण लागी—"आपां कुंवरजी नूं किण भांत बिलमास्या, बात विसारै घातस्यां। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ उण दिन सूं सारा मोहल इसी हीज तवज्या लोक-लोक री करण लागी अर कुंवरजी नूं इसा खुस कीया, जैसूं रच रहा। नेट दिन आडा पडता गया, ज्युं ज्युं बात बिसारै पड़ती गई। आदमी पण कदै ही कोई खरळां दिसलो बात काढै नहीं।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ नंदलाल रो नांव आवै जद स्यांमजी सफा सीतळ पड़ ज्यावै। मूंछ सवारै, श्रोला खावै, गैरी हाळी बात नै बिसारै घालणी चावै। —दसदोख

बिसाळ, बिसाल—वि. [सं. विशाल] १ दीर्घ, बड़ा। (अ. मा.)
उ०—१ बिसाल भाल तोप को विसाल जाळ बित्थुरै, धमक भू धुजावनी धमक मेघलौं धुरै। महांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बुनो महो, कथै कबीर नैं कहो चिराव की चहो चहो। —ऊ. का.
उ०—२ चिहुर अलक्का ऊपरो, बिकसै वदन बिसाळ। चोळ बरन्न कपोळ किय, रत्ता लोचन भाळ। —गु. रू. बं.
उ०—३ चढियै गयण गज चौथाह, गुड्डी जाण फब्बि गिरांह। वाजै वीरघट बिसाळ, पक्खर पूठि घूघर-माळ। —गु. रू. बं.
उ०—४ सोल कला सुंदरि, ससिवयणी चपकवन्नी बाल। काजल सांमल लह कइ, वेणी चंचलनयण बिसाल। —हीराणंद सूरि
२ विस्तृत, लम्बा-चौड़ा।
उ०—१ बिसाल भाल तोप को बिसाल जाल बित्थुरै, धमंक भू धुजावनीं धमंक मेघलौं धुरै। महांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बुनी महो, कथै कबीर नैं कहो चिराव की चहो चहो। —ऊ. का.
उ०—२ एक चित्त ऊजळा, चलै सुभ नीत रसत्तै। एक खूंन खुलवांन,बहै कोळाहळ मत्तै। एक मोर सारत्ति, घोर धूंवा रवि डंबर। ज्यौं वावळि बादळ, बिसाळ श्रोपै मग अंबर। —रा. रू.
३ ऊंचा।
४ प्रसिद्ध, मशहूर।
५ महान्।
उ०—१ क्रपाळ बिसाळ सिघाळ किसन्न, बदाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुवाळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस। —ह. र.
६ समय की निश्चित सीमा से अधिक, लम्बा।
उ०—विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणिय सबिता। वासर बिसाळ लहियं, चक वांणी मंगळ भवण। —गु. रू. बं.
७ बहुत, अधिक।
उ०—१ अप्रदिणतरि रांमलि करंतउ,जमण तडा तडि राउ पहुतउ। जलखेलती दीठी बाल, बेही बइठो रूप बिसाल। —सालिभद्रसूरि
उ०—२ देवी सुनी रै दूध तैं खीर रांधी, देवी मारकंड रूप तैं भ्रांत बाधी। देवी मंत्र मूळ देवी बीज बाळा, देवी चापणी सब्ब लीला बिसाला। —देवि.
८ लम्बा।
उ०—१ मद मसत हळवळ, हालि मैंगळ, विमळ स्यांमळ घटा वद्दळ। जांणि रद बग पंत उज्जळ, व्याळ माळ बिसाळ।
—महाराव हणूतसिंघ सेखावत री गीत
उ०—२ कंबुकंठ भुज बिसाळ, ग्रीव तीन रेखा। नटवर को भेस मांनु, सकळ गुण विसेखा। —मीरां
९ मात्रा की दृष्टि से अधिक।
उ०—बग्गी हाक बहादरां, वीछहि पड़ै बिसाळ। नाराजां ऊबाणियां खुरसांणियां कपाळ। —रा. रू.
सं. पु.—१ एक पर्वत का नाम। (पुराण)
२ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र।
३ एक प्रकार का हरिण।
४ लंका नगरी का एक राक्षस।
५ परिक्षित राजा की पत्नी वैशालिनी का पिता एक राजा।
६ कृष्ण का बालमित्र।
७ विश्रवस व अलबुषा अप्सरा का पुत्र।
रू. भे.—बिसाळ, बिसाल, विह्याळ विह्याल, बिसाळ₀, बिसाळ₂।

विसालक—सं. पु. [सं. विशालक] १ एक यक्ष जो कुबेर की सभा में रहता है।

२ वसुदेव पत्नी भद्रा का पिता।

विसाळता—सं. स्त्री. [सं. विशालता] विशाल होने की अवस्था या भाव।

विसाळद्रग—सं. पु. [सं. विशाल + दृग] शिव, महादेव। (ध. मा.)

विसाळनेत, विसाळनेतर, विसाळनेत्र—सं. पु. [सं. विशाल+नेत्र] शिव, महादेव। (क. कु. बो.)

विसाळपुरी—देखो विसाळापुरी' (रू. भे.)

विसाला—सं. स्त्री. [सं. विशाला] १ एक तीर्थ का नाम। (पुराण)

२ उज्जैन नगर का नाम।

३ सोमवंशीय राजा अजमीगढ़ की पत्नी।

४ गय राजा के यज्ञ से प्रकट हुई सरस्वती।

५ दक्ष प्रजापति की एक पुत्री।

६ कौशिक राजा की पत्नी।

७ महावीर्यपुत्र भीम राजा की पत्नी।

विसालाक्ष—सं. पु. [सं. विशाल+अक्ष] (स्त्री. विसालाक्षी) १ शिव का नामान्तर।

२ वास्तुशास्त्रविषयक अठारह प्रमुख ग्रंथकारों में से एक।

३ भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

५ विराट का छोटा भाई व सेनापति।

६ युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित मिथिलादेश का राजा।

७ भगवान् विष्णु का वाहन, गरुड़।

८ गरुड़ का एक पुत्र।

९ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम।

वि.—बड़ी व सुन्दर आंखों वाला।

विसालाक्षी—सं. स्त्री. [सं. विशाल+अक्षी] १ बड़ी एवं सुन्दर आंखों वाली स्त्री।

२ पार्वती देवी का नाम व उसकी एक मूर्ति।

३ चौसठ योगनियों में से एक योगिनी।

विसालाक्षीजात्रा, विसालाक्षीयात्रा—सं. पु. [सं. विशालाक्षीयात्रा] भादपद कृष्णा तृतीयाको किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—इसमें तिथि रात्रिव्यापिनी होना आवश्यक है। इस दिन उपवास व जागरण व भाद्रपद शुक्ला तृतीया को गौरी का पूजन कर गुड़ के पूये नैवेद्य में दिये जाते हैं।

विसाळापुरी—सं. स्त्री. [सं. विशालापुरी] उज्जैन नगरी का नाम।

रू. भे.—विसाळापुरी, विसाळपुरी।

विसाळू, विसाळू—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—बडा सांमि तै विसव किमि करि वणायौ, सरग सात पाताळ मुख मां समायौ। वडौ ताहरौ मुख उरलौ विसाळूं, किसन तूझ ना निमौ तुझ काळ-काळूं।—पी. ग्रं.

विसावणौ, विसावबौ—१ उपार्जन करना, कमाना।

उ०—'जोधा' हरां मिळै जोधारां, समहर रीठ वजायौ सारां। एक पोहर लड़ियौ बळ ग्रोडै, कमधां भाम विसावण कोडै।

—रा. रू.

२ उत्पन्न करना, नया पैदा करना।

उ०—१ वैर हमेस विसावणा, वाड़ विना वसणोह। वाघां रै क्यूं कर वणै, आरण आळसणोह।—बां. दा.

उ०—२ वैर विसावै वाघ सूं, वन मांझळ कर वास। जतन न राखै जांणजै, वेगौ जास विणास।—बां. दा.

उ०—३ वातां वैर विसावणा, सैणां तोड़ै नेह। हासै विस पीणा हरख, आद्या काम न एह।—बां. दा.

३ प्राप्त करना, पाना।

उ०—एकां लाभ विसाविया, एक मूळ ठगांणा।

—केसोदास गाडण

४ एकत्र करना, इकट्ठा करना, संग्रह करना।

उ०—दो असाढ, दो भादवा, दो आसोज कै मांय, सोना-चांदी वेच कै, नाज विसावो साय।—वरसा विग्यांन

५ देखो 'विसाणौ, विसावौ' (रू. भे.)

विसावणहार, हारौ (हारी), विसावणियौ—वि०।

विसाविग्रोड़ौ, विसावियोड़ौ, विसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसावीजणौ, विसावीजबौ—कर्म वा०।

विसावियोड़ौ—भू. का कृ.—१ उपार्जन किया हुआ, कमाया हुआ. २ नया पैदा किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ. ३ एकत्र किया हुआ, संग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ४ प्राप्त किया हुआ। ५ देखो विसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विसावियोड़ी)

विसावीस, विसावीसं—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—१ गजां रत पोट, पड़ि चोट तंबागळां, वखण अरि ओट लै विसावीसं। धजवड़ा गहै मन-मोट ज्यां सिर धरै, दवाळा कोट सैलोट वीसं।

—अनोपसिंघ सांदू

उ०–२ वदनीक पाय रा गाय रा दुजां विसावीस, प्रासुरां भजणा आडै घाय रा अभाव। अडोळ पाय रा सीह सुभाय रा आसतीक, सिहाय रा जना ओधराय रा सुजाव।—र. ज. प्र.

उ०—३ हणु थाप गांम बिथार भार अठार वन कर भेद । उग-णीस बरसं भोम ओवन बिसाबीस अमेद । —र. ज. प्र.

बिसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ समेळा जांह कन्है, तुरी अमेळा जास । रावत मांझी इक मनां, जांह रो किसो बिसास । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ यौं करता कितरा दिन वितीत हुवा सो गुवाळ पण बिसास कीधौ जांणै सो मोनै खाय तो नही ।
—गांम रा धणी री वात

उ०—३ चद सूरिज हुई दीया साख, पांनी पवन अरि धूर प्रकासि । हूं नवि जाणु य ईम करै, मुमी है ! नणद हुं ईणी बिसास ।
—बी. दे.

उ०—४ राम भरोसं ऊकळै, आदण ईसरदास । ऊकळता में ओर दै, बंदा राख बिसास । —ह. र.

बिसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—१ बिसासघात गोहलां, निपात डाभियां बुरी । करै कमंध चूक जोम, भोम आपरी करी । —पा. प्र

उ०—२ भुजां धारियौ न खाग तें बाकारियौ न बाघ सूरी, करग्गां प्रहारियौ ढगा सू प्रांणै कूंत । एकाएक लाखां बातां हारियौ धरम्म 'अजा', हिंदूनाथ मारियौ बिसासघात हूंत ।
—जीवौजी आढो

बिसासणौ, बिसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—कद यं नाग बिसासिया, नंग लिया अग-झल्ल । मान सरोवर कद गया, हूसां सीखण हल्ल । —अग्यात

बिसासणहार, हारौ (हारी), बिसासणियौ—वि० ।
बिसासिम्रोड़ौ, बिसासियोड़ौ, बिसास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिसासीजणौ, बिसासीजबौ—कर्म वा० ।

बिसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिसासियोड़ी)

बिसास्त्र—स. पु. [सं. विष+अस्त्र] १ विष में बुझा हुआ अस्त्र ।

२ साप, सर्प ।

बिसाहणौ, बिसाहबौ—क्रि. स.—१ स्वीकार करना ।

२ ग्रहण करना, पकड़ना ।

उ०—सब जीव बिसाहैं काळ कौ, कर कर कोटि उपाइ । साहिब कौ समझै नही, यौं परळै ह्वै जाइ । —दादूबांणी

उ०—२ दादू कारण काळ कै, सकळ संवारै आप । मीच बिसाहै मरण कौ, दादु सोक संताप । —दादूबांणी

३ देखो 'बिसाणौ, बिसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ करि उच्छव सूरजकवर, कीध विदा 'अमसाह' । रिध सोवन मोती रतन, वसन अमोल्य बिसाह । —रा. रू.

उ०—२ मोतिए बिसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल सोभण मुख मूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप । —वेलि.

बिसाहणहार, हारौ (हारी), बिसाहणियौ—वि० ।
बिसाहिम्रोड़ौ, बिसाहियोड़ौ, बिसाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिसाहीजणौ, बिसाहीजबौ—कर्म वा० ।
बिसाहणौ, बिसाहबौ—रू० भे० ।

बिसाहियोड़ौ—भू का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ. २ ग्रहण किया हुआ, पकड़ा हुआ ।

३ देखो 'बिसायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिसाहियोड़ी)

बिसिसथल, बिसिस्थल—स पु [सं. विशिस्थल] कटिस्थल ।

उ०—करमायु भर कुसुमचु, वेणि बिसिस्थल थाय । ऊडंती जांणै ग्रही, सोचाणइ दुरगाय । —मा. कां. प्र.

बिसिख, बिसिख—सं. पु. [स. विशिख:] १ बांण, तीर ।
(अ. मा., डिं. ना. मा.)

उ०—जैसे वाउ थंभै तो मेह वरसै । त्यौं अठै बिसिख कहतां तीर चलावणौं रहि गयो । धड़ां उपरि ऊजळी धारा तरवारघा की चमकण लागी । —वेलि टी.

२ एक पक्षीराज, जो गरुड एवं शुकी के पुत्रो मे से एक था ।

रू. भे.—बिसिख, वमखिक, वसख, विखिक, विसक, बिसक्ख, विसख, विसिखि, विसिख्ख, विसेक, विसेख ।

बिसिखा—सं. पु. [स. विशिखा] १ फावड़ा ।

२ तकुआ ।

३ बांण, तीर ।

४ सुई या आलपिन ।

५ राजमार्ग, आम रास्ता ।

रू. भे.—बिसिखा ।

बिसिखि, बिसिख्ख—देखो 'विसिख' (रू. भे.) (अ. मा.)

बिसिन—१ देखो 'विग्गु' (रू. भे)

उ०—ग्रहमि जगायो बिसिन, परम कोपियौ ईसर परि । महा कोप मन माहि, कध कंकांण जिसौ करि । —पी. ग्रं.

२ देखो व्यसन' (रू. भे.)

बिसिनि, बिसिनौ—१ देखो 'विग्गु' (रू. भे.)

उ०—१ चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस । ग्यांन करीमौ हुइ गियो, बिसिनि किसो कोइ वेस । —पी. ग्र.

उ०—२ इंद प्रनंत प्रणपार, बिसिमि लें रोम बसाया । रोमि रोमि ब्रहमंड, प्रसख ब्रहमंड उपाया । रोम रोम ऊपरी रहै सायर जळ सारा, एकणि रोम प्रनत बसै कविळास बिचारा । —पी. ग्र.

४ देखो 'ब्यसनी' (रू. भे.)

बिसिम्बिसि–सं. पु. [स] १ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, होड़ । (उ. र)

२ गर्व, ग्रहंमता । (उ. र.)

बिसिया—१ देखो 'बिसिया' (रू. भे.)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

३ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—जन हरिदास बिसिया तजै, गोविन्द गुण गावै । छाजे बैसे ध्यान कै, तब ही सब पावै । —ह. पु. वां.

बिसियारस–सं. पु. [स. विषय+रस] १ कामवासना, कामेच्छा ।

२ भोगविलास, मैथुन ।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाळ तरै, भल भोग नितब नितब भरै । कसिया तन घोट लंगोट कसी, बिसियारस अंतर बीच बसी । —ऊ. का.

बिसिरस्क–सं.पु. [सं. विशिरस्क] सुमेरु के पास का एक पर्वत । (पुराण)

बिसिरा–सं. स्त्री. [सं. विशिरा] स्कंद की एक अनुचरी, एक मातृका ।

बिसिस्ट–सं. पु. [सं. विशिष्ट] वह व्यक्ति या वस्तु जिसमें कोई विशेषता पाई जाती हो, अद्भुत वस्तु या व्यक्ति ।

वि.—१ प्रसिद्ध, मशहूर, कीर्तिवान ।

२ शिष्ट, सभ्य ।

३ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

रू. भे.—बिसीठ ।

बिसिस्टाद्वैत–सं. पु. [सं. विशिष्ट+अद्वैत] श्री रामानुजाचार्य का वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें, जीवात्मा और जगत दोनों को ब्रह्म से भिन्न माना गया है यद्यपि ये दोनों भिन्न नही है ।

बिसिस्टाद्वैतवाद—देखो 'बिसिस्टाद्वैत' ।

बिसिस्टी, बिसिस्ठो–सं. पु. [सं विशिष्ठी] १ संदेशवाहक, खबरनवीस, दूत ।

स. स्त्री.—२ शंकराचार्य की माता का नाम ।

बिसीखमूरति—देखो बिसीसमूरति' (रू. भे)

बिसीठ—१ देखो 'बसीठ' (रू. भे.)

उ०—राजा री सेना पूछियो, लड़ाई प्रब हुवसी पिण पूछो पैला कुण छै बिसीठा लोग पूछियो । —पचदडी री वारता

२ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिसिस्ट' (रू. भे.)

बिसीठगारी–स. पु.—१ संदेशवाहक या दूत का कार्य ।

२ अपशब्द, कटुशब्द, गाली ।

उ०—गोगादे वीरमोत मारियौ, तद राव राणगदे बिसीठगारी गोगादेजी मूं कीवी थी, तद गोगादेजी कह्यौ हुतौ—म्हारौ दावौ जोईयां सूं को नहीं, म्हारा तीन सरदार पड़िया, जोईयां रा सात सिरदार पड़िया, म्हारौ कोई राठोड़ वैर मांगै तौ राव राणगदे कनै मागज्यौ । —नैणसी

बिसीसमूरति–स. पु. [स. विशीषमूर्ति] कामदेव का नामान्तर ।

बिसुंडी–सं. पु. [सं विशुंडी] कश्यप ऋषि का पुत्र एक नाग ।

बिसुंदरौ—देखो 'विसूंदरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसुंदरी)

बिसुंधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

उ०—विस्वामित्रेस एण वात, कोपियो भयंकरा । गिरां तरां सरां गभीर, धुज्जवै विसुंधरा । —सू. प्र.

बिसु—१ देखो 'वसु' (रू. भे.)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—विसु दीवउ दुरयोधनिहिं, भीमह भोजन माहि । ग्रमतु हुई नइ परिणमिउ, पुन्निहिं दुरिउ पुलाइ । —सालिभद्र सूरि

बिसुप्रावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—सुणौ रगण त्रिणि रूप सहि, सौ नै सत तालीस । प्रगट छंद कहि एण परि, वात बिसुप्रावीस । —ल. पिं.

बिसुक्र–स. पु. [सं. विशुक्र] देवी के द्वारा मारा गया एक भण्डासुर ।

बिसुणो—देखो 'विस्रांति' ।

उ०—मोसा, प्रोळमा वगं कवै, छाक पूत सिर छावड़ो । लेण बिसुणी बैठ संभाळै, रळग्या बाळक रावड़ो । —दसदेव

बिसुद्ध–वि. [स. विशुद्ध] १ बिलकुल शुद्ध, खरा ।

२ बिना पाप का, पाप रहित ।

३ कलंकरहित, कलंकशून्य ।

४ सच्चा, ठीक ।

५ पवित्र ।

उ०—१ विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पातरै नही, बिसुद्ध सुद्ध सब तैं असुद्ध पातरै नही । प्रचड पंडितान की वितंड बंडळी नही, महा प्रबोध सोधनी सुबोध मडळी नहीं । —ऊ. का.

उ०—२ कटै कड़ियाळ वहै करमाळ, कुटक्कै कोपर कंध कपाळ । बगत्तर जोध हुवंति बिसुद्ध, जुटंत बहादर बाहुप्र जुद्ध । —गु. रू. बं.

स. पु.—योग या तंत्र के अनुसार राजस्थानी में शरीर के भीतर माने गये आठ कमल या चक्रों में से पांचवा चक्र ।

वि. वि.—इसका स्थान कंठ माना गया है । जप १०००, रंग नीला (हलका आसमानी), दल १६ होते हैं । इसके देव कहीं चंद्र और कहीं शिव माने जाते हैं । इसके १६ अक्षर और १६ दल होते हैं ।

उ०—चक्र विसुद्ध कंठ में उद्मुख जांणियै,धूम्र वरण सोडस दळ, कमळ पिछांनियै । एक एक कर सोडस स्वर हैं दळन पर, यंत्र पूरण चंद्राकृति, भासत सुक्लतर । —साधक-सुधा

रू. भे.—बिसुद्ध बिसुध, विसुद्धचक्र, विसुद्धिचक्र, विसुध ।

विसुद्धचक्र-स. पु —देखो 'विसुद्ध' (सं. पु.) (रू. भे)

विसुद्धचारी-सं. पु. [स. विशुद्ध+चारिन्] बिलकुल शुद्ध चरित्र वाला व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति ।

विसुद्धता-सं. पु. [स. विशुद्ध+ता] विशुद्ध होने की अवस्था या भाव ।

विसुद्धात्मा-सं. पु. [स. विशुद्ध+आत्मा] परम शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप भगवान ।

विसुद्धि-सं. स्त्री. [सं. विशुद्धि] विशुद्ध होने की क्रिया या भाव, शुद्धता ।

रू. भे.—बिसुद्धि बिसुद्धी, विसुद्धी ।

विसुद्धिचक्र—देखो 'विसुद्ध' (सं. पु.) (रू. भे.)

विसुध—१ देखो 'विसुद्ध' (रू. भे.)

उ०—किहि रिति संध्या के विखै रस पाईजै छै । कवि यो कहि गया छै । विहुं पखां । विसुध । विहुं मासा । विहुं राति दिन । वसंति सारीखो रस निरवाह छै । —वेलि टी.

२ देखो 'बेसुध' (रू. भे)

विसुन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

विसुनपुर - देखो विस्णुपुरी' (रू भे.)

विसुनपुरी—देख 'विस्णुपुरी' (अल्पा , रू भे.)

उ०—असीय सहइस सजै करि मैमत्ता, पच सोहण जे कइ मिळइ नरिंद । कर जोड़ै नरपति कहई, विसुनपुरी जांणै वसइही गोव्यंद । —बी. दे.

विसुरण, विसुरणौ—देखो विसूरणौ' (रू. भे.)

उ०—हजार कोस में सारो लोक दुखी छै । म्हांनै तौ छोडिया नै वरस छः हुवा छै, पण चाळीस दिन आपणी सीम मे हुवा, सारौ लोक रोवै था । माथो टेकिय विसुरण करै था । —पलक दरियाव री वात

विसुरणौ, विसुरबौ—देखो 'विसूरणौ, विसूरबौ' (रू. भे.)

विसुरणहार, हारौ (हारी), विसुरणियौ—वि० ।

विसुरियोड़ो, विसुरियोड़ो, विसुरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

विसुरीजणौ, विरीजबौ—कर्म वा० ।

विसुरियोड़ो—देखो 'विसूरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विसुरियोडी)

विसुव-सं. पु. [सं. विषुव] दिन और रात दोनों बराबर होने का वह समय जब सूर्य विषुवत्‌रेखा पर पहुंचता है । (ज्योतिष)

विसुवरेखा—देखो 'विसवतरेखा' (रू. भे.)

विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति विसुवामित्र,—देखो 'विस्वामित्र' (रू भे.)

विसुविसा, विसुवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसूंणी—देखो 'विस्रांति' ।

विसूंदरौ-सं. पु. (स्त्री. विसूंदरी) विषैला जन्तु विशेष, छिपकली ।

उ०—१ नाई बोल्यो—हां बापजी, बात तो आपरी साव साची । म्हारी निजरां देख्योड़ी है । अेकर विसूंदरा री पूंछ वाढी तौ वा निरी ताळ आंगणा में लटपट लटपट करती री । —फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ कह्यौ - पाळियोड़ी मिन्नी री कांई सबूत ! म्हैं किसी उणनै मोल लायो हो । थे तो केवोला कै ऊंदरा ई म्हारै पाळियोड़ा है, घर री माखियां, माछर अर विसूंदरा ई म्हारै पाळियोड़ा है । —फुलवाड़ी

रू. भे. -बिसांदरो, बिसूंदरो, बिसूंदरो, विसंदरो, विसुंदरो ।

मह —वसंदर ।

विसू—देखो 'वसु' (रू. भे.)

उ०—१ विसू रखण सुजस वातां, इंद्र कोसळ आखियातां, देव वंछित दांन दाता, दुभल दीन दयाळ । गाव दमसिर बांण गंजै, प्रगट खळ जन भूप भंजै, जनक पण रख चाप भंजै भलै अवध भुवाळ । --र. ज. प्र.

उ०—२ देण सेवग लंक दाता, घल्ल व्याध कबंध घाता । विसू रखण क्रीत वाता, हद्द हाता हद्द हाता । —र. ज. प्र.

उ०—३ वडा भाग ज्यांरी विसू, नछवर चरणां लाग । पाव राम गुण प्रीत सूं, आठ पहर अनुराग । —र. ज. प्र

विसूइया—देखो 'विसूचिका' (रू. भे.) (जैन)

विसूकणौ, विसूकबौ-क्रि. अ.—१ रसहीन होना, सूखना ।

उ० - बन माभळ बधवाव सू, दुरद विसूकै डाण । जेठ लुवां सूकंत जिम, निरजळ देख निवाण । —बां. दा.

२ नष्ट होना ।

३ दुर्बल होना, कमजोर होना ।

४ सुप्त होना ।

४ दुधारु पशु के दूध आना बन्द होना।

बिसूकणहार, हारौ (हारी), बिसूकणियौ—वि०।

बिसूकियोड़ौ, बिसूकियोड़ौ, बिसूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसूकीजणौ, बिसूकीजबौ—भाव वा०।

बिसूकणौ, बिसूकबौ, बेहूकणौ, बेहूकबौ, बिसूगणौ, बिसूगबौ—रू०भे०

बिसूकियोड़ी-सं. पु.—वह गाय, भैंस, या अन्य दुधारु पशु जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो।

रू. भे.—बिसूगियोड़ी।

बिसूकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ रसहीन हुवा हुआ, सूखा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ. ३ दुर्बल हुवा हुआ, कमजोर हुवा हुआ. ४ सुस्त हुवा हुआ।

(स्त्री. बिसूकियोड़ी)

बिसूगणौ, बिसूगबौ—देखो 'बिसूकणौ, बिसूकबौ' (रू. भे.)

बिसूगणहार, हारौ (हारी), बिसूगणियौ—वि०।

बिसूगियोड़ौ, बिसूगियोड़ौ, बिसूग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसूगीजणौ, बिसूगीजबौ—भाव वा०।

बिसूगियोड़ी—देखो 'बिसूकियोड़ी' (रू. भे.)

बिसूगियोड़ौ—देखो 'बिसूकियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिसूगियोड़ी)

बिसूचिका-सं. स्त्री. [सं.] वमन और विरेचन को साथ लिए हुए हैजा नामक रोग विशेष, जो अजीर्ण की वृद्धि के कारण होता है।

बिसूची-सं. स्त्री. [सं. विपूची] १ विरजू नामक राक्षस की पत्नी, जिससे इसे सौ पुत्र एवं एक कन्या उत्पन्न हुई थी।

२ देखो 'बिसूचिका' (रू. भे.)

बिसूणी—देखो 'बिसाति'।

उ०—जो'ई स्यंने जिरांण, जठै नर अतक जळावै। सीडी धोरै मे'ल, बिसूणी बीच लरावै। जळ री कर छिड़काव, नंगलियौ फटकै फोडै, हाडौ पावक हेत, दागवै पाळां जो'डै। —दसदेव

बिसूर-सं. पु.—रुदन करने या सुबकने की किया या भाव।

बिसूरण, बिसूरणौ-सं.पु. [सं.विसूरण] १ दुख, रंज, शोक, पश्चाताप।

उ०—इण भांत भालो ठाकुर सिंह ऊभो-ऊभो बिसूरणा करै छै। हाथ मसळै छै। घोड़नो आपरो सवारी रो सुन्दसी सावत सू खेत मांही पड़ियौ छै। —डाढाळा सूर री बात

२ चिन्ता।

३ रुदन।

४ किसी मृत व्यक्ति के शोक में बनाया हुआ पद्य, मरसिया।

रू. भे.—बिसूरणौ, बिसुरण, विसूरणौ, बीसूरण, बीसूरणौ।

बिसूरणौ, बिसूरबौ-क्रि. स.—१ सुबक-सुबक कर रोना।

उ०—१ निमवात र सहना नहीं, दीखण लागा दूर। माखै इण विध भांमणी, वचन बिसूर-बिसूर। —र. हमीर

उ०—२ एक घडी आधी घड़ी तुम सौं रहूं ज दूर। बरस बराबर एक पळ, रहू बिसूर-बिसूर। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ —चिन्ता करना, शोक करना।

उ०—माया बिसरी वेलड़ी, हरीया पसरी दूरि। केताई फळ कारणै, रह्या बिसूरि-बिसूरि। —अनुभववाणी

३ रुदन करना, रोना।

उ०—१ भिरै भटालि भाल में भिखार भूर-भूर व्है, छिता अफड़ छड़ के प्रचड ज्वाळ तें चिपै। भगैं कतूर भूरि भेंस तूर तूर व्है भजौ, मरै बिसूर सूर के मयूर कम्र लै भजौ। —ऊ. का.

उ०—२ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नही भरि सोय। रांम बिसूरै बिरहनी, आसु कर मु धोय। —अनुभववांणी

४ पश्चाताप करना, दुख करना।

उ०—तर ऊंचौ असमांन फळ, पथी रह्या बिसूरि। जनहरिया फळ ऊजळा, हाथ न पहुंचै दूरि। —अनुभववांणी

बिसूरणहार, हारौ (हारी), बिसूरणियौ—वि०।

बिसूरिओड़ौ, बिसूरियोड़ौ, बिसूरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसूरीजणौ, बिसूरीजबौ—कर्म वा०।

बिसूरणौ, बिसूरबौ, बिसुरणौ, बिसुरबौ—रू० भे०।

बिसूरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सुबक-सुबक कर रोया हुआ. २ चिन्ता किया हुआ, शोक किया हुआ. ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. ४ पश्चाताप किया हुआ, दुख किया हुआ।

(स्त्री बिसूरियोड़ी)

बिसूबिसा बिसूवीसा—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिसेक, बिसेख-सं स्त्री.—यश, कीर्ति, प्रसिद्धी।

(अ. मा., ह. नां. मा.)

वि.—१ भयंकर, भयावह।

उ०—१ आसाढऊ सुद नवमि, गुण आगे रिख (१७३७) लेख। जिकै समत्तर जोधपुर, समहर थयौ बिसेख। —रा. रू.

उ०—२ यो नभ रवि अचरज्जियौ, प्रबळ कळह गह पेखि। एक प्रहर गोळां उरड़, व्रत झड़हंत बिसेख। —रा. रू.

[स. त्रि =विशेष+सेक=शोक] २ विशेष दुखी, खिन्नचित्त, उदास, पीडित।

उ०—राम निजत आप हुय रहिया, सुध म्हांरो वीसरिया सांम। लेखा सकळ बिसेक बिलोकै, बोलै जद राघव वरियाम। —र. रू.

३ देखो 'बिसिख' (रू. भे.)

४ देखो 'बिसेस' (रू. भे.)

उ०—पछै प्रबु समझायो, कह्यो—मैं इण तरफ बडा आदमी फंमदार छूं। इणां सु आपणो कांम आखर कर देसी। तठा पछै इणां रो आदर भाव बिसेक कीयो। —नैणसी

उ०—२ मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक। सारदूळ विक्रीड़तह, वरणो छंद विसेक। —र. ज. प्र.

उ०—३ वासवाहलो ठोड थापी दोय रावळ हुवा दोय सारीखो राजधांनी हुई तरवार सांमै वांसवाहला रा धणिया री बिसेख हुई। —नैणसी

उ०—४ पतसाह उथाट प्रत, बाट प्रटकती देस। मिरच्छ हुतासण होमिया, मंत्र कतेब बिसेख। —रा. रू.

उ०—५ साथ रै लोक नुं कहण लागो, 'जो बीहा कुंवरजी रै प्रागे ही घणा छै पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखो कोई नहीं—बडो सिरदार जाणियो बिसेख।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ तिण रुपिया री जायगा लेयनें लकड़ा री खटकड़ कीधी। आरम थोड़ो। जद स्वांमीजी नें किणही कह्यो—इनमें कोई आरभ है? बिसेख आरंभ नही। —भि. द्र.

उ०—७ दस कूप समो बापी, दस वापी समो सर। दसां सरवरा समो किन्या, अन-दांन बिसेखत। —रा. सा. सं.

उ०—८ प्रथीराज रै हाथ रावत भींव रहियो। बीजो ही घणो बिसेख हुओ। पाछा कुसळ-खेमं रावजी कनै साथ प्रायो तरै सिर्क राती बरछी कीया रावजी री हजूर प्राया। —नैणसी

रू. भे.—बिसेखि।

अल्पा.—बिसेखियो, बिसेख्यो।

बिसेखकच्छेद्य—सं. पु.—६४ कलाओं में से एक कला का नाम।

बिसेखणो, बिसेखबो—क्रि. स.—१ देखना, जांच करना।

२ अवलोकन करना, समझना

उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि, दळ प्रबळ उच्छब पेखियो। सब धरण नव सुख नवल सोभा, विमळ रूप बिसेखियो।
—रा० रू.

३ कहना, पुकारना।

उ०—व्यंदु दोय मुनयगा बिसेखो, बहु प्रनुमार मनहरा बेखो। बिण सकार पदमणी बिसेखत, एक सकार चित्रणी प्रोपत।
—र. ज. प्र.

बिसेखणहार, हारो (हारी), बिसेखणियो—वि०।

बिसेखिप्रोड़ो, बिसेखियोड़ो, बिसेख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिसेखीजणो, बिसेखीजबो—कर्म वा०।

बिसेखणो, बिसेखबो—रू० भे०।

बिसेखापुद्गल-स. पु [सं. विशेषापुद्गल] वे पुद्गल जिनका आत्म सम्बन्ध नहीं हुआ है।

बिसेखि-सं. पु.—१ कारण।

उ०—पातिसाह दिली मांहै हुयो दिन घडाई। तिण पातिसाह रो मांमो ममरेजखांन निणि एदल नूं मारि अर टीको लियो दिलो रो। वरस एक राज कियो। पातिसाह सेती लूणहरांम कियो। तिणि बिसेखि ममरेजखांन प्राप गहिलो हुयो। —द. वि.

२ देखो 'विमेख' (रू. भे.)

३ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ सहस लाख स्रावक मणी, भोजन पुण्य बिसेखि। सेत्रुंज साध पडिलाभता, अधिकउ तेहू थी देखि। —स. कु.

उ०—२ ऊठिया जगतपति प्रतरजांमी, दूरंतरी प्रावतो देखि। करि वंदण प्रातिथ धम कीधो, वेदे कहियौ तेणि बिसेखि।
—वेलि.

बिसेखियो, बिसेखो, बिसेख्यो—१ देखो 'बिसेख' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बिसेस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कोधो कपटी पूर, मूंडो दीसै नूर। धरम रो द्वेसियो ए, मच्छर बिसेखियो ए। —जयवाणी

उ०—२ हिम बाधि हिम रित निसा हरणं, दिवस क्रिस गुणि देखियै। चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर बिसेखियं।
—रा. रू.

उ०—३ तिणि मां गुर इकत्रीस, दोइ लुघ भेळा देखो। मुहर नांम सो महग, वळै गुणत्रीस बिसेखो। —पि. प्र.

उ०—४ कंबु कंठ भुज विसाळ ग्रीव तीन रेखा, नटवर का भेख मांनो सकळ गुण बिसेखा। क्षुद्रघटिका अधर अनूप किंकिनी धुन मवाई, उस गिरधर के अंग अंग मीरां बळि जाई। —मीरां

उ०—५ इद बोल्या बेऊं क्रम्या नै हो, लाया थे जांन बिसेखो। नेम कंकर परणै जिकै ही, मैं पिण नेम्यां लेखो। —जयवाणी

बिसेट, बिसेठ—देखो 'बसीठ' (रू भे)

उ०—१ दळ मझवै सुरतांण, प्राय चित्रकोट विलिज्जइ। भेजइ बेगि बिसेट, बात मिलणं की कीजइ। —प. च. चौ.

उ०—वेग बिसेट चलाइयइ, पूहतउ गढह मझार सभा सहित राय भेटीयउ, बोलइ वयण विचार। —प. च. चौ.

बिसेरियो—स. पु —१ आधिपत्य या प्रशासन में रहने वाला व्यक्ति।

उ०—तरै कवर करन कह्यो—"थांनुं, दीवाणजी बुलाया छै, थे प्रावो तो हूं जीमूं" तरै मेघ कह्यो —"म्हे थांरा बिसेरिया चाकर छां, ज्यूं थे कहस्यो, त्युं करस्यां पिण हूं पातसाहजी सूं सीख कर आवसूं। —नैणसी

२ देखो 'बसीरो' (अल्पा., रू. भे.)

बिसेल, बिसेलो—वि. [सं. विषैला] १ जहरीला, विषयुक्त। (अमरत)

२ व्यसनी, विषयी।

बिसेबिसा—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिसेस—वि. [सं विशेष] १ अधिक, विशेष, ज्यादा।

उ०—१ पनगेस धरेस सुरेस तेम सभै पेस, भूतेस बिसेस बिनवेस ध्यांन भेस, जीतेस, अरेस बध सेस कीत जपो जेम, 'किसनेस' कवेस नरेस कोसळेस। —र. ज. प्र.

उ०—२ खरळा रा आदमियां री जावतो आप रा मुख सूं करावै छै। दारू रा घड़ा बोच में पड़िया छै। सारै साथ नूं पायजै छै। फेर उहां नूं बिसेस जाबतो देय पावै छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ 'सोमल' ब्राह्मण नीधिया, 'सोमा' नांमै एक। प्रत्यक्ष जांणे अपछरा, चतुराई रूप बिसेस। —जयवांणी

२ मुख्य, खास, प्रधान।

उ०—१ बिसेस बाब अेलची रा में, जिकी जोभ बादसाहां री छै अर हाल, समझ, बादसाहा रा तौर अेलची उण रा सूं मालम होय। —नी. प्र.

उ०—२ पूत पिता एकै मया, पै चढ आवो देस। बोला बोला बोलिया, बोलो वयण बिसेस। —रा रू.

३ साधारण से परे, अतिरिक्त या अधिक।

स. पु.—१ अन्तर भेद।

२ हर्ष, खुशी।

३ पदार्थ वस्तु।

४ अधिकता, उत्तमता विशेषता।

५ विचित्रता, अद्भुतता, अनोखापन।

६ सार, तत्व।

७ प्रकार, किस्म।

८ दमन नामक शिवावतार का शिष्य।

९ सात प्रकार के पदार्थों मे से एक प्रकार का पदार्थ। (वैशेषिक दर्शन।

१० एक प्रकार का पद्य विशेष, जिसमे तीन श्लोको या पदो मे एक ही क्रिया रहती है। (साहित्य)

११ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमे आश्चर्योत्पादक अर्थ (घटना) का वर्णन होता है। इसके तीन भेद होते हैं।

रू. भे.—बसेस, बिसेस, बसेख, बसेक, वसेख, बसेस, बिसकस, बिसेक, बिसेख।

अल्पा.—बसेखो, बिसेलि, बिसेखियो, बिसखो, बिसेखो, बिसेसि, बिसेसो।

बिसेसउक्ति—देखो 'विशेसोक्ति' (रू. भे.)

बिसेसक—वि. [स विशेषक] १ विशेषता उत्पन्न करने वाला।

स. पु.—१ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में पाच भगण व एक गुरु होता है।

वि. वि.—इसके अश्वगति, नील, व लीला भी नाम हैं।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें प्रस्तुत-अप्रस्तुत में गुण सादृश्य होने पर भी किसी कारणवश विशेषता की स्फुरणा होती है। (साहित्य)

बिसेसग्य—वि. [सं विशेषज्ञ] किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला।

बिसेसण—स. पु [स. विशेषण] व्याकरण में वह विकारी शब्द, जिससे किसी संज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो।

वि. - विशेषता बनाने वाला।

बिसेसता—स. स्त्री [सं. विशेषता] विशेष होने की अवस्था या भाव।

रू भे.—बिसेखता, बिसेसता।

बिसेसग्य—वि —विशेषज्ञ। (जैन)

बिसेसालंकार—देखो 'बिसेस' (११)

बिसेसि—देखो 'बिसेस' (रू. भे)

उ०—पुगळ दस दुकाळ थियुं, किणहीं काळ बिसेसि। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चढ देसि। —ढो. मा.

बिसेसोक्ति—स. स्त्री. [स विशेषोक्ति] एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें पूर्ण कारण के होने पर भी कार्य का अभाव वर्णित होता है।

वि. वि. - इसके तीन भेद कहे गये है—

(१) उक्तनिमित्ता जिसमें कार्य के अभाव का निमित्त कहा जाय।

(२) अनुक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त नही कहा जाय

(३) अचिंत्यनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त समझ में नही आने वाला हो।

रू भे—बिसेसउक्ति।

बिसेसो—देखो 'बिसेस' (अल्पा., रू. भे)

बिसेस्य—स पु. [स. विशेष्य] व्याकरण की वह पद या शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगा कर सूचित की जाय।

बिसै—देखो 'बिसय' (रू. भे.)

उ०—१ कुंतो नगरी नै बिसै, हुऔ हाहाकार। देखो राय मराविया, बिना गुनै अणगार। —जयवांणी

उ०—२ हमण बोलण चालण बिसै, घणूं होसी हो अवसर नो

जांण । युद्ध करी ग्ररराभवी, नवांग सुंदर हो, सोभै स्रंगार वखांण । —जयवांणी

उ०—३ ग्राये साध भये ग्रहलाद, जिनकै नहीं बिसै रसवाद । उनका कहा बरनो बिसतार, रांमसनेहो मेरै प्रांण ग्रधार । —ह. पु. वां.

बिसोक-सं. पु. [सं. विशोक] १ ग्रशोक नामक वृक्ष ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

३ भारतीय युद्ध में पाण्डव पक्षीय राजा जो केकय राजकुमार था ग्रौर कर्ण के द्वारा मारा गया था ।

४ भीमसेन का सारथि ।

५ ब्रह्मा का मानसपुत्र । (पुराण)

६ दमन शिवावतार का एक शिष्य ।

७ कृष्ण एवं त्रिवक्रा के एक पुत्र का नाम जो नारद का शिष्य था ।

वि.—१ जिसे शोक न हो, शोकरहित ।

२ जिसे शोक हो, शोक युक्त ।

रू. भे.—विसोग ।

बिसोकद्वादसीव्रत-सं. पु. [सं. विशोकद्वादशीव्रत] ग्राश्विन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत विशेष ।

वि. वि.—इस दिन सिर्फ ग्रल्पाहार किया जाता है ग्रौर लक्ष्मी-पूजन किया जाता है इसके करने से प्रियवियोग नहीं होता है तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है ।

बिसोका-स. स्त्री. [सं. विशोका] १ कृष्ण की सोलह हजार पत्नियों में से एक पत्नी का नाम ।

२ स्कंद की एक ग्रनुचरी मातृका ।

बिसोग—देखो 'बिसोक' (रू. भे.)

बिसोतर-सं. पु.—एक सौ बीस की संख्या ।

रू. भे.—बिसोतर, बिसोत्तर, विसोत्तर ।

बिसोतरि, बिसोतरी—देखो 'बिसोत्तरी' (रू. भे.)

बिसोत्तर—देखो 'बिसोतर' (रू. भे.)

बिसोत्तरि, बिसोत्तरी—देखो 'बिसोतरी' (रू. भे.)

बिसोधन-सं. पु. [सं. विशोधन] पापों का नाश करने वाले भगवान् ।

बिसोधनी-सं. स्त्री. [सं. विशोधनी] ब्रह्मपुरी का नाम ।

बिसोनी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का वर्षात में पैदा होने वाला पौधा, शरपुंखा ।

रू. भे.—बिसूनी, बिसोनी, बीग्रोनी, बीफनी, बीसूनी, बीसोनी, बेहोनी ।

बिसोबा—देखो 'बिसवौ' (रू. भे.)

बिसोभित-वि. [सं. वि.=रहित+शोभित] १ शोभारहित, भद्दा ।

उ०—जब राति वितीत होण लागी । तब चंद्रमा किसौ दीसै छै । जिसौ भरतार ग्रसमाध्यां थकां सती को मुख देखिजयै । जब पिउ वै माहै सक्त छै · चंद्रमा माहि ज्योति छै · ग्रो दुख का मारयां ग्रर यै दिन को जोति नजीक ग्रायां । दून्यौ बिसोभित सा देखीजै छै । —वेलि टी.

[सं. वि =विशेष+शोभित] २ विशेष शोभित, शोभायुक्त ।

बिसोवम-वि. [सं. विषोपम] विष के समान जहर के सदृश ।

बिसोवा—देखो 'बिसवौ' (रू. भे)

बिसोवावीस, बिसोहावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ राजा नीयत सांभळै, वहै बिसोवावीस । ग्रसमै धारै बुद्धि बळ, समै, विचारै रीस । —रा. रू.

उ०—२ ग्राभ थोभै भुजै "माल" हर ग्राभरण, वधै ग्राधक छत्रां बिसोवावीस । दुचित दिल्लेस तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सोस । —केसोदास गाडण

बिसोही-वि. [सं. विशोही] १ ग्रात्मा को विशेष प्रकार से शोधन करने वाला । (जैन)

स स्त्री.—विशुद्धी ।

बिसौ-वि. [स्त्री. विसी] वैसा, जैसा, समान ।

उ०—१ ग्रै दोनूं सरदार जनाना रै बाहर जाय ऊभा रहिया । इहा नूं माहो बड़ण नहीं दिया राजूखां री बीबी बाहर ग्राय कही—बाबा थांरो बैर थां लेय ही लियो । साबास छै, बडी रजपूती राखी ! जसा पुरसा रा थै लड़का था बिसो ही कीवो । जनांनी मरजाद मता भांजो । —सूरं खीवै कांधलोत री वारता

उ०—२ सेठ तीन दिनां तांई कलकत्ता री सड़कां नापी जरै कठै ई जावतां चौथोड़ै दिन ठीक बिसौ रो बिसो इक हीरो एक देसी फरम में निगै ग्रायो । —ग्रमरचूनड़ी

उ०—३ दिनुगां री टेम ही ग्रर भूलेसर री भीड़ ग्रापरी पूरी जवांनी पर ग्रायोड़ी ही । जनानी ई इसी-बिसो नहीं पण टल्ला देवती । —रातवासो

बिस्कंभ, बिस्कमक-सं. पु [स. विष्कंभ, विष्कंभक] १ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक योग का नाम ।

वि. वि.—इसमें किसी शुभ कार्य करने में विष्कुंभ योग की प्रथम पांच घटि (घड़ों) को ग्रशुभ व शेष को शुभ माना जाता है ।

२ योगियों का एक प्रकार का बंध ।

३ भूत एवं भविष्यत् कथाग्रों का सूचक, एवं कथा का संक्षेप करने वाला ग्रंक ।

रू. भे.—बिसकंमक, बिमकंमक।

बिस्कंभी—स. पु. [सं. विष्कम्भिन्] शिवजी का एक नामान्तर।

बिस्क—सं. पु. [स. विष्क] बीस वर्ष की आयु का हाथी। (डि. को.)

बिस्कर—स. पु. [स. विष्कर] १ पक्षी, चिड़िया।

२ पूर्वकालिक एक राक्षस जो सम्पूर्ण पृथ्वी का शासक था।

बिस्कल—स. पु [सं. विष्कल] सूअर, शूकर।

बिस्किर—सं. पु. [स. विष्किरः] १ पक्षी चिड़िया।

२ सर्प, सांप।

बिस्कुट—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

बिस्टइ—स पु. [स. विष्टि] सदेशवाहक, दूत।

उ०—१ बिस्टइ! तूं वलि वेगिसूं, विक्रम कहिजे वात। वेस देउ मैं विप्रनइ, तु मेह ज माहरु तात। —मा. कां. प्र.

उ०—२ प्रम्हो वलूं इम बिस्टइ, काहवी करुणावंतो। क्षिति मइल ओजइ नही, क्षिमा-खडग सोभति। —मा. का. प्र.

बिस्टकार-सं. पु.—१ दूत, सन्देशवाहक।

२ अपशब्द कहने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बिस्टिकार।

बिस्टकारी—सं. पु.—१ दूत या सन्देशवाहक का कार्य।

२ अपशब्द, गाली, कटु शब्द।

उ०—पसू बाधनं घाव किगो। इगो घाव जो राव रांणगदे नूं अथवा माहे कुंवर नू करे तो जागू घाव कियो। मोनूं भाटी खटकं छै। इयां गोगादेजी नूं बिस्टकारी दी हुती, सु मोनूं दुखं छै। —नैणसी

रू. भे.—बिस्टाकारी, बिस्टिकारी।

बिस्टप—स. पु [सं. विष्टप] संसार, जगत।

बिस्टर—स. पु. [स. विष्टर] १ आसन, बैठक।

२ यज्ञ में ब्रह्मासन।

३ पेड़, वृक्ष। (ह. ना. मा)

४ देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

रू. भे—बिसटर, बिस्टर, विसटर।

बिस्टरास, बिस्टरास्व—स पु [स. विष्टराश्व] सूर्यवंशी राजा पृथु के उत्तराधिकारी राजा का नाम।

उ०—सुत विकुख सक्रनिज सुत स्वाद, पुत्र ज ककुत्स्थ प्रति हित प्रमाद। जं सुत प्रनन प्रथु पुत्र जाम, राजं प्रथु नदन बिस्टरास। —सू. प्र.

बिस्टाकारी—देखो 'बिस्टकारी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां गोगादेजी बोलिया—जं कोई सुणतो हुवै तो सांभळज्यो, गोगादे कहै छै, राठोड़ अर जोईयं वेर बराबर हुवो छै। जे कोई जीवतो हुवं तो महेवं जायनै कहज्यो। राव रांणगदे बिस्टाकारी दीनी छै। ज्यो वेर भाटियां कना लेज्यो। —नैणसी

बिस्टाळ, बिस्टाऴ, बिस्टालु, बिस्टाळू, बिस्टालू, बिस्टाळो, बिस्टालो—वि. [स. विष+टालनम्] बीच बचाव करने वाला, मध्यस्थता करने वाला।

स. पु.—१ कलह या झगड़े की अवस्था में शान्ति कराने वाला मध्यस्थ व्यक्ति।

२ सुलह कराने की क्रिया, मध्यस्थता।

३ समझौता।

उ०—सहर रे दरवाजं चिठी बाधी—नव चोर मारया तिण रा हथारा गुगा निनाणवै मनुस्य मारयां पछं बिस्टाळो कर सू। —भि. द्र.

रू. भे—बसीटाऴ, बसीटाळो, बिसटाऴ, बिसटाळो, वसीटाऴ, वसीटाळो, बिसटाळो।

बिस्टि—स. पु. [स. विष्टि] १ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

सं. स्त्री. [सं. विष्टि] २ विष्टिभद्रा नामक ज्योतिष के ग्यारह करणों मे से सातवां करण। ३ नरकगामी जीव का नरकवास। ३ विवस्वन् एवं छाया की एक भयकर कुरूपा कन्या जिसका विवाह त्वष्ट पुत्र विश्वरूप राक्षस से हुआ था।

बिस्टिकार—देखो 'बिस्टकार' (रू. भे.)

बिस्टिकारी देखो 'बिस्टकारी' (रू. भे.)

बिस्टिव्रत—स पु. [स. विष्टिव्रत] एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमें मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थी को इसका संकल्प कर विद्वान ब्राह्मण का पूजन करे तथा लोह, पाषाण या काष्ठ की मुद्रा बनवा कर अष्टदल आसन पर प्रतिष्ठित कर पूजन करे। इस व्रत को इन्द्र ने वृत्रासुर मारने हेतु, शिव ने त्रिपुरासुर का वध करने हेतु विष्णु ने पाचजन्य शखार्थ एवं वरुण ने विमानार्थ किया था।

बिस्टो—सं पु [स. विष्ठा] पाखाना, मैला, मल, टट्टी, गू। (अमरत)

उ०—१ पग ऊंचा माथो तलै जीवा, आंखां ऊपर हाथ। जाल जंजाल बिस्टा मध्यं जीवा, तू वसियो कही जगनाथ। —जयवाणी

उ०—२ बिस्टा नं वलीमातरो ए. नाक तणो मल खेल। वाय पित्त सलेसमाए, सुक्र लोही राध चेल। —जयवांणी

रू. भे—बिसटो. बिस्टो भिसटो, भिसठो, भिस्टो, भिस्ठो, विसटो, विसठो, विस्ठो।

बिस्ठाघर—स. पु [सं. विष्ठा+गृह] पाखाना, तारत, शौचालय।

उ० - मुणी नृप स्नान करि तू नीसरघउ, देहुरा भणी सुपवित्तो

जो । बिस्ठाघर मांहि बइठउ आदमी, तेड़इ तुं आवि तुरंतो जी ।
—स. कु.

बिस्ठामुक, बिस्ठामुख–सं. पु. [सं. विस्ठामुख] सूअर ।

बिस्ठौ—देखो 'बिस्टौ' (रू. भे.)

बिस्ण—देखो 'बिस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा बिस्ण महेस, सेस मानै फुरमांण ।
—केसोदास गाडण

उ०—बिस्णु नांम कुळ बिस्ण, बिस्णु सुत मित्र अपस वद । कच अहिमुख ससि लंक, स्यघ कुच कोक नाळ छिद । —र. ज. प्र.

बिस्णतर–स. पु.—सुदर्शन चक्र । (नां. मा.)

बिस्णु–स. पु. [स. विष्णु] १ सृष्टि का भरण-पोषण व पालन करने वाले देवता, जो हिन्दुओं के प्रधान देवता माने जाते हैं, ईश्वर, परब्रह्म ।

वि. वि.—इन्हीं की नाभि से कमल द्वारा ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है ।

उ०—१ ब्रह्मा बिस्णु नहीं सिव सक्ती, नहीं गुरु नहिं चेला । नारी पुरुस एक नहीं होता, हरि तो आपोई आप अकेला ।
—श्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ बिस्णु नांम कुळ बिस्ण, बिस्णु सुत मित्र अपस वद । कच अहिमुख ससि लंक, स्यघ कुच कोक नाळ छिद । —र. ज. प्र.

उ०—३ देवी नाभ रै कमळ ब्रह्मा निपाया, देवी ब्रह्म रै रूप मधु-कीट जाया । देवी रूप मधुकीट ब्रह्मा डरायं, देवी ब्रह्म रै रूप बिस्णु जगायं । —देवि.

उ०—४ पगि तणि हूंती चोटलइ, चौद लोक नु वास । ब्रह्मा बिस्णु महेस पणि, पंजरि श्रेणि प्रकास । —मा. कां. प्र.

२ अग्निदेवता ।

३ बारह आदित्यों में से पहले आदित्य का नाम ।

४ विष्णुस्मृति की रचना करने वाले प्राचीन ऋषि ।

५ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

६ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

७ श्वेत वर्ण ।* (डि को.)

८ कृष्ण वर्ण ।* (डि. को)

९ कार्तिक मास में अश्वतर नाग, रंभा अप्सरा, गधर्व एवं यक्षों के साथ घूमने वाला सूर्य ।

१० भृगु वंश में उत्पन्न एक गोत्रकार ।

११ महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष का एक राजा, जो कर्ण के द्वारा मारा गया था ।

१२ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम ।

१३ भौत्य मनु के पुत्र का नाम ।

१४ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक ।

१५ अठारह पुराणों में से एक पुराण ।

रू. भे.—बिसन, बिसन्न, बिसन, बिसनु, बिसन्न, बिस्णु, बिस्नु, बिस्नुक, बीसन, बसन, बिस्णु, बिसन, बिसण, बिसणु, बिसन, बिसनर, बिसनु, बिसनौ, बिसन्न, बिसन्न, बिस्ण, बिस्णू, बिस्न, बीसणु, बीसन, बीसनु ।

बिस्णुकांची–सं. पु. [सं. विष्णुकांची] दक्षिण में श्रीशंकराचार्य द्वारा स्थापित एक तीर्थ का नाम ।

बिस्णुकांता–सं. स्त्री. [सं] एक जड़ी विशेष, जो औषध में काम आती है । (अमरत)

बिस्णुक्रम–सं. पु. [सं. विष्णुक्रम] विष्णु भगवान् का पाद या पग ।

बिस्णुक्रांत–सं. स्त्री. [सं. विष्णुक्रांत] संगीत में एक प्रकार का ताल विशेष ।

बिस्णुक्रांता–[विष्णुकान्ता] नील अपराजिता ।

बिस्णुक्रांति–[स. विष्णुकान्ता] श्वेत कोयल नाम की एक लता विशेष ।
(अमरत)

बिस्णुगंग, बिस्णुगंगा–सं. स्त्री. [सं. विष्णुगंगा] एक प्राचीन नदी ।

बिस्णुगुपत, बिस्णुगुप्त–स. पु. [सं. विष्णुगुप्त] कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम । (ऐतिहासिक)

बिस्णुचकर, बिस्णुचक्र–सं. पु. [सं. विष्णुचक्र] सदैव भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला सुदर्शन चक्र ।

बिस्णुज्वर–स. पु. [सं. विष्णुज्वर] शत्रुओं का नाशक एक ज्वर जिसके अधीश विष्णु है ।

बिस्णुतरपण–स. पु. [सं. विष्णुतर्पण] किसी बालक के मर जाने पर उसके तीसरे दिन दूध, जल, तिल आदि से की जाने वाली तर्पण विधि । (मा. म)

बिस्णुतिथ, बिस्णुतिथि–सं. स्त्री. [सं. विष्णुतिथि] एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियों का नामान्तर ।

बिस्णुतैल–सं. पु [सं. विष्णुतैल] समस्त वात रोगों को मिटाने वाला तैल विशेष । (वैद्यक)

बिस्णुदास–सं पु. [सं. विष्णुदास] श्रीविष्णु का एक अनन्य भक्त ।

बिस्णुदैवत, बिस्णुदैवत्या–सं. पु [स. विष्णुदैवत्या] १ योगतंत्र में २७ नक्षत्रों में से श्रवण नामक नक्षत्र विशेष, जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं ।

२ चान्द्रमास के दोनों पक्षों की एकादशी व द्वादशी तिथियां ।

बिस्णुद्वीप–सं. पु. [स. विष्णुद्वीप] एक द्वीप विशेष । (पुराण)

बिस्नुधरमा—सं. पु. [सं. विष्णुधर्मा] गरुड की प्रमुख संतान ।

बिस्नुधरमोत्तर—स. पु. [स. विष्णुधर्मोत्तर] विष्णुपुराण का उपपुराण या एक अंश ।

बिस्नुधारा—सं. स्त्री. [सं. विष्णुधारा] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।
२ एक नदी का नाम । (पुराण)

बिस्नुपंजर—स. पु. [सं. विष्णुपंजर] १ विष्णु का एक कवच विशेष, जिसके धारण करने से सब भय दूर हो जाते हैं । (पुराण)
२ एक मंत्र जो शिव द्वारा देवी को बताया गया था ।
रू. भे.—बिस्नुपजर ।

बिस्नुपथ—सं. पु. [सं. विष्णुपथ] १ आकाश, व्योम ।
रू. भे.—बिसंनपथ, बिसनपथ, बिसनपथ ।

बिस्नुपद—सं. पु. [स. विष्णुपद] १ आकाश, व्योम ।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
३ क्षीरसागर ।
४ कमल ।
५ विष्णु के पैर ।
६ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें १६ व १० पर यति और अन्त में गुरु होता है ।
७ एक तीर्थ का नाम, जो विपाशा नदी के तट पर स्थित है ।
रू भे.—बिसनपद बिसंनपद, बिसनपद ।

बिस्नुपदी—स स्त्री. [सं. विष्णुपदी] १ भगवान् श्रीविष्णु के पैर के नाखून में से निकली हुई गंगा, श्रीभागीरथी, गंगा ।
२ द्वारिकापुरी ।
३ वृष, वृश्चिक, कुंभ व सिंह आदि की संक्रांति ।

बिस्नुपुरांण—देखो 'बिस्नु' (१५) ।

बिस्नुपुरी—देखो 'बिस्नुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

बिस्नुपुरी—सं. पु. [सं. विष्णु + पुर] स्वर्ग लोक, वैकुण्ठ ।
रू. भे.—बिसनपरी, बिसनपुर, बिसनपुरी, बिसुनपुर, बिसुनपुरी ।
अल्पा.,—बिसनपरी, बिसनपुरी, बिसुनपुरी, बिस्नुपुरी ।

बिस्नुप्रयाग—स. पु. [स. विष्णुप्रयाग] एक तीर्थ स्थान, जो पाण्डुकेश्वर के निकट है । इसके निकट ही विष्णुगंगा अलकनंदा में मिलती है, इसके पास ही हाथी पर्वत है ।

बिस्नुप्रिया—स. स्त्री. [स. विष्णुप्रिया] १ भगवान् श्री विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी ।
२ तुलसी का पौधा ।
रू. भे.—बिसनप्रिया ।

बिस्नुप्रीति—सं. स्त्री. [सं. विष्णुप्रीति] भगवान श्रीविष्णु की सेवा पूजा करने के लिए किसी पूजा करने वाले व्यक्ति को बिना लगान दी गई भूमि ।

बिस्नुमती—सं. स्त्री. [स. विष्णुमती] शतानीक की पत्नी ।

बिस्नुयसा—स. पु. [स. विष्णुयशा] ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता, जो सुमति का पति था । (पुराण)

बिस्नुरथ—स. पु. [स. विष्णुरथ] विष्णु का वाहन, गरुड़ ।

बिस्नुरात—स. पु. [स. विष्णुरात] अर्जुन-सुभद्रात्मज अभिमन्यु व उत्तरा का पुत्र महाराज परीक्षित जिसकी हत्या अश्वत्थामा द्वारा गर्भ में ही कर दी गई थी मगर श्रीकृष्ण ने पुनर्जीवित किया था ।

बिस्नुलोक—स. पु. [सं. विष्णुलोक] विष्णु का निवास स्थान, स्वर्ग वैकुण्ठ ।

बिस्नुवल्लभा—सं. स्त्री. [स. विष्णुवल्लभा] १ तुलसी का पौधा ।
२ लक्ष्मी ।

बिस्नुवाहन—स. पु. [स. विष्णुवाहन] गरुड़ ।

बिस्नुवाहण-स. पु. [स विष्णुवाहन] गरुड ।

बिस्नुविवाह—स. पु. [स. विष्णुविवाह] एक प्रकार का वैधव्यहर, जिसमें कन्या का विवाह पहले विष्णु से कर देते हैं ।

बिस्नुव्रत—स. पु. [स. विष्णुव्रत] पौष शुक्ला द्वितीया से चार दिन तक रखा जाने वाला विष्णु का व्रत विशेष ।

बिस्नुसकति, बिस्नुसक्ति, बिस्नुसगति—सं. स्त्री. [सं. विष्णुशक्ति] लक्ष्मी ।

बिस्नुसप्तमी—स स्त्री. [सं. विष्णुसप्तमी] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को की जाने वाली विष्णु की पूजा जो अभीष्ट सिद्धि हेतु की जाती है ।
वि. वि.—इसी मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को ही त्रियसप्तमी और विष्णु सप्तमी भी मनायी जाती है ।

बिस्नुसरमन—सं. पु. [सं. विष्णुशर्मन] इन्द्र को भी शरण देने वाला एक राजा, जो शिवशर्मन राजा का पुत्र था ।

बिस्नुसावरणि—सं. पु. [सं. विष्णुसावर्णि] भौत्य मनु का नाम ।

बिस्नुसिद्धि—स. पु. [सं. विष्णुसिद्धि] अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

बिस्नुहरि—सं पु. [सं. विष्णुहरि] विष्णु के एक अनन्य भक्त का नाम ।

बिस्नुसिल, बिस्नुसिला—सं. स्त्री. [सं. विष्णुशिला] सालि-ग्राम ।

बिस्नुस्रंखळ. बिस्नुस्रंखळा—सं. स्त्री. [स. विष्णुशृंखला] श्रवण नक्षत्र में आने वाली द्वादशी ।

बिस्नुस्मृति—स. स्त्री. [स. विष्णुस्मृति] एक धर्मशास्त्र, स्मृति विशेष ।

बिस्णुस्वामी-सं. पु. [सं विष्णुस्वामी] १ वैष्णव सम्प्रदाय या रामावत साधुओं की एक शाखा। (मा. म.)

बिस्णू—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—क्रतध्वसी बिस्णू कमळभव जिस्णू स्तुति करै, हिमांसू उष्णांसू पदम-पद पासू सिरधरै। हणामा हमेसा बजत त्रिदवेसां नवबती, अई इंदू अंबा जयति जगदंबा भगवती। —मे. म.

बिस्तर—१ देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'बिस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ नव बाड़ि सेती सील पालउ, पांमउ जिम भव पार रे। भगवंत बिस्तर पणइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। —स. कु.

उ० २ उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमै, सूत्र टीका सुविचार। रिखमडल वलि प्रकरण थी, रच्यौ ए बिस्तर अधिकार।

—ध व. ग्रं.

उ०—३ सूत्र बांची नइ सगलुं समझज्यो, तिहां बिस्तर संबधोजी। केसी प्रदेसी राजा तणउ, समयसुंदर कहइ प्रबंधो जी। —स. कु.

बिस्तरण—वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

उ०—नमौ वेद बिस्तरण, नमौ निसचर बोह नांमण। नमौ सेससायत, नमौ हब कव्व हुतासण। —ह. र.

बिस्तरणौ, बिस्तरबौ—क्रि. अ.—१ उच्चरित होना, ध्वनित होना, गूंजना।

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरड़का उपजइं, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणै घरि वेद ध्वनि बिस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा. सा. सं.

२ विस्तार पाना, व्याप्त होना, फैलना।

उ०—१ सुर प्रगट मिटि अटकाव सरिता ब्याह मंगळ बिस्तरै। सोचति पुर बाजार सोभा, मोज सुंदर मंदिरै। —रा. रू.

उ०—२ मोठापणा जांणिया मोठो, कमधज थिनो तुहारा क्रत। 'बोका'हरा बाण बिस्तरियो, अत भवणै माही दुम्रत। —द. दा

३ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

४ बिखरना, छितरना, फैलना।

उ०—मांग माही मोती सू भरिया छै जाणै आकास रै आंगण तारा बिस्तरिया छै। सरवणां री ओर ओपमा न बणसी। सीप मांनू स्वाति बूंद झेली छै। जको मोती जणसी। —पनां

५ हरा भरा होना, लहलहाना।

६ गमन करना, जाना।

उ०—वइरागी थिउ बिस्तरइ रांमा सूपि राग। कातर काटै काकरि, पुलतू अणूहांणि पाग। —मा. कां. प्र.

७ तितर-बितर होना, फैलना।

उ०—बेताल किलकिलइ, दावांनळ प्रज्वळइ। रीछ सांचरइ, बोरूतणा यूथ बिस्तरइ। बेडौ रा साज भाइकइ, ठामि ठांमि वन रा भइसा हूकइ। —सभा

बिस्तरणहार, हारो (हारी), बिस्तरणियो—वि०।

बिस्तरिओड़ो, बिस्तरियोड़ो, बिस्तरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिस्तरीजणो, बिस्तरीजबो—भाव वा०।

बित्थरणौ, बित्थरबौ, बिथरणौ, बिथरबौ, बिथुरणौ, बिथुरबौ, बिसतरणौ, बिसतरबौ, बिस्सरणौ, बिस्सरबौ, बीथरणौ, बीथरबौ, बिसरणौ, बिसरबौ, बिथरणौ, बिथरबौ, बिथुरणौ, बिंथुरबौ, बिसतरणौ, बिसतरबौ, बिससतरणौ, बिससतरबौ, बिसथरणौ, बिसथरबौ —रू० भे०।

बिस्तरता—सं. स्त्री. [सं] बहुत या अधिक होने की अवस्था या भाव।

बिस्तरबंध—देखो 'बिस्तरबंद' (रू. भे.)

बिस्तरियोड़ो—भू का. कृ.—१ उच्चरित हुवा हुआ, ध्वनित हुवा हुआ, गूंजा हुआ. २ विस्तार पाया हुआ, व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, आनन्दित हुवा हुआ. ४ बिखरा हुआ, छितरा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ५ हरा भरा हुवा हुआ, लहलहाया हुआ।

(स्त्री. बिस्तरियोडी)

बिस्तरियो—देखो 'बिस्तर' (अल्पा., रू. भे.)

बिस्तार-सं. पु [सं.] १ प्रसार, फैलाव।

उ०—सिव भक्ती का सब बिस्तारा, ब्रह्मा कोट लग कर रे। इनमें ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ अकास लील नगर गंधरव का, इंद्रजाळ आकार। जाग्रत झबकायूं जोय र जोगुण, मन कल्पित बिस्तारा।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ वयवांणी तूं ऐक ब्रम. ओऊंकार अपार। किमि करि कीधी काळिका, विसव तणो विस्तार। —पी. ग्रं

उ०—४ केतेक दिन तपस्या करि आरांम लगाया। तिस काकरिख के नांम कागा कहाया। तिस बगीचू के दरम्यान वरणै जेतं फळ फूलू का बिस्तार। सब्बू के सिर पोस आंनाक का अधिकार।

—सू. प्र.

उ०—५ मैला मिनख बचन रै मार्थं, बात बणाय करै बिस्तार। बैठ सभा बिच मूंडा बारै, बचन काढणी बहुत बिचार।

—बां. दा.

२ वृक्ष की शाखाएं।

३ अधिकता, बाहुल्यता।

उ०—तठै केसरियं साह ठकुरै साह नूं पूछी कही, "जो साहजी, इतरी थांहरै माया री बिस्तार हुतौ, सु किसी भांति गयौ, सु मनै कहौ। —ठकुरै साह री वात

४ वृतान्त, विवरण।

उ०—१ तिण समय दिली पातिसाह ओरंगसाह राज करै छै। तिण रै पुत्र सलेमसाह साहिजादौ बडौ प्रबलो हुयौ। तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै। बिस्तार आगै लिखीजसी।
—द. वि.

उ० २ तिण अनुसारै मैंडाय कोई संक्षेप हुवौ तिण नै उनमांन न्याय जांण नै वधारज्यो। बिस्तार जांण नै संकोच्यौ। तिण में कोई विरुद्ध आयौ हुवै। —भि. द्र.

उ०—३ स्वामीजी फेर कह्यौ आगै करां। पछै चद्रभांण तिलोकचंद दोनूं जणा मांन अहंकार रै बस टोला बारै निकल्या। तै सहू बिस्तार तो स्वांमीजी कृत राम थी जांणवौ। —भि. द्र.

उ०—४ पाच पाच सौ दीधा दांन, मोनौ रूपो ग्रहणा संघात। राग्रह पौख बडारण माय, बिस्तार सूत्र भगवती माय।
—जयवांणी

रू. भे.—बिथार, बिसतार, बिस्तर, बिस्तार, बिस्थार, बित्थार, बिथार, बिसतर, बिसतार, बिसतारौ, बिसथार, बिसार, बिस्तर, बिस्तारि, वैसार।

बिस्तारक—वि.—विस्तार करने वाला।

रू. भे.—बिसतारक।

बिस्तारण—स. स्त्री.—विस्तार या प्रसार करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—बिसतारण।

बिस्तारणौ, बिस्तारबौ—क्रि. स—विस्तार करना, फैलाना।

उ०—१ जब परीसदा वादण नीकली, गुण आयौ 'सुबाहु' कुमारो रे। बांदै बैठो छै गुण आगलं, वीर बांणी कही बिस्तारी रे।
—जयवांणी

उ०—२ साधवा मुक्तिका वास बंदा सहु, भिक्खस्वाम सिद्धांत है भारी। स्वामी पर भाव के साधन साच है, बाचे है सूत्रकला विस्तारी। —भि. द्र.

उ०—३ ···एकि चद्र सूरयनी प्रभा आपणी कांती करी पराभवइ एकि स्त्री पुरुख योग्य दिव्योपभोग्य आभरण बिस्तारइं एक चक्रवरतिनी रसोई पांहिइ अनत गुण सुस्वाद अष्टोत्तरसउ खाद्य···।
—व. स.

२ बिखेरना, छितराना।

३ ध्वनित करना, उच्चरित करना।

४ बढोतरी करना, बढाना।

५ हिलाना-डुलाना।

६ प्रचार करना।

उ०—धरमकथा अनुयोगमेंजी, धरमकथा द्रस्टांत। ए बारों बिस्तारिया जो, पेंतालिस सिद्धांत। —वृस्त

बिस्तारणहार, हारो, (हारी), बिस्तारणियो—वि०।

बिस्तारिओड़ो, बिस्तारियोड़ो, बिस्तारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिस्तारीजणो, बिस्तारीजबो—कर्म वा०।

बिथारणौ, बिथारबौ, बिसतारणौ, बिसतारबौ, बिस्तारणौ, बिस्तारबौ, बिस्थारणौ, बिस्थारबौ, विथारणौ, विथारबौ, विथारणौ, विथारबौ, विसतारणौ, बिसतारबौ, बिसथारणौ, बिसथारबौ—रू० भे०।

बिस्तारि—देखो 'बिस्तार' (रू. भे.)

उ०—चऊद राज ऊपरि बिस्तारि, सिद्धसिला छइ छत्राकारि। अनेक गुण छइं सिद्ध विनमत, सुखह तणउ ते पार न लहंति।
—वस्तिग

बिस्तारियोड़ो—भू. का. कृ.—१ विस्तार किया हुवा, प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ. २ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ. ३ ध्वनित किया हुआ, उच्चरित किया हुआ। ४ बढ़ोतरी किया हुआ, बढाया हुआ. ५ हिलाया-डुलाया हुआ. ६ प्रचार किया हुआ। (स्त्री. बिस्तारियोडी)

बिस्तारी—वि. [सं. विस्तारिन्] जिसका बिस्तार अधिक हो।

बिस्तीरण—वि. विस्तीर्ण] १ विस्तृत, फैला हुआ।

२ बहुत लम्बा-चौड़ा।

रू. भे.—बिस्थीरण।

बिस्त्रत, बिस्त्रित—वि. [स. विस्तृत] १ फैला हुआ, विस्तरित, व्याप्त।

२ लम्बा-चौडा।

३ विपुल, परिव्याप्त।

४ जिसका विवरण यथेष्ट हो।

बिस्न—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ दूध मुख गौटा ऊछळै, माया मद पीया। ब्रह्मा बिस्न महेस लो, बाजी वसि कीया। —ह. पु. वां.

उ०—२ गवरीय नंदन वीनवुं जी, स्रीहरि सुरतरु आंणि। बिस्न तणो वीवाहिलो जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण।
—रुकमणी मंगळ

उ०—३ रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण करी नइं, बिस्न तणौं वीवाह। सुंडा डंबर करि धर फरसी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

बिस्नी—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

बिस्पला–सं. स्त्री. [सं. विश्पला] एक बहुत ही वीर स्त्री जो खेल नामक राजा की पत्नी थी।

वि. वि.—कहते हैं कि युद्ध में इसके एक पैर के टूटने पर अश्विनों ने इसे लोहे का पैर प्रदान कर युद्ध करने योग्य बनाया था।

बिस्फार–सं. पु. [सं.] १ धनुष की टंकार।

२ धनुष की डोरी।

३ कम्पन, सिसकन।

बिस्फारित–वि. [सं.] १ टंकारा हुआ, खेंचा हुआ।

२ कम्पायमान किया हुआ, थरथराता हुआ।

बिस्फुरणौ, बिस्फुरबौ–क्रि. अ.—१ कांपना, कम्पित होना।

२ डरना, भयभीत होना।

३ हिलना-डुलना।

बिस्फुरणहार, हारौ (हारी), बिस्फुरणियौ—वि०।

बिस्फुरिग्रोड़ौ, बिस्फुरियोड़ौ, बिस्फुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फुरीजणौ, बिस्फुरीजबौ—भाव वा०।

बिस्फुराणौ, बिस्फुराबौ–क्रि. स.—१ कम्पित करना, कम्पाना।

२ भयभीत करना, डराना, हिलाना-डुलाना।

बिस्फुराणहार, हारौ, (हारी), बिस्फुराणियौ—वि०।

बिस्फुरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फुराईजणौ, बिस्फुराईजबौ—कर्म वा०।

बिस्फुरायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कम्पित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ. ३ हिलाया-डुलाया हुआ।

(स्त्री. बिस्फुरायोड़ी)

बिस्फुरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कांपा हुआ, कम्पित हुवा हुआ. २ हिला-डुला हुआ. ३ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ।

(स्त्री. बिस्फुरियोड़ी)

बिस्फोट–सं. पु. [सं.] १ भूमि के अन्दर की भरी हुई आग, गर्मी आदि के फूट कर बाहर निकलने की क्रिया।

२ उक्त क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाला शब्द।

३ एकत्र गैस, बारूद आदि के अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलने की क्रिया।

४ उक्त क्रिया के कारण उत्पन्न शब्द।

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ।

५ जहरीला या खराब फोड़ा।

६ एक प्रकार का कोढ नामक रोग।(अमरत)

बिस्फोटक–सं. पु. [सं.] १ गर्मी या आघात से भभकने वाला पदार्थ।

२ जहरीला फोड़ा।

३ शीतला रोग, चेचक।

४ छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों में से एक।

उ०······मुरवि अर्द्धमुरवि परसु पास पट्टिस दूस लांगूल मुसल मुसंढि मुग्दर लगुड गदा दंड भिंडपाल गांजीव बिस्फोटक वज्र तरवारि प्रमुख ३६ छट छटत्रिस दडा युधानि। —व. स.

रू. भे.—बिसफोटक, बिस्फोटक, बिसफोटक।

बिस्फोटणौ, बिस्फोटबौ–क्रि अ.—१ भूमि के अन्दर की आग, गर्मी आदि का फूट कर बाहर निकलना।

२ एकत्र गैस, बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलना।

३ जहरीला फोड़ा होना।

क्रि. स.—४ एकत्र गैस, बारूद आदि को अग्नि, ताप या आघात आदि से बाहर निकालना।

बिस्फोटणहार, हारौ (हारी), बिस्फोटणियौ—वि०।

बिस्फोटिग्रोड़ौ, बिस्फोटियोड़ौ, बिस्फोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फोटीजणौ, बिस्फोटीजबौ—भाव, कर्म वा०।

बिस्फोटता–सं. स्त्री.– अंग को आलस्य आदि के कारण मोड़ने की क्रिया।

उ०—समस्त सेनां दिसि द्रस्टि करि देख्यौ। पाछै क्यों थोड़ो सो हस्या। पछै क्यों थोड़ो सो आळस कीयौ। अंग बिस्फोटता कीयौ। जंभाई आई पाछै क्यों थोड़ा-थोड़ा चाल्या गति दिखाई। पाछै क्यों एक संकुच्या। ए पांचौं बांण सेनां नै लागा। —वेलि टी.

बिस्फोटियोड़ौ–भू.का.कृ.—१ भूमि के अन्दर की आग का, गर्मी आदि के कारण फूटकर बाहर निकला हुआ। २ एकत्र गैस बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकला हुआ. ३ जहरीला, फोड़ा हुवा हुआ। ४ एकत्र गैस बारूद आदि को अग्नि या आघात आदि से बाहर निकाला हुआ।

(स्त्री. बिस्फोटियोड़ी)

बिस्मय–सं. पु. [सं.] १ आश्चर्य, ताज्जुब।

उ०—१ तद बखतसिंह जी बिस्मय में पड़ अबोला सा रहिया। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ बादल लै आदेस गोरा रावत तणौ, सुभट मिल्या तिहां जाय साहस मन में घणौ। देखि सभा सगली मनमइं बिस्मय थई आवइ नहिं दरबार कहै क्यों आवई। —प. च. चौ.

२ अद्भुत रस का स्थायी भाव। (साहित्य)

३ अभिमान, अहंकार, गर्व।

रू. भे.—बिसमउ, बिसमय, बिसमै, बिस्मय, विसमय; बिसमै, विसमौ, विसम्य विस्मि, विस्मिय।

बिस्मयकारी–वि. [सं. विस्मयकारिन्] आश्चर्यान्वित करने वाला, ताज्जुब में डालने वाला।

उ०—हे सकळगुणी सिरमोर ! माया रा चित्र बडा विचित्र, बिस्मयकारी, बहुगुण भरिया हुवा जांणौ। बाहरी ससार मांही

जिसा नदी परबत बन घर नगर दीसै है जिका सगळा ही थां अंतरजगत काया मांही जांणो । —सिंघासण बत्तीसी

बिस्मरण–सं. पु [सं.] भूल जाने या याद न रहने की अवस्था या भाव

रू. भे.—बिममरण, बिस्मरण, बिममरण, बिसमरमण ।

बिस्मरणो–वि —भूलने वाला, जिसे याद न रहता हो ।

बिस्मरणो, बिस्मरबो–क्रि. स.—भूल जाना, याद न रहना ।

बिस्मरणहार, हारो, (हारी), बिस्मरणियो—वि० ।
बिस्मरियोड़ो, बिस्मरियोड़ो, बिस्मरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिस्मरीजणो, बिस्मरीजबो—भाव वा० ।

बिसमरणो, बिसमरबो, बिस्मरणो, बिस्मरबो, बिसमरणो, बिसमरबो—रू० भे० ।

बिस्मरियोड़ो–भू. का. कृ.—भूला हुआ, याद न रहा हुआ ।

(स्त्री. बिस्मरियोड़ी)

बिस्मल्ला, बिस्मल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

बिस्मारक–वि. [सं.] भूला देने वाला, बिस्मरण करा देने वाला ।

बिस्मि –देखो 'बिस्मय' (रू. भे.)

उ०—गिणता राह 'दम' कस्यू, तव दंसु भूपति नाग । करूप अति राजा थयु बिस्मि तै जोई लाग । —नळाख्यांन

बिस्मित–वि. [सं.]—आश्चर्ययुक्त, आश्चर्यान्वित, चकित ।

उ०—तो राणो बिस्मित होय नापै नू बुलायो, एकांत में ले जाय कही जं राठोड़ मंडोवर कद आया । —नापै सांखलै री वारता

रू. भे.—बिमभत, बिसमित, बिसमत. बिसमित, बिसमैं ।

बिस्मिता–सं. पु.—एक प्रकार का वर्णिक छंद विशेष जिसमें यगण, मगण, नगण, सगण, दो रगण एव अन्त में गुरु होता है । तथा छः छः तथा सात पर यति होती है ।

बिस्मिय—देखो बिस्मय' (रू. भे.)

उ०—दीठु आंणं प्रत्यक्ष कांम, मांनी देव, को करि प्रणांम ।
बिस्मिय पामीं गजगामिनी, सघली रूप जोई कामिनी ।—नळाख्यांन

बिस्मिल—देखो 'बिस्मिल' (रू. भे.)

बिस्मिल्ला, बिस्मिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

बिस्रंखल, बिस्रंखला–वि. [सं. विशृंखल] १ जिसमें शृंखला नहीं हो, शृंखलारहित ।

२ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके ।

३ दुराचारी, लंपट ।

बिस्रंभ–सं. पु. [सं. विश्रम्भ] १ दृढ़ विश्वास ।

२ प्यार, प्रेम, मुहब्बत ।

३ विश्राम ।

४ मैथुन के समय होने वाला प्रेमी-प्रेमिका का झगड़ा ।

बिस्रंभी–वि. [सं. विश्रम्भी] १ विश्वास करने वाला ।

२ प्रेम या मुहब्बत सम्बन्धी ।

बिस्र–सं. पु.—खून, रक्त । (डि. को.)

रू. भे.—बिस्र ।

बिस्रब्ध–वि. [सं. विश्रब्ध] १ जिसका विश्वास किया जाय ।

२ जो विश्वास करे ।

३ निर्भय, निडर ।

४ जो उद्धत न हो, सुशील ।

बिस्रव, बिस्रवा–सं. पु. [सं. विश्रवस्] १ पुलस्त्य ऋषि एवं हविर्भू के पुत्र और कुबेर, रावण आदि के पिता का नाम ।

वि. वि.—इसके करीब नौ पत्नियां थी। इसकी इड़विड़ा नामक पत्नी से कुबेर, दूसरी पत्नी केकसी के गर्भ से रावण कुम्भकरण, विभीषण, नामक तीन पुत्र एवं शुर्पणखां नामक एक कन्या, तीसरी पत्नी राका के दूषण आदि तीन पुत्र एवं चौथी पत्नी पुष्पोत्करा से खर आदि चार पुत्रों का जन्म हुआ था ।

२ लंकापति रावण ।

उ०—संख वडो तूं संख, संख आवध संवाहे ।
गदा पदम चक्र ग्यांन, बिस्रव ऊपरि लै वाहे । —पी. ग्रं.

३ पुलस्त्य ऋषि के वंशज ।

४ तृणबिन्दु का पुत्र एक राजा ।

५ ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति ।

६ विशाल राजा का पुत्र एक राजा ।

[सं. विश्रव.] ७ आश्रय ।

बिस्रांत–वि. [सं. विश्रान्त] १ जिसने आराम किया हो ।

२ शान्त, सुशील ।

३ पीछे रहा हुआ, रहित ।

४ देखो 'बिस्रांति' (रू. भे.)

बिस्रांति–सं. स्त्री. [सं. विश्रान्ति] १ विश्राम, आराम, ।

२ अवसान, मौत. मृत्यु ।

३ एक तीर्थ का नाम । (पुराण)

रू. भे.—बिसांई, बिसाई, बिसांणी, बिहांणी, बिहांमो. विसांई, विसांणी, विहांणी ।

बिस्रांम—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—१ निरद्वंद नाथ, आस्रम अनाथ, बह स्रस्टीवार, प्रळयांत पार । बिस्रांम व्यूढ, गोतीत गूढ, निरगुण निरीह, आधार ईह । —ऊ. का.

उ०—२ तठै आगवो लाग हूं छाग तोड़ं, चंडी कालिका मात रै ल्रोग चोडे। लगावै सबै सेस बिंदी ललाटां, करै फेर बिस्राम पाळै कपाटां। —मे म.

उ०—३ कनक महल रतनन जटत सबै पुरी के धांम। कनक कोटी पोरी कनक, वाय तणो बिस्राम। —गज उद्धार

उ०—४ एहवा पालखा में राव नै बेसाण हुवा लावा निकल्या। सार्थ मनुख आगे पाछै घणा गांम बारै आया। जब खेत कने रूंख री छायां बिस्राम लियो। जद करसणी बोल्या—अठै मां वालो रे। मां वालो। छोहरा छोहरी बीहेला। —मि. द्र.

बिस्रामणो, बिस्रामबो—देखो 'विसरांमणौ, विसरांमबो' (रू. भे.)

उ०—१ जिसड़ं मोटो राजड़वाळं गयो तिसड़ं परियां रांमसिंघजी पधारिया। मोधि आरोगण लागा दाढ़ी समराड़ी। बहू बिस्रांमी पछै तिण दिन दाढी समराड़ी। —द. वि.

उ०—२ राजाजी भोपतजी थकां कुंवर दळपतजी नूं उचो करि भालियो हुतो अर भोपतजी बिस्रांमियं पछै ज्यूं भोपति नूं कसता तिम दळपतजी नूं कसणी माहे कियो —द वि.

बिस्रांमणहार, हारो (हारी) बिस्रांमणियो—वि०।
बिस्रांमिग्रोड़ो, बिस्रांमियोड़ो, बिस्रांम्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिस्रांमीजणो, बिस्रांमीजबो—भाव वा०।

बिस्रांमियोड़ो—देखो 'बिसरामियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिस्रांमियोड़ी)

बिस्रांमो—देखो विसरांमो' (रू. भे.)

बस्रामु—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—दव जिम दीठइं करुणए करणइ ए हियुं निकांमु। मरुउ वडऊ दमनकी मन किहिं नहीं य बिस्रामु। —जयसेखरसूरि

बिस्राळ, बिस्राल, बिस्राळो, बिस्रालो, बिस्राळो, बिस्रालो—देखो 'विसराळ' (रू. भे.)

उ०—नारी चींतवइ एहवूं, जु नल हुइ मझ चित्ति। सती प्रभावि ह ए हुज्यो, बिस्राल थाज्यो झत्ति। —नळदवदती रास

बिस्रुत—सं. पु. [सं. विश्रुत] १ वसुदेव एव सहदेवी के पुत्रों में से एक यादव राजकुमार।

२ अमिताभ देवों में से एक।

३ पारावत देवों में से एक।

४ जनकवंश के देवमीढ़ के पुत्र और महाधृति के पिता का नाम।

वि.—१ जाना या सुना हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

३ प्रसन्न, हर्षित।

बिस्रुतवत—सं. पु. [सं. विश्रुतवत] सरस्वत राजा का पुत्र एवं बृहद्बल राजा का पिता एक राजा।

बिस्रुतात्मा—स. पु. [सं. विश्रुतात्मन्] भगवान श्रीविष्णु।

बिस्रुति—स. स्त्री. [सं. विश्रुति] प्रसिद्धि, ख्याति।

बिस्रेय—वि [सं. वि.=विशेष श्रेयस्] १ विशेष श्रेष्ठता वाला, उत्तम, श्रेष्ठ।

[सं. वि.=रहित+श्रेयस्] २ श्रेष्ठता रहित, बुरा, नीच।

उ०—धेय को विधांन साधि ध्यांन नां धरचौं, गेय को अग्यांन तैं प्रमांन नां परयौं। क्रेय औ बिक्रेय कथा काजते करयौं। स्रेय को बिस्रेय साज लाज नां मरयौ। —ऊ. का.

बिस्लथ—वि. [सं. विश्लथ] १ शिथिल, ढीला।

२ सुस्त, थका हुआ।

बिस्लेस—सं. पु. [सं. विश्लेष] १ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव।

२ प्रेमियों या पति-पत्नी का विछोह, वियोग।

३ थकावट सुस्ती।

४ शिथिलता, ढीलापन।

बिस्लेसण—स. पु. [स. विश्लेषण] १ किसी पदार्थ आदि के संयोजक द्रव्यों को अलग-अलग करने की क्रिया।

२ वायु के प्रकोप से फोड़े या घाव में होने वाली एक प्रकार की वेदना।

बिस्लेसणात्मक—वि. [सं. विश्लेषणात्मक] जिसका विश्लेषण किया जा सकता हो।

बिस्लोक—सं. पु. [स विश्लोक] एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १६ मात्राएँ होती हैं और पांचवीं व आठवीं मात्रा लघु होती है और यही पर यति होती है।

बिस्वंतर—सं. पु. [सं. विश्वंतर] भगवान बुद्ध।

बिस्वंभर—सं. पु. [सं. विश्वंभर] १ समस्त संसार का पालन-पोषण करने वाले, भगवान विष्णु का नामान्तर।

उ०—नमो ग्रग्राहग्राह स्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा अत विजय लक्ष्या पत नमो। नमो विस्वाधारी धनळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत बिस्वभर नमो। —ऊ. का.

२ देवराज इन्द्र।

३ अग्नि देवता।

४ एक उपनिषद्।

रू. भे.—बिसमर, बिश्वभर, बसंभर, बिसंभर, बिसंभर, बीसमर।

बिस्वभरा—सं. स्त्री. [स. विश्वभरा] पृथ्वी, भूमि। (डिं. को.)

रू. भे.—बिसंभरा, बीसंभरा।

बिस्वंभरी—सं. स्त्री. [सं. विश्वंभरी] १ पृथ्वी, भूमि।

२ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

बिस्वंभरेसर, बिस्वंभरेसुर, बिस्वंभरेस्वर—सं. पु. [सं. विश्वंभरेश्वर]

१ हिमालय के एक शिवलिंग का नाम। (पुराण)

२ महादेव, शिव।

३ ईश्वर।

बिस्व—सं. पु. [सं. विश्वं] १ चौदह भवनों का समूह, समस्त ब्रह्मांड।

२ मयूर नामक असुर का पुत्र एक राजा जो महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष में था।

संसार, जगत।

४ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक गंधर्व।

५ विष्णु का नामान्तर।

६ शिव, महादेव।

[सं. विश्व] ७ वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरुरवा और माद्रवा आदि दस देवताओं का एक गण विशेष।

वि. [सं. विश्व] १ समस्त, सम्पूर्ण, सार्वजनिक।

२ प्रत्येक, हरेक।

रू. भे.—बिसम, बिसव, बिसू, बिस्व, बसव, बिसव, बिसव्व, बिसव, बिसवि।

बिस्वईस—देखो 'बिस्वेस' (रू. भे.)

उ०—घण घणा घाट भांजण घड़ण, बिस्वईस समळ बयण। ईसरो कहै अमरण सरण, नमो नाथ तो नारियण। —ह. र.

बिस्वईसर बिस्वईसुर, बिस्वईस्वर—देखो 'बिस्वेस्वर' (रू. भे.)

बिस्वकंभ—सं. पु. [सं. विश्वकंभ] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

बिस्वकरण—देखो 'बिस्वकरमा'

उ०—अचरिज सहु नैं ऊपनो रे, बलि चीतड़ सूनार। बिस्वकरण नि ओपमा रे, एहिज लहै रे कुमार। —बि. कु.

बिस्वकरमजा—सं. स्त्री. [सं. विश्वकर्मजा] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

बिस्वकरमा बिस्वकरम्मा—सं. पु. [सं. विश्वकर्मन्] १ विश्व का पालन-पोषण करने वाला ईश्वर, विष्णु।

२ विश्व की सृष्टि करने वाला, ब्रह्मा।

३ शिव, महादेव।

४ सूरज, सूर्य। (ना. मा.)

५ शिल्पशास्त्र के अधिष्ठाता एक देवता।

वि० वि०—ये प्रभास वसु के पुत्र थे पुराण, मतान्तर से इन्हें लावण्यमयी या बृहस्पति की ब्रह्मवादिनी बहिन का पुत्र कहा गया है। सूर्य की पत्नी संज्ञा इनकी पुत्री थी व नल नामक वानर इनका पुत्र था। इन्होंने लंका व द्वारका नामक नगरियां बनायी थी। सूर्य के शरीरांश से इसने विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल इंद्र का वज्र व विजय नामक धनुष आदि अस्त्र बनाये थे।

६ इमारत के कार्यकर्ता, लोहार, बढ़ई आदि।

रू. भे.—बिसुकरमा, बिसकरमा, बिसकमा, बिसवकमा, बिस्वकरण, बिस्वकमा, बिस्वेकरमा, बिस्वेकमा।

बिस्वकसेन—सं. पु. [सं. विश्वक्सेन] १ भगवान श्रीविष्णु का नाम।

२ इंद्र सभा का एक ऋषि।

३ नारद का शिष्य एक प्रसिद्ध आचार्य।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ एक अवतार जो ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर में हुवा था।

६ एक राजा जो ब्रह्मदत्त व गो के संसर्ग से उत्पन्न हुआ था।

७ 'चौदहवें मनु का नामान्तर। (पुराण)

रू. भे.—बिसवकसेन।

बिस्वकाय—सं. पु. [सं. विश्वकाय] भगवान श्रीविष्णु।

बिस्वकाया—सं. स्त्री. [सं. विश्वकाया] देवी दुर्गा का नामान्तर।

बिस्वकारक—सं. पु. [सं. विश्वकारक] १ विष्णु।

२ ब्रह्मा।

३ शिव।

बिस्वकारज—देखो 'बिस्वकार्य' (रू. भे.)

बिस्वकारणी, बिस्वकारिणी—सं. स्त्री. [सं. विश्वकारिणी] विश्व की कारण रूपा, देवी।

उ०—प्रगट व्यास प्रोक्तता, कता अपछर हैतू कह। इद्रायण कन आप, रूप देखैं विभ्रम रह। धरण आभ धारणी, बिस्वकारणी बखाणों। रिध सिध नारायणी, जगत अंबा मन जाणौं। —पा. प्र.

बिस्वकारय—सं. पु. [सं. विश्वकार्य] सूर्य की प्रधान सात ज्योतियों का समूह जिसमें सात रंग होते हैं। बेंगनी, नीली, आसमानी, हरी, पीली नारंगी व लाल।

रू. भे.—बिस्वकारज।

बिस्वकूट—सं. पु. [सं. विश्वकूट] हिमालय की एक चोटी का नाम। (पुराण)

बिस्वकेतु—सं. पु. [सं. विश्वकेतु] १ अनिरुद्ध का एक नामान्तर।

२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

बिस्वकोस—सं. पु. [सं. विश्वकोश] १ संसार के समस्त, पदार्थ आदि के संग्रह का कोष या भण्डार।

२ संसार के समस्त प्रकार के विषयों आदि के विस्तृत विवेचन का ग्रन्थ।

बिस्वक्रत—सं. पु. [सं. विश्वकृत] १ संसार के सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा।

उ०—चतुरमुख चतुरबरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग विधायक। सरवजीव बिस्वक्रत ब्रह्म सू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि

२ संसार का भरण-पोषण कर्त्ता, विष्णु।

३ शिव, महादेव।

बिस्वक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

बिस्वगंध—सं. पु. [सं. विश्वगंध] १ लहसन।

२ लोबान।

बिस्वगंधा—सं. स्त्री [सं. विश्वगन्धा] भूमि, पृथ्वी। (डि. को.)

बिस्वगंधि, बिस्वगंधी—सं पु [सं. विश्वगंधि] पृथु नामक राजा के एक पुत्र का नाम।

बिस्वग—सं. पु. [सं. विश्वग] १ ब्रह्मर्षि मरीचि एवं कर्दमपुत्री कला के गर्भ से उत्पन्न पूर्णिमा के एक पुत्र का नाम।

बिस्वगरभ—सं. पु. [सं. विश्वगर्भ] १ भगवान विष्णु।

२ शिव, महादेव।

बिस्वगस्व—सं. पु [सं. विश्वगश्व] राजा पृथु वैन्य के पांच पुत्रों में से एक।

बिस्वगोप्ता—सं. पु. [सं. विश्वगोप्ता] १ विष्णु।

२ देवराज इन्द्र।

३ विश्वंभर।

बिस्वचक्र—सं. पु [सं. विश्वचक्र] बारह प्रकार के महादानों में से एक प्रकार का महादान, जिसमें सोने का चक्र दान में दिया जाता है। (पुराण)

बिस्वचख्ख, बिस्वचख, बिस्वचखु, बिस्वचख—स. पु [सं. विश्वचक्षुस्]

१ ईश्वर, परमात्मा।

२ सूर्य, सूरज।

(मि. जगचख)

बिस्वचित्ति—सं. पु. [स. विश्वचित्ति] हिरण्यकशिपु के दरबार का एक राक्षस।

बिस्वजीत—सं. पु. [सं. विश्वजित्] १ एक प्रकार का यज्ञ विशेष जो विरोचनसुत राजा बलि ने शुक्राचार्य के आदेश से इन्द्र को परास्त करने हेतु किया था।

२ वरुण का पाश।

३ आग, अग्नि।

४ बृहस्पति के एक पुत्र का नाम।

५ एक दैत्य जिसने पूर्वकाल में सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य किया था।

६ राजा सत्यजित के पुत्र का नाम।

बिस्वजीव—सं. पु. [स विश्वजीव] ईश्वर, परमात्मा।

बिस्वजून, बिस्वजोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे)

बिस्वजोतिस—स पु [सं विश्वज्योतिष] एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक था।

बिस्वतन, बिस्वतनु—स. पु. [सं विश्वतनु] भगवान विष्णु।

बिस्वतोया—सं. स्त्री. [सं. विश्वतोया] गंगा नदी।

बिस्वदत्त—सं. पु. [सं. विश्वदत्त] एक सोमवंशीय राजा जो श्रीगणेश की पूजा करने के कारण देवताओं का गणाधिपति बना था।

बिस्वदासा—स. स्त्री. [सं. विश्वदासा] अग्नि की सातों जिह्वाओं का नाम।

बिस्वदेव—सं. पु. [स. विश्वदेव] १ नांदी मुख श्राद्ध में पूजे जाने वाले एक प्रकार के देवता। (पुराण)

२ पारावत देवों में से एक।

३ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—देव देव दीन नाथ राज राज स्रीदयाळ, वासुदेव बिस्वदेव वंदनीक नै विसाळ। नारसींघ नार ग्रेण नरांनाह नाभकंज, रामचद्र राघवेस रूपराज रमा रंज। —र ज. प्र.

रू. भे.—बिस्वदैव।

बिस्वदैव—१ देखो 'बिस्वदेव' (रू. भे.)

२ देखो बिस्वदैवत' (रू. भे.)

बिस्वदैवत—सं. पु. [सं. विश्वदैवत्] २७ प्रकार के नक्षत्रों में से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

बिस्वधर—सं. पु. [सं. विश्वधर] भगवान श्रीविष्णु।

बिस्वधाम—सं. पु. [सं. विश्वधामन्] ईश्वर, परमात्मा।

बिस्वधा—स. पु [सं. विश्वधा] एक प्रकार के देवता, वशवर्तिन देवता।

बिस्वधार—सं पु. [सं. विश्व+धारी] (स्त्री. विश्वधारिणी) १ शिव, महादेव।

२ एक तीर्थ का नाम।

उ०—मोळ'गू हरदांन रामदान दोनूं अतीत होय गया था। तीरथां नै रवांना होय गया था सो मार्ग केदारनाथजी परस, बदरीनाथ परस, बिस्वधार परस, भूठति माहो कर नेपाळ परस, मुक्त क्षेत्र परस, अयोध्या कासी परस परागजी आय मकर री नाहण करि फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भगया पछै बैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकंडेय कुंड तरपण किया।

—पलक दरियाव री बात

२ शाकद्वीपाधिपति मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक।

बिस्वधारणी, बिस्वधारिणी—सं. स्त्री. [स. विश्वधारिणी] १ भूमि, पृथ्वी।

२ दुर्गा, देवी, शक्ति ।

बिस्वनंत—सं. पु. [सं. विश्वनंत] जनकवंशीय एक राजा ।

बिस्वनंद—सं. पु [स. विश्वनंद] ब्रह्मा के एक परम तेजस्वी शिष्य का नाम ।

बिस्वनाथ-सं. पु. [स. विश्वनाथ] १ काशी का एक ज्योतिलिंग ।

२ शिव, महादेव । (अ. मा.)

उ० श्री मेटि भर्म संसार भव, हम कुण गळ उद्धारसी। परसियो राय जोधहपुरै, बिस्वनाथ बाणारसी। —गु रू. बं

३ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

रू. भे.—बिसवनाथ ।

बिस्वनाभ-स. पु. [स विश्वनाभ] १ भगवान् श्रीविष्णु ।

२ देखो 'बिस्वनाभि' (रू. भे.)

बिस्वनाभि-स. पु. [स. विश्वनाभि] १ भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र ।

२ देखो 'बिस्वनाभ' (रू भे.)

बिस्वपत, बिस्वपति, बिस्वपती-स. पु. [सं. विश्वपति] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

३ मनु नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम

रू. भे.—बिसपत, बिसपति, बिसपती ।

बिस्वपा-स पु. [सं विश्वपा] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चन्द्रमा, चांद ।

४ आग, अग्नि ।

बिस्वपातरी बिस्वपात्री-सं पु. [सं. विश्वपातृ] पितरों में से एक ।

बिस्वपाळ-स पु. [सं विश्वपाल] १ संसार का भरण-पोषण कर्ता, ईश्वर, विष्णु ।

२ हिरण्यनाभ कौशल्य का पिता एवं व्युषितादव का पुत्र एक राजा ।

रू भे.—बिसपाळ ।

बिस्वपावन, बिस्वपाविनी-सं स्त्री [सं विश्वपावन] १ तुलसी ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आग, अग्नि ।

बिस्वपूजिता-सं. स्त्री.[स. विश्वपूजिता] तुलसी ।

बिस्वप्रकास, बिस्वप्रकासक-सं पु. [सं विश्वप्रकाशक] सूरज, सूर्य ।

बिस्वप्रबोध-सं. पु [सं. विश्वप्रबोध] भगवान विष्णु ।

बिस्वामन-स. पु. [स विश्वामन्] १ देवता ।

२ सूरज, सूर्य ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ अग्नि, आग ।

बिस्वबंधु-स. पु. [स विश्वबंधु] शिव महादेव ।

बिस्वबाहु-स. पु. [सं. विश्वबाहु] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

बिस्वभरता, बिस्वभरत्ता-स पु. [सं विश्वभर्तृ] ईश्वर, परमात्मा ।

बिस्वभावन-स. पु. [स. विश्वभावन] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ रक्त नामक बीसवें कल्प में उत्पन्न ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।

बिस्वभुज, बिस्वभुजा-स. स्त्री. [स विश्वभुज्] १ एक देवी का नाम । (पुराण)

स. पु.—२ ईश्वर, परमात्मा ।

३ देवराज इन्द्र ।

४ पाकयज्ञ का अग्निदेवता जो बृहस्पति के चार पुत्रों में से चौथा पुत्र था और गोमती नदी का पति था ।

५ पितरों में से एक ।

वि —सब का उपभोगकर्ता, सर्वभक्षी ।

बिस्वभूखण, बिस्वभूसण-स. पु. [सं. विश्वभूषण] एक सूर्यवंशी राजा (रा. वसावली)

बिस्वमया-सं. स्त्री [सं विश्वमया] अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम ।

बिस्वमहेस्वर-सं पु. [स. विश्वमहेश्वर] १ शिव, महादेव ।

बिस्वमाता-स स्त्री. [सं विश्वमाता] विश्व की माता, दुर्गा ।

बिस्वमित, बिस्वमितर बिस्वमित्र, बिस्वमीत—देखो 'बिस्वामित्र' (रू. भे.)

उ०—पेड़ां री छायां बैठयो हो, बिस्वमित्र तप ग्यानी। चिंतन घणो मगन हो, हो परम लोक रो ध्यानी। —करणीदान बारहठ

बिस्वमुखी-स. स्त्री. [स विश्वमुखी] पार्वती ।

बिस्वमूरति, बिस्वमूरती, बिस्वमूरत्ति-सं. स्त्री. [सं. विश्वमूर्ति] सर्वव्यापी भगवान विष्णु ।

बिस्वमोहन-स पु. [स. विश्वमोहनम्] विष्णु का नामान्तर ।

बिस्वयोनि, बिस्वयोनी-स. पु. [स. विश्वयोनि] संसार के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

रू. भे.—विसवजूरण, विसवजोनि, विसवयोनि, बिस्वजूरण, बिस्वजोनि।

बिस्वरंधी–सं. पु. [सं. विश्वरंधि] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम ।

बिस्वर—देखो 'विसर' (रू. भे.)

उ०—नाडोलाई री सोमाचंद सेवग बाबेचा कह्यौ—भीखणजी लेरवै है सो त्यांरा अवरणवाद बिस्वर जोड़ । सतरै प्रकार नीं पूजा रचै है तिण मांहीं सूं तोनै दस बीस रुपया देस्यां । जब सोमाचंद बोल्यौ—भीखणजी सूं बात करनै पछै बिस्वर जोडस्‌ —भि. द्र.

बिस्वरथ—देखो 'विस्वमित्र'

बिस्वराजा–सं. पु.—एक सूर्यवंशी राजा का नाम । (रा. वंसावळी)

बिस्वरुचि, बिस्वरुची–सं. पु. [सं. विश्वरुचि] १ एक देव योनि। [सं. विश्वरुची] २ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम ।

बिस्वरूप–स. पु. [सं. विश्वरूप] १ श्रीकृष्ण । (नां. मा.)

२ श्रीविष्णु ।

३ शिव, महादेव ।

४ चोसट भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

५ शिवकल्प के पश्चात् प्रारंभ हुए एक कल्प का नाम ।

६ गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखाया गया भगवान श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जिसके अनुसार उन्होंने समझाया कि ब्रह्मांड मे सूर्य, चन्द्रमा, तारे ग्रह आदि जो कुछ है वे सब मेरा ही स्वरूप है।

८ एक प्राचीन तीर्थ ।

९ त्वष्टा का एक त्रिमुखी पुत्र जिसे इन्द्र ने मारा था ।

बिस्वरूपविस्तार–सं. पु.—श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

बिस्वरूपा–सं. स्त्री. [सं. विश्वरूपा] १ एक देवी ।

२ धर्म ऋषि की पत्नी, जिसकी कन्या का नाम धर्मव्रता था ।

बिस्वरूपी–स. पु. [स. विश्वरूपिन्] भगवान श्रीविष्णु ।

बिस्वरेतस—देखो 'बिस्वरेतस' (रू. भे.)

बिस्वलोचण, बिस्वलोचन–सं. पु. [स. विश्वलोचन] १ सूरज, सूर्य ।

२ चांद, चन्द्रमा ।

बिस्वलोप–स पु. [सं. विश्वलोप] एक वैदिक ऋषि का नामान्तर ।

बिस्ववसु–स पु. [सं. विश्ववसु] जमदग्नि एवं रेणुका एक पुत्र ।

बिस्ववारा–स. स्त्री. [स. विश्ववारा] एक अत्रिगोत्र की स्त्री, जो ऋग्वेद के पांचवें मंडल की ऋचाओं की ऋषि थी ।

बिस्वविद्यालय–स. पु. [स. विश्वविद्यालय] सभी प्रकार के विषयों की उच्च कोटि की शिक्षा देने व उपाधियां प्रदान करने वाली शैक्षणिक सस्था विशेष ।

बिस्वसनीय–वि. [सं. विश्वसनीय] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य ।

बिस्वसहा–सं. स्त्री. [स. विश्वसहा] १ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम ।

२ भूमि, पृथ्वी, (डिं को.)

बिस्वसाखी, बिस्वसाक्षी–स. पु. [सं. विश्वसाक्षी] ईश्वर, परमात्मा ।

बिस्वसित—देखो 'बिस्वस्त' (रू. भे.)

बिस्वसेन–सं. पु. [स. विश्वसेन] १ शान्तिनाथजी के पिता एक राजा । (जैन)

उ०—बिस्वसेन पिता अचिरा माया, जेणं चउदै सुपना मोटा पाया । जनम्या तीरथंकर अमिय झरौ, स्रीसांति जिनेंस्वर सांति करौ । —जयवांणी

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम । (रा. वंसावळी)

बिस्वस्त–वि. [स. विश्वस्त] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वसनीय ।

बिस्वस्ता–स. स्त्री. [सं. विश्वस्ता] वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो, विधवा ।

बिस्वस्रवा–सं. पु. [सं. विश्वश्रवा] कुबेर एवं लंकापति रावण के पिता एक मुनि ।

उ०—ब्रहस्पति पुत्र पुलहकृत (भारद्या मनभवा) तस्य पुत्र भारद्वाज । पुलहस्त भारद्या सांति, तस्य पुत्र बिस्वस्रवा । बिस्वस्रवा पुत्र कुबेर । कुबेर पुत्र नलकुवर । —रा. वंसावळी

बिस्वहरता, बिस्वहरत्ता–सं. पु. [स. विश्वहर्तृ] शिव, महादेव ।

बिस्वहेतु–सं. पु. [स. विश्वहेतु] भगवान, श्रीविष्णु ।

बिस्वा–सं. स्त्री. [सं. विश्वा] १ राजा दक्ष की कन्या, जो धर्म को ब्याही गई थी ।

२ भारतवर्ष की एक महा नदी ।

३ सोंठ । (नां. मा.)

बिस्वागाथा–सं. स्त्री. [स. विश्वागाथा] गाहा छंद का एक भेद विशेष, जिसमें ९ गुरु और ३९ लघु अर्थात ४८ वर्ण या ५७ मात्राएं होती हैं ।

बिस्वाघात—देखो 'बिस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—राजाजी चिमकनै बोल्या—हैं, अं तो दीवांणजी ! अबै ठा पड़ी ! तो आ सगळी कुबमाद आं दीवांणजी री ही । इसो

बिस्वाघात ! साच पूछो तो म्हांने थां दीवांणजी माथै कदै ई पूरो भरोसो नीं हुवो । —फुलवाड़ी

बिस्वाची—सं. स्त्री. [सं. विश्वाची] १ एक वैदिक अप्सरा ।

२ वायु के कारण होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें कंधे से अंगुलियों तक सारा हाथ न तो फैलाया जा सकता है और न ही सिकोड़ा जा सकता है । (वैद्यक)

बिस्वात्मा—सं. पु. [सं. विश्वात्मा] १ विष्णु, भगवान ।

२ संसार के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा ।

३ शिव, महादेव ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

बिस्वाधार—सं. पु. [सं. विश्वाधार] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ॰—अनाथां-नाथ अनंत अछेह, दयाळ-मूरति विवर्जित-देह । बिना-वपु-रूप अनंत बिचार, अमूळ-विरक्त सु बिस्वाधार । —ह. र.

२ मेधातिथि के पुत्र का नाम ।

रू. भे.—बिस्वाधारी ।

बिस्वाधारी—देखो 'बिस्वाधार' (रू. भे.)

उ॰—नमो अग्राह्याह्य भुवन पुट साह सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा अत विजय लख्या पत नमो, नमो बिस्वाधारी अनळ अपहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व अवन सुत बिस्वंभर नमो । —ऊ. का.

बिस्वाधिप, बिस्वाधिपत, बिस्वाधिपति, बिस्वाधिपती—सं पु [सं. विश्वाधिपति] विश्व का अधिपति, ईश्वर, परमेश्वर ।

बिस्वानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ॰—१ बावना चंदन ठवी, सुरहा तेल नी धार रे । घ्रत बिस्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु संस्कार रे । —ए. जै. का. स.

उ॰—२ उतर आज स उजमी, सकै तो पडसी सोय । कै बिस्वानर सेविवं, कै सामु री धोय । —डो. मा.

उ॰—३ तेरा पक्का न लावसी, रे बिस्वानर रहु । मह दीठइ तइ जाळिया, सज्जन केरा हडु । —प्रथ्वीराज राठौड़

बिस्वावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिस्वांमित्र, बिस्वांमित्तर, बिस्वामित, बिस्वामित्तर, बिस्वामित्र, बिस्वामित्रेस,

बिस्वामीत—सं पु. [सं. विश्वामित्र] कान्यकुब्ज के पुरुवंशीय महाराज गाधि के पुत्र एक महर्षि जो क्षत्रियकुल में जन्म लेने पर भी अपने तपोबल से ब्रह्मर्षियों में परिगणित हुए ।

उ॰—१ बिस्वामित्रेस एण बात, कोपियो भयकरा । गिरां तरां सरां गंभीर, धुज्जवं विसुंधरा । —सू. प्र.

उ॰—२ बिस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी । पति स्रापहूं देह पाई पखांणै, जिका दिव्य देहा हुई स्त्रब्ब जांणै । —सू. प्र.

उ॰—३ बिहूं रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सझै जग बिस्वामित्र सहाय । जनक तणौ वळि जोयो ज्याग, भांगै धनु कहु सोय विभाग । —ह. र.

वि. वि.—इनका जन्म का नाम विश्वरथ था किन्तु ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर ये विश्वामित्र के नाम से विख्यात हुए । गाधि की सत्यवती नामक पुत्री ऋचीक ऋषि को ब्याही गई थी । ऋचीक ने अपनी पत्नी व सास के लिए दो अलग-अलग चरु बनाये पर दोनों ने गलती से एक दूसरी का चरु खा लिया । परिणामतः सत्यवती से जमदग्नि हुए जो ब्राह्मण होते हुवे भी क्षत्रिय गुण सम्पन्न थे और महाराज गाधि की पत्नी के गर्भ से विश्वामित्र हुवे, जो क्षत्रिय होते हुवे भी ब्राह्मणत्व से परिपूर्ण थे । ये बड़े प्रतापी राजा थे । एक बार ये शिकार करते-करते ससैन्य वसिष्ठाश्रम में पहुंचे । वहां वसिष्ठ महर्षि ने अपने तपबल एवं कामधेनु नन्दिनी की सहायता से राजा का राजोचित सत्कार किया । नन्दिनी से प्रभावित होकर उसे इन्होंने अपने साथ ले जाना चाहा और वसिष्ठ के इन्कार करने पर इन्होंने जबरदस्ती की । वसिष्ठ का इंगित जान कर नन्दिनी क्रुद्ध होकर अपने शरीर से सैनिक व म्लेच्छ निकाले जिन्होंने राजकीय सैनिकों को पराजित किया । उक्त घटना से इन्हें अनुभव हुआ कि राजबल से तपोबल अधिक है । परिणामतः इन्होंने भी राज्य को त्याग कर घोर तपस्या की और तपस्वी, राजर्षि व ब्रह्मर्षि बने । इनकी तपस्या में मेनका ने विघ्न डाला और उससे शकुन्तला का जन्म हुआ । मतान्तर से उर्वशी या रम्भा नामक अप्सरा ने तपस्या भंग की थी और तपस्या भंग करने वाली अप्सरा से ही शकुन्तला का जन्म हुआ था जो दुष्यन्त राजा की पत्नी बनी थी और भरत की माता बनी थी । इन्होंने दशरथ सुत रांम-लक्षमण को अपने साथ यज्ञ की रक्षार्थ ले जाकर ताड़का, सुबाहु आदि का वध करवाया था । वहीं से रांम-लक्षमण को अपने साथ मिथिलापुरी सीता स्वयंवर में ले गये थे । इन्होंने त्रिशंकु को सदेह स्वर्ग पहुंचाया था । इनके शुनः, शेफ, मधुच्छन्द, धनंजय, कृतदेव, अष्टक, कच्छप, हारीतक, हिरण्याक्ष, आदि सौ पुत्र हुए थे । सती, रेणु, शालावति, सांकृति, माधवी आदि इनकी पत्नियां थी । इनका आश्रम कौशिकी नदी के तट पर था ।

२ अर्वावसु एवं परावसु ऋषियों के पितामह एवं रैभ्य नामक ऋषि का पिता, एक ऋषि ।

३ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित वैवस्त मन्वन्तर का एक ऋषि ।

४ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ रहने वाला एक ऋषि ।

५ रात्रि राक्षसों के चार समूहों में से एक राक्षस समूह ।

रू. भे.—बिसवामंत्र, बिस्वामंत्र, बिसवामंत्र, बिसवामित, बिसवा मितर, बिसवामिति, बिसवामित्र, बिसुवामित, बिसुवामितर, बिसुवामिति, बिसुवामित्र, बिस्वमित, बिस्वमितर, बिस्वमित्र, बिस्वमीत ।

बिस्वामित्रा—सं.स्त्री. [सं.विश्वामित्रा] भारत में बहने वाली एक नदी ।

बिस्वायु—सं पु. [सं. विश्वायु:] पुरुरवस् राजा के छः पुत्रों में से एक जो राजा था ।

बिस्वावसु—सं. पु. [सं. विश्वावसु] १ एक गन्धर्व का नाम जो कश्यप एवं प्राधा के पुत्र थे । (पुराण)

वि. वि.—इनके दो पुत्रियां थी । पहली पुत्री महासती मदालसा थी, जिसे पातालकेतु विवाहार्थ हर ले गया था किन्तु शत्रुजित् के पुत्र ऋतध्वज ने पातालकेतु को मारकर इससे विवाह किया था और दूसरी पुत्री का नाम प्रम्द्वरा था जो मेनका नामक अप्सरा से उत्पन्न हुई थी । पृथु महाराज के द्वारा पृथ्वी को गाय रूप में दूहते समय गन्धर्वों व अप्सराओं ने इन्हें बछड़ा बनाकर कमल पात्र में गन्धर्व विद्या (संगीत) व सौंदर्य दूह लिया था ।

२ श्रावण माह के सूर्य के साथ भ्रमण कर्त्ता एक गन्धर्व ।

३ विष्णु का नामान्तर ।

४ जमदग्नि ऋषि के पांच पुत्रों में से एक जो महान ऋषि था ।

५ साठ संवत्सरों में से ३९ वां और विष्णु वीसी के उन्नीसवें संवत्सर का नाम ।

६ धर्म एवं सुदेवी के पुत्रों में से एक, वसु ।

७ मधु राक्षस की पत्नी कुंभीनसी का पिता एवं माल्यवत राक्षस की कन्या का पति, एक राक्षस ।

८ पुरुरवस एवं उर्वशी के पुत्रों में से एक, गन्धर्व ।

बिस्वावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—१ सं महु नैं सुख ए जगदीस, वांणी तेहनी, बिस्वावीस । प्रगट्या आगम पेतालीस, संख्या नाम कहूं सुजगीस ।

—ध व. ग्र.

उ०—२ धण जोवै नित राजरी, वाटां बिस्वावीस । किण दिन आय करांवस्यो, घर लीनां री हींस ?   —अग्यात

बिस्वास—सं. पु [सं. विश्वास] १ मन में किसी व्यक्ति, बात या वस्तु के कारण उत्पन्न होने वाला भाव, भरोसा, ऐतबार, यकीन, ।

उ०—१ देखता पांण सेठ रो जीव राजी व्हियो । उण री निजरां आगै सा' ब अर मेंमड़ी रा हुसतोड़ा उणियारा फिरण लाग्या । सेठ नैं पक्कायत बिस्वास व्हैग्यो कै हीरो वानैं सोळूं आंना दाय आवेला ।   —अमर चूंनड़ी

उ०—२ तथा लोकां नैं साधां सूं भिड़कावै । जद स्वांमीजी बोल्या—आगै भगू पुरोहित पिण बेटा नैं भिड़काया । कह्यो साधां री बिस्वास कीज्यो मती ।   —भि. द्र.

२ किसी विषय, सिद्धांत आदि की सत्यता का पूरे प्रमाण के अभाव में उसकी सत्यता के सम्बन्ध में होने वाली मन की धारणा ।

उ०—लुगाई में अकल अर हीमत व्है तो ई वा कांम में नीं बरतीजै । बरतीजण री कीं मारग ई कोनी । पूतळी री पूजा करतां भगत नैं तो औ बिस्वास रैवै के भगवांन बिनां कह्यां ई उण रै मन री सै बातां जांणतो व्हैला ।   —फुलवाड़ी

३ मन में होने वाला वह दृढ़ निश्चय जो केवल अनुमान पर आधारित हो ।

उ०—इतरा नैं तो एक लठ म्हारी खोपड़ी पर पड़ियो अर म्हूं पड़तो पड़तो बच्यो । अबै म्हनै पक्को बिस्वास व्हैग्यो हो के आ कोई प्रेत लीला नहीं पण मांनखा लीला ही ।   —रातवासो

४ यकीन, एतबार, भरोसा ।

उ०—१ घात व्हैणी व्हैती तो कदई व्है जाती । धनजी-भीमजी माथै आपरो बिस्वास है जिको चोखो इज है, पण कांई ए दो आदमी दरबार सूं ई बत्ता सांमरथ है ? दरबार तो आप रै माथै पूरा मेहरबांन है ।   —अमर चूनड़ी

उ०—२ अबकी महारांणी फेर मासी रै पगां हाथ लगाय कह्यो—थूं औ बिस्वास राख कै थारी काली भांणजी कदै ई थारै इण सत माथै अभरोसो नीं करैला ।   —फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारी जीभ में कीड़ा पड़ै म्हूं थनै कालै कैड़ी ऊंधी पाटी पढाई । म्हारी काली बातां माथै घणो बिस्वास करियो तो सगळी ऊमर रोवैला ।   —फुलवाड़ी

५ आत्मबल ।

उ०—१ इण परमेस्वर रै करार रो कूंतो आंक लियो बेटी ! म्हूं थनै म्हारो औ इज ग्यांन सूंपणो चावतो । अबै तो औ ग्यांन ई म्हारी सुहाग अर थारो बिस्वास है ।   —फुलवाड़ी

उ०—२ उण रा डील नैं पतवाणियां म्हनै अंडो लखायो कै औ बाबो धांन, पांणी अर हवा रै पांण नीं जीवै, आपरा बिस्वास रै आपै जीवै है ।   —फुलवाड़ी

उ०—३ पण बिस्वास रा बळ आगै उणरा अखूट बिखा नैं ई हार मांनणी पड़ी । बिस्वास रा बळ रै सांमी बापड़ा दुख, क्लेस अर संताप रो कांई गाळ ।   —फुलवाड़ी

६ दृढ़ निश्चय ।

उ०—ठाकर आडियां रा अरथ बतावण में प्रवीण हा वांनै पूरो बिस्वास हो । अर जबांन सूं कौल व्हैगो जको तो व्हैगो ।

—फुलवाड़ी

७ धैर्य, तसल्ली ।

८ आत्म-सन्तोष ।

उ०—१ म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नै कांई जवाब देवतो । उण रा विस्वास नै किया खतम करतो । जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनें कियां तोड़तो । —अमरचूनड़ी

उ०—२ गुमेज भरचा सुर में बोल्या—मूंडो है, घरटी रो गाळो कोनी । निकळचा बोल पाछा नीं उराइजै । म्हनै पूरौ विस्वास है कै किणी माडो रो भरच म्हारा सूं छानो कोनी । —फुलवाड़ी

९ धैर्य ।

उ०—तिण सूं गणदेव रो आगम जाणि पहिलो सूचना करि मोनूं बुलाइ गेमांरां नूं म्हारो सहायक भाव दिखावणो । जरै लीबो रो भय टळियां विस्वास पाइ छीजियां नूं रजपूत करण रै काज मीणां री चाल छोडण रो पत्र कपट कर लिखावणो । —वं. भा.

उ०—''''''जै हंसै तो एक लाख अर जै प्रसन्न होय नो विक्रम करोड़ रुपिया देय । सो हे राजा ! महाराज विक्रम सा गुण जै तो मांहीं होय तो सिंघासण बैठ नातर विस्वास कर बैठ रहै ।

—सिंघासण बत्तीसी

क्रि. प्र.—करणो, जमणो, देणो, बैठणो, होणो ।

रू. भे.—बसास, बिसवास, बिमवास, बिसास, बिस्वास, बेसास, बंसास, विसवास, विसास, वीसास ।

अल्पा.—बेसासड़उ, वीसासो ।

विस्वासकारक—वि. [स. विश्वासकारक] १ विश्वास करने वाला, जो विस्वास करे ।

२ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास योग्य, विश्वसनीय ।

विस्वासघात—सं पु. [स. विश्वासघात] विश्वास देने के बाद विश्वास करने वाले के विरुद्ध, उसके विश्वास के विरुद्ध किया जाने वाला कार्य ।

उ०—१ इतरी सुण कुमार वट बांदर नै डाळ मूं धकेलियो सो पड़तां बार सचेत होय डाळ ऊपर चढ़ गयो । कुमार रै माथै मूत की धार मार कह्यो—नीच तो नूं धिक्कार ! तू बचनहार, मित्रद्रोही विस्वासघात कीन्हो । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ इसो बात सुण कुमार एक आक छोडियो । वीसारांमा करै लागियो, तद पड़दा मांही सूं फेर पिंडत कह्यो —ब्रह्महत्यादिक पाप गंगा न्हाया छूट जाय पर मित्र सूं कियो विस्वासघात नहीं छूटै ।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ कइ विस्वासघात अम्है कीधा, कइ अवगुणियां पात्र । कइ धन प्रांणि वियारा भूंटो, पामर पोख्या गात्र । —कां. दे. प्र.

रू. भे.—बिसवासघात, बिस्वाघात, बिस्वासघात, विसवासघात, बिसासघात, बीसासघात ।

विस्वासघातक, विस्वासघाती—वि. [सं. विश्वासघातक, विश्वासघातिन्] विश्वासघात करने वाला ।

उ०—१ इतरी बात सुण कुमार एक आंक और छोडियो । वीसरामा करै लागियो । पड़दा सूं पिंडत कह्यो—जै मित्रद्रोही, विस्वासघाती पर कृतघ्नी हो सो चाद, सूरज रहै तो लों नरक भोगै ।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सेठजी म्हनैं पैं'ला आ बात क्यूं नीं बताई । म्हैं आं सेठां नै अैड़ा विस्वासघाती तो नी जांण्या हा । म्हारै सारै ई कुचमाद करण में नी चूक्या । —फुलवाड़ी

उ०—३ राज-दरबार में मांनखो मावतो नीं हो । राजाजी सिंघासण माथै बिराज्या रीस में उफणता हा । तो आ सगळी कुचमाद इण विस्वासघाती दीवांण री । —फुलवाड़ी

विस्वासणो, विस्वासबो—क्रि. स.—१ सन्तोष करना ।

२ विश्वास या भरोसा देना, विश्वास कराना ।

३ दृढ़ निश्चय करना ।

क्रि. प्र.—४ सन्तोष होना ।

५ विश्वास होना, भरोसा होना ।

६ दृढ़ निश्चय होना ।

विस्वासणहार, हारो (हारी), विस्वासणियो—वि० ।

विस्वासिओड़ो, विस्वासियोड़ो, विस्वास्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विस्वासीजणो, विस्वासीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिसवासणो, बिसवासबो, बिसासणो, बिसासबो, बिस्वासणो, बिस्वासबो, बेसासणो, बेसासबो, बंसासणो, बंसासबो, विसवासणो, विसवासबो, वीसासणो, वीसासबो—रू० भे० ।

विस्वासपातर, विश्वासपात्र—वि. [स. विश्वासपात्र] जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय ।

रू भे.—बिस्वासपात्र ।

विस्वासा—स. पु. [स. विश्वासा] एक सूर्यवंशी राजा, विश्रुतवान । (पुराण)

उ०—जै सुत हुवो सधि हत दूजण, मरखण सधिसुतण कुळ मंडण । मरखण सुत सिहुसान भूप मणि, भूप विस्वासा हूं तै सुत भणि ।

—सू. प्र.

विस्वासियोड़ो—भू. का. कृ.—१ सन्तोष किया हुआ. २ विश्वास या भरोसा दिया हुआ. विश्वास किया हुआ. ३ दृढ़ निश्चय किया हुआ. ४ सन्तोष हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ. ५ विश्वास हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ. ६ दृढ़ निश्चय हुवा हुआ ।

(स्त्री. विस्वासियोड़ी)

विस्वासी—वि. [सं. विश्वासी] १ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य ।

उ०—१ दीखण में तो एकलो दीसूंला, पण एकलो रहूंना कोनी। म्हारी मरजी रा खास बिस्वासी असवारां नै पांच-पांच, सात-सात री टोळियां बणाय नाकै रै नाकै ठौड़ ठौड़ लुकाय नै बैठाण दूंला। —फुलवाड़ी

उ०—२ जद स्वांमी जी विमाकर बिस्वासी आहार अवेरने बोल्या—आ थारै सका है तो चरचा करांला। इम कही उण वेला इज तावड़ै मैं विहार कीधो। —भि. द्र.

उ०—३ मतीरौं री रुत में मतीरौं रा ऊठ रा ऊठ नाखीजता। बिस्वासी आदमी वां रै टाक्यां लगाय' र कई में मोहर अर कई में रुपिया घाल' र पाछोई मूडी बंद कर देवता। —संत सेठ ओरांमरतन डागा री वात

२ विश्वास करने वाला।

रू. भे.—बिसवासी, विसवासी।

बिस्वेदेव-स. पु. [स. विश्वेदेव] १ वेदानुसार नौ देवताओं का एक समूह विशेष।

वि. वि. - अग्निपुराणानुसार इस समूह में दस देवता माने गये हैं—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आर्द्रक और पुरुरवा। इनमें से पांच देवों का जन्म विश्वामित्र के शाप के कारण द्रोपदी के गर्भ से हुआ था जो बाल्यकाल मे ही अश्वथामा के द्वारा मारे गये थे। श्राद्ध आदि में इनका पूजन किया जाता है।

२ दस की संख्या।

बिस्वेदेवपूजन-स पु. [स. विश्वेदेव पूजन] आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को पूर्वाषाढा होने पर विश्वेदेवों का किया जाने वाला पूजन।

बिस्वेस-सं. पु. [स. विश्वेश] १ शिव, महादेव।

२ भगवान श्रीविष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ सत्ताईस नक्षत्रों में से उत्तराषाढ़ा नामक नक्षत्र विशेष।

रू. भे.—बिसवेस, बिस्वईस।

बिस्वेसर, बिस्वेसुर, बिस्वेस्वर-सं. पु [सं विश्वेश्वर] १ शिव की एक मूर्ति।

२ विष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम।

रू. भे.—बिसेसर, बिस्वईसर, बिस्वईसुर, बिस्वईस्वर।

बिस्वेकरमा—देखो 'बिस्वकरमा' (रू. भे.)

बिस्वैकसार-सं. पु [सं. विश्वैकसार] एक प्राचीन तीर्थ, जो काश्मीर में है।

बिस्वैक्रमा—देखो 'बिस्वकरमा' (रू. भे.)

उ०—यहूं नांम सोयं प्रभा धांम एता, जिकै तात बिस्वैक्रमा कीध जेता। हिमानी सखा माहरे एक हूंती, अठाहूंत सो उद्धरी भागवती —सू. प्र.

बिस्वौ—देखो 'बिसवौ' (रू. भे.)

उ०—तरै जैतसीजी बोल्या, बाई, म्हांनै पण छै बांमण, चारण भाट सवासणी—इतरां रो बिस्वौ खाण रौ पण छै. सो पण भाज्यौ थांरा दाखीण सूं। —जैतसी ऊदावत री वात

बिस्सरांम—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—पडिहार भीम भुज दांन भत्त, प्रिथमी दीप जाणै सपत्त। थाकै सति साहंस बिस्सरांम, 'नाद' व्रत कियौ रवि चंद - नाम। —गु. रू. बं.

बिस्सरांमौ—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

बिस्सरांमौ—देखो 'विसरांम' (रू. भे)

बिस्सम—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—विपरीत बिस्सम घात, किरि बांण वज्रहै पात। वरजाग बूंग वहंति, किरि अगिग द्रस्टि हुवंति। —गु. रू. बं.

बिस्सहरपुर-स पु. [सं. विषधरपुर] नागौर नगर का नाम।

उ०—बिस्सहरपुर फतै वहइ वांणि, पह दियइ भेट पूजइ न प्रांणि। खेसइ खडगिग नांणउ खरोह, करिमाळ झाल ऊभइ न कोह। —र. ज. सी.

बिस्सांम—देखो विसराम' (रू. भे)

बिस्सा-सं पु. [स विश्रमा] पुद्गल, धूप छाया, आदि।

उ० - बिस्सा हाथ आवै नहीं, मिस्सा जीव-रहत। जीव सहित ते योगसा, श्री जिन वांणी तहत्त। —जयवांणी

बिहंग-सं. पु [सं] १ पक्षी, चिड़िया।

उ०—१ प्रीतड़ भला पारेवडां, केता अवर बिहंग। वात न लहइ वियोगनी, सदा निरंतर संग। —मा. कां प्र.

उ०—२ मर सूकै नह संचरै, बांका पड़ी बिहंग। किण रै चालै संग कुण, सब स्वारथ रै संग। —बां. दा.

उ०—३ जेथि रंग-आंमास, तेथि क्रीडति कुरगह। जेथि न्रपति बैसता, तेथि उड्डंत बिहगह। —गु. रू. बं.

उ०—४ कुदरती कोमंड तांण करै, छेदन बिहंग दुहग सरै। रज धूंधळ समूह मिळै रयण, अहपति अछप्त थयौ गयणं। —गु. रू. बं.

२ मांसाहारी पक्षी।

उ०—१ पनग लड़ी कीड़ा पड़ी, सड़ी झड़ी दुख संग । जग चुगलां री चीभड़ी, वायस मलो बिहंग । —बां. दा.

उ०—२ मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख बीरत वरत पत । खग गिलत गूंदा तत अखत, वण असत परवत मेरवत । मह मिपत बिहंग बिसल । —र. रू.

३ सूरज, सूर्य ।

४ चान्द, चन्द्रमा ।

५ बादल, मेघ ।

६ बाण, तीर ।

७ घोड़ा, अश्व । (ना. डि. को.)

उ०—१ जोइवा जगत आवंत जात, गिरवर बिहंग उतंग गात । दीपक्क चक्ख सोभा दिखन्सि, असराळ तेज कोडीक अग्न्सि ।

—गु. रू. बं.

उ०—२ ताहरा चूडासांमा, "राज री खरो परधांन आयो । घोड़ा असवारां सो पोहतो । परमेसर दीनो । मार नै घोड़ा उरा लेवो ।" इतरो कहि नै असवार ५० बडा बिहंग पाछा घेरिया । घेर नै नरे ऊपर नाखिया । —जैतमाल पुमार री बात

८ आकास, गगन । (ना मा)

९ सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र ।

१० जनमेजय के सर्पसत्र मे दग्ध, ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग का नाम ।

११ हंस ।

उ०—करिसु कथा जिम कुमुदिनी, रमिवा भोगी भ्रग . मति मुत्ताहल बीणरिसु, चिणवा चतुर बिहंग । —मा कां. प्र.

१२ देखो 'बिहंगमारग' (रू. भे.)

उ०—भक्त जोग परं हठ जोग है, सांख्य जोग ता आगी । मीन पपील बिहंग पुनि कहियं तीहूं राह चीन बडभागी ।

—श्रीहरिरांमजी महाराज

१३ देखो 'बिहाग' (रू. भे.)

उ०—भणंत स्री विनोदयं, कल्याण केक मोदयं । संभायची पटं-मयं, बगेसरी बिहंगयं । —रा रू.

रू. भे.—बहंग, बिहग, बिहगम, बिहंगी, बिहग, बहग, बिहंग, बिहगम, विहग, बिहांग, बीहग ।

अल्पा.,—बिहगड़ो, बिहगड़ो, बिहांगड़ो, बोहंगड़ो ।

बिहगड़ो—देखो बिहग' (अल्पा., रू. भे.)

बिहंगजेठी—स. पु.—१ सूरज, सूर्य ।

उ०—मड़ लगा खग्गोहां मीच खेटी मने, बिहंग-जेठी समर खांचियो बाज नै । गजां घेटी तरह भाड़तां कुलगनै, कळेठी सूर सुरताण जेठी कनै । —ठाकुर सुरतांणसिंहजी रो गीत

२ गरुड़ ।

बिहंगनाथ—स. पु. [म. बिहंग+नाथ] १ पक्षिराज गरुड़ ।

उ०—वज्र छूटो इद्र कं, विछूटो रामचद्र बाण, कूदवा सांमंद्र बाण टूटो हणू क्रोध । काळो नाग घड़ा हूं बिहंगनाथ जूटो कना, जटी की जटा सुं छूटो भद्र जोध । —हुकमीचंद खिड़ियो

२ देवराज इन्द्र ।

३ देखो 'विहगपत'

रू. भे.—विहंगानाथ ।

बिहंगपत, बिहंगपति, बिहंगपती,—सं. पु. [सं. विहंगपति] १ पक्षिराज गरुड़ ।

२ देवराज इन्द्र ।

३ सूर्य सूरज ।

४ चन्द्रमा, चांद ।

रू. भे.—वहगपत, वहगपति ।

बिहंगम—वि. [सं.] आकाश में गमन करने वाला ।

उ० – १ तठा उपराति करि नै गजांन सिलांमति ग्रीखम रित मांहै पवन पावक समांन वाजियो छै । प्रथी अप नें वायू अकास च्यारि तत पांचमे अगनी तेज तत भेला मिळ नै रहिया छै । प्रिथी रा लोक बिहंगम पंखी छै । —रा. ज. स.

स. पु —१ सूरज, सूर्य ।

२ अश्व घोडा ।

३ आकाश. गगन ।

४ मांसाहारी पक्षी ।

उ०—१ निण वार बीरारस संगम, ग्रीध चीलह नभ छाए बिहंगम । कळह का आगम सो बिखमारिख, सार का कांठा सचा पारिख । —रा. रू.

५ पक्षी ।

उ०—१ तन दुख नीर तड़ाग, रोज बिहंगम रूखड़ो । बिसन सलो-मुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल । —बां. दा.

उ०—२ सावं हिंदू मुस्सलमांणां, हिंदुसथांन खिडं खुरसांण । मुळ गळ अजबकि खुरसाणी, बोलै जेम बिहंगम बांणी ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ सड़ाळां आलम हल्ल मिरै, नन्नाबधि वंसक नंदगिरै । घंटा-रव घूघर सद्द हुवै, बोलत बिहंगम जांण चुवै । —गु. रू. बं.

उ०—४ ऊजासो इद्र रै, राम रै गुरड़ बिहंगम । सूरज रो सिलह "जै" जिसो सपतास तुरगम । —गु. रू. बं.

६ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण ।

७ खर राक्षस का एक आमात्य ।

८ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

रू. भे.—विहंगम ।

विहंगमग-सं. पु. [सं.] १ आकाश, आसमान, गगन, (ना. मा.)

२ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

विहंगमपथ—देखो 'विहंगमारग' ।

उ०—वदंति लोक वाक्या, पपीलिका मारगं पयणं । सिधति सूर पथ, **विहंगमपथ** पणयह ।—गु. रू. ब

विहंगममारग—देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

विहंगमा-सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की किरण ।

विहंगमारग-सं. पु. [सं. विहंगमार्ग] योग साधना के तीन मार्गों में से एक मार्ग विशेष, जिसके द्वारा साधक काया को अधिक क्लेश दिये बिना शीघ्र व सहज में पक्षी की तरह उडकर अपने प्राण ब्रह्मांड तक ले जाता है ।

रू. भे.—विहंग, विहंगम, विहंगमग, विहंगममारग, विहंगराह ।

विहंगराज, विहंगराजा-सं पु. [सं. विहंगराज] १ पक्षिराज गरुड ।

२ इन्द्र का नामान्तर ।

रू. भे.—वहंगराज, वहंगराजा ।

विहंगराह—देखो 'विहंगमारग'।

उ०—सांख्य जोग निज ग्यांन कहीजे, सार असार पिछांणं । मिथ्या त्याग सतकी संग्रह, औ विहंगराह निरवांणं ।

—श्रीहरिरांमजी महाराज

विहंगांनाथ—देखो 'विहंगनाथ' (रू भे)

उ०—तूटो बोम बाट निराताळ सौ विछूटो तारो, केतां छूटो पीरांण आळवां ताकं कूप । कोप रुद्र-माळका **विहंगांनाथ** जूटो कना, रूठो गोरां माथं प्रळे काळ को सो रूप ।

—गिरवरदान कवियो

विहंगेस-सं पु [सं. विहंग+ईश] १ गरुड ।

२ इन्द्र ।

रू. भे.—विहंगेस, बिहंगेस ।

विहंगो—देखो 'विहंग' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—गह मेरे दीया सबद विहंगा, पकरि लीया असें मन पंगा । यो मन भवंग बसे तन वंबी, गवन करे कत छोटीय लंबी ।

—अनुभववांणी

विहंड-सं. पु.—१ टुकडा, खण्ड ।

उ०—लडे पडे रिण खेत में, तन तें होय विहंड । सूरा तन को क्या मूवो, हरिया दरगह मंड ।—अनुभववांणी

२ नाश, संहार ।

उ०—प्रसुळ पीरस धर खंडमंड बोलिया—हुंसा गमण री हांम पूरां । वडो भ्रम उबारां । दोखियां रा कांध भिरडां । एक बार धणां रा तन विहंड करां ।—मा. वचनिका

३ मारने की क्रिया ।

रू. भे. विहंड ।

विहंडखंड—देखो 'खंड-विहंड' (रू. भे.)

उ०—मिळे असुरांण वीर भाग रो समंदां मथं, खेले होळी फाग रो प्रयाग री खतंग । भडे पंडां खाग री विहंड-खंडां वगें जूक, पीठांण 'गभीरो' पडे आग रो पतंग ।

—ठाकुर गंभीरसिंघ सोलंकी री गीत

विहंडण-सं पु—१ नाश, संहार ।

२ मारने की क्रिया ।

वि - १ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

उ०—धर गई मरब धर धूंधडां, तें हाथी तोता तने । वैरियां विहंडण वेगडा, मुर्गी किसू हुव मात ने ।—पा. प्र.

२ मारने वाला ।

उ०—श्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ **विहंडण** । जाहर मही जहर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मंडण ।

—र. ज. प्र.

३ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—१ खलक तारण तरण खलां खंडण खतम । रोर जग **विहंडण** सुखद सरसे । सियावर तूझसो तुंही दाखे सको, दूसरो गमोबड न को दरसे ।—र. रू.

उ०—२ दुख दावानल सलिलवाह ! दोहग **विहंडण** । जय जय 'पास' जिणंद ! देव ! थंभणपुर मंडण ।—स. कु.

विहंडणो-वि.—१ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—इम थुण्यउ जिणवर सति दिणयर, भविय तिमिर **विहंडणो** । अणहिल्ल पाटण मांहि स्री, अंबाड़ वाडा मंडणो ।—स. कु.

२ मारने वाला ।

३ नाश करने वाला, संहार करने वाला, विध्वंसक ।

विहंडणो, विहंडबो-क्रि स.—१ नाश करना ।

उ०—१ ग्यांम छळ करां जुध साहसां, धार समंद भूलण धसां । किरमरां विहंड असुरां कटक, वरां रंभ सुरपुर बसां ।—सू प्र.

उ०—२ पिंड विहंड होय चुम चुम पडं, नाथ वकं रंभ हित तिको । सुलभ ही जिको पांऊं सरग, जगत घणो दुल्लभ जिको ।

—सू. प्र.

उ०—३ जीना लाखा जुद्ध विहंडे जूझवाह. हाजिर बंदा देव सको किंकर हुवाह । प्रगटी पेम अमोल दियं निम सुरपती, हरिहां

गुंमिर किसी इक नूक कहीजे अगजगतो । —मा. वचनिका

उ०—४ बहै विपरीत वेळा करारी, कूत किरमाळ नेजा कटारी । घमबबो धार रुळ रंड मुंड, बिहुंड पंड बाड खहड़ बिहुंड । —गु. रू ब.

२ मिटाना, खतम करना ।

३ नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ गिरिजा-नंदन गुण गुहिर, गाजइ गिर गमीर । प्रघारि प्रादित्य तिम, विघन बिहंडइ वीर । —मा. कां प्र.

उ०—२ घोर गात्र ठरट्टिम कइ वामइ, सिरि संवंत्रा भार । गवरीय नंदन विघन बिहंडण, दुख खंडण सुख सार । —रुकमणि मंगळ

४ मारना, संहार करना ।

उ०—१ भाखरसी प्रापणी पण मोह गोळो । घर पठाण घाया हुंता, तिका नू मार बिहंड कर नाखिया, घर घठे भाखरसी री तौ फतै हुई, मोरचो कायम राखियो । —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ मोमिया इक पेसो मरे, मैंणे करसण मांडिया । गढपती पेमायो मामगढ, बिढ प्रबदाळ बिहंडिया । —रा. रू.

उ०—३ बिहंडत गज वाज, सांमि तणों छळि साहणी । देखि कहै पैळां दळां, धिन हाथां धनराज । —र. वचनिका

उ०—४ इक बाघो सहसा प्रजणि, जळ कोड़ा ममारे । बांमणि गदा बिहंडिया, दूजो बळि द्वारे । —सू. प्र.

उ०—५ "सूर" तणो सुरसरी तणें मर, मांनव बिहंडिया बजावे मार । रण रेवत भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी मिणमार । —किसनो प्राढो

उ०—६ सीह हुवा मेहासदू, प्रडिया भुज भंवर । बिजो प्ररज्जन बिहंडिया, लाधा भर खप्पर । —ठाकुर जूझारसिंह मेड़तियो

५ टुकड़े-टुकड़े करना, काटना, छेदना ।

उ०—१ रूक पियाला पोप्रस्यां पाइस्यां । बाचर बिहंडिस्यां बिहंडाइस्यां । रिणखेत रै बिखे रंगिर्म्रे बांणासि मतवाळां ज्यूं घूमतां थका हाथिम्रां सूं टला खाइस्या । —र. वचनिका

उ०—२ वाहै सत्रां सिरि खाग बिहंडे, मार लिये घांणा बळ मडे । पाल्हासणी प्रसुर बळ पूरे, साथ प्रमांमे गात सनूरे । —रा. रू.

उ०—३ प्राज करूं प्रारांण, निकमतां तबल निसांणा । बीस भुजा दस बदन, बिहड रालूं तज बांणा । —र. रू.

उ०—४ प्रोरि तुरग प्रसुर रां, जगी हवदां लगि जाऊं । सिर बिहंडूं घण सत्रा, त्रिलम निज सिर बिहडाऊं । —सू प्र.

क्रि. प्र.—६ नाश होना, सहार होना ।

७ टुकड़े-टुकड़े होना, कटना ।

उ०—१ भड़ खळिया भंभर वेहक बज्जर, बळिया पक्खर बिहंड बपे पळ खड़िया पंजर पडे पंचाहर, जे जे संकर सकति जपे । —गु. रू. बं.

उ०—२ तूटै भड़ निवड त्रिजड़ झड़ तिमछे, बाड प्रतेवड बिहंड वपे छूटंती रुहिर नडड दड वड छिळि, धारां धजवड सुहड भ्रपे । —गु. रू. बं.

उ०—३ वगि बिहंड पळ खड, तेग तिमछां मुहि तुटी । धारां मुहि धडछियो, कुंभ किरि काळो फूटो । —गु. रू. बं.

८ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

९ घटना ।

१० मिटना, खतम होना ।

बिहंडणहार, हारो (हारी), बिहडणियो—वि० ।

बिहंडियोड़ो, बिहडियोड़ो, बिहंड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिहडीजणो, बिहंडीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिहडणो, बिहंडबो, बिहड़णो, बिहड़बो, बीहंडणो, बीहंडबो, बहडणो, बहडबो, विहड़णो, विहड़बो—रू० भे० ।

बिहंडाणो, बिहडाबो—क्रि. स. [बिहडणो, बिहडबो का प्रे. रू.]

१ संहार कराना ।

उ०—१ वीजळां मोहरि खळ दळ बिहंडि, वप बिहंडाय परी वरां । खग करे वास प्रंजस मरब, कुळ सो बीस कवेसरां । —सू प्र.

उ०—२ प्रममाल प्राप छळि करि प्रबड, वप बिहंडाय रंभा वरूं । जंग करण महाभारत ज्यूं ही 'करण' नांम साचो करूं । —सू प्र.

२ नाश करवाना, मिटवाना ।

३ संहार करवाना, मराना ।

४ मिटवाना, खतम करवाना ।

५ टुकड़े-टुकड़े कराना, कटवाना, छिदवाना ।

उ०—१ प्रोरि तुरंग प्रसुर रा, जगी हवदां लगि जाऊं । सिर बिहंडूं घण सत्रां, त्रिलम निज सिर बिहंडाऊं । —सू. प्र.

उ० —२ रूक पियाला पोप्रस्यां पाइस्यां । बाचर बिहंडिस्यां बिहंडाइस्यां । रिण खेत रै विखै रंगिम्रे बांणासि मतवाळां ज्यूं घूमतां थकां हाथिम्रां सूं टला खाइस्या । —र. वचनिका

बिहंडाणहार, हारो (हारी), बिहडाणियो—वि० ।

बिहंडायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिहंडाईजणो, बिहडाईजबो—कर्म वा० ।

बिहंडायोड़ो—भू. का. कृ.—१ संहार कराया हुआ. २ नाश करवाया हुआ, मिटवाया हुआ. ३ संहार करवाया हुआ, मरवाया हुआ. ४ टुकड़े-टुकड़े करवाया हुआ, छिदवाया हुआ, कटवाया हुआ. ५ मिटाया हुआ, खतम किया हुआ ।

(स्त्री. बिहडायोड़ी)

बिहडियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, ध्वंस किया हुआ. २ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, काटा हुआ, छेदा हुआ. ५ मिटा हुआ, खत्म हुआ हुआ. ६ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ।

(स्त्री. बिहंडियोड़ी)

बिहंणं, बिहंणौ—देखो 'बिहूंणौ, (रू. भे.)

बिहंसक—देखो 'विध्वंसक' (रू. भे)

उ०—बिरहणि वस बिहंसक, किसुक नहि ए भंति। बिलवइ बिरह करालियउ, बालिय इम एकंति। —जयसेखर सूरि

बिहंसणौ, बिहंसबौ—देखो 'विहसणौ, विहसबौ' (रू. भे.)

बिहंसणहार, हारौ (हारी), बिहंसणियौ—वि०।

बिहंसिप्रोड़ौ, बिहंसियोड़ौ, बिहंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिहंसीजणौ, बिहंसीजबौ—भाव वा०।

बिहंसियोड़ौ—देखो 'विहसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहंसियोड़ी)

बिह—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ बारस बिह गणिपिटक तणी, संख्या कही हौ लाल। सासता अरथ अनंत कि छइ, एहना सही हौ लाल। —वि. कु.

उ०—२ आरोहत गिर सिखरं, समुद्र लंघ जात कपाळं। बिह अक्षर लिखिया भालं, फलत कपाळं हि भूपालं। —ठकुरै साह री वात

उ०—३ लिखियौ लाभै लोय, पर लिखियौ लाभै नहीं। पर सिर पदम हि जोय, जै बिह बिहवै अप्पियौ। —नैणसी

उ०—४ लगन कळह दिली बिह लिखियौ, आलम धड़ देखै असमांन। वीदपणौ अजमेर विसारे, खिसियौ खसियौ हाजीखांन।
—राठौड़ रतनसिंह री वेलि

उ०—५ बिह आंणै बिह मेळवै, बिह मंडै उपचार। अळगौ ही नेड़ौ करै, बिह तणौ बिचार। —राव रिणमल री बात

बिहग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

बिहड़-सं. पु.—बीहड़, जंगल, वन।

उ०—इसै में मांगेसुर मंगायजै छै सु किण भांत छै। केसर री क्यारी दोलळी, वासग माथा री। थोहर रा बिड़ा री, माखर रा खुहारी. भूरै मोर री, काळै पांन री, आबू रा बिहड़ां री, अमरमार मिरधमाळ खरियाळ बिड़ियाळ, चोटड़ियाळ।
—रा. सा. सं.

रू. भे.—विहड, बिहडु।

अल्पा.,—विहड़ौ, बिहडौ।

बिहड़णौ, बिहड़बौ—देखो विहडणौ, विहंडबौ' (रू भे.)

उ०—नेह अकत्रिम मइं कियउ रे, कदे न बिहड़इ तेह। दिन दिन अधिकउ उलटइ रे, जिम आसाढी मेह। —वि. कु.

बिहड़णहार, हारौ (हारी), बिहड़णियौ—वि०।

बिहड़िप्रोड़ौ, बिहड़ियोड़ौ, बिहड़्योड़ौ - भू० का० कृ०।

बिहड़ीजणौ, बिहड़ीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बिहड़ियोड़ौ—देखो 'बिहडियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिहड़ियोड़ी)

बिहड़ौ—देखो 'विहड़' (अल्पा., रू. भे.)

बिहचणौ, बिहचबौ—देखो 'बंचणौ, बंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सिर नासा कांन दसन आंखें, नख गाल वपुस ना मल नांखें। मिलणौ लेखौ करइ मंतरणौ, बिहचण अपणौ करि अन धरणौ। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ जाइ राजा सूं मुजरौ कीयौ। कहीयौ महाराज घरां री खबर आई छै। बेटी रौ बिमाह छै। राजा सिरपाव दे विदा दी उवै चोर कन्है गया कह्यौ ईंडो बिहचौ। कह्यौ बिहचौ। ताहरां खीवो बोलियौ एथ वहिचस्यां नहीं मारवाड़ माहि नै जाइ नै उथ वहिचस्यां। ताहरा ऊ चोर बोलियौ कितरा हैसा करिस्यौ कह्यौ तीन हेसा करिस्यां। —चौबोली

उ०—३ तद पाछा घरै पधारनै जै भांत जोगी कह्यौ हुतौ तै भांत रांणियां नूं बभूत रौ गोटौ, सोपारियां बिहच दीवी। पछै कितरै कै दिनै पुत्र हुवौ —नैणसी

बिहचणहार, हारौ (हारी), बिहचणियौ—वि०।

बिहचिप्रोड़ौ, बिहचियोड़ौ, बिहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिहचीजणौ, बिहचीजबौ—कर्म वा०।

बिहचियोड़ौ—देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहचियोड़ी)

बिहड—देखो 'विहड़' (रू. भे.)

उ०—तिकै चीता कठारा छै? मरोट रा, अघोरा, देरावर रा, रोहरा, थटैरौ, पहाड़ां रा, ईडर रा डूंगरां रा, जाळोर रा, पहाड़ां रा, पावर रा, थळां रा, पारकर रा बिहडां रा। इसा चीता साथ लीजै छै। —रा. सा. सं.

बिहडौ - देखो 'विहड़' (अल्पा., रू. भे.)

बिहडु—१ देखो 'बेहद'।

उ०—नेहली नीर भरिया नयडु, बांकउ दुरग पाखी बिहडु। सारील 'जइत' सुरितांण साज, रांमावतार राठउड राज।
—रा. ज. सी.

२ देखो 'विहड़' (रू. भे.)

बिहण-वि. [सं.] १ नाश करने वाला, संहार करने वाला।

२ संहार करने वाला, मारने वाला ।
३ देखो 'बहन' (रू. भे.)
रू. भे.—बिहण, बिहन, विहन ।

बिहुत, बिहुति—क्रि. वि. [सं. विहीतम्] निवारण करने के लिए ।

उ०—वळमाया तन मन ग्राप ग्राप मैं, विहुत मीत रुखुमिणी वरि । वीणि ग्ररथ जिम सकति सकतिवत, पुहपगध गुण गुणी परि । —वेलि

देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—ग्रगमद ग्रंबर सारघण, गंधसार ग्रंगरेल । कुम कुमादि केसर ग्रगर, बिहुति सुगंधी रेल । —रा. रू.

बिहुतर—देखो 'बेहतर' (रू. भे.)

उ०—बाग तांम वरियाम, दहूं ग्राए चढि डंबर । कारंजां चादरां नीर धरहरैं बिहुतर । —सू. प्र.

बिहथो—वि.—दो हाथ के बराबर नाप को ।

उ०—मु तोड नूं घावयो जोंणें छै, जु रैबारी मार नै तोड़ लेवां । मु तोड मेह रै चोखळ रै कंड रो, हथ बिहथो कंवडी, नवहथो भोकणो । चोखळ करहो मेकतो तहा मेकी ।
—जैतमाल पुमार री वात

बिहद—स. पु.—१ ध्वनि, ग्रावाज ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—बिहद हंदि रहम केल जमदूत दहलै । —केसोदास गाडण

३ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में बीस मात्राएं होती हैं ।

उ०—पागै एकणि परठि जे, बीस मात्र विसतार । समझै लाखो भंड सुघड़, बिहद छंद वहुग्रार । —ल. पि.

वि.—बड़ा या महान ।

उ०—ता मे ग्रेक गयंद है, मेर समोवड़ गात । रिण वेळा रावत बिहद, गिणै ग्ररि तिलमात । —गजउद्धार

५ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ हरनेत्र जळै ज्वाळा बिहद, लोकजि ग्रमरख सगिळै । ग्रजमल्ल वळै दीठौ 'ग्रभो', देस ढाळ मारू दळै । —रा. रू.

उ०—२ बिहद लोध जिण वार, रंग ग्रव भूप जहो रस । जस ग्रम कजि जगजोत, दियां तबपत्र दवादस । —सू. प्र.

उ०—३ बिहद कोर गोटां बणी, पातर रैं पोसाक । परणी फाटा पूंगरण, बेंठी फाडै बाक । —बां. दा.

उ०—४ देवी दे वरदांन, ग्यांन रोजै गुण गावां । भाखां सहि भागिवत, बिहद हुय ग्ररथ वणावा । —पी. ग्रं.

उ०—५ लागी ग्यांन धरा पर लोटै, सुध बुध भूला भोम सिळै । बिहद कपाळ हुवा परवरतो, मुगती पोहरां मांय मिळै ।
—बांकीदास बोहू

रू. भे.—विहद्द ।

बिहदभांनु, बिहदभांनू—सं. पु. [सं. बृहद्भानु] ग्रग्नि, ग्राग । (ग्र. मा.)

बिहद्द—१ देखो 'बिहद' (रू. भे.)

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ विरांण सब्द सुणिया बिहद्द, नीसांण तूर ग्रनहद्द नद्द । जोयणां सरीरां जोत जाग, लोयणा पार रां घ्यांन लाग ।
—वि. सं.

उ०—२ त्यारी करै तमांम, जलूसां साजिया, ग्रबागळ रिणतूर, बिहद्दां बाजिया । —र. रू.

उ०—३ हुकम हुवौ तन सुख हुवां, हुवा नगारां सद्द । कूच हुवो जैपुर दिसा, हुवौ हुलास बिहद्द । —रा. रू.

उ०—४ बनस्पती पाखर बणी, वणिया टूंक बिहद्द । पटा बिछूटा नीभरण, ग्रायो मद ग्ररबद्द । —ढाढाळै सूर री वात

उ०—५ फौजां डेरा फाबिया, दीसै हद्द बिहद्द । सबज वरना स्याह ग्रन, लाल सपेत जरद्द । —गु. रू. बं.

उ०—६ बेंताळ वीर मिळिया बिहद्द, सोकोतरि साकणि महा सद्द । मिळ समळ ग्रीध ग्रांमख भखल, जंबक्क रींछ वह्वाक जवख ।
—गु. रू. बं

बिहन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—बांमण चरण प्रतापविधि, हिम पित गौरि बिहन ।
—रांमरासो

२ देखो 'बिहण' (रू. भे.)

बिहबळ—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—साह बळ वडौ बिहबळ हुवै, त्रिखावंत जळ मोकळै । कळि मूळ ग्राद पैठी, कमो', भूंद कंठै भाखर वळै । —गु. रू. ब.

बिहमंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

बिहर—सं पु.—१ संहार, नाश ।

२ घोड़ा, ग्रश्व ।

३ विचरण करने की क्रिया । (जैन)

४ साधुग्रो ग्रादि द्वारा मांगने पर दिया जाने वाला ग्राहार ग्रादि, भिक्षा ।

क्रि. वि.—१ भांति, तरह, प्रकार ।

२ बहुत, ग्रपार ।

३ बड़ा, विशाल ।

४ बड़ा, महान्।

बिहरणौ—सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा। (शा. हो.)

बिहरण—सं. पु. [सं.] १ विहार करने की क्रिया।

२ बिछोह, वियोग।

३ विस्तार, फैलाव।

बिहरणौ, बिहरबौ—क्रि. अ.—१ विहार करना, घूमना, टहलना।

उ०—१ ···महाभैरव सूकर घुरकइं, चित्रक बटकइ, वेताल किलकलइं, दावानल प्रज्वलइं, रिछ सांचरइं विरू बूकार करता बिहरइं, इसी अटवी,···········।—व. स.

उ०—२ पुलिरा रविसुता फहरावजे पीतपट, आवजे रासथळ ब्रजनाथ आय। कांन कवार बिहरि गळी ब्रज कुंजरी, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ।—बां. दा.

उ०—३ बिहरंत बाग विलास, फिरि संग ग्रह कयलास। दिन उदय सुख दरसाव, चित होत अगया चाव।—रा. रू.

२ अलग-अलग होना, जुदा होना।

३ बिखरना, तितर-बितर होना।

४ भिक्षा देना।

उ०—बेकर जोड़ी सालिभद्र बोलइ, प्रस्न करूं स्वांमी तुझ नइ रे। बिहरण बात तो दूरी रहो पणि, मां ग्रोलख्यउ नहीं मुझनइ रे।—स. कु.

५ गमन करना, जाना।

उ०—धन ते गांम नयर पुर मंदिर, जिहां बिहरइ जिनराइ रे। बिहरमाण सीमंधर स्वांमी, सुर नर सेवइ पाय रे।—स. कु.

६ भिक्षा मांगना, भिक्षा लेना।

उ०—१ वीर वचन सुणि बिहरण चाल्यउ, सालिभद्र मन संतोखी रे। आयउ घरि ग्रोलख्यउ नही माता, तप करि काया सोखी रे।—स. कु.

उ०—२ नंदिसेण बिहरण गयउ, गणिका कीधुं हास हो। अस्टि करी सोना तणी, मइं तसु पूरी आस हो।—स. कु.

उ०—३ विन बिहरयइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन मांहि संदेह आयउ रे। मारग मांहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ रे।—स. कु.

उ०—४ आपण पइ जाऊं बिहरवा, सूझतउ लूं आहार। ऊंच नीच कुल गोचरी, लेऊं नगर मझार।—स. कु.

क्रि. स.—७ संहार करना, मारना।

उ०—१ सबळ बोलियो 'प्राग' समोभ्रम अरिग्रण बिहर करां खग उत्तम। 'तेजल' अमर खाग भुज तोले, बहुसं खांन नरायण बोलै।—रा. रू.

उ०—२ वड पड़ बिहर बाटां बिळंह, भुजळग झट सेळां भचड़ि। रूग वसू कहै 'हटमल' सुतन, 'अमृनि' जिम खाटै अचड़ि।—सू. प्र.

उ०—३ व्हां अमर काय सिभजीत व्हां, विखम 'त्रिलद' फोजा बिहरि। करमाळ रगै मुजरो करूं, केसरिया झकझोळ करि।—सू. प्र.

८ काटना।

उ०—१ भड़ भिड़ज्ज गजभार, धार बिहरै पाड़ै धड़। ढहियो सिर पोढियो, बोळ झकझोळ बहादर।—सू. प्र.

उ०—२ उडती झाळां लोपि अरावां, वह गजघड़ खगि हणूं निवावां। कूंभाथळां बिहरि घण काळा,मारि गजा लोपूं मछराळां।—सू. प्र.

उ०—३ पांडवां जही किता पळ खडिया, बिहरै हाड विजूजळ माह। सहूआं सिर 'मुहम्रो' सूरजमल, मेल्यो मेछ तणै दळ माह।—महाराजा सूरसिंह री गीत

९ टुकड़े करना, विच्छेदन करना।

उ०—एकण हीरो बिहरियां, दूजो हीरो थाय। हीराबेधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय।—र. ज. प्र.

१० चीरना, विदीर्ण करना।

उ०—१ दांतूसळ वजर धजर जम दाढां, बाढां ऊगाढां बिहर। असपति नजर भलो आफळियो, कूंजर नै नाहर कंवर।—लिखमीदास गाडण

उ०—२ फाट फरि उर पारि फोंफरि, वजरि असमरि बिहर वाखरि। कुंवरि नरि कटि कवर कोपरि, चार चरि धरि ढचरि पळचरि। जोध जुट घट जग।—जगो खिड़ियो

११ तोड़ना।

उ०—जो नृप पूतो नह दियै, दासी दूध अहार। तो बिहरै गिरि वज्र जिम, खत्री खग्ग पहार।—गु. रू. बं.

१२ इन्तजारी करना, प्रतीक्षा करना।

उ०—गात महाबळ गाळिया, भड़ सारिखा भीम। सत बिहरो सयणी कहै, हिव जाणीस्यै हीम।—सयणी री वात

१३ युद्ध क्रीड़ा करना।

उ०—असुर हजारां संहरै, हरै अमीरां लज्ज। आयो रण बिहरै अभो', करै फतै कमधज्ज।—रा. रू.

बिहरणहार, हारौ (हारी), बिहरणियौ—वि०।

बिहरियोड़ौ, बिहरियोड़ौ, बिहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिहरीजणौ, बिहरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

विहरणौ, विहरबौ, वी'रणौ, वी'रबौ, वोहरणौ, वोहरबौ ।
—रू० भे० ।

विहरमांण विहरमांन—स. पु.—पांचों विदेह क्षेत्रों में विचरण करने वाले तीर्थंकर ।

वि. वि.—जम्बू द्वीप के विदेह क्षेत्र के मध्य में स्थित मेरुपर्वत के पूर्व एवं पश्चिम में सीता एवं सीतोदा महानदियां हैं । उक्त नदियों के उत्तर-दक्षिण में आठ-आठ विजय हैं । इस प्रकार वहां आठ-आठ की पंक्ति में बत्तीस तीर्थंकर रहते हैं ।

धातकी खण्ड व अर्द्धपुष्कर द्वीप के चारों विदेह क्षेत्रों में भी ऊपर लिखे अनुसार ही जघन्य चार एवं बत्तीस उत्कृष्ट तीर्थंकर सदा रहते हैं कुल पांच विदेह क्षेत्रों में १६० विजय एवं प्रत्येक विजय में जघन्य बीस एवं उत्कृष्ट १६० तीर्थंकर रहते हैं ।

वर्तमानकाल में पांच विदेह क्षेत्रों में बीस तीर्थंकर विद्यमान हैं । जिनके नाम नीचे लिखे हैं । घूमते रहने के कारण ये विहरमान कहलाये ।

(१) श्रीसीमंधर स्वामी (२) श्रीयुगमंधर स्वामी (३) श्रीबाहु स्वामी (४) श्रीसुबाहु स्वामी (५) श्रीसुजात स्वामी (श्रीसयातक स्वामी) (६) श्रीस्वयप्रभ स्वामी (७) श्रीऋषभानन स्वामी (८) श्रीअनन्तवीर्य स्वामी (९) श्रीसूरप्रभ स्वामी (१०) श्रीविशालधर स्वामी (विशाल कीर्ति स्वामी) (११) श्री वज्रधर स्वामी (१२) श्रीचंद्रानन स्वामी (१३) श्रीचन्द्रबाहु स्वामी (१४) श्रीभुजंग स्वामी (भुजंगप्रभ स्वामी) (१५) श्रीईश्वरस्वामी (१६) श्रीनेमिप्रभ स्वामी (नेमीश्वर स्वामी) (१७) श्रीवीरसेन स्वामी (१८) श्रीमहाभद्र स्वामी (१९) श्रीदेवयश स्वामी (२०) श्रीअजीतवीर्य स्वामी ।

बीस विहरमानों के चिन्ह लांछन क्रमशः निम्न हैं—
(१) वृषभ (२) हस्ती (३) मृग (४) कपि (५) सूर्य (६) चन्द्र (७) सिंह (८) हस्ती (९) चन्द्र (१०) सूर्य (११) शंख (१२) वृषभ (१३) कमल (१४) कमल (१५) चन्द्र (१६) सूर्य (१७) वृषभ (१८) हस्ती (१९) चन्द्र (२०) स्वस्तिक ।

उ०—१ सम्प्रति बीस जिनेस्वर वदउ, **विहरमांन** जिणराया जी । विचरंता भविजन मन मोहैं, सुर नर प्रणमइ पायाजी । —वि. कु.

उ०—२ विहरमनी विवावली कोरणी अति सीकारी रे । समोसरण सोहामणी, विहरमांन विस्तारी जी । —स. कु.

उ०—३ धन ते गाम नयर पुर मंदिर, जिहां विहरइ जिनराय रे । **विहरमांण** सीमंधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे । —स. कु.

रू. भे.—वइरतमाण, वइहरमाण, विरहमाण, विरहमान ।

विहराणौ, विहराबौ - देखो 'वैराणौ, वैराबौ' (रू. भे.)

उ०—बिन विहरयइ पाछउ वलयउ मुनिवर, मन माहि संदेह आयउ रे । गोरस माहि मिला महिमारा, तिण गोरस **विहरायउ** रे । —स. कु.

विहराणहार, हारौ (हारी), विहराणियौ—वि० ।

विहरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहराईजणौ, विहराईजबौ—कर्म वा० ।

विहरायोड़ौ—देखो 'वैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहरायोड़ी)

विहरावणौ, विहरावबौ—देखो 'वैराणौ, वैराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रतिदिन पडिकमणु करइ गति पांमइ जी, सांमायिक एकंत देव गति पामइ जी । आहार **विहरावइ** सूझतउ गति पांमइ जी, सांभलइ सूत्र सिद्धांत देवगति पामइ जी । —स. कु.

उ०—२ विण विहराव्यां आप जिमइ नहीं दाखीजइ दांन सूरौ जी । आहार पाणी **विहरावइ** सूझतउ, वस्त्र पात्र भरपूरौ जी । —स. कु.

उ०—३ आज तो तपसीएहवो, पूंजा रिख सरीखौ न दीसइ रे । तेहनें वंदना **विहरावतां**, हरखें करि हियड़ौ हींसइ रे । —स. कु.

विहरावणहार, हारौ (हारी), विहरावणियौ—वि० ।

विहराविओड़ौ, विहरावियोड़ौ, विहराव्योड़ौ - भू० का० कृ० ।

विहरावीजणौ, विहरावीजबौ—कर्म वा० ।

विहरावियोड़ौ—देखो 'वैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहरावियोड़ी)

विहरियोड़ौ—भू. का कृ.—१ विहार किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ अलग अलग हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ. ३ भिक्षा दिया हुआ. ४ बिखरा हुवा, तितर बितर हुवा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ६ भिक्षा मांगा हुआ, भिक्षा लिया हुआ. ७ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ८ काटा हुआ. ९ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, विच्छेदन किया हुआ. १० चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. ११ तोड़ा हुआ. १२ इन्तजारी किया हुआ, प्रतीक्षा किया हुआ. १३ क्रीड़ा किया हुआ ।

(स्त्री. विहरियोड़ी)

विहळ, विहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—भाग तणा भामणा त्यां भूधर दुख भजण । **विहलां** ना वीठला मुगति सारूप समपण । —पी. ग्रं.

उ०—२ रास तिमो रहमाण, मुगति दीन्ही महिलां नां । गोकळ मा गोविंद, वळ मिळियो **विहलां** ना । —पी. ग्रं.

उ०—३ राक सरिस दें रीझ, अखिल काड खीज करै अति । वडो **विहळ** हूं बुरो, पीर सां रीस किसी पति । —पी. ग्रं.

विहलौ—देखो 'वहिलौ' (रू. भे.)

उ०—रहि चोमासो रंग सु, **विहलौ** करै विहार । माती घरा महेवची, वंदावी तिण वार । —ऐ. जै. का. स.

रू. भे.—विहिल, विहिलु बिहिलौ ।

बिहव—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—लिखियौ लाभै लोय, पर लिखियौ लाभै नहीं। पर सिर पदम हि जोय, जै बिह बिहव अप्पियौ। —नैणसी

बिहवल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी री मा तौ सुण अचेत हुई। सो वडारणां नीठ सचेत कीवी। अर बहुवां सुण बिहवली हुइ गई। नेत्रां मांह प्रवाह छूट पड़िया। —कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री. बिहवली)

बिहव्य-सं. पु [सं.] वितव्य का पिता एवं गृत्समदवंशीय वर्चस् ऋषि का एक पुत्र, एक ऋषि।

बिहव्यआंगिरस-स. पु. [सं.] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम।

बिहसणौ' बिहसबौ-क्रि. अ.—१ हंसना, प्रफुल्लित होना, हर्षित होना।

उ०—१ उरध रोम उल्लसै जोम अरि करण रसातळ, भजि त्रिसळौ निज भाळ कळा सोखण सत्र कम्मळ। उर उछाह ऊपजै धाह पैलां ग्रहि धारण, वदन हास बिहसंत रुदन पर वंस वधारण। —रा. रू.

उ०—२ सुंडाळ भिड़िया आवी अड़िया; सुहड़ अगोअगि। नर सीस बिहसई वदन विगसई, सेल वाहई सगि। —रुकमणीमंगळ

२ खिलना, विकसित होना।

उ०—१ पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ। रवि ऊगइ बिहसइ कमळ, खिण इक विमणउ थाइ। —ढो. मा.

उ०—२ हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकार व्रात, अद्रश्य नक्षत्र पट,लागन अज्जवल,निःसबद घूक कुल,निरमल दिग्मंडल, आस्रित पूरवाचल, हूउं रविमंडळ, बिहसइं कमळ, विस्तरइं परिमळ, वायु वाइं सीतळ, प्रसन्न महीतळ, जिस्यां रातां पारेवा तणां चरण, तिस्यां बिस्तरइं सूरय तणा किरण। —रा. सा. स.

३ प्रफुल्लित होना, फूलना।

उ०—१ तुकमां रूप खतम फतै रा फब्बिया, देखतां उर दंभ अरंदा दब्बिया। बिहसंतौ निज वदन बीरा रस वंस रौ, दीपायौ हद दौर मुरद्धर देस रौ। —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं नह घायल कणणाय, बाळूं सखी ऊ डूंगड़ो भड़ बापड़ा कहाय। बाळि ऊ डूंगड़ो बसै भड़ बापड़ा, घाव अंग सहे नहं विमाड़ै अरि घड़ा। घणा जसवंत रा जोध बिहसै घणा, मांडिसी सही मतिवाळा बेढीमणा। —हा. झा.

उ०—३ बैनांणी ढीलो घडै मो कथ तणौ सनाह, विकसै पोइण फूल जिम, पर दळ दीठां नांह,। विकसै घणौ कमळ जिम भड़ निवड़,भड़ घणा पाड़तो सोभियो महा भड़। बिहसतै सहस बळ कड़ी जाय उबड़, थाट घड़ कंथ रै जरद ढीलो घड़ै। —हा. झा.

४ लहलहाना, लहराना।

उ०—तिसिह आविउ वसंत, हूउ सीत तणउ अंत। दक्षिण दिसि तणउ सीतळ वाउ, वाइ बिहसइं वणराइ। —रा. सा. सं.

५ प्रभात होना।

उ०—१ मुक्त रहइं पहिलउं दिउ अगेवांणु पंडव कन्ह दलउं जिम मांणु। ईहा सेनांनी गगेउ, अह बिहसी जुझियां दल बेउ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ पवनह वेगिइं चालतां, पुहवी घणी गयाइं। अहि बिहसी रवि ऊगीउ, नींद्र गई नयणांह। —हीराणंद सूरि

बिहसणहार, हारौ (हारी), बिहसणियौ—वि०।

बिहसिओड़ो, बिहसियोड़ो, बिहस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिहसीजणौ, बिहसीजबौ—भाव वा०।

बिहसणौ, बिहंसबौ, बिहसणौ, बिहसबौ, बोहंसणौ, बोहंसबौ, बोहसणौ, बोहसबौ, बिहुंसणौ, बिहुंसबौ—रू० भे०।

बिहसियोड़ो-भू. का कृ.—१ हंसा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ. २ विकसित हुवा हुआ, खिला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ. ४ लहलहाया हुवा, लहराया हुआ। (स्त्री. बिहसियोड़ी)

बिहां—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद खींवसीजी बीठू नै बुलाय कह्यौ, "जो कुंवर नै कहि, थारै बिहां तो घणा छै। फेर जोख छै तौ एक-दोय फेर सखरी जायगा करि। इण रौ नाळेर फेर दै। आपां सुं इहां रौ किसो सूत छै? —कुंवरसी सांखला री वारता

बिहांग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

बिहांगड़ो—देखो 'विहग' (रू. भे.)

उ०—बिहांगड़ै ज उदाध्धयां, सर ज्यउं पंडुरियांह। कालर कामा कमळ ज्यउं, ढळि ढळि ढेर थियांह। —ढो. मा.

बिहांण, बिहांणइ-स. पु- [सं. विभानु] १ प्रातःकाल, सवेरा।

उ०—१ बिहांणं नवै नाथ जागो वहेला, हुवा दोहिवा धेन गोवाळ हेला। जगाडै जसोदा जदूनाथ जागो, महीमाट घूमै नवै नद्धि मागो। —ना. द.

उ०—२ उतर आज स उजमो, पाळो पडै बिहांण। भाजै गात्र कुमारिआं, देखै मुगळ पठांण। —ढो. मा.

उ०—३ तिणि दिवसि हूउंसुपनंतर, हूंतइ प्रगट बिहांणइ। पधारियां गंगा नइ गोरी, कांन्हडदे इम जाणइ। —कां. दे. प्र.

उ०—४ घण घट्टां गढ घेरियां, वणि रिण ऊग बिहांण। निस जाएं चख जगाणं, दिन पायै घमसांण। —रा. रू.

उ०—५ अर अचळो रायमलोत कहै छै—'जु जैमलजी मोनूं बोलावै

छै, जिण हूं बिहांण रो दिन अठै बैठो छूं अर जेमनजी घणो गाढ करै छै। —नैणसी

२ देखो 'विधान' (रू. भे.)

रू. भे.—ब्रहांण, बिहांण, विहान, बीहांण, बीहांणु, बीहान, बिहाणु, बिहाणु, बीहाण, बीहाणु।

अल्पा.—बिहांणो, बिहाणो, बिहांणो, विहान, बीहाणो।

बिहांणा—देखो 'बिहांणा' (रू. भे.)

बिहांणी-वि.—१ नाश हुवो हुई, नष्ट।

उ०—धान अधान सब दिल्ली जाणी, सगत अौपत थई बिहांणी। पुर चळ चळ मुख अन्न न पाणी, रिधी सोष लीधी रजधाणी। — रा. रू.

२ हीन, तुच्छ, निम्न।

३ बीती हुई, गत, विगत।

उ०—२ एतै पर डाकदार वाव सू आया पातसाह को ठीक कर तहकीकत लाया। हाजर बुलाए साह मुणा दूत वाणी, देखत ही फुरमाया कहो यो बिहांणी। — रा. रू.

४ बिना, रहित।

स. स्त्री.—१ वृद्धावस्था।

२ विध्वंस, नाश।

३ वार्ता, बात-चीत।

४ देखो 'विश्रांति' (रू. भे.)

रू. भे.—बिहाणी, बिहानी, बीहांणी।

बिहांणु, बिहांणू-वि.—१ रहित, विहीन, बिना।

२ देखो 'विहाण' (रू. भे.)

उ०—तेहि न रोगो दोहग्गु तह, तह मगल कल्लाणु। जे जिण-बल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि संझ मु बिहांणु। —ऐ. जै. का. स.

३ देखो बिहाणो' (रू. भे.)

बिहांणो-अव्य १ कल।

उ०—१ माग नै तेडिया, कहणा सदेसा कज। कहो कब थे चालस्यो, कै बिहांणं कै अज। — डो. मा.

उ०—२ जोबन कारमो रे बिहांणं उठ जासी, आदर भजन तणो अभियास। प्राणिया कदे न आवं पाछो, मळै न बीजो वापड़ वास। —मोरी आढो

उ०—३ इतै बिहांणो उगीयो, चिड़ड़्या चैचाइ। सायब कदै पधारस्यो, कह आवो काइ। —पना

उ०—४ हेम सिमर रिन मेडतै, रहियौ कमधां राव। सभ बिहांणं ऊगणं, दिन दिन दूणा चाव। —रा रू.

उ०—५ कूच बिहांणं ऊगणं, अरि घर सोच अथाह। बास उजाड़ा नीमड़ै, पड़ै पहाड़ा राह। —रा. रू.

वि.—१ बीता हुआ, विगत।

२ बिना, रहित।

३ नष्ट।

२ देखो 'विहाण' (अल्पा, रू. भे.)

उ-१ हीदूए मारीयल कोधउ, पग मेल्हणउ न जाइ। लोही तणा प्रवाह ऊलटीया, दोमइ बिहांणा माहि। —कां. दे. प्र.

उ०—२ वार वार रतनलाल कह बतळावो जो बिहांणा राजा राम का, मुख धोवो कुरळा करो थारै कंवरा नै द्यो ना दूध पिलाय बिहाणा राजा राम का। —लो गी.

उ०—३ बिहाणां केरी बादली, नीच गरीसु नेह। तिम योवन थिरता नही, पवन चढ़ी जिम खेह। —मा. कां. प्र.

३ देखो 'बिहांणा' (रू. भे.)

रू. भे.—बिग्रागो, बिहांणो, वहणं, विहांगु, विहांगू, वीहांण, बीहाणु, बीहाणो।

बिहांन—देखो 'विहाण' (रू. भे.)

उ०—१ थान को कुथान थान मान तीसरचो, होयसो सुथन हा बिहान वीसरचो। हूं जहां अरांमखोर तू जहां तरचो, तूंहि पार नार मार पाव मे परचौं। —ऊ. का.

उ०—२ ए कैसे हैं—वडे सु बिहांन हैं, वडे महिरवांन हैं, बडे मिरदार है। वडे बूझदार हैं, वडे दातार हैं, जमी आसमांन बीच संभू अवतार है। — रा. सा. स.

उ०—३ सुधार सस्त्र अस्त्र के जुवार जागतै नहीं, नवों बिहांन सान पै भझान लागतै नही। कमान वान तांन के निसांन बंधतै नही, रमा उजास अंधतै नसा निमंधतै नही। —ऊ. का.

बिहा-देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ० १ सो खीवसी हळोद झालै परणीया। वडो बिहा हुवो। बडो गुडो खरच जस अवल कीयो, बडो नांव कियो। झाली बडी ठाकुराणी, जिसो ही रूप, जिसो ही सहुर, जिसो ही सारी बात में सुघड। सो खी सो दणो राजी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ आगे सहर मे अेकै साह रै बिहा थो, तैं रै महीनै री तयारी करावै छै, भठी कढाय कढा, चरु, खुरपा, डहोला सारा बासण आण हाजर किया, खांड रा कापा भेळा कर बेकी कर राखी, मेंदो घिरत सारो काढ तयार कर राखियो।

—राजा भोज अर खापरै चोर री बात

बिहाई—देखो 'विहायस' (रू. भे.)

बिहइति-सं. पु. [सं. विहापित] दान। (ह. नां. मा.)

बिहाई—१ देखो 'विहायस' (रू. भे.)

उ०—ग्रोरंगसा पातसा ग्रासुर ग्रवतार, तपस्या के तेजपुंज एक सै बिसतार। ग्राप का **बिहाई** सा प्रताप का निदांन, मारतंड ग्रागं जिसी जोतसी जिहांन। —रा. रू.

देखो 'बिहाईमाता'

बिहाईमाता—देखो 'बे'माता'

उ०—म्हारी नई ग्रै विहाई, टोंक-टोडै सें ग्राए। तूं तो ग्राव बिहाईमाता, भलड़ें सें ग्रौसर ग्राए। —लो. गी.

बिहाग—देखो 'बिहाग' (रू. भे.) (मीरां)

बिहाड़, बिहाड़ो-वि.—भयंकर, भयानक, भयावह, डरावना।

उ०—ऊपाडियें तूट ग्राघंतर, जण जण पूगो जुवो जुवो। खींवर हाकलियो खीमावत, होकर जाउ **बिहाड़ो** हुवो। —दुरसो ग्राढो

बिहाणो, बिहाबो-क्रि. ग्र.—१ व्यतीत होना, गुजरना, बीतना।

उ०—१ न क्यू **बिहांणी** निसा इण वखत दूजां नरां, छता बहु दीसवै वड-वडा छात। 'पदम' विन न को प्रथमाद दाता पणा, 'पदम' विन न को प्रथमाद गजपात। —द्वारकादास दधवाड़ियो

उ०—२ राति **बिहांणी** एण रसि, प्रात हुवो ग्रसवार। मेछ ग्रभग महाबळी, ग्रारुहि संग ग्रपार। —रा. रू.

उ०—३ दिवस दुहेला कस्टें जाय, रयणी तो किमही न **बिहाय**। जिम जळधर नें समरें मोर, तिम तुझ नें समरू छूं जोर। —वि. कु.

उ०—४ मोतियां री माळ तूटी। जाणं सुख री लंका लूटी। इण भात सुख-सेजे पौडिया। राति **बिहांणी**। प्रभात हुवो छै। रातो का काम—ऊजागर नैण घुळि नें रहिया छै। कपोलें कांम सुहाग री छाप लागी छै। —रा. सा. स.

२ छोड़ना, त्यागना, गमाना।

उ०—वय बाळ बिहाय युवा वरणी, कटिबद्ध भयौ करनी करनी। बिमनां ग्रनुराग बिराग वह्यौ, चितव्रत्तिय जोग प्रयोग चह्यौ। —ऊ. का.

३ रवाना होना।

उ०—चीतवियउ चहुवांणि, जउहर को मांडउ जुगति। हुव हुइ-स्यां हुर-पुर दिसा, वेगावेगि **बिहांणि**। —ग्र. वचनिका

४ प्रातःकाल होना; सुबह होना।

५ देखो 'विवाहणो विवाहबो' (रू. भे.)

बिहाणहार, हारौ (हारी), बिहाणियो—वि०।

बिहायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिहाईजणो, बिहाईजबो—भाव वा०।

बिहाइणो, बिहाइबो, बिहाणो, बिहावो, बिहावणो, बिहावबो, बिहावणो, बिहावबो—रू० भे०।

बिहापन-सं. पु. [स. विहापनः] दातार, दानी।

बिहायस-स. पु. [सं.] १ ग्राकाश, गगन।

२ पक्षी।

रू. भे.—विहाइ, विहाई।

बिहायोड़ो-भू. का. कृ.—१ व्यतीत हुवा हुग्रा, गुजरा हुग्रा, बीता हुग्रा. २ छोड़ा हुग्रा, गमाया हुग्रा, त्यागा हुग्रा. ३ रवाना हुवा हुग्रा. ४ प्रातःकाल हुवा हुग्रा, सुबह हुवा हुग्रा।

५ देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिहायोड़ी)

बिहार-स. पु. [सं.] १ मैथुन, रतिक्रीड़ा।

२ वह स्थान जहां रतिक्रीड़ा या मैथुन किया जाय।

३ बौद्धों का मठ।

४ देवालय, मन्दिर। (ह. नां. मा.)

५ गति, चाल, वेग।

उ०—१ भरे नफेरी त्रबंको, डंकां सोर ग्रपार। हुकम पिता चे हल्लियो, नीर क तीर **बिहार**। —रा. रू.

उ०—२ खतंग वाज वेखतां, बिडंग चोवड़ो **बिहारां**। ग्रंगोग्रंग ग्राफळे, हुवा निरलंग हजारां। ढंग मतग चाचरां, बरगना रंग बंबाळां, सरग मंग मूरमा, संग वारंग सुचाळा। —बखतो खिड़ियो

६ प्रस्थान, गमन।

उ०—१ स्री ग्रकबर ग्राग्रह करी, कास्मीर कियो रे **बिहार**। स्रीपुर नगर सोहांमणु, तिहां वरताबी ग्रमार। —स. कु.

उ०—२ जद भारमलजी स्वांमी नें रुघनाथजी कनै मेल्या थारा स्रावक चरचा रो कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करो। जद रघुनाथजी बोल्या किणरें चरचा करणी है रे ? पछै घणो उपकार कर घणां नें समझाय स्वांमीजी **बिहार** कीधो। —भि. द्र.

उ०—३ जो वीर जिणंद **बिहार** करि, इण नगर ना बाग में ग्रावै रे। तो घर छोडी ग्रणगार हूं थऊं, एहवी भावना भावै रे। —जयवांणी

उ०—४ पखी तड़फड़इ, बडां मांणस गड़थड़इ, काठ सड़इ, हाळी हळ खड़इ। ग्रापणा घरि कादम फेड़इ, बीजा काज मेड़इ। पार पार न लीइ, साध **बिहार** न करीइ। —रा. सा. सं.

७ जैन साधुग्रों का भिक्षा मांगने हेतु जाने की क्रिया।

सं स्त्री.—८ पंक्ति, कतार।

रू. भे.—बिहार, बीहार, वेहार ।

बिहारजत्र-सं. पु.—विहार यात्रा । (जैन)

बिहारण-सं. पु. [सं. बिहारणम्] १ संहार, नाश ।

२ घूमने की क्रिया, टहलने की क्रिया ।

३ प्रस्थान करने की क्रिया, गमन ।

वि. १ संहार या नाश करने वाला ।

२ गमन करने वाला ।

बिहारणौ, बिहारबौ-क्रि. स.—१ चहल कदमी करना, घूमना, फिरना टहलना ।

२ मंडराना, उड़ना ।

उ०—आपरा पांम्हुणा (दुसमण) तो पंथ निहारै, झगड़ा री बाट जोवै, प्रबै रिण खेत में मांस रुधिर भखण वाळी ग्रीधा गैंग आकास में बिहारै उड रही है । —वी. स. टी.

३ संहार करना, मारना ।

उ०—ग्रहि छळ 'करण' गोड़, परठि मनवार अपारां । नजर टाळि नाराज, बहु घट हुवौ बिहारां । —सू. प्र.

४ चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—उभै मिसल अंबखास, पड़ै धड़हड़ प्रणपारां । राव जाणि नरसिंघ, हूलं करि दयत बिहारां । —सू. प्र.

५ तहस-नहस करना, नष्ट करना ।

६ क्रीड़ा करना, खेल करना ।

उ०—१ खेड़पणी सिरि सीजियां, हुई मुगल्लां हेल । ज्यौं गज बारि बिहारतां, चोथै बारिज वेल । —रा. रू.

उ०—२ परणीजे मधुपुरी 'प्रभो' व्रंदावन आयो । पेखि धांम सुख परम भवां तोरथ मन भायो । परखि निगम द्रुम पुंज हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै हेक ब्रज जमण बिहारै । —रा. रू.

७ गमन करना, प्रस्थान करना ।

८ उपभोग करना, खाना ।

उ०—जग ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम प्रवर चार धनारयं । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग बिहारयं । —रा. रू.

६—शोभा देना ।

१० रति क्रीड़ा करना, मैथुन करना, सभोग करना ।

११ देखो 'बैराणौ, बंराबौ' (रू. भे.)

बिहारणहार, हारौ (हारी), बिहारणियौ—वि० ।

बिहारिग्रोड़ौ, बिहारियोड़ौ, बिहारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिहारीजणौ, बिहारीजबौ—कर्म वा० ।

बिहारणौ, बिहारबौ—रू० भे० ।

बिहारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चहलकदमी किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ मंडराया हुआ, उड़ा हुआ. ३ नाश किया हुआ ४ सहार किया हुवा. मारा हुआ. ५ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. ६ तहस-नहस किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ७ क्रीड़ा किया हुवा, खेल किया हुआ. ८ गमन किया हुआ, प्रस्थान किया हुआ. ९ उपभोग किया हुआ, खाया हुआ. १० शोभा दिया हुआ. ११ रति क्रीड़ा वा संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ.

१२ देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहारियोड़ी)

बिहारियौ—देखो 'ब्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—बरस बावीस की बाली-वेस, दंत कवाडया, सिर किलकिला केस । हाट बिहारयां कइ जोवज्यो, कइ जोवज्यो राज-दुवारि । —वी. दे.

बिहारी-वि.—१ विहार करने वाला, विचरण करने वाला ।

२ गमन करने वाला, प्रस्थान करने वाला ।

३ नाश करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

५ रतिक्रीड़ा या मैथुन करने वाला ।

सं. पु. [सं] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

उ०—१ मीरां के गिरधारी मुरारी, राखो लाज प्रभुजी हमारी । मैं हू दासी सदा तुमारी, तुम हो भलै बिहारी, चीर छोड़ो । —मीरां

उ०—२ हंसै सारो नाग नारी उचारी बिहारी हूंत, सवारी पधारी वळै लेतो प्राजे सूंक । कठै थांरी वेस प्रसो जुद्धकारी बातां करै, फूंणांधारी वीठो न छै आगकारी फूंक । —मुरारीदास बारहठ

उ०—३ बिमळांनन विबुधेस बिहारी, संख चक्र धारी सुमण । भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हण । —र. ज. प्र.

उ०—४ गोकळ ग्रामी, सुर नर सांमी । ए अवतारी, बाचि बिहारी । —पिं. प्र.

२ शिव, महादेव ।

३ ईश्वर, परमेश्वर ।

४ एक प्रकार का नीबू विशेष ।

उ०—बिहारी, गूदड़ियो, कागदी तीन जात रा नींबू । —बां. दा. ख्यात

५ देखो 'ब्यवहारी' (रू. भे.)

रू. भे.—बहार, बिहारी, बेहारी।

बिहारीकंद-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का जमीकंद विशेष जो औषधि के प्रयोग में लिया जाता है।

बिहारीदासोत-सं. पु.—१ राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

२ भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

—बां. दा. ख्यात

बिहाल, बिहालौ—देखो 'बेहाल' (रू. भे.)

उ०—१ भाग विनां नहीं पाईयें, माणिक मोती लाल। दुनियां कोडी हाथि लें, हरीया भई बिहाल। —अनुभववांणी

उ०—२ दुनियां रोबै रोवणा, देख विडांणी खाल। नांव सनेही बाहिरौ, हरिया होय बिहाल। —अनुभववांणी

उ०—३ सबळ दळां कर 'थांनसी', आयौ फेर अचींत। फळ पायौ झालां धणी, थयौ बिहाला चींत। —रा. रू.

बिहाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बिहावणौ, बिहावबौ—१ देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विहाणौ, बिहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आवौ प्रीतम सेझ में, हस हस पूछूं बात। गळ में घातां बांहड़ी, सुखां बिहावै रात। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०-२ रायसिंघ नूं कह्यौ "मोनूं थांसूं अळगौ करस्यौ तौ राव थां ऊपर आवसी" तरै राठौड़ ठाकुरै कह्यौ 'जिण गांव कूकड़ौ न हुवै छै तठै जिण रात बिहावै छै" —नैणसी

उ०—३ तांहरा कोड़ीधज रो फरड़कौ सुणियौ ताहरां राव खींवो बोलियौ—'भाई' कोड़ीधज घोड़ै रा फरड़का सुणीजै छ, कोट पण एकलौ छै बांभणियौ पण मास ५–६ हुवा आयौ बैठो छै, उपद्रव दीसै छै। आजै कुसळ बिहावै। —नैणसी

उ०—४ कुसळ बिहावउ सज्जणां, पर मंडळै थयांह। जउ बिह हिया न हारिस्यइ वळै मिळैवउ त्यांह। —ढो. मां.

बिहावणहार, हारौ (हारी), बिहावणियौ—वि०।
बिहाविओड़ौ, बिहावियोड़ौ, बिहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिहावीजणौ, बिहावीजबौ—कर्म, भाव वा०।

बिहावियोड़ौ—१ देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहावियोड़ी)

बिहिंसिक, बिंहिंसग-वि.—अनेक प्रकार की हिंसाएं करने वाला। (जैन)

बिहि—१ देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ हौ वजण वेगी करै बालहा रे, हो वा रे हूं राखीसि सील रतन्न। हो लेख मिटइ नही बिहि लिख्या, हो रे, हो झूठा कीजइ तै जतन्न। —स. कु.

उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ मही—मांहि। बिहि—तणा पणि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्यांहि।

—मा. कां. प्र.

२ देखो 'वेमाता'।

उ०—बिहि अम्हारी वेरणी, पेला भवनी होय। सज्जन सिउं सुख मांणीइ, निलवटि लिखल्या जोय। —मा. कां प्र.

बिहिचणौ, बिहिचबौ-क्रि. स.—१ विभक्त करना, तोड़ना।

उ०—बिहिचौ मेरु माहागिरी नाप्यु, पात्र तणि तां पांणि। तू मूं दांन करयूं मि महीमांहां, मनि मोटौ ए जांणि। —मळाख्यांन

२ देखो 'बांटणौ, बांटबौ' (रू. भे.)

बिहिचणहार, हारौ (हारी), बिहिचणियौ—वि०।
बिहिचिओड़ौ, बिहिचियोड़ौ, बिहिच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिहिचीजणौ, बिहिचीजबौ—कर्म वा०।

बिहिचियोड़ौ-भू. का कृ.—१ विभक्त किया हुवा, तोड़ा हुआ।

२ देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहिचियोड़ी)

बिहित, बिहिति-वि. [स विहित] १ बनाया हुआ, अनुष्ठान किया हुआ, अनुष्ठित।

२ निश्चित, नियुक्त या सुव्यवस्थित।

३ निर्मांणित, रचित।

४ स्थापित।

५ बांटा हुवा, विभक्त।

६ शास्त्रसम्मत ठीक, उचित, उपयुक्त।

उ०—१ बिहित सुणै भ्रत वांणि एम चहुवांण उचारै। सको काळ संचरै, न को रहियौ वीसारै। प्रगट मात पांडवां, सु तौ न गई वर सत्थै, भ्रौ भ्रत हथ आपरौ. हरी दीनौ पर हत्थै। —रा. रू.

उ०—२ आकुळ थ्या लोक केहवौ अचिरज, बंछित छाया ए बिहित। सरण हेम दोसि लोधौ सूरिज सूरिज हौ त्रिख आसरित। —वेलि.

स. पु. [सं. विहितं] १ विधि विधान, कानून।

२ आदेश, आज्ञा।

[सं. विहितः] ३ कृति, रचना।

रू. भे.—बिहित, बिहितु।

बिहिमग्ग, बिहिमारग-स. पु. [स. विधिमार्ग] विधिमार्ग।

उ०—सवि आचार विचार सार बिहिमग्ग पयासइ। भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ। —ए. जे. का. सं.

बिहिब-स. पु.—१ दूषित, प्राचार। (जैन)

२ अपराध, दोष, गलती।

उ०—विधाताइ करयु बिहिब. गरमब नि यम मेर ।एक याचक, एक दाता, घणु दीसि फेर। —नळाख्यांन

३ फरक, अंतर, भेद।

उ०—पचायण जबुक यथा, बिहिब वायस हंस। तिम माधव नइं अवर नर, दामि ! न जांणउ वंस। —मा. कां. प्र.

बिहिल, बिहिल्लो, बिहिलु, बिहिलो, बिहिल्ल, बिहिल्लौ, बिहिल्य-वि.—काफी, बहुत, अधिक, पर्याप्त।

उ०—व्यास भलाइ मंत्रनइ उपाय, बिहिल्ली व्रस्टि हुयइ गढ मांहि। गढ ऊपरि गढरोहा समइ, वूठा वेब दिवस चउदमइ। —कां. दे. प्र.

२ दुःखी, पीडित।

उ०—लक्ष्मीपुंज आश्रितवत्सल प्रकृतिप्रांजल, बिहिल्यां साधार, परोपकारैकव्यसन नीतिबांधव परनारी सहोदर स्निग्धालाप सज्जन चूडामणि अरयजनचिंतामणि इति श्रेस्ठि। —व. स.

३ देखो 'वहिलो' (रू. भे.)

उ०-१ गाई बाई गुण करो, रीझवि जांणउं राय। अबला ! चालि उतावलो, वेगि बिहिल्या पाय। —मा. कां. प्र.

उ०-२ पवग पवग पलांण पलांण, बिहिल्ला हुआ वापांण। सुभट्ट सजोड़ा त्रिण्ह सहस्स, मग्रांमि जिके सवि दीस सकस्स। —राउ जैतसी रौ रासौ

उ०—३ चोर, बिहिलु आवजे, कुसल माग तूंहनि करे कारज मन वांछित, समइ संभारे मूंहनि। —नळाख्यांन

बिहिवा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—भीम राइं सबरां सुणु रे पुत्रीनि पीडा तन। बिहिवा नु समय थयु रे, अबला थई योवन। —नळाख्यांन

बिहिवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—इंद्र कहि—'वरवांन थी, देखसि नहीं प्रतिहार। ईछाइ तूं दरसन देज्ये, देखो बिबिध बिहिवार। —नळाख्यांन

बिहिस्त-सं. पु. [फा. बिहिश्त] स्वर्ग।

उ०—दोन दुनी सदकै करूं, टुक देखण दे दीदार। तन मन भी छिन-छिन करूं, बिहिस्त दोजख वार। —दादूवांणी

बिहोण, बिहोणो—देखो 'बिहीन' (रू. भे.)

उ०—१ बिदर गयां रा बावळा, बिदर बिवेक बिहोण। बिदर छांह निरखै बहै, मलबेला अकुलीण। —बां. दा.

उ०—२ जिनका रो जे नर ग्रहै, कवरी इंड करेण। लाग ग्रहै किमि दळण खळ, तेज बिहोणा तेण। —बां. दा.

उ०—३ 'भगवंत' सुतन सत्रां दळ भांगा, निरदळिया त्रितलोक नर। कूरम चै न चाळियो किण ही, काळ बिहीणां चाळ कर। —राजा मांनसिंघ भगवंतदासोत कछवाहा रो गीत

बिहीन-वि. [सं.] १ बिना, रहित, बगैर।

२ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

३ नीच, निम्न, कमीना।

रू. भे.—बिहिन, बिहोण, बिहीन, वहोण, विहीण, विहोणो।

बिहुंड-सं. पु. [स.] हुण्ड राक्षस का पुत्र, एक राक्षस।

वि. वि.—नहुष ने इसके पिता हुण्ड का वध किया था अतः इसने नहुषवध हेतु शिव की तपस्या की थी किन्तु विष्णु ने मनमोहिनी स्त्री का रूप धारण कर इसकी तपस्या भंग की थी। अन्त में यह पार्वती के द्वारा मारा गया था।

बिहुंडन-सं. पु. [सं.] शिव का अनुचर विशेष।

बिहुंण, बिहुंणो, बिहुण, बिहुणो-वि.—१ तुच्छ, निम्न।

२ निर्बल, कमजोर।

उ०—तठ श्रीट्ट अरज कीवी, "घरां पधार परभात असवार हुयजे, जाय पुहचस्यां। आगां मुं कजीयो कर कामु लेसे ! आपां के बिहुणा छां। —कुंवरसी सांखला री वारता

३ देखो 'विहूणो' (रू. भे.)

उ०—१ हेम वरनी हेम गिर बाळी लट्ठवै-वेस, कथ बिहुंणी कामणी, साचो कहि सदेस। साचो कहूं संदेस वेग मीठा कहूं, राज मुद्दे पट हृदय रग महिलां थकूं। —मा. वचनिका

उ०—२ पग बिहुणो पिण परदेसे भमें, आवै तुरतउं जाय। बैठो वहै अपणे घरि बापडो, तो पिण चपल कहाय। —ध. व. ग्रं.

(स्त्री. बिहुंणी, बिहुणी)

बिहुब-क्रि. वि.—चारों ओर, हर तरफ।

उ०—घूघरी रोळ घटा सबद, मोवत्त पटं तळ जोड मद। गुडिया गयंद बिहुब गमेय, पाहाड जाण हालै पगेय। —गु. रू. बं.

बिहूं—देखो 'बेऊं' (रू. भे.)

उ०—१ रिण मोहा रिण सूरमा 'बीको' 'सोम' बखांणि, नायक पायक भड निवड अरि भजण आरांणि। रांण अरांणि अरि भाजितां रूक-हथ, सूर साराहिया 'सोम' 'बीको' समथ। खंड पड़तोस सो बिहूं ऊड खरा, राय गुर बखांणां बयण रायसिंघ रा। —हा. झा.

उ०—२ दूजें पौहरें रयण कै, भिळियत गुपकागुध्घ। धण पाळी, पिव पाखरयो, बिहूं भला भड़ जुध्घ। —ढो. मा.

विहूंण, विहूंणौ—देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ है कांनै मोताहळ, कर पूंचो कंठमाळ पै संकळ । राधो नांम विहूंण मनखांणो ढोर मादम्मो । —र. ज. प्र.

उ०—२ मूळ ब्याज दोऊं गया रे, घुर बोरै नहिं मेळ । साह विहूंणो सहर में, कूड़ो करेज केळ । —स्रोहरिरांमजी महाराज

उ०—३ ग्यांन विहूंणा गुर मिल्या, सुरति विहूंणा सिख । जन हरिया गुर सिख का, संसा मिटया न किख । —मनुभववांणी

उ०—४ घणी विहूंणा घौंळहर, ढहि ढहि ढेर थियाह । हरिया पाछा माय कै, वास न को वसियाह । —मनुभववांणी

(स्त्री. विहूंणी)

विहू, विहूण, विहूणड़ो, विहूणडौ, विहूणौ—देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नितु नितु मौसी पूछोइ, नितु नितु सुकन सुभाव । नित नित निरति विहूणडां, मावि‍इ वली वधाव । —मा. कां. प्र.

उ०—२ इम महनिसि मालोचती, मन सिधि मन परिणांम । तेल विहूणा दीप परि, क्षणि क्षणि थाती क्षांम । —मां. कां. प्र.

उ०—३ ज्योति जिसी छइ दीवडइ, तिम माघवि मुझ जांणि । नवपल्लव नेह-त्रि-यको, नेह विहूणइ हांणि । —मा. कां. प्र.

उ०—४ जलाल तो बिन कोटड़ी. चंद विहूणो रैण । तो मायां चांनण हुवै, दीसै भलास सैण । —जलाल बूबना री बात

उ०—५ प्रेम विहूणी प्रीति जोमै मन न ठरै 'जसा' । रस विण पानां रीति, रग न मावै राचणो । —जसराज

उ०—६ दादू भाव हीन जे प्रथ्वी, दया विहूणा देस । भक्ति नहीं भगवत की, तह कैसा परवेस । —दादूवांणी

उ०—७ रांम बसै जिण जगळां हे सखी ! सौ हिज सुरग निवास । रांम विहूंणो सुरग ही सखी, तन उपजावै त्रास । —गी. रां.

(स्त्री. विहूणड़ी, विहूणडी, विहूणी)

विहून—देखो विहूणौ' (रू. भे.)

विहूवल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—गंगा देखो विहूवल थयो, कांम बांण पीड़यो ईस ।

—धरम पत्र

विहेठ, विहेड-सं. पु.—विनाश, संहार । (जैन)

विहृत-सं. पु. [स. विहृतम्] स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलंकारों में से एक जिसमें लज्जा के कारण कहने के समय भी बात नहीं कही जाती है । (साहित्य)

विहृति-स. स्त्री. [सं. विहृति] १ विहार, आमोद, प्रमोद क्रीड़ा ।

२ हटाने या छीनने की क्रिया ।

विह्वल-वि. [सं.] १ भय, चिन्ता आदि के कारण घबराया हुआ, व्याकुल, बेचेन ।

उ०—१ रूप मनुपम रंभ सम, उवा पदमो कहै याह । वार वार विह्वल थको, जंपै मालिम माहि । —प. च. चौ.

उ०—२ सिबिकां बइसी संचरइ, घरि थी राउलि जाइ । वाटि-वली विलोकती, विनता विह्वल थाइ । —मा. कां. प्र.

२ खराब. विकृत । (ममरत)

३ चकित, विस्मित ।

४ भयभीत, डरा हुआ ।

उ०—पीली चोली पहिरणइ, काली फाली सेत्र । निरखी निरखी नाहु नइं, विह्वल विकसित नेत्र । —मा. कां. प्र.

५ पीड़ित, सन्तप्त ।

६ कुटिलतायुक्त । (मति)

उ०—लघु वइं लक्षण लाछिनां, सांमुद्रिक गुण सार । वेस्या मति विह्वल थइ, चितइ चूक विचार । —मा. कां. प्र.

७ चिन्तित, उदास ।

उ०—वलवलती विह्वल वदनि, वलतो वदइ उदार । राजा रुठउ मनाविसुं, सुंपी संपति सार । —मा. कां. प्र.

रू. भे.—विभल, बिम्भल, बिहबळ, बिहवळ, विह्वल, भिंभल, भिंभळ, भींभळ, भींभल, विवहल, विहबळ, विहळ, विहल, विहवल, विहूवल, वीहळ, विहल ।

अल्पा.—विहवली, विह्वली, वीहलो, वीहलो ।

विह्वलता-सं. स्त्री.[सं.] विह्वल होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

वीं—१ देखो 'वो' (रू. भे.)

उ०—१ पहर एक गोठी बही पण बाहरला जांणै उथा सो उवै लगाव री जायगां जांणै था सो वीं ठांव सूं बड गया ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ भरमल अहड़ी कामणी, बहडी थद प्रकास । काया लै घर कूं चल्या, रह्यो जीव वीं पास ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ सो दलकरण रै डेढ सौ घोड़ा पायगा मांहै बाकी पटा-यतां रा घोड़ा सो इण तरह सूं घोड़ा अढाई सो वीं कन्है रहै ।

—सुंदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

उ०—४ योगी कही—बन मांही म्हारै साथ एक कारज सिद्ध करस्यां । राजा कही-हालो । तद योगी राजा नूं बन मांहीं लेय गयो । वीं ठांव एक सीसम रो व्रख । तो पर एक मुरदो बंधियो छै । —सिंघासण बत्तीसी

२ देखो 'भी' (रू. भे.)

३ देखो 'बी' (रू. भे.)

बींकणौ, बींकबौ—क्रि. स. [सं. वीक्षण] १ ऊन, रुई आदि को हाथ से साफ करना।

२ देखो 'बींखणौ, बींखबौ' (रू. भे.)

बींकणहार, हारौ (हारी), बींकणियौ—वि०।

बींकियोड़ौ, बींकियोड़ौ, बींक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींकीजणौ, बींकीजबौ—कर्म वा०।

बींकणौ, बींकबौ, बींखणौ, बींखबौ—रू० भे०।

बींकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हाथ से साफ की हुई ऊन, रुई आदि।

२ देखो 'बींखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बींकियोड़ी)

बींख—देखो 'भीख' (रू. भे.)

उ०—"इतला दिन हूं जांणती रे हां" एहनी हिवं तौ सोहग सुंदरी रे हां, पुत्री नै दीयं भीख, बाई! सांभळौ। सामरीया सतोखिजै रे हां, हलवं भरजं बींख, बाई! सांभळौ। —सीपाळरास

बींखणौ, बींखबौ—१ देखो 'बींकणौ, बींकबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीखणौ, बीखबौ' (रू. भे.)

बींखणहार, हारौ (हारी), बींखणियौ—वि०।

बींखियोड़ौ, बींखियोड़ौ, बींख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींखीजणौ, बींखीजबौ—कर्म वा०।

बींखियोड़ौ—१ देखो 'बींकियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींखियोड़ी)

बींची—सं. स्त्री.—१ विचर्चिका नामक कुष्ट रोग। (अमरत)

२ एक प्रकार का रक्त विकार का रोग (अमरत)

बींछयौ, बींछियौ, बींछीयौ, बींछीयौ—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.) (व. स.)

उ०—१ पाय पीरोजी बांणहो, अंगूठि अणवट्ट। ठीक जडित ठाहरि रहिया, वली बींछीया लट्ट। —मा. कां. प्र.

उ०—२ अणोट बींछिया उदार, पाय पंख पंकज। अनंग ठं छनंग अंग, रंग रग में रजं। —सू. प्र.

बींजण—१ देखो 'बींजण' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजणौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीनता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय। वाउ बिलोलइ बींजणइ, को चदन घसी लाय। —मा. कां. प्र.

उ०—२ सघण सूकडि सहरि सु सींचीइ, पवण पूरिहिं बींजण बीजीइ। कमल नै दलि सायर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ। —सालिसूरि

बींजणि, बींजणौ—१ देखो 'बींजणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—माधव जिहां पमलां भरि, तिहां पड्यौ मुझ राल। पवन वसइ तिणि बींजणि, सावद सारेज लाल। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बीजणौ' (रू. भे.)

बींजणौ—देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)

उ०—जलंद्रा सरीरि लगाडीयइं, गुलाब तणा अभ्यंग कीजइ, बावन चंदन घसीयइ। चउदिसि बींजणा फिरइं द्राक्षा आंबिली पांन कीजइ। कलम सालि तणा साधउ रा करवा कीजइं। —रा सा. सं

उ०—२ न लेवै बींजणं वाय, स्निग्ध वासी न खाय। भोजन ग्रही चको ए, जीम्यां होवै व्रत-धकौ ए। —जयवांणी

उ०—३ गुखं बैठी गोरड़ी रे बींजणं ढौलति वाय। पेट नै काजै पदमणी रे, जावै घर घर जाय। —स. कु.

बींजणौ, बींजबौ—देखो 'बींजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)

उ०—मस्तकि छत्र धरावतउ, चांमर बींजता सार रे। आज तउ मस्तकइ रवि तपइ, डांस मसक भणकार रे। —स. कु.

उ०—२ '''सेवंत्री तणा ताड बेढ भमिया, अगर प्रतिबोधित, कस्तूरा-गर ऊखेविउ, पंचवरण्ण पाडु तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरी मोतीसरी लंबावी राजा आस्थांन देउ बइठउ छइ, मोर-पींछ तणं बींजीणं वाउ बींजइ''' । —व. स.

उ०—३ सघण सूकडि सहरि सु सींचीइ, पवण पूरिहिं बींजण बींजीइ। कमल नै दलि सायर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ। —सालिसूरि

बींजणहार, हारौ (हारी), बींजणियौ—वि०।

बींजियोड़ौ, बींजियोड़ौ, बींज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींजीजणौ, बींजीजबौ—कर्म वा०।

बींजाचळ, बींजाचळौ, बींजाचाळ, बींजाचाळौ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—१ मल्हपं मेंगळा, सूंड लल्लथळा, आगळी ऊजळा, सेत दांतूसळा। सोहिया सांमळा वपि बींजाचळा, स्रंग कूंभाथळा, वोम किरि वद्दळा। —गु. रू. बं.

उ०—२ कुजरां ढूंहरो ढाळ कूंभाथळं, बादळा जांण फाबत्त बींजाचळं। धम्मळी पोयळी लाल नीली धजं, गाजतां जांण गोरंभ दोसं गजं। —गु. रू. बं.

बींजाणौ, बींजाबौ—देखो 'बींजाणौ, बींजाबौ' (रू. भे.)

उ०—···अनइ इक सुवरणमय रूपमय रचित विविध प्रकारि जे छइ पालखी, चकडोल, अनइ तदप्रारि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवे पायकं परिवारिउ, छत्र धरातइ, चमर बींजातइ, नफेरी सरणाइ वरगां ढोल झालर डुंडि दमामां दडदडी अवंग नीसांण प्रमुख वाजित्र वाजइ। —व. स.

बींजणहार, हारौ (हारी), बींजाणियौ—वि०।

बींजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बींजाईजणौ, बींजाईजबौ—कर्म वा०।

बींजायोड़ौ—देखो 'बींजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींजायोड़ी)

बींजासणियां-सं. स्त्री.—एक लोक देवियों का समूह विशेष, जिनके प्रकोप से वात रोग होते हैं। (अमरत)

वि. वि.—देखो मावलियां

बींजियोड़ौ—देखो 'बींजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींजियोड़ी)

बींजोणौ—देखो 'बीजणौ' (रू. भे.)

उ०—···सेवत्री तणा ताड वेढ भमिया, अगर प्रतिबोधिउ, फल्णागर ऊसेविउ. पंचरणा पाट्ट तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरि मोतीसरी लंबावी, राजा आस्थांन देउ बइठउ छइ, मोरवींछ तणं बींजीणं वाउ बीजइ··· । —व. स.

बींझ—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—१ इहां सु पंजर मन उहां, जय जांणइला लोइ। नयणा आडा बींझ वन, मनह न आडउ कोइ। —ढो. मा.

उ०—२ प्रीति अलियळ केतकी नइ, प्रीति बींझ गयंद। तिय रुखमणी सुं नेह धरज्यो, प्रीति परमांणंद। —रुकमणी मंगळ

बींझगिर, बींझगिरी—देखो 'विंध्यगिरि' (रू. भे.)

बींझणौ—देखो 'बीजणौ' (रू भे.)

बींझणौ, बींझबौ—देखो 'बीजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भांजी निसही जिनग्रह पेसं, धरं छत्र नं मंडप में बेसं। पहिरं वस्त्र अनं पनही, चांमर बींझं मनठांम नहीं। —वृत्त

उ०—२ जिनजी कुं देखि मेरउ मन रीझइ री। तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इंद्र चांमर बींझइ री। —स. कु.

बींझणहार, हारौ (हारी), बींझणियौ—वि०।

बींझिओड़ौ, बींझियोड़ौ, बींझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींझीजणौ, बींझीजबौ—कर्म वा०।

बींझवन-सं. पु.—एक वन विशेष जहां हाथी बहुत पाए जाते हैं, सुंदर वन।

रू. भे.—वीझवण, बींझवन, वीझावण, बीझावन।

बींझाचळ, बींझाचल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—मयण कांम मूरत्ति, गात गिरवर बींझाचळ। बडो वीर बीराधि, सिव रूपी सहस बळ। —गु. रू. बं.

बींझाअळ, बींझाचल, बींझाभ्रळ, बींझाभ्रल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—१ बींझाचळ रूप गयंद चढि मेघाडंबर विराजे। नौबतूं के निहाव वीरारस वाजे। जिस बखत जळाबोळ हालोहळ सें फोज हल्ली। नाळूं कं निहाव सेती धरती थरसली। —सू. प्र.

उ०—२ धुबे राग सिंधुवां, गजे नाळियां त्रंबागळ। मेळा अड गहमहे, वहै गोळा बींझाभ्रळ। —सू. प्र.

बींट-सं. पु. [सं. विष्टा] १ पक्षियों की बींट या विष्टा।

उ०—राजा कह्यौ-थूं ईं वता उडता पंखियां नै बींट करता म्हैं कोकर पाल सकूं। कोई मिनख री जायौ की भूल करै तौ म्हैं उण री सात पीढियां नै उकळता कड़ावां में भूंज न्हांकूं पण आं अबूझ पंखियां माथे खोज करणौ तौ बिरथा है। —फुलवाड़ी

उ०—२ राजा कह्यौ—थूं तौ नित सौ बार मरिया करै थारै मरण री कांई। पण एक मांमूली सी बींट वास्तै म्हैं अणगिण पंखियां नै मार नीं सकूं। लुगायां री कैणौ मांनै. उणनै तौ राजा बणणौ ई नीं चाहिजै। —फुलवाड़ी

२ आवेष्टन, घेरा।

३ टापू, द्वीप।

उ०—मांझि समंदा बींट पर, जळ सूं जांमोपत्त। किणहीं अवगुण कुंझड़ी, कुरळी मांझिम रत्त। —ढो. मा.

४ देखो 'बींटौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—बिंट, बिट, बींट, बीठ, बीट, बिट।

बींटण-सं. पु. [सं. वेष्टन] १ पुस्तक आदि लपेटने का वस्त्र।

२ बिस्तर आदि बांधने की रस्सी।

रू. भे.—बीटण।

बींटणौ—देखो 'बींटणी' (रू. भे.)

बींटणौ—देखो 'बींटौ' (रू. भे.)

उ०—कोटवाळ राजी हुवौ, कह्यौ, देखौ गाडड़ौ मांहे कांसूं छै। जवै पयादां उतावळां मुजरायतां खोलणी मांडी। जठै तीजो बट खोलै तिठै लोही लागी दीठी। सगळा चमक्या नै बींटणौ उघाड़ै तौ मांटी मारयौ निजर पड़ियौ। —जगदेव पंवार री बात

बींटणौ, बींटबौ-क्रि. सं.—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्ठित करना, घेरना।

उ०—१ रांमा री पटौ लीयौ नै राव चंद्रसेन नै मुगळां नूं लगाय दीया। जेठ सुद १२ रांमो मुगळ रांमबावड़ी उतरीया। दिन १८ नगर बींट रह्या। —राव चंद्रसेन री बात।

उ०—२ पातिसाह गुजराति ल्यौ। हूं हिंदुग देस जाइ करि लेइसि।

उठा हुंती मिरजो मोकलि मिरियारि माहै होइ नै नागोर म्राइ **बींटियो** । —द. वि.

उ०—३ त्रिण कण कापड जल मांहि लीध, गढरोहो मालव पति कीध । सायर **बींटी** लंका जेम, ढज्जेणी बीटी रहयो तेम । —श्रीपालरास

उ०—४ कमधजं **बींट** नागोर कोट, बळ दळ घरि कीधा एक चोट । 'इद्रसिंघ' देख दळ बळ अपार, दे कोट जिण लियो धग्म द्वार । —रा. रू.

२ गोल करना, लपेटना, समेटना । (बिस्तर म्रादि)

३ चारों म्रोर से म्राक्रमण करना ।

४ म्राच्छादित करना, ढकना ।

५ लपेटना ।

उ०—१ म्रन्न म्रदक पय परिहारी, म्राभरणां ऊवेलि । वकुल त्वचा **बींटी** नरि, तरुणी तापस-वेलि । —मा. कां. प्र

उ०—२ चावडी उण नै म्रमलां माहे बेखबर देखि, तरै उणरी ही तलवार काढि गळो कीधो । हाथ जुदा जुदा काटिया पगा रा जाघां रा जुदा जुदा नखता कीधा। करनै चादणी मांहै घड देनै बांधियो । ऊपरा विलिग-पोस **बींटियो** । तिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिकी बीटी । गाठ गाढी सेठी बाधी । —जगदेव पंवार री बात

६ बाहुपाश मे लेना, म्रंकमाल मे लेना ।

उ०—रहै उपा भुज **बींटियो**, नव कोपळ रै रंग । म्रादर पावै कठ उण, सूर तणो उतमग । —बां. दा.

७ वस्त्र, कवच म्रादि को पहनना, धारण करना ।

८ वस्त्र, कवच, म्रादि पहनाना धारण कराना ।

९ मढ़ना, म्राच्छादित करना ।

उ०—तठा उपरांयत पनाला सू बादळा छोलजै छै । सू किण भांत रा बादळा छै ? हळवद रा, मोरवीं रा म्रजार रा, भरवछ रा, हालोर रा छै । रूपं टूटी साकळी लागी छै । घणी सिलेहटी म्रटायण में **बींटिया** थका, ऊपरा बेवड़ी-तेवड़ी झालरी में गरकाब किया थका छै । —रा. सा. स.

क्रि. म्र.—१० चारो म्रोर हो जाना, चारों म्रोर फेल जाना ।

उ०—१ मिधां माळ सू बीटियो ज्यूं हेमाळ सदा लहै सोभा, वहै चंद्र माळतारा वीटियो बखाण । वीटियो म्रमरांमाळ मेर थदं कहै वातां, रहै पातामाळ सूं **बींटियो** 'भोमो रांण ।

—कविराजा बांकीदास

उ०—२ क्षणि नान्हा क्षणि मोटा दीसइ, माहोमांहि खुसइ बेउ गीरुइ । बधवि **बींटीउ** राउ दुजोहणु चिहुं पडवि वींटीउ द्रोणु । —सालिभद्र सूरि

उ०—३ तब जादव म्रणरागिय लागिय रहिया पागि । **बींटीउ** प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मांगि । —जयसेखर सूरि

११ म्रावेष्टित होना, घिरना ।

उ०—वारांगनां वसत्र **बींटांणो**, घाइ घाइ तरण करं घणो । 'ऊदा' हरं नांखिया म्रळगा, पोति म्रनं म्रवतार पणो ।

—पूरणमल भांणावत रो गीत

१२ जड़ना ।

बींटणहार, हारो (हारी), बींटणियो—वि० ।

बींटिम्रोड़ो, बींटियोड़ो, बींट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बींटीजणो, बींटीजबो - कर्म वा०, भाव वा० ।

बिंटणो, बिंटबो, बिंट्णो, बिंटूबो, बिंटणो, बिंटबो, बींटणो, बींटबो, बिंटणो, बिंटबो, बिंट्णो, बिंटूबो, बीटणो, बीटबो—रू० भे० ।

बींटळो, बींटलो-स स्त्री.—१ पगड़ी, साफा ।

उ०—वीरा री चिलकी **बींटली**, भावजा को चिलक्यो जो चीर । उठ गोरी उठ सांवळी, बाई सोदरा बाहर म्राव । —लो. गी

रू. भे.—बींटली, बीटली, वीटुळी, वीटुली, वीठली ।

२ देखो 'वींटळी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां खीमै मुंहतै नूं कह्यो—'जावां छां गोठ जीमण । राव नूं **बींटळो** मतां चढ़ण देज्यो । ताहरां बींटळी चढ़मी ताहरां रेयां री डूंगरी देखमी, ताहरां सहसो चीतां म्रावसी ।

—नैणसी

३ देखो 'बींटी' (म्रल्पा रू भे.)

उ०—कर कंगीय ठोमी वाकुडी, **बींटली** विविध प्रकारि । मुद्रडी हीरै जड़ी नई, कनक ककण सार । —रुकमणी मंगळ

४ देखो 'बींटणी'

बींटाणो, बींटाबो-क्रि. स [बींटणो क्रिया का प्रे. रू.] १ किमी शहर दुर्ग म्रादि को म्रधिकार में करने हेतु उसे म्रावेष्टित कराना घिराना ।

२ गोल कराना, लपेटाना, समेटाना । (बिस्तर म्रादि)

३ चारों म्रोर से म्राक्रमण कराना ।

४ म्राच्छादित कराना, ढकाना ।

५ लपेटाना ।

६ बाहु पाश मे लेने को प्रवृत्त कराना, म्रंकमाल में लिवाना ।

७ वस्त्र, कवचादि पहनाना, धारण कराना ।

८ मढ़ाना, म्राच्छादित कराना ।

९ चारों म्रोर कर देना या फैला देना ।

१० म्रावेष्टित होने के लिए प्रवृत्त करना, घिरने के लिए प्रेरित करना ।

बींटाणहार, हारो (हारी), बींटाणियो—वि० ।

बींटायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बींटाईजणो, बींटाईजबो—कर्म वा० ।

बींटाणो, बींटाबो, बीटाणो, बीटाबो, बिंटाणो, बिंटाबो —रू० भे०।

बींटायोड़ो—भू. का. कृ.—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित कराया हुआ, घिराया हुआ. २ गोल कराया हुआ, लपेटाया हुआ, समेटाया हुआ। (विस्तरादि) ३ चारों ओर से आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया आच्छादित करवाया हुआ, ढकाया हुआ. ५ लपेटाया हुआ. ६ बाहु पाश में लेने के लिए प्रेरित किया हुआ, अंकमाल में लिवाया हुआ. ७ वस्त्र, कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ. ८ मढाया हुआ, आच्छादित कराया हुआ. ९ चारों ओर किया हुआ, फैलाया हुआ. १० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, घिरने के लिए प्रेरित किया हुआ।

बींटियोड़ो—भू. का. कृ.—१ किसी शहर, दुर्गादि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ. २ गोल किया हुआ, लपेटा हुआ, समेटा हुआ. ३ चारों ओर से आक्रमण किया हुआ. ४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. ५ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ, ६ बाहुपाश में लिया हुआ, अक- माल में लिया हुआ. ७ वस्त्र कवच आदि पहना हुआ, धारण किया हुआ. ८ वस्त्र कवच आदि पहनाया हुवा, धारण कराया हुआ. ९ चारो ओर हुवा हुआ, चारों ओर फैला हुआ. १० आवेष्टित हुवा हुआ, घिरा हुआ. ११ जड़ा हुआ।
(स्त्री. बींटियोड़ी)

बींटी—देखो 'बींटी' (रू. भे.)

उ०—१ छुरी रै हसती मुहर रौ थौ मो वोहत बम थौ। सो रुपाट माहे खोलियो। बींटी हाथ में मोहरै री थी, सो खोली। पछै आप री आख खोळ वडारण री आख खोळाय आप रै हाथ सुं भरमल नै दी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ मोतिया री हार चौढ पंच-लड़ी विराज रह्या छै। जड़ाव रा बाजूबंध कांगण रतन-चोक आरसो बींटी विराज रही छै। वळै चूड़ो सोनेरी बगडीदार विराजै छै। जांणै काळी घटा में बीज चमकै छै। —रा. सा. स.

उ०—३ जीमणा हाथ री चिटूड़ी आगळी धकै करनै कंवरा लागा आ छोटी सी बींटी दस हजार रिपिया री है, म्हारी अै पगरखिया हजार रिपियां री है अर थानै कीं इदकाई नी दीसै। आपरी आंख्यां में कठैई जाळो तो नी है। —फुलवाड़ी

बींटोरो—देखो 'भींटोरो' (रू. भे.)

बींटो—स. पु.—दरी आदि में लपेट के साथ बांधा हुआ कपड़े आदि का गोल बिस्तर।

२ देखो 'बींटो' (रू. भे.)

मह,—बीट, बिट, बीटो।

बींठो—देखो 'बींटी' (रू. भे.)

उ०—जे मीख दियां रै दूजै दिन कै बरस दोय बरस पछै बाई री अणचींती मौत व्हैगी तो सगळो बींठो, दत्त-दायजो अंठै नीं आवैला! कमाई करण वाळा नै हजारूं वातां रो ध्यांन राखणो पड़ै। —फुलवाड़ी

बींडो—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—'''गढगजी सवागजी चुगजी पटणी पटपाटू, पचवरण छींट, नीलवटा चकवटां धोतवटां मुहिवटां नाटी दोटी घटी कठपीठ पागडी बींडो रेट चूनड़ी पातलमाडी, नदरबारी पावडो, पांमडी लोवडी, वाहणवही लोवडी'''। —व. स.

२ देखो 'भिंडो' (रू. भे.)

बींडो—देखो 'भिडी' (अल्पा., रू. भे.)

बींण—१ देखो बीणा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

बींणणो, बींणबो—क्रि. स.—छांटना, टालना।

उ०—प्रतापसिंह माथै निजर पड़तांई वो तारा री गळाई उण कांनी तूटो, इतरै लारली भीड़ माथै आय पड़ी छता पण नैड़ा आयोड़ा तीन च्यारां नै बींणनै वीर री डाढाळी वुई सो प्रतापसिह रो माथो जमी माथै लुटतो निजर आयो। —अमर चूनड़ी

२ देखो 'बिणणो, बिणबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)

बींणणहार, हारो (हारी), बींणणियो—वि०।

बींणिओड़ो, बींणियोड़ो, बींण्योड़ो—भू० का० कृ०।

बींणीजबो, बींणीजबो—कर्म वा०।

बींणती—देखो 'विनती' (रू भे.)

उ०—कठै अगन, जळ, पवन, धूंवै रो मेघ अंदेसो? कठैक पातक पुरख लिजावण जोग संदेसो? भूल्यौ इतरा भेद बींणती मेघ करंतां न चेत अचेतण ग्यांन कांम-कबाण चढनां। —मेघ

बींणियोड़ो—भू का. कृ.—१ छाटा हुआ, टाला हुआ।

२ देखो 'बिणियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींणियोड़ी)

बींद—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—१ कोई वीर पुरख परणीजियो नै दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळो नै वहनोई सत्रुआं नै पूगा तठै बींद वणियोड़ै हीज झगडा रै भूखै तरवार आगै सरीर पुरजा पुरज कर विखेरियो। —वी. स. टी.

उ०—२ हिंदवा राव हयथाह अथरज हुई, न सारी सुरीति चोत नरंदां। गई म्रग विवांणां बैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना बींवां। —महाराजा जसवंतसिंह री गीत

उ०—३ आसकरन वडौ एकाधपति, 'नोबउत' नमौ आलम सकत्ति। ओपमा करण अंगण-नीद, वरियांम कुंआरी घडा बींद।

—गु. रू. बं.

उ०—४ 'जैतमाल' अण-पाल, बींद मेवाड तणी घड। सिवियांणं सोभति, 'भांण' रोळिया भडा बड। —गु. रू. बं.

उ०—५. रुद्रमाळ रचावां। पहाडां नै जळ चाढ़ां। इतरी सांभळी नै संभ नै निसभ बेऊ दावाई भाई बोलिया-उवाह उवाह। आणी रा बींद। रिण में बावळा। बांकी मूंछाळा। —मा. वचनिका

(स्त्री. बींदणी)

बींवड़—१ देखो 'बींद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बींवड़ जेड़ो बींदड़ो, जोड़ी तुली है जोर। गळ कंठी भुज भुजबंद, माथा ऊपर मोड़। —सांतिलाल

२ देखो 'बींवळ (रू. भे.)

उ०—जप सखी ! म्हारा जणणि, भवर करै भड़भाळ। बींवड़ बजाय बिग्रहां, बीजड़ हूं बीवाल। —रैवतसिंह भाटी

बींवड़लो—देखो 'बींदड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

बींवड़ी—स. स्त्री.—१ विवाह आदि के लिये निमन्त्रण पत्र, कुंकुम-पत्रिका।

२ देखो 'बींदड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०—बींवड़ जेड़ो बींवड़ो, जोड़ी तुली है जोर। गळ कंठी भुज भुजबंद, माथा ऊपर मोड़। —सांतिलाल

बींवड़ो—१ देखो 'बींदड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बींद' (अल्पा., रू. भे.)

बींवणी—देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०—१ सुरति करि आरती निरत नेता लीयां, सांम समेहळं मिळै सारा। ब्रह्म वर बींवणी खरवटी खरी इद ज्युं ओवड़ै हमी धारा।

—अनुभववांणी

उ०—२ मन ई मन सोचण लागा कै आ कोई डाकण, भूतणी कै स्यारी तौ किणी भाव नीं व्है सकै। देवतां री पूजा सारु घर सूं निकळो। किणी धनवती री नवी बींवणी दीसै।

—फुलवाड़ी

उ०—३ बींवणी अपूठी होय मूंडो ऊघाड़ बैठगी। ऊबी जोयो। पतळी पतळी लीली खेर लड़ाभूम सांगरियां ई सांगरिया देखता ई कोयां में डाकोळांई वापरगी। —फुलवाड़ी

उ०—४ तद पदमावती वर देख राजी हुई। उठै बींद नुं तोरण वांदाय चवरी लै आयां। अर बींवणी अांण हथळेवो जोड़ अर परणाया। —ठकुरै साहू री बात

बींवणो, बींवबो—देखो 'बींधणो, बींधबो' (रू. भे.)

बींवणहार, हारो (हारी), बींवणियो—वि०।

बींवियोड़ो, बींवियोड़ो, बींवोड़ो—भू० का० कृ०।

बींवीजणो, बींवीजबो—कर्म वा०।

बींवराजा—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—फेरा रै पैली हथळेवा में बींवराजा री हाथ कांई भिलियो, जांणै गिगन रा नवलख तारा बींदणी री हथाळी में आय खिरिया उण री नस नस में बीजळियां खिवण लागी। —फुलवाड़ी

बींवळ—स. पु.—नपुंसक, हिजड़ा।

उ०—१ दुभल दुरंगा दहण, वद वद सह खग वार। की बींवळ विग्रह करै, हथ ताळधा हथियार। —रैवतसिंह भाटी

उ०—२ बींवळ बीस हजार, हैमाळे गळिया हुता। करम लिखी करतार, राकां नै राजा किया। —अग्यात

रू. भे.—बींदड़।

बींवावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

बींवियोड़ो—देखो 'बींधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींदियोड़ी)

बींवोळी, बींवोली—१ देखो 'बींदोली' (रू. भे.)

२ देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बींवोळो, बींवोलो—स. पु.—१ दूल्हे या दुल्हन का जूता।

२ देखो 'बदोळो' (रू. भे.)

रू. भे.—बींनोळो।

बींध—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—वहण बींध कुंरद सपंक दाळिद बहण, तप पड़ंग अंगभाव अवतार। कोक सिख जहळ जोगेसरां कविदा, सूर सक्र अथग 'सिव' कियो सिरदार। —महाराजा छत्रसिंह हाडा री गीत

बींधणो, बींधबो—क्रि. अ. स. १ आर-पार होना, आर-पार निकलना।

२ दबना, विवश होना।

उ०—जीव संताप्या मद घणा, पर आसायें बींध। वलि रात्रि भोजन करघा, काज अकारज कोध। —वि. कु.

३ आर-पार करना।

४ दबोचना।

५ देखो 'बींधणो, बींधबो' (रू. भे.)

उ०—१ जाणतां बूझतां हाथां करने घोखो खायो। पण अबै व्है

कांई । संपाड़ो करचोड़ा ऊघाड़ा डील । पोह री ठारी हाडकां नै बींधती ही । माथा वफमनै भरभंड । व्हेगा । —फुलवाड़ी

उ०—२ ताहरां रायसिंघ बोलियो—कूंभा ! क्यूं उतरै ? म्हारा हाथ देख । सिगळा ही नूं कबूतर दाई बींधू । ताहरां कूंभो बोलियो—रावळ मलीनाथजी री प्रांण छै, बोलो तो । —नैणसी

उ०—३ जउ सूकी तुहइ तुलसिरी, जउ बींधी तुहइ मोतिसिरी । जउ डुहलूं तुहइ गंगाजल जांणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वांणि ।
—नळदवदंती रास

६ देखो 'बिंधणो, बिंधबो' (रू. भे.)

उ०—१ लगी सबद की चोट, बींध गई बिच काळिजो । हरिया ओर न ग्रोट, सतगुर वाह्या मूंठ भरि । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ सबद तणी तांह मार, ऊठै सूळ सरीर में । हरिया इणी न धार, नख चख सारा बींधग्या । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ सैर में सीवळ री रौळाटो फैलियो । घर-घर में छोटां वडा रै सीवळ निकळी । कमळा रै ग्रो करम री भाग वाजी । घणी दोरी सीवळ निकळी, रूं रूं बींधीजग्यो । —वरसगांठ

बींधणहार, हारो (हारी), बींधणियो—वि० ।

बींधिग्रोड़ो, बींधियोड़ो, बींध्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बींधीजणो, बींधीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

बींधाणो बींधाबो—देखो बिंधाणो, बिंधाबो' (रू भे)

बींधाणहार, हारो (हारी), बींधाणियो—वि० ।

बींधायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बींधाईजणो, बींधाईजबो—कर्म वा० ।

बींधायोड़ो—देखो 'बिंधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींधायोड़ी)

बींधावणो, बींधावबो—देखो 'बिंधाणो, बिंधाबो' (रू. भे.)

बींधावणहार, हारो (हारी), बींधावणियो—वि० ।

बींधाविग्रोड़ो, बींधावियोड़ो, बींधाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बींधावीजणो, बींधावीजबो—कर्म वा० ।

बींधावियोड़ो—देखो 'बिंधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींधावियोड़ी)

बींधियोड़ो—१ ग्रार पार हुवा हुग्रा, ग्रार पार निकला हुग्रा. २ दबा हुग्रा, विवश हुवा हुग्रा. ३ ग्रार पार किया हुग्रा । ४ दबोचा हुग्रा ।

५ देखो 'बिंधियोड़ो' (रू. भे.)

६ देखो 'बीधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींधियोड़ी)

बींन—१ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

३ देखो 'बींद' (रू. भे.)

बींनणी—देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

बींनोळी—१ देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बींदोली' (रू. भे)

बींनोळो—१ देखो 'बींदोलो' (रू. भे.)

२ देखो 'बंदोळो' (रू. भे.)

बींफरणो, बींफरबो—देखो 'बिफरणो, बिफरबो' (रू. भे)

उ०—धारण सलाह चित नह धरै, ग्रारण करण उतावळो । बावळा गयंद मसतां बिधी, बींफरियो रिण बावळो । —सू. प्र.

बींफरणहार, हारो (हारी), बींफरणियो—वि० ।

बींफरिग्रोड़ो, बींफरियोड़ो, बींफरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बींफरीजणो, बींफरीजबो—भाव वा० ।

बींफरियोड़ो—देखो 'बिफरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींफरियोड़ी)

बींभर—देखो 'भींभर' (रू. भे.)

बींभरणो, बींभरबो—देखो 'भींभरणो, भींभरबो' (रू. भे.)

उ०—१ जुडै हिक बींभरता जम दूत, कढै हिक मारि ग्रणी सर कूत । वहै हिक घाउ वदै विग वाण, रिखै हिक गोळियां रिण-ढांण । —गु. रू. बं.

उ०—भाग री धणी मोभाग री भूकीयो, त्याग री खाटियो वांट खावै । बेहूं राहां वीर्चं नित वादै 'बलु', बींभरै खेत नीसांण बावै ।
—बलुजी चांपावत री गीत

२ देखो 'विभरणो, विभरबो' (रू भे.)

बींभरणहार, हारो (हारी), बींभरणियो—वि० ।

बींभरिग्रोड़ो, बींभरियोड़ो, बींभरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बींभरीजणो, बींभरीजबो—भाव वा० ।

बींभरियोड़ो—१ देखो 'भींभरियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विभरियोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. बींभरियोड़ी)

बींभरियो—देखो 'भींभर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बींभळ, बींभळो—देखो 'विभळ, विभळो' (रू. भे.)

उ०—बाहू चळो निरम्मळो, चख बींभळो सुरत्त । ग्राजे करनल ग्रक्कळो (नूं) संबळो रूप सगत्त ।
—राव सेखो

बींही—सर्व.—इस, उसी ।

उ०—सो विधना रै लेख सूं मूंडण प्रात:काळ घड़ी दोय रै तड़कै ऊठ सूरजकुंड में स्नांन करणै नूं गई । **बींही** समै देवजोग सूं डाढाळो बींही सूरजकुंड माही स्नांन करणै आयौ, सो देखै तो मूंडण स्नांन कर रही छै । —डाढाळा सूर री बात

बी-सं. पु.—१ शास्त्र । (एका.)

२ विष्णु । (,,)

३ योद्धा, सुभट । (,,)

सं. स्त्री.—४ बेल । (,,)

५ गंगा । (,,)

रू. भे.—बीं ।

६ देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—इतरै कंवर वीरमदे घोड़ां चढ़ आघो आयौ । जठै गणगोरयां आगै चढोया ऊभा छा ज्यां पूछायो—थै सिरदार कुण छो । जठै या कयो—म्है तो गेलारयु छां । पारबती को दरसण करस्यां । इतरै गणगोरयां गांव नै वावड़ी । ग्रै बी गैला उपरै छा । —पनां

७ देखो 'भी' (रू. भे.)

उ०—गांवठां असवारां की वागां उठी । जिकै फागां जाणिजै, गुलालां री मुठी । जठै सं बाहर पोती । जठै कंवर वीरमदे गैलै असवार ऊभा राख्या था जिकै बी उण वेळां आय सांमिल हुवा । —पनां

बीग्र—देखो 'बी' (रू. भे.)

बीग्रांनी—देखो 'बिसांनी' (रू. भे.)

बीग्राळ, बीग्राल—देखो 'ब्याळ' (रू. भे.)

उ०—जेवडउ अंतर हाथि अनइं ऊंट, जेवडउ अंतर पाधरसी अनइ लूंट, जेवडउ अंतर सीह नइ सीआल, जेवडउ अंतर गोल अनइ बीग्राल, जेवडउ अंतर रांणी अनइं दासी,'''। —व. स.

बीग्राळको—देखो 'बीयाळको' (रू. भे.)

बीग्रापक - देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

बीग्रापणौ, बीग्रापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

बीग्रापणहार, हारौ (हारी), बीग्रापणियौ—वि० ।

बीग्रापियोड़ो, बीग्रापियोड़ो, बीग्राप्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बीग्रापीजणौ, बीग्रापीजबौ—भाव वा० ।

बीग्रापियोड़ो—देखो 'व्यापियोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. बीग्रापियोड़ी)

बीक—१ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वीख' (रू. भे.)

बीकणौ, बीकबौ—क्रि. स.—१ बेचना, विक्रय करना ।

उ०—१ लाख लूण तिल वुहरया बीक्या, कन्या विक्रय कीधा । सोम सूर कइ राहु गिलंतइ, महादांन कौ लीधां । —कां. दे. प्र.

उ०—२ दोसी वूहरइ अतिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र । एक बइठा कहइ कथा कल्लोल, एक बइठा बीकइ मंजीठ चोल ।'' —नळदवदंती रास

उ०—३ सरस्वती आगलि कुण पढीयइ, अम्रत कउणि कढीइ, मांणिकु कउणि बीकीइ, मोती कउणि छडीइ, निरगुण कउणि बंधीइ, वाउ कउणि-बांधीइ'''। —व. स.

२ देखो 'बिकणौ, बिकबौ' (रू. भे)

बीकणहार, हारौ (हारी), बीकणियौ—वि० ।

बीकियोड़ो, बीकियोड़ो, बीक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बीकीजणौ, बीकीजबौ—कर्म वा० ।

बीकधर—सं पु.—बीकानेर का एक नाम ।

बीकनेर, बीकपुर, बीकपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—१ जम विरद सुणि दुरंग जैरां, नजर भेजो बीकनेरां । एह सुणि बीकांण अक्खै, रावळां बह निजर रक्खै । —सू. प्र.

उ०—२ गढ जैसांणौ बीकपुर, कै सीरोही पार । जग मैं भूपत थांन रो, बुध अनुमांन विचार । —रा. रू.

उ०—३ त्याग मैं दिया गढ परगनां त्रवूणां, बीकपुर अंजस दूणा विकासै । कीत सु प्रवीत जण जगां रमणा कहावै, रहावै वात जुग च्यार 'रासै'। —रायसिंह रो गीत

बीकम—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

उ०—भगो तोय वाराह, राहु गिळियो तोय दणीयर । लांघणियो तोय सीह,जेम मथियो तोय सायर । अंण हुंतै बीकम, घणौ वीटियो वीकोदर, खोड़ो तोय हणवत, लियो दरसण तोय सांकर । —अल्लूजी कवियो

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे.)

उ०—१ बाघउत ऊचरै, सुणो खट-तीस वंस, जुरा आगळि रहै वदं जाही । भोज बीकम तणो सुजस सारै भुयण, नरां तिण वार रा मडप नाही । —राव गांगो

उ०—२ विध रा जांण गाथ रा बीकम, पारिख बाण हाथ रा पाथ । जुध रा भीम खळां रा गजण, नाथ' रा बुध गणनाथ ।

—आईदांन पाल्हावत

उ०—३ पलटियां नहीं ग्रहियां पलो, सत हरचंद बिरदां सधै । दातारपणै 'गजबंध' दुभल, बीकम क्रन हूंतां वधै । —सू. प्र.

उ०—४ 'अबदळ' 'पदम' रायसींग जुजस्टळ, हरचंद बीकम भोज हुवा। मांणी मता छता मह मंडळ, मता न मांणी जीता मुवा।
—गोरधनजो खोची

बीकमपुर —देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

बीकमायत—सं. पु.—राठोड़ वंश की एक उपशाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

बीकम्म—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भें.)

उ०—काय भोज बीकम्म काय रुद्र नाग अरज्जन, काय रांमण बळराज काय जुजठळ अर गंजन। कन्न काय हरचंद क्रन कग ग (क) हर कहता, काय समर दधीच काय जीवाहन जता।
—मालो आसियो

बीकराळ, बीकराल—देखो 'विकराळ' (रू. भे)

उ०—अकलंक कलंक मो चळ्यो, सांमुहो जोवन वीरह बीकराळ। अनवलइ दब परजळं, पगि पगि मो सखी मंडइ भाळ।
—बी. दे.

बीकांण, बीकांणगढ, बीकांणो—देखो 'बीकानेर'

उ०—१ प्रथम देस जेतांण बीकांण प्रगटी पछै, बरजियो मांण बेड़ो उबारघो। अबै परब्रह्म माळी प्रकति अद्रजा, धजाळी मद्र अवतार धारघो।
—मे. म.

उ०—२ सो बीकांण धरा चै साधै, बळ मेटियो जु हूता बांधै। केताई गांव थांणायत कोटां, लूटै देस किया सहलोटां।
—रा. रू.

उ०—३ लोहि हरिण 'जैत' बीकांणगढ जै लीयो, बहुडि खुरसांण अजमेर गढ दाबियो। खाग झड़ रांण खुरसांण दळ जिण खंडे, डोडवांणा सहित सहर सांभरि डंडे।
—सू. प्र.

उ०—४ भिड़ती खुरसांण जितै दळ भाजा, आयो 'करण' तुहारी ओट। बीकांणा देसांणी वांसै, करनादे पलटै किम कोट।
—महाराणा करणसिंघजी

बीका—सं. स्त्री.—राठोड़ वंश की एक उपशाखा।

बीकियोड़ो—भू. का. कृ.—१ बेचा हुआ, किक्रय किया हुआ।

२ देखो 'बिकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीकियोड़ी)

बीकोजी—सं. स्त्री.—बीकानेर राजवंश की पुत्री या बहिन।

बीकोदर—देखो 'वृकोदर' (रू. भे.)

उ०—१ भगो तोय बाराह राह गिळियो तोय बणीयर, लांघणियो तोय सीह जेम मथियो तोय सायर। अंण हूंतै बीकम चरण बीटीयो बीकोदर, ओड़ो तोय हणबंत लियो दरसण तोय सांकर।
—अल्लूजी कवियो

उ०—२ बीकोदर वीर बर, अनड़ पाहाड़ असंकित। विविध फौज रचिमणी, अरघ आठम चंद्राकत।
—गु. रू. बं.

बीको—सं. पु.—राठोड़ वंश की बीका नामक उप शाखा का व्यक्ति।

बीक्रम—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

बीक्रमनगर, बीक्रमपुर—देखो 'विक्रमनगर' (रू. भे.)

बीखण—सं. पु. [सं.] देखने की क्रिया, अवलोकन, निरीक्षण।

रू. भे.—वीख, वेख।

बीख—सं. पु. [सं] १ कदम, डग, पैंड।

उ०—१ छोटी बीख न आपड़ां, लांबी लाज मरेहि। सयण बटाऊ वाळ रे, लंबउ साद करेहि।
—ढो. मा.

उ०—२ संपेख खुरम सुरतांण साथ, नरसिंघ रूप नवकोट नाथ। 'सूरजमल' संभ्रम तें सरीख, बधियो किरि वांमण दियण बीख।
—गु. रू. बं.

उ०—३ वाकरां नूं बरको करण रै पगां अलवळियां मोटचारां नूं हुकम कीजै छै। सू असीलां सीरोहियां लेनै ऊठिया छै। मलफती बीखां भरै छै। जांणे पावासर रो हंस मोती चुगण चालियो छै।
—रा. सा. सं.

उ०—४ राय देह पधराय वार तण चेह विचंमां, झळ अग्गी झूलिवा करण लग्गी परकम्मां। भूप हेत सत भाय रूप सोहै पटरांणी, बीख बीख जग विमळ ईख लाजै इद्रांणी।
—रा. रू.

२ चाल, गति वेग।

उ०—१ मागो सीख नरिंद सूं, दीन्ही बीख कुंवार। जांणे बंध पलट्टियो, सिंध प्रळै री वार।
—रा. रू.

उ०—२ कपड़ा खरची दे कलै, वसा घरां दी सीख। अठी अठा पाछै अबै, वळै देखो मत बीख।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत बाढेल री वात

३ ऊंट या घोड़े की चाल विशेष।

उ०—१ छट सुंदर बीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ रूप तणा। दुति वकति तुंड लगांम दियां, कुळवंतिय घूंघट जांणि कियां।
—रा. रू.

उ०—२ उण गांव रै गोयरै आय नींसरियो। देखै, तौ एक लुगाई ऊभी छै। देखि नै मन में संकियो, भई चूड़ैल नहीं छै। इतरो जांणि नै रजपूत होयै रो जोरावर हुतो ढीठो, बोलाईस तो खरी। ताहरां औ ऊंठ बीखै बीखै चलाइ नै नेड़ो आयो।
—कांधळ जोईये नै तीडो खरळ री वात

४ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—प्राबू रै धणी पाल्हण परमार सरब धातू मांहै भरत रो भरियो थोतंकर रो बीख हुतो सू मलाय प्रचळेसर है । नांदियो भरायो जिण विख बालण रा पाप सूं पाल्हण रै कोढ उपडियो जीवदेव री नाबो विख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो ।
—बां. दा. ख्यात

५ देखो 'वीक्षण' (रू. भे.)

उ०—तूं मोनूं हिव आंणदं, म देख म्हनै कु बीख । जलदी मोनूं आवणो, म्हारी सगळा नै उडीख ।
—सांतीलाल

रू. भे.—बरीख, बीख, ग्रख, ग्रखा, ग्रखि, ग्रीख, भीख, वरीख, विक्ख, विक्ख, वीख, वीखा, वेख ।

अल्पा.—वीखड़ी ।

वीखड़ी—देखो 'वीख' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—साल्ह चलंतइ परठिया, प्रांगण वीखड़ीयाह । सो मइं हियइ लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियाह ।
—ढो. मा.

वीखणी—देखो 'विकखणी' (रू. भे.)

उ०—१ दळादि दब दल्लडै, पवंग वाग ऊपडै । खुरा ज खोणि वीखणी, पतग छाइ पोइणी ।
—गु. रू. ब.

उ०—२ है-थट समद जाण हिलोळ, पमगा हमस पक्खर रोळ । झमतं खुरमरै कटकेह, वसुधा वीखणी विडगेह ।
—गु. रू. ब.

उ०—३ खेह रा जोध तुरंगाण ताता खडं, पै खुरं वीखणी खोण खाना पडं । तांप्पया तालू ए नोह घोडातणं, झाड झाफा भरं तेज सूं ऊफणे ।
—गु. रू. ब.

वीखणौ, वीखबौ—क्रि. प.—१ रुदन करना, रोना ।

२ बिलखना, व्याकुल होना ।

३ तरसना, लालायित होना ।

४ तड़फना ।

५ दुःखी होना, पीड़ित होना ।

६ देखो 'वीकणौ, वीकबौ' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)

उ०—वदनारविंद गोविंद वीखियं, प्रालोचं ग्रापो प्राप सूं । हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुग्रो कतारथ पहिलो हूं ।
—वेलि

वीखणहार, हारौ (हारी), वीखणियौ—वि० ।

वीखियोड़ो, वीखियोड़ो, वीख्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वीखीजणौ, वीखीजबौ—भाव वा० ।

वीखणौ, वीखबौ, वीखणौ, वीखबौ, बिलखणौ, बिलखबौ, वीखणौ, वीखबौ—रू० भे० ।

वीखरणौ, वीखरबौ—देखो 'बिखरणौ, बिखरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बाटइं राई वीखरी, उलंगावइ ग्रेक । लक्ष प्रकारै लूणना बिनता करइ विवेक ।
—मा. कां. प्र.

उ०—२ जद छोहरा नगारा बजावा लागा । जद रांमत में भंग पड़्यो । लोक वीखर गया । रावलियां रै हाथै दांन पिण न श्रायो नें भूंडा पिण दीठा ।
—भि. द्र.

उ०—३ भयांनक हेक करै भाराथ, हिकां मसतक्क पडै पग हाथ । वंणी-डंड हेकां वीखरियाह, लुटै भुंइ हेक लुहो भरियाह ।
—गु. रू. बं.

उ०—४······उन्हउ तीन्हउ सरहरउ भरहरउ प्राहसिउ नीलसिउ प्रणीग्रालउ संम्रालु सरसु सकोमल वीखरिउ वीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ ऊदेलो जेवडउ, दूबल पेटि पइसइ, फूटो नीसरइ हसउ कूर परीसिउ ।
—व. स.

वीखरणहार, हारौ (हारी), वीखरणियौ—वि० ।

वीखरियोड़ो, वीखरियोड़ो, वीखरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वीखरीजणौ, वीखरीजबौ—भू० का० कृ० ।

वीखराणौ, वीखराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारौ (हारी), वीखराणियौ—वि० ।

वीखरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वीखराईजणौ, वीखराईजबौ—कर्म वा० ।

वीखरायोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखरायोड़ी)

वीखरावणौ, वीखरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारौ (हारी), वीखरावणियौ—वि० ।

वीखराविओड़ो, वीखरावियोड़ो, वीखराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वीखरावीजणौ, वीखरावीजबौ—कर्म वा० ।

वीखरावियोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखरावियोड़ी)

वीखरियोड़ो—देखो 'बिखरियोड़ो' ।

(स्त्री. वीखरियोड़ी)

वीखा—सं. स्त्री. [स.] १ नाच, नृत्य ।

२ संगम, मिलन ।

३ देखो 'वीख' (३) (रू. भे.)

वीखियोड़ो—भू. का. कृ.—१ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. २ बिलखा हुआ, व्याकुल हुवा हुआ. ३ तरसा हुआ, लालायित हुवा हुआ. ४ तड़फा हुआ. ५ दु.खी हुवा हुआ, पीड़ित हुवा हुआ ।

६ देखो 'वीकियोड़ो' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखियोड़ी)

वीखेरणौ, वीखेरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)

बीखेरणहार, हारौ (हारी), **बीखेरणियौ**—वि० ।
बीखेरिग्रोड़ो, बीखेरियोड़ो, बीखेरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बीखेरीजणौ, बीखेरीजबौ—कर्म वा० ।

बीखेरियोड़ो—देखो 'बिखेरियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीखेरियोड़ी)

बीखं—१ देखो 'विखं' (रू. भे.)
२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

बीखोरणो, बीखोरबौ—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबौ' (रू. भे.)
उ०—सरण साधार सुदतार लहरी समंद, करै अदतार नर मीढ केहा। रार लजधार संसार सारो रटै, श्रगट गढ **बीखोरणहार** तेहा।
—गुलजी आढो

बीखोरणहार, हारौ (हारी), **बीखोरणियौ**—वि० ।
बीखोरिग्रोड़ो, बीखोरियोड़ो, बीखोरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बीखोरीजणौ, बीखोरीजबौ—कर्म वा० ।

बीखोराणो, बीखोराबौ—देखो 'बिखराणो, बिखराबौ' (रू. भे.)
बीखोराणहार, हारौ (हारी), **बीखोराणियौ**—वि० ।
बीखोरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बीखोराईजणौ, बीखोराईजबौ—कर्म वा० ।

बीखोरायोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीखोरायोड़ी)

बीखोरावणो, बीखोरावबौ—देखो 'बिखराणो, बिखराबौ' (रू. भे.)
बीखोरावणहार, हारौ (हारी), बीखोरावणियौ—वि० ।
बीखोराविग्रोड़ो, बिखोरावियोड़ो, बिखोराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बीखोरावीजणो, बीखोरावीजबौ—कर्म वा० ।

बीखोरावियोड़ो—देखो 'विखरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीखोरावियोड़ी)

बीखो—देखो 'विखौ' (रू. भे.)
उ०—राठोड़ दुरगदास आसकरणोत **बीखो** घणो कीयो न संमत १७६३ रा चैत वद ५ जाळोर सूं नै जोधपुर सूं सोबेदार नबाब जाफरखां वगैरै था सो नास गया नै श्रीहजूर जोधपुर में जाळोर सूं जाय नै अमल कीयो। —मारवाड़ री ख्यात

बीगड़णो, बीगड़बौ—देखो 'बिगड़णो, बिगड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरीया वाड़ी **बीगड़ै**, सिर परि धणी न होय। यु चिड़ीयां खाया खेतड़ा, हाकल करै न कोय। —अनुभववांणी
उ०—पण म्हारै ओ पण छै-सगी री नाळेर आयो पाछो न मेलु। सो माजी, म्हारौ वचन गयां, जमवारौ ग्रथा जासी। तिण सु थे राजी हुय मनै फुरमावो, ज्यूं म्हारौ भलो हुवै अर थांहरै सत-तपस्या सुं माहरो कुहो न **बीगड़ै**।
—कुंवरसी सांखला री वारता

बीगड़णहार, हारौ (हारी), **बीगड़णियौ**—वि० ।
बीगड़िग्रोड़ो, बीगड़ियोड़ो बीगड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
बीगड़ीजणौ, बीगड़ीजबौ—भाव वा० ।

बीगड़ाणो, बीगड़ाबौ—देखो 'बिगड़ाणो, बिगड़ाबौ' (रू. भे.)
बीगड़ाणहार, हारौ (हारी), **बीगड़ाणियौ**—वि० ।
बीगड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बीगड़ाईजणौ, बीगड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

बीगड़ायोड़ो—देखो 'बिगड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगड़ायोड़ी)

बीगड़ावणो, बीगड़ावबौ—देखो 'बिगड़ाणो, बिगड़ाबौ' (रू. भे.)
बीगड़ावणहार, हारौ (हारी), **बीगड़ावणियौ**—वि० ।
बीगड़ाविग्रोड़ो, बीगड़ावियोड़ो, बीगड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बीगड़ावीजणौ, बीगड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

बीगड़ावियोड़ो—देखो 'बिगड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगड़ावियोड़ी)

बीगड़ियोड़ो—देखो 'बिगड़ियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगड़ियोड़ी)

बीगन—देखो 'विघ्न (रू. भे.)

बीगसणो, बीगसबौ—देखो 'विकसणो, विकसबौ' (रू. भे.)
उ०—वळै को चेतै जीव, चेतिस्यौ चेतणहारो। बीणां **बीगसै** मन, लखण उजाळै लारो। —बील्होजी

बीगसणहार, हारौ (हारी), **बीगसणियौ**—वि० ।
बीगसिग्रोड़ो, बीगसियोड़ो, बीगस्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बीगसीजणौ, बीगसीजबौ—भाव वा० ।

बीगसियोड़ो—देखो 'विकसियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगसियोड़ी)

बीगाड़—देखो 'बिगाड़' (रू. भे.)
उ०—राव मालदे रा डेरा फळोधी छै। तरै नरै कंवर हरराज नु कह्यो—कहो तो म्हे जावां कटक रा **बीगाड़** करां। तरै हरराज आपरो साथ घणो साथै दीयो। —नैणसी

बीगाड़णो, बीगाड़बौ—देखो 'बिगाड़णो, बिगाड़बौ' (रू. भे.)
उ०—नाहड़राव मडोवर धणी हुवो। वाराह एक मंडोवर री वाड़ी **बीगाड़ै**। तिण री धणी पुकार होई रही छै। नै एक दिन नाहड़राव डेरै होतो थो सु वाराह नीसरियो। —नैणसी

बीगाड़णहार, हारौ (हारी), **बीगाड़णियौ**—वि० ।
बीगाड़िग्रोड़ो, बीगाड़ियोड़ो, बीगाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
बीगाड़ीजणौ, बीगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बीगाडियोड़ी—देखो 'बिगाड़ियोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगाडियोड़ी)

बीगाड—देखो 'बिगाड' (रू. भे.)

उ०—नठै माळी बोलियौ—महाराज ! आज काल कोईक जानवर हिल्यो छै। सो दिन रा जावना घणी करां छां, पिण रात रा बीगाड कर जावै छै। —रिसालू री बात

बीगाडणौ, बीगाडबौ—देखो 'बिगाडणौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ बागवांन नै पूछयौ—क्यूं बे बागवांन ! बहुत दिन में गसा फल-फूल क्यूं लाया, सो कारण काइ छै ? तदी बागवांन कह्यौ—हजरत, सलामत कबलेयांन, अधरात कु बाग में हमेस क्या बलाय आवती है, सो बाग बीगाडै छै। —रिसालू री बात

उ०—२ अतरायक में पातसाहजी बोल्या क्युं बे बागवांन ! ईतरा दिन में ईस्या फल-फूल क्यु ल्यायौ। तदि बागवान कह्यौ—माहाराज ! कोई आधी रात्रै आवै छै; कोई बलाय छै। सो बाग बीगाडी जाय छै, नित प्रत आवै छै। —रिसालू री बात

बीगाडणहार, हारौ (हारी), बीगाडणियौ—वि०।

बीगाड़ियोड़ो, बीगाडियोड़ो, बीगाड्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीगाडीजणौ, बीगाडीजबौ—कर्म वा०।

बीगाडियोड़ौ—देखो 'बिगाड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगाडियोड़ी)

बीगोड़ी—देखो 'बीघोड़ी' (रू. भे.)

बीगौ—देखो 'बीघौ' (रू. भे.)

बीग्रह—देखो 'बिग्रह' (रू. भे.)

बीग्रहणौ, बीग्रहबौ—देखो 'बिग्रहणौ, बिग्रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै रावजी बात आ राखी, कही—माहारो कोट आवसो तरै म्है तोनूं छोडसां। तरै डूगरसी कोट रै मोहडै जाई जगहथ देपावत नूं कहीयौ—साबास तै पाच मास गढ बीग्रहियौ। हिमे हूं दोहोरो हूं तूं कूंची रावजी नूं सौंप जु भोनूं छोडै। —नैणसी

उ०—२ इण फेर रतनसी कोट झालियौ। सावत चहुवाण कान्हर नरनाह रो बेटो चहुवाण ईसरदास वडो रजपूत छै। वडो वडो गढ बीग्रह्यो नै लड़ाई की। —नैणसी

बीग्रहणहार, हारौ (हारी), बीग्रहणियौ—वि०।

बीग्रहियोड़ो, बीग्रहियोड़ो, बीग्रह्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीग्रहीजणौ, बीग्रहीजबौ—कर्म वा०।

बीग्रहियोड़ो—देखो 'बिग्रहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीग्रहियोड़ी)

बीघोड़ी—देखो 'बीघोड़ी' (रू. भे.)

बीघौ—देखो 'बीघौ' (रू. भे.)

उ०—अंध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कंयोड़ी बात नै सांची मानण खातर हो बण्यो है। नटणं खातर हरगिज नही। चावै कोई अफड करो तथा जाळ। बीरै वास्तै तो बीघं भूत भर बिसवै सांप हाळी कैवत सांची है। —दसदोख

बीड़ंग, बीड़ंगाण, बीड़ंगि, बीड़ंगौ—देखो 'बिडंग' (रू. भे.)

उ०—गुटकाण सीदाण श्रीमांण तणी गत, नाव तीरांण दधांण त्रणं। पुखरांण वेगाण प्रिमाण पराछक, वात वसै बीड़ंगांण भणं। —किसनजी दधवाड़ियो

बीड़, बीड़उ—१ देखो 'बिड़' (रू. भे.)

२ देखो 'बीड़ो' (मह., रू. भे.)

बीड़णौ, बीड़बौ—देखो 'बीड़णौ, बीड़बौ' (रू. भे.)

बीड़णहार, हारौ (हारी), बीड़णियौ—वि०।

बीड़ियोड़ो, बीड़ियोड़ो, बीड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीड़ीजणौ, बीड़ीजबौ—भाव वा०।

बीड़मौ, बीड़वौ—देखो बीड़मौ' (रू. भे.)

बीड़ा—देखो 'बीड़ा' (रू. भे.)

बीड़ाणौ, बीड़ाबौ—देखो 'बीड़ाणौ, बीड़ाबौ' (रू. भे.)

बीड़ाणहार, हारौ (हारी), बीड़ाणियौ—वि०।

बीड़ायोड़ो भू० का० कृ०।

बीड़ाईजणौ, बीड़ाईजबौ—कर्म वा०।

बीड़ादार—देखो 'बीड़ादार' (रू. भे.)

बीड़ायोड़ो—देखो 'बीड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीड़ायोड़ी)

बीड़ियोड़ो—देखो 'बीड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीड़ियोड़ी)

बीड़ौ—सं. पु.—१ जल भरे चरस की लाव [मोटी रस्सी] को बैलों के जुएँ से जोड़ने का स्थान।

२ देखो 'बीड़ो' (रू. भे.)

बीच—सं. पु.—१ मार्ग, राह। (उ. र.)

२ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ तिसडं पूरब रौ पातसाह समसदो, तिको दिल्ली रा पातसाह ऊपर आयो। कोस २० रौ दोनूं फोजां रै बीच रह्यो, तरै पूरब रै पातसाह कबांण दिल्ली रै पातसाह नूं मेली "जु यांहरा कटक मांहै कोई इसड़ो छै, जिको आ कबांण चाढै। —नैणसी

उ०—२ विढै एम वेखियो, इता एकण बर वाळा। वड वड भड़ां

विचारि, बीच फेरें बिसटाळा। —सू. प्र.

उ०—३ छोटा चेल्हरां ऊपर कुत्तां री डोर छूटी. सो आय घेरिया चेल्हरा चौंकिया। त्यां ऊपर सुवर मुंडण घिरीया। सो मोड़ा बीच बात फटाय लीया। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ दीवांण रै सांमंत मांहि जिका हुई सु दीवांण मांहि पण होत। पण दीवांण री भाग बडो। धरती दे लड़ाई टाळी। इतरै कहतां बीच रावजी रै फोजां री वागां ऊपड़ी। त्यां दीवांण री फोज पाछी मुड़ी। इतरै केइक बडेरा ठाकुर बीच पड़िया नु कयो "ठाकुरां! आगां पाछै कांई जावौ? —नैणसी

उ०—५ पत्र लिखावै प्रीत सूं, आप धरम ची आंण। डर सखै यूं छेदियौ, कर कर बीच कुरांण। —रा. रू.

उ०—६ हरीया तरवर बीच मैं, पछी वासो लेह। कोई कबाड़ो आय कै, दोस विनां दुख देह। —अनुभववांणी

उ०—७ राता माता मैं भया, तै सेती रहमांन। हरीया नैणां बीच मैं, निरखु सारंगप्रांन। —अनुभववांणी

उ०—८ हरीया केता वहि गया, कीया करम कै लारि। घिल पवे घन बीच मैं, ब्यांन सबे नही धारि। —अनुभववांणी

उ०—९ आज कालि क्या करत हैं, हरीया होय अबेर। क्या जांणु कैसी करै, संभा बीच सबेर। —अनुभववांणी

उ०—१० ए कैसें हैं—बडे सु विहांन है, बडे महिरवांन हैं, बडे सिरदार हैं। बडे बूझदार हैं, बडे दातार हैं। जमी आसमांन बीच संभू अवतार है। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)

उ०—घम घम बाजै घूघरा, बाजै चम-चम बीच (छ)। तम-तम यम मालू तवे, म्यार (म) चसम म मीच। —मयाराम दरजी री बात

बीचणौ, बीचबौ—क्रि. स.—१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—खेड़ धणी सिरि खीजियां, हुई मुगल्लां हेल। ज्यों गज वारि विहारतां, बीचै वारिज वेल। —रा. रू.

२ संहार करना, मारना।

३ अलग करना, पृथक करना।

४ त्यागना, छोड़ना, बहिष्कार करना।

५ बीतना, गुजरना, घटित होना।

उ०—१ धांन न भावै चोंच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई। तौ सौ बात कहूं मैं कैसी, मेरै मन में बीचत जैसी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तद आ बळै कटारी काढ नै छाती उपरा बैठो, कही, "रे मूरख, आगै तो तै मांहि बीचो थी अर बळै आयो? तो हमें ते पासै माल छै सो दे नहीं तो मारां छां।" —बूढी ठग राजा री बात

६ बीतना, गुजरना, व्यतीत होना।

उ०—१ जदि जोबन थो जोरि, भाव को धरचो उभारो। बीचि गई तरवार, हुबो भंगि अलत उबारो। —देवोजी

उ०—२ चोर पिण ऊबै रै घर फाड़ण नु गया हुता। सु साहूकार बाप बेटो लेखो करण बैठा हुता, सु राती बीची गई। पाछिलो राति उठीया। ताहरां श्रोथ साहूकार पड़ि रह्या। ऊबै री बेर बीबो करि ढोलियौ बिछाइ नै बैठी हुती, सु राति बीचि गई। —स्यांमसुंदर री बात

बीचणहार, हारौ (हारी), बीचणियौ—वि०।

बीचिओड़ौ, बीचियोड़ौ, बीच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीचीजणौ, बीचीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीछणौ, बीछबौ—रू० भे०।

बीचळौ, बीचलौ—देखो 'बिचलौ' (रू. भे.)

बीचारणौ, बीचारबौ—देखो 'विचारणौ, विचारबौ' (रू. भे.)

उ०—पहली पोरसी सूत्र चितारै, बीजी पोरसी अरथ बीचारै। जांणै तीजी पोरसी लाभी, वेदन रै वस खुध्या जागी। —जयवांणी

बीचारणहार, हारौ (हारी), बीचारणियौ—वि०।

बीचारिओड़ौ बीचारियोड़ौ, बीचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीचारीजणौ, बीचारीजबौ—कर्म वा०।

बीचारियोड़ौ—देखो 'विचारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीचारियोड़ी)

बीचाळ, बीचाळि, बीचाळी, बीचाळु, बीचाळै—देखो 'विचै'(रू. भे.)

उ०—१ वगां बीचाळै काढिया, हुइ जिम पग भलै। ऊभी मेलो साहबी, गढ गोख महलै —केसोदास गाडण

बीचाळौ—देखो 'बिचाळौ' (रू. भे.)

बीचि—सं. स्त्री [सं. वीचिः] १ विवेकहीनता, चंचलता।

२ लहर, तरंग।

३ हर्ष, खुशी, आल्हाद।

४ किरन, रश्मि।

रू. भे.—वीची।

४ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—इस ऊजंका तमांम देखि गिर भगरू बीचि बेसाहर फेरै। ग्रंकके भूंड नदू कै तटाक वण घुमकं से घेरै। तहां सेती होकरि ऊठै अंधकंध गिद्दी ढाळ अगन कुंड से चखुंबीच भभकते क्रोध की भाळ। —सू. प्र.

५ देखो 'विचि' (रू. भे.)

वीचिमाळी—सं. पु॰ [सं. वीचिमालिन्] समुद्र, सागर। (हि. को.)

वीचियोड़ो—भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ. ४ त्याग किया हुआ छोड़ा हुआ, बहिष्कार किया हुआ. ५ बीता हुआ, गुजरा हुआ, घटित हुवा हुआ. ६ बीता हुआ, गुजरा हुआ, व्यतीत हुवा हुआ।
(स्त्री. वीचियोड़ी)

वीची—देखो 'वीच' (रू. भे.)

उ॰—जनहरिया तन वीची में, नख चख घाटि न बाध। और साध सब कहन का, राम भजै सांई साध —अनुभववाणी

२ देखो 'विचि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

३ देखो 'वीचि' (रू. भे.)

वीचेतस—सं. स्त्री.—दुखित। (हि को)

वीछड़णो, वीछड़बो—१ देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो' (रू. भे.)

उ॰—जीहो सगपण इण ससार ना, जीहो थया अनंति बार। जीहो मिल मिल नै वले वीछड़ै, जीहो करम लगावे लार रे।—जयवाणी

उ॰—२ पहिलि मिलियइ तेह सुं रे हां, करियइ हास विलास। मिलि नइ वीछड़िवो पड़ै रे हां, तब मन होइ उदास। —वि. कु.

उ॰—३ कुभड़िया कळिमळ कियउ, सुणी उपखइ बाइ। ज्याकि जोड़ी वीछड़ी, त्यां निसि नीद न आइ। —ढो. मा.

उ॰—४ हंसा बुगां पटतरो, वीछड़ियां परवाण। बुग छीलरोया रय करै, हरिया हस बिलखाण। —अनुभववाणी

उ॰—५ कुरजड़ियां कुरळा रहो, देख विरंगा ताळ। जिण की जोड़ी वीछड़ी, जिणका कवण हवाल। —अग्यात

२ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू. भे.)

उ॰—१ वगी हाक बहादरां, वीछड़ि पडै विसाळ। नाराजा ऊबाणिया, खुरसाणिया कपाळ। —रा. रू.

उ॰—२ खूम इसी चाढो 'खूमाणं', धाया दसै अनोखै धोत। दसतां पड़ै वीछड़ै डाडर, पिड कापड आवै अणपोत।
—मोहकमसिंघ मेड़तियो

उ॰—३ जुध खत्री जाट अप्राज जम जमासा, वाज छूट बांण धम घमासा वीर। वीछड़ै कड़ा ब्रम्मा रुधिर विमासा, गग-सिर-धर खड़ा तमासा-गीर। —टुकमीचद खिड़ियो

उ॰—४ वीर तन लोह छकड़ाल कस वीछड़ै रूक सूं भिड़ै अम-पति मारीस। गोरा बेवळ तणो डिगण न दियै सकस, ग्याम तण भुजा ऊपतज तै सीस —सुजाणसिंघ भोजराजोत सेखावत रो गीत

उ॰—५ वाहता तेग अनमध कध वीछड़ै, हसत बध हसत दोय टूक होवै। सायजादा दळै हिंदवा पातसाह, 'जगा' अवसर अच्छर तूझ जोवै। —महाराजा जसवंतसिंहजी रो गीत

वीछड़णहार, हारो, (हारी), वीछड़णियो—वि॰।
वीछड़िओड़ो, वीछड़ियोड़ो, वीछड़्योड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछड़ीजणो, वीछड़ीजबो—भाव वा॰।

वीछड़वाणो, वीछड़वाबो—देखो 'बीछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

वीछड़वाणणहार, हारो (हारी), वीछड़वाणियो—वि॰।
वीछड़वायोड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछड़वाईजणो, वीछड़वाईजबो—कर्म वा॰।

वीछड़वायोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. वीछड़वायोड़ी)

वीछड़ाणो, वीछड़ाबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

वीछड़ाणहार, हारो (हारी), वीछड़ाणियो—वि॰।
वीछड़ायोड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछड़ाईजणो, वीछड़ाईजबो—कर्म वा॰।

वीछड़ायोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछड़ायोड़ी)

वीछड़ावणो, वीछड़ावबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

वीछड़ावणहार, हारो (हारी), वीछड़ावणियो—वि॰।
वीछड़ाविओड़ो, वीछड़ावियोड़ो, वीछड़ाव्योड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछड़ावीजणो वीछड़ावीजबो—कर्म वा॰।

वीछड़ावियोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछड़ावियोड़ी)

वीछड़ियोड़ो—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बिछूटियोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. वीछड़ियोड़ी)

वीछडणो, वीछडबो—१ देखो 'बिछुडणो, बिछुडबो' (रू. भे.)

उ॰—१ निजर नो नेह जिण सूं हुवै जी, वीछड्यां दुख न खमाय। तेह सांप्रति किम वीसरै जी, जेहनो जीवन प्राय। —वि. कु.

उ॰—२ रैण अंधारी घण गजै, खडि वांताण वखाण। वीछडीया मेळा करै, मिरग डाण केकाण। —पना

उ॰—३ वासर सुख ना रयणी सुख, घरै सुख नावत। वालिम वीछडिआ तणो, मरम स लागो मन। —ढो. मा.

२ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू. भे.)

उ॰—है तूट तुड रुळि रुंड मुड, भाजं असुंड गै हाड-गुंड। वीछडै संध अनमध वप्प, झूझार दियै तेगां झडप्प। —गु. रू. बं.

वीछडणहार, हारो (हारी), वीछडणियो—वि॰।
वीछडिओड़ो, वीछडियोड़ो, वीछड्योड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।

बीछड़ीजणौ, बीछड़ीजबौ—भाव वा० ।

बीछड़ियोड़ौ—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ (रू. भे.)

२ देखो 'बिछूटियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. बीछड़ियोड़ी)

बीछण, बीछणौ-सं. पु.—देखो 'बीछण' (रू. भे.)

उ०—तन धारै बीछण तणौं, जग चुगलां री डीह । माठ तरफ खावै उदर, दै छोनां दुख दीह । —बां. दा.

बीछळ, बीछळण-सं. पु.—१ बरतनों, वस्त्रों व हाथ-पैर आदि को धोने का पानी ।

उ०—धोवट घाट अनोखा धोया, सारां मुंह ऊजळा सरीर । सिवला तणौ बीछळण सांप्रत, चोळ तणै रंगिया अण चीर ।

—मोहकमसिंघ मेड़तियौ

२ प्रहार ।

उ०—ऊभड़ां भड़ां नीभड़ा अंग, बीजड़ां गड़ां बीछळां बंग । जम-जड़ां घड़ां समवड़ां जंग, त्रिज्जड़ां भड़ां तड़फड़ां तंग ।—गु. रू. बं.

बीछळणौ, बीछळबौ-क्रि. स.—धोना, धुलाई करना ।

उ०—ताहरां तळाई आयौ । पागड़ौ छाडियौ । घोड़ै री काढणौ हाथ छै । पांणी माहै पथर छै तिकै उपर बैठा छै । पथर माथै बैस हाथ पग बीछळनै आंखियां रा गोख छांटीया ।

—मांडणसी कूंपावत री वात

बीछळणहार, हारौ (हारी), बीछळणियौ—वि० ।

बीछळियोड़ौ, बीछळियोड़ौ, बीछळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछळीजणौ, बीछळीजबौ—कर्म वा० ।

बीछळियोड़ौ-भू. का. कृ.—धोया हुआ, धुलाई किया हुआ ।

(स्त्री. बीछळियोड़ी)

बीछांमणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

उ०—रंगित मंडप मांहि हिव, जाजिम लांबी जेह । वाछ करै बीछांमणां, मोल घणा छै जेह । —प. च. चौ.

बीछाणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

बीछाणौ, बीछाबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

बीछाणहार, हारौ (हारी), बिछाणियौ—वि० ।

बीछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछाईजणौ, बीछाईजबौ—कर्म वा० ।

बीछायोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछायोड़ी)

बीछावणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरा बळद उपर सलरा बीछावणा, तिण उपर बिणायांणी नूं सोहरी बैसांणी । चालिया जावै छै । चालतां चालतां आगै जाय डेरौ कीयौ । —रळै गढवै री वात

बीछावणौ, बीछावबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

बीछावणहार हारौ (हारी), बीछावणियौ—वि० ।

बीछाविओड़ौ, बीछावियोड़ौ, बीछाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछावीजणौ, बीछावीजबौ—कर्म वा० ।

बीछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछायोड़ी)

बीछियौ—देखो 'बिच्छू' (अल्पा., रू. भे.) (शेखावाटी)

बीछुड़णौ, बीछुड़बौ-क्रि. अ.—१ विमुक्त होना ।

उ०—काळ बिछुड़ि एक बसै गिरि कंदरि, मंदिर आळक एक भरै । अहि त्याग करै धन एक गमाय रु, कै रिध आदरि संधि करै ।

—रा. रू.

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ '(रू. भे.)

उ०—यै सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ, यांको आस । बीछुड़ता ही मांणसां, मेळउ दियउ उल्हास । —ढो. मा.

३ देखो 'बिछूटणौ, बिटछूबौ' (रू. भे.)

बीछुड़णहार, हारौ (हारी), बिछुड़णियौ—वि० ।

बीछुड़िओड़ौ, बीछुड़ियोड़ौ, बीछुड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछुड़ीजणौ, बीछुड़ीजबौ—भाव वा० ।

बीछुड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विमुक्त हुआ हुआ ।

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछुड़ियोड़ी)

बीछू—देखो 'बिच्छू' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—मिणधर विख अणमाव, मोटा नह धारै मगज । बीछू पूंछ बणाव, राखै सिर पर राजिया । —किरपाराम

बीछूड़ौ—१ देखो 'बिच्छूड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीछण' (अल्पा., रू. भे.)

बीछूटणौ, बीछूटबौ—१ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ करिमां रा छूटा गाढ जूवळा अफूटा क्रम, रथां छूटा पीतंमरा लूटा वरां रंभ । तूटा बाढ बीजळां बीछूटा आभ बीजू तेम, खूटा सीस सांकुळां हूं जूटा जैतखंभ ।

—राजाधिराज बखतसिंघजी री गीत

उ०—२ हे कळळ मचै हल हल्लकार, मुंछाळ वदत मुख मार मार । बीछूटै छूट हुई विकट्ट, निरमीत कढै वढिया निकट्ट ।

—मा. वचनिका

उ०—३ बीड़ं खळ घूहड़ लाग्यां बाक, वीरोळं लाख खळां बेबाक । लखी गुर बीरम घूणं त्याग, बीछूटो जांणेय सांकल बाग ।
—गो. रू.

उ०—४ ग्रणग्रा का सा बीबांण बीछूटा । छछोहा जवांन तरवारयां भाछटं छै । ज्यां मैं ग्रणजवार हर नरमाळा साथै हो कटै छै ।
—पनां

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

बीछूटणहार, हारौ (हारी), बिछूटणियौ—वि० ।

बीछूटिम्रोड़ौ, बीछूटियोड़ौ, बिछूटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछूटीजणौ, बीछूटीजबौ—भाव वा० ।

बीछूटियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछूटियोड़ी)

बीछोड़णौ, बीछोड़बौ—देखो 'बिछोड़णौ, बिछोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ बणं फौज राजा तणं काजवाळी, कबौ क्रत जैसी फुणां पत्ति काळी । कजाकां भखा वोडियौ रूप कैसो, 'पमो' नक्र बीछोड़ बा चक्र ग्रैसो ।
—रा. रू.

उ०—२ जिम मोरा ददरा, सघण घण पावस वूठो । जळ ता मछ बीछोड़ि, थळं जळ मांहि पयठो ।
—ग्रल्लूजी कवियौ

बीछोड़णहार, हारौ (हारी) बीछोड़णियौ—वि० ।

बीछोड़िम्रोड़ौ बीछोड़ियोड़ौ, बीछोड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछोड़ीजणौ, बीछोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बीछोड़ियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछोड़ियोड़ी)

बीछोड़ाणौ, बीछोड़ाबौ—देखो 'बिछोड़ाणौ, बिछोड़ाबौ' (रू. भे.)

बीछोड़ाणहार, हारौ (हारी), बीछोड़ाणियौ—वि० ।

बीछोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछोड़ाईजणौ, बीछोड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

बीछोड़ायोड़ौ—देखो 'बिछोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछोड़ायोड़ी)

बीछोड़ावणौ, बीछोड़ावबौ—देखो 'बिछोड़ाणौ, बिछोड़ाबौ' (रू. भे.)

बीछोड़ावणहार, हारौ (हारी) बीछोड़ावणियौ—वि० ।

बीछोड़ाविम्रोड़ौ बीछोड़ावियोड़ौ, बीछोड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछोड़ावीजणौ बीछोड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

बीछोड़ावियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बीछोड़ावियोड़ी)

बीछोटणौ, बीछोटबौ—क्रि. अ.—१ बहना, निकलना ।

उ०—गखड़ै एक घाव कीधौ । तीसौ दूजौ संभूनाथ मैं दुधांरी सीरां छुटां । वळं घाव हुवौ । दूध दही बीछोटवा लागो । बीजौ घाव हुवौ । लोही वीकरंड चाल्या, नीको संभूनाथ-खंड वेहड़ हुवा ।
—ग्ररजण हमीर री बात

२ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिछुडणौ, बिछुडबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'छूटणौ, छूटबौ' (रू. भे.)

बीछोटणहार, हारौ (हारी), बीछोटणियौ—वि० ।

बीछोटिम्रोड़ौ, बीछोटियोड़ौ, बीछोट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछोटीजणौ, बीछोटीजबौ—भाव वा० ।

बीछोटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बहा हुवा, निकला हुवा ।

२ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'छूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछोटियोड़ी)

बीछोव—देखो 'बिछोह' (रू. भे.)

बीछोवणौ, बीछोवबौ—देखो बिछोहणौ, बिछोहबौ' (रू. भे.)

बीछोवणहार, हारौ (हारी), बीछोवणियौ—वि० ।

बीछोविम्रोड़ौ बीछोवियोड़ौ, बीछोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछोवीजणौ, बीछोवीजबौ—भाव वा० ।

बीछोवियोड़ौ—देखो बिछोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछोवियोड़ी)

बीछोवौ, बीछोह—देखो 'बिछोह' (रू. भे.)

बीछोहणौ, बीछोहबौ—देखो 'बिछोहणौ, बिछोहबौ' (रू. भे.)

बीछोहणहार, हारौ (हारी), बीछोहणियौ—वि० ।

बीछोहिम्रोड़ौ, बीछोहियोड़ौ, बीछोह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीछोहीजणौ, बीछोहीजबौ—भाव वा० ।

बीछोहियोड़ौ—देखो बिछोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीछोहियोड़ी)

बीछोहौ—देखो 'बिछोह' (रू. भे.)

उ०—ग्राया मिळ ग्रसवार, सुंदर दीठो साम विण । हय हय गिरजणहार, ढोलं बीछोहौ बिळकुळं
—ढो. मा.

बीज—देखो 'बीज' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रमपति राव चमकि ग्रोदकियौ, लेड़ैचो वाही करि खोज । सुकरि ग्राकास हंत सेलारां, वीजुळ विवण क वुही बीज ।
—केसोदास गाडण

उ०—२ पाल्हउ कवणइ, कउण जम ज तउ वारइ ? कवण वज्र भेलियइ, कउण सिरि बीज सहारइ ।
—ग्र. वचनिका

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ सुर दक्खे जं जं सबद, रस प्रदभुत लख रीज। ईड करै खग सूं 'प्रमा', बजर न चकर न बीज। —रा. रू.

उ०—२ भडज बादळ सबळ बीज साबळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा। बार मुरतांण दळ प्रकळ छूटा बरस, माल' हर सीस सुर-गरंद माळा। —प्रजबो बारहठ

उ०—३ सो रूप री ऐसी, जैसी प्रथी में नहीं—सरग री परी, प्राभै री बीज मांन सरोवर रो हंस, केळ रौ गरभ। सो रूप गुणा-कर निपट प्रबल पण प्राछ्यां संजम मोतियाबध।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ जइ तूं ढोला, नावियउ काजळिया री तीज। चमक मरेसी मारवी, देख लिवतां बीज। —ढो. मा.

उ०—५ हीयां ध्रसक्कइ कायर लोक, संत तणा मन करइं ससोक। जांणे बीज पडि [य] प्रकालि, जांणे मुंद्र ब्युभ्या कलिकालि।
—सालिसूरि

४ देखो 'दूज' (रू. भे.)

बीजइ—१ देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—बीजइ दिनि चचिगदे राइ, बइठउ मन मांहि करइ उपाय। मत प्रावइ रिणधवळांह जांन, करिसी झूंझ पिंगराजांन।
—ढो मा.

२ देखो 'बीजली' (रू भे)
३ देखो 'विजय' (रू भे.)
४ देखो 'बीज' (रू. भे)

बिजइथंभ—सं. पु. [सं. विजय स्तभ] विजयस्तभ, कीर्तिस्तम्भ।

उ०—पाल्हणसी भला-भला लोकां का कह्या करण चार साभळया। प्रासु पूंछि प्रकमाळ लियउ। बीजइथंभ वागड़ी की नाई सकळ ही प्रिथमी प्रतपिज्यउ, यउ गढ लीजउ, हमारउ वइर सूरितांण गोरी राजा सउं कीज्यउ। —प्र. वचनिका

बीजई—१ देखो 'दूजौ' (रू. भे)
२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)
३ देखो 'विजय' (रू. भे.)
४ देखो 'बीज' (रू. भे)

बीजउ—देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—प्रणहिलवाडा पाटण सांमि, बीजउ नफर गयउ तिणि ठांमि। उदयचंदनय कियउजूहार, परंणावउ रिणधवळ कुंमार।
—ढो. मा.

२ देखो 'बीज' (रू. भे.)

बीजक—१ देखो बीजक' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—डोहंत सुंडा डंड ए, स्रीखंड सरपकहिंड ए। गज वाग मत्थै मेगळां, बळकत्त बीजक बद्दळां। —गु. रू. बं.

उ०—२ रत खाळ-रळ तळ पालर, प्रगघळ, होहूं हूंकळ थट्ट हुवै। वळ कत बिजूजळ बीजक बद्दळ, ढोल त्रिमंगळ बोम धुवै।
—गु. रू. बं

उ०—३ चढे चलै चतुरग महादळ, बीजक जांण बळक्के साबळ। वाजी घोड़ां पाइ धरत्ती, छूटा सांहण हाहुल मातो। —गु. रू. बं.

बीजकणौ, बीजकबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)
बीजकणहार, हारौ (हारी), बीजकणियौ—वि०।
बीजकिग्रोड़ो, बीजकियोड़ौ, बीजक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीजकीजणौ, बीजकीजबौ—भा वा०।

बीजकाणौ, बीजकाबौ—देखो 'भिचकाणौ, भिचकाबौ' (रू. भे.)
बीजकाणहार, हारौ (हारी), बीजकाणियौ—वि०।
बीजकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीजकाईजणौ, बीजकाईजबौ—कर्म वा०।

बीजकायोड़ौ—देखो 'भिचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीजकायोड़ी)

बीजकियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीजकियोड़ी)

बीजखणौ, बीजखबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

उ०—भरड़ो बीजखियो, भोळखियो मोनूं भवें। कुण जींदो कहि-यांह, किण कारण मारू कहो। —पा. प्र.

बीजखणहार, हारौ (हारी), बीजखणियौ—वि०।
बीजखिग्रोड़ो, बीजखियोड़ौ, बीजख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीजखीजणौ, बीजखीजबौ—भाव वा०।

बीजखियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीजखियोड़ी)

बीजगणित—देखो 'बीजगणित' (रू. भे.)

बीजड़—देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बीजड़लो—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा, रू. भे.)
२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बीजड़हत, बीजड़हतौ, बीजड़हथ, बीजड़हथौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजड़हतौ, बीजड़हथौ—देखो 'बीजळाहथ (मह., रू. भे.)

बीजड़ाहत, बीजड़ाहतौ, बीजड़ाहथ, बीजड़ाहथौ—देखो 'बीजळाहथ (रू. भे.)

बीजड़ाहतौ, बीजड़ाहथौ—देखो 'बीजळाहथ '(मह., रू. भे)

बीजड़ी–१ देखो 'बीजड़ा' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०–बगमरा ऊपरां तरवारियां रा बाड़ त्रूटि नै रहिया छै। जांणो बादळा माहे बीजड़ियां रा मिला ऊपड़िया पाखरां ऊपरै मारधारां फूलधारां बाजी मु ठणाणणण जांणे परभात री झालर ठणकी, नरबगतर विखस हुआ। —रा. सा. स.

बीजजळ, बोजजुळ, बीजजुळ, बीजझळ, बीजभ्रूळ–देखो 'बीजूझळ'

उ०—संग्रांमां संमावे बीजजुळां कमा म्राय सांमे, रेगा अेक चोड़ा नांमे बात्रे असी रीत। न मावे फिरंगी हिंदूथांन कोधो पाय नांमे, म्राप नांमे नाज व्याधौ बिजाई 'अजीत'। —नवलजी लाळस

बीजड़ – देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

उ०–ऊकडां झडा नोभडा श्रंग,बीजडां गडा बीजळां वंग। जमजडां चडां समवडां जग, त्रिज्जडां झडां तडफडा तंग। —गु. रू. ब.

बीजण—देखो 'बीजणो' (मह., रू. भे.)

उ०—फुला हळवी पाटो कुंवळी, बीजण ढधक लिवाय। 'बील्ह' कहै गुर भाइयो, करणी साच तराय। —बील्हौजी

२ देखो 'बीजन' (रू. भे.)

बीजणो—देखो 'बीजणो' (अल्पा., रू. भे.)

बीजणू, बीजणो—देखो—'बीजणो' (रू. भे.)

उ०—म्राप जुद्ध में काम म्रावो, हूं सत करूं, पछै विमांणा में बैस स्वरग में जावां जठ म्रपछरावां चमर करसी तिण गे वायरो लागसी सो बीजणो हुमो मर्थ बीजणो कगावणनै सो वळे म्रापर बळ माफ है। —वी. स टी.

उ०–२ ···सोमत तणां चउबारां झलहलइ,जलद्रा सरीरि लगाडीइ, गुलाव तणा अभ्यंग कीजइं, बावना स्रीखंड घसीयइ, चउदिसीयइ बीजणां फिरइ, द्राक्षा म्रावलीगांन कीजइं, कलमसालि तणा सीधउरा करंबा कीजइ, अच्छां कापडा पहिरियइं लूं म्राहण्यां पांणी पीजइं। —व. स.

बीजणो, बीजबो—देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू. भे.)

उ०—पान म्रारोगइ तै घणा, बनिता बीजइ वाय। म्रंगि म्रति ऊलट धरी, तिहुयण तेह न माय। —मा. कां प्र.

२ देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू. भे.)

बीजणहार, हारो (हारी), बीजणियो – वि०।

बीजियोड़ो, बीजियोड़ो, बीज्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीजीजणो, बीजीजबो—कर्म वा०।

बीजन–सं. पु. [सं. वीजनः] १ चक्रवाक, चकोर पक्षी।

२ पंखे से हवा डालने की क्रिया।

३ देखो 'बींजणो' (रू. भे.)

रू. भे.—बीजण।

बीजपुरख, बीजपुरस, बीजपुरस, बीजपुरस–सं. पु. [सं. बीजपुरुष] किसी वंश का आदि या मूल पुरुष।

बीजपूर, बीजपूरक—देखो 'बीजपूर' (रू. भे.)

बीजमत्र—देखो 'बीजमंत्र' (रू. भे.)

उ०—रिध सिध दियण कोयला रांणी, वाळा बीजमंत्र ब्रहमांणी। बयण दिये मो अविरळ वांणी, पुणां कीत जिम सारंगपांणी। —ह. र.

बीजमारग—देखो 'बीजमारग' (रू भे.)

बीजमारगी—देखो 'बीजमारगी' (रू. भे.)

बीजळ, बीजल–स. पु.—१ पंखा।

२ देखो बीजळ' (रू. भे)

३ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—१ जुध सीस पडत घडाहं जोळा, बीजळ धक्क चरक्क वहै। गळिबांह लोळावट होय गळोवळ, गुथाबत्थ सुभट्ट ग्रहै। —गु. रू. ब.

उ० २ बिहं बीजाजळ गुहिया गज दळ, दमगळ हूकळ कढियळ ए। बळिवंत अतुळ बळ, जूटा बिहुं बळ (वळ) झळहळ दळ बीजळ ए। —गु. रू. व.

उ०—३ बीजळ मेल गुरज घण बाजै, गाज त्रंबाळ सघण घण गाजै। भरण वमक कोप घड़ उरियां,छकिया घाव कटारां छुरियां। —सू. प्र.

उ०—४ बाप रै तखत बैठो, धारि छत्र जोम धारि। बीजळां दिलेम देस, मारि कोध वाळ वारि। —सू. प्र.

उ०—५ रोठ पड़ै धारूजळां, भर घड़ डळां उधेड़। करै खळां चहुवै वळा, दळ बीजळां निवेड। —रा. रू.

४ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ सोर घोर···सम्मूह, बांण ऊच्छळं वळंता। वहै म्राग वरजाग, वोम किरि बीजळ लंता। —गु. रू. ब.

उ०—२ वादळ दळ मेल खडग सझ बीजळ, कमधां कांठळ फौज कर। घण गाजे गजसींग विरद घण, म्राफळ मरै कंठीर यर।

—देवराज रतनू

उ०—३ पसवाडै बीजळ लिवै, हो जी, वै रौ पेट पींपळ केरी पांन। है गवरल, हड़ो है नजारो तीखो है नैणां रो। —लो. गी.

उ०—४ साकळा कळा चक्र साह, तुं म्राद बीसहत नीमो ताह। साकबरी तुं हीज तुं कळा सोम, बीमळा अवर बीजळ गोम।

—रांमदांन लाळस

बीजळड़ी, बीजलड़ी—१ देखो 'बीजळ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळा' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ बीजलड़ी, घरा, वरजी ना जाय, थारी घरा वारो भो हुजा, सावरा-भादवो मैं चमकै बीजळी, जी राज। —लो. गी.

उ०—२ था री तो सतायी, गोरी का सायबा, ग्राभा री बीजळड़ी होय जास्यां, म्हारा राज। थें घरा, होस्यो ग्राभा केरी बीजळी, मारू थारो इदरियो घररासी, म्हारा राज। —लो. गी.

बीजळसार—देखो 'बिजळसार' (रू. भे.)

उ०—चरखो तो लेल्यूं, भंवरजी, रांगलो जी, हांजी ढोला पीढो लाल गुलाल। तकवो तो लेल्यूं, भंवरजी, बीजळसार को जी म्रो जी म्हा री जोड़ी रा भरतार, पूरणी मगा ल्यूं जी क बीकानेर री जी। —लो. गी.

बीजळहत, बीजळहती, बीजळहत्थ, बीजळहत्थो, बीजळहथ, बीजळहथो—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजळहथो, बीजलहथो—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे.)

बीजळा, बीजला—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—राठौड रचेवा रगताळ, वांमंग डहै बीजला भाळ। बांधे कदील संधे बिबांग, कोसीस भुजे दीना कबांण। —गु. रू. ब.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (नां. मा)

उ०—१ कमरसं कटळा, भ्रांकुसां बीजळा। चमक्कै चप्पळा, बैरकां, बंबळा। —गु. रू. ब

उ०—२ खळहळां चलं रळतळां खाळ, बीजळां भळां बीमळां व्राळ। गूंछळां गळा गूंथळां गट्ट, मिघळां कळां साकळां मट्ट। —गु. रू. बं.

बीजळाहत, बीजळाहती, बीजळाहत्थ, बीजळाहत्थो, बीजळाहथ, बीजळाहथो—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजळाहथो, बीजलाहथो—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे.)

बीजळि, बीजलि, बीजळी, बीजली-सं. स्त्री.—१ वह भैंस जिसके स्तनों में एक ही सफेद रेखा या धारी हो। (अशुभ)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे)

उ०—पछट्टत बीजळि 'केहर' पारिग, सिलह बंध हेक करै घमसारिग। जुड़े चहुंवे दळ रोद व्रजागि, खिवं घरा 'केहर' ऊपर खगि। —सू. प्र.

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ ग्यारह पासइ घरा घणउ, बीजळि खिवइ ग्रगास। हरियाली रुति तउ भली, घर संपति, पिउ पास। —ढो. मा.

उ०—२ नख ग्रहिरण धज नळी, नळी बाजू पींडा चक। बजै नास बांसली, ताव बीजळी छळी तक। —सू. प्र.

उ०—३ ढोलउ जांण्यउ बीजळी, मारू जांण्यउ मेह। च्यारि ग्रांख एकठि हुई, सयगां वध्यो सनेह। —ढो. मा.

उ०—४ मारुइ पीलवांगा-ऐ, गजिद-वाग पांगाए। घटा फबज्ज धूंधळी, चमक्कि कूंत बीजळी। —गु. रू. बं.

उ०—५ कुरजां रो टोळो, सहेल्यां रो हबोळो साथ लीनां मैं लागरां लोयरां देखि रिझवार अडवडे छै। वादळा मैं बीजळी को भळको, ज्यूं गुंगटा मै टीकी को पळको पडै छै। हसतां तो फूल झडै छै। इरा भांति चालतां रिमझोळां री घमक पडै छै।

—पनां

बीजाजळ, बीजाजुळ—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

उ०—विढै बीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूंकळ कळियळ ए। बळिवंत अतुळ बळ, जूटा चिहुं बळ, (बळ) झळहळ बळ बीजळ ए। —गु. रू. बं.

बीजाझळ, बीजाझल—१ देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

२ देखो 'विंध्याचल' (रू. भे.)

उ०—नग सीसा गळ नीम, गरक ग्रसमां चूनागळ। बीझाझळ सिर वरां. विसम भुरजां बीजाझळ। —सू. प्र.

बीजाविक-सं. पु. [सं.] ऊट।

बीजियोड़ो—१ देखो 'बींजियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीजियोड़ी)

बीजु—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

बीजुळ, बीजुल—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—ग्रसपति राव चमकि ग्रोदकियो, खेड़ेचे वाही करि खीज। सुकरि ग्राकास हूंत गेलारा, बीजुल विढरा क बुही बीज। —केसोदास गाडरा

बीजुळी, बीजुली—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—काळी कठळि बीजुळी, नीची खिवइ निहल्ल। हर भेदंती सज्जणां, ऊचेड़ती सल्ल। —ढो. मा.

बीजूजळ, बीजूजल, बीजूझळ, बीजूझल—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

उ०—१ 'ग्रजबो' 'पतो' लिया परा उज्जळ, वैरााबत ग्रहियां बीजूजळ सकतावत छळि धरणी सिघाळा, ग्राया चांरा वंस उजाळा। —रा. रू.

उ०—२ बाहि बुहाय घणी बीजूजळ, तंडळ खगां करै ह्वां तडळ।

इस प्रथमी सिर कीत उबारां, परणे मपछर सुरगि पधारां ।

—सू. प्र

उ०—३ बळके बीजूजळ कुटके कम्मळ, मुं सर मावळ झळहळ ए । धडके कांठूसळ कुटके कम्मळ, सोणी रळवळ वळहळ ए ।

—गु. रू. बं

उ०—४ कळकळा दळां बहुवळा फाबै करण, घरे वार हेकल पाटक्रधोर । तूटतो जाय बीजूवळां तणो ताव, जळां बाधां ज्युं हो खळां वो जोर । — महाराजा मानसिंहजी रो गीत

उ०—५ अबनांण दळै बीजूझळं, वेळ मलै फुळ देस रो । 'इद्रमांण' लगै वद ऊजळं, मिळै जोत 'मुकनेस' रो । —रा. रू.

बीजोग—१ देखो 'विजोग' (रू. भे)

२ देखो 'विजोग' (रू. भे.)

३ देखो 'वियोग' (रू. भे.)

उ०—राज कुंवर तव वरणव्या, सयल सभा साभळी हो सजोग । गया फळ 'नरपति' कहइ. पुत्र कळत्र नवि हुवई बीजोग ।—बी. दे.

बीजोरउ—देखो 'बीजोरो' (रू. भे.)

बीजोरडी, बीजोरजी—देखो 'बीजोरी' (मल्पा., रू. भे.)

उ०—कणवीर पकरणो केतको, बीजोरडी नारेळ । कंबोई कुंदाळी पाईसरस, सईंवळ वरण तबोळ । —रुकमणी मगळ

बीजोरी—देखो 'बीजोरो' (रू. भे.)

बीजोरो—देखो 'बीजोरो' (रू. भे.)

बीजो—देखो 'दूजो' (रू. भे.)

उ०—१ जब जागूं तद एकलो, जब सोऊं तब बेल । सोहणा, थै मनै छेतरो, बीजी त्रीजी हेल । —ढो मा.

उ०—२ उवं घोडी मांणो तो थें वडा धाडवी । बीजो तो धाडा घणा ही करो छो छोटा मोटा । इतरो कहतां वेड जणां उठि नै चळू करे नै बोलीमा । चळू भरि पांणि नै कहियो । जं उवं घोड्या घोणा तो एथ माइ नै जोमा नहीं तो ए कलंक माथै उदक भावण ।

—चोबोली

उ०—३ वधाईवार नु रावजी कड़ा वगसिया । झालीजी मोती दीया कुंवर रा मोहली सिरपाव दीया । बीजो पण कांमदारां साहुकारां राज रै रांहणे अमरावां ठाकुरा सारां वधाई दीवी ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री. बीजी)

बीझण, बीझणउ, बीझणो—देखो 'बीजणो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ छांटी पांणी कुमकुमइं, बीझण वीम्या वाइ । हुई सचेती माळवी, प्री मागलि विललाइ । —ढो. मा.

उ०—२ तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति जण वागाइत मांहे ग्रीखम रित रा विलाइती वाले रा खस खांनां, ऊची ठोड़ रा बंगला, रावटी बालाबंध रा ठांसा रा गूंथिया भांति भांति खसखांनां बणाया छै । घणं सीतळ पांणी सूं सीचिया थका बीझणां वाइ झांपां सूं हीफा खाइ रहिया छै । —रा. सा. सं.

उ०—३ वावळ मागै बीझणो, की पावै सनमांन । तूझ रीझ मागै तिसो, 'देवा' ! जग चो दांन । —बां. दा.

उ०—४ बाफतां रा सेलांरा रूमाल केसरिया छै सू माथां ऊपर राखजे छै । बीझणां सू वायेरा लीजे छै । किण भांत रा छै ? लाहोर रा कियाड़ा छै । रूपे री डाडो जरी सूं मढी, टुकड़ी री झालरी । —रा. सा. सं.

बीझणो, बीझबो—देखो 'बींजणो, बींजबो' (रू. भे.)

उ०—छांटी पांणी कुमकुमइ, बीझण बीझ्या वाइ । हुई सचेती माळवी, प्री मागलि विललाइ । —ढो. मा.

बीझणहार, हारो (हारी), बीझणियो—वि० ।

बीझियोड़ो, बीझियोड़ो बीझ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बीझीजणो, बीझीजबो—कर्म वा० ।

बीझवण, बीझवन—देखो 'बींझवन' (रू. भे.)

उ०—माडा डूंगर बीझवण, बीच माछळा गयंद । सीत कहूरै ववरा, किण्य विध्य लोपियो समंद । —मेहोजी गोदारो थापन

बीझाणमाता—स. स्त्री.—एक देवी का नाम ।

बीझाजळ, बीझाजल, बीझाझळ, बीझाझल—१ देखो 'बीजूझळ' (रू. भे)

२ देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—नग सोसा गल नीम, गरक असमां चूनागळ । बीझाझळ सिर वणे, विखम बुरजो बीजाझळ । —सू. प्र.

बीझावण, बीझावन—देखो 'बींझवन' (रू. भे.)

उ०—मादूळा केसरीसिंह ज्वालानळ अगनी सूं बळतां थकां बीझावन हाथियां री पेटरी छाया सूता विसरांम करै छै । भुयंग सरप नीसरिमा छै । सो लू नैं तावड़ै री अगनि सूं बळता थकां दोड़ि दोड़ि नै हाथियां रै सोतळ सूंडाहळा मांहै पैसि पैसि रहिया छै ।

—रा. सा. सं.

बीझासणि, बीझासणी—१ देखो 'मावलियां' ।

उ०—भोपो कहै भूत छै लोभ बीझासणि लीधी । जंत्र मंत्र रा जांण, कहै कोइ कांमण कीधी । —ध. व. ग्रं.

२ देखो 'मावड़' ।

बीझोड़णो, बीझोड़बो—क्रि. स.—काटना ।

उ०—लाजरू आए हाजर हुआ छै, रावताला नूं कहियो छै। ठाकरै लाजरूआं नै ठरका करो। तिकै रावताला घणी केसर नैं घणौ कसनागर अंतर सांघै मांहे गरकाब हुआ थका। उवां सीरोहीआं लाजरू बीभोड़ीजै छै। —रा. सा. स.

बीभोड़णहार, हारौ (हारी), बीभोड़णियौ—वि०।

बीभोड़ियोड़ौ, बीभाड़ियोड़ौ, बीभोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीभोड़ीजणौ, बीभोड़ीजबौ—कर्म वा०।

बीभोडणौ, बीभोड़बौ—रू० भे०।

बीभोड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—काटा हुआ।

(स्त्री. बीभोड़ियोड़ी)

बीटक—सं पु. [सं.] पान का बीड़ा।

बीटणौ, बीटबौ—देखो 'बींटणौ, बींटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गाज नगारा चहू गमां, घर माग रुकांणी, चड़िया धूंस बहादरां, बंधं किरवांणी। देस महेवा बीटिया, त्रिविध तुरकाणी। रावळ 'माल' महाबळी, आगळ हिंदवांणी। —बी. मा.

उ०—२ कंकर पथर बीटिया कुंनण, जिण तिण पूछै तोछ जळ। 'सुरावत' तुं है कण साचो, आभुखण नव कोट इळ। —सिवनाथसिंघ री गीत

उ०—३ हिरणां नह मावै हियै, सड़बो दीठां स्वास। वाघ घणा मिळ बीटियां, तौ पिण तिल नह त्रास। —बां. दा.

उ०—४ 'चदण' चंदण बीटियो, अन भीखण उरगांह। इण कारण आया नहीं, चारण पखो तांह। —बां. दा.

उ०—५ खाग घुबंती मारवै, बीट लियो जोधांण। सज्झै कोट मळे'छ दळ, वज्जै बांण कबाण। —रा. रू.

उ०—६ विधि विधि त्रिलतां वचन कहइ, वेलिइ बीटियां वक्ष। अ्रेह पनुतां अवनि तटि, यम चुहुटाडइ चक्ष। —मा. कां. प्र.

उ०—७ गहवो घातकीखड ए, परिदखिणा परकार। अठ लख जोयण बीटीयो, समुद्र कालोदधि सार। —ध व. ग्र.

उ०—८ सुंदर स्यांम सरीर, बाघो कट रांम पीत पीतंबर। काळै बादळ मूं कै, बीटांणो बीज बरसाळै। —र. ज प्र.

बीटणहार, हारौ (हारी), बीटणियौ—वि०।

बीटियोड़ौ, बीटियोड़ौ, बीट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीटीजणौ, बीटीजबौ—कर्म वा०।

बीटलौ, बीटलौ—१ देखो 'बींटळौ' (रू. भे.)

उ०—१ उठां सुं पाछा मुरडिया, सो अजमेर आया। बीटलौ सझी तिण ऊपरै भंडारी विजैराजजी नै राव अमरसंघजी कुसलसंघोत ऊदावत वगैरै हरभांण भगवांनदासोत राठौड़ जगतसंघ तेजसघोत वगैरै आसांमी जद थी। —रा. वं. वि.

उ०—२ पण उणरी चौड़ै लड़णै री प्रासंग हुई नहीं। तद बरसघ नूं लालच देय अजमेर बुलायो, अरु खातरी करनै बीटलौ चाढियो। पीछै वदोबस्त कियो। —द. दा.

उ०—३ इण भांत मारा नूं सीख सलाह दे बहिर हुवो सो पहलां तौ अजमेर गयो सो पहलां तो खाजेजी री जारत कीवी, देग कबूल कीवी। फेर बीटली चढ मीरांजी री जारत कीवी। —सूरै खींवै कांधळोत री बात

२ देखो 'बींटली' (रू. भे.)

३ देखो 'बीटणौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बींटी' (रू. भे.)

बीटवौ—वि.— घुमावदार, लपेटेदार।

उ०—सात हमायचा भांग, सात सुराई सराब की, सात सीकां जमनाजळ री, हलवांन पींडा सात, बीटवा सूळा सराब बस्त खाब माहै घात उभो छै। —तिमरलिंग पातसाह री वात

रू. भे.—बीटीवौ।

बीटिका—सं. स्त्री [सं. वीटि] १ पान की बेल।

२ पान का बीड़ा तैयार करने की क्रिया।

३ चोली की गांठ।

४ छोटा पान का बीड़ा।

रू. भे.—बीटी।

बीटियोड़ौ—देखो 'बींटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीटियोड़ी)

बीटी—१ देखो 'बींटी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सोवन बीटी रयणे जडी, मुझ नाचंतां देउलि पडी। प्रीतिवचन प्रांमी मन माहि, महूतउ पाछउ वलिउ उछाहि। —हीराणंद सूरि

२ देखो 'बीटिका' (रू. भे.)

बीटीजणौ, बीटीजबौ—क्रि. अ.—१ मादा टिड्डी का ऋतुमती होकर गर्भ धारण करना।

बीटीजियोड़ौ—भू का. कृ. (स्त्री.) १ ऋतुमती होकर गर्भ धारण की हुई (मादा टिड्डी)

बीटीवार—सं. पु.—विशेष खुदाई वाला, अर्द्ध मंडलाकार पत्थर।

बीटीवौ—देखो 'बीटवौ' (रू. भे.)

उ०—सू नमचा किण भांतरा छै? बीटीवा, बोगांनिया, घणै बनातरा लपेटिया, सालूरा लपेटिया, बोयदार रा मढिया, चंतरा, कलाबूत रै कांम रा, सोनै रूपै रै बळां रा, रूपै रा कुलाबा लागा

थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलम, चिलमपोस छै।

—रा. सा. सं.

बीटुळी, बीटुली—१ देखो 'बीटळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बींटणी' (रू. भे.)

३ देखो 'बींटी' (रू. भे.)

४ देखो 'बींटली' (रू. भे.)

उ०—सकती बांधै बीटुळी, ढोली मेल्है लज्ज। सरढी पेट न लेटि-यव, मूंघ न मेळवं भज्ज। —डो. मा.

बीठोरो—देखो 'भीटोरो' (रू. भे.)

बीटो—सं. पु. [सं. बीटा] १ लकड़ी के डंडे से खेला जाने वाला खेल। (प्राचीन)

२ देखो 'बींटो' (रू. भे.)

३ देखो 'बींटी' (रू. भे.)

उ०—तेज मैं नाहरखां नाहर सै हाथूं और 'अमरेस' गहै आसमांन बाथूं। 'आग' कै जै न्याती रोकै नाग की सी नांई, खेल साहटवाळै'त बीटा वेत बाई। —रा. रू.

बीटुळ, बीटुल—देखो 'बिटुळ' (रू. भे.)

बीटुळनाथ—देखो 'बिटुळनाथ' (रू. भे.)

बीठ - देखो 'बिस्ठो' (रू. भे.) (उ. र)

बीठनि—क्रि. वि.—अन्दर, में।

उ०—नर नार उच्छव सेव निरखै, देव दूंदंभि वज्जए। बाटत नव गुळ सहर बीठनि, राज अविचळ रज्जए। —रा. रू.

बीठळ, बीठल—देखो 'बिटुळ' (रू भे.) (नां. मा., ह. ना. मा)

उ०—१ लिखमी नां हर कुण लियै, कुण जीपै करनार। कटक मारण कारणै, बीठळ कीयो विचार। —पी प्र.

उ०—२ आदि विस्नु नहं आदि माया, हुआ संचळ गठि। मधु पुरख हथलेवड़ो, वरमाळ बीठळ कंठि। —रुकमणि मंगळ

उ०—३ आभ गाभ तो नांखियो, धरा लीयो सिर झल। हरीया हर सिर धूणियो, कर गहियो बीठल। —अनुभववांणी

उ०—४ तह ब्रह्मा भल भोलव्यु, संभु कीउ तप भंग। ब्रह्मचारि बीठल करिउ, सोल महसह संगि। —मा. कां. प्र.

उ०—५ दीनां लका जै हाथां न कजै, दीधा जग सारो जांणै। वेदां भेदां घाता बीठळ, बारबार रटै वाखांणै। —र ज. प्र.

बीठळनाथ, बीठलनाथ—देखो 'बिटुळनाथ' (रू. भे.)

उ०—कै जम नांम तणो तन सज कर, मैं जम हूं डर डर मत भाजै। किया सुनाथ हाथ ग्रह केता, बीठळनाथ अनाथा वाजै। —र ज. प्र.

बीठलो—१ देखो 'बींटणो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीटो' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बीटली' (रू. भे.)

४ देखो 'बींटली' (रू. भे.)

उ०—संवत१७७७ जेठ माहै अजमेर दाखल हुवा। बीठली लीनी, पातसाही थाणो सो उतार दीनो। तिण ऊपरै पातसा महमदसाह बाइसी मेली निवाब मुदफरखां। —रा. वं वि.

बीठळो, बीठलो—देखो 'बिटुळ' (रू. भे.)

उ०—१ मोकूं लीन्है जात है, ग्राह नीर कै मांय। बाहर करवा बीठळा, अजू न आवो कांय। —गजउद्धार

उ०—२ मन बुद्धि चित्त अहंकार मति, समरति तनां त्रेवड सकति। रहमांण तुहारो अटल राज, बीठला हिमै सिणगार वाज। —पी. ग्रं.

उ०—३ भाग तणां मांमणा ल्यां भूधर दुध भंजण, बिहूलां ना बीठला मुगिति साख्प समपण। सावां नां साजोति रांक सालोक लियै रस, सांमी मुगिति समीपि मुझ समपो जोडां जस। —पी. ग्रं.

उ०—४ वंस अजुआळ प्रतिपाळ यै बीठला, रांमचद राजि मुर मुरण राईआ। पुरांणा डोकरा अरज साभळि परी, भांजिहो भांजि भेचक भाईया। —पी. ग्रं.

बीठुळ, बीठुल—देखो 'बिटुळ' (रू. भे)

उ० १ रिखब नाभ सुत निमो अलख अणजीत अणंकळ, ब्रह्मा सेस महेस दत जोगी धारा थळ। इसो आप अविधूत जिको अन सोईया जायो, बीठुल सां वादतै, गरब गोरखि गमायो। —पी. प्र.

उ०—२ भरथ पिता दुख भाळि, हुओ बीठुळ वनवासी। सरगि गिओ दसरथ, अनत कीधो अविणासी। —पी. प्र.

उ०—३ बीठुळ बिसवनाथ घन जदपत केसव स्रीवरं, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहरं। अविगत आदि जुगाद उपावण अकळ अपपर, समरि समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसरं। —पि. प्र.

उ०—४ मछ कछ वराह माहव, नारसिंघ अनिदयं। वेसवांण दुझक बीठुल, रांमचद निरंदय, कान्ह बुद्ध कलकि केसव, भोम टाळण भारय। —पि. प्र.

बीठुळनाथ, बीठुलनाथ—देखो 'बिटुळनाथ' (रू. भे.)

बीठुळु, बीठुलु – देखो 'बिटुळ' (रू. भे.)

बीठुळुनाथ, बीठुलुनाथ – देखो 'बिटुळनाथ' (रू. भे.)

बीठो—वि.—वेष्टित, घिरा हुआ।

उ०—विराजै नगां ओप सूं रूप बीठो, दळो नाथ स्रीनाथ रो रूप

दीठो । वर्णं सांभळी गात भीणं वसन्नं, तिसो भूखणं जोत मोती रतन्नं । —रा. रू.

२ लराव ।

बीडंगांण—देखो 'विडंग' (रू. भे.)

बीडरणौ, बीडरबौ-क्रि. स.—क्रोध करना, गुस्सा करना, क्रोध में विकराल रूप धारण करना ।

बीडरणहार, हारौ (हारी), बीडरणियौ—वि० ।

बीडरिग्रोड़ो, बीडरियोड़ो, बीडरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बीडरीजणौ बीडरीजबौ—कर्म वा० ।

बीडरियोड़ो-भू. का. कृ —क्रोध किया हुआ, गुस्सा किया हुआ, क्रोध में विकराल रूप धारण किया हुआ ।

(स्त्री. बीडरियोड़ी)

बीडल-सं. पु.—रस्सी के छोर पर लगाया जाने वाला काठ का छोटा टुकड़ा ।

बीडवसदेस-सं. पु.—एक प्रदेश विशेष । (प्राचीन)

उ०···बीडवसदेस ग्रांम सहस्र ७०, गूजरात ग्रांम सहस्र ७०, पारीयतदेस ग्रांम सहस्र ७०, मालवा ग्राम लख १८ सहस्र ६२, गंगा पारदेस ग्राम सहस्र २४, जेजाहुति सहस्र २४, कूंकण सहस्य ६, मलयदेस ग्राम लख १, ४ । —व. स.

बीडांणी- देखो 'विडांणी' (रू भे.)

बीढ—१ देखो 'भीड़' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे)

उ०—१ अगनि में दांग छूटा अमम्म, बळी बीढ चिहुंवै वळां । पछिवांण हूवौ पूठी रुखो, 'गजण' ताम दिल्ली दळा ।

—गु. रू. बं.

उ०—२ पानां मुख वाजित्र हिलै वांना वैरक्कां, मेघ रंग मातंग बीढ ऊढग कटक्कां । पली जेभ सादळां हिली फौजां घमसांणां, ब्योम रजी वित्थरी घमस वज्जो केकांणां । —रा रू

बीढण—देखो 'विढण' (रू. भे.)

बीढणौ, बीढबौ-क्रि. स.—१ लपेटना, लिपटाना ।

उ०—दही री रजबी दीजै छै । तरगसां मांहां सीकां काढजै छै । वेवड़ां ठीहां चाढजै छै बीच खोसरी भरती दीजै छै । सूतसु बीढ सीकां ऊपर चाढजै छै । आडै हाथ डोरा दीजै छै इण भांत सूळां बणै छै । वडो देवगिरी याळी में उतारजै छै । —रा सा. स.

२ देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे)

उ०—बीढण सगराम री हाम बाकारता, माहा दोय जांम होय गढ मौने । जोधपुर जहर रा बीज वाया जिकै, तिकै फळ चखाउं आव तौने । —सेरसिंग कोळसिंघ री गीत

३ देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बीड़णौ; बीड़बौ (रू. भे.)

बीढणहार, हारौ (हारी), बीढणियौ—वि० ।

बीढिग्रोड़ो, बीढियोड़ो, बीढयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बीढीजणौ, बीढीजबौ—कर्म वा० ।

बीढियोड़ो—१ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ ।

२ देखो 'विढियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'वेढियोड़ो' (रू. भे.)

४ देखो 'बीड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बीढियोड़ी)

बीण-सं. स्त्री [सं. वीणा] १ सपेरों के बजाने का एक फूंक वाद्य विशेष, महुवरि ।

उ०—तद काया हुय जोगी हुवा । मुद्रा घाती । गुजरात गया । ग्रे प्रोहित दीदारु, सखरा पण । अर बीण आछी बजावै । तद सहर मांहे बखाण हुवौ,-जु जोगी पण भला, बीण आछी बजावै ।

—नैणसी

२ बांसुरी, मुरली ।

३ भंवरों के भौंपों के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष ।

४ मसक से मिलता जुलता एक फूंक वाद्य विशेष ।

५ देखो वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ हंस गवण कदळी सुजंघ, कटि केहर जिम खीण । मुख ससहर खजन नयण, कुच श्रीफळ कंठ बीण । —अग्यात

उ०—२ सहज मदळ जित धमकही, वाजै अनहद बीण । नौरंगी बांणी तन रतन, साध भगत लौलीण । —आलमजी

उ० ३ चंपा वरनी, नाक सळ, उर सुचंग, विधि हीण । मंदिर बोली मारवी, जांणि भणक्की बीण । —ढो. मा.

रू. भे.—बीण, बीन, वेण, वेणा, वेणु, बेणू, बेण ।

अल्पा; – वेणका

बीणउसिउ, बीणउसीउ-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०·········बीणउसीउ चीणउमीउं मलउसीउं आउचीयउं मूगनउ मयउ मंगलिकं मेदियउ सीलउर सिहलउरउं वद्दरागउं हीरागरउं फुल्लयागरउं पूतलीउं बहूमूल घूणोलियं मीणीयं काल फूटडउं रातउ फूटडउ सूपउती मेघावलि मेघडंबर पद्मावलि-पदमोत्तर इत्यादि वस्त्रांणि । —व. स.

बीणकार-स. पु —गवैयों के अन्तर्गत एक भेद जो बीन बजाने का पेशा करते हैं । (मा. मा.)

रू. भे.—बीणाकार, बीणिकार ।

बीणणौ, बीणबौ-क्रि. स —१ देखो 'बिणणौ, बिणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सु पाछिली पहर छै। मा भूलि सांपडि नेंबाजोट ऊपरि बैठी छै। छूटा केस छै। उवांहरणो लाल घाघरो छै। ढीलै कसणै कांचवो छै। बैठी थाळी में चावळ बीणं छै।

—कांवळं जोईये नं तीडो खरळ री वात

उ०—२ तठा उपरायंत हलूरा री कूंडी तेजवळ री घोटो घोय तयार कीजै छै। मांगण बीण मोकळा पाणी सूं धोयजै छै। फेर कोरी हांडी में रांधजै छै। तठा पछै घोटजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ वसंत पंचमी पछै, नोकळै कांची केळां। कूंपळ वांतण तणी, रंगीली रुत री वेळां। फागण उतरं धीव, गवरज्या पूजण चावै। बीण लासवा फूल, चढा चंद्रायण गावै। —दसदेव

उ०—४ तसु रंग वास तसुवास रंग तण, कर पल्लव कोमळ कुमुम। बणि बणि माळिणी केसरि बीणति, भूलो नख प्रतिबिंब भ्रम।

—वेलि

३ देखो 'बणणी, बणबी' (रू. भे.)

४ देखो 'बुणणी, बुणबी' (रू. भे.)

बीणणहार, हारो (हारी), बीणणियो—वि०।

बीणिओड़ो, बीणियोड़ो, बीण्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीणीजणो, बीणीजबो—कर्म वा०।

बीणत, बीणती—सं. स्त्री. [सं. विनतिः] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

उ०—१ तूं थो नोज मरं ए म्हारी धीवड़ी, सूरज तो सुणैला थारी बीणती, मा तो बेमाता सुणैला पुकार, लाय दोनी भंवर बीणोटियो। —लो. गी.

उ०—२ मी तो म्हे ऊंदरा नं वरं निवतनं लायो घर नीं म्हे मिन्नी नैं ऊंदरा मारणा सिखाया। थांरा भगवान आगै जाय बीणती करो जको जिनावरां नं जीव मारणा सिखावै। थांरै पाल्यां जै मिन्नो मांनतो म्हे तो उणनं मनावो। —फुलवाड़ी

उ०—३ तरै जैतेजी नुं बीरमदे कहाड़ियो—राव सुं बीणती करो नै म्हां कन्हा राव रा होड़ा करावो। ज्यूं थे चाकरी करो छो त्यूं म्हे ही राव री चाकरी करां। —राव मालदे री वात

२ नम्रता, विनम्रता।

रू. भे.—विणति, विणती, बीनती।

अल्पा.,—बीनतड़ी

बीणधर—देखो 'बीणाधारी' (रू. भे.)

बीणवणो, बीणवबो—१ देखो 'विनवणो, विनवबो' (रू. भे.)

२ देखो 'विणणो, विणबो' (रू. भे.)

बीणवणहार, हारो (हारी), बीणवणियो—वि०।

बीणविओड़ो, बीणवियोड़ो, बीणव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीणवीजणो, बीणवीजबो—कर्म वा०।

बीणवियोड़ो—१ देखो 'विनवियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीणवियोड़ी)

बीणी—स. पु.—१ कपास का पौधा व कपास का डोडा।

उ०—ऊपर छोंतरा, गोंहू, तरकारी हुवै। पांणी मीठो। बीणी फागुणियां-मूंग, जवार, सेलड़ी सो हुवै छै। —नैणसी

२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

बीणा—सं. स्त्री. [सं] १ प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध तारवाद्य।

(प्र. मा.)

उ०—१ बीणाधर रहजांई गावै किण भांत, तराज पर नह आवै नारद बीणा री तांत। जिणनैं सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरंग भी भमंग वन पाताल सूं आवै। —रा. सा. स.

उ०—२ तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति अनेक राग रंग बधाई वांटीजै छै। राय आंगण घोलहरे गेहरणो बणां मंगळाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै। छत्रीस वाजां पंच-सबदा वाजै छै। ताहरा नांम ततो, बीणा, किनरी, तबूरो, नोसांण एतो पांच सबदा आगै छत्रीस वाजां रा नांम कहै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ ताल म्रदंग तंबूरे, सुर बीणा बीणाधरि सुंदरि। हरखत नृपत हजूर, सर्भ सलांम अलाप कीध सुर। —सू. प्र.

२ बीन।

३ निसांणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ७ गुरु और १ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—कीला, लीला, थिरा कुंवारि, बीणा, रंगी, चगी, वारि। बिद्या, माळा, बाळा, वाम नीसांणी रा बारा नांम। —पि. प्र.

४ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम। (SIS)

५ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। (व. स.)

६ विद्युत, बिजली।

रू. भे.—बींण, बींन, तीणा, बीन, बीणां, बीणा, बेण, बेन, बैंण, बैंन, वैण, वैन, वींण, वींन, वीणा, वींणां, वेण, वेणा, वेणु, वेणू, वैंणा, वैन, वैण, वैणा।

अल्पा.,—वेणका, वेणका।

बीणाकार—देखो 'वीणाकार' (रू. भे.)

उ०—दक्षिण दिसि तूरी रहिउ, होण अंगूठउ हथि। बीणाकार वाइ सुभर, तास दंत दोई नथि। —मा. कां. प्र.

बीणादंड—स. पु. [स.] बीणा नामक तारवाद्य के मध्य भाग का लंबा दंड, प्रवाल।

बीणाधर, बीणाधरि, बीणाधार, बीणाधारी—वि. [सं. बीणाधारिन्] (स्त्री. बीण धारिणी)

१ वह जो बीणा रखता और बजाता हो।

उ०—ताल म्रदंग तंबूरं, सुरबीणा बीणाधरि सुंदरि। हरखत न्रपत हजूरं, सर्भ सलांम अलाप कीध सुर। —सू. प्र.

उ०—२ बीणाधर सहजांई गावै किण भांत, तराज पर नहं ग्रावै नारद बीणा री तांत। जिणनै सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरंग ग्रो भमंग, वन पाताळ सूं ग्रावै। —रा. सा. सं.

सं. पु.—१ नारद।

२ भैरूजी के पुजारी, 'भोपे'।

सं. स्त्री.—३ सरस्वती।

रू. भे.—बीणधर।

बीणानिनाद—सं. स्त्री. [स.] स्त्रियों की चौसठ कलाग्रों में से एक।

उ०—ग्रहोपचार, व्याकरण, परिनिराकरण, रघन, केसबंधन बीणानिनाद, वितंडावाद, ग्रंकविचार, लोकव्यवहार, प्रहेलिका, स्त्री चतुरसांस्टकला। —व. स.

बीणापांणि, बीणापांणी—सं. पु. [सं. बीणापाणि] १ नारद।

२ भोपा।

स स्त्री.—३ सरस्वती।

रू. भे.—वेणापांणि, वेणापांणी।

बीणाप्रसेव—सं. पु. [स. बीणा+प्रसेव]बीणा में लगी वह गट्टी जिसे ग्रागे पीछे करके तार से निकलने वाले स्वर को तीव्र या मंद किया जाता है।

बीणार—सं. पु.—१ प्रत्येक चरण में प्रथम एक नगण ग्रौर बाद में सात भगण ग्रंत में एक लघु ग्रौर एक गुरु सहित २६ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

उ०—प्रथम नगण जगण संपत, लघु गुर मारां लारि। ग्राखर बीस छ ग्रै वहा, वदां छंद बीणार। —पि प्र.

२ घुड़सवार ?

उ०—१ भड तुरंग बीणार, चडे माझी गज केमर। फौज लगे फूलियं, दीध परराठां पस्सर। —गु. रू. बं.

उ०—२ ग्रीस हजार तुरंग नर, मारू धर बीणार। धड़हड़ियो मडळ धरणि, चडियो राजकुंवार। —रा. रू.

बीणावंस—सं. पु [स. बीणावंश] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—······देहरि दंडकलस ग्रांमलसारा सोना तणा जलकइ, जलदिरिणि कुलवधू तणे पागि नूपर खलकइ तडिद् कीरत्तिस्तंभ दीसइ, लोकहियां विहसइ, मेघ मल्हार राग गाइय, बीणावंस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ। —व. स.

बीणावती—स. स्त्री. [सं.] बीणावादिनी सरस्वती।

बीणावाद, बीणावदक—वि. [सं. बीणा+वादः व वादकः] बीणा बजाने वाला।

बीणावादनी, बीणावादिनी—सं. स्त्री [सं. बीणावादिनी] बीणावती सरस्वती।

बीणासर, बीणासुर—सं. पु. [सं. बीणा+स्वर] बीणा को बजाने से उत्पन्न ध्वनि, बीणा की झंकार।

उ०—बीणासुर सहुए करघो, तत उतारघा राग। पिण किणही ना नाद सुं, कुमरी चित्त न लाग। —श्रीपालरास

बीणास्य—सं. पु. [सं. बीणा+ग्रास्य] बीणा रखने वाला, नारद-मुनि।

बीणाहस्त—सं. पु. [स बीणा+हस्त] शिव, महादेव।

बीणि—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ थळ माथै निवाण करि, नर कांय लीडे नीर। नाळे खोळे न मिळे, रीणायर बीणि हीर। —बील्होजी

उ०—२ भोजन दांन सुभाव विणि, दिल कपटी ग्रंतरि दिवै। जप बीणि जमवारो इकरथ, सुरिजन कवि साचो कवै।

—सुरजनदास पूनियो

२ देखो 'बीणी' (रू. भे.) (उ. र.)

३. देखो 'वेणी' (रू. भे.)

उ०—एक नांखई एकावली हार, एक ऊतारइ सवि सिणगार। तांणइ बीणि विछोडइ दोर, एक लूस्या दिसइ बंदोर।

—का. दे. प्र.

बीणिकार—देखो 'बीणकार' (रू. भे)

उ०······चांमरधारिणी वारविलासिनी महल्लकल्लिका उपाध्याय गायन बड़कार ग्रालविणिकार बीणिकार वसकार उतिकार मांनताळकार वडाउजिय पग्याउजय पाटहिकप्रमुख राजलोक पौरलोक चक्रवालि। —व. म.

बीणियोड़ौ—१ देखो 'बिणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणियोड़ौ' (रू. भे)

३ देखो 'वुणियोडौ' (रू. भे.)

बीणी—सं. स्त्री. १ दो कपाटों को मजबूत बंद करने के लिए उनके पीछे लगाई जाने वाली ग्रर्गला।

२ चौकोर छिद्र करने का एक कीला विशेष।

३ हाथ की कलाई।

४ देखो वेणी' (रू. भे.)

रू. भे.—बीणी, बेणि, बेणी, बीणि।

बीणौ—सं. पु.—एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

२ स्त्रियों के शिर पर चूडामणि (बोर) के नीचे लगाया जाने वाला प्लास्टिक का टुकडा, जो चूड़ामणि (बोर) के शिर में गड़ने से बचाने हेतु लगाया जाता है।

३ स्त्रियो के शिर के ग्राभूषण टीके का ही दूसरा नाम।

रू. भे.—बीणो, वेणो, वैणो।

बीत-सं. स्त्री. [सं. वीतं] १ महावत द्वारा हाथी को अंकुश मार कर पैरों से मारने की क्रिया। (डिं. को.)

[सं. वीतः] २ हाथी, घोड़ा या सैनिक जो युद्ध के अयोग्य हो।

वि. [सं.] ३ स्वतंत्र या मुक्त किया हुआ. ४ गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ. ५ पसंद या स्वीकृत किया हुआ।

६ युद्ध के अयोग्य।

रू. भे.—'बीत'

७ देखो 'बित' (रू. भे.)

उ०—१ हंसियो जग आसक हुए, बसियो ओवण बीत। रसियो नागी रांड सू, फसियो होण फजीत। —बां. दा.

उ०—२ हाजर हिंदूवे तुरक, लियै न पर मूंह लोडि। बीत बटावण हेक तूं, बीत बटावण कोडि। —गु. रू. बं

उ०—३ पेसकसी मिर आदरै, वंधै कर परवाण। पाय लगो 'अगजीत' रै, बीत घरै चहुवांण। —रा. रू.

उ०—४ बांटो बीत आपणो बारै, लाख नहीं हालैला लारै। थिर थै बिन नह रहसो थारै, तू नर क्यो न ईसवर चितारै। —बकसीराम लाळस

बीतक, बीतग-वि.—बीता हुआ, गुजरा हुआ।

उ०—१ हूं तुज आगळ सो कहूं कन्हैया ! बीतक दुख री वात रे। —गिरधारी लाल

उ०—२ संभ्रुजे नायक वीनति सांभलो, श्रीरिखहेसरु स्वाम। दीनदयाल तुम्हांनै वांखियै, अतर बीतग आम। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ तुं ग्यांनी तो पिण तुझ आगे, बीतग कहियै बात जो चौबीसे दडके हुं फिरियो, वरणु तेह विख्यात जो। —ध व. ग्र.

उ०—४ तसु जातिपांति नही कांई, नही कोई जेहनै भाई, वलि बाप न काई माई। हुं तुझ नै आवो मिलियो, बीतग दुख सहु टलियो, घर आगण सुरतरु फलियो। - वि. कु.

बीतगराग, बीतगरागी—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

उ०—मेरू विचंकरि पुरब पच्छिम दोइ विभाग, सोलह सोलह विजय तिहां विचरै बीतगराग, सासतै चोथै आरै तारै श्री अरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजो तंत। —ध. व. ग्रं.

बीतणो, बीतबो—देखो 'बीतणो, बीतबो' (रू. भे.)

उ०—तण न्रप पुंज सबांनक तीजै, बीरचद्र राजा वरणीजै। इक मिस भाग बीतियां आधो, लगि अनुराग सुपन न्रप लाधो। —सू. प्र.

उ०—२ बीतो अभूरा वार पूरां वेध सूरा वच्चए, सेलं प्रहारं धार सारं मार मारं मच्चए। बगा खडग्गं दुहुं बग्गे काळ रग्गे बीरयं, अच्छरा उमंगं दूर अंगे चाव रंगे चीरयं। —रा. रू.

उ०—३ पूत पिता एकै थया, थं चढ जावो देस। बीतां बीतां वीतिया, बीतो बयण विसेस। —रा. रू.

बीतणहार, हारो (हारी), बीतणियो—वि०।

बीतिग्रोड़ो, बीतियोड़ो, बीत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीतीजणो, बीतीजबो—भाव वा०।

बीतद्वेस, बीतद्वेस-वि. [सं. वीतद्वेष] द्वेष रहित, बिना द्वेष का।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वांमीजी द्रस्टांत दियो। किणहि डावरा रै माथा में दीधी। जद तो लोक उण नै ओलंभो देवै। भला आदमी छोहरा नां माथा में क्यूं दे। अनै किण ही डावरा नां हाथ में लाडू दियो। तथा मूलो दियो। उणानै कोई वरजै नहीं। ओ राग ओलखणो दोहरो, अनै ऊ द्वेस ओलखणो सोहरो। तिण सूं बीतराग कह्या, पिण बीतद्वेस न कह्या। राग मिट्या द्वेस तो पहिलांइज मिट जाय। —भि. द्र.

बीतभय-सं. पु—१ एक नगरी का नाम।

उ०—अंतेउर परिवार लै, भंडोपकरण संभाय। 'बीतभय' सेती निकली, 'चपा' नगरी जाय। —जयवाणी

२ भगवान् विष्णु का विशेषण।

वि.—जिसका भय समाप्त हो गया हो, भय रहित।

उ०— बीतभय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय। तिणि रातइं पोसउ कीयो रे, वीर वादण चित लाय रे। —स. कु.

बीतराग-वि. [सं वीत+राग] १ जिसे आसक्ति न हो, निस्पृह, कामनाशून्य।

उ०—१ राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टांत दियो। किणहि डावरा रै माथा में दीधी। जद तो लोक उणनै ओलंभो देवै। भला आदमी छोहरा नां माथा मैं क्यूं दे। अनै किणही डावरा नां हाथ में लाडू दियो। तथा मूलो दियो। उणनै कोई वरजै नहीं। ओ राग ओलखणो दोहरो, अनै ऊ द्वेस ओलखणो सोहरो। तिण सूं बीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिट्यो द्वेस तो पहिलांइज मिट जाय। —भि. द्र.

उ०—२ बारमी भावना एम भावइ, अरिहंत बीतराग देव रे। धरम ना ए खरा आराधक, नांम जपइ नितमेव रे। —स. कु.

२ जितेन्द्रिय।

स. पु.—१ बुद्ध का एक नाम।

२ जैनियों के प्रधान देवता का नाम, जिन भगवान।

उ०—१ आगइ तीह नां सरिखा काज, जेहें कहिउ कीधउं बीतराग। अठ करम जरा नी त्रोडी वेलि, गिया इ जि सिदिइं पेलावेली। —वस्तिग

उ०—२ जिन सेव च्यारै अरध पुस्कर, मांहि पच्छिम भाग ए। तिहा मेर विज्जुमाल चिहूं दिसि, विचरता बीतराग ए। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ पटणी पारिख सूरजी संघ सूं, जात्र करी लाभ सुजगीसइ समय सुंदर कहइ साचउ मंइ जांण्यउ, बीतराग देव विसवा वीसइ
—स. कु.

उ०—४ सूत्र सुणउ हित आंणी, एतौ बीतराग नी वांणी हो। जस कल्पावतंसिका नांमदू, सोहइ उवग प्रकांमइ हो। —वि. कु.

रू. भे.—बीतराग, वीतगरागा, वीतगरागी, वीतरागी, वीयराग, बीयरागी वीयराय।

अल्पा., बीतरागी वीतरागौ।

बीतरागी—देखो 'बीतराग' (रू. भे.)

उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतियै कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी बीतरागी।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

बीतरागौ—देखो 'बीतराग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भार वाहक नइ कह्या भला, वीसांगा बीतरागौ जी। माथा थी मूकइ कंधे सहइ, मारग मांहि लागौ जी। —स. कु.

बीतसूत्र-सं. पु. [सं] जनेऊ, यज्ञोपवीत।

बीतसेन-सं. पु. [स] राजा पुरुरवा के पिता का नाम।

बीतसोक-वि. सं. [वीत+शोक] जिसे शोक न हो, शोक रहित।

सं पु.—अशोक नामक वृक्ष विशेष।

बीतसोका-स. स्त्री. [स. वीतशोका] एक नगरी का नाम।

उ०—तिम हिज नवमी बच्छ विजय बलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमु धरि नेह। नलिनावरत्त चउवीसमी पच्छिम विदेह वखांण, बीतसोका नयरी तिहां चौथौ सुबाहु सुजांण।
—ध. व. ग्रं

बीतहव्य-सं. पु. [सं.] १ शुनक का पुत्र एवं धृति का पिता एक जनक-वंशीय राजा।

२ हैहय नामक शार्यातिवंशीय वत्स का पुत्र।

वि० वि०—मतान्तर से यह हैहयवंशीय तालजंघ राजा का पुत्र, सुविख्यात हैहय सम्राट कार्तवीर्य का प्रपौत्र एवं जयध्वज राजा का पौत्र था। परशुराम के क्षत्रियसंहार के समय यह अपने पिता के साथ हिमालय मे छुप गया था एवं परशुराम के निवृति होने पर इसने माहिष्मती नामक नगरी बसाई थी। इसे अपनी दश पत्नियों से प्रत्येक से दश दश पुत्र उत्पन्न हुए थे। जिन्होंने काशि देश के हर्यश्व, सुदेव एव दिवोदास राजाओं को पराजित किया। इसके पुत्रों का वध काशि के दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने किया था, उस समय इसने भृगुऋषि के आश्रम में छिप कर अपनी जान बचायी थी एवं उसके बाद इसने ब्राह्मणत्व स्वीकार किया एवं भृगुऋषि के कृपाप्रसाद से ब्रह्मर्षि बना था।

बीतहोत, बीहोतर, बीतहोत्र—देखो 'बीतिहोत्र' (रू. भे.) (नां. मा.)

बीताणौ, बीताबौ—देखो 'बिताणौ, बिताबौ' (रू. भे.)

बीताणहार, हारौ (हारी), बीताणियौ—वि०।

बीतायोड़ो—भू० का० कृ०।

बीताईजणौ, बीताईजबौ—कर्म वा०।

बीतायोड़ो देखो 'बितायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री, बीतायोड़ी)

बीतावणौ, बीतावबौ—देखो 'बिताणौ, बिताबौ' (रू. भे.)

उ०—एक इकी नौबत एक री एक अंगरेजी राज री सुंणा नै सूर-वीरां आपरी जात री नै कुळ री स्वभाव वीरपणौ भूला और वां सूरमा आळस में अर अंम में सरीर निररथक बीतावणौ सुरू कीधौ। —वी. स. टी.

बीतावणहार, हारौ (हारी), बीतावणियौ—वि०।

बीताविओड़ो, बीताबियोड़ो, बीताव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीतावीजणौ, बीतावीजबौ—कर्म वा०।

बीताबियोड़ो—देखो 'बितायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीताबियोड़ी)

बीति-सं. पु. [स. बीतिः] १ घोड़ा, अश्व। (२) खाद्य पदार्थ, भोजन।

३ यज्ञ, हवन। ४ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

५ चमक, दीप्ति, कान्ति।

६ अग्नि, आग।

७ गति, चाल।

८ पैदावार, उपज।

९ खाने पीने की क्रिया, उपभोग।

रू. भे.—बीति, बीती, विति, वित्ती, वीती।

बीतिमत-स. पु. [स वीतिमत्] रैवत मनु का पुत्र, एक राजा।

बीतियोड़ो—देखो वीतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बीतियोड़ी)

बीतिहोत, बीतिहोतर, बीतिहोत्र-सं. पु. [सं. वीतिः+होत्र] १ अग्नि, आग। (२) हैहयवंशीय वीतहव्य राजा का नामान्तर। (३) प्रियव्रत एवं बर्हिष्मती के पुत्रों में से एक जो रमणक एवं धातकी का पिता था। (४) सूर्य, सूरज। (५) इंद्रसेन राजा का पुत्र एव सत्यश्रवस् राजा का पिता, एक राजा (६) सुकुमार राजा का पुत्र एवं भर्ग राजा का पिता एक राजा। (७) युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि।

रू. भे.—बितिहोत, बितिहोतर, बितिहोत्र, बीतहोत, बीतहोतर, बीतहोत्र, वीतिहोत, वीतिहोतर, वितिहोतर, वितिहोत्र। वित्रहोत, वित्रहोत्र वीतहोत, वीतहोतर, वीतहोत्र, वीतीहोत, वीतीहोतर, वीतीहोत्र, वीत्रहोत, वीत्रहोत्र।

बीती—देखो 'बीति' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बीतीहोत, बीतीहोतर बीतीहोत्र—देखो 'बीतिहोत्र' (रू. भे.)

बीतोड़ो—देखो 'बीतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीतोड़ी)

बीत्थरणो बीत्थरबो—देखो 'विस्तरणो, विस्तरबो' (रू. भे.)

बीत्थरणहार, हारो (हारी), बीत्थरणियो—वि०।

बीत्थरियोड़ो, बीत्थरिबोड़ो, बीत्थरघोड़ो—भू० का० कृ०।

बीत्थरीजणो, बीत्थरीजबो—भा० वा०।

बीत्थरियोड़ो—देखो 'विस्तरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीत्थरियोड़ी)

बीत्योड़ो—देखो 'बीतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीत्योड़ी)

बीत्रहोत, बीत्रहोत्र—देखो 'बीतिहोत्र' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बीथ्रोट—स. पु.—मनमुटाव, वैर।

उ०—डेरा नजीक-नजीक हुवा। बीच परधांन फिरीया, बात बणी नही। वीरमदे राव मालदे बीच परधांन जुदा फिरीया। राव 'कूंपें' 'जैतें' बीच ग्रादमी फिर, धणी चाकरें बीथ्रोट घातियो। राव मालदे डेरा २ पाछा कीया। —नैणसी

बीथरणो, बीथरबो—देखो 'विस्तरणो, विस्तरबो' (रू. भे.)

बीथरणहार, हारो (हारी), बीथरणियो—वि०।

बीथरिग्रोड़ो, बीथरियोड़ो, बीथरघोड़ो—भू० का० कृ०।

बीथरीजणो, बीथरीजबो—भाव वा०।

बीथरियोड़ो—देखो विस्तरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीथरियोड़ी)

बीथि, बीथिका, बीथी—सं. स्त्री. [स. वीथि:, वीथिका, वीथी] १ मार्ग, रास्ता, गली।

२ पंक्ति, कतार।

३ हाट, दुकान।

४ चित्रशाला।

५ बीथी या सड़क के रूप में माने जाने वाले ग्राकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग।

६ कागज या दीवार जिस पर चित्र बनाया जाता है।

७ सूर्य के चलने का ग्राकाश मार्ग।

८ सत्ताईस प्रकार के दृश्य काव्यों या रूपकों में से प्रकार का रूपक जो एक ही ग्रंक का ग्रौर एक ही नायक का होता है। इसमें शृंगाररस ग्रधिक होता है।

रू. भे.—बीथि, बीथी।

बीदंस—सं. पु.—श्येन, बाज ग्रादि शिकारी पक्षी।

बीद—स. स्त्री.—१ हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—जळ छोळ चीर भीनो सुजांण, बीद पुछी सासु वीमळ वांण। पोसाक तुज किम नीर पास, प्रगट्यो मोय इचरज चव प्रकास। —रांमदांन लाळस

२ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—सित हर प्रपच्छर बीद खटे, किरमाळ वहै वरमाळ कटै। निरखं मुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगं सिरमाळ सचै। —रा. रू.

बीदग, बीदग्ध—सं. पु. [सं. विदग्ध:] १ कवि, पंडित। (डिं. को.)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मना, साहित बीदग सारनै। कहै मध्य भलां रूपक करो, ग्रै दस दोस निवारनै। —र. रू.

उ०—२ दूहा लघु गिण ग्राधकर, ज्यां मझ घट कर एक। रहेस बाको नांम रट, बीदग ग्रघट विसेक। —र. ज. प्र.

२ चारणों का एक पर्यायवाची नाम।

उ०—१ जिकां भला घन जोड़ियो, ऊधमियो निज ग्राव। कीरत पोहरे करन रै, बीदग ऊठै वाव। —बां. दा.

उ०—२ देवळ विण देव करम विण दरसण, वप वनिता भरतार विना। बांमण विण वेद, विद्या विण बीदग, मोज धनह विण जिसी मना। —त्याग प्रसंस। रो गीत

रू. भे.—बिदग, बीदग, विदग, विदग्ध।

बीदळ, बीदल—देखो 'विदळ' (रू. भे.)

उ०—भिळजां भड पारख साल भरै, करवा जुध बीदल मेलि करै। भर रोस जिदै धिक वैण भणै, गहैं राव खळां तिलमात गिणै। —पा. प्र.

बीदा—देखो 'बीदावत' (रू. भे.)

उ०—१ सभे जुध 'बीदह' रा खळ साळ, हिचै खग भाग चंदोत 'हिंदोळ'। रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह, नरावत नाहरखा नरनाह। —सू. प्र.

उ०—२ ऊदा कै बीदा भड उदार, पडियार कमां मंडळा पमार। साखला गोड़ हाडा सधीर, भाटी चवांण निरवांण बीर। —पे. रू.

बीदावटी—देखो 'बीदावाटी' (रू. भे.)

बीदावत—सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

रू. भे.—बीदा, बीदावत, बीदा।

बीदावाटी—सं. स्त्री.—छापर द्रोणपुर का वह प्रान्त जो राव जोधा के पुत्र बीदा के ग्रधिकार में था। (ऐतिहासिक)

रू. भे.—बीधावटी ।

बीधुसण, बिधुसण—देखो 'बिध्वंस' (रू. भे.)

बीधणी, बीधबी—१ देखो 'बिधणी, बिधबी' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—नागरवाल रा नीपना गोहूं, बजर कठकालिमां मूंधा रा। भ्रांवारी सिलाक हुग्रै तिण भांति रा, बारां बारां वरसां रा डाडआं रा कांन बीधीजै। इण भांति रा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ भ्राडिग्रां जाजमां घालिग्रां रोळीजै छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बींधणी, बींधबी' (रू. भे.)

उ०—१ पंच जाति जीवन लाभइं पार, ग्रनवरतु तोहं नउ हुइ सहार। दीठउं सावज बीधइं बांणि, दुख तणी ऊघाडी खांणि —वस्तिग

उ०—२ पांच सइं धनुख देह परिमांण, तैत्रीस सागरोपम सातमी जाणि। पाप तणां फल एवडां होइ, बजकटि बीधिउ छइ सोउ —वस्तिग

उ०—३ नेहइं नव भव बीधीय, दीधिय उग्रसेन राय। कुंग्ररि भलीय राजीमति, सीमति तिहुयण माहि। —जयसेखर सूरि

उ०—४ बीधिउ मन रखि नवमइं, नवमइ निज नेठाउ। देई दांन संवत्सर, मत्सर मिल्हिय माहुं। —जयसेखर सूरि

बीधणहार, हारौ (हारी), बीधणियौ—वि०।

बीधिग्रोड़ौ, बीधियोड़ौ, बीध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीधीजणौ, बीधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीधि—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ सुजस सुणाई सोभ, पंथ भ्रोपम चडे इधकाई। धन्य भ्रम दियें सो धन्य, बीधि संई लहैं बडाई। —बील्होजी

उ०—२ जोग नहीं पाखंड, कोप काया मा वसैं। जोग नहीं पाखंड, जीव बोह बीधि तरसं। जोग नहीं पाखड, वीर जपि गांव जळावै। जोग नहीं पाखंड, कूड कथि दुंनी डुलावै। —बील्होजी

बीधियोड़ौ—१ देखो 'बिधियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बींधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीधियोड़ी)

बीन—१ देखो 'बींद' (रू. भे,)

उ०—गूंद लाडू लें र बीन वण, कर घमंड फुरती घणी। जाय ग्रसंघै ग्रांम गवाड़ै, परण पधारैं बीनणी। —दसदेव

२ देखो 'बीण' (रू. भे.)

३ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

४ देखो 'विनय' (रू. भे.)

बीनउलौ—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

उ०—फिरइ बीनउला बीसलराय, वाजित्र बाजइ नीसांणी घाई जीमणवार साजत हुइ, कूं कूं चंदन पाका पांन। कर जोड़ै राजा कहुई, चालउ चउरासी राव की जांन। —बी. दे.

बीनड़ौ, बीनणौ—१ देखो 'बींदणौ' (रू. भे.)

उ०—१ गूंद लाडू लें' र बीन वण, कर घमंड फुरती घणी। जाय ग्रसंघै ग्रांम गवाड़ै, परण पधारै बीनणौ। —दसदेव

उ०—२ बंसी री मा–थारै ग्रब तौ बीनणौ! ग्रोफाजी नै बुलाय 'र गऊदांन देय देवां। —वरसगांठ

बीनणौ, बीनबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुर ग्रागल्य बीनती, करंवे लंगु पाय। राह कारण्य गुर बीनऊ, ग्राखर दयौ समभाय। —ग्रग्यात

उ०—२ गोरी नंदन बीनऊं स्रीपति सुमति सुजांण। रूक्मण तणौं बीवाहलौ, रिध सिध प्रसिध प्रमांण। —रुकमणी मंगळ

बीनणहार, हारौ (हारी), बीनणियौ—वि०।

बीनिग्रोड़ौ, बीनियोड़ौ, बीन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीनीजणौ, बीनीजबौ—कर्म वा०।

बीनतड़ी—देखो 'बीणती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वाल्हेसर मांमी, मांनि नैं तुं ग्रंतरयांमी। मांनि नैं सिवगति गांमी, बीनतड़ी मुझ मांनी। —प. च. चौ.

उ०—२ सहु गच्छपति सिर छाजे, राजेस्वर पाटियइ पाउधारउ। इक बीनतड़ी ग्रवधारौ, स्रीसंघना वंछित सारउ। —वि. कु.

उ० —३ कायम राजा वाड़ी वाही, सींच्यौ सतगुर नूर। बीनतड़ी ग्ररू हाजिर सिवरं, सत सुकरत का सूर। —ग्रग्यात

बीनति, बीनती—देखो 'बीणती' (रू. भे.)

उ०—१ सिध साधक योगी भणै रे, जाय कीयो ग्रादेस रे। वार वार बीनति करो रे, लागौ पाय नरेस रे। —प. च. चौ.

उ०—२ सहज सहज हिंडाय, ऊदो बोलै बीनती, ग्रावा गुवणि चुकाय। —ऊदोजी नैण

उ०—३ राय पासि पहिलुं पहुचेई, पय पणमि बीनती करेई। सांभलि वाचा मुझ भूपाल, इणि वणि ग्रछउं ग्रम्हि रखवाल। —सालिभद्र सूरि

उ०—४ ग्राडो सोबो ग्रावियो, मिरजै सहत मुकीम। बळ तज दक्खै बीनती, भूप परक्खै भीम। —रा. रू.

उ०—५ हरि जस रस साहस करै हालिया, मौ पंडिता बीनती मोख। ग्रम्हीणा तम्हीणै ग्राया, लखण तीरथं वयण सदोख। —वेलि

बीनमणी, बीनमबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तापरि खीजो बीनमें, बूभो राघव व्यास। सब लखण गुण पदमणि कं, जांणं सास्त्र ग्रभ्यास। —प. च चौ.

उ०—२ बादल इण परि बीनमें, मात नहीं हुं बालौ रे। रिणवट आलिम साह सूं, ओह करू' ढकचालौ रे। —प. च चौ.

उ०—३ आजि चलावै देव हइ, वचन हमारउ मांनौ नू मांन। कर जोड़ै तूज बीनमें, थं घरि चालौ, नू लावौ ही वार। —बी. दे.

उ०—४ ताहरां राजाजी मोपत ऊपरि चढण लागा। ताहरां रांणीजो जसवंतदेजो राजि नूं बीनमियौ। राजि दोहरा को हुवौ, हूं जाइ अर मोपति नूं ले आविस। —द. वि.

बीनमणहार, हारौ (हारी), बीनमणियौ -वि०।

बीनमणिश्रोड़ौ, बीनमियोड़ौ, बीनम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीनमीजणौ, बीनमीजबौ—कर्म वा०।

बीनमियोड़ौ—देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री॰ बीनमियोड़ी)

बीनवणौ, बीनवबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गोरीनंदन बीनवूं, ब्रह्मसुता सरसत्ति। सरस बंध प्राकृत कवूं, थउ मुझ निरमल मत्ति। —कां दे.. प्र.

उ०—२ कहीउ सघलउ तं अवदात, महतौ हरख्यौ निसुणी वात। सखीय पाठि बीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ आणंद। —हीराणंद सूरि

उ०—३ जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन बीनवीइ किसी? हूं वहूअर, तू जेठ! —मा. कां. प्र.

उ०—४ नदियां गै'री कठण लांघणी, पंथ खांडा री धार। काजो महमंद बीनवै, हरि भजि उतरौ पार। —दीनमहमद

उ०—बे कर जोड़ी बीनवूं जी, सुणि स्वांमि सुविदीत। कूड़ कपट मूकी करी जी, बात कहूं आप बीति। —स कु

उ०—६ एक दिन कोमल पांखड़ो रे लाल, माट लेइ निज हाथ रे आवी सभा में बीनवै रे लाल, चिरजीवौ नरनाथ रे। —प. च. चौ.

बीनवणहार, हारौ (हारी), बीनवणियौ—वि०।

बीनविश्रोड़ौ, बीनवियोड़ौ, बीनव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीनवीजणौ, बीनवीजबौ—कर्म वा०।

बीनवियोड़ौ—देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीनवियोड़ी)

बीनांण—सं. स्त्री.—१ रचना, कृति, सृजन।

उ०—नूर जिहां भरपूर अंग, कंठ लोह पखांणी, चौरासी लख अस दियण, निरगल निरबांणी। घड़ घड़ भंजे भी घड़ं, पंदास पुरांणी, तुज बीनांण न जांणियै, करतार बीनांणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनांण' (रू. भे.)

बीनांणी—वि.—१ रचना कर्त्ता, सृजन कर्त्ता, कृतिकार।

उ०—नूर जिहां भरपूर अंग, कंठ लोह पखांणी, चौरासी लख अस दियण, निरगल निरबांणी। घड़ घड़ भंजे भी घड़ं, पंदास पुरांणी, तुज बीनांण न जांणियै, करतार बीनांणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनांणी' (रू. भे.)

३ देखो 'वैनांणी' (रू. भे.)

उ०—१ तदै तरवार वाही। तरवार वाहतां तरवार भागी। ताहरां वाळौ कहै, "फेट बीनांणी, फेट बीनांणी! भुंडी घड़ी, भुंडी घड़ी! ताहरां साजण कहै—दूहा—वाळा म करि वेसास, असमर ऊजड़िया तणौ। वांक बीनांणी नाह, वांक लमीणी बोधउत। —चांपै वाळै री बात

उ०—२ बरहासां नास घमण बाजतौ, घांसारव साजै घमसांण। बांकड़ौ रावत मेघ बीनांणी, अरियण दळां घमै आराण। —रावत मेघ सीसोदिया री गीत

बीनियोड़ौ—देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीनियोड़ी)

बीनौ—सं. पु.—१ संकट, तकलीफ।

२ विनय।

उ०—बीनौ पीत सनेह, प्रेम निरवाहै पावन। लाज मांण अहंकार, सिरै चाढै सूरातन। —गु. रू.

बीपनी—स. स्त्री.—प्रायः डेढ फुट ऊंचा लाल या सफेद फूलों वाला एक प्रकार का वर्षाती पौधा, जिसके फल फलीनुमा होते हैं शरपुंखा।

बीपसा, बीप्सा—सं. स्त्री. [सं. वीप्सा] १ एक प्रकार का शब्दालंकार विशेष, जिसमें आदर, आश्चर्य, आतुरता, रोचकता, घृणा, हर्ष शोक आदि भावों का बाहुल्य प्रकट करने हेतु किसी शब्द का प्रयोग बार बार किया जाता है।

उ०—१ चौथै पदकल पंच वार चिहु, दोय बीपसा दाखौ। कहै 'मछ' इम गीत गोखकर, भूप अवध गुण भाखौ। —र. रू.

उ०—२ बारह मत तुक आठ प्रत, आख बीपसा अंत। छौनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत। —र. ज. प्र.

उ०—३ रगण जगण गुरु लघु हुवै, जिण रै तीन तुकंत। होय बीपसा ववध तुक, अरध गोखौ आखत। —र. ज. प्र.

२ अधिकता, बाहुल्यता।

३ व्याप्त होने की अवस्था या भाव, व्याप्ति।

४ शब्दों की पुनरावृत्ति, शब्दद्विरुक्ति।

रू. भे.—विप्सा

बीप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

बिफनौ—देखो 'बीपनी' (रू. भे.)

बीफरणौ, बीफरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मचकै 'वसतेस' गुसै भरियौ, व्रजराज उपासक बीफरियौ।
जुध जांगिक क्रोध मतै जरै, करि दांमणि धार संग्रांम करै।
—सू. प्र.

उ०—२ अगडूंपरि आप जूटै बीफरै वच्छर दतूंसळूं कै खटक कंसै दरसावै। इंद्र वज्र की झाट ऐसी नजर आवै। चाचरूं की मचक सुंडादंडूं का उपाट। कूंमाथळूं पर बहफो काळ दार भुजंगां की सी झाट।
—सू. प्र.

उ०—३ कुवेण देवी सांभळ कराळ, बीफरै तिणां इम कहै बाळ।
बूथां अबोट जीपै बांणांस, भाखाढ सिद्ध सौ करै भास।
—मा. वचनिका

उ०—४ डाकरतौ भरतौ डकरा, धरतौ मकर सधीर। बीफरतौ वाकारियौ, करतौ खून कंठीर। —सरूपसीगजो री गीत

बीफरणहार, हारौ (हारी), बीफरणियौ—वि०।

बीफरिओडौ, बीफरियोड़ौ, बीफरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीफरीजणौ, बीफरीजबौ—भाव वा०।

बीफरियोड़ौ—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीफरियोड़ी)

बीबरणौ, बीबरबौ—१ देखो 'भींभरणौ, भीभरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू. भे)

उ०—मतवाळां जेम घुमंत महाभड़, लोह तणी छक लालुरता।
जमदूठ उठंत टवै जमदाढां, वाहै आवध बीबरता। —गु. रू. बं.

बीबरणहार, हारौ (हारी), बीबरणियौ—वि०।

बीबरिओड़ौ, बीबरियोडौ, बीबरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीबरीजणौ, बीबरीजबौ—भाव वा०।

बीबरियोड़ौ—१ देखो 'भींभरियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'विभरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीबरियोड़ी)

बीभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू. भे)

उ०—ज्यांनी अबकै पहरका मरद मोजाजी ढोला अबकै पहर का मरद भोत बीभचार करै छै जी भोत बीभचार करै छै जी।
—लो. गी.

बीभत्स—सं. पु. [स] १ साहित्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें घृणित एव जघन्य पदार्थों का वर्णन होता है।

२ देखो 'बीभत्सु' (रू. भे.)

रू. भे.—बीभच्छ, बीभछ, बीभत्स, बिभत्स।

बीभत्सरस—देखो 'बीभत्स' (१)

बीभत्सु—सं. पु. [सं.] १ अर्जुन का एक नाम।

२ देखो 'बीभत्स' (रू. भे.)

रू. भे.—बीभत्सु, बिभत्स।

बीभर—देखो 'भींभर' (रू. भे.)

बीभरणौ, बीभरबौ—क्रि. अ.—गर्जना करना, दहाड़ना।

उ०—रोकै अकबर राह, लै हींदू कूकर लखां। बीभरतौ बाराह, पाड़ै घणा 'प्रतापसी'। —दुरसो आढो

२ देखो 'भीभरणौ, भीभरबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू. भे.)

बीभरणहार, हारौ (हारी), बीभरणियौ—वि०।

बीभरिओड़ौ, बीभरियोड़ौ, बीभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीभरीजणौ, बीभरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीभरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गर्जना किया हुआ, दहाड़ाहुआ।

२ देखो भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विभरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीभरियोड़ी)

बीभळ, बीभल—देखो विभळ' (रू. भे.)

बीभळियौ, बीभलियौ—वि.—१ रसिक।

२ चकित, भ्रांत (नयन)।

३ देखो 'विभळ, विभळी' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे—बीभळियौ।

बीभळी, बीभली—सं. स्त्री.—१ एक देवी का नाम।

देखो 'विभळी' (रू. भे.)

बीभव—सं. पु.—१ अर्जुन का एक नाम। (अ. मा.)

२ देखो 'विभव' (रू. भे.)

३ देखो 'वैभव' (रू. भे.)

बीभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

बीभववांन—देखो 'वैभववान' (रू. भे.)

बीभवसाळी, बीभवसाली—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे.)

बीभाड़णौ, बीमाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—कटक बीभाड़ हराहर अेकल, छित छेकल नाहरडै छेक।
'अमांन' तणौ बहौ भांत बमेवळ, टेकल भौम न छोडै टेक।
—ठाकर नवलसिंघ सेखावत री गीत

बीभाड़णहार, हारौ (हारी), बीभाड़णियौ—वि०।

बीभाड़िओड़ौ, बीमाड़ियोड़ौ, बीभाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीभाड़ीजणौ, बीभाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बीभाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विभाडियोडी)

वीभाणौ, वीभाबौ—देखो 'विभाणौ, विभाबौ' (रू. भे.)

वीभाणहार, हारौ (हारी), वीभाणियौ—वि० ।
वीभायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीभाईजणौ वीभाईजबौ—भाव वा० ।

वीभायोड़ौ—देखो 'विभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० वीभायोडी)

वीभावणौ, वीभावबौ—देखो 'विभाणौ, विभाबौ' (रू. भे.)

वीभावणहार, हारौ (हारी), वीभावणियौ—वि० ।
वीभाविय़ोड़ौ, विभावियोड़ौ, वीभाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीभावीजणौ, वीभावीजबौ—भाव वा० ।

वीभावसु, वीभावसू—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

वीभावियोड़ौ—देखो 'विभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीभावियोडी)

वीभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—चूंडो उठै गयो, भाग जागीयो । दिन-दिन बात रस आवती गई । चांवडा देवीजी री सेवा राव चूंडै निपट घणी मांडी । मारग बहतो तिण सूं दम गुणो इधक वहण लागो । रूपा री नदी वहण लागी । चूंडा नूं **वीभौ** जुड़तो गयो । घोड़ां रजपूतां री जोड़ होती गई । —नैणसी

वीभ्रमौ—देखो 'विभ्रमौ' (रू. भे.) (शा. हो)

वीमळ, वीमल—देखो 'विमळ' (रू. भे.)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—मारीजी जोडी जुडी, था नारी अउ नाह । राणी राजा सूं कहइ कीजइ अउ **वीमाह** । —ढो. मा.

वीमाहणौ वीमाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वीमाहणहार, हारौ (हारी), वीमाहणियौ—वि० ।
वीमाहिय़ोड़ौ, वीमाहियोड़ौ, वीमाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीमाहीजणौ, वीमाहीजबौ—कर्म वा० ।

वीमाहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीमाहियोडी)

वीमा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—बीजूं हम बोलतौ, जद घणा दिन सूं मिळतौ । कुसळायत नूं भणतौ, अमल रूपेटा गळतौ । **वीमा** मुण आवियौ, नवन सारा रै कारण । धीरज मन नह धरी जनम पायौ कुळ चारण । —अरजुनजी बारहठ

वीमासणौ वीमासबौ—देखो 'विमासणौ, विमासबौ' (रू. भे.)

उ०—अरजनजी मन में **वीमासी** रहा । ताहरां मा बोली, 'अरजन बोलो न्ही ? बाप जीमण ऊभौ हुवै छै ।' ताहरां अरजन बोलियौ, 'मांजी, हमीर भाई दुणोटौ मांगै छै तो मेल हो ।
—अरजन हमीर री बात

वीमासणहार, हारौ (हारी), वीमासणियौ—वि० ।
वीमासिय़ोड़ौ, वीमासियोड़ौ, वीमास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीमासीजणौ, वीमासीजबौ—कर्म वा० ।

वीमासियोड़ौ—देखो 'विमासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० वीमासियोड़ी)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—मन मूझ तणैं **वीमाह** जिसो अत, माह 'गोइंद' आप मरै ।
आओ भड साथि जिको सो आवै, काळ निमत्त मरीर करै ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ जिकै वेद मूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाड़ि होम करै छै । घणो गौ घ्रत नै कपूर री आहूति दीजै छै । वेद ध्वनि कीजै छै । दूलह नै दूलहनी सेहरा बधिआ पूरव साहमा बेसांणिया छै । सेहरा दीजै छै । चार फेरा फेरीजै छै । **वीमाह** कीजै छै ।
—रा. सा. स.

उ०—३ कह्यो जी ! मोनु राजा मेळो । कह्यो जी; राजा महीने मिळसी, काल्हि राजा वाहिर हुतो, आज माहि पधारियो, महीनै राजा आवै छै, वळै नवो **वीमाह** करि महल मांहै पधारै छै, सू वळै महीनै वाहिर आविसो । —सयणी री बात

उ०—४ जोधाणं जोधाहरो, मुख मांणं अभसाह । त्रिच अगसर फागण विचै, च्यार थया **वीमाह** । —रा. रू.

उ०—५ मोहरि गोठि **वीमाह**, मोहर दरबार मभारा । म्हा मोहरि रावता, सदा जिम वहतां मारां । —सू. प्र.

वीमाहणौ वीमाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वीवाहणहार, हारौ (हारी), वीमाहणियौ—वि० ।
वीमाहिय़ोड़ौ, वीमाहियोड़ौ, वीमाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीमहीजणौ, वीमाहीजबौ—कर्म वा० ।

वीमाहियोडौ,—देखो **'विवाहियोडौ,** (रू. भे.)

(स्त्री. वीमाहियोडी)

वीमूह—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

वीमुहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा,. रू. भे.)

उ०—ना जीहा पै **वीमुहा**, जरासंधसीर जै नथ । केता कव जन खस गया, अरि केता भारथ । —स्री रायसिंघजी री गीत

वीम्हर—स. पु —झींगुर ।

वीयराग—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

बीयरागी, बीयराव—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

उ०—पंचाभिगम विधि सुं करूं, सक्रस्तव सूधो उच्चरूं। जय वीय-राय कहता करम कटे, देव जुहारूं गउ वीसटे। —स. कु.

बीयांण—स. पु.—आकाश, गगन।

उ०—बीयांण चद वड वीयुं, ऐराक बीज सापुरस वयण। प्रात गाज पेहली लहवाय, लहवाय पीछे गरवाय।

—मूळवै सागावत री वात

बीयाज—देखो 'व्याज' (रू. भे.)

बीयाजू—देखो 'व्याजू' (रू. भे.)

उ०—हरीया सांमी मनमुखी, माय ामांही हेत। बयुंईक गाडे रेत में, और बीयाजू देत। —अनुभववांणी

बीयास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—मारद नारद सुक बीयास समरथ सिमरंदे।

—केसोदास गाडण

बीयोगण, बीयोगणी, बीयोगिण, बीयोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे)

बीयो—देखो 'दूजो' (रू. भे.)

बीर—स. पु. [सं.] १ बहादुर, शूरवीर। (ह. नां. मा.)

वि० वि०—वीर चार प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

१ धर्मवीर २ युद्धवीर ३ दानवीर ४ दयावीर।

उ०—१ मचियै कांनळ मदत री, बीर न देखे वाट। एक अनेका सूं हिचै, छाती वजर कपाट। —बां. दा.

उ०—२ कमधज्ज तजै मनमोह काया चो, बीर तिसोह विसतयरिय। तत ले निरबांण क राज तियाग, गोपीचंद भरत्थरियं।

—गु. रू. बं.

उ०—३ घख पख घमळ घीर धारण, निहंग तो डर केळ वारण, दुवळ पंखी गुरड दारण, सलह खाग सघीर। यर केण छाजै खाग उछज, अणी भटां चंच आवाज, कळहियो 'गजसाह' कळियज, वरळ वध वर बीर। —महाराजा गजसिंह रो गीत

उ०—४ समर सगतपुर मंडोवर छतरधर समोसर, तकर कर बजर बर धजर ताजो। उसर बगतर ऊभर बीर सांसर अतर, 'गग' हर कळोधर कहर गाजो। —नाथो सांदू

२ युद्ध करने वाला, योद्धा, सैनिक।

३ विकट परिस्थितियों में भी अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाला, साहसी।

४ विशिष्ट कार्यों में अन्य से बढकर।

५ कर्मठ, कर्मशील।

६ बात-चीत में होशियार, वाग्वीर।

७ बहन या अन्य स्त्री के द्वारा भाई या किसी अन्य पु[रुष] के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

उ०—तितरै हेक दीठ पवित्र गळि त्रागो, करि प्रणपति लागी कहण देहि सदेस लगी दुवारिका, बीर बटाऊ ब्राह्मण। —बे[लि]

८ भाइ, भ्राता। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ आज उमाहउ मो घणउ, ना जांणू किव केण। पुरु[ष] परायउ बीर वड, अहर फुरक्कइ केण। —ढो. म[ा.]

उ०—२ खित्रीवट जै साहस घीर, मालदेव छइ लहुडउ बीर जिसी प्रीति लखमण नइ रांम, राज छनरेह एहवी मांम। —कां. दे. [प्र.]

उ०—३ बागां मे वाज्या जगी ढोल, सहरां में वाजी सहनाई जी आयो म्हारो जामणजायो बीर, चूनड़ तो ल्यायो रेसमी जी।

—अमर चूंन[डी]

उ०—४ चोरी बैठै चक्रधर, वळि सुहिद्रा रो बीर। बाबै नां सब[द] विरिद, पूर्ण कवेसर 'पोर'। —पी. [ग्रं.]

उ०—५ चुडलो चिरासी घण रो सायबो रे, लंजा ओठीड़ा है लो ओढणियो ओढासी म्हारो बीर वाला जी। —लो. गी[.]

९ पति, खाविंद।

१० पुत्र, बेटा।

११ मित्र, साथी।

१२ सखी, सहेली।

१३ महिला, स्त्री, १४ राठौड़ो के प्रसिद्ध तेरह वंशों में से ए[क] वश, अथवा इस वंश का व्यक्ति। —बां. दा. ख्या[त]

१५ दूल्हा, वर।

१६ तीन प्रकार की भावों की साधनाओं में से एक प्रकार [की] साधना जिसमे मद्यपानादि द्वारा उन्मत्त होकर साधक द्वारा मनु[ष्य] भैंस, भेड़ या बकरी की बलि दी जाती है। (तांत्रिक)

उ०—भगति एक व्याकरण, बीर इस्ट कै करै। तरकक नी[ति] सामत्रांण, एक मुकव उच्चरै। —गु. रू. [बं.]

वि० वि०—यह साधना दिन के प्रथम दस दंडों में पशुभाव [से] दूसरे या बीच के दस दडो में वीरभाव से और अन्तिम या ती[सरे] दस दडा में दिव्यभाव मे करनी चाहिए। मतान्तर से सोलह व[र्ष] की अवस्था तक पशुभाव से, फिर पच्चास वर्ष की अवस्था तक वी[र] भाव मे और उसके बाद दिव्यभाव से साधना करनी चाहिये।

१७ उक्त प्रकार के वीरभाव से साधना करने वाला साधक।

१८ वज्रयानी सिद्धों के अनुसार वज्रप्रज्ञोपाय योग के द्वारा महारा[ग] में विराग का दमन करने वाला साधक।

१९ मोक्ष के अनुष्ठान अर्थात् साधना मे पराक्रम करने वाला या च[...]

घन-घातिया कर्मरूपी रज अर्थात् कूड़ा-करकट हटा देने वाला एवं प्राणियों को संयम आदि के अनुष्ठान में विशेष रूप से प्रेरित करने वाला। (जैन)

२० चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी। (जैन)

उ०—१ धन धन गांम नगर जिहां रे, विहरइ वीर जिणिंदो रे।
धन धन नर नारी तिके रे, वांणि सुणइ आणंदो रे। --स. कु.

उ०—२ दीधा उड़दना बाकला, वीर ने 'चंदनबाल'। वृष्टि हुई सोवन तणी, वरत्या मंगल माल। —जयवांणी

उ०—३ लहियै सोभा लोक में, तप करि कसता तन्न। परतखि वीर प्रसंसियो, धन्नो मुनिवर धन्न। - ध. व. ग्रं.

२१ विष्णु का एक नाम।

२२ अर्जुन का एक नाम।

२३ कामदेव।

२४ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक असुर।

२५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२६ पांचजन्य अग्नि का पुत्र एक अग्नि।

२७ एक अग्नि, जो भारद्वाज एवं वीरा के पुत्रों में से एक था और सरयू का पति एवं सिद्धि का पिता था।

२८ कलिंगराज चित्रांगद की कन्या के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा।

२९ पुरुवंशीय एक राजा।

३० श्रीगणेश का एक विशेषण।

३१ पुरंजय नामक एक राजा जो अनुवंशीय था।

३२ तामस मन्वन्तर का एक देव।

३३ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रों में से एक पुत्र यादव।

३४ कृष्ण एवं कालिंदी के पुत्रों में से एक पुत्र यादव।

३५ अविक्षित् की पत्नी लीलावती का पिता, एक राजा।

३६ सोमवंशीय राजा, जो तोण्डमान का पिता था।

३७ क्षुप एवं प्रमथा का पुत्र, विदर्भ राजकुमारी नंदिनी का पति एवं विवंश का पिता, एक राजा।

३८ पवनसुत हनुमान।

३९ शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस, जिसमें उत्साह वीरता, साहस आदि गुणों का वर्णन होता है। (साहित्य)

४० प्रत्येक चरण में ३१ एवं १६ मात्राओं पर यति या विराम पाया जाने वाला एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष। (पिंगल)

४१ छप्पय छंद का पांचवा भेद जिसमें ६६ गुरु, २० लघु से ८६ वर्ण तथा १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

४२ ठगण के द्वितीय भेद का नाम।

४३ भूत, प्रेत।

उ०—१ जंतर मंतर टोणा टूंणा, कांमण टूंमण जांणूं। वीर मूंठ विद्या बोहतेरी, आतम देव अजांणूं। —अनुभववांणी

उ०—२ सीकोतरि सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारां। विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु, विरक जंबू रसवाया। काक कंक को गिणै, आसपळ संभळ आया।
—रा. रू.

उ०—३ पूजे कर कर पीर, घर घर नूतै गांव में। वळै जगावै वीर मूठ चलावै मोतिया। —रायसिंह सांदू

उ०—४ वेताल वीर मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमंख भक्ख जंबुक गीध्र वड्डाक जक्ख।
—गु. रू. बं.

क्रि. प्र. जगाणौ, जागणौ।

४४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव।

वि० वि०—देखो 'भैरव'।

उ० खळा घूकळां आदरै वीर खेळा, मिळै बाघरै जोगण्यां जुत्थ मेळा। भरै पत्र भैंसा अजा रत्र भागै, अछक्कां छकां छाक दारू अरोगै। - मे. म.

४५ महादेव के वे प्रियगण जो श्मशान में ही निवास करते हैं।

क्रि. प्र.—जगाणौ, जागणौ।

४६ वीरभद्र नामक शिवगण।

४७ दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करते समय शिवगण वीरभद्र के रोम रोम से निकले हुए गण।

उ०—१ निज हूर अपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै। निरखे सुर नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ मचै।
—रा. रू.

उ०—२ छायो गयण रभ रथ छाजै, विरमी पाख पाखर्णां वाजै। बावन वीर नचण बहबहिया, डंरू जटी चंड डहडहिया।
—सू. प्र.

उ०—३ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हेला मुंडमाळी पढै मंचै हार हेत। डला जत्र पांणा बंचै बाहा बाणा बाहा ईसौं, माणा म्हळां सुभाणो' बिरच्चै वीरखेत। —प्रभुदान मोनोसर

उ०—४ कतियाणी क्रह क्रह नारद डह डह, हेका टह टह वीर हसै। वड रावत ग्रह ग्रह गोरसि प्रह प्रह, दूठो ठह ठह होठ डसै।
—गु. रू. ब.

वि० वि०—वीरभद्र के शरीर से निकले हुए गणों में से मुख्य ५२ गण थे जिन्हें 'वीर' संज्ञा दी गई थी। उनके नाम निम्न लिखित है:—

(१) क्षेत्रपाल वीर (२) कपिल (३) बटुक (४) नारसिंह (५) गोपाल (६) भैरव (७) गरुड (८) रक्तसुवर्ण

(९) देवसेन (१०) रुद्र (११) वरुण (१२) भद्र (१३) वज्र (१४) वज्रजंघ (१५) स्कंद (१६) कुरु (१७) प्रियंकर (१८) प्रियमित्र (१९) वह्नि (२०) कंदर्प (२१) हंस (२२) एकजंघ (२३) घंटापथ (२४) दजक (२५) काल (२६) महाकाल (२७) मेघनाद (२८) भीम (२९) महाभीम (३०) तुंगभद्र (३१) विद्याधर (३२) वसुमित्र (३३) विश्वसेन (३४) नाग (३५) नागहस्त (३६) प्रद्युम्न (३७) कंपिल (३८) नकुल (३९) प्रह्लाद (४०) त्रिमुख (४१) पिशाच (४२) भूतभैरव (४३) महापिशाच (४४) कालमुख (४५) शुनक (४६) अस्थिमुख (४७) रेतोवेध (४८) श्मशानचार (४९) कलिकल (केलिकला) (५०) भृंग (५१) केटक (५२) विभीषण।

४८ बावन की संख्या का नाम।

४९ नये बैल को कृषि में जोतने का अभ्यास कराने की क्रिया।

५० आरम्भ करने की क्रिया।

५१ रवाना होने या करने की क्रिया।

५२ किसी भूत-प्रेत विशेष की उपस्थिति का शरीर में अनुभव होकर तदनुसार अंग संचालित होने और मुंह की ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, भूत-प्रेत का प्रभाव।

उ०—देखो डाकण रा घर में डावड़ा नै जको मेलै उण री भूल, क्यूंकि डाकण तो वीर चढ़ै तद खावहीज चाहे घर रो चाहे पारको उण सूं तो आघो रहे वो हीज वचै। —वी. स. टी.

क्रि. प्र.—आणो, उतरणो, ऊटणो, चढणो।

५३ यज्ञ की अग्नि।

५४ काली मिर्च।

५५ आलुबुखारा नामक फल।

५६ वाराही कंद।

५७ एक प्रकार का सींगिया नामक विष।

५८ पुष्करमूल।

५९ कांजी। (अमरत)

६० अर्जुन नामक वृक्ष।

६१ सिंदूर।

६२ लोहा।

६३ लताकरंज।

६४ नरकट।

६५ कनेर।

६६ उशीरा, खस।

६७ शालिपर्णी, सरिवन।

६८ ऋषभक नामक औषधि।

६९ तोरी, तुरई जिसकी सब्जी बनाई जाती है।

७० कुश।

७१ नरसल।

७२ भिलावा।

रू. भे.—बीर, वीरक, वीरक्क, वीरजु, बीरय, वीरय्य, वीररस, वीररस्स, वीरांण, वीरारस, वीरारसि, वीरू'।

अल्पा,—बीरो, बीरड़ो, बीरड़ो, बीरति, बीरली, बीरो।

वीरकंठ-सं. पु.—१ वीरध्वनि।

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

वि० वि०—इसके पहले एवं तीसरे चरण में सोलह वर्ण व चौबीस मात्राएं एवं दूसरे व चौथे चरण में चौदह वर्ण व इक्कीस मात्राएं होती हैं। आठ-आठ वर्ण पर अर्द्धविराम एवं अंत में लघु-गुरु होते हैं। (र. ज. प्र., र रू)

रू. भे.—विड़कठ, विरकंठ, वीरकंठ।

वीरक-स. पु. [स] १ चाक्षुक मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक ऋषि।

२ अंगराज वंशीय राजा शिवि का पुत्र।

रू. भे.—वीरक्क।

३ देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—दीपक हूंत दीपक, अंब हूं अंबक उग्गै। सिध हूंता साधिक्क, वीर घर वीरक जग्गै। —गु. रू. बं.

४ देखो व्रक' (रू. भे)

वीरकरमा-वि. [सं. वीर+कर्मा, कर्मन्] वीरोचित कार्यकर्त्ता।

वीरकळहळ-सं स्त्री.—वीर-ध्वनि।

उ०—हूंकळ सींधवो वीरकळहळ हुवै, बरण कजि अपछरां सूरिमां बहुवै। त्रिजड़ हथ मयंद जुध गयंद घड़ तोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अढंगा बोलणा। —हा. झा.

वीरकाम-वि. [सं. वीर+कार्य] १ वीरोचित कार्य करने वाला।

[सं. वीरकाम] २ पुत्र की कामना रखने वाला।

वीरकाव्य-सं. पु. [सं.] वह काव्य जिसमें वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन होता है।

वीरकुक्षि-सं. स्त्री. [सं] १ वह स्त्री जो वीर पुत्र को जन्म देती है।

२ वह भूमि जिस पर वीर पुत्र उत्पन्न होते हो।

वीरकेत, वीरकेतु-सं. पु. [सं. वीरकेतु] १ पाञ्चाल देशाधिपति द्रुपद का पुत्र जो महाभारत के युद्ध में द्रोण के द्वारा मारा गया था।

२ एक अयोध्या नरेश का नाम।

३ हंसध्वज नामक राजा के प्रधान सुमति का पुत्र।

वीरक्क—१ देखो 'वीर (रू. भे.)

उ०—वीरक्क नचक्क सझक्क सवक्क, चोळक्क पियक्क कळिक्क बहक्क। करक्क हाडक्क गुडक्क वड़क्क, खिवै खग्गरक्क पड़ै खर-डक्क। —सू. प्र.

२ देखो 'वीरक' (रू. भे.)

३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

वीरखेत-सं. पु. [सं वीर+क्षेत्र] युद्धस्थल।

उ०—१ पूनम थावर वार, सरव रित है पालट्टी। वीरखेत पूरब रित हेमंत प्रघट्टी। —गु. रू. बं.

उ०—२ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हेला मुंड-माळी पर्व संचै हार हेत। हलां जंत्रपांणां बंचै बाहा बागां बाहा ईसों। लागां ललां 'मुमांणीं' विरचै वीरखेत। —प्रभूदांन मोतीसर

२ वह भूमि जहां वीर अधिक उत्पन्न होते हों।

उ०—तरह तरह के दाव जंगू के झगाके अपणं अपणं कुरंगूं को हमराह। हीमनायकूं के हाकै जोधांण मेड़तो वीरखेत के जाए भाजे न लहबहे जेतं लड़ें तेतं बरोबर रहे। —सू. प्र.

३ वह स्त्री जो वीरपुत्रों को जन्म देती है।

रू. भे.—वीरखेत।

वीरखेती—युद्ध।

रू. भे.—वीरखेती।

वीरगत, वीरगति, वीरगती-सं. स्त्री. [सं. वीरगति] वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होने वाली गति।

रू. भे.—वीरगत, वीरगति, वीरगती।

वीरगाथा, वीरगाहा-सं. स्त्री [सं. वीरगाथा] वीर के वीरतापूर्ण कार्यों का कवित्वमय वर्णन।

वीरघंट, वीरघंटू, वीरघंटी-सं पु. [सं. वीर+घंट] १ हाथी के भू: के बांधने का घंटा या घटी।

उ०—१ रात घड़ी दो एक गई, हक डको सुणियो। तरं जोगेमर जांण्यो कोई सिरदार आवै छै। तिसै हाथी री वीरघंट सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोड़ां री कळहळ सुणी।

—जगमाल मालावत री बात

उ०—२ मद धारां बरसता थकां गज डंबर नीसांण गाजै वीजळी आंकुस विराजै। ग्रिध चात्रिग वीरघंट दादुर बोलै। मुगळ लाल ममोळा सा दिखावै। —वचनिका

उ०—३ हाथियों के हलकं ग्वभूटांणातं खोलं, अरापत के साथी भद्रजाती के टोळ। प्रत देहु के दिग्गज विंध्याचळ के सुजाव, रंग-रग चित्रे सुंडाडंड के बणाव। भूल की जलूस वीरघंटू के ठणके, बादळां की जगमगाट भरे भोरों की भको भंणकें।

—र. रू.

२ देवालयों में लटकाया जाने वाला बड़ा घंटा या छोटी घटी।

रू. भे.—वीरघट।

वीरड़ो—देखो 'वीर' (अल्पा, रू. भे.)

वीरचक्र-सं. पु. [सं.] सैनिकों को उनके वीरतापूर्ण कृत्यों के लिए शासकों द्वारा दिया जाने वाला पदक।

वीरचाळो-सं. पु.—१ युद्ध झगड़ा।

उ०—१ मारू फील मंता, दियं पाव दंता। कड़क्कै कपाळां, चढै वीरचाळां। —सू. प्र.

उ०—२ उजेणी महासूर हैथाट आंणै, जुड़ैवा चढै देव दांणव्य जांणै। चकत्यां कमंधां रचै वीरचाळा, वणै जांणि भारत्थ पारत्थवाला। —र. वचनिका

उ०—३ जांनकीनाथ समराथ जाहर जगत; चुरस धमचक रचण वीरचाळा, वसं खेत वीरती। ताखड़ां जोध आरोड़ दसरथ तणा, कीजियै किसो न्रप जोड़ काळा, कहै जग कीरती। —र. ज. प्र.

२ भूत प्रेतादि का उपद्रव।

३ वीरों का कार्य या चरित्र।

वीरचाव-सं. पु.—युद्ध, झगड़ा।

उ०—किला जीत माझी मारवाड़ में कहावै 'कूंपा', चीतवरां वारंग मिळावै वीरचाव। अनेकां बिभाड़ रोदो लोडा नै पछाड़ आयो, राजा राज 'भीम' री जमायो मारुराव।

—वीसनसिंघ कूंपावत री गीत

वीरज-सं. पु [सं. वीर्य] १ सब धातुओं के अंत में निर्मित होने वाली शरीर की सात धातुओं में से एक धातु, शुक्र, रज। (डि. को.)

उ०—१ जस भगति जादव जांणि, बणराय रोम वखांणि। वपु वरण वीरज वारि, नह वेर रांमा नारि। —पी. ग्रं.

उ०—२ तरुवर साखा मूळ बिन, रज वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ सो दादू गहिता। —दादूबांणी

२ किसी पदार्थ का सार भाग। (वैद्यक)

३ पराक्रम, तेज।

४ बल, सामर्थ्य, वीरता।

५ अन्न आदि का बीज।

६ पुंसत्व, प्रजनन शक्ति।

७ साहस, दृढ़ता।

८ फुर्तिलापन, स्फूर्ति।

९ आभा, कान्ति, चमक।

[सं वीर्य्यज] १० पुत्र, बेटा।

वि०—१ निर्मल, स्वच्छ।

उ०—संग सखी सीळ कुळ वेस समांणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजति राजकुंअरि रायअंगण, उडीयण वीरज अंब हरि। —वेलि

रू भे—वीरज वीरय, वीरय्य, वीरय्यज, वीरिय, वीरय।

वीरजा-स. स्त्री.—वीरांगना।

वीरजित-सं. पु. [सं.] मगधवंशीय सत्यजित् राजा का पुत्र विश्वजित्।

वीरजिन—सं. पु.—भगवान् महावीर स्वामी के लिए प्रयुक्त शब्द ।
—(स. कु.)

वीरजु—देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—हथनाळि हवाई कुहक बांण यांको सोर प्राघात होण लागी वीरजु वडा वडा जोधा । त्यां को वीरहाक होण लागी । गय हस्ती त्यां को गहणि हुई । —वेलि टी.

वीरडौ—देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—टीबा प्रोलटी बड़ो जी राजयं बाई बसवा एक रूसड़ी जाय । बाहिर से प्रायो मेरो वीरडौ जी यं राज गोरी प्रांगण ए क कीचड़ क्यूं । —लो. गी.

वीरण—सं पु. [सं.] चाक्षुक मन्वन्तर का एक प्रजापति ।

वि० वि०—इसको प्रसिक्नी (वीरिणी) नामक कन्या का विवाह दक्ष के साथ किया गया था जो ५००० पुत्रों की माता थी । इसे सात्वत धर्मका ज्ञान सनत्कुमार के द्वारा प्राप्त हुआ था जो इसने आगे चलकर रैभ्य ऋषि को दिया था ।

२ कांस नामक तृण ।

वीरणक—सं. पु. [सं.] जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ, धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग ।

वीरणि, वीरणी—सं. पु. [सं. वीरणि] याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य एक प्राचार्य ।

वी'रणौ, वी'रबौ—क्रि. अ.—१ विस्मरण होना, भूलना ।

२ देखो 'विहरणौ, विहरबौ' (रू. भे.)

वी'रणहार, हारौ (हारी), वी'रणियौ—वि० ।

वी'रिग्रोड़ो, वी'रियोड़ो, वी'र्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वी'रीजणौ, वी'रीजबौ—भाव वा० ।

वीरत—स. स्त्री. [सं. वीरत्व] वीरता, बहादुरी, शौर्य, बल ।

उ०—१ मन भावै चलै खत्रीवट मारग, वीरत दावै घडा वरै । राजापती 'जसो' महाराजा, कमंध सुहावै जकूं करै । —नाथो सांदू

उ०—२ बडं बडे नरनाह, सं न घण संभळी, प्रानंद हुवो उछाह, कपूडो ऊछळी । वीरत कीरत बात, पिरथि सिर वापरी, प्रायो प्रोरंगाबाद, फतह कर प्रापरी । —महाराजा पदमसिंहजी री बात

उ०—३ वीरत कीरत बंस वित, मत मोजां गुण मांन । मप सुलच्छण धरम सुल, व्हेयां प्रघ सूं हांण । —बां. दा

उ०—४ सुर सरत धर सिर भरत सर, पळ चरत पळचर प्रचत प्रत । मिळ प्रछर हरखत चित महृत, पख निरख वीरत वरत पत ।
—र. रू.

उ०—५ तेज वडं तखतेस रा है हिंद दिवाकर, तुज सराह न को तुलै बे राह बराबर । देख खळां उर ताप व्है प्रजसै सैणां उर, वीरत मलपण वीटियो 'परताप' बहादुर । —मोडजी प्रासियो

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

वीरतराय—स. पु.—विजययाधिपति, श्रेष्ठवीर । (वं० भा०)

वीरतवंत—सं. पु.—१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—प्राद 'जसो' धन प्राख दाख दूजो यसवल नर, वीरतवंत सिद्धरावत करसी घण । रख नारायण हृदै सांडसिंघ घण जुध स्रावज, विकरम करम वखांण करण मारण मोटा कज । —पा. प्र.

२ बलवान, शक्तिशाली ।

वीरता, वीरताई—सं. स्त्री.—१ वीर होने का भाव; वीरत्व, बहादुरी ।

उ०—१ खेल वीरता खेलणा, प्रस ठेलणा प्रपल्ल । 'पतो' हुवै भल जास पख, झुकतो लं नभ भल्ल । —जैतदांन बारहठ

उ०—२ वीरता, सच्चाई प्रर हिढता तो इणारं प्रागै पांणी भरै । म्हनै तो सुण सुण नै इचरज व्है कै प्रां नाकुछ गुणां रा प्रबूझ मिनख कैडा कैडा बखांण करिया है । म्है तो भगवांन री भगती नै ई इणारै सांमी फुतरका जितो गिणूं । —फुलवाड़ी

उ०—३ इण तरै प्रापरा धरम री कुळ री मरजाद री धरती री रिछ्या करणी प्रौ रजोगुण कहीजै सो जिकां में रजोगुण नहीं (प्रभिमांन) तिकां नै प्रै दोहा सुण वीररस उपजै नहीं क्यूं कि वांमे वीरताई री उफांण नहीं । —वी. स. टी.

उ०—४ इसी वीरताई है सो प्राकां रा ही झूंपड़ा न देवै । वडा वडा राजाप्रां गढ दे वीरता री मरजाद खोय दी परंत इण वीर री ईसी वीरता प्रादि राजपूती प्रडग है । —वी. स. टी.

२ बल, पराक्रम ।

३ वीरता का कार्य, वीरतापूर्ण कार्य ।

४ जोश ।

उ०—झळक नवरंग जरकस बसण भूखणां, तेज धन धगन मुख वीरताई । 'जगाहर' 'भीम' वर लगन बिलसी ज्यूंही, प्रगन झळ घसण मन मगन प्राई । —किसनो प्राढो

रू. भे.—वीरत, वीरता, वीरताई, वीरतो, विरत्ति, विरत्ती, वीरति, वीरती वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती ।

वीरति, वीरती—१ देखो 'वीर' (४२, ४३, ४४, ४५, ४६)
(अल्पा., रू. भे.)

उ०—राति जगावै वीरती, दिन को लेवै नींद । हरीयो कहै कुरांड कूं, क्यूं करि मुई उनींद । —प्रनुभववांणी

२ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—जांनकीनाथ समराथ जाहर जगत, चुरस धमचक रचण वीरचाळा, वसै खेत वीरती । तालड़ा जोध प्रारोड़ दसरथ तणा, कोजियं किसो प्रप जोड़ काळा, कहै जगत कीरती । —र. ज. प्र.

उ०—२ खळ वळ समर खपावत, कित्र जण गावत कीरती। सीना बाहर सभता बसुधा जाहर वीरती। —र. ज प्र.

उ०—३ नरां नरिंदा पार न लब्भे, वीरति सूरम विठेवा विब्भे। साह तणो घर फाटो सब्भे, ऊपर माड पडे की थब्भे। —गु. रू. ब

उ०—४ वीरति मुख सूरति विळकुळिय, कमधज तेज कमळ कळमळय। किगन वरण माभिल कठळिय, सूरज किरण जाण भळहळिय। —गु. रू. बं

उ०—५ वह बिना कामति न को वीरति, पिंड हुई मत जाय संपति। हमें इण भति धरो हिम्मति, पुळो पर खिति रहो नरपति। —रा. रू.

वीरत्त, वीरति, वीरत्ती—देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—१ जळ महि तो समर अपर जन, सर 'प्रताप' समरत्थ। वर्ण न को निरबीज भुव, त्यां कमधां वीरत्त। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ वीरति विठेवा विळकुळे यं, मुख राग मुख भूंहां मिळे यं। चख लाल कीध मुख कीध चोळ, कळकळे तेज विकसे कपोळ। —गु. रू ब.

उ०—३ माराहरो कुळिभाण करिवां दियें केकाण, वाचीजं बडा बखाण प्रथमी प्रमाण। मारको अमलीमाण जाडे जोध जुवाण, वीरति दति विनाण आण जाण जाण। —ल. पि

वीरथाट—सं. पु.—सेना, फौज। (अ. मा.)

वीरदांण—स. पु.—देखो 'बिरद' (मह., रू. भे)

उ०—माथे सत्रा खांपां घाबे नवावे जिहांन माथे, दमु दसा मोभाण छवायो वीरदांण। जोहान जांणी जोम छतं 'नाहरेस' जायो, अजठी ऊठाय आयो आये ही आयाण। —कमजी दघवाड़ियो

वीरदेत, वीरदंत—देखो 'विरुदेत' (रू. भे.)

वीरद्युमन, वीरद्युम्न—स. पु. [सं वीरद्युम्न] भूरिद्युम्न नामक राजा का पिता, प्राचीन वीर नरेश।

वि० वि०—अपने खोये हुए पुत्र भूरिद्युम्न को खोजते हुए यह तनुविप्र नामक ऋषि से मिले एवं आशा-निराशा से सम्बन्धित तत्त्वज्ञान पर संवाद किया था।

वीरधनव, वीरधन्वा, वीरधन्वन—स. पु. [सं. वीरधन्वन्] १ महाभारत युद्ध में कौरव पक्षीय त्रिगर्त देश का राजा, जो धृष्टकेतु के हाथों मारा गया था।

२ कामदेव का नाम।

३ धृष्टराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

४ चेदी नरेश का नाम जो दशार्णराजा की पुत्री सुदामा ने पति थे।

वि० वि०—नल की पत्नी दमयन्ती इन्हीं के यहां रही थी और वहीं से उसे कुंडिनपुर वापिस लिवा ले गये थे।

५ अत्यंत पराक्रमी भुजाओं वाले भगवान्।

वीरधरमन, वीरधरमा—स. पु [सं वीरधर्मन] भारतीय युद्ध में पांडव-पक्षीय एक राजा।

वीरनंद, वीरनंद—सं. पु. [सं. वीर+नंद] वीरों की सन्तान, वीरपुत्र।

वीरनाद सं. स्त्री. [सं.] वीरध्वनि, वीरगर्जना।

उ० अरुण गुलाब अबीर उडायो, सस्त्र पिचरका छिब सरसायो। वीरनाद सोड चंग वजायो, रंग फाग सम जंग रचायो। —ऊ. का.

वीरपउंतार—वि.—वीरों को उत्साहित करने वाला, वीरों को जोश दिलाने वाला।

उ०·········मेघाडंवर छत्र, गंगायमुना चमरं, मृदावताग सींकि-रिघोरंघार, गयदमकक, गयद्वहबोल रायविभाड रायपंवायण राजा बहठड मड, डावइं पखइं मंत्रि, वीरपउंतार दीवटिया वयगरणा यंत्रवाहक चमत्कारि छडायना········· । —व. स.

वीरपण, वीरपणौ—सं पु—वीरत्व, वीरता, शूरता, बहादुरी।

उ०—१ एक वीर स्त्री आपरा पती रो वीरपणो देख मस्त हुई कहै छै ए मनी देख म्हारो पती सिंघ होवै जंडो छै—मो सत्रु ऊपरै आवण रो मनो करै पण पग पाछा पडै है छाती धडकै। —वी. स. टी.

उ०—२ 'पता' अंग बण वीरपण, निज वाळापण नेह। जाण जवाहर रंग जिम मेटे नहीं मिटेह। —जैतदांन बारहठ

रू. भे.—वीरपण वीरपणौ।

वीरपरा—स. स्त्री.—सोलंकी वंश की एक शाखा।

रू भे.—वीरपुरा

वीरपरौ—सं पु.—सोलंकी वंश की वीरपुरा शाखा का व्यक्ति।

रू. भे —वीरपुरौ

वीरपांण, वीरपान—सं. पु. [सं. वीरपानं] एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ, जो योद्धा युद्ध में जाते समय या युद्धोपरान्त थकावट मिटाने हेतु पीते थे।

वीरपाटी—सं. पु. - वीररस की विद्या।

उ० —पढियो वीरपाटी पांव आरांण न दिया पाछा, ताखा लाटी वैठो ही उगती मूछां ताण। बाप खाटी मेटनी ऊजळा रूकां पांण बाणो, राज दाटी भुजा रै भरोसै भाला रांण। —माधौसिंह भाला रो गीत

वीरपुरा—देखो 'वीरपरा' (रू. भे.)

उ०—सोळंकियां री साख री विगत—दारिया, भाणगोती, वाघेला, लराहा, बालणोत, वीरपुरा, नाथावत, बाराह, खाजीय इत्यादि है। —बां. दा. ख्यात

वीरपुरी–सं. स्त्री.–१ श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया या तृतीया के बाद आने वाले सोमवार को मनाया जाने वाला उत्सव ।

२ वह नगर जहां वीर अधिक रहते हों ।

रू. भे. – वीरपुरी, वीरपुली, वीलपुरी, वीरपुली ।

वीरपुरी—देखो 'वीरपरी' (रू. भे.)

वीरपुली—देखो 'वीरपुरी' (रू. भे.)

वीरप्रसविनि–सं. स्त्री. [सं.] १ वीर पुत्रों की माता ।

२ पृथ्वी जहां वीर उत्पन्न होते हों ।

वीरप्रसु, वीरप्रसू–सं. स्त्री. [सं. वीरप्रसू] १ वह स्त्री जो वीरसतान को जन्म देती हो ।

२ वह भूमि जहां वीर उत्पन्न होते हों ।

वीरबळी—देखो 'वीरबळो' (रू. भे.)

वीरबहूटी, वीरबहोड़ी–सं. स्त्री.—वर्षा ऋतु में पाया जाने वाला लाल रग का कीड़ा विशेष, इद्रवधु ।

उ०—वीरबहूटी आज ही भुव पं मखमल भांत, सांप्रत सांवण तीजणी खूब करी सब ख्यांत । —लो. गी.

रू. भे. – वीरबहूटी

वीरबांणी—देखो 'वीरवांणी' (रू. भे.)

वीरबाहु–सं. पु. [सं.] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

२ महाभारत युद्ध में भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

३ चेदीनरेश जो दशार्णराज सुदामन् की कन्या का पति था ।

वि० वि०—इसकी पत्नी नल की परित्यक्ता पत्नी दमयन्ती की मौसी थी और नल के छोड़ देने पर दमयन्ती इसी के पास रही थी । इसके पुत्र का नाम सुबाहु एव कन्या का नाम सुनंदा था ।

४ राम-रावण युद्ध में राम पक्षीय एक वानर ।

५ गन्धर्व, जिसने तक्षक से युद्ध किया था ।

६ लंकानरेश रावण के एक पुत्र का नाम ।

७ परम विष्णुभक्त काम्पिल्य नगर का राजा, जिसकी पत्नी का नाम कान्तीमती था, जो पूर्वजन्म में भी इसी की पत्नी थी ।

वि.—जिसकी भुजाएें पुष्ट अथवा मजबूत हों ।

वीरभदर, वीरभद्द, वीरभद्र–सं. पु. [सं. वीरभद्रः] १ श्रेष्ठ एवं प्रसिद्ध वीर, योद्धा ।

२ वह घोड़ा जो अश्वमेधीय यज्ञ के लिए उपयुक्त हो ।

३ मनोभद्र नामक सोमवंशीय राजा के एक पुत्र का नाम ।

४ अविक्षित राजा की पत्नी निभा का पिता, एक राजा ।

५ यशोभद्र राजा का भाई ।

६ सुगन्धित घास, खस ।

७ भगवान् शंकर के क्रोध से उत्पन्न हुवा एक गण जिसने दक्ष यज्ञ को ध्वंस किया था ।

उ०—१ चावदंत दीह अगां समा जूझ लाग चाळै, नरा ताळै सामध्रमी तणौ साचो नेम । क्रोध वाळै रूप गनीमांण री विधूंस कीधी, 'बोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम । —बद्रीदास खिड़ियो

उ०—२ राति झाळ चखां चोळ काळी सल्हे काळ रूप, रुद्र वीरभद्र काळी करंतो आरोध । दोड़ियौ सांमहो देखै काथा सूं हरामी दूठ, जांणे बिनां माथा सूं बरूथ वाळो जोध । —करणीदांन कवियो

उ०—३ सू मध जेठ कळा धर सारी, आयो रवि ज्यौं किरण प्रकारी । पंड कोपियो किनां घार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूं-सण । —रा. रू.

उ०—४ सुणि कथ पदम सर्भ दळ साजा, रिण परणण उच्छव करि राजा । जटी वीरभद्र घणा जगाया, आठ हजार इसा भड़ आया । —सू. प्र.

वि० वि०—दक्ष यज्ञ में शिव के अपमानित होने के कारण क्रुद्ध होकर जटायें झटकने पर इसका निर्माण हुवा । मतान्तर से क्रुद्ध शिव के सिर से टपकी बूंद के पृथ्वी पर गिरते ही इसका निर्माण हुआ । कई जगह शिव के मुह से उत्पन्न होने या स्वयं शिवावतार होने की कथा प्रचलित है । शिवाज्ञा से इसने दक्षयज्ञ को विध्वस हेतु अपने रोमकूपों से रौम्य नामक रुद्रगणेश्वरो की सृष्टी की थी । दक्षयज्ञ के बाद यह शिव सेनापति भी था । इसने शिव-जालधर युद्ध में भी अपने पराक्रम को दिखाया । समस्त देवगणों व कश्य-पादि ऋषियों के दावाग्नि में भस्म हो जाने पर मत्रों से सिद्ध भस्म से इसने उन्हें पुनर्जीवित किया था । इसी प्रकार सांप व पचमेढ़ू नामक राक्षस के द्वारा देवताओं के निगल लिए जाने पर इसीने उन्हें पुनर्जीवित किया था । हिरण्यकशिपु के उदर-विदीर्णोपरान्त विश्वसंहारार्थ उद्यत नृसिंहावतार का भी इसी ने दमन किया था ।

रू. भे.—वीरभद्र ।

वीरभद्रक–सं. पु. [सं.] गौडदेशाधिपति, जिसकी पत्नी का नाम चपक-मंजरी था ।

वीरभाव–स. पु.—१ बहादुरी, वीरता, शौर्य ।

२ बल, पराक्रम ।

रू. भे.—वीरभाव ।

वीरभूम, वीरभूमि, वीरभोम–सं. स्त्री. [सं. वीरभू, वीरभूमि] १ युद्धस्थल, युद्धक्षेत्र ।

२ वह भूमि जहां वीरों के जन्म अधिक होते हों ।

३ श्मशान ।

रू. भे.—वीरभोम ।

बीरमंत्र-स. पु. [स. वीर+मंत्र] श्मशान भूमि में भूत-प्रेत एवं वीरों को जगाने का मंत्र।

उ०—अराध बीरमंत्र एक, साधनं सधीत रा। सिखंत भेद कोकसार, सामत्रं मधीत रा। —सू. प्र.

बीरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

बीरमणि-स. पु. [सं.] १ देवपुर का राजा जिसके पुत्र का नाम रुक्मांगद था।

वि० वि०—राम के भाई शत्रुघ्न एवं इसके पुत्र रुक्मांगद में राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ लेने के कारण युद्ध हुआ था। इस युद्ध में शिव शंकर इसके पक्ष में थे जिन्होंने शत्रुघ्न को पाश में बांध लिया था, किन्तु रामचन्द्रजी ने छुड़ा लिया था।

२ एक परम शिवभक्त राजा, जिसके श्रुतवती नामक पत्नी थी।

वि० वि० इसकी प्रार्थना सुनकर स्वयं शिव ने योगिनियों से युद्ध किया था किन्तु अन्त में इसकी हार हुई।

बीरमति, बीरमती-सं. स्त्री. [सं वीरमती] भारतवर्ष में बहने वाली एक प्राचीन नदी का नाम।

बीरमत्स्य-सं. स्त्री. [सं.] एक जाति विशेष। प्राचीन)

बीरमदे-स. पु.—भाटी वंश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

बीरमपोता-सं. पु.—चारण जाति के याचक ढोलियों की एक शाखा। (मा. म.)

रू. भे.—बीरमपोता

बीरमपोतो-स. पु.—चारण जाति के याचक ढोलियों की 'बीरमपोता' नामक शाखा का व्यक्ति।

बीरमरदन-स. पु. [स. वीरमर्दन] एक दानव का नाम। (पुराण)

बीरमहर-स. पु.—राजा के पार्श्ववर्ती लोगों में से एक।

उ०—''''''अंगमरद चूर्टिकार चाटुकार उपानहधर श्रृंगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक अंककार फलिहकार मल्लयोद्ध सस्यपाल बालबंध अंगरक्षक बीरमहर धनुरद्धर खडगधर दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक''''''''। —व स.

बीरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

बीरमात, बीरमाता-स. स्त्री. [स. वीरमातृ] १ वीरपुत्रों की माता।

१ वीर नामक गणेश की माता।

३ पृथ्वी।

४ शत्रुओं का संहार करने वाले वीरों की रक्षा करने वाली देवी।

बीरमारग-स. पु. [सं. वीरमार्ग] वीरों को वीरगति प्राप्त होने के बाद मिलने वाला स्वर्ग, बैकुंठ।

बीरमुदर-सं. पु.—राजा के पार्श्ववर्ती लोगों में से एक।

उ०—''''''''''बीरमुदर धनुरद्धर खडगधर उपानहधर श्रृंगारधर स्थगिताधर चित्रक दंमालिक मसूरिक दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक नरवैद्य''''''''''। —व. स.

बीरमुठ—देखो 'बीरमूठ' (रू. भे.)

उ०—वडावास था कोस ०, उगोण मांहै। सूनो खेड़ो छै। दस गाव सांगाणजी री बारैठ भैरव नीबाबत रोहड़िया नै। बीरमुठ सांसण दीयो। हमैं गजसी नरावत नै माधौ मेवाहरोत छै। —नैणसी

बीरमुद्रिका-सं. स्त्री. [स. वीर+मुद्रिका] पैर की बीच की अंगुली में पहनने का छल्ला।

बीरमूठ-स. स्त्री.—किसी राजा द्वारा कवि को दिया जाने वाला नकद पुरस्कार जो एक मुस्त रुपयों के ढेर में से दोनों हाथों की मुट्ठी भर कर उठाया जाता था।

उ०—सालवाहण जेसळ संभ्रम, कवियां दाळिद्र कप्पियो। करि बीरमूठ बूजो मुकन, गिर बारहठ थप्पियो। —नैणसी

रू. भे.—बीरमुठ।

बीरम्रदग-स. पु. [स. वीरमृदग] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—बीरम्रदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहते त्रंबक तणे त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुंगल तणे भूभूदाटि भूकिइं भिलकि फाटी''''''''''। —व. स.

बीरय, बीरय्य-१ देखो 'बीर' (रू. भे.)

उ०—बीता श्रधूरां वार पूरां वेध सूरां वच्चए, सेलें प्रहारं धार सार मार मार मच्चए। बग्गा खड्गां दूह वग्गं काळ रगं बीरयं, मछरा उमगं दूर श्रगं चाव रगं चीरयं। —रा. रू.

२ देखो 'बीरज' (रू. भे.)

बीरय्यज—देखो, 'बीरज' (रू भे.)

बीररथ-सं. पु. [स.] द्विमीढवंशीय बहुरथ राजा का नामांतर। यह नयंजय राजा का पुत्र था।

बीररस, बीररस्स-सं. पु.—१ पीला पीतक। (डि. को)

२ देखो 'बीर' (३८) (रू भे.)

उ०—१ 'पातल' री वग ऊपड़ी, श्रजड फडी भक भाट। बड़ी बड़ी वग बीर री, घड़ी बीररस घाट। —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ ऊगसै कमध लागो उरमि, राजा चढियो बीररस। उण वार लोह मूंहगो हुवो, मोना ही हूंता सरस। —सू. प्र.

उ०—३ विहेवा बधे दाखियों बीररस्सं, 'अरस्सी' हरो कूंत तोलै अरस्स। श्रोपै फोज माही अमरसिंघ तन्नं, किरं जांण लका दळं कूंभ क्रन्नं। —गु. रू बं.

रू. भे.—बीररस, बीरारस, बीरारम।

बीररेण, बीररेणु-सं. पु. [स. बीररेणु] पांडव पुत्र भीमसेन।

वीरलोक-सं. पु. [सं] १ स्वर्ग, बैकुंठ ।

२ वीरों को वीरगति प्राप्त होने पर मिलने वाला लोक।

वीरवंत, वीरवत-वि. [सं. वीरवत्] जिसमें वीर अधिक हों, वीरो से युक्त ।

उ०—तुम्हे करवउ धरम, पणि नथी जाणता मरम। सांभलउ वन तें वणवीइ जे व्रक्षवत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे **वीरवत**, सरोवर ते जे कमलवत, मेघ ते जे समावंत महात्मा ते जे क्षमावत, प्रसाद ते जे धजावत, धरमी ते जे दयावंत, प्रादि । —वाग्विलास

सं. पु —१ सावर्णि मनु का एक पुत्र । २ ब्रह्मसावर्णि मनु के पुत्र का नाम । ३ साध्य देव ।

वीरवर-वि —श्रेष्ठ वीर, योद्धा, बलवान ।

उ०—१ व्रजनाथ लिखमी सग वंठौ, आरांग वाणां ऊफणै डिगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि कूरम पीठ जादम डाहळ जोरवर वाजिया खागं **वीरवर** । —जगो खिड़ियो

उ०—२ दिखणी पतसाह राह दोय द्रोमझि, कढ़ि आवध आविया कसि । वेम कहे धरि चाल **वीरवर**, समर कहै मरणो अवसि ।
—सुजांणसिंघ जगन्नाथोत कछवाहा री गीत

उ०—३ वडम पराक्रम **वीरवर**, विहर निडर बळ बांह । सर 'प्रताप' केई सुखी, छत्रधर तो कर छांह । —जैतदांन बारहठ

सं. पु.—१ तालध्वज नरेश माधव की पत्नी सुलोचना के द्वारा पुरुष धारण किया गया नाम ।

रू. भे.—वीरबर, बीरवर, वीरव्वर ।

२ देखो 'वीरबळ' (रू. भे.)

उ०—'पीथळ' सू मजलिस गई, तानसेन सूं राग । रीझ बोल हस खेलबो, गयो **वीरवर** साथ । —प्रग्यात

वीरवरत—देखो 'वीरव्रत' (रू भे.)

वीरवरती—देखो 'वीरव्रती' (रू. भे.)

वीरवरद-स. पु.—शिव, शंकर, महादेव । (क. कु बो.)

वीरवरमन-स. पु. [स. वीरवर्मन्] १ सुभाल, सुलभ, लोल, कुवल एवं सरस का पिता एवं यम की पुत्री मालिनी का पति, सारस्वत नगराधिपति एक राजा ।

वि० वि०—इसने पाण्डवों का अश्वमेधीय अश्व को रोक कर अपने श्वसुर यम की सहायता से कृष्णार्जुन से घोर सग्राम किया था । फिर कृष्ण ने इससे संधि की थी ।

२ द्रविड देशाधिपति, एक राजा, जिसकी पत्नी हेमांगी पूर्व जन्म मे मोहिनी नामक अप्सरा थी ।

वीरवांणी, वीरवांनी-स. स्त्री.—वीरध्वनि, वीरगर्जना ।

उ०—कलकार **वीरवांणी** कजाक, हलकार दुहूं बलबाज हाक । धानक टकार भलकार धोह, ललकार मार अणपार लोह । —वि. सं

रू. भे.—वीरवाणी

वीरवांनी-सं. स्त्री—स्त्री, औरत ।

उ०—सोनै री थाळी में लोहरी मेख मारणी ही तो म्हां सूं क्यूं भिड़यो ? इसी वेगी ही भागवांनी हुगी खतम ? सोधा ही काखां मैं गोळिया दुई । पण म्है ही वाजीदा हां ! आगलै री ग्यान लेवता ही को सका नी ! इसो बनड़यां रो नादीद ही कोनी ! आ ही नहीं लाधी ! एक एक बंदै लारी चार-चार **वीरवांनी** बैठी है । कुंआरपणो उतर ग्यो । अबै भलां ही बाप आपरी बेटी नै काठी राखो । —दसदोख

वीरवाहण, वीरवाहन-सं. पु. [सं. वीरवाहन] १ ब्रह्महत्या से पीडित एक राजा ।

२ विराध नगरी का एक राजा जिसने वसिष्ठ ऋषि के साथ धर्म सम्बन्धी चर्चा की थी ।

वीरविक्रम-सं. पु.—एक शूद्र जिसकी कन्या का विवाह एक चाडाल के साथ हुआ था ।

वीरविद्या-स. स्त्री —१ वीरों अर्थात् श्मशानो मे भूतो व प्रेतात्माओं को जागृत करने की विद्या, मंत्र-तंत्र ।

उ०—नको सुपन जागं नको सुखपती, नको पद तुरिया नको मोख मुगती । नको भूत प्रेतं नको **वीरविद्या**, नको काळ जाळं नकोउ अविद्या । —अनुभववांणी

२ युद्धविद्या ।

वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधो—देखो 'वीराधिवीर' (रू. भे.)

उ०—१ कूंपा राम सकज्ज, जैतधारी जैतावत । 'बाघ' 'फता' वेढ़कां **वीरवीराध** निजावत । —रा रू.

उ०—२ धड़ै साबकै जोर सूं खाग धारां, हुयै चोट बारी हजारै हजारां । वडा वीरवीराध वाकार वाहै, सु तो सामुहै चाचरं वाहि स है । —रा रू.

उ०—३ मयण कांम मूरत्ति, गात गिरवर वीभाचळ । वडो **वीरवीराधि**, सिंध रूपी सहंस बळ । —गु. रू. बं.

उ०—४ छऊ भेन छोटी दहूं ओड छाजै, बिचै पाट राजीव माजी विराजै । लड़ो लांगड़ो **वीरवीराधि** लेतू, करै रागड़ा छागड़ां राह केतू । —मे. म.

वीरवैताळ-वि.—उत्पात करने वाला, बदमाश, शैतान, उद्दंड ।

उ०—कहै अचूको ओर कथ, भलो 'काळो' भूपाळ । म्है तो सब जग मोहिओ, तू तो **वीरवैताळ** ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

वीरव्रक्ष, वीरव्रख-सं. पु. [सं. वीरवृक्ष] अर्जुन नामक वृक्ष का नाम ।

वीरव्रत, वीरव्रती-वि. [स.] अपने संकल्प पर दृढ़ रहने वाला ।

२ बहुत ही निष्ठा एवं आचारपूर्वक रहने वाला, निष्ठावान ।

सं. पु.—मधु राजा एव सुमना के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जो

मंधु एवं प्रमंधु का पिता एवं भोजा का पति था । (पुराण)

रू. भे.—वीरवरत, वीरवरती ।

वीरव्वर—देखो 'वीरवर' (रू. भे.)

उ०—'जोधा' 'चांपा' 'भला', भला मणि 'डूंगर' 'भाखर' । 'मांडण' 'महळा' 'करन', बरण फौजां वीरव्वर । —गु. रू. बं.

वीरसंग–सं. पु. [सं. वीर–शृङ्ग] ४९ क्षेत्रपालों में से ३९ वां क्षेत्रपाल ।

वीरस—देखो 'विरस' (रू. भे.)

उ०—पछै राव मालदे तो मेड़ता मार्थ कटक कोई नंह कीयो । तठा पछै मास ८ राव मालदे संमत १६१९ रा काती सुदी १२ काळ कीयो । राव चंद्रसेन पाट बैठो । मु चंद्रसेन रै भाई भाभीया जोर लागा । रजपूत नै रिणमल नै राव वीरस हुग्रो । राव चंद्रसेन तो मेड़तै रो नांव लीयो नहीं । —नैणसी

वीरसजा, वीरसज्जा—देखो 'वीरसय्या' (रू. भे.)

वीरसयन–स. पु. [सं. वीरशयन] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र ।

वीरसय्या–स. पु. [सं. वीरशय्या] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र ।

रू. भे.—वीरसजा, वीरसज्जा

वीरसरमा–स. पु. [सं. वीरशर्मा] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण जो कुशिक वंशोत्पन्न लक्ष्मी नामक कन्या का पति था ।

वि० वि०—इसके तीर्थयात्रा पर जाते समय इसकी पत्नी गर्भवती होने के कारण इसने उसे राजा तोंडमान के यहां छोड़ दी थी । राजा ने छ: माह की भोजन सामग्री भरवा दी और फिर भूल गया । ब्राह्मणी ने स्वाभिमानवश भोजन मांगा नहीं और वहीं मर गई किंतु इसने दो वर्ष बाद उसे वेंकटाचल पर स्थित अस्थिकूट सरोवर में स्नान करवा कर जीवित कर लिया था ।

वीरसिंघ, वीरसिंह–सं. पु. [सं. वीरसिंह] वीरमणि राजा का पुत्र एवं रुक्मांगद का भाई एक राजा, जिसने राम के अश्वमेघीय अश्व को रोक कर शत्रुघ्न से युद्ध किया था ।

वीरसुता, वीरसुया–वि. [सं. वीरसुता] वीर पुत्रों को जन्म देने वाली, वीरप्रसू ।

उ०—एक वीरसुया सती आपरा पुत्र नै हींडा देती थर री रीति सिखावै है । —वी. स. टी.

सं. स्त्री.—१ वीरबाला, वीरस्त्री ।

२ भूमि जहां वीर अधिक उत्पन्न होते हैं ।

रू. भे.—वीरसूया

वीरसू–सं. स्त्री. [सं.] १ वीर पुत्र प्रसव करने वाली स्त्री ।

२ वह भूमि जहां वीर अधिक उत्पन्न होते हैं ।

वीरसूया—देखो 'वीरसुता' (रू. भे.)

उ०—१ हूं वां वीरसूया (वीरमाता) वां रांणियां री कूख नै बळिहारी जाऊं और वां रांणियां री बळिहारी भूंण (गरभ) हीज वां में कांई तरै सिखाण देवे है सो दाई रा हाथ री नाळो काटण री छुरी नै साव (जन्मतो) हीज बाळक झपटै । —वी. स. टी.

उ०—२ कोई एक वीरसूया (वीर री मा) आगल पुत्र नै ललकारै छै । अरै पूत म्हारी ऊमर खोय आं थणां रो दूध पाय अणा दुख सूं पाळ मोटो कियो सो आ आस हो के । —वी. स. टी.

वीरसेन, वीरसेन–सं. पु.—१ युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि । २ एक सूर्यवंशी राजा । ३ निषध देशाधिपति नल का पिता । ४ दक्ष राजा का श्वसुर । ५ वसुदेव की धारणी राणी का पुत्र । ६ कृष्ण-बलदेव के २१ हजार कंकणधारी वीरों के प्रमुख अग्रेसर । ७ ऋतुपर्ण राजा का पुत्र एवं सुदास राजा का पिता, एक राजा । ८ तीन राजसूय यज्ञ एवं सोलह अश्वमेघीय यज्ञ करने वाला अवंती नरेश । ९ आलुबुखारा । १० हिमालय में होने वाली आड़ नामक जड़ ।

रू. भे.—वइरसेन ।

वीरस्थान–स पु. [सं. वीरस्थान] १ स्वर्ग, वैकुंठ ।

२ देखो 'वीरासन' (रू. भे.)

वीरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—कहि चालउ गोरी करइ वीरह वेदन नवि जांणइ कोई । जगुं राजा रांणी मिलइ, यु ईणि कलि मिलजे सब कोई । —वी. दे.

वीरहक, वीरहक्क, वीरहक्को—देखो 'वीरहाक' (रू. भे.)

उ०—१ खग भट विकट युवद खड़क, डहकत डारण वीर डहडक । गति घण गैहक छायीयं गयणक, 'हींरा' ऊपरि वीरहक ।

—हीरा मांगळिया रै जुध रो गीत

उ०—२ चत चंन थकां नत चोक चोहटं, सुनतु पुठै वहै सक । समहर समहर मोहर सुजीयां, हुम्रै हुवंती वीरहक ।

—सूरजमल करमसोत रो गीत

उ०—३ घुवै सार मारं धवै धार धार, हुवै वीरहक्कं हजारं हजारं । छटा ज्यों विछुटै भुजै सेल छूटं, खगं भ्रंग तूटै अनोभ्रम खूटं । —रा. रू.

उ०—४ नवकोट सुभट कुळवट निहार, संग्राम अड़प न्रप छळ सभार । हुई धीर सधीरां वीरहक्क, हर सकति डक डमरू डहक्क ।

—रा. रू.

उ०—५ ऊठ्यो दिलो हूं औरंगसाह एक राह तणें आंट, महाबाह बिहूं राहा मेटबा अजाद । धका धकां चहू चकां हूचकां खड्‌ग धारा । वीरहक्कां हींदवां तुरकां भिड़ै वाद ।

—महारांणा जयसिंहजी द्वितीय रो गीत

वीरहव, वीरहवो, वीरहव्व, वीरहव्वो–सं. पु.—वीर, बहादुर ।

उ०—वीरहवा आपहमता, प्रभुता लियण प्रमाप । कविता रजपूतो कदर, तुहि करता 'परताप' । —जैतदान बारहठ

वीरहाक, वीरहाको–स. पु.—वीररसपूर्ण ध्वनि, ललकार ।

उ०—१ डमडमं सकति डम्मरू डाक, है-थाट हुब्ब हुय बीरहाक। गढि मडे भेर दम्मांम गज्ज, गयणगज बारह घण गरज्ज।

—गु. रू. बं.

उ०—२ हथनाळि हवाई कुहकबांण यांको सोर प्राघात होण लागो। वीरजु बडा बडा जोधा। त्यां की बीरहाक होण लागी। गय हस्ती त्यां की गहणि हुई। वेलि टी.

उ०—त्रह त्रहै त्रंबाळ जोगी त्रमंक, सींधवौ राग प्रगटंत संक। करि बीरहाक प्रोरै केकांण, मच राड़ि त्राड़ि गोळा मंडांण।

—मा. वचनिका

रू. भे.—बीरहक, बीरहाक, वीरहक, वीरहक्क, बीरहक्को।

बीरहोत, बीरहोतर, बीरहोत्र—सं. पु. [सं बीरहोत्र] १ विन्ध्याचल पर्वत पर स्थित एक स्थान।

२ हैहय राजवंश का प्राद्यपुरुष हैहय सम्राट।

बीरांगणा, बीरांगना—सं. स्त्री. [सं. वीरांगना] वीर स्त्री, बहादुर स्त्री।

उ०—वीरांगना वचन-ए ढोलण ढोली नूं कह इतरी ढोल री पलां (ढोल री पौह वा गत) मैं इतरी वयू ताकीद करै जोधार तो प्रापरा बाह घोडा नै चर चरवादार मालक रो घोड़ो सर्भ छै तै मालक है सो बगतर पहरै इतरी देर छै। —वी स. टी.

बीरांण वि०—१ वीरों का, वीरों से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

२ भयानक, भयावह।

सं. पु—१ युद्ध, समर, संग्राम।

उ०—चांदो ईसरदास सचाळो, 'विसन' सुजाव गढां रखवाळो। चाड धणी 'तेजल' चहुवांणै, वाधै 'चंद' तणो बीरांणै। —रा. रू.

२ देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत कमंधां प्रगळी, रूक वजायी 'रोहड़े'। बीरांण कि प्रारण बावरै, ज्यां घण तत्तै लोहड़े। —रा. रू.

उ०—२ दडोदड़ी तूट माथा कमंधां पांवडा देवै, रिमां सीस खाथा सार बजावै प्रारांण। हैकंपै कायरां प्रांण छूटगा बीरांण हांसै, भैचक्कै भूलोक रत्थां थंभायो सु भांण। —बादरदांन दधवाड़ियो

उ०—३ लोधां प्रासतीक रैणसिंग ऊबारै घड़ा रो लाडो, ऊबारो मढ़ालां नांम चाढो कुळां प्रब। गोरा रै प्रजटो बोल सांभळै बीरांण गाढो, खंगै ऊभो मैंदगाट प्राडो जेतखंभ। —कमजो दधवाड़ियो

उ०—४ मदभरां डांण नीसांण मौज, फरहरां बांण प्रसुरांण फौज। बीरांण रूप इण विध बणाय, प्रारांण भूप सनमुक्ख प्राय।

—वि. सं.

उ०—५ हिंदवांण तुरक्कांण हिचै, रिण ढांण बीरांण प्रतांण रचै। करड़क्क हुवै सिलहक्क कड़ां धमचक्क भचक्कत सेल धड़ां।

—सू प्र.

३ देखो 'बीरांन' (रू. भे.)

उ०—काळा सा मिरघलड़ाजी, थट ऊजळ पेटा। थोरी जाय करैजी बीरांणै खेता। —दीन सुदरदी

४ देखो 'बिडांणो' (रू. भे.)

रू. भे'—बीरांण, बेरांण, विरांण, बिरांन, वेरांण, वेरांन, बैरांण, बैरांन।

बीरांणी—स- स्त्री.—वीरता, बहादुरी।

वि०—१ भयानक, भयावह।

२ वीररसपूर्ण।

३ वीरों का, वीरों से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

उ०—रमै वीर हडुडै हालरै जमै जोगरांणी, वोम धोम मंडै बढै मेछांणी बैराक। पढै पाठ बीरांणी चीतोड़ थांन चढै पांणी, 'प्रडसांणीर' डैरोस ऊकडै प्रैराक। —महादांन महडू

४ देखो 'बीरांनी' (रू. भे.)

बीरांणो-१ देखो बीरांन' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'विडांणो' (रू भे)

बीरांन—वि० [फा. वीरान] १ उजड़ाहुप्रा, श्रीहीन।

२ जनशून्य, उजाड़, जंगल।

रू. भे.—विरांण, बिरांन, बीरांण, वेरांण, वेरांन, बैरांण, बैरांन,

मह.—बीरांणो, वेरांणो।

बीरांनी—सं. स्त्री. [फा. वीरान:] वीरान या उजाड़ होने की प्रवस्थां या भाव।

रू. भे.—बीरांणी।

बीरा—सं. स्त्री. [सं.] १ पत्नी, स्त्री।

२ वधू।

३ माता।

४ वीर पत्नी, वीर स्त्री।

५ बहिन, भगिनि।

उ०—उठै नीं, प्रै चारण बीरा, सूती छै सुखड़ा री नींद, थारी तो गायां मैं प्रै, खीची घोड़ा फेरिया। ज्यां तो गायां कै, प्रै चारण, तूं खेती गूगळ-धूप, ज्यां तो गायां कै प्रै खीची मारै कोरड़ा।

—लो. गी.

६ पुत्री, बेटी।

७ बड़ों या वृद्ध पुरुषों व स्त्रियों द्वारा पुकारा जाने वाला किसी कुलवधू या युवा स्त्री के लिए सम्बोधन सूचक शब्द।

८ स्त्रियों द्वारा वृद्धों के प्रतिरिक्त प्रन्यों को पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला संबोधन सूचक शब्द।

उ०—१ कै इता मैं मोड़ा रै बारै घोडा री हीस सुणीजी। कम-सल बात करतां ई प्रायग्यो। सेठाणी प्राडो खोल बोली—बीरा, थारी ऊमर तो लांठो। —फुलवाड़ी

उ०—२ सासरा री भगगी ढ़ळनां ई उगनै मडो मास्हो थकियो। सुगन तो भला व्हिया। वेल सूं हेटै उतर वा मुड़दा नै हाथ जोड़िया अेक खांधिया नै होळै सो'क पूछ्यो–बीरा, कुण चलियो।
—फुलवाड़ो

६ अंगुपुत्र भरद्वाज नामक अग्नि की पत्नी और वीर की माता।

१० वीर्यचद्र राजा की कन्या एव करधम की पत्नी जो अविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसने अपने पौत्र मरुत्त के द्वारा सर्पमत्र प्रारंभ करवाया था जिसे अविक्षित की पत्नी वैशालिनी ने अपने पति के द्वारा बन्द करवाया था।

११ मुरा, मुरामासी।

१२ केला।

१३ गेनुवा।

रू. भे.—बीरा।

बीराचारि, बीराचारी-सं. पु. [स. वीराचारिन्] १ अपने इष्टदेव की वीरभाव से उपासना करने वाले एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त।

२ वीर बहादुर या योद्धा का आचार, कर्त्तव्य।

उ०—इम आरोडिउ तपि जा करणु, पुरुख पराभवि सारू मरणु। दुरजोधनि तउ पभउ करीजइ, "बीराचारि कुलु जांणी-जइ।" —मालिभद्र सूरि

बीराजमान—देखो 'बिराजमान' (रू. भे.)

उ०—ठाकुरजी श्रीद्राऊजी रा मिंदर में सेवा तो महाराज अभैसिंघजी गुसाईंजी विठलरायजी १७८६ कोटै सूं लाय बीराजमान किया नै मिंदर रो मोटो कमठो मा'राज विजैसिंघजी करायो।
—मारवाड़ री ख्यात

बीरातन-सं. पु—१ बहादुरी, वीरता।

उ०—१ हणमंत द्रोण हिल्लोळवा, बीरातन किरि विळकुळै। दळथंभ विढण दसराधि सूं, ऐम ऊठियो भुज आंमळै। —गु. रू. ब

उ०—२ मुजड-हथा "चाद राउ" समोभ्रम, विधि श्रीरातन वेर विधि। रोपै जई पवगि आसण रिध, रिप तई भजै राज रिधि।
—राव रिड़मल रो गीत

उ०—३ मारण लियो उछाह, बीरातन वढ़ियो। मारू लोह मराट, चमू सभ्र चाढ़ियो। —किसोरदांन बारहठ

२ बहादुर, वीर, योद्धा।

रू. भे.—वीरायतन।

बीरावबीर, बीरादिवीर, बीरावीबीर—देखो 'बीराधिवीर' (रू. भे.)

उ०—कथ गुणो अेम 'विसनै' कमंध, मेड़तियै गूलरपत मदध। सामहो जाय मिळियो सधीर, विसनेस कमध बीरावबीर। —पे. रू.

बीराधपत, बीराधपति, बीराधपती-सं. पु.—[सं. वीराधिपति] वीरों में श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि, महावीर।

बीराधबीर—देखो 'बीराधिबीर' (रू. भे.)

उ०—१ मूछां अणी अूंह मेळ, दाढी कर दाखि जी। बिढसी बीराधबीर, सूर जिनै साखि जी। —गु. रू. बं.

उ०—२ वग्ग्वीर खूमाण बीराधबीरं, वळो-मूळ 'सादूळ' बंबै कठीरं। भलो भीच कल्याण मल्लो भुजाळो, 'मानावत' वेढोमणो मच्छराळो। —गु रू. बं.

उ०—३ अेळा उधमै अवाक भालां छाक डाक दे दे आंणां, धाडा धाड़ा आपाणां भरोसै भुजा धींग। चंद्रहास ऊवाणां बीराधबीर जांणां चौजां, दिली री कवाणी फौजा मांणी देवीसीग।
—राव देवीसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—४ बीराधबीर जिमा घोर पडिर। यांरी बी रजपुती असी आकाय। ज्यां सू जमराज पणि डेमत खाय। यां नै आंगवणि कुण करै। सिर उपर रूठा फिरै। —पनां

बीराधि-सं. पु—वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—जोगी तुझ नां जयो जूना जुवारी, महादेव माहेस असाकल मुरारी। महावीर बीराधि अेकलमलं, अधिक आप उदार दाता अदलं। —पी. ग्रं.

बीराधिबीर-सं. पु.—वीरशिरोमणि, महावीर।

उ०—१ सुत रूरुक हुवो अक पोह सधीर, अक सुतण बाहु बीराधिबीर। सुत बाहु सगर परगट संसार असमंज सगर सुत न्रप उदार।
—सू. प्र.

उ०—तेहे घोड़े किस्या विश्री चढिया। पंचवीस वरस ऊपहरा। पंचास वरस माहि। लुधसधानीक। बीराधिबीर। आकरणांत मुष्ठ। —का. दे. प्र.

उ०—३ बीराधिबीर, हेलां हमीर। 'मधुकर' सुतन्न, किरतव्व कन्न। र. वचनिका

रू. भे.—बिराधबीर, बीराधबीर, बीराधवीर, बीराधिबीर, बीराधि-बीर, वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी, बीरादबीर, बीरादि-वीर, बीरादीवीर, बीराधवीर।

बीरापाचम-सं. स्त्री.—भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी।

बीराबारस-स. स्त्री.—कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी।

बीराबीज-स. स्त्री—कार्तिक शुक्ला द्वितीया।

बीरायतन—देखो 'बीरातन' (रू. भे.)

उ०—रातल नगउं रुचिर सूरतांणि, वांचउ बीरायतन वखांणि। पदम नाभ पंडिति मति कही, बीजा खड समापति हुई।
—कां. दे. प्र.

बीररस, बीररसि—देखो 'बीर' (३८)

उ०—१ घणि वाजित्र घण घाउ, घमघमि अपछर घूघरा। बागा बीररस तणा, नाराजिमा निहाउ। —र. वचनिका

उ०—२ तुकमां रूप खतंम फतै रा फबिया, देखंतां उरदम भरंदा दबिया। विहसंतौ निज वदन बीरारस वेस रौ, दीपायौ हद दौर मुरद्धर देस रौ। —किसोरदांन बारहठ

उ०—३ बीरारस घण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोंण। सेल साबळ कुंत मुदंगर, उछळई प्रति सोण। —रुकमणी मंगळ

उ०—४ वींझाजळ रूप गयंद चढि मेघाडंबर विराजे। नौबतूं के निहाव बीरारस बाजे। जिस बखत जळाबोळ हालोहलसै फौज हल्ली। नालूं के निहाव सेतैं धरती धरसली। —सू. प्र.

बीराबी–क्रि. वि.—बीरों में।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां विरंच जांणं, धूरजटी तावां ऊंच भावां मेर धींग। श्रावा लोम रिखी रांम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, मांमवेद वेदांगां बीराबी सभूसींघ। —हुकमीचंद खिड़ियौ

बीरासण, बीरासन–सं. पु. [सं. वीर+आसनं] १ निगाह या चौकसी रखने की क्रिया, रखवाली।

२ युद्ध आदि में अधिक जोखिम वाला पद।

३ वीर सिपाही।

[सं. वीर+आसनं] ४ वीरों के बैठने का ढंग विशेष।

उ०–जिस अंमक सं बीरासन बैठा न गया, पिछाड़ी को हाथ टेक कर अगाड़ी पैर फैला दिया। जिस वक्त रघुनाथसिंघ अैसा निजर आया, मांनौं बुझी मसाल सा दीदार दिखलाया।

—दुरगादत्त बारहठ

५ पहरा दिया जाने वाला स्थान।

६ घुटना मोड़कर बैठने क्रिया।

७ योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमें बायें पाव को घुटने से मोड़कर इसके पंजे को गुदा के नीचे उत्तर दक्षिण आडा रखकर और दाहिने पाव की एड़ी बांये पांव के अंगूठे को लगाकर घुटने को छाती की तरफ ऊंचा करके बैठना होता है। हाथों या पावों के हेर फेर से इसका दूसरा प्रकार भी होता है।

उ०—एक आसरण अरु ऊकडू, पड़िमा काउसग्ग रात। पदमासन बीरासणो, रहै छकाया-नाथ। —जयवांणी

रू. भे.—बीरस्थान

बीरि–सं. स्त्री.—१ बहन, भगिनी। (ह. नां. मा.)

२ बीर स्त्री।

उ०—एक नारि रण नइ तडि ऊभी, बंधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि घाय पडतउ नवि जाणिउ, न्याय बीरू कुल बीरि वखांणिउ। —सालिसूरि

३ देखो 'बीरी' (रू. भे.)

बीरिणी–सं. स्त्री.—[सं] १ वह स्त्री जिसका पति एवं पुत्र जीवित एवं सुखी हो।

२ वीरण प्रजापति की कन्या एवं दक्ष प्राचेतस की पत्नी।

वि० वि०—इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगूठे से हुई बताते हैं। इसके एक हजार पुत्र एवं पचास कन्याएँ उत्पन्न हुई थी।

३ शुक्रपत्नी पीवरी का नाम।

४ ब्रह्मा की पौत्री एवं वीरसेन राजा की कन्या जो चाक्षुष राजा की पत्नी थी।

५ एक प्राचीन नदी का नाम।

बीरियां—देखो वेळा' (रू. भे.)

बी'रियोड़ी—भू० का० कृ०—१ विस्मरण हुवा हुआ, भूला हुआ।

२ देखो 'विहरियोड़ो' (रू. भे.) (स्त्री. बी'रियोड़ी)

बीरी—सं. पु. १—वैरी, शत्रु, दुश्मन।

उ०—संदेसांहि बवज पड़चौ, लांघ्या परवत दूरघट घाट। परि-देसां परि-भूमि गयउ, बीरी जगह न चालइ बाट। —बी. दे.

२ देखो 'बीरि' (रू. भे.)

बीरीयां—देखो 'वेला' (रू. भे.)

उ०—१ इसी तरै कागद लिख मेलियौ, चारण साथै। सो कागद बाच नै रामदासजी तिण हीज बीरीयां हेरू मेलिया, अनै कयौ मन तो सांढिया लीयां वसा। चारण नै घोडो सिरपाव दे नै सीख दीनो पधारो बाइ नै जुहार कहेजौ। —रा० सा० स.

उ०—२ मा बोली—'अरजन, वात सांभळी ? बाप, हमीर दुणोटौ मागै छै। कह्यो—बाप, जोमण बेस छै, तीयै बीरीयां अरजन सु मोनु दुणोटौ मेलह्यो।" —अरजन हमीर री बात

बीरु— देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—१ सउ कूंयर पंचग्गलउं किवहुरि पढिवा जाइ। धीरू बीरु मति आगलउं करणू पढइ तिणि ठाइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक नारि रण नइंतडि ऊभी, बंधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि घाय पडतउ नवि जांणिउ, न्याय बीरु कुलबीरि वखाणिउ। —सालिसूरि

उ०—३ हुउ ओलखावउं अनइं बीरु वीर, तइं होइवउं उत्तर नांम धीर। छइ जीह दुर्य्योधन तीह खेडउं, हेलां सही कौरवमांन मोडउ। —सालिसूरि

बीरुज, बीरुज्झ, बीरुझ–सं. पु [सं. वीर+उज्झ] अग्निहोत्र नहीं करने वाला ब्राह्मण।

बीरुधा–सं स्त्री. [सं.] नागमाता सुरसा की तीन कन्याओं में से एक।

वि० वि०—इसकी अन्य दो बहनों का नाम अनला एवं रुहा था।

बीरूप-वि० [सं. विरूप] भयंकर, भयावह, डरावना ।

उ०—देवी रात नीलमणी सीत रंगं, देवी रूप ग्रंबार बीरूप ग्रंगं । देवी बाल जूवा ग्रधं वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसांभुजाळी । —देवि.

रू. भे.—बीरुप ।

बीरेस, **बीरेसर**, **बीरेसुर**, **बीरेस्वर**-सं. पु. [सं. वीर+ईश एवं वीर+ ईश्वर] १ शिव, महादेव ।

२ वीर, अत्यन्त वीर पुरुष ।

३ पवनसुत हनुमान ।

बीरोचंद—देखो 'विरोचन' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

बीरोचंदसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

उ०—बीरोचंदसुत ग्रहपर बारो, रव सुत तणो ग्रमरपुर राज । ग्रीनि दातार 'कलावत' नरपुर, ग्रनंत रोर केहो गत ग्राज । —दुरसो ग्राढो

बीरोचन—देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—ऊथम किर राळे घर ग्रंदर, बाग ग्रसोक लांगड़ै बांनर । दहुवे जुवां भड़ां खळ दहिया, बीरोचन ग्रंमर दळ वहिया । —सू प्र.

बीरोचनसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

बीरोटण, **बीरोटणी**—सं. स्त्री. जादू-टोने ग्रादि करने वाली स्त्री. जादू- गरनी ।

उ०—तद कान्हो बोल्यो तमक, मत करणा मक्कर । बीरोटण पण वेखतां, नह सोभ चढ़ै नर । —ठाकुर भूंभारसिंघ मेड़तियो

बीरोटियो-स. पु. [सं. वीर+रा. प्र. ग्रोट, ग्रोटियो] (स्त्री. बीरोटण, बीरोटणी) १ मंत्र-तंत्र द्वारा श्मशान भूमि में भूत-प्रेत जगाने वाला पुरुष, जादूगर ।

२ देखो 'वीर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—कई खाय पीलिया कंणा, कई जाळ जाळोटिया । मुरधर मल्ल बणै इण मेवै, बाळ बैंड बीरोटिया । —दसदेव

रू. भे.—विरोटियो ।

बीरोध—देखो 'विरोध' (रू. भे.)

उ०—बांणा पारात तणो जांण बीरोध रो, विखम घट रोध रो कियां बांसो । जबर भुज धारियां हणूं बळ जोध रो, धमक भुज धारियां धरुण धांसो । —रावत ग्रजीतसिंघ री गीत

बीरोळणो, **बीरोळबो**—देखो 'विरोळणो, विरोळबो' (रू. भे.)

उ०—चौड़ै खळ धूहड़ लाखां चाक, बीरोळै लाख खळां वेढाक, खत्री गुर बीरम धूणै खाग, बीखूटो जांणेय सांकल बाग । —गो. रू.

बीरोळणहार, **हारो** (**हारी**), **बीरोळणियो**—वि० ।

बीरोळियोड़ो, **बीरोळियोड़ो**, **बीरोळ्योड़ो**—भू० का० कृ० ।

बीरोळीजणो, **बीरोळीजबो**—कर्म वा० ।

बीरोळियोड़ो—देखो 'विरोळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीरोळियोड़ी)

बीरो-सं. पु.—१ भाई, भ्राता ।

उ०—१ उठो बाइसा बांधो राखड़ी, थांरा बीरोसा रा जतन कराव । उठो मांनेतण खोलो कोथळो, थारे मासु नणद नै ग्रोढावां । —लो. गी.

उ०—२ ग्रो मांय घालो जायफळ नै जावंतरी, ग्रो तेल बनड़ा रै ग्रंग चढसी ग्रो । लेखो थां रा भाभीसा कर लेसी, ग्रो बनड़ा थांरा बीरोजी भर देसी । —लो. गी.

उ०—३ चाकरड़ी रै मारू, थां रै वडोड़ै बीरंजो नै मेल राय, भरियै रै भादवै, रै म्हारा गाढा मारू, घर वसो । वडोड़ै बीरंजी री, गवरांदे, लडोकड़ी नार, राय, सांभतड़ी रीसवंली म्हारै बाबेजी सूं मोरचौ मांडसी । —लो. गी.

उ०—४ कुण बीरो कुण बहनड़ी रे, जोयजो मोहरी बात । इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै विलापातो रे । —जयवांणी

(स्त्री. बीरी)

२ भाई के नाम पर बहिन द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

उ०—१ धोवड़िया घर बाळापण धोर, उगेरै 'बीरो' ऊंचो राग । जोवता टुग टुग तारो ग्रेक, सराबै धरती रा सोभाग । —सांभ

उ०—२ म्हनै बीरो सुणण री ग्रर बाई नै बीरो गावण री कितरी कोड हो, जिण री कोई पार नीं । म्हूं ग्रावतो जितरी बार लारै पड़ जावतो-बाई एकर तो बीरो सुणाय दे ! ग्रर वा भीणा कंठ सूं सरू कर देवती । —ग्रमर चूनड़ी

३ देखो 'वीर' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ रंमता रांम एक रंग रता, माया मोह विर्स नहीं मता । उतिम साध सु लछन धीरा, सो कहीयै ग्रजरामर वीरा ।

—ग्रनुभववांणी

उ०—२ भगवत नह भव पूछिया कांइउ, तुं छइ चरम सरीरो रे । सूरियाभ वारता सहु, गोतम पूछी कहि बीरो रे । —स. कु.

रू. भे.—बीरो

बीरघ—देखो 'वीरज' (रू. भे.)

बीरचचंद, **बीरचचंदर**, **बीरचचंद्र**-सं. पु. [सं. वीर्यचंद्र] करंधम राजा की पत्नी एवं ग्रविक्षित राजा की माता का पिता ।

बीरधघर, **बीरधघारी**—सं. पु. [सं वीर्य+धारिन्] प्लक्षद्वीप के मूल निवासी क्षत्रिय । (पुराण)

वीरयवत, वीरयवांन—सं. पु. [सं. वीर्यवत्, वीर्यवान] १ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक दानव।

२ एक सनातन विश्वे देव।

वीरयसह—सं. पु. [सं. वीर्यसह] सूर्यवंशी राजा सौदास का कल्माषपाद नामक पुत्र।

वीरयहारी—सं. पु. [सं. वीर्यहारी] दुःसह नामक यक्ष की पुत्री के गर्भ से किसी चोर के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

वील—सं. पु.—१ किसी बन्द कमरे में सामान आदि रखने के लिए आमने-सामने की दीवार में लगाया जाने वाला लंबा पत्थर।

२ देखो 'वीलौ' (मह. रू. भे.)

उ०—१ प्रथम पीपळ साग सीसमइ, आंमली अधिकार। वडबोर वील बहेड़ बाउळ, कूरमदी कंथार। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ जाळ जांगड़ो रूंख, सघन गायड़मल गाढो। वील सरेसां वडो खजूरां सिरसो डाढो। खर खोदरिया मांय, गोहिरा सांप गजबरा। झड़ झांखड़ जड़ जाय, उरणियां वडै अजब रा। —दसदेव

उ०—३ कनक कुंभ स्रीफल जिमा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रंग। पाका वील नारिंग सा रे, मांनु युगल चकोर रे रंग। —प. च. चौ.

३ देखो 'वील' (रू. भे.)

वीलाणौ, वीलाबौ—देखो 'विलाणौ, विलाबौ' (रू भे.)

उ०—वरसा वदीत हुइ सरद आइ। ससि अम्रत सूवे छै जोतिफळै गइ जुन्हाइ। आकास निरमळ हुवौ। बादळ वीलाया। सीपां गरभ धारण कीयौ छौ। ज्यां मोती जाया। —पनां

वीलाणहार, हारौ (हारी), **वीलाणियौ**—वि०।

वलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलाईजणौ, वीलाईजबौ—भाव वा०।

वीलायोड़ौ—देखो विलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलायोड़ी)

वीलावणौ, वीलावबौ—देखो 'विलाणौ, विलावौ' (रू. भे.)

वीलावणहार, हारौ (हारी), **वीलावणियौ**—वि०।

वीलाविमोड़ौ, वीलावियोड़ौ, वीलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलावीजणौ, वीलावीजबौ—भाव वा०।

वीलावियोड़ौ—देखो 'विलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलावियोड़ी)

वीलियौ—देखो 'वीलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वीलौ—देखो 'वीलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वीलोणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे.)

उ०—थापियौ कीरंड ताय सोवर थांन, मही नंद वोळनं गोळजी उगोळ माय। गाजै सु प्रसव सुव चरै गाय, मन चरै वीलोणौ करण माय। —रांमदान लाळस

वीलोणौ, वीलोबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

वीलोणहार, हारौ (हारी), **वीलोणियौ**—वि०।

वीलोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलोईजणौ, वीलोईजबौ—कर्म वा०।

वीलोयोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोयोड़ी)

वीलोवणौ, वीलोवबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

वीलोवणहार, हारौ (हारी), **वीलोवणियौ**—वि०।

वीलोविमोड़ौ, वीलोवियोड़ौ, वीलोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलोवीजणौ, वीलोवीजबौ—कर्म वा०।

वीलोवियोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोवियोड़ी)

वीलौ—देखो 'वीलौ' (रू. भे.)

वील्हणवटी, वील्हणवाटी—सं. स्त्री.—नागौर जिले के 'मारोठ' गांव के आस पास का प्रदेश।

उ०—दहियां रो उतन यूं सुणियौ छै, दिखण नूं नासिक त्र्यबक गोदावरी कनै गढ थालनेर थौ। इतरी ठोड़ दहियां रै अजमेरा माहैं हुती। देरावर परबतसर गांव ५२. सावर घाटियाळी। हरसार वील्हण रो बेटो हरधवळ धणी। माहरोट रो वील्हणवटी नांव। —नैणसी

वि० वि०—इसका नाम वील्हण दहिये के नाम से हुआ।

वील्हौ—सं. पु—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

उ०—वील्हा वायस, बिझळां, आवलि ऊडो जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊंधी टंगाय। —मा. कां प्र.

२ देखो 'वीलौ' (रू. भे.)

वीवओटौ—देखो दूणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताहरां साजण री नजर नै हमीर री नजर एक हुई। ताहरां हमीर री आंख सूं चाळघा ठळक-ठळक पड़वा लागा। ताहरां साजण कहै छै, "बाप, हवै रोवै छै? सु अरजनजी बिचै वीवओटौ आरोगवा पधारा था। —अरजन हमीर री वात

वीवनौ, वीवन्नौ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

उ०—परचंड पराक्रम दाखवै, पित वीवनै पंच दिन। 'गजसाह' वसुह राखी पर्गे, वहै भुजज डिगियौ गिगन। —गु. रू. बं.

बीवरी–सं. पु.—१ आलंबन, सहारा।

उ०—रही बीवरै रामरत, अनरथ घणो घलंत। या हिज है अम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तंत। —बां. दा.

२ लीन या मग्न होने की अवस्था या भाव।

३ देखो 'विवरी' (रू. भे.)

बीवसाल—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—सबळा सूं सहीयारी कीजई, पांणी पहिली पाळ। रुखमईयो बोलै सुणि राजा, जोईजइ बीवसाल। —रुकमणी मंगळ

बीवांण—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—१ अपछरा का सा बीवांण बीछूटा। छछोहा जवांन तरवारयां आछटै छै। ज्यां सूं अंगजवार हरवरमळा साथै ही कटै छै। —पना

उ०—२ मोम वाजंद्र घरै सुर पग बीवांणां, मणं सुर पधारो जोत मेळा। आपरै सेवगां महर रावळ 'अमर', वीहद भूलो नही तिण वेळा। —रावळ हरराजजी रो गीत

बीवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ ईलै पित मात एरिसा अवयव विमळ विचार करै बीवाह। सुंदर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह। —वेलि

उ०—२ मंदिर तरि किया तिणतरि मिळिवा, विचित्र सखिए समावत। कीधै तिणि बीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत। —वेलि

उ०—३ तद विजोगण री मा विजोगण नूं कह्यो, आपां वाणीया छां अर ऐ राजा छै। अर आपां इसा निसपत काई नही। ए बीजा बीवाह करसै तद तनै दुहागण कर राखसी। तू कही साह नूं परणोज ज्यौ घर री धणीयांणी हुवै। —बीजड़ बीजोगण री वात

बीवाहलो, बीवाहिलु, बीवाहिलो—देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

उ०—१ गोरीनंदन वीनऊं, स्रीपति सुमति सुजाण। करण तणो बीवाहलो, रिधसिध प्रसिध प्रमांण। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ सयल मण वंछियं काम-कुंभोवमं, पास पय कमलु पण-मेवि भत्ति। सुगुरु 'जिणउदयसूरि' नरिसु बीवाहलउ, सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति। —ऐ. जै. का. स.

उ०—३ गवरीय नंदन वीनवूं जी, स्रीहरि सुरतइं आंणि। विस्न तणो बीवाहिलो जो, रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण। —रुकमणि मगळ

बीवाहु—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ अभिवनु उत्तरकूंयरि वरिउ, आवी करिण बीवाहु सु करिउ। पहुतउं सहूइ कन्हवपुरि, ल्यारि कन्न चिहु पंडवि वरी। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ आदरि अरिदल आमला, सांमलावानि बीवाहु। आसारंगि रमाडिय, माडिय मनि उच्छाहु। —जयसेलर सूरि

बीवाहणो, बीवाहबो—देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे.)

बीवाहणहार, हारो (हारी), बीवाहणियो—वि०।

बीवाहियोड़ो, बीवाहियोड़ो, बीवाहयोड़ो—भू० का० कृ०।

बीवाहीजणो, बीवाहीजबो—कर्म वा०।

बीवाहियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीवाहियोड़ी)

बीसंभर—देखो 'विस्वंभर' (रू. भे.)

उ०—प्रतिम येह उपाय, बीसंभर न विसारियै। साथै धरम सहाय, पल पल रांण प्रतापसी। —दुरसो आढो

बीसंभरा—देखो 'विस्वंभरा' (रू. भे.)

बीस–वि.—दस का दुगुना, पन्द्रह व पांच का योग।

सं. स्त्री.—२० की संख्या।

उ०—१ रीझी सुण चद्रावत रांणी, सांम साथ कज स्रवण सुहांणी। गायण बीस परम जस गावै, दूणं हित ऊठो दरसावै। —रा. रू.

उ०—२ बीस कोस दिन वांम, वीस दाहणं तरक्कै। जाळ घर सामहो, करै वेमुहो सरक्कै। —रा. रू.

रू. भे.—वीम।

बीसण—देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

बीसणु—देखो 'विसणु' (रू. भे.)

बीसन—देखो 'विसणु' (रू. भे.)

उ०—बळतो ढोलो इम कहै, एह वचन मम आल। मारू सूं संक-लपियो, ब्रह्मा बीसन री साख। —ढो. मा.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

बीसनर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

बीसनु—देखो 'विसणु' (रू. भे.)

बीसभुज, बीसभुजांण, बीसभुजा–सं. पु. [सं. बीस+भुजा] १ लंका-नरेश रावण। (अ. मा.)

उ०—१ साम्हण जुधां बीसभुज आसुर, दीन निवाजण मनुज सहोदर। बोलै साख त्रिकुट सिछमीवर, उमंग रीसवाळो अवधेस्वर। —र. ज. प्र.

उ०—२ सुत भ्रात कटै मक धोट बधै धक, बीसभुजांण विचारियो जी। निरवीजां वांनर नेम गमुन्नर, धेख इसौ मन धारियो जी। —र. रू.

सं. स्त्री.—२ दुर्गा, महामाया।

वि०—जिसके बीस भुजाएँ हों।

रू. भे.—बीसभुज, बीसभुजा, बीसभूजा।

बीसभुजाळ—१ देखो 'बीसभुजाळौ' (मह,. रू. भे)

२ देखो 'बीसभुजाळी' (मह;. रू. भे.)

बीसभुजाळी—सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया।

रू. भे.—बीसभुजाळी, बीसांभुजाळी।

मह., रू. भे.—बीसभुजाळ बीसभुजाळ,।

बीसभुजाळौ—वि.—जिसके बीस भुजाएँ हों।

स. पु.—लंकानरेश रावण।

मह., रू. भे.—बीसभुजाळ, बीसभुजाळ।

बीसभूजा—देखो 'बीसभुजा' (रू. भे.)

उ०—देवी भूतड़ां भ्रम्मरी बीसभूजा, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजा। देवी राखसं घोमरं रक्त रती, देवी दुग्जटा विक्कटा जम्मदुती। —देवि.

बीसम, बीसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.) (उ. र.)

बीसमणौ, बीसमबौ—क्रि. अ. [सं. विश्रामः] १ आराम करना, ठहरना।

उ०—१ इकि डोकरि तिणि दीसि पांच पूत्र इकि बहूय सउं कुंती नइ आवासि वटंवाहु बीसमियां। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सुगुरु साभिय होए घणुं भमियां, विसम वाट किहाइं न वीसमिया। वसइं जं जिनमंदिरि सीयलइ, बिहु परं तींहै तापु सही टलइ। —जयसेखर सूरि

उ०—३ सीतल सीलछायां बीसमउ, भावना नीरिहिं सीचिउ धरउ। फुल पत्र बार देवलोक जांणि, एह व्रक्ष नउं फल मुकति निरवांणि। —वस्तिग

२ शयन करना, सोना।

उ०—छायल फूल विछाय, बीसमतो वरजांगदे। गेमर गोरी राय, तिण ग्रांमास अड़ाविया। —सोभा हीमालावत री गीत

३ अवसान होना, मरना।

उ०—'मांन' हर 'माल' हर 'अमर' हर बीसमें, अन पहू औसरं नको आया। असुर दळ ऊपटे, आज हूं अेकलौ, जुड़न कज पवारौ 'स्यांम' जाया। —कछवाहा सुजांणसिंघ स्यांमसिंघोत सेखावत री गीत

बीसमणहार, हारौ (हारी), बीसमणियौ—वि०।

बीसमियोड़ौ, बीसमियोड़ौ, बीसम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसमीजणौ, बीसमीजबौ—भाव वा०।

बीसमणौ, बीसमबौ, बीसम्मणौ, बीसम्मबौ—रू. भे.।

बीसमियोड़ौ—भू. का. कृ—१ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ, ठहरा हुआ। २ शयन किया हुआ, सोया हुआ। (१) अवसान हुवा हुआ, मरा हुआ।

(स्त्री. बीसमियोड़ी)

बीसमो, बीसमें—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ हुईय कांमिनि रूपि निरुपमी, रहिउ भीम तमी मुख बीसमी। बहुल भक्ष मनुक्ष करं करी, गयउ सो तडि कीचक सुंदरी। —सालिसूरि

उ०—२ उठै हसन दळ लियां अभूता, हिलियो महण क दक्खण हूंता। औ बीसमं दिवस लगि आयो, लेखवतां मग मास न लायो। —रा. रू.

बीसमौ—१ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ मरं घण गाजियं जिको सादूळ महि, सत्रां चा ढोल सिर सके किम 'जसौ' सहि। वयण घण सांभळे रहै किम बीसमौ, सुपह सादूळ कुण गिणं आपा समौ। —हा. झा.

उ०—२ 'गोइंद' पेखि जैसळगिरौ, बाघ बीसमौ वीरवर। रिण-बार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगा जेम गया कुंअर। —गु. रू. बं.

२ देखो 'वीसवौ' (रू. भे.)

बीसम्मणौ, बीसम्मबौ—देखो 'बीसमणौ, बीसमबौ' (रू. भे.)

उ०—पंखा करं अछर बिहू पासं, पंखणि सेव सचंपै पांव। सिरदारां पाधरि बीसम्मियौ, समहरि निसभरि 'मांन' सुजाव। —सुरतांण मांनावत री गीत

बीसम्मणहार, हारौ (हारी), बीसम्मणियौ—वि०।

बीसम्मियोड़ौ, बीसम्मियोड़ौ, बीसम्म्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसम्मीजणौ, बीसम्मीजबौ—भाव वा०।

बीसम्मियोड़ौ—देखो 'बीसमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसम्मियोड़ी)

बीसर—स. स्त्री.—१ भूल, विस्मरण।

२ देखो 'विसर' (रू. भे.)

बीसरणौ—वि०—भूलने वाला, विस्मरण होने वाला।

बीसरणौ, बीसरबौ—देखो 'विसरणौ, विसरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां एकण बहू कह्यो, "बीजो तो किण ही विध विसारै न पड़ै, जो सांवण लागतै स्युं आपां कुंवरजी नुं जुदी जुदी गोठां करो। भीतर राखां। आदमी बागियां सारां नुं अमलां-पांणियां सुं गळतान राखां तो बीसर जावै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ लिव लागी तूटै नहीं, लिव अंतर की तार। लागत ही सुं बीसरौ, हरीया तन की सार। —अनुभववांणी

उ०—३ क्यों बीसरै दांन क्यों बीसरै मांन क्यों बीसरै जुगति सु जीमियो धांन। क्यों बीसरै सांप नै सीस रो घाव, क्यों बीसरै वेरियां जदि पड़ै दाव। —मेहोजी गोदारा थापन

उ०—४ मौताज अम्हां हरवळ मिळण, सो कुळवाट न बीसरूं। 'गोरधन' कियौ 'गजबंध' अग्र, कळह आप अग्र मैं करूं। —सू. प्र.

उ०—५ दिनि निसि माधव देखवा, होयडा मांहि हांम। भूख त्रिखा निद्रा नहीं, बीसरिया सवि कांम। —मा. कां. प्र.

बीसरणहार, हारौ (हारी), बीसरणियौ—वि०।
बीसरिप्रोड़ौ, बीसरियोड़ौ, बीसरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीसरीजणौ, बीसरीजबौ—कर्म वा०।

बीसराणौ, बीसराबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

उ०—होरा तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन। बीसराई उण बात ने, नागर ग्यात नवीन। —बगसीरांम प्रोहित री बात

बीसराणहार, हारौ (हारी), बीसराणियौ—वि०।
बीसरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीसराईजणौ, बीसराईजबौ—कर्म वा०।

बीसरायोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसरायोड़ी)

बीसरावणौ, बीसरावबौ—देखो 'बिसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

बीसरावणहार, हारौ (हारी), बीसरावणियौ—वि०।
बीसराविप्रोड़ौ, बीसराबियोड़ौ, बीसराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीसरावीजणौ, बीसरावीजबौ—कर्म वा०।

बीसराबियोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसराबियोड़ी)

बीसरियोड़ौ—देखो 'बिसरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसरियोड़ी)

बीसवळौ—सं. पु.—कलेजे पर पानी से भरी एक थैली।

बीसबिसवा, बीसबिसा, बीसवीसा, बीसवीस्वा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ बीसबिसवा भक्ती कर, एक बिसवौ दे नंद। पुण्य कीनौ राक्षस भख, होय जावे अदादुद। —स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ अमवान सु एवजखांन जिसा, बप रीस अमापक बीसबिसा। वधि जोड़ अबद्दल सेंद वळै, भुज सार लियौ जिण भार भळै। —रा. रू.

उ०—३ दिल उजळ 'सिवा' अबनीमा दूदा, बडपण दाखां बीसबीसा। कपड़ां दीसा न देखं कमधज, देखीजै भाखरां वीसा। —सिवसिंघ मेड़तिया रो गीत

बीसवौं—वि०—जिसका स्थान क्रम से उन्नीस के बाद हो।

रू. भे.—बीसमौं, बीसवौ वीसमौं।

बीससणौ, बीससबौ—क्रि० स०—१ विश्वास करना, ऐतबार करना।

उ०—१ मन उलहसइ कलंबी तणा, ऊससइ वेलि वितांन। लोक लोकनइ बीससइ, विणसीइ जवांना पांन। —नळदवदंती रास

उ०—२ विदुरि पचाविउ लेखु, दुरयोधन मन बीससउं। एसु पुरोहित वेसु, कालु तुम्हारउ जांणिजउ। —सालिभद्र सूरि

क्रि० अ०—२ विश्वास होना, ऐतबार होना।

बीससणहार, हारौ (हारी), बीससणियौ—वि०।
बीससिप्रोड़ौ, बीससियोड़ौ, बीसस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीससीजणौ, बीससीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीससाकरण—सं. पु. [सं. विश्रसाकरण] रूप, रस, गंध एवं स्पर्श का अपने से भिन्न रूप, रस, गंध एवं स्पर्श में मिलने से उस वर्णादि का मेल। (जैन)

बीससियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विश्वास किया हुआ, ऐतबार किया हुआ।

२ विश्वास हुवा हुआ, ऐतबार हुवा हुआ।
(स्त्री. बीससियोड़ी)

बीसहत, बीसहती—सं. स्त्री.—१ देवी, दुर्गा, महामाया।

२ सरस्वती गिरा, भारती।

उ०—चिंता विघन बिनासणी, कमळासणी सगत। वीसहती हंसवाहणी, माता देहु सुमत। —अग्यात

रू. भे.—बीसहत, बीसहती, बीसहत्थ, बीसहत्थी, बीसहथ, बीसहथि, बीसहथी, बीसहथ्थ, बीसहथ्थी, वीसहत्थ, वीसहत्थी, वीसहथ, बीसहथि, वीसहथी, वीसहथ्थ, बीसहथ्थी, हातबीसाळी।

बीसहतौ—देखो 'बीसहथौ' (रू. भे.)

बीसहत्थ, बीसहत्थी—देखो 'वीसहती' (रू. भे.)
उ०—नमो कूखमांडी नमो कांति काळी, नमो त्रिपुरा तोतला प्रेत ताळी। नमो बीसहत्थी नमो बीर संगा, नमो उंडळां ओडणी गोम अगा। —मा. वचनिका

बीसहत्थौ—देखो 'बीसहथौ' (रू. भे.)

बीसहथ. बीसहथि, बीसहथी—देखो 'बीसहती' (रू. भे.)
उ०—१ तउं बीसहथि विरोळि, तइं बीसहथि विरोळियइ। भावठि भागइ तू तणइ, हिज्यउ सु काइ हिंगोळि। —अ. वचनिका

उ०—२ कहै ओरि केकांण, सेल असुरांण करूं सळ। बीसहथी हथवीस, ओक पाऊ रत ऊजळ। —सू. प्र.

उ०—३ सळहळां खत चळवळां खापर, बीसहथ भर बिळकुळी। मह वळां चब रघुनाथ अमलां, मंड सुसबद मंडळी। —र. ज. प्र.

उ०—४ बूझइ किसूं बापड़ा मांनव, बीसहथी सहु लहइ विचार। गवरी जांणै लाडगहेली, ईसर देव तणां अधिकार।

—महादेव पारवती री वेलि

बीसहथौ—सं. पु.—लंकाधिपति रावण।

वि.—बीस भुजाओं को धारण करने वाला।

रू. भे.—बीसहतो, बीसहत्थो, बीसहव्यो।

बीसहव्य, बीसहव्यो—देखो 'बीसहतो' (रू. भे.)

बीसहव्यौ—देखो 'बीसहथो' (रू. भे.)

बीसहें'क-वि.—करीब बीस, लगभग बीस।

उ०—तद मैं मोटियार था, सताबी खड़ कोसां पांचां-सातां प्राय पोहता। भांण वतळाया मैं घिरीया, सो रीठ वागो। सो आदमी बीसहें'क सुं वेणीदास रा बेटा दोय, भतीजा दस, बीजा भाई बंध खरळ कांम आया। —कुंवरसी सांखला री वारता

बीसांभुजाळी—देखो 'बीसभुजाळी' (रू. भे.)

उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रंगं, देवी रूप अंबार वोरूप अंगं। देवी बाळ जूवा व्रध वेख वाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसांभुजाळी। —देवि.

बीसांम, बीसांमउ—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—१ न लियइ बीसांम उन विरहइ, पवन वेग तै वाटै वहइ। कहइ उडइ पंखी आगासि, प्रगडइ आया पूगळ पासि। —ढो. मा.

उ०—२ ललित सरोवर पेखियइ ए, वली सत्ता नी वावि। तिहां बीसांमउ लीजियइ ए, वड नइ चउतर आवि। —स. कु.

बीसांमणौ, बीसांमबौ—देखो 'विसरांमणौ, विसरांमबौ' (रू. भे.)

बीसांमणहार, हारौ (हारी), बीसांमणियौ—वि०।

बीसांमिग्रोड़ौ, बीसांमियोड़ौ, बीसांम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसांमीजणौ, बीसांमीजबौ—भाव वा०।

बीसांमियोड़ौ—देखो 'विसरांमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री, बीसामियोडी)

बीसांमो- देखो 'विसराम' (मह., रू. भे.)

उ०—भारवाहक नइ कह्या भला, बीसांमा बीतरागी जी। माथा थी मूकइ कंधं लहइ, मारग मांहि लागी जी। —स. कु.

बीसार-स. स्त्री.—१ विस्मरण, भूल।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

बीसारण, बीसारणौ—देखो 'विसारणौ' (रू. भे.)

उ०—दुख-बीसारण, मनहरण, जउ ई नाद न हुंति। हियड़उ रतन-तळाव ज्यउं, फूटी दह दिसि जति। —ढो. मा.

बीसारणौ, बीसारबौ—देखो 'विसारणौ, विसारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साहजादा अजीम साम्रतखां संग, अजमेर मैं सहायक राखे अवरंग। इनायत खांन जोधपुर दोड़ आ बीसार, असुरां को घोर को न जोर को न पार। —रा. रू.

उ०—२ थे सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ थांकी आस। मत बीसारउ मन-थकी, हवा छइ थांको दास। —ढो. मा.

उ०—३ आय नृपति पूछौ विध एहो, सावधांन हुय धरम सनेहो। विखै अग्यांन धरम बीसारो, सूरजकुळ चो धरम संभारो। —सू. प्र.

उ०—४ अम सनेह कुळ मारग धारा, प्रांणहूंत वधि आप पियारा। आप वचन मैं सीस अधारै, वायक प्रिया कहण बीसारै। —सू. प्र.

बीसारणहार, हारौ (हारी), **बीसारणियौ**—वि०।

बीसारिग्रोड़ौ, बीसारियोड़ौ, बीसारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसारीजणौ, बीसारीजबौ—कर्म वा०।

बीसारियोड़ौ—देखो 'विसारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसारियोडी)

बीसावत—सं. पु.—बीका राठोड़ों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

उ०—अठ प्रांणकंवर निरवांण रै दोय कंवर हुआ, अमरोजी बीसोजी। तिण रा अमरावत बीका है माजन रा परधांन। अठ बीसोजी रा बीसावत बीका है भूकरकै रा परधांन। —द. दा.

बीसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ कांई कीयो कपटी तणौ रे, असुर तणो बीसास। राय ग्रह्यो हिव पदमणी नैं, गळनो करसी ग्रास। —प. च. चौ.

उ०—२ जब कह्यो मात पै अघट जोय, हिन मांगहु अंखपा फेर होय। उण कयौ मात इक पुत्र आस, सो बिणं कुंप केसो बीसास। —रांमदांन लाळस

उ०—३ पेस करां जो पदमणी जी, तुम उपजे बीसास। विण बीसास किसी परे जो, व्हे सहुने रंग रास। —प. च. चौ.

बीसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

बीसासणौ, बीसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—कहि आलिम कैसी परेंजी, तुम बीसासउ मन। 'लालचंद' कहै सांभळोजी, बादल कहेज वचन। —प. च. चौ.

बीसासणहार, हारौ (हारी), बीसासणियौ—वि०।

बीसासिग्रोड़ौ, बीसासियोडौ, बीसास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसासीजणौ, बीसासीजबौ—कर्म वा०।

बीसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसासियोड़ी)

बीसासो—देखो 'विस्वास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हिवं नव ग्रीवे के पचानुत्तर सार, चेईहर अणसय त्रेवीसा सुविचार। प्रत्येकेप्रतिमा बीसासो तिहां जांण, अठत्रीस सहस सत-साठ अछे गुण खांण। —वृ. स्त.

बीसियो-सं. पु.—एक प्रकार का घास विशेष।

रू. भे.—बीस्यो।

बीसी–सं. स्त्री—१ समय, अवधि।

२ बीसवीं शताब्दी।

३ वह स्थान जहां लागत अदा करके शाकाहारी भोजन प्राप्त किया जाता है, भोजनालय।

४ बीस वर्ष का समय। (युग)

५ एक ही प्रकार के बीस पदार्थों का समूह, कोडी।

६ गणना का वह प्रकार, जिसमें बीस-बीस चीजों के समूह को एक-एक इकाई मान कर रखा जाता है।

७ ज्योतिष शास्त्र में साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई एक विभाग।

वि० वि०—इनमें प्रथम ब्रह्माबीसी, द्वितीय विष्णुबीसी एवं तृतीय रुद्रबीसी कहलाती है।

(१) ब्रह्माबीसी:—(१) प्रभव (२) विभव (३) शुक्ल (४) प्रमोद (५) प्रजापति (६) अंगिरा (७) श्रीमुख (८) भाव (९) युवा (१०) धाता (११) ईश्वर (१२) बहुधान्य (१३) प्रमाथी (१४) विक्रम (१५) वृष (१६) चित्रभानु (१७) सुभान (१८) पार्थिव (१९) तारण (२०) व्यय।

(२) विष्णुबीसी:—(१) सर्वजित (२) सर्वधारी (३) विरोधी (४) विकृति (५) खर (६) नंदन (७) विजय (८) जय (९) मन्मथ (१०) दुर्मुख (११) हेमलम्ब (१२) विलंब (१३) विकारी (१४) शार्वरी (१५) प्लव (१६) शुभकृत (१७) शोभन (१८) क्रोधी (१९) विश्वावसु (२०) पराभव।

(३) रुद्रबीसी:—(१) प्लवग (२) कीलक (३) सौम्य (४) साधारण (५) विरोधकृत (६) परिधावी (७) प्रमादी (८) आनन्द (९) राक्षस (१०) अनल (११) पिंगल (१२) कालयुक्त (१३) सिद्धार्थ (१४) रौद्र (१५) दुर्मति (१६) दुंदुभी (१७) रुधिरोद्गारी (१८) रक्ताक्षी (१९) क्रोधन (२०) क्षय।

८ बीस गाथा, श्लोकों या छंदों का समूह।

९ जैन मतानुसार बीस विहरमानों के नामों का समूह।

वि० वि०—देखो 'विहरमाण'।

रू. भे.—विसी, बीसी।

बीसूंणो—देखो 'विसाति' (रू. भे.)

बीसूरण, बिसूरणो—देखो 'विसूरण' (रू. भे.)

बीसूरणो, बीसूरबो—१ देखो 'विसरणो, विसरबो' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरणो, विसूरबो' (रू. भे.)

बीसूरणहार, हारौ (हारी), बीसूरणियौ—वि०।

बीसूरिओड़ो, बीसूरियोड़ो बीसूरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बीसूरीजणो, बीसूरीजबो—भाव वा०।

बीसूरियोड़ो—१ देखो 'विसरियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसूरियोड़ी)

बीसूविसा बीसूबीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—अपत रहिया 'अखै' 'अजा' 'गोकळ' इसा, रीत खत्रवाट री बोय दीनी रसा। बिगाड़ची धरम धर तणो बीसूविसा, दियो जळ हाथ सु सात पीढी दिसा। —स्यांमजी बारहठ

बीसेक–वि०—बीस के लगभग।

रू. भे.—बीसेक।

बीसेविसा, बीसेबीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—तूं सूधो तूं साधवो, तूं नर भक्ति निधांन। विधि वाधो वारू विसै, बीसेविसा समांन। —मा. कां. प्र.

बीसोतर–वि०—एक सौ बीस।

सं. पु.—चारण जाति जिसमें कुल एक सौ बीस गोत्र हैं।

उ०—बीसोतर का छोगा, दिल का उदार। जग जुगतेस कुं बखांणुं, सब ही समार। —बां. दा.

रू. भे.—बीसोतर, बीसोत्तर।

बीसोतरि, बीसोतरी—देखो 'विसोत्तरि' (रू. भे.)

बीसोत्तर—देखो 'बीसोतर' (रू. भे.)

बीसोत्तरि, बीसोत्तरी—देखो 'विसोत्तरी' (रू. भे.)

बीसौ–सं. पु.—१ बीस की संख्या का वर्ष।

२ बीस की संख्या का संवत्।

रू. भे.—बीसौ।

बीस्यौ—देखो 'बीसियौ' (रू. भे.)

बीहंग—देखो 'विहंग' (रू. भे.)

बीहंगड़ो—देखो 'विहग' (अल्पा., रू. भे.)

बीह—देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—निमो हूंस हूंसा तणी जोति हरंता, निमो काळ ही बीह राखे करंता। निमो धरम ही तूझ निस दीह ध्यावे, निमो वडो जण वीण तुंबर बजावे। —पी. ग्रं.

बीहड—देखो 'बीहड' (रू. भे.)

बीहणो बीहबो—देखो 'बीहणो, बीहबो' (रू. भे.)

उ०—१ आसराव, नाडूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हुवो, तिण नूं देवी बीहाड़ण लागी सु आसराव बीहै नहीं नै बांण हिरण नूं सांधियो हुतो सु बाहचो, तरै देवी खुश हुई नै आसराव नूं कहण लागी, तोनूं हूं तूठी तूं जाणै सु माग। —नैणसी

उ०—२ वोहड़ो जिकै मरण सूं वोहै, रहज्यो जिकोज साथ रहै।
सिर साटै देसी सादावत, कोट म वोहै 'भोज' कहै।
—भोजराज रूपावत रो गीत

उ०—३ वोलि न सक्कू वोहलउ, हेक ज वात हुई। राजि अपूठा वाहुड़उ, माळवणी मूई। —ढो. मा.

उ०—४ जसु अठार मुकुट बद्ध राजा, सेव करइ कर जोड़ जी। कोणिक थी वोहलउ राय चेड़उ, कूप पड़यउ बल छोड़ जी।
—स. कु.

वोहणहार, हारो (हारी), वोहणियो—वि०।
वोहियोड़ो, वोहियोड़ो, वोहयोड़ो—भू० का० कृ०।
वोहीजणो, वोहीजबो—भाव वा०।

वोहर—देखो 'वहीर' (रू. भे.)

वोहरणो, वोहरबो देखो 'विहरणो, विहरबो' (रू. भे.)

उ०—तिरसूळ घीव उरमभ ताय, फळ जहूं उवर म वर वोहरै फबाय। सिर चकर वोहर कर काट सोय, हुंकार डकर धमजगर होय। —रामदान लाळस

वोहरणहार, हारो (हारी), वोहरणियो—वि०।
वोहरियोड़ो, वोहरियोड़ो, वोहरयोड़ो—भू० का० कृ०।
वोहरीजणो, वोहरीजबो—कर्म वा०।

वोहरियोड़ो—देखो 'विहरियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वोहरियोड़ी)

वोहळ, वोहल—१ देखो 'वोहलो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोहल्ल' (रू. भे.)
३ देखो 'विह्वल' (रू. भे.)
४ देखो 'वेहळ' (रू. भे.)
५ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

वोहळा—सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया।

उ०—देवी चंद्रघंटा महम्माय चडो, देवी वोहळा अप्रळा वड वड्डो। देवी जम्मघटा वदीजै जडंबा, देवी साकणी डाकणी रूढ सव्बा।
—देवि.

वोहळी, वोहली—सं. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति पास में नहीं हो, वियोगिनी।

उ०—वीज न देखै वोहलियां, पीव परदेस थयांह। आपण लीयै झबूकड़ा, गळि लागै सिहरांह। —ढो. मा.

२ देखो 'विह्वल' (अल्पा, रू. भे.)

वोहलो—सं. पु.—वोहल्ल राजपूत वंश का व्यक्ति।

वि०—हद से ज्यादा, अत्यधिक।

उ०—देख्यो दरियो भरियो जल घणांजी, तब बोलै नरनाथ। वारिधि पूरो हल वोहला हुइ रे, मुंछा घालै हाथ। —प. च. चौ.

देखो 'विह्वल' (अल्पा. रू. भे.)

वोहल्ल—सं. पु.—एक राजपूत वंश।

उ०—चावडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया। अयवंता यादव वोहल्ल, नर निकुंभ गिरुया गोहिल्ल। —कां. दे. प्र.

रू. भे.—वोहळ, वोहल

वोहसणो, वोहसबो—क्रि० अ०—१ हसना, हर्षित होना।

उ०—विसराळ त्रंबाळ धुरै रवि वोहस, लाह आखेट लंकाळ। अजेरां जेरण घेर असगां, फेर दुहाई फाळ। —मा. वचनिका

१ हिनहिनाना।

उ०—साठ तुरिय पाखरघा संजुत, वोसनदै साथहि वोहसंत। जाई परभोमई सचरघो, कोई न जांणइ सांभरघा-राव। छलिगांणउं होई संचरघो, देस उडीसइ पहुंता जाई। —वी. दे.

वोहांण—१ देखो 'विहांण' (रू. भे.)
२ देखो 'विहाणो' (रू. भे)

वोहांणो—देखो 'विहाणो' (रू. भे.)

वोहांणू—१ देखो 'विहांण' (रू. भे.)
२ देखो 'विहांणो' (रू. भे)

वोहांणो—१ देखो 'विहाण' (अल्पा.' रू. भे.)
२ देखो 'विहांणो' (रू. भे.)

वोहा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद वीठू जाय कुंवर नुं कही, "जो माहाराज फुरमावै छै, अो नाळेर पाछो देवो। बीजो वोहा सुं जोख छै तो एक-दोय करो।" तद कुंवर कह्यो, "वीठू तू अरज करै, जो म्हारै तो पण छै-सरीक रो नाळेर आयो पाछो न फेरूं। —कुंवरसी सांखला री वारता

वोहाड़णो, वोहाड़बो—१ देखो 'वोहाणो, वोहावो' (रू. भे.)

उ०—आसराव, नाडूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवो हुवो, तिण नूं देवी वोहाड़ण लागी सु आसराव वीहै नहीं नै बांण हिरण नूं सांधियो हुतो सु बाह्यो, तरै देवी खुस हुई नै आसराव नूं कहण लागी, तोनूं हूं तूठी, तूं जांणै सु मांग। —नैणसी

२ देखो 'वोहावणो, वोहावबो' (रू. भे.)
वोहाड़णहार, हारो (हारी), वोहाड़णियो—वि०।
वोहाड़ियोड़ो, वोहाड़ियोड़ो, वोहाड़योड़ो—भू० का० कृ०।
वोहाड़ीजणो, वोहाड़ीजबो—कर्म वा०।

वोहाड़ियोड़ो—१ देखो 'वोहायोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोहावियोड़ो' (रू. भे,)

(स्त्री. बीहाडियोड़ी)

बीहावणो, बीहावबो—१ देखो 'बीहाणो, बीहाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहावणो, बीहावबो' (रू. भे.)

बीहावणहार, हारो (हारी), बीहावणियो—वि०।

बीहाविओड़ो, बीहावियोड़ो, बीहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीहावीजणो, बीहाडीजबो—कर्म वा०।

बीहाडियोड़ो—१ देखो 'बीहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बीहाडियोड़ी)

बीहाणो, बीहाबो—१ देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहाणो, बीहाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बीहावणो, बीहावबो' (रू. भे.)

बीहाणहार, हारो (हारी), बीहाणियो—वि०।

बीहायोड़ो—भू० का० कृ०।

बीहाईजणो, बीहाईजबो—कर्म वा०।

बीहायोड़ो—१ देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बीहावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीहायोड़ी)

बीहार—देखो 'विहार' (रू. भे.)

उ०—नवलाख निवतरै सहत नूर, नित दिवस वदै रंगरळी पूर। आपरी इण हीज लीला उदार, वड सगत करण जं जग बीहार।
—रांमदांन लाळस

बीहाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद ठगै कह्यो, "फळाणां रा बेटा हुवो नहीं ?" तद ईयै कह्यो, राज हुवा छा। तद ठग रै बेटै कही, तो थे म्हांहरा बहनेई हुवो। फलांणै बरस थाहरो बाप आयो हुतो। तद बीहाव कीयो हुतो। —बूढ़ी ठग राजा री बात

बीहावणो, बीहावबो—क्रि. स. १—व्यतीत करना समाप्त करना।

उ०—बीजा नूं परो बीजो कान्हो मेल्हण लागा। तरै देवड़ै बीजै घण ही इणां ठाकरां नै कह्यो—मो नु परो अळगो मत मेल्हो। तरै इणां ठाकुरै कह्यो—कूकड़ो जिण गांव न हुवै छै तठै ही रात बीहावै छै। —राव चन्द्रसेन री बात

२ देखो 'बीहाणो, बीहाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे.)

बीहावणहार, हारो (हारो), बीहावणियो—वि०।

बीहाविओड़ो, बीहावियोड़ो, बीहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीहावीजणो, बीहावीजबो—कर्म वा०।

बीहाड़णो, बीहाड़बो, बीहाडणो बीहाडबो, बीहाणो' बीहाबो
—(रू. भे.)

बीहावियोड़ो—भू० का० कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, समाप्त किया हुआ।

२ देखो 'बीहायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीहावियोड़ी)

बीहूर—सं. पु.—वातचक्र, हवा का चक्र।

वि० वि०—देखो 'बघूलो' (रू. भे.)

बु—सं. पु.—१ प्रातः काल, सवेरा। (एका.)

२ रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रदोष। (,,)

३ घनपटल। (,,)

बुअणो, बुअबो—१ देखो 'वहणो,वहबो' (रू. भे.)

उ०—१ प्रतापसिंह नै सांम्हो आवतो देखनै ठाकर म्यांन सूं तलवार बारै काढली। घेरो नैन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार बुई सो ठाकर री माथो वाढ नाख्यो। दुस्मियां रै मन चींतो व्हो। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ जिण मारग केहर बुवौ, रज लागी तिरणांह। वे वन ऊभा सूकसी, नह चरसी हिरणांह। —बां. दा.

२ देखो 'बोवणो, बोवबो' (रू. भे.)

बुअणहार, हारो (हारी), बुअणियो—वि०।

बुइओड़ो, बुइयोड़ो, बुयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुईजणो, बुईजबो—भाव वा०।

बुआणो, बुआबो—देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बुआहणहार, हारो (हारी) बुआणियो—वि०।

बुआयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुआईजणो, बुआईजबो—कर्म वा०।

बुआयोड़ो—१ देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुआयोड़ी)

बुआरणो, बुआरबो—देखो 'बुहारणो, बुहारणो' (रू. भे.)

बुआरणहार, हारो (हारो), बुआरणियो—वि०।

बुआरिओड़ो, बुआरियोड़ो, बुआरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुआरीजणो बुआरीजबो—कर्म वा०।

बुआरियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुआरियोड़ी)

बुआरो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बुआरो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बुआवणौ, बुआवबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

बुआवणहार, हारौ (हारी), बुआवणियौ—वि० ।

बुआवियोड़ो, बुआवियोड़ौ, बुआव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुआवीजणौ, बुआवीजबौ—कर्म वा० ।

बुआवियोड़ो—१ देखो 'वहायोड़ो, (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुआवियोड़ी)

बुह्योड़ो, बुयोड़ो—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोयियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुह्योड़ी, बुयोड़ी)

बुक—१ देखो 'बक' (रू. भे.)

२ देखो 'बुग' (रू. भे.)

बुकठणौ, बुकठबौ—क्रि. स.—निकालना ।

उ०—है बुकठिआं कांकण हथो, केवा काढण काज कढ़ंछ । भाक समूं भळकतां भालां, घण लै अरियां खाग घड़ंछ ।

—मोहकमसिंघ राठौड़ रो गीत

बुकठणहार, हारौ (हारी), बुकठणियौ—वि० ।

बुकठियोड़ो, बुकठियोड़ौ, बुकठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुकठीजणौ, बुकठीजबौ—कर्म वा० ।

बुकढणौ, बुकढबौ—रू० भे० ।

बुकठियोड़ो—भू० का० कृ०—निकाला हुआ ।

(स्त्री. बुकठियोड़ी)

बुकढणो, बुकढबौ—देखो 'बुकठणौ, बुकठबौ' (रू. भे.)

बुकढणहार, हारौ (हारी), बुकढणियौ—वि० ।

बुकढियोड़ो, बुकढियोड़ौ, बुकढ्योड़ौ – भू० का० कृ० ।

बुकढीजणौ, बुकढीजबौ —कर्म. वा० ।

बुकढियोड़ो—देखो 'बुकठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुकढियोड़ी)

बुकांनो—देखो 'बुकांनौ' (रू. भे.)

बुखार—१ देखो 'भखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुखार' (रू. भे.)

बुखारी—१ देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'भखारी' (रू. भे.)

बुखारी—देखो 'भखारी' (रू. भे.)

उ०—कांय भाई मोमिणो मी धन संचो, संचि संचि घलो बुखारी मी धन खाकि जी भाई होयसी, खाली रह्या बुखारी ।

—ऊदोजी नैण

बुग—देखो 'बुग' (रू. भे.)

बुगचियो, बुगचो—देखो 'बुगची' (अल्पा., रू. भे.)

बुगचो—देखो 'बुगचौ' (रू. भे.)

बुगती—देखो 'बुगती' (रू. भे.)

उ०—"छो हसता ।" बींदणी तो आ बात कैय अंग्रेज बेहल सूं हेटै कूदगी । फुदी ज्यूं केर केर उडती फिरी । थोड़ो ताळ में राता-चुट्ट ढालुवां सूं खोळो भरने पाछी आयगी । बुगती रा पांणी सूं वानै सावळ धोया । ठारया ।

—फुलवाड़ी

बुगदो—देखो 'बुगदौ' (रू. भे.)

बुगदौ—देखो 'बुगदौ' (रू. भे.)

बुगध्यांनी—देखो 'बकध्यांनी' (रू. भे.)

बुगर—देखो 'बुगर' (रू. भे.)

बुगलाभक्त—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

बुगलाभक्ति, बुगलाभक्ती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

बुगलाभगत—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

बुगलाभगति, बुगलाभगती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

बुगलियो—१ देखो 'बुगलियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (अल्पा., रू. भे.)

बुगलो—१ देखो 'बुगलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (अल्पा., रू. भे.)

बुगल—१ देखो 'बुगल' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (मह., रू. भे.)

बुग्गी—देखो 'बुग्गी' (रू. भे.)

बुड़को—देखो 'बुड़कौ' (रू. भे.)

बुड़चणौ, बुड़चबौ—देखो 'बुड़चणौ, बुड़चबौ' (रू. भे.)

बुड़चणहार, हारौ (हारी), बुड़चणियौ—वि० ।

बुड़चियोड़ो, बुड़चियोड़ौ, बुड़च्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुड़चीजणौ, बुड़चीजबौ—कर्म वा० ।

बुड़चियोड़ो—देखो 'बुड़चियोड़ौ' (रू. भे.)

बुजो—देखो 'बूजौ' (रू. भे.)

बुटोबटो, बुटाबटो—देखो 'बुटाबटौ' (रू. भे)

बुट्ठणो, बुट्ठबो—देखो 'बूठणौ, बूठबौ' (रू. भे.)

उ०—तहि अरजुणि मिल्हिऊ, आगिणीय सरु अगि वुट्ठीय । बहु दुक्खु मणि चिंतवीय, पडसेन घण नयणि वुट्ठीय ।

—सालिभद्र सूरि

वुट्ठणहार, हारौ (हारी), वुट्ठणियौ—वि० ।

वुट्ठिओड़ौ, वुट्ठियोड़ौ, वुट्ठयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुट्ठीजणौ, वुट्ठीजबौ—भाव वा० ।

वुट्ठियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वुट्ठियोड़ी)

वुठणौ, वुठबौ—देखो 'वूठणौ, वूठबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गुलक्यारी क्यारा, चदनगारा, फूल अधिक फाबंदा है। फादरिया छूट, ज्युं घण वुठं, ऊजळ जळ मळकंदा है।

—गज-उद्धार

उ०—२ अठी मतारौ अमीर जहं गोवाम जुटिया आंगां, वुठिया आनमा आग अथी व्है अचंब । जैतवादी 'चापा' 'कुंपा' जुटिया भिव जीउ जाणी, खागा झाल अठी मुं उठीया जैतखंभ ।

—पहाड़खा आढौ

वुठणहार, हारौ (हारी), वुठणियौ—वि० ।

वुठिओड़ौ, वुठियोड़ौ, वुठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुठीजणौ, वुठीजबौ—भाव वा० ।

वुठियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. वुठियोड़ी)

वुठी—देखो 'उठी' (रू. भे.)

वुठं—देखो 'उठे' (रू. भे.)

वुट्ठणौ, वुट्ठबौ—देखो 'वूठणौ, वूठबौ' (रू. भे.)

उ०—भाळमं मंगल, वम्म छूटतरं बयट्ठं । मुकळ पक्ख भाद्रवं, घुमि बरखा घण वुट्ठं ।

—गु. रू. बं.

वुट्ठणहार, हारौ (हारी), वुट्ठणियौ—वि० ।

वुट्ठिओड़ौ, वुट्ठियोड़ौ, वुट्ठयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुट्ठीजणौ, वुट्ठीजबौ—भाव वा० ।

वुट्ठियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुट्ठियोड़ी)

वुडणौ, वुडबौ—१ देखो 'वूडणौ, वूडबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'उडणौ, उडबौ' (रू. भे.)

वुडणहार, हारौ (हारी), वुडणियौ—वि० ।

वुडिओड़ौ, वुडियोड़ौ, वुड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुडीजणौ, वुडीजबौ—भाव वा० ।

वुडवणौ, वुडवबौ—देखो 'वूडणौ, वूडबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'उडणौ उडबौ' (रू. भे.)

उ०—खग भाट बिकट वुडव खरडक डहकत डारण धीर डहडक । गति घण गेहक छायौयं गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक ।

—हीरा मागळिया री गीत

वुडवणहार, हारौ (हारी), वुडवणियौ—वि० ।

वुडविओड़ौ, वुडवियोड़ौ, वुडव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुडवीजणौ, वुडवीजबौ—भाव वा० ।

वुडवियोड़ौ—१ देखो 'वुडियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'उडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुडवियोड़ी)

वुडियोड़ौ—१ देखो 'वूडियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'उडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुडियोड़ी)

वुड्ढौ—देखो 'वूढौ' (रू. भे.)

वुढण—देखो 'वूढण' (रू. भे.)

वुढापौ—देखो 'वूढापौ' (रू. भे.)

वुढौ—देखो 'वूढौ' (रू. भे.)

वुड्ढौ—देखो 'वूढौ' (रू. भे.)

उ०—तूं हिज आज जुगाद तूं, तू वुड्ढौ बाळौ । तुहिज तरुण किसोर तूं, माता मतवाळी ।

— गज उद्धार

(स्त्री वुड्ढी)

वुणणौ, वुणबौ—१ देखो 'बुणणौ, बुणबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणणौ, बणबौ' (रू. भे.)

वुणणहार, हारौ (हारी), वुणणियौ—वि० ।

वुणिओड़ौ, वुणियोड़ौ, वुण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुणीजणौ, वुणीजबौ—कर्म वा० ।

वुणवाणौ वुणवावौ—१ देखो 'बुणाणौ, बुणावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणाणौ, बणावौ' (रू. भे.)

वणवाणहार, हारौ (हारी) वणवाणियौ—वि० ।

वणवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणवाईजणौ वणवाईजबौ—कर्म वा० ।

वुणवायोड़ौ—१ देखो 'बुणायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वुणवायोड़ी)

वुणाई—देखो 'बुणाई' (रू. भे.)

वुणाणौ, वुणाबौ—१ देखो 'बुणाणौ, बुणावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

वुणाणहार, हारौ (हारी), वुणाणियौ—वि० ।

वुणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुणाईजणौ, वुणाईजबौ—कर्म वा० ।

वुणायोड़ौ—१ देखो 'बुणायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुणायोड़ी)

वुणावणौ, वुणावबौ—१ देखो 'बुणाणौ बुणाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

वुणावणहार, हारौ (हारी), वुणावणियौ—वि० ।

वुणाविओड़ौ, वणावियोड़ौ, वुणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुणावीजणौ, वुणावीजबौ—कर्म वा० ।

वुणावियोड़ौ—१ देखो 'बुणायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुणावियोड़ी)

बुणियोड़ौ—१ देखो 'बुणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बुणियोड़ी)

बुधर—१ देखो 'उधर' (रू. भे.)

२ देखो 'भूधर' (रू. भे.)

उ०—वल्य राठोडां ऊं कह्यौ, सामल्य बुधर भेव । बिसनोई करिग्या प्रकर, हुकंम करौ हरिदेव । —केसोजी गाडण

बुपर—देखो 'ऊपर' (रू भे.)

उ०—उसण येक गजमुख लंबोदर, धरणौ कनक मुकुट फरसोधर । पीतंबर सोभा तन बुपर, बिनायक दायेक विद्या बर । —बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ मूंहैं प्रणियां बुपरे नांकतौ 'मधकर', भव चैं मन प्रांतरौ भयौ । सहलौ दिलौ हुई प्रणसकलौ, गहलौ री बेव्हड़ौ गयौ । —राजा माधौसिंघ कछवाहा री गीत

बुर—देखो बुर' (रू. भे.)

बुरकौ देखो 'बुरकौ' (रू भे)

बुरड़णौ, बरड़बौ—देखो 'बुरड़णौ बुरड़बौ' (रू भे.)

बुरड़णहार, हारौ (हारी), बुरड़णियौ—वि० ।

बुरड़िग्रोड़ौ, बुरड़ियोड़ौ, बुरड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुरड़ीजणौ, बुरड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बुरड़ियोड़ौ—देखो बुरड़ियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बुरड़ियोड़ी)

बुरचिंतौ बुरचींतौ—देखो 'बुरचिंतौ' (रू. भे.)

बुरज—देखो 'बुरज' (रू. भे.)

बुरजी—देखो 'बरछी' (रू भे.) (डि. को.)

बुरज्ज—देखो 'बुरज' (रू. भे.)

बुरछौ—देखो 'बुरछौ' (रू. भे.) (डि. नां. मा.)

बुरटी—देखो 'बुरटी' (रू. भे.)

बुरड देखो 'बुरड' (रू. भे.)

बुरडौ—देखो 'बुरडौ' (रू. भे.)

बुरचंत, **बुरचंतौ**—देखो बुरचींतौ'।

बुराई—देखो 'बुराई' (रू. भे.)

उ०—निहचै नांव राखि तन मन तें, विक्रम छोडि बुराई । धरगे मांहि धका नहीं खावें, हाको हक सराई । —ग्रनुभववांणी

बुराणौ, बुराबौ—देखो 'बुरावणौ, बुरावबौ' (रू. भे.)

बुराणहार, हारौ, (हारी), बुराणियौ—वि० ।

बुरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुराईजणौ, बुराईजबौ—कर्म वा० ।

बुरादौ—देखो 'बुरादौ' (रू. भे.)

बुरायोड़ौ—देखो बुरावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुरायोड़ी)

बुरावणौ बुरावबौ—देखो 'बुरावणौ, बुरावबौ' (रू. भे)

बुरावणहार, हारौ (हारी), बुरावणियौ—वि० ।

बुराविग्रोड़ौ, बुरावियोड़ौ बुराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुरावीजणौ बुरावीजबौ कर्म वा० ।

बुरावियोड़ौ—देखो 'बुरावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुरावियोड़ी)

बुरी—देखो 'बुरी' (रू. भे.)

उ०—सिरदार री क्रपा ग्रौर सुद्ध मन री चाह सारां रै होवै है । सुद्ध मन रा सिरदार री चाकर बुरी कहै नहीं बुरी सुणै नहीं । —बी. स. टी.

२ देखो बुरौ' (पु.)

उ० नारी नेह न कीजियै, नारी बुरी संसार । हरिया नारी गजिया, सैं भगा करतार । —ग्रनुभववांणी

बुरौ—१ देखो 'बुरौ' (रू. भे.)

उ०—१ बासं विजै भगती की । ग्रोथि रामसिघजी प्रिथीराज जी विजै री भगति जोमिया । ताहरां राजाजी बुरा किया । इयां नूं कहाड़ियो जु थें मोनूं थोड़ाई छा । —द. वि.

उ०—२ कळि खोटी पोहरौ बुरौ, रीस करौ मत कोय । हरिया माया भगति कै, जांह तांह ग्राडौ होय । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ पाड़ोसी पिडत बुरौ, जो हरि भगति न होय । हरिया हरिजन गांव घर, ता तुल्य भलौ न कोय । —ग्रनुभाववांणी

उ०—४ किसकौ बुरौ न कीजियै, जो सिध होय प्रसिध । हरिया ग्राडौ ग्रावसी, जिसी कमाई कीध । —ग्रनुभववांणी

उ०—५ भलौ किसी कुं चाहियै, बुरौ न कीरियै कोय । जन हरिया सब कु कह्या, रांम भजो नर लोय । —ग्रनुभववांणी

बुलगणौ, बुलगबौ—क्रि. स. (गीत या गायन) प्रारम्भ करना ।

उ०—विरहानळ प्रज्वळइ ग्रगु, सालिजन सूं विरगू । एहबऊं कांई थ्यू विग्र चित्त न बुलगई गीत्तू । न कुण होसूं हसइ, सदा नीससइ; बोलावि खीजइ, दिहाड़इ देह छीजइ । ग्रादि । —रा. सा. स.

बुलगणहार, हारौ (हारी), बुलगणियौ—वि० ।

बुलगिग्रोड़ौ, बुलगियोड़ौ, बुलग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बुलगीजणौ, बुलगीजबौ—कर्म वा० ।

बुलगार—देखो 'बुलगार' (रू. भे.)

उ०—सोनहीरो फूलां नकसी फूलां मुखमल री गादी घातियां, सांवरा हुयवासां, **बुलगारां** डाबा सहित ऊमांम राजांनां रा हाथा री ऊमांहीज वहां नें पीपलांरीम्रां साखा सूं नांगलिम्रां।

—रा. सा. सं.

बुलगियोड़ो—भू० का० कृ०—(गीत या गायन) प्रारम्भ किया हुमा।

(स्त्री. बुलगियोड़ी)

बुलडोग—देखो 'बुलडोग' (रू. भे.)

बुलसरी, बुलसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

उ०—जउ मूकी तुम्ह **बुलसिरी**, जउ बींधी तुम्ह मोतीसिरी। जउ हुहलूं तुम्ह गगाजल जांणि जउ पोढी तुम्ह मधुरिम वांणि।

—नळदवदंती रास

बुलाक—देखो 'बुलाक' (रू. भे.)

बुलाकी—देखो 'बुलाकी' (रू. भे.)

बुलाणो, बुलाबो—१ देखो 'बुलाणो, बुलावो' (रू. भे.)

उ०—हवि मूंल्ह **बुलावु**, पीहरि जात्रा मंन। मुझ विना दुहल्यां थातां, हसि पुत्री नैं तंन।

—नळाख्यांन

२ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

बुलाणहार, हारो (हारी), बुलाणियो—वि०।

बुलायोड़ो—भू० का० कृ०।

बुलाईजणो, बुलाईजबो—कर्म वा०।

बुलायोड़ो—१ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुलायोड़ी)

बुलावण—देखो 'बुलावण' (रू. भे.)

बुलावणो, बुलावबो—१ देखो 'बुलाणो, बुलाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ **बुलावा** भीमराय देसनो संधि, लगइ थावीउ बहु सैन्य लेई ए। भीमनइ कहइ निसध, तमे वलु भूपति। रूडइ ठामि हवइ बइसीइ ए।

—नळदवदंती रास

उ०—२ रथ तणउ माहुरइ खप ज नहो, माहरू नथी महीइ कांई सही। घणउ कहितइ रथ राखिउ तेणि. नलनइ ग्रावइ **बुलावा** जेणि।

—नळदवदंती रास

उ०—१ सैन्य सामग्री सघळी करो, दवदंती पीहरि नीसरि। चंद्र-यसांना प्रणम्या पाय, **बुलावा** ग्रावइ तिहां राय।

—नळदवदंती रास

बुलावणहार, हारो (हारी), बुलावणियो—वि०।

बुल विम्रोड़ो, बुलावियोड़ो, बुलाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बुलावीजणो, बुलावीजबो—कर्म वा०।

बुलावियोड़ो—१ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो बोळायोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. बुलावियोड़ी)

बुलावो—देखो 'बुलावो' (रू. भे.)

बुलि, बुली, बुल्ली—१ देखो 'बुलि' (रू. भे.)

२ देखो 'बुल्ली' (रू. भे.)

बुवाणो, बुवाबो—देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बुवाणहार, हारो (हारी), बुवाणियो—वि०।

बुवायोड़ो—भू० का० कृ०।

बुवाईजणो, बुवाइजबो—कर्म वा०।

बुवायोड़ो—देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुवायोड़ी)

बुवारणो, बुवारबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

बुवारणहार, हारो (हारी), बुवारणियो—वि०।

बुवारिम्रोड़ो, बुवारियोड़ो, बुवारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुवारीजणो, बुवारीजबो—कर्म वा०।

बुवारियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुवारियोड़ी)

बुवारी—१ देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

२ देखो 'वहू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दस कोस री पैंडो पार कर दियो। गांव रै गळियारै गळियारै जाव-ो हो के अेक बारणा माथै घूंघटो काढयां उठानै अेक लुगाई ऊभी दीसी। चोधरी फट लखग्यो कै है तो आ इण गांव री **बुवारी**।

—फुलवाड़ी

बुवारो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बुवाळा—देखो 'बुवाळा' (रू. भे.)

बुवाळो—देखो 'बुवाळो' (रू. भे.)

बुवासो—देखो 'बहुवासो' (रू. भे.)

बुवाह—स. पु.—वाह-वाह, धन्यवाद।

उ०—मिलणी रचायें अं रूपकां असी चार सोझै, बिणायं रतन्ना विधा नागरा **बुवाह**। आमासां अनोखा गोखां पराभा मेघ भासै असां, दान रा भोभा भरोखां विराजे दुवाह।

—मोहकमसिंघ रूपावत रो गीत

बुबोतर—देखो 'बभोत्तर' (रू. भे.)

बुवोतरमीं, बुवोतरवौं—देखो 'बवोत्तरमौं' (रू. भे.)

बुवोतरे'क—देखो 'बवोत्तरे'क' (रू. भे.)

बुवोतरो—देखो 'बवोतरो' (रू. भे.)

बुसत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ दीया बुसत अनूप है, दिया करो सब कोय। घर मैं धरा न पाइयं, जे कर दिया न होय। —अग्यात

उ०—२ हरीया ख्याली खलक मैं, कै तो गया बसाय। कै आया ज्यूं ई गया, बुसत मुसाय मुसाय। —अनुभववाणी

उ०—३ मनवा उलटि मिल्या निज मन कूं, सता सोग न व्यापं तन कूं। अरध उरध बिच रसतह लाया, जोखा अंत न बुसत बिसाया। —अनुभववाणी

बुसताज, बुसताव—देखो 'उसताद' (रू. भे.)

उ०—पंड बुसताज आहणै असपत, दुजड़े देतो खळां दुख। केस केस संधियो कंलपूरा, रावळ अंबर तणी रुख।

—जगतसिंघ सीसोदिया रो गीत

बुसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

बुसुत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—बप ब्रहम विघत री सरव बुसुत री, तूं गंगा तूं गावतरी। पारबती निमो हेमरो पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी. ग्रं.

बुस्त—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

बुस्ताज, बुस्ताव—देखो 'उसताद' (रू. भे.)

बस्तु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

बुहणी, बुहबौ—१ देखो 'वहणी, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिंदवा राव हयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां। गई लग विवांणां बैस इंद्र आगळी, बुही वारंगना विना बींदां। —महाराजा जसवंतसिंह रो गीत

उ०—२ असपति राव चमकि अोदकियो, सेडेजं वाही करि खोज। सुकरि आकास हूंत सेलारां, बीजुल विढण क बुही बीज।

—केसोदास गाडण

उ०—३ जिण मार्थ सखी मारा धणी री सांग बरछी बुही जांणणी अरयात दूसरा जोधारां रा हाथ रा सस्त्रा सूं तौ अधकटिया अध-मरिया हुवा रोवं छै नै म्हारा पति रा सस्त्र लागोड़ा पछं, जीव बिना हीज होवं छै सस्त्र लागोड़ा कांइ बचं नहीं। —बी. स. टी.

२ देखो 'बोवणी, बोवबौ' (रू. भे.)

बुहणहार, हारौ (हारी) बुहणियौ—वि०।

बुहिओड़ौ, बुहियोड़ौ, बुह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहीजणौ, बुहीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

बुहत्तर, बुहत्तरि, बुहत्तरी—देखो 'बयोत्तर' (रू. भे.)

बुहरउ—देखो 'बौ'री' (रू. भे.) (उ. र.)

बुहरणौ, बुहरबौ—क्रि. स.—१ खरीदना, क्रय करना।

उ०—दोसी बुहरइ अतिघणां वस्त्र, सुभट भला तें यहइ सस्त्र। एक बइरा कहइ कथाकल्लोल, एक वइरा वीकइ मंजीठ चोल।

—नळदवदंती रास

२ देखो 'व्यवहारणौ, व्यवहारबौ' (रू. भे.)

बुहरणहार, हारौ (हारी), बुहरणियौ—वि०।

बुहरिओड़ौ, बुहरियोड़ौ, बुह्रयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहरीजणौ, बुहरीजबौ—कर्म वा०।

बुहराड़णौ, बुहराड़बौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

बुहराड़णहार, हारौ (हारी), बुहराड़णियौ—वि०।

बुहराड़िओड़ौ, बुहराड़ियोड़ौ, बुहराड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहराड़ीजणौ बुहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

बुहराड़ियोड़ौ—देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहराड़ियोड़ी)

बुहराणौ बुहराबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

बुहराणहार, हारौ (हारी), बुहराणियौ—वि०।

बुहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहराईजणौ, बुहराईजबौ—कर्म वा०।

बुहरायोड़ौ—देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बुहरायोड़ी)

बुहरावणौ, बुहराबबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

बुहरावणहार, हारौ (हारी), बुहरावणियौ—वि०।

बुहराविओड़ौ, बुहरावियोड़ौ, बुहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहरावीजणौ, बुहरावीजबौ कर्म वा०।

बुहराविओड़ौ—देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बुहराविओड़ी)

बुहरियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ।

२ देखो 'व्यवहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहरियोड़ी)

बुहाड़णौ, बुहाड़बौ—१ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

बुहाड़णहार, हारौ (हारी), बुहाड़णियौ—वि०।

बुहाड़िओड़ौ, बुहाड़ियोड़ौ, बुहाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहाड़ीजणौ, बुहाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बुहाड़ियोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहाड़ियोड़ी)

बुहाणो, बुहाबो—१ देखो 'बहाणो, बहाबो' (रू. भे.)

उ०—वाहि बहाय घणो बीजूजळ, तंरळ लगां करै ह्वा तंरळ। इम प्रथमो मिर कीत उबारा, परगुं अपछर सुरगि पधारां।

—सू. प्र.

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बुहाणहार, हारो (हारी), **बुहाणियो**—वि०।

बुहायोड़ो—भू० का० कृ०।

बुहाईजणो, बुहाईजबो—कर्म वा०।

बुहायोड़ो—१ देखो 'बहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुहायोड़ी)

बुहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—समत बयाळै मांह कानी वद कळस थप्यो। मुकति को बुहार कोनो साचो गुर जांणियै।

—सेवादास

बुहारड़ी—१ देखो 'बुहारी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

बुहारण—देखो 'बुहारणी' (रू. भे.)

बुहारणो, बुहारबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

उ०—गाया री मैं गोरघा बुहारी भैंस्या रा खरळा-खरळा गोबर गेरयो डवला थाप्या सौ रै पचास। मारुणो घणा कमावणो।

—लो गी.

बुहारणहार, हारो (हारी), **बुहारणियो**—वि०।

बुहारिग्रोड़ो, बुहारिग्रोड़ो बुहारयोड़ो,—भू० का० कृ०।

बुहारीजणो, बुहारीजबो—कर्म वा०।

बुहारि—१ देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

बुहारियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहारियोड़ी)

बुहारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बुहारो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बुहावणो, बुहावबो—१ देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू. भे.)

उ०—करै घात बोलै पारसो, बगतर तणा भिळै आणै आरसो। कबाणा कुजा जिम कुरवरिया बिलख मेहा जिम मोसरिया। नाली निहाव, गोळा नुहाव। गढ सिखर डडो, कायरां का जीव तुडो।

—अ. वचनिका

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बुहावणहार, हारो (हारी), **बुहावणियो**—वि०।

बुहाविग्रोड़ो, बुहावियोड़ो, बुहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बुहावीजणो, बुहावीजबो—कर्म वा०।

बुहावियोड़ो—१ देखो 'बहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहावियोड़ी)

बुहियोड़ो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुहियोड़ी)

बुहुतर, बुहुतरि, बुहुत्तर, बुहुत्तरि, बुहुत्तिरि—देखो 'बमोत्तर' (रू. भे.)

बूंग—१ देखो 'बुग' (रू. भे.)

२ देखो 'बूंभ' (रू. भे.)

बूंगरड़—देखो 'बुंगरड़' (रू. भे.)

बूंगी—देखो 'बूंभ' (रू. भे.)

बूंगो—देखो 'बूंगो' (रू. भे.)

बूंघरो—देखो 'बूंघरो' (रू. भे.)

बूंभ—देखो 'बूभ' (रू भे.)

बूंभियो, बूंभो—देखो 'बूभो' (रू. भे.)

बूंट—देखो 'बंट' (रू. भे.)

बूंटो—देखो 'बूंटी' (रू. भे.)

बूंटो—देखो 'बूटो' (रू. भे.)

बूंतणो, बूंतबो—देखो 'बूंतणो बतबो' (रू. भे.)

बूंतणहार, हारो (हारी) **बूंतणियो**—वि०।

बूंतिग्रोड़ो बूंतियोड़ो, बूंत्योड़ो—भू० का० कृ०।

बूंतीजणो, बूंतीजबो—कर्म वा०।

बूंतियोड़ो—देखो 'बूंतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूंतियोड़ी)

बूंद—देखो 'बूंद' (रू भे.)

उ०—मेरो गई पुकार सब, ज्यूं समंद में बूंद। सुणी न अेको सावळा, कान रहे हो मूंद।

—गजउद्धार

बूंदड़—१ देखो 'बूंद' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बूंदी' (मह., रू. भे.)

बूंदड़ी—१ देखो 'बूंद' (अल्पा., (रू. भे.)

२ देखो 'बूंदी' (अल्पा., रू. भे.)

बूंदळा—देखो 'बूंदळा' (रू. भे.)

बूंदा—देखो 'बूंदा' (रू. भे.)

बूंदी—१ देखो 'बूंदी' (रू. भे.)

२ देखो 'बूंद' (रू. भे.)

बूंब—देखो 'बूंब' (रू. भे.)

बूंबड़ा—देखो 'बूमड़ा' (रू. भे.)

बूंबाड़ो—देखो 'बूंब' (मह., रू. भे.)

बूंमड़ा—देखो 'बूमड़ा' (रू. भे.)

बू-सं. पु.—१ अर्क, सूर्य। (एका.)

२ प्रभु (,,)

३ तूल। (,,)

४ कबूतर। (,,)

५ बहुत, अत्यधिक। (,,)

६ सर्व, सब। (,,)

७ देखो 'बू' (रू. भे.)

८ देखो 'बहू' (रू. भे.)

बूप्रणो, बूप्रबो—१ देखो 'वहणो वहबो' (रू. भे.)

उ०—पाना (छा) डेरा हता ज्यां हुआ छै, पकवांना का थाळ डेरां नै बूआ छै। पाचा रंग-राग वरताणा, मालूका हुआ मन का जांणां दारू को भड लग रयो छै, जसा भी पीधो छै, म्याराम नै पीयो छै।

—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'बोवणो, बोवणो' (रू. भे.)

बूप्रणहार हारो (हारी), **बूप्रणियो**—वि०।

बूइयोड़ो बूइयोड़ो, बूप्रयोड़ो, बूयोड़ो—भू० का० कृ०।

बूईजणो, बूईजबो—भाव वा०।

बूप्राणो, बूप्राबो—१ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बूप्राणहार. हारो (हारी), **बूप्राणियो**—वि०।

बूप्रायोड़ो—भू० का० कृ०।

बूईजणो, बूईजबो—कर्म वा०।

बूप्रायोड़ो—१ देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूप्रायोड़ी)

बूप्रावणो, बूप्रावबो—१ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बूप्रावणहार हारो (हारी) **बूप्रावणियो**—वि०।

बूप्राविप्रोड़ो, बूप्रावियोड़ो, बूप्राव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बूप्रावीजणो, बूप्रावीजबो—कर्म वा०।

बूप्रावियोड़ो—१ देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूप्रावियोड़ी)

बूइयोड़ो—१ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूइयोड़ी)

बूई—देखो 'बुई' (रू. भे.)

बूक—देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूकड़—देखो 'बूक' (मह., रू. भे.)

बूकड़ो—देखो 'बूक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बूखोचड़ी—देखो 'वहूखोचड़ी' (रू. भे.)

बूग—१ देखो 'बूक' (रू. भे.)

२ देखो 'बूग' (रू. भे.)

बूड़ो—देखो 'बूडो' (रू. भे.)

बूच—देखो 'बूच' (रू. भे.)

बूचकी—देखो 'बूचकी' (रू. भे.)

बूचड़—देखो 'बूचड़' (रू. भे.)

बूचड़खांनो—देखो 'बूचड़खांनो' (रू. भे.)

बूचो—देखो 'बूचो' (रू. भे.)

बूजी बूजीसा-स. स्त्री. [सं. वधू] १ वृद्धा स्त्री।

वि० वि०—सर्व प्रथम औरत घर में ब्याह कर आती है उस समय उसको "बू" कहकर पुकारा जाता है। उसके सन्तानोत्पत्ति होने पर सन्तान भी उसको 'बू' कहने लग जाती है। परन्तु उसकी वृद्धावस्था होने पर उसको 'बूजी' कहने लग जाते हैं।

२ माता।

उ०—आप कोई बात री चिंता फिकर करसो नीं। बूजी नैं म्हारा पांव धोक अरज करमी अर टाबरा माथै हाथ फेरसी। म्हारी कानी सू अमला री मनवार मांनसी। —अमर चूंनड़ी

३ दादी।

४ दादीसासु।

५ सासु।

उ०—काकी बोली जबरजी बेटा! म्हारो एक कांम करोला? म्हनें थारै काकोसा री कागज पढनै सुणाय दो बीरा! म्हूं थांनें

बिलावणी करती वखत बूजी रै छानै मालण री लूंवी दूंला ।
—अमरचूनड़ी

उ०—२ सेठां रै कैणा मुजब सेठांणी पांचूं बहुवां नै इण अबखी वेळा मैं साथ निभावण वास्तै समझावण लागी तो चारूं मोटोड़ी बहुवां कह्यो— बूजीसा, इण मैं इत्ती समझावण री कांई बात । म्हांगीसाख किसी न्यारी है । —फुलवाड़ी

रू. भे.— बुजो, बूज्जी ।

बूजो—१ देखो बूजो' (रू. भे.)

२ देखो बूंझो' (रू. भे.)

बूज्जो—१ देखो वृज्जो' (रू. भे.)

२ देखो 'बूजो' (रू. भे.)

बूझ—१ देखो 'वूझ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछ' (रू. भे.)

३ देखो बूंझ' (रू. भे)

बूझणो, बूझबो—१ देखो 'पूछणो, पूछबो' (रू. भे.)

उ०—पायो खबर अचीतियां, विसमै जैसी वत्त । तद राठौड़ बूझियो, 'दुरग' 'मासावत्त' । —रा. रू.

२ देखो 'बूझणो, बूझबो' (रू. भे.)

बूझणहार, हारो (हारी), बूझणियो—वि० ।

बूझियोड़ो, बूझियोड़ो, बूझ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूझीजणो, बूझीजबो—कर्म वा० ।

बूझताछ—देखो 'पूछताछ' (रू. भे.)

बूझवार—वि.— बुद्धिमान ।

उ०—ए कैसे हैं—वडे सु विद्वांन है, वडे महिरवान हैं, वडे सिरदार हैं । वडे बूझवार हैं, वडे दातार है । जमी आसमान बीच संभू अवतार हैं । —रा. सा. सं.

बूझबूझाकड़, बूझबूझागर—देखो 'बूझबूझाकड़' (रू. भे.)

बूझलो—देखो 'बूझलो' (रू. भे.)

बूझवणो, बूझवबो—१ देखो 'बूझणो, बूझबो' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछणो, पूछबो' (रू. भे.)

बूझवणहार, हारो (हारी), बूझवणियो—वि० ।

बूझवियोड़ो, बूझवियोड़ो, बूझव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूझवीजणो, बूझवीजबो— कर्म वा० ।

बूझवियोड़ो—१ देखो 'बूझियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बूझवियोड़ी)

बूझाड़णो, बूझाड़बो—१ देखो 'बूझाणो, बूझाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणो, बुझाणो' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणो, पूछाबो' (रू. भे.)

बूझाड़णहार, हारो (हारी), बूझाड़णियो—वि० ।

बूझाड़ियोड़ो, बूझाड़ियोड़ो, बूझाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूझाड़ीजणो, बूझाड़ीजबो—कर्म वा० ।

बूझाड़ियोड़ो—१ देखो 'बूझायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ो, (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूझाड़ियोड़ी)

बूझाणो, बूझाबो—१ देखो 'बूझाणो, बूझाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणो, बुझाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणो, पूछाबो' (रू. भे.)

बूझाणहार, हारो (हारी), बूझाणियो—वि० ।

बूझायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बूझाईजणो, बूझाईजबो—कर्म वा० ।

बूझायोड़ो—१ देखो 'बूझायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री बूझायोड़ी)

बूझावणो, बूझावबो—१ देखो 'बूझाणो, बूझाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणो, बुझाबो' (रू. भे)

३ देखो 'पूछाणो, पूछावो' (रू भे)

बूझावणहार, हारो, (हारी), बूझावणियो—वि० ।

बूझावियोड़ो, बूझावियोड़ो, बूझाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूझावीजणो, बूझावीजबो—कर्म वा० ।

बूझावियोड़ो—१ देखो 'बूझायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बूझावियोड़ी)

बूझियोड़ो—१ देखो 'बूझियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूझियोड़ी)

बूट—१ देखो 'बूंट' (रू. भे.)

२ देखो वूट' (रू. भे.)

बूटको—देखो 'बूंटो' (अल्पा., रू. भे.)

बूटणो, बूटबो—देखो 'बूठणो, बूठबो' (रू. भे.)

उ०—१ लुटी सांमांन मंडारां ऊवार पारां राव लागो, सोभा ढांणें पांणें राव खूटो लखांनां सचूप । तणी बांध सांम वटा मोजां मांणें रावतूटी, रांणें राव रूपाधार बूठो यंद्र रूप । —महादान महडू

उ०—२ पंगी लुटी थंगी सांमा हुई मांण पांण वाळो, जाफ छूटी पातां घणा पांणां वाळी फोक । रीफां तूठी पछेह ज्यू ऊठी फाट रांणा वाळो, नांणा वाळी मूठी बूटी मेह ज्यू निघोक ।

—महादांन महडू

बूटणहार, हारो (हारी), बूटणियो—वि० ।

बूटियोड़ो, बूट्टियोड़ो, बूटयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बूटीजणो, बूटीजबो—भाव वा० ।

बूटियोड़ो—देखो 'बूठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूटियोड़ी)

बूटियो—देखो 'बूंटो' (अल्पा., रू. भे.)

बूटी—देखो 'बूंटी' (रू. भे.)

बूटो—देखो 'बूंटो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूटी)

बूठ—स. स्त्री.—वर्षा होने की गति या क्रिया ।

बूठणो, बूठबो—देखो 'बूठणो, बूठबो' (रू. भे.)

उ०—१ ....भलां हुइं दही, परीस्यां कोइ कहइ नहीं, सही प्रथिवी रही गहगही, साचइं कादम माचइं, कारसणी नाचइं, नीपजइ सातइं धांन, देखतां प्रधांन, नासइ दुकाल, भाद्रवइ बूठइ सुगाल । —व. स.

उ०—२ सोरंभ फूट जव्वाध एम, घण बूठं जळहर लहर जेम । पेखियै ताम सोभा परम्म, किसनागर अंबर जख कदम्म ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ ऊनमियउ उत्तर दिसइं, गाज्यउ गुहिर गंभीर । मारवणी प्रिउ संभरयउ, नयणें बूठउ नीर । —ढो. मा.

उ०—४ सेवै नर सदीना मुरधर, सदा नीरोगी ही रवै । बूठं जांरी बातड़ी नै, वगत बटाऊड़ा कवै । —दसदेव

उ०—५ गाढां बादळी अवगाढ महूगढ, उत्तर प्रगट धर पंलां । देखां भड़ मांझी साहबखां, बूठो सरस बूंदेलां ।

—साहबखां भाखरोत कछवाहा री गीत

उ०—६ दीपं मजलस निस दिवस, हित चित नित मनुहार । विद 'प्रभो' बूठी विमै, इंद तणें आचार । —रा. रू.

बूठणहार, हारो (हारी), बूठणियो—वि० ।

बूठियोड़ो, बूठियोड़ो, बूठ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूठीजणी, बूठीजबो—भाव वा० ।

बूठाळु, बूठाळू—वि.—बरसने वाला, वर्षा करने वाला ।

उ०—कंठळ बूठाळू रूपकंध, बंधिया किलावा चमरबंध । तहमद भूल कसि घंट ताम, जंगी घरि हुवदां पूठि जांम । —सू. प्र.

बूठियोड़ो—देखो बूठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूठियोड़ी)

बूडपरवा, बूडपिरवा—देखो 'बूडपरवा' (रू. भे.)

बूडवेम—देखो 'बूढजांम'

बूढ—१ देखो 'बूढ' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढो' (मह.,रू. भे.)

३ देखो बूढण' (मह., रू. भे.)

बूढजांम—देखो 'बूढजांम' (रू. भे.)

बूढण, बूढणि, बूढणी—देखो 'बूढण' (रू. भे.)

बूढणो, बूढबो—देखो 'बूढणो, बूढबो' (रू. भे.)

बूढणहार, हारो (हारी), बूढणियो—वि० ।

बढियोड़ो. बूढियोड़ो, बूढयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बूढीजणो, बूढीजबो—भाव वा० ।

बूढपरवा, बूढपिरवा—देखो 'बूढपरवा' (रू. भे.)

बूढल—१ देखो 'बूढो' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बूढण' (रू. भे.)

बूढली—१ देखो 'बूढण' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बूढी' (अल्पा., रू. भे.)

बूढलो—देखो 'बूढो' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. बूढली)

बूढवाळ, बूढवावळ—स. स्त्री.—वृद्धावस्था, बुढापा ।

उ०—पेमजी जवरा हुकमां हाल्या । मैं सं बूढवाळ फोड़ा घाल्या । सपनां ला सैग होड़ा-सुमन, उलटा फड़खलां ज्यूं भूरडीजें है । कुभावना हाला काली नस रा कीड़ा कुमम, सुलटा निणखला सा तुरडीजें । —दसदोख

बूढवेम—देखो 'बूडजांम'

बूढसुवागण, बूढसुहागण—सं. स्त्री.—वृद्धा सुहागिन स्त्री ।

बूढाई—देखो 'बुढाई' (रू. भे.)

बूढापण, बूढापणो—देखो 'बूढापणो' (रू. भे.)

उ०—आवि तुं पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तूं आधारो जो । तुझ विण कुण बूढापणइ, करिस्यइ अम्हारी सारो जी । —स. कु.

बूढापो—देखो 'बुढापो' (रू. भे.)

उ०—१ किसनजी कीं कूंत नी सक्यो । सोभोनाई घर तरह-तरह री चीजां वस्तुवां सूं खूब राजी हुयो । बूढापे हाळा खोखदां मायं बै'म ही नीं गयो । खोसच्या ही तीस-पंतीस ताई री धकल में आई । —दसदोख

उ०—२ बाळापण तरुण गयो, वह बूढापो थाय । हरीया कर सिर कपिया, ग्रील भरी नहीं जाय । —अनुभववांणी

बूढ़ि—१ देखो 'बूढापो' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढ़ी' (रू भे.)

बूढ़ियोड़ो—देखो 'बूढ़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूढ़ियोडी)

बूढ़ी—१ देखो 'बुढण' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढ़ो' (स्त्री.)

बूढ़ैवारे—देखो 'बूढ़ैवारे' (रू. भे.)

उ०—इतरी कहिने जैत डेरे आयो । आय रजपूताणी नूं रीसांणी, 'जु बूढ़ैवारे राजा कनै मारी कमी कराई ।' इम कहि ने जैत छांडियो । —जैतमाल पुमार री वात

बूढ़ो—देखो 'बूढ़ो' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया बूढ़ा नां गिनै, तरना गिनै न वाळ । काळ पसारा सकळ जुग, ज्यूं मकड़ी का जाळ । —अनुभववांणी

उ०—२ बाळा तो तरणा भयो बूढ़ो तो ई न आपो चेतो । जनहरिरांम बीज बिन बाह्यां, कहा निपावे खेती । —अनुभववांणी

बूढ़ोठाडो, बूढ़ोठाढो—सं. पु. (स्त्री. बूढ़ोठाडी, बूढ़ोठाढी) अति वृद्ध पुरुष ।

उ०—बाळो भोळो गावै वा तो घर वर पावै । परणी-पातो गावै ज्या तो पुतर खेलावै । बूढ़ोठाढो गावै ज्या नै बैकूंटा रो वासो । —लो. गी.

बूढ़ोठेरो—स. पु (स्त्री. बूढ़ोठेरी, बूढ़ोठेरी) अति वृद्ध पुरुष ।

उ०—जै कोई धूजी नै परणी-पाती गावै, परणी पाती गावै, गोद पुतर खेलावै । जै कोई धूजो नै बूढ़ोठेरी गावै, बूढ़ोठेरी गावै वा बैकूंटा नै जावै । —लो. गी.

रू. भे.—बूढ़ोठेरो ।

बूढ़ोडेंग—देखो 'बूढ़ोडेंग' (रू. भे.) (स्त्री. बूढ़ोडेंग)

बूढ़ोठेरो—देखो 'बूढ़ोठेरो' (रू. भे.)

बूढ़ोभोड—सं. पु —अति वृद्ध पुरुष ।

उ०—ऊंट, बकरी री जोड़ी जुड़ै, जद मन कद मिळै ? एक करै नूई बीनणी रा कोड, दूजी करै मार्ख प्रदीठ बूढ़ोभोड । पेलड़ो लटवा करै—हाथ जोड़ै । बीजी मू सूजावै, माथो फोड़ै । —दसदोख

बूणो—देखो 'बूणो' (रू. भे.)

बूतणो, बूतबो—देखो 'बूंतणो, बूंतबो' (रू. भे.)

बूतणहार, हारो (हारी), बूतणियो—वि० ।

बूतियोड़ो, बूतियोड़ो, बूत्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूतीजणो, बूतीजबो—कर्म वा० ।

बूतियोड़ो—देखो 'बूंतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूतियोड़ी)

बूतेलो—सं. पु.—वातचक्र, बगूला ।

वि० वि०—देखो बघूळो' (रू. भे.)

बूत्कार—देखो 'बूत्कार' (रू भे.)

बूथ—देखो 'बूथ' (रू. भे.)

बूथेळियो देखो 'बथूळो' (अल्पा., रू. भे)

बूथेळो—देखो 'बघूळो' (रू. भे.)

बून—देखो 'बूंद' (रू. भे.)

बूनै—देखो 'बूनै' (रू. भे.)

बूर—१ देखो 'बूर' (रू.भे.)

२ देखो 'बूरो' (मह., रू. भे.)

बूवणो, बूवबो—१ देखो वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ० कूंडी कुतको होक चीपियो, कमर कस उठ बूवो रे । झोळी झंडा और पीजरी, जिण माही एक सूवो रे । —रैदास धत्तरवाळ

२ देखो 'बोवणो, बोवबो' (रू. भे.)

बूवणहार, हारो (हारी), बूवणियो—वि० ।

बूवियोड़ो बूवियोड़ो, बूव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बूवीजणो, बूवीजबो—भाव वा० ।

बूवियोड़ो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूवियोडी)

बूसट—स. पु.—चपेटा । (ऊ. र.)

बूसर—१ देखो 'असुर' (रू. भे.)

उ०—रे मन बूसर क्यूं बैठो हुस र, साहिब सेती सान्या, माया देखि भयो मतिवाळो, या वातां मन मांन्या । धन जोबन अंजरी को पाणी, कर सूं जासी नीसर, मनखा देही वळै न पावै, हरि सिवरो मन बूसर । —हरजी वणियाळ

२ देखो 'ऊसर' (रू. भे.)

बूहणो, बूहबो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ०—१ कूंझड़ियां करळव कियउ, घरि पाछिलै दरंगि । सूती साजण संभरया, करवत बूहो अंगि । —ढो. मा.

उ०—२ कूंझड़ियां कळिमळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। निसि भरि सज्जण सल्लियां, नयणां बूहा नीर। —ढो. मा

उ०—३ सिर ढांकण कुंण सा ग्रह्यो, जुवती चढतं (वैसा) जोम। दिन दिन जोवन दीहड़ा, बूहा जावं वोम। —मा. वचनिका

उ०—४ घाव चोट निहंस घरहरै, फाळ दुंग ऊछळं फफ। बूही तेग मेर सिरि बजर, बजर देह खगधार बज। —सुरजनदास पूनियो

उ०—५ इसड़ा होज गडां रा ढिग मारग माहै पडिया। परमेसर री का इसड़ो होज घड़ी बूही। उठा चढि अर कीतासर पधारिया। —द. वि.

उ०—६ साहरां सिवो छाजू रो बेटो नदी थी निजीक सिकार खेलतो हुतो, सू कूकवो सुणनं दोड़ आयो। साहिजादी नदी मांहे बूही जावती दीठी। —नैणसी

बूहणहार, हारो (हारी), बूहणियो—वि०।
बूहियोड़ो, बूहियोड़ो, बूह्योड़ो—भू० का० कृ०।
बूहीजणो, बूहीजबो—भाव वा०।

बूहा—देखो 'बूहा' (रू. भे.)

बूहाणो, बूहाबो—देखो 'बहाणो, बहावो' (रू. भे.)

बूहाणहार, हारो (हारी), बूहाणियो—वि०।
बूहायोड़ो—भू० का० कृ०।
बूहाईजणो, बूहाईजबो—कर्म वा०।

बूहायोड़ो—देखो 'बहायोड़ो' (रू. भे.
(स्त्री. बूहायोड़ी)

बूहारणो, बूहारबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

बूहारणहार, हारो (हारी), बूहारणियो—वि०।
बूहारियोड़ो, बूहारियोड़ो, बूहारयोड़ो—भू० का० कृ०।
बूहारीजणो, बूहारीजबो—कर्म वा०।

बूहारियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बूहारियोड़ी)

बूहारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बूहारो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बूहावणो, बूहावबो—देखो 'बहाणो, बहावो' (रू. भे.)

बूहावणहार, हारो (हारी), बूहावणियो—वि०।
बूहावियोड़ो, बूहावियोड़ो, बूहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
बूहावीजणो, बूहावीजबो—कर्म वा०।

बूहावियोड़ो—देखो 'बहायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बूहावियोड़ी)

बूहियोड़ो—देखो 'बहियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बूहियोड़ी)

बूहो-वि.—पागलपनयुक्त, पागलपन की।

उ०—एकर री बात, राजी रै आप में पौन-हवा निकलगी। बावळी वंडा करण लागगी। गूग बिखेरै अर तत्ता-पत्ता सूं बूही बातां करै। जकं सूं घर हाळा नै भूतणी री बं'म वड़ गयो है। —दसदोख

बें—देखो 'बे' (रू. भे.)

बेंकट—देखो 'बेंकटगिरि' (रू. भे.)

बेंकटगिर, बेंकगिरि, बेंकटगिरी—सं. पु. [सं. बेंकट:+गिरि] दक्षिण भारत में स्थित एक पर्वत, जहां विष्णु का प्रसिद्ध स्थान है और भारत के कोने-कोने से भक्त दर्शनार्थ आते हैं।

रू. भे. - वेंकट, वेंकिट, वेंकिटगिर, वेंकिटगिरि, वेंकिटगिरी

बेंकटाचळ - देखो 'बेंकटगिरि'

बेंकटेस, बेंकटेसर, बेंकटेसुर, बेंकटेस्वर—सं. पु. [सं. वेंकट+ईश, वेंकट+ईश्वर] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर।
२ शेषनाग का नाम।
३ दक्षिण भारत के तिरूपति बालाजी का एक नाम।

बेंकिट, वेंकिटगिर, वेंकिटगिरि, वेंकिटगिरी—देखो 'वेंकटगिरि' (रू. भे.)

बेंगळा, बेंगला - सं. स्त्री.—मूर्ख स्त्री, मूर्खा।

उ०—१ भगवांन री समझदारी के दुनियां मैं भ्रंडा मूरख अर अधरमी आदमी घणा नीं व्है, नींतर सगळा संसार री ई पोलाळो व्है जातो। आ दुनिया जीवण जोगी ई नीं रै'तो। वो धरमात्मा भतीजो नीठ उण बेंगळा नै समझाई। —फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ जूझळ खावता बोल्या—थनै हेलो नीं मारयो तो किसो दूजा नै मारयो। घर मैं दूजो कुण है जिणनै हेलो मारूं। थारे पीहर वाळा ई थनै बेंगळा केता सो यूं थोड़ा ई केता। —फुलवाड़ी

उ०—३ पण सेठाणी भ्रंडी बेंगळा कं वा आपरै जायोड़ा बेटा नै ई नी ओळखे। बोळी-घोनी नै कठै ई रातिदो तो नीं हैं। नीं बेटा री बोली पिछाणी अर नी उणनै ओळखियो। —फुलवाड़ी

बेंच—देखो 'बेंन' (रू. भे.)

बेंचणो, बेंचबो—देखो 'बेंचणो, बेचबो' (रू. भे.)

उ०—रामदासजी सांढिया लेनं दुधोड़ आया। इणां नै तो आखड़ी छं, धाडो वासी राखणो नही। सांढियां रजपुतां नै बेच दीनो। —रा. सा. सं.

बेंचणहार, हारौ (हारी), बेंचणियौ—वि० ।
बेंचियोड़ौ, बेंचियोड़ौ, बेंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंचीजणौ, बेंचीजबौ—कर्म वा० ।

बेंचवाड़ौ—देखो 'बेंचवाड़ौ' (रू. भे.)

बेंचाणौ, बेंचाबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

बेंचाणहार, हारौ (हारी), बेंचाणियौ—वि० ।
बेंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंचाईजणौ, बेंचाईजबौ—कर्म वा० ।

बेंचायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंचायोड़ी)

बेंचावणौ, बेंचावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

बेंचावणहार, हारौ (हारी), बेंचावणियौ—वि० ।
बेंचाविथोड़ौ, बेंचावियोड़ौ, बेंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंचावीजणौ, बेंचावीजबौ—कर्म वा० ।

बेंचावियोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंचावियोड़ी)

बेंचियोड़ौ—देखो 'बेंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंचियोड़ी)

बेंट—देखो 'बेंट' (रू. भे)

बेंटणौ, बेंटबौ—देखो 'बांटणौ, बांटबौ' (रू. भे.)

उ०—बेटा रै जलम री खुसी में बामण सवा मण, मिसरी पतासा बेंट्या अर जाट सवा मण गुळ बेंट्यो। पछै दोनूं घरां में दोनूं बातां दिनोदिन भरै पड़ण लागी। —फुलवाड़ी

उ०—२ डावड़ी कह्यौ—गाव में तौ सगळै बधाई री पाच मण गुळ बेंटीजग्यौ अर थे हाल ताई सूताई हो। आज तौ आपरै गांव सोनै रौ सूरज ऊगियौ। आपरै करमा री परताप कै इण गाव राजा रौ कंवर तोरण बांदियौ। —फुलवाड़ी

बेंटणहार, हारौ (हारी), बेंटणियौ—वि० ।
बेंटिथोड़ौ, बेंटियोड़ौ, बेंट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंटीजणौ, बेंटीजबौ—कर्म वा० ।

बेंटाणौ, बेंटाबौ—देखो 'बंटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

बेंटाणहार, हारौ (हारी), बेंटाणियौ—वि० ।
बेंटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंटाईजणौ, बेंटाईजबौ—कर्म वा० ।

बेंटायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंटायोड़ी)

बेंटावणौ, बेंटावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

बेंटावणहार, हारौ (हारी), बेंटावणियौ—वि० ।
बेंटाविथोड़ौ, बेंटावियोड़ौ, बेंटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंटावीजणौ, बेंटावीजबौ—कर्म वा० ।

बेंटावियोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंटावियोड़ी)

बेंटियोड़ौ—देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंटियोडी)

बेंडाक—१ देखो 'बेंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'बेंडौ' (मह., रू. भे.)

बेंडौ—देखो 'बेंडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंडी)

बेंण—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

३ देखो 'वेन' (रू. भे.)

बेंत—१ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

उ०—१ बीजळी कांई किडकी, आभा नै सेंचन्नण कर दियौ। खेजड़ौ हेटै चार हाथ ऊंडौ घेंड खुदग्यौ। च्यारूं आदमियां री जीभां बेंत बारै निकळगी। आंख्यां रा डोळा बारै आय पड़्या। —फुलवाड़ी

उ०—२ घरै जावतां वौ इज रूखाळौ धाळौ खेत आयौ। ताळां ल्हेक ऊभौ बाजरौ झोला खावती ही। दो दो बेंत लांवा जड़ाव री जात सिट्टा मोत्यां रै उनमांन परळाट करता हा। —फुलवाड़ी

उ०—३ अंदाता, आप किसौ विस्वास करौला—इसौ ऊचौ झेलम कै फगत दोय घड़ी में बेंत बेंत लांबा बाळ आय जावै। सेवां ज्यूं लरड मरड बधै। —फुलवाड़ी

उ०—४ वेदां री तौ गिरै-दसा ई भंवगी। जूता अर बेंतां रा डर सूं जांणता जको ई विद्या विसरग्या। किणी धतर-वेद मूं की कारी लागी नी। —फुलवाड़ी

२ देखो 'बेत' (रू भे.)

३ देखो 'वेंत' (रू. भे)

४ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

बेंतणौ, बेंतबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बेंतणहार, हारौ (हारी), बेंतणियौ—वि० ।
बेंतिथोड़ौ, बेंतियोड़ौ, बेंत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेंतीजणौ, बेंतीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतरणौ, बेंतरबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बेंतरणहार, हारौ (हारी), बेंतरणियौ—वि० ।

बेंतरिप्रोड़ो, बेंतररियोड़ो, बेंतरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बेंतरीजणौ, बेंतरीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतराणौ, बेंतराबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बेंतराणहार, हारौ (हारी), बेंतराणियौ—वि० ।

बेंतरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बेंतराईजणौ, बेंतराईजबौ—कर्म वा० ।

बेंतरायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतरायोड़ी)

बेंतरावणौ, बेंतरावबौ—देखो 'बेंताणौ,, बेंताबौ' (रू. भे.)

बेंतरावणहार, हारौ (हारी), बेंतरावणियौ—वि० ।

बेंतराविप्रोड़ो, बेंतरावियोड़ो, बेंतराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बेंतरावीजणौ, बेंतरावीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतरावियोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतरावियोड़ी)

बेंतरियोड़ौ—देखो 'बेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतरियोड़ी)

बेंताणौ, बेंताबौ देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

उ०—थांन दोय बाफतां रा, दोय माहमुदी, पांच सेल्हा प्रबल ल्याई । सो दरजी भरमल रै कारखानै बेंतांणिया । वागो पेहरण नै कुंवरसी रै थो सो दोपोर पोढिया जद लै गई । उण ऊपर बेंताया जाधिया तीन बाफता रा कराया ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

बेंताणहार, हारौ, (हारी), बेंताणियौ—वि० ।

बेंतायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बेंताईजणौ, बेंताईजबौ—कर्म वा० ।

बेंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतायोड़ी)

बेंताळीस, बेंतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

बेंतावणौ, बेंतावबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बेंतावणहार, हारौ (हारी), बेंतावणियौ—वि० ।

बेंताविप्रोड़ो, बेंतावियोड़ो, बेंताव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बेंतावीजणौ, बेंतावीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतावियोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतावियोड़ी)

बेंतियौ–वि.—एक बालिश्त लम्बा ।

सं. पु.—केवल एक बालिश्त लम्बा व्यक्ति, जो प्रायः पृथ्वी तल के अन्दर पाया जाता है और पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकता ।

बेंदी—देखो 'बिंदी' (रू. भे.)

बेंद्रिय—देखो 'बेइंद्रिय' (रू. भे.)

बेंहरौ–स. पु.—विवाद ।

उ०—उरजन तणौ लसै उतरियौ, सुत जगमाल रहियौ सुघर । बेंहरौ हुम्रो वेहूं गढ विग्रह, हाडा अने 'हमीर' हर ।

—रावत पत्ता भ्रामेट री गीत

बे'—देखो 'वेह' (रू. भे.)

बे–सं पु —१ काम, कार्य । (२) वैद्य, हकीम । (३) पल्लव । (४) कल्पवृक्ष । (५) पीपर । (६) वेग, गति । (एका.)

७ स्वरूप, आकार ।

८ पोशाक ।

सर्व.—१ 'बो' का बहुवचन ।

२ उस । (अमरत)

३ वह या बहुवचन उन ।

उ०—वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक । वे खाधां वे मांनियां, हुवा कतात खुराक । —बां. दा.

४ वह का बहुवचन, वे ।

उ०—मुनि वालै तप जोग बळ, सरग कपाटां हत्थ । वे ही क्रपण कपाट नू, ऊघाडण असमत्थ । —बां. दा.

४ तृतीय पुरुष के लिए सम्बोधन सूचक शब्द, वह (सम्मान सूचक) ।

उ०—काम तो करणो इज चाहिजै । सगळै ई कांम म्हाला है. चांम म्हाला कठैई कोनी । पण थोडो घणो कांम तो जेठांणीजी नै ई करणो चाहिजै । पण वे तौ ढोल रै एल ई नी दे ।

—अमरचूनड़ी

अव्य.—५ सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ० –अहो आवो वे यार बैठो दरबार । ए चादणी रात, कहो मजलीस की बात । कहो कौण कौण, मुलक कौण कौण राजा देखे, कोण कौण पातिस्या देखे, कौण कोण दईवान देखे, कौण कौण महिवांन देखे । —रा. सा. सं.

६ देखो 'बे' (रू. भे.)

उ०—१ उठै वे दळ जोध प्रकारा, साभ सरीर तणा भ्रम सारा । कहि गंगा तन मंजन कीधा, दांन वितान मांन करि दीधा ।

—रा. रू.

उ०—२ रहता सेती रचीयै, क्या बहतां सुं कांम । भाव जहां हंसि बोलियै, बे भावत बेकांम । —अनुभववांणी

रू. भे.—बेंह, बें।

बेग्रंत—देखो 'बेग्रंत' (रू. भे.)

बेग्रकल—देखो 'बेग्रकल' (रू. भे.)

बेग्रकली—देखो 'बेग्रकली' (रू. भे.)

बेग्रखरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे.)

बेग्रखरीचोसर—देखो 'बेग्रखरीचोसर' (रू. भे.)

बेग्रखरी, बेग्रबखरी, बेग्रलखरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे.)

बेग्रद-वि०- बेइज्जत, प्रतिष्ठारहित।

उ०— ठिकाणा रौ मालक घोड़ा रजपूतां नै बेग्रद राखतौ मो इण माऊ लागरी स्त्री कह रही है—हे मलिया ग्रठै ठिकाणा में भड़ नै घोड़ा मुहंगा हा सो एक ग्रादमी सू भ्राट उडता (युद्ध होता) भड़ नै घोड़ा मुहंगा हो गया। —वी. स टी

बेग्रदब—देखो 'बेग्रदब' (रू. भे.)

बेग्रदबी—देखो 'बेग्रदबी' (रू. भे.)

बेग्ररथ, बेग्ररथो—देखो 'बेग्ररथ' (रू. भे.)

बेग्राखरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे.)

बेग्राब—देखो 'बेग्राब' (रू. भे.)

बेग्राबरू—देखो 'बेग्राबरू' (रू. भे.)

बेग्रालिस, बेग्रालीस—देखो 'बंयालीस' (रू. भे.)

बेग्रासी—देखो 'बंयासी' (रू. भे.)

बेइंद्रिय, बेइंदी, बेइंद्रिय—देखो 'बेइंद्रिय' (रू. भे.)

बेइंसाफ—देखो 'बेइंसाफ' (रू. भे.)

बेइंसाफी—देखो 'बेइंसाफी' (रू. भे.)

बेइ—देखो 'बेई' (रू. भे.)

उ०— राजा बीसलदेव ग्रजमेर राज करै। वडो महाराज तैसू कोई ग्रधको नही। तिण सौ मूळवै लागवजी हुई, चारण बेसवटै बेइ। बेसवड़ो मूळवै पासै रहै ग्रर मूळवौ चणडोळिधौ रहै। --मूळवै सागावत री बात

बेइज्जत—देखो 'बेइज्जत' (रू. भे.)

बेइज्जती—देखो 'बेइज्जती' (रू. भे.)

बेइतबार—देखो 'बेइतबार' (रू. भे.)

बेइया—देखो 'वेदिका' (रू. भे.) (जैन)

बेइल्म, बेइल्मी—देखो 'बेइल्म' (रू. भे.)

बेई—देखो 'बेई' (रू. भे.)

उ०—१ मन में धरता मरट धरड जिम भूलै घूमै, मेलै घर गया मऊ भटकि भूमा पर भूमै। बेटा नै मा बाप बेचि दे ग्रोमण बेई, कलतां रिगता रांक करै बेलखाटा केई। —घ. व. ग्रं.

उ०—२ पछै संमत १६७२ वळै पाछो ग्रायो, तद कामड़ो पटै दियो। पछै विकूकोहर पांणी री तीण बेई माहीमांह बोलाचाली हुई तद भाटी ग्रचळदास मारियो। —नैणसी

उ०—३ गुजवो कोहर तो, तठै चारण री बित पावण बेई, सु कोहर खाढियो, सु पांणी नीसरै नही। ताहरां चारण बिरवड़ी कही -- 'वडा राठौड घेरी छै ज्यु पाय। —नैणसी

उ०—४ जदै वीरमदे कहण लागो—'ज, हूं वठै पठांण रै जाय ग्रर बंध बेई ग्ररज करूं'। ताहरा कल्याणमल सवगां मांहै समभतो हुतो, ताहरा कह्यो—'राज। बंध बेई ग्ररज मतां करो।

—नैणसी

बेईठणो, बेईठबो—देखो 'बैठणो, बैठबो' (रू. भे.)

बेईठणहार, हारौ (हारी), बेईठणियो—वि०।

बेईठिग्रोड़ो, बेईठियोड़ो, बेईठयोड़ो—भू० का० कृ०।

बेईठीजणो, बेईठीजबो—भाव वा०।

बेईठाणो, बेईठाबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

बेईठाणहार, हारौ (हारी), बेईठाणियो—वि०।

बेईठायोड़ो—भू० का० कृ०।

बेईठाईजणो, बेईठाईजबो—कर्म वा०।

बेईठायोड़ो—देखो 'बैठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेईठायोड़ी)

बेईठावणो बेईठावबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

बेईठावणहार हारौ (हारी), बेईठावणियो—वि०।

बेईठाविग्रोड़ो, बेईठावियोड़ो, बेईठव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेईठावीजणो, बेईठावीजबो—कर्म वा०।

बेईठावियोड़ो—देखो 'बैठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेइठावियोड़ी)

बेईठियोड़ो—देखो 'बैठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेईठियोड़ी)

बेईमान—देखो 'बेईमांन' (रू. भे.)

बेईमानी—देखो 'बेईमानी' (रू. भे.)

बेउल-स. पु. [सं विचकिल:] एक प्रकार की चमेली। (ज. र.)

उ०—१ वनि वनि विकसइं बेउल, खेउ लगाडइं चोंति, दीठा द्राखह मडव, मंड वधारइं प्रीति। वर विलसइ ग्रलवेसर केसर हेठि सुवेस, ग्रध पूगइं ऊतरायणि रायणि फलिय ग्रसेस।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ मउरिया सहकार, चपक उदार। बेउल बकुल, भ्रमर कुल सकुल, कलरव करइं कोकिल तणा कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निरमळ जळ, विकसित कमळ। —रा० सा० सं०

बेउवियलद्धी, बेउवियलधी, बेउव्वियलद्धी, बेउव्वियलधी—देखो 'वैक्रियलब्धि' (रू. भे.) (जैन)

बेऊ—सं. पु.—१ एक प्रकार का शाक विशेष ।

उ०—बालु नई वेलातरू, वेऊ वेतस वांणि । बध्राऊ वाहलु लीउ वाउलीज वखाणि । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बेऊ' (रू. भे.)

बेकट—स. पु.—१हंसी-मजाक करने वाला, मस्खरा ।

२ हीरे-जवाहिरात की परख करने वाला, जौहरी ।

३ युवा पुरुष ।

रू. भे.—बेकट, बेकढ

बेकटौ, बेकढौ—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—बागी प्रखगा काढ़ुळा नाग करतकां साफले बही, गुड़ं सिधू बाहुळा जुम्राऊ के गाराज । लड़ बहादरेस धूत मूंहड़ा गैणाग लागौ, नत्रीठा बेकढौ बागी खळा धूनाराज । —प्रभूदान मोतीसर

बेकणौ, बेकबौ—देखो 'वेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)

उ०—चपला गत चंबोह, परी गई अपछर परै । प्राय आगळ ऊभीह, कमळादे नर वेकियां । —पा प्र

बेकणहार, हारौ (हारी), बेकणियौ—वि० ।

बेकिग्रोड़ौ, बेकियोड़ौ, बेक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बेकीजणौ, बेकीजबौ—कर्म वा० ।

बेकदर—देखो 'बेकदर' (रू. भे.)

बेकदरी—देखो 'बेकदरी' (रू. भे.)

बेकदरौ—देखो 'बेकदर' (ग्रल्प., रू. भे.)

बेकर—स. पु. १—एक प्रकार का घास विशेष ।

२ एक प्रकार की मिट्टी विशेष ।

३ देखो 'बेकर' (रू. भे.)

रू. भे.—बेकरड़ी, बेकरियौ ।

बेकरड़ौ—१ देखो 'बेकर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बेकर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बेकरड़ौ—१ देखो 'बेकर' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बेकर' (मह., रू. भे.)

बेकरार—देखो 'बेकरार' (रू. भे.)

बेकरारी—देखो 'बेकरारी' (रू. भे.)

बेकरियौ—१ देखो 'बेकर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बेकर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बेकळ—१ देखो 'बेकळू' (रू. भे.)

२ देखो 'विकळ' (रू. भे.)

बे'कल—देखो 'विकळ' (रू. भे.)

उ०—मुला संगित तें करी, तें कीया बिसमल । ललकी गला कटाय के, क्या कीया बे'कळ । —ग्रनुभववांणी

बेकळी—१ देखो 'बेकळी' (रू. भे.)

२ देखो 'व्याकुळी' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याकुलता' (रू. भे.)

बेकळू—देखो 'बेकळू' (रू. भे.)

उ०—१ पछै तिहया तांई खेत रै चारूं मेर होळै होळै चकारा देवती फिरी । सूरज हमेसां री गळाई ग्रायूण दिस रै धोरां री बेकळू मलमल मैं गडग्यौ हो । —फुलवाड़ी

उ०—२ मन ई मन ग्रा सोच राजी व्ही कै जकी कूंडा मैं मोहर न्हाकी, वा सोच मैं रांम-जाणै कांई बगसैला ! वा मन लगाय ग्रापरी खट-पट मैं ग्रळूझगी । बेकळू रेता कूंडा भर भरनै मळबा माथै लाय राळ्या । —फुलवाड़ी

उ०—३ ग्रैड़ा ग्रैड़ा ग्रकरम, ग्रन्याव ग्रर ग्रधरम चुपचाप सही, चुम्कारौ ई नीं करै । बेकळू रेत रा लाठा धोरा मैं विरखा री पांणी रिसै ज्यूं इण राज री रया रै ग्रतस मैं सगळा ग्रकरम, ग्रन्याव झरै बुडकौ ई नीं ऊठै । —फुलवाड़ी

बेकस—देखो 'बेकस' (रू. भे.)

बेकसूर—देखो 'बेकसूर' (रू. भे.)

बेकांनूनी—देखो 'बेकानूनी' (रू. भे.)

बेकांम, बेकांमौ—देखो 'बेकांम' (रू. भे.)

उ०—१ घरि ही हरि सूं हित लाय रहौ, मन रे मत जाह भटकण कूं । कण पालो काम बेकांम करै, थोथा भूर फटकण कूं ।

—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ जाकै घट विरहा वसै, जा घट प्रगटै रांम । जनहरिया घट विरह विन, सोई घट बेकांम । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ रहता सेती रचीयें, क्या वहतां सुं कांम । भाव जहां हुंसि बोलियें, बे भावत बेकांम । —ग्रनुभववांणी

उ०—४ सहजे जीव जिंद कूं छाडै, ताकूं कहत हरांमां । काजी करद गऊ सिर सारै, विनां दोस बेकांमां । —ग्रनुभववांणी

बेकाज—देखो 'बेकाज' (रू. भे.)

उ०—तु क्युं सूतो नीद भरि, भजन विनां बेकाज । जनहरिया जीरौ करै, खड़ौ सिराणै बाज । —ग्रनुभववांणी

बेकाबू—देखो 'बेकाबू' (रू. भे.)

बेकायदा—देखो 'बेकायदा' (रू. भे.)

बेकार—देखो 'बेकार' (रू. भे.)

बेकारी—देखो 'बेकारी' (रू. भे.)

बेकी—देखो 'बेकी' (रू. भे.)

बेकीमती—देखो 'बेकीमती' (रू. भे.)

बेकुंठ—देखो 'बैकुंठ' (रू. भे.)

बेकुंथहथिराज, बेकुंथहथिराय, बेकुंथहथिराज, बेकुंथहथिराय—सं. पु. [सं. बैकुंठहस्तिराज] हाथियों की सेना का नायक। (जैन)

बेकूफ, बेकूब—देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

बेकूबी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

बेख—१ देखो 'विख' (रू. भे.)

२ देखो 'वीक्षण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीख' (रू. भे.)

४ देखो 'वेख' (रू. भे.)

५ देखो 'वेस' (रू. भे.)

बेखटक बेखटकै—देखो 'बेखटकै' (रू. भे.)

बेखणौ, बेखबौ—क्रि. स.—[सं. वि+ईक्षणम्] १ अवलोकन करना, देखना।

उ०—१ बजि पाठ सकळ वाजित्र बजे, कुसम सघण सुरियंद किया। बेखियां हीज आवै वर्णं, उण दिन तणौ अजोधिया।

—सू. प्र

उ०—२ बळीवळी बोरहाक नोपतां नंगारां वागी, सेना पीठ लागा जोस धारियां सक्रोध। उबंबरा आसमांण भुजाटा सेल री अणयां, बेखौ कस बस माथ नाइता विरोध। —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ वर्ण चार, आभास बदनारविंद, उरं ऊपजै बेख रेखा अणद। सदा हेत संता इसा नेत सोहै, महा मंग रूपी तिका नैण मोहै। —रा. रू.

उ०—४ भंग्व डाधी भर्णं दुगडियौ मान दिरीजे, जो राजा जीमणौ पोहर हैकण ठहरीजे। अख आडी बेखतां पोर खोडस पारभण, आठ पोहर योमास चलेऊ भेडो तै सुण। —पा. प्र

२ निरीक्षण करना, जांचना।

३ जानना, समझना।

उ०—१ कप सुणि न्रप दाखियौ क्रिपा करि, हवि तूं मांग कहै सुजि हाजरि। एक बार ओखद तत एही, जपियौ मैं बेखौ गुण जेही। —सू. प्र.

उ०—२ वेदां भेदां बेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौरांणं। राघौ नाम सरीख, नह को नर देव नागिंद। —र. ज. प्र.

बेखणहार, हारौ (हारी), बेखणियौ—वि०।

बेखियोड़ौ, बेखियोड़ौ, बेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेखीजणौ, बेखीजबौ—कर्म वा०।

बेखणौ, बेखबौ, बोखणौ, बोखबौ, बेकणौ, बेकबौ, ब्रीखणौ, ब्रीखबौ—रू. भे.।

बेखता—देखो 'बेखता' (रू. भे.)

बेखबर—देखो 'बेखबर' (रू. भे.)

बेखबरदारी—देखो 'बेखबरदारी' (रू. भे.)

बेखबरी—देखो 'बेखबरी' (रू. भे.)

बेखरच—देखो 'बेखरच' (रू. भे.)

उ०—उठा घरमद्वार मांगि नोसरिया हुता। मरि, छूटि, तूटि, घणौ बेखरच हुइ, तूटि मरि, भूखा मरि अर नींसरिया हुता। तियै वास्तै पातिसाहजी खिजिया। —द. वि.

बेखवेरी—देखो 'बेखवेरी' (रू. भे.)

बेखातर, बेखातरि—देखो 'बेखातर' (रू. भे.)

बेखास—स. पु.—१ प्रयत्न, प्रयास, कोशिश।

उ०—कोई कहै मोनि पाठ ग्रह विध्या, कोई वसतं वनवासा। सतगुर विन ससा नहीं भाजै, भावै कोटि करौ बेखासा।

—अनुभववांणी

२ विश्वास, एतबार।

उ०—सुग जिनवर सेत्रुंजाधणीजी, दास तणी अरदास। तुज आगल बालक परेजी, हुंनो कर्ड बेखास, रे जिनजी मुज पापी नैं तार।

—वस्त.

३ विलाप, रुदन।

उ०—१ सुणि मारुवणी आवइ घरै, व्याप्यउ विरह मयण बळ धरै। सूती सेज करै बेखास, मोडइ अंग, मूंकइ नीसास।

—ढो. मा.

उ०—२ वोढावे मन विलखा किया, देवसूत्र एहवा थया। वार ढोलउ करइ बेखास, वळि-वळि जोवइ मारू-साम। —ढो. मा.

बेखियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ। २ निरीक्षण किया हुआ, जांचा हुआ। ३ समझा हुआ जाना हुआ। (स्त्री. बेखियोड़ी)

बेखुदी—वि [फा. बेखुदी] जिसमें चेतना न हो, बेखबर।

उ०—बेखुदी वे आदि बेगम, अजर अचळ अचाल। चिदानंद अरूप अवगति, खबर दारीं ख्याल। —ह. पु. वां.

बेखून-वि.—निरपराध, बेखून।

उ०—श्रीकम प्ररज करां छां तूनां, मोटी प्रकलि समापै मूनां। जादवराव निमो जर जूनां, बैकंठ मां राखै बेखूनां। —पी. ग्रं.

बेग–सं. पु [सं.] १ प्रवाह, बहाव।

उ०—वहै खग प्राय खळां फळ बेग, तुटै घण ग्राप तणी सिर तेग। सयो करि मेछ घणा समराथ, भटी भड़ ताम पड़ै भाराथ। —सू. प्र.

२ शरीर में से मल-मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति।

३ मोतिया बिन्द का समय पर ऑपरेशन न होने पर नेत्र में चलने वाली सूल, पीड़ा।

४ वायु विकार।

५ चौबीस गुणों में से एक गुण जो आकाश, जल, तेज वायु और मन में पाया जाता है। (न्याय)

६ गति, चाल।

उ०—१ पमंग बेग उप्पड़ै, वणै सनूर वंकड़ै। खुलै अपार ग्वरगयं प्रणी सकत्ति ग्रग्रय। —रा. रू.

उ०—२ चोखी बात फैलतां नै जेज लागै परण भूंडी बात तो पवन रै बेग उडै। रेडियो में खबर पूगै ज्यूं आ खबर धानपुर पूगी तो गांव में खळबळी माचगी। मिनखां रा अबै मूंडा जितरी ई बातां। —अमरचूंनड़ी

७ तीव्र गति, तेज चाल।

उ०—१ राति मांगीर सारंग डाणै ग्रहै, वाइ ऊपड़िया लोण जांणै वहै। हद् वेहद् पै बेग पै हैमरां, पाघरा जांण पाहाड़ नहुं परां। —गु रू. बं.

उ०—२ जिम लवण रहित रसवती वचन रहित सरस्वती, कंठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन, फल रहित व्रक्ष, तप रहित भिक्षुक। बेग रहित घोड़ो, केस रहित मोढो, वस्त्र रहित सिणगार, स्वरण रहित अलंकार, इत्यादि। —रा. सा. सं

उ०—३ मझि खगां झाट खेल्है मलंग, आफळै अग्गी परधार अग। पवन रा कुटबी बेग पाण, उड्डुउ सिधगुटका जिम उडांण। —सू. प्र

८ आवेश, जोश ९ दृढ़ प्रतिज्ञा। १० प्रेम, अनुराग। ११ वीर्य, शुक्र। १२ वीर्यपात, वीर्यस्खलन। १३ शक्ति, बल, सामर्थ्य।

१४ शीघ्र, जल्दी; तुरन्त (अ. मा.)

उ०—१ मम ढील करो हुल बार म लावो, वेग चढो वहिला वहिला। भिड़ता भड सूरज मंडळ भेदै, भूळ भरै रंभ भूंभ भला। —गु. रू. ब.

उ०—२ सुगुण सनेही नाहुला, वाला बेग पधार। अलबेला अलजो घणो, देसण पीय दीदार। —ढो. मा.

उ०—३ सोवायत इंद साह री, राव दिसी तिण वार। गोयंदास पमार संग, पूगी बेग पुकार। —रा. रू.

उ०—४ चंद उठी दळ बेग चलाया, प्राई ठीक नजीक सु प्राया। प्रळै काळ जिसड़ा दळ पावस, दळपत छत्रहूंत कोसां दस। —सू. प्र.

१५ प्रसन्नता, आनन्द।

१६ देखो 'बेग' (रू भे.)

रू. भे.—बेंग, वेघ वेघो, बेव, बंग, बेगाण।

बेगइरउ, बेगइरौ–क्रि. वि —अपेक्षाकृत शीघ्र, जल्दी।

उ०—पंथी, हेक संदेसडउ, लग ढोलइ पैहच्चाय। जोबन जायइ प्राहुणउ, बेगइरउ घर प्राय। —ढो. मा.

बेगउ—देखो 'वेगो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—चदमुखी, हंसा-गमणि, कोमळ दीरघ केस। कंचन-वरणी कांमनी, बेगउ प्रावि मिळेस। —ढो. मा.

बेगड़, बेगड़उ–सं. पु.—१ राठौड़ों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'बेगड़' (रू. भे.)

३ देखो 'बेगड़ो' (मह., रू. भे)

उ०—१ सवा कोटि धन खरचियौ, हरणौ 'महमद शाह' हो। बिरूद दियौ बेगड़ तणौ, प्रगट थयौ जग माहि हो। —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ कमंधां घर ऊगो किरणाळो, भुज लग हथ पाबू भालाळो बेगड़ घमल कध वढवाळो, वाखांणू धांधल राव वाळो। —पा. प्र.

उ०—३ कमळ भाडै पड़ै न चाले कलोड़ा, खंड भाजै भरै जोव छोळां। 'प्रजारा' पूजियां माड काधो प्रबै, बेगड़ सांड तो जिसो वेळां। — हरनाथसिंह चांपावत रो गीत

उ०—४ राठउड़ उदियउ चउड राउ, बेगड़इ सांड वीरम वियाउ। साळवड़ी थाणउ दे सधीर, हठमल्ल राउ थांणै हमीर। —रा. ज. सी.

उ०—५ बेगड़इ सांड 'विकउ' विवध, कुळ भाण तेथि उदियउ 'करम'। ऊधरिय छत्र फेरावि प्रांण, तांई मडोवर मूलतांण। —रा. ज. सी.

४ देखो 'दोगळो' (मह, रू. भे)

बेगड़ोगड़ी—स. स्त्री एक प्रकार की बन्दूक।

बेगड़ि—देखो 'बेगडो' (रू. भे)

बेगड़ियौ–सं. पु—१ चौहटे का नाम। (सभा)

२ देखो बेगड़ो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बेगड़ी–स स्त्री. [सं विकटशृंगी] तीक्ष्ण ग्रौर सीधे सींगों वाली गाय या भैंस। (ड र.)

रू. भे.— बेगडी।

बेगड़ो—१ देखो 'बेगड़' (रू. भे)

२ देखो बेगड़ो' (रू. भे.)

उ०—१ पाबू पाट रै रूप राठवड़ा, सेवै तूझ सधीरा। बेगड़े पाल्ह लीया बरदाई, सिघ तणा सांढी रा।

—पाबू धांधळोत राठौड रो गीत

उ०—२ माधो घटक न ऊतरै माधो कटक न जाय। बेटो सांटै बेगड़ो, घर बैठो घर खाय।

—बां. दा ख्यात

उ०—३ वांछुंना वरमाळ बेगड़ा वकना सुणं 'दूदै' वमियो। जेसळगिरा तिको विन जांणे, हाथां ताळी दे हसियो।

—हूंफो सादू

उ०—४ महि मालम थांन मसूरियो, ग्रोथ हूंत खड़ ग्रावजै। बेगड़ा 'पाल' गउ वाहरू, दम दक जेज म लावजै। —पा. प्र.

उ०—५ दरगह रांण कळण विच दारुण, गो नाही सधो कळण। कांधो कुण माडै 'कांधळ' रा, बेगड़ा धोरी तूझ वण।

—चतुरभुज बारहठ

३ देखो दोगळो' (रू. भे.)

बेगड, बेगड्ड—१ देखो 'बेगड' (रू. भे.)

२ देखो 'दोगळो' (मह., रू. भे)

३ देखो 'बेगडो' (मह., रू भे.)

उ०—उड्डि महाभर कध, भार भलपग सव्वाहै। बेगड वांमी वहण, ध्रिग्रो ग्राग्रो पतिमाहै। —गु रू. बं.

बेगड़ियो—१ देखो 'बेगड़' (ग्रल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'बेगड़ो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बेगडी—देखो 'वेगड़ी' (रू. भे)

बेगडो—१ देखो 'बेगड' (रू. भे)

२ देखो 'दोगळो' (रू भे.)

३ देखो बेगडो' (रू. भे.)

उ०—वाजिया बेगडा, ग्रिमल भाजै थडा। ऊजडै सड्ग्रडा, घूज ध्रिय्यो धुडा। —गु. रू. ब.

बेगतंत–कि. वि —तत्काल, शीघ्र, तुरन्त।

उ०—वीत मांज 'करनला' कर विचार, 'लाखण' रै मांही पुत्र सार। सुब सुदा दीस्ट जोयो सगत्त, तांहां उठयो लाखण बेगतंत।

—रांमदांन लाळस

बेगम–सं. पु. —१ वह स्थान जहां पर कोई नहीं जा सके, ग्रगम्य स्थान।

उ०—१ सुख सागर की सेन बताई, मेरा ग्रतर जांण रया। लगम मगन सतगुरु कर दीना, बेगम देस गया।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ बेगम का जांणत कौन बजारा, वाही सहर की मोय बतावै। सो मत् गूरु हमारा। —स्रीहरिरांमजी महाराज

२ देखो 'बेगम' (रू भे.)

उ०—१ पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूंट रण सरीत। मूरमा लडै चवडै सभाळ, बेगमां घमै पड़दै विचाळ। —वि. सं.

उ०—२ हरीया परणी पीव सूं, सेलै ग्रंग लगाय। दूजी बेगम देख करि, ग्रावै ज्यूं उठि जाय। —ग्रनुभववांणी

उ०— ३ दळ दिली कतळ दरोळ, चढि बेगमां चख-डोळ। तिण वार दळ सुरतांण, खळ भळै हम खुरसांण। —सू. प्र.

उ०—४ पाटवी हेळवी बेगमै पैलकै, तै समै ग्रैलकै लीघ टाळा। पागती 'दलो' नै 'रतन' परणीजतां, वाट जोती रही 'गजन' वाळा।

—महाराजा जसवंतसिहजी रो गीत

बेगमी—देखो बेगमी' (रू भे.)

बेगर—देखो 'बेगर' (रू. भे.)

बेगरज—देखो 'वेगरज' (रू. भे.)

बेगरजी—देखो 'वेगरजी' (रू. भे.)

बेगरणी–वि. —मध्यस्थ।

उ०—क्या'रा बेगरणी, बिचावला, छळपट, लपचेडू ग्रर जार ग्रायेला भोंदू पटावै तथा खूब खावै-पीवै है। मोफतिया इमा मौका मौज-मजा ही किया करै है। —दसदोख

रू. भे. वैगरणी।

बेगरणो–सं. पु.—मध्यस्थता।

वि०—मध्यस्थ।

रू. भे.—वैगरणो।

बेगळ—देखो 'बेगळ' (रू. भे)

बेगळि बेगलि बेगळी, बेगली, बेगळु, बेगलु, बेगळो, बेगलो—क्रि. वि० — १ शीघ्र, जल्दी।

उ०—१ ग्रकस्मात् घंग्ररि पडिवा लागी; एतलनइं नालिनी बेगळि भागी, वस्तु चावणी कीजइं, लहरइ मिढ भीजइं, एकै ग्रापणी वस्तु तिवारइं ग्ररद्धमूलि दीजइं, ग्रनैरै लोभीए तिवारइं तै वस्तु लीजइं सार गाठडी सुग्रहीत कीजइं,'''''''''। —व. स.

उ०—२ राजद्वार कोठार, जीन-मालां काढीजै. जरद जरद्दी घडै लोह लोहै कूटीजै। वेनांणी बेगळा, वाढ घालै केवांणा, कूंत बांण कीजति ग्रणी तीखा खुरसांणा। —गु. रू. बं.

उ०—३ बरहास दोड़ै वेगळा, किरि खड़ै नभ उर मंडळा। हुय हमस धम धम है-खुरां, बाजत धम-धम पाखरां। —गु. रू. बं.

२ दूर।

उ०—१ वेगं वाळपा हय रे, रे रथ सुं रथ बांध्यौ रळौ। गज थाट मोगर वहइ उवट, वैद्रवा थई वेगळौ। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ व्याधि जरा रहि वेगली, प्रलीम्र लक्षण होइ जेह। वेदि जे विधि विस्तरी, सविकौ पालइ तेह। —मा. कां. प्र.

उ०—३ प्राहेडोइ मन फेरव्यु, प्रिहेवा लागु हाथ रे। रेहि रे पापी नूंह वेगलु, नल छि माहारु नाथ रे। —नळाख्यांन

उ०—४ वेलि विहूणां पत्र पांर, हूं हूइ छउ होरण। विटल' रहि रे वेगलु, प्रागलि थिका प्रमीण। —मा. कां. प्र.

उ०—५ किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, प्राहार ऊपरि करइ प्रनास्था। सरव सिणार, मांनि प्रंगार। तिणइ प्रबला (प्रत-रगत) फूला कोधा वेगला। चद तपइ पांन, थया विखवांन। —रा. सा. स.

वेगवंत, वेगवान—वि. [स. वेगवान्] वेगपूर्वक चलने वाला, तेज चलने वाला।

उ०—घोड़ा छै सु महा वेगवंत छै। रथ छै सु महा अंतरिख वहै छै। चदांणणि कहता रुखमणीजी के साथि ए चालिया। सु किसा दोसे छै। जिसा प्रयोध्या का वासी वैकुंठ तैं। —वेलि टी.

सं. पु—१ विष्णु।

२ दैत्य जो कृष्ण पुत्र साम्ब के द्वारा मारा गया था।

३ कश्यप एवं दनु का पुत्र एक दानव।

४ एक नाग।

रू. भे.—वेगवतो।

वेगवाहिनी—स. स्त्री. [सं.] १ गंगा नदी का एक नाम। (२) कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत) (३) एक प्राचीन नदी (पुराण)

वेगसर—सं. पु—१ तेज गति से चलने वाला घोड़ा।

२ देखो वेगसर' (रू. भे.)

वेगांनगी—देखो 'वेगांनगी' (रू. भे.)

वेगांनो—देखो 'वेगांनो' (रू. भे.)

वेगागळ, वेगागळो—१ घोड़े के गले में बांधने का चमड़े या सूत का तस्मा या रस्सा।

२ घोड़ा, प्रश्व। (ह. नां. मा.)

उ०—ऊपडि फौज घटा प्राडंबर, रज धूळ हि छायो रातबर। चखिया धवं प्रपालां चंचळ, बाजे नास वहै वेगागळ। —गु. रू. बं.

वि.—तेज गति से चलने वाला, प्रति चपल।

उ०—सिणगारं सरब हेम में साकति, गळं गजगाह बध ए। वेगागळ वाजराज वाहुण या, दीपत सरळ कध ए। —गु. रू. बं.

क्रि. वि.—तेज गति से, तीव्रगति से।

उ०—१ कसस्से कंठळा, पांकुसां वीजळा, चमक्कै चप्पळा, बैरको बंबळा। ढंच ढालब्बळा, प्रस्सि ऊसांमळा, वहै वेगागळा, वाज वाहै नळा। —गु. रू. बं.

उ०—२ प्रनूप रूप चित्रांम प्रंग, वेगागळ पळ नाचै विहग। प्रद-भूत पराक्रम गुण प्रछेह, ऊंचास कना सपतास प्रेह। —गु. रू. बं.

रू. भे.—वेगागळ, वेगाळ, वेगाळो, वेंगागळ, वैंगागळ, वंगागळो, वेंगाळ, वंगाळो।

वेगार—देखो 'बेगार' (रू. भे.)

उ०—प्राज रो सिझ्या तो घरवाळा नै प्रो कांम संभळाय देणो हो। थारै गिया पछै तो सेवट प्रां लोगां नै ई प्रै सगळा कांम करणा है। महारांणी व्हैतां थकां ई इत्ता दिन घरवाळां री धणी ई वेगार काढी। —फुलवाड़ी

वेगारी—देखो 'बेगारी' (रू भे.)

वेगाळ वेगाळो—वि०—१ तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी, शीघ्र-गामी।

उ०—१ कळ चाळ निप्र छात्राळ कंदळ भीच काळ भुजाळ, सुंडाळ दरगह सावता वेगाळ व्हैंग वडाळ। किरमाळ बळ रिणताळ केता जीपणा जमजाळ। —पीर प्रासियो

उ०—२ चमराळा व्है चूर, वेगाळा तेजी वडा। पड़तां घर मेळा पड़ै, सर गोळा नर सूर। —र. वचनिका

२ जल्दबाज, उतावला।

३ तेज वाला, तेजस्वी।

क्रि० वि०—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—प्रायै यह उजवाळ, कंवरां गुर मिसलत करै। वोरम दिस वेगाळ, जद लिखिया कागळ 'जगं'। —गो. रू.

२ देखो 'वेगागळ' (रू. भे.)

उ०—१ वहै वेगाळ उरां उण वार, धड़ा चढ धिक्क सरां धूंकार। सफ ढंडमाळ सिंभू सिरताज, विचै दळ सुर हिलोहळ बाज। —गो. रू.

उ०—२ घडहडै सात-पुडि धूजि धम-हम धरा, बंब प्रोधूळ प्रंबर चडै डंबरा। वावंता नास वेगाळ तेजी वहै, पाहुटां गोम पाहाव पाए गहै। —गु. रू. बं.

उ०—३ गाळ मांण कायरां सोकिया तीर बांण गोळा, गजां कंध ढाळ पांण तोकिया नेगाळ । भांण रथां रोकिया गंणाग खेल रीधा भाळ, 'रीधा' बाळ सत्रां थांण झोकिया बेगाळ ।

—आलमसिंह चांपावत री गीत

रू. भे.—बंगाळ, बंगाळी ।

बेगाबेगि–क्रि० वि०—शीघ्र, जल्दी ।

उ०—चीतवियउ चहुवांणि, जउहर की माडउ जुगति । हव हुइस्यां हरपुर दिसा, बेगाबेगि विहांणि । —प्र. वचनिका

बेगिनी–स. स्त्री. [स.] एक नदी का नाम ।

बेगुना, बेगुनाह—देखो 'बेगुनाह, (रू. भे.)

बेगेरौ—देखो 'बेगौ' (रू. भे.)

उ०—पंथी एक संदेसड़ौ, लग ढोलै पहुंचाइ । जोवन आवै प्राहुंणौ, बेगेरौ घर आइ । —ढो. मा.

बेगौ–वि० [स्त्री. बेगी] १ शीघ्र,जल्दी, अविलम्ब ।

उ०—१ काळा काळा केस भंवर, म्हारी आडौ कांमणगारो रे । माघो रा अमलां में, म्हारी सेज अलूंणी रे, बेगा आवड़ज्यो । हां रे सासू रा जाया, बेगा आवड़ज्यो । —फुलवाडी

उ०—२ खिमकरण वाळा मिनखां रा पग हा जठै ई चिपग्या । मासी भणती जोर सूं हंसी । बोली—थांनै म्हारी बोली बिचै ई कुत्तां री बोली बेगी समझ में आवै । आवै जकी ई चोखी ।

—फुलवाडी

उ०—३ बेगा दूत दिलीपतवाळा, आयै गूजर खंड उताळा । चाहै दुरग तकूं तजि ताळा, समपै धन मणि मुक्त विसाळा । —रा. रू.

उ०—४ ताहरा रांणै जांन करि परणीजण नूं चालियो । ताहरां बंगडावतां नूं आदमी मेल्हिया जु रांणैजी परणीजण नूं चढिया छै । थे बेगा आवो । —देवजी बगडावत री बात

रू. भे.—बेगी, बेगउ, बेगेरी, बेघ, बेघौ, बंगौ ।

बेघ, बेघौ—१ देखो 'बेग' (रू. भे.)

२ देखो 'बेगौ' (रू. भे.)

उ०—१ पोलि उघाडी गढ तणी, गरल सभावै रांणी रे । मुंक्या तेडण मंत्रवी, बेघ पधारौ मूलतानी रे । —प. च. चौ.

उ०—२ महिर करौ हिव मोहि, बीदा करौ बेघौ घणौ जी । आलिम साथै होय, पोलि लगै पहुंचावियो जी । —प. च. चौ

उ०—३ तै ऊपरि ए पदमणी, आइ आवां पासी । ज्युं करिवौ सूधौ मतौ, बेघौ कहौ विमासी । —प. च. चौ.

उ०—४ बादसाह हुंत कह्यो छोड जं दणां नै बेघा, एं न छडं हिंदू धरम विनाशी आपेक । कह्यो साह 'मांण' नंद पातवां छुडावो किसां ?

एक एक प्रती चहुं माथौ एक एक ।

—सक्तावत गोकळदास (सावर) रो गीत

बेड़—१ देखो 'बोहड' (रू. भे.)

उ०—त्यां मांहे ऊगो मुदो बोल्यो, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाघ्या छौ । राजा हम्यो । तरै ऊगै कह्यो, महाराज, जाट गधेड़ा की तरह छै, बेड़ का रहिण वाळा छां, बोलण की कू ही जांणां छां नहीं, माफ करिज्यो । —कहवाट सरवहियो की बात

२ देखो 'बेड़' (रू. भे.)

३ देखो 'बेंडो' (मह., रू. भे.)

४ देखो वेड़' (रू. भे.)

५ देखो वेड' (रू. भे)

उ०—वाग वणाया वेड़ मैं, कांटा आक कटाय । सीसम आंबा तर सघण लाखां दिया लगाय । —चिमनदांन रतनू

६ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ बेड़ परायण इसी वचाइ, महौ सगायण सुणज्यो मूठ । निज नारायण गुह निवाजै, फजर गइ तारायण फूठ ।

—बांकीदास वीठू

उ०—२ वांट प्रसाद वळोवळ वागा, असना भागी लोभ तणी । चेलां गुरां बेड़ री चरचा, साधां सौ सौ कोस सुणी ।

—बांकीदास वीठू

बेड़की—देखो 'बेडकी' (रू भे.)

२ देखो 'बेंड़' (अल्पा., रू. भे.)

बेड़णी—देखो 'बेडणी' ।

बेड़णौ, बेडबौ—१ देखो वेढणौ, वेड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वळदेव महाबळ तासु भुजाबळि, पिड़ि पहरंतै नत्री परि । विजड़ा मुहै वेड़तै बळभद्र, सिरा पुज कीधा समरि । —वेलि

२ देखो वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

बेड़णहार, हारौ (हारी), बेड़णियौ—वि० ।

बेड़िग्रोड़ौ बेड़ियोड़ौ, बेड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बेड़ीजणौ, बेड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बेड़लौ—१ देखो 'बेंडो' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेढलौ' (रू. भे.)

बेड़ाफोड़—देखो 'बेड़ाफोड' (रू. भे.)

बेड़ियोड़ौ—१ देखो 'बेडियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेड़ियोडी)

बेड़ी—१ देखो 'बेड़ी' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंड़ो' (वि. स्त्री.)

वेड़ूंको, वेड़ूंखो—देखो 'वेड़ूंखो' (रू. भे.)

वेंड़ो—देखो 'वेड़ो' (रू. भे.)

उ०—**वैकुंठ वेड़ो** विसन ढोयो, सचियार साल्हियां लेविसो। पार-गिरांय पुहुंचाय भांभराय, वास निहचळ देविसी। —ऊदोजी नैण

वेच—देखो 'वे'ज' (रू. भे.)

वेचको—देखो 'वे'ज' (अल्पा, रू. भे.)

वेचणौ, वेचबौ—क्रि. स — १ खर्च करना, व्यय करना।

उ०— विद्या लेवांनु बीजु भेद, सांभलु प्रांणी! मांणसिउ खेद। सुत भणांव्यांनु जु खप होय, तु घन **वेचीजइ** अति जोइ।
—नळदवदंती रास

२ देखो 'बेचणौ, बेचबौ' (रू. भे.)

उ०— १ पाच तत महा तत रहै पास, संभारै तना प्रभु सास सास। गुण तीन दास पतिसाह गाड, **वेचिया** प्रभु थारा विकाइ।
—पी. ग्रं.

उ०—२ **वेचै** मत तू बेगड़ो, चित नांणा री चाह। वळै न मिळसी बेगड़ो. नांणा दीधा नाह। —बां. दा.

उ०—३ आदू अग्बइ मोहतो दूहो कहै, राजा. **वेचं** नहीं तो ओग्वो खांण मिळूं। पण घोड़ो उराको छै। रवियांण चंद, ऐराक बीजं वड़ बीज प्रात गाज, सापुरस वेण, पैहिलो तो लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहल हमीर री बात

उ०—४ मन में धरता मरट घरट जिम भूखं घूमैं, मेलं घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमे। बेटा नैं मा बाप **वेचि** द्यै जीमण वेइ रूलता रिगतां रांक करे वेललाटा केई। —ध. व ग्रं.

३ देखो 'वंचणौ, वंचबौ' (रू भे.)

उ०—१ अथवा सालि दालि घ्रत पक्वांन्नादिक अथवा देवद्रव्य वस्त्रादिक जइ घणाइं मूलिइं आपणाइ घरि वावरइ। अनेराइ श्रावक ह्लइ दिइ। अथ महात्मा दरमनी थिकु देवद्रव्य वधारी प्रासादादिकं **वेचइं**। —षष्टीशतक

उ०—२ गुरु एकइ जि अनइ श्रावक एकइ जि छइ। पुण चैत्य देहरा जूआं जूआं अनेरा अनेरा नां कराव्यां छइ। तिहां जे द्रव्य छइ तै परस्परिइंन वेचइं। पेला देहरा नु उलिइ देहरइ, ओल्या देहरांनू पेलइ देहरइ न वेचइ। मनि भेद आंणइ। —षष्टीशतक

उ०—३ ·········तै राजा जं राज्य पालइ, तै अमात्य जे न्याय दिखाडइ, तै कापड जे पखालिउं मूकइ, तै कारणा [जे] वुद्धि सीभइं तै तुरंगम जं वेगि पूजइ, तै द्रव्य जं सत्पात्रि **वेचीइ**। —व. स.

उ०—४·········उन्मारगि न चालइं, गुरु उपदेस झालइं, धरमतत्व न हालइं, नवै क्षेत्रे **वेचइ** धन, जिसिउं बावनुं चंदन इस्या सीतल मन, इस्या कहीए स्वजन,········· । —व स.

वेचणहार', हारौ (हारी), वेचणियौ—वि०।

वेचिमोड़ो, वेचियोड़ो, वेच्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेचीजणौ, वेचीजबौ—कर्म वा०।

वेचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

वेचरा, वेचराज, वेचराजी, वेचराय—देखो 'बहुचराय' (रू. भे.)

उ०—**वेचराजी** रा चरणां कूकड़ा हैं ज्यां नूं मिन्नी न मारै।
—बां. दा. ख्यात

वेचांण—देखो 'वेचांण' (रू. भे.)

वेचाक, वेचाख—देखो 'बेचाक' (रू. भे)

उ०—रईयत सरब गई। धरती हेमा भागी बस सगै नहीं। कितराहेक बरस युंही धोंकळ रह्यो। हिवै रावळ मालोजी कुटेवा पड़िया। यूं करतां घट घणौ **वेचाक** हुवौ। —नैणसी

वेचाड़णौ, वेचाड़बौ—देखो 'बेचाणौ, बेचाबौ' (रू. भे.)

वेचाडणहार, हारौ (हारी), वेचाड़णियौ—वि०।

वेचाड़िओड़ो, वेचाड़ियोड़ो, वेचाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेचाड़ीजणौ, वेचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वेचाड़ियोड़ो—देखो 'बेचायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेचाड़ियोड़ी)

वेचाणौ, वेचाबौ — देखो 'बेचाणौ, बेचाबौ, (रू. भे.)

वेचाणहार, हारौ (हारी), वेचाणियौ—वि०।

वेचायोड़ो—भू० का० कृ०।

वेचाईजणौ, वेचाईजबौ—कर्म वा०।

वेचायोड़ो - देखो 'बेचायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेचायोड़ी)

वेचारौ – देखो 'बेचारौ' (रू. भे.)

वेचाळ, वेचाल—वि०—जिसका चाल चलन ठीक नहीं हो, बदचलन।

वेचावणौ, वेचावबौ—देखो 'बेचाणौ, बेचाबौ' (रू. भे.)

उ०—तत्थ तेहै विविध चैत्यै जं जं जिनद्रव्य ऊपजइ तै जिनद्रव्य देवद्रव्य परस्परइं एक चैत्यनउं द्रव्य बीजइ चैत्यि जं सुगुरु श्रावक न **वेचावइं**। षष्टीशतक

वेचावणहार, हारौ (हारी), वेचावणियौ—वि०।

वेचाविओड़ो, वेचावियोड़ो, वेचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेचावीजणौ, वेचावीजबौ—कर्म वा०।

वेचावियोड़ो—देखो 'बेचायोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. वेचावियोड़ी)

वेचियोड़ो—भू० का० कृ०—१ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ।

२ देखो 'बेचियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बेचियोड़ो (रू भे)
(स्त्री. बेचियोड़ी)

बेचिराग—देखो 'बेचिराग' (रू. भे.)

बेचेत, बेचेतं, बेचंतं—देखो बेचेत' (रू. भे.)

बेचंन—देखो 'बेचेन' (रू. भे.)

बेचंनी—देखो 'बेचेनी' (रू. भे.)

बेचौ–सं. पु.—गाय भेंस का दूध जमाया नहीं जाकर देवताओं को अर्पण करने की क्रिया।

वि० वि०—गाय ब्याहने के बाद कुछ दिनों तक उस गाय का दूध जमाने योग्य नहीं होता है। सात आठ दिनों के बाद जब दूध जमाने योग्य हो जाता है तब गाय का सूर्य पूजा जाता है और उस दिन गाय का सम्पूर्ण दूध पित्तरों को चढ़ा कर बाल-बच्चों को पिला दिया जाता है।

बेच्छाळ, बेच्छाल–सं. पु.—एक प्रकार का कंद विशेष।

उ० सिगमंडी सीदूरीया, तिहा तंबिगि पालि। सहसमुखो संजोवनी, बच्छनाग बेच्छाल। —मा. कां. प्र.

बेछराज, बेछराय—देखो 'बहचराय' (रू. भे.)

बेछाड़– देखो बंछाड' (रू. भे.)

उ०—१ सहस तेर' असवार, सीह सादूळ समोसर। वीस गयंद बेछाड़, निहंस पाखरा गिर नीझर। —सू. प्र.

उ०—२ बंसारै चव बोळ, छकं आया बेछाड़ां। चढ सयद फिर चढं प्रचंड कंठीर पहाड़ां। —सू. प्र.

उ०—३ आका रीठ कुरीठ, वयड छोडं बेछाड़ो। इसा दीठ अवनाड, पीठ ले हलै पहाड़ां। —सू. प्र.

बे'ज, बे'जको—देखो 'बे'ज' (रू. भे.)

बेजड़—देखो 'बेजड़' (रू. भे.)

बेजबान—देखो 'बेजबांन' (रू. भे.)

बेजवाल–वि. [फा. बे+अ. जवाल=पतन] जिसका पतन न हो, नष्ट नही होने वाला।

उ०—ईसवर निरंकुस है, चाहै स करे। खुदा इरादो करै अनेक चीज को पैदा करे असबाब उसको। खुदा ताला री पातसाही बेजवाल है। मेतजादुल मुलक। —बा. दा. ख्यात

बेजान—देखो 'बेजांन' (रू. भे.)

बेजा–सं. पु.—१ घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमे घोड़े के अगले पैर या चारों पैर पीड़ित रहते हो। (शा. हो.)
२ देखो 'बेजा' (रू. भे.)

बेजागर—देखो 'बेजारा'।

बेजातांणा–सं. पु.—ताना बाना।

उ०—कीडी कुंजर आद दे, सब जीन जडांणा, तु निराकार आकार मझ सरवंग समांणा। जेथी तेथी पेखियै, तुं बेजातांणा, तुही एक तुं, हु ऐता जांणा। —केसोदास गाडण

बेजापता, बेजाब्ता—देखो 'बेजाब्ता' (रू. भे.)

बेजारा—देखो 'बेजारा' (रू. भे.)

बेजारौ–वि०—१ चतुर, होंशियार।
२ देखो 'बेजारौ' (रू. भे.)

उ०—आळा गूथण री खांमची ऐड़ी कै नांमो सूं नांमो बेजारा नै ई मात करै। हाथ भर लांबो अर तीखो आळो। फूठरो अर झीणो गुथ्योडो। मांय दोय खण। —फुलवाड़ी

बेजु, बेजू—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

बेजोड़—देखो 'बेजोड़' (रू. भे.)

बेजौ—देखो 'वेजौ' (रू. भे.)

बेज्ज—देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

बेज्यास—देखो 'बेज्यास' (रू. भे.)

उ०—दिसापाळ भूपाळ त्यां छूट द्रढ्ढं, गिणैं ओट सेवा तणी कोट गढ्ढं। गजै मेघ ज्यौं वेग नीसांण गाजै, मयां आस बेज्यास मैवास भाजै। —रा. रू.

बेझ, बे'झ, बेझको—देखो 'बे'ज' (रू. भे.)

उ०—इसैं मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतो, सो महाडोळ री पाखती आई लागो। सांम्हो जोवतो वहै। महाडोळ री खोळी रै बेझ कर भरमल देखै छै। कोस एक पुहचाय सारो जाब्तो दे पाछो घिरियो। सो घिर घिर पाछो देखै। —कुंवरसी सांखलारी वारता

बेझड़—देखो 'बेजड़' (रू. भे.]

बेझु—देखो 'बेझौ' (रू. भे.)

उ०—१ सक्ति अपूरव सइज ठहराणी, दुगति दूर हरांणी। वांणी तेहिज बेझुं वेधइ, कीरति ताम गवाणी रे। —वि. कु.
उ०—२ तरस्या जाई गज तुरी, परिहरि कां प्रामाद। बेझुं विण वेधिउं रहइ, उत्तर एक सवाद। —मा. कां. प्र.

बेट—१ देखो 'बेठ' (रू. भे.)
२ देखो बेट' (रू. भे.)

बेटीजणौ, बेटीजबौ–क्रि स.—बकरी का गर्भ धारण करना।

बेटीजियोड़ी–सं. स्त्री—गर्भ धारण की हुई बकरी।

बेटेरिनरी अस्पताल, बेटेरिनरी सफाखांनो–स. पु.—पशुओं का चिकित्सालय।

बेठ–सं. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ देखो 'बेठ' (रू. भे.)

उ०—१ आंणक डोकर खोलड़ं, जिम वाघ वियायो, बाड़ो दीधो बेठ मां, घरतार गमायो। क्या तेरा आंगण किया, हमका घन भाएं, आश्र दिया हम वीरमा, सब धरती माए। —वी. मा.

उ०—२ वसती री हुवे बांभ बेठ नह काढणी, कांमेती उगाह मूंड में हुवे घणी। बाकी किण रो बीह खुसी व्हे खेलणा, एता दं किरतार फेर नह बोलणा। —अग्यात

३ देखो 'बेट' (रू. भे.)

बेठऊड़ो-वि०—बेगार का कार्य करने वाला।

उ०—वेगार बेठऊड़ा हासल, पान चराई न देवै। चवरी माफ चहुं देस में, जको बिस्णोई नही देवै। —साहबरांमजी

बेठणौ, बेठबौ-क्रि० स०—१ लपेटना।

२ घेरा डालना, घेरना।

३ निभाना।

उ०—१ काछेल वेध वढिया कलह, ग्रहण पाल पूरी गरत। बेठिया हुता 'बूडं' विवध, माथा जं 'पाबू' भरथ। —पा. प्र.

उ०—२ साझ मडोजे साकुरां, कमरां कसवाई, आफूगाळं ऊंदा अगा घड़पाई। बाथोटे सह वेलिया, मनवार कराई, विध विध थांनै बेठिया, म्है खूद खिमाई। —वी. मा.

४ सहन करना, सहना।

उ०—सोधतां गिली अगिअरि, आहेंडोद काढी। घिरि राखण मन तेणि कीधूं, वेदन बेठी गाढी। —नळाख्यांन

५ बेगार निकालना, बेगार का कार्य करना।

६ पालन-पोषण करना।

उ०—१ वीरमदे री छोटो भाई भीमसीघ किसड़ो हेक सिरदार। वंडा घोडां रजपुतां रो बेठणहार। रजपुतवट रूपगां रो रिझवार। दातार जूझार। भाइजी रं सांमो आवण री तयारी कीनी। —पनां

उ०—२ बेठं बेटां जेम वीदगां, करै मोढ मह अवर कसो। चारण वरण तणौ राव चांपा, जग सर तारण तरण जसो। —मेगराज आढो

बेठणहार, हारौ (हारी), बेठणियौ—वि०।

बेठिओड़ो, बेठियोडो, बेठ्योडो - भू० का० कृ०।

बेठीजणो, बेठीजबो—कर्म वा०।

बेठन-सं. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ लपेटने का वस्त्र, लपेटन।

बेठियोड़ो-भू० का० कृ०—१ लपेटा हुआ. २ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ३ निभाया हुआ. ४ बेगार निकाला हुआ, बेगार का कार्य किया हुआ. ५ पालन-पोषण किया हुआ. ६ सहा हुआ, सहन किया हुआ।

(स्त्री. बेठियोड़ी)

बेठियौ—देखो 'बेठियौ' (रू. भे.)

बेड-सं. पु.—१ वन, जंगल।

उ०—सगतां रो लीनो सुरह, बीच घरंतो बेड। कर आयो बूडै कह्यो, खोची ठाकुर खेड। —पा. प्र.

२ कटीले पदार्थों (झाड़ियों) का बना हुआ मकान का अहाता, घेरा।

उ०—सरसा दळ सायर स क्रमंतै, मळवा छळं मांडियो मेड। माझी मेर गयो दळ मुरडे, बड रहियो कांटां री बेड। —दूदो आसियो

३ सीमा, आखिरी छोर।

४ एक प्रकार का चन्दन विशेष।

५ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

६ देखो 'वंड़' (रू भे.)

रू भे.—वेड़।

बे'ड, बे'डको—देखो 'बंड़' (रू. भे.)

बेडण-वि०—१ संहार करने वाला, नाश करने वाला।

२ तोड़ने वाला, विच्छेदन करने वाला, काटने वाला।

उ०—हूंतो जांणू सगत, गढां जड मूळ उखेलण। हूंतो जांणूं सगत बडा असुरां सिर बेडण। —पा. प्र.

रू. भे.—वेढण।

बेडणौ, बेडबौ—१ देखो 'बेडणौ, बेड़बौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

बेडणहार, हारौ (हारी), बेडणियौ—वि०।

बेडिओड़ो, बेडियोडो, बेड्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेडीजणौ, बेडीजबौ—कर्म वा०।

बेडर-वि०—निशंक, निर्भय।

उ०—गिण छप्पय चा वरण लघु, त्यां मजझ दस टाळ। आधा कीधां ऊबरै, बेडर नांम बताळ। —र. ज. प्र.

बेडली—देखो 'बेड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

बेडलो—देखो 'बेढलो' (रू. भे.)

बेडांणी-वि०—१ दुष्ट, नीच।

२ देखो 'विडांणी' (पु.)

३ देखो 'वेदांणी' (रू. भे.)

बेडाक—१ देखो 'बंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'बेडो' (मह, रू. भे.)

उ०—१ उ तोलँ तेराक, बोळण बळ जबांबरो। वीरमर्द बेडाक, मेळ बचन नह मांनिया। —गो. रू.

उ०—२ चोडँ बळ धूहड़ लाखां चाक, वीरोळँ माल खळां बेडाक। छत्री गुर वीरम धूणं लाग, वीछूटो जांणय सांकळ बाग। —गो. रू.

बेडागर, बेडागार—देखो 'बेढीगारो' (मह, रू. भे.)

बेडागारो—देखो 'बेढीगारो' (पु.) (रू. भे.)

बेडागारो—देखो 'बेढीगारो' (रू. भे.)

बेडाणारी—देखो 'बेढीगारो' (रू. भे.)

बेडाय—स. पु.—१ सूअर, शूकर।

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

बेडारोटी—देखो 'बेढारोटी' (रू. भे.)

बेडाळ—देखो 'बेडाळ' (रू. भे.)

बेडावतो—वि०—१ जबरदस्त, जोरदार।

२ वीर, बहादुर।

बेडाहळ—स. पु.—मुसलमान, यवन।

बेडि, बेडिइं—सं. पु.—१ बाग, बगीचा।

२ वन, जंगल।

उ०—१ नयण नां म्रग नी उपमा किसी, हईइ हारिउं बेडि जई वसी। चरण चारिहिं हंस हरावतो, बचनि जीणइ जीती भारती —सालिसूरि

उ०—२ सूयारडब हुउ दाघ वेवा, गिउ वेगि बेडिइं पुण कास्ट लेवा। द्रस्टिइं न दीसइ दिसि धूलि रोली, तु धांबिनी भीमिइ भडिम्र मूली। —सालिसूरि

वि०—१ जंगल का, जगली।

उ०—जिहां सिवा तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट। लाघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, बेडि बिलाड घुरकइ। —सभा

२ देखो 'बेडी' (रू. भे.)

बेडियोडो—१ देखो 'बेडियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बेढियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेडियोडी)

बेडियो—सं. पु.—जट (बकरी या ऊट के बाल) को कातने के निमित्त उसकी बनाई हुई गेंडुरी नुमा पूनी।

बेडी—सं. स्त्री.—बकरी या ऊंट के बालों को साफ कर कातने के निमित्त वृत्ताकार बनाया गई गेंडुरीनुमा पुनी।

वि०—१ मस्त, मत्त।

२ कलहप्रिय, झगड़ालू।

३ वीर, बहादुर।

४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—'केहरि' बेडो (वे) घणूं, मज्जोठी मुहराइ। 'करन' 'कंमो' एकं मते, बे ऊभा पडगाहि। —सू. रू ब.

५ देखो 'बेडि' (रू. भे.)

उ०—वेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइ। रीछ सांचरइ, बीरूतणा यूथ विस्तरइ। बेडी रा सांड त्राडूकइ, ठांमि ठांमि वन रा भइसा ढूकइ। —सभा

बेडोमणो—देखो 'बेढीमणो' (रू. भे.)

उ०—ऊगतो मोसरां वहायक प्रभावां, सोत वरसिया क गाल रा संभ। मांन रा वाळिया वचन बेडोमणा, खळां गाळिया गरब गजखंभ। —राजुरांम बारहट

बेडोवाहो—देखो 'बेडीवाहो' (रू. भे.)

बेडूर—स. पु. [सं. वैदूर्य] धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न या बहूमूल्य पत्थर जिसे लहसुनिया भी कहते हैं।

बेडो—सं. पु.—खड्डा, गड्ढा।

उ०—१ सु म्रो रोज नवी-नवी जायगा बरछी खोहे सु आंगणां मैं बेडा-बेडा हुय रह्या। तांहरां रागी एक दिन सात तवा लोह रा, सवा-सवा मण रो एक-एक तवो, कराय भर जठं सेतराम भाय बंसतो तठे गचमें तवा गडाया। ऊपर बिछावणा बिछाया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा सेतरांम कह्यो—महाराज! हूं बैठतो तठे बरछी गडती, सु दीमें छे आज कोई म्हारी मसकरी कीवी छ तद राजा बिछावण परहा कराय देखे तो कासूं? सारै ही वेडा-वेडा छै। —नैणसी

वि.—मस्त, मत्त।

बेडोळ—देखो 'बेडौळ' (रू. भे.)

बेढंग—देखो 'बेढंग' (रू. भे.)

बेढंगापण, बेढंगापणो—देखो 'बेढंगापणो' (रू. भे.)

बेढंगो—देखो 'बेढंगो' (रू. भे.)

बेढ—स. स्त्री. [स. वेध] १ युद्ध, संग्राम, लडाई।

उ०—१ बेढ बडाई राजियां, सूरो दळ सिरधार। मेल धमंका सिर सहै, भावै जब इकतार। —अनुभववांणी

उ०—२ वळ जोधांरा तणी दिस वळिया, भू लूटण टळिया सुज भिळिया। नाहरखांन नांदिया मांहे, बेढ कमळ सीधो खग बाहे। —रा. रू.

उ०—१ छर पक्का बळवार विढण क्यूं बीसरै, लग्गा लोह लकीर नमंता नीसरै। थाव फरूकै बेढ वलै नह वापरै, पांणा चढियां किलम जिकै 'परताप' रे। —किसोरदांन बारहठ

उ०—४ रावळ भोजदे विखैराव लांजा री बेटी खूदवै घणी हुवौ। निपट बडौ रजपूत हूवौ। कहै छै बरसां १५ तथा १६ री ऊमर मांहे पचास बेढ जीती हुती। —नैणसी

२ घर, गृह, धाम।

३ युद्धस्थल, रणभूमि।

उ०—बगसर भग्गा बेढ तज, सुंण बग्गा नीसांण। ताप उनग्गा तेग री, ग्रर डग्गा प्रारांण। —किसोरदांन बारहठ

४ योद्धा, वीर। (डिं. नां. मा.)

५ एक प्रकार का आभूषण विशेष। (व. स.)

उ०—वींटी बेढ गांठोडा, वलि दीधा घणा घोड़ा। स्रावक स्राविका ग्रावइ, मोती थालं वधावइ। —ऐ. जै. का. सं.

६ देखो 'वेड' (रू. भे.)

रू. भे.—बीढ, वेढ, बेढि, बेढी, बंढ, वेड़, वेढण, वेढि, वेढी, बैड, वंढ।

अल्पा.,—वेढड़ी।

बेढक-स. पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—१ मिरचै 'मुहकम' मांगियो, कर छळ मिळ ग्रप्रकास। बेढक डेरै बज्जियै, पड़िया सुहड पचास। —रा. रू.

उ०—२ सूरा 'ग्रडबाळ' सुजड हथ 'सांडा', 'जैता' जंगमल जंत्राई। कांघिल कळिमूळ सदा कळि चालण वैरा बेढक वरदाई। —गु. रू. बं.

उ०—३ वड रावन जिकै वडा ग्रह बेढक, झडपै ग्ररियण खडग झडं। ग्राया जूहार कुंग्रर गुर ग्रागळि, मड कमधज लख ग्रवर-मडं। —गु. रू. बं.

वि.—वीर, बहादुर।

उ०—जुध दुरंग दंत चढिया जिता, खित पाडै मुगळां खळां। बळ साह डोहि ग्रायो दुभल बेढक रंगियां बीजळां। —सू. प्र.

२ निशंक, निर्भय।

३ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—ऊगतां भांण 'ग्रभजीत' रा, बेढक मह ग्ररियड़ वना। सांमुहा ग्राया भारथ सझण, एक उतन रा ऊपना। —सू. प्र.

रू. भे.—बेढक, बंढक।

ग्रल्पा.,—बेढकौ, वेढकौ।

बेढकौ—देखो 'बेढक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—'कूंपा' 'रांम' सकज्ज, जैतधारी 'जैतावत'। थाघ फता बेढका बीरवीराध 'विजावत'। —रा. रू.

बेढगरौ, बेढगारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

उ०—'वखतेस' 'खळां' सिर बेढगरौ, हर कांकण सौ 'ग्रमरेस' हरौ। संग 'रांम' 'रघे' 'जैंसिह' सही, गज रूप सभै रिम टेक ग्रही।

—रा. रू.

बेढड़ी—देखो 'बेढ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—बडा पतिसाह करि किलंग सा बेढड़ी, महमहण हमै पिरिणी-जिवै मेघड़ी। ग्राजि रै बांधियौ कडी तरगस ग्रभिगि, प्रिथी रै धिणी ससमाथ चडियौ पविगि। —पी. ग्रं.

बेढण—१ देखो 'वेढण' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

बेढणबाई-सं. स्त्री.—[देश.] व्यर्थ की बातें करने वाली स्त्री।

बेढणौ, बेढबौ—क्रि. स. १—युद्ध करना, सग्राम करना।

२ सहार करना, नाश करना।

३ काटना, विच्छेदन करना।

४ युद्ध में मरना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—तितरइ नाथू डोड डूंगर बागडी कहइ छइ—इसउ नहीं हो ठाकुरे! इसउ कीजइ-गळइ सात सइ साळिग्राम तुळसी की माळा घातिजइ, ग्रचळेसर का ग्रावास थइ लोहडउ करतां करतां गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ, जितरा जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा ग्रस्वमेघ ज्याग का फळ लीजइ। इणि विधि जीवण बेढिजइ तउ सूरज मंडळ भेदिजइ। —ग्र. वचनिका

बेढणहार, हारौ (हारी), बेढणियौ—वि०।

बेढियोड़ौ, बेढियोडौ, बेढयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेढीजणौ, बेढीजबौ—कर्म वा०।

बेढणौ बेढबौ, बीढणौ, बीढ़बौ, बेढ़णौ, बेढ़बौ, बेढणौ, बेढबौ, बंढणौ, बंढबौ, बैंढणौ, बैंढबौ—रू. भे.।

बेढब—देखो 'बेढब' (रू. भे.)

बेढमण—देखो 'बेढीमणौ' (मह., रू. भे.)

बेढमणौ—देखो 'बेढीमणौ' (रू. भे.)

बेढमल, बेढमल्ल—वि०—युद्ध का उस्ताद, युद्ध में निपुण एवं दक्ष योद्धा, वीर।

रू भे.—बेढमल, बेढमल्ल, बेढीमल बेढीमल्ल, वेढीमल, वेढीमल्ल, वैढमल, बेढमल्ल, बंढीमल, बंढीमल्ल।

बेढमी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

उ०—............खांड मांडा, पूरण मांडा, कुबकरा मांडा, पत्र-वेटिया मांडा, ग्राकासिग्रा मांडा, ग्राछा मांडा, खाटउं चूरिमउ,

गुलिउं चूरिमउं, प्रधांन पनोली, रोटी बाटी, ठोठि भ्रंगार करि वेढमी, मह्याडिनी पचधार लपनसी, सुदलित सुललित वरनारि परोसी। —व. स.

रू. भे.—वेढिमी, वेढमी।

वेढलो–स. पु.—१ स्त्रियों के कान के ऊपरी भाग में पहनने का आभूषण विशेष।

२ कुत्तों के कानों में पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष।

उ०—जिकां री मूछहथ मोहनाळ हाथ भर नस, वड़ रै पांन जिसा कान, ताजगासेद पूंछ नाहरसा पजा बाघ सी आंख, पातळी लीक जाडै आठ। इण भांत रा कुत्ता। बनाती पटा, रूपै री भंवरकड़ी रेसमी डोर, काना में रूपै सोनै रा वेढला, गलै में निजर रा ताहत। —रा. सा. स.

रू. भे.—वेडलो वेढलो।

वेढमांणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे.)

उ०—विढण नमो नेठाह हथवाहा वेढीमणा, रीत सराह दोय राह रोधा। वडा खळ आदरा अवंक वेढांमणा, करै जुध पाधरा सणंक कीधा। —सेरसिंह री गीत

वेडागार, वेढागारी, वेढागारो—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

वेढारोटी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

वि. वि.—गेहूं के कम आटे के लौंदे को रोटी की तरह बेल कर उस पर गीला-गीला नमकीन पदार्थ फैला दिया जाता है और किनारों को थोड़ा-थोड़ा उलट कर चौकोर बना दिया जाता है। फिर थोड़ी देर सुखा कर तेल अथवा घी में तल दी जाती है।

रू. भे.—बेडारोटी, बेढारोटी, भेडारोटी, भेढारोटी, वेडारोटी।

वेढिगर, वेढिगरो–वि०—१ वीर बहादूर।

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—बे तरफ भड़ वेढिगरा, जूटा हगामी जंग रा। घस मसक धरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस। —र. रू.

३ देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

वेढि—देखो 'वेढ' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

उ०—१ हींदू तुरक पडइ पोसाता, नित नित वेढि ऊतारइ। नित् ऊठवइ एकमना राउत रोसि चडया रणि मारइ। —कां. दे. प्र.

उ०—२ गुरुदेव सुमति समापि गुण, भुपपतिम जेम 'रतन्न' भणं। पित जासु 'महेस' नरेस परं, गढ वेढि लिम्रौ जिणि देवगिरं। —र. वचनिका

उ०—३ जई प्रधांनि खान वीनविया, हींदू वेढि करेसइ। खांन भणइ सहूइ सज थाउ, पछवां दाउ देसइ। —कां. दे. प्र.

वेढिमी—देखो 'वेढमी' (रू. भे.)

उ०—हांसा गहुं, काठा गहुं, जालिया गहुं, वाजिया गहुं, वांसिया गहुं, एतलं प्रकारे गहुंना मांडा,. ते किम ? खांडमांडा, पूरणमांडा, आछा मांडा, करकरा मांडा, आकास मांडा, एतली पडसूदीना मांडा। लहचूई पोली, खूबी रोटी, बारू वडां, वेढिमी, वडां तो केहवां छइ ? —व. स.

वेढियोड़ो—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. २. सहार किया हुआ, नाश किया हुआ ३ काटा हुआ, विच्छेदन किया हुआ. ४ वीरगति प्राप्त।

(स्त्री. वेढियोड़ी)

वेढी—१ देखो 'वेडि' (रू. भे.)

२ देखो वेडी' (रू भे.)

३ देखो 'वेढ' (रू भे)

वेढीगार वेढीगारी वेढीगारो–सं. पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—'वखतौ' अगळी वेढीगारां, 'जगपत' हरो तिलक जूझारा। भारी जोधा मुहर भुजाळौ, 'सकतौ' 'भगवांनोत' सिधाळौ। —रा. रू.

वि० १ वीर, बहादुर।

उ०—१ मछराळा मूंछाळ, वेहद हद वेढीगारा। सुर भग्गा लख वार, प्रथी इक छात्रप मारा। —मा. वचनिका

उ०—२ पाजा लोप सीधू जीउ अराबा व्है अवाजा पूर, मातंगा गराजा घुर जठी साजा मोह। मारहटां सैनह मचायौ ताजा जोस माथै, वेढीगारै राजा भीम काजा चकारोह। —हुकमीचद खिड़ियौ

उ०—३ कळहळ काढ़िया छणकारा कड़ियां, नेड़ो घुरै नगारौ। आयौ पीव काळ अणचीतां, 'रामडो' वेढीगारौ। —ठा. रांमसिंघ बिलाडा रो गीत

२ शक्तिशाली, बलशाली।

उ०—१ साकै नहीं सधीर, दिन उगै पसरा दियै। वहै अरोडा वीर, वेढीगारो राठवड़। —गो. रू.

उ०—२ जोईया मिलै जीयार, कथन 'दला' हूंता कहै। मारै छै कायमार, वेढीगारो राठवड़। —गो. रू.

रू. भे.—वेढीगार, वेढीगारौ, वेढैगारौ, वेडागर, वेडागार, वेडागारी, वेडागारौ, वेढागर, वेढागार, वेढागारी, वेढागारौ, वेढिगर, वेढिगरी, वेंढगरी, वेंढगारौ, वेंढीगार, वेंढीगारी, वेंढीगारौ।

वेढीमण, वेढीमणो, वेढेमणो–वि०—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ वरव्वीर 'खूमांण' वीराधवीरं, कठीमूळ 'सादूळ' वैवै कठोरं। भलो भीच कल्यांणमल्लो भुजाळौ, 'मानावत' वेढीमणो मच्छराळौ। —गु. रू. बं.

उ०—२ ग्रेकले भुजां दहूं ख खंड घातै ग्रवर, दस दिसां वर्ज जस तणौ डाकौ। 'माल' हर 'वोर' हर पछै बेढीमणं, 'सूर' हर तीसरो कियौ साकौ। —नरहरदास बारहठ

उ०—३ चालसी जुध नयण धोम वेढीमणो, मुगला गाळसी जोम मेढीमणौ। तरह लंकाळ सी घाट तेढीमणौ, वाळमी क्या कसर दाटै बेढेमणौ। —बदरीदास खिड़ियो

२ जबरदस्त।

उ०—जळचर वनचर ग्रांतरौ, जळचर जळ में जोर। वनचर ग्रति बेढीमणौ, जो कछु लाभै कोर। —गज-उद्धार

३ शक्तिशाली, बलशाली।

उ०—विढण नमौ नेठाह हथवाह बेढीमणा, गीत सराह दोय राह रोघा। वडां खळ ग्रादरा त्रंबक वेढांमणा, करै जुध पाधरा सणंक कीधा। —सेरसिंह री गीत

४ युद्ध करने वाला, युद्ध प्रिय, योद्धा।

उ०—वडा गहलोत मत्र मालम वसू. धार वढ धोळहर जेम ढळियौ। 'मुकन' री सुधारै मौत बेढीमणा, 'भीमड़ा' परम चो जोत मिळियौ। —भीमा गहलोत री गीत

रू. भे.—बेढीमणौ, बंढीमणौ, वेडीमणौ, वेढमणौ, वेढांमणौ।

मह.,—वेढमण, बंढमण, वेढमण, वंढमण, वंढमणौ, वंढीमण, बंढीमणौ।

बेढीमल, बेढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू. भे.)

बेण-सं. पु.—१ सूर्यवंशी राजा प्रथु के पिता का नाम।

२ बांस का वृक्ष या बांस। (ना. मा., ह नां. मा.)

उ०—ताल साल मालिका बकुल कुवजक खरजूरी, बोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी। कुमुद ढाक कल्हार बेण कचनार बिराजै, सोन जाय पल्लव ग्रसोक सुर धोक सु साजै। —रा: रू.

३ सेना, सैन्यदल।

४ नाक में पहनने का ग्राभूषण विशेष नथ।

उ०—ग्रादू मंजन करिध पाट पेहरै देही दळ। नयणं कजळ रेख, तिलक कुंकम भाळोयण। कणं कांन त्राटक, बेण नासा मोतोहळ। हार उर चंदन विलेप, रची कांकण कटि मेखळ। —गु. रू. बं.

५ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ पोहर हंदी डुंबणी, राग ग्रालापै तेण। ढोलौ मारू ऊगरै, कहि समझावै बेण। —ढो. मा.

उ०—२ ठग कांमेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सेण। चोर न कीजै पाहरू, ब्रहसपती रा बेण। —बां. दा.

उ०—३ होवै सुविनीत सेणा रे। धारै गुरु बेणा रे। जैसो ढळतो छाया रे। राखै प्रीत सवाया रे। —जयवांणी

उ०—४ जीहौ काया माया कारमी, जीहौ जैसौ सुपनो रेण। जीहौ विणसंतां देर लागै नहीं, जीहौ मांनो सतगुरु बेण। —जयवांणी

उ०—५ ग्रादू ग्रखई मोहुतो दूहौ कहै, राजा वेचूं नहीं तो ग्रोलो खांणा मिळं। पण घोड़ो उराको छै। रवियांण चंद, ऐराक बोजै वड़बीज, प्रांत गाज, सापुरस बेण, पेहिलो तो लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

उ०—६ सुंदर सर ग्रसुरह दळं, जळ पीयौ बेणेह। 'ऊदै' नरयंद काढियो, तस नारी नयणेह। —ऊदैसो ग्ररसी रौ गीत

६ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ उभा मोरलो नाद लोधै ग्रधूरै, मारो जागसी सांम बादे मधूरै। विकस्से हसं बेण ऊभो बजायो, सपत्ते पताळै सुरग्गै सुणायो। —ना. द.

उ०—२ छुटै साथ जांणं ग्रमोढार लोधो, किणो बेण नाद सजो-वन्न कीधो। विजोगो संजोगो बजे वेण वायो, प्रभू ग्रापरो जाण ग्रभ्रत्त पायो। —ना. द.

७ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—नोबत तेर तूर नीग्रसे, वह बांदण बहु जस बहसै। बेण ताळ मिरदग वजावै, मीत नाद गुण गंध्रब गावै। —रांमरासो

८ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

९ देखो 'वहण' (रू. भे.)

रू. भे.—वेणु, वेणू, बैण।

बेणका—१ देखो 'वीण' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वीणा' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—वळकुळै ईस नारद बजै बेणका, कमळ ग्रह चळचळै जोस कार्थं। मूंग थाळी जुई रुळै खळ महीसर, 'मांन' हर मळै दळ केण माथै। —मेगराज ग्राढो

३ देखो 'वेणी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बेणचि, बेणची—देखो 'वेणची' (रू. भे.)

बेणरावमुनि-सं. पु.—नारद मुनि का नाम।

बेणसुत—देखो 'वेनसुत' (रू. भे.)

बेणा-सं. स्त्री.—१ भारत में बहने वाली पर्णासा नामक नदी जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है।

वि० वि०—यह नदी वरुण की सभा में रह कर उनकी उपासना करती है। इस नदी के तट पर तीन रात उपवास करने से मनुष्य

मोर एवं हंस युक्त विमान से स्वर्ग जाता है। इसी नदी के तटवर्ती जनपद के राजा को सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय के समय पराजित किया था।

२ देखो 'वीरण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

बेणाट—सं. पु.—प्राचीन कालीन भारत के दक्षिण का एक छोटा प्रदेश जो अब केरल का तिरुविताकर हिस्सा बन गया है।

बेणापाणि, बेणापाणी—देखो 'वीणापाणी' (रू. भे.)

बेणि, बेणिका, बेणी—सं. स्त्री. [सं.]—१ स्त्रियों के बालों की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ हंसण बीज दाडंम, बेणि वासग भुयंगम। भटियांणी बर कमध, समवः गंगा नदि संगम। —गु. रू. बं.

उ०—२ बरण भुजग रूप बेणि, मंग 'सीस मोतिय'। प्रभा लजै न छत्र पांति, जोय तास जोतियं। —सू. प्र.

उ०—३ सिरि बेणी सिरलो असी, जांणइ वासिग नाग। बीहता मारइ बंभणह, किसु तारूक त्याग। —मा. कां. प्र.

उ०—४ रतन में राखडी बेणी वासग जडी, मूमरा बांहडी लहक मोडं। स्वाति नो बिदलो नासिका निरमयो, भाजु आल्यंगन करन कोडं। —रुकमणी मंगळ

२ कलाई, मणिबंध।

३ नदी का प्रवाह।

४ गंगा नदी का नाम।

उ०—जळं चद्र मिळी थाई जगचख, रेणायर सांसती रहै। जयमाल इत जाइ छाडं जुध, बेणी जळ उपरांठ वहै।

—रामदास राठौड मेड़तिया री गीत

५ शाकद्वीप की एक नदी का नाम।

६ देखो 'त्रिवेणी'।

७ देखो 'वीण' (रू. भे.)

८ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ पुण्यइ मयगल बाऋइ बारि, पुण्यवंत भुज नावइ हारि। पुण्यइ हुइ नित नवला रंग, पुण्यइ सुणीइ वीण ऋदंग।

—कां. दे. प्र.

उ०—२ गढ ऊपरि नितु हुइ पेखणां; सुणीइ बेणि ऋदंग। नितु उछव नितु पाउल नाचइ, नितु नितु नवला रंग। —कां. दे. प्र.

९ देखो 'बहणी' (रू. भे.)

१० देखो 'बेणीस्कंद'।

रू. भे.—बेण, वेणि, वेणी, वेनी, वैणी, वीणि, वीणी, वेण, वेणु, वेणू, वेनी, वैण, वैणि, वैणी।

अल्पा.,—वेणका, वेणका।

बेणीबंध, बेणीबंड—सं. स्त्री.—स्त्रियों के बालों की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहैं बेणीबंड रे रंग। (अथ) मृगानयनी उपरइ रे, बांध्यौ जाल प्रचंड रे। —प. च. चौ.

उ०—२ बेणीबंड जिसउ विराजइ वांसउ, पिंड उदमाद धरत पाव। अळ ताइ वंद तणाइ बिलागइ, अळ लइतउ घणाइ अळ राव। —महादेव पारवती री वेलि

रू भे.—वेणीडड, वेणीदड, वैणडंड, वैणदड, वेणीडंड, वैणीबंड।

बेणीफूल—सं. पु.—स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष।

रू. भे.—वेणीफूल।

बेणीमाधव—सं. पु.—प्रयाग में स्थित श्रीविष्णु भगवान का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—संध्यावट हेटै हणूमांन पौढे है, वडी मूरत है। बेणीमाधव प्रमुख चवदै माधव है प्रयागै। सरस्वती कूप रौ ळल लाल है प्रयागै। लोपामुद्रा दोय देवी प्रयागै। —बां. दा. ख्यात

बेणीस्कंध, बेणीस्कंध—सं. पु. [सं. वेणीस्कन्द] जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध कौरव्यकुलोत्पन्न एक नाग।

बेणु—सं. पु.—१ शतजित् राजा का पुत्र, एक राजा।

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

उ०—१............एकि वीणा वेणु ऋदंग यमल संख पटह कंसालप्रमुख अगुणपंचास वादित्रस्वर आभलावइ मधुर, एकि तिलकु बकुल असोक चंपक कुंद मंचकुंदादि पुस्पप्रकर सपानुडइं प्रचुर, एकि दीवांनी परि उद्योत करइ............। —व. स.

उ०—२ रलो रंग राग नाना विधि, मुनि-मंडळ के छाजै। पति सूं प्रीति जीति गुण दूजा, बेणु गगन में बाजै। —ह. पु. वां.

उ० —३ दादू रंग भर खेलूं पीव सौ, तंह बाजै वेणु रसाल। अकल पाट पर बैठा स्वांमी, प्रेम पिलावं लाल। —दादुबांणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—पटुपटह ऋदंग करडि मरद्दल बेणु तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहमंभ हुडुक ढक्क बुक्क त्रंबक काहल काहली बरगां प्रभ्रति वादित्र। —व. स.

४ देखो 'वेण' (रू. भे.)

५ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

रू. भे.—वेणु, वेणू' वेनु, वेनु।

बेणुजंघ—सं. पु. [सं.] युधिष्ठर की सभा में उपस्थित एक प्राचीन महर्षि।

बेणुदारि—सं. पु. [सं.] अक्रूर (बभ्रु) की पत्नी का हरणकर्ता एक यादव जिनके पुत्र को कर्ण ने अपने दक्षिणदिग्विजय के समय हराया था।

बेणुदारितक—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष।
रू. भे.—वेणुविदारित।

बेणुमंडळ, बेणुमंडल—स. पु. [सं. वेणुमण्डल] कुशद्वीपीय एक भाग।

बेणुमंत—देखो 'वेणुमान'।

बेणुमती—सं. स्त्री. [सं.] पश्चिमोत्तर देश की एक नदी। (पुराण)

बेणुमान—स. पु. [सं. वेणुमान्] १ एक वंश। (पुराण)
२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

बेणुवन—सं. पु. [सं.] राजगृह में स्थित एक उपवन का नाम, जहाँ राजा बिंबसार के समय गौतम बुद्ध ठहरे थे।

बेणुविदारित—देखो 'वेणदारितक' (रू. भे.)

बेणुवीणाधरा—सं. स्त्री. [सं.] कुमार कार्तिकेय की एक अनुचरी।

बेणुहय—स. पु [सं] वेणु राजा का नाम।

बेणुहोत, बेणुहोतर, बेणुहोत्र—स पु [स. वेणुहोत्र] वीतिहोत्र राजा का नाम जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र एवं गार्ग्य का पिता था।

बेणू—१ देखो 'वीण' (रू. भे.)
२ देखो 'वीणा' (रू. भे)
३ देखो 'वेण' (रू. भे.)
४ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

बेणो—सं. पु—१ सोने-चांदी के आभूषणों पर खुदाई के काम में कुछ गहरे खड्डे (छेद) करने का लोह का एक औजार विशेष।
२ बढई का एक औजार विशेष।
३ देखो 'वहणी' (रू. भे.)
४ देखो 'वीणो' (रू. भे.)
रू. भे.—बेणी।

बे'णो, बे'बो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे)
उ०—अलग राख आरोह, तसां कपड़ा बेंतोड़ा। लारहंद मासा लांच, रजक प्याले अण रोड़ा। —पा. प्र.

बेण्या, बेण्वा—सं. स्त्री. [सं.] विन्ध्य पर्वत से निकली हुई चौदह नदियों में से एक।

बेतंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)
उ०—घर ऊभी बेतंड साहण सिणगार नूं आवतो देखि साम्हौं हालियो। इण रीति दो ही गजां आप आप रा कलावां सूं आधोरणां नूं उडाय रोस मैं अंध होय समीप आवतां ही लोयण (नेत्र) मिलाया। —वं. भा.

बेत—सं. स्त्री.—१ बूंदी एवं चितौड़ के बीच के पठार से छब्बीस मील दूर बहने वाली नदी।
उ०—तिण बेत नदी ऊपर वडी जंगळ छै। तिण में ढोब, करड़ री वडी ऊगम छै। तिका ठोड़ जोय आया। जांणियो मांहुरी हसम थाड अठै चरसी। —नैणसी
२ देखो 'बेंत' (रू. भे.)
३ देखो 'वेत' (रू. भे.)
उ०—१ थें किलै में संची सताब करजे। हूं बेत लागियां आयस्यूं। —गोपाळदास गौड़ री वारता
उ०—२ तठै आगै वाग आयो। देखनै मांहि ऐठा मल फल-फूल खाया, पिण वाग मैं जावतो घणो दीठो। तठै तो पिण हीरण बीचारियो—जो आ जागा भली छै, मांरो चारो पिण मोकळो छै, पिण दिन रा तो बेत लागै नही, अबै रात रा चरवा नै आवस्यां। —रीसालू री वात
उ०—३ पुरणह-मल्ल बाहां पलंब, 'ईंदा' हर रासै कवि अब। वर-वीर घोर सुरतांण बेत वाखांण चौरासी बीर-खेत। —गु. रू. बं.
४ देखो वेत' (रू. भे.)
५ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

बेतकल्लुफ—देखो 'बेतकल्लुफ' (रू. भे.)

बेतकल्लुफी—देखो 'बेतकल्लुफी' (रू. भे.)

बेतधर—देखो 'बेतधर' (रू. भे)

बेतड़—देखो 'बेंतड' (रू. भे.)

बेतन—स. पु. [सं.] कुछ निश्चित समय तक प्रायः एक मास तक काम करने के बदले दिया जाने वाला धन या पारिश्रमिक, तनख्वाह।
उ०—मांन देई राखियु, सुंपिया अस्व अनेकि। दस सहस्र बेतन परिठयुं, नि मुख्य कीधु एक। —नळाख्यांन

बेतनभोगी—वि॰—वेतन लेकर काम करने वाला।

बेतमीज—देखो 'बदतमीज' (रू. भे.)

बेतमीजी—देखो 'बदतमीजी' (रू. भे.)

बेतर—१ देखो 'बेतरू' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)
उ०—रंक रूळंदा मारकर, कोई मल कहावै, बेतर भूत आराध कर, कोइ देव मनावै। बाकरण का मंत्र सीख कर, कोइ साध कहावै, आंख्यां आंधा होय कर. कोइ वाट बतावै। —केसोदास गाडण

बेतरणी-सं. स्त्री.—१ दर्जी द्वारा कपड़े का माप लेने की क्रिया।
२ देखो 'बैतरणी' (रू. भे.)

बेतरह—देखो 'बेतरह' (रू. भे.)

बेतव, बेतक-सं स्त्री.—वह गाय, भैंस, बकरी आदि मादा पशु जो निकट भविष्य में शीघ्र प्रसव करने वाली हो।
रू भे.—बेतर, बैतर।

बेतलव—देखो बेतलब' (रू. भे.)

बेतलबी देखो 'बेतलबी' रू. भे.)

बेतस-सं. स्त्री. [सं.] १ जंभीरी, बिजोरा।
उ०—बालु नह बेलातरु, वेऊ बेतस बाणि। वधारु बाहलु लोउ, बाउलीउ बखाणि। —मा. का. प्र.
२ देखो 'बेतसु' (रू. भे.)
रू. भे.—बेतस।

बेतसवन-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ, जहां मृत्यु ने तपस्या की थी।

बेतसिका-सं. स्त्री. [स.] वह तीर्थ जिसकी सेवा ब्रह्मा ने की थी। इस की यात्रा करने से मनुष्य को अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

बेतसिनी-स. स्त्री [सं.] एक प्राचीन नदी का नाम। (पुराण)

बेतसु-स. पु. [सं.] एक दानव, जिसका वध इन्द्र ने किया था।

बेता—देखो 'वेत्ता' (रू. भे.)

बेताब—देखो 'बेताब' (रू भे.)

बेताबी—देखो 'बेताबी' (रू. भे.)

बेतार—देखो 'बेतार' (रू. भे.)

बेताळ, बेताल-सं. पु. [सं.] १ भूत-प्रेतो की एक प्रकार की योनि विशेष। (पुराण)
उ०—बेताल भीसणाकार, मुखि करता फार फेत्कार, क्रतांतावतार मुखि मेल्हतउ झाल, हस्ति देता ताल, हस्यां ऊछलिया वेताल। —व. स.
२ वह पात्र जिस पर भूत-प्रेतों ने अधिकार कर लिया हो।
३ बंदीजन, भाट।
४ देव विशेष।
५ द्वारपाल, दरबान।
६ युद्धप्रिय देव।
उ०—१ ब्रहमंड किनां फूटो वळै, धसक तळातळ पातळै। मुखं हसै सकति महाबळ, बेताळा कुळ व्याकुळै। —मा. वचनिका
उ०—२ मीकोतरि सक्रणी प्रेत हक्रणी प्रचारा, विवध भूत बेताळ वीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु विरक जंबू रसवाया, काक कंक की गिरणं श्रासपळ संमळ आया। अछरां स्रंगार धरि ऊमही, हूरां हरखि वधारियौ। महि गयण संग खेलां मिळे, श्रागम जंग विसारियौ। —रा. रू.
उ०—३ हुए हक्क सूरां उठी मेर हक्कां, करै भूत बेताळ चंडी किलक्कां। करै जोर प्राहार वेपार कुंतां, दिपै जुद्ध जांणै भगू सिभू दूतां। —रा. रू.
७ छप्पय छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ६५ गुरु व २२ लघु, कुल ८७ वर्ण वा १५२ मात्राएँ होती हैं।
८ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)
रू. भे. - बैताळ, बइताळ, वेयाळ, वेयाल, वैताळ, वैताल, वैताळी।

बेतालजननी-सं स्त्री. [सं.] कुमार कार्तिकेय की एक मातृका।

बेताळभट, बेतालभट, बेताळभट्ट, बेतालभट्ट-सं. पु —एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पंडित।

बेताळिक—देखो वैताळिक' (रू. भे.)

बेताळीस, बेतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

बेताव - देखो 'बेताव' (रू. भे.)

बेतुंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

बेतुकौ—देखो बेतुकौ' (रू भे.)
(स्त्री बेतुकी)

बेता-वि० [स] ज्ञाता, जानकार, तत्ववेत्ता। (ग्रमरत)
स. पु.—पंडित, कवि।
रू. भे.—वेता।

बेत्रकीयवन-सं. पु. [सं.] वह वन जहाँ भीम ने बकासुर का वध किया था।

बेत्रकूट-सं. पु. [सं.] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम।

बेत्रगंगा-सं. स्त्री. [सं.] हिमालय से निकलने वाली एक नदी का नाम।

बेत्रवती-सं. स्त्री. [स] परियात्र नामक पर्वत से निकली चौदह नदियों में से वेतवा नामक नदी।
उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जातां, सगळा भोग विलास पावसौ प्रीत जतातां। बेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजंतां, ज्यूं मुख मौंह विलास अधर घण पांन करंतां। —मेघ

बेत्रहा-सं. पु. [सं. वेत्रहन्] देवराज इन्द्र का एक नाम।

बेत्रासन-सं. पु. [सं.] बेंत का बना हुआ एक प्रकार का ग्रासन विशेष।

बेत्रासुर-सं. पु. [सं.] १ यमुना नदी में मिलने वाली वेत्रवती नदी के गर्भ से उत्पन्न सिंधुद्वीप नामक राजा का पुत्र, प्राग्ज्योतिषपुर का राजा एक प्रसिद्ध असुर, जो इन्द्र के द्वारा मारा गया था। (पुराण)
२ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—वेत्रासुर ।

वेत्रिक-स. पु. [सं.] १ प्राचीन भारतीय एक जनपद ।

२ उक्त जनपद का निवासी ।

वेथळियो—देखो 'वेथळियो' (रू. भे.)

वेथाग—देखो 'वेथाग' (रू. भे.)

वेथो—देखो 'वेधो' (रू. भे.)

उ०—किता एक दिन रावजी असमाधिया रहि अर वैकुंठ सिधाया। उठै राजा भारमल पणि वैकुंठ सिधाया। बिहूं राजवियां दिन आठ वेथो हुई। ओथि राजा भगवंतदास नूं टीको हुयो। —द. वि.

वेदंग—देखो 'वेदग्य' (रू. भे.) (नां. मा.)

वेदंड—देखो 'वितुंड' (रू. भे.)

वेदंत—१ देखो 'वेद' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदांत' (रू. भे.)

वेद-स. पु. [सं.] १ धार्मिक या आध्यात्मिक विषय अथवा किसी विषय का सच्चा एवं वास्तविक ज्ञान ।

२ भारतीय आर्यों के सर्वमान्य वे चार ग्रन्थ जो मनुष्य रचित नहीं हैं बल्कि ये ब्रह्मा के मुख से निकले हुए माने जाते हैं, श्रुति ।

उ०—१ वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण, वळै खट भाख जीहा वखांणे। भांत पोराण दस आठ पिंगळ भरथ, जगत जुगतां तणा भेद आंणे। —र. ज. प्र.

उ०—२ पह तिलक कीध कुंकम म्रु पांणि, मोतियां अखत चाढे प्रमांणि। जस जोतख द्विज्ज लिखंत जंत्र, मुख पढत महा द्विज वेद मंत्र। —सू. प्र.

उ०—३ प्रथी करण थिर वेद पुरांणां, करम जिकां बळ होण कुरांणां। यों जग मैं रवि वस उजागर, प्रगटै भूप रूप परमेस्वर। —रा. रू.

३ भगवान् श्री विष्णु का नाम ।

४ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ नमो कांमणी वेद माया कुमारी, नमो संहस नैणी प्रबोधा संसारी। नमो सेसकंठी नमो सोळ सामा, नमो भूचरी खेचरी रुद्र भांमा। —मा. वचनिका

उ०—२ लोक वेद को डर नहीं, रस भीना दिन राति। कांमी प्रेमी हरि भगत, नहीं सूझै दिन राति। —परमानद वणियाळ

५ जय जयकार की ध्वनि ।

६ ज्ञान ।

उ०—१ जनहरिया ज्युं नांव थी, मंन पाणी ज्युं वेद। जे कोई न्यारो जांणसी, जिन कुं आयो भेद। —अनुभववांणी

उ०—२ नामी वरि आया, नाच नचाया, सहूधां मुख सिवरंदा है। रग रग आरंभा, भया अचंभा, छुद्यम वेद भणंदा है। —अनुभववांणी

७ चार की संख्या। * (डिं. को.)

उ०—भणि तेरहसौ छासठि भेद, विगति मात्र सोलह अ वेद। आखर लघू गुरु इगिआर, वदा सुभंकर छद विचार। —ल. पि.

८ तीन की संख्या। * (डिं. को.)

९ छन्द ।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—रिण तूर पयंच-सब्द वेद रुडै, गयणाग क अंबनिधि गडडै। ढळकै गज-ढालां हूहरिय, अनडां सिरि जांणक अच्छरियं। —गु. रू. ब.

११ योग, जोड़ ।

१२ मांगणियार मुसलमानों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति। (मा. म.)

१३ नाईयों की शाखा जो हजामत के धन्धे के साथ-साथ मरहम पट्टी आदि कुछ वैद्यगी का काम भी करती है। (मा. म.)

१४ उक्त शाखा का व्यक्ति। १५ भृगु के कुल में उत्पन्न एक मंत्रकार। १६ सिंधुद्वीपराजा का भाई जो शिव भक्त था। १७ जनमेजय का उपाध्याय व धौम्य ऋषि का शिष्य, एक ऋषि।

२० विवाह बेदी पर बोले जाने वाले मंत्र ।

उ०—ताहरां छोकरयां वाघै दोळा फेरा ब्यार लीया। ताहरां बांभण एक पांगुळो ओथ पड़ियो हुतो तिकै नुं वाघै कह्यो। रे तूं बांभण छै। जे भणियो छै तो तूं वेद पढ। का मारीस। ताहरां बांभण बोहतै क्युं भणियो। —देवजी बगड़ावतां री बात

२१ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या—किणहि रोगी नें वेद ओखध पावा लागो कहै अो ओखध पी जा रोग जातो रहसी। जद रोगी बोल्यो--मूंहडा मैं तो घालूं नहीं। म्हारा मोरां में कूट दो। —भि. द्र.

उ०—२ बाप घणो ई समझायो, पण बो तो मान्यो ई नीं। वेद हकीम ई घणो ई पालियो तो ई उणरै कीं होयै बैठी नीं। बेटा रा बाद आगै सेठां रो तो खायो पीयो ई अंग लागै नीं। —फुलवाड़ी

उ०—३ अमोलक सूं अमोलक हीरो कोई पेट मैं खावण सूं तो रह्यो। आप सगळां जांणो ई हो, कांई बताबूं। कुठोड़ पीड़ अर

सुसरोजी बेद। रांड कंवरमा लारै सती होवण रो हठ झाल राख्यो।
—फुलवाड़ी

२२ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—धमाधम वांण गोळा वीभम गाजिया, साभिया मरण खत्रियां धरम मेद। मडोवर तणा प्रदराजिया मेड़तै, वाजिया बेहूं धग्गी तणां बेद। —मेरसिगजी, कीलसिहजी री गीत

रू. भे.—बेद, वेदंत, बेय, बेह।

बेदउदय—स. पु. [सं. उदयवेद] सूरज, सूर्य। (डिं. को.)

बेदक—१ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—मतव्य मान, गतव्य ग्यान, बेदक विधान, धर धेय ध्यांन। सुन जाग सूर, चंद्राक चूर, सुख मन संचार, ग्रम्मृत ग्रपार।
—ऊ. का.

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

बेदकरता—स. पु. [स. वेदकर्तृ] १ वेदों की रचना करने वाला, ब्रह्मा।

२ विष्णु का नाम।

३ शिव, शंकर।

४ सूरज, सूर्य।

५ वर पक्ष के वे मनुष्य जो विवाहकृत्य सम्पन्न हो जाने पर वधू के घर वर तथा वधू को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु जाते हैं।

बेदकल्प—स. पु [सं.] अथर्ववेद का एक भाग।

बेदका—सं. स्त्री. [सं वेदिका] विवाह वेदी, चंवरी।

उ०—ग्रलंगा ऊमरांकोट तोरणां काळमी ग्राई, नांमी वंस वाळाई ग्रारौ नरां नाथ। विप्रां गंठ जोडी बांध बेदका समीप बैठे, बनो बंनी मेहंदी हाथ मिळायो विख्यात। —बादरदांन दधवाड़िया

बेदकार—वि० [सं.] वेदों के रचयिता, वेदों का रचनाकर्त्ता।

बेदगंगा—स. स्त्री.—कृष्णा नदी में मिलने वाली एक दक्षिण भारतीय नदी।

बेदगरभ—सं. पु. [सं. वेदगर्भ] १ ब्रह्मा।

२ ब्राह्मण।

रू. भे. बेदगरभ।

बेदगरभा—स स्त्री. [सं. वेदगर्भा] १ सरस्वती नदी।

२ रेवा नदी।

बेदगरभापुरी—सं. स्त्री. [स वेदगर्भापुरी] एक तीर्थ विशेष।

बेदगाथ—सं. पु. [सं] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

बेदगी—स. स्त्री.—१ होशियारी, चतुराई, दक्षता, विशेषता।

उ०—राजाजी नै उणरी भोळी अर अबूझ बात सुणनै हसी ग्राय-गी। बोल्या—भोळा ठीकरा, हाथ जोड़ना मैं थंडी कांई बेदगी! म्हैं कदे ई नीं जोड़्या तौ ई जांणू। —फुलवाड़ी

२ देखो 'वंदगी' (रू. भे.)

बेदगुप्त—स. पु [सं.] १ भगवान् श्रीकृष्ण।

२ पराशर ऋषि का पुत्र।

बेदग्य—वि० [स. वेदज्ञ] १ वेदों का ज्ञाता, वेदों का जानकार।

२ ब्रह्मज्ञानी।

स. पु.—ब्रह्मा।

रू भे.—वेदग, वेदंग, वेदंगर, वेदक, वेदग्ग।

बेदजणणी—स. स्त्री. [स. वेदजननी] वेदों की माता, सावित्री।

बेदजा—स स्त्री. [सं. जात-वेद] १ ग्रग्नि, ग्राग। (ना. डिं. को.)

२ द्रौपदी। (ग्र. मा.)

वि० वि० (वि. जाग्सेनी)

रू. भे.—वेदिजा, वेदीजा।

बेदण—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—ग्रम्है न करिस्यां कोइ, साजनिया सहु को करो। फिर दूणी दुख होइ, बेदण विछड़ियां पछै। —जसराज

बेदणौ, बेदबौ—देखो 'वेधणौ वेधबौ' (रू. भे.)

उ०—काटै वेदै घसै पथर पर, तथा तपाय कढ़ावै तोल। सुर पूजा सोरम गुण समर्पे, खंडा सचंनण रौ खोल। —स्वरूपदास

बेदतीरथ—सं. पु. [सं वेदतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ। (प्राचीन)

बेदत्रय, बेदत्रयी—स. स्त्री. [सं. वेदत्रयी] तीन वेदों का समूह, जिसमें ऋगवेद यजुर्वेद एवं सामवेद होते हैं। (वं. भा)

बेददरस, बेददरसन—सं पु. [सं वेददर्श, वेददर्शन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने सुमन से अथर्ववेद, सहिता सीख कर अपने शिष्यों को प्रदान की थी।

बेदद्विस—सं पु. [सं. वेदद्विष] चेदि देशाधिपति बृहद्रथ का पुत्र।

बेदधंकी—स. पु. [सं. वेध+रा. धंकी] युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर, बहादुर।

उ०—हैजमां हिलोळ हतां तेगां उसां टीलो हलै, साथ वीर चलै चढी चाटीलौ नमंद। बेदधंकी जंगां मेळै वारंगां मांटीलौ वींद, कंवाणा कोमंको वागां ग्रांटीलो कमंद। —हुकमीचंद खिड़ियो

बेदधरम—स पु. [स वेदधर्म] वैदिक धर्म।

उ०—१ उत्तम नाम वस उजवाळौ, बेदधरम रौ बंधव बडाळौ। धरपति जोण सोस छत्रधारे, एम प्रतग्या करै उचारे। —सू. प्र.

उ०—२ स्वरग वल विस्तरि ग्रकबर सं सत्रु ग्रग्ग, इकल निबाह्यौ जिहं बेदधरम नत्ताको। ग्रासमुद्र उरवि वासी ग्रज्ज कृतमन्य देत, धन्यवाद वीर ग्रग्रगण्य रांन 'पत्ता' कों। —बालाबक्स पालावत

रू. भे.—वेदोघरम, वेदोघ्रम ।

वेदधुनि, वेदध्वनि–सं. स्त्री. [स. वेदध्वनि] वैदिक मंत्रों के उच्चारण की ध्वनि ।

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अंधकार फीटइ, गाय तणा गांला छूटा, तारागण विरल हुउ, चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकड़ा तणी उलि लवइं, देव तणां बार ऊघड़ियां, प्रभातिक तूर्य वाजियां, राजभवनइ वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका ऊपजइं, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणें घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुग्रा । —व स.

उ०—२ जिकै वेद मूरति ब्राह्मण छै सु ग्ररणी ग्रगनि लगाड़ि होम करै छै । घणो गौ घ्रत नैं कपूर री ग्राहुति दीजै छै । वेदध्वनि कीजै छै । दूलह नैं दूलहनी सेहरां बांधिग्रा पूरब माहमा वेसांणिग्रां छै । —रा. सा. स.

रू. भे.—वेदधुनि, वेदवध्वनि, वेदोधनि, वेदोघनी, वेदोधुण, वेदोधणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदांधुनि वेदोधुनी, वेदोध्वनि ।

वेदन, वेदना–सं. स्त्री. [स. वेदनं एवं वेदना] १ पीड़ा, कष्ट, व्यथा ।

उ०—१ लै नैं सिरचद गूंहतं नू रांणीजी कहियो हुतो ज्यूं गुण हुवै तिम करिया । मु न का गांठि न का वेदन इउं ही उपाय करि घर बात थापी । —द. वि

उ०—२ राजा उठ्यो, वेग सतावमूं रे, रांणी ऊपर न करयो द्वेस रे । ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे, राख्यो इण समता भाव विसेख रे । —जयवांणी

उ०—३ जीहो वेदना नरक मे सासती, जीहो जरा तापभी खेद । जीहो वेदना दस प्रकार नौं, जीहो जिगरा न्यारा न्यारा भेद । —जयवांणी

उ०—४ पल जागे पल भी सुवै, पल मन धरै न धीर । हरिया वेदन विरह की, निस दिन भई सरीर । —ग्रनुभववाणी

२ तकलीफ ।

३ प्रसूता स्त्रियों को प्रसव के समय होने वाली शारीरिक पीड़ा या व्यथा ।

उ०—बांझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जाणत मूंड भमायो । पूत कपूतन कौ चटसाला कि, ज्यूं कुलटा सुमराळ सुणायो । —ऊ. का.

४ रोग, बीमारी ।

उ०—१ ग्रोखद करि करि जु मूंवा, वेदन पड़ी न हाथि । जा ग्रोखद सूं ऊबरै, वाकी पड़ी ग्रनाथि । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ धांन न भावै चोंच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी बिगोई । तौ सौं वात कहूं मैं कैसी, मेरे मन मैं बीचत जैसी । —कूंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ विघ चूका वैद न जांणै वेदन, ग्रोखध लहै न पीड़ ग्रथा-ह । रात दिवस खटकै उर 'राजो', साजो तेण नहीं पतसाह । —पीरदांन ग्रासियो

उ०—४ सु सारां मुलकां रा वेद बुलाया, पिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहर मैं पाडो फेरयो—नागजी नैं ताजो करै, तिण नै लाखपसाव देवां । सु वैदां नै तो वेदन लाधी नहीं । राजा वेद बुलाय कै, कुंवर देखाई बांह, वैदां वेदन काळ ही, करक कलेजा माहिं । —नागजी नागवंती री बात

उ०—५ तारां ग्रै भाटी कलकरण केहरोत कनै गया । तद कल-करण ग्रादमो हजार दोय सूं कंवर बीकैजी माथै ग्रायो, ग्रर राव सेखै नू कहायो कै थे ग्राय म्हारै सांमल हुवो ज्यूं कांची वेदन काट देवा । —द. दा.

५ भय एवं हिंसा की पुत्री ।

रू. भे.—वेदन, वेदनि, वेदण, वेदनि, वेवना ।

वेदनाथ–स. पु. [सं.] १ एक विश्वनाथ नामक ब्राह्मण एवं कमलालया का पुत्र एक राजा ।

वि० वि०—इसे ब्राह्मण का साग या द्रव्य चुराने के कारण पुन-र्जन्म में वानरयोनि प्राप्त हुई । ग्रपने मित्र सिन्धुद्वीप मुनि की सलाह के ग्रनुसार यह धनुष्कोटि तीर्थ में जाकर पापमुक्त हुग्रा था ।

२ महादेव, शिव ।

वेदनिंदक–वि. [सं.] १ वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक ।

२ बौद्ध धर्म का ग्रनुयायी ।

वेदनि—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ बटी परखि गांठि ग्रह बांधी, जम ग्रब वेदनि तूटी जांहकै रोग सदा ग्रंगि रहता, बोहत होती तपनाइ । या बूंटी रस घापि र पीया, जीणि बोहड़ी संताप न थाई । —बील्होजी

उ०—२ वेदनि विरह विथा तन मांही, पड़दा खोलि मिळौ क्यूं नांही । जन हरिदास कै ग्रास तुम्हारी, विलम कहा पति देव मु-रारी । —ह. पु. वां.

वेदनिध, वेदनिधि–सं. पु. [सं] एक प्राचीन महर्षि ।

वेदनीय–वि० [स.] जो वेदना उत्पन्न करे, वेदना उत्पन्न करने वाला । (कर्म) (जैन)

वेदपाठ–सं. पु. [सं.] वेद के मंत्रो का पाठ, वेदाध्ययन ।

उ०—नको सुचि क्रिया न को वेदपाठ, न को मुखवांणी न को मोन काठ । न को तनत्यागी न को ग्रेहचारा, न को नवनाथू न को पथवारा । —ग्रनुभववांणी

वेदपाठी–वि० [स. वेद+पाठिन्] वेदों को पढने वाला, वेदों का ग्रध्य-यन करने वाला ।

उ०—१ वेदमंत्र बोलत, वेदपाठी ब्राहमण। पहरै पट्ट प्रबोट, ब्रह्म आगे थए मघण। —गु. रू. बं.

उ०—२ तहां वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मन्त्रबळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इंद्र आदि देवता अडसठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु, अस्ट परवत, दसों दिग्पाळ आदि में आवाहन करि आहुती कर पसन्न किया। —सिंघासण बत्तीसी

वेदपित-सं. पु.—अग्नि, आग। (अ मा.)

वेदफळ-स. पु.—वैदिक कर्म करने से प्राप्त होने वाला फल।

वेदबाह, वेदबाहु-स पु [सं. वेदबाहु] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

३ पुलस्त्य ऋषि का नाम।

४ रैवत मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

वेदबीज-स. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ ब्रह्मा।

वेदभू, वेदभूम, वेदभूमि, वेदभूमी-सं. स्त्री. [सं. वेदभू, वेदभूमि] १ वह स्थान जहाँ वेदों का अध्ययन किया या कराया जाता है, ऋषि-आश्रम।

उ०—ईं वेदभूम रो धरम नहीं, प्रोलं सी बात बणा लेवै। आ बात जिंदगी मौत तणां, सगळां री सोच मला लेवै।

—करणीदांन बारहठ

२ वैदिक भूमि हिन्दुस्तान, भारत।

३ देवताओं का एक गण विशेष।

वेदमंतर, वेदमंत्र-स. पु [सं. वेदमंत्र] १ वेदों में आये हुए मंत्र।

२ एक प्राचीन जनपद का नाम। (पुराण)

३ उक्त जनपद का निवासी।

४ मूलमंत्र।

वेदम—देखो 'वेदम' (रू. भे.)

वेदमत-स. पु.—वेदों में उल्लिखित मत, वैदिक मत या नियम।

उ०—माजी मांनै वेदमत, सुणै सदा सुरगाह। सनौ पाठमी मांगरत, दसमी स्रीदुरगाह। —बां. दा.

वेदमाता-सं स्त्री. [सं. वेदमातृ] १ सावित्री, गायत्री।

२ दुर्गा, शक्ति।

३ वीणावादिनी सरस्वती।

४ गायत्री मंत्र।

वेदमात्रका, वेदमात्रिका—देखो 'वेदमाता'।

वेदमालि, वेदमाली-स. पु. [सं. वेदमालि] रैवत मन्वन्तर के एक वेदज्ञ ब्राह्मण का नाम।

वि० वि०—कुछ समय पश्चात् अपने परिवार के पालन-पोषण हेतु इसने अनीति से धन कमाना शुरू किया। जावंती मुनि के उपदेश से इसे ज्ञान हुआ। परिणामस्वरूप इसने अपने दोनों पुत्रों को अपने धन का दो भाग देकर शेष बचे धन को धर्मकार्य में लगादिया और स्वयं नरनारायणाश्रम बद्रीवन में जाकर तपस्या कर पापमुक्त हुआ।

वेदमितर, वेदमित्र-सं. पु. [सं. वेदमित्र] व्यास की ऋकशिष्य परम्परा में से माण्डुकेय नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य जो स्वयं शाकलगोत्रीय था।

वेदमुंड-सं पु. [सं.] एक असुर का नाम।

वेदमूरत, वेदमूरति वेदमूरती-वि० [सं वेदमूर्ति] १ वेदों का पूर्ण ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति नीला आला वस केलि खंभ सूंना गलिया थका काचनां रा कलसां री वेह करिनै चौरी पधराया छै। हथळेवो जोडि छेहड़ा बांधिया छै। सु जांगि मन बांधिया छै। जिकै वेदमूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाडि होम करै छै। —रा. सा. सं.

२ सूरज, सूर्य।

वेदरद, वेदरदी—देखो 'बेदरदी' (रू. भे.)

उ०—१ चालनि मोरा सइयां दुख पावै, रसराज ऐसो वेदरदी होय रहो, काहूँ कू तो पनघट जावंरी आवै, —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ चालो चालो सहियां म्हांरी सावरै री लेर, प्यारो गयो कहो विरह वेदरदी. खोजल्यां ने लखा रा सूघा पेर।

—रसीलै राज रा गीत

उ० ३ हेरी हेरी मा मन लै गयो, सांवरो सनेहो अलबेलो मा। नेन लगाय मन लै गयो वेदरदी, दिल विच छाय रयो।

—रसीलै राज रा गीत

वेदरस-स. पु [सं.] वृहस्पति का नाम। (अ. मा.)

वेदराह, वेदराह-सं. पु. [स. वेद+अ. राह] वेदों में बताया गया मार्ग वेदमार्ग,।

वेदल—देखो 'बेदिल' (रू. भे.)

उ०—१ थे नाळेर किण नै बंदायो? म्हैं थांने काहुं कहिनै मेलिया था? तरै उमरावां अर पुरोहितजी पाछली बात ज्यूं हुई त्यूं कही। कागद दिखायो। स्रीरिणमल जी वेदल हुवा।

—राव रिणमल री बात

उ०—२ वळै ढाढियां नूं मुख वचन समाचार मारवणी कह्या छा सु कह्या पिण ढाढी डरै छै। ताहरां ढोलोजी बोलिया थें वेदल (क्यूं) छो। ताहरां ढाढी बोलिया कंवरजी आपनै दीठा तो बणां राजी छां पिण मरण सूं डरां छां। —ढो. मा.

उ०—३ सरै पाधरी कंवरजी री हजूर आई। कंवरजी ढोलियै बैठा छै। तद मालवणी आंण मुजरो कीयो। जद कुंवरजी हाथ पकड़ नै घणा आदर सुं मालवणी नै ढोलियै बैसांणी। पिण मालवणी बेवल घणी छै। —ढो. मा.

बेदवंत-वि० [सं.] १ वेदों का ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—१ कांमिणी कहि कांम काळ कहि केवी, नारायण कहि अवर नर। वेदारथ इम कहै बेदवंत, जोग तत्त जोगेसवर। —वेलि

उ०—२ जु बेदवंत भला ब्राह्मण था। त्यां वेद री बेदोकित विचारयी। बात परिण कही चाहीजै अर मन मांहै भय उपनो छै। मत बलदेवजी बुरो मानै परिण जरूर हुई। ब्राह्मण जु कछु धरम्म होय कहै। —वेलि टी.

२ ब्रह्मज्ञानी।

बेदवचन-सं पु. [स] वेदों का मूलपाठ।

बेदवती-स. स्त्री. [स.] १ राजा कुशध्वज की कन्या जो दूसरे जन्म में सीता हुई थी।

२ द्रोपदी। (म. मा.)

३ एक प्राचीन नदी जो परियात्र पर्वत से निकली १४ नदियों में से एक थी।

४ एक अप्सरा का नाम।

बेदवदन-सं. पु. [सं.] १ ब्रह्मा। (डिं. को.)

२ व्याकरण।

बेदधुनि, बेदध्वनि—देखो 'वेदधुनि' (रू. भे.)

उ०—कुंदन मे थाळ द्रोब दधि कुंकंम, पूरित अक्खत तंदुळ। इत्यादिक गीत नाद बेदधुनि, मंगळ धमळ मगळ। —गु. रू. बं.

बेदवा-वि०—जिसकी कोई दवा नहीं हो, बिना दवा का।

उ०—जाह कोई जोग न जुगति है, जांह नही घेग न तेग। हरीया दवा न बेदवा, जांह कोई पौण न वेग। —अनुभववांणी

बेदवाक्य-स. पु. [स.] १ वेद का कोई वाक्य।

२ पूर्ण रूप से प्रमाणित कोई बात जिसका खंडन नही किया जा सके।

बेदवादी-वि०—[सं. वेदवादिन्] १ वेदों का अच्छा ज्ञाता।

२ वेदों में उल्लिखित मार्ग पर चलने वाला।

बेदवावंत—देखो 'दवावंत' (रू. भे.)

बेदवाहन-सं. पु. [सं. वेद+वाहनम्] सूरज, सूर्य।

बेदवित, बेदविद—वि० [स. वेदवित्] वेदों का जानकार, वेदज्ञ।

उ०—बेदोगत धरम विचारि बेदविद, कपिल चित लागा कहण। हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पारिणग्रहण। —वेलि

सं. पु.—१ वेदविशारद ब्राह्मण।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

रू. भे.—वेयविद, बेयवो।

बेदविदुख, बेदविदुस—वि. [सं. वेदविदुष] वेदों का ज्ञाता, पंडित, विद्वान्।

उ०—सिलपी कांम हुयो सहु सिद्ध, ब्रह्मां साखि रचै जिग विधि। उचारै बेदविदुख अनेक, विचारै जिग सुविधि विमेक। —रांमरासो

सं. पु.—ब्राह्मण, पंडित।

बेदवेद्या-सं. स्त्री. [सं.] वह देवी जो वेदों से जानी जाती है। उक्त देवी के निवास स्थान चिन्तामणि ग्रह के चार दरवाजे चारों वेद हैं।

बेदव्यास-सं. पु. [सं.] १ एक प्राचीन ऋषि, जो सत्यवती एवं पराशर के ससर्ग से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ही वेदों के विभाग करके आधुनिक रूप दिया।

उ०—१ का तन आलस करत ऊंघ, का फिर सूंघा करत सूंघ। का मन मूरख विकल जास का हुय बैठे बेदव्यास। —अनुभववांणी

उ०—२ ताह मांहि लै अधिका उतिमि, ग्यांन रूप गाहेडि गढा। बारहट अनै रिलि बराबरि, बेदव्यास ईसर बडा। —पी. ग्रं.

२ वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईस द्वापरों में उत्पन्न होने वाले अट्ठाईस वेदव्यासों का समूह। (पुराण)

रू. भे.—बेदव्यास

बेदवृद्ध, बेदवृध-स. पु.—[सं. वेदवृद्ध] व्यास की सामशिष्य परम्परा में से कौथुम पाराशर्य नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य।

बेदसरमन, बेदसरमा-सं. पु. [सं. वेदशर्मन् वेदशर्मा] १ एक वेदज्ञ ब्राह्मण।

वि० वि०—इसने ब्राह्मणों को देने के लिए संकल्पित धन ब्राह्मणों को नही दिया। इसलिए इसे शृगाल-योनि प्राप्त हुई। यह वेदनाथ का मित्र था एवं सिन्धुद्वीप मुनि के उपदेशानुसार धनुष्कोटि तीर्थ मे शाप मुक्त हुआ था।

२ विदुर का मित्र, जो विदुर के साथ कालिजर पर्वत पर गया।

वि० वि०—कालिजर पर्वत के सिद्धों के उपदेशानुसार इसने सोमवती अमावस्या के दिन 'अघ तीर्थ' पर स्नान करके मुक्ति प्राप्त की।

३ शोणाश्व राजा का एक पुत्र।

४ विष्णु भक्त शिवशर्मन के पुत्र का नाम।

५ मुनिशर्मन नामक विष्णु भक्त के द्वारा पिशाच योनि से मुक्त हुआ एक ब्राह्मण।

बेदसिमी—सं स्त्री. एक प्राचीन नदी। (पुराण)

बेदसिरस, बेदसिरा—सं. पु. [सं. वेदशिरस्, वेदशिरा] १ वाराह-कल्पान्तर्गत वैवस्त मन्वन्तर में से पन्द्रवें युगचक्र में उत्पन्न एक शिवावतार, जो सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अंतर्भाग में स्थित वेदशीर्ष नामक स्थान पर अवतीर्ण हुआ था। इसका प्रमुख अस्त्र महावीर्य था।

२ प्राण राजा का पुत्र, एक राजा।

३ स्वारोचिष मन्वन्तर के विभु नामक इंद्र का पिता।

४ रैवत मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक।

५ एक भृगुवंशीय ऋषि, जो मार्कंडेय का पुत्र था।

वि० वि०—इसकी माता का नाम मूर्धन्या व पत्नी का नाम पीवरी था इसके अनेक पुत्रों का सामूहिक नाम मार्कंडेय था। इसकी तपस्या शुचि नामक अप्सरा ने भंग की थी, जिससे उत्पन्न कन्या का हरण यमधर्म ने करना चाहा किन्तु इसके शाप से वह काशी में धर्म नामक नदी बना।

६ कृशाश्व ऋषि एवं धिषणा का पुत्र, एक ऋषि, जिसे पाताल में नागों से विष्णुपुराण का ज्ञान प्राप्त हुआ।

बेदसीरस—स. पु. [सं. वेदशीर्ष] सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अन्तर्भाग में स्थित एक स्थान। (पुराण)

बेदस्परस—सं. पु. [स. वेदस्पर्श] कबंध ऋषि का देवदर्श नामक शिष्य एक आचार्य।

बेदस्म्रति, बेदस्म्रती—स. स्त्री. [सं. वेदस्मृति] एक प्राचीन नदी का नाम।

बेदस्री—सं. पु. [स. वेदश्री] रैवत मन्वन्तर का एक प्राचीन ऋषि।

बेदस्रुत—सं. पु. [सं. वेदश्रुत] १ वशिष्ठ के पुत्र का नाम।

२ रैवत मन्वन्तर का एक देव।

बेदस्रुति—सं. स्त्री. [सं. वेदश्रुति] एक प्राचीन नदी का नाम। (पुराण)

बेदांग—सं. पु. [सं. वेद+अङ्ग] १ वेदों के छः अंगो में से कोई एक अंग।

वि० वि०—उक्त छः अंगों के नाम निम्नलिखित हैं—

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द।

उ०—जमी सहाबा नागेंद्र लोक उपावां विरच जांणे, धूरजटी ताव ऊंच भावां मेर धींग। आशा लोप रिखी रांम तम्मो ज्यू दधीच हाड ऊंच, सांमवेद बेदांग बीरावी संभूसींग।

—हुकमीचंद खिड़ियो

२ बारह आदित्यों में से एक आदित्य।

३ सूरज, सूर्य।

स. स्त्री.—४ छः की संख्या। * (डिं. को.)

वि०—छः। * (डिं को.)

बेदांणो—सं. स्त्री.—१ दाख, द्राक्ष। (अ. मा.)

२ देखो 'वेनाणी' (रू. भे.)

उ०—धकां पार जोवतां वार लग्गै वरणंतां, तड़ित सार अवतार अणी गुण धार अनंता। बेदांणो तन मजि रंजि आभीच लगन्नै, घड़े सधर पुळ सज्जि धूप अंबर वासन्नै। —रा. रू.

३ देखो 'विनांणी' (रू. भे)

बेदांत—सं पु. [सं] १ चराचर विश्व को एक ब्रह्म एवं अद्वैत मानने वाला एक दर्शन, जिसमें वेदों के चरम उद्देश्यों का वर्णन है।

उ०—१ विनयी रामचन्द्र री ओर, चित म्हारो हो गयो चकोर। सब ब्रह्मग्यांन, बेदांत विसारयो, तन मन धन वारयो।

—मी. रां.

उ०—२ सिखा फरहरती, उतरासंगी धोती, हाथि अबोत्रोसऊ, तूरीउं जनोइ, सिर भद्रिउं, तिलक वधारिउं, गायत्री साधनु, त्रिकाल-संध्याराधन, प्रभातस्नांन, नित्यदांन, वेद पढइ, बेदांत जांणइ, सिद्धांत वखांणइ, देव तरपण, गुरुतरपण, रिखितरपण, पित्रतर-पण, इसिउ नैस्टिक ब्राह्मण। —व. स.

२ वैदिक सिद्धान्तों का निरूपण व विवेचनकर्त्ता शास्त्र।

३ ७२ कलाओं में से एक।

रू. भे.—बेदांत, विदांत, विदांती, वेदंत।

बेदांतसूत्र—स पु. [स.] वेदांतशास्त्र का मूल माना जाने वाला महर्षि बादनारायण कृत सूत्र।

बेदांती—वि० [सं. वेदांतिन्] वेदांत का श्रेष्ट ज्ञाता, ब्रह्मवादी।

उ०—राता विसै विकार सूं, आप सबारथी पर हती। "बील्ह" कहै एक वीनती, त्रिसन टाळि बेदांती। —बील्होजी

रू. भे.—बेदांती, मदांती।

बेदांनो—सं. पु.—१ एक प्रकार का अमरूद विशेष जिसमें बीज नहीं होते।

२ एक प्रकार अनार विशेष।

उ०—तठा उपरांति करि नें राजांन सिलांमति किण भांति रा सरबत आणीजै छै। घणों बेदानें, दाडिम कुळी रा रस लीजै छै। सो घणी कालपी मिसरी रा मेळ मूं घणी एलची नै मिरचां रै मेळ बोह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गंगोदक पांणी सूं ऊजळै गळणें झोळि झोळि झारीजै छै। —रा. सा. सं.

रू. भे.—बेदांणो।

वेदात्मा–सं. पु. [सं] १ सूरज, सूर्य ।

२ भगवान् विष्णु ।

वेदादि, वेदादिबीज–सं· पु. प्रणव ओंकार का मंत्र ।

वेदाधिदेव–स. पु [स.] ब्राह्मण ।

वेदाधिप वेदाधिपत, वेदाधिपति, वेदाधिपती–स. पु. [सं. वेदाधिप, वेदाधिपति] चारों वेदों के माने जाने वाले अधिपति ग्रह ।

वि० वि०—ऋग्वेद के बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मगल और अथर्ववेद के बुध अधिपति हैं

वेदार–सं. पु. [स. वेदारः] गिरगिट (डिं. को).

वेदारण–सं. पु. [स.] दक्षिण मे स्थित एक तीर्थस्थान ।

उ०—दिखरण में भीम नदी भीम संकरी कहावै । क्रम्या वेणी करणा कहावै । दक्षिण में वेदारण तीरथ है । —बां. दा. ख्यात

वेदासवा, वेदास्वा–सं· स्त्री [सं वेदाश्वा] भारत की एक नदी का नाम । (प्राचीन)

वेदि–वि. [सं. वेदिः] १ पंडित, विद्वान् ।

२ देखो 'वेदी' (रू. भे.)

वेदिउ वेदिओ—देखो वेदियो' (रू. भे.)

उ०— १ रामा हवइ रुडु हसिइ, रुठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदिउ, तुं घर मज्झलि आवि । —मा. कां. प्र.

उ०—२ रहती रहि रुडुं हसइ, रुठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदिउं, तु मंदिर माहि आवि । —मा. कां. प्र.

वेदिक—देखो वैदिक' (रू भे.)

वेदिका—देखो वेदी' (अल्पा., रू भे.)

वेदिजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदिन–वि. [स वेदिन्] १ जानने वाला, ज्ञाता ।

२ विवाह करने वाला, दुल्हा ।

३ विद्वान्. पंडित ।

स. पु —१ पढ़ाने वाला, शिक्षक ।

२ ब्राह्मण या ब्राह्मण की उपाधि ।

वेदियो–सं. पु. – १ वेदों का ज्ञाता वेदज्ञ, पंडित ।

उ०—वेदिया ब्राह्मण पाचसइ ए, वेद भणइ दरबारि । गच्छवासी जती सातसइ ए, सूझतउ ल्यइ आहार । —स. कु.

२ ज्योतिष विद्या जानने वाला, ज्योतिषी ।

३ विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला कर्मकाण्डी ब्राह्मण ।

उ०—१ सिद्धराव आप रै नांव नवो वसायो, नै पूरब सूं बांभण, उदीच वेदिया १००० तेड़ाइ नै गांव ५०० सूं सिद्धपुर दीयो, गांव ५०० सीहोर रा दीया । —नैणसी

उ०—२ आवइ अेक अगन्योतरी वली वेदिया व्यास । माई मींटि आपणी, मुनि मूकइ मसवास । —मा. कां. प्र.

३ देखो 'वैद्य' (अल्पा., रू. भे)

उ०—तु क्या करी है वेदिया, ओखद पांणी देह । हरीया जिन वेदन दई, सारा सोय करेह । —अनुभववांणी

रू. भे.—वेदिउ, वेदिओ ।

वेदिल—देखो 'बेदिल' (रू. भे.)

उ०—तूं गोरी मत वेदिल होय ओजो राज, इबकै जावां जद सागै लै चालांजी राज । झूटा ढोला झूठ न बोल ओ जी राज, सदाई जावौ थे सागै कदै न लै चालो जी राज । —लो. गी.

वेदिसद–सं. पु. [सं. वेदिषद] वदिषद नामक महाराजा ।

वेदी–स. स्त्री. [सं.] विवाह आदि शुभ कार्यों एवं यज्ञ करने के लिए साफ करके तैयार की हुई ऊंची भूमि, मिट्टी का चबूतरा, चौकी ।

उ०—१ अब विवाह को आरंभ भयो । ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि बैठा छै जिसा साक्षात मूरतिवंत वेद । वेदी छै सु रतन जड़ित छै । नीला बांस छै । अरजन (अरण ?) कहतां रूपा का कलसा की वेह छै । — वेलि टी.

उ०—२ खट कास्ठं निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर । विध पंडित वेदी सढ़ह, सोभत अगनि सनूर । —रा. रू.

उ०—३ अति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जड़ित वेदी दुति राजै । दिव्य कास्ट खट जाति अदूखति, अगर कपूर घिरत जुत आहुति । —रा. रू.

उ०—४ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सूं लै आवै । वेदी जिणां विवाह, साज सुभकार सजावै । अह रेणुका राख, दांत निरमळ कर निरखै । वासण वरतण रगड़, ऊजळां घोरां हरखै । —दसदेव

२ वह अंगूठी जिस पर किसी का नाम खोद कर अंकित किया हुआ हो ।

३ वीणावादिनी सरस्वती ।

४ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

५ चबूतरा, चौकी ।

६ ब्रह्मा का नाम ।

७ रहस्य, गुप्त बात ।

८ ब्रह्मा की पत्नी ।

वि०—१ जानने वाला, ज्ञाता ।

उ०—तूं अध्यातम मत वेदी, तइं करमप्रकृति सहु छेदी रे । संसार तरी तु बइठउ, सिवमंदिर मां जइ पइठउ रे । —वि. कु.

२ विद्वान, पंडित ।

३ वेदों का, वेदों से सम्बन्धित ।

रू. भे.—वेदि, वेदी, वेदि ।

अल्पा.,—वेदिका ।

वेदीजा—देखो 'वेदग्या' (रू. भे.)

वेदीतीरथ—सं. पु. [सं. वेदीतीर्थ] कुरुक्षेत्र का एक पुण्यक्षेत्र ।

वेदीसबद, वेदीसब्द—देखो 'वेधीसबद' (रू. भे.)

वेदू, वेदू—वि० १ वेदज्ञ, वेदों का जानकार ।

२ विद्वान, पंडित ।

सं. पु.—१ ब्रह्मा, विधि ।

उ०—वेदु जटधर चवे वीणती, निरखे मधुवन तणी निवास । व्रजवासी कयळास वसावो, विसन अमां दीजै व्रजवास ।

—अग्यात

२ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—अनंत रूपों नहिं अंत नाम लक्ख लिगि नाहीं, रूप रेख निहीं रंग कहो रूप का लिख काई । माया अ सलिहिवास वांगि नह भाग न वेदू, अनंत नाम अकाज भांति नह जाति न भेद ।

—पी. ग्रं.

वेदेह—देखो 'विदेह' (रू. भे.)

वेदेही—देखो 'विदेही' (रू. भे.)

उ० पारब्रह्म राजा बसै, नगर वेदेही माहि । ग्यान कुंवर जुग राज पदवी जुग जुग राज कराहि । —स्रोहरिरामजी महाराज

वेदोकत, वेदोकति, वेदोकती, वेदोकित, वेदोक्त, वेदोक्ति, वेदोक्ती—सं. पु. [सं. वेदोक्त, वेदोक्ति] १ वेदवाक्य, वेदवचन ।

२ वेदों में कहे गये मंत्र ।

३ शास्त्रोक्त वचन ।

४ वेदों में वर्णित विधि, वैदिक विधि ।

उ०—१ कजि उदकजळि संज वराग, जमण मिळण मिसो नृप जाण । वेदोकत मंत्रां सुण वांणी, जळ अंजळि भरी जळ जांणी ।

—रा. रू.

उ०—२ ज्यौं रचना नृप ज्याग री, की वरणै कविराव । वेदोकत सासत्र वचन, पगि पगि लगन प्रभाव । —रा. रू.

उ०—३ अठार भार वनस्पती का पत्र फूल फळ, अठसठ तीरथ का निरमळाचार जळ । राजा 'जैसाह' कन्यावळ को संकळप लियो सो वेदोकति संसकार करि पार कियो । —रा. रू.

उ०—४ तूं वेदपाठ भला ब्राह्मण था । त्यां वेद री वेदोकित विचारणी बात पणि कही चाहीजै अर मन मांहै भय उपनो छै । मत वमदेवजी बुरी मांनें पणि जरूर हुई । —वेलि टी.

उ०—५ ब्रह्म-कवच पंजर-विमन, रक्षा-रोम उचार । वेदोक्ती सूं ब्राहमण, आसीसे अणपार । —रा. रू.

रू. भे.—विदोगत, विदोगति, विदोगती, विदोगत, विदोगति, विदोगती, वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती ।

वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा नारद करै वेदोगत, चंवरी होम कटक चढियो । फिरियो नहीं उवर खत फाटै, फेरा कमध इसा फिरियो ।

—बलू चांपावत री गीत

उ०—२ वेदोगत धरम विचारी वेदविद, कंपित चित लागा कहण । हेकणि सुत्रो सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण । —वेलि

उ०—३ सेतरांम संभ्रमी, इळा ऊठियै कनूजा । जगत जात रिण-छोड, कीध वेदोगति पूजा । चाम्रोडो परवाड, वहे लाखो फूलांणी । धारां घड ऊतारि, चाडि राठौड़ा पांणी । —गु. रू. बं.

उ०—४ मतियां 'आंम' सहेत, दाग वेदोगति दीधा, केसरियां कमधजा, करै अन उच्छव कीधा । वड चांपावत 'बलू', कमध 'भाऊ' कंपावत, अवर भीच उमराव, रोम भरिया बहु रावत । —सू. प्र.

वेदोधनि, वेदोधनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोधर—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा, विधि, विरंचि ।

रू. भे.—वेदोधर ।

वेदोधरम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

वेदोधुण, वेदोधुणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

उ०—१ आमना च्यार वेद अहंभांणाग्र विप्रयं रुघ जुज्जर सांम अथरवणयं जपयं । वेदोधुनि जै जै सब्बदयं वणयं, गजार रव भेर पडसादयं धमयं । —गु. रू. बं.

उ०—२ दियै नित संग आहुति देवस, मेवा घ्रत होमे असि सुमंस । निधूम धगनि विप्रा मुखनाद वेदोधुनि ज्वाळा लागी वाद ।

—रामरासौ

उ०—३ बधाई वाजा रा जहुगार, च्यार विध मंगळ मंगळचार । वेदोधुनि विप्र तणी च्यार विधि, सुर नर नाचै देव प्रसिधि ।

—रामरासौ

वेदोध्रम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

उ०—वेदोध्रम रिख्या राम विचारि, विमारै आस्रम ध्रम विस्तार । दया द्रुम ध्रम रघुपति देखि, पदारथ च्यार छौया फळ पेखि ।

—रामरासौ

वेदोध्वनि, वेदोध्वनी—देखो वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोपनिसद-सं. पु. [वेदोपनिषद] एक उपनिषद का नाम ।

वेदौ—देखो 'वेदौ' (रू. भे.)

उ०—तौ पिण स्वामीजी रात्रि मैं बखाण वाचे जठै वावेचा ढोलक बजावै । गावै । बखांण मैं विघ्न पाड़ै । जद भायां कह्यौ —म्हाराज दूजी जायगा उतरौ । स्वामीजी बोल्या— खेतसीजी नव दिक्षित है सो देखां परीखह खमवा किसायक सैंठा हैं । कितरायक दिना वेदौ कियौ पछै वावेचा लातर गया । परयूखणां मैं इंद्रध्वज काढयौ । स्वामीजी रा मूंढा आगै घणी वेलां ऊभा रहौ गावै बजावै तान करै । जद केइ स्रावक वावेचा सूं वेदौ करवा लागा । जद स्वामीजी कह्यौ—वेदौ मत करौ । —भि. द्र.

वेधंगो—देखो 'वेधांगो' (रू. भे.)

वेध-वि० [सं] १ जो जानने के लिए हो, ज्ञातव्य ।

२ जो बताने या सिखाने के लिए हो ।

३ जो विवाह करने के लिए हो ।

सं. पु.—१ ग्रहों का किसी ऐसे स्थान अर्थात् नक्षत्र में पहुँचने की क्रिया जहाँ से उसका किसी दूसरे ग्रह में सामना होता हो । (ज्योतिष)

२ यंत्रों आदि की सहायता से ग्रहों नक्षत्रों, तारों आदि को देखने की क्रिया ।

३ तीव्र प्यास, बहुत तेज प्यास ।

उ०—एहुरइ वेध न लागइ ए, आगइ ए अंगि न अंगि । त्रटकै ताहरे आसि सिइ. जाइ सिइ गिरिवर संगि । —जयसेखर सूरि

[सं. वेधः] ४ छेदने की क्रिया, छेदन ।

५ घाव ।

६ छेद, छिद्र ।

[सं. वेधस्] ७ सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।

८ भगवान् विष्णु ।

९ शिव शंकर, महादेव ।

१० सूरज, सूर्य ।

११ पंडित, विद्वान ।

१२ दक्ष एवं प्रजापति ।

१३ अर्क, आक, मदार ।

१४ यंत्रादि से ग्रह, तारा, नक्षत्रादि को देखने की क्रिया ।

१५ आकर्षण, मोहकता ।

उ०—मुक्ति रमणि जाणी करी ते ऊपरि थयूं चित्त । वेध लागउ तेहनइ घणउ, नांम समरइ रे तेहनूं नित कि । —नळदवदंती रास

१६ कळह, झगड़ा ।

उ०—१ कळि लागी मुगळां. तांम हसियौ जोगणपुर । बसूं हुवै घर वेध, आगै विढिया पांडव-कुर । —गु. रू. बं.

उ०—२ वंसौ वधति बहुभं, अंतर गति गंठि वेध उतपन्नौ । संजोगि अगनि पतंगौ, प्रजळयं आप मज्झेण । —गु. रू. बं.

उ०—३ बोलै इण पर खांन तहव्वर, घांण-मथांण हुवण दिल्ली घर । पख हिंदू भ्रम थया प्रमेसर, आदरयौ घर वेध अकब्बर ।

—रा. रू.

उ०—४ चिगतां उखेल पखरै चरित, रखलै मेळ अमेळ रख । वध वेध बळै खळ वास ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख । —रा. रू.

१७ वैमनस्यता, शत्रुता ।

उ०—तिण दिन सोनगरा पिण राव रिड़मल मारिया छै, घणालै बसंता थकां । तठा पछै मंडोवर पायौ । सोभत रांणै आपरी तरफ सूं दीवी छै । तठा पछै कितराहीक दिनां रांणै मोकळ नै सीसोदिया चाचै-मेरा वेध वांधियौ । —नैणसी

१८ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—१ पड़ै वेध कूरमजदै रांण छळ 'पोथलौ', खळां सर बीज जिम बहै खवतौ । जागरण भड़ाभड़ छूट गोळा जठै, रूक झड़ डंड-हड़ रमै रवतौ । —वसरांम रावळ

उ०—२ बकतौ मुख सावळ देव वळी, कळपै चारणी गत हंस कळी । लग वेध अमीणिय धेन लए, दुलहा सुण देवल साद दए ।

—पा. प्र.

उ०—३ युं करता, दोनूं भायां आपस मैं दूदै घर भोज वडौ वेध पड़ियौ । ताहरां राव सुरजन बेटा बेऊं तेड़िनै कह्यौ—'थें मो ऊपर फिरिया । थें म्हारौ कह्यौ न मांनौ । म्हैं राज सूं कोई कांम नहीं ।

—नैणसी

उ०—४ वीतां अधूरां वार पूरां वेध सूरां वच्चए, सेलै प्रहारं धार सारं मार मारं मच्चए । वग्गा खड़ग्गं दुहुँ वग्गं काळरंगं वीरयं, अखरां उमंगं दूर अंगं चाव रंगे चीरयं । —रा. रू.

रू. भे.—वेधा, वेद, वेत्रस, वेधा, वेधि, वेधौ, वेह ।

वेध, वेधग्र देखो 'वेवेग्र' (रू. भे.)

वेधक-वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला ।

२ जानकार, विद्वान, पंडित ।

उ०—जं वेधक सहु वात ना रे, गुण रस जांणइ खास । मूरख पसु जांणइ नही रे, सेलड़ी कड़व मिठास । वि. कु.

सं. पु. [सं. वेधकं] १ धनिया ।

२ कपुर ।

३ एक नरक का नाम ।

वेधकारी-वि०—१ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—पढावै कुरांणां तिकां पढावै काजियां पूजा, सुरांणां पुरांणां वेन ब्रहंमांणां सेव । राजा तणौ छत्रधारी खागधारी राजहंस,

दांणवां सूं बेधकारी प्रवतारी देव ।
—महाराणा श्रीजयसिंहजी (दूसरा) री गीत

२ मारने वाला ।

३ संहार करने वाला, नाश करने वाला ।

बेधड़क—देखो 'निधड़क' ।

बेधणो—देखो 'वेधनौ' (रू. भे.)

बेधणो-वि० [स्त्री. वेधणी] १ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

२ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

३ मारने वाला, वध करने वाला ।

बेधणौ, बेधबौ-क्रि. स. [सं. वेधनम्] १ नाश करना, संहार करना ।

२ मारना ।

उ०—१ वडा खत्र बेधत साबळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कपि लाह । जुड़े घण सेल पड़ै जवनेस, दलै रवि तांम भोका 'मुकंदेस'।
—सू. प्र.

उ०—२ वानरपति विख्यात वर, वेध्यु जांणी वालि । सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइं तिणि तालि । —मा. कां. प्र.

३ चीरना, फाड़ना ।

४ छेद करना, छेदना; भेदना ।

उ०—१ सिलहांण अंगांण बेधांण सरां, पखरांण केकांण अभीच परां । प्रति स्रोण रुणांण घरांण धसी, जगचल्ल उगांण झनांण जिसी । —सू. प्र.

उ०—२ कपि कटक हूचक कटक दंतक, उरक बेधक सरक अंतक । अंतक तक भड़ भचक हक हक, पड़ि जरक मुद गरक पासक ।
—सू. प्र.

उ०—३ बे बै कबांण भूयांण बंध, असमान छिवत रोसांण अंध । चम मछी रंध्र छेदै चकास, उड़ता विहंग बेधै अकास । —वि. सं.

५ युद्ध करना, संग्राम करना ।

६ तोड़ना ।

७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुंचना जहां से उनका किसी अन्य ग्रह में सामना होता हो ।

उ०—१ गजरा नवग्रही प्रोयिया प्रोचैं, वळै वळै विधि विधि वळित । हसत नखित्र बेधियौ हिमकरि, भरण कमळ अलि आवरित ।
—वेलि

उ०—२ दूलह सधीर विच दीपियौ, हीर जिहा गुण उज्जळां । रिख व्रंद सते किर बेधियौ, बीज चंद्र बाधै कळां । —रा. रू.

८ यंत्रों आदि की सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों, और तारों आदि को देखना ।

बेधणहार, हारौ (हारी), बेधणियौ—वि० ।

बेधिग्रोड़ो, बेधियोड़ो, बेध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बेधीजणौ, बेधीजबौ—कर्म वा० ।

बेधणौ, बेधबौ, वेदणौ, वेदबौ, वेहणौ, वेहबौ—रू. भे. ।

बेधनी-स. स्त्री. [सं.] १ हाथी के कानों को बेधने का एक औजार विशेष ।

२ मोती आदि बेधने का उपकरण विशेष ।

३ अंकुश ।

रू. भे.—बेधणी ।

बेधय, बेधयण—देखो 'वेधेय' (रू. भे.)

बेधरम—१ देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

२ देखो 'अधरम' (रू. भे.)

बेधस-सं. पु. [सं. वेधसं] १ हथेली के अंगूठे की जड़ के पास का स्थान जिसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते है ।

२ अंगिराकुलोत्पन्न एक मंत्रकार ।

३ देखो 'वेध' (रू. भे.)

रू. भे—बेधस ।

बेधसी-सं स्त्री. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

बेधांगी-सं. पु. [म.] योद्धा, वीर ।

रू. भे.—बेधंगी ।

बेधांणौ—देखो 'वेध' (१, २) (रू. भे)

उ०—राजा भूलरि रांणिया, सोहै ईहीं भंति । किरि बेधांणै किरतियां, चंदो पूनम रति । —गु. रू. बं.

बेधा-सं. पु [सं.] १ दक्ष आदि प्रजापति । २ राजा हरिश्चन्द्र का पिता । ३ अंगद के एक पुत्र का नाम ।

४ देखो 'वेध' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)

बेधाता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

बेधातिथ, बेधातिथि-सं. स्त्री. [सं. वेधातिथि] वह तिथि, जिस दिन सूर्यादि नक्षत्रों एव लग्न का नक्षत्र एक ही रेखा अर्थात् एक ही सीध में हो ।

वि० वि०—सूर्यादि नक्षत्रों एव लग्न के नक्षत्र के एक ही सीध मे होने पर वेध होता है इसमे विवाह वर्ज्य है ।

बेधाधि, बेधाधी-सं. स्त्री.—सरस्वती, भारती ।

रू. भे —बेधाधी ।

बेधि—देखो 'वेध' (रू. भे)

उ०—ममरडउ मरिवा प्रणबीहतउ, पसरि पइसइ केतकिई हूतउ, कठिन कंटक कोडि कुटीरडइ, पडिउ बेधि पछइ पुणि आरडइ ।
—सालिसूरि

बेधित—देखो 'बेधियोड़ो'।

बेधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ. २ मारा हुआ. ३ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. ४ छेद किया हुआ, छेदा हुआ, भेदा हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ६ तोड़ा हुआ. ७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुंचा हुआ होना कि जहां से उनका किसी अन्य ग्रह से सामना हुआ हो. ८ यंत्रों आदि की सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों, तारों आदि को देखा हुआ।

बेधी-वि० [सं. वेधस्] १ पंडित, विद्वान। (ह. नां. मा.)

२ शत्रु, दुश्मन। (ह. ना. मा.)

उ०—दत कवि पळै मिळै चित दुनियां, बेधी जळै जवास विध।
बेधी खेह बळै छळ लागां, सोमा मिळै प्रवाड़ सिध।
—महाराजा मानसिंघ री गीत

३ वियोगी जन।

उ०—करहा, तूं मनि कप्रड़उ, बेध्यां करइ विछोह। प्रजइ कुंग्रारउ बप्पड़ा, नहीं ज कामिरिग मोह। —ढो. मा.

४ युद्ध करने वाला, संग्राम करने वाला।

बेधीलौ-वि० [सं. वेध+रा. प्र. इलो] युद्ध करने वाला, वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—बागड़ रै काठ बहुवांगा भड़ किवाड़ रजपूत बेधीला छै सु धरिणयां रै नै चहुवांणां रै रस थोड़ा दिन हुवै छै। तद मारवाड़ रा रजपूतां नूं बडा बडा पटा देनै सदा बागड़ रै राजथांन वाम राखै छै। —नैणसी

बेधीसबद, बेधीसब्द-स पु. [सं. शब्द+वेधी] अर्जुन। (ह नां. मा)

रू. भे.—बेंदीसबद, बेंदीसब्द।

बेधेग्र, बेधेग्रण, बेधेय, बेधेयण-वि. [स वेधेय] मूर्ख नासमझ, बेवकूफ। (ग्र. मा.)

रू. भे.—बेंधग्र, बेधग्रण, बेधय, बेधयण।

बेधौ-सं. पु.—१ शंका, संशय, संदेह।

उ०—हुग्री रांम दुजरांम, ब्रह्म रै मन मां बेधौ। फरसी साठी फरसि, खरी खत्रियां सिर खेधौ। —पी. ग्रं

२ देखो 'बेदौ' (रू. भे.)

उ०—राजा ईग्रां री बेधौ सुणे ग्रबोलौग्र रह्या। तरै सारौ ही दन उदमाद सूं काट सांझ रै वखत सवागढ ग्राय, इग्रां ग्रहुं जणां सहुत दाखलै हुग्रा।
—कल्याणसिंघ नागराजोत बाढेल री बात

३ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—बेधौ दूंद न वीसरै, 'चंद' तणौ हरनाथ। पंथ ग्रळग्गौ लंघता, लारालग्गौ साथ। —रा. रू.

बेध्या-सं. पु. [सं. विधाता] ब्रह्मा, विरंचि।

उ०—बेध्याइ यांह्नि वदन ज रचिऊं, त्याहारि सार ग्रहु नूं हरिऊं। तर लीधी तांहां खाण थई लि, मुख मनोहर करिऊं। —नळाख्यांन

बेन-स. पु. [सं.] १ चाक्षुष मनु एवं नड्वला के वंशज महाराज ग्रंग ग्रौर सुनीथा (जो कि मृत्यु ग्रधर्म की मानस पुत्री थी) के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो सूर्यवंशी राजा पृथु का पिता था।

वि० वि०—कहीं-कहीं पर इसे तेईसवां वेदव्यास एवं कर्दम के पुत्र ग्रनग का पुत्र भी कहा गया है। इसका पालन-पोषण इसके मातामह के घर हुग्रा था। यह बचपन मे ही दुष्ट एवं दुष्टप्रकृति के स्वभाव वाला था ग्रतः बच्चों व जानवरों का गला दबा कर हत्याएँ खूब करता था। इसी क्रूरता के कारण इसके पिताजी ग्रंग देश छोड़ कर चले गये। तत्पश्चात् इसे राज्यपद प्राप्त हुग्रा ग्रौर दुष्टता ग्रादि में भी ग्रत्यधिक वृद्धि हुई। इसी कारण से ऋषियों ने कुशास्त्रण से इसका वध कर दिया किन्तु ग्रनग के दूसरी सन्तान न होने के कारण राज्य-सिंहासन खाली रहता था ग्रतः राज्य में ग्रातंक बढा। तब ऋषियों ने इसकी जांघ को मथा, तब एक श्यामवर्ण, नाटे कद का एवं कुरूप व्यक्ति निकला जिसे ऋषियों ने निषाद ग्रर्थात् बैठने के लिए कहा इसलिए इसका नाम निषाद ही रखा गया। फिर इसके दोनों हाथों का मंथन किया गया, जिनसे एक स्त्री एवं पुरुष निकले। पुरुष को (जिसका नाम पृथु रखा गया था) विष्णु ग्रवतार एवं स्त्री को लक्ष्मी का ग्रवतार माना गया।

२ वैवस्त मनु के दस पुत्रों में से एक।

३ देखो 'बहन' (रू. भे.)

रू. भे.—बेंण, बेन, वेंण।

बेनड़, बेनड़ी—देखो 'बहन' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बेनट—देखो 'बेनट' (रू. भे.)

बेनतनय-सं पु. [सं. वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड़। (ना. डि. को.)
[स. वेनतनय] २ सूर्यवंशी राजा पृथु।

बेनतियाइत-सं. पु. [सं. वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड़।

बेनती—देखो 'विनती' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवर तौ हालण नै तयार हुवौ छै। ग्रबै कुंवर ग्राप री साथ तैयार कर नै राजा सौं वेनती कीवी, कही, "जी माहाराज, मनै मेलजै। हूं साह नुं पण लै ग्राईस ग्रर समुद्र पण देख ग्राईस।' —बीजड़ बीजोगण री बात

उ०—२ ग्रर हूं तौ बीजै कांम ग्राया छां। ताहरां जैत कहियौ 'रावजी कहौ जिम थांहरी बेनती राजा सौं करां। इतरा दिन किम

कहियो नहीं ?' ताहरां राव कहिया, 'जु रांणी बहुत कहायो छै, नररसंघ री सगाई करो तौ था कनै रांहूणी आवै। राजा सौं भा वीनती करो।' —राजा नरसिंघ री वात

बेनवा—देखो 'बेनवा' (रू. भे.)

बेनसोव—देखो 'बेनसीव' (रू. भे.)

बेनसुत–सं पु [सं] अंग एवं सुनीथा के गर्भ से उत्पन्न वेन राजा का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा।

रू. भे.—बेणसुत, वेणसुत।

बेनाणी—१ देखो 'बैनाणी' (रू. भे.)

उ०—राजद्वार कोठार, जीण सामां काढीजै, जरद जरद्दी घडै, लोह लोहे कूटीजै। बेनांणी वेगळा, वाढ घालै केवांणां, कूंत बांण कीजंति, भणी तीखा खुरसांणां। —गु. रू. बं.

उ०—२ रांमण ताड़ सराड़ छड़ अघसळा रेही, दीप दिसावरि नीपनी बेनांणी गेही। सुध गज-वेल हलूळ फळ अहिइंभज नेही, 'अचळै' खांन घमोड़िया उणहारी ऐही। —माली सांदू

२ देखो 'विनाणी' (रू. भे.)

बेनो—देखो 'वेणी' (रू. भे.)

बेनियो–सं. पु.—बंबूल की पतली टहनियों की छाल।

बेनीत—देखो 'बेनीन' (रू. भे.)

बेनु—देखो 'वेणु' (रू. भे.)

बेनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बेपतरो—देखो 'बेपतरो' (रू. भे)

बेपरवा—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे)

बेपरवाई—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

उ०—बेपरवाई पतसाह, मनवा मतवाळा। सतगुरु हेरदे सबद का, भर जोर पयाला। —कसोदास गाडण

बेपरवाह—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे.)

बेपरवाही—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

बेपाक—देखो 'बेपाक' (रू भे)

बेपार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

२ देखो बेपार' (रू. भे.)

उ०—हुए हक्क सूरां उठी मेर हक्का, करै भूत वेताळ चंडी किलक्का। करै जोर प्राहार बेपार कूंतां, दियै जुद्ध जांणै अगू सिभु दूता। —रा. रू.

बेपारह—देखो 'बेपारह' (रू. भे.)

बेपारहो, बेपारियो—देखो 'बेपारियो' (रू. भे.)

बेपारी—१ देखो 'दोपारी' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

बेपीड़, बेपीर—देख बेपीड' (रू. भे.)

उ०—किरपण माया कारणै, सुख दुख सहै सरीर। जनहरिया हरि नाव धन, पाया सु बेपीर। —अनुभववांणी

बेपुड़ि बेपुड़ी—देखो 'बेपुडी' (रू. भे.)

उ० सु मेघ की आड़ग जाणै जोगिणी आवी छै। रत कहतां लोही वरसती बेपुड़ी कहता बादल की पंगि बेपुड़ी बहै छै। सु दोवड़ा बादळ आम्हा साम्हा हुया। —वेलि टी.

बेपूठ–वि०—विमुख।

उ०—जनहरिया संसार मैं सुख दुख दोऊं झूठ। जब तैं सुख अर दुख गिनै, तब हरि तैं बेपूठ। —अनुभववाणी

बेपोहर—देखो बेपोहर' (रू. भे.)

बेपोहरो—देखो बेपोहरो' (रू. भे.)

बेफरवांण, बेफरवांणो–वि० [फा बे.+फर्मान] बिना आज्ञा, बिना हुक्म, बिना आदेश।

उ०—होदू घाव करै अजीया सिर, हरि सूं बेफरवांणो। खावै स्वाद करै मुख सेतो, जीव दया नही जाणी। —अनुभववांणी

बेफाड़, बेफाड—देखो बेफाड' (रू भे)

उ०—करै एक एकां धकै जत्र कत्रं, पडै हाथ जांणै झडै ताडपत्रं। किता सीस बेफाड़ चौफाड़ केतां, जपै रूप लेखै कवी ओप जेतां। —रा. रू.

बेफार—देखो बेपोहर (रू भे.)

बेफारो—देखो 'बेपोहरो' (रू. भे)

बेफिकर देखो बेफिक्र' (रू. भे.)

उ०—मन अकबर मजबूत, फूट हीदवां बेफिकर। काफर कोम कपूत, पकड़ राण प्रतापसी। - दुरसो आढो

बेफिकरो—देखो 'बेफिक्री' (रू. भे.)

बेफिकरी, बेफिक्र—देखो 'बेफिक्र' (रू. भे.)

बेफिक्री देखो बेफिक्री' (रू. भे.)

बेबगत—देखो बेवक्त' (रू भे.)

बेबस देखो 'विवस' (रू भे.)

बेबसी—देखो 'बेबसी'(रू. भे.)

बेबाण—देखो 'वेवाण' (रू. भे.)

बेबार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

बेबाह—१ देखो 'बेबाह' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बेबुद्धि, बेबुद्धी—देखो 'बेबुद्धि' (रू. भे.)

बेबुनियाद—देखो 'बेबुनियाद' (रू. भे.)

बेभव—देखो 'वैभव' (रू.भे.)

बेभू—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

बेभाव—देखो 'बेभाव' (रू. भे.)

बेम-सं. पु. [सं.] १ वेग, जोश।

उ०—ताहरा पछीत खोदणौ बेठे नीचींत थको खोदे छै। खोदतै खोदतै गली की जिसडी मे माथौ मावै। खोवौ तरवार काढिनै बैठौ छै। माथौ प्राधौ करै माथै मैं तरवार री दूं। इंण प्रांगुलो घाली करि ने जोयौ। जोइनै खणोतरा रै माथै हांडी देइ नै प्राधो कीयौ। तितरै खोवै बेम भरी नै तरवार बाही सु हांडी उपरा बाजी। सू हांडी फूटि गई। —चौबोली

२ बार, दफा, मर्तबा।

३ देखो 'बेम' (रू. भे.)

उ०—ताहरां सांगमरावजी ग्रमल कर घोड़ी ऊपर चढिया, ताहरां खुरी कीवी। घोड़ी हुती सु नहीं। ताहरां सांगमरावजी विसनदास नूं कहायौ। कह्यो—घोड़ी व्याई। कूंड़ कियो? बेम उग्हो मेल्हो। ताहरां बिसनदास सांगमरावजी नूं कहायौ—थे वेहनेई छो तीये कारण प्रासंगो कियो। बेम देवा नहीं। ताहरां सांगमराव मांनी नहीं नै लड़ण नूं चढियौ। ताहरां प्राचांनण सांगमरावजी नूं कहियो जु राज! चढीजे नहीं। घोड़ी रो बेम हूं लै प्राईस। —नैणसी

बेंम—देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—१ प्राडां रै प्रागळ जड़नै बेटी होळै होळै कंवरा लागी—म्हने उलरडी माथै प्रेक मोहर चमकती दीसो। पण सांमी ई नै लोग निपटने प्रावता हा। जे लुळनै मोहर उठावूं तो वाने तुरत बेंम व्हैतो। —फुलवाड़ी

उ०—२ पण म्हांरा करार रो निवळा सेठां नै कांई वेरो! घरगड़ प्रळगा वगाय नोंड़िया मैं जरू करघोड़ी गाठड़ी बारै काढी। बांणिया री जात किसी चात्रंग! कंड़ा पूर में हीरा-मोती लुकाय राखै। कोई बेंम करै तो करै इज कीकर! —फुलवाड़ी

उ०—३ पर प्रठी हय-ळेवा रो वगत बींदराजा नै प्रो बेंम व्हियौ के हाथ री ठौड़ कठैई गुलाब री कवळो फूल तो नीं प्रायग्यो। बींदणी री खुली प्रारूयां रै सांम्ही सपना री कावड़ घूमण लागो जकी घूमती ई गी। —फुलवाड़ी

बेमजो—देखो 'बेमजी' (रू. भे.)

बेमन—देखो 'बेमन' (रू. भे.)

बेमांणिक, बेमांणिय, बेमांणी, बेमांणीक, बेमांणीय, बेमानिक—देखो 'वैमानिक' (रू. भे.)

उ० १ भुवनपति वीस इंद्र मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार। जोइ सहुदस बेमांणिय जुड़ग्याजी, चौसठ इंद्र सुविचार। —वृस्त.

उ० २ —प्रसुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया प्रटु, जोइस पंच बेमांणिय दुविहा सुत्त दिट्ठ। पनरै भेदै सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनुमांनादिक हिव एहनो कहिसूं प्रधिकार। —वृस्त.

बेमाता, बेंमाता-स. स्त्री [सं. विधाता] १ विधाता, ब्रह्मा।

[सं. वृद्धिकामाता] बच्चे के जन्म के बाद छठी रात को भाग्यलेख लिखने वाली एवं बच्चे को स्वरूप प्रदान करने वाली एक प्रकार की काल्पनिक देवी।

उ०—१ सेठां रै बेटा री हूबोहूब प्राप सू उणियारौ मिळै। बेमाता री कुदरत। खुद सेठ देखता तो ई प्रोळख नी सकता। प्रबै बातां करया सावळ ठा पड़गो कै उणियारो तो प्रवस मिळै पण प्राप दूजा हो। —फुलवाड़ी

उ०—२ बेमाता ई माथ लखणां बायरी वीसें कै रूप प्रर रीस नै प्रेकठ कर्यूं करी। सगळा रूप री जांणे मठ मार दियो। राणीजी कना सूं पग नीं पकड़ाऊं तो म्हैं राजा रो कंवर नीं। —फुलवाड़ी

उ०—३ प्रर परनख दीखणा मैं दम बरमां जितो लांठो। बेमाता प्रणूंती निकमी वेळा मैं प्रणूता कोड-मोद सूं घड़यौ। खाथै रळ-कंतो काळै केमां री चीकणो भड़लो प्रेड़ो लागतो जांणे बरसां लग मकराणा री सिलाड़ी माथै घोट्योड़ी काजळ घटा बणनै लूंमै। —फुलवाड़ी

उ०—४ बेमाता नै रीस तो घणी ई प्राई। पण जोर कांई करती लाचार होयनै जवाब दियौ—म्हैं सेठ रा बेटा रै जनम रा प्रांक लिखण वास्तै प्राई हूं। वेगो प्रागळ खोल, वेळा टळै। —फुलवाड़ी

उ० ५ बेमाता प्रावती पड़ती थकी बोली—म्हैं कोई ठाली नो भटकिया करूं। छटी री रात म्हैं सेठां रै बेटा रा भाग मैं प्राखर घालण साह प्राई हूं। —फुलवाड़ी

वि० वि०—लोक में 'बेमाता' शब्द प्रति प्रचलित है। जिसका प्रयोग बच्चे के जन्म का विधान करने वाली देवी तथा जन्म की छठी रात बच्चे को भाग्य-लिपि लिखने वाली एक मातृ-देवी के प्रर्थ में किया जाता है। इस बेमाता (रूपा०-बीमाता) शब्द की व्युत्पत्ति सं. 'वृद्धिकामाता' से हुई है। इस सम्बन्ध में डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का अभिमत ज्ञातव्य है—

'प्रार्यवती प्रौर प्रार्यवृद्धा देवी एक ही होनी चाहिए। यह देवी कौनसी थी, इसके सम्बन्ध में यह सम्भावना प्रतीत होती है कि जिसे

आज-कल लोक में 'बिहाई' (वृद्धाआर्या) या 'बीमाता' (वृद्धिकामाता) कहते हैं, वही 'आर्यवृद्धा' होनी चाहिए। लोक में विश्वास है कि बेमाता बच्चे को देखने के लिए छठी पूजन की रात में अवश्य आती है और उसके भाग्य का शुभाशुभ फल अवश्य लिख जाती है। इसी लिए उस रात जागरण आवश्यक माना जाता है। उसे ही षष्ठी जागरण कहते हैं ''

इससे स्पष्ट है कि 'बेमाता' (वृद्धिकामाता) और 'बिहाई' (वृद्धार्या) एक ही देवी के नाम हैं, जैसा कि विद्वान डा० अग्रवाल ने सुझाया है। दोनों का व्युत्पत्ति क्रम इस प्रकार रहा होगा:—

बेमाता=वृद्धिकामाता=विड्ढिआमाता=बिहिआमाता=बिहीमाता=बिईमाता=बीमाता=बेमाता।

बिहाई=वृद्धआर्या=वृद्धआर्यिका=विदाइया=बीधाइया=बीहाई=बिहाई। आर्य वृद्धा का उल्लेख कादम्बरी में तथा आर्या व वृद्धा के नाम से वन पर्व में भी आया है।

रू. भे.—बेमाता, वेहमाता, बिहाई, बिहाईमाता, बेहमाता, बंमाता बंमाता, बेह।

बेमार—देखो 'बीमार' (रू. भे.)

उ०—पातसाह महमंद वडो धरमात्मा हुवो। औ ओखदां री हाट ४ मंडावी, वैद राखिया। बेमारां नूं दारू धरम री बीजै। रोगियां नूं खावा नूं दीजै ओढण बिछावण दीजै। —नैणसी

बेमारी—देखो 'बीमारी' (रू. भे.)

बेमालूम—देखो 'बेमालूम' (रू. भे.)

बेमिळावट—देखो 'बेमिळावट' (रू. भे.)

बेमुख—१ देखो 'बेमुख' (रू. भे.)

२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया मास मसांण है, भूत रावमी खांण। सोई मनं बिनादमी, बेमुख वडा अजाण। —अनुभववाणी

उ०—२ जाग्या सोई जांणिये, हरिया हरि के हेत। हरि बेमुख स जागिया, ता मुख पडसी रेत। —अनुभववाणी

उ०—३ गुर दरसन परसन नहीं, हरिया बेमुख जानि। मंघा नर बेबे नहीं, पीपल बाधी तांनि। —अनुभववाणी

उ०—४ हरीया करणी क्या करै, गुर सूं बेमुख थाय। तोरै तूटी बरत ज्यूं, खबडखत को जाय। —अनुभववाणी

उ०—५ वाकू आर पार नहीं कोई रह्या रांम मं बेमुख सोई ब्रह्म बिचार भया जन पारा, और रह्या वार का वारा। —अनुभववांणी

बेमू—सं. स्त्री—वह गाय, भैंस आदि पशु जो प्रसव देने वाले हों।

बेय—१ देखो 'बेद' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म बेय उच्चरैय, गीत तुंबरु गावै, रंभा अवसर रमै, वीण सरसती बजावै। सिव अवलोकण करै, इंद्र सिर चम्मर ढाळै। व्यास उकति बरनवै, पांड गंगा पखाळै। —अलुनाथ कवियो

२ देखो 'बेय' (रू. भे.)

बेयकाल—सं. पु. [सं. वेद काल] भोगने का समय। (जैन)

बेयड्ढ, बेयड्ढह, बेयड्ढु—सं. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—१ अरजुनु बोलइ बरु भंडारी, पाछइ आवइ लउ उपगारि। लेवरु बोलइ सांभलि सांमि, गिरि बेयड्ढु सुणीइ नांमि। —सालिभद्रसूरि

उ०—२ गिरि बेयड्ढह तलि गयऊ, पणमिउ नाभि मल्हारु। निब मणिचूडह राजु दिह, पहिलउ एउ उपकारु। —सालिभद्रसूरि

बेयण, बेयणा, बेयणि, बेयणी—१ देखो 'बचन' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ दस मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणंति। कठिण बेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसंति। —वेलि

उ०—२ ए जु भमर बोलिबा नै मणणाट करै छै। सु मांनूं गरभवती व्याकुळता जणावै छे। जब बेयण लागे छै प्रसूत हुइवा की तब गरभवती कूजै छै। विलाप करै छै। सु ए कोकिला बोले। सोई मांनूं वनसपती नैं बेयणलागी छै। अर कूजै छै। इहिं समै वनसपती वसंत जायो। —वेलि टी०

उ०—३ लाख जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तणां दुक्ख तिणि न कहाइ। नरय बेयण जो कहइ विचार, केवल नांणी न जाइ पारि। —वस्तिग

बेयरणी—देखो 'वैतरणी' (रू. भे.) (जैन)

बेयविय, बेयविय, बेयवी—देखो 'वेदविद' (रू. भे.) (जैन)

बेयहद, बेयहदो—देखो 'वेहद' (रू. भे.)

उ०—न को जोग जुगता न को जत जोखा, न को सात सुखं न को दसदोखा। न को मनवाचा न को स्वाल सबदी, न को हदि मांही न को बेयहदो। —अनुभववांणी

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

बेयाळ, बेयाल—१ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेताळ' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

बेयावच, बेयावच्च—वि० [सं. वैयावृत्य] १ वयोवृद्ध, गुणवृद्ध।

२ देखो 'वैयावच्च' (रू. भे.)

उ०—१ वेयावच दस प्रकारनो, करजो चित्त लगाय। कांइयक रसायण ऊपजे, दुख दालिद्र दूरे जाय। —जयवांणी

उ०—२ पीठो न करावे अंग, ग्रही वेयावच संग। करे करावे नहीं ए, जात न जणावे सही ए। —जयवांणी

उ०—३ संसार तारण दु कांवलो, वडयो व्रत देह दस्तार रे। अ-खोड आंबिल निम जांणवी, कल (ह) य वेयावच्च सार रे। —कवि कुसललाभ

उ०—४ भलो साधवी यसोभद्रा, पालइ पंचाचार रे। विनय वेयावच करइ वारु गिणइ गुरुणी नी कार रे। —स. कु.

उ०—५ आपणा जांणपणा ने आमले, गिणु न केहने गांन। विनय वेयावच्च नहीं विवेकना, अति मोटो अभिमान। —ध० व० ग्रं.

वेर—सं. स्त्री. [सं. वेरः] १ शरीर, बदन, देह।

२ शत्रु, दुश्मन।

३ विलम्ब, देर।

उ०—१ लसकर पिण अलघो गयो, जूभण वेला जांणि। बड़े वेर हम कुं भई, वादल कहै ए वांणी। —प. च. चौ

उ०—२ मांडां रचनै मेलियो, वीरम नै नाळेर। परणीजण आय-जियो, वीचै मत कीजो वेर। —वी. मा.

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०-१ केइ वड पूरण काज कर, फूलै नह मन फेर। 'पातल' धीर गंभीरपण, भल रक्खण इण वेर। —जैतदान बारहठ

उ०—२ वणि होळिका थंभ जुध वेरां, सिरपर बह भेलूं समसेरां। धार विहार अणी घट घौरंग, चुख-चुख होय पड़ै रिण चौरंग। —सू. प्र.

उ०—३ 'वाघा' हर नाहर जेण वेर, घांसाहर वाहर लीध घेर। धुब तोप सघण त्रवाळ धोह, बहसिया बाळ बांधण अबोह। —वि. सं.

उ०—४ इम परखे राजा आंबेरो, आवै हित घर वेर अवेरो। 'अजमल' तेड़ 'दुरंग' 'आसांणी', कथ धारी मेटण तुरकांणी। —रा० रू.

५ देखो 'बोर' (रू. भे.)

६ देखो 'वैर' (रू. भे.)

७ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—तउ ईह नां मोलि तणां पटउलां, हेलां वलउं कांइं करउं अवेलां। जाउ पराए सवि मूं पसाइं, मारउं न वेरइं नृप नइं उपाइं। —सालिसूरि

रू. भे.—वेर।

वेरक—१ देखो 'बेरक' (रू. भे.)

२ देखो 'वैरक' (रू. भे.)

३ देखो 'वैरक' (रू. भे.)

वेरजा—वि०—बिना इच्छा एवं बिना स्वीकृति, स्वीकृति रहित।

उ०—सुख सुवायंत करो, दुख दुवायंत पासै टाळो। तेरी रजा करी सेतान की वेरजा करी. आई बलाय दर्फ करो। —नी. प्र.

वेरजो—सं. पु.—चीड़ वृक्ष पर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का गोंद विशेष, गंधविरोजा। (अमरत)

वेरणो—सं. पु.—बढई का लोहे, लकड़ी आदि में छेद करने का औजार विशेष।

वि०—१ चीरने वाला, काटने वाला।

२ देखो 'बारणो' (रू. भे.)

वेरणो, वेरबो—देखो 'वैरणो, वैरबो' (रू. भे.)

उ०—वांरा दरबार में ईं उणरै खोजां नींव अर बड़ला निजर सूं ईं पैला ऊंचा वधग्या। राजाजी बिना सोच्याई हथमांरा नै हुक्म दियो के उणरा दोनूं पग वाढ वेरा में धरकाय दो। दुस्टी करोतियां सूं पग वेरज ढूका। —फुलवाड़ी

वेरणहार, हारो (हारी), वेरणियो —वि०।

वेरिग्रोड़ो, वेरियोड़ो, वेरयोड़ो—भू० का० कृ०।

वेरीजणो, वेरीजबो—कर्म वा०।

वेरतन—सं. पु. [सं. वैरीतनय] वैरी, दुश्मन, शत्रु। (डं. ना.)

वेरपरळय, वेरपरळै—देखो 'वेरप्रळै' (रू. भे.)

वेरपरवाह—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे.)

वेरपरवाही—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

वेरप्रळय, वेरप्रळै—सं. पु.—प्रलयकाल, कल्पांत।

उ०—सारा 'चांपा' 'जोध' संग, 'ऊदा' मिळिया आय। उलटिया अजमेर दिस, वेरप्रळै करवाय। —रा० रू.

वेरमण—सं. पु.—त्यागने की क्रिया, त्याग।

वेरवा—सं. स्त्री.—राठौड़ों की प्रसिद्ध तेरह शाखाओं में से एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

वेरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति सरद रित रै समै री पूनिम री चंद्रमा सोळै कळा लियां संपूरण निरमळी रैण री उजळी जांदणी रै किरण करि नै हंस नूं हंसणी देखै नहीं नै हंसणी हंस देखै नहीं छै। मिळि सकता नहीं छै। तारां बार-बार माहो माहै बोलि बोलि नै वेरह गमावता छै। —रा. सा. सं.

बेरहडौ-सं. पु.—घोड़ों का एक प्रकार का रोग विशेष जो घोड़े के अगले पैर की नली में होता है। (शा. हो)

बेरहम—देखो 'बेरहम' (रू. भे.)

बेरहमी—देखो 'बेरहमी' (रू. भे.)

बेरहर, बेरहरि—देखो 'बेरहर' (रू. भे.)

उ०—श्रादरत श्रोट श्रक्र चाल श्रड़िया श्रकर, दुम्भळ खग चाल मंलोट देता। बेरहर जठै पगवाळ खग बजावै, कठै खुसियाळ ग्युसियाळ कैता। —तिलोकदांन बारहठ

बेरांण—१ देखो 'वीरांगण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

बेरांणयौ—देखो 'वीरांन' (मह., रू. भे.)

बेरांन—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—नरै राव सूजा नूं निस नै घणी दिलासा दे वासियो। नरौ श्राप वसियो तिण दिन ठौड़ बोहोत बेरांन सु नरा रो मन टिकै नहीं। —नैणसी

बेरा—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेराई—देखो 'बेराई' (रू. भे.)

बेराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—बधव ए भल भवियां रे, सरिया वांछित कांम। जाति समरण ग्यान थी रे, श्रायौ बेराग बेऊं तांम के। —जयवांणी

बेरागर—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—हीरा थें लाईजो बेरागड देस रा म्हारा राज, मोती थें लाईजो बनड़ी रै हार जड़ायजो, रे तोरै श्रावजो। —लो. गी.

बेरागर-सं. पु.—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—सदा हुवै मोती सागरां, हीरा बेरागर होय।
—सरसती भंडार

२ देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

बेरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—सांभल! है रांणी राजा नैं करड़ा न बोलियै, निसंक हुई जै नांय। इसी बेरागण श्रजं तूं दीसै नहीं, तूं बैठी छै राज कै मांय।
—जयवांणी

(स्त्री. बेरागण)

बेराग्य—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—बेराग्य रंगिइ चारित्र लीधउं, प्रतिमाइ रहिउ मुनि रे। नलरानाइ तै यती दीठु, ध्यांनस्थ सोमइ वनि रे। —नळदवदंतीरास

बेराडणौ, बेराड़बौ—देखो 'बेराणौ, बेराबौ' (रू. भे.)

बेराड़णहार, हारौ (हारी), बेराड़णियौ—वि०।

बेराड़िग्रोड़ौ, बेराडियोड़ौ, बेराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेराड़ीजणौ, बेराड़ीजबौ—कर्म वा०।

बेराड़ियोड़ौ—देखो 'बेरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेराड़ियोड़ी)

बेराज—देखो 'बेराज' (रू. भे.)

बेराजी—देखो 'बेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या—थें कहो भीखणजी रा स्रावक दांन नहीं देवै तो जे लेवाल तै सरव थांरै इज श्रासौ। श्रनै थे कहो तै धरम थानै इज हुवै, थे बेराजी क्यूं थया। थें निंदा क्यूं करो।
—भि. द्र.

उ०—२ सेठ जार री इकार नेवतां बोल्या—गया महीना री बात है, कोई मांमूली लेंण-देंण रा मामला मैं एक श्रफसर म्हारा सूं बेराजी व्हैग्या। गहनें ई रीस श्रायगी कै देवतां-देवतां ई श्रकड़ बतावै, सो श्रापसरी मैं भोड व्हैग्यौ। —श्रमरचूंनड़ी

उ०—३ नदीयां नीर नहीं। सतीयां सत नहीं। ब्राह्मणां वधारौ नहीं श्रसत्रियां रूप नहीं। इण तरै सराप दे, बेराजी हुय नैं स्री सिवजी मा'राज नैं चेला सकरजी कैळास पधारिया। —मारवाड़ री ख्यात

बेराजीपण, बेराजीपणौ, बेराजीपौ-सं. स्त्री.—बेराजी होने की श्रवस्था या भाव।

उ०—जद स्वामीजी कह्यो-किणहिरै गूंबड़ो दुखतो घणौ नै पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै कै बेराजी व्है? जद कह्यो-राजी हुवै। ज्यूं दुखदाइ छूटां बेराजीपौ नहीं। —भि. द्र.

रू. भे.—वैराजीपण, वैराजीपणौ वैराजीपौ

बेराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे.)

२ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

बेराणौ, बेराबौ—देखो 'बेराणौ बेराबौ' (रू. भे.)

बेराणहार, हारौ (हारी), बेराणियौ—वि०।

बेरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेराईजणौ, बेराईजबौ—कर्म वा०।

बेरायोड़ौ—देखो 'बेरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेरायोड़ी)

बेरावणौ, बेरावबौ—देखो 'बेराणौ, बेराबौ' (रू. भे.)

बेरावणहार, हारौ (हारी), बेरावणियौ—वि०।

बेराविग्रोड़ौ, बेरावियोड़ौ, बेराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेरावीजणौ, बेरावीजबौ—कर्म वा०।

बेराबियोड़ो—देखो 'बेरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेराबियोड़ी)

बेरासती—सं. स्त्री.—वैमनस्य, मनोमालिन्य।

उ०—तद हाजीखां कयो, जो हाथी तो म्हारै श्रेक है श्रोर मोदन देण नं नहीं, नं पात्र छं सू हमारी वैर है। तद ठाकुरां पाछां श्राय रांणां नूं उतर दियो। तद इण वात ऊपर रांणं रै नं हाजी रै बेरासती हुई। —द. दा.

बेराह—देखो 'बेराह' (रू. भे.)

उ०—जग तूठो बंदी जगां, ओदूलह 'अभसाह'। किया सवाई मांडहै, तळ वाई बेराह। —रा रू.

बेरि—१ देखो 'वैरी' (रू भे.)

२ देखो 'बेरी' (रू. भे.)

३ देखो 'बेळा' (रू भे.)

उ०—ग्रदंग ढोल मंगळी, रबाब तार सार ली। वजंति बेरि वेरियं, भणं कि भंकि भेरियं। —रा० रू०

बेरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेरियोड़ो—देखो 'वैरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री वेरियोड़ी)

बेरी—१ देखो 'वेळा' (रू भे.)

२ देखो बेरी' (रू. भे.)

उ०—१ भेंस्यां न अपटाऊ तिला री कच्चर, खोपरां रो गिर ग्रर कुपासियां रो बांटो। चरण सारू सुवा री पांख रै ग्रनमान पराळ, चोपटो पीवण सारू बेरी रो साफ सुथरो ठाडो पांणी। सवार-सिंझ्या सातूं भेंस्या नं संपाड़ो। —फुलवाड़ी

उ०—२ बसती घणी। घरतो हळवा ४० छै। ऊनाळी नहीं। कालंभर ब्याव २ बोराड़ा री केर बाहळो गाव नजीक छै। तठै बेरियां छै। बावडी एक नाहाळ मांहै छै। भाखर खुभराड़ियो कहीजै। भाखर री खांभ वसै। —नैणसी

३ देखो 'वैरी' (रू. भे)

उ०—नींदडलो बेरण ज्यु रही, इण सरीखो हो भूंडो नहीं कोय के। मूल तो मिलै नारकी गति माठी मैं कोई फेर न जोय। —जयवांणी

(स्त्री. वेरण)

बेरुख—देखो 'बेरुख' (रू. भे.)

बरुखी—देखो 'बेरुखी' (रू. भे.)

बेरुलिय—सं. स्त्री.—वैदूर्यमणि, जिसका आधुनिक नाम नीलम है। (जैन)

बेरू—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—वेगो श्रायो न करी बेरू, खाडं करि सू दक्खण खेरु। रत्ता मुगळ नीली टोपी, ततकाळं नरबद्दा लोपी। —गु. रू. बं.

बेरोक—देखो 'बेरोक' (रू. भे.)

बेरोजगार—देखो 'बेरोजगार' (रू. भे.)

बेरोजगारी—देखो 'बेरोजगारी' (रू. भे.)

बेरो—सं. पु.—१ कूआ, कूप।

उ०—१ दुनिया मैं निबळा ग्रर गरीब घणा है, इण कारण मैं लोग टणकेल ग्रर सूरवीर है। बेटी! म्हारी ग्रा भुळावण थारै वास्ते ग्रणूंती मूंघी पड़ैला, ग्रा जांणतां थकां ई म्हैं थनैं बिखा रा ऊंडा बेरा मैं धरकावूं. थूं म्हारी इण लाचारी नै समझै है कै नीं। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हूं ग्रबै उण भोळा कमेड़ा नैं कांई जबाव देवती। उणरा विस्वास नैं कियां खंडत करती। जिण उम्मेद री डोर मायं वो जीवै हो। उणनै कियां तोड़ती। जिण वरत रै सहारै वो बेरा मैं उतरियोड़ो हो, उणनैं कियां वाढती। —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ ऊनाळा रा पांणी री तकळीफ रा दिनां में कोई ग्रापरा मगा गिनायतां रै घरै जाय जम्यो तो किणंई बेरा-कोइटा करनै दिन तोड दिया पण ग्रासाढ रा चांवणा पख रा ऐ दिन जावता ग्वारा जैर व्है ज्यूं लागता हा। —रातवासो

२ देखो 'बेरी' (रू भे.)

उ०—१ डागै ग्रापरी बेटी बेई वर देखण नै काठी कमर बांध ली। ग्राडसर, मूंमासर, रिणी' र राजगढ ब्यारां कांनी भंवाळी खावण नीसरयो। पर फूटरी-फररो भरगी रै वर री बेरो कठं ही नीं पटचो। —दसदोख

उ०—२ जै फिरंगी नै बेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय, तोप मुंहांगी म्हांनै बाडै, रहो कैद कै मांय। इतनी सुणकै डूंगजी, स, बोल्यो कड़वा बेण, ई मूंडै को घणी लोटिया! म्हानै ग्रायो लेण? डूंगजी, जवारजी री छावली

उ०—३ ग्रेक वर, देवर, बागां मैं ले चाल, बेरो तो पाड़ां, ग्रो देवरिया, नारी–मरद को, नारी होय तो पड़्या-रिड़्या फळ खाय। मरद हुवै तो तोड़ फूल गुनाब रो, राजा जैमल पड्या-रिड़्या फळ खाय। लो- गी.

रू- भे.—वैरो

बेळ—वि०—१ समान, तुल्य।

२ बहुत ज्यादा, ग्रत्यधिक। (ग्र मा.)

सं. पु - १ समुद्र, सागर।

उ०—गुण सागर दुस्तर ग्रगाध, ग्रति वाघ ग्रपारण। बेळ निजर विद्द्रुमां, ग्रसह कवि भ्रमण ग्रकारण। —रा. रू.

२ तरंग, लहर, हिलोर। (ह. ना. मा.)

उ०—१ उमर वरस एकादस आई, अठे मुगो नप चंद्र अवाई। सुणतां मात्र कूच रा सधियो, बेळ समद्र जेम दळ वधियो।
—सू प्र

उ०—२ वांगिजा बधु गो वाछ प्रसद विट, घोर चकव विप्र नीरथ बेळ। सूर प्रगटि एमला समयिया मिळिया विरह विरहिया मेळ।
—वेलि

उ०—३ जिम मधुकर नड कमलणी, गंगासागर बेळ लुबधा ढोलउ मारुवी, कांम कनूहल केळ।
—ढो मा.

उ०—४ सुत मघ्रत छंद छट पच नव संपूरण, भेदगर च्यार दम बोध माळी। भरथ जुत बोलवो हेळ बीजा 'प्रजा', बेळ अम्रततणा उदध वाळी।
—र. ज प्र.

उ०—५ मिळ प्रावत लोह कि बोह महो, जमना दळ बेळ समद्र जहो। धर माळ भणाभण ऊभरियं, पवंगा तुरिय रव पाखरियं।
—रा. रू

उ०—६ जैता मांम संग्रांम की, जोवै वाट कमंघ। ज्यां दघि दकवै बेळ वळ, होण परक्कै बंध।
—रा रू.

३ गले में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

४ अंगुली में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि० वि०—यह सोने, चांदी या तांबे के तार से गुंथी हुई अंगूठी होती है। कतिपय लोग तांबे के तार से गुंथी हुई देवजी या भैरवजी आदि देवताओं की वेळ (अंगूठी) अंगुलियों में पहनते हैं।

५ पागल।

६ पागलपन।

उ०—१ केई दिनां सूं काली मासो घर घर बकं तो ई म्हैं उण री गिनरत नी करी। जांण्यो वा कालायां करै तो छो करती। आप उण नै इत्ती माथै नीं चाढता तो उण री काई मजाल कै घर घर यूं बेळ बातां बकती फिरै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कदेई कदेई तो यूं मेंडो बेळ बाता करै के म्हनै ई जूभळ छूट जावै। पण म्हारां सूं ई कोगत करियां बिना थारो जीव धापै कोनीं।
—फुलवाड़ी

उ०—३ वो चोर हमेसां कीं न की ऐड़ी बेळ बातां करतो ई रैवतो उणनै ढावण साक दूजोड़ो चोर अेक समभदारी री बात करी—सात पीढियां लग घा माया तो अपारे खायां नी खूटे। अबे चोरी नीं करनै इज्जत सूं ठायो अपड्णो तो सावळ। जीव अस्टपौर सुरक सुरक करै।
—फुलवाड़ी

उ०—४ ढाबू खातो वीदणी रे मूंडा मांम्हो देख वीद कैवण लागो—अेड़ी बेळ बात वळे कदे ई करज्यो मती। भायजी जांणे जित्ती तीफ करैला। वे रूप बिचे लुगाई रे गुणां री घणी प्रादर करै।
—फुलवाड़ी

७ आग, अग्नि।

८ सहसा मन मे उठने वाली तरंग, उमग, भावना।

उ०—१ ईडरिया आवाग री, वीर चढे तो बेळ। हसत चढै चारण हुवे, माया सरसत मेळ।
—बां. दा.

उ०—२ बेळ री मरण ग्रणथाग बीर, हेतवां देण हेळा हमीर। सेण री संग अह सत्रु माल, ढाविया विरद जोधांण ढाल
—पे. रू.

९ देखो 'बेल' (रू. भे.)

उ० —१ रवि ऊगं साहावदी, खान इनायत बेळ। प्रासुर आयो लेड़िया, ज्यों सागर ऊमेळ।
—रा रू.

उ० --२ सभै सूर असुरांण दळ पूर आयो सिखर, किणी नह बियै अब बेळ कीजै। वारता जिसी 'गंग' कहै बीकमपुरो, 'जैतसी' जोधपुर दूरंग लीजै।
—राव जैतसी रो गीत

१० देखो 'बेळा' (रू. भे.)

उ०—विरघ वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक बेळ महोछव मेळ विदाई। पूजा पाठ निराठ, वरे व्रनमाळा मोखी। जागण रातीजगां, बसुटण दायजां चोखी।
—दसदेव

११ देखो 'वेल' (रू. भे.)

१२ देखो 'वहल' (रू भे.)

रू भे.—वेला

बेल-सं. पु.—१ खेत में कुए से नाली द्वारा जाने वाले पानी का बहाव।

२ एक प्रकार का लघु काव्य।

३ रेखा लाईन।

उ०—मच फाग छटी रव खाग महा, कल सोर न प्रांण कबांण कहा। वधि बेल धमाधम सेल वहे, गुणि खोज कि बोज सिळाव वहे।
—रा. रू

४ होलिका-दहन के दस दिन बाद अर्थात चैत्र कृष्ण दशमी को सधवा स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले "दसामाता" या "दसादहाड़ी" के व्रत के दिन सूत के दस धागों के डोरे पर दस गाठें लगाकर गले में धारण की जाने वाली तात।

५ देखो बेल' (रू भे.)

उ०—१ आयो फिर हेरां 'अजो', नरपत सहत निवाब। दक्खण दूत चलाविया, तेड़ण बेल सिताब।
—रा. रू.

उ० —२ परत न लभै पार, निरा पसरी बेल अपार। उत्तम मध्यम अधम मैं, नर सुर नाग कुमार।
— रांठोड़ां री बंसावळी

उ०—३ ना रे ना भोला, बीज वास्तै नीं है। थूं तो लारै ई'ज पड़ग्यो, बिना बतायां पार नीं आवैला। वो मतीरो हमरती बेल री

है, सो राजा नै भेट देवण खातर रखाळियोड़ो है।
—भ्रमर चूंनड़ी

उ०—४ पसरी मुकति बेल रूपहरी, गंगा वहै इसी छबि गहरी। उठै वसाय दीजियै आतुर, पारकेस नांमै पारकपुर। —सू. प्र.

उ०—५ भावजी रे हमनै नौसर हार, बेल बधी मेरै बाप की रे। ज्यूं वालो ज्यूं इव, ज्यूं कोड़ी ज्यूं नाल। —लो. गी.

६ देखो 'बेला' (रू. भे.)

७ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—चौधरण तौई फिटक मैं नी माई। बा तौ दूजै दिन बेल जुताय घणी सारू किणी फूठरा नांव री सोय मैं पीहर रै मारग बहीर व्हैगी। —फुलवाड़ी

८ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

९ देखो 'वेळ' (रू. भे.)

उ०—१ चढै बेल वरियांम, सुजळ तै आगळ चचळ, गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर त्रंबागळ। असंख फौज उपत्ति, वहुत चीघां बैरक्कां, मारवाड मरजाद, मडां अनडां मारक्कां। —गु. रू. बं.

उ०—२ रचतां इसौ राजसर राणा, लेखौ जगरो कवण लहै। अस सूरज वहतो आघंतर, बेलां पग मांडतो वहै।
—महाराणा राजसिंह री गीत

बेलकि, बेलकी–सं. स्त्री.— एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन विशेष।

बेलख, बेलखि–सं. पु. [सं. बेलकं] बांण का फर, पुंख स्थान।

उ०—विळकुळियौ वदन जेम वाकारयौ, संग्रहि धनुख पुणच सर सधि। किसन हकम आवध छेदण कजि, बेलखि अणी मूठि द्रिठि बंध। —वेलि

रू. भे.—वेलख, बेलखि

बेलड़—१ देखो 'बेलड़' (मह., रू. भे.)

बेलड़ली, बेलड़ि बेलड़ी,–स. स्त्री.—१ एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन विशेष।

रू. भे.—वेलड़ली, बेलड़ि, बेलड़ी, वेलडली, वेलडि, वेलडी

२ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वरस सीम काउसग रह्यउ, बेलड़िए वींटांणउ रे। पंखी माला मांडिया, सीत तावड़ सोखांणउ रे। —स. कु.

उ०—२ बातां करतां पखवाड़ो बीत ग्यो। राजा वाळी मतीरो पाकनै रांणबांण व्हैग्यो। बेलड़ी कुम्हळीजगी अर कूंपळ बळगी। चोथौ दिन देखनै चौधरी मतीरौ लेयनै राजारै दरबार कांनी वहीर व्हियो। —भ्रमरचूंनड़ी

उ०—३ मनोहारा सार स्रंगार रसमां, अनुभवी यया तरवरा। बेलड़ी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भांमिनी जलधरा। —वि. कु.

उ०—४ माया विसरी बेलड़ी, हुरीया पसरी दूरि। केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि विसूरि। —अनुभववांणी

बेळच, बेलच—देखो 'बेळच' (रू. भे.)

बेळचौ, बेलचौ—देखो 'बेळचौ' (रू. भे.)

बेलज, बेलज—देखो 'बेलज' (रू. भे.)

बेलडली, बेलडि, बेलडी—१ देखो 'वेलड़ली' (रू. भे.)

२ देखो बेल' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ नै (तै) अय मिटयौ जांण नै नदी उपरै बाग लगायो छै। माहोवला फूल हुवै छै। घणी बेलां, घणी बेलडिया, गी (नी) लोतरी चीभड़ा, खरबूजा, नीला गोहूं, साल, दाल घणो नीपजै छै। इसडो बाग छै। —रिसालू री बात

उ०—२ विण तरुग्रर जिम बेलडि, कंठ बिना जिम माल। पुरुख विहूणी पद्मनी, किणि परि ठेलिसि काल ? —मा. कां. प्र.

उ० ३ गिरि गिरि वाधइ बेलडी, ऊपरि फूल विकास। मंडइ मोर कला घणी, विरहुणीयां तन त्रास। —मा. कां. प्र.

उ०—४ वेग्या विस नी बेलडी, कांमी कूंकम व्रख। बाली बाउ-लीउ करिय, लघु वयमांहि लख। —मा. कां. प्र.

बेलण–सं. स्त्री.—१ नींद में, स्वप्न में या अचेतनावस्था में बकने की क्रिया।

२ देखो 'बेलण' (रू. भे.)

उ०—बेलण वेलीजो बांह, मिरगानैणी जो राज। मूंगफळी सी घणरी आंगळी, जो म्हां रा राज। —लो. गी.

उ०—२ हलूइ हाथइ चालइ, मांहि घी पूलउं टालइ, एक लगै पाटउ, मांहइ दीजइ साटउ, बेलण स्यूं बेलीइ, हलूइस्यूं मेल्हीइ, घत स्यूं मिल्या, लोह कडाहै तल्या, सब्द कल कलइ, निरधूम अगनि बलइ,......... । —व. स.

रू. भे.—वेलण

बेलणियौ–वि०—नींद में, स्वप्न में या अचेतनावस्था में बकने वाला।

सं. पु.—१ रहट के घूमने वाले चक्र पर पड़े लट्ठे पर बैल हांकने वाले के स्थान के नीचे लगाया जाने वाला एक डंडा विशेष जिसमें सांकल या रस्सा डाल कर बैलों के जूए से जोड़ा जाता है।

२ देखो बेलण' (अल्पा., रू. भे.)

बेलणो, बेलबो–क्रि० अ०—१ छट-पटाना, तड़-फड़ाना।

उ०—१ हुनि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मंडै लफर पख मिळै। तिल तिल हुइ टूकड, बेलै तुरभड, मच्छक तडफड तुच्छ जळै। —गु. रू. बं.

उ०—२ ढाढी गाया निसह भरि, सुणियउ साल्ह सुजांण। मोछइ। पांणी मच्छ ज्यउं, बेलत थयउ बिहांण। ढो. मा.

२ देखो 'बेलणो, बेलबो', (रू. मे.)

उ०—१ बेलण बेलो जी बांह, मिरगानैणी ओ राज। मूंगफळी सो घण री आंगळी, जी म्हारा राज। —लो. गी.

उ०—२ ··· ·····मांहियो थूलउ टालइ, एक सगें पाटउ, मांहइ दोजइ साटउ, वेलण स्यूं वेलोइ, हलूइस्यूं मेल्हीइ, घ्रतस्यूं मिल्या, लोह कडाहैं तल्या, मइइ कलकलइ निधूम अगनि बलइ, नीपनां सतपुडा खाजा, नूतन कीधा ताजा, मडला नैं साजा, मोटा जाणे प्रासाद ना छाजा, जिहुं खुणे माजा गहवा खाजा प्रीस्यां········। — व. स.

३ देखो 'बेलणो, बेलबो' (रू. मे.)

उ०—१ सेठां रै बेलणा रै सागे इणो भांत सेठाणी रो बेलणो चालू हो। पर बेटो दोनूं जणा रो बेलणो चुपचाप सुणतो रहयो। मां रै मूडा सूं बाप रै चेतारी वात सुणनै राजी व्है जातो अर बां रै सौत री बात सुणनै घणो विलखो व्है जातो! इण सूं आगै उणरी समझ नीं हो। —फुलवाड़ी

उ०—२ सेठांणी रो काळजो अणूंतो काचो हो। हरख मनावण री बात सुणियां पछै तो वा वती रोवण लागी। कदास सेठ मौत में बेलण तो नीं लागग्या! अबै वा करै तो कांई करै। सेवट काठी हारनै वा कह्यो—थे भलांई नीं मांनो, म्हूं तो पचा नै बुलावूं। — फुलवाड़ी

उ०—३ घरविद रो बाता रै पछै माली राजाजी रा समचार पूछ्या तो वा सूभट निमळ भाव सूं कह्यो कै राजाजी तो उण दिन पछै गूंगी री तिथ ई नीं लो। गूजरी अलोप व्हेगी तो ई हाल उणरो प्रीत बास्तै बेलै। — फुलवाड़ी

बेलणहार, हारो (हारी), बेलणियो वि०।

बेलियोड़ो, बेलियोड़ो, बेल्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेलीजणो, बेलीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

बेळणो, बेळबो, बेलणो, बेलबो—रू भे.

बेलवार—देखो 'बेलदार' (रू भे.)

उ०—१ पेंसठ हाथ रै पछै रेळी रै कारण बेगो खुदणो दूभर व्हैगो तो म्हैं अेक बाजिदा सिरावा रो मोय मैं निकळियो। वो सिरावो जात रो बेलवार हो। —फुलवाड़ी

उ०—२ डारण नेइ बेलवार भुरजालंदै, रोठ घतोजै रीठ मैं चला चंग अंदै। रैत घलो री रात दिन मन पै घडकंदै, कोटड़ियां धमका करै चोबीस मडंदै। —पा प्र

बेलवारी—देखो 'बेलदारी' (रू भे.)

बेलपतर, बेलपत्र, बेलपात—देखो 'बेलपत्र' (रू. भे.)

बेलळाट, बेललाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू. भे.)

उ०—मन मैं घरता मरट घरट जिम भूलें घूमैं, मेलै घर गया मऊ मटकि सूआ पर भूमें। वेटा नैं मा बाप वेचि दै जीमण वेइ, रूलतां रिणतां रांक करै बेललाटा केइ। —घ. व. ग्रं.

वेळा—स. स्त्री. [सं. वेला] १ समुद्र का तट या किनारा।

२ सीमा, हद।

३ रात-दिन का चोबीसवां भाग, पल।

४ काल, वक्त, समय।

उ०—१ तठा उपरांति राजांन मिलांमति तोरण बांधीजै छै। घणां गज इबर पेसारा करि मंडोवर महलै पधराया छै। सुभ दिन सुभ घडी सुभ मुहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा मांहि श्रांणि पाट सिंघासण विराजमांन किमा छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर दुळै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ वेली तदि बळभद्र बापूकारै, सत्र साबतो अजै लगि साथ। तूठं वाहवियै आ बेला हव, जोपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ। —वेलि

उ०—३ लांठा लांटा मौतबिर वेलाकुवेळा वहो दूध रो मिस लेय गूजरी रै घरै आवता संकता कोनीं। काली मासी सुड़को व्हैतां ई जाग जाती। सगळा नै मीठो जबाब देती। किणी माथै छींटा नीं देवती। —फुलवाड़ी

उ०—४ वूजी कांई, वूजी रा बेटा नै ई गोगला रो कितरो कोड है। लारली वेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जदरी बात है–पूणचो काठो पकड लियो अर बट्ट करती कावळी बदार नाखी। —अमर चूंनड़ी

पद —वेळापूळ=समय।

५ अवकाश, फुर्सत।

उ०—१ कंवर नै सेत री रूखवाळण रा बोल याद आया। उण री देखा देख वो कह्यो—बिरथा भिकाळ करण री म्हनैं वेळा कोनीं। थे सगळी बाता थारै कानां सूणली हो, म्हैं पाछी कांई गिणावूं। —फुलवाड़ी

उ०—२ आ रो घाल्या तीन दिन व्हिया आपरै पाखती ई नी आय सकी। दिन मैं चार-पांच वेळा चूंघाणा पड़ै। थोड़ै दिना पछै तो घाट दळियो खावणो सीख जावेला। पछै वेळा ई वेळा है। आपनै अठा ताई आवण सारु अेकर ई फोडा नी खावणा पड़ैला। महाराणी अपूठी घिरनै बोली—म्हैं जावूं। फेर वेळा मिळी तो आय नै मिळ लेवूला। अबारू थूं आरो साळ-सभाळ कर। —फुलवाड़ी

६ मौका, अवसर।

उ०—१ तब रुखमणीजी डावै पासै बैसांण्यां। ज्यौं विधि छै त्यौं बोल बाचा लै। ज्यौं कही छै त्यौं करि नै बिवाह पूरण कीयो।

जिहि बेळां वेद का पठणहारां । मुंहमांगी सु नव ही निधि पाई ।
—वेलि टी.

उ०—२ जगत री रीत है आप री स्त्री नें प्रथम मिळाप री बेळा देखणं है अनें इण सूरवीर रं पाछौ हटण रो पूठ लारं देखण रो प्रण है कै पाछौ हटूं नहीं पूठ लारं देखूं नही । —बी. स. टी.

मुहा०—१ बेळा रा वाया मोती नीपजं=उचित अवसर पर काम करने से लाभ होता है ।

२ बेळा देख वरतणौ=अवसरवादी होना ।

७ बार, दफा, मर्तबा ।

उ०—१ ताहरां कोई परमेस्वर रो ख्याल हुवौ, जु कवांण काढ नं रावजी रं गळं मांहि घालण करं । ताहरां एक बेळा तो कवांण ऊरार सं रही गळा रं । —नैणसी

उ०—२ जुडिया 'वीर' तणी जुग जांणं, दाखव पंथी देख दुयं । काळा सं विढतां कं वेळा, हांमं कं हथवाह हुयं । —दूदो बारहठ

उ०—३ चोधरी तीन बेळा जमीं तांई लुळ लुळ नें खम्माघणी अरज कर नें ऊचौ राजा रं मूंडा कांनी देख्यौ तौ पगां नीचं सूं धरती सिरकती लागी । औ तौ सागण उण दिन खेत में आयौ जिकोज आदमी। —अमरचूंनड़ी

उ०—४ दो तीन बेळा जीभ फेरनें डोकरियौ आपरी दांत संभाळियौ । पछं थूक गिटतौ कंवण लागौ—तौ रांमजी भला दिन देवं—तौनूं जणा हाकरतां जमराज रं पाखती पूगा। —फुलवाड़ी

उ०—५ बेटां रं मरियां पछं नित अेक बेला तौ म्हनें आ बात सुणाणी ई पड़ं । जांणतां थकां ईं दूजी बात सुणावण रो मन ई नीं करं । —फुलवाड़ी

८ देर, विलम्ब ।

उ०—विहतां घणी लगाई बेळां, समहर सूर सवादा । सूर औधा साद करं सांगावत, रथो आवो रायजादा ।
—जैसिंह नरूका कछवाहा रो गीत

६ देखो 'वेळ' (रू. भे.)

रू भे बरियां, बरिया, विर बिरया बिरियां, बिरिया, बिळिया, विलिया, विलीया बीरिया बीरिया, बीरीयां, बीरीया वेर, बेरा, बेरिया, बेळ वेल बेंन, वेळा बेला, वरियां वरीया विरया, विरिया, वीरियां, वीरीया. विलिया, विल्या, वेर, वेरां, वेरिया, वेरी, वेळ बेला, वेलि, वेली वेळु वेलु वेळू, वेलू वेल्या, बेल्हा, वंळा, वंला मह., वेळौ, वेलो

वेला-सं. पु.—१ जन्म, जीवन ।

उ०—ढोर माहि जीव घणउं दुख सहइ चारि पांणी नवि वेलां लहइ । परवसि ध्यो करमि घालइं बाटि, वहइं भार तं मारइं साटि ।
—वस्तिग

२ कष्ट, संकट ।

उ०—आणइ नारी तणइ वियोग, कूबड देहि हुऊ कुयोग । बेला पाछी अब्र समकाल, उपगार नूं फल हवूं ततकाल ।
—नळदवदंती रास

रू. भे - वेल्हा, वंळा, वैला

३ देखो वेळ' (रू. भे.)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ वाल्हा किम आवुं तिहां रेलो बेला विखमी जायरे सनेही । सुख चाहता जीव नइ रे लो, मत कोई लागू थाय रे सनेही । —वि. कु.

उ०—जिकं पारस्व केरी करिस्यंति भक्ति, तिकं धन्य वाक मनुस्या प्रसक्तिम । भली आज वेला मया वीतरागा, खुसी मांहि भेख्या नमद्देव नागा । —स. कु.

उ०—३ संवरी श्रावक करइ पोसउ, आठ पुरहि गुरु मुखइ । उचरइ दंडक त्रिण्ह वेला, सांमाइक पणि तिणि रुखइ । —स. कु.

उ०—४ कूडै मन आदर करै तेह सजाई कीध, दासी नैं सनकारि सिखानी सगलो सिघो दीध । भोजन पांन सजाई करतां वेला कीध, आधी रात पड़ी छं आकुल थायो म सीध । —ध. व. ग्र.

उ०—५ इण बातै मोनें लाज कहावै, पुत्र थकां मां दुखणी थावै । हूं समझूं थारै समझावै, बात कहौ वेला घनी थावै । —जयवांणी

वेळाइत, वेलाइत-सं पु.—समुद्र, सागर ।

क्रि. वि.—उचित समय पर ।

उ०—उठियौ जगड़ लाग अरामांणं, उर 'अजमाल' तणौ व्रत आंणं । उण वेळा 'लालो' मिळ आगां, बेळाइत खवांणी वागां ।
—रा० रू०

वेळाउळ, वेलाउल—१ देखो 'विलावळ' (रू. भे.) (ध. व. ग्रं.)

२ देखो 'वेळाव्ळ' (रू. भे.)

उ०—१ ३० सहस्र आगर, २४ सहस्र नगर, २४ सहस्र करबड, १६ सहस्र खेड, १४ सहस्र वेलाउल, ३६ कोडि कुल, ४८ सहस्र पत्तन, ४६ सहस्र उद्यानवन,''''''''' । —व. स.

वेळाउळथी, वेलाउलथी—देखो वेळावळथी' (रू. भे.)

वेळाकूल, वेलाकूल-सं. पु.—बन्दर, वानर ।

उ०—किसलय नींकलता गहगहइ, वेलाकूलं रा गहगहइ । मंड लक्ष धान्य नीपजइ, सकल वांछित सुख संपजइ । —नळ दवदंती रास

वेलाज्वर, वेलाज्वर-सं. पु. [सं. वेलाज्वर] वह ज्वर जो मृत्यु के समय होता है ।

वेलातर, वेलातक-सं पु.—एक प्रकार का शाक (सब्जी) व व्यंजन विशेष ।

उ०—बाबु नइं बेलातट, बेऊ बेतस बाणि। बप्पाव महलु सीउ, बाउलीत बखांणि। —मा. कां प्र.

बेलाधिप, बेलाधिपत बेलाधिपति, बेलाधिपती-सं. पु. [स. वेलाधिपति] दिनमान के प्राठवें भाग या बेला के अधिपति देवता।

(फलित-ज्योतिष)

वि० वि०—जिस दिन जो वार होता है उसी दिन की पहली बेला का बेलाधिपति उसी वार का ग्रह होता है।

बेलापात—देखो 'विलापात' (रू. भे.)

उ०—मारवणी री सरीर सोरंभ किस्तुरी जिसो छै। उठै पीवण सांप हुता जिकै सास पी गया। तिण सुं मारवणी निरजीव हुय गई। परभातै जगाई जागी नहीं। ताहरां ढोलोजी दीवाघरी सखी बोलाउ। सगळाई पांणि भेळा हुवा। ढोलोजी प्रति बेलापात करण लागा। —ढो. मा.

बेळापुळ बेलापूळ-सं. पु—अच्छा मुहूर्त, शुभ समय।

उ०—नित रा ओळबा सूं प्रांती आय बा खुद केई दिनां सूं बादळ नै मन री बात बतावणी चावती ही। आज काले करतां दिन टळता गिया। ओ मनचीत्यो जोग सजग्यो तो इण नै क्यूं टाळै! बेळापुळ बायोड़ा ई मोती निपजै। —फुलवाड़ी

बेळायो—देखो 'बेळायो' (रू. भे.)

बेलाळ बेलाल-सं. पु.—१ पवन, हवा। (ना. डि. को.)

२ समुद्र, सागर।

बेळावळ, बेळावळ-सं. पु.—१ समुद्र, सागर। (ना, डि. को., ह.नां. म.)

२ देखो 'बिळावळ' (रू. भे.)

• रू. भे.—वेळाउळ. वेलाउल, वेळाकूल, वेलाकूल।

बेळावळधी, बेलावलधी-सं. स्त्री.—विष्णु-पत्नी लक्ष्मी। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वेळाउळधी, वेलाउलधी

बेळावसेक, बेळाविसेक-सं.स्त्री.—बालकों में होने वाला बालग्रह नामक रोग समूह में से कोई एक रोग विशेष।

उ०—बाळ-कन्हैयो थोडो घणो ई ओपरो लखावतो के मासो नै बेळा-बिसेक री वैं'म व्हैती तो सात वेळा अवारनै लूंण-मिरच करतो। खुशीखुश ई मन करै जणा झाड़ो देतो, हळको हाथ करतो। —फुलवाड़ी

बेलास—१ देखो 'बेलस' (रू. भे.)

२ देखो 'विलास' (रू. भे.)

बेळाहरण, बेलाहरण-सं. पु. [सं. वेला+धारणम्] समुद्र, सागर।

उ०—रांमा अवतारि वहै रणि रांवण, किसो सील करुणाकरण। हूं ऊधरी त्रिकुटगढ हूंतो, हरि बंधे बेळाहरण। —वेलि

बेलि—१ देखो 'बेल' (रू. भे.)

उ०—१ तेरे पासा खासा दासा, पासा बांसाहि का प्यासा, मेरी आसा बेली फलि तुं ही इछया अभा है। —घ. व. ग्रं.

उ०—२ मुझ आंगणि सुरतरु बेलि फली, चिंतामणि करियल आवि मिली जसु समरणि सुर धेनु मिली, सो सेवउ जिनवर रंग रली। —स. कु.

उ०—३ तेल विहूणउ दीवडु, मूल विहूणी बेलि। पांणी विहूणी दद्दूरी, तिम होई ति महेलि। —मा. कां. प्र.

उ०—४ रांमा अवतार नांम ताइ रुकमणि, मांन सरोवरि मेरुगिरि। बाळकति करि हंस चो बाळक, कनक बेलि बिहुं पांन किरि। —वेलि

उ०—५ मूरखु कोइ छइ खरउ गमारु, सूकडि बाली करइं छार। जिन धरम लाधउ पाय म पेलि, सुख तणी ऊपाडी म बेलि। —वस्तिग

२ देखो 'बेली' (रू. भे.)

३ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेलियोड़ो-भू. का. कृ.—१ तड़-फड़ाया हुआ, छट-पटाया हुआ।

२ देखो 'वेलियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बैलियोड़ो' (रू. रू.)

(स्त्री. वेलियोड़ी)

बेलियो—१ देखो 'बेलियो' (रू. भे.)

२ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बळद' (अल्पां., रू. भे.)

४ देखो 'बहलियो, (रू. भे.)

उ०—गांम रा मोजीज आदमियां आयनै रावळै मुजरो अरज कियो अर आजम डाळ नै गांम में अमल रो हाको करायो। घोड़ां नै दांणो अर बेलियां नै गुळ फटकड़ी दिरीजी! रोटां वास्तै आटो गूंदीजियो, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालो पीसता सिला लोढी बाजण लागी। —अमरचूंनड़ी

बेली—१ देखो 'बेली' (रू. भे.)

उ०—१ बेली तदि बळभद्र बापूकारै, सत्र साबतो अजै लगि साथ। बूठं वाहविये आ वेळा, हल जोपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ। —वेलि

उ०—२ "बालो" भालो झल्लियां, रिण कालो रावत्त। जुध वालो बेली जिहां, 'तेजो' 'सूजावत्त'। —रा. रू.

२ देखो 'बेल' (रू. भे.)

उ०—१ पीड़ति हेमंत सिसिर रितु पहिलो, दुख दाळघो वसंत हित दाखि। व्याए बेलो तणी तरुवरां, साखां विसतरियां वैसाखि। —वेलि

उ०—२ मळयानिळ वाजि सुराज थिया महि, भई निसंकित ग्रंक भरि। बेलो गळि तरुवरां बिलाग्रो, पुहप भार ग्रहणां पहरि।
—वेलि

उ०—३ हरीया कड़वो वेलका, कड़वाई फळ किध। अब बेली तें बीछड़ें, होय नांव की सिध। —अनुभववांणी

उ०—४ त्रिगुन तें गुन ऊपजै, गुन कै त्रिगुन मांहि। जनहरिया फल बेल तें, फल बिन बेली नांहि। —अनुभववांणी

५ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेलीड़ौ—देखो 'बेलो' (अल्पा., रू. भे.)

बेळु, बेलु—१ देखो 'बाळू' (रू. भे.)

उ०—ठाढो बेळु की रेत, मजबूकंला पूंबण घणां। बरसो भाजो की राति, काल्हौ का दौंस घणा। —समसदीन

२ देखो 'वेळू' (रू. भे)

३ देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेळुका, बेलुका—देखो 'बाळू' (रू. भे.)

उ०—उपवन करि प्रति ग्रेह उसीरां, नोख गुलाब छड़क भए नीरां। जळ गुलाब बेळुका जमावै, विमळ पटी सीतळ बिछवावै।
—सू. प्र.

बेळू, बेलू—वि०—१ व्याकुल, बेचैन, विह्वल।

उ०—द्विज भयो बेळू अजामेलू, कामबेळू बांम यै। जमदूत बेलू काळ वेळू, कंठ मेळू ग्रांम यै। सूत हेत हेलू नाम लेलू, कर सबेळू सांम यै, ऐसा गोविंदु कृपासींधू, दीन बंधू रांम यै। —करुणासागर

२ सहायक, मददगार।

३ देखो 'बाळू' (रू. भे.)

उ०—१ बेळू घांणी पील कर, कोई तेल कढावै।
—केसोदास गाडण

उ०—२ वली बचन कहै सूवटो, जो तिल मां तेल न होय। तो बेलू मैं किहां थको, राय विचारी जोय। —वि. कु.

४ देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

५ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—द्विज भयो वेळू अजामेळू कामकेळू बांम यै। जमदूत लेलू काळ बेळू कंठ मेळू ग्रांम यै। सुत हेत हेलु नांम लेलु कर सबेळू सांम यै, ऐसा गोविंदू कृपासिंधू दीनबंधू रांम यै। —करुणासागर

रू. भे.—बेळू, बेलू, बेळु, बेलु

बेलै—सं. पु.—आकार, आकृति।

उ०—गूंगी री धणी ठेट काठियावाड़ जावनै घोड़ी लायौ। लाखां मैं टाळको। उपरैंटा री ओद री। पळकतो कमेत रंग। कांनां तीखा। धणक ज्यूं तणियोड़ी लांबी गाबड़। गाळिया छोटा। अणगर चोड़ो। ढालां जेड़ा पुट्ठा। लांबो बाळधो। केसावळी लांबी। चोड़ा सूंम। लांबै बेलं। चोड़ी लिलाड़। गळा रै सुद देवमिण।
—फुलवाड़ी

बेळौ, बेलौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

२ क्रौंच पक्षी।

३ कष्ट, संकट, आपत्ति।

४ वंश।

५ पूजा आदि का सामान रखने का साधन या उपकरण।

उ०—यूं कहनै रातरा मंझोबर रया नै प्रभात रा उठ बेळे री भैरूंजी री मूरत बेलं मैं लाधी तद सांखलं नापै कंवरजी जोधोजी नुं कयो—गोरोजी आप रै साथ हालसी अरु थांरी राव चाडो बंधसी। —द. दा.

६ देखो 'वेळा' (मह., रू. भे.)

उ०—वस्त्राभरण जिणे हरषा तं छूटइ हुण मेलो जी। आदिनाथ नो पूजा करइ प्रहऊठी बिहुं बेलो जी। —स. कु.

७ देखो 'बेळो' (रू. भे.)

उ०—सांमजी रांमजी बूंदी रा वासी। आवगी जाति रा बेद। दोनूं भाई बेला रा (जोड़े जनम्यां)। उणीयारो सूरत एक सरीखो दीसै। केलवै दीक्षा लेवा आया। —भि. द्र.

बेल्यां—१ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—हरसा मेरा बेटा रै, होवेली सांझ सवेरी रै रोज। मेरा समरथ मोबी! भोजन री बेल्यां रै ऊभो रोयसी। हरसा! मेरा लाल रे, आवेली पर घर कैरी धीय। मेरा मोबी रे बेटा, भोली किन्या नै रै फोड़ा घालसी। —लो. गी.

बेल्यौ—देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

बेल्हणौ, बेल्हबौ—क्रि. स.—१ चीरना, फाड़ना। किसी दल या समूह को बीच में से दो भागों में पृथक करना, दूर करना, हटाना।

उ०—बेल्हतो गयां हैं थाट लागा भटळ, रीठ वाबां लगां दुबै राहां। जोध असराज पूगो भलो जुजवो, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां।
—महाराज जसवंतसिंघ री गीत

२ देखो बेलणौ, बेलबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बैलणौ, बैलबौ' (रू. भे.)

बेल्हणहार, हारौ, (हारी), बेल्हणियौ—वि०।

बेल्हिग्रोड़ौ, बेल्हियोड़ौ, बेल्हयोड़ौ—भू. का. कृ.।

बेल्हीजणौ, बेल्हीजबौ—कर्म वा०।

बेल्हा-१ देखो 'बेळा' (रू. भे.)

उ०—प्रहरं प्रहर ज ऊतरयुं, दिवला साल भरेह। घण जीती, प्रिय हारियउ, बेल्हा मिळण करेह। —ढो. मा

२ देखो 'बेला' (रू. भे.)

बेल्हियोड़ौ-भू का कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, संहार किया हुआ

२ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेल्हियोडी)

बेव—देखो 'वेग' (रू भे)

उ०—१ एक अचंभम परखणं, मति छति सकति प्रजेव। ज्यों मनि आवं सामि कै, पाय दिखावं बेव। —रा. रू.

उ०—२ महातेज में राजि वाजी समत्थं, रहै बेव पेखं खड़ा देव रत्थ। दुनी मग्ग राजांन री सोभ देखं, लखं कांम रै नांस सौ बाधि लेखं। —रा० रू०

उ०—३ तेजी वितंड ऊडंड तेव, विख्यात राग प्रख्यात बेव। परबत पंख पक्खर प्रचंड एराकी पिठ खुरसांण खंड। —गु. रू. वं.

उ०—४ गुग्ड बेव साहस घटं, मरग्ग संक हणवंत मुडं। जग यता थोक थावं जदं, पाल' वचन भूठा पडं। —पा प्र.

बेवकूफ—देखो 'बेयकूफ' (रू. भे.)

बेवकूफी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

बेवक्त, बेवगत—देखो 'बेवक्त' (रू. भे.)

बेवड़—देखो 'दोवड़' (रू. भे.)

बेवड़ियौ—देखो 'बेवडौ' (अल्पा., रू भे.)

बेवड़ीबूड़ —'बेवडीबूड़' (रू. भे.)

बेवड़ौ—एक प्रकार का बर्तन विशेष।

२ देखो 'बेवडौ' (रू. भे)

उ०—मसाला वेसवार लूण भरायजै छै। दही री रजबो दीजै छै। तरमसां मांहा सीकां काढजे छै। बेवड़ां ढीहा चाढजै छै। बीज लीसगी भरती दीजे छै। सू तसु बोढ सीकां ऊपर चाढजै छै। प्राडे हाथ डोरा ची रा दीजे छै : इण भांत सूछा वर्ण छै —रा. सा. सं.

३ देखो 'बेड़ौ' (रू भे.)

बेवटौ—देखो 'बपटौ' (रू. भे)

बेवणी—देखो 'बेवणी' (रू. भे.)

उ०—हळदी अेक रूवारौ लेयनै सरड़ सरड़ सगळौ फूस बुवार, दियौ। उखरड़ी सूं मिलाप करनै वा आगै वहीर व्ही। आगै आवतां उगनै अेक चूलौ सांमी धकियौ। चूलौ कह्यौ—हळदी बाई थोड़ी म्हारी बेवणी साफ करदै। —फुलवाड़ी

बेवणौ, बेवबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रीस में दांत पीसती बोली—रळनी लायोड़ी रा डीकरा अेड़ा नाजोगा नी व्हैता तो किण रा व्हैता। बाप री तो नन्नौ पत्तौ ई कोनीं, पछै इत्ती करड़ावण किण बात री। पैं'ला मां नै जाय बाप री नांव तो बूझ, पछै मारग बेवती पिणियारघां सूं रोळघां करजै। —फुलवाड़ी

उ०—२ पांचां री ई तेवड़ै तौ कूटळौ कर न्हाकै। पण कोई जोधा कै सूरवीर व्है तो लडतौ ई ओपै। ठगां नै तो ठगाई करनै हाथ बतावै तो साचैलो जीत। मारग बेवतां परण ई व्ही। वौ तो पछै कीं सोच नी करघौ। —फुलवाड़ी

२ देखो 'बेवणौ, बेवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अरधीयां थंभ वेधोधीयां वडायर, बग्द अप धारीयां वात बेवें। दली नं मंडोवर पगां रा पखं अडग, दली नै मंडोवर धका देवें। —तेजसी खिड़ियौ

उ०—२ ऊपरलं देवलोक सरवारथ सिद्ध सीम, चिहुं दिसि सरखा देवता ए। उपजइ एय मनुस्य तप संयम करी, सुख भोगवै प्रम बेवता ए। —स. कु.

बेवणहार, हारौ (हारी), बेवणियौ—वि०।

बेविग्रोड़ौ, बेवियोड़ौ, बेव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेवीजणौ, बेवीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बेवतन—देखो 'बेवतन' (रू. भे.)

बेवना—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—कमळा सोचती—इसै जीवणं ना तो मर जावणौ ई भलौ। वा कदे-कदे मा बाप रै दुख नै देख'र अपघात करण री सोचती। जद धरम आडौ ऊभ'र आंगळी हिलाय'र कैतौ 'अपघात घोर पाप'। घरवाळा बै-नै अेकली कौ छोडता हा नी। पण तोई बा तो मांयली बेवना सूं घुळती जावती ही। —वरसगांठ

बेवफा—देखो 'बेवफा' (रू. भे.)

बेवळ—देखो 'बेवळ' (रू. भे.)

बेवलियौ, बेवलौ बेवल्यौ—देखो 'बेवलौ' (रू. भे.)

बेवांण—देखो 'विमांन' (रू. भे.)

उ०—१ लपर्क गं जूह लोहां कं धरा तड़क्कं सूर, बड़क्कं खेचरां रंभा झड़प्फं बेवाण। महा वेग वहिया गनीम मद्द तणं म.थं, क्रोधंगी हमीर' वाळो दोमणी बेवाण। —तेजराम ग्रासियौ

उ०—२ साट सोरम्भ उरम्भ हुइ साहणां, चावरट थाट घासार हाल घणां। तापई ऊपडं तेज माहीं तुरा, उड्डिया जाण बेवाण ग्राकास रा। —गु. रू. बं.

बेबा—देखो 'बेवा' (रू. भे.)

बेबाई—१ देखो 'बेवाई' (रू. भे.)

२ देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याई' (रू. भे.)

उ०—ग्रेहड़ो वचार माडा ही मलिग्रा। ग्रर ग्राय, देवी रै वर पको ग्रदीठ समंचार बूभिग्रा। कोई बेवाई, कोई जमाइ, कोई वदेई सगा कह मलिग्रा। भाया रा नाम लं कुसल पूछिग्रा।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

बेवाणो, बेवाबो—देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू. भे.)

बेवाणहार, हारौ (हारी), बेवाणियो— वि०।

बेवायोड़ो—भू० का० कृ०।

बेवाईजणो, बेवाईजबो—कर्म वा०।

बेवायोड़ो—देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेवायोड़ी)

बेवार—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बेवाई—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

बेवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बेवाहणो, बेवाहबो—देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे.)

बेवाहणहार, हारौ (हारी), बेवाहणियो—वि०।

बेवाहिग्रोड़ो, बेवाहियोड़ो, बेवाह्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेवाहीजणो, बेवाहीजबो—कर्म वा०।

बेवाहियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेवाहियोड़ी)

बेवाही—देखो 'व्याई' (रू. भे.)

उ०—१ थयो सूरंग वीवाह, रंग सूरंग रह्यो बेवाहियां।
—श्रीपालरास

उ०—२ स्वजन बेवाहिय धूरइं, झूरइं निगहिय नेह। लेई ग्रचेत ऊपाडिय, माडिय ग्रांणीय गेहि। —जयसेखर सूरि

बेवियोड़ो—१ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बेवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेवियोड़ी)

बेसंभाळ—वि० [ग्र. बे+राज.संभाळ] बिना चेतना का, बेसुध, चेतना-रहित।

बेस—सं. पु. [सं. वेशः] १ पहनने के वस्त्र, पोशाक, वेश।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नै कहै छै—हे कंथ। ग्राप भलो भाग नैं जीवता घरै ग्राया। ग्रबै म्हारो बेस धारण करावो। ग्रबै म्हनै ग्रां चूड़ियां सूं लाज ग्रावै छै सो हूं तो हमैं चूड़ियां पैलै जनम भेटसूं। —वी. स. टी.

उ०—२ ग्रेक दिन सिझ्यां रा घोड़ा मायं बैठो बो यूं ई बिरथा तब-हका मारतो हो कै उगनै सरवर री पाळ सूं उतरतो पिणियारयां री भूलरी सामही दकियो भांत-भांत रा सुरंगां भांत-भांत रा रूपाळा उणियारा। रूं रूं में जोबन छळकं। —फुलवाड़ी

उ०—३ पछै समेट खांम कर येली में घात कागळ प्रोहित नुं पहुंचायो। पिरमो एक बेस एक जनांनो ग्रवल, रुपीया सव इतरा प्रोहित नु बिदा रा मेलिया। मण एक सीरावणी मारग री मेली। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ कपड़े ग्रादि पहनने या पहन कर सजने या किसी ग्रन्य को पहना कर सजाने का ढंग, तरीका।

उ०—१ ग्रर ग्राप न हालो तो कन्या नूं तवणो हुई जाणि चढाउतां पुरोहित रो घरणी दिवाई मोनूं बींद रो बेस कराइ साहस थी ग्रांणियो तो भी दिल्ली रा दूत दसोर पूगा जांणि पाछो ही पलाईजै। —व. भा.

उ०—२ पछे नरबद ग्रांनो घोड़े-बहल बेस ने जैतारण था कोस १ ग्ररट छै तठै रहो। सु सुपयारी ग्रावण री मजूरणी रो बेस करने मायं घड़ो लै नीसरी। —नैणसी

उ०—३ ग्राज निसह म्है चालिस्यां, बहिस्यां, पंथी बेस। जउ जीव्या तउ ग्राविस्यां, मुया त उणि हिज देस। —ढो. मा.

क्रि. प्र. करणो, कराणो, देणो, धारणो, पहरणो, पहराणो, बदळणो, बदळाणो, लेणो।

३ रंगमंच के पीछे का स्थान।

४ भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश द्वार।

५ वेश्याग्रों का मोहल्ला।

६ वेश्या का घर।

७ शरीर, देह।

उ०—१ ग्रावइ ग्रावासि ग्रापणइ पगि लूहंता केस। पुण्य हुई तु पामीई, बेस्या केरु बेस। —मा. कां. प्र.

उ०—२ सुदरभाल विसाळ, अलक सम माळ अनोपम। हिन प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम। करा धाम नव कंज, नयरण अभिराम सनेही। कवि कपोल ग्रीवा त्रिरेख, छवि बेस अछेही। निरखंत मत सनमुख निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान ओ ध्यान कर। —रा. रू

८ स्थिति, हालत, अवस्था।

९ रूप, सौन्दर्य।

१० रूप, स्वरूप।

[सं. वेश] ११ एक दानव जो आयु राजा को रक्षार्थ देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि. —१ विशेष. श्रेष्ठ बढ़िया।

उ०—१ थे वस्तुग्रां आपरै हीज लायक छै. म्हारै लायक नहीं तद रावजी राखी। घोड़ो एक निपट बेस थो सो रावजी राखियो।

—ठाकुर जैतसी री वात

उ०—२ कुतक खिदर घव काठ रा, खिदर पजावण बेस। तो पिण हाजर राखणा, घण मेलचा हमेस। —बां दा

उ०—३ दिस बतावो ब्रहन कूं. तो मुख पाऊं बेस। भिळिया भ्रांती भागसी, जासी सबै मन देस। —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—४ सदा मनोरथ सुभ करण, वांणी ग्रम्यर बेस। सारा पहली समरियै, गवरी पुत्र गणेस। —पनां

२ देखो 'बेसर' (रू भे.)

उ०—सुकीर नासिका सरूप, बेस रीत राजियं। सुर गुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियं। मुखं प्रकास हास मद, ओपमा उजासयं। उदं अरद्ध भांणए, मयकजं प्रकासयं। —सू. प्र.

३ देखो 'बेस्या' (रू भे.)

उ०—मुहनउ लेई सवि समुदाय आव्यु जिहां बइठउ छइ राय। अप आयस लही वर बेस रंगगणि कीधउ प्रवेस। —हीराणंद सूरि

४ देखो वेस्य' (रू भे)

उ०—कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चव वेद चवंदा। किणज विसाऊ कुण बेस. कुण सूद्र कहंदा। —केसोदास गाडण

५ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—१ आळस वाळा राजवी घर रा घर मैं दारू पी रोटी खाय सूय रैणो. घर री कांम परोपकार, वीरता, देस सेवा आदि आछा कांम न करणा मैं वृथा यूं ही बेस ऊमर गमावै है। —वी. स टी.

उ०—२ हैम बरनी हेम गिर. बाली लहवै बेस। कथ विहूंणी कांमणी साची कहि संदेस। सांची कहै संदेस वेग मीठा कळ, राज मुदै पर हच्च रंग महिलां धक। —मा वचनिका

उ०—३ हूंसै सारी नाग नारी उवारी विहारी हूंत, सवारी पधारी बळै लेती भाजै सूक। कठै पा री बेस असी जुद्धकारी वाता करै, फणांधारी दीठो न छै भागकारी फूक। —मुरारीदास बारहठ

उ०—४ सैसव तनि सुखपति जोबण न जाग्रति, बेस संधि सुहिणा सु वार। हिव पळ पळ चढतो जि होइ सै, प्रथम ग्यांन एहवा पार। —वेलि.

उ०—५ देवी रंग नीलमणी सीत रंग, देवी रूप अवार वीरूप अंग। देवी बाल जूवा व्रध बेस बाळी, देवी विस्व रखवाळ थोसां भुजाळी। —देवि.

रू. भे.—वेस, बंस, वेख, वेसि, बंस।

बेसऊर - देखो 'वेसऊर' (रू भे.)

बेसऊरी - देखो 'वेसऊरी' (रू. भे.)

बेसकार-स. पु. [स वेषकार] किसी वस्तु की सुरक्षार्थ उस पर लपेटा हुआ कपड़ा।

बेसकीमत, बेसकीमती—देखो 'वेसकीमती' (रू. भे)

बेसजुवति बेसजुवती - देखो 'वेसयुवती' (रू भे.)

बेसण—देखो 'बेसण' (रू. भे.)

बेसणियो—स. पु.—बेसन, नमक मिर्च आदि के घोल को पका कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

बेसणी—देखो बेसणी' (रू भे.)

बेसणो—देखो 'बैसणो' (रू. भे.)

बेसणो, बेसबो - देखो वंठणो, वंठबो' (रू. भे.)

उ०—काम पडियां वगनर टोप पेरवा री आखडी। केसरिया वागा विना पेरवा री आखडी। दात रा चुडा विना बडारण रावणी आखडी। चुडवेल बेसवा री आखडी। गाया री घासमारी लेवा री आखडी। —रा. सा सं.

बेसणहार, हारो, (हारी), बेसणियो — वि०।

बेसिग्रोडो बेसियोडो, बेस्योडो—भू० का० कृ०।

बेसोजणो, बेसोजबो —भाव वा०।

बेसधर—सं. पु. [सं. वेशधर] जैनों का एक संप्रदाय, छद्मवेषी।

बेसन—१ देखो 'बेसण' (रू. भे)

२ देखो 'विरगु' (रू. भे.)

बेसनर बेसन्नर—देखो 'वंस्वानर' (रू भे.)

उ०—१ बेसनर भी लकडी लोह पाखांण लुकाए।

—केसोदास गाडण

उ०—२ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर, काम बांण प्रहिय करगि। वळि रितुराइ पसाइ बेसन्नर, जण मुरडीतो रहै जगि।

—वेलि.

बेसनब—देखो 'बेस्णव' (रू. भे.)

बेसबधू—देखो 'बेसबधू' (रू. भे.)

बेसबर—देखो 'बेसबर' (रू. भे.)

बेसबरी—देखो 'बेसबरी' (रू. भे.)

बेसबार—देखो 'बेसवार' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांत खरगोस होसनाक बणावै छै। मछळांद मिटा-यजै छै। नान्हो छून देगचां में घातजै छै। माहै **बेसबार** हल्द घणा सूंठ मिरच जायफळ तज लांग घातजै छै। —रा. सा. सं.

बेसब—देखो 'बेसबर' (रू. भे.)

बेसबो—देखो 'बेसबरी' (रू. भे.)

बेसभूसा-सं. स्त्री. [सं. वेषभूषा] १ किसी देश, संप्रदाय, जाति आदि के द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक २ शरीर की सजावट हेतु पहने हुए कपड़े। (अ. मा., ह. नां. मा)

बेसम—देखो 'वेस्म' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बेसमझ—देखो 'बेसमझ' (रू. भे.)

बेसमझी—देखो 'बेसमझी' (रू. भे.)

बेसमण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.) (जैन)

बेसयुवति, बेसयुवती-सं. स्त्री. [सं. वेशयुवती] वेश्या, रण्डी।

रू. भे. वेसजुवति, वेसजुवती।

बेसर, बेसरु-सं. स्त्री. [सं. वेश्वर या वेसर:] १ खच्चर।

उ०—१ अलूखांनि जण साथि मोकल्या, देखाडयूं मेल्हांण। घोडा हाथी ऊंट पोठिया, **बेसर** पूठि पल्हांण। —कां. दे. प्र.

उ०—२ पाडा गाडा पोठिया, वली **बेसरां** वादि। भार भरियां भल संचरइ, अमल चढ़ियां उन्मादि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बेसर' (रू. भे.)

उ०—१ आभा झळपट अंग क चंदै चोरियां, दरियाई धुज देह धरै डग धीरियां। लटकण झोला लेह क **बेसर** बंकियां, भरिया भूखण भार क लचकै लंकियां। —र. हमीर

उ०—२ कांइ नाम की जातियां, सुंदर बोहत सरूप। नख चख दीसं अति चतुर, वल **बेसर** छळ रूप। —पनां

उ०—३ नाकां नो नथड़ी लावजो, म्हांरै नाकां नो नथड़ी लाव। म्हांरै **बेसर** फूल लगावो हो, म्हानै खेलण द्यो गनगोर। —लो. गी.

उ०—४ तन मोड़ वांकी निजर त्रिपुरा, सलज चढ़ियां सोहळी। सळ नाक चाढै विकट सोहै, अहर **बेसर** अळवळी। —मा. वचनिका

उ०—५ सुभ नाक **बेसर** जड़ितस जौवन, असुर पास अळूझऐं। सिणगार असुरां छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झ ए। —मा. वचनिका

बेसरज—देखो 'बेसरज' (रू. भे.)

बेसरम—देखो 'बेसरम' (रू. भे.)

बेसरमी—देखो 'बेसरमी' (रू. भे.)

बेसलूक, बेसलूग-वि० [फा. बे+सलूक] १ बिना ढंग का, तौर-तरीके रहित।

२ बिना सम्बन्ध या रिश्ते।

३ अव्यवहार।

४ बेचैन, घबराया हुआ, उद्विग्न।

उ०—अबै कुंभो जीव रो उकराळयो, ऐकल असवारो मंडोवर गयो। तरां रिणमलजी माळियै बैठा अळगां सुं कुंभा नै आवतो ओळखियो। तितरै आयो रिणमलजी सुं मिळियो। कुंभो गळगळो हुवो। तरां रिणमलजी पूछियो—अबार एकलो **बेसलूक** सो क्यूं? खातणी वाळां विगाड़ो दीसै छै। —राव रिणमल री बात

बेसवण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.)

बेसवधू – देखो 'बेसबधू' (रू. भे.)

बेसवनिता-सं. स्त्री. [सं. वेशवनिता] वेश्या, रण्डी।

बेसवा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.) (जैन)

बेसवाद—देखो 'बेस्वाद' (रू. भे.)

बेसवानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

बेसवार-सं. पु. [सं.] पीसे हुए नमक, मिर्च, लौंग, हल्दी, धनिया, काली मिर्च आदि मसालों का चूर्ण।

उ०—१ तै मैं घणो नान्हो कुनियो मांस मदी घाव कढाई में तळजै छै। **बेसवार** मसाला घात उहां मांडां में घातजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ मांस रंधाणां देगचा **बेसवार** अपारा, सूळा त्यार किया सही जाजै अन झारा। आया थाळ मिठाइयां पकवांन अझारा, भोजन छत्तीस छतीस भांत जीमै जुग सारा। —पा. प्र.

उ०—३ आगै समघड़ो हथियार खोल नै बैठो छै। ससो एक रजपूत नूं दीयो। कह्यो, 'सखरो बणावो'। उण कह्यो, "भलां, जी' तठै रजपूत **बेसवार** ससै नूं दे अर अंगीठो जगायो छै। —पीठवै चारण री बात

उ०—४ तठा उपरांत मोदियां नै हुकम हुवो छै। मुंजाई सारू सारी हो वसत सीधो मीठांण **बेसवार** सरब लेय रातो नाडो चाल-ज्यो म्है सिकार रम उण नाडै आवां छां। —रा. सा. सं.

उ०—४ अरं जीमण नै पंचधारी लापसी मोकळी मंगलीक कीधी। घणा दाळ भात बणाया। घणा बेसवारां रांधिया, सालणा बणाया। जीमण तयार हुवो। तरा भाईदान जैतसोजी कनै गयो नै कह्यो, पधारोजे, रसोड़ो तयार हुवो छै। —जैतसी ऊदावत री बात

२ पहले हट्टिया अलग करके पीस कर मसाले मिला कर पकाया हुआ मास।

रू. भे.—बिसवार, बेसवार, बेवार, वेसबार, वेसबारो, वेसार।

बेसवारियोखीच-सं. पु. [सं. वेसवार+कृशर] बाजरी के साथ कुछ मोठ कूट कर उनके छिलकों को अलग कर फिर उबालने समय नमक, मिर्च, धनिया आदि 'बेसवार' एवं काचरियों के छोटे-छोटे टुकड़े मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।

रू. भे.— वेस्वारियोखीच, वेसवारियोखीच, वेस्वारियोखीच।

बेसवारी—देखो 'बेसवार' (रू. भे.)

उ०—बेसवारी वळांहि, सांजमणी हुंता सतां। खरा न खाधा जाहि, बिस भरीया वेसूर रा। —पीठवं चारण री बात

बेसवास-सं. पु.—१ वेश्या या रण्डी का घर।

२ देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

बेसस्त्री-सं. स्त्री.—वेश्या, रण्डी।

बेसांमी, बेसांमो—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

उ०—मुहम प्रकोप उदेपुर माथै, सातंइ महण थया किर साथै। लाधां जळ बेसांमी लीजै, छोजै जतु प्रजा पुर छोजै। —रा. रू

बेसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—महि तु सूपडा रूपइं थई, बेसा ..पंजरि बइठउ जई। राज-कुंअरि हिव अतिहि अलजई, महतो आगलि कहिवा गई।

—हीराणंद सूरि

बेसाड़णो, बेसाड़बो—देखो 'बंठाणो, बंठावो' (रू. भे.)

बेसाड़णहार, हारो (हारी), बेसाड़णियो—वि०।

बेसाड़ियोड़ो, बेसाड़ियोड़ो, बेसाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेसाड़ीजणो, बेसाड़ीजबो—कर्म वा०।

बेसाड़ियोड़ो—देखो 'बंठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसाड़ियोड़ी)

बेसाणो, बेसाबो-क्रि. स.—१ उत्पन्न करना, व्याप्त करना।

उ०—ज्यूं कोइ रं स्रद्धा बेसाणीनें कहै हिवै तू गुरु कर। तब तै कहै दोय चार जणां नै पूछ सूं तथा आगला गुरु नै पूछ सूं। तै कहसी तो गुरु कर सूं। जब जांणणी इणरं स्रद्धा पक्की बैठी नहीं। —भि. द्र.

२ देखो 'बंठाणो, बंठावो' (रू. भे.)

उ०—वेड़ी घाली बेसांणियौ रे, राहु ग्रह्यौ जिम चंद। ओरौ कोई चालियौ, सिंह पड़्यौ जिम फ़ंद। —प. च. चौ.

बेसाणहार, हारो, (हारी), बेसाणियो—वि०।

बेसायोड़ो —भू० का० कृ०।

बेसाईजणो, बेसाईजबो—कर्म वा०।

बेसानर—देखो 'वेस्वानर' (रू. भे)

बेसायोड़ो—भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, व्याप्त किया हुआ।

२ देखो 'बंठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसायोड़ी)

बेसार-सं. पु.—विश्वास, भरोसा, एतबार।

वि०—१ विना सार का, तत्वहीन।

२ बिना तलवार वाला, जिसके पास तलवार न हो।

३ बिना चर्बी का, चर्बीहीन।

४ देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

बेसावणो, बेसावबो—देखो 'बंठाणो, बंठावो' (रू. भे)

बेसावणहार, हारो (हारी), बेसावणियो—वि०।

बेसाविय़ोड़ो, बेसावियोड़ो, बेसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेसावीजणो, बेसावीजबो——कर्म वा०।

बेसावियोड़ो—देखो 'बंठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसावियोड़ी)

बेसास—१ देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—मेछं वहतं मेलिया, दूत कमंधां पास। साहरे रहिया आज लग, थे म्हांरै बेसास। —रा. रू.

उ०—२ वळं रूक्मइयं कहै छै। इतना राजवंस छोडिनै अहीर सूं सगाई करै। सू बूढा हुआं को बेसास को मत करो। देखो माता पिता कितरउ चूकं छै। —वेलि टी.

उ०—३ कांम सूंप नंह कीजिए, बिदर तणो बेसास। रांणं कीधो 'राजसी', हुओ जगत में हास। —बां. दा.

उ०—४ मन रो उदास बेसास न जिय रो, खांन पांन सुख नहीं बण घाळो। कद मिळसी रसराज सांवळड़ो, बनमाळी गोकुळ रो ग्वाळो। —रसीलंराज रो गीत

२ देखो 'वेसास' (रू. भे.)

उ०—पीर न को वेपीर सो, श्रास न जिसी निरास। सकल न कोई अकळ सा, सास न सा बेसास। —अनुभववांणी

बेसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—१ बेसासघात लै विसतरी, सळी सळी कुळ सोधिया। सुपनंख्या वेध कीयो संबळ, रांवण रांम विरोधिया।

—सुरजनदास पूनियो

उ०—२ माल खायो ज्यांरौ त्यांरौ रत्ती होयं नायो मोह, कुबदी सूं छायो भायो नहीं रमाकंत । बेसासघात सूं कांम कमायो बुराई वाळो, माजनो गमायो नींबावतां रै महत । —कविराजा बांकीदास

बेसासड़ड़, बेसासड़ो—देखो 'विस्वास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—करहा तुझ बेसासड़े, मे विसारिया सह्काज । रखे बीच वासो करै, मारू न मेळै आज —ढो. मा.

बेसासणो, बेसासबो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासबो' (रू. भे.)

उ०—१ तठै कालबूत हसतणीं रै फरस करि नै छिबितरी खाड मांहै पड़ै छै । पछै लोह सांकल रा प्रास नाखिनै तिकै हाथी पकड़ीजै छै । इणी भांति रा सीखलो गजराज बेसासनै आंणिया छै । तांह नूं घणा मलीदा, बेसवार, मोगर दे दे नै पाटि आंणिनै सभाया छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ सुजु करै अहीरां सरिस सगाई, ग्रोलाडै राजकुळ हता । विघपणै मति कोइ बेसासौ, पांतरिया माता इ पिता । —वेलि

उ०—३ प्रमेसूर ग्रंक तणै परमांण. मंडे घर 'छाडा' वेख मंडांण । बेसासे दाखे कोल वचन, मारू राव ग्रोह धरै वडमन । —गो. रू.

उ०—४ जळ मांहै जगदीस, विढे मयकोट विभाड़े बतळावे बेसासि, पछे दांणवां पछाड़े । —पी. ग्रं.

उ०—५ तारां खड़ियां रा साथ नै परतीत ग्राई । सगां रा नांम-ठांम ठीक पहुना, बेसास्या । तरै खड़ियै ग्राईदांन ग्राय मुभराज कीयो । तरै जैतसीजो घोड़ा सूं उतरिया । बांह-पसाव करिनै मिळिया । —जैतसी ऊदावत री बात

बेसासणहार, हारौ (हारी), बेसासणियौ—वि० ।

बेसासिग्रोड़ो, बेसासियोड़ो, बेसास्योड़ो—भू० का० कृ०

बेसासीजणो, बेसासीजबो—भाव वा. ।

बेसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ रिणमल्ल राउ कूंभेण राणि, बेसासि चूकि वूहउ विनांणि कूंभेणि कूड़ कीयउ कदम्म, मारियउ 'रहण' साख्यात ध्रम्म ।
—रा. ज. सी.

उ०—२ स्त्रियें सपुत्रे बंघवें समेत्रे सगे, न क्यों संमर्यं न हुवे सांमासि । वाट वसना पड़े न को वाट बाहर चड़े, ती वसती तणौ किसौ बेसासि । —तेजोजी चारण

बेसासियोड़ो—देखो 'विस्वासियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसासियोड़ी)

बेसासो—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—वरसां सो जीवण की ग्रासा, पण एक घड़िय नहीं बेसासा । समयसुंदर कहइ ग्रथिर संसारा, जनमि जनमि जिन ध्रम ग्राधारा ।
—स. कु.

बेसि—१ देखो 'वयस' (रू. भे.)

२ देखो 'वेस' (रू. भे.)

उ०—ग्रन्न उदक पय परिहरि, ग्राभरणां ऊवेलि । वकुल त्वचा वीटि करि, तरुणी तापस बेसि । —मा. कां. प्र.

३ देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—बेसि पभणइ वेसि पभणइ 'मंत्रि सुणि वात । ए सहूइ धन ताहरउं रहिय भोगवि भली परि, मंत्रीसर इम सभली वचनबद्ध रहिउ तसु घरि । —हीराणंद सूरि

४ देखो 'वेस्य' (रू. भे.)

बेसियोड़ो—देखो 'बैठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसियोड़ी)

बेसो—वि.—१ वेस धारण करने वाला या वेसधारण किया हुआ ।

२ देखो 'बेसी' (रू. भे.)

उ०—१ इण कारण इण सामाजिक रूप री मिनख नै जितो बेसो बोध होसी वो उतो ई समरथ बणसी । —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारो ग्रो डिढ विस्वास के धरती माथै मिनख सूं बेसो कीं चीज कोनीं । —फुलवाड़ी

उ०—३ केई जणा मिनकी रै ग्रगट छियां ऊंदरा हड़बड़ै ज्यूं कांनी कांनी न्हाटा । केई डावड़ियां नै तो डर रै कारण जाफ ग्रायगी । विडरूपता बिचै ई वांनै भूत रो डर बेसो लागो । ग्रो खगड़ो छियो तो कांई छियो ।

—फुलवाड़ी

बेसुध—देखो 'बेसुध' (रू. भे.)

उ०—भली भांत पहसारो किया नै दारू पावता गया । तरै सारा लोटपोट बेसुध हुवा तरै सड़। बेउ ग्राडा देनै लगाइ दिया । कत-राहैंक बळ मूवा बाकी रा फळसा रै मूंहडै ग्राया सु खोलो खटका विगर मारिया ग्रोर साथ डूंगर रा घरां ऊपर मेलियो ।
—नैणसी

बेसुद्धि, बेसुधी—१ देखो 'बेसुध' (रू. भे.)

२ देखो 'बेसुधी' (रू. भे.)

बेसुमार—देखो 'बेसुमार' (रू. भे.)

उ०—कळहिया कमंध ग्रासुर सकुद्ध जदुवंस भांण फिर भांण जुद्ध । ग्रोळा कि ग्रतुळ गोळा ग्रपार, वरखंत वहूं दळ बेसुमार ।
—रा. रू.

बेसुर, बेसुरो—देखो 'बेसुर' (रू. भे.)

बेसुवाद—देखो 'बेस्वाद' (रू. भे.)

बेसूर—देखो 'बेसऊर' (रू. भे.)

उ०—बीसळदे बेसूर बाटी पण खाधी नहीं। कीधी घात कबर, माया उण में मोतिया। —रायसिंह सांदू

बेसूरत—देखो 'बदसूरत'।

बेसू'रौ—देखो 'बेसऊर' (अल्पा, रू. भे.)

बेसूल, बेसूलो—वि०—१ निष्कंटक।

२ बिना दर्द।

उ०—बेसूल फूल-बारां विहार, भालं पड़ंन ग्रोले भंमार। संग्राम लोह वाहै सनडु, विपरित धाउ ऊबळा-वडु। —गु. रू. बं.

३ अपार, असीम।

उ०— छह दरसन छिनवें पाखडा, एक न जाणे नांव अलंखा। केना वेल पालि नर भूला, विखं करम करिग्या बेसूला। —अनुभववांणी

४ अमर्यादित।

बेसोटौ—देखो 'वेसोटौ' (रू. भे.)

बेसौ—देखो 'वेसौ' (रू. भे.)

उ०—घर बेसा घरवेस कहाया, घिल घरवेस मता नहीं पाया। हाथे ऋडा गले वागलो, घरि छरि मांगे भीख ग्रागलो। —अनुभववांणी

बेस्टक—वि. [सं. वेष्टक] १ चारों ओर से ढकने या आवृत करने वाला।

२ घेरा डालने वाला।

बेस्टकापथ-सं. पु. [स. वेष्टकापथ] एक प्राचीन शिव स्थान। (पुराण)

बेस्टण, बेस्टन-सं. पु. [सं. वेष्टनं] १ कोई वस्तु आदि लपेटने का कपड़ा।

२ लपेटने की क्रिया या भाव।

३ घेरने की क्रिया या भाव। (४) पगड़ी, साफा।

५ नृत्य का एक प्रकार का भाव विशेष। (६) घेरा, अहाता।

बेस्टित-वि. [सं. वेष्टित] १ लपेटा हुआ. २ लिपटा हुआ. ३ घेरा हुआ. ४ ढका हुआ, आच्छादित।

उ०—जगत मात जननी जग जांनी, मदिरा रुधिर छाक मन मानी। बेस्टित अरुन उरन के अंबर, तप मुख मनहु प्रात रातंबर। —मे. म.

बेस्टितकरण-सं. पु.—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष।

बेस्म-सं. पु. [सं. वेश्म] घर, गृह, मकान।

रू. भे.—वेस्म वेसम।

बेस्य-सं. पु. [सं. वैश्य] १ व्यापार करने वाला, व्यापारी, बनिया।

२ व्यापारिक समुदाय। ३ वैश्य जाति।

४ वैश्य जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—बइस, बईस, बयस, बिस, बैस, वइस, वईस, वेस, वेसि, वैईस, वैस, वैस्य।

बेस्यांगना-स. स्त्री. [सं.] वेश्या वृत्ति करने वाली स्त्री।

बेस्या-स. स्त्री. [सं. वेश्या] १ वह स्त्री या स्त्रियों का वर्ग जो धन लेकर संभोग कराने का व्यवसाय करती हैं। पातर, रण्डी, वेश्या।

उ०—१ खेरवा में स्वांमीजी कनै ग्रोटो स्याल उंधी ग्रवळी बोल्यो थे स्रावक नें दियादे पाप कहो नें बेस्या नें दियांई पाप कहो छो. इण लेखे स्रावक अनें बेस्या सरीखा गिण्या। —भि. द्र.

उ०—२ सपरिकरि संध्या समइ, रथि बइसीनइ राय। वेख धरी विवहारिया, बेस्या नइं घरि जाय। —मा. कां. प्र.

वि० वि०—वेश्याओं के कई वर्ग होते हैं—(१) पातर (२) भगतन (३) रामजनी (४) हुरकनी—ये हिन्दु हैं तथा (५) कंचनी (६) सावंत ये मुसलमान हैं। धन लेकर संभोग कराना इन सब का सामान्य व्यवसाय है। परन्तु इनके रहन-सहन एवं व्यवसाय करने के कुछ अलग अलग तरीके हैं इस कारण ये वर्ग एक दूसरे से कुछ भिन्नता रखते हैं।

(१) पातर:—इनके बाप, भाई आदि जागरी होते हैं और इनकी उत्पत्ति राजपूतो से मानी जाती है। जागरी लोग अपनी बहन-बेटियों से संभोग का कार्य करवाते हैं। इनकी औरतें यह कार्य नहीं करती। कंवारी लड़की से व्यवसाय कराना पाप समझा जाता है। इसलिये जिस लड़की को पातर बनाना चाहते हों उसके विवाह की रस्म छोटी ऊम्र में ही गणेशजी के साथ पूरी कर दी जाती है और उसके जवान होने पर ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ इसका प्रथम संभोग करा दिया जाता है। उस रात गाना बजाना व उत्सव मनाया जाता है उसके बाद उसका व्यवसाय चलने लगता है। इसके अतिरिक्त ये कुछ गाना-बजाना व नाचने का कार्य भी करती हैं। इस कार्य की तालीम इन्हें मीरासी लोग या भगत देते हैं। किसी मुसलमान के साथ संभोग कराने का इनमें प्रतिबंध है। विधवा औरतें किसब का व्यवसाय नहीं कर सकती। इनकी पोशाक पाजामा, और लंबा अंगरखा तथा सिर पर दुपट्टा है। कभी कभी घाघरा अंगरखा भी पहनती हैं। इनका धर्म शाक्तिक है। खान-पान राजपूतों जैसा है। धोबी ढोली, मोची, बांभी, महत्तर और मुसलमानों से ये परहेज करती हैं।

(२) भगतन:—इनकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से मानी जाती है। इनके विवाह रस्म किसी गरीब साधु के साथ फेरे दिरवा कर पूरी करवादी जाती है। साधु को कुछ धन देकर उससे यह बात तय करवा ली जाती है कि वह इस लड़की का कोई दावा नहीं करेगा। ऐसा साधु यदि न मिले तो पातरियों की तरह इनके विवाह

की रस्म भी गणेश जी साथ फेरे दिरवा कर पूरी करादी जाती है। यह 'कंवारपना' उतारना होता है। कंवारी लड़की से किसब करवाना इनमें भी वर्जित है। विवाहित औरतें किसब का व्यवसाय नहीं करतीं। पातरियों की तरह ये भी गाना-बजाना व नाचने का कार्य करती हैं परन्तु इस कला में पातरियां ज्यादा शिक्षित होती हैं। पोशाक इनकी भी पातरियों जैसी होती हैं। संभोग कराने में मुसलमानों से परहेज नहीं करती परन्तु उनके हाथ का खाना-पीना नहीं करती। दारू, मास, गाजर, सलजम, प्याज व लहसुन से परहेज करती हैं। धर्म इनका वैष्णव है, इष्ट हनुमानजी का रखती हैं।

इन दोनों के अलावा हिन्दुओं में रामजनी और हुरकनी नामक वेश्याओं के दो वर्ग और हैं पर उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

(३) कंचनी:—ये मुसलमान रंडियां हैं। ऐसा कहा जाता है कि पहले इनको 'कंजरी' कहा जाता था, परन्तु बादशाह अकबर ने कंजरी के स्थान पर कचनी नाम रख दिया। इनके भाई-बाप आदि कंचन कहलाते हैं। इनका रहन-सहन मुसलमानी ढंग का होता है। औरतें परदा रखती है और लड़कियों को रण्डी बनाने के लिये कलावतों से गाने-बजाने व नाचने की तालीम दिलाई जाती है। पातरियों और भगतनों की तरह इनका भी 'कुमारपना' उतारा जाता है पर कोई मजहबी या वैवाहिक रस्म पूरी नहीं की जाती। पातरियों की तरह ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ लड़की का प्रथम सभोग करवाया जाता है। उस रात लड़की को दुलहिन बना कर उस आदमी के पास भेज दिया जाता है, सुबह अपनी बिरादरी में मिठाई बांटी जाती है।

कचनियां सिर खोल कर नाचतीं हैं। कभी-कभी बरातों में नाचने भी जाती हैं। गाने-बजाने व नाचने में ये पातरियों और भगतनियों से अधिक दक्ष होती हैं। अदाऐं दिखा कर ग्राहकों को फंसाना और लूटने में चालाक होती हैं। गजल और ठुमरी इनका खास गाना है। पोशाक इनकी अंगिया, कुरती, पजामा और दुपट्टा है। इनका चूड़ा काच का होता हैं।

कंचनी के अलावा मुसलमान वेश्याओं का एक 'सावंत' वर्ग और होता हैं, परन्तु उसका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

इन सब के अतिरिक्त इसी प्रकार का व्यवसाय करने वाली एक किसबन या कसबन नामक कौम है। जो पहले हिंदू थी मगर अब मुसलमान है। ये छोकरियों को मोल लेकर पोशीदा कसब कराया करती थी। एक बार एक मुसलमान छोकरी ने इस काम के लिए मना किया एवं परदे में बैठ कर कुरान पढ़ने लगी और दूसरी छोकरियां इसको परदा खोल कर बदनीयति से देखती थी तब इसने बददुआ दी कि जाओ तुम्हारे कसब चौड़े आ जाये एवं नर्मी हो जाय। उसी दिन से ये बाजार में कसब कमाने के कारण कसबन या टकियाई या टकियारी कहलाने लगी।

मारवाड़ में गुजरात से उस समय आई जिस समय वहां के हाकिमों के अहदी मारवाड में आते थे। इनकी खांप चौहान, चांपावत, सोढ़ा, भाटी आदि है। ये पहले रामदेवजी को मानती थी और अब खुदा आदि का नाम लेती है एवं मुसलमानी ढंग बरतती है। इनके नाम हिंदुओं जैसे होते हैं। और इनकी पोशाकें रंडियों व ग्रहणियो जैसी होती हैं। ये गाना-बजाना नहीं जानती। ये शराब पीती हैं। किन्तु सूअर एवं झटके का मांस नहीं खाती। ये चलते फिरते आदमी को फंसा लेती है। इनकी लड़कियों की शादी तेलियों, घांचियों आदि की उन स्त्रियों के लड़कों से की जाती है जो मुसलमानों के घर घुस जाती है। इनकी ब्याही स्त्री कसब कमाने का काम नहीं करती और अगर करती है तो वह जाति-च्युत कर दी जाती है। जाति-च्युत औरत को जाति में लेने के लिए अजमेर भेजा जाता है। वहां उसे गुनहगारी में पंचों का हुक्का भरना पड़ता है।

२ स्वर्ग-लोक की अप्सराएं।

उ०—देरांणी बचन—आज झगड़ा ऊपरै जावतां भेस करियो छै। कुसम फूलां री मोड़ अनै वसण कपड़ा रंगिया है। केसर मैं नेह न देह सदैव जो नेह म्हां सूं राखता हा सो भी आज नहीं अरथात म्हारा सूं ही सनेह छोडियोड़ा होवै ज्यू सोह रहिया छै। इण वास्ते म्हने तो तुलै है की वाभीजी साहब म्हारै पतो लोड़ी सोक वसावैला अरथात जुद्ध मैं मारीज अपछरा वरसी हूं सत करनै जासूं जितरै लोड़ी सोक धकै मिळसी। जेठाणी कहै—हे देरांणी तूं उण कुळ मैं उपजी है जठै थारै माता पिता रा दोनूं ही पख विना दाग रा अरथात निकलंक है-सो कांई मूडो मो वेस्या ही थारो सुहाग खोस लेवै। —वी. स. टी.

रू. भे.—वेसा, वेस, वेसा, वेसि, वेस वेस्या।

वेस्याकार—एक वर्ग विशेष ?

उ०·········गंधिकायरा दोसियकापण सोवरणकार कांस्यकार मणिकार पूगीफनतांबूलिक मालिक सौत्रिक लडुकार कांडुकिकार कराकार वेस्याकार चरमकार मल्लक खलक धांन्यखलक वाटक वाटिका वावी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर। —व. स.

वेस्यारत—वि०—वेश्याओं में अनुरक्त, लीन, वेश्यागामी।

उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैण मांही राज करै। तेथी जुवारी, मांसाहारी, सुरापानी, वेस्यारत, चोर, आखेटी, परदारत रो नांम नहीं। —सिंघासण बत्तीसी

वेस्याहटी—स. पु.—वेश्याओं का मुहल्ला। (सभा)

वेसवण, वेसवण—देखो 'वंसवण' (रू. भे.)

वेसवारियोलोच—देखो 'वसवारियोलीच' (रू. भे.)

वेह—सं. पु. [स. वृद्ध] १ विवाह मंडप (विवाह वेदी) के चारों कोणों (चारों उपदिशाओं—नैऋत्य, मारुत, ईसान एवं आग्नेय) में हरे बांसों के संरक्षण में रखे जाने वाले मटके जो ९–९ की संख्या में ३६ होते हैं।

उ०—१ दिन ऊगो, ताहरां रिणमलजी सीसोदियां रा माथा वाढि चंवरी रचाय, तियां री चोकियां कीवी। तियां ऊपर बरछांरी वेह मांडी। अर सीसोदियां री बेटियां राठोड़ां नूं परणाई। च्यार पोहर दिन वीमाह किया। —नैणसी

उ०—२ तठा उपरांति करि नें राजान हिलांमति नीला आला बंस केलि खंभ सूना गलिआ थका कांचना रा कळसां री वेह करि नें चौरी पधराया छै। हथळेवो जोड़ छेहड़ा बांधिया छै। सुजांणां मन बांधिया छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ विप्र मूरति वेद रतन में वेदी, वंस आस अरजुनमै वेह। अरणी अगनि अगर में इंधण, आहुति घ्रत घणसार अछेह। —वेलि

उ०—४ स्रुति वायक सुभ मंत्र, तवै फल दायक तोरण। पधरायो परणवा, 'अभो' आयो राय अगण। नइरत मारुत निरखि, कूंण ईसांन अगन कसि, बंस हरित जुत वेह, दीप रस नेह प्रसट दिस। —रा. रू.

उ०—५ उच लगन लखि रिखि उरधि, स्रब कूंण आविय सुरचि। रचि कनक वेह सुरंग, ओपंति नव खण अंग। —रा. रू.

वि० वि०—ये मटके (कलश) राजा महाराजाओ के सोने-चांदी के होते थे एवं दूसरों के मिट्टी के होते हैं, जिन पर लाल कपड़े लपेटे हुए होते हैं। इनमे खाजे-मगद आदि डाले जाते है कही सात सुपारियां एवं कुछ मूंग डाले जाते हैं। ये कलश लड़के की शादी में सात, नौ या इग्यारह होते है, जो 'तोरण थंभ' के पास रखे जाते हैं एवं लड़की की शादी में छत्तीस होते है जो विवाह-मंडप (विवाह वेदी) के चारो ओर नौ-नौ के चार समूहों में रखे जाते हैं, इनमें सबसे ऊपर वाले कलश को 'बूझो' कहते हैं एवं हरे बांसों के संरक्षण में चारों उपदिशाओं में रखे जाते हैं एवं आठो दिशाओ में दीपक जलाये जाते है।

२ मंगल-कलश।

३ विवाह-मंडप, विवाह-वेदी।

सर्व.—वह, वे।

२ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—वदं ब्रह्मांण विचारं वेह। —भगोपुरांण

३ देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रासक हमारा वोई, जिन रचना रची सब कोई। वेह कहियें अपरमपारा, ज्यां कूं क्या आंणै संसारा। —स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ हरीया लेख लिलाट मैं, जो वेह वाल्या अंक। सुख दुख भुगतो आपणा, कहा करो गैरक। —अनुभववांणी

उ०—३ वेह समत्थ बणावियो, वाघ डाच जम वत्थ। जिण मांझन लग जाड़ियां, माय जाय गज मत्थ। —बां. दा.

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—कायर लाखां जतन कर, वेह न विसेख पाय। सूरां समहर संहरै, आता जुगां न जाय। —रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

उ०—पोहो अंक वेह प्रमांण, मारू खोटा मंडिया। सक भड़ चढै सिकार, सझै छला सावर सुंवर। —गो. रू.

६ देखो 'वेम' (रू. भे.)

७ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—सुई तणइ वेहि मूंसल घालेवउं करइ, मूंसल फूलावेवउं करइ, ऊभां पीइ, कलकलतां बूकइं, वफातां गिलइ, वलि बांधो कोडियां हणइ लीम्ब तणइ वेहि वाल प्रोइ, मध घायां तेर पडइ। —व. स.

रू. भे.—वेह, वंह, वे', वेह।

अल्पा,—वेहडलौ, वेहडली।

वेहक—१ देखो 'बहक' (रू. भे.)

२ देखो 'बेहक' (रू. भे.)

उ०—हकां वेली हक है, वेहका वेहक। हरीया हेकै हक विन, सब दिन जाहि अन्हक। —अनुभववांणी

वेहकणौ, वेहकबौ—देखो 'बहकणौ, बहकबौ' (रू. भे.)

वेहकणहार, हारौ (हारी), वेहकणियौ—वि०।

वेहकिओड़ो, वेहकियोड़ो, वेहक्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेहकीजणौ, वेहकीजबौ—भाव वा०।

वेहका—देखो 'वेहका' (रू. भे.)

वेहकाणौ, वेहकाबौ—देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

वेहकाणहार, हारौ (हारी), वेहकाणियौ—वि०।

वेहकायोड़ो—भू० का० कृ०।

वेहकाईजणौ, वेहकाईजबौ—कर्म वा०।

वेहकायोड़ो—देखो 'बहकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहकायोड़ी)

बेहकावणौ, बेहकाबबौ—देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

बेहकावणहार, हारौ हारो), बेहकावणियौ—वि० ।

बेहकाविग्रोड़ौ, बेहकावियोड़ौ, बेहकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बेहकावीजणौ, बेहकावीजबौ—कर्म वा० ।

बेहकावियोड़ौ—देखो 'वहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहकावियोड़ी)

बेहकियोड़ौ—देखो 'बहकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहकियोड़ी)

बेहड़ बेहड़उ—१ देखो 'बेहड़' (रू. भे.)

२ देखो बे'ड़ौ' (मह., रू. भे.)

बेहड़ली—देखो 'वेह' (ग्रल्पा, रू. भे.)

बेहड़ाफोड़—देखो 'बे'ड़ाफोड़' (रू. भे.)

बेहड़ु., वेहड़ू., वेहड़ौ—१ देखो बे'ड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसं समइयं मैं भालुवां ग्रांण ग्ररज कीवी छै। भाखरां रा खुडां बेहड़ां मांहां सूवर नीचा उतरिया छै। राजानां देसोता सूवरा सामो वाग लीवी छै। फड़कड़ां फड़वड़ाया जावं छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ छत्रवट तुझ दसरथ नंद ग्रोप ग्रच्छेहड़ा, बाढं खगां रिए दसमाथ कर घड़ वेहड़ा। वळमूळहूंत निकसं वंग ग्राखर वेहड़ा, जुग पद घसं मुगट सहीव सुरपत जेहड़ा। —र. ज. प्र.

२ देखो 'वंसो' (रू. भे.)

उ०—छत्रवट तुझ दसरथ नद ग्रोप ग्रच्छेहड़ा, बाढं खगां रिए दसरथ कर घड़ वेहड़ा। वळमूळहूंत निकसं वंग ग्राखर वेहड़ा, जुग पद घसं मुगट सहीव सुरपत जेहड़ा। —र. ज. प्र.

बेहट, वेहट्ट—सं. पु—राह में चलनेवाले, राहगीर पथिक।

उ०—ताहरा लोकं पूछियौ-भाई कं-रा उचाळा? कह्यौ-जी! फोफाणंद थळ रौ चारण छं। घास चारण जावं छै सात बीस भैंसयां नै बजण पड़ै छै, सू माहरी धरती माहे घास थोड़ा, सू महं-वची मैं घास चारण ग्राया छं, सू भेंस्यां तौ चरत्यां-चरत्या ग्राव्यां वूहचां सू म्है मारा बेहट्ट हुवा सू ग्राघा जास्यां।

—फोफाणंद री वात

बेहटौ—देखो 'बेहटौ' (रू. भे.)

बेहडउ, बेहड़ु, बेहड़ू, बेहडौ—१ देखो वे'ड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ बडरांनी भीड़ हुई पीड़, तुटई चोड़, एक उतावळि दौड़इ छै, एक माथइ बेहड़ु चडइ छं, लूगड़ं तं माथं ग्रोढई छं, बेहड़ू तै फोड़इ छै। एक एक नइ ग्रड़इ छं, धड़ाधड़ पड़इ छं, माहोमाह लडइ छं हवई नांनी लाड़ो, चीखल भी पड़इ ग्राड़ो, बीजांनी भोजइ साड़ी, तं माठं करइ राड़ी, सोक सोकनी करइ चाड़ो······

—रा. सा. सं.

उ०—२ तोरण ग्रोकम ग्राविया, ल्यौ बेहडां वर नारि। वर वेहडु वंकुंठ नायक, वंदियं कर च्यारि। —रुकमणी मगळ

२ देखो 'वंसो' (रू. भे.)

उ०—तोरण ग्रोकम ग्राविया, ल्यौ वेहडां वर नारि। वर बेहडु वंकुंठ नायक, वंदियं कर च्यारि। —रुकमणी मंगळ

बेहण—सं. पु. [सं. विधाता] विधाता, ब्रह्मा।

उ०—नखत्रैत जोघ निरेहणं, बड खत्री सारिख बेहणं। एकल्ल मल्ल दुभल्ल ग्रांकल, कहि कलहि ग्रकलं। —ल. पिं.

बेहणउ, बेहणौ—वि. [सं. वेधनकम्] छेदन करने वाला, बेधने वाला।

बेहणौ, बेहबो—क्रि. ग्र.—१ चालू होना, चालू रहना।

उ०—नै जेसोजी भाडंडै नागोर रै गांव गया। उठै कोट करायनै माणस राखनै रांणा कनै चीतोड़ गया। उठै गांव १४० तांणी मला सोळंकी वाळो दियौ। तठै रांमदास माल्हण री बाप मरियौ। रांणा कुंभा थकां ग्राया पछै ग्री पटो बेहतौ थो। —नैंणसी

२ डरना, भयभीत होना।

उ०—ग्री कहि वेसवटो राजा वीगळदे पास रह्यौ छै। ताहरां बेहतौ सौ उठ उभौ हुवौ नै हाथ जोडिया। ताहरा राजा पूछियौ, "थारं जिका मन माहे बीनती छै सु कहि।" ताहरां वेसवटं बीनती कीवी "माहाराज सलामत, हूं राजा पासै रहूं छुं नै मूळवं किम दुख पाय रावळो बिगाड़ियौ, ईयं वात हूं ज जाणूं।" ताहरां राजा कह्यौ, "तनूं किम न लागो। करसी सौ पासी"

—मूळवं सागावत री वात

३ देखो व्होणौ, व्होबौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रड़िया मुजि पडिया मुंह ऊंधे, सहज कोय देखै सुर-ग्रसुर। ग्राखतो बेह कोय नह ग्रायो, ग्रमरा' जम राव हरण ज उर।

—जोगीदास कवारियो

४ देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—लुगाई रै नावं वसा ग्राभडवा री ग्राखडी। सरसं घोडै चढवा री ग्राखडी। काछी घोडै चढवा री ग्राखडी। पालखी चढवा री ग्राखडी। कपुर बिना पांन चाववा री ग्राखडी लुगाई सु रात मैं एक वार भोग करणी, उपरंत करवारी ग्राखडी। किस-तुरी बिना रहवा री ग्राखडी। फाटा कपड़ा सींवणरी ग्राखडी। साथ नै वल हवा विनां जीमणरी ग्राखडी। वावडी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी। बेहतो नदी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी।

—रा. सा. सं.

५ देखो वेधणौ, वेधबौ' (रू. भे.)

उ०—काया झबकइ कनक जिम, सुंदर, केहै सुक्ख । तेह सुरंगा किम हुवइं, जिण बेहा बहु दुक्ख । —ढो. मा.

बेहणहार, हारो (हारी), बेहणियो—वि० ।

बेहिणीड़ो, बेहियोड़ो, बेहयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बेहीजणो, बेहीजबो—भाव वा., कर्म वा. ।

बेहत—सं स्त्री.—एक पौष्टिक औषधि का नाम ।

बेहद, बेहदी—१ सर्वशक्तिमान्, ईश्वर ।

उ०—१ बेहद बडा गोडिया कोतिक करंदा । —केसोदास गाडण

उ०—२ हरिया बेहद कै घटां, नहीं हदि की प्रास । संसा सोग न ताप तन, नांव निरासा बास । जनहरिया बेहद घरां, घन ग्रनहद की घोर । बाजा राग अपंग धुनि, एक अखंडी टोर ।

—अनुभववांणी

उ०—३ हरीया हदि का जीवड़ा, ता कुं धका अनंत । जांह गुर-पाया बेहदी, लै निरवांण बहंत । —अनुभववांणी

२ वैकुण्ठ, स्वर्ग ।

उ०—१ हरीया हदि आसामुखी, ताहि न करियै हेत । बेहद वास निरास घर, ताकूं तन मन देत । —अनुभववांणी

उ०—२ सहज नांभ कुं धावि के, सुरति चढं असमांन । हरियै निज पद परसिया, बेहद का बसथांन । —अनुभववांणी

उ०—३ हरिया हदि कूं छांडि कै, बेहद पुंहुता जाय । दिल दरगं दीवांन मैं, धका न धूंमी काय । —अनुभववांणं.

३ सत्यस्वरूप, ईश्वर ।

उ०—हदि का रहा हदि मैं, बेहद का बेहद । हरिया बेहद पाय कै हदि भई सब रद । —अनुभववांणी

४ संत, भक्त ।

उ०—हदि बैठा हदि की कहैं, बेद पुरांनां बांचि । हरीया बेहद बावरा, रह्या रांम सूं राचि । —अनुभववांणी

५ ब्रह्म, परब्रह्म ।

उ०—१ बेहद सुख सागर भरयो, पंथ न पग पारेह । हरीया हरिजन पीवसी, हदि सुं हुय न्यारेह । —अनुभववांणी

उ०—२ जनहरिया हदि मैं घणा, सुख दुख भरम संनेह । बेहद कांम न कलपना, अति आंनंद अछेह । —अनुभववांणी

६ ब्रह्मपद ।

उ०—बेहद कूं पुहचै नही, हरीया हदि कै लोक । तन तो, माटी मैं मिल्यो, मन ग्यो सांसै सोक । —अनुभववांणी

७ ब्रह्मसुख, ब्रह्मानन्द ।

उ०—सहज का भेद मोई संत जांणै, हदि कुं जीत बेहद मांणै । सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज पासा ।

—अनुभववांणी

८ अनहद नाद ।

उ०—होतब सा जोतब नही, अरथुं सा न गरथ । बेंन न को बेहद सा, सांम न सा समरथ । —अनुभववांणी

९ योग, समाधि ।

उ०—सहज में साम सुख रास ग्रैसें मिळ्या, रूम मैं रूम ररंकार जागै । दास हरिरांम गुरुदेव परताप तें, हदि कुं जीव बेहद लागै ।

—अनुभववांणी

१० सत्य ।

उ०—हरिया हदि का जीव कूं, बेहद की गम नांहि । कौड़ी केरै नाळ ज्यूं, कै आवै कै जांहि । —अनुभववांणी

११ ज्ञान ।

उ०—१ वचन सुन्या बेहद का, हदि न आवै दाय । हरिया सुन्य मैं साईयां, तां सु ध्यांन लगाय । —अनुभववांणी

उ०—२ जनहरिया हम कुं कह्या, सतगुरु ग्रैसा दाव । हदि का पासा छाडि दे, बेहद सांम्हां आव । —अनुभववांणी

वि.—१ जानने का इच्छुक, जिज्ञासु ।

२ ज्ञानी ।

उ०—हदि छाडि बेहद भया, हरीया रांम हजूर । अखंड उजाळा गैब का, बिसा न ऊगै सूर । —अनुभववांणी

३ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—कह कह थाका सेसनाग बेहद वाखांण । —केसोदास गाडण

बेहदो—देखो 'बहदो' (रू. भे.)

बेहद्द—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ बेहद्द हद्द वागै वणाव, कस्मीर हीर जामै जडाव । जगचगै जोप कसबी अनूप, नीलक्क मसंजर लाल सूप । —गु. रू. ब.

उ०—२ राति सांभीर मारंग डांणे ग्रहै, वाह उपडिया लीण जांणै वहै । हद्द बेहद्द वे वेग पै हैमरां, पाधरा जांण पाहाड उड्डै परां । —गु. रू. वं.

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

बेहन—देखो 'बहन' (रू. भे.)

बेहनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—रहि-रहि बेहनड़ी ! बच न तू रोई, लै लोटिका जळ मुख धोई । फटि रे हिया ! नीवालुवा, पाथरी घड़ियो कै त्रीघट लोह । झरणझलियो फूटइ नहीं, सगुणां प्रीतम तणो विछोह ।

—बी. दे.

बेहनि, बेहनो—देखो 'बहन' (रू. भे.)

बेहनेई, बेहनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बेहमाता—देखो 'बेमाता' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया तन को गोरबो, कहा करै नर देख। बेहमाता वांणी दळै, मोरां लिखतो लेख। —अनुभववांणी

उ०—२ रांम सुणी मोरी बीनती, रांम सुणी मोरी बीनती। मा मोरी, बेहमाता सुणी म्हें पुकार, कुखड़ली सावळ हुई, मा मोरी बेहमाता सुणी म्हें पुकार, कूखड़ली सावळ हुई। —लो गी.

उ०—३ तूं तो नोज मरै, म्हें म्हारा री धीवड़ी, सूरज तो सुणैला थारी वीनती। मा तो बेहमाता सुणैला पुकार, लाय दो नी भंवर, म्हांनै चीणोटियो। —लो गी.

बेहर-सं. स्त्री.—१ काटने की क्रिया या भाव, करतन।

२ भोजन करने की क्रिया या भाव।

बेहरणौ, बेहरबौ—देखो 'बेरणौ, बेरबौ' (रू. भे.)

उ०—मुनिवर बेहर पाछा वल्याजी, लागी छै थोड़ी सी वार। बीजो सिंघाड़ो इहां आवियोजी, देवकी घर-बार। —जयवांणी

बेहरणहार, हारौ (हारी), बेहरणियौ—वि०।

बेहरिप्रोड़ो, बेहरियोड़ो, बेहरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बेहरीजणौ, बेहरीजबौ—कर्म वा०।

बेहराणौ, बेहराबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

उ०—मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर मांहै थी लाय। केसरी सिंह जटा जिसा जी, बेहराया उलटै जी भाव। —जयवांणी

बेहराणहार, हारौ, (हारी), बेहराणियौ—वि०।

बेहरायोड़ो—भू० का० कृ०।

बेहराईजणौ, बेहराईजबौ—कर्म वा०।

बेहरायोड़ो—देखो 'बेरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहरायोड़ी)

बेहरियोड़ो—देखो 'बेरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहरायोड़ी)

बेहरी—१ देखो 'बेहरी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहरी' (रू. भे.)

बेहरौ—१ देखो 'बेहरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहरौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेड़ौ' (रू. भे.)।

बेहळ, बेहल-सं. स्त्री.—१ ढोलियों की एक शाखा विशेष या उक्त शाखा का एक व्यक्ति। (मा म.)

२ देखो 'बेहल' (रू. भे.)

उ०—१ बैरी बेहल वरण रा, दीठा जिण जिण देस। माड़ेचा तैं मेळिया, मामधुवा 'ग्रमरेस'। —बां. दा.

उ०—२ कुण चित्त ग्रवै बेहळां कूंपा, खेड सुपह मन चोज करै। सरवर हंस विनाई सारै, सर विन हंसां केम सरै। —राव कूंपा री गीत

३ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—१ इकां बेहलां रहकलां ऊपर बैसांणजै छै। सू इका वेहलां रहकला किण भात रा छै? गुजराती, सुरती, खंभाइची, भुजनगरी, हिसारी, उजीण रा, बणिया घणी सीसूरा, पीतल लोह दांत रा जड़िया, लाल सलहटी रा गदहरा बिछाया थका, चांदणी ढाळियां थकां ग्रांण हाजर हुवा छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ तठा उपरांत करि नै राजांन विलायति काबली कूतरा; लाहोरीकूतरा, विलाती कूतरा, लोलमी, लोलमो जीभ रा, बलिमैं पूंछ रा, लापड़े कांन रा, दाड़मी दत रा, सिंघ रा हियरा, केहरी कंधरा, झाफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांतरा कूतरा, चीतरा, मुखमली, रेसमी, मुखां रा बणाया, सांकळियां जड़िया, बेहलां पालखियां ऊपरै बैठा बहै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ रिमझिम करतो वा बीदणी बींद री बेहल में चढी। ग्रो बींद किसरो समागियो! कितरो सुखी! मूत रा रूं-रूं मैं जांणै सूळां खुबण लागी। हीया मैं जांणै भट्टी चेतन व्हैगी। —फुलवाड़ी

४ देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—घर पोरस मेछां घणी कांमणि हुंदी कथ्य, सांभळि बैठी सांप्रत महागिरिंदां मध्य। महागिरिंदा मध्य स्रवण कथ सांभळी, बेहळ मदन विरांम थयो तन व्याकुळी। —मा. वचनिका

रू. भे.—बहळ, वीहळ, बीहल, वेहलि, बेहळ, वेहल।

बेहलि-क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—क्रमि क्रमि जांन पहूतिय, सुहविणि, 'भीमपलौ पुरै' गुर हरसिउ मणि। अह सिरि वीर जिणिदह मंदरि, मंडिय बेहलि नंदि सुवासरि। —ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

३ देखो बेगल' (रू. भे.)

४ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

बेहलियो, बेहलो—देखो 'बैल' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—बेहलियांरी फुरणी बाज रही छै। जंग घूघरा बाज रह्या छै। सू बेहलिया किण भांत रा छै? पेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै हालार रा छै सुवालख रा छै, देस-देसरा इकरंग सपेत छै। आंहरी सपेती आगै बगला ही बगसा नजर आवै, मंहदी सूं रंगिया बनात रा मोहरा लालै सूतरी नाथां, रेसम री रास, सींगां पोलळ

री खोळी। बनाती भूलां बातियां रहकलां इकां लड़मलां जूता छै। सू हालियां थकां घोड़ां री मांम पाड़ै। इसा बेहली जूता रहकला इका लड़सल थांगा हाजर हुवा छै। —रा सा. स.

बेहली—देखो 'बेहलो' (रू. भे.)

बेहांण—सं. स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

२ देखो 'विमान' (रू. भे.)

३ देखो 'विहांण' (रू. भे.)

उ०—उदै नमगीस थयो सिसथांण, विजांणूं'ह होसिय केम बेहांण। पयंपत वैण सलै परधांन, जपै मुख कायर फोट जवांन।

—पा. प्र.

बेहाव, बेहांमो, बेहांमो—देखो 'विस्रांति'

बेहा—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रेराकी वडा खेंगक गात बेहा, वणावै कवी करय श्रीहत्थ बेहा। नळी जंत्र में जासु वाखांण नक्खं, उलट्टा कटोरा वणै चख्ख मक्खं। —र. वचनिका

उ०—२ मोमिण होय स आपो मारै, औरयां मारण केहा? मोमिण होय स तुटी सांधै, मरियो दुसमण घातै बेहा।

—समसुदीन

उ०—३ सुरकुळ मुकट अणघट अनट जोह सुज, वयण मुख वाखिया श्रंक बेहा, वया जन दखणा। सांमरथ अभीखण रंक राखै सरणा, तसां आपण सुदत लंक तेहा, रजवट्ट रखणा।

—र. ज. प्र.

बेहार—१ काटने की क्रिया।

उ०—बध वीर किलक्कं हवकोहक्कं, धूप सवक्कं धमचक्कं, वग बार धसक्कं बाधा रंकं, झक झटक्कं रह चक्कं। वग्गी खग धारां बाढ धारां, वार करारां, बेहारां, धड़ तूटै सारां भंग अपारां, जोड़ करारा जूंझारां। —रा. रू.

२ देखो 'विहार' (रू. भे.)

बेहारी—१ देखो 'विहारी' (रू. भे.)

उ०—गायां ग्वाळो कांनो काळो वंसी वाळो, बेहारी, जाजां जोगो प्रिथी प्राजो मोटो श्राजो मोरारी। लका लीधी दानै दीधी सोभा कीधी सवाई, साचां साचो काचां काचो वांणी वाचो वभाई।

—वि. प्र

२ देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

बेहाल—देखो 'बेहाल' (रू. भे.)

उ०—१ रांम सिवरियां बाहिरो, खाली नर खूंमयाल। हरिया अब तो जांणियै, बेमारग बेहाल। —अनुभववांणी

उ०—२ हरिया अपनै ह्वाल में, खलक फिरै खुसियाल। होसी सांनिक बाहिरो, हैंदू तुरक बेहाल। —अनुभववांणी

उ०—३ संत दादू ब्रह्म श्रादू, महा निरपख चाल। दुस्ट तासूं वैर कीनो, मुवो हुय बेहाल। तो हरिनाम जो हरिलाल, है नित भक्ति पख हरिलाल। — भगतमाळ

बेहालो—देखो 'बेहालो' (रू. भे.)

बेहियोड़ो—भू का. कृ.—१ चालु रहा हुआ, चालु हुवा हुआ। २ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ। ३ देखो 'होयोड़ो' (रू. भे.)

४ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

५ देखो 'बोधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहियोड़ी)

बेहो—सं. पु.—बदला, प्रतिकार, प्रतिशोध।

उ०—सो सपूत जे पीछो राखै, दुरजन हीण कदे ना भाखे। वैरां तिणा विसारै बेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा।

—डाढाळै सूर री बात

बें—देखो 'बैं' (रू. भे.)

उ०—महाराज, वीं ठांव बरखा घणी होह पण पांणी ठहरै नहीं। तळसीर सूं भी पांणी नहीं आवै। रुपियो वी बहोत लगायो, सब निसफळ हुवो। ती कारण सो चिंतातुर ही रहै। वी नूं चिंतित देख बैं री दोय स्त्री परम सुंदरी, नव यौवना सदा चिंतित रहै।

—सिंघासण बत्तीसी

बेंकुंठ, बेंकंठ, बेंकुठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

बेंकृति, बेंक्रती—सं पु [सं. वैकृत] १ रिक्त, खाली।

२ विकार, विकृति, बिगाड़।

रू. भे.—बेंकति

बेंग—सं. पु.—१ चाल गति।

२ पानी का बहाव।

३ पानी के बहाव का रास्ता।

वि०—पागल

बेंगण देखो 'बेंगण' (रू. भे.) (अमरत)

बेंगणी—देखो 'बेंगणी' (रू. भे.)

बेंगागळ—देखो 'बेगागळ' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—चढ़िया काज चंचळ, वाळि छूट बेंगागळ। हरड किहाडा हीर, मांणकै वोर हमीर। —गु. रू. बं.

बेंचलो, बेंचवो—देखो 'बेंचणो, बेंचवो' (रू. भे.)

बेंचणहार, हारौ (हारी), बेंचणियौ—वि०।
बेंचिप्रोड़ो, बेंचियोड़ो, बेंच्योड़ो—भू० का० कृ०।
बेंहीजणो, बेंचीजबो—कर्म वा०।

बेंचवाड़ो—देखो 'बेंचवाड़ो' (रू. भे.)

बेंचाणो, बेंचाबो—देखो 'बंटाणो, बंटाबो' (रू. भे.)

बेंचाणहार, हारौ (हारी), बेंचावणियौ—वि०।
बेंचायोड़ो—भू० का० कृ०।
बेंचाईजणो, बेंचाईजबो—कर्म वा०।

बेंचायोड़ो—देखो 'बंटायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंचायोड़ी')

बेंचावणो, बेंचावबो—देखो 'बंटाणो. बटाबो' (रू. भे.)

बेंचावणहार, हारौ (हारी), बेंचाणियौ—वि०।
बेंचाविप्रोड़ो, बेंचावियोड़ो, बेंचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
बेंचावीजणो, बेंचावीजबो—कर्म वा०।

बेंचावियोड़ो—देखो 'बंटायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंचावियोड़ी)

बेंचियोड़ो—देखो 'बेंचियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंचियोड़ी)

बेंछणो, बेंछबो—देखो 'बेंचणो, बेंचबो' (रू. भे.)

बेंछणहार. हारौ (हारी), बेंछणियौ—वि०।
बेंछिप्रोड़ो, बेंछियोड़ो. बेंछयोड़ो—भू० का० कृ०।
बेंछीजणो, बेंछीजबो—कर्म वा०।

बेंछियोडौ—देखो 'बेंचियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. बेंछियोडी)

बेंछो-सं पु.—बंटवारा, हिस्सा।

उ०—है साह रां बेटां या पण थांहरा पिता रै वासै आवी है। थे ईणी नै बेंछो माल रौ द्यो। —साहूकार री बात

बेंड—१ देखो 'बेंड' (रू. भे.)
२ देखो 'बेंडौ' (मह., रू. भे.)

बेंडाक—१ देखो 'बेंडाक' (रू. भे.)
उ०—हद बेंडाक हजारी। —किसनो आढो
२ देखो 'बेंडौ' (रू. भे.)

बेंडाराग—देखो 'बेंडाराग' (रू. भे.)

बेंडूर—देखो 'बेंडूर' (रू. भे.)

बेंडूरज-सं पु. [सं. वैदूर्य्य] वेदूर्यमणि।

बेंडौ-वि० [सं. वितुण्ड] (स्त्री. बेंडी) १ दातार, उदारचित्त, मौजी।

उ०—मन जांणे सहल दियण वित मोजां, अं दोय पण धरियां अमठ। बेंडा री वातां इज बेंडी, बेंडा रा पेंडा विकट।
—अग्यात

२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र।
उ०—मन जांणे सहल दियण वित मोजां, अं दोय पण धरियां अमठ। बेंडा री वातां इज बेंडी, बेंडा रा पेंडा विकट।
—अग्यात

३ देखो 'बेंडौ' (रू. भे.)
उ०—१ मन जांणे सहल दियण वित मोजा, अं दोय पण धरियां अमठ। बेंडा री वातां इज बेंडी, बेंडा रा पेंडा विकट। —अग्यात

उ०—२ छिन-छिन मैं पग थांप सूं, छिन-छिन करसूं थाव। पांतर सो तो हो परा, राजंद ! बेंडा राव।
—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ हैमरां हींस नर लसकरां कह हुई, वहै सिधुर कहर समर बेंडा। आहाडा खंड रज-मंडळ ग्रोछाइयौ, पहाडां अगम सर सुगम पेंडा। —महाराजा जसवतसिंह रो गीत

उ०—४ तरै सवानद वीरम सूं पूछण लागो। कहै—ठाकुरां काहूं बात छै। तरै भो कहै·ठाकुरां काहू कहऊं। कहवां तो लाज आवै छै। पण ठाकुरां म्हारी बेटी नूं परणिप्रा पाछै मूंडो हमें देखाळियो छै। सो रातै सूतो मेल आज आया छै। सो बेंडा हुमा छंक ? बीजी बहू कांमण किग्रौ छै ! सो हमैं रांधियो धांन रहसी हो, ठाकुरै !
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

बेंण—१ देखो 'बहन' (रू. भे)
२ देखो 'बेंण' (रू. भे.)
३ देखो 'वीणा' (रू. भे)
४ देखो 'वचन' (रू. भे)

उ०—१ सब कुं बुलाया बेंण अकबर साह बोलै, मेरी निसां खातरी है तुमारै महोलै। तुम पातसाहां के संवादी सूर तैं सूर, तुमारी सिहाय आवै मेरै मुख नूर। —रा. रू.

उ०—२ नैणां रांम वसो हरि बेंणा, सकल सुखां सुख लाधा। सुर तेतीस घेरि घर आया, सतगुर डोरा बांधा। —ह. पु. वां.

उ०—३ वारवधु ही हरण वित, नेह जणावै नैंण। यूं सिर लेवा ऊचरै, वैरी मीठा बेंण। —बां. दा.

उ०—४ सुणि जोध बेंण भाखंत संभ, रिणमल्ल मांण आणियै रंभ। चाळां बै रूक चौरंग चाडि, आखंत धूम्रलोचन ओनाड़ि।
—मा. वचनिका

बेंत-सं. पु.—१ रीति, उपाय, प्रकार, ढंग।
२ हिसाब-किताब।
३ माप, नाप।

उ०—सीमाळ पैहली कानड़दैजी तीरै रहतौ। पछै कानड़दैजी जाळोर ऊपर घर करायो, तिकै देखण नूं सीमाळ नूं मेलियौ नै सूरमाळ नै साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख नयू बैंत मैं खोड़ काढी। —नैणसी

४ बनावट, रचना।

५ वश, काबू, नियन्त्रण।

६ चिन्ता, दुःख।

उ०—सूधा वचन सुणे सगळाई, साथ भेरियां गया सिपाई। जतनै सुता रहै इम जांणो, इण दुख कंद हुवौ 'प्रासांणी'। बैंत करै नह धोर विचारू, मार सुता मिरजा नू मारू। —रा. रू.

७ अनुकूल।

उ०—कै सूत बैंत सुभ वात कज, सोमैं दूत समंद रा। प्रावियास मिळ भ्रम द्रद रै, कै इळ वद्दळ इंद रा। —रा. रू.

८ देखो 'बैंत' (रू. भे.)

६ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

उ०—दाखे सकव सुणो अनदाता, अमां मिळण नह भाग इसो। सारै रसो बहै तन सिड़ियो, कहो मिळण चो बैंत किसो। —पीठवौ

१० देखो 'वेंत' (रू. भे.)

उ०—पड़ै रोर चहुं ओर, कणह कणह सम कीधो। वेचि वेचि नर बैंत, लोभ लाघो तहां लीधो। —कीकावती रै दांन रो कवित

रू. भे.—बंत, वेत।

बैंतणौ, बैंतबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बैंतणहार, हारौ (हारी), बैंतणियौ—वि०।

बैंतिप्रोड़ो, बैंतियोड़ौ, बैंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बैंतीजणौ, बैंतीजबौ—भाव वा०।

बैंताणौ, बैंताबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बैंताणहार, हारौ (हारी), बैंताणियौ—वि०।

बैंतायोड़ौ भू० का० कृ०।

बैंताईजणौ, बैंताईजबौ—कर्म वा०।

बैंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बैंतायोड़ी)

बैंताळीस, बैंतालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे.)

बैंतावणौ, बैंतावबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बैंतावणहार, हारौ (हारी), बैंतावणियौ—वि०।

बैंताविप्रोड़ौ बैंतावियोड़ौ, बैंताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बैंतावीजणौ, बैंतावीजबौ—कर्म वा०।

बैंतावियोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बैंतावियोड़ी)

बैंतियोड़ौ—देखो 'बेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बैंतियोड़ी)

बैंन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

२ देखो 'बचन' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया असली असलि वन, चवै न कमसलि बैंन। असली जो कमसलि चवै, तौ दिन वरतै रैंन। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया अंदर ऊपजै, असा निकसै बैंन। मिळियां सेती मन कहै, यौ दुरजन यौ सेन। —अनुभववांणी

३ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

बैंनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बैंम, बैं'म—देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—१ सुनार रै क्यूं दरसणां मैं ही टोटौ वताईजै है? सूरज उगाळी सुनार सामो मिळै, लोग मूंढौ फोरै सामै सिर सळ घालै बैंम रै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै अवस टाळै। बौ: आपरी मां रो ही हांचळ नी छोडै। —दसदोख

उ०—२ एक'र री वात, राजी रै जापै में पौन-हवा निकळगी। वावळी वंडा करण लागगी। गूं ग विखेरै अर तता-पत्ता सूं बूही बातां करै। जकै सूं घर हाला नै भूतणी रो बैंम वड़ गयो है। —दसदोख

बैंरागर—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

बैंसौ—देखो 'बेंसौ' (रू. भे.)

बैंह—देखो 'बे' (रू. भे.)

उ०—सतजुग कै पहरै मां सोनै को घाट, सोनै को पाट, सोनै को कळस, सोनै को टको। पांचां कोड्या को मुखी गुर पहळाद कळस थाप्यो, बैंह कळस जस धरम हुवै, सो ईंह कळस हुइयो। —जांभो

बैंहचणौ, बैंहचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीजां ही सवणियां नूं पूछियो। तियां कह्यो-जिकै रांणी रै प्रसूत हुसी। तियै रो बेटी धरती रो धणी हुसी। प्राप राजी हुवा। मालोजी जाया। घणो हरख हुवौ। घणी वधायां बैंहची। —नैणसी

उ०—२ घोड़ा रजपूतां नूं बकस दिया। एक घोड़ो आप राखियो। पुकार दिल्ली गई। प्रहदी प्रायो। घोड़ा ल्यावो। मालेजी नूं जोर पड़ियो। घोड़ा मांगीजै। ताहरां मालेजी आदमी मूकिया। कह्यो—चवडा घोड़ा ल्याव। ताहरां कह्यो—घोड़ा तौ बैंहच दीधा। —नैणसी

उ०—३ पछै नरै रै टीकै गोयंद बैठो। हूमैं रोज लड़ायां पड़ै। धरती वसै नहीं। ताहरां राव सूजैजी गोयंद नूं तेड़ायौ। पोकरणां नूं तेड़ाया। धरती आधो-आध बैंहच दीवी। कोट नरै रै माथै साटै कियो। उवै जाळ सौं सीम पड़ी। —नैणसी

बैंहचणहार, हारौ (हारी), बैंहचणियौ—वि०।

बैंहचिप्रोड़ौ, बैंहचियोड़ौ, बैंहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बैंहचीजणौ, बैंहचीजबौ—कर्म वा०।

वेंहचाणो, वेंहचाबो—देखो 'बंटाणो बटावो' (रू. भे.)

उ०—अठै वीरमजी रा कामेती दांग ऊपर बैसे राति रो हैंसो वेंहचाइ दे · कदे सरब गोलक मेल आवै। कहै-ये सवारे लेज्यो। जे नाहर बकरी मारै तो एकै बकरी री इग्यारह बकरी लै। कहै नाहर तो जोईयां रो छै। —नैणसी

वेंहचाणहार, हारो (हारी), वेंहचाणियो—वि०।

वेंहचायोड़ो – भू० का० कृ०।

वेंहचाईजणो वेंहचाईजबो—कर्म वा०।

वेंहचायोड़ो—देखो 'बंटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंहचायोड़ी)

वेंहचावणो, वेंहचावबो—देखो 'बंटाणो, बटावो' (रू भे.)

वेंहचावणहार, हारो (हारी) वेंहचावणियो – वि०।

वेंहचाविओड़ो, वेंहचावियोड़ो, वेंहचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेंहचावीजणो, वेंहचावीजबो—कर्म वा०।

वेंहचावियोड़ो—देखो बंटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंहचावियोड़ी)

वे-सं. पु.—१ श्री कृष्ण का एक नाम। (एका.)

२ स्वर्गलोक। (एका.)

३ पति, खाविंद।

४ मालिक, स्वामी।

५ एक प्रकार का अव्यय विशेष जो निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ मे काम लिया जाता है। किन्तु अधिकाशतः इसका प्रयोग पाद पूर्ति हेतु भी होता है।

क्रि० वि०—१ निश्चय ही।

उ०—रिमां माण मूके नही वे रण गो वढतांह, वण भूभो रण मोम हो चढियां चाविड़याह। चढ रण चावड़ो सामहो चालियो, भूभतै भलो रायसिह तै भालियो। —हा. भा.

२ ही।

३ भी।

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—सिसु वे मिती बित्ती, उदयो पौगंड मद सिंगारो। ज्यों वंदा रक तरय, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम —रा. रू.

५ देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०—१ माया जब तब ही बुरी, हरिया आदि' र अंत। वडे वडे मुनजन छळे, वे रहतै एकत। —अनुभववाणी

उ०—२ ए वाड़ी, ए सर-केरी पाळ। वे साजण वे दोहड़ा, रही संभाळ संभाळ। —ढो. मा.

उ०—३ नित सवार सिन्ध्या वे रो वे चोआं देखतो देखतो दो रो टीड हजार आंख्यां व्हैनी तो ई आंनी आय जाती। नित वे री वे साथै चोआं देखणा बिचै तो आंख्यां मींच अंधारो करणो उण नै आछो लागतो। —फुलवाड़ी

उ०—४ पण सेठां रो मन तो सेठां रे वश हो, वे तो उण दिन सूं ई कोडाया होय सोल-व्रत धारण कर लियो। सोच्यो के वेमाता अर जमराज आपरै हिसाब सूं चालै तो सेठ ई आपरै हिसाब सूं चालैला।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—वे।

वेअखरी वेआखरी—देखो 'वेअखरी' (रू. भे.)

वेईज्यंत—देखो 'वैजयंत' (रू. भे.)

वेईजयंतिक—देखो 'वैजयंतिक' (रू. भे.)

वेईजयंतिका—देखो 'वैजयंती' (रू. भे)

वेईजयंती—देखो 'वैजयंतीमाळा'।

वेईस—देखो 'वैस्य' (रू. भे.)

उ०—बांमन खत्री कोन है, कुंन सुदर कूं वेईस। हरीया आतम हेक है, दूजा कोय न दीस। —अनुभववांणी

वेकंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—वेकंठ विलासि अपुन्य प्रकासि अपार अपार अप्रंम परं, निरकार नर मधुकटक मारण निधन विडारण वेवल रूप वराह करं। धर दाढ धरं करि दैन कणं कण रे, पण रांमण लंक लई दंध लोप लज, अविगति अज 'हमीर' समरि हरनासि निरतर, गाह वेहऊ गाहि गजंघज पख धजं। —पि. प्र.

वेकंठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वेकंठवासी—देखो 'वैकुंठवासी (रू. भे.)

वेकक्ष, वेकक्षक, वेकक्षिक–स. स्त्री. [सं.] जनेऊ की तरह पहनी जाने वाली माला।

वेकटिक–सं. पु. [स.] रत्नों की पारख करने वाला, जोहरी।

वेकण—देखो 'वैकण' (रू. भे.)

वेकणो, वेकबो—देखो 'वहकणो बहकवो' (रू. भे.)

वेकणहार हारो (हारी), वेकणियो—वि०।

वेकिओड़ो, वेकियोड़ो, वेक्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेकीजणो, वेकीजबो—भाव वा०।

वेकरण–सं.पु. [सं. वैकर्ण] १ वात्स्यमुनि।

२ एक प्राचीन जनपद।

वेकरतन–सं. पु [सं. वैकर्तन] १ कुन्ती पुत्र कर्ण का नाम।

२ सूर्य पुत्र का नाम।

३ सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम ।

वैंकरणिक, वैंकरणो–सं. पु. [सं. वैकर्णिक] १ राज्य कर्मचारी विशेष ।

२ कश्यपकुलोत्पन्न वैकर्णेक नामक एक गोत्रकार ।

रू भे.—वयगरणी, वयगरणु, वयगरणो ।

वैंकल—देखो 'विकळ' (रू. भे)

वैंकल्प—देखो 'विकळप' (रू. भे)

वैंकल्पिक–वि. [स] १ ऐच्छिक ।

२ संदिग्ध ।

वैंकल्य–सं. पु. [सं] १ न्यूनता, कमी ।

२ विकलांग, लंगड़ा ।

३ घबड़ाहट, व्याकुलता ।

४ अनस्थिरत्व ।

वें'काणो, वें'काबो– देखो 'वहकाणो, वहकाबो' (रू. भे.)

वें'काणहार, हारो (हारी), वें'काणियो– वि० ।

वें'कायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वें'काईजणो, वें'काईजबो—कर्म वा० ।

वें'कायोड़ो देखो 'वहकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वें'कायोड़ी)

वैंकाळ–स. पु. [सं. वैकाल] मध्यान के बाद का समय, संध्याकाल ।

वें'कावणो, वें'कावबो– देखो वहकाणो, वहकाबो' (रू. भे.)

वें'कावणहार, हारो (हारी), वें'कावणियो– वि० ।

वें'काविवोड़ो, वें'कावियोड़ो, वें'काव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वें'कावीजणो, वें'कावीजबो—कर्म वा० ।

वें'कावियोड़ो— देखो 'वहकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वें'कावियोडी)

वें'कियोड़ो - देखो 'वहकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वें'कियोड़ी)

वैंकुंट—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे)

वैकुंटनाथ—देखो वैकुंठनाथ' (रू भे.)

वकुंठु—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैंकुंठुनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैंकुंठुनायक—देखो वैकुंठनायक' (रू. भे.)

उ०—तोरण ओकम आविया, त्यौ वेहड़ां वर नारि । वर वेहड़ूं वैकुंठुनायक, वंदियं कर च्यारि । —रुकमणी मंगळ

वैकुंठ–स. पु. [सं.] १ भगवान् श्रीविष्णु का एक नाम ।

उ०—छिपै मेघ सोभा इसी भाळ छाजं, रवी पत दुं कुंडळं कांति राजै । मजै मुकुट सोभा सबा कूंण माखै, रहै मांन तै ध्यांन वैकुंठ राखै । —रा. रू

२ भगवान् विष्णु के रहने का स्थान, स्वर्ग ।

उ०—१ राजा असमाधियो हुतो । तिकं राजा नू वरस १०० पूरा हुवा । ताहरा तूरक नूं जासूसं जाय खबर दीनी, राजा मंहां तो घो प्रकार हुवो,वैकुंठ प्राप्त हुवो । —राजा नरसिंघ री वात

उ० –२ वैकुंठ वेडो विसन ढोयो, सचियार साल्हियां लेविसी । पारगिराय पुहचाय भांभराय, वास निहचळ देविसी ।

—ऊदोजी नैण

उ०— ३ दिज मूग्त देहरा, पड़ै जसराज पढ़ंतां, घणा गढ़ां सिर ढाक, चढ़ वैकुंठ चडता । अज्या मेल इकठा, चरै सौ सिघ भुजाळा, साहू लोग समार, आज नौ वाज दुवाळा । —सुरजनदास पूनियो

उ०—४ हिक सिवह पड़ै अण बारहट, सो पड़िया बंका सुहड़ । वैकुंठ गयौ 'वीठल्ल' रौ, अजबसाह' गाखै अचड़ । —रा. रू.

३ दवराज ईन्द्र का नाम । ४ तुलसी का नाम । ५ रैवत मन्वन्तर एवं चाक्षुक मन्वन्तर का एक देवगण ।

रू भे —बईकुंठ, बयकुंट, बयकुंठ, बयकूंट, बेकुंठ, वैकुंठ, बेकूंट, बेकुठ, बैकुठ, बैकूंट, बैकुठ, वईकुंठ, वयकुंठ, विकुंठ, वेकुंठ, वै[illegible]ंठ, वैकूठ, वैकंठ वैकुंटु, वैकुंटि, वैकुंटी, वैकूंट, वैकूंढ ।

वैकुंठचतुरदसी, वैकुंठचवदस–सं· स्त्री. [सं. वैकुंठचतुर्दशो] कातिक शुक्ल चतुर्दशी ।

वैकुंठनाथ–स पु [सं.] १ भगवान् विष्णु ।

उ० –वैकुंठ पधारो । तिणि वेळा राजा रतन वैकुंठनाथ महाराज सूं अरज करि कहिओ । महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड़ । राठोड़ा माहै हूं इज । मुदै मो नुं कहिओ इज चाहीजे । मो साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कामि आया । हाडा मुकुंदसिंघ मारीखा । गोड़ अरजन सारीखा । सीसोदिआ सुजाणसिंघ मारीखा । झाला दळथंभ सारीखा । और छत्रीस वंस हिंदू सरजीत कीजे । वैकुंठवास दीजे । —र. वचनिका

२ देवराज इन्द्र ।

रू भे.—वैकंठनाथ वैकुंट्रनाथ, वैकूंटनाथ, वैकूंठनाथ ।

वैकुंठनायक–सं. पु [सं] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

रू. भे.– वैकंठनायक वैकुंटुनायक, वैकूंटनायक, वैकूंठनायक ।

वैकुंठलोक–सं. पु —स्वर्गलोक विष्णुलोक ।

वैकुंठवास–सं पु. [सं.] १ विष्णु का एक नाम ।

उ०—अठयासी सहस रिख करै आस, बखांणं सको वैकुंठवास । पांच तत महा तत रहै पास, संवारै तनां प्रभु सास सास ।

—पी. ग्रं.

२ स्वर्ग ।

उ०—वैकुंठ पधारो । तिणि वेळा राजा रतन वैकुंठनाथ महाराज सूं अरज करि कहिओ । महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड़ । राठोड़ा माहै हूं इज । मुदै मो नूं कहिओ इज चाहीजे । मो साथै

वडा वडा गढपति छत्रपति कांमि माया। हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा। गौड़ अरजन सारीखा। सीसोदिग्रा सुजांणसिंघ सारीखा। झाला दळथंभ सारीखा। और ही छत्रीस वंस हिंदू सरजीत कीजै। वैकुंठ-वास दीजै। —र. वचनिका

मुहा.—वैकुंठवास होणौ—स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना।

रू. भे.—वैकूंटवास, वैकूठवास।

वैकुंठवासी—सं. पु [सं.] विष्णु का एक नाम।

रू. भे—वैकुठवासी, वैकठवासी, वैकूंठवासी।

वैकुंठविलासी—सं. पु [सं.] १ विष्णु का एक नाम।

२ ईश्वर।

रू. भे.—वैकुटविलासी, वैकूटविलासी, वैकूंठविलासी।

वैकुंठि, वैकुंठी—सं. स्त्री [सं. वैकुंठ+रा. प्र ई] १ पालकीनुमा रथी, जिसे सजा कर उसमें शव को बैठा कर श्मशान भूमि मे ले जाते हैं।

२ देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—साम्हौ सारि दखिण चढ़ सांम्हौ, निवहि मुहरि चालियौ निराट। सादूळौ वैकुंठि गौ सूधौ, वैकुंठ तणौ न भूलौ वाट। —खेतसी बारहठ

रू. भे.—वैकुंटी, वैकुंठी, वैकूंटी, वैकूंटी, वैकुठी।

वैकूंट—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैकूंटनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे)

वैकूंटनायक—देखो 'वैकुंठनायक' (रू. भे.)

वैकूंटवास—देखो 'वैकुंठवास' (रू भे.)

वैकूंटविलासी—देखो 'वैकुंठविलासी' (रू. भे.) (नां. मा.)

वैकूंटी—देखो 'वैकुंठी' (रू. भे.)

वैकूंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे.)

उ०—१ अम्मरां वधायौ लोक सरायौ वैकूंठ वाळौ, सूरां थोक पायौ भेद रचायौ सरब। आबा कांम परां हूंत पठौ घोड़ै चाल आयौ, पायौ 'जालमेस' हूंता सवायौ परब। —प्रभूदान मोतीसर

उ०—२ जीहा न बोलै झूठ, स्रवणां झूठ न साभळै। वरजै कुण वैकूंठ, माधव दरगह मोतिया। —रायसिंह सांदू

उ०—३ काल किसी सारै नहीं, मारै सुलटी मूठ। हरीया हरि-जन ऊबरै, उलटि चढै वैकूंठ। —अनुभववांणी

उ०—४ जळ चादरू की थरहर तमासै का विसतार। सो कैसी, वैकूंठ सै छूटी जांणि गंगा हजार धार। छछोहै आब गहर फौहारा छूटै। जमीं सै मेघ जांणि असमांन सै जुटै। —सू. प्र.

वैकूंठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैकूंठनायक—देखो 'वैकुंठनायक' (रू. भे.)

वैकूंठवास—देखो 'वैकुंठवास' (रू. भे.)

वैकूंठवासी—देखो 'वैकुंठवासी' (रू. भे.)

वैकूंठविलासी—देखो 'वैकुंठविलासी' (रू. भे.)

वैकूंठी—देखो 'वैकुंठी' (रू. भे.)

वैकत—देखो 'विकत' (रू. भे.)

उ०—महू आदेसिर सुण वचन मोहू, तातें न उचित अब क्रोध तोहू। 'करनला' कयौ सुणियौ न कान, वैकत भैरव मुख बोळ-वान। —रांमदांन लाळस

वैक्रयसरीर—देखो 'वैक्रियसरीर' (रू. भे.) (जैन)

वैक्रांत—देखो 'विक्रांत' (रू. भे.)

वैक्रांतमणि, वैक्रांतमणी, वैक्रांतमिण—सं. स्त्री. [सं. वैक्रान्तमणि] एक प्रकार का रत्न विशेष।

वैक्रिय—सं. पु. सं.—वह जिस में छोटे, बड़े, एक अनेकादि रूप बनाने की शक्ति हो (जैन)

वैक्रिय-लब्धि—सं. स्त्री [सं.] वह लब्धि जिस के प्रभाव से छोटे बड़े आदि विविध रूप बनाये जा सकें। (जैन)

उ०—आंमोसहि, विप्पोसहि, खेलोसहि, सव्वोसहिलब्धि वैक्रिय-लब्धि। —व. स.

वि. वि. मनुष्य और तिर्यंचों को यह लब्धि तप आदि के आचरण करने से प्राप्त होती हैं।

वैक्रियसरीर—सं. पु. [सं. वैक्रियशरीर] १ देव और नारकी जीवों का शरीर। (जैन)

२ वह शरीर जिसमे हाड, मास, लोही आदि न हो और मृत्यु के पश्चात कपूर की तरह बिखर जाता हो। (जैन)

वैखरी—सं. स्त्री [सं.] १ चार प्रकार के नाद (स्वर) मे एक प्रकार का नाद जो कंठ से उच्चारित माना जाता है।

उ०—१ पराचित चितवन करै, पस्यती मनन मनार। मध्यमा लखत व्यवहार कूं वैखरी ऊम्रहकार। —स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ मूळधार में परा नाद है जांणिये, स्वाधिस्ठांन मे पस्यती पहचानिये हृदय स्थांन मध्यमा, वदन में वैखरी। —साधक सुधा

२ वाक्शक्ति।

३ वाग्देवी, सरस्वती।

४ बोलने की शक्ति।

वैखानस, वैखांनसि—सं. पु [सं. वैखानसः] १ वानप्रस्थ आश्रम का व्यक्ति।

२ वराह रूपी भगवान् श्रीविष्णु का नाम। यह रूप पातालवासी हिरण्याक्ष के वध के लिए धारण किया था।

३ चंपक नगरी का राजा, जिसने अपने पित्तरों के उद्धार के लिए उन्हें मार्गशीर्ष शुक्ल इग्यारस के व्रत का पुण्य दिया था।

२ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी ।

रू. भे.—विखानस ।

वंग—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—१ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा विसरांम । हरिया जम लै जावसी, वंग सिवरियै रांम । —अनुभववांणी

उ०—२ सांभि सम स्वार क्या करत नर बावरा, वंग भजि वेग हरि दाव श्राई । दास हरिरांम तन खाक मिळ जाहिगै, चूक सब जाणि जुग अनुराई । —अनुभववांणी

वंगरणौ—देखो 'वेगरणौ' (रू. भे.)

वंगरणौ–वि०—प्रबन्ध करने वाला, प्रबन्धक ।

उ——वंगरणा मंगरणां मुंहता, साद करई सुथार । दोमी दळ को संभया श्रांणई, मांहइ चक्र तलार । —रुकमणी मगळ

२ देखो 'वेगरणौ' (रू. भे.)

वंगलेय–सं. पु. [सं.] भूतों का एक गण विशेष । (पुराण)

वंगांण—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—गुटकांण सोदांण विमाण पगाछक तगी गत, नाव तीरांण देघांण श्रणं । पुखरांण वंगांण प्रमांण पगाछय, वात वसै विहंगांण भणं । —किसनजी दधवाड़ियो

वंगागळ, वंगागळौ—देखो 'वेगागळ' (रू. भे.)

उ०—राठौडां सौंह वधी, वधी सोह हिंदुसथांनां, वरंकरार नव कोट, हमम राखिया खजांनां । दिल्लीवै सुरताण, वाज वका वंगागळ, सूटी लै मेल्हिया, जूह मद वहता मंगळ । —गु. रू. ब

वंगायन–स. पु. [सं.] भृगु के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ।

वंगार—देखो 'बेगार' (रू. भे.)

वंगाळ, वंगाळौ—१ देखो 'वेगागळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'वेगाळ' (रू. भे.)

वंगौ—देखो 'वेगौ' (रू. भे.)

उ०—१ मां कह्यौ—बेटा महाराज उतावळ करै छै । सताबी करि घरै हालौ । ताहरां कुंवर कह्यौ - माजी वेगा ही हालस्यां । श्राडी ऊभी बातां करि ऊठियौ । श्रागै जनाने गयौ । श्रोळंगुवां श्रांणि मुजरौ कियौ । राग-रग हुवा, हांसया खेलिया, पौढिया ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ एक वीर स्त्री श्राप रा पती नै कह रही है—हे पती श्राज श्रापरो वंगो रात्री वदीत हुवां विनां ही जागणौ श्रोर चर (चरवादार) घोडा नै वेगौ कसियौ तिणसूं म्हनै उनमान होवै कै है थांरा कोई पांहुणा मिळिया है । —वी. स. टी.

वंग्यानिक–वि० [सं. वैज्ञानिक] १ विज्ञान का ज्ञाता । २ विज्ञान का, विज्ञान सम्बन्धी । ३ प्रयोगों द्वारा नये ज्ञान सूत्र की खोज करने वाला ।

वं'ड़, वंड़, वं'ड़की, वंड़की—देखो 'वंड़' (रू. भे.)

वं'ड़ौ, वंड़ौ—१ देखो 'बे'ड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वंड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वेसौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा वळै समझाय कह्यौ—बेटा, थारी मंसा परवांण वंड़ौ राजकवरी रा तौ कठै ई बावड़ौ ई नीं व्हिया । श्रबै यूं कै ज्यूं करूं । म्हारौ कैणौ मांन श्रर ब्याव सारू हुंकारौ भर दै ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ उणियारौ बतावण सारू सिरदार सुभट नटग्या । कह्यौ कै वंड़ा दुस्टी रौ तौ मूंडौ देख्यां ई पाप लागै भेटका व्हैतां ई झटकौ । दांय ढोल नीं करां जित्तै चैन नी पड़ै । —फुलवाड़ी

(स्त्री वंड़ी)

वंचणौ, वंचबौ—देखो 'बंचणौ, बंचबौ' (रू. भे.)

वंचणहार, हारौ (हारी), वंचणियौ—वि० ।

वंचिश्रोड़ौ, वंचियोड़ौ, वंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचीजणौ, वंचीजबौ—कर्म वा० ।

वंचवाड़ौ—देखो 'वेचवाड़ौ' (रू. भे.)

वंचाणौ, वंचाबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वंचाणहार, हारौ (हारी), वंचाणियौ—वि० ।

वंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचाईजणौ, वंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वंचायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वंचायोड़ी)

वंचावणौ, वंचावबौ—देखो 'बंटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

उ०—थांरा बीरोसा कागद मेहलियौ । श्राध (ए) वंचावण घरै श्रावौ श्रो जूंझारजी. झगड़ै किण विध जूजिया ।

—जूंझारजी रो गीत

वंचावणहार, हारौ (हारी), वंचावणियौ—वि० ।

वंचाविश्रोड़ौ, वंचावियोड़ौ, वंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचावीजणौ, वंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वंचावियोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंचावियोड़ी)

वंचियोड़ौ—देखो 'बंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंचियोड़ी)

वंछंग–वि०—चपल, चंचल, उच्छृंखल ।

उ०—उभै सहंस श्रठसठ घुज ऊतंग, वीस सहस हैमर घुज वंछंग ।

निज पोसाक सु केसरि नोखां, जवहर मतर छिरमंद जोखां ।

—सू. प्र.

वंछरा, वंछराय—देखो 'बछराय' (रू. भे.)

वंछाड़—देखो 'वेंछाड़' (रू. भे.)

वंछाणौ, वंछाबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

वंछाणहार, हारौ (हारी), वंछाणियौ—वि० ।

वंछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंछाईजणौ, वंछाईजबौ—कर्म वा० ।

वंछायोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंछायोड़ी)

वंछावणौ, वंछावबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.

वंछावणहार, हारौ (हारी), वंछावणियौ—वि० ।

वंछाविग्रोड़ौ, वंछावियोड़ौ, वंछाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंछावीजणौ, वंछावीजबौ—कर्म वा० ।

वंछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंछावियोड़ी)

वंजंत—देखो 'वंजयंत' (रू. भे.)

वंजंती—१ देखो 'वंजयंती' (रू. भे.)

२ देखो 'वंजयंतीमाळा' (रू भे.)

वंजंतीमाळ, वंजंतीमाळा—देखो 'वंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

उ०—१ चक्र सांमि संख सांमि पदम पति ग्रनां गदापति, प्रीतंबर पंगरण भला फाबिति इसी भति । महि कट मेखळ कहै कांनि मकराइ कि कुंडळ, उरि वंजंतीमाळ रिदै कुस्टांमिणि कमळ ।

—पी. ग्रं.

उ०—२ संख चक्र पदम रु गदा, उर वंजंतीमाळ । मोर मुकुट कट काछनी, मावौ संदर लाल । —गजउद्धार

उ०—३ वंजंतीमाळा, ग्रधिक विसाळा, कौस्तभ मणि सोहंदा है । ग्रगुलत्ता छाजे, विविध विराजे, ग्रति ही रूप ग्रनंदा है ।

—गज-उद्धार

वंज—देखो 'बंज' (रू. भे.)

वंजणती—१ देखो 'वंजयंती' (रू. भे.)

२ देख 'वंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

वंजनाथ—देखो 'वंद्यनाथ' (रू. भे.)

उ०—राठोड़ कूंपौ महिराजौत बडौ दातार, ग्रालाड़सिंघ रजपूत स्रीवंजनाथ महादेव री ग्रवतार, वरस ३५ में कांम ग्रायौ । इतरा प्रवाड़ा तो प्रसिद्ध कूंपाजी रा छै । —राव मालदे री बात

वंजभृत-सं. पु. [सं. वंजभृत] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

वंजयंत-स. पु. [सं.] १ देवराज इन्द्र ।

२ देवराज इन्द्र का राजभवन ।

३ इन्द्र का झंडा, पताका ।

४ झण्डा, पताका ।

५ तिमिध्वज की राजधानी का नाम ।

६ घर, मकान ।

७ क्षीरसागर के मध्य का पर्वत ।

रू. भे.—वंजयंत, वेईजयंत, वेजंत ।

वंजयंतिक-सं. पु. [सं.] ध्वजा या पताका को उठाकर चलने वाला ।

रू. भे.—वेईजयंतिक ।

वंजयंतिका—१ देखो 'वंजयंती' (रू. भे.)

२ देखो 'वंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

वंजयंती-स स्त्री. [सं] १ ध्वजा, पताका, झण्डा ।

२ चिन्ह, लक्षण ।

३ एक प्रकार का पौधा विशेष; जिसके हाथ-हाथ भर लम्बे एवं चार-पांच ग्रंगुल चोड़े पत्ते एव कई दलों के फूल होते हैं ।

४ देखो 'वंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

रू. भे.—वंजंती, बंजयंती, वईजयती, वेईजयंतिका, वेईजयंती वंजती ।

वंजयंतीमाळ, वंजयंतीमाळा-सं. स्त्री. [स. वंजयंतीमाला] १ मोतियों ग्रादि का हार ।

२ पांच रंगों की घुटकों तक लटकती हुई एक प्रकार की माला, जिसे कृष्ण भगवान् पहनते थे ।

३ भगवान् श्रीविष्णु की माला ।

उ०—ब्रहमा विसन महेस इद्र सुर साथे विराजमांन हुग्रा छै । ग्राप विसन चत्रभुजरूप धारि । बागा वणाउ करि । संख चक्र गदा पदम धारि । वंजयंतीमाळा मोर मुकुट कुंडळ विसाल मदन मोहन कमळलोचन स्यामसुंदर ठाकुर विराजमांन हुग्रा छै ।

—र. वचनिका

रू. भे.—वंजंती, वंजंतीमाळ, वंजंतीमाळा, वंजयंती, बंजयंतीमाळ, बंजयंतीमाळा, वंजणती, वईजयंती, वेंजंतीमाळ, वेंजंतीमाळा, वंजयंती ।

वंजयिकीविद्याग्यान-सं पु. [स. वंजयिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ प्रकार की कलाग्रों में से एक प्रकार की कला विशेष ।

वंजौ-सं. पु.—घोड़ों का एक प्रकार का रोग विशेष, जो मुरखों पर होता है । (शा. हो.)

वंढ—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—परमोम लई समंदां लगें, राठौड़ा साका रहै । गळहत्य बंस गोहिलां तणौं, वंढ खड्ग गहि संग्रहै । —गु. रू. बं.

वंढणौ, वंढबौ—देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

उ०—पांडवां नीलो पलांण, प्रसी घोड़ राव प्रांग। वेंडतं उमे विकास, प्रारिखे जिसो उजास। —गु. रू. बं.

वेंडणहार, हारो (हारी), वेंडणियो—वि०।

वेंडियोड़ो, वेंडियोड़ो, वेंडयोड़ो—भू० का० कृ०।

वेंडीजणो, वेंडीजबो—कर्म वा०।

वेंडव-सं. पु. [स.] वसिष्ठ ऋषि का पैतृक नाम।

वेंडाक—१ देखो 'वेंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंडो' (रू. भे.)

वेंडाळव्रत-सं. पु. [सं. विडालव्रतः] एक प्रकार का ढोंग विशेष, जिसमें दिखावे के लिए साधु (सज्जन) बनकर छुपे रूप में पाप व कुकर्म किये जाते हैं।

वेंडाळव्रति, वेंडाळव्रती-वि० [सं. बिडालव्रती] १ पाप एवं कुकर्म करते हुए भी साधु बना रहने वाला।

२ ढोंग रचनेवाला, ढोंगी।

वेंडियोड़ो—देखो 'वेढियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंडियोड़ी)

वेंडूंबो-स. पु.—खराब कलिन्दा।

वेंडूरयपरवत-स. पु. [सं वेडूर्यपर्वत] एक पर्वत जो गोकर्ण तीर्थके समीप स्थित है।

वेंडूरय वेंडूरयमणि, वेंडूरयमणी—देखो 'वेंडूरयमणि' (रू. भे.)

उ०—मरकत करकेतन पदमराग पुस्पराग वज्र वेंडूरय सूरयकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रनील सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिम्मणि चूनडी लोहीताक्ष मसारगल्ल हंसगरब्भ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चितामणि। —व. स.

वेंडोळ्योड़-वि.—घबराया हुआ, विचलित हुवा हुआ।

उ०—पेमजी बोल्या—भाया तणो मोड, भायेलां माजे नहीं। लोग कूडी कैवे.........बीच मे ही दलाल बोल उठयो—आपणी बड़ाई पछै करांला, पैली रिपिया ल्यावो, कांम पक्को बणावां। पेमजी वेंडोळ्योड़ राज री रकम रा प्रायोड़ा ढाई हजार रिपिया री थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल देवता रै प्रागै बगा नाखी प्रर कैयो—की बता ले जावो सा। —दसदोख

वेंढ—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—हाथी लखमन हेत, वळियो वेंढ लगायके। चित उत घरियो चेत, मिळवा कांमण माणवा। —गज-उद्धार

वेंढक—देखो 'वेढक' (रू. भे.)

उ०—कने होत जो ऊठे 'अजमाल' वेंढक प्रकळ, लड़ण तेढक खळां दळा लाहौ। साजतो नहीं प्रसपेल 'अड़सीह' नु, हांमटे सेल ऊभेल हाडो। —बद्रीदास खिड़ियो

वेंढगरो, वेंढगारो—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

वेंढणो, वेंढबो—देखो 'वेढणो, वेढबो' (रू. भे.)

वेंढणहार, हारो (हारी), वेंढणियो—वि०।

वेंढियोड़ो, वेंढियोड़ो, वेंढयोड़ो—भू० का० कृ०।

वेंढीजणो, वेंढीजबो—कर्म वा०।

वेंढमण, वेंढमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे.)

वेंढमल, वेंढमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू. भे.)

वेंढमी—देखो 'वेढमी' (रू. भे.)

वेंढलो—देखो 'वेढलो' (रू. भे.)

वेंढियोड़ो—देखो 'वेढियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंढियोड़ी)

वेंढीगार—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

वेंढीमण, वेंढीमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे.)

उ०—मूंछां रा वळाका दीधां सीसोद गनीमां माथै, घूर हास तमासै मुनिंद्र रीधा घोर। म्यांन हूं उखेलताई कीधा खाग तेढीमणै, वेंढीमणै मेलताई कीधा महावीर। बद्रीदास खिड़ियो

वेंढीमल, वेंढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू. भे.)

वेंण-सं. पु. [सं. वचन] १ स्तुति, वन्दना।

उ०— राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वेंण। सुर्णं बधायो गिरि-सुता, सो ह्वो मो सुख देंण। —बां. दा.

२ देखो 'वेण' (रू. भे.) (प्र. मा.)

३ देखो 'वीण' (रू. भे.)

उ०— रति रयण सुदि नर नारी रांमति, गाळि प्रमदति गावही। मुख गांन दिन निस स्वाम मगळ, वेंण चग वजावही। —रा. रू.

४ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ तिसा वेंण स्रीमंडळ जत्र तालं, सहनाय वसी घनं सीस ढ'ल। सुधा कुंडळो खजरो चंग सोहै, वजै चंग मिरदंग सोभा विमोहै। —रा. रू.

उ०—२ घूघरां तणां झणणाट हुय घमाघम, वेंण रा तंत्र तरणाट बाजै। नकीबां बोल हरणाट हुय नोबतां, गयणधर सबद गरणाट गाजै। —खेतसी बारहठ

५ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

६ देखो 'बहन' (रू. भे.)

७ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ उदियागर उगियो, इंदु राकां अविरचां, रंग कुरंग रहणी, पाव आधो अरचां। कोल सम भूतेस, वेंण सुर वखन चवीजै, विद्यावंत बुधवंत, कहयो तुम तुम्हा कहीजै। —कोल्हजी चारण

उ०—२ यां विचार वेंण बोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ कै रोम व्योम कूं उट्ठै, रान कै प्राए जम रांन से रुट्ठै। —रा. रू.

उ०—३ करण अखियात चढ़ियो भलां काळमी, निवाहण वैण भुज बाधियां नेत। पवारां सदन वर-माळ सूं पूजियो, खळां किरमाळ सूं पूजियो खेत। —बांकीदास आसियो

उ०—४ रज पलटै दिन हो घटै, सूर पलट्टै छांह। सूरां हंदा बोलिया, वैण पलट्टै नांह। —राव रिणमल री बात

उ०—५ चित वडपण सुभ चितवण, वजर लीक सम वैण। गाढ स्यामध्रम धरण गह, रहण 'पतो' दिन रैण। —जैतदांन बारहठ

उ०—६ तूं मोटी महमाइ, धरम धरि ऊपरि धरणी। बध वांणी दे वैण, क्रपा करि हे कुंडळणी। —पी. प्र.

उ०—७ सुरग न देखूं अपणां नैणां, तो न पतीजूं गुर का वैणां। सुरग दिखाऊं तेरे तांई, सुरग गयो मन फेरै नांही। —वील्होजी

वैणडंड, वैणदंड—सं. पु [सं. वेणी+दण्ड] १ एक प्रकार का सर्प विशेष।

उ०—गढां भूखियो कांमरी हांम गाढी, दिनो मूछ वळ पांण सत्तांण दाढी। पौरस्सं तरस्सं उसस्सं प्रचडं, विकरसं हुसै ऊधसै वैणडंडं। —गु. रू. बं.

२ देखो वेणीडंड (रू. भे)

वैणन—सं. पु. [सं. देणानः] श्वान, कुत्ता। (ह. नां. मा.)

वैणव—वि. [स] बांस का, वास सम्बन्धी।

सं. पु. [स. वैणव] १ बास का बीज या फल।

२ विश्वामित्र के वंशज एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

[सं. वैणवः] ३ बांस का डंडा विशेष, जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है।

रू. भे.—बैणव।

वैणवी—सं. स्त्री. [सं.] १ वंशलोचन।

[सं. वैणविन्] २ बशी बजाने वाला व्यक्ति।

३ शिव, महादेव।

वैणसगाई—देखो 'वयणसगाई' (रू. भे.)

उ०—वैणसगाई वरणिया, अगण दघक्खर खेर। थई सगाई जेण थळ, वळे न रहियो वैर। —र. ज. प्र.

वैणा—देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—वैणा पुस्तक धारिणी, काममीर कदरि वसंति, गीत नाद गुण गाह, दियण देखि कवियण दियंति। —अ. वचनिका

वैणावैणी—देखो 'बोलचाल'।

उ०—तद इण कही, और तो मुझ कुं कोई न राखे, पिण एक देपाळ राखेगा। तद पातसाह कही, तो भला जाई। तद पातसाह तो और हुरंम पासे गयो। तद राते आ सुखपाळ चढ नै देपाळ रे गई। आई नै कह्यो, देपाळ नुं कहायो, मै पातसाह सुं वैणावैणी हुई तै पगा हूं अठै तोनुं तक नै आई छुं। जे रजपूतपणो दाखै छै तो मोनुं राख। —देपाळधंध री बात

वैणि, वैणी—१ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

उ०—१ वणि मांग उतबंग गूंथ वैणी. मोताहळ मिळ मझ्झऐ। सिणगार असुरां छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झऐ। —मा. वचनिका

उ०—२ पिक-बांण जांण वैणी पनंग; हिरणाखी हंसा-गमणि। रग-महल सिंघ राजांन सुर, रमति राज-पुत्री रमणि। —गु. रू. बं.

उ०—३ लोयण चंचळ चपळ, अचळ धू जिस मन धारण। कडि मयद मुख इंद, दोरघ वैणी अहि दारण। —गु. रू. बं.

उ०—४ केहरि जिम कडि क्रिस्स, लगति चालंती गजिद्रह। सोभति वैणी सरप, हरे धीरज्ज खगिंद्रह। —गु. रू. बं.

२ देखो 'वहणी' (रू. भे.)

वैणीडंड, वैणीदंड—देखो 'वेणीडंड' (रू. भे.)

वैणो—सं. पु—१ बढई का एक प्रकार का औजार विशेष।

२ देखो 'वीणो' (रू. भे.)

वै'णो—देखो 'वहणो' (रू. भे.)

वै'णो, वै'बो—१ देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ०—अरु नरसिंघ पण वीकेजी माथै आयो, नै तरवार कंवरजी नूं वाही सू बगतर कटनै खंवै रै झरपट सी लागी। समर्थ वीकेजी कयो, 'नरसिंघ, तरवार यूं वेहै।' इसो कहनै तरवार वाही सू नरसिंघ रा दोय धड़ हुवा। —द. दा.

२ देखो 'होणो, होबो' (रू. भे.)

वैणो, वैबो—१ देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

२ देखो होणो, होबो' (रू. भे.)

वैतंड—सं. पु.—१ अष्ट वसुओं में आपका एक पुत्र।

२ देखो 'वितड' (रू भे)

वैतंडी—सं. पु. [सं. वैतण्डी] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

वैतंड्य—सं. पु. [सं. वैतण्ड्य] आयु राजा का एक पुत्र, राजा।

वैत—सं. पु.—१ सवारी, वाहन।

२ ऊंट।

उ०—मारवाड़ रा थांणा च्यारसो मारिया गया। नै असबाब वैतां वगेरै सारो लूटियो। अरु रावजी री आंण फेरी। इण तरै दिन १५ तथा २० मारवाड़ां रा थांणा सरव मार उठाया। नै कई भाज गढ में पैठा। —द. दा.

४ वह गद्य-पद्य रचना, जिसमें अनुप्रासों व समासों की अधिकता हो।

उ०—सू लिखियो नहीं तद आलमगीर पांणी बंध करयो। पातसाहजी तिसां मरतां री ज्यांन कबज होणं लागी। तद साजिहांन जी कयो, 'लावो भाई रजूनांमा लिख दें।' जब दवात-कलम हाजर किया। पीछे पातसाहजी कलम हाथ लेकर कागज में आ बंत लिखी। —द. दा.

५ नियम, प्रण, प्रतिज्ञा।

६ दांव, पेच।

७ गुरुमंत्र।

८ लता, बेल।

९ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

१० देखो 'बेत' (रू. भे.)

११ देखो 'बंत' (रू. भे.)

उ०—१ जब राजा कही, 'तूं सोमवार रै दिन थारी बेटी री स्वयंवर कर। जैरै गळै मांहै हथणी फूलां री माळा घातै, तैनं परणाय दै।' तद आ बात मुहतै पण कबूल कीवी। कही 'वीवाह ईयं ही ज बंत करसां।' —हसराज बछराज री बात

उ०—२ मेलि परवांन मांन महाराज कीधा मन्हैं, लोपियो हुकम करतूत लहसी। हुई सहुको कहै हाक मैं हाकमी, रेत वर बंत दुस्ट दूर रहसी। —घ. व. ग्रं.

रू. भे.—बंत, भेत, भैत, बेंत, वेत।

बंतड़—देखो 'बंतड़' (रू. भे.)

बंतणौ, बंतबौ—देखो 'बंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बंतणहार, हारौ (हारी), बंतणियौ—वि०।

बंतियोड़ो, बंतियोड़ौ, बंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बंतीजणौ, बंतीजबौ—कर्म वा०।

बंतनिक—सं. पु. [सं. वेतन+इक प्रत्य.] वेतन लेकर कार्य करने वाला व्यक्ति, नौकर।

बंतर—१ देखो 'वेतर' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)

उ०—१ हेकठा हुआ बळिलणं हेत, पळहारी बंतर भूत प्रेत। खेचरा भूचरा खत पाळ, काळिका पुत्र भैरव कंकाळ। —गु. रू. बं.

उ०—२ भूत प्रेत पेसाच, बहत चेडा बह बंतर। वीर सिद्ध बंताळ निसाचर भूचर खेचर। —गु. रू. बं.

बंतरणि, बंतरणी—सं. स्त्री. [सं.] १ उड़ीसा प्रान्त में बहने वाली एक पवित्र नदी।

२ पितृलोक से बहते समय गंगा नदी का नाम। (पुराण)

३ यमराज के द्वार पर (नरक में) बहने वाली एक नदी। (गरुड़ पुराण)

उ०—धवळ न झटकै धुर वहै, कासूं पांणी कीच। इण री जननी सारही, बंतरणी रै बीच। —बां. दा.

वि० वि०—कहा जाता है कि उक्त नदी में जल की जगह गर्म लोहू, अस्थि, मज्जा आदि तेज प्रवाह से बहता है। यह नदी मरने के बाद जीवात्मा को पार करनी पड़ती है। इसमें से ब्राह्मण को गो-दान करने वाला धर्मात्मा ही पार हो सकता है एवं पापी को इसे पार करने में कठिनाई होती है और दुख भोगना पड़ता है। यह नदी सती के वियोग से जो अश्रुधारा शिव के नेत्रों से बही उसी से बनी थी। इसका विस्तार दो योजन है।

४ दान में दी गई वे वस्तुएं जो परलोक में उन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने की अभिलाषा से दी जाती हैं।

५ देखो 'वेतरणी'।

रू. भे.—वेतरणी, बैंतरणी, वेनरणी, वेयरणी।

बंतरणीइग्यारस, बंतरणीएकादसी, बंतरणीग्यारस—सं. स्त्री. [सं. वैतरणी एकादशी] मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी।

बंतरणौ, बंतरबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बंतरणहार, हारौ (हारी), बंतरणियौ—वि०।

बंतरिग्रोड़ो, बंतरियोड़ौ, बंतरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बंतरीजणौ, बंतरीजबौ—कर्म वा०।

बंतरियोड़ौ—देखो 'बेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बंतरियोड़ी)

बंतवार—वि०—मूर्ख, नासमझ। (अ. मा.)

बंतांडारूपा—सं. स्त्री.—विकृत रूप धारण करने वाली देवी।

उ०—सोकोतर सोमया तुं सुधीर, बंतांडारूपा विकट बीर। सीवरघां सीधा धातु सभेव, अहिमुखां मुगट कंसाजु ग्रेव। —रामदान लाळस

बंताढ्य, बंताढ्यगिरि—सं. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—व्रत दीरघ बंताढ्य, वीस सत्तरसौ आढ्य सत्तर मडा नदी ए पंच चूला सबीए। —वृस्त.

बंताणौ, बंताबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बंताणहार, हारौ (हारी), बंताणियौ—वि०।

बंतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बंताईजणौ, बंताईजबौ—कर्म वा०।

बंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बंतायोड़ी)

बंताळ, बंताल—सं. पु. [सं.] १ व्यास की ऋक्शिष्य परंपरा में से बातुकर्ण्य आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'बेताळ' (रू. भे.)

उ०—१ गहक्कं तूर त्रंबाळ, चंड कळिचाळ कहक्कं। बकै वीर बेताळ, ग्रीध बेताळ गहक्कं। —सू. प्र.

उ०—२ वोग्गमं बंताळं, खिलै खेतपाळं। कटक्कां कसस्से, सुभट्ट सनस्से। —गु. रू. बं.

उ०—३ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा बहु बेतर। वीर सिद्ध बंताळ निसाचर भूचर खेचर। —गु. रू. ब.

उ०—४ बंताल वीर मिळिया बिहद, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध ग्रामंख भक्ख, जबक्क रीछ बड्डाक जक्ख। —गु. रू. बं.

बंताळरस, बंतालरस-सं. पु [सं] गंधक, मिर्च ग्रौर हरताल के योग से बनने वाला एक प्रकार का रस विशेष। (वैद्यक)

बंताळिक, बंतालिक-स पु. [सं. वैतालिक] १ राजाग्रों ग्रादि को उनकी कीर्तिगान करके जगाने वाला व्यक्ति भाट, बन्दीजन।

उ०—प्रभात समउ हुउ, ग्रंधकार फीटइ, गाय तणा गाला छूटा, तारागण विरल हुउ चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडां तणी वलि लवइ, देव तणां बार ऊघडियां, प्रभातिक तूरय वाजिया, राजभवनइ बंतालिक पढइं, विजोगा तणा भरडका ऊपजइ, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणे घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुग्रा। —व. स.

वि० वि०—ये लोग राजाग्रों को किसी विशेष घटना, बात ग्रादि की सूचना देने का कार्य करते थे।

२ व्यास की ऋकशिष्यरंपरा में से शाकधूणि नामक ग्राचार्य का एक शिष्य।

रू. भे.—बेताळिक, बंताळिक, वेताळिक।

बंतालिकीविद्याग्यांन-स. स्त्री. [सं. वैतालिकीविद्याज्ञान] ६४ कलाग्रों में से एक।

बेताळी-सं. पु. [सं. वैताली] १ स्वामी कार्तिकेय का एक ग्रनुचर।

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

उ०—काज माळी कमाळी उताळी फिरै माहाकाळी, नचै ग्राळी जाळी वीर बंताळी निसंक। ताळी बाज ग्ररावां साबात जाळी नराताळी, लांघडै प्रजाळी जांणे हेकै साथ लंक। —किसनजी ग्राढो

बंताळीस, बंतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

उ०—पनरैसं बंतालीस कोडीरे, ग्रट्ठावन लख ग्रधिकै जोडी। छत्तीस सहस ग्रधिक कही रे, प्रतिमा सगली सरव हीयै रे। —वृस्त

बंतियांण-वि.—समर्थ, सामर्थ्यवान् शक्तिशाली, बलवान्।

रू. भे.—वहतीवांण, बंहतीवांण।

बंतियोड़ौ—देखो 'बंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बंतियोड़ी)

बंतुंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

बंतुल-सं. पु.—घोड़ा, ग्रश्व। (ना. डि. को.)

बंत्रासुर—१ देखो 'वत्रासुर' (रू. भे.)

२ देखो 'वेत्रासुर' (रू. भे.)

बंत्रासुरखंडळ, बंत्रासुरखंडल-सं. पु.—वृत्रासुर नामक राक्षस का वध करने वाला, इन्द्र। (ना. डि. को.)

बंथी—देखो 'बेथी' (रू. भे.)

उ०—जोर कियौ सारै बंथी भागै नहीं, रुमाल लपेट कै पांय परै है। खांडो बगस जद मेड़तो दीनो, दूदो जंभेसर नांव धरै है। —सेवादास

बंदंग-सं- पु.—१ ग्रायुर्वेद, वैद्यक, चिकित्सा।

२ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे)

बंदगर—१ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—नाड़ी निरख भया बंदगर, ग्रनत ग्रोखदी कीन्हा। सारी धात रसांयन करि करि, ग्रातम एक न चीन्हा। —ग्रनुभववाणी

२ देखो वेदग्य'।

बंदंगी—१ देखो 'वैदंग' (रू. भे.)

२ देखो वैद्य' (रू भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू भे.)

बंद-सं. पु. [सं] १ विद ऋषि के एक पुत्र का नाम।

२ विद ऋषि के वंशज।

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे)

उ०—१ हरीया पीर परापती, तन तै दई लगाय। बंद विचारा क्या करै, बिन भुगत्या नही जाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ ज्योतिषी बंद पोराणिक जोगी, संगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तौ ग्ररथ कहि। —वेलि.

उ०—३ बंद किण ही नै ग्रांख्यां री कारी कीधी। ग्रांख ठीक हुवां बंद बधाई मांगै। जद कहै पंचा नै पूछ स्। पंच कहसी सूझ तो हुवो तो बधाइ देम्। जद बंद बोल्या—तो नै कांइ दीसे है? —भि. द्र.

बंदक-वि०—जानकार, ज्ञाता।

उ०—व्याकरण वेद बंदक विविध, भला उवर सहुको भरो। धरमसीह रतन बहुंला धरणी, कोई गरब रखै करो। —ध. व. ग्रं.

२ देखो 'वंदिक' (रू. भे.)

उ०—बहु ग्यांन रसायण सुर घुनं वेदं तथा जोतिसं, व्याकरण च धनुरधरं जळतरं मंत्राक्षरं वैदकं। —रा. सा. सं.

३ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

४ देखो 'वैद्य' (रू. भे.) (अ. मा.)

वैदणी—देखो 'वैद्यणी' (रू. भे.)

वैदथिन—सं. पु. [सं.] विद ऋषि कुलोत्पन्न ऋजिश्वन नामक आचार्य।

वैदरभ, वैदरभ—सं. पु. [सं. वैदर्भ] १ रुक्मणी के पिता का नाम।

२ दमयंती के पिता का नाम।

३ आधुनिक बरार प्रदेश का नाम, विदर्भदेश। (व. स.)

उ० मलय सिंगल कोसल नइ वंध्य, स्त्री परवत द्राविड नइ वध्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्त्री वैदरभ पाटल प्रति सार। —नळदवदतीरास

४ उक्त प्रदेश के राजा भीम का नाम।

वैदरीम, वैदरभी—सं. पु. [सं. वैदर्भी] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपा-मुद्रा के पिता का नाम।

२ विदर्भ नरेश के वंशज भार्गव नामक आचार्य का नाम।

३ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक की राजकुमारी रुक्मणी का नाम।

४ विदर्भ नरेश की राजकुमारी और नल राजा की पत्नी का नाम।

५ कुश नामक राजा की पत्नी एवं कुशाम्ब, कुशनाभ आदि की माता का नाम।

६ सगर महाराजा की पत्नी का नाम, जिसके साठ हजार पुत्र कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि में भस्म हुए थे।

७ मलयध्वज की पत्नी का नाम।

८ काव्य रचना की एक प्रकार की शैली विशेष, जिसमें मधुर वर्णों से मधुर रचना की जाती है। यह करुण, शृंगारादि रसों के लिए अधिक उपयुक्त है। (साहित्य)

वि० वि०—लाटी, पांचाली एवं गौडी इसके अन्य तीन प्रकार होते हैं।

वैदराज—देखो 'वैद्यराज' (रू. भे.)

उ०—भणंत एक व्याकरण, वीर दस्ट के करै, तरक्क नीति सास-त्रांणि, एक मुक्ख उच्चरै। मारंत एक सब्ब धात, केळवै रसायण, अगाध वैदराज राज ओखदी विचारण। —गु. रू. ब.

वैदल—सं. पु. [सं.] १ पराँवटा नामक खाद्य पदार्थ २ दाल का अनाज ३ भिखारी के भीख मांगने का पात्र।

वैदही—देखो 'वैदेही' (रू. भे.) (नां. मा.)

वैदाणी, वैदानी—देखो 'वैनाणी' (रू. भे.)

उ०- तीतर लवा बाटबड, वैदांणी बुगलाह। सबं पखीवण रह्या, वाह वाह जो वाह। गज-उद्धार

वैदिक—वि० [सं.] १ वेदों में वर्णित, वेदोक्त।

उ०—विद्या वेदां में वैदिक विधि वरणी, अपणीं करणीं सूं भव-पार उतरणी। निरभय नींयता यंता नरनारी, करता विस्वंभर भरता सुखकारी। —ऊ. का.

२ वेदोक्त कृत्य करने वाला।

३ वेदों का ज्ञाता, पंडित।

४ वेदों का, वेदों से सम्बन्धित।

रू. भे.—वैदिक, वेदक, वेदिक, वैदक।

वैडूरय, वैडूरयमणि, वैडूरयमणी—सं. पु. [सं. वैडूर्यमणि] १ हरे रंग के रत्न।

२ लहसुनिया नामक रत्न विशेष। (व. स.)

रू. भे.—वैडूरय, वैडूरयमणि, वैडूरयमणी।

वैदेह—सं. पु. [सं.] १ विदेहराज जनक।

२ विदेह का निवासी।

३ वैश्य या व्यापारी।

४ ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न वैश्यपुत्र।

५ महाराजा निमि के पुत्र तथा वंशजों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधनसूचक शब्द।

६ विदेह देश के राजा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

वैदेहरात—सं. पु. [सं.] एक प्राचीन ऋषिगण जो विश्वामित्र के कुल से उत्पन्न हुए थे।

वैदेही—सं. स्त्री. [सं.] १ विदेह राजा जनक की कन्या सीता, जानकी।

२ जनमेजय पुत्र शतानीक की पत्नी का नाम।

३ विदेह कुलोत्पन्न।

४ पिप्पली। (अ. मा.)

रू. भे.—वैदई, वैदही।

वैद्य—वि. [सं.] १ वेद का, वेद सम्बन्धी।

२ औषधि का, चिकित्सा सम्बन्धी।

३ चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

सं. पु. [सं. वैद्यः] १ आयुर्वेद का ज्ञाता एवं उसी के अनुसार चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, आयुर्वेदाचार्य।

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या कोइ ने आंख्यां न सूझै तिण पूछ्यो सहर में नागा किता अनें ढकिया किता? जद वैद्य बोल्यो —आंख्यां में ओखध घाल नें सूझती तो हूं कर देऊं अनें नागा ढकिया तूं देखलै। —भि. द्र.

उ० २ हकीम वैद्य सरब पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जाण असाध्य व्याध जगदंबा, अंबा वांसै आई। —मे. म.

२ विद्वान, शास्त्राचार्य।

३ वैद्य नामक जाति का व्यक्ति जो वैश्य माता, व ब्राह्मण पिता के संसर्ग से उत्पन्न होता है।

४ सब विद्याओं का ज्ञाता, विष्णु भगवान्।

५ सुख देवों में से एक।

६ वरुण एवं सुनादेवी के पुत्र का नाम, जो घृणि एवं मुनि का पिता था।

रू. भे.—बेद, बंद, वइदउं, बयद, वेज्ज, बैदंग, वेदगर, बैदगी, बैद, वैदक, वैद्यक।

अल्पा.,—वैदियौ।

वैद्यक—सं. पु.—१ रोगों के निदान एवं चिकित्सा आदि के विवेचन का शास्त्र।

२ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक। (व स.)

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

४ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

उ०—व्यापारी मह वांणिम्रा, जोसी वैद्यक व्यास। मागरण पणि मिलिया बह, सहु नी पूगइ आस। —मा कां प्र.

रू. भे.—बेदक, बैदई, बंदक, बैदणौ, बैदिक, बैदक, वैद्यग, वैद्यिक।

वैद्यकक्रिया—सं. स्त्री.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक कला का नाम। (व. स.)

वैद्यग—सं. पु.—१ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मंत्रकार।

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

वैद्यगी—सं. पु.—वैद्य का कार्य, चिकित्सा।

रू. भे.—वेदगी, वेदगी, बैदगी।

वैद्यनाथ—सं पु [सं.] १ बंगाल का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

२ मण्डोर का एक प्रसिद्ध स्थान।

३ धन्वन्तरि।

४ शिव, महादेव का एक अवतार जो चिताभूमि में से रावण की प्रार्थना पर हुआ था।

५ महादेव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक।

रू. भे.—बैजनाथ, वेजनाथ, बैधनाथ।

वैद्यराज—सं. पु. [सं.] वह वैद्य जो चिकित्सा करने में अति दक्ष हो।

रू. भे.—वइदराज, वईदराज, वेदराज, बैदराज।

वैद्यिक—देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

उ०—वैद्यिक ज्योतिस निमित्त नै ए, भाखै परिग्रह कै काज के। जिकै तज निकल्या ए, धन मौटा मुनिराज के। —जयवांणी

वैधृतगिर, वैधुतगिरि—सं. पु. [सं. वैधृतगिरि] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वैद्रभा, वैद्रबा—देखो 'विदरभा' (रू. भे.)

उ०—१ कांई भूला भमई गज थाटन रे, थाटन रे बळती न लहई वैद्रभा रे। डोली चाल्या दांणव आवइ रे, कांइ पावइ रे कोधुं कुबधी आपणउ रे। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ वेग चालया हय रे रे, रथ सूं रथ बांध्यौ रळी। गज थाट मोगर वहइ उबट वैद्रबा थई वेगळी। —रुकमणी मंगळ

वैध—देखो 'वैध' (रू. भे.)

वैधनाथ—देखो 'वैद्यनाथ' (रू. भे.)

वैधव, वैधव्य—सं. पु. [सं. वैधव्यं] विधवा होने की अवस्था, विधवापन

रू. भे.—वैधव।

वैधस—सं. पु. [सं.] वेधस के वंशज हरिश्चन्द्र का एक नाम।

वैधी—सं. पु. [सं. वेधिन] दुश्मन, शत्रु। (अ. मा.)

वैधोकरण—सं. पु.—कुंती पुत्र अर्जुन। (अ. मा.)

वैधौ—देखो वेदौ' (रू. भे.)

वैध्रत, वैध्रति, वैध्रती वैध्रित, वैध्रिति, वैध्रिती—सं- पु. [सं. वैधृति]

१ फलित ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से सत्ताईसवें योग का नाम जिसमें शुभ कार्य करना निषिद्ध है।

उ०—व्यतोपात वैध्रति वली, सूरिजनी संक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

२ तामस मन्वन्तर का देवगण या देवगणों की माता।

३ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के धर्मसेतु नामक अवतार की माता।

४ ग्यारवें मन्वन्तर धर्मसावर्णि के इन्द्र का एक नाम।

५ विधृति के पुत्रों का सामूहिक नाम।

वैन—सं. पु. [सं.] व्यास की सामशिष्य परम्परा के अन्तर्गत शृंगी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'बहन' (रू. भे)

उ०—१ अरु बैन अेक रिड़मल री तिकी पाटण तंवरां नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खडेले लाया। पीछे रावजी खडेलो लूटियो। तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अरु रावजी श्रीश्रीकंजी आपरी ठकुरांणी करी नै बैन वंसांणी। —द. दा.

उ०—२ जी साहिबा छोटी ननंद थांकी बैन, बाईसा कर मानती जी म्हांरा राज। जी साहिबा थांनै लगाई अत्ती देर किसूर म्हारी नायजी म्हांरा रा'ज। —गणगोर रो गीत

३ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—घर हर कंपै नेड़ी थकां रे, अलगा पावै चैन। ओरां री कुणसी चले रे, न मांनै माइतां रा बैन —जयवांणी

बेनड़—देखो 'बहन' (मह., रू. भे.)

उ०—१ हरसा भाई म्हारा रे, बेनड़ आई रौ गाढ़ो नेहु। —जीणमाता रो गीत

उ०—२ जीण मेरी बाई यें ऊंची सो बालू यें थानें बैनगू , बैनड़ भाई जीमा साथ । जामण कीं यें जाई विच विच बदळां यें वाल्हा गासिया । —जीणमाता री गीत

बैनड़ली, बैनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हूं तो जीणा बैठ' र हेलो जी मारू, आय परोमें म्हांगी बैनडी. बीरै रै आंगण आंबो मोरियो —लो गी.

बैनतीय बैनतेय बैनतेय—सं. पु [सं. वैनतेय] विनता का पुत्र, पक्षी-राज गरुड़ । (अ. मा , ना. मा.)

उ०—१ लेवनी ठेकाण आओ मेम धू पयाळ लाबी, बैनतेय वसे वेग बरणें न बिचार । क्रामनी मपूती लीधा कोळमंड क्रीत काज, श्रोपें करां परांगरी बुध री आचार । —बादरदान दधवाड़ियो

उ०—२ तोयधी मंदिर पांग वचै व्याळ बैनतेय, दूठ श्रद्र वचै घांण जुधांण दधीच . बळ्यां मत्रा चा बाधा चद रायासाल बीजै, बीर खागां खाधा जेत लाधा भीम बीच । —हुकमीचंद खिड़ियो

२ गरुड़ की प्रमुख संतानों में से एक संतान का नाम ।

रू. भे —बैनतीय, बैनतेय ।

बैनहोत, बैनहोतर, बैनहोत्र—सं पु. [सं वैनहोत्र] १ वीतिहोत्र नामक राजा का नामान्तर जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र था ।

बैनांणी—१ देखो 'बिनांणी' (रू भे)

२ देखो 'बैनांणी' (रू. भे.)

बैनायकीविद्याग्यांन—सं. पु. [सं] वैनायिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

बैनासिक—सं. पु. [सं. वैनाशिक] १ जन्म नक्षत्र मे तेरहवां नक्षत्र । (फलित ज्योतिष)

२ जन्म नक्षत्र म सातवां, दसवां एवं अठारहवां नक्षत्र ।

वि० वि०—उक्त तीनों नक्षत्र अशुभ माने जाते है । इन्हें निधन-तारा भी कहते हैं । इन मे यात्रा एवं शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं।

बैनीत—१ देखो 'बेनीत' (रू. भे.)

उ०—कळह हलो नळ बेल सु बैनीत वधारो जाद कहू बायक जोर रा फुरमास न धारो । लिया बळधह जाटदा तद कीध तयारी, जान चढंता जोईया वाजा वजवारी । —पौ. मा,

२ देखो 'विनीत' (रू भे)

बैनु—देखो बैनू' (रू. भे.)

बैनोई—देखो 'बहनोई' (रू भे.)

बैन्य—सं. पु. [सं.] १ भृगुकुलोत्पन्न एक मंत्रकार का नाम ।

२ राजा पृथु का नामान्तर ।

३ राजर्षि पृथि का नाम ।

४ राजर्षि पृथी का नाम ।

५ अत्रि ऋषि का नाम ।

बैपस्चित—स. पु. [सं. वैपश्चित] विपश्चित ऋषि कुलोत्पन्न तार्क्ष्य नामक ऋषि का नाम ।

बैपार देखो व्यापार' (रू. भे)

उ०—१ पर घरनी छासि, कंठ त्रिहुंणी रासि, अवसर बिना मास, कुकुळ नो दास । कूम नो भाग जमाई नो भाग, काचो ताग, पांणी नो माग गदीवा नो तेज दुरजन नो हेज । उधारा नो बैपार, रांड ना सिणगार । पावड्यानो प्यार । रा. सा. सं

उ० २ उग ऊकमा प्रसपत्त सूं तुकमा लेवण त्यार । पाछा करण 'प्रताप' ज्यू, वेढ अपत बैपार । —किसोरदांन बारहठ

बैपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ० दुनिया गाढी कैवै के पुलिस बेईमान है, म्हूं पूछूं के आज रै जमाना में कुण बेईमान नी है ? ए अनेक करणिया बैपारी. ए रिस्वता ठाकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाइ तो म्हारा भाईवंद है । पछै म्हांनै इज क्यूं बदनाम किया जावै ? —अमर चूंनड़ी

बैपुर—स. पु.—गगन, आकाश । (ना. डि. को)

बैफुल, बैफुली देखो 'बहुफुली' (रू. भे)

उ०—गोहू पसै सेवंत्री पाडला, जोल वणी गुलजार । बैफुल वादी ऊरै, रहिया भंवर गजार । —पना

बैभव—सं. पु. [सं] १ विभव, ऐश्वर्य ।

उ० —चळ बैभव, संपत सुचळ, चळ जोबण, चळ देह । चलाचली के खेल मे, भलाभलो कर लेह । —अग्यात

२ धन, दौलत, सम्पति, द्रव्य ।

उ० —अग्नि इंद्र प्रताप पाक पिंड तेज प्रभा-कर । क्रोध जम्म बैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर । —गु. रू. बं.

३ बहुतायत, आधिक्य ।

४ महिमा महत्त्व ।

५ सामर्थ्य, शक्ति ।

६ कार्य, धन्धा, व्यवसाय ।

रू भे. -बभो, बिभो, विभव विभौ, बेभव, बैभव, भंभो, विभ, विभव, विभाव, विभौ, विहव, वीभव, वैभो, वेभू, वेभव ।

बैभवता—सं. पु. [सं. वैभव+ता प्र.] वैभव होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे.—विभवता, वीभवता ।

बैभववांन—वि० [सं. वैभव+वान्] १ विभववान्, ऐश्वर्यवान ।

२ धनवान्, सम्पत्ति वाला, दौलत वाला ।

३ महत्वपूर्ण, महिमा वाला ।

४ व्यवसायी।

५ सामर्थ्यवान, शक्तिशाली।

रू. भे.—विभववांन, वीभववांन।

वैभांडक, वैभांडुकि, वैभांडिक–सं. पु. [सं] पूर्णभद्र नामक आचार्य जो गोत्र प्रवर्तक भी कहे जाते हैं।

वैभवसाळी, वैभवसाली–वि० [सं. वैभवशाली] १ वैभववान, ऐश्वर्यवांन।

२ जिसके पास अत्यधिक धन-दौलत हो।

रू. भे.—विभवसाळी, विभवसाली, वीभवसाळी, वीभवसाली।

वैभाखण—देखो 'विभीखण' (रू. भे)

उ०—उवै वार वभीखणो चालि आयो, लखं तैं हणूंमांन पावा लगायो। प्रणामेस वैभाखणं भूप येनूं, जपै आव लंकेस स्रीरांम जेनूं। —सू. प्र.

वैभार–सं. पु.—वैहार नामक पर्वत जो राजगृह के पास स्थित है।

उ०—जिन आदेस लेइ करी जी, चढिया मुनि गिरि वैभार। सिल ऊपरी जइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीधउ सार। —स. कु.

रू. भे —वैहार।

वैभीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

वैभीत—१ देखो 'भंभीत, (रू. भे.)

२ देखो 'भयभीत' (रू. भे.)

वैभीसण, वैभीसणि, वैभीसणो–सं. पु. [सं. वैभीषणि] १ मणि कुंडल नामक वैश्य को शाप मुक्त करने वाला विभीषण का पुत्र।

२ देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

वैभोज–सं पु. [सं.] द्रह्यु के वंशज एक प्राचीन जाति।

वैभ्राज=स. पु. [सं] १ सुमेरू पर्वत के पश्चिम में स्थित सुपार्श्व नामक पर्वत पर स्थित एक जंगल का नाम। पुराण)

२ पांचालनरेश का नाम जो ब्रह्मदत्त का पिता था।

३ एक लोक विशेष का नाम।

वैं'म, वैम–सं पु.—१ सम्बन्ध, लगाव, गरज।

उ०—बूढी भोळी डोकरयां नैं आपरा वेटा वेगा सा छुडा ल्यावण रा वसंतो घमंड दिखाळै है। भुवांळो खावतो फिरै। घर-घर गेड़ा काटै। मिनखां मैं रिरावै, लीलड़ी काढ़ै। गव्हायां री गरज करै, वकीलां सूं वैम राखै। —दसदोख

२ देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—१ पटवारी है क, तैसीलदार? किसनजी कीं कूंत नी सक्यो। सौखीनाई अर खरच-वरच री चीजां-वसतुवां सूं खूब राजी हुयो। बूढापै हालां पोखदो माथै वैं'म ही नीं गयो। ओसध्या ही तीस-पैंतीस तांई री अकल मैं आई। —दसदोख

उ०—२ एकर री वात, राजी रै जापै मैं पौन-हवा निकळगी। बावळी वंडा करण लागगी। गुण विखेरै अर तत्ता-पत्ता सूं वूही वातां करै। जकै सू घर हाला नै भूतणी रो वैं'म वड़ गयो है? —दसदोख

उ०—३ पण राजी तो दबटी पड़ी ही टीलो मारै। जकै सूं सै भूतणी रो वैं'म करै है, सनीपात नै कुण समझै? कोई जिंद वतावै, कोई चूड़ावण रो नांव लेवै है। कोई ओपरी छाया कढावण री उतावळ करै, कोई पलीत नै पांणी दुलावणो बतावै। —दसदोख

उ०—४ उदास मन सूं वानै कियांई ठिरड़तो-ठिरड़तो मोटर में आय नैं बैठ्यो तो बैठतां पाण एक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टारट व्हैगी। जांणै उणनैं वैं'म हो कै म्हूं आळांणो नीं कर दूं अर पाछो रवांनै नीं व्हे जाऊं। —अमर-चूंनड़ी

वैमनस्य–सं. पु. [सं] १ वैर, दुस्मनी, शत्रुता।

२ मानसिक शीथलता, उदासी।

वैमर—देखो 'विवर' (रू. भे)

उ०—तेण समै आप रा धणी री कही हकीकत धारि, मूरत उठाई, मूरत नीचै वैमर थो, तठै होय नै घर वीसो चालो। —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वैमांणिक—देखो 'वैमानिक' (रू. भे.)

वैमांणिकदेव—देखो 'वैमानिकदेव' (रू. भे.)

वैमांणी, वैमांणीक, वैमांणीय, वैमानिक–वि० [सं. वैमानिक] १ विमान सम्बन्धी, विमान का।

२ आकाश में विचरण करने वाला।

सं. पु —१ हवाईजहाज पर सवार होने वाला।

२ हवाईजहाज चलाने वाला।

३ एक प्राचीन तीर्थ जहां स्नान करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है तथा वह विमानों में चाहे वहीं घूम सकता है।

४ देखो 'वैमानिकदेव' (रू. भे.)

उ०—पंचेंद्रि तिरजंच नै मानव, एह थया इकवीस जी। वितर जोतिसी नै वैमानिक इम दंडक चोवीस जी। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—विमांणिक, विमांणी, विमांणीक, विमांणीय, विमांनिक, वेमांणिक, वेमांणिय, वेमांणी, वेमांणीक, वेमांणीय, वेमांनिक, वैमांणिक।

वैमानिकदेव–सं. पु. [सं. वैमानिकदेव] स्वच्छ, निर्मल एवं रत्नजड़ित विमानों में विचरण करने वाले देव। (जैन)

उ०—ति चउरिंद्री गरभज वली, नर तिरयंच कह्या केवली। भवण जोतिख वैमांनिकदेव, चउवीस दंडक ए नित मेव। —सं. कु.

वि० वि०—ये देव दो प्रकार के होते हैं—(१) कल्पोपपन्न देवः—

वे देव जिनमें छोटे-बड़े आदि का व्यवहार होता है। ये बारह प्रकार के होते हैं।

(२) कल्पातीत देव:—वे देव जो अहंमिद्र होते हैं अर्थात जिनमें छोटे-बड़े आदि का भाव या व्यवहार नहीं होता है। इनके दो भेद हैं।

१ ग्रैवेयक एवं २ अनुत्तरोपपातिक।

लोक पुरुषाकार है जो चौदह राजू परिमाण है। नीचे तेहरवें राजू का काफी हिस्सा छोड़ कर ऊपर के हिस्से में ग्रीवा के स्थान में रहने वाले देव ग्रैवेयक देव कहलाते हैं। जो नौ प्रकार के होते हैं। जिन देवों की स्थिति, प्रभाव, सुख,द्युति (कांति), लेश्या आदि अनुत्तर प्रधान है या स्थिति, प्रभाव आदि में जिन से बढ़कर कोई दूसरे देव नहीं है वे अनुत्तरोपपातिक देव कहलाते हैं। ये देव पांच प्रकार के होते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर छब्बीस प्रकार के वैमानिक देव होते हैं।

रू. भे.—बिमांणिकदेव, विमांनिकदेव, वैमांणिकदेव।

वैंमाता, वैमाता—देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

वैमार—देखो बीमार' (रू. भे.)

उ०—सु जैत प्रभात रौ सिकार चढ़ियौ हुंतौ। वैसाख जैठ रै लूवां रा दिन हुंता। सु जैत ताहरां ही ज सिकार रम नै लू रौ झकोळियौ थको घणौ तावड़ सो बैमार थको आय नै खसखांनै मांहे आय पोढियौ। सु खसखांनै बाहरा घणीरौ छड़काव कीयौ।

—जैतमाल पुमार री वात

वैमित्रा, वैंमित्रा-सं. पु [सं. वैमित्रा] १ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम। २ सात शिशु माताओं में से एक।

वैंमौ, वैमौ—देखो 'वहमौ' (रू. भे.)

वैमुख—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरौ रिपु प्रांणी, ताहू न कदे सतावै। —र. रू.

वैम्रग, वैंम्रिग—सं. पु. [सं. वैमृग] कश्यप एवं दनु का एक पुत्र दानव।

वैंयकौ—देखो 'वैयकौ' (रू. भे.)

वैयमक-सं. पु [सं.] एक प्राचीन जाति।

वैयर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

२ देखो 'वैर' (रू. भे.)

वैयश्व-सं. पु. [सं. वैयश्व] व्यश्व का वंशज विश्वमनस् नामक एक आचार्य।

वैयाध्रपद्य-सं. पु. [सं.] युधिष्ठर द्वारा अज्ञातवास काल में धारित नाम।

वैयायिक-सं. पु. [सं.] १ दर्शन सिद्धान्त। (बौद्ध)

२ सर्वश्रेष्ठ एवं धार्मिक कर्मों में विघ्नकर्ता एक क्रूर देव।

वैयार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—लियौ जनम नर संसार, लागौ जगत वैयार। जै नर किसा हरि सूं कोल, भूलौ भ्रम का सब बोल। —ऊदोजी नैण

वैयालिस, वैयालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

वैयावच, वैयावच्च, वैयावत, वैयावृत्य-सं. पु. [सं. वैयावृत्य] एक प्रकार का व्रत या तप विशेष जिसमें आचार्य आदि बड़े एवं आदरणीय पुरुषों की दस प्रकार से सेवा की जाती है। (जैन)

वि० वि०—उक्त व्रत या तप में आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, गलानी (रोगी), तपस्वी, स्थविर, स्वधर्मी, कुल (गुरु भ्राता), गण (सम्प्रदाय के साधु) और संघ (तीर्थ) को आहार, वस्त्र, पात्र, औषधोपचार आदि दिये जाते हैं तथा पाद, पीठादि की चम्पी की जाती है।

रू. भे.—वेयावच, वेयावच्च।

वैंयोड़ौ, वैयोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'व्होयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंयोड़ी, वैयोड़ी)

वैयौ—देखो 'वहयौ' (रू. भे.)

वैरंग, वैरंगौ—१ देखो 'विरंग' (रू. भे.)

उ०—भख मुहगौ करतै भु अंतर, वनचर ऊसर थया वैरंग। निस दिन अरज करै निसांसै, सस आगळ ऊभौ सारंग। —रूघौ मुहतौ

२ देखो 'बेरंग' (रू. भे.)

वैरदेय-सं पु. [सं] एक गोत्रकार प्राचीन ऋषि।

वैर-स. पु [सं. वैर] १ प्रतिकार, बदला।

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति इणि भांत सूं राजांन रौ वात सुणनै अजमेर रै थांणां री हकीकत सांभळनै आदि वैर उगराह नूं असुरांणा तुरकाण रा दळ राजांन ऊपरै विदा हुआ सो किण भांत रा कहीजै छै। —रा. सा. स.

उ०—२ तरै रैबारियां कही, 'साहिबो कुंवरसी सांखले री छै। तिण कही, म्हारो रजपूत था पल्ह में मारियो। तरै वैरमें लै जावां छां, अर थानुं मारां छां।' तद अै मोटियार था, सतावी खड़ कोसां पांचा-साता आय पोहता। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ एक वार घणां सूरां रा चाचरां री खाज मेटां। करण कण करां। धकचाळां करि कांमणी भेटां। कीति उबारां। आगलां जाळंधर महाजोधार सारिखां रा वैर कळियां काढां। भसमासुर रा विरोध मांहे इंद्रादिक देवता वाढां। —मा. वचनिका

उ०—४ केसरीसिंघ अचळदासोत। संमत १६६० डामड़ो मोईसां री पटे। सुंदरदास रै वैर सोढां मारियो। सुंदरदास सुरतांणोत।

जोधपुर मेवरो पटै। पछै लवेरा री सांडां सोढे लो, नठै वाहर आपड़ सोढां सूं वेढ हुई, कांम आयो। —नैणसी

२ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध।

उ०—१ गांम में उणां री श्रो ढंग हो कै नीं किणी सूं दोस्ती अर नीं किणी सूं बैर। मारग श्रावणी अर मारग जावणी। खडी खाणी न कोई पड़ी उठावणी। पोता री मौज में मस्त रैवणी। —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ हठियो सिर हिंदुवां, माड मेलै खूमांणा, श्रादि बैर संभरै, सरस दिल्ली सुरतांणां, राजा सूरजसिंघ, जोध गजसिंह जम-ज्जड, किसनसिंघ करमेत, 'करन' संपेख महाभड। —गु. रू बं.

उ०—३ सो जोड़ी तीन सोनै रा, चोकड़ो एक मोतियां रो, सोनै रा हथियार श्रादमियां कुंवरसी कनै राखिया। तद कुंवर कह्यो, केई तो सिरदार था, बैर तो वडो पडियो। इब जाणां हा, ततो पूठो कर वाकी रा कांहि नुं जावण देवा हा वात पण नीवड़ो। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ ताहरा नरसघ भोंघळां रै पण नाळेर पकड़ियो अर कहियो, 'दिन ५ तथा ६ माहे साहो मेलजो तो श्रासां, नहीं तो म्हांहरै कांम छै। म्हारै माथै बैर छै।' ताहरां सीवळां पण तुरत साहो दीनो। —राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—उगराणी, उगराहणी, करणी, घातणी, पड़णी, बांधणी, भागणी, लैणी, वाळणी, होणी।

३ फसल। (डूंगरपुर-भील)

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'बेर' (रू. भे.)

उ०—१ जनावरां नै केरै नांव घातो छो मु कहो। ताहरां कंवर कहो बेरां ना साच कहीजै नहीं। ताहरां राणी कही तो हूं थांहरी अरध सरीरी किसी बिध छूं अर मैं थारै पणां राखस नै मरायो अरथै मना साच कहो नहीं तो थांहरै प्यार किसो। —चोबोली

उ०—२ रह्यो तै मांहै माळियै वाळो घर श्रगंणो मारियो। मार अर सरव चुकाय दीया। पण देवाळो काढियो नहीं। वैरां रै कपड़ो गहणों सुधो सरव चुकाय दीयो। श्राप पुरांणां घरै जाय रह्यो। हमैं परची जेही वाणीत पासा मागै, मु दस रुपिया रै कांम श्रावै। —ठकुरै साह री वात

रू. भे.—बइग्रर, बइयर, बइर, बईग्रर, बईयर, बईर, बयर, बेर, बैयर, वइग्रर, वइयर, वइर, वइरि, वइरी, वईग्रर, वईयर, वईर, वयर, वेर, वैरता।

ग्रल्पा.,—बैरड़ो।

मह.,—वेगे।

बैरक, बैरक्क, बैरख—सं. पु. [सं. वेर., वेरम्] १ शरीर, बदन।

२ हाथी, हस्ती। (ग्र. मा.)

३ बैरी, शत्रु, दुश्मन।

४ देखो 'बैरक' (रू. भे.)

उ०—पांना मुख वाजित्र हिलै वांनां बैरक्कां. मेघ रंग मातग वौह ऊढंग कटक्कां। पलो जेम साबळा हिलो फौजां घमसांणां, व्योम रजो विस्तरी घमस वज्जी केकांणां। —रा. रू.

रू. भे.—बेरक, बेरक।

बैरड़ो—देखो 'बैर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बैरड़ो—१ दोगला, वर्णसंकर।

२ बैर का बदला लेने वाला।

उ०—रायसिंघ तिण पाट रहै सेवै तुरकांणो, लाखणसी घर छाड हुवो नाहुलो रांणो। सेवा कीध सकत्त, वधै बरदांन वधाई। व्यातो गढ वघनोर, हुग्रो सवाइ चहुँ भाई। चहुवांण वंस रूपक वडो, रावां गंजनै बैरड़ो। वरदान श्रास लीधो वडै, खुरासांण ऊपर खड़ो। —मालो श्रासियो

३ देखो 'बैर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'बैरड़ो' (रू. भे.)

बैरण, बैरणि, बैरणी—शत्रु, दुश्मन, वैरी। (स्त्री.)

उ०—१ पवन तूं बैरण, धीमी धीमी चाल, उडती दीसै भंवरजी री पांमड़ी। कोयल बैरण, मधरी मधरी बोल, ज्यूं चित श्रावै भंवरजी नै गोरडी। —लो. गी.

उ०—२ कोयल श्रे कोयल बैरण, पिहु-पिहु बोल, हां श्रे बैरण, पिहु-पिहु बोल, चढती बाई नै यै सबद सुणाइयो। —लो. गी.

उ०—३ लाभ लेइजै लोयणां, सजन रावै सवरी। उलसै देखण न हीयो, बैरण लाज बुरी। —पनां

उ०—४ ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रही रस लाइ। चिहुं पहूरे चटकउ कियउ, बैरणि गई बिहाइ। —ढो. मा.

उ०—५ नारी बैरणि पुरुख की, पुरुखा वैरी नारि। श्रतकाळ दोनों मुयैं दादू देखि विचारि। —दादूबांणी

उ०—६ निहि श्रद्धारी बैरणी, पेला भवनी होय। सज्जन-सिउं मुख मांणीइ, निलवटि निलख्या जोय। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—वैरिण, वेरिणि, वेरिणी।

बैरणो, बैरबो—देखो 'बैरणो, बैरबो' (रू. भे.)

उ०—श्रापरो पोरस सोह वाजणां रो नहीं—हाथळ (भुजा रा) जोर सूं हाथीयां नै भांजै श्ररथात जिकां री तरवार सूं हाथियां रा श्रसुंड (सोस) बैरीजै वे मड़ सिंघ वाजै। —बी. स. टी.

बैरणहार, हारौ (हारो), बैरणियौ—वि० ।
बैरिग्रोड़ो, बैरियोड़ो, बैरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बैरीजणौ, बैरीजबौ—कर्म वा० ।

बैरस—सं. पु. [सं.] एक प्राचीन जाति । (पुराण)

बैरता—देखो 'बैर' (रू. भे.)

उ०—१ नहीं हिंदू सूं बैरता, नहीं मुसलमान सूं प्रीति । सब कुछ करि सब तें अगम, या साहिब की रीति । —ह. पु. वा.

उ०—२ ना काहूं सूं बैरता, मोहन बांधे माघ । जन हरिदास आठौं पहर, भजिए राम अगाध । —ह. पु. वा.

उ०—३ तामस गुण रस बैरता, राजस रस अभिमान । स्वातिग रस गुण लुबधड़ी, तहां जीव तोड़ तांन । —ह. पु. वा.

बैरदेय—सं. पु. [सं.] वैदिक काल का एक असुर ।

बैरभाव—सं. पु.—मनमुटाव, विरोधाभाव, शत्रुता, वैमनस्यता ।
रू. भे.—बैरभाव ।

बैरभावना—सं. स्त्री.—मनमुटाव, विरोधभाव, वैमनस्यता, शत्रुता ।
रू. भे.—बैरभावना ।

बैरवाद—सं. पु.—विरोध, शत्रुता ।

उ०—ताहरां कह्यौ—मांहरै घोड़ो सबरो कोई हुतो नहीं, तिकण पगा मांग लियो छै । तें आगै ऊमरकोट सोढां रै बडा-बडा घोडा छै । तै भाभंजी कना मांग लियो छै । ताहरां कह्यौ—इतरै ऊंटे सिलह क्यूं छै ? ताहरां कहियो—म्हारै बैरवाद छै । राजा छा, साथै सिलह चाहीजै होज, —नैणसी

बैर बैत्रासुर—सं. पु. [सं. वृत्रासुर वैरी] वृत्रासुर राक्षस का दुश्मन, देवराज इन्द्र । (ना. डि. को)

बैरस—वि०—बिना रस का, नीरस, सारहीन ।

बैरसुध—सं. स्त्री.—बदला, प्रतिकार ।
रू. भे.—बैरसुध ।

बैरहर, बैरहरण, बैरहरि—सं पु—शत्रु का वंशज, शत्रु ।
(अ. मा., ह. नां, मा.)

उ०—१ सरणाई बरण वखांणै, सरणे, मन जोगी जेहा अमर । 'रांमा' बदन वखांणै रांमा, हात वखांणै बैरहर । —पदमां सादू

उ०—२ दौड़ बरस लग रहिया दोळा, रोळा कर कर थाका रहै । चकर अदीठ 'विजै' चक्रवत रा, बैरहरां ऊपरा बहै ।
—ऊमेदसिंह सांदू

उ०—३ सिर सपत सग्रहे निहसै नित प्रत, करिमर नीप महीयं करि । रेवंत पूठि वसै जह रणमल, वास म गिण तई बैरहरि ।
—राव रिड़मल रो गीत

वि०—शत्रुता मिटाने वाला, दुश्मनी खत्म करने वाला ।

रू. भे.—बेरहर, बैरहर, बैरहरण, बैरीहर, वेरहर, बेरहरि, वैरीहर ।

बैरागर—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

बैरांण, बैरांन—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे)
२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रर जिण दिनां में साखलो नापो चीतोड़ सूं जागळ आयो, सूं ओ पण जोधपुर हाजर है । पीछै इण बीकेजी नूं कयो कै जगाळू रो पड़गनो बैरांन हुय रयो है, सू थे हालो तो ठिकांणो बांधा । —द. दा.

उ०—२ ओ भरथनेर भरथजी दसरथजी रै बेटा बसायो कदीम छै । नै कई वार बैरांन हुवो अरु कई वार आबाद हुवो । पण हजार बरस री बात है । जोइयां इणनूं आबाद कियो । पण आपस रै अमरखं में वळै बैरांन कियो । —द. दा.

बैरांम—सं. स्त्री. [सं. वैराम] एक प्राचीन जाति ।

बैराई—देखो 'बैराई' (रू. भे.)

उ०—१ कसि बांक वाळां काढि, बैराईयां सिर बाढि । हैकंप भौ महलार, त्यां दोध द्रव्य तोखार । —रा. रू.

उ०—२ वाहरवा हुए न कौ बैराई, घण बहस केकांणां घुमा । पोहु फुटन सभी दे परभूय, 'सलख' लिया ताय सलख हुआ ।
—राव सलखा रो गीत

बैराक—सं. पु—एक प्रकार का बढ़िया शराब जो चौथी बार निकाला हुआ तथा तेज होता है ।

उ०—१ तठा उपरांति करि राजान सिलामति दारू री पांणीगो मडिग्रो छै । सो किण भांति री दारू । उलटै री पलटै, पलटै री अंराक, अंराक री बैराक, बैराक री सदली, सदली री कदली, कंदली री कहर, कहर री जहर, जहर री कटाव, कटाव री नेस, नेस री जेस, जेस री मोद मोद री कमोद, कमोद, री हूल ।
—रा. सा सं.

उ०—२ तठा उपरायंत दारू रा घड़ा मगायजै छै । सू दारू किण भांत री छै ? अंराक री बैराक सदली री क़दली फूल री अतर बाती बर्भ धुंवाधोर तिवारा री काढियो, बोदी वाड़ में नाखिया जग उठै । बाप री पियो बेटो छिकै, असवार री पियो प्यादो छिकै । राजा पोवै परजा छिकै । —रा. सा. सं.

बैराग—देखो 'बैराग्य' (रू. भे.)

उ०—पछै थोड़ा दिनां पछै नाथजी दुवारै में खेतसीजी स्वामी घणा बैराग सूं घणां महोच्छव सूं रगूजी नै खेतसीजी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी । जिन मारग री उद्योत घणो ययो । —भि. द्र.

उ०—२ ठाकुर जी री ओ परसाद नी दैणो संतां रै हाथ हो । वो मिदर रा ठाकुरजी नै छोड सोधो संता रै जाय पगां पड़ियो ।

कहयो-बापजी, म्हूनें तौ बैराग सूझियो। म्हारी मुगती अबै आप रै हाथ है। म्हारै हीयै अणखींत्यो बैराग रौ गोटौ ऊठियो-अबै आपरै सरणौ हूं। —फुलवाड़ी

उ०—३ विरह न को बैराग सा, रब सा नां कोई रंग। हरख न सा हासा नहीं, सत सा ना कोई सग। —अनुभववांणी

बैरागढ़—देखो 'बैरागर'।

उ०—सिरदार वनाजी, हीरा थे लाईज्यो हे बैरागढ देस रा, उमराव वनाजी, मोती थे लाईज्यो हे समंदर पार रा, सिरदार वनाजी, सेवरियै झबूकै भो आभा बीजळी। —लो. गी.

बैरागण-सं. स्त्री.—१ बैरागी स्त्री।

उ०—१ अपणा गिरधर कारणै, मीरां बैरागण हो गई रे। —मीरां

उ०—२ दोउ कुळ छोड भई बैरागण, हरि सौं टेर दई रे। —मीरां

उ०—३ राजा सवाई जैसिंघजी बैरागणियां नूं परगणाय मथुरा मैं, व्रंदावन मैं बैरागपुरौ वसायो। —बां. दा. ख्यात

२ बैरागी की स्त्री या कन्या।

३ संन्यासियों का एक प्रकार का छोटा काष्ट का उपकरण विशेष, जो तपस्या या भजन करते समय रात्रि में वक्षस्थल के अग्र भाग तथा बाहुमूल में सहारे के रूप में लगाया जाता है।

रू. भे.—बैरागण, वेरागण।

बैरागणौ, बैरागबौ-क्रि० अ० १ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं से विरक्त होना।

२ संन्यास लेना।

३ ईश्वर भजन में लीन होना, ईश्वर के प्रति आसक्त होना।

४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटना।

क्रि. स.—५ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं से मन हटाना।

६ त्यागना। ७ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटाना।

बैरागणहार, हारौ (हारी), बैरागणियौ—वि०।

बैरागिओड़ो, बैरागियोड़ो, बैरागयोड़ो—भू० का० कृ०।

बैरागीजणौ, बैरागीजबौ—भाव वा० कर्म वा०।

बैरागर-वि०—१ बहुत गहरा।

२ खाली, रिक्त।

सं. पु.—१ खाली भूमि।

२ गहरा कूआ।

३ हीरों की खान।

उ०—हीरा बैरागर हुवै, सीप समंदरां थाय। नग लाखीणा नीपजै, 'माल' तणी घर मांय। बी. मा.

४ एक पर्वत का नाम जहां हीरों की खान है।

५ एक देश का नाम।

उ०—ककरण दांमण सघण काळ पच्छाळ निरंतर, सेतबंध रामेस लागी नव दीपां सायर. झाड़खंड मेवाड़ खंड गुज्जर बैरागर बागड़ महियड़ सहित लेड़ पावट पारक्कर। —नैणसी

६ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

७ एक प्रकार का रत्न विशेष।

उ०—१ बाप घरै ओपत बैरागर, ताम गळियो न थाय तन। दूजै 'रतन' मांज घड़ दीठो, रण अहरण भूरो रतन।

—राव सत्रुसाल हाडा रो गीत

उ०—२ वर सफर वागली, सार चक्र समसेरां। बांधी गाठ बंदूक डक बक हक डेरां। लेह चूंणी खेरवै, बक तूं ज बैरागर। मग वभूत भूरी जटा, जरद कंथा जोगेसर। सुरजनदास पूनियो

८ हीरा नामक रत्न विशेष।

उ०—रब मातग तुरंग अंग प्रति अग सिगारै, जगमगाति नव जोति साजि माणक सुधारै। सोभि जान सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर भोमि बैरागर भ्राजै।

—रा. रू.

रू. भे.—बइरागर, बयरागर, बेरागर, बेरागर, वइरागर, वइरागरि वयरागर, वयरागरि, वेरागर, वैरागर, बैरागिर, बैरागिरि।

बैरागि—देखो 'बैरागी' (रू. भे.)

बैरागियोड़ो—भू० का० कृ०—१ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं से विरक्त हुवा हुआ; २ संन्यास लिया हुआ। ३ ईश्वर भजन में लीन हुवा हुआ, ईश्वर के प्रति आसक्त हुवा हुआ। ४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटा हुआ। ५ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं पर से मन हटाया हुआ। ६ त्यागा हुआ। ७ किसी कार्य या वस्तु का त्यागा हुआ। (स्त्री बैरागियोड़ी)

बैरागियौ—१ देखो 'बैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ एक सगपण प्रीतम तणो, बेलै बीजो व्रत धार रे। तीजो तपसी बैरागियौ, रांणी करुणा न करि लिगार रे। —जयवाणी

उ०—२ परिसदा सुण पाछी गई, वळिया क्रसण नरेस। गज सुकुमार बैरागियौ, लागो धरम नी रेस। —जयववांणी

२ देखो 'बैराग' (अल्पा., रू. भे.)

बैरागिर, बैरागिरि—१ देखो 'बैरागर' (रू. भे.)

बैरागी-सं पु. [सं.] (स्त्री. बैरागण) १ व्यक्ति, जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, वैराग्यवान्।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जोता, सो जन है बैरागी। कहै सुखरांम सुणो भाई साधो, और सबो है रागी।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ बालपणे भारमलजी स्वामी नं भाग्वो उत्तराध्ययन उभा-उभा चितारणी इसी भ्रागया स्वामीजी दीधी। जद भारमलजी स्वामी बोल्या—स्वांमीनाथ कदाचित नींद मैं हेठो पड़ जाउं तो। जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूंजनं सूर्ण उभा रहो। इण रीतं भ्राखो उत्तराध्ययन रो सभाय अनेक वार कीधी। इसा बैरागी पुरुख। —भि. द्र.

२ सन्यासी, साधु।

उ०—१ सतगुरु सब्द हिरदं घर लीया, अखंड प्रेम रस पीया। हरिराम बैरागी बालं, सदा अमर जुग जीया।

—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ अपनी गोज चलं घर बैठं भ्रासम वरण उलांगी। एका एकी विचरं रेतं, जग वन सिघ बैरागी।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ बैरागी बन मैं बसं, घरबारी घर मांहि। राम निराळा रह गया, दादू इनमें नांहि। —दादूबाणी

उ०—४ रसी उसीर पंथ ठहरांगं उठं प्रणाम करें रिख भ्राणं। भ्रातम ग्यान समुद्र भ्रथागी, रमता परमहंस बैरागी।

—सू. प्र.

३ त्यागी पुरुष।

उ०—१ बैरागी विरकत भलो, जुग सूं न्यारा मन। हरिया गिरही सो भलो, सब सूं दासा तन। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ इतलं स्वामीजी गोचरी करनं पाछा पधारचा। जद········ए कह्यो—भीखणजी! थे बैरागी वाजो नै इण मोह मैं मुलतो थयो तिण रा घर सूं पकवांन लाया! ति वारें भीखणजी स्वांमी बोल्या—इण रो दोख काइ? जद·········ए कह्यो थे बैरागी वाजो नें इसा कांम करो। —भि. द्र.

उ०—३ अब (तो) हरि नांम लौ लागी। सब जग को यह मास्वन चोरचो, नांम धरचो बैरागी। कित छोडी वह मोहन मुरळी, कित छोडी सब टोपी। मुंड मुंडाइ डोरी कटि बांधी, माथं मोहन टोपी। —मीरां

४ उदासीन वैष्णव सम्प्रदाय।

वि० वि०—यह विरक्त साधुओं की तरह का एक सम्प्रदाय है। इनके व संन्यासियों के मत में अन्तर है। विष्णु को अपना इष्ट मानते हैं तथा विष्णुअवतार राम, कृष्णादि को पूजते है अतः वैष्णव कहलाये। ये लहसन, प्याज, सलगम, गाजरादि नही खाते तथा गांजा, चरस, शराब आदि नही पीते। ग्यारस, जन्माष्टमी, नृसिंहावतार आदि के दिन व्रत रखते हैं व उत्सव मनाते हैं। गीता, रामायण, महाभारत आदि इनकी धर्मपुस्तकें हैं। इनमें चार सम्प्रदाय हैं जिनमें भाव भक्ति के नियम अलग अलग हैं।

१ रामानुज सम्प्रदाय—जिसे श्री सम्प्रदाय भी कहते हैं तथा रामानुजाचार्य ने चलाया था। इस सम्प्रदाय का उन्होंने सेवड़ों को शास्त्रार्थ मे जीत कर चलाया था। इनकी पाटगादी मद्रास में गादीधर, आचार्य कहलाते हैं। ये शादी नही करते। गादी पर विद्वान ब्राह्मण ही बैठता है जो इनका पाटवी चेला होता है। इन के चेलो के दोनों भुजाओं पर यज्ञ, पूजादि के बाद चांदी की तप्तमुद्रा से शंख, चक्र, गदा पद्म आदि के चिन्ह लगाये जाते हैं। बालकों के केसर की छाप लगाते हैं जिसे शीतलमुद्रा कहते हैं। ये तुलसी की माला पहनते है व शिर पर सफेद मिट्टी का अर्द्धपुंड (तिलक) लगाते हैं। इनके मन्दिरों मे शेषशाई, बेनीगोपाल व जुगल मूर्ति राधाकृष्ण व सीताराम आदि की रहती है। ये आरती के वक्त तांबे का शंख बजाते है एवं असली शंख को हाड का मानते हैं।

२ विष्णुस्वमी द्वारा चलाया हुआ शिव सम्प्रदाय जिसे रौद्र सम्प्रदाय वा विष्णु स्वामी सम्प्रदाय भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय का सिद्धात है कि शुद्धाद्वैत ईश्वर कृष्ण रूप ऐक ही है। ये भी तुलसी की माला पहनते है तथा अर्द्धपुंड्र तिलक लगाते हैं।

३ ब्रह्म सम्प्रदाय, जिसे माध्व, गौड़ व महाप्रभु सम्प्रदाय भी कहते है इसे ब्रह्माजी ने चलाया था व माध्वाचार्य ने प्रसिद्ध किया था। ये कृष्ण को इष्टरूप में मानते है। मन्दिरों में जुगल मूर्ति राधाकृष्ण की होती है। ये विष्णु कहलाते है तथा हथियार भी बांधते हैं।

४ सनकादिक सम्प्रदाय या निम्बार्क सम्प्रदाय जिसे सनकादिक ने चलाया था तथा अरुणऋषि के पुत्र निम्बार्क स्वामी ने फैलाया था। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त द्वैताद्वैत है अर्थात ईश्वर माया से अलग नही है। कृष्ण ही इनका इष्ट है। राधाकृष्ण की जुगल मूर्ति की पूजा व उपासना करते है। ये निहंग व गृहस्थी भी हो सकते हैं।

रू. भे.—वइरागी, वयरागी, बिरागी, बेरागी, बैरागी, वइरागी, वयरागी, विरागी, वेरागी, वैरागी।

अल्पा;—वयरागियो, वेरागियो, बैरागियो, बैरागीयो।

बैरागीयो—१ देखो 'बैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—अप हुवो बैरागीयो रे, जीता विसय कखाय, खटको जेहना रे मन थी टल्यो रे। सेठ सहित संयम लीयो रे, सद्गुरु पासं जाय। —वि. कु.

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

बैराग्य—सं. पु. [सं.] १ संसार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होने की मन की एक प्रवृति विशेष, जिससे लोग सांसारिक झंझट छोड़ कर एकांत मे रहते हुए ईश्वर-भजन करते हैं।

२ असन्तोष, अप्रसन्नता ।

३ घृणा, ग्लानि, अरुचि ।

५ किसी के प्रति राग-भाव न होने की अवस्था या भाव ।

उ०—संसार असार, दुखनु भंडार, जिसिउं पीपल नूं पांन, जिस्यु गयेंद्र नु कांन, जिस्यु वीज नु झबुकु, पोइणिनिइ पांणी तणउ टबकु, जिस्यु बहुबोलनी जीभ नु लोलु, जिस्यु काग नु डोलो, जिस्यु धज नु अंचल, तिसिउ संसार चंचल, वैराग्य । —व. स.

रू. भे.—बइराग, बयराग, बिराग बेराग, वैराग, वैराग्य, बइराग, वयराग, बिराग, विरागीय, बिरागो, वेराग, वेराग्य, वैराग ।

अल्पा; —बयरागियो, वेरागियो, वंरागियो, वंरागीयो ।

बैराड़ी—सं. स्त्री.—एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

रू. भे.—बइराड़ी, वयराड़ी ।

बैराज—सं. पु. [सं.] १ विरजस् नामक प्रजापति के सात पुत्रों में से एक जो पितर कहे जाते हैं ।

२ देखो 'बेराज' (रू. भे.)

बैराजी—देखो बेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ ंदी मैं सवाईरांम ओसवाल चरचा करतां भिक्खु कह्यो—गाय भेंस रा मूंहडा आगे घणो चारो नांख्यां ओगाळो करै । जब तेह कहै—मोनें ढांढों कह्यो—बेराजी थयो । तब स्वांमीजी कह्यो—थें ढांढा थया म्हारो ग्यांन चारो खाय । इम कह्यां राजी थयो । —भि. द्र.

उ०—२ देसूरी नों नाथ साधु स्त्री बेटी मां छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकृति करड़ी, आछी तरह आगया में चालै नही । तीन बरस आसरै टोला मैं रह्यो । पछै टोला बारै निकल गयो । कनै हुंता त्यां साधां स्वामीजी नैं आय कह्यो—नाथो छूट गयो । जद स्वांमी जी कह्यो—किणहिरै गूंबड़ो दुखतो घणो नैं पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै कै बेराजी ? —भि. द्र.

उ०—३ जद तै राजी होय बोल्या—म्हारै काल को गराक आयो । रुपियो हाथ मैं लेई देखै तो खोटो । माहैं तांबो नैं ऊपर रूपो । अलगो न्हाखनैं बोल्यो—प्रभाते खोटा नांणा रो दरसन हुओ । जब ऊ बोल्यो—साहजी बेराजी क्यूं हुआ । परसूं तो म्हैं पइसो मांग्यो सो तांबो नांणो बांधो । —भि. द्र.

बेराजीपण, बेराजीपणो, बेराजीपो—देखो 'वेराजीपो' ।

बेराट—सं. पु. [सं. वैराटः] १ इन्द्रगोपक कीट, वीर-बहूटी ।

२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था ।

३ राजा विराट का उत्तर नामक पुत्र ।

वि० १ विराट का, विराट सम्बन्धी ।

२ लम्बा-चौड़ा, विस्तृत, फैला हुआ, बड़ा ।

उ०—घटयंदा वैराट घाट, केता निरबहा । —केसोदास गाडण

३ आकार की दृष्टि से महान्, बड़ा, विशाल ।

उ०—१ ब्रह्म नमो ध्रुव ब्रह्म, ब्रह्म कहिजै ब्रह्मचारो । ब्रह्म नान्ह बेराट, क्रम अक्रम कूड़ा री । —पी. ग्र

उ०—२ करतार मेह करंति, ब्रम चिहुं रसा बरसंति । परमे पार अपार, बेराट घट बिसथार । —पी. ग्रं

उ०—३ दास तन भजन बिन सो सबी दासरथ, चिरू बस को बातें न थावै । देवपत रूप बेराट थारो दुगम, अणु मन सेवग सुगम आवै । —र. ज. प्र

उ०—४ पयंपे पूरण आदि पुरस्स, उपन्न ब्रह्मा ईस अलख । थय तिण रूप सरूप सुघट्ट घटं घठधाट बेराट सुघट्ट । —रा. वंसावल

४ भयंकर, भयावह ।

उ०—१ अडड़ाट नाद बेराट अज, घट्ट जांणि दूजो घड़ै । बरसा झाळ गोळां बहनि, प्रळंकाळ छोळां पड़ै । —सू. प्र

उ०—२ इतरै मलंग गैबी मरद उठीयो, उठि नैं हाक मारै छै तिकैं रै पकी बारह मांण लोह रो सांकळ पग मांहे । नवगजो जोधो वडो मायो । सिर ऊपर घणो बाबरी छै, ऊपर उधो तबलो । सब मण रो कुतको हाथ मांहे छै । वडो भुजाडंड । बेराट रूप धारिय थकां निरवांणो योगिंद्र हुवो तिसड़ो । कनैं कपड़ो नहीं, दिगंब आडंबर धारियां थकां । —तिमरलिंग पातसाह री बा

६ देखो 'विराट' (रू. भे.) (सभा)

उ०—१ धणीं ग्राह नां मारिवा भलो धायो, हरि तूझ अवतार वे हुलायो । निमो वांमणा रांम बेराट ब्रह्म, अधिक रीझियो हरि ऊपरि अग्रंमु । —पी. ग्रं

उ०—२ देस सहु मैं दीपतो रे, चारू देस बेराट । सहू को लो सुखी सदा रे, वरतैं निज कुल वाट । —ध. व. ग्रं

उ०—३ मगध कोसल अंग बग कलिग कासी कुरु देस, सोरठ कछ विदेह जांगल कुसावरत कहेस । अंग सोबीर बेराट मलय साडिल सूरसेन, वरण पचाल दसारण कुंणाल देस मैं चंन । —वृस्त.

७ देखो 'ब्रह्मरध्र' ।

उ०—१ चख सूरिज नैं चद्रमा, धणनांमी घट घाट । पिडी मोटी मोटी प्रभु, वप छोटी बेराट । —पी. ग्रं.

उ०—२ लगी चोट सत सबद की, खूल्हा ब्रह्म कपाट । मेवासा सब जीत कै, वस्या नगर बेराट । —अनुभववांणी

उ०—३ घाटि विगट बेराट की, पुंहचैगा कोई सूर । हरीया कायर थकि रह्या, दरगाह रहीया दूर । —अनुभववांणी

रू. भे.—बराट, बिराट, बेराट, बैराट, बइराट, बयराट, बिराड, वेराट ।

बेराटरूप—सं. पु. [सं.] परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप ।

बेराणो, बेरावो—देखो बेराणो, बेरावो' (रू. भे.)

वैराणहार, हारो (हारी) [illegible] वैरणहार [illegible]

वैरणजणो, वैराईजणो—कर्म वा० [illegible]

वैरात—देखो 'वैरात' (रू. भे.) [illegible]

उ०—दिनो वैरात आनपत [illegible] [illegible]। [illegible] राजआयो [illegible] मिला। —[illegible]

वैरायत, वैरायत—सं. पु. [सं. वैर+आयन] शत्रु, दुश्मन, वैरी।

उ०—१ [illegible] विचार [illegible] [illegible] वैरायतां [illegible] प्रगंवह, [illegible]। —[illegible]

उ०—२ [illegible] राजा [illegible], राजा सूराचंद. यांह [illegible] [illegible] तो [illegible] सूराचंद [illegible] सूं तो काई हवो नहीं। [illegible] पैलै [illegible] मोड़ [illegible] वैरायत। —[illegible] री बात

रू. भे.—वैरायत, वैरायत

वैरायोड़ो—देखो 'वैरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैरायोड़ी)

वैरायत—सं. पु.—१ राठौड़ों की एक उपशाखा।

२ [illegible] व्यक्ति।

३ देखो 'वैरायत' (रू. भे.)

वैरि—देखो 'वैरी' (रू. भे.)

वैरिण, वैरिणि, वैरिणी—देखो 'वैरण' (रू. भे.)

उ०—वाह [illegible] वैरिणि जीव की, जनि की लागे प्रीति। माया [illegible] यह संतन की रीति। —दादूवांणी

वैरिय—देखो 'वैरी' (अल्पा., रू. भे.)

वैरियोड़ो—देखो 'वैरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैरियोड़ी)

वैरी—सं. पु. [सं. वैरिन्] (स्त्री. वैरण, वैरणि, वैरणी, वैरिण, वैरिणि, वैरिणी) दुश्मन, शत्रु। (ह. नां. मा.)

उ०—१ संसार में सगळा दुख भोगवो परण पेट रो दोमो खोटो। भगवान सातं भव रा वैरी दुस्मण नै ई पेट री भाग मत देवै। —[illegible]

उ०—२ [illegible] किवाड़, वैरियां जड़ उखाड़। जिए की सेल कहूं वरणाय, सुणियां मन प्रसन थाय [illegible] रितु लागो, विरहणी [illegible] [illegible] जोजा आवस [illegible]। —[illegible]

उ०—३ सोहां रा वैरी सको, सीह [illegible] करै नह बूझता, जग तै विमुहो होय। —[illegible]

रू. भे.—वयरि, वयरी, वइअरि, वइअरी, वइयरि, वइयरी, वइरि, वइरी, वईअरि, वईअरी, वईयरि, वईयरी, वहरि, वहरी, वयरि, वयरी, वाइरि, वाइरी, वायरि, वायरी, वेरि, वेरी, वैरि, वैरी; वैइअरि, वैइअरी, वैइयरि, वैइयरी, वैइरि, वैइरी, वैईयरि, वैईयरी, वयरि, वयरी, वाइरि, वाइरी, विरी, वीरि, वीरी, वरि, वैरिय

अल्पा.—वैरीड़ो, वैरोड़ो।

वैरोड़ो—देखो 'वैरी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कोई परवा नीं, लैणो हीमो नै वांनैस्यां। पण वैर वैणो घेरांला जद मूंछ ऊंची करांला। लागै जितो खरची ल्यो, चौहोजै जिको आदमी मांगो। कुंवाड़ा-गेडामी रावी अर वैरोड़ै नै चटकै' र नीचै आडा नाखो, जद जी में जी आवै। —दसदोख

उ०—२ विसको पियालो, ग्रै गोरी घण, वैरीड़ा नै प्याय, म्हारी घण थारी ओ हंजा थां नै पियालो ग्रै काचै दूध को, जी राज। —लो. गी.

वैरीवाड़ो, वैरीवारो—सं. पु. [सं. वैरी+वाटक] शत्रुओं का मोहल्ला, देश या निवास स्थान।

उ०—१ घर घोड़ो पिय अचपलो, वैरीवाड़ै वास। नित रा आजै ढोलड़ा, नाद चुड़लै री आस। —अग्यात

उ०—२ वैरीवाड़ै वासड़ो, मुंदा लगाऊं वाग। हेली कै दिन पाहुंणो, चुड़ो भाग सुहाग। —[illegible]

उ०—३ देस में वैरीवाड़ै वास कोई नी पण [illegible], ते सूरज रो सोम [illegible] हतो नी पट्टीम्बर पट दाद [illegible]। [illegible] कह्यो, "मैं थारो प्रगीलो नहीं [illegible] झूठो कलंक मनु मतां देई। —नाहरी हरणी, धरम कै बाबत मांवड़मो री बात

उ०—४ मांगण वाई घर कलह, वैरीवाड़ै [illegible] वाड़े [illegible] यद नद हुवे वणाम। —नाहरी हरणी धरम कै बाबत मांवडमो री बात

वैरीसाल—वि०—शत्रुओं के दिल में खटकने वाला। [illegible]

वैरोहर—देखो 'वैरहर' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०१—'पाल' ओ कुल वैरोहर, भाल्ली, [illegible] [illegible] सेल वेकै। पठांणां होक भोका, वेमां पसरे, होक [illegible] मूळ ठेकै। —[illegible] सिसोदिया री गीत

वैरोचन—सं. पु. [सं.] १ [illegible] प्रह्लाद [illegible] [illegible] पाताल [illegible] अधिपति [illegible]

२ सूर्य के एक पुत्र का नाम।

३ अग्नि के एक पुत्र का नाम।

४ देखो विरोचन' (रू. भे.)

उ०—१ प्रथम राजा आदि, पुत्र भरत, पुत्र सूरयजिसा, पुत्र ईखवाक। अठै ईखाग वंस थाप्यो। इखाग पुत्र समुद्र, पुत्र चद्रमा, पुत्र बुध. पुत्र पुनदंत्य, पुत्र विद्याधर, पुत्र मुचकुंद, पुत्र हिरणाकुस, पुत्र पहिलाद, पुत्र वंरोचन, पुत्र बळिराजा, तिको चकवै हुवो।
—रा. वंसावळी

उ०—२ वंरोचन तन वहरियो, विप्र छुडायं वाळ। तिण पुन्यथी पुत्र पामियो, वलिराजा विरदाळ। —रा. वंसावळी

उ०—३ भली हुइ जं नहो वळी वंरोचन रं सत्य। मो देखतां मडियो, हरि बळि आगळि हत्थ। —रा. वसावळी

रू भे.– वंरोचन।

वंरोचनि, वंरोचनी–सं. स्त्री. [सं.] विरोचनसुता एवं त्वष्टपत्नी यशोधरा का नाम।

वंरोचि, वंरोची–सं. पु. [सं. वंरोचि] पातालनरेश बलि का ज्येष्ठ पुत्र बाण नाम असुर जो अनिरुद्ध की पत्नी ऊषा का पिता था तथा शिव के वरदान से देवताओं पर शासन करता था।

वंरोट—देखो 'विराट' (रू. भे.)

उ०—मलय सिंगल कोमल नइ अंध्य. छो परबत द्राविड नइ वंध्य। वंरोट तापी लाजी धार, श्रीवेदरभ पाटन प्रति सार।
—नळदवदंतीरास

वंरो—१ देखो 'बेरो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेरी' (रू. भे.)

उ०—वंरं बेस न भरकिये मन मैं रहो सधीर। हरीया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर। —अनुभववांणी

३ देखो वंर' (रू. भे.)

उ०—व्हाला नइ वइरी बिचइ, नवि करवउ वंरो। पछ ना अवगुण देखि नइ, नवि करवउ चेरो। —स. कु.

वं'रो—देखो 'बहरो' (रू. भे.)

वंल—१ देखो वंल' (रू. भे.)

२ देखो 'बोहळियो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—अठ वंन अेक रिड़मल री तिको पाटण तंवरा नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इण नूं खंडेलै लाया। पीछै रावजी खडेलो लूटियो। तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अर रावजी सोबोकंजी आपरी ठकुरांणी करी। नै वंल वंसांणी। —द. दा.

वंलड़लो, वंलड़ो,—१ देखो 'वंल' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बहल' (अल्पा., रू. भे.)

वंलण—१ देखो 'वेलण' (रू. भे.)

२ देखो 'बेलण' (रू. भे.)

वंळणी, वंळबो—१ देखो 'वेलणी, वेलबो' (रू. भे.)

२ देखो 'वंलणी, वंलबो' (रू. भे.)

उ०—अेक दिन वंसो नै बरावर बुखार वणियो रयो। रात नै बुखार १०४ डिगरी हुगयो, जकं रै जोर सूं वंळण लाग्यो। रं-रं'र कंवतो मा गोमती! तूं कठै है? हाय! म्हारै जीतां-जी तनैं दूसरं री हारो देखणो पड़ियो। —वरसगांठ

३ देखो 'वेलणी, वेलबो' (रू. भे.)

वंळणहार, हारो (हारी), वंळणियो—वि०।

वंळिओड़ो, वंळियोड़ो, वंळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

वंळीजणो, वंळीजबो—भाव वा०

वंलणो, वंलबो—१ देखो वेलणो, वेलबो' (रू. भे.)

२ देखो 'वंलणी वंलबो' (रू. भे.)

३ देखो 'वेलणी, वेलबो' (रू. भे.)

वंलणहार, हारो (हारी), वंललणियो—वि०।

वंलिओड़ो, वंलियोड़ो, वंल्योड़ो—भू० का० कृ०।

वंलीजणो, वंलीजबो—कर्म वा०।

वंलवांन–सं. पु.—रथ को हांकने वाला व्यक्ति, सारथी।

उ०—भोजास गांव अरु जात गोदारो, सेवो नांम जग को प्यारो। रथ को वंलवांन वड भाग, थापन कीनेऊ ताहि विचारो।
—मेहोजी गोदारो थापन

वंळा, वंला—१ देखो 'वेळा' (रू. भे)

२ देखो 'वेला' (रू. भे.)

वंळियोड़ो, वंलियोड़ो—१ देखो 'वेलियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'वंलियोड़ो (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. वंळियोड़ी, वंलियोड़ी)

वंलो–क. वि.—१ उस ओर, उस तरफ।

उ०—दादू सेख मुसायख औलिया, पंगनर सब पीर। दरसन सौ परसन नहीं, अजहूं वंली तीर। —दादूवांणी

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

३ देखो 'बेली' (रू. भे.)

वंलं—देखो वेलं' (रू. भे.)

उ०—सूरह गाय री ग्रीवा इण गाय सूं लांबी हुवे। वंलं हो लांबी छै सूरह गाय इण गाय मूं। १३ लाख चमर प्रमुख देलां सूं हिंद मैं आवै है। —बां. दा. ख्यात

वंळो, वंलो—देखो 'बेलो' (रू. भे.)
वंल्यो—देखो 'वंल' (अल्पा., रू. भे.)
वंल्व—सं. पु. [सं.] बिल्व नामक बेल का पत्ता या फल।
वंव—देखो 'बंव' (रू. भे.)
वंवणी—देखो 'बेवणी' (रू. भे.)
वंवणो—देखो 'वहणो' (रू. भे.)
वंवणो, वंववो—१ देखो 'वहणो, वहवो' (रू. भे.)
२ देखो 'बेवणो, वेववो' (रू. भे.)
वंवणहार, हारो (हारी), वंवणियो—वि०।
वंविओड़ो, वंवियोड़ो, वंव्योड़ो—भू० का० कृ०।
वंवीजणो, वंवीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।
वंवतन—देखो 'बेवतन' (रू. भे.)

उ०—तिको भाई राजा नूं इम कहै, "पठांण दुसमण नेड़ा राखजे नहीं।" राजा रै मोहल मांहै सुंदरांगो दहड़ निका पदमणी कहै, "राजा, दुसमण नेड़ा राखीया तिकां घको खाधो। फौजां कर साथ भेळो कर पाहड़ मांहा सो ईहा नूं खेद काढो, वंवतन करो।
—राजा नरसिंघ री वात

वंवस—१ देखो 'वंवस्वत' (रू. भे.)
२ देखो 'विवस' (रू. भे.)
वंवसरणमनु—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा के चौदह मनुओं में से एक, वंववस्त।
वंवस्त, वंवस्वत—स. पु. [सं.] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम।
२ एक रुद्र का नाम।
३ शनिचर जी महाराज।
४ ब्रह्मा के चौदह पुत्रों (मनु) में से एक, जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं।
५ एक प्रकार का तीर्थ विशेष जिसमें स्नान करने वाला स्वयं तीर्थरूप हो जाता है।
६ वर्तमान मन्वन्तर का नाम। (पुराण)
७ यम, धर्मराज।
रू. भे.—**वंवस, वइवस्त, वइवस्तु, वंवस।**
वंवस्वती—सं. स्त्री.—यमुना नदी का नाम।
वंवार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—रमेश बोलियो—हूं कोई चोर हूं जको बीजे री जमानत घताऊ? थे आज ई काम पड़ियो' र आज ई भूलग्या। वांणियां री कांई प्रीत! सेठ कयो इयें में विणज री तो वात ई कोयनी, आ तो वंवार री वात है। खैर, अवार तो सिधावो, काल सोच' र फ़ेसला देसूं।
—वरसगांठ

२ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
वंवारिक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)
वंवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे.)
वंवियोड़ो—१ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'वेवियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वंवियोड़ी)
वंसंदर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ वंसंदर लकड़ पाखांण, जिम लोह लुकाया।
—केसोदास गाडण

उ०—२ सालि हियैं स्रीरांम, कुंवर तो अर्जुं कवारो। कथ सुंणी एक कानि, वीर मंनि वात विचारो। विखं रहां वनवासि, आंनको भलो भेल्यो। वंसंदर रै पासि, घिरत रहै किम रेल्यो।
—सुरजनदास पूनिओ

उ०—३ उवा मांहि मिळै जेनाह' आय, वंसंदर जांणिक भोल वाय।
—सू प्र.

वंसंधि, वंसंधी—देखो 'वयसंधि' (रू. भे.)

उ०—मु इह तो न बाळक अवस्था माहै मूग्ने छै। नैं यौवण आयें जागे छै। इहि विधि की संधि सु वयसंधि कहावै। जैसे सुपिनो। न सोवै न जागे छै। आगे पल पल चढतो होसी। पिणि हिवै वंसंधि को इसो प्रथम ग्यांन ताको इमी परिछै।
—वेलि टी.

वंसनर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—जळै सहर पुर जास, निसा ओजास निहारै। साह प्रळै संपेखि, सोच मद मोच संभारै। खंडोधन समरत्थ, पत्थ निज हत्थ जळायो। कनां लक विण संक, हणू वंसनर लायो।
—रा. रू.

वंसंपा, वंसंपायन—सं पु. [सं. वैशंपायन] १ वेदव्यास के एक शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि जो यजुर्वेद के प्रवर्तक थे तथा हरिवंश के प्रचारक थे। इन्होंने जनमेजय को महाभारत सुनाया था।

उ०—वंसंपा एम ओचरै, जनमेजे स्रवणे धरै। विस्तरै वांणीइ गुण पांडव तणा रै। पांडव ना गुण विस्तारी नै सांभल तूं, भूपाल, जंनै पोता ना करी जाणे स्वांमी स्रीदीनदयाल।
—नळाख्यांन

२ एक ऋषि जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित था।
३ शौनक ऋषि से तत्वज्ञान पर संवादकर्त्ता एक ऋषि।
रू. भे.—वंसमपायन।
वंस—१ देखो 'वेस' (रू. भे.)
२ देखो 'वेसर' (रू. भे.)
३ देखो 'वेस्या' (रू. भे.)
४ देखो 'वेस्य' (रू. भे.)

उ०—रस सर्च भाखी जुंही, कीड़ो ज्यूं कणरास। घरै भेस जिम जोरवैं, वंस दुकानां वास।
—बां. दा.

५ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—१ चढती बंस नैंण अणियारै, तूं घरि घरि मत डोल। मीरां कै प्रभु हरि अविनासी, चेरि भई बिन मोल। —मीरां

उ०—२ दुहूं वाद मातो कहर साह बे देखवै, भार पड़ियो कहर गजां भारां। बंस कह, 'बीठळा', हालि घर दिसि वजां, सरम कह, 'बीठळा'; वाजि सारां। —लिखमीदास व्यास

उ०—३ अमंग मछरीक इण भांति सूं ऊचरै मूदो माहरो खरो कांम माथै। बंस हूंतां कह्यो, राजि अपछर वरो सरम, थै हुवो इहलोक साथै। —लिखमीदास व्यास

बंसक-सं. स्त्री. [सं. वेशक] १ वेश्या, रंडी।

उ०—व्रतभंगी ह्वै अरथ खय, तांहा भय रस नास। कुकवी बंसक तुल्य कर, बरणं सुकवि विमास। —बां. दा.

२ देखो 'बेसक' (रू. भे.)

३ देखो 'बैठक' (रू. भे.)

बंसण—देखो 'बेसण' (रू. भे.)

बंसणव—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

बंसणी-सं. स्त्री.—१ चार प्रकार की गाथाओं में से एक प्रकार की गाथा विशेष, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं। (र. ज. प्र.)

उ०—रूपा भरण बंसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत। ऊजळ तिलक विप्रणी ओपत, तिलक सुद्रणी लाल ओपत। —र. ज. प्र.

२ वैश्य की स्त्री।

बंसणू—१ देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—कट्टर गौ-भक्त-गायां कसाई लेवै है, बियै सूं ऊपर कोई बोली को देवै नी, इत्ता डांगरां री (१५०) मुकातै बोली दी है, कूंई येई वधो नी, तिलक काढण नै है, दीखो तो बंसणू धरम मैं हो। —वरसगांठ

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

३ देखो 'बंसणी' (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई थै ऊंचो सो घालूं थं थांनै बंसणू. बंनड़ भाई जीमां साथ, जीमण की थै जाई, बिच बिच बदळां थै वाल्हा गालिया। —जीणमाता री गीत

बंसणी—देखो 'बंसणो' (रू. भे.)

उ०—१ जीण म्हारी बाई थं ऊंचो सो घालूं तमं बंसणो। जीणमाता री गीत

उ०—२ छाडै छतर बंसणो, भूपति छाडै देस। हरिया सेझ सराय मैं, काळ किया परवेस। —अनुभववांणी

उ०—३ चंनण चोकी कडेरी थारो बंसणो, तुळछा री माळा थारै हाथ। थायो हलकारी स्रीभगवान रो।

बंसणो, बंसबो—देखो 'बैठणो, बैठबो' (रू. भे.)

उ०—१ जूंजर बेरै बंसतां, जळ मैं जोखा होय। हरिया हरि सिवरन विनां, पारि न पूंहता कोय। —अनुभववांणी

उ०—२ स्रावक स्राविका फारवा लागा। बंसतै चौमासै तो ए द्रस्टांत दीधो। तिण सूं अमरसिंहजी वाला तो राजी रह्या। मिस्रवाला नै समझावा लागा। पछै उतरतै चोमासै फतैचंदजी गोटावत बोल्यो—भीखणजी मिस्रवाला नै इज निखेधो पिण पुन्य वाला नेड़ा बेठा त्यांने क्यूं नहीं निखेधो। —भि. द्र.

उ०—३ ओ राती भोजन वहरावै, आ। बंस छोनै चमकावै। आप अंधारै ओरा चंदणा, दुनियां धरम लाभ गुरवंदणा। —अनुभववांणी

उ०—४ मन कै मढ है तत बांधो तणो, पेम परतीत को लाव पीठो। सुधि अर बुधि का बंस विनायका, रस कै डोरड़ै गांठि गीठो। —अनुभववांणी

उ०—५ ताहरां ढोलैजी कह्यो ऊभा रह्यां तो सर्भ कोई नहीं। थांरै कांम छै तो ऊंट भेळा ह छुं तूं थांसै चढि बंस कागळ लिख मोनै देज्यै तूं परो उतरै। ताहरां विथऊरियो ऊट ऊपर बंसि कागळ लिखण लागो। —ढो. मा.

बेसणहार, हारो (हारी), बंसणियो—वि०।

बंसिओड़ो, बंसियोड़ो, बंस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बंसीजणो, बंसीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

बंसन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—ओपनां सकति सेव, बंसना ओतार ध्यावै, बंमना कै बंद पाठ, चतुराई चालि मैं। परवाई पखी मैं लोक, निरापेखो जन कोई, हरियै कै रांम एक, नहीं लाल पाल मैं। —अनुभववांणी

बंसनर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—खड़ ईंधण पांणी बंसनर, सरब थोक संग्रह करै। जाळोर नाम करवा जरू, चढि पठाण नह ऊतरै। —गु. रू. बं.

बंसनव, बंसनो—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—१ हैदराबाद में गुजरातियां रो पुरो करवांन कहावै। कैई गुजराती वणिक जैनी, कैई बंसनव है। केसोमद नूं ओड़ोमल बगेरै ठावा आदमी हुता। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ क्या गिरहो क्या बंसनो, रांम सिवरि थे पारि। जन-हरिया सिवरम विनां, वाकु आर न पार। —अनुभववांणी

उ०—३ भगति बंसना नवध्या करिहै, दसधा को कुछि खबरि न परि है। छापा तिलक बनावै वांना, इनतैं साहिब रहिया छांना। —अनुभवयांणी

बंसम्रर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ महादुरग अजमेर, 'सूर' जीतौ रिण चाचर। जळियौ जोगणपुरी, बाह जाणें बैसम्रर। पाखरिजै गज थट्ट, खान सुरतांण मिळै दळ। कटक बंध अनिमध्ध, हुए फौजां हौलोहळ। —गु. रू. बं.

उ०—१ भोम भारंभर हार कंपै हरं, कोम कोड डरं, है-खुरै पत्थरं। रहि बैसम्ररं, सामठा सध्धरं, सुभटा भूलरं, फौज धांसाहरं। —गु. रू. ब.

बैसमपायन—देखो 'वैसंपायन' (रू. भे.) (मा. म.)

बैसायक–वि० [सं वैषयिक] १ किसी पदार्थ का या पदार्थ सम्बन्धी। २ विषयी, लपट।

बैसलीण बैसलीन–स. पु. [अ. वेस्लिन] मरहम की तरह का एक प्रकार का चिकना पदार्थ विशेष, जिसका चमड़ी पर कोमल एवं चिकनी बनाने के लिए लेपन किया जाता है।

उ०—माळा अर आलमारयां में ताकत बेगी लायोड़ी बंग-सिलाजीत री सीस्यां जचाई पड़ी है। किरीम-पाउडर विजाय, बैसलीन रा भरयोड़ा आडिया, जे, मार्थ जेळमाळा वणायां भिलै है। तेल-फुलेल, अतर-सेंट रा कंटर अर सावण—सोढं रा गोडं-गोडं सूणा सिंदूक राजा-मा' राजा रा सा पड़या दीखं। पटवारी है क, सेलीलदार? किसनजी कीं कूत नी सक्यौ। —दसदोख

बैसवारियौबीच—देखो 'वेसवारियौबीच' (रू. भे)

बैसांणणौ, बैसांणबौ–क्रि. स.—१ दफनाना, गाड़ना।

उ०– मैं तो इण नु मुंहडा सूं बहुत कही जिको कोई म्हारे काम नही। तद राजा भीमसेण ईसी सुण पंडितां नै बुलाय बूझियौ राजा नळ मोनूं दोस लगायौ। ईण री अबै कांसूं करां, तद पंडितां बेद मरजाद कह्यौ, रांणी दमंती थारै घर बेटी कर राखौ, पछै दमंती नै धरती खोदि मांहै बैसांणी ऊपर हळ री चांव कढावौ पछै बारै काढौ, इतरै नवौ जन्म हुवौ। —ढो. मा.

२ अधिकार मे करवाना, हुकुमत देना।

उ०—गांव मारियौ, बाळियौ, लूटियौ। दिन दो मंडोर रहा। आसोज सुदि १५ बीसळपुर डेरो कीयौ, दिन ७ रहा। पछै राव रांम नूं सोझत बैसांणनै कटक परा गया। तठा पछै वळै राव रांम जाय फौज लायौ। —मारवाड़ री ख्यात

३ देखो 'बैठाणौ, बैठावौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा की रांणी नूं गरभ मास सात को थौ। तद सगळा मंत्री प्रधांन मिळ रांणी री पेट परनाळियौ। पेट मां थौ पुत्र नीसरियौ। ती सतमासिया नूं राज दीन्हौ। राज सूं दांन पुण्य करि सिंघासण बैसांणियौ। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सुधौ लगावसो, तंबोल खांण नै देसो, अर चौसट कोठा मंडळ माडसो, त्यां माहै थांनु बैसांणसो। —पंचदंडी री वारता

उ०—३ पछ वंन अेक रिड़मल री तिकी पाटण तंवरां नूं परणायी हो। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खंडेलै लाया। पीछे रावजी खंडेलो लूंटियौ। तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अर रावजी री बीकैंजी आपरी ठकुरांणी करी। नै वंस बैसांणी। —द. दा.

उ०—४ पछै अचळो रिणमलोत मुलतांण जाय तुरकां री कटक आंण जगमाल नूं मराय नै बडा भाई गोपा नूं विकूंपुर रै पाट बैसांणियौ नै जगमाल रा बेटा नूं परौ काढियौ। —नैणसी

उ०—५ तदै जगदेव दरबार आयौ, तिको वो सादूक री बागो पहिरयां छै, रुपिया १) री पाघ माथै थे कानां हाथा माहे कड़ा सु इसै सलूक सूं मुजरौ कियौ। राजा छाती सू लगाय मिळियौ, कनै बैसांणियौ नै पोमाल देखि नै कह्यौ, 'बेटा इसा कपड़ा क्यूं।' —जगदेव पंवार री बात

बैसांणणहार, हारौ (हारी), बैसांणणियौ—वि०।
बैसांणिओड़ौ, बैसांणियोड़ौ, बैसांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बैसांणीजणौ बैसांणीजबौ—कर्म वा०।

बैसांणियोड़ौ–भू का. कृ.—१ गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ। २ अधिकार मे करवाया हुआ, हुकुमत मे दिया हुआ। ३ देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बैसांणियोड़ी)

बैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

बैसाख–स. पु. [स. वैशाख] १ चैत्रमास के बाद एवं ज्येष्ठ मास के पहले आने वाला एक महीना, जिसकी पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र मे पड़ती है।

उ०—१ लागतै बैसाख री, बीज अरी अळबंड। रांम कियौ मिळ 'केहरी' करी जिही सनखड। —रा. रू.

उ० २ मासोत्तम बैसाख में, गढ जाळंधर हूंत। रांणी पधरावी सहर, सारै कुंवर सपूत। —रा. रू.

२ बाण चलाने की एक मुद्रा विशेष।

३ घोड़ा का एक रोग विशेष, जिसमें उसका शरीर भारी हो जाता है। (शा. हो.)

४ मंथदण्ड।

रू. भे —बिसाख, बैसाख, वइसाख, वइसाह, वयसाख, विसाख, वैसाखि, वैसाखी।

मह.,—बैसाखौ।

बैसाखनंदण, बैसाखनंदन–सं. पु. [सं. वैशाखनन्दन] गर्दभ, गधा।

बैसाखा—देखो 'विसाखा' (रू. भे.) (अ. मा.)

बैसाखि; बैसाखी–वि० [सं. वैशाखी] वैशाख मासकी, वैशाख मास से सम्बन्धित।

उ०—सकल समे कासी माहे वरस दंन माहे, हेकर... पूरणमासी करवत देवे । तठै ...

—कव्यांणसिंघ नगराजोत बाढेल री बात

३ वैसाख मास की पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त होती है । इस दिन लोग बैसाखी का ...

४ वैसाख मास को शुक्ल पक्ष की तृतिया, अक्षयतृतीया ।

५ मेष राशि की संक्रांति को मनाया जाने वाला उत्सव ।

६ लंगड़े आदमी के बगल में रखने की एक प्रकार की लकड़ी ।

७ वसुदेव की एक पत्नी । (पुराण)

८ देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

उ०—पीड्मा ... सिसिर ... दाखि । ... वैसाखि ।

—वेलि

रू. भे.—वैसाखि, वैसाखी, वैसाखी ।

वैसाखीअस्टमी, वैसाखीअस्टमी, वैसाखीअष्टमी—सं. स्त्री. [सं. वैशाखी+अष्टमी] वैशाख शुक्ला अष्टमी को किया जाने वाला अपराजिता देवी का पूजन एवं स्नान । इस दिन देवी के सम्मुख स्नान करने से समस्त तीर्थों में स्नान करने के समान फल होता है ।

वैसाखीव्रत, वैसाखीव्रत—सं. पु. [सं. वैशाखीव्रत] विशाखा मास की पूर्णिमा को किये जाने वाला व्रत ।

वैसाखो—देखो 'वैसाख' (मह., रू. भे.)

उ०—तासु उपरि प्रभु अवतरया, मुदि बारस वैसाखो जी । ... स्वप्न रांणी लहया, सुपन पठिक सुत दाखो जी ।

—स. कु.

वैसाड़णो, वैसाड़बो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

उ०—देही कए दुसार, सु तप्पै, राजुर ... माथ पंडित ... उपरई, वंवरी कुंवर वैसाड़ी लई मांगि ।

—वी. दे.

वैसाड़णहार, हारो (हारी), वैसाड़णियो—वि० ।

वैसाड़ियोड़ो, वैसाड़ियोड़ो, वैसाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

वैसाड़ीजणो, वैसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

वैसाड़ियोड़ो—देखो 'बैठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैसाड़ियोड़ी)

वैसाणो, वैसाबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

वैसाणहार, हारो (हारी), वैसाणियो—वि० ।

वैसायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वैसाईजणो, वैसाईजबो—कर्म वा० ।

वैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ पुहप ... हाथ लीधा । ... आगि सौं सपरस करता ... जगत्र वैसानर परसतो रहीयो ।

—...

उ०—२ यह झाळां गरंजत, वधै लोळां वैसानर ... हरि नांम, उचरि समरंत अगोचर । ... होम ... ।

—... रू.

वैसारण—देखो 'बैठारण' (रू. भे.) (... ह. नां. मा.)

वैसारणो, वैसारबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

वैसारणहार, हारो (हारी), वैसारणियो—वि० ।

वैसारियोड़ो, वैसारियोड़ो, वैसारयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वैसारीजणो, वैसारीजबो—कर्म वा० ।

वैसारद—देखो 'विसारद' (रू. भे.)

वैसारिण—सं. स्त्री. [सं.] मछली ।

रू. भे.—वैसारिण, वैसारण ।

वैसारियोड़ो—देखो 'बैठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैसारियोड़ी)

वैसारु—देखो 'वैसारु' (रू. भे.)

वैसाल—सं. स्त्री. [सं. वैशाल] विशाल नामक राजा के द्वारा बसाया हुआ एक नगर । २ एक प्राचीन ऋषि ।

वैसालि—देखो 'वैसाली' (रू. भे.)

वैसालिनी—सं. स्त्री. [सं. वैशालिनी] विशाल राजा की पुत्री जो अवि-क्षित राजा की पत्नी एवं मरुत्त चक्रवर्ती राजा की माता थी ।

वि०वि०—इसके स्वयंवर के समय अवीक्षित राजा ने इसे बल-पूर्वक हरण किया था किन्तु उपस्थित राजाओं ने अवीक्षित को पराजित कर पुनः स्वयंवर करने की मांग विशाल राजा से की किन्तु अवीक्षित के मना करने पर स्वयंवर में उपस्थित सभी राजाओं को मिलाकर अपने पुत्र को बन्धन मुक्त कर इसका हरण किया एवं अवीक्षित के साथ इसका ... विवाह ...

वैसाली—सं. स्त्री [सं. वैशाली] १ एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने बसायी थी एवं जहां लिच्छवियों का राज्य था । इति-हास प्रसिद्ध है तथा महावीर वर्द्धमान का जन्म इसी नगरी में हुआ था ।

सं. पु.—२ अंगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

रू. भे.—वैसालि ।

वैसालेय—सं. पु. [सं. वैशालेय] विशाल का वंशज, तक्षक नामक एक आचार्य ।

वंसावणौ वंसावबौ—देखो 'वंठाणौ, वंठाबौ' (रू. भे.)

वंसावणहार, हारौ (हारी), वंसावणियौ—वि०।

वंसाविघोड़ो, वंसावियोड़ो, वंसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वंसावीजणौ, वंसावीजबौ—कर्म वा०।

वंसावियोड़ो—देखो 'वंठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वंसावियोड़ी)

वंसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ विरच जाय स्वारथ बिना, स्वारथ जितरै सैण। वणक तणौ वंसास की, वणक तणो की वैण। —बां. दा.

उ०—२ तो दिस मेवाड़, तो वियप्प कापियं सीसं। ना ऊ रयण बहोजं, वंसास कुंभकरण क्रतघ्नं। —नैणसी

उ०—३ माहाराजा नेड़ो तो कोइ गांम न्ही। असतरी कठा सूं ल्यावूं। तरै तांमस करनै कह्यौ। तरै पथर री पूतळी रो कह्यौ। तरै कान्हड़देजी कह्यौ। ऊरी लै आव। मांहरो छाती ऊपर मेल दै। मन वंसास छै। —वीरमदे सोनीगरा री बात

उ०—४ तद भरमल री मा कह्यौ, "जो राज पूछियौ कदे नहीं। अर बिनां पूछियां कहू, सो इसो कोई हुरख आपरै न थो। अर वंसास पिण कोई न थो। तैसूं कही नही।" तद रांणै कह्यौ—किसो जायगा राखिया, सो ठोड दिखावो। —कुंवरसी सांखला री वारता

वंसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

वंसासणौ, वंसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तुरी सपतास तूल, झाटकियो नाखी झूल। वंसासयं दोन्हूं बाथ, डावडियं लगांण डाथ। —गु. रू. बं.

उ०—२ इण भांत हालतो वेळ नै गोढवाड़ पाखती सोनगरां री ठकुराई सूं सोनगरां नूं भमावा हुवा जु ए पाखती मुंडो, इण नैड़ा थकां म्हांनुं विगाड़, तरै राव रिणमल नुं परणाय नै वंसासिया, आवोजाव हुई। तरै सोनगरां मिळ नै बेटी नुं कह्यौ—बाई म्है थारा मांटी आगै रह सकां नही, तुं वंसासनै तो म्है रिणमल नुं मारां। —राव रिणमल री बात

वंसासणहार, हारौ (हारी), वंसासणियौ—वि०।

वंसासियोड़ो, वंसासियोड़ो, वंसास्योड़ो—भू० का० कृ०।

वंसासीजणौ, वंसासीजबौ—कर्म वा०।

वंसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

वंसासियोड़ो—देखो 'विस्वासियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वंसासियोड़ी)

वैसिक—सं. पु [सं. वैशिक] वेश्याओं के साथ भोग विलास करने वाला एक प्रकार का नायक। (साहित्य)

वैसियोड़ो—देखो 'वंठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैसियोड़ी)

वैसी—सं. स्त्री.—१ वैश्य की स्त्री।

२ चार प्रकार की गाथाओं में से एक, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—१ विप्रो तेरह लघुव दीजं, लघु यकवीस खित्रणी लीजं। सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई। —र. ज. प्र.

उ०—२ विप्रो लुघ तेरह रो वणाव, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाव। लुघ सतावीस वैसी लखाइ, सहि सेस सुद्रणि सभाइ। —ल. पि.

वैसेसिक—सं. पु. [सं. वैशेषिक] छः दर्शनों में से एक कणाद कृत दर्शन, जिसमें पदार्थों का विचार एवं द्रव्यों का निरूपण है।

वैसो—वि०—१ किसी की नकल का या किसी के अनुरूप।

२ उस प्रकार का।

रू. भे.—वेसो, वेहडु, वेहडो, वेहडुं, रेहडुं, वेहडो, वैंडो, वैड़ो।

वैस्णव—वि. [सं. वैष्णव] (स्त्री. वैस्णवी) विष्णु का, विष्णु सम्बन्धी।

सं. पु.—विष्णु का उपासक, भक्त।

उ०—बहुंधा चरित्र वैस्णवं विचित्र, त्रैलोक तत्र, वह मिळत अत्र। परिब्रह्म पूरण, तत मग्न तूरण, परमात्मा प्रात, वह पुरख प्रात। —ऊ. का.

२ हिन्दुओं में, विष्णु की उपासना करने वाला एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय।

३ इस सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे.—बैसनव, वेसनव्व, वैस्नव, वैस्नव्व, वइसनव, वेसनव, वैसणव, वैसणू, वैसनव, वैसनो, वैस्णवु।

वैस्णवचाप—सं. पु. [सं. वैष्णवचापः] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सारंग नामक धनुष।

वैस्णवी—सं. स्त्री. [सं. वैष्णवी] १ विष्णु की शक्ति।

उ०—तावदिद संकल जगजीवति ईस्वरै विस्वकरत्रिरथ मो मनंति मनीसिण, एकि संसार नी अस्टि ईस्वर हुंती कहइं, एकि ब्रह्मा, एकि वैस्नवी, एकि सांबमाया, एकि सक्तितउ कहइ, पणि लक्ष्मीकृत अस्टि मांनीइ। —व. स.

२ देवी, दुर्गा।

उ०—देवी वैस्नवी महेसो ब्रह्म्मांणी, देवी ईंद्रांणी चंद्रांणी रमा-रांणी। देवी नारसिंघी बराही विख्याता, देवी इळा आधार आसुर हाता। —देवि.

३ गंगा।

४ लक्ष्मी।

५ तुलसी।

६ बैष्णव सम्प्रदाय की स्त्री ।

उ०—लाली एक अबोट धोती में आपरा सरीर नै आभडछट सूं बचावण री फिजूल कोसीस करती दरसण री भूखी बैस्णवियां, ढीलो धोती अर नेहरू जाकेट पैरयोड़ा व्यापारी, दस गज री साड़ी नै गेलाई सूं लपेटनै माथै पर फूलां अर साग-भाजी रा ओड़ा ऊंचायोड़ी मराठणियां, ऊजळा दही व्है जिसा कपड़ा में फूटरी-फूटरी गुजरातणियां अर हाथा में थैलियां लियोड़ा ग्राहक सब एक साथै ईज बाड़ा मायनैं सूं बकरियां निकळी व्है ज्यूं परभात में ईज निकळग्या हा। —रातवासो

बैस्णवु—देखो 'बैस्णव' (रू. भे.)

उ०—बैस्णवु राति चारइ पुहुर जागइ। —व. र.

बैस्य—देखो 'वेस्य' (रू. भे.)

बैस्या—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

बैस्येसवर, बैस्येसुवर, बैस्येस्वर—स. पु. [सं. वैश्येश्वर] महानंदा के उद्धारार्थ अवतीर्ण हुआ एक शिवावतार ।

बैस्रप—सं. पु. [सं. वैसृप] कश्यप एवं दनु का एक पुत्र दानव ।

बैस्रवण—सं. पु [सं. वैश्रवणः] १ धनपति, कुबेर । (अ. मा., ना. मा. ह. नां मा.]

२ लंकापति रावण ।

३ शिव, महादेव ।

रू भे.—बैसवरण, वईस्रवण, वेसमण वेसवण वेस्रमण, वेस्रवण ।

बैस्रावणाणय, बैस्रावणालय—सं. पु. [सं. वैश्रवणालय] १ कुबेर के रहने का स्थान ।

२ बट वृक्ष । (अ मा., नां मा., ह. ना. मा.)

बैस्वजुग—देखो 'बैस्वयुग' (रू. भे.)

बैस्वदेव—सं. पु. [सं. वैश्वदेव] १ विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ ।

२ विश्वदेव को दिया गया उपहार ।

बैस्वदेवत—सं. पु. [सं. वैश्वदेवत] सत्ताईस नक्षत्रों में से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र ।

बैस्वयुग—सं. पु. [स. वैश्वयुगः] वृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत, क्रोधी, विश्वासु और पराभाव नामक पांच संवत्सरों का युग या समूह । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—बैस्वजुग ।

बैस्वानर—सं. पु. [सं. वैश्वानरः] १ अग्नि की उपाधि । २ इन्द्र सभा का एक महर्षि । ३ भानुनाम अग्नि के प्रथम पुत्र का नाम ।

४ वह अग्नि जो अन्न पचाती है ।

५ कश्यप एवं दनु के एक पुत्र दानव का नाम, जिसके, उपदानवी, हयशीरा, पुलोमा एवं कालका नाम की चार कन्याएँ थी ।

६ वेदांत में चेतन शक्ति ।

७ परमात्मा, ईश्वर ।

८ आग, अग्नि ।

उ०—जठ बैस्वानर ताढउ थाइ, पस्चिम ऊगइ दीस । नारायण टलतउ कान्हड़दे, कहि न नामइ सीस । —कां. दे. प्र.

९ अग्नि देवता ।

रू. भे.—बसंदर, वेसंदर, बेसांनर, बैसंदर, बैसानर, वासंदर, विसनर, विसन्नर, विस्वानर, बीसनर, वेसनर, देसन्नर, वेसबानर, वेसानर, वैसंदर, वैसंनर, वैसनर, बैसन्नर, वैसांनर, वैसानर ।

बैस्वानरचूरण—स. पु. [सं. वैश्वानरचूर्ण] सेंधानमक, अजवायन और हर्रे आदि से बनाया जाने वाला एक प्रकार का पाचक चूर्ण विशेष । (वैद्यक)

बैस्वानरि, बैस्वानरी—स पु. [सं. वैश्वानरि] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

बैस्वामित्र—स. पु. [सं. वैश्वामित्र] विश्वामित्र के वंशज ।

बैंवारियोखीच—देखो 'वेसवारियोखीच' (रू. भे.)

बैहंग—देखो 'विहंग' (रू भे.)

उ० – सोभत मंद सीतळ समीर, कोकला कुहक क्रत सघर कीर । वाणी अनेक कुजत बैहंग, नाचत मयूर आनंद अंग ।

—मयाराम दरजी री बात

बैहचणो, बैहचबो—देखो 'बेचणो, बेचबो' (रू. भे.)

उ०—यूं करता, दोनूं भाया रै आपस में दूदै अर भोज रै वडो वेध पड़ियो। ताहरा राव सुरजन बेटा बेऊ तेड़िनै कह्यो—थे मो ऊपर फिरिया । थे म्हारो कह्यो न मांनो । म्है राज सूं कोई कांम नहीं । थे धरती बैहंच ल्यो । —नैणसी

बैहंचणहार, हारो (हारी), बैहंचणियो—वि० ।

बैहंचिओड़ो, बैहंचियोड़ो, बैहंच्योड़ो - भू० का० कृ० ।

बैहचीजणो, बैहंचीजबो—कर्म वा० ।

बैहंचियोड़ो—देखो 'बेंचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बैहंचियोड़ी)

बैहंडणो, बैहडबो—देखो 'विहडणो, विहंडबो' (रू. भे.)

उ०—भागीरथी तणै तट भारथ, सत्र बैहंडिया वजाड़ सार । रिम रेवग भेळाकर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिगार ।

—चतुरो मोतीसर

बैहंडणहार, हारो (हारी), बैहंडणियो—वि० ।

बैहडियोड़ो, बैहडियोड़ो, बैहंड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बैहंडीजणो, बैहंडीजबो—कर्म वा० ।

बेंहंडियोड़ो—देखो 'विहंडियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंहंडियोड़ी)

बेंह—१ देखो 'वयस' (रू. भे.)
उ०—छांपर लखम ज वजिया, हुइ मरदां हल्ल । लाज कहै मर ज्यावणो, बेंह कहै घर चल्ल । —मिवसिंघ बागला री गीत
२ देखो 'विधाता' (रू. भे.)
३ देखो 'बे'माता' (रू. भे.)
उ०—पमणां छाड पागड़ा वात मेवडा विचारी, आगै तूट आपणै बेंर 'सारंग' वडारी । होसी होवण हार बेंह लिखियो जिम हुं सें, इण अपार धन देख कहो डर जावां कैसें । पा. प्र.
४ देखो 'वेह' (रू. भे.)

बेंहणो, बेंहबो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)
उ०—वळे आघा चलाया । सु धरती कोस एक आय रही । सासरै सो नेड़ो गयो । इतरै एक वडो पाकेट ऊठ पाहड़ हुवै तिसडो वडो विपरीत तिको आडो आय फिरियो । सु घोड़ नूं आघो बेंहण देवै नहीं । —मांडणसी कूंपावत री बात
बेंहणहार, हारो (हारी), बेंहणियो—वि० ।
बेंहिओड़ो, बेंहियोड़ो, बेंहयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंहीजणो, बेंहीजबो—भाव वा० ।

बेंहतीवांण—१ देखो 'वेंतियांण' (रू. भे.)
२ देखो 'वहतीवांण' (रू. भे.)
उ०—६०००) गांव रै हासल रा घड कसाल पाटो । ४०००)रु मारग बेंहतीवांण सूं समत १७१६ पातसाह । —नैणसी

बेंहरणो, बेंहरबो—देखो 'बेंरणो, बेंरबो' (रू. भे.)
उ०—जिमो जोध वळि भद्र पळंब दाणव महारियें । जिमो वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप बेंहरियें । —गु. रू. बं.
बेंहरणहार, हारो (हारी), बेंहरणियो—वि० ।
बेंहरिओड़ो, बेंहरियोड़ो, बेंहरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंहरीजणो, बेंहरीजबो—कर्म वा० ।

बेंहराड़णो, बेंहराड़बो—देखो 'बेंराणो, बेंराबो' (रू. भे.)
बेंहराड़णहार, हारो (हारी), बेंहराड़णियो—वि० ।
बेंहराड़िओड़ो, बेंहराड़ियोड़ो, बेंहराड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंहराड़ीजणो, बेंराड़ीजबो—कर्म वा० ।

बेंराड़ियोड़ो—देखो 'बेंरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंराड़ियोडी)

बेंहराणो, बेंहराबो—देखो 'बेंराणो, बेंराबो' (रू. भे.)
बेंहराणहार, हारो (हारी), बेंहराणियो—वि० ।
बेंहरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंहराईजणो, बेंहराईजबो—कर्म वा० ।

बेंहरायोड़ो—देखो 'बेंरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंहरायोड़ी)

बेंहरावणो, बेंहरावबो—देखो 'बेंराणो, बेंराबो' (रू. भे.)
बेंहरावणहार, हारो (हारी), बेंहरावणियो—वि० ।
बेंहराविओड़ो, बेंहरावियोड़ो, बेंहराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंहरावीजणो, बेंहरावीजबो—कर्म वा० ।

बेंहरावियोड़ो—देखो 'बेंरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंहरावियोड़ी)

बेंहरियोड़ो—देखो 'बेंरियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंहरियोड़ी)

बेंहळ, बेंहल—वि०—१ बिना हल का, हलरहित ।
२ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
३ देखो 'बेंहल' (रू. भे.)
४ देखो 'बहल' (रू. भे.)
उ०—१ पछै सचियायजी आय सुपनें में हुकम दियो, थांसें हाथ दिया नै कह्यो—काळै बागै, काळी टोपी, बेंहल रै काळी खोळी, काळा बळद जोतरिया, जिंदा रै रूप कियां सांम्हा मिळसी । ओ गेंचद छै, तूं मत चूकै, कूट मारै । —नैणसी
उ०—२ तद आसथानजी बोलिया—जु बेटी थांरी परणाय, म्हे जांणा । तद ब्राह्मण बेटी परणाई, फेरा लिया । पछै कांनै रा आदमी ब्राह्मण री बेटी नै बेंहल बेंसांण लै हालिया । —नैणसी
उ०—३ इतरै महाडोल मंगायो । भरमल नूं असवार कीनो । महाडोल रै पूठै रथ बेंहलां लगाई, पूठै उंठ, घोड़ा सारा आगै पाछै । इसै मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतो, सो महाडोल री पाखती आइ लागो । —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ मारवला कही, बेंहल छोड देवो, आफै चली आसी । तद खरळा वहलवांन नूं उतार रथ ऊपर सहेली नूं चाढि बहीर कीवी । बहला भारवरदारी सारी रथ रै पूठै लगाय दीया । ऊभा देखण लागा । —कुंवरसी सांखला री वारता

बेंहलणो, बेंहलबो—क्रि अ, बुझना ।
उ०—अरिसेन बहू जत एक हियूं, जब बाहर 'पाल' हुतै तइयूं । मुझ बाधव 'पाल' जिसो न मिळै, बस दीपक आज परों बेंहलै । —पा. प्र.
बेंहलणहार, हारो (हारी), बेंहलणियो—वि० ।
बेंहलिओड़ो, बेंहलियोड़ो, बेंहल्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंहलीजणो, बेंहलीजबो—भाव वा० ।

बेंहलि, बेंहली—देखो 'बहल' (रू. भे.)
उ०—कह्यो—मोहरत री वेळा टळी जाय छै । प्रोळ खोलो । सेजवाळा बारणै ऊभा छै । तरै उणै प्रोळ खोली । सेजवाळा सोह

मांहे आया। तरै रावळा बंहली मांहि था कूद-कूद ओनसालिया उतरिया। दहियां रा जिकै कोट मांहे हुता सु सोह कूट मारिया।
—नैणसी

बंहलियोड़ो—भू० का० कृ०—बुझा हुआ।
(स्त्री. बंहलियोड़ी)

बंहळो, बंहलो—वि० (स्त्री. बंहळी. बेहली) १ दुखी, व्यथित, व्याकुल।
उ०—तिरसी निवांण तायं ग्रहै तट, बेहळी जाय त्रिया पीहर वट। जग कवियण थावं दुखी जांम, तद ग्रहै छत्रियां सरण तांम।
—रांमदांन लाळस

२ मस्त, उन्मत।
३ शीघ्र, प्रतिशीघ्र, जल्दी।
उ०—१ चुग्र थांणाय चारण हीण सकै, घवलै दन कोळुग्र गांम घकै। कमधां घर राज किसूं कहला, वत बाहर वीर चढो बंहला।
—पा. प्र.

उ०—२ घल जांचड़ डाकेय जूंझ घणी, तिम सूर बंबं सैहै वार तणी,। पुड जूंझुहै 'पाल' हुतै पंहला, विड़ंगां पर भीण न्हखो बंहला।
—पा. प्र.

रू. भे.—बेहलो, बंहिलो।

बंहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—जं ऊपर रो तभर सुपर बंहवार, जिण थूग्रा ऊपरी फाड़ फड़क्क फाडंतो। जिण समचै सोवन्न, जेण बदरा बधावै। जिण सोभावै हाट, जेण लाख्यां लूटावै।
—कमरसी खींवो सूरोत ग्रासियो

बंहवारियो—देखो 'व्यवहारी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बंहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

बंहायस—सं. पु. [स] १ पातालनरेश बलि का एक विमान जिसे मय ने बनाया था तथा यह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित एवं अनेक ग्रायुधों से युक्त था।
२ एक प्रसिद्ध तीर्थ कुण्ड जो नरनारायणाश्रम के पास स्थित है।
वि०—ग्राकाश का; ग्राकाश सम्बन्धी।

बंहार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—नयन तै ग्रांसू खेरिया, कब म्है भेटस्यां सांमरधा-राव। जीवन घडीय तै नवि रहई, जिण सू कागलो हुवा बंहार।
—वा. दे.

२ देखो 'बंभार' (रू. भे.)

बंहारियो—देखो 'व्यवहारी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बंहासक, बंरासिक—वि० [स. वैहासिक] हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा, विदूषक।

बंहियोड़ो—देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बंहियोड़ी)

बंहिलो—देखो 'बंहलो (रू. भे.)
उ०—मघ कोटप दं मार, हार देखतां हुई हरि। त्राहि त्राहि सुर तबै, किसन बंहिलो ऊपर करि।
—पी. ग्रं.

बंहु, बेहु, बंहू—देखो 'बेऊ' (रू. भे.)
उ०—खींवो, विजो धाडावी बडा दोड़ा बडा चोर। विजो सोभित वसं। खीवो नाडोल वसं। बेंहूं रा ग्रोसाप बडा। ऊ उण रो नाम जांणै। ऊ उण रो नांम जाणै। पिण मिळिया कदे नही।
—चौबोली

बंहूकणो, बंहूकबो—देखो 'विसूकणो, विसूकबो' (रू. भे.)
बंहूकणहार, हारो (हारी), बंहूकणियो—वि०।
बंहूकिग्रोड़ो, बंहूकियोड़ो बंहूक्योड़ो—भू० का० कृ०।
बंहूकीजणो, बंहूकीजबो—भाव वा०।

बंहूकियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे.)

बंहूकियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बंहूकियाड़ी)

बंहूगणो, बंहूगबो—देखो 'विसूकणो, विसूकबो' (रू. भे.)
बंहूगणहार, हारो (हारी), बंहूगणियो—वि०।
बंहूगिग्रोड़ो, बंहूगियोड़ो, बंहूग्योड़ो—भू० का० कृ०।
बंहूगीजणो, बंहूगीजबो—भाव वा०।

बंहूगियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे.)

बंहूगियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बंहूगियोड़ी)

बोंकार—देखो 'बोंकार' (रू. भे.)

बोंसं—देखो 'बांसं' (रू. भे.)

बोंसलो बोंसूलो—देखो 'बसूलो' (रू. भे.)

बो—सं. पु—१ विनय, प्रार्थना। (एका.)
२ मातस्वर, सप्तस्वर। (एका.)
३ समय, काल, वक्त। (एका.)
४ पेड़, वृक्ष। (एका.)
५ रथ हांकने वाला, सारथि। (एका.)
६ देखो बो' (रू. भे.)

बोग्रणो, बोग्रबो—देखो 'बोवणो, बोवबो' (रू. भे.)
बोग्रणहार, हारो (हारी), बोग्रणियो—वि०।
बोइग्रोड़ो, बाइयोड़ो, बोयोड़ो—भू० का० कृ०।
बोईजणो बोईजबो—कर्म वा०।

बोइयोड़ो—देखो 'बोवियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोइयोड़ी)

बोई—देखो 'बही'।

प्रबे बोम्यूं मांमा—भांणेज रै भ्राल्यां मैं आंणैं मेह' लिवै। हायां रै बटका भरै। म्हारै एवड़ मैं सूं इज बकरो लेय गया ? घर बोई जोर रै जरकै ? बाघ रै गळै बाड़ला नै हाथ नाखियो।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ जाकै सिर मोर मुकट मेरै पति बोई, संख चक्र गदा पद्म कठ माळा सोई। भ्राई में भक्त जाग जगत देख मोई, ग्रंसुवन जळ सींच सीच प्रेम बेल बोई। —मीरां

बोळखीवड़ी, बोळखीवड़ी—देखो 'बहुळीवड़ी' (रू. भे.)

बोक—१ देखो 'बोक' (रू. भे.)

२ देखो 'बूक' (रू. भे.)

बोकड़, बोकडू, बोकड़ो, बोकडु, बोकड़ो—देखो 'बोकड़ो' (रू. भे.)

बोकणी, बोकबौ—देखो 'बोकणी, बोकबौ' (रू. भे.)

बोकणहार, हारो (हारी), बोकणियो—वि०।

बोकियोड़ो, बोकियोड़ो, बोक्योड़ो—भू० का० कृ०।

बोकीजणो, बोकीजबो—कर्म वा०।

बोकारणो, बोकारबो—देखो 'बाकारणो, बाकारबो' (रू. भे.)

उ०—सुणीजै स्यारां री सरणाट, भाड़कां तीतर तीखा बोल। बोकारै बसतीड़ी सून्याड़, श्रापणो श्रापो राखै तोल। —सांभ

बोकारणहार, हारो (हारी), बोकारणियो—वि०।

बोकारिग्रोड़ो, बोकारियोड़ो, बोकारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बोकारीजणो, बोकारीजबो—कर्म वा०।

बोकारियोड़ो—देखो 'बाकारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोकारियोडी)

बोकियो—१ देखो बोखो (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बूकियो' (रू. भे.)

बोकौ—देखो 'बोखो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोकी)

बोखद, बोखदि, बोखदी, बोखध—देखो 'ग्रोखध' (रू. भे.)

उ०—करक कळजे भारी बोखद न लागै कारी, तुम घर आवो बंद मेरै पीर भारी है। विरहिन विरह बाढयो तातैं दुख भयो गाढौ, विरह के बांण लै लै विरहिनी मारी है। —मीरां

बोखलो, बोखियो—देखो बोखो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. बोखली)

बोखो—देखो 'बोबो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोखी)

बोडणो, बोडबो—देखो 'बोडणो, बोडबो' (रू. भे.)

बोडणहार, हारो (हारी), बोडणियो—वि०।

बोड़ियोड़ो, बोड़ियोड़ो बोड़योड़ो—भू० का० कृ०।

बोडीजणो, बोडीजबो—कर्म वा०।

बोड़ाणो, बोड़ाबो—देखो 'बोड़ाणो, बोड़ाबो' (रू. भे.)

बोड़ाणहार, हारो (हारी), बोड़ाणियो—वि०।

बोड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

बोड़ाईजणो, बोड़ाईजबो—कर्म वा०।

बोड़ायोड़ो—देखो 'बोड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोड़ायोड़ी)

बोड़ियोड़ो—देखो 'बोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बोड़ियोड़ी)

बोड़ियो—देखो 'बोडियो (रू. भे.)

बोड़ो—देखो 'बोरड़ो' (रू. भे.)

बोचणो; बोचबो—देखो 'बोचणो, बोचबो' (रू. भे.)

बोचणहार, हारो (हारी), बोचणियो—वि०।

बोचियोड़ो, बोचियोड़ो, बोच्योड़ो—भू० का० कृ०।

बोचीजणो, बोचीजबो—कर्म वा०।

बोचियोड़ो—देखो 'बोचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बोचियोड़ी)

बोछो—देखो ग्रोछो' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिवेणी तटि वास तहां क्यूं ना जाइयैं, ए पासा ए डाव सीस लै चाइयैं। बोछे पांणी पैसि समद क्यूं छाडिए, हरिहां जन हरिदास भजि ग्रलख निरजननाथ तहां मिळि लाडिए।

—ह. पु. वां.

उ०—२ बोछा करै गुमांन बहां कै नाहि रे, भादू वरसै मेह नदी घर राहि रे। दरिया उभळै नाहि ता मांहि समाहि रे, हरिहां जन हरिदास यूं साधि देखि जग माहि रे। —ह. पु. वां.

बोज—सं. पु.—१ खाट की की बुनावट।

२ देखो 'बोभ' (रू. भे.)

बोजनीळो—स पु.—शुभ रंग का एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

(शा. हो.)

बोजलखो—स पु. शुभ रंग का एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

(शा. हो.)

बोझाड़ो—स. पु.—१ झटका।

२ प्रहार, चोट।

वि०—प्रहार करने वाला।

बोट—१ देखो 'ग्रोट' (रू. भे.)

उ०—१ जग मूं प्रीति कहां लौ कोजै, सकळ काळ की चोट। उलटी खेलि ग्रनळ का मुख लो, पकड़ि रांम की बोट।

—ह पु. वां.

उ०—२ भडां हांक भंकमप तीर गोळी वहै, सुभटन ताकै बोट चोट सन्मुख सहै। ग्यांन खडग लै हथि न फिरि पूठा फिरै, हरिहां जन हरिदास सूरबीर ग्ररिजीत सहरिका होय रहै। —ह. पु. वां.

उ०—३ जन हरिदास हरि सुमरतां, दूरि ग्रांन सब वोट। राग दोस हिरदै नहीं, करसूं करै न चोट। —ह. पु. वां.

उ०—४ तहां कंध का छेद, ग्रांन नर वोट न छूटै। दस दरवाजा रोकि, काळ काया वह लूटै। —ह. पु. वां.

उ०—५ ग्रांन वोट ऊभा मजूं, सकै तौ पड़दा डाळि। साहिब के पड़दा नहीं, तूं ग्रपणी वोट संभाळि। —ह. पु. वां.

२ देखो वोट' (रू. भे.)

उ०—पूना घर कोधौ सर पाधर. हैवळ गंदळ सबळ हींचि। पड़चौ नह सेवौ ग्राव पांवां. वोट मारतौ समद वीचि।

—राजा जैसिंघ कछवाहा ग्रामेर रो गीत

वोटणो, वोटबो—देखो वोटणौ वोटबौ' (रू. भे)

उ०—१ नमौ नर नाह हथवाह 'पदमा' निडर, वोट ग्ररियाट ग्रमुरां सवांही। साहियां खड़ग 'करणेस' रा छावड़ा, माखियो भलो मंवखास मांही। —पदमसिंघ रो गीत

उ०—२ सालळै सींधुमो राग सरणाइयां, भलांई ग्राज भारथ करी माइयां। मेह मेहां सरिसि ग्रावि जूटा मोहरि, बांण बांणा सरिसि वोढ़िया बहादरि। —पी. ग्रं.

वोटणहार, हारौ (हारी), वोटणियौ—वि०।

वोटिग्रोड़ो, वोटियोड़ो, वोटयोड़ो—भू० का० कृ०।

वोटीजणो, वोटीजबो—कर्म वा०।

वोटर-सं. पु. [ग्रं] वोट देने वाला या वोट देने का ग्रधिकार रखने वाला व्यक्ति।

वोटरलिसट, वोटरलिस्ट-सं. स्त्री. [ग्रं. वोटरलिस्ट] वह सूची जिसमें वोट देने वाले या वोट देने का ग्रधिकार रखने वाले व्यक्ति का नाम दर्ज हो।

वोटियोड़ो—देखो 'वोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोटियोड़ी)

वोडविलाव, वोडबिलाव, वोडबिलावर—देखो 'वोदबिलाव' (रू. भे.)

वोढ-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई।

२ देखो 'वोढ' (रू. भे.)

वोढण-सं स्त्री.—१ सर्प की कंचुकी।

उ०—रसां रचि मांही रस पाया, पोवन छक्या सहजि घरि ग्राया। ग्रहि वोढण ज्यूं तजि गुणकाया, भेदी जाइ ग्रभेद समाया। —ह. पु. वां.

२ ग्रोढ़ने का वस्त्र, चादर ग्रादि।

उ०—ग्राहि ग्रघोगति ग्रंघ, ग्रग्यांन, ग्रालस 'उरि' लागा। 'त्रिबधि' ग्रंघारै वंसि, ग्यांन वोढण नहि नागा। —ह. पु. वां.

वोढणियौ, वोढणौ—देखो 'ग्रोढणौ' (रू. भे.)

वोढणो, वोढबो—देखो 'वोटणो, वीटबौ' (रू. भे.)

उ०—सांमंद हुवह सुभळ सायर, रंण सुत जळनघ रैणायर। सुजळ गोढीरव सायर, महण वण महरांण। सुतर 'सूरज' सुभळ सारे परि वोहाळै उतारै। मारका सत्र वोढ मारे जुड़ै 'पंजण' जुवांन। —महाराजा गजसिंह रो गीत

वोढणहार, हारौ (हारी), वोढणियौ—वि०।

वोढिग्रोड़ो, वोढियोड़ो, वोढ्योड़ो—भू० का० कृ०।

वोढीजणो, वोढीजबो—कर्म वा०।

वोढा—देखो 'वोढा' (रू. भे.)

वोढियोड़ो—देखो 'वोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोढियोड़ी)

वोदौ-वि.—छोटा, कनिष्ठ।

उ०—ताहरां पाबूजी कह्यो—बाई! हूं तोनूं दोदै सूमरै री सांढां रा वरग ग्रांण देईस। ताहरां गोगोजी हंसिया कह्यौ—ग्राजै दोदो सूमरो वोदौ रांवण कहीजै। तैरो सांढां किसोभांत ले ग्रावसी? ताहरां पाबूजी बोलिया—सांढां लै ग्राईस। —नैणसी

वोदौ—देखो 'वोदो' (रू. भे.)

उ०—पीसणियां पीसै; रांधणियां रांधै, बलतसर न्हावो-धोवो ग्रर सिकयां सीख री वातां सांधै। लंगर में बैठ'र जीमे, कतार में कासण मांजै, नूंवा डरता रैवे, वोदां रो भो भाजै। ग्रफसर रै हुकमां हालै चको मौज सूं मालै। —दसदोख

वोपणो, वोपबो—देखो 'ग्रोपणो, ग्रोपबो' (रू. भे.)

उ०—दमक छटा छबिडंड पताका देखिया, पटा हाट व्यौपार जुहारा पेखिया। ग्राभुवण नर नारि ईसो विध वोपिया, जांण क सुरपुर लोक इधक छबि जोपिया। —बगसीरांम प्रोहित री बात

वोपणहार, हारौ (हारी), वोपणियौ—वि०।

वोपिग्रोड़ो, वोपियोड़ो, वोप्योड़ो—भू० का० कृ०।

वोपीजणो, वोपीजबो—कर्म वा०।

वोपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ दुनिया रो वोपार है, सूका देस-देस छोड़ै ग्रर हरया देस-देस'र चरै। जकै घर सूं मोकळो खायो-कमायो ग्रर मोटा मोटा कारज सारया वो: घर री हो ग्राज ग्होयो ग्रर फिकर करै है। —दसदोख

उ०—२ सुत को दुख दिल मांहि दह, साह सहरि एक दिलो है। घरै वरच लखमी ग्रोतार. छोदो सूत वडो वोपार। —भींवराज

उ०—३ उण देस वालो जठै प्रांणां रो वोपार जिण सिरदार रै हम तम होवै, कठै ई सत्रुवां ऊपर चढै है कठा सूं ई दुसमणां री फौज ऊपर ग्राय गई है इण तरै प्रांणां रो वोपार होवै जठै लै चालै। —वी. स. टी.

उ०—४ वणक कहै वोपार विध; सीखो गुरु सूं सोभ। ऊंट मुग्रा नहि पोरठो, कापड़ उपर वोभ। —वां. दा.

बोपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—रे बोपारी करि दिल इकतारी, वाचा वोर संभाळो। मोहरि कौळ कियो मन मेरा, उदायो दसवद टाळो। —भींवराज

बोपारौ—देखो 'व्यापार' (मह., रू. भे.)

उ०—भला हम विणजारा पूरे साह का, विणज करण बोपारो। भला खोटा खोटा विणज न वोहरा, मालिकां दावो पारो। —दीनमुदरदो

बोपियोड़ौ—देखो 'ओपियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोपियोड़ी)

बोबार-स. पु.—१ कन्या का सम्बन्ध निश्चित करते समय दामाद या दामाद के सम्बन्धियों द्वारा कन्या के पिता या संरक्षकों को दिया जाने वाला धन।

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोमर—देखो 'बोभर' (रू. भे.)

उ०—१ मोको पड्यां करणं नै चेतै करो हो, नीं तो करणो आयो बाळ्योड़ा तिला मैं! मोठ री छाया देख्यो मजा करो। इतो कै परो'र करण बोमर वासतै री हाडो भर'र मगाई। हाडो रै वासतै मैं एक धोबो बूक्योड़ी मिरचा नखाई। अचेत पड़ी राजो री मूंडो जगतो मिरचा री हाडो माथै मेलायो। —दसदोख

उ०—२ बठै अघबूटी सी एक घरधिराणी, लाल लूंक रियो मोळ्यां चूलै कनैं बैठी काचर छोलै है। पाळो लागै जद बोभर मैं हाथ तपावैं, कणा ही सै साथै लकड़ी ही अगरेल देवै है। —दसदोख

बोमरियो—१ देखो 'बोभरियो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोमरो' (अल्पा, रू. भे.)

बोमरो—देखो 'बोभरो' (रू. भे.)

बोमंगी—देखो 'बोमंगी' (रू. भे.)

बोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ रत खाळ रळ तळ पालर प्रघळ, होहूं हूकळ थट्ट हुवै। बळकंत विजूजळ बोजक वहुळ, ढोल त्रिमंगळ बोम धुवै। —गु रू. बं

उ०—२ गोम डमर हुवै बोम गाहीजियै, अंत रै बोम गर दोम लागा। सोन रा ऊधडै धोम रा मंकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा। —कल्याणदास महडू

उ०—३ बोम बरावै गाजियै, ढोल हुवा सब ठोड़। आयो रूपो 'रांम' तण, हांम घणी राठोड़। —रा रू.

उ०—४ अरोहैं हणूं रांम मैहं मनुज्ज, धरा बोम धुज्जे सिरा लंक धुज्जं। घड़ीखभ जोधा पदम्मं अठारा, पिलै बाट नौसांण बाजै अठारा। —सू. प्र

उ०—५ बोम संनचूड सरीखा बहै, घेनक सरिखा ग्राहिया। निम्रवरां घणां मोहिण नरंद, गोवळ बैठे गाहिया। —पी. ग्रं.

बोमकेस, बोमकेसो—देखो 'व्योमकेस' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा)

बोमगंगा—देखो 'व्योमगंगा' (रू. भे.)

उ०—देवी कावेरी तापि कस्ना कपिला, देवी भोग सलला भीमा सुमीला। देवी गोमगंगा देवी बोमगंगा, देवी गुप्त गंगा सुचोरूप अगा। —देवि.

बोमगांमी—देखो 'बोमंगी' (रू. भे.)

बोमचक्री—देखो 'बोमचक्री' (रू. भे.)

बोमतलक, बोमतिलक—देखो 'बोमतलक' (रू. भे.)

बोमदेव-सं. पु. [सं. वामदेव] शिव, महादेव। (नां. मा.)

बोमपट, बोमपाट-सं. पु. [स. व्योम+पट] आकाशमार्ग।

उ०—समु उपड़ै कमंदांपति पटैल विकटा चाळो, बोमपटो चाळै त्याल बरमां बाणाव। जोगी जटा वाळै डाक डमरू बजाय जठै, 'हटा' वाळै जाडा थडां मोकिया हैराव। —ईसरदास खिड़ियो

बोमवांण, बोमवांणी-स स्त्री. [सं. व्योम+वाणी] आकाशवांणी, देववाणी।

उ०—देवी गोर रूपा अमलां नव निद्धि, देवी सककळा अकळा सरब सिद्धि। देवी ब्रज्ज विमोहणी बोमवांणी, देवी तोतला गंगला कतियांणी। —देवि.

बोमि—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—१ 'वीक'हर राउ सांभळि वचन्न, रोहाइ किया राता रतन्न। ऊससिय बोमि लागउ अबोह, साभळिअं कपिनं जद्दतसोह। —रा ज. सी.

उ०—चांदिणउ सजाणइ कट्टह चल्लि, सिरि वाळ सोहू हारइ न हल्लि। खीवड़उ मुकरि साहियइ खगि, लाखीक चईनउ बोमि लगि। —रा. ज. सी.

बोर—देखो 'भोर' (रू. भे)

उ०—बावली तणा घड़ा ज्यूं बरतै, काया जतन न कीतो काज। दिलो भीच बोर सो दूजो, रासण हार न घड़ियो राज। —राजा माधोसिंह बखशाहा री गीत

बोरगत—देखो 'बोरगत' (रू. भे.)

बोरणौ, बोरबो-क्रि. स.—१ डूबोना, तर-बतर करना।

उ०—दिगतां लौं दोरैं मचल मन मोरै मुदमुदो, विदातो अंमोरै विसय विस बोरैं बुदबुदो। पछारै पापीं को त्रिपत भण तापीं बुटि तले, मिलावैं मेघा को विधि विधि निसेधा कत मलें। —ऊ का.

२ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बोड़णौ, बोड़बौ' (रू. भे.)

बोरणहार, हारौ (हारी), बोरणियौ—वि०।

बोरियोड़ौ, बोरियोड़ौ, बोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोरीजणौ, बोरीजबौ—कर्म वा०।

बोराणौ, बोराबौ—१ देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बौराणौ, बौराबौ' (रू. भे.)

बोराणहार हारौ (हारी), बोराणियौ—वि०।

बोरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोराईजणौ, बोराईजबौ—कर्म वा०।

बोरायोड़ौ—१ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बौरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोरायोड़ी)

बोरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ डुबोया हुआ, तर-बतर किया हुआ।

२ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.) ३ देखो 'बोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोरियोड़ी)

बोरु—देखो 'बोर' (रू. भे.)

बोरौ, बो रौ—देखो 'बौ'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ लळकत जांझळियां वाजण नै लागी, भूखां मरतोड़ी लळकत पड़ भागी। बो'रा थळ विहुणा तिल लळकत तरजै, बूढी चेली नै साधू ज्यों बरजै। —ऊ का.

उ०—२ कदै तौ पड़ग्यौ काळ प्रभागौ, गिण-गिण काढयौ दोरौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाट्यौ, कदै लाटग्यौ बो'रौ। —चेतमांनखौ

बोळणौ, बोळबौ—१ देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बौळणौ, बौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारायण रौ नांम ज्यां, नह लीधौ निरणांह। वां जमवारौ बोळियौ, ज्यू जंगळ हिरणांह। —ह. र.

उ०—२ रतोलै ग्रेराक, बोळण खळ खबंबरा। बीरमदै वैंडाक, मेळ वचन नह मांनिया। —गो. रू.

उ०—३ लख वेरै पैंदास लख बीरम सुख बोळे, हैवर दोय हजारियां, सोहड़ा थट बोळै। सहस दसांही सांढियां, टीकायत टोळै, ऊ पण कीधौ ग्रेकठी, गोरख इक गोळै। —वी. मा.

उ०—४ महल चौबार ग्रववां तणा माळिया, दिनै बोळीजतै जुरा दहसी। मंडळ ध्रू सथिर ग्रहराव सिर मेदणी, राव गांगो कहै, त्यां गीत रहसी। —राव गांगो

बोळणहार, हारौ (हारी), बोळणियौ—वि०।

बोळियोड़ौ, बोळियोड़ौ, बोळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोळीजणौ, बोळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोलणौ, बोलबौ—१ देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोलणौ, बोलबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बौळणौ, बौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वावड़ी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी। वेहती नदी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी। भूला रौ मुंहडौ देखण री ग्राखडी। दूध को बोलण री ग्राखडी। मारग हालतां टळ'वा री ग्राखडी ग्रऊत रौ धन लेवा री ग्राखडी। —रा. सा. सं.

उ०—२ वरस पांच बोळया पछै, तिसड़ै मेह न वुठ। खड़ पाखै सहू एकठा, हुआ मांणस मन मठ। —डो. मा.

बोलणहार, हारौ (हारी), बोलणियौ—वि०।

बोलियोड़ौ, बोलियोड़ौ, बोल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बोलीजणौ, बोलीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोळाई—देखो 'बौळाई' (रू. भे.)

बोलाई—देखो 'बोलाई' (रू. भे.)

बोळाऊ, बोलाऊ—देखो 'बौळावौ' (रू. भे.)

उ०—१ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सुंदरि साथि। हरीया जासै हेकलो, करि बोलाऊ हाथि। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ बोलाऊ कहण लागा कंवरजी दुख मती करो। मारू नै दाग द्यो। थे पाछा चालो। मारवणजी री तीजी बहन चंपा थांनै परणास्यां। —ढो. मा.

उ०—३ साचौ धणी विपत मैं सांमी, तेड्यां ग्रावै तीजी ताळ। विखमी वाट तणौ बोळाऊ, सांई तूं काळां तणौ सुगाळ। —ग्रोपौ ग्राढौ

उ०—४ सु रूंम-सुंम रै पातसाह इणां पीरजादां नूं तेरै कोड़ रुपियां रौ माल दियौ नै विदा किया, सु पाछा वळता जेसळमेर ग्राय उतरिया। ग्रसवार २०० पातसाह रा सेखरै साथै बोळाऊ, सू मूळराज रतनसी उणां नूं मारनै वित सोह लियौ। —नैणसी

उ०—५ ग्रलग राख ग्रारोह तसां कपड़ा वेतोडा, खरहंड नासा खांच रजक प्याले ग्रल रोडा। क्रमो क्रमाल कतार ग्रठी ग्राघो निस ऊपर, बोळाऊ वीटियां धुरज चोवड़ कस ध्रपर। —पा. प्र.

बोळाणौ, बोळाबौ—देखो 'बौळाणौ, बौळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पायक ग्रस रथ पथ ग्रपारां, हाथी पांखरवंत हजारां। वहतै सीतकाळ बोळायौ, ग्रौ बैसाख ग्रजंगढ ग्रायौ। —रा. रू.

उ०—२ हतियां दोय होवंवियां इक काळ बोळाई। —केसोदास गाडण

उ०—३ होळै सीक बोल्या—हाको मत कर। मतै मतै लोग हूकेला जको हाथै ग्राई चीज पांणी मांय सूं काढ लै जावेला। म्हैं कैवूं तौ थूं किसो सांच मांनैला कै ग्रौ सगळौ धन-माल म्हारौ इज है। म्हारै साथै इज ग्रौ छळ व्हियौ। भोळी सेठांणी ग्रोला मैं ग्राय सगळी माया बोळाय दी। —फुलवाड़ी

उ०—४ सेठ भटकता भटकता बोल्या—काले सूं ई' भापरो वणियारी देख्यां पछै भांख्या सांम्ही बीजळियां खिवै । माया रा लोभ मैं म्हूं तो रूप री कदै गिनरत ई नीं करी। भर गिनरत करै जेड़ी रूप घर्क ई नीं भायो । पोहरो देवण री भलाई मैं माया तो सगळी बोळाईजगी । फगत सोना रा भै पारसनाथजी बच्या ।

—फुलवाड़ी

उ०—५ तरै सोढ़ी कही—थांहरै डील री पछेवड़ो १ मोनूं दीजै इण पछेवड़ा री दरसण करीस नै मोहल मैं बैठी रहीस । नै भेक भो मनभोळियो हूंम भठै राखो । भो मोहल नीचै ऊभो थांहरो जस गावसी, सु सुणीस नै बैठी दिन बोळाइस । —नैणसी

बोळाणहार, हारो (हारी), बोळाणियो—वि० ।

बोळायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बोळाईजणो बोळाईजबो—कर्म वा० ।

बोलाणो, बोलाबो—१ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलाणो, बुलबो' (रू. भे.)

उ०—साह गयो दरगाह सूं, निज रहवासि भनेह । हितकर बोलाया हितू, गोसळ भंतर गेह । —रा. रू.

बोलाणहार, हारो (हारी), बोलाणियो—वि० ।

बोलायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बोलाईजणो, बोलाईजबो —कर्म वा० ।

बोळायोड़ो—देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळायोड़ी)

बोलायोड़ो—देखो बोळायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोलायोड़ी)

बोळांवणो, बोळावबो—देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ एकण जीभ करि कितरा हेक गुण कह्या जाय । वळै मारवणी रै सातवीसो सहेल्यां छै तिके पिण माहा सुघड़ छै, त्यां सुं मारवणी वात विगत करनै दिन बोळावै छै । —ढो. मा.

उ०—२ सू किमा-भेक सरदार जुवान छै ? पाका पाका वरियामां नूं, भजरायलां नूं, खीवरां नूं, डांणहुलां डाकियां नूं, करड़दंतां नूं, लोह घड़ां लाह पर डाहलां नूं, लोली देता, कटारी उगराइ खाता, पचासां बोळावियां भावै भाथ वाढ उतरिया, जियांरा पांच-पांच हजार दांम पाटा-बंधाई रा पाटैवार खाय चुका छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—३ सजण बोळावै हूं वळी, ऊभी मंदिर पूठ । हिवड़ो काचा तार ज्यूं, गयो लड़ंगां तूट । —भग्यात

बोळावणहार, हारो (हारी), बोळावणियो—वि० ।

बोळाविओड़ो, बोळावियोड़ो, बोळाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बोळावीजणो, बोळावीजबो—कर्म वा० ।

बोलावणो, बोलावबो—१ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलाणो, बुलाबो' (रू. भे.)

उ०—मंदिर हूंतां ऊतरयउ, रवि ऊगंतइ वार । मांगणहार बोलाविया, पूछण तास विचार । —ढो. मा.

बोलावणहार, हारो (हारी), बोलावणियो—वि० ।

बोलाविओड़ो, बोलावियोड़ो, बोलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बोलावीजणो, बोलावीजबो—कर्म वा० ।

बोळावियोड़ो—देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळावियोड़ी)

बोलावियोड़ो—१ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोलावियोड़ी)

बोळावो, बोळावू, बोळावो—देखो 'बोळावो' (रू. भे.)

उ०—१ बोळावू वळता कहै, ढोला पाछो भाय । मारू सु लहूंडी वहन, तो परणास्यां जाय । —ढो. मा.

उ०—२ बोळावू वेदल मनै, पुंगळ पूंहता जास । मारवणी दीवा-घरी, रहिया ढोला पास । —ढो. मा.

बोलाह—१ देखो 'बोल्लाह' (रू. भे.)

२ देखो 'वोल्लाह' (रू. भे.)

बोळियोड़ो—१ देखो 'वोळियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळियोड़ी)

बोलियोड़ो—१ देखो 'बोळियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोलियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'वोळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोलियोड़ी)

बोलींट, बोलींठ—देखो 'बोलींट' (रू भे.)

बोलींटियो, बोलीठियो—देखो 'बोलीठ' (भल्पा., रू. भे.)

बोळी-बोळी, बोळपू-दोळपूं—देखो 'भोळी-दोळी' (रू. भे.)

उ०—यण प्रकार हीरां सहेलियां मैं उछव करै छै। गवर के बोळी-दोळी घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावै छै, जोड का जवांन की संगत पाऊ भो वर चावै छै। हीरां को रूप देख सुरद मन मैं जांणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस नूं इं नारि नै महल मैं माणै छै। —बगसीराम प्रोहित री बात

बोल्लाह—सं. पु. [सं.] १ वह घोड़ा जिसके दुम भौर भयाल के बाल पीले हों । (शा. हो.)

२ देखो 'बोल्ळाह' (रू. भे.)

बोवड़णो, बोवड़बो—क्रि. भ.—बरसना ।

उ०—१ फुणाटां झाट बीजड़ां भड़ां ऊफणां, खुणाटां बोवड़ं बाट खेदी। बादगीरां हूंदा साद घट बोचतं, भीम मुगळां मिळं नाद भेदी। —राव भीमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ घटा समंद्र अपार सेन बोवड़ं विकट बाट, गोळां सरां मार घूमं त्रमागळां लागा गाज। ब्रजनाथ इंद्र आगं राखी ब्रज धार वूठां, सार बाणां कोटी 'देवं' राखियो सकाज।
—महाराज देवसिंघ हाडा री गीत

बोवड़णहार, हारौ (हारी), बोवड़णियौ—वि०।
बोवड़ियोड़ो, बोवड़ियोड़ो, बोवड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बोवड़ीजणी, बोवड़ीजबी—भाव वा०।

बोवड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—बरसा हुआ।
(स्त्री. बोवड़ियोड़ी)

बोवार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोवी-स. पु.—करघे में नीचे की ओर का वह उपकरण जिसे कपड़े का बाना ठीक बैठाने के लिए पैर रखकर ऊपर-नीचे करते रहते हैं।

बोसरणौ, बोसरबौ-क्रि० स०[सं. व्युत्+सृज्] १ छोड़ना, त्यागना।
२ देखो 'विसरणौ विसरबौ' (रू. भे.)
बोसरणहार, हारौ (हारी), बोसरणियौ—वि०।
बोसरिग्रोड़ो, बोसरियोड़ो, बोसरयोड़ो—भू० का० कृ०।
बोसरीजणौ, बोसरीजबौ—भाव वा०।

बोसराणौ, बोसराबौ-क्रि० स० [सं. व्युत्+सृज्] त्याग कराना, छुड़ाना।
उ०—जब एक जणं सौ मण चणां भिखारयां नैं लूंटाय दिया। दूजं सौ मण रा भूंगड़ा सेकाय दिया। तीजं सौ मण चणां नीं घूगरी रंधाय खुवाइ। चौथं सौ मण चणां री रोट्यां कराय पाखती खाटी करायनं जीमाया। पांच मैं सौ मण चणा बोसराय नैं हाथ लगावा रा त्याग किया। —भि. द्र.
२ देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)
बोसराणहार, हारौ (हारी), बोसराणियौ—वि०।
बोसरायोड़ो—भू० का० कृ०।
बोसराईजणौ, बोसराईजबौ—कर्म वा०।

बोसरायोड़ो-भू. का. कृ.—१ त्याग कराया हुआ, छुड़ाया हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोसरायोड़ी)

बोसरावणौ, बोसरावबौ—१ देखो 'बोसराणौ, बोसराबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिसराणौ, बिसराबौ' (रू. भे.)
बोसरावणहार, हारौ (हारी), बोसरावणियौ—वि०।
बोसराविओड़ो, बोसरावियोड़ो, बोसराव्योड़ो—भू० का० कृ०।
बोसरावीजणौ, बोसरावीजबौ—कर्म वा०।

बोसरावियोड़ो— देखो 'बोसरायोड़ो', (रू. भे.)
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोसरावियोड़ी)

बोसरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोसरियोड़ी)

बोसरू-सं. पु. [सं. व्युत्+सर्ग] त्याग, परित्याग।
उ०—१ भव अनंत ममतां थकां, कीया देह संबंध। त्रिविध त्रिविध करी बोसरू, तिण सूं प्रतिबंध। —स. कु.
उ०—२ इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र। त्रिविध त्रिविध करि बोसरू, करू जनम पवित्र। —स. कु.

बोह—देखो बोह' (रू. भे.)
उ०—हुवै मंगळ धमळ दमंगळ वीर-हक, रंग तूठो कमध जग रूठो। सघण वूठो कुसुम बोह जिण मौड़ सिर, विखम उण मौड़ सिर लोह वूठो। —बांकीदास ग्रासियो
१ देखो 'बोध' (रू. भे.)

बोहड़णौ, बोहड़बौ—देखो 'बहोड़णौ, बहोड़बौ' (रू. भे.)
बोहड़णहार, हारौ (हारी), बोहड़णियौ—वि०।
बोहड़िग्रोड़ो, बोहड़ियोड़ो, बोहड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बोहड़ीजणौ, बोहड़ीजबौ—कर्म वा०।

बोहड़ाणौ, बोहड़ाबौ—देखो 'बहोड़ाणौ, बहोड़ाबौ' (रू. भे.)
बोहड़ाणहार, हारौ (हारी), बोहड़ाणियौ—वि०।
बोहड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।
बोहड़ाईजणौ, बोहड़ाईजबौ—कर्म वा०।

बोहड़ायोड़ो—देखो 'बहोड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहड़ायोड़ी)

बोहड़ियोड़ो—देखो 'बहोड़ियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहड़ियोड़ी)

बोहत— देखो 'बहुत' (रू. भे.)
उ०—१ छंद कहां त बोहता भावं, खरतर को पतियायौ। हिव की वेळा हिव न भ्राग्यो, सकि रहयौ कंदरायौ। —ध. व. ग्रं.
उ०—२ प्रभंपुरा जेवत सूर बागल नरेसर, महरराव राठोड़ करत करहा दांनेसुर। जलखेड़िया कमधज सध्र चंदेल सोढ़ु बारिया, बरै सुमत बोहत सूरमा अ-निखत पारक बीर कपाळिया।
—रा. ब. बि.

बोहतपत, बोहतपति, बोहतपती—सं. पु.—पाण्डु पुत्र अर्जुन का नाम ।
उ०—पुस्तक नांखे परा, पंडित सोय वेद पुरांणां । भारथ अज्जे भीम, बोहतपत चूकै बांणां । —बोध बोहू

बोहतर—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

बोहदीपी—देखो 'बोहदीपी' (रू. भे.)

बोहनांमी—देखो 'बहुनांमी' (रू. भे.)
उ०—आयो गुर जंभ अचंभ अजोनी, धरम धुराऊ दाखवियो । संभराथळ सांमी अंतरजांमी, बोहनांमी हरि हेत कियो ।
—गोकळजी

बोहरंगी—देखो 'बहुरंगी' (रू. भे.)

बोहरगत—देखो 'बोरगत' (रू. भे.)

बोहराळ—देखो 'बोहराळ' (रू. भे.)

बोहरूपी—१ देखो 'बहुरूपी' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहरूपी' (रू. भे.)

बोहरो—देखो 'बोरो' (रू. भे.)
उ०—आ गाथा सुण नें भोजीरांमजी बोहरो बोल्यो—अरै जसू उरहो आव रे घर तो लूंट लियो ने माथै घलै डड करै । ज्यूं भीखणजी महाव्रत तो पांचूं ई परहा भांगा कहै । अनें वलै चोमासी रो दंड कहै छै । —भि. द्र.

बोहळणो, बोहळबो—१ देखो 'बोळणो, बोळबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळणो, बोहळबो' (रू. भे.)
३ देखो 'वोळणो, वोळबो' ।
बोहळणहार, हारो (हारी), बोहळणियो—वि० ।
बोहळियोड़ो, बोहळियोड़ो, बोहळयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बोहळीजणो, बोहळीजबो—कर्म वा० ।

बोहळाणो, बोहळाबो—१ देखो 'बोहळाणो, बोहळाबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळाणो, वोळाबो' (रू. भे.)
बोहळाणहार, हारो (हारी), बोहळाणियो—वि० ।
बोहळायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बोहळाईजणो, बोहळाईजबो—कर्म वा० ।

बोहळायोड़ो—१ देखो 'बोहळायोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहळायोड़ी)

बोहळियोड़ो—१ देखो 'बोळियोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळियोड़ो' (रू. भे.)
३ देखो 'वोळियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहळियोड़ी)

बोहळो—देखो 'बो'ळो' (रू. भे.)
उ०—कहो (है) बाट, राजा सुणो, दीठा बोहळा देस । रांमत ख्याल विनोद रस, नारी निरूपम वेस । —ढो. मा.

बोहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—उपज्या खिणम्या भी मुवा, यो जग को बोहार । सतगुर जांणि पिछांणियो, मरै न दूजी बार । —परमानंद वणियाळ

बोहि, बोहित, बोहिति, बोहित्थ, बोहिथ—१ देखो 'बोहित्थ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
२ देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोहो—देखो 'वहो' (रू. भे.)
उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत बिराजणी आप । बोहो बंगळो अणखावणो, तो विण घणो 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ
उ०—२ सीतळ छांय कदम की छोडी, धूप सहा अति भारा । मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, बोहो प्राण पियारा । —मीरा

बोहोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोहोनांमी—देखो 'बहुनांमी' (रू. भे.)

बोहोळो—देखो 'बो'ळो' (रू. भे.)

बोहो—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बौ—सं. पु.—१ पत्ता, पान । (एका.)
२ तलवार, खड्ग । („)
३ पुत्र, बेटा । („)
४ जुलाहे का एक प्रकार का औजार विशेष जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठाते और गिराते हैं । यह दो नरसलों का होता है जिसके ऊपर नीचे तागे बंधे रहते हैं और जिनके बीच में तागे एक एक करके निकलते रहते हैं ।
सर्व.—१ वह ।
उ०—१ मूलक री उतरादी कांकड़ मार्थ, गोडां-गोडां लग बरफ मैं ऊभो, उणं औ कागद पढ्यो तो उणरी छाती फूलीजगी । बौ सोचण लागो—राजा फूल जिसी कोमळ अर वज्जर जिसी कठोर, चांद जिसी फूटरी अर चंडिका सी विकराळ । अठै उणरै सागै बा ई बंदूक लियां ऊभी व्हैती तो किसीक नांमी रैवती ।
—अमर-चूंनड़ी
उ०—२ जांणं बौ न जायो जमदूत जाडै, पुरांणं अढारै कियो बूम पाडै । रसमे समर्थं कह्यो सन्नमस्लं, समंवाद गातां अहे पार सह्लं ।
—ना. द.
उ०—३ अवरां नें सुख आपरो, बौ सुख मानै आप । बानै हण धारण वहै, तै छांनै न 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ
२ उस ।

उ०—मारग में भगतणियां रा डेरा आया। अेक रूपाळी भगतण सूं चार-पांचे'क मोट्यार बोछरड़ायां करता हा। चौघरण रै सागे लागड़ी ही। बो वां मोट्यारां नै बरजिया के किणी भली लुगाई सूं छेड़छाड़ करणी बेजा बात है। —फुलवाड़ी

रू. भे.—बो, बोव।

बोगर, बोघर-सं. पु.—बाघ के शरीर की गंध।

बोड़णो, बोड़बो-क्रि० अ०—१ निवृत्त होना।

उ०—जिसै दखणी फिडे तांई आय वागा। तिण री मा'राज सूं मालम हुई सेवा सूं बोड़ता। पीछै मा'राज पोसाक करी अरू पाघ सदा जूडै सूं बांधता सू उणदिन ऊंतावळ मैं बांध सकिया नहीं, यूं ही पाघ मस्तक ऊपर देय कमर बांधी। —द. दा.

२ देखो 'बोड़णो, बोड़बो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़णो, बहोड़बो' (रू. भे.)

बोड़णहार, हारो (हारी), बोड़णियो—वि०।

बोड़िओड़ो, बोड़ियोड़ो, बोड़योड़ो—भू० का० कृ०।

बोड़ीजणो, बोड़ीजबो—भाव वा०।

बोड़ाणो, बोड़ाबो-क्रि० स०—१ निवृत्त करना।

२ देखो 'बोड़ाणो, बोड़ाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ाणो, बहोड़ाबो' (रू. भे.)

बोड़ाणहार, हारो (हारी), बोड़ाणियो—वि०।

बोड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

बोड़ाईजणो, बोड़ाईजबो—कर्म वा०।

बोड़ायोड़ो-भू० का० कृ०—१ निवृत्त किया हुआ।

२ देखो 'बोड़ायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोड़ायोड़ी)

बोड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—१ निवृत्त हुवा हुआ।

२ देखो 'बोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोड़ियोड़ी)

बोछाड़, बोछार, बोछाळ—देखो 'बोछाड़' (रू. भे.)

बोढउर, बोढपुर, बोढपुरी-सं. पु.—नल राजा के द्वारा विजित एक नगर का नाम।

उ०—महारास्ट्र कांमाख आभीर, कच पापांतिक निरमदा नीर। बोढउर अनइ मल खोमाल, दखणदेसि जीपिया भूपाल। —नळदवदंती रास

बोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरिया हरि नांव की, पूंजी बिन बोपार। खाई कब खूटे नहीं, पाई बसत अपार। —अनुभववांणी

उ०—२ बापड़ा नास्तिक मिनख सांची कैया करै है कै-दायजो देय'र बेटी री मौत मोल लेवणी है। धन रा ठोकाकड़ लोभी लोग मरज-मांगणी रै समै भो बहू री हीड़ो क्यूं करै? वांरो तो भो बोपार है कै-मोकळी बहुवां मारै अर मोकळो धन कमावै। —दसदोख

उ०—३ हीरा री कीमत तो जमीं सूं बारै निकळियां पछै व्है। म्हारै साथे बोपार मैं हणरो बोहो बणो सीर राख देवूंला। खासी भलो पूंजी भेळी व्हियां न्यारी दुकांन मंडाय देवूंला। आज तो यूं सेठा रै बिणायोड़ो प्याऊ माथै बैठो पगार लेवै, पछै यूं खुद गांव गांव प्याऊ लगावण जोग बण जावैला। —फुलवाड़ी

उ०—४ पड़ गहण लियै दियै नह पाचा, सत्र खत नह दाखै ग्रह सार। सोड तणा वापार सरखो, बळ मांडियो 'अलै' बोपार। —दुरसो आढो

बोपारी—देखो 'व्यपारी' (रू. भे.)

उ०—१ अैसी संगति साध की, ज्यूं बोपारी हाट। जनहरिया जब गाहकु, सबद मिळावै साट। —अनुभववांणी

उ०—२ तद खाफरो राजारै दरबार वडै लाजमै पोसाक सूं आय मुजरो कियो। राजा पूछियो—तूं कुण छै? अरज कीवी—बोपारी छूं, रांमबाजार मैं दुकांन छै, हजार दस बरस दिन मैं जगात रा भरूं छूं, राजा फुरमावो किसै कारज आया छो सू कहो। —राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

उ०—३ तद राजा पूछी—साह! थारी अरज कहि, खाफरै अरज करी—जीव री अभां पाऊं, कवल पाऊं तो अरज करूं। राजा फुरमायो—तूं तो बोपारी छै तै—मैं इसी जीव री किसी तकसीर छै? काई जगात री चोरी आयी छै तो तकसीर माफ छै, म्हा रो कवल छै। —राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

बोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—१ नमो रूपनद्दा सबद्दा रसीलो, नमो लच्छि रंभा नमो बोम लीलो। नमो मोहणी कमळा मूल मूंनी, नमो घोम धूतारणी संम धूनी। —मा. वचनिका

ऊ०—२ वर्ण जेथ तेथां तोहि जोति वासो, प्रिथी बोम सांमद्र तूंही प्रकासो। नही ठोड़ तू जेथ तै दाख नेसं, ग्रखै इंद क्रमा आदेसं आदेसं। —मा. वचनिका

बोर-सं. स्त्री.—बिल्ली या बकरी का ऋतुमति होने की क्रिया।

बोरणो, बोरबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

बोरणहार, हारो (हारी), बोरणियो—वि०।

बोरिओड़ो, बोरियोड़ो, बोरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बोरीजणो, बोरीजबो—कर्म वा०।

बौराणौ, बौराबौ–क्रि० अ०—१ बिल्ली या बकरी का गर्भधारण के लिए ऋतुमति होना।

२ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.) ३ देखो 'बोराणौ, बोराबौ' (रू. भे.)

बौराणहार, हारौ (हारी), बौराणियौ—वि०।

बौरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बौराईजणौ, बौराईजबौ—कर्म वा०।

बौरायोड़ी–सं. स्त्री.—ऋतुमति हुवी हुई बकरी या बिल्ली।

बौरायोड़ौ—१ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.) २ देखो 'बोरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बौरायोड़ी)

बौरावणौ, बौरावबौ—१ देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोराणौ, बोराबौ' (रू. भे.)

बौरावणहार, हारौ (हारी), बौरावणियौ—वि०।

बौराविओड़ौ, बौरावियोड़ौ, बौराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बौरावीजणौ, बौरावीजबौ—कर्म वा०।

बौरावियोड़ौ—१ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बौरावियोड़ी)

बौरियोड़ौ—देखो 'बुहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बौरियोड़ी)

बोळणौ, बोळबौ–क्रि० अ०—१ पहुँचना।

२ भेजना।

३ उस पार जाना ४ लांघना, पार करना।

५ विदा होना।

६ व्यतीत होना, बीतना।

उ०—फूल कंवर रै कोट में राज करै छै। घणा दिन बोळिया। राज जमियौ। फूल कहण लागौ. 'म्हारै बाप री वैर, धरणि नु मैं मारणौ।' ताहरां प्रधान बोलियौ—राज, थांहरै घोड़ा नहीं। तो कहियौ—घोड़ा ल्यौ। —लाखै फूलांणी री बात

७ खोना, गंवाना, गुमाना।

८ ठगा जाना व अन्य को ठगना।

क्रि० स०—९ उपभोग करना, आनन्द लूटना।

१० संहार करना, मारना।

११ नाश करना, नष्ट करना।

१२ व्यतीत करना, बीताना।

उ०—१ दत देता धन मांगतां, जगि सुणतां जसवास। वसुधा इण पर बोळिया, नवकोटी खट-मास। —गु. रू. बं.

उ०—२ मार सार मारकां दळा हुवं आपांणी, मुहि लग्गा हैं धुरां, जेह रक्खी तें मांणी। वर केता बोळिया, कळह केताई कुनारी, पुरख न परणी किणिह, प्राद जुग्गादि कुमारी। —गु. रू. बं.

१३ मृत प्राणी के शव को दफनाना।

१४ रक्षा करना, हिफाजत करना।

१५ देखो 'बोळणौ. बोळबौ' (रू. भे.)

बोळणहार, हारौ (हारी), बोळणियौ—वि०।

बोळिओड़ौ, बोळियोड़ौ, बोळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बोळीजणौ, बोळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोळवणौ, बोळवबौ, बोहळणौ, बोहळबौ, बौळणौ, बौळबौ, बौळवणौ, बौळवबौ, बउळणौ, बउळबौ, बउलणौ, बउलबौ, बोहलणौ, बोहलबौ, बौळवणौ, बौळबौ, बौहळणौ, बौहळबौ–रू. भे.।

बोळवणौ, बोळवबौ—देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)

उ० - भो वरला रित बोळवी, बोती सरद सदूंद। हिम रुत आयौ बीचच्यौ, फेर प्रगट्टयौ फद। —रा. रू.

बोळवणहार, हारौ (हारी,) बोळवणियौ—वि०।

बोळविओड़ौ, बोळवियोड़ौ, बोळव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बोळवीजणौ, बोळवीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोळवियोड़ौ—देखो 'बोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळवियोड़ी)

बोलाऊ—देखो 'बोळाबौ' (रू. भे.)

बोळाणौ, बोळाबौ–क्रि० स० (बोळणौ, बोळबौ क्रिया का प्रे. रू.) १ बिताना, गुजारना।

उ०—१ वरसाळो इण पर बोळायौ, और न को वरसात जणायौ। उठी सरद सोतरित आई, सकळ दळं विणि सोभ सभाई। —रा. रू.

उ०—२ वात हुई ग्रीखम बोळाई, ऊपर धुर वरखा रुत आई। असतकांन डर थयो अचिंतो, विचित्रां तणो होव सुण चीतो। —रा. रू.

२ पहुंचाना।

३ विदा देना, विदा करना।

उ०—१ नर जांणं दिन जात है, दिन जांणं नर जाय। गई बोळावणहारियां, गणगौर बोळाय बोळाय। —अज्ञात

उ०—२ दळकार हुठं दसणाघ रा, दिल्ली फोजां निरखही। फिरि जांण अपूठा वाहुडे, जांन बोळाए मांडही। —गु. रू. बं.

४ भिजवाना, भेजना।

५ पीछा करना या कराना, अनुगमन करना या कराना।

६ खोना, गुमाना।

७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया करना/कराना ।
८ उपभोग करना/कराना, आनन्द लूटना/लूटाना ।
९ उस पार भेजना १० लंघाना, पार कराना या लांघना ।
११ संहार करना/कराना, मारना/मरवाना ।
१२ नाश करना/कराना, नष्ट करना/कराना ।
१३ खर्च करना ।
१४ रक्षा करना, हिफाजत करना ।
१५ ठगाना ।
१६ लौटाना, लौटने को प्रवृत्त करना ।
१७ देखो 'बोळाणी, बोळाबो' (रू. भे.)

बोळाणहार, हारो (हारी), बोळाणियो—वि० ।

बोळायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बोळाईजणो, बोळाईजबो—कर्म वा० ।

बोळावणी, बोळावबो, बोहळाणी, बोहळाबो, बोहळावणो, बोहळाबो, बौळाणो, बौळाबो, बौळावणी, बौळावबो, बौहळाणी, बौहळाबो, बौहळावणी, बौहळावबो, बउळाणो, बउळाबो, बउळाणी बउळाबो, बउळावणो, बउळावबो, बळावणो, बळवबो, बवळाणी, बवळाबो, बुळाणो, बुळाबो, बुळावणो, बुळावबो, बोळाणी, बोळाबो, बोलाणी, बोलाबो, बोळावणी, बोळावबो, बोलावणी बोलावबो, बोहळाणी, बोहळाबो, बोहळावणी, बोहळावबो बौळावणी, बौळावबो, बौहळाणी, बौहळाबो, बौहळावणी, बौहळावबो—रू. भे. ।

बोलाणी, बोलाबो—देखो 'बुलाणी, बुलाबो' (रू. भे.)

बोलाणहार, हारो (हारी), बोलाणियो—वि० ।

बोलायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बोलाईजणो बोलाईजबो—कर्म वा० ।

बोलायोड़ो—देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोलायोड़ी)

बोळायोड़ो-भू० का० कृ०—१ बिताया हुआ, गुजारा हुआ । २ पहुँचाया हुआ । ३ विदा दिया या किया हुआ । ४ भेजा हुआ या भिजवाया हुआ । ५ पीछा किया या करवाया हुआ, अनुगमन किया या कराया हुआ । ६ खोया हुआ, गुमाया हुआ । ७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया किया या करवाया हुआ । ८ उपभोग किया या करवाया हुआ, आनन्द लूटाया हुआ । ९ उस पार भेजा हुआ । १० लांघा हुआ, लंघाया हुआ, पार किया हुआ । ११ संहार किया/कराया हुआ, मारा/मरवाया हुआ । १२ नाश किया/कराया हुआ, नष्ट किया हुआ/कराया हुआ । १३ खर्च किया हुआ । १४ रक्षा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ । १५ ठगाया हुआ । १६ लौटाया हुआ, लौटाने को प्रवृत्त किया हुआ । १७ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळायोड़ी)

बोळावणी-सं. स्त्री.—१ विदा देने की क्रिया, विदाई ।
२ मृत प्राणी के शव की अन्त्येष्टी क्रिया ।
३ गणगौर को विदा देने का दिन ।
रू. भे.—बोळावणी, बोळावणी, बोल्हावणी ।

बोळावणो, बोळावबो—१ देखो 'बोळाणी, बोळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ नर जांणे दिन जात है, दिन जांणे नर जाय । भई बोळावणहारियां, गणगौर बोळाय बोळाय । —अज्ञात

२ देखो 'बोळाणी, बोळाबो' (रू. भे.)

बोळावणहार, हारो (हारी), बोळावणियो—वि० ।

बोळावियोड़ो, बोळावियोड़ो, बोळाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बोळावीजणो, बोळावीजबो—कर्म वा० ।

बोलावणो, बोलावबो—देखो 'बुलाणी, बुलाबो' (रू. भे.)

बोलावणहार, हारो (हारी), बोलावणियो—वि० ।

बोलावियोड़ो, बोलावियोड़ो, बोलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बोलावीजणो, बोलावीजबो—कर्म वा० ।

बोळावियोड़ो—१ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळावियोड़ी)

बोलावियोड़ो—देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बोलावियोड़ी)

बोळावो, बोळावु, बोळाबो-सं. पु.—१ विश्राम स्थान, ठहरने का स्थान ।

उ०—भ्रो हस नदो निवांण, भ्रो हस कोडो नेड़रो । भ्रो भो भाही-ठांण, भ्रो बोळावो सजणां । —पदर्थ [illegible]

२ सम्मान पूर्वक विदा देने की क्रिया ।

३ वह व्यक्ति जिसे राह में डाकुओं आदि से रक्षा [illegible] ले लिया जाता है, राह-रक्षक ।

उ०—१ किय ढाळो पूनागर कने, भाय खबर पण रंगियां । सो तुरंग भ्रसी ऊठां संहत, है बोळावो खोवियां । —पा. प्र.

उ०—२ गैरी सूं दोय गैर, करां आप हूंतां करो । बोलावं री बैर बाप बैर हूंतां बहुत । —पा. प्र.

उ०—३ भलवांणि आपार, मिळे कोळी भूंगाळा, सोवा मिळिया सरस बळे बोळावं बाळा । जत नायक जोइया, बेढ बायक बाड़ेला, गिर मिळिया गांमेत तेम बघा तूंबेला । —पा. प्र.

४ देखो 'बुलावो' (रू. भे.)

उ०—आता कहै न भाव, बळतां बोळावो नहीं । तिण सज्जण घर पांव, बळे न दीजे, बींझरा । —बींझरै भ्रहीर री बात

रू. भे.—वोळाऊ, वोळावी, वोळावू, वोळावो, वोळायत; वोळाऊ, वउळावू, वळावो, वोळगो, वोळावू, वोळावो, वोल्हावो ।

वौळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ पहुँचा हुग्रा । २ भेजा हुवा । ३ उस पार गया हुग्रा । ४ लांघा हुग्रा, पार किया हुग्रा । ५ बिदा हुवा हुग्रा । ६ व्यतीत हुवा हुग्रा, बीता हुग्रा । ७ खोया हुग्रा, गंवाया हुग्रा, गुमाया हुग्रा । ८ ठगाया हुग्रा या ग्रन्य को ठगा हुग्रा । ६ उपभोग किया हुग्रा, ग्रानन्द लूटा हुग्रा । १० संहार किया हुग्रा, मारा हुग्रा । ११ नाश किया हुग्रा, नष्ट किया हुग्रा । १२ व्यतीत किया हुग्रा, बिताया हुग्रा । १३ मृत प्राणी के शव को दफनाया हुग्रा । १४ रक्षा किया हुग्रा, हिफाजत किया हुग्रा ।

१५ देखो 'वोलियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वौळियोड़ी)

वौ'ळो—देखो 'वो'ळो' (रू. भे.)

वोळ्हाणो, वोळ्हाबो—१ देखो 'वोळाणो, वोळाबो' (रू. भे.)

उ०—कोई वीर बालक ग्रापरै पिता रो वैर लैण सारू सझियो ग्रो उण बाळक वीर नै समझावै कि वरस पांच तो वोळ्हाया ग्रनै छठो जांण री ग्रबै जेझ नहीं इण छट्ठं वरस पछै सातमो वरस लागसी तद थूं घोड़ै ग्रसवार हो जासो जद थारा पिता रो वैर लेवै । —वी. स. टी.

२ देखो 'वोळाणो, वोळाबो' (रू. भे.)

वोळ्हाणहार, हारो (हारी), वोळ्हाणियो—वि० ।

वोळ्हायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वोळ्हाईजणो, वोळ्हाईजबो—कर्म वा० ।

वोल्हाणो, वोल्हाबो—देखो 'बुलाणो, बुलाबो' (रू. भे.)

वोल्हाणहार, हारो (हारी), वोल्हाणियो—वि० ।

वोल्हायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वोल्हाईजणो, वोल्हाईजबो—कर्म वा० ।

वोळ्हायोड़ो—१ देखो 'वोळायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोळ्हायोड़ी)

वोल्हायोड़ो—देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोल्हायोड़ी (रू. भे.)

वोळ्हावणो—देखो 'वोळावणो' (रू. भे.)

वोळ्हावणो, वोळ्हावबो—१ देखो 'वोळाणो, वोळाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

वोळ्हावणहार, हारो (हारी), वोळ्हावणियो—वि० ।

वोळ्हाविग्रोड़ो, वोळ्हावियोड़ो, वोळ्हाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोळ्हावीजणो, वोळ्हावीजबो—कर्म वा० ।

वोल्हावणो, वोल्हावबो—देखो 'बुलाणो, बुलाबो' (रू. भे.)

वोल्हावणहार, हारो (हारी), वोल्हावणियो—वि० ।

वोल्हाविग्रोड़ो, वोल्हावियोड़ो, वोल्हाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोल्हावीजणो, वोल्हावीजबो—कर्म वा० ।

वोळ्हावियोड़ो—१ देखो 'वोळायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोळ्हावियोड़ी)

वोल्हावियोड़ो—देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोल्हावियोड़ी)

वोळ्हावो—१ देखो 'वोळावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलावो' (रू. भे.)

वोल्हावो—देखो 'बुलावो' (रू. भे.)

वोव—देखो 'वो' (४) (रू. भ.)

वोवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

वोवारियो—देखो 'व्यवहारी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वोवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

वोह—१ देखो 'वोह' (रू. भे.)

उ०—मुख तं मीठा बोलणा, ग्रंदर भरिया खार । बाकै कूड़'र कपट का, हरिया वोह वोहवार । —ग्रनुभववांणी

२ देखो 'बोध' (रू. भे.)

वोहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

वोहनामो—देखो 'बहुनामी' (रू. भे.)

वोहरणो, वोहरबो–क्रि० ग्र०—१ घूमना, फिरना ।

२ देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

उ०—माया मोदै मानवी, केता वोहरै हाट । हरीया हरि सोदै तणो, ताहि न जांणै साट । —ग्रनुभववांणी

३ देखो 'व्यवहारणो, व्यवहारबो' (रू. भे.)

वोहरणहार, हारो (हारी), वोहरणियो—वि० ।

वोहरिग्रोड़ो, वोहरियोड़ो, वोहर्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोहरीजणो, वोहरीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

वोहराणो वोहराबो—देखो 'बुहराणो, बुहराबो' (रू. भे.)

वोहराणहार, हारो (हारी), वोहराणियो—वि० ।

वोहरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वोहराईजणो, वोहराईजबो—कर्म वा० ।

वोहरायोड़ो—देखो 'बुहरायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. वोहरायोड़ी)

वोहरावणो, वोहरावबो—देखो 'बुहराणो, बुहराबो' (रू. भे.)

वोहरावणहार, हारो (हारी), वोहरावणियो—वि० ।

वोहराविग्रोड़ो, वोहरावियोड़ो, वोहराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोहरावीजणो, वोहरावीजबो—कर्म वा० ।

वोहराबियोड़ौ—देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोराबियोड़ी)

वोहरौ—देखो 'वो'रौ' (रू. भे.)
उ०—१ अला हम बिणजारा पूरं साह का, बिणज करण वोपारी।
अला खोटा खाटा बिणज वोहरा, मांणिकां दावौ पारौ।
—दीन सुदरदो

उ०—२ साच सिदक जमलें वोहरा, बिसनौ बिसन जपाय।
बिसन जप्यां सुख सांपजै, जम गंजण ना छुटाय: —वील्होजी

वोहळाणौ, वोहळाबौ—१ देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)
वोहळाणहार, हारौ (हारी), वोहळाणिवौ—वि०।
वोहळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वोहळाईजणौ, वोहळाईजबौ—कर्म वा०।

वोहळायोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोहळायोड़ी)

वोहळावणौ, वोहळावबौ—१ देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)
वोहळावणहार, हारौ (हारी), वोहळावणियौ—वि०।
वोहळाविय्रोड़ौ, वोहळावियोड़ौ, वोहळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वोहळावीजणौ, वोहळावीजबौ—कर्म वा०।

वोहळावियोड़ौ—१ देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोहळावियोड़ी)

वोहळौ—देखो 'वौ'ळौ' (रू. भे.)

वोहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—१ मुख तें मीठा बोलणा, अंदर भरिया खार। वाकै कूड़'र कपट का, हरिया वोह वोहवार। —अनुभववांणी
उ०—२ हरिया अैसा को मिळै, मा'हव का सविचार। झूठ न वाकै कपट को, रंच नहीं वोहवार। —अनुभववांणी

वोहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

वोहवारौ; वोहारौ—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

वोहि, वोहित, वोहिति, वोहित्थ, वोहिथ—देखो 'वोहित' (रू. भे.)

वौहरौ—देखो 'वो'रौ' (रू. भे.)

वौहोवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—बाजै हाक वीर धुन वेदां, चवै महारिख मंगळाचार। धड़ धड़ वेहड़ पाडियै धारं; वर लाडियै हुम्रौ वौहोवार।
—दूदा नगराजोत रौ गीत

व्यंग, व्यंग्य—सं. पु. [सं. व्यंग्य] १ कोई लगती हुई बात, ताना, चुटकी।
२ व्यंजना शक्ति से प्रकट होने वाला साधारण अर्थ से कुछ विशिष्ट अर्थ।
रू. भे.—बिंग, व्यंग।

व्यंगुळ, व्यंगुल—सं. पु. [सं. व्यंगुल] एक अंगुल का साठवां भाग।

व्यंजक—वि० [सं.] प्रकट करने वाला, जाहिरकर्त्ता।
सं. पु. [सं. व्यंजक:] १ नाटकीय हाव भाव द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटन।
२ संकेत, चिन्ह, निशान।

व्यंजण, व्यंजन—सं. पु. [सं. व्यंजन] १ व्यक्त होने, या प्रकट करने का भाव या क्रिया।
२ छप्पन प्रकार के भोजन।
उ०—१ अर बरात रा प्राघूंणकां नूं महानस मैं बुलाय खटरस मय नांना व्यजनां री व्रात पूरण त्रिप्ति चखावियौ। —वं. भा.
उ०—२ दादू आदर भाव का, मीठा लागै मोंठ। बिण आदर व्यंजण बुरा, जीमण वाळा ठोंठ। —दादूवांणी
उ०—३ अति व्यंजन पळ अन्न, रचै जीमण वंछित रस। आसव छकि आपांन, वणै जदुवंस जथा वस। —वं. भा.
३ अच्छा भोजन, बढ़िया खाद्य पदार्थ।
उ०—रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सझ। रूड़ी व्यजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे। —प. च. चौ.
४ स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, अक्षर।
५ अंग, अवयव।
रू. भे.—बंजण, बिंजण, बिंजन, व्यंजन, व्यजन, वंजण, विंजण, विंजन, वियंजण, वियंजन।

व्यजनद्वादसी, व्यंजनद्वादसी—सं. स्त्री. [सं. व्यंजनद्वादशी] मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष, इस दिन विष्णु की पूजा कर अन्नकूट की तरह ही व्यंजन बना कर विष्णु को भोग लगाया जाता है।

व्यंजनहारिका—सं. स्त्री. [सं.] एक अमंगलकारी शक्ति जो नव वधुओं के द्वारा बनाये गये भोजन उठा ले जाती है। (पुराण)

व्यंजना—सं. स्त्री. [सं.] १ प्रकट करने की क्रिया या भाव।
२ शब्द शक्ति के तीन भेदों में से वह शब्द शक्ति जो मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त मूल में छिपे हुए अकथित अर्थ को द्योतित करती है अर्थात् अभिधा व लक्षणा शक्तियों द्वारा अपने-अपने अर्थ को प्रकट करने के बाद व्यंग्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति।
रू. भे.—ब्यंजना।

व्यंतर—सं. पु.—१ भूत-प्रेत योनि विशेष या उक्त योनि के भूत।

२ एक देवयोनि विशेष या उक्त योनि के देव।

उ०—१ भवनपति व्यंतर नैं जोतसी, भेद विमाणिक पावै। सुर वर सं मिलनै समता, नांम निनांणू थावै। —जयवांणी

उ०—२ भुवनपति बीस इंद्र मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार। जोइ सहु दस वेमाणिय जुड्या जी, चौसठ इंद्र सुविचार। —वृस्त.

उ०—३ बावन वीर किये अपनै बस, चौसट्टि योगिनी पाय लगाइ। डाइण साइणि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—वितर, वेतर, वंतर,।

अल्पा.—वितरियौ, व्यंतरियौ।

व्यंतरियौ—देखो 'व्यंतर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—असुरादिक दस होय वांण व्यंतरिया अट्ठ, जोइस पंच वेमाणिय दुविहा सुत्तें दिट्ठ। पनरै भेदें सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार; तनुमांनादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार। —वृस्त.

व्यंद–सं. [सं. बिंदु] १ वीर्य, बीज।

उ०—भूमि परेखौ हो नरां, कहा परेखौ व्यंद। मुंग बिन भला न नीपजै, कण त्रण तुरी, नरिंद। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—रीझवै हसे रिखेस, देखवै रजै दिनेस। अभि लोह धार इंद, वारंगां वरंत व्यंद। —सू. प्र.

व्यंदु—देखो 'बिंदु' (रू. भे.)

व्यंध्य—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—अथ मदावर लोह नी सांकल त्रोडि, आलानस्तंभ मोडि, हस्तिसाल भांजि, पउंतार गाजइ, कमाड फाडइं, मठ मंदिर पाडिइ हस्ति नी यूथ स्मरइ, व्यंध्य मनमाहि धरइ, वन माहि संचरइ। —व. स.

व्यंब—देखो 'बिंब' (रू. भे.)

उ०—बिंबै नासिका अग्र मोती बिराजै, मनू राजकं द्वार सुक्र समाजै। बणै होठ नीकै सुरंग विसाळं, लसै विद्रमो कोमळं व्यंब लालं। —बगसीरांम प्रोहित री वात

व्यंस–सं. पु. [सं. व्यंश] १ सिंहिका एवं विप्रचिति के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

२ इन्द्र-शत्रु, एक दानव।

व्यउ—देखो 'बिवाई' (रू. भे.) (अमरत)

व्यक्त–वि. [सं.] १ प्रकट किया हुआ, जाहिर किया हुआ, प्रकटित।

उ०—मिथ्यादृस्टि तणौ उत्थापक, व्यक्त गुणं सुविलासी। वलि विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति अभ्यासी। —वि. कु.

२ साफ, स्पष्ट।

उ०—''''''''इसिउ श्रीगौतमस्वांमि दिखि तपनउ निधांन, क्रियानउ भंडार, गुणनउ परमावधि, करुणा नउ निधि, वात्सल्य नउ समुद्र, नसःजाल व्यक्त दीसइ, अस्थिबंध हीला ढलहलता जिसा नामटि अजांणि सूत्रधारि काष्ट मेलिउ सालसंचउ ठगठगतउ मेलीउ हुइ जिसिउ। —व. स.

रू. भे.—व्यगत।

व्यक्ति, व्यक्ती–सं. स्त्री. [सं. व्यक्ति] १ व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होने या करने की क्रिया या भाव।

सं. पु.—२ मनुष्य, आदमी।

उ०—गुनाली गाऊ मैं पुनि न पिछताऊं पथ पकं, कुपथ्यादी बाहूं धरम पथ थाहूं गथ ग्रहूं। प्रतिग्या लेता हूं पुरख ब्रह्म वेत्ता सुत पगूं; भगा सती वक्ती पिसुनदळ व्यक्ती हुत भगूं। —ऊ. का.

३ पिंड, शरीर।

रू. भे.—व्यगति, व्यगती।

व्यग्र–वि. [सं.] १ व्याकुल, उद्विग्न, परेशान, दुःखी।

उ०—गोबर के गननाथन की गुन; गाय करी सु वृथा गुनगारयौ। गायन व्यग्र प्रलाप गह्यौ जनु, ऊठ कै अग्र प्रलाप उचारयौ। —ऊ. का.

२ भयभीत, डरा हुआ, घबराया हुआ।

३ किसी कार्य में लीन, आसक्त, मग्न।

व्यग्रता–सं. स्त्री. [सं. व्यग्र+ता प्र.] व्यग्र होने की अवस्था या भाव।

व्यजण, व्यजणक, व्यजन–सं. पु. [सं. व्यजन] १ पंखा। (डिं. को.)

२ पंखे आदि से हवा खाने की क्रिया।

व्यतिकर, व्यतिकार–सं. पु. [सं.] १ समिश्रण, मिलावट।

२ सम्बन्ध, संसर्ग, लगाव।

३ आघात, चोट।

४ घटना।

५ अवसर, मौका।

६ पारस्परिक सम्बन्ध।

७ आपसी लेन-देन, अदल-बदल।

व्यतिक्रम, व्यतिक्रमण–सं. पु. [सं. व्यतिक्रम] १ क्रम में होने वाला उलट-फेर, क्रम का विपर्यय।

२ व्रत भंग की इच्छा, अतिक्रम। (जैन)

३ व्रत भंग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करने की क्रिया। (जैन)

उ०—अतिक्रम इच्छा जांणियै, व्यतिक्रम वस्तु-प्रसंग। अतिचार देस भंग है, अनाचार सब भंग। —जयवांणी

४ आपत्ति, संकट, तकलीफ।

५ पापकर्म, असत्यकर्म।

६ जुर्म, अपराध।

७ उल्लंघन, अवहेलना।

८ लापरवाही।

९ विपरीत होने की अवस्था; वैपरीत्य।

रू. भे.—बितिक्रम।

व्यतिक्रमी–वि.—व्यतिक्रम करने वाला।

रू. भे.—बितिक्रमी।

व्यतिक्रमणौ, व्यतिक्रमबौ–क्रि० स०—व्यतिक्रमण करना।

उ०—सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थो जिवारो जी। ईसानेंद्र कराविउउ, ए श्रीजउ उद्धारो जी। —स. कु.

व्यतिक्रमणहार, हारौ (हारी), व्यतिक्रमणियौ—वि०।

व्यतिक्रमियोड़ौ, व्यतिक्रमियोड़ौ व्यतिक्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यतिक्रमीजणौ, व्यतिक्रमीजबौ—कर्म वा०।

व्यतिक्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—व्यतिक्रमण किया हुआ।

(स्त्री. व्यतिक्रमियोड़ी)

व्यतिपात–सं. पु. [सं. व्यतीपात] १ सम्पूर्ण रीति से प्रस्थान या सम्पूर्णतः विच्छेद।

२ बड़ा भारी प्राकृतिक उत्पात या उपद्रव।

३ असम्मान, अपमान।

४ विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से सत्रहवां योग, जिसमें शुभ कार्य एवं यात्रादि निषिद्ध है। ५ भारी संकट-सूचक अपशकुन।

६ अमावस्या के दिन रविवार, स्रवण धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, या मृगशिरा नक्षत्र होने पर होने वाला एक प्रकार का योग विशेष, जिस दिन गंगा-स्नान का बड़ा फल होता है।

रू. भे.—बितिपात, बितीपात व्यतीपात।

व्यतिरेक–सं. पु.—१ अंतर, भेद, फर्क।

उ०—बाबल रै पुर हूंत बहू, बर-पुर में व्यतिरेक। बिबधा भी पीहर बहब, है न सासरै हेक। —रेवतसिंह भाटी

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें उपमेय में उत्कर्ष या उपमान में अपकर्ष दिखाकर उपमेय की विशेषता का वर्णन हो।

व्यतीत–वि. [सं.] १ मरा हुआ, मृत।

२ त्यागा हुआ, परित्यक्त।

३ तिरस्कृत, उपेक्षित।

४ गुजरा हुआ, गया हुआ, समाप्त।

उ०—१ भादरवै ले घूड़, मोछवां गोगा मांडां। पेबी पीळ साज, चढावा खीर'र खांडां। पाऊस हुआ व्यतीत; टिकै ना टोब ठिकाणै। दंत-मत भाग दौड़, हेड़ रमवा हल मांणै। —ऊदेव

उ०—२ थोड़ी मांणस जै घर्कं चढियो सो ही गुड़ मेळो हुवो। इसी इसी बातां कही सो रावजी सुण कर बहुत नाराज हुआ। रात तो फिकर करतां भांज-घड करतां करतां व्यतीत कीवी। परभात पोह पीळी री नकारो हुवो। —डाढाळा सूर री बात

उ०—३ बोलइ तं आगलि वांनर कूदतो रे, आवो मन ना मांनीता मीत रे। आगति स्वागति करिस्युं थांहरी रे, रजनी माहरै प्यारि करौ व्यतीत रे। —वि. कु.

उ०—४ यूं करतां बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आया रोजीना अवाज करै छै। जै सांई री पलक में खलक बसै छै। सो अेक दिन कंधार रो बादसाह थो सो इण फकीर री बात सुण मन में बिचारी अर भिस्ती नूं कही-जै थारै बादसाह मूं जाय अरज कर-हमको बरस बारह व्यतीत हुवे, अब क्या हुकम है? इण भांति भिस्ती नूं कई बार कही पण भिस्ती कहै-मोसर नहीं। और अरज करणी आप चाहै नहीं। —सांई री पलक में खलक

रू. भे.—बितीत, बीतीत, ब्यतीत, बतीत, बदीत, बदीतउ, बदीतै, बदीतौ, बितीत, बितीति।

व्यतीतणौ, व्यतीतबौ–क्रि. अ.—१ मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।

२ त्यागना, छोड़ना।

३ तिरस्कृत होना, उपेक्षित होना।

४ गुजरना, समाप्त होना।

क्रि० स०—५ मारना, संहार करना।

६ त्याग करने को प्रवृत्त करना, छुड़ाना।

७ गुजारना, समाप्त करना।

८ तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।

व्यतीतणहार, हारौ (हारी), व्यतीतणियौ—वि०।

व्यतीतियोड़ौ, व्यतीतियोड़ौ व्यतीत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यतीतीजणौ, व्यतीतीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

ब्यतीतणौ, ब्यतीतबौ, बतीतणौ, बतीतबौ—रू. भे.।

व्यतीतियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त हुवा हुआ। २ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ३ तिरस्कृत हुवा हुआ, उपेक्षित हुवा हुआ। ४ गुजरा हुआ, समाप्त हुवा हुआ। ५ मारा हुआ, संहार किया हुआ। ६ त्याग करने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ। ७ गुजारा हुआ, समाप्त किया हुआ। ८ तिरस्कार किया हुआ, उपेक्षा किया हुआ।

(स्त्री. व्यतीतियोड़ी)

व्यतीपात–देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

उ०—व्यतीपात वैध्रति बली, सूरिजनी संक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

व्यतीपातव्रत-सं. पु. [सं.] किसी शुभदिन के व्यतीपात को स्वर्ण निर्मित सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति की पूजन क्रिया।

वि० वि०—ज्योतिष शास्त्रानुसार व्यतीपात के प्रारंभ व समाप्ति सूर्य व चन्द्रमा के गणित से होती है। सूर्य के क्रोधावश पृथ्वी पर गिरे आंसुओं से व्यतीपात की उत्पत्ति हुई। शुभ कार्यों में इसका त्याग व लोकोपकार कार्यों में इसका ग्रहण होता है।

व्यतीपाति, व्यतीपाती-वि.—१ उपद्रव करने वाला।

२ प्रस्थान किया हुआ।

३ अपमान किया हुआ, असम्मान किया हुआ।

रू. भे.—वितीपाती।

व्यथा-सं. स्त्री. [सं.] १ रोग, बीमारी। (ह. नां. मा.)

२ भय, डर।

३ चिन्ता, दुख।

४ कष्ट, दुःख।

उ०—१ आखरी लाख मांनें न श्रो, खाक करी मम खाल री। कुण सुणै साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल री। —ऊ. का.

उ०—२ कहतो संकू मन व्यथा, बिन कहियां तन ताप। मो जोबन मेंमत हुवो, बिरहण करै विलाप। —अज्ञात

उ०—३ नहिं सही जाय जद हूं निडर, कही जाय मोटी कथा। बय बसत अमोलक हूं वृथा, विमळ हियैं खोटी व्यथा।
—ऊ. का.

५ विकलता, व्याकुलता, परेशानी।

६ पीड़ा, वेदना, दर्द।

उ०—१ दादू सिर करवत बहै, अंग परस नहिं होइ। मांहि कलेजा काटियें, यहु व्यथा न जांणै कोइ। —दादूबांणी

उ०—२ सखी सुहागिनि सब कहैं, पिव सौं परस न होइ। निस बासर दुख पाइयें, यहु व्यथा न जांणै कोइ। —दादूबांणी

रू. भे.—बिथा, ब्यथा, विथ, विथा।

व्यथित-वि० [सं.] १ विकल, व्याकुल, परेशान।

२ डरा हुआ, भयभीत।

३ दुःखी, पीड़ित, कष्टमय।

४ रोगी, बिमार।

रू. भे.—बिथित, ब्यथित, विथित।

व्यथाधर, व्यथाधारी—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.) (नां. मा.)

व्यभचार, व्यभिचार, व्यभीचार-सं. पु. [सं. व्यभिचारः, व्यभीचार]

१ दूषित आचरण, बदचलनी।

२ रति क्रीड़ा, संभोग, भोग।

उ०—मि बरियु वीरसेन सुत आदि, हंस तणै बचनै उल्हादि। देव तह्यौ पित नि ठारि, पुत्री साथि सु व्यभचार। —नळाख्यांन

३ सती न होने की स्थिति या भाव, असतीत्व।

४ स्त्री का पर-पुरुष से व पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध।

उ०—दादू मरणा खूब है, निपट पूरा व्यभिचार। दादू पति को छोड़ कर, आंन भजै भरतार। —दादूबाणी

५ कामपिपासा को अनुचित रूप से शान्त करने की क्रिया या भाव।

६ अनियमितता, अपवाद।

७ अपराध, दोष। ८ असत्य, झूठ।

रू. भे.—बिभचार, बीभचार, विभचार, वीभचार।

व्यभिचारी-वि० [सं. व्यभिचारिन्] (स्त्री. व्यभिचारण, व्यभिचारणी, व्यभिचारिण, व्यभिचारिणी) १ व्यभिचार करने वाला, पतित।

उ०—जन्म लगैं व्यभिचारणी, नख सिख भरी कळंक। पलक एक सन्मुख जळी, दादू धोयें अंक। —दादूबांणी

२ पथभ्रष्ट, कुपथ-गामी।

३ दोषी अपराधी।

४ परस्त्री-गामी।

उ०—छत्री धरम छोडियो छेलां, चौड़ै हुय व्यभिचारी रे। पर-ण्योड़ी रै पास न पोढ़ै, पातर लागै प्यारी रे। —ऊ. का.

५ रतिक्रीड़ा करने वाला संभोग करने वाला, भोगी।

६ असत्य, झूठा।

स. पु.—१ वह स्त्री या पुरुष जो पर-पुरुष या पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखता हो।

२ बदचलन, दूषित आचरण।

रू. भे.—बिभचारी, भिभचारी, विभचारी।

व्यभ्यास-सं. पु. [स. वि=विशेष+अभ्यास] विशेष अभ्यास।

उ०—प्रमांन सास्त्र मात्र को स्वपंडतं स्वयम् पढ़ै, गुनीन अग्ग मन्य हूं व्यभ्यास ग्रन्य में बढ़ै। प्रकाड पाठ पाठ के त्रिकरमकाड को करै, तनैं त्रई उपासनां ब्रह्मांड ग्यांन ले तरै। —ऊ. का.

व्यय-सं. पु. [स. व्ययः] १ उपभोग के कारण वस्तु में आने वाला ह्रास, घटोती।

२ निर्माण में होने वाला खर्च, लागत।

३ नाश, बरबादी।

४ मद विशेष का खर्च।

५ लग्न से ग्यारहवां स्थान। (फलित ज्योतिष)

६ बृहस्पति की गति या भार के बिचार से एक वर्ष या संवत्सर।

७ एक नाग का नामान्तर।

व्ययकरण, व्ययकरणि, व्ययकरणिक, व्ययकरिण, व्ययकरिणि, व्यय-करिणिक-सं. पु. [सं. व्यय-करणिक] व्यय या भुगतान अधिकारी।

उ०—१ राजा युवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघु सामंत तलवर तंत्रपाल चतुरपौतिक लाडकचनि मंत्रि महामंत्रि ग्रहवाहक स्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धरमाधिक सोवरणक देवक मंडलक गडुरक उरटक हस्तिकाक घोडकाक यमक पुरोहित दंडनायिक······। —व. स.

उ०—२······स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक धरमाधिकरिणिक सोवरणकरिणिक देवकरिणिक मंडलकरिणिक उरट-करिणिक हस्तिकारिणिक यमककरिणिक पुरोहितकरिणिक दंडनायिक सेनापति पउत्तार आरोहक प्रतीकारप्रारिक भांडागारिक मांणिक्यभांडागारिक······। —व. स.

रू. भे.—वयगरणो, वयगरणीक, वयगरणु, वयगरणौ।

व्यरथ-वि. [सं. व्यर्थ] १ फजूल, फालतू, योंही।

२ अर्थ रहित, मतलब रहित, निरर्थक।

३ लाभविहीन।

रू. भे.—विरथ, विरथ।

व्यरथता-सं. स्त्री. [सं. व्यर्थता] व्यर्थ होने की स्थिति या भाव।

व्यलागणौ, व्यलागबौ—देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

उ०—सत्र रामत व्यळागो सारै, तळ छळि धण लाल मत ग। पांव प्यळोम घसि लगि बसियो, नागणि नै डरि कहै हस.नाग। —चतुरा रांमावत राठोड़ रो गीत

व्यलागणहार, हारौ (हारी), व्यलागणियौ—वि०।

व्यलागियोड़ौ, व्यलागियोड़ौ, व्यलाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यलागीजणौ, व्यलागीजबौ—भाव वा०।

व्यलागियोड़ौ—देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्यलागियोड़ी)

व्यळीक, व्यलीक-वि. [सं. व्यलीक] १ झूठा, असत्य।

२ अप्रिय, अप्रीतिकर।

सं. पु. [सं. व्यलीक] १ कारण, जिससे दुःख हो।

२ जुर्म, अपराध, दोष।

३ कपट, धोखा।

४ असत्यता, झूठाई।

[सं व्यलीकः] ५ लंपट या कामी पुरुष।

६ वह पुरुष जो गुदा मैथुन कराने का आदि हो।

व्यवधांन-सं. पु. [सं. व्यवधान] १ बीच में आड़ी आकर आड़ करने वाली वस्तु।

२ रोक, रुकावट।

३ भेद, रहस्य।

४ छिपाव, दुराव।

व्यवसाइ, व्यवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू. भे.)

व्यवसाइयौ, व्यवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सुभट नै आयुधि, सेवक नी स्वांमिभक्ति, कलावंत नी कला, व्यवसाईया नी व्यवसायि, प्रथ्वीपति नी न्यायि, भाग्यवंत नइ भाग्योदयि, एतला प्रदेस माहरी वासभूमि······। —व. स.

उ०—२ भोई सोई भरथिया, सोनी नइं सूतार। व्यवसाईया मह जातिना, जे जोईइ तिणी वारि। —मा. कां. प्र.

व्यवसाय-सं. पु. [सं. व्यवसाय] १ जीविका, पेशा।

२ उद्योग, प्रयत्न, कोशिश।

३ कार्य, धन्धा।

४ व्यापार।

५ अभिप्राय, मतलब।

६ कार्य का सम्पादन। ७ विष्णु का नामान्तर। ८ शिव का नाम।

रू. भे.—बिवसाइ, बिवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाय, व्योसाय, बिव-साइ, बिवसाई, बिवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाई।

व्यवसायि, व्यवसायी-सं. पु. [सं. व्यवसायिन्] १ व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

२ वह व्यक्ति जो पेशेवर हो।

३ उद्यम या प्रयत्नशील व्यक्ति।

४ व्यापार करने वाला, व्यापारी।

५ किसी कार्य का अनुष्ठानकर्त्ता व्यक्ति।

६ व्यवसाय करने की क्रिया।

रू. भे. बिवसाइ, बिवसाई, बिवसाइ, बिवसाई, बिवसायी, व्यव-साइ, व्यवसाई।

अल्पा.,—बिवसाइयौ, बिवसाईयौ, बिवसायौ, व्यवसाइयौ, व्यव-साईयौ।

व्यवस्था-सं. स्त्री [सं] १ किसी निर्धारित कार्य की शास्त्रोक्त विधि।

२ चीजों वस्तुओं को सजाकर अलग-अलग रखने की क्रिया।

३ स्थिति, हालत, दशा।

४ किसी कार्य के लिए पूर्वनिर्धारित योजना।

५ कार्यकलाप, प्रबन्ध, इन्तजाम।

रू. भे.—बिवस्था, व्यवस्था, बिवस्था।

व्यवस्थापक-सं. पु. [सं.] व्यवस्था करने वाला, प्रबन्धक।

व्यवस्थापण, व्यवस्थापन-सं. पु. [सं. व्यवस्थापन] व्यवस्था या प्रबन्ध करने की क्रिया या भाव।

व्यवस्थापित–वि० [स.] १ व्यवस्थित, नियमानुसार।

२ निर्धारित, निश्चित।

३ सुसज्जित। (वस्तुएं)

व्यवस्थित–वि. [स.] १ जिसकी व्यवस्था की गई हो।

२ क्रम से चलने वाला।

३ सजाया हुआ, सुसज्जित।

४ निर्धारित किया हुआ, निश्चत।

व्यवहृरिक—देखो 'व्यवहारीक' (रू. भे)

उ०—·········बंधवत ते जे स्नेहवंत, व्यवहृरिक ते जे नयावंत, घरणि ते जे सीलवति, छइल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवंति, वस्त्र ते जे पवालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवत, साधु ते जे क्षान्तिवंत, करह ते जे बिगवंत, तुरंग ते जे वेगवत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मंत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीरयवंत, राय ते जे प्रसस्य जातिवंत। —व. स.

व्यवहार–सं. पु. [सं.] १ आचरण, चाल-चलन। (डि. को.)

२ पेशा, धन्धा।

३ ब्याज-बट्टे या लेन-देन का धन्धा।

४ व्यापार, व्यवसाय।

५ रीति, रस्म, रिवाज।

६ सम्बन्ध, रिश्ता।

७ मुकदमा या मुकदमा की जांच-पड़ताल करने वाला।

८ अधिकार, हक।

उ०—कहिवी उवरस्ये जिकुं, जांणां छां निरधार। पिण इण अवसर नारी नै, कहिवा नो व्यवहार। —जयवांणी

९ शास्त्रोक्त-विधि, नियम।

१० वर्ताव, आचार, सलूक।

उ०—जे किणी धरगोड़िया राजपूत रै सागे उणरी ब्याव व्हियो व्हैतो तो नी वा इत्ता दिन मंसा परवांण लापतै रै' पातो अर नी इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गांव मैं पग धर सकती। सासरिया कै खुद पीवरिया नाक कान बाढ नै चिगदियो कर न्हांकता। मूंडा मैं आवै ज्यूं जणो जणो अरळ-विरळ गाळियां काढतो। माजनो गमतो। पण बाप तो दिखावटी अंड़ो व्यवहार करयो जांणै कीं अजोगती बात नी व्ही। —फुलवाड़ी

११ भेद, अन्तर, फर्क।

उ०—सरगुण निरगुण परस कै, इनकै लखै व्यवहार। अगम निगम अनुभव लखै, कर कर हंस बिचार।

—स्रीहररांमजी महाराज

१२ छः सूत्रों में से एक सूत्र का नाम। (जैन)

उ०—व्यवहार सूत्र छ सै सुविचार, दशाश्रुत स्कंध सत अट्ठार। पंचकल्प तै पंचम छेद, सवा इग्यारसैं संख्या वेद। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—ववहार, ववार, बिवहार, बिवहार, बिवार, बुहार, बेवार, बेवार, बोवार, बोहार, व्यवहृर, व्यवहार, ब्योहार, व्योहार, ववहार, वावार, विवहार, विवहारु, विवार, विव्हार, विहिवार, वुहार, वेवार, वेवार, वंयार, वंवहार, वंवार, वंहार, वोवार, वोवार, वोवार, वोहवार, वोहार, वोहोवार, व्यवार, व्यहवार, व्योहार।

व्यवहारणो, व्यवहारबो–क्रि० स०—१ आचरण करना।

२ पेशा या धन्धा करना।

३ ब्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन करना।

४ व्यापार करना, व्यवसाय करना।

५ रीति-रिवाजों का पालन करना।

६ मुकदमे की जांच-पड़ताल करना।

७ अधिकार करना, हक जमाना।

८ शास्त्रोक्त विधियों या नियमों का पालन करना।

९ अन्तर करना, तुलना करना।

१० बर्ताव करना, सलूक करना।

व्यवहारणहार, हारो (हारी), व्यवहारणियो—वि०।

व्यवहारिओड़ो, व्यवहारियोड़ो, व्यवहारयोड़ो—भू० का० कृ०।

व्यवहारीजणो व्यवहारीजबो—कर्म वा०।

वुहरणो, वुहरबो, वोहरणो, वोहरबो—रू. भे.।

व्यववारिओ—देखो 'व्यवहारियो' (रू. भे.)

उ०—१ गढ मढ मंदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ खाइ आरांम वनखंड विभूंइआ त्रिभूंइआ आवास, चउरासी चहुटा, तिहा व्यवहारिआ नी गजघटा, स्रीमाली पोरुआड ओसवाल गूजर कहोल वाइडा हुंबड मोढ, लाडुआ स्रीमाली, अडालजा·····—।

—व. स.

उ०—२ व्यवहारिआ महरद्धिक वसइ, आप हेठा कहिनइ नवि कसइ। जेह तणी छइ प्रसन्न द्रेठि, इस्या तिहां छइ न्यायवंत सेठि।

—नळदवदंती रास

व्यवहारिक–वि.—१ व्यवहार से सम्बन्धित।

२ व्यवहार के उपयुक्त या व्यवहार करने योग्य।

३ व्यापार या व्यवसाय से सम्बन्धित, व्यापारिक।

रू. भे वंवारिक, व्यवहृरिक, व्यवहारिक, व्यावहारीक।

व्यवहारियोड़ो–भू. का कृ.—१ आचरण किया हुआ। २ पेशा या धन्धा किया हुआ। ३ ब्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन किया हुआ। ४ व्यापार किया हुआ, व्यवसाय किया हुआ। ५ रीति-रिवाजों का पालन किया हुआ। ६ मुकदमें की जांच-पड़ताल किया हुआ। ७ अधिकार किया हुआ, हक जमाया हुआ। ८

शास्त्रोक्त विधियों व नियमों का पालन किया हुआ। ९ अन्तर किया हुआ, तुलना किया हुआ। १० बर्ताव किया हुआ, सलूक किया हुआ।

(स्त्री व्यवहारियोड़ी)

व्यवहारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१·········काळां पीळां नीलां धउलां हरयां पटोळा, सूकडि न समूह, कपूर नां पूर, घणां केसर नां अलवेसरपणां, अगर नां भर, सुगंधपणपूरी इसी कस्तूरी, मनोहर मांणिक्य, मनोग्य रूडां रत्न, अनेकि बिदेसी वस्तु, इसिउ व्यवहारिया तणउं भवन।

—व. स.

उ०—२ लेतां तो राजी होय ए, पिण दूरमण जिम जोय ए। गुरे कहै ब्यारां मांय ए, कुण व्यवहारियो कहवाय ए।

—जयवांणी

उ०—३ जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण बंधाव्या, बंदरवाळि ठांम-ठांम सोहाव्या, व्यवहारिया सांम्हा हणि परि वांदिवा आव्या कुणही जी तस्या वहिल ई कल्होड़ा, कुण ही पल्लांण्या आसण होडा, केई करहि चडी वह दह दिसि झोडा, केइ मुखि मांगइ तंबोल-लवंग डोडा। —रा. सा. सं.

व्यवहारी, व्यवहारीउ—वि. [सं. व्यवहारिन्] उत्तम आचरण वाला।

व्यवहारीयौ, व्यवहारू—सं. पु.—१ व्यापार करने वाला, व्यवहारी।

उ०—किहां सुखासण किहां डोली ? किहां व्यवहारू नइ कोली रे ? किहां दीपोच्छव किहां होली ? किहां जव रोटी गहूं पोली रे ? —नळदवदंती रास

२ व्यवसाय करने वाला, व्यवसायी।

३ वैश्य, बनिया।

उ०—बंभण भाट भला बसइ, व्यवहारिया विसेस। राजकुळी रूडी तिहां, छयल छत्रीसै रेस। —मा. कां. प्र.

४ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

५ ब्याज-बट्टे पर रुपये का लेन-देन का कार्य करने वाला, साहूकार।

रू. भे.—ववहारी, बवारी, बहवारी, ब्यवहारी, बवहारी, विवहारी बिहारी, बेहारी, वंहारी, बोवारी, वोहारी, वौवारी, वोहवारी, वौहारी, ब्यवारी, ब्यहवारी, ब्यारी, ब्यारीउ।

अल्पा.,—ववहारियौ, बवारियौ, बहवारियौ, ब्यवहारियौ, विवहारिउ, विवहारियौ, बिवहारियौ, बिवहारीउ, विवहारीयौ, बिवहारीयौ, विहारियौ, वंवारियौ, वेहवारियौ, ब्यवारियौ, बोहरियौ, बोवारियौ, वोहवारियौ, व्यवहारिग्रौ, व्यववारियौ, ब्यवारियौ, ब्यहवारियौ।

व्यवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

व्यवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

व्यवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

व्यसन—सं. पु. [सं.] १ अशुभ बात, अमांगलिक बात।

२ निरर्थक कार्य या प्रयत्न।

३ किसी कार्य या बात के लिए मन की एक प्रवृत्ति या रुचि, जिससे मनुष्य उसी कार्य में संलग्न रहता है।

४ दूषित मनोविकारों के कारण भोगविलास या अन्य बुरे कार्यों के लिए होने वाली आसक्ति, जिसके बिना रहना कठिन हो, बुरी आदत।

उ०—१ तीन लोक को मोल आय तन सुकवि जगावे, हीरो लागो हाथ पुनरभव फेर न पावै। ठाला भूला ठोठ कुबुध नहि छोडै काल्हा, पुण्य गया परवार व्यसन जद लागा बाल्हा। —ऊ. का.

उ०—२ हेमजी स्वांमी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वांमीजी नें कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रौ व्यसन है। जब स्वांमीजी बोल्या—काचरियां रौ अटक्यौ किसौ विवाह रहै। —भि. द्र.

५ असमर्थता, असामर्थ्य।

६ कष्ट, दुःख।

७ विपत्ति, संकट।

रू. भे.—बिरसन, बिसंन, बिसंस, बिसन, बिसस, ब्यसन, बिसन, बिसन्न, बिसिन, बिस्न, बीसण, वीसन, व्यस्न।

व्यसनी—सं. पु. [सं. व्यसनिन्] वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का व्यसन हो।

रू. भे.—बिसनी, ब्यसनी, भिसणि, भिसणी, भसिणी, बिसनी, बिसनीउ, बिसिनि, बिसिनी, बिस्नी, व्यस्नी।

व्यस्टि, व्यस्टी—पु. [सं. व्यष्टि] १ समूह या समाज से अलग किया हुआ।

उ०—निकाई छाई तें प्रकट प्रभुताई सिल नखा, समस्टी व्यस्टी तें सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा। धरें तूं धारें तूं परज प्रत पारें धन धनी, सम्रो को संहारें प्रळय लय धारें करसनी। —ऊ. का.

२ सनारू नामक आचार्य का शिष्य व विप्रचित्ति का आचार्य।

व्यस्त—वि. [सं.] १ आकुल, व्याकुल, घबराया हुआ।

२ काम में लगा हुआ, कार्य में फंसा हुआ।

३ इधर-उधर, आगे पीछे, ऊपर नीचे हुआ हुआ।

४ फैला हुआ, व्याप्त।

व्यस्तार—सं. पु. [सं.] १ हाथी की कनपट्टियों से मद के चूने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

ब्यस्न—देखो 'ब्यसन' (रू. भे.)
ब्यस्नो—देखो 'ब्यसनो' (रू. भे.)
ब्यस्व-सं. पु. [सं. व्यश्व] १ यम का उपासक एक राजा ।
२ ऋग्वेद के कुछ मंत्रों के द्रष्टा एवं अश्विनों के कृपापात्रों में से एक प्राचीन ऋषि ।
ब्यहवार—देखो 'ब्यवहार' (रू. भे.)
ब्यहवारियौ—देखो 'ब्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)
ब्यहवारी—देखो 'ब्यवहारी' (रू. भे.)
ब्यहू, ब्यहू—देखो 'वेऊ' (रू. भे.) (उ. र.)
ब्या-सर्व.—वह का बहुवचन, उन ।
क्रि. वि.—१ ऐसे, इस तरह ।
२ वैसे, उस तरह ।
ब्याण-सं. स्त्री.—१ समधी की स्त्री ।
२ वह स्त्री जो किसी जागीरदार की लड़की के दहेज में दी जाती हैं और उसे भी वरपक्ष के किसी दास को उसी दिन विवाह दी जाती है ।
रू. भे.—विबायण, बिबाहण, बिबाहिणि, बिबाहिणी, बेवाण, ब्याण, ब्याहणी, बियांण, ब्यायण, ब्यावण ।
ब्याणु, ब्याणू-सं. पु. [सं. वि+अणु] अणु से बड़ा, विशेष अणु ।
उ०—अणू तैं ब्याणू तैं महदळ विभूतै अति विभू, तुजं ना जानै को सुहृद स्वसु जानै भल प्रभू । कहूँ क्या ध्यावै धी कहन नहि आवै कुळकुळं, मदाधो मायावी तुम रु हम भावी सम तुलं ।
—ऊ. का.
ब्यान-स. पु. [सं. व्यान] शरीर में रहने वाली दश प्रकार के वायु में से एक प्रकार का वायु जो शरीर में संचार करता है तथा इसके द्वारा शरीर में रस पहुँचना, शरीर से पसीना निकलना, खून का चलना व अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती है ।
रू भे.—ब्यांन, वियांन ।
ब्यानदा-सं. स्त्री. [सं. व्यानदा] शरीर में 'व्यान' वायु प्रदान करने वाली शक्ति ।
ब्याम-सं. पु. [स व्याम] दोनों भुजाओं को दोनों ओर फैलाने के बाद एक हाथ की अंगुलियों के सिरे से दूसरे हाथ की अंगुलियों के सिरे तक की लम्बाई का नाप ।
ब्यामोह—देखो 'ब्यामोह' (रू. भे.)
ब्याव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)
उ०—१ जलमी रा रे आया सार ज करतो छिन-छिन धीय रो, दूसरा वीर म्हारै राव गढा रे करतो ब्यांव ।
—ओगणमाता रो गीत

उ०—२ पेठा तिहां पाखती पांणी, नेमजी मांहि उछाल्यो पांणी । मांन्यो मांन्यो जांणी जांणी, ब्यांव मनाय लियो माडांणी जी ।
—जयवांणी

उ०—३ कठै है कुरीती ? पिता-पुरखी रीत पर चालणी कांई कुरीती है ? अबार रूपचद रै घरे बेटी रौ ब्यांव ही जणी गुळ री लंगटी राखियो तो कोयनी ? माईतां री रीत मरजाद अर आप रै सरूप नै देखणी पड़ै है । —वरसगांठ
उ०—४ साची है पछै मिनख कनाबै क्यों है ? ब्याव-सगाई, ओसर-मोसर, रीत-रुखाना म्रं ईज तो नामा-कामा करण नै । म्हारी आपरी बैन कैवै है कै म्हारै तो म्रं ईज छेकड़ला ब्यांव है
—वरसगांठ
ब्याही ब्याई-सं. पु. (स्त्री. ब्यांण, व्यायण) सगा, समधी ।
उ०—थै थयूं डरपो रे भाई पोळिया म्हे छां म्हारी बैनड़ रा लेवाळ । वीरो तो आयो सेयां पावणां, ब्याई जी नै लटक जुहार । मेलो तो मेलो ब्याईजी बैन नै, आयो बाई रै पैले सावण री तीज । म्हानै तो ठीक नहीं भोळा ब्याईजी, पूछो थारी ब्यायणजी नै बात । —लो. गी.
रू. भे.—विबाई, बिबाही, बिवाई, बिवाही, बेबाई, बेबाही, बेवाई, बेवाही, ब्याई, ब्यांयो, ब्याहो; वियाई, वेवाई, वेवाही, व्याही ।
ब्याऊ—१ देखो 'बिवाई' (उ. र.)
२ देखो 'ब्याव्रू' (रू. भे.)
ब्याकरण-स. पु [सं.] १ एक प्रकार क शास्त्र विशेष, जो वेदों के छः अंगों में से एक माना जाता है । (डिं को.)
उ०—१ स्वांमीजी कनै एक ब्राह्मण आयनै पूछ्यो सांघां ब्याकरण भण्या हो । स्वांमीजी बोल्या—म्हे तो व्याकरण कोइ भण्यां नहीं । जद ब्राह्मण बोल्यो—व्याकरण भण्या बिना सास्त्र ना अरथ हुवै नहीं । —भि. द्र.
उ०—२ सब्द ही खट सास्त्र कहियै, सब्द ही नव ब्याकरण । सब्द ही संस्कृत पण कहियै, सब्द ही पढ उच्चारण ।
—स्रीहरिरांमजी महाराज
उ०—३ कोई कहसी रुखमणीजी स्रीकरणजी सौं अनुराग हुयउ सु विण देख्या क्यों करि हुम्रो । तिको जबाब देई छै । रुखमणीजी ब्याकरण पढचा पुराण पढ्या । ईतनां सबही मांभ ऐक हीको अधिकार पायो । —वेलि टी.
वि० वि०—उक्त शास्त्र में, बोलचाल एवं साहित्यिक भाषा के स्वरूप, गठन, अवयवों, प्रकारों, पारस्परिक सम्बन्धों, रचनाविधान व रूप परिवर्तन पर विचार होता है ।
२ भाषा सम्बन्धी नियमों के संकलन की पुस्तक ।
३ व्याख्या, विवेचन ।

४ निर्माण, रचना ।

५ ७२ कलाओं में से एक कला ।

६ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक कला । (व. स.)

७ आठ की संख्या । * (डिं. को.)

रू. भे.—बियाकरण, ब्याकरण, बियाकरण ।

ब्याकरणी-सं. पु. [स. वैयाकरण] व्याकरण का ज्ञाता पंडित ।

ब्याकळ—देखो 'व्याकुळ' (रू. भे.)

ब्याकुळ, ब्याकुल-वि. [सं. व्याकुल] १ घबराया हुआ, बेचैन, दुःखी ।

उ०—१ वरमाळा लै कंठि वणावै, पलक खुली तदि त्रिया न पावै । उण दुख हूंत जीव ब्याकुळ अति, पड़ै न जक सोचै नित भूपति । —सू. प्र.

उ०—२ मनुष्य जु गरमी करि ब्याकुळ हुवै छै। अर रू'खां की छाह वांछे छै । सु मैं वात री न्याउ छै। इसी गरमी हुई छै। जु सूरय पणि हेमाचळ की सरणौ पकड़ै छै। अर सूरज ही अलि आया छै । —वेलि टी.

२ उदास, खिन्नचित्त ।

उ०—आप बिना गोपिन सब ब्रज की, ब्याकुळ भई निराट । मीरां के प्रभु दरसण दीज्यौ, करज्यौ आनंद ठाट । —मीरां

३ भयभीत, डरा हुआ, विह्वल ।

उ०—ब्याकुळ तातें भई तनु देही, सिर पर जम का घेरा । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा । —मीरां

४ क्षोभयुक्त ।

उ०—पांच पचीसौं बस किये, मेरा पला न पकड़ै कोय । मीरां ब्याकुळ विरहणी रे, कोई आंन मिळावै मोय । —मीरां

५ उदास, चचलता रहित ।

उ०—आवै सवेग आकळा, वदन्न नैण ब्याकुळा । पवंग छाड पाधरा, असस्स रोम ऊधरा । —मा. वचनिका

६ उत्कंठित, उत्सुक ।

सं. पु.—समुद्र, सागर । (ना. डिं. को.)

रू. भे.—व्याकुळ, ब्याकुळी, वकळ ।

ब्याकुळणौ, ब्याकुळबौ-क्रि. अ.—१ घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना ।

उ०—हळा-बोळ चौरंग दळां बीच मूंजै हरण, गजां कुळ्ळ्या कुळत हुम्रं घर गाह । ब्याकुळत भमण रव बळत वूठौ रवण, "सूर" रौ चढै तिणवार 'गजसाह' । —कल्याणदास महडू

२ उदास होना, खिन्नचित्त होना ।

३ भयभीत होना, डरना, ।

उ०—ब्रहमंड किनां फुट्टौ बळै, धमक तळातळ आतळै । मुखै हसै सकति महाबळ, बेताळा कुळ ब्याकुळै । —मा. वचनिका

४ उतावला होना, आतुर होना ।

५ कम्पकम्पाना, घूजना ।

ब्याकुळणहार, हारौ (हारी), ब्याकुळणियौ—वि० ।

ब्याकुळियोड़ो, ब्याकुळियोड़ौ, ब्याकुळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

ब्याकुळीजणौ, ब्याकुळीजबौ—भाव वा० ।

ब्याकुळता, ब्याकुलता-सं. स्त्री. [सं. व्याकुलता] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव ।

२ खिन्नचित्त होने की अवस्था, उदासी ।

३ भय, डर ।

रू. भे.—बेकळी, वेकळी ।

ब्याकुळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ घबराया हुआ, व्याकुल हुवा हुआ बेचैन हुवा हुआ. २ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ ३ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, विह्वल हुवा हुआ. ४ उतावल हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ. ५ कम्पकम्पाया हुआ, घूजा हुआ (स्त्री. ब्याकुळियोड़ी)

ब्याकुळी-वि.—भयभीत, बेचैन, व्याकुल ।

उ०—सळसळी चापळी चळी सिर 'सेख' रै, बीजळी तणी वपु दे बिंबा । ब्याकुळी गिरा भारत सुणै बचाड़ै, आकुळा लिङ्ग क झाल अंबा । —बालाबक्स बारह

रू. भे.—बेकळी, वेकळी ।

ब्याकोस-वि. [सं. व्याकोष] १ बढाया हुआ, फुलाया हुआ ।

२ खिला हुआ, विकसित ।

३ वृद्धि को प्राप्त, वृद्धिमान ।

ब्याक्रति—देखो 'विकृति' (रू. भे.)

उ०—सूक्ष्म सरीर, ब्याक्रति बहोर, भ्रौनातिभ्रौन चित विदित चौन । पद परम पून्य संकल्प सून्य, निरवांण नित्य अंतर अनित्य । —ऊ. का.

ब्याखांन, ब्याख्यांन-सं. पु. [सं. व्याख्यान] १ व्याख्या करने की क्रिया

२ भाषण, वक्तृता ।

रू. भे.—व्याखांन, व्याख्यांन ।

ब्याखांनसद, ब्याख्यांनसद-वि. [सं. व्याख्यानसद] १ व्याख्या करने वाला, टीकाकार ।

२ भाषण देने वाला, वक्ता ।

रू. भे.—बखांणसद, व्याख्यांनसद वखांणसद, ।

ब्याख्यांनसाळा ब्याख्यांनसाला-सं. पु. [सं. व्याख्यानशाला] व्याख्यान देने का स्थान ।

ब्याख्या-सं. स्त्री. [सं.] समझाने के लिए किसी बात या विषय का किया जाने वाला विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण व उसकी टीका ।

ब्याघात-सं. पु. [सं.] १ आघात, प्रहार, चोट ।

२ विघ्न, बाधा, अड़चन, रुकावट।

उ०—रिखिजी कहै पुत्र दौ ए हुसी, पिण यैं मांनो एक बात रे लाला। व्रत लेसी बालापणैं, जो नवि करो व्याघात रे लाला।
—जयवांणी

३ ज्योतिष शास्त्र के सत्ताईस योगों में से तेरहवां योग।

वि. वि.—किसी शुभ कार्य करने में इस योग की नौ घटि अशुभ मानी है, जिसमें कोई शुभ कार्य करना वर्जित है।

४ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें एक ही साधन द्वारा दो विरोधी बातों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र-सं. पु. [सं.] सिंह, शेर।

२ यातुधान नामक राक्षक का पुत्र व निरानंद नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

३ भाद्रपद माह में सूर्य के साथ घूमने वाला एक यक्ष।

वि.—१ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

२ मुख्य, प्रधान।

व्याघ्रकेतु-सं. पु. [सं.] १ पांचाल राजकुमार जो कौरव पक्ष में था एवं सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

२ पांचाल योद्धा जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

व्याघ्रग्रीव-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन देश। (पुराण)

व्याघ्रचरम, व्याघ्रचरम्म व्याघ्रचांम-सं. स्त्री. [सं. व्याघ्रचर्म्म] शेर की खाल जिस पर संन्यासी बैठते हैं एवं शोभा या सजावट के लिए कमरों में लटकाई जाती है।

व्याघ्रदत्त-सं. पु. [सं.] १ पांडवपक्षीय एक राजा जो श्रेष्ठ रथियों में से एक था।

२ मगध राजकुमार जो कौरव पक्ष की ओर से लड़ते हुए सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

३ अश्वत्थामा द्वारा मारा गया एक पांडव पक्षीय राजा।

४ द्रोण के द्वारा मारा गया एक पांडवपक्षीय पांचाल का योद्धा।

व्याघ्रनख—देखो 'बाघनख' (रू. भे.)

व्याघ्रनखो—देखो 'बाघनखौ' (रू. भे.)

व्याघ्रनाखून—देखो 'बाघनख'

व्याघ्रनाइक, व्याघ्रनायक-सं. पु. [सं. व्याघ्रनायक] गीदड, शृंगाल।

व्याघ्रपद, व्याघ्रपाद-सं. पु. [सं.] वशिष्ठ ऋषि का पुत्र एवं उपमन्यु के पिता एक प्राचीन ऋषि।

व्याघ्रमुख-सं. पु. [सं.] १ एक देश का नाम।

२ एक पर्वत का नाम।

व्याघ्रहन-सं. पु. [सं.] ऊर्ध्वदंष्ट्री नामक एक राक्षस का पुत्र एवं शरभ का पिता, एक राक्षस।

व्याघ्राक्ष-सं. पु. [सं.] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

२ एक राक्षस का नाम। (पुराण)

व्याघ्री-सं. स्त्री. [सं.] वशिष्ठ की पत्नी का नाम।

व्याड़ि—देखो 'व्याडि' (रू. भे.)

व्याज-सं. पु. [सं.] १ कपट, छल, धोखा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ बाधा, विघ्न, अड़चन।

३ विलम्ब, देरी।

४ बहाना, मिस।

उ०—गंगदेव रै खुरासांण खेत रौ अति वेग बाजी सुणियौ जिसड़ौ ही तुरंग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट रौ व्याज करि बरादवा सूं ईसांन दिसा री अटवी में बूंदी सौं पांच कोस परै लग जाइ सिकार रा रमणा मैं पाच ही दिन बिताइ एक मद्दद दोड़ वाराह गाडां घलाइ चाह करि सायंकाळ रै समय बूंदी आयौ।
—वं. भा.

५ ऋण की राशि पर लिया जाने वाला अतिरिक्त धन, सूद।

उ०—१ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तौ मांग्या पड़ै। साहुकार तो व्याज सहित देवै अनै दिवाल्यौ मूल ही मैं तोटौ घालै। ज्यूं भगवंतै सूत्र भाख्या तिम प्रमांणै चालै तै साधु अनै पाचमो आरा नो नांम लेइ सूत्र प्रमांणै न चालै तै असाध।
—भि. द्र.

उ०—२ नाकौ राखण जीव कसै घणा रे, काढै करड़ै रुपये व्याज रे। औसर-मोसर ढोल बजाय दै रे, चतुर सुधारै सगला काज रे।
—जयवांणी

६ व्याज पर दी जाने वाली राशि, ऋण।

उ०—गाम चलतां सुकन गिणीजै, हणतौ विण किण ही न हणीजै। विण ग्रहणैं दीजै मत व्याज, निस्चै वरस नौ राखै नाज।
—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—बिग्राज, बियाज, ब्याज, विग्राज, वियाज, वीयाज।

व्याजउक्ति—देखो 'व्याजोक्ति' (रू. भे.)

व्याजड़ियौ-सं. पु.—व्याज पर रुपया देने वाला व्यक्ति।

व्याजनिंदा-सं. स्त्री. [सं.] १ छल, कपट या बहाने से की जाने वाली निन्दा, जो ऊपर से देखने मे स्पष्ट निन्दा जान न पड़े।

२ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार निन्दा की जाय।

व्याजबटौ-सं. पु.—वह व्यवसाय जिसमें ऋण देने व व्याज वसूल करने का कार्य किया जाता है।

व्याजस्तुति-सं. स्त्री. [सं.] १ स्तुति के शब्दों में निन्दा व निन्दा के शब्दों में स्तुति करने की एक प्रकार की क्रिया विशेष।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें इस प्रकार से निन्दा या स्तुति की जाय।

रू. भे.—बियाजस्तुति, बियाजस्तुति, ब्याजसतुति, ब्याजस्तुति, ब्याजस्तुती।

ब्याजू-सं. पु.—वह रकम जो ब्याज के उद्देश्य से लेन-देन की जाती है।

रू. भे.—बियाजू, ब्याजू, बाज्यू बियाजू, बोयाजू, ब्याजू।

ब्याजोक्ति-सं. स्त्री. [सं.] १ कपटयुक्त बात।

२ किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए किया जाने वाला बहाना।

३ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए बहाना युक्त कथन किया जाय।

रू. भे.—ब्याजोकती, ब्याजोक्ति।

ब्याज्यू—देखो 'ब्याजू' (रू. भे.)

ब्याड-सं. पु. [सं.] १ सर्प, सांप।

२ देवराज इन्द्र।

३ दुष्ट हाथी।

४ मांसभक्षी जीव।

५ गुण्डा, दुष्ट।

ब्याडि-सं. पु. [सं.] एक प्रसिद्ध व्याकरणकर्त्ता का नाम।

रू. भे.—व्याडि।

ब्याणी-वि. स्त्री.—प्रसव देने वाला मादा पशु।

ब्याणी-सं. स्त्री.—जन्म देने की क्रिया।

ब्याणो, ब्याबो—देखो 'ब्याणो, ब्याबो' (रू. भे.)

उ०—१ पीड़ति हेमंत सिसिर रितु पहिलो, दुख टाळणो बसंत हित दाखि। ब्याए बेली तणी तरुवरां, साखा बिसतरियां बैसाखि। —वेलि

उ०—२ तरै मीयां नै समाचार हुवा तरै मीयां फोज री घमसांण करनै रांमदासजी ऊपर चढ़िया। रांमदासजी नै चालडो छै. सेह दीठां खिसणो नहीं। सांड गिण एक ब्याइ सो सांड ऊभो छोडनै जांण री चालडी। तरै तोडिया नै पलाळ नै सांड ऊपरै घाल लियो नै आगो खडीया। —रा. सा. सं.

उ०—३ ज्यूं एक साहूकार जिहाज मैं बैस समुद्र पार ब्यापार करवा गयो। पाछो आवतां कपड़ै री मंजूस में एक गरभवती ऊंदरी आइ सो ब्याई। साहुकार देखिनै बोल्यो इण नै समुद्र मैं नहीं न्हांखणी। बाबता करै। —भि. द्र.

उ०—४ कोट मुलक खिडिया के खंड, ब्याइ असूरह फाटो ब्रह्मंड। बडा बडा आवै वरियांम, 'अंबर' आगै करै सलांम। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बिवाहणो, बिवाहबो' (रू. भे.)

ब्याति-सं. पु.—एक तारा जो मृग के नीचे रहता है। इसको संस्कृत में लुब्धक कहते हैं।

ब्याध-सं. पु. [सं.] १ शिकार करने वाला, शिकारी।

उ०—तळ खवै बांणां दुसटी पांणू, रटै नरांणू रखिभांणू। ग्रह ब्याध डसांणू चूकै बांणू बध सीधाणू वळ संतू। —भगतमाळ

२ प्राचीन काल की एक शिकारी जाति, किरात, बहेलिया।

३ दुष्ट, नीच आदमी।

४ देखो 'ब्याधि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ कोहै जो बिधि कहु बखांणि, गुनम रोग निरा सो बिधि जांणि। पेट सूळ जो होइ अगाध, सूत उभ नै नासै ब्याध। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ कळू मैं प्रभतो ब्याध प्रेत सूं उबारै केतां, तेरासै तेईस जीता भूलोक ताठोड़। अंबां गुणां गीतां साख येहा मैं कीरतो आबै, रेणवां रूखाळो पाबू धमजो राठोड़। —बादरदांन दधवाड़ियो

उ०—३ इहो करै हित हांण. कमो तन ब्याध जगावै। धयो राज भय धरै, ररो धन नास करावै। —र. रू.

रू. भे.—ब्याध, ब्याधि।

ब्याधि-सं. स्त्री. [सं.] १ रोग, बीमारी। (ब. स.)

उ०—१ लियां नांम मुख लाभ, ब्याधि दुख आधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, धरी बडपण ऊथापै। —र. रू.

उ०—२ ब्याधि जरा रहि बेगली, प्रलोभ लक्षण होइ जेह। देखि जं बिधि बिरतरी, सविको पालइ तेह। —मा. कां. प्र.

२ कष्ट दुख, पीड़ा। * (डिं. को.)

उ०—१ रोत आद जदुवस बरांणै, जंगां बिवन जिगन सम जांणै। 'जीवण' हरनायोत सजोधो, आसुर ब्याधि हरण किर ओसो। —रा. रू.

उ०—२ आधि ब्याधि चिंता सहु चूरइ, बइरो कर न सकइ को बुरउरी, सुंदर रूप मनोहर मूरती, हार हियइ मस्तकि सेहरउ री। —स. कु.

३ कुष्ट या कोढ़ नामक रोग।

४ झगड़ा, बखेड़ा. टंटा।

५ साहित्य में तेंतीसवां संचारी भाव।

७ मृत्यु की एक पुत्री का नाम।

रू. भे.—बियाधि, व्याध, ब्याधि, बाहो, व्याध, व्याधिय, ब्याधी, मह.,—व्रियाधो।

ब्याधित-वि. [सं.] रोगी, बीमार।

ब्याधिय, ब्याबो—देखो 'ब्याधि' (रू. भे.)

उ०—वुग्र व्याधिय भाधि उपाधिय मैं, सुध साधिय सुन्य समाधिय मैं। निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुनैं मन संसय सोग नहीं।
—ऊ. का.

व्याप—१ देखो 'व्याप्य' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मांड व्यास, परघो प्रकास, भ्रति व्याप एस, व्यापक विसेस। वैराट व्रद्ध, सानंद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ. का.

२ देखो व्यापक' (रू. भे.)

व्यापक—वि. [सं.] १ चारों ओर फैलाया हुआ, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र विद्यमान।

उ०—१ ब्रह्मांड व्यास; परघो प्रकास, भ्रति व्याप एस व्यापक विसेस। वैराट व्रद्ध, सानद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ. का.

उ०—२ तुं जांह तांह व्यापक रहै, कठै भ्रव्यापक नांहि। तुझि कुं किसका डर नहीं, जनहरिया मुझि मांहि। —अनुभववांणी

उ०—३ ज्युं घायल उर साले पीरा, त्युं त्यु व्यापक राम सरीरा। घायल की घायल सो जानै, परगट कहि दिखलाउ छानै।
—अनुभववांणी

उ०—४ भैं निद्रा भासा इधक ना तिस व्यापक सुधा।
—केसौदास गाडण

उ०—५ अठोत्तर पुत्री जाति अनूप, मलासु दोइ हजार सरूप। उपना एकण पिंड अनेक, हूवा संसार व्यापक हेक।
—रा. वंसावळी

उ०—६ सुपहां दर चंचळ वाळ सरू, घट व्यापक गोरखनाथ गरू। तुडतांण जिसौ चउवांण तपै, कर वेढ सिवाइ मैं वास कपै।
—गा. प्र.

२ छाया हुआ।

३ सामान्य, साधारण।

४ ढकने या घेरने वाला।

रू. भे.—बियाप, बियापक, ब्यापक, वापक, विम्रापक, वियापक, वीम्रापक, वीयापक, व्याप।

व्यापण—सं. स्त्री. [सं. व्यापन] फैलाव, विस्तार।

व्यापणौ, व्यापबौ—क्रि. अ. [सं. वि.+आप्लृ] १ चारों ओर फैलना, व्यापक होना, व्याप्त होना।

उ०—१ विकट जड़ी मुहरा धरघा, काम भुजंग डस लीन। विख व्याप्यौ, उतरै नहीं, पररयां विना प्रवीण। —अज्ञात

उ०—२ देवी नीर रै रूप तूं आग ठारै, देवी तेज रै रूप तू नीर हारै। देवी ग्यान रै रूप तूं जगत व्यापी, देवी जगत रै रूप तूं धरम थापी।
—देवि.

उ०—३ निज जस दिसि दिसि व्यापए, थापए चउ विह संघ। सूरउ तेहज सामिय, धामिय कांमिय रंग। —जयसेखर सूरि

२ विद्यमान होना, उपस्थित होना।

उ०—१ तुमही कहो अरधंगा हमारो, हम हूं लगाया कारा। कोटि ब्रह्मांड में व्यापि रह्यो है, सो निज वर है हमारा। —मीरां

उ०—२ नमो खाग हथ्थी नमो खप्पराळी, नमो काळिका काळ-रात्री ककाळी। नमो सव व्यापी नमो सुख्ख दाता, नमो गोरी पारवती ग्यांन गाता। —मा. वचनिका

३ समाना, प्रविष्ट होना।

४ छाना, फैलना।

५ घेरना, ढकना।

६ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ मैं निकल्या कदाग्रही छंड ए, ए रिखीस्वरौं नो दंड ए। परसन पूछै तूं बांकड़ा ए, ए क्रोध व्यापण रा टांकड़ा ए।
—जयवांणी

उ०—२ जा घट बिरह न व्यापही, भये भ्रव्यापक तन। जनहरिया घट विरह विन, जांणि भ्रलूंणो भ्रंन। —अनुभववांणी

उ०—३ लियां नांम मुख लाभ, व्याधि दूख आधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, भ्ररी बडपण ऊथापै। —रा. रू.

उ०—४ अहुं आगि ता तन बसे, व्यापै विघन करोड़ि। जन-हरीया पद रवात कु, जाता लेह बहोड़ि। —अनुभववांणी

उ०—५ नाव परताप जळ जोगणी चंडका, भैरवा भूत छळ छेद नाही। नाव परताप तै विघन व्यापै नहीं, नांव परताप तिहु लोक मांही।
—अनुभववांणी

७ होना।

उ०—१ प्यारो पोढी पीव संग, कोऊ न व्यापै बीह।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख संपत्ति, व्यापत नाहि विपत्ती। —मे. म.

उ०—३ जे मन राखै रांम सो, अपने अंग लगाइ। दादू कुछ व्यापै नहीं, जे कोटि काळ झख आइ। —दादूवाणी

८ विचार उत्पन्न होना।

उ०—हियै तहव्वर खान रै, व्यापी यों विपरीत। दाह अकब्बर भोगवी, नौरंग साह नचीत। —रा. रू.

९ असर होना, प्रभाव पड़ना।

उ०—परिचय पीवै रांम रस, राता सिरजनहार। दादू कुछ व्यापै नहीं, ते छूटे संसार।
—दादूवांणी

१० उत्पन्न होना।

उ०—राजा वणी चतुराई सूं झारि भरि रखीस्वरां रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवांणी करि दीनी। बाबो रांण्यां नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरै पधारिया। उण राति राजाजी ग्रतीक ब्या तियै सुख मैं पौढ्या छै। ग्राधी राति रै समै महाराज ने त्रखा घणी ब्यापी, तरै खवास कना सु जळ मगायौ। तरै खवास ग्रसमझ थकै मंत्री झारी हाजर कीनी। —रा. वंसावळी

११ पहुंचना।

उ०—पंच पंडवि वनंतरि विमासिउं, तेरिमूं बरस केमि गमेसिउं बुद्धि नारद महारिसि ग्रायौ, मध्यदेस रहियौ तुम्हि ब्यापी। —सालिसूरि

ब्यापणहार, हारौ (हारी), ब्यापणियौ—वि०।

ब्यापिग्रोड़ौ, ब्यापियोड़ौ, ब्याप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ब्यापीजणौ, ब्यापीजबौ—भाव वा०।

बिग्रापणौ, बिग्रापबौ, बियापणौ, बियापबौ, ब्यापणौ, ब्यापबौ, बापणौ, बापबौ, विग्रापणौ, विग्रापबौ, वियापणौ, वियापबौ, वीग्रापणौ, वीग्रापबौ—रू. भे.।

ब्यापत—देखो 'ब्याप्त' (रू. भे.)

ब्यापति, ब्यापत्ती—देखो 'व्याप्ति' (रू. भे.)

उ०—ग्रावइं सकल कलापति, ब्यापति मांडइ कोडि। बइठा स्वजन सुखासनि, वासणि धन दिइं कोडि। —जयसेखर सूरि

ब्यापार-सं. पु. [सं.] १ व्यवहार, सम्बन्ध।

उ०—जाहरा ग्रवै नूं राजा पासै लै गया, ताहरां मारगि मैं ग्रावतां हटवांणियै री देणौ हुतौ तिकौ ग्रोलियौ, रजपूत, म्हारौ लहणौ दीयै जाहु। तोनूं राजा मारिसी। ग्रो छाडै नहीं। ताहरां वडै, ब्यापारी सूं ब्यापार हुतौ, तिकै ग्राया। ग्राइनै कह्यौ, ठकुराळा, टको-पईसौ खरचतौ ग्रपूठौ मत जोए। म्हे खरच पूरवस्यां। ग्रर छोटै ब्यापारी रौ करज दीयौ। —बाप री सीख री बात

२ कर्म, कार्य, काम।

३ धंधा, व्यवसाय, क्रय-विक्रय का पेशा।

४ उद्योग, उद्यम।

५ ग्राचरण, चारित्रिक, व्यवहार।

६ विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का संयोग। (न्याय)

रू. भे.—बेपार, बंपार, बोपार, ब्यापार, ब्योपार, ब्यौपार, वापार, वेपार, वेवार, वंपार, वंवार, वोपार, वोवार, व्योपार, व्यौपार।

मह.,—बेपारो, वोपारौ।

ब्यापारिक-वि. [सं.] ब्यापार का, ब्यापार से सम्बन्धित।

ब्यापारी-सं. पु. [सं. व्यापारिन्] १ ब्यापार करने वाला, क्रय-विक्रय करने वाला, सौदागर।

उ०—५ सांझ परी गई, गुदड़ी परी बढ़, दीवह जोति भई। चोहटइ भीड़ मिटी, ब्यापारी नी महिमा घटी, हाटइ ताला जड़इ। ग्राप ग्राप रै घर ग्राया, कूंची लाया। स्त्री सोलह सिंगार सजै, गणिका जार नै भजै। —रा. सा. स.

उ०—२ ताहरां वडै ब्यापारी सूं ब्यापार हुतौ, तिकै ग्राया। ग्राइनै कह्यौ, ठकुराळा, टको-पइसौ खरचतौ ग्रपूठौ मत जोए। म्हे खरच पूरवस्यां। ग्रर छोटै ब्यापारी रौ करज दीयौ। यूं करता राजा गुनह माफ कीयौ। —बाप री सीख री बात

उ०—३ पाटण सहर, तठै ग्रजैपाळ साह ब्यापारी रहै। बडौ धनेस्वरी। तिणरै देवीदास नांमौ ग्रेका-ग्रेक बेटौ। सो बरसां पनरह मांहै हुवौ, तिको बडौ सपूत। नांमै-लेखै बिणज ब्यापार मांहै बहोत खबरदार। —पलक दरियाव री बात

उ०—४ ब्यापारी सहू वांणिग्रा, जोसी बैद्यक ब्यास। मांगण पणि मिळिया बहू, सहूनी पूगइ ग्रास। —मा. कां. प्र.

२ वैश्य, बनिया।

उ०—१ कह्यौ महाजन ग्रावै जिका नै पइसा लेइ रोटियां कर घालबौ कर। महाजन ग्रावै ज्यांनै मेर तै ब्राह्मणां नो घर बताय देवै। कितले एक काले च्यार ब्यापारी घणा कोसां रा थाका ग्राया। मेरां नै कह्यौ उत्तम घर बताग्रो जद ब्राह्मणां रौ घर बतायौ। —मि. द्र.

उ०—२ तिण हिज जेठमलजी कह्यौ यं जास्यौ तो ग्रौर ब्यापारी ग्रांण वसासां पिण सार्वां नै काढां इसौ ग्रन्याय म्है करां नहीं। जद बाबेचा कूंचियां लेइ ग्राप ग्राप रै घर गया। —मि. द्र.

३ व्यवसाय, कार्य-धन्धा या पेशा करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बेपारी, बंपारी, बोपारी, ब्योपारी, ब्यौपारी, वापारी, वेपारी, वंपारी, वोपारी, वोपारी, व्योपारी, व्यौपारी।

ब्यापियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चारों ग्रोर फैला हुग्रा, व्यापक हुवा हुग्रा, व्याप्त हुवा हुग्रा। २ विद्यमान हुवा हुग्रा, उपस्थित हुवा हुग्रा। ३ समाया हुग्रा, प्रविष्ट हुवा हुग्रा। ४ छाया हुग्रा, फैला हुग्रा। ५ घेरा हुग्रा, ढका हुग्रा। ६ उत्पन्न हुवा हुग्रा, पैदा हुवा हुग्रा। ७ हुवा हुग्रा। ८ विचार उत्पन्न हुवा हुग्रा। ९ ग्रसर हुवा हुग्रा, प्रभाव पड़ा हुग्रा। १० उत्पन्न हुवा हुग्रा। ११ पहुँचा हुग्रा।

(स्त्री. ब्यापियोड़ी)

ब्यापी-वि. [सं. व्यापिन्] १ व्याप्त या व्यापक होने वाला या हुवा हुग्रा।

२ सर्वत्र फैलने वाला या फैला हुग्रा।

३ ग्राच्छादित या ग्राच्छादन करने वाला।

सं. पु.—विष्णु भगवान का नाम।

रू. भे.—बियापी, बियापी, बियापो, बियापो।

व्याप्त-वि. [सं.] १ फैला हुआ, पसरा हुआ. २ भरा हुआ, परिपूर्ण ३ सम्मिलित, शामिल. ४ समाया हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ. ५ आच्छादित।

रू. भे.—बियाप, व्यापत।

व्याप्ति; व्याप्ती-सं. स्त्री. [सं.] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव। २ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

३ नियम या सिद्धान्त जो सर्वत्र लागू होने वाला हो।

४ फैलाव, विस्तार।

५ परिपूर्ण होने की अवस्था, परिपूर्णता।

रू. भे.—व्यापति, व्यापती।

व्याप्तिग्यांन-सं. पु. [सं. व्याप्तिज्ञान] साध्य को देख कर साध्यवान् के या साध्यवान को देख कर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध में होने वाला ज्ञान। (न्याय)

व्याप्य-वि. [सं.] वह जो व्याप्त करने योग्य या व्यापनीय हो।

रू. भे.—व्याप।

व्याप्रत-सं. पु. [सं. व्यापृत] १ सचिव, मंत्री। (डि. को.)

२ कामदार। (डि. को.)

४ नौका, नाव।

वि.—१ किसी कार्य में लीन या संलग्न।

व्याप्रति-सं. पु [सं. व्यापृतिः] १ कार्य, धन्धा।

२ कार्य, कर्म।

३ उद्योग, परिश्रम।

४ पेशा, धंधा।

व्यामोह-सं. पु. [सं. व्यामोहः] १ मोह, अज्ञान।

उ०—व्यामोहे वर वीर, घर घर संत देखि घणउ, आयउ राइ हर आप रह, समहरि 'अचळ' सधीर। —अ. वचनिका

२ व्याकुलता, परेशानी।

रू. भे.—व्यांमोह।

व्यायण—देखो 'व्यांण' (रू. भे)

उ०—मेलो तो मेलो व्याईजी बंन नै, आयी वाई रै पेलै सावण रो तीज। म्हांनै तो ठीक नहीं भोळा व्याईजी, पूछो थांरी व्यायण जी नै बात। —लो. गी

व्यायांम-स. पु. [सं. व्यायामः] १ शरीर को मजबूत एवं पुष्ट बनाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक श्रम, कसरत।

२ परिश्रम, मेहनत।

३ थकावट।

४ रति-क्रिया के बाद होने वाली थकावट।

५ कोशिश, प्रयत्न, प्रयास।

व्यायांमसाळ, व्यायांमसाल, व्यायांमसाळा, व्यायांमसाला-सं. स्त्री. [सं. व्यायामशाला] वह स्थान जहां व्यायाम किया जाय।

उ०—जिनमंदिर धवलमंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल पोषधसाल रथसाल हस्तिसाल, तुरंगसाल व्यायांमसाल टंकसाल आस्थांनसभा सोगरणसभा व्यखकरणसभा .... । —व. स.

व्यायांमी-वि.—व्यायाम करने वाला।

व्यायोग-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का रूपक विशेष। (साहित्य)

व्यायोड़ी-सं स्त्री.—मादा पशु जो प्रसूता हो गई हो, व्याई हुई, जिसने बच्चा प्रसव किया हो।

व्यायोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.) (स्त्री. व्यायोड़ी)

व्यारण—देखो 'वारण' (रू. भे.) (अ. मा.)

व्यारी, व्यारोउ—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.) (उ. र.)

व्याळ, व्याल-सं. पु. [सं. व्याल] १ दुष्ट व्यक्ति, निर्दयी व्यक्ति। (अनेका.)

२ मौत का दिन, मृत्युकाल। (,,)

३ सर्प, सांप। (,,)

उ०—१ माधव ! कोघउ मरू सलो, अैं को अभिनवु व्याल। फणि फाटी मद जन्मियु, आगइ जेय मदाल। —मा. का. प्र.

उ०—२ तोयधी मुनिंद्र पाण वचै व्याळ वैनतेय, दूठ अद्र वचै घाण जुप्राण दधोच। वख्या सत्रां चा बाधा चंद रायासाल बोजै बीर खगां खाधा जे न लाधा भीम बीच। —हुकमीचंद खिड़ियो

उ०—व्याळ नूं जगायो सोर बिजूजा चलायो वज्र, सींधली अधायो कै सुणायो बीर साद। धुरजटी जटा हूं अधायो बीरभद्र आयो, देव दळां ऊपरां यूं आयो मेघनाद। —जोरावरसिंघ

उ०—४ उरमाळ मुंड नि छाल अग की, खाल केसरि जूसणं। वपु भस्म लेप स्मसांन राजित, व्याळ पांणि विभूसणं। —ला. रा.

४ हस्ती, हाथी। (अ. मा., अनेका)

उ०—१ अटवी-अथा अटवी वरणन। अनेकोतकट व्रक्ष गहन। बिविध व्याळ सारदूळ। काल कंकाल। वेताल। क्षेत्रपाल। साकिनी। डाकिनी। योगिनी। यक्ष। राक्षस। गंधरब विद्याधर। खेचर। भूत। प्रेत। पिशाच। क्रीडादिक कारि। —सभा

उ०—२ मदमसत हळवळ, हालि मेंगळ, विमळ स्यांमळ घटा बद्दळ, जांणि रद बग पंत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ। हींस हैंमर कळळ हूंकळ, दुकळ सुकळां सोर दमंगळ, बीज पळकत सेल बळवळ प्रबळ दळ भूपाळ। —महाराव हणूतसिंघ सेखावत रो गीत

५ शेषनाग।

उ०—नहीं तू काळ नहीं तूं कम्म, नहीं तूं ब्याळ नहीं तूं ब्रह्म। नहीं तूं देव नहीं तूं दंत, नहीं तूं भेव नहीं तूं मंत।

—ह. र.

६ दुष्ट हाथी।

७ बुरा या उपद्रवी व्यक्ति।

८ पवन, हवा, वायु।

उ०—दो ग्राग्या दूसरां, मेळ कीजं ग्रह मंगळ। रण समयें दिस ग्राठ, काठ अर्ग दावानळ। मेळि काळ तरण भुवरण, करे मंजरण दोनूं कर। परि फूलें जळ पाणि, सकत गिरि मांरण सरोवर। रव ग्रगनि व्याळ धूंवा रवरण, सोर ज्वाळ इळ संमिळै। सुज सती होम करतां सु वणि, मिळे धोम नभ मंडळे।

—रा. रू.

९ शिकारी या हिंसक जन्तु।

१० भगवान् विष्णु का एक नाम।

११ राजा, नृप।

१२ सिंह, शेर।

१३ बाघ, चीता।

१४ दण्डक छन्द का एक भेद विशेष।

रू. भे.—बिग्राळ. बियाळ, व्याळ, व्याल, वयाळ, विग्राळ वियाळ, बीग्राळ, बीयाळ, वेयाळ।

व्यालखळ-सं. पु. [सं. व्यालखल] १ मोर, मयूर। (नां. मा.)

२ पक्षिराज गरुड़।

३ सिंह, शेर।

व्यालग्राही-सं. पु. [सं. व्यालग्राहिन्] सांपों को पकड़ने वाला, सपेरा।

व्यालग्रीव, व्यालग्रीव-सं. पु. [सं. व्यालग्रीव] एक देश का नाम।

व्यालधीस व्यालधीस-सं. पु. [सं व्यालधीश] १ शेषनाग।

२ ऐरावत हाथी।

व्यालपाळ-सं. पु. [सं. व्यालपाल] चन्दन। (नां. मा.)

व्यालरेस-स. पु.—सर्पों का समूह।

व्यालसूदन-सं. पु. [सं. व्यालसूदन] १ पक्षिराज गरुड़।

२ मोर, मयूर।

३ सिंह, शेर।

व्यालारि-सं. पु. [सं. व्याल+अरि] १ सर्प-शत्रु गरुड़। (अ. मा.)

२ मोर, मयूर।

३ सिंह, शेर।

व्यालिक-सं. पु. [सं.] सपेरा।

व्याली, व्याली-स. पु. [सं. व्याली] १ शिव शंकर, महादेव।

२ मोरनी।

३ सिंह की स्त्री, शेरनी।

व्याळू-सं. पु. [सं. विकालिक] १ रात्रि का भोजन, सायंकालीन भोजन।

उ०—१ मलब तूं हिज ग्राळसियां उदम, पाळण तूं हिज न पाळां पाळ। बांटण तू ही न व्याळां व्याळू, गोविंद तूं हिज न ग्वाळां ग्वाळ।

—ग्रोपो ग्राढो

उ०—२ पूनम री चट्ट चांदणी रात। वै दोनूं जणा धानपुर पूगा जितरे व्याळू वेळा व्हैगी। गाम रा गोर में छोरा कब्बडी रमता हा ग्रर चांवटे बेठ्या लोग-बाग बातां करता हा। —ग्रमरचूनड़ी

रू. भे.—बियाळू, बेळू, ब्याळू, वियालू, वियाळू, वेळू, वेलु, वेळू, वेलू।

व्याव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ एम गुरणसठे साठो ग्रायो, राव सहंसमल व्याव रचायो। धरपति 'ग्रजो' मोड़ सिर धारे, परणीजण साचोर पधारे।

—रा. रू.

उ०—ग्रत्र माहतां व्याव की होंस कीनी छै। रांमेपुर ब्राह्मण नै ग्राग्या दीनी छै। रांमेसुर ग्रठा सूं गुजरात नै ध्यायो छै। ग्रहमदाबाद नगर में ग्रायो छै। तदि कपूरचंद सेठ सुणि पायो छै। सेठ ग्रापका ग्रादमी लिनायं रांमेसुर नै बुलायो छै।

—बगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—२ रजपूतां नै उपदेस पमू थारो लाग बाळे ही सांमधरम पाळियो तो है। राजपूतां थें नरदेह ही, ग्रंन घणी री खावो दुख में सहायता घणी सू लो व्याव सावा ग्रादि में ईजत राखे है ग्रेडा घणा कारण है सो थे राजपूती री राह चालणो चाहो नै तांहरो उद्धार चाहो तो घणी री बुरी नै ग्रापरी न्यूंनता जांणो।

—वी. स. टी.

उ०—४ हरसा वीर मेरा रे, राव गढ़ां रे, करतो व्याव। मेरी मा का रे जाया, घुड़ला तो हसतो रे देतो घूमता।

—जीणमाता रो गीत

व्यावड़ो—देखो 'विवाह' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—ग्रोसर मोसर मांय, व्यावड़ां ग्राड़ी ग्रावे। थारे पारे मिळा, करवलां भोज मणावे। कूतरड़ी रे भेळ, गिणीजे नीरो माड़ो। पण धिटाळे टळे, नरां ग्रपजस ग्रंबाड़ो।

—दसदेव

व्यावट-सं. पु. [सं. व्यावर्त] दोष, महादोष।

उ०—हरजीमल सेठ रागी थयो, जद रुघनाथजी सें उरजोजी साधु मोटो ग्रोलियो लेई वांचवा लागो। भीखणजी उठे ग्रमकड़ियें गांम काचो पांणी लीधो, ग्रमकड़िये गांम कंवाड़ जड़ने सूता, ग्रमकड़िये निरय पिंड लीधो, इत्यादिक ग्रनेक दोख पांनां सूं वांचवां लागो। जद सेठजी बोल्या—जोधपुर जाग्रो राजा कनें पुकारो। ग्रा तो व्यावट है। ग्रो फगड़ो म्हां सूं नहीं मिटे।

—भि. द्र.

व्यावण, व्यावणी—देखो 'व्यावरण' (रू. भे.)

व्यावणू—देखो 'व्यावणूं' (रू. भे.)

ब्यावणो, ब्यावबो—१ देखो 'ब्याणो, ब्याबो' (रू. भे.)

उ०—मारचिया में स्वांमीजी पधारया। एक बाई कह्यौ स्वांमीजी म्हारै मेंस ब्यावं जब पधारो तो लाहो लेवूं। तं किम मेंस ब्यायां एक महिनां ताइ दूध दही बावर देवें पिण विलोवें नहीं। तं देवी रै टांणें पधारज्यो। —भि. द्र.

२ देखो 'विवाहणो, बिवाइबो' (रू. भे.)

ब्यावणहार, हारो (हारी), ब्यावणियो—वि०।

ब्यावियोड़ो, ब्यावियोड़ो, ब्याव्योड़ो—भू० का० कृ०।

ब्यावीजणो, ब्यावीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

ब्यावर—सं. स्त्री.—१ गाय भैंस आदि की जिनेंद्रिय या योनि।

२ प्रसव देने की क्रिया।

उ०—दूहो दुपटो वांम, जोड़पा सो ही जांणसी। ब्यावर तणो विरांम, वांझ न जांणें बींझरा। —बींझरा अहीर री बात

ब्यावलो—देखो विवाहलो' (रू. भे.)

ब्यावहारिक, ब्यावहारीक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)

ब्यावियोड़ी—वि. स्त्री.—१ जिसका विवाह हो गया हो।

२ जिसने बच्चे को जन्म दिया हो, प्रसूता।

ब्यावियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्यावियोड़ी)

ब्याबू—सं. पु. [अनु.] कुत्ते के भौंकने की आवाज।

उ०—पण मोट्यार बेटा उणरै कंणा री कीं गिनरत करै नीं। वो घड़ी घड़ी वारै माथै घसळा करतो कुत्ता री गळाई भुसै। सांकड़ आयां पूंछ हिलावै। आठ पौर कळमळ करतो वो कुत्ता रां भांत ब्याबू ब्याबू करतो रैवै। मोट्यार काटी बेटा उण रै भुसणा री कीं यारै करै नीं। —फुलवाड़ी

व्यास—सं. पु. [सं.] १ वेदों का संग्रह, विभाग व सम्पादन द्वारा पुनर्रचना करने वाले एक महर्षि, जो पाराशर ऋषि व धीवर कन्या सत्यवती (मत्स्यगन्धा) के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे।

उ०—१ सावतरी सांमि रा करै वाखांण किताई, रुखमांगद इविरीक साध नारद सवाई। पारासुर पैहळाद सेस गंगेव महेसुर, परिजण में अकरूर व्यास रिखि बारट ईसर। —पी. ग्रं.

उ०—२ सहज कळा जागी सबं, तन मन बचनां सास। अनररिया इंदर कथा, वेद न जांणें व्यास। —अनुभववाणी

उ०—३ देवी वालमिक व्यास रूपं तुं ऋत्तं, देवी रामायण पुरांणो भागवत्त। देवी कावा रै रूप तूं पाप लूंटै, देवी पाप रै रूप आराघ ऊटै। —देवि.

वि० वि०—इन्होंने पुराण, भागवत, महाभारत व वेदांतसूत्र आदि की रचना की थी। ये नदी के बीच टापू पर उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन व रंग काला होने के कारण कृष्ण कहलाये। इनका जन्म सत्यवती की कौमारावस्था में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनकी माता सत्यवती का विवाह भीष्म पितामह के पिता महाराज शान्तनु से हुआ था। जिससे उसे विचित्र वीर्य व चित्रांगद नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। इन दोनों पुत्रों की मृत्यु निसन्तान होने के कारण वंश की स्थापना के लिए इन्हें सत्यवती ने नियोग की आज्ञा दी। अतः दोनों की पत्नियों अम्बिका व अम्बालिका से नियोग कर क्रमशः धृतराष्ट्र व पाण्डु को जन्म दिया एवं अम्बिका की दासी से विदुर को जन्म दिया। इन्होंने संजय को दिव्यदृष्टि दी थी। विभिन्न मन्वन्तर में जन्म लेकर वेदों के विभाग, संग्रह व सम्पादन करने वाले अट्ठाईस महर्षियों में इनका अन्तिम नाम है। सभी अट्ठाईस महर्षियों को व्यास कहते हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

स्वयंभू, मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु, इन्द्र, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, ऋषभ, सुतेजा, अन्तरिक्ष, सुचक्षु, त्रय्यारुणि, धनञ्जय, कृतञ्जय, ऋतञ्जय, भरद्वाज, गौतम, हर्यात्मन, वाजश्रवा, तृणबिन्दु, ऋक्ष, शक्ति, पराशर, जातूकर्ण और कृष्णद्वैपायन।

२ ब्राह्मण जो कथावाचक व ज्योतिषी होते हैं।

उ०—१ वियें 'गजन' फिर बूझिया, 'अजन' वडा उमराव। प्रोहित व्यासां बारठां, पूछे रीत प्रभाव। —रा. रू.

उ०—२ व्यापारी सहू वांणिआ, जोसी वैद्यक व्यास। मांगण पणि मिलिया बहू, सहूनी पूगइ आस। —मा. कां. प्र.

३ गोल वृत्त में से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी निकल जाने वाली रेखा। (रेखा गणित)

४ फैलाव, विस्तार।

रू. भे.—बियास, बीयास, ब्यास, बिआस, वियास, ब्यासि, ब्यासी।

व्यासगीता—सं. स्त्री. [सं.] एक उपनिषद का नाम।

व्यासगुफा—सं. स्त्री. [सं.] बद्रिकाश्रम के पास की एक गुफा जहां व्यासजी द्वारा पुराणों की रचना की गई थी।

व्यासतीरथ—सं. पु. [सं. व्यासतीर्थ] एक प्रसिद्ध तीर्थ। (पुराण)

व्यासपुनम, व्यासपूरणिमा—सं. स्त्री. [सं. व्यासपूर्णिमा] आषाढ़ की पूर्णिमा जिसे गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं।

व्यासवन—सं. पु. [सं.] कुरुक्षेत्र में स्थित एक वन जिसमें एक पुण्य तीर्थ है।

व्यासस्थल, व्यासस्थलो—सं. पु. [सं.] कुरुक्षेत्र में एक तीर्थ, जहां व्यास ने अपने पुत्र वियोग से संतप्त हो शरीर त्याग देने का निश्चय किया था।

व्याससूतर, व्याससूत्र—सं. पु. [सं. व्याससूत्र] वेदांतसूत्र।

ब्यासि, ब्यासी—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

ब्याह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ नव नव खेल वसंत नित सिर आयौ मधुमास । परणा-वण 'जैसाह' नूं, आगम ब्याह प्रकास । —रा. रू.

उ०—च्यार चक चमरी वेव छुछम पढ़ै, अरध भर उरध कै बीच फेरा । दास हरिरांम कहै ब्याह अंसा रच्या, आय नही जाय वळ फेर घेरा । —अनुभववांणी

उ०—पछै इण सांखलां रै पधारिया । सांखला नाळेर ले रावजी रै सांम्हां आया । सांखलो टीकायत रावत कहावतो जिण री बेटी रावजी नूं परणाई । अर रावजी पण खरा मेंहरवांन हुय ब्याह कियो । —नैणसी

उ०—४ रंग विण ब्याह, वेस विण रांमति, सुंदरि विण ग्रिह-वास जिसौ । भुरतांण कहै कलियांण समोभ्रम, त्याग पखै कुळ जलम तिसौ । —त्याग प्रसंसा री गीत

ब्याहक-वि.—विवाह करने वाला, दुल्हा ।

उ०—हैरान हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडै । गजगाह 'भीम' 'गाजो' हुओ, ब्याहक लाडी लाडडै । —गु. रू. ब.

ब्याहणो, ब्याहबो—१ देखो 'ब्याणो, ब्यावो' (रू. भे.)

उ०—१ इतरै फकीर पाखती घोड़ा बंधिया छै जिकां रै सांम्हो जोवण लागियो । सो पायगा मांही बधी चंवरढाल नजर चढी । ग्रेक सूरेजी री सवारी रो घोडो भंवर मारवी वडी सी कीमत रो । चंवरढालतो मूं ब्याही छै सो ग्रेक तो बछेरो बरस ग्रढाई गो हुवो । ग्रेक बछेरी महिनां नो री हुई सो दोनूं पाखती बंधिया खड़ा छै । —सूरै खींवै कांधळोत री बात

उ०—२ ताहरां खान जाय घोडी संभाळी । घोड़ी रा पग मांही सवा मण लोह री गट्टो सो दोठो । ताहरां खांन मन में कहण लागियो—जे ग्रेम दोय बार ब्याही छै पण गट्टी नूं तो तोड नांखसी । यूं जांण घोड़ी नूं कायजो देय, गट्टो मुद्दा बाहर काढी । —सूरै खींवै कांधळोत री बात

उ०—३ आ कुत्ती एक बाळद री सागै थी ब्याभण थी सो ई ठांव ब्याही । —साह रांमदत्त री वारता

२ देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे.)

उ०—१ सोमपाल री सु कन्या, जयमाळा तसु नांम । धर विक्रम संग ब्याहई, नगर सोगारै गांम । —पंचदंडो री वारता

उ०—२ सुरजन सुत बूंदी सदन, संग्या दुरजणसाल । ब्याहण हूं बळमद नूं, हुवौ सहायक हाल । —वं. भा.

ब्याहणहार, हारौ (हारी), ब्याहणियो—वि० ।

ब्याहियोड़ो, ब्याहियोड़ो, ब्युह्योड़ो—भू० का० कृ० ।

ब्याहीजणो, ब्याहीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

ब्याहति, ब्याहती—देखो 'व्याहृति' (रू. भे.)

ब्याहदापो-सं. पु.—१ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाली एक सरकारी कर विशेष ।

२ देखो 'दापो' ।

ब्याहलो-सं. पु.—१ डिंगल का एक (छंद) गीत विशेष ।

२ देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

उ०—गुरु गोविंद कै सरणै आयो, कुळ की लज्या पेली । कारण क्रपा तै कर्यं ब्याहलो, भणै पदमैयो तेली । —रुकमणी मंगळ

ब्याहार-सं. पु [स] १ वक्तृता, भाषण । २ ध्वनि, नाद, उच्चारण ।

ब्याहियोड़ो—देखो 'ब्यायोड़ो' (रू. भे.)

ब्याहियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्याहियोड़ी)

ब्याहिलो—देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

ब्याही—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

ब्याहुलो—देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

ब्याहृत-वि. [सं. व्याहृत] बोला हुआ, भाषण दिया हुआ, उच्चरित किया हुआ ।

ब्याहृति, ब्याहृती-स. स्त्री. [सं. व्याहृतिः] १ भाषण, वक्तृता ।

२ बयान ।

३ भूः, भुवः, स्वः आदि मंत्र जो गायत्री मंत्र के साथ जपे जाते है ।

उ०—ब्याहृती गायत्री, व्रती, धारत नहीं धरम धनो, स्नृती औ स्म्रति सरब धूर में धसाता । बकतो में बाद बाद, बूझत करतो विवाद, सीतळप्रसाद सरब जात को जीमाता । —ऊ. का.

रू. भे.—ब्याहृति, ब्याहती ।

ब्यिजण, ब्यिजन-सं. स्त्री. [स. वीजन] १ हवा, वायु ।

उ०—गरयां पीतल रतांजणी तणां पखावज धोंकार करइ छइ । न्रत्यकी पात्र न्रत्य करइ छइ । ततवितत घन सुखिर पंचवरण वाजित्र वाजइ छइ । पंचवरण छत्र धारिया छइ । चांमर ब्यिजन बिहुं पखि हुइ छइ । —कां. दे. प्र.

२ देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)

ब्युतक्रस्ट-सं. पु. [स व्युत्क्रुष्ट] व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर बोलने की क्रिया या भाव । (संगीत)

ब्युत्थिताश्व, ब्युथिताश्व-सं. पु. [स. व्युत्थिताश्व] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम ।

ब्युत्पत्ति-सं. स्त्री. [सं.] १ मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान ।

२ शब्द का मूल रूप ।

३ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान ।

ब्युत्पन्न-वि. [सं.] निकला हुआ, निकसित ।

२ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

व्युषिताश्व-सं. पु. [सं. व्युषिताश्व] पुरुवंशीय एक राजा का नाम जो राजा कक्षीवान् की पुत्री भद्रा का पति था।

वि. वि.—इसकी पत्नी भद्रा अत्यन्त सुन्दर होने के कारण यह अति कामासक्त रहता था अतः इसकी असामयिक मृत्यु हुई। मृत्यूपरान्त इसके शव से भद्रा को सात पुत्र उत्पन्न हुए थे।

व्युस्ट-सं. पु. [सं. व्युष्ट] १ पुष्पार्ण एवं दोषा के पुत्रों में से एक, जो पुष्करिणी का पति एवं सर्वतेजस् का पिता था।

२ विभावसु एवं उषा के पुत्रों में से एक पुत्र, वसु।

व्यूंवर-सं. पु. [सं. व्योमवर] देवराज इन्द्र। (अ. मा)

व्यूड-[वि. पु.] सं.] १ पूर्ण, भरा हुआ, पूरा।

२ विवाह किया हुआ, विवाहित।

३ सेना की आकृति।

उ०—ग्रौर को रवेल मानो पूरो पन मेल झेल, खेलबो पसंद कीनो बाहनो घनो को तैं। नाम परतापसिंह प्यार को पितु ते पायो, व्यूड बरदांन बडा बन्वय धनोको तैं। —ऊ. का.

व्यूढोरस, व्यूढोरू-सं पु [सं.] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था।

व्यूह-सं. पु. [सं व्यूहः] १ समूह, झुण्ड। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ सेना, फौज।

३ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष रूप से खड़ा करने का ढंग, सेना-विन्यास।

उ०—१ सुत 'भारण' 'महेस', खगं पंडवेस घड़च्छे। गिह गाजे पड़िहार, व्यूह चक्राकृत अच्छे। —रा. रू.

उ०—२ बंगा चौसठा सांकळां सूत डोरा, धरा यूं खणं ज्यूं वणं खेत घोरा। भला जुद्ध वे वेरियां व्यूह भेदी, बिजै मित्र जं चित्र संग्राम वेदी। —वं. भा.

४ शरीर, देह।

उ०—बभीछन कूं पाट बैठाए, सीता सहत अवधपुर आए। भरथ सत्रघन लछमन रामा, पूरण विस्णु व्यूह अभरांमा।

—ऊदोजी अड़ीग

५ तर्क-वितर्क।

६ निर्माण, रचना।

७ चक्र।

८ भ्रमरमाळ।

रू. भे.—व्यूह।

व्यूहन-सं. पु. [सं. व्यूहनं] १ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष ढंग से खड़ा करने की क्रिया।

२ निर्माण करने की क्रिया।

व्योंत—देखो 'वेंत' (रू. भे.)

व्योंतणौ, व्योंतबौ 'वेंतणौ, वेंतबौ' (रू. भे.)

व्योंतणहार, हारौ (हारी), व्योंतणियौ—वि०।

व्योंतिग्रोड़ौ, व्योंतियोड़ौ व्योंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्योंतीजणौ, व्योंतीजबौ—कर्म वा०।

व्योंताणौ, व्योंताबौ—देखो 'वेंताणौ, वेंताबौ' (रू भे.)

व्योंताणहार, हारौ (हारी), व्योंताणियौ—वि०।

व्योंतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

व्योंताईजणौ, व्योंताईजबौ—कर्म वा०।

व्योंतायोड़ौ—देखो 'वेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्योंतायोड़ी)

व्योंतियोड़ौ—देखो वेंतयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्योंतियोड़ी)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—ग्रंदर भक्ति, मो मन परिखो ए, तूं तो पहला व्योपारी सारिखो ए। जड कहां राजा खेदं भरचो ए, पिण इतरो कह्यो ठाडो पड़्यो ए। —जयवांणी

व्योम-सं पु [सं व्योमन्] १ ग्राकाश, ग्रासमान। (डिं नां मा.)

उ०—१ प्रपंच पंच तत्व को तुही उपावनी, क्षमा वह्नि वायु व्योम तू खपावनी। ब्रह्म्म को तुहीं रजा भुजा बलदनी, नमामि 'इंदरा' 'समद' नंदनी। —मे. म.

उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ थंभ चलेवो सोम रवि, पेखै व्योम अचंभ। —रा. रू.

२ जल, पानी।

३ भोडल, अभ्रक।

४ सूर्य का मंदिर।

५ बादल, मेघ।

६ शून्य।

६ विष्णु का नाम।

७ पवन, वायु, हवा।

९ नीला, आसमानी। ● (डिं. को)

१० यदुवंशीय राजा दशार्ह के पुत्र जो जीमूत का पिता था।

रू. भे.—बोम, बौम, व्योम, वयोम, वोम, वोमि, वौम।

व्योमकेस, व्योमकेसी-सं. पु. [सं. व्योमकेश, व्योमकेशिन्] शिव, महादेव।

उ०—उरमाळ मुंड नि छाल म्रग को खाल केहरि जूसणं। वपु भस्म लेप स्मसान राजित, व्याळ पांणि विभूखणं। गण भूतेस पिसाच कौतुक, मत तनु जटा जुटो। जय व्योमकेस महेस त्र्यंबक, भीम भूतप धुरजटी। —ला. रा.

व्योमगंगा—सं. स्त्री. [सं.] आकाशगंगा।

उ०—भवानी नमो कच्छपी रवांन भासा, भवांनी नमो ऐन ईसांन आसा। भवानी नमो व्योमगंगा बलच्छा, भवांनी नमो चेतना दैंन दच्छा। —मे. म.

रू. भे.—बोमगंगा, व्योमगंगा, वोमगंगा।

व्योमगमन—सं. स्त्री. [सं.] आकाश में उड़ने या विचरण करने की क्रिया।

व्योमगमनी—वि. [सं.] आकाश में उड़ने या विचरण करने वाला।

सं. स्त्री.—आकाश में उड़ने या विचरण करने की विद्या।

व्योमचर, व्योमचारी—सं. पु. [सं. व्योमचर, व्योमचारिन्] १ आकाश में विचरण करने वाला, देवता।

२ सूर्य, सूरज। ३ चान्द, चन्द्रमा।

४ आकाश में उड़ने वाले पक्षी। ५ गन्धर्व।

वि.—आकाश में विचरण करने वाला।

व्योममंडळ—सं. पु. [सं. व्योममण्डल] आकाश।

व्योमम्रग—सं. पु. [सं. व्योममृग] चन्द्रमा के दसवें घोड़े का नाम।

व्योमयान—सं. पु. [सं. व्योमयान] एक प्रकार का वह यान जिसमें बैठ कर आकाश में उड़ा जा सकता है।

व्योमवली, व्योमवल्ली—सं स्त्री. [सं. व्योमवल्ली] अमरबेल नामक लता विशेष।

व्योमसरिता—सं. स्त्री. [सं.] आकाश में बहने वाली नदी, आकाशगंगा।

व्योमारि—सं. पु. [सं.] एक विश्वदेव का नाम।

व्योमाळ—सं. पु. [सं. व्योम] आकाश। (डि. नां. मा.)

व्योमसुर—सं. पु. [सं.] मायासुर का पुत्र एवं कंस का अनुगामी एक असुर। कृष्णवध के लिए यह गोकुल गया था जहां इसका वध कृष्ण ने किया था।

व्योरो—सं. पु.—१ भेद, रहस्य।

२ कारण।

उ०—तिसैं समियं माहे भांणेज मांनधाता आइ मुजरो कीयो। राण्यां कहे छै, भांणेज एकै समियं थारे मामोजी नुं तूं पूछे खुसियाळ करि कवळ अर पूछे माहाराजा मोहल माहे पधारो छो ताहरां नीसासा क्युं नाखो छो, इतरो व्योरो म्हां नु ले देई। —चौबोली

३ विवरण, वृतांत, हाल।

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार।

५ व्याख्या, टीका।

६ संक्षिप्त जानकारी, परिचय।

७ बयान।

रू. भे.—व्योरो।

व्योहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—यूं हम छाड्या जग व्योहार, सुख थोड़ा दुख अनंत अपार। माता पूत पिता नहीं कोय, स्वारथि आय मिल्या सब दोय। —ह. पु. वां.

व्योची—सं. स्त्री.—एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष। (अमरत)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—दमक छटा छबिडंड पताका देखिया, पटा हाथ व्योपार जुहारां पेखिया। आभुखण नर नारि ईसो विध ओपिया, जांणक सुरपुर लोक, इधक छबि जोपिया। —बगसीरांम प्रोहित री बात

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०——आपणी आपणी वांणी राजवंसी राजावां कै रूपक सुणाए, सूरवीर सामंत ताकूं अनंत सुहाए। एतैं कवि वीरता कै अग्रकारी, स्रीमहाराज कै सुभचिंतक विद्या जस कै व्योपारी। —रा. रू.

व्रंग—देखो वंग' (रू. भे.)

उ०—व्रंग हुवै भोपाळ बसती गढ कोट उजाड़ै, व्रंग हुवै नर नारि सूरवीरा पति पाड़ै। व्रंग हुवै राज्यद्र, राज लै बंधव मारै, व्रंग गोई गोठियां, दाव दोरू मैं सारै। द्रंग न कीजै भाइयो, व्रंग कीको छीजै, विसंन भगत 'ऊदो' कहै, जांणतां व्रंग न कीजै। —ऊदोजी नैण

व्रंद—सं. पु. [सं. वृंद] १ समूह, झुण्ड। (अ. मा.)

उ०—१ आपगा दळण गोखम जळण आहोटो, विसै खटचलण कळियां कदम व्रंद। वारवाहां करी आठ मासां बळण, नह करी बळण कूं जसोमत नंद। —बां. दा.

उ०—वणं रूप व्रंदावन ओप वाधू, सदा सेवतं देवतं व्रंद साधू। तरां भार अड्डार नूं भार तैसो, अनेकां विराजैं व्रखां रूप ऐसो। —रा. रू.

उ०—३ डाक चमु वजाड़े ग्रीधां गळ डळां, वीजुजळां भुजाबळां माजे खळां व्रंद। अच्छरां अरजां करै आटीला वीवाण आवो, अंगहोमा कहै ऊभो आवो पुरां इंद। —वनजी खिड़ियो

उ०—४ लखि फौज तुंग लड़ग, ऊबग किर दधि अंग। वणि सुरथ पायक व्रंद, जग जांण दळ जयचंद। —रा. रू.

२ ढेर, समुच्चय।

उ०—भवांनी नमो सत्य आलाप बाळा, भवांनी नमो व्रंद विद्या विसाळा। भवानी नमो देव हेरंभ माता, भवांनी नमो तप्रमो संत त्राता। —मे. म.

३ गले में होने वाला अर्बुद।

४ एक प्रसिद्ध कवि का नाम ।

५ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ मुहूर्त ।

रू. भे.—ब्रंद, व्रिंद ।

ब्रंदा–सं. स्त्री. [सं. वृन्दा] १ तुलसी ।

२ गोकुल के समीपस्त वन ।

३ कृष्ण की प्रेमिका राधिका का नाम ।

४ जालंधर नाम दैत्य की पत्नी और कालनेमि की कन्या का नाम ।

रू. भे.—व्रिंदा ।

ब्रंदारक–सं. पु. [सं. वृन्दारक] देवता । (नां. मा.)

उ०—घट घाव बजै तठ आठ घड़ी, पर आरण ज्यां घण रीठ पड़ी । थिर चूर हुवा कर सूर थके, छळ पेख ब्रंदारक व्योम छके ।

—रा. रू.

वि.—१ मनोहर, सुन्दर । २ उत्तम, श्रेष्ठ । ३ अत्यधिक, बहुत ।

रू. भे.—बंदारक, ब्रंदारक, व्रिंदारक ।

ब्रंदारकतरय, ब्रंदारकतरु–सं. पु. [सं. वृंदारकतरु] देव वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

उ०—सिसु वै मिली विती, उदमो पोगंड मंड सिंगारी । ज्यों ब्रंदारकतरय, प्रांमै डाळ संगि पत्तंणम । —रा. रू.

वृंदारका–सं. पु. [सं. वृंदारक] १ देवता । (अ. मा.)

२ देखो 'ब्रंदारिका' (रू. भे.)

ब्रंदारिका–सं. स्त्री. [सं वृंदारिका] अप्सरा ।

रू. भे.—ब्रंदारका ।

ब्रंदावन–सं. पु. [सं. वृन्दावन] १ वह स्थान या चबूतरा जिस पर तुलसी का पोधा उगा हुआ हो ।

•२ मथुरा से ६-७ मील दूर एक प्रसिद्ध तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता है । (ह. नां. मा.)

उ०—१ परणीजै मधुपुरी, 'अभो' ब्रंदावन आयो, पेखि धांम सुख परम, महां तीरथ मन भायो । परखि निगम द्रुम पुंज, हेक सुख कुंज निहारैं, हेक पुळिण हित करैं, हेक जळ जमण विहारैं ।

—रा रू

उ०—२ बणो रूप ब्रंदावन ओप बाधू, सदा सेवतं देवतं व्रंद साधू । तरां भार अठ्ठार नूं भार नैसो, अनेका विराजै व्रखा रूप ऐसो । —रा. रू.

रू. भे.—बनरावन, बिंद्रावन, बिंद्रावन, ब्रंदावन, बिंदावन, बनरावन, बिंदरावन, विंदावन, बिनरावन, बिनरावन, बींदावन ।

ब्रंदावनपत, ब्रंदावनपति, ब्रंदावनपती–सं. पु. [सं. वृन्दावन+पति] १ श्रीकृष्ण ।

२ ईश्वर । (नां. मा.)

ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव–सं. पु. [सं. वृन्दावन+राज] श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—बंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव ।

ब्रंदावनबासि, ब्रंदावनवासी–सं. पु. [सं. वृंदावन+वासिन्] १ वृंदावन में वास करने वाले, वृंदावन निवासी ।

२ श्रीकृष्ण ।

३ विष्णु ।

४ ईश्वर, परमेश्वर । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बंद्रावनवासी ।

ब्रंदावनेस, ब्रंदावनेसर, ब्रंदावनेसुर, ब्रंदावनेस्वर–सं. पु. [सं. वृंदावनेश्वर] श्रीकृष्ण ।

ब्रंदावनेसरी, ब्रंदावनेसुरी, ब्रंदावनेस्वरी–सं स्त्री. [सं. वृंदावनेश्वरी] राधिका ।

ब्रंभचार—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—भींवर छोड्यो जाळ, कूड़ छोड्यो वावरियं । पांणी पीवै छाणि जुलम, करता मुंह छुग्गियं । करद कसाई हड कुटा ब्रंभचार तांह लीयो, बांभण खतरी बांणिया अवळ कलमूं तांह कीयो ।

—ऊदोजी नैण

ब्रंभचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

उ०—कुण हीदू कुंण तुरक, कुण काजी ब्रंमचारी । कुण मुलां दरवेस, जती जोगी जटधारी । कुंण बाळक कुंण व्रध, कुंण राजा कुण परजा । सूर धीर का कांम और का नही अनंजा ।

—अल्लूजी कवियो

ब्रंभा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे.)

उ०—सुर नर कोड़ि तेतीस, इंद ब्रंभा सकर सही । जांन अरजन भीव, पांचू वीर इकांयती । —ऊदोजी नैण

ब्रंम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'भ्रम' (रू भे.)

ब्रंमग्यान—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू भे.)

उ०—दयावांन नर दातजं वदे नम विदवांन । दीरघ ईं कं नांम दख गणो एक ब्रंमग्यान । —एका.

ब्रंमग्यानी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

ब्रंमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रंमरूप–सं. पु. [सं. ब्रह्मरूप] १ वेद । (अ. मा.)

२ देखो ब्रह्मरूप' (रू. भे.)

ब्रंमवरधन–स. पु. [सं. मर्मन्+वर्द्धनं] ताम्र ताम्बा । (अ. मा.)

ब्रंमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे) (एका)

ब्रंहम, ब्रंह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—निराकार निरबांण, जोगेस्वरां दुलभ जाग तेजोमय। रूप विस्नु रहमांण, पंकज नाभ ब्रंह्म उतपन्नो। —सू. प्र.

उ०—२ जिण ब्रंह्म तणं मारीच जांणि, मारीच तणं कासिप प्रमांणि। सुत कासिप सूरज तप असाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। —सू. प्र.

ब्रंह्मा ब्रंह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रक—सं. पु. [सं. वृक] १ भेड़िया।

उ०—गोमायू जरख ब्रक गूघुवां, सिस क सबद आवत सुणो। मुख रयण लगं अंतस मही, आज वगू उदियामणी। —पा. प्र.

२ श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

३ शृंगाल, सियार, गीदड़।

४ कौआ, काक।

५ उल्लू।

६ उदर में स्थित एक प्रकार की अग्नि विशेष।

७ डाकू, लुटेरा।

८ सूर्यवंशी राजा रुरुक का एक पुत्र।

उ०—संभ्रम सुदेव अप विजयमूर पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर। सुत रुरुक हुवो ब्रक पोह सधीर, ब्रक सुतण बाहु वीराघीवीर। —सू. प्र.

९ कृष्ण एवं सत्या का एक पुत्र। १० हरति राजा का नाम।

११ सृष्टि एवं छाया का एक पुत्र। १२ रोहित राजा का नाम।

१३ पांडव पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया था।

१४ एक राजा, जिसने जीवनभर मांस-भक्षण नहीं किया।

१५ श्रीकृष्ण एव मित्रविंदा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

१६ द्रौपदी के स्वयंवर मे उपस्थित एक राजा, जो महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से युद्ध करते हुए मारा गया था।

१७ शिष्ट एवं सुच्छाया के पुत्रों में से एक पुत्र राजा।

१८ भरूक राजा का पुत्र एवं बाहुक राजा का पिता एक राजा।

१९ शूर एवं मारिषा का पुत्र, दुर्वाक्षी का पति एवं तक्ष तथा पुष्कर का पिता एक राजा।

२० वृषु वैन्य एव अर्चिष्मती के पुत्र का नाम।

२१ वत्सक यादव एवं मिश्रकेशी नामक अप्सरा के पुत्रों में से एक

२२ शकुनि नामक राक्षस का पुत्र।

वि० वि०—इसने शिव की आराधना कर यह वरदान प्राप्त किया कि वह जिसके मस्तक पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा या मर जायेगा। इस वरदान का प्रयोग इसने पार्वती को प्राप्त करने हेतु शिव पर ही करने को उद्यत हुआ। तब शिव भाग कर विष्णु के पास गये। विष्णु ने ब्रह्मचारिन् का रूप धारण कर इसे अपने स्वयं के मस्तक पर ही हाथ रखने को प्रेरित करके भस्म किया।

वि.—क्रूर, क्रोधित। (डिं. को.)

रू. भे.—ब्रक, ब्रक्क, वीरक, वीरक्क, व्रक, व्रख, व्रक्ख, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

ब्रककरमा—सं. पु. [सं. वृककर्मा] एक असुर का नाम।

ब्रकखंड—सं. पु. [सं. वृकखण्ड] एक ऋषि का नाम।

ब्रकग्राह—सं. पु. [सं. वृकग्राह] एक ऋषि का नाम।

ब्रकजंभ—सं. पु [सं. वृकजंभ] एक ऋषि का नाम।

ब्रकदंत—सं. पु. [सं. वृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम जिसकी सानंदिनी नामक पुत्री लंकापति रावण के भाई कुंभकर्ण को ब्याही गई थी।

उ०—बांणासुर बोटियो, माघ चेतियो सदा सिवि। वळे दंत ब्रकदंत, लख्खां ऊपरां हिमे लिवि। —पी. ग्रं.

ब्रकवंस—सं. पु. [सं. वृकवंश] कुत्ता, श्वान।

ब्रकदीप्ति—सं. स्त्री. [सं. वृकदीप्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेव—सं. पु. [सं. वृकदेव] वसुदेव के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेवा—सं. स्त्री. [सं. वृकदेवा] वसुदेव की पत्नी और देवक की कन्या जिसका दूसरा नाम देवकी था, कृष्ण, अवगाहक, नंदक आदि की माता।

ब्रकनिव्रति—सं. पु. [सं. वृकनिवृति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकरथ—सं. पु. [सं. वृकरथ] दानवीर कर्ण के एक भाई का नाम।

ब्रकल—सं. पु. [सं. सं. वृकल] १ शिलष्टि के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

२ वृक नामक राजा का नाम।

३ अक्रूर के एक पुत्र का नाम।

ब्रकासुर—सं. पु [सं वृकासुर] कोक एवं विकोक का पिता एक राक्षस।

ब्रकास्व ब्रकाश्व—सं. पु [सं वृकाश्व] एक प्राचीन ऋषि।

ब्रकुट ब्रकुटक, ब्रकुटि, ब्रकुटी, ब्रकुट्टी—देखो 'भ्रकुटि' (रू. भे.)

ब्रकोदर, ब्रकोदर—सं. पु. [सं. वृकोदर] १ भेड़िया।

२ भीमसेन। (अ. मा.)

उ०—रूठ इसो है रेस, ऊठ महाभड़ ऊठ अब। कूट गहे छंकेस, दूठ ब्रकोदर देख रे। —रामनाथ कवियो

३ किसी प्रसिद्ध भीमनामक योद्धा हेतु किया जाने वाला सम्बोन्धन सूचक शब्द।

४ ब्रह्मा।

रू. भे.—बक्रोदर, ब्रक्रोदर, वक्रोदर, विकोदर, वीकोदर, व्रकोदर।

ब्रकोदरी—सं. स्त्री. [सं. वृकोदरी] पूतना राक्षसी की एक बहन का नाम।

व्रक्क–सं. पु. [सं. वृक्कः] १ हृदय, दिय।

२ गुरदा।

३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

व्रक्ख, व्रक्ष–सं. पु. [सं. वृक्षः] १ पेड़, रूंख।

उ०—१ अनेकं फलं भारिया व्रक्ख ओपै, लियै चाहि सेवा न को जाय लोपै। सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै, महाथंम सौरंभ सिमू विमोहै। —रा. रू.

उ०—२ मंद मंदोमत्ता व्रक्ख धक्का मुडै, गाजता मेघ पाहाड काळा गुडै। ओप ढेचाळ काळी घटा ऊपडै, ऊपरै चीघ आकास नेजा अडै। —गु. रू. बं.

उ०—३ जळ पी रूंख तळै सोय रहिया। इतरै एक सिंह आइयौ। तीं नू देख वीं व्रक्ष पर एक बांदर थो जिको एक डाळ तोड़ कुमार पर गेरी। सो सचेतो होय देखै तो नाहर। तीं सूं देख रूंख पर चढ गयौ। सिंह वीं ठांव ही बैठ रहियौ। —सिंघासण बत्तीसी

२ धर्म।

३ दक्ष पुत्री अनला एवं कश्यप के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान।

रू. भे.—बिरक्ख, बिरख, बिरछ, बिरिख, बिरिछ, बीरख, व्रक्ख, व्रख; व्रच्छ, वछ, विरक्ख, बिरख, विरछ, विरिक्ख, विरिख, विरिख, विरिखि, व्रक्षि, व्रख, व्रख्ख, व्रच्छ, वछ, व्रस, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

व्रक्षचिकित्सा–सं. स्त्री. [सं. वृक्षचिकित्सा] ७२ कलाओं में से एक कला का नाम।

व्रक्षराज–सं. पु. [सं. वृक्षराज] १ पारिजात का वृक्ष।

२ पीपलक नामक वृक्ष।

३ कल्पवृक्ष।

४ वटवृक्ष।

व्रक्षवासी–सं. पु. [सं. वृक्षवासिन्] कुबेर की सभा का एक यक्ष।

व्रक्षायुरवेदयोग–सं. पु. [सं. वृक्षायुर्वेदयोग] वृक्षों चिकित्सा और उन्हें रोपने की विधि, वृक्षों का ज्ञान, चौसठ कलाओं में से एक।

व्रक्षासण, व्रक्षासन–सं. पु. [सं. वृक्षासनं] योग के चौरासी आसनों में से एकप्रकार का आसन विशेष।

वि० वि०—इस आसन में दोनों हाथों के पंजों को जमीन पर सीधा रख कर उन पर सिर टिका कर दोनों पावों को आकाश की तरफ लम्बा करके उलटे मस्तक स्थिर रहना होता है।

इस आसन में प्राण जय शीघ्र होता है। यह आसन करके पांव को घुटने से मोड़ कर एड़ियों को जंघा के निम्न भाग के पास लाने पर अर्द्धवृक्षासन कहलाता है।

व्रक्षि—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—गोरी ससि बलगी रही, वेलि चढी जिम व्रक्षि। विनय करीनइं विलपती, विधि विधि थई विलक्षि। —मा. कां. प्र.

व्रख-सं. पु. [सं. वृष] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम। (अनेका.)

२ कल्प वृक्ष। („)

३ देवराज इन्द्र। („)

४ धर्म। („)

५ इच्छा, अभिलाषा। („)

६ भगवान् श्रीकृष्ण।

७ ग्यारवें मन्वन्तर के इंद्र का नाम। (पुराण)

८ पति, स्वामी।

९ कामदेव।

१० बलिष्ठ व्यक्ति, बलशाली।

११ कामुक व्यक्ति, कामी।

१२ शत्रु, दुश्मन।

१३ न्याय।

१४ शिव का नांदिया।

१५ मूसा, चूहा।

१६ दया। १७ भरतवंशीय राजा जो मधुराजा का पिता था।

१८ पूर्वकाल में पृथ्वी का शासक एक असुर।

१९ सृञ्जय एवं यदुवंशीय उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपालिका के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

२० इक्ष्वाकुवंशीय त्रिवृष्ण राजा के पुत्र त्र्यरुण राजा का पुरोहित।

२१ स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर। २२ विकुंठ देवों में से एक।

२३ अनायुषा के पुत्रों में से एक दैत्यपुत्र जो ब्रह्महन्, पशुहन् आदि का पिता था।

२४ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रों में से एक पुत्र।

२५ कृष्ण एव कालिंदी के एक पुत्र का नाम।

२६ हैहयवंशीय कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र।

२७ अंगराज कर्ण का एक नाम।

२८ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

उ०—भैरव डाकी भणै दुगडियौ मांन विरीजै, जो राजा जीमणौ पोहर हेकण ठेहरीजै। व्रख आडौ देखतां पोर सोळस पारंभस, आठ पोहर योमास चलंऊ भेडी ते सुण। —पा. प्र.

२९ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—व्रख जड़ तोड़ मोड़ वैरियां, धर धारूजळ दांत धरै। माफ राव असौ मद मैंगळ, कोट गढां सैंलोट करै।

—महाराजा जसवंत सिंघ री गीत

उ०—२ उवै पाहड़ उपर नूत रौ व्रख हंतौ। तैरा हाथी रै जितरा फळ। सु फळ नीचा पड़ै। तद फळ रौ पांणी नीसर अर परौ सोनौ हुवै। तद श्री उठं फळ सेधा हुवै सु खावै अर उहां मांखां रौ सोनौ हुवै तैरी ईंटां कर भेळौ करै। —ठकुरै साह री बात

उ०—३ तिण वनि गहण विचाळइ पंथी, आविया गंग सनांन कियउ। चढस्यां किम करता चीतवणी, व्रख एकण विसरांम लियउ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ तद यौगी राजा नूं बन मांही लेय गयौ। वीं ठाव एक सीसम रौ व्रख। तौ पर एक मुरदौ बंधियौ छै। जोगी कही—ईं मुरदं नूं पेड़ पर सूं छोडि आणौ। जोगी आप पूरब दिसा जाय मंत्र साधै। —सिंघासण बत्तीसी

३० देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—१ उण खग नांम लेत जुध आवर, हुय पुर रचै चंदी चंद्रावर। सांमंद तट करि राज समाजा, रिधू तपै तेरह व्रख राजा।
—सू. प्र.

उ०—२ धणी पधारै धांम, सुजस खाटै जगसारै, राज कियौ बड रीत, गिणं व्रख सैस इग्यारै। रह्या जितै रघुराव, धरम मरजादा धारै, आए पधारत ओक, अवधपुर जीव उधारै।
—र. रू.

३१ देखो 'व्रखभ' (अ. मा., नां. मा., ह नां. मा.)

३२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—१ पाताळ अनइ (अ) म्रतलोक आदौपुरि, हेकाहेक मनइ सह हार। व्रखधारी आखियउ विसंभर, वसमउ व्रख राखियउ दुवार। —महादेव पारवती री वेल

उ०—२ वेणी डंड जिमउ विराजइ वासउ, पिड उदमाद धरतौ पाव। व्रख ताइ चंद तणइ विलागउ, व्रख लइतउ घणाइ व्रखराव।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—बीरख, ब्रनख, व्रख, ब्रस, व्रस, विरख, व्रिख, विरूख।

व्रखक—सं. पु. [सं. वृषक] १ साण्ड, बैल। २ गान्धार के राजा सुबल का पुत्र जो द्रौपदी स्वयंवर में शामिल था तथा महाभारत युद्ध में अर्जुन के द्वारा मारा गया था।

३ मोर, मयूर। (अ. मा.)

४ एक कलिंग देशाधिपति का नाम।

रू. भे.—व्रसक।

व्रखकरमा—सं. पु. [सं. वृषकर्मा] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

व्रखकेतु—सं. पु. [सं. वृषकेतु] १ शिव, महादेव। २ कलिंग देश का एक राजकुमार।

३ कामदेव। (अ. मा.)

४ युधिष्ठर के अश्वमेधीय यज्ञ में अश्वरक्षक अंगराज कर्ण के पुत्रों में से एक जो बभ्रुवाहन के द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—व्रसकेतु।

व्रखक्राथ—सं. पु. [स. वृषक्राथः] द्रोणनिर्मित्त गरुडव्यूह के हृदय स्थान में खड़ा कौरव पक्षीय योद्धा।

व्रखचक, व्रखचकर, व्रखचक्र—सं. पु. [स. वृषचक्र] मुहूर्त्तशास्त्र का एक योग विशेष जिसकी गणना सम्बन्धित मास की सूर्य संक्रान्ति से की जाती है।

वि० वि०—गृहारम्भ के समय सूर्य संक्रान्ति से गणना करके श्रेष्ठ-नेष्ठ समय का निर्णय किया जाता है। फलितार्थ है कि सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की नक्षत्र तक गिनती के प्रथम ७ नक्षत्रों का गृहनिर्माण अशुभ, ८ से १८ तक के ११ नक्षत्रों का गृहनिर्माण शुभ और १६ से २८ तक के १० नक्षत्रों का गृहनिर्माण अशुभ होता है। वास्तव में सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की संख्या जब ८ से १८ तक हो तभी गृहनिर्माण का कार्यारम्भ शुभ एवं शेष में अशुभ होता है। (मुहूर्त चिन्तामणि)

रू. भे.—व्रसचक, व्रसचकर, व्रसचक्र।

व्रखण—सं. पु. [सं. वृषण] १ देवराज इन्द्र।

२ दानवीर कर्ण।

३ घोड़ा, अश्व।

४ भगवान् श्रीविष्णु। ५ साण्ड, बैल।

६ वृक्ष, पेड़। ७ अण्डकोश। ८ वृषभराशि।

६ सहस्त्रार्जुन राजा का पुत्र एक राजा।

रू. भे.—व्रसण।

व्रखणकच्छ, व्रखणकच्छु—सं. पु. [सं. वृषणकच्छु] एक प्रकार का वह रोग जिसमे पसीने, मैल आदि के कारण अण्डकोश के पास छोटी-छोटी फुंसियां हो जाती है।

व्रखणास्व, व्रखणास्व—सं. पु. [सं. वृषण+अश्व] इन्द्र के घोड़े का नाम।

व्रखदंस—सं. पु. [सं. वृषदंश] मंदराचल के निकट का एक पर्वत।

व्रखदरभ—सं. पु. [सं. सं. वृषदर्भ] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ उशीनर देशाधिपति शिवि राजा का नाम, जिसने कबूतर की रक्षार्थ अपने शरीर का मांस दिया था।

३ श्रीविष्णु भगवान का नाम।

४ एक राजा जिसने अण एवं गुप्त नियम बनाया था कि ब्राह्मणों को सिर्फ सोना-चांदी, घी आदि दान में दिया जाय।

रू. भे.—व्रसदरभ।

व्रखदेवा—सं. पु. [सं. वृषदेवा] १ विष्णु भगवान्।

सं. स्त्री.—२ वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

रू. भे.—ब्रसदेवा।

ब्रखद्वीप—सं. पु. [सं. वृषद्वीप] एक द्वीप का नाम।

रू. भे.—ब्रसद्वीप।

ब्रखधार, ब्रखधारिण, ब्रखधारी—सं. पु. [सं. विष+धारिन्] १ सर्प, सांप।

२ जहरीला जानवर।

३ शिव, महादेव।

उ०—पाताळ मनइ (अ) म्रतलोक प्रावीपुरि, हेकांहेक मनइ सह हार। ब्रखधारी भाखियउ विसंभर, दसमउ ब्रख राखियउ दुवार।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—ब्रसधार, ब्रसधारिण, ब्रसधारी।

ब्रखधुज; ब्रखध्वज—सं. पु. [सं. वृषध्वज] १ शिव, महादेव।

२ वृत्र-इन्द्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक असुर।

३ गणेश, विनायक।

४ कर्ण के एक पुत्र का नाम।

५ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

६ प्रवीरवंशीय राजा जिसने अपने स्वजनों का नाश किया था।

७ रथध्वज के पिता एक जनकवंशीय राजा।

रू. भे.—ब्रसधुज, ब्रसध्वज।

ब्रखध्वजा—सं. स्त्री. [सं. वृषध्वजा] देवी, दुर्गा।

रू. भे.—ब्रसध्वजा।

ब्रखपत, ब्रखपति, ब्रखपती—सं. पु. [सं. वृषपति] शिव, महादेव।

रू. भे.—ब्रसपत, ब्रसपति, ब्रसपती।

ब्रखपरवा—स. पु. [सं. वृषपर्वन्] १ आंगिरा कुलोत्पन्न एक महर्षि।

२ वृत्र-अनुयायी एक असुर।

३ एक ऋषि जो गन्धमादन पर्वत के पास स्थित अपने आश्रम में रहता था यहीं पर इसने वनवास-काल में पाण्डवों को उपदेश दिया था। ४ शिव का एक नाम।

५ कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक जो असुरों का राजा था।

वि. वि.—इसके राजपुरोहित शुक्राचार्य थे। इन्द्र-वृत्र युद्ध में इंद्र से व देवासुर युद्ध में अश्विनों से इसने युद्ध किया था। इसके शर्मिष्ठा, चन्द्रा व सुन्दरी नामक तीन कन्याए थी। एक बार शर्मिष्ठा के द्वारा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का अपमान किया गया तब शुक्राचार्य ने इसका राज्य छोड़ जाने का निश्चय किया किन्तु इसने उनसे वहीं रहने की प्रार्थना की और अपनी पुत्री शर्मिष्ठा को जन्मभर के लिए देवयानी की दासी बना कर रखा।

ब्रखभ—सं. पु [सं. वृषभ] १ साण्ड, बैल। (अ. मा., डि. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ तूं उपजंइ न खपइ नहु आइस; कुळ न कहिइ कहियउ उकळीण। मीनउ नादि विनोद महामडि, ब्रखभ चडइ तइ वावइ वीण। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाघ ब्रखभ एकठा वहतां, करइ नहीं मन संका काइ। मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रथ गज ब्रखभ तुरंग रथ, दन अनमिति सत दास। सुसा विदा किय नेम सूं, पूरण प्रेम प्रकास। —रा. रू.

उ०—४ जैं जैं सद्द उचार डाक डमरू कर वाजै, मोर हंस अगराज चडी खगराज गरज्जैं। एक हस्ति आरूही ब्रखभ असु उस्ट्र विगत्ती, सरभ चील सादूळ रोछ बदर तर रत्ती। —रा. रू.

२ शखिनी जाति की स्त्री के लिए चार प्रकार के पुरुषों में से श्रेष्ठ पुरुष। (कामशास्त्र)

३ कुशाग्र राजा का पुत्र व पुण्यवत् राजा का पिता एक राजा।

४ हैहयवंशीय कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन राजा का एक पुत्र।

५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ भीम के द्वारा मारा गया कलिंगनरेश का भाई।

७ राम सेना का एक यूथपति बन्दर। ८ काशिराज की कन्या जयंती का पति व अनमित्र राजा का पुत्र।

९ सूर्य वीथी का एक नाम।

१० एक प्रकार की औषधि। ११ गान्धार राजा के पुत्र का नाम।

१२ चौबीस प्रकार के अवतारों में से एक। (अ. मा.)

१३ ज्योतिष की बारह राशियों में से दूसरी राशि।

१४ फलित ज्योतिष मे बारह प्रकार के लग्नों में से दूसरा लग्न।

१५ सृष्टि व छाया का पुत्र एक राजा। १६ एक असुर जो कृष्ण के द्वारा मारा गया।

रू. भे.—ब्रखभ, विखभ, विखभ्र, ब्रखब, ब्रख्ख, ब्रसभ, व्रिखभ, व्रिख, व्रिखभ, व्रिख्ख।

ब्रखभकेतु—सं. पु. [सं. वृषभकेतु] शिव, महादेव।

रू भे.—ब्रसभकेतु।

ब्रखभगत, ब्रखभगति, ब्रखभगती—सं. पु. [सं. वृषभगति] शिव, महादेव।

रू. भे.—ब्रसभगत, ब्रसभगति, ब्रसभगती।

ब्रखभचकर, ब्रखभचक्र—देखो 'ब्रखचक्र'।

ब्रखभधज, ब्रखभधुज, ब्रखभधुजी, ब्रखभध्वज—सं. पु. [सं. वृषभध्वज]

१ शिव, महादेव। (अ. मा., कु. कु. बो., नां. मा.)

उ०—ऊठिया विसन अनइ ब्रह्मादिक, जिगन न होवइ राव अजांण। धुर ताइ करइ प्रणांम ब्रखभध्वज, कथ ब्रह्म तउ वेद पुरांण।
—महादेव पारवती री वेलि

२ यम, धर्मराज। (नां मा.)

रू. भे.—ब्रखबधुज, ब्रखभधुज, बिखभधुज, बिखभ्रधुज, ब्रखभधज, ब्रखभध्वज, ब्रसभधुज, ब्रसभध्वज ।

ब्रखभरासि, ब्रखभरासी—सं. स्त्री. [सं. वृषभराशि] ज्योतिष की बारह राशियों में से एक ।

ब्रखभवाहण, ब्रखभवाहन—सं. पु. [सं. वृषभवाहन] शिव, महादेव । (क. कु. बो.)

ब्रखभांक—सं. पु. [सं. वृषभांक] शिव, महादेव ।

रू. भे.—ब्रखभांक ।

ब्रखभांण, ब्रखभांणु, ब्रखभान, ब्रखभानु—देखो 'ब्रसभांनु' (रू. भे.)

उ०—बेली तरळां तरां विलूंबी, बण हरियाळी बीसवसा । ग्रप ब्रखभांण तणां हर नागर, उपवन जोवण जोग इसा । —बां. दा.

ब्रखभांनुजा—सं. स्त्री. [सं. वृषभानुजा] कृष्ण की प्रेमिका राधिका ।

उ०—नंद सुतन ब्रखभांनुजा, जुग जुग अविचळ जोर । उर में बसं 'ग्रजीत' कं, जय जय जुगळकिसोर । —गजउद्धार

ब्रखभांनुनंदणी, ब्रखभांनुनंदिणी, ब्रखभांनुनंदिनी—सं. स्त्री. [सं. वृषभानुनंदिनी] कृष्ण-प्रेमिका राधिका ।

रू. भे.—ब्रसभांनुनंदणी, ब्रसभांनुनंदिणी, ब्रसभांनुनंदिनी ।

ब्रखभांनसुता—सं. स्त्री. [सं. वृखभानुसुता] कृष्ण-प्रेमिका राधिका ।

रू. भे.—ब्रसभांनुसुता ।

ब्रखभा—सं. स्त्री. [सं. वृषभा] भारत की एक नदी का नाम ।

ब्रखभासा—सं. स्त्री. [सं. वृषभाषा] इन्द्रपुरी ग्रमरावती का एक नाम ।

ब्रखभेक्षण—सं. पु. [सं. वृषभेक्षण] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

ब्रखराज, ब्रखराय, ब्रखराव—सं. पु. [सं. वृपराज] १ शिव, महादेव ।

२ सर्प, सांप ।

[सं. वृक्षराज] ३ कल्पवृक्ष । ४ वटवृक्ष ।

उ०—ब्रखराव तिसा गिरराव विराजइ, ग्रति साखा संवळकता ग्रंग । सिसहर तणो पाखती सोहइ, ग्रह जांणे लागा गयणंग । —महादेव पारवती री वेलि

ब्रखरासि, ब्रखरासी—देखो 'ब्रखभरासि'

उ०—इसी गरमी हुई छै । जु सूर्य पणि हेमाचळ की सरणी पकड़े छै । ग्रर सूरज ही ब्रखि ग्राया छै । ग्रोर तो सब मनुस्य तो रूंखं ग्रावं ही ग्रावं । मांनु सूरज ब्रखरासि नहीं ग्रायो छै । ब्रिख कहतां रूख की छांह ग्रायो छै । —वेलि टी.

ब्रखरूढ—सं. पु. [सं. वृषरूढ] रथ । (डि. नां. मा.)

ब्रखल—सं. पु. [सं. वृषल] १ शूद्र ।

२ घोड़ा, ग्रश्व ।

३ जातिच्युत व्यक्ति ।

रू. भे.—ब्रसल, व्रसल ।

ब्रखलांछण, ब्रखलांछन—सं. पु. [सं. वृष-लांछन] शिव, महादेव ।

रू. भे.—ब्रसलांछण, ब्रसलांछन ।

ब्रखली—सं. स्त्री. [सं. वृषली] १ वह कन्या जो विवाह के पहले रज-स्वला हो गई हो ।

२ वह स्त्री जो रजस्वला हो ।

३ बांझ स्त्री ।

४ वह स्त्री जिसने मृत बच्चे को जन्म दिया हो ।

५ वह स्त्री जो ग्रपने पति को छोडकर पर पुरुष से प्रेम करती है ।

रू. भे.—ब्रसली ।

ब्रखलीपत, ब्रखलीपति, ब्रखलीपती—सं. पु. [सं. वृषलीपति] १ वह पुरुष जिसका विवाह ऐसी कन्या से हुग्रा हो जो विवाह के पहले रजस्वला हुई हो ।

२ २ रजस्वला स्त्री का पति ।

३ मृत बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री का पति ।

४ बांझ स्त्री का पति ।

५ दुष्चरित्रा स्त्री का पति ।

रू. भे.—ब्रसलीपत, ब्रसलीपति, ब्रसलीपती ।

ब्रखब—देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

उ०—ग्रा पुंगळ री उपनी, ग्रो सूरत रो साह । ग्रा पदमण ग्रो ब्रखब गण, नार इणा जोगी नांह । —पनां

ब्रखवात—सं. पु. [सं. वृषवात] वन, जंगल ।

रू. भे.—ब्रिखवात ।

ब्रखवाहण, ब्रखवाहन—सं. पु. [सं. वृष-वाहन] १ शिव, महादेव ।

२ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम ।

रू. भे.—ब्रसवाहण, ब्रसवाहन ।

ब्रखसंकरांत, ब्रखसंकरांति, ब्रखसंकरांती, ब्रखसंक्रांत, ब्रखसंक्रांति, ब्रखसंक्रांती—सं. स्त्री. [सं वृषसंक्रांति] वृषभ राशि में सूर्य के प्रवेश करने का दिन एवं उक्त दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

उ०—जेठ मास लागो छै । सूरिज ब्रखसंक्रांति ग्रायो छै । सु जांणो जं छै । सूरिज ब्रखां ने दरखतां रा मोली ताकै छै । तौ बीजा लोकां री कोण बात । सूरजनी उतराध सामा वहै छै । सु जांणीजं छै । हेमाचळ री सरणी लिग्रै छै । —वेलि टी.

ब्रखसांन—देखो 'ब्रखसेन' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

ब्रखसार—सं. पु. [सं. वृषसार] श्रेष्ठ बैल, साण्ड । (ग्र. मा.)

ब्रखसेण, ब्रखसेन—सं. पु. [सं. वृषसेन] १ दानवीर कर्ण का एक पुत्र जिसकी पत्नी का नाम भद्रावती था यह ग्रर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ यमसभा में उपस्थित एक राजा । ३ ब्रह्मसावर्णि के पुत्रों में से एक ।

रू. भे.—ब्रखसांन, ब्रखसेण, ब्रखसेन, ब्रिग्वसेण, ब्रिखसेन, ब्रिससेण, ब्रिससेन ।

[सं. वृषसूनु] ४ बैल, साण्ड । (अ. मा.)
५ इन्द्र का पुत्र । ६ कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र ।
७ अर्जुन । (अ. मा., ह. नां. मा.)
रू भे.—व्रखसांन, व्रखसेन, व्रमसेन ।

व्रखस्कंध–सं. पु [सं. वृषस्कंध] शिव, महादेव । (डिं. को.)
रू. भे.—व्रसस्कंध ।

व्रखांक–स. पु. [स. वृषांक] शिव, महादेव ।
रू. भे —व्रसांक ।

व्रखांड–सं पु. [सं. वृषांड] एक असुर का नाम ।

व्रखांणगुण–स. पु. [स. वृषाण गुण] भोजन । (अ. मा.)

व्रखा–सं. पु. [सं. वृषा] १ इन्द्र का एक नाम । (ना. डि. को. ह. नां. मा.)
२ देखो 'बरसा' (रू. भे.)
उ०—१ सीत घाम दुख व्रखा सहायै, अनि तजि कंदमूळ लगि लायै । दुख अनेक इम तन मभि दाभै, सुख आगिला जनम कजि साभै । —सू. प्र.
उ०—२ सजळ सलहर, सपत्र, सतप, सुरसंग समीतळ । प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, व्रखा, विग्रह, राका मिळ । —र. ज. प्र.

व्रखाकंप, व्रखाकप—देखो 'व्रखाकपि' (रू भे.) (अ. मा)

व्रखाकपायी–स. स्त्री. [सं. वृषाकपायी] १ लक्ष्मी ।
२ गोरी ।
३ इन्द्र-पत्नी शची ।
४ अग्नि-पत्नी स्वाहा ।
५ सूर्यपत्नी ।

व्रखाकपि, व्रखाकपी–सं पु. [सं. वृषाकपिः] १ सूरज, सूर्य ।
२ शिव, महादेव ।
३ रुद्र का एक नाम ।
४ देवराज इन्द्र ।
५ विष्णु भगवान ।
६ एक महर्षि जो देवताओं के यज्ञ मे उपस्थित थे ।
७ अग्नि, आग ।
८ श्रीकृष्ण । (अ. मा.)
९ ईश्वर, परमात्मा ।
रू. भे.—व्रखाकप, व्रखाकप, व्रखाकप ।

व्रखाकृति, व्रखाकृती–सं. पु. [सं वृषाकृति] १ विष्णु । २ सूर्य, सूरज । ३ आग, अग्नि । ४ देवराज इन्द्र ।

व्रखागिर, व्रखागिरि, व्रखागिरी–सं. पु. [सं. वृषागिर] एक प्राचीन महर्षि ।

व्रखादरभ, व्रखादरभि–सं. पु. [सं. वृषादर्भि] काशीनरेश अनुवंशीय शिवि का पुत्र ।

व्रखामित्र–सं. पु. [सं. वृषामित्र] एक महर्षि जिसने पाण्डवों को वन-वास काल में उपदेश दिया था ।

व्रखासण, व्रखासन–सं. स्त्री. [सं. वृष+आसन] शिव, महादेव ।
उ०—कबहू नहि मंगत और पिया, तजि संगत गोर व्रखासन की । रघुनाथ जु राव रै दासन के, चित आसन आंन उपासन की । —र. ज. प्र.

व्रखासुर–सं. पु [सं. वृषासुर] भस्मासुर नामक दैत्य ।
रू. भे.—व्रसासुर ।

व्रखि, व्रखी–सं. पु. [सं. वृषिन्] १ इन्द्र, देवराज । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—गोत्रग्राव गिरपत गिरंद, धर नग धराधर धार । गिरधारी गिरधर धरै, व्रखी कोप जिण वार । —अ. मा.
२ मगल ग्रह । (अ मा.)
३ वृक्ष, पेड़ ।
४ वृषभ राशि ।
उ०—इसी गरमी हुई छै । जु सूरय पणि हेमाचळ को सरणो पकड़े छै । अर सूरज ही व्रखि आयो छै । और तौ सब मनुष्य तौ रूंखं आवे ही आवे । मांनूं सूरज व्रख रासि नही आयौ छै व्रिख कहतां रूख की छांह आयौ छै । —वेलि टी.
रू. भे —व्रखि ।

व्रखोत्सरग–सं. पु. [सं. वृषोत्सर्ग] एक विशेष प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसके अनुसार किसी मृत्त व्यक्ति के पीछे उसकी स्मृति में किसी बछड़े को दाग कर साड बना दिया जाता है । (पुराण)
रू भे.—व्रसोत्सरग ।

व्रखोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे)

व्रख्ख—१ देखो 'व्रक' (रू. भे.)
२ देखो व्रक्ष' (रू भे.)
३ देखो 'व्रखभ' (रू. भे)
उ०—देवी कौमारी चामुंडा विजेकारो, देवी कुबेरी भैरवी क्षेम-कारो । देवी अगस व्रख्ख हस्तो मयंखं, देवी पंख केकी गरुड धिरट पखं । —देवि.

व्रगुट, व्रगुट्ट, व्रगुटि, व्रगुटी, व्रगुट्टी—देखो 'भ्रकुट' (रू. भे.)
उ०—निरत रत सुर रिखराज अहनांण में, चख भवर व्रगुट फट कमळ पहिचांण में । मिळ कोयौ विधाता 'मान' 'सुरतांण' में, महा-रिण नर समद समद जोधांण में ।
—ठाकुर सुरतांणसींग रो गीत

व्रचत—देखो 'विचित' (रू. भे.)

ब्रचित्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

ब्रच्छ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—उड़ विहंग इच्छ, विस्राम ब्रच्छ, जिहं छांह जीव-सुख हूं सदीव। तह नहिं तमाम, घन सीत धाम, फल फूल फार, ब्रच्छग उदार। —ऊ. का.

उ०—२ सुध्यावंत हूं मालहूं वेण ब्रक्खं, अणंमात ओमो फळां वीएा ब्रक्खं। लिया छांह राखिया ब्रच्छ सूधा, ब्रनै रास कोरा लिया ब्रच्छ ऊंधा। —सू. प्र.

ब्रच्छक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

ब्रछ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ वर्ण बाग ब्रतही बिहद, ता में·········कुबाय। ब्राछी–फर भ्रंवर लगै, ब्रछ रहै ठहराय। —गजउद्धार

उ०—२ पुळियो जस मांग वहै श्रेक पंथी, पाखै वर छलड़ो वण पात। ताकव येम पूछियो तरवर, ब्रछ करवर रहियो कण वात। —रूगनाथ भाऊ सिंचोत रो गीत

ब्रछिक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

ब्रज—सं. पु. [सं.] १ मथुरा और वृंदावन के चारों ओर का प्रदेश या भूभाग जहाँ श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीड़ा की थी।

उ०—१ कुहक बांण कहवांण भयंकर, श्रोसर इंद्र जांणि ब्रज ऊपर। हूं धण रूप जगत छत्र हट्टं, पोरस गिरहर चंद परट्टं। —सू. प्र.

उ०—२ इंद्र धरा ब्रज ऊपरै, ज्यां पेलै जळ जाळ। धर हिंदू सुर पीड़वा, ब्राया चांमरब्राळ। —रा. रू.

उ०—३ ब्राखि पलव करसाख ब्रांगळी, उघरियौ तिणि सिर ब्रनड़। ब्रज राखियौ विगोयौ बासव, वडो ब्रवर कुण विसन वड। —ह. नां. मा.

२ समूह, झुण्ड। (ह. नां. मा.)

३ ब्रज-भाषा।

४ हविर्धान एवं धिषणा का पुत्र, जो स्वयंभुव मनु का वंशज था।

५ देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, रासै रज रिणतूर रुडे। दम्मांमां गरज वहै ब्रज दोमज, गज पाताडक भुरज गुडे। —गु. रू. बं.

६ देखो 'व्रज्या' (रू. भे.)

रू. भे.—बिरज; ब्रज, ब्रज्ज, व्रज्ज, व्रिज, व्रिज्ज।

ब्रजइंद, ब्रजइंदु—देखो 'व्रजयंद' (रू. भे.)

ब्रजचंद—सं. पु. [सं. व्रजचंद्र] १ श्रीकृष्ण भगवान। (ग्र. मा.)

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा.)

रू. भे.—व्रजचंद।

ब्रजणो, ब्रजबो—क्रि. अ.—१ आना, गमन करना।

क्रि. स.—२ मना करना, रोकना।

३ टालना।

ब्रजणहार, हारो (हारी), ब्रजणियो—वि०।

ब्रजिग्रोड़ो, ब्रजियोड़ो, ब्रज्योड़ो—भू० का० कृ०।

ब्रजीजणो, ब्रजीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

ब्रजदेव—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजदेव।

ब्रजदेस—स. पु. [स. व्रजदेश] ब्रजभूमि।

रू. भे.—व्रजदेस।

ब्रजनंद—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

ब्रजन—स. पु. [सं. वृजनं, वृजिनं] १ पाप। (ह. नां. मा.)

२ कष्ट, दुख, तकलीफ। (ग्र. मा.)

३ ब्रजमीढ़ एवं केशिनी के संसर्ग से उत्पन्न तीन पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

ब्रजनाइक—देखो 'व्रजनायक' (रू. भे.)

उ०—नाथण नाग नगर ब्रजनाइक, ब्रावण महर ब्रांगणै। पावन पुरखि नांम पुरखोत्तम, भूधर चरित भामणै। —पि. प्र.

ब्रजनाथ—स. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजनाथ।

ब्रजनायक—सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण।

उ०—सुतन जसोमति सांम सरीर, बजावण बंस बळिभद्र बीर। नमो ब्रजनायक ऊतिम नांम, प्रमेसर पार ब्रहंम प्रणाम। —पि. प्र.

२ विष्णु। (डिं. को.)

रू. भे.—ब्रजनाइक, व्रजनायक, व्रजनाइक।

ब्रजपत, ब्रजपति, ब्रजपती, ब्रजप्पत, ब्रजप्पति, ब्रजपत्ती—सं. पु. [सं. व्रजपति] श्रीकृष्ण का एक नाम। (नां. मा.)

उ०—कमळ नयण कळि ब्रणकळ, बहि ब्रिद लियण ब्रतुळ बळ। ब्रजपति सति रूखमणि वर, घन हरि नरहर गिरधर। —पि. प्र.

रू. भे.—व्रजपत, व्रजपति, व्रजपती।

ब्रजबाळ—सं. पु. [सं. व्रजबाल] व्रज के बालक श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजबाळ।

ब्रजबासी—सं. पु.—१ रामावत साधुओं का एक भेद विशेष। (मा. म.)

२ देखो 'व्रजवासी' (रू. भे.)

ब्रजभाखा, ब्रजभासा—सं. स्त्री. [सं. व्रजभाषा] मथुरा के आसपास के व्रज प्रदेशों में बोली जाने वाली वह भाषा जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। यह भाषा अत्यन्त कर्णमधुर मानी जाती है।

उ०—ब्रजभाखा मुरधर विमळ, आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डंबर, वरणूं करि विस्तार। —सू. प्र.

ब्रजभूखण, ब्रजभूसण—सं. पु. [सं. व्रजभूषण] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

उ०—चीर चोरि तर ऊपर चढियौ, गोपंगना तणा गोपाळ। अरज करै ऊभी जळ अंतर, दै ब्रजभूखण दीनदयाळ। —ह. नां. मा.

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा., ह. नां. मा.)

रू. भे.—व्रजभूखण, व्रजभूसण।

ब्रजभूप—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

उ०—दिविदु विवांन दिवस वासुर दिन, अह इगियारसि दिविसि अनूप। कीजै वरत भजन पिणि कीजै, भगतवछळ रीझै ब्रजभूप। —ह. नां. मा.

ब्रजमंडळ—सं. पु. [सं. व्रजमडल] व्रज और उसके आस-पास के प्रदेश जो कि तीर्थ माने जाते हैं।

उ०—बिलय मुलक रासट उपवरतन, जनपद नीव्रति देस जनात। मंडळ नको अेहड़ो ब्रजमंडळ, अवतरिया हरि करण अख्यात। —ह. नां. मा.

रू. भे.—व्रजमंडळ, विरजमंडळ।

ब्रजमोहन—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

ब्रजयंद—सं. पु [सं. व्रजेंद्र] श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

रू. भे.—व्रजइंद, व्रजइंदु, व्रजयंद, व्रजइंद, व्रजइंदु।

व्रजराज, ब्रजराय, ब्रजराव—सं. पु. [सं. व्रजराज] १ श्रीकृष्ण का नाम।

उ०—१ राज धनखधर रामजी, चक्रधर ब्रजराज। सदा सुधारे संत कै, केई विकटै काज। —गजउद्धार

उ०—२ नरनाथ आण राखे निजर, बांण बखांणां बिसतरै। ब्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै। —रा. रू.

उ०—३ हुवो चटियो कळू प्रघट 'बीका' हरो, भलो सोभाग संसार भाखै। राज हिंदवांण री लाज जिम रहावो, राज री लाज ब्रजराज राखै। —आसियो भोपत

२ वसुदेव।

उ०—करण मसलै उरज तोडै अंगियां कसां, चित चलै अलौकिक करै चाळो। वेस नट तणौ खडो बनवंधिया, बटपडो कुंवर ब्रजराज वाळो। —बां. दा.

रू. भे.—व्रजराज, बिजराज।

ब्रजरेणू—सं. स्त्री. [सं.] व्रज भूमि की धूलि।

उ०—कर विधांन करवत लै कासी, लै ब्रजरेणू लेटै। पायो न विल प्रभु रै पद पंकज, भिसत न त्यांतिक भेटै। —र. रू.

ब्रजलाल—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण का नाम।

व्रजवणता, ब्रजवनता, ब्रजवनिता—सं. स्त्री. [सं. व्रजवनिता] व्रज में निवास करने वाली स्त्रियां, गोपिकाएँ।

रू. भे.—व्रजवणता व्रजवनिता।

ब्रजवल्लभ—सं. पु [सं.] व्रज के प्रिय, श्रीकृष्ण।

ब्रजवासी—सं. पु. [सं.] (स्त्री. व्रजवासण, व्रजवासणी) १ श्रीकृष्ण।

उ०—वंसीधारी ब्रजवासी विहारी, पूरो जंरी प्रीति राधा पिआरी। काळी लीला खेलियौ काज काळो, गाए ध्याए देव गायां गुवाळो। —पि. प्र.

२ व्रज मे निवास करने वाला व्यक्ति।

उ०—जद त्यां कह्यो—म्हैं भोखणजी स्वांमी रा टोला रो। जद तै बोली—हे रांडां! थे पंलकेई म्हारी रोटी लै गई। उरहो दो म्हारी घ ट। इम कहि धाट लेवा लागी। जद एक ब्रजवासणी वरजै—हे कोकी! अतीत नै दियो पाछो मत लै। जद तै बोली—कुता नै न्हांख देसूं पिण इणां कना सूं तो उरहो लेसूं। —भि. द्र.

३ वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

४ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—व्रजवासी, व्रजवासी, व्रजवासी, व्रजवासी।

ब्रजविलास—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजविहार, ब्रजविहारी—सं. पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा)

ब्रजवैकुंठविहारी—सं. पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

ब्रजस्पति ब्रजस्पती—सं पु—श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजांगना—सं स्त्री.—व्रज की स्त्री, गोपिका।

ब्रजांग, ब्रजाक, ब्रजाग, ब्रजागनि, ब्रजागनी, ब्रजागि. ब्रजागिन—सं. पु. [सं. वज्र+अग] १ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—वाजिन्न जेमं पइ ठवइ वेस, दोमजां अस्सि ओपमा देस। माणिक्क लियउ भीदड़इ मागि, वइरियां सिरै वाहण ब्रजागि। —रा. ज. सी.

२ देखो 'वजरंग' (रू. भे.)

उ०—वाहरू मीत जाणे ब्रजागि, लसकर कपि मिळिया वेध लागि। जैचंद दळांबळ देखि जाण, तोलै खग बोलै एम ताम। —सू. प्र.

३ देखो 'वजराक' (रू. भे.)

उ०—१ धड़धड़ धार बिहूक हुवइ धड, खाग ब्रजाग वाव रण खेत्र। गण पाठै वाजिया विसम गति, निलवट सुर बांधियो नेत्र। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भारथि भागि ब्रजागि महाभड, जोध जडाग वडा खळ भागै। मेर सजाद देस दस मालिम, मुगळां कन्है पेसकस मांगै। —अ. पि.

उ०—३ वस दिसा एम फुरमांण दीध, लायकां भड़ां सिर चाढ लीध। जुध सरांजाम सझि सझि व्रजागि, लोहमैं सरसि भुज उरसि लागि। —सू. प्र.

उ०–४ 'तोड' री 'सळल' कुळ चाढ तोह, दन खगां विरद व्रजवाळ दोइ। 'बीरम' 'सळखावत' खगां वाग, जोड्यो वाढि बिढियो व्रजाग। —सू. प्र.

उ०—५ इणि भांति रा घोड़ा असवार आगि व्रजागि माहै अडि पड़ैं। सिर पड़ियं लड़ै। हाथियां रैं दांत चडैं। हिंदू मुसळमांण। नरसमंद खुरसांण। च्यारि चकू नव खंड प्रिथी रा जगजेठ जोधार जमदूत राजिंद्र जोगिंद्र रूप करि वजेणि खेति नर हैंवर घेघिगर चोदंत हूआ। —र. वचनिका

उ०—६ हथनाळ हवाई हूकळंत, गजनाळां गोळां गडिग्रडंत। बळती व्रजागि उड्डै वहंत, भारावो छूटो आवरंत। —गु. रू. बं.

उ०—७ हुय हैकंप कांपियो हजरति, लागुआं परै नीसरी लाय। वहमंड 'अमर' भूजाडंड वहती, धाढाळी जळहळी व्रजाग। —केसोदास गाडण

व्रजिन–सं. पु. [सं. वृजिनं] १ पाप, कुकर्म (अ. मा.)

२ कष्ट, दुःख, पीड़ा। (नां. मा.)

रू. भे.—व्रजिन।

व्रजियोड़ो–भू. का. कृ.—१ गया हुआ, गमन किया हुआ। २ मना किया हुआ, रोका हुआ। ३ टाला हुआ।

(स्त्री. व्रजियोड़ी)

व्रजेंद्र–सं. पु. [सं. व्रज+इन्द्र] श्रीकृष्ण।

व्रजेन—देखो 'व्रजन' (रू. भे.)

व्रजेस्वर–सं. पु. [सं. व्रज+ईश्वर] श्रीकृष्ण।

व्रज्ज—१ देखो 'व्रज' (रू. भे.)

उ०—१ देवी गोर रूपा अलां नव्व-निद्धि, देवी सक्कळां भक्कळां स्रव्व सिद्धि। देवी व्रज्ज विमोहणी वोमवांणी, देवी तोतला गूंगला कतियांणी। —देवि.

उ०— २भरै मांग सिंदूर मारग्ग भाळै, वहै सांमळो व्रज्ज सेरी बिचाळै। वहै लारलै वार पिंडार वाळै, नवा नेह सूं देह गोपी निहाळै। —ना. द.

२ देखो 'व्रज्ज' (रू. भे.)

उ०—घड़हड़इ धरा पइ मगरधज्ज, वेगवत जेम गइणागि व्रज्ज। जुधि दियइ साखि संसार जास, दोनाळी चढियउ किसनदास। —रा. ज. सी.

व्रज्जवासी—देखो 'व्रजवासी' (रू. भे.)

उ०—खत्री काहे को कंस रैं हेत खासी, विचै वाट मार्थं वहै व्रज्जवासी। घरै कंस रैं नुं बळी तात घाठो, तदा ताहरी केथ खत्रोट ताठो। —ना. द.

व्रज्या–सं. स्त्री. [सं.] वेदोक्त विधांन, रीति, मार्ग।

उ०—पर बार बार सिराहि भोगां मैं आसक्त आळसी भोर अव-नीसां रा आसय मैं सूतो बीररस जगायो। उठै ही सुपुत्र री बणायो बापी समेत आपरा अभिधांन करि अंकित ईस्वरी रो अगार ईखि अजांन हूं ऊतरि वेद री व्रज्या करि बंगेस्वरी री अरचन कियो। —व. भा.

रू. भे.—वरज्या, व्रज।

व्रण–सं. पु. [सं.] १ जख्म, घाव।

उ०—कठमाला गड़ गुंबड़ सबला, व्रण कुरंम रोग टळइ सगला। पीड़ा न करइ कुण गलि फोड़ऊ, नित नांम जपउ स्रीनाकउड़उ। —स. कु.

उ०—२ पगहाथ पड़ै नस माथ पखैं, लग चाव सुरां रव दाव लखैं। अंग एक थकै तड़फै असुरां, सिर चीर नरा व्रण सेल सरां। —रा. रू.

२ फोड़ा-फुन्सी, बालतोड़।

३ चेचक का दाग।

४ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ वपा व्रण चोळ वणै तिणवार, जोधांपति हूंत सभेस जुहार। सभैं रवि सेस महेस सराह, अखै भ्रण वार 'अभंमल' वाह। —सू. प्र.

उ०—२ सिन्नांन घात मधि सधियास, उचरत मंत्र गायत्रि अभ्यास। आस्रम चत्र अरु चत्र व्रण उदार, क्रत करत दांन खोडस प्रकार। —सू. प्र.

५ देखो 'वरणन' (रू. भे.)

उ०—कसि आवध हल्लै, कमंध आखू व्रण अग्गो। मुख सूरज बारह मंडै, भौंह मूंछ भिड़ग्गी। —सू. प्र.

रू. भे.—बरण, ब्रण, ब्रन, ब्रन्न. वण, व्रन।

व्रणसोथ, व्रणसोस–सं. स्त्री. [सं. व्रणशोथ] फोड़े, घाव आदि पर होने वाली सूजन। (अमरत)

व्रतंत, व्रतंति, व्रतती, व्रतंतु, व्रतंतू—देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ भयो स्राप सुर भूप को, आतम कदन अनंत। अपछर 'आणंद' रैं घकै, वरण्यो सब व्रतंत। —पा. प्र.

उ०—२ सइ मुखि ढोलइ पूछिया, मारू तणा व्रतंति। ढोलउ नइ भाऊ, किन्हइ वेसारी एकंति। —ढो. मा.

उ०—३ निसुणीउ वयणु गभेलउ बोलइ, कोइ न तिहुयणि जो तुझ तोलइ। निसुणउ हिव इह कन्न व्रतंतू, एह रहइं होइ संतणु कंतू। —सालिभद्र सूरि

व्रत–सं. पु. [सं.] संकल्प, प्रतिज्ञा।

उ० —१ एती एक न आदरी, जेती अक्खी साह। कमधज्जां नव कोट रां, ओट लियो व्रत चाह। —रा. रू.

उ०—२ जगनाथ का हेमराज राज काज पूरा, 'व्रजमाल' के व्रत काज सूरां सैं सूरा। वखेराज प्रोहित को हित मायें कूंण, 'दलपत' वेदा द्रोणगुर जेसें जोर दूणो। —रा. रू.

उ०—३ 'खेतो' 'सूर' तणो जमाई, मुज तिण जोड़ 'समेळो' भाई। 'पोथो' 'मुकन' बिन्हे व्रत पूरा, साथै दलरांमोत सनूरा। —रा. रू.

उ०—४ बारवना रहो धारै व्रत, व्रत स्यांमावत तणं उमाह। पिढ़ि खुरसाणं बींद परखियौ, वढ़ि कुवांणं हुवा विमाह। —उदैभांण राठौड़ री गीत

२ नियम।

उ०—१ केइक पुण्यवंत प्रांणिया रे, चेत कियो धरम सार। साधु स्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सेंठो धार रे। —जयवांणी

उ०—२ वलता गुरु बोलिया तरै ए, तूं पहला व्योपारी की परै ए। ते वांका प्रश्न बातां कही ए, विण जांणूं छूं व्रत लेसी सही ए। —जयवांणी

उ०—३ जोग जिग व्रत धरत नेम, अनंत महमा गरत पेम। सिर सहत निसदिन घोम सीत, मन पंच इंद्री दमन जीत। —अनुभववांणी

३ धर्म, कर्त्तव्य।

उ०—बडै वंस ऊपनी वडी रांणी भटियांणी, बोली राजा हूंत जिका पूरै व्रत जांणी। तो पूठे वरजांग साख जेसांण सुमत्तो, पहू चोरी परणतां चढै नह को चकवतो। —रा. रू.

उ०—२ सुज कंत धंत धमरां सुपुरि, चोमोड़ी हरि ऊभरै। छत्रपती सनेह 'चंदू' छडो, सेखावत व्रत संभरै। —रा. रू.

४ आराधना, भक्ति।

उ०—१ बिल मो ध्यांन अकाळग्य दरसी, वीरचंद्र राजा इण वरसो। श्रवं सिव सीस चढासी आचां, सिव रीझसी देखि व्रत साचां। —सू. प्र

उ०—चालो चालो चंपाबाड़ी, सातूं मिळ सहेली हे। नणंद म्हारी। ईसर गोरजां रो व्रत करस्यां, और रमसां खेलस्यां सारो। —रसीलै राज रा गीत

५ पुण्य प्राप्ति हेतु पुण्य तिथि को नियमपूर्वक किया जाने वाला उपवास।

६ अनुष्ठान करने की पद्धति, विधि।

७ अनुष्ठान करने की क्रिया या कार्य।

८ यज्ञ, हवन, होम।

९ देश, राष्ट्र। (अ. मा.)

१० कुऐं से मोट (चरस) निकालने का मोटा रस्सा।

११ अभूतरजस् देवों में से एक।

१२ चाक्षुष मनु एवं नड्वला के पुत्रों में से एक।

१३ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

१४ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—'अजन' करायो एक, डेरै व्रत जेसो। इण सोम तारीक, श्रोप मुर चोम अनेसो। —रा. रू.

रू. भे.—वरत, व्रत, व्रत्त, वरत, बरत, विरत, व्रतु, वित।

व्रतउपवास—सं. पु. [सं.] किसी प्रतिज्ञा या कार्य सिद्धि हेतु किया जाने वाला उपवास।

व्रतघण—सं. पु. [सं. वृत्रघ्न] इन्द्र का नाम।

व्रतचरया—सं. स्त्री. [सं. व्रतचर्या] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने की क्रिया।

व्रतचारी—स पु. [सं. व्रतचारिन्] व्रत करने वाला।

व्रतणो, व्रतबो—देखो 'वरतणो, वरतबो' (रू. भे.)

उ०—वाहि तेग संमाहि आसो, हहकारी व्रतियो। धन्य तेरी ध्यान करमणि, सीझनी साको कियो। —वील्होजी

व्रतणहार, हारो (हारी), व्रतणियो—वि०।

व्रतिप्रोड़ो, व्रतियोड़ो, व्रत्योड़ो—भू० का० कृ०।

व्रतीजणो, व्रतीजबो—कर्म वा०।

व्रतद्वयीपूनम, व्रतद्वयीपूरणिमा—सं. स्त्री. [सं. व्रतद्वयीपूर्णिमा] फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को किया जाने वाला नक्तव्रत तथा सूर्योदय पर सूर्य का एवं चन्द्रोदय पर चन्द्रमा का पूजन।

वि० वि०—उक्त पूजन नक्तव्रत करने का कारण है कि उक्त दिन कश्यपऋषि के ओरस और अदिति के गर्भ से अर्यमा (आदित्य) एवं अनसूया के गर्भ से चन्द्रमा उत्पन्न हुए थे।

व्रतधार, व्रतधारी—वि. [सं. व्रतधारिन्] व्रत धारण करने वाला।

उ०—व्रतधारी स्रावक, हुवा ए, राजादिक बहु लोग। पुन्न तणं परसाद थी ए, थायै सगला थोक। —ध. व. ग्रं

उ०—२ 'सांगो' 'साहिब' तणो सिचाळो, वांकमि वींद 'लवेरै' वाळो। धारण मेर 'पतो' व्रतधारी; 'ईंदावत' कळि नियण उधारी। —रा. रू.

उ०—३ 'केहरि' तण पण लडण अकूंणो, लीवा वरत 'जगपती' 'लूंणो'। श्रं कूंपा साथै अहंकारी, घणी तणा जतनां व्रतधारी। —रा. रू.

उ०—४ तरसि पधार हुआ तय्यारी, 'श्रोर' तणो आयो व्रतधारी। रांणी जळती 'ऊदै' राखी, सुख नव कोट किया जग साखी। —रा. रू.

व्रतपारणा—सं. पु. [सं.] व्रत की समाप्ति जो प्रायः तुलसी या भगवान् को अर्पित पदार्थ से की जाती है।

व्रतभंग, व्रतभंगी—सं. पु. [सं. व्रत-भंग] १ व्रत या नियमों को भंग करने वाला व्यक्ति।

२ काव्य रचना का एक दोष।

उ०—व्रतभंगो हूं ग्ररथ लय, नांहां भय रस नास। कुकवी वंसक तुल्य कर; बरणं सुकवि विमास। —बां. दा.

व्रतभिक्षा, व्रतभीख—सं. पु. [सं. व्रतभिक्षा य भिक्षाव्रत] यज्ञोपवीत के समय बालक द्वारा मांगी जाने वाली भिक्षा।

व्रतमाण, व्रतमान—देखो 'वरतमांन' (रू. भे.)

उ०—माह मास व्रतमान, धरक बैठो वत्तराइणि। सुकल पख्य रिति सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि। —ल. पि.

व्रतबैरी—स. पु. [सं. वृत्र+वैरी] इन्द्र, सुरपति।

व्रतसंग्रह—सं. पु. [सं.] यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाने वाली दीक्षा।

व्रतहा—देखो 'व्रत्रहा' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

व्रतांत, व्रतांति—सं. पु. [सं. वृत्तांत] १ किसी बीती हुई घटना, बात विषय या स्थिति से सम्बन्धित विवरण।

उ०—वत्तमकुमर किहां ग्रछं; ग्रागलि कहि व्रतांत। जीवै छै किवा मूग्री, भांजि भाजि मन भ्रांत। —वि. कु.

२ समाचार, खबर।

उ०—ग्रा वात जांणि सलखराज प्रमार बांई तरफ टक्टि नागोर ग्रायो ग्ररु संबंध रो व्रतांत ग्रजमेर कहायो। —वं. भा.

३ विषय, प्रसंग।

४ दशा, हालत।

रू. भे.—बिरतंत, बिरतंति, बिरतांत, व्रत, व्रतांत, विरतंत, विरतंति, विरतांत, व्रतंत, व्रतंति, व्रतंती, व्रततु, वतंतू, व्रात, व्रत्त, व्रत्तांत, व्रत्तांत।

व्रतारि, व्रतारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे.)

व्रतासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—सुरनाथ व्रतासुर साखियात, प्रगटे कि सस्त्र रव वज्रपात। सिव त्रिपुर समर प्रगटे सवेष, देवेस कि मिथ्या वासुदेव। —रा. रू.

व्रति—सं. स्त्री [सं. वृत्ति] १ चक्कर, घुमाव।

२ परिधि, व्यास।

उ०—वृति जुति ग्रगनि ग्रधूम विराजं, रतन जड़ित वेदी दुति राजं। दिव्य कास्ट खट जाति ग्रदूलती, ग्रगर कपूर घिरत जुत ग्राहुति। —रा रू.

३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा।

४ चित्त, मन ग्रादि की क्रियाएं या व्यापार।

५ चित्त, मन ग्रादि की स्थितियां।

उ०—व्रति ग्रादि सस्त्र विद्या वरण, उच्छव वादि ग्रघट्टियां। परकास ग्ररध रवि पेखियां, फिरि मधु मास पलट्टियां। —रा. रू.

वि० वि०—ये स्थितियां पांच प्रकार की होती हैं जैसे—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, विरुद्ध ग्रादि।

५ इच्छा, चाह, ग्रभिलाषा।

उ०—वधं भक्ती स्रद्धा भवन नव स्परधा व्रति वधं, वधं वो जिग्यासा ग्रगम गम ग्रासा व्रति वधं। ग्रभ्यासी वैराग्य प्रनत ग्रनुराग्य व्रति वधं। वधं घेरधा लंभो तव चरन लंभी व्रति वधं। —ऊ. का.

७ क्रिया, कर्म या विधान, जिसके करने से कुछ होता है।

उ०—तुं ही करत्ता घरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तुं हीं, तुं ही नाही भरत्ता ग्रभय भयहरत्ता नित तुं हीं। तु हीं ग्याता ग्येय प्रकृति बनि ग्याता पद तुं हीं। तु हीं ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता प्रत तुं ही। —ऊ. का.

८ प्रकृति, स्वभाव, ग्रादत।

९ वर्तमान में होने की ग्रवस्था, स्थित ग्रस्तित्व।

१० हालत, दशा, परिस्थिति।

११ परिस्थिति, स्थिति।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह, व्रति ग्रछर लेत विमोह। सब सस्त्र संजुत सूर, पयदात भूंड सपूर। —रा. रू.

१२ याचना कार्य, भिक्षा वृत्ति।

१३ गति।

उ०—ग्रागं सेरविलंद सेन सनमुख चलायो; दळ जादव ऊपरां जांण नाळव दरसायो। कुहक बांण हथनाळ विसख वरखें तिण-वारां, व्रति ग्रांमण वद्दळां जांण घण मत्ती धारां। —रा. रू.

१४ तौर, तरीका, ढंग, रीति।

उ०—तनि ग्रोप करण कवि बरण तास, प्रति नवल जलद विद्रुति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति ग्रमित विद्ध, परमणिय हंस किरि गुढ प्रसिद्ध। —रा. रू.

१५ ग्राचरण, चालचलण, चरित्र।

१६ धन्धा, पेशा।

१७ जीविका, रोजी।

१८ मजदूरी, पारिश्रमिक।

१९ किसी जनसमूह, समुदाय या जाति के लोगों द्वारा किसी ग्रन्य जाति या जनसमूह के लोगों के घर पर जीविकोपार्जन के लिए किसी ग्रवसर पर या साधारण समय में नियमपूर्वक सेवा के रूप में किया जाने वाला कार्य।

२० नीयत।

२१ किसी दीन, विधवा, छात्र ग्रादि को लगातार निश्चित समय पर सहायतार्थ दिया जाने वाला कुछ धन।

२२ मनु नामक रुद्र की पत्नी।

२३ अमिताभ देवों में से एक।

२४ व्याख्या, टीका।

२५ शब्दार्थ बतलाने वाली शब्द शक्ति।

२६ वाक्य की रचना करने की शैली।

वि. वि.—संस्कृत भाषा में ये शैलियां चार प्रकार की मानी जाती हैं जैसः—

१ कैशिकी (कौशिकी) वृत्ति—इसके द्वारा शृंगार रस का वर्णन किया जाता है।

२ सात्वती वृत्ति—इसके द्वारा वीर रस का वर्णन किया जाता है।

३ आरभटी वृत्ति—इसके द्वारा रौद्र व वीभत्स रसों का वर्णन किया जाता है।

४ भारती वृत्ति—इसके द्वारा अवशेष रसों का वर्णन किया जाता है।

२७ गीत तथा वाद्य के प्रयोग-वैचित्र्य का प्रदर्शन। (संगीत)

वि.—गोलाकार, गोल।

उ०—सिर चमर चौसर सोह, व्रति सूर किरण विमोह। परिवेस सुभट सप्रीत, गढ आवियौ 'अगजीत'। —रा. रू.

रू. भे.—बरती, बिरत, बिरति, बिरती, बिरत्ती, बीरत, व्रित, वरत, विरत, विरति, बिरती, विरत्त, विरत्ति, विरत्ती, वीरत, वीरति, वीरती, व्रती, व्रत्ति, व्रत्ती, व्रिति, व्रिती, व्रित्ति, व्रित्ती।

व्रतिम—सं. पु. [सं.] वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर का अठारहवां व्यास।

व्रतियोड़ौ—देखो 'वरतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रतियोड़ी)

व्रती, व्रतीक—सं. पु. [सं. व्रतिन्] १ व्रत धारण करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ आदू वेर छै ब्राह्मण व्रतियां रे, मूस मंजारी जेम। बलै सगपण सांकड़ौ रे दूध दध मेल तेम के। —जयवांणी

उ०—२ राजा घणी चतुराई सूं झारी भरि रखीस्वरां रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवांणी करि दीनी, जावौ रांण्यां नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरै पधारिया। उण राति राजाजी व्रतीक व्या तिकी सुख में पोढ्या छै। —रा. वंसावळी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

रू. भे.—बरत, बरती।

व्रतु—देखो 'व्रत' (रू. भे.)

उ०—१ व्रतु लेउ विदुरु गयउ वन माहि, कन्हु वली द्वारावती जाइ। बिहु पखि चालइ दल सांमही, बिहु पखि आवइ भड गहगही। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सामीय गणहर पासि पांचह ए हुरखिहिं व्रतु लिइं ए। सांभली बलिभद्र बात नियमव्रू ए पूठए पूछइं प्रभु कन्ह ए। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ सुगुरु यसोधर पासि हरखिहि ए पांच ए व्रतु धरए। कणगावलि तपु एकु बीजऊ ए करई रयणावली ए। —सालिभद्र सूरि

व्रतेयु—स. पु. [स.] राजा रौद्राश्व एवं घृताची के दस पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

व्रतेसर, व्रतेसरी, व्रतेसुर, व्रतेसुरी, व्रतेस्वर, व्रतेस्वरी—सं. पु. [सं. वृत्ति+ईश्वर+ई] वह व्यक्ति या जनसमुदाय जो किसी अन्य व्यक्ति या जनसमुदाय के घर विशेष अवसर पर या साधारण समय में नियमित रूप से सेवा के रूप में जीविकोपार्जन हेतु कार्य करता है। (मा. म.)

उ०—गोडां रै कुळदेवी नारायणी केळ मैं विराजै है। केळा गोड न खावै। केळां रा पांन रा दोनां मैं जीमै नहीं। लाखण गोड भाट हुवौ जिण रै वंस रा लाखणोत भाट गोडां रा व्रतेसरो। —बां. दा. ख्यात

रू. भे.—बरतेसरी, बिरतेसर, बिरतेसरी, बिरतेस्वर, बिरतेस्वरी, वरतेसर, विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी।

वृत्त—सं. पु. [सं. वृत्त] १ जीविका का साधन।

२ चरित्र, चालचलन।

३ कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

४ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिन्दु उसके अन्दर के मध्यबिन्दु से समान अन्तर पर हो।

५ वह छन्द जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम हो।

६ शिष्ट एवं सुच्छाया के पुत्रों में से एक पुत्र राजा।

७ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसमें रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण एवं अंत में गुरु एवं लघु हो।

वि.—१ जीवित जिन्दा।

२ घटित हुवा हुआ।

३ मरा हुआ, मृत।

४ दृढ़, मजबूत।

५ बीता हुआ, गुजरा हुआ।

६ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

७ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ आय निकट बूंदीस सौं सब वृत्त कहाया। —वं. भा.

उ०—२ रहै कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखे। जेह व्रत जिन पखै बाधक, तेह कदापि नवि भाखै। —वि. कु.

उ०—वलतूं मयणा बोनवै रे, तात ! सुणो मुझ व्रत। तुमने विण करमे किया, होजी राजन ! राज निमित्त। —श्रीपाळरास

रू. भे.—व्रित।

व्रतांत, व्रत्तांत—देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ स्वजन वेवाहिय घूरइं झूरइं निगहिय नेह, लेई प्रचेत ऊपाडिय माडिय प्राणीय गेहि। भूतलि भंमर भोलिय डोलिय जिम न चडंत, विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय तै व्रत्तांत।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ पांणी राजोर कर पांच कोस परा जाय नीसरिया। कराड़ं लागिया। जाय राजा सूं मिळिया। रतन पांच म्होंडा सांम्है मेलिया। सगळो व्रत्तांत कहि सुणाइयो। राजा कह्यो—सावास थानूं, प्रपणा धणी री श्राग्या पाळी। इतरो कहि पांच करोड़ इनाम दोन्हां। —सिंघासण बत्तोसी

उ०—३ सेठ उज्जेण श्राय राजा नूं सकळ यात्रा रा व्रत्तांत कहि त्या स्त्री-पुरस री वारता कही। राजा कही—मोनूं लेय हाल। सेठ कही—बहुत दूर। तद राजा वी नूं गुटको देय तत्काळ दोनूं जाय पहुँचिया। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—४ भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर यग्य करायो। देवी री श्राग्या हुई—हमे भाऊ पाछो दिखण नूं परो जावै, दूजं महीने श्राय साह सूं जंग करे तो भाऊ री फतै हुवै। विरांमणां श्रो व्रत्तांत भाऊ नूं सुणायो। भाऊ न मांनियो।

—बां. दा. ख्यात

व्रत्तारि, व्रत्तारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे.)

व्रत्तासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

व्रत्ति—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

व्रत्तिकार—वि. [सं. वृत्तिकार] १ वृत्ति करने वाला।

२ टीका करने वाला, टीकाकार।

व्रत्ती—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

उ०—१ श्रा व्रत्ती किम श्रादरू, कुंवर कोमळ श्राकृती। पिण हर प्ररि पालणो, कुसळ राखणो धरती। —रा. रू.

उ०—२ व्रत्ती तीन चीन मन मेरा, निरभय पद लो सरना। निरभय पद सुखरांम निजानंद, प्रपना श्राप श्रमरना।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

व्रत्यनुप्रास—सं. पु. [सं. वृत्ति+अनुप्रास] एक प्रकार का अनुप्रास विशेष जिसमें एक या अनेक व्यंजन-वर्ण भिन्न-भिन्न रूपों में बार-बार आते हों।

व्रत्र—सं. पु. [सं. वृत्रः] १ अन्धेरा, अन्धकार।

२ पर्वत, पहाड़।

३ बादल।

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—व्रत्र।

व्रत्रघन, व्रत्रघ्न—सं. पु. [सं. वृत्रघ्न] वृत्रासुर का शत्रु इन्द्र।

व्रत्रहा—सं. पु. [सं. वृत्रहा] देवराज इन्द्र। (नां. मा.)

रू. भे.—व्रतहा।

व्रत्रारि, व्रत्रारी—सं. पु. [सं. वृत्र+अरि] वृत्रासुर का दुश्मन, इन्द्र।

रू. भे.—वरतारी, व्रत्रअरी, वरतारी, वरत्तारी, वरत्रारि व्रतारि, व्रतारी. व्रत्तारि, व्रत्तारी।

व्रत्रासुर—सं. पु. [सं. वृत्रासुर] त्वष्टा का पुत्र एक राक्षस जो देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि० वि०—इसकी माता का नाम दानु था। यह पूर्वजन्म में पाण्डय देश का राजा चित्रकेतु था जो सम्पूर्ण विद्याधरों का राजा था, किन्तु पार्वती के शाप के कारण असुरयोनि में जन्म लिया। एक बार इन्द्र ने विश्वरूपा नामक ब्राह्मण को मार डाला अतः उसके पिता त्वष्टा ने इन्द्र से बदला लेने वाले पुत्र की प्राप्ति हेतु यज्ञ में आहूतियां दी एवं इसे उत्पन्न किया। इसके आतंक से भयभीत होकर इन्द्र, गन्धर्व, किन्नर आदि भगवान् विष्णु की शरण में गये। विष्णु की राय से इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों (जो कि नारायण कवच मंत्राभ्यास के कारण अत्यधिक बलवान् हो गई थी) से वज्र बनाकर उसी वज्र से इसका वध किया।

रू. भे.—व्रतो, वित्रा, वित्रासुर, वेत्रासुर, वैत्रासुर, व्रतासुर, व्रत्तासुर, व्रत्र।

व्रथ, व्रथा—वि. [सं. वृथा] १ निष्प्रयोजन, व्यर्थ, फिजूल।

उ०—१ सुक पिक लगे सवाद, भल थोड़ो ही भाखणो। व्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यूं भंरिया।

—महाराजा बळवतसिंघ रतलाम

उ०—२ पण म्हारै श्रो पण छै—सगे री नाळे'र श्रायो पाछो न मेलूं। सो माजी, म्हारो वचन गयां, जमवारो व्रथा जासी। तिण सुं थे राजी हुय मनै फुरमावो, ज्यूं म्हारो भलो हुवै, श्रर थांहरै सत तपस्या सुं माहरो कुही न बीगड़ै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ प्राळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणो घर रो कांम, परोपकार, वीरता, देससेवा श्रादि श्राछा कांम न करणा मैं व्रथा यूं ही वेस ऊमर गमावै है।

—वी. स. टी.

उ०—४ मुंधा हालरा उगेर व्रथा पालणै हलाया माता, पोखै केण कारणै जिवाया थांनै पीव। लोक लाज धारणै फिरंगी हूंता झाट लेता, जे'र खाय धणी रै बारणै देता जीव।

—वलजी महडू

२ असत्य, झूठ। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रू. भे.—बिरथा, ब्रथा, बिरथा, व्रिथा।

ब्रद—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—'अमर' आगरै असिप्रात उबारी, मड़ ओपण ब्रद भारी। पंच हजारी मुगळ पाड़ियौ, कमधज तणी कटारी। —रूघौ मुहतौ

उ०—२ लांनाणै खंड़ै खड़ग बळ लाधौ, लाधौ ब्रौ ब्रद आज सलाह। कांधल कहै, रूधियां केहर, साथ किसौ ताइ किसौ सनाह।

—राव कांधळ रौ गीत

उ०—३ महै ब्रह्म-अग्या ब्रदां मेथ लीधौ, दसंकंध आगै हुए प्राणि दीधौ। बदै रांण नूं कोप कै दात वारां, किसै बैर तै थाट भारै कंवारां। —सू. प्र.

ब्रदधारी—देखो 'बिरुदधारी' (रू. भे.)

उ०—तूं मोटी दातार भगतवच्छळ ब्रदधारी, 'जगौ' कहै कर जोड़ अरज हरि सुणौ हमारी। काया नगर मझार पंच तसकर पावीजै, कांम क्रोध मद मछर कुबुध ममता काढीजै। —ज. खि.

ब्रदपूर—देखो 'बिरुदधारी'

उ०—१ जोधा भड़ एह पटायत जांणि, वधै जुध सूर 'उमेद' बखांणि। सझै खळ थाट खगां झट सूर, 'पतौ' 'महरांण' तणौ ब्रदपूर। —सू. प्र.

उ०—२ कळायण बीच लडंत करूर, 'पतौ' इंद्रभांण तणौ ब्रदपूर। 'नाथौ' 'अमरावत' लाग अनाग, 'जगावत' जूटत सूर अजागि। —सू. प्र.

ब्रदराज—देखो 'बिरुदधारी'

उ०—रिणवट बांध जोप जुध रांणा, लड़ ग्रह मुर सुरतांण लिया। खित चित कोट जिसा खूंमांणा, दूसांसण ब्रदराज दिया।

—हरिदास केहरियौ

ब्रदाळ—देखो 'बिरुदाळौ' (मह., रू. भे.)

ब्रदाळी—१ देखो 'बिरुदावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बिरुदाळौ' (रू. भे.)

ब्रदाळौ—देखो 'बिरुदाळौ' (रू. भे.)

ब्रद्द—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—जिकै वस दाता हुवा सूर जेता, तिकै ब्रद्द बोलै सुणै भूप तेता। उभै वात रो पात दाखै अहांची, खत्रीध्रम्म छाडो क बांनैत बांची। —सू. प्र.

उ०—२ वणै सूरदाता उभै ब्रद्द वंका, लियां हूंत पै'ली दिवी दांन लंका। दुवै छेह सांमंद्र बाधौ वधारं, उतारेस पारं पदमं अठार। —सू. प्र.

ब्रद्ध—सं. पु. [सं. वृद्ध] (स्त्री. ब्रद्धा) १ युवा एवं प्रौढावस्था के बाद आने वाली मनुष्य की एक अवस्था, बुढापा।

२ उक्त अवस्था को प्राप्त व्यक्ति, बूढ़ा।

उ०—तिम त्रिलोचना नै घरै, आवी ब्रद्धा नारि। मैं पूछयौ ए कुण अछै, मुझ प्रिया तिण वारि। —वि. कु.

वि.—१ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त।

२ बुद्धिमान, पण्डित।

३ बड़ी उम्र का।

रू. भे.—बिरध, बिरिध, ब्रद्ध, ब्रध, विरध, विरिध, बिरिधि, ब्रध, वधृ, ब्रध्ध, व्रिद, व्रिद्ध, व्रिध।

ब्रद्धकन्या—स. स्त्री. [सं. वृद्धकन्या] कुणिगर्ग महर्षि की बालब्रह्मचारिणी पुत्री।

वि० वि०—नारद के उपदेश से इसने गालव ऋषि के शिष्य शृंगवत ऋषि से विवाह किया एवं अपने तप का आधा पुण्य उसे दिया। एक रात उसके साथ रह कर पुनः घोर तपस्या में लीन हो गई। स्वर्ग लोक जाते समय अपने आश्रम को तीर्थ स्थान बना दिया।

ब्रद्धकेसव—सं. पु. [सं. वृद्धकेसव] सूर्य की एक मूर्त्ति। (पुराण)

ब्रद्धखत्र—सं. पु. [सं. वृद्धक्षत्र] १ सिन्धु नरेश जयद्रथ का पिता।

२ पुरुवंशीय एक राजा जो भारतीय युद्ध में पांडव पक्षीय था एवं अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।

ब्रद्धखेम—स. पु. [सं. वृद्धक्षेम] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा के पिता का नाम।

२ वृष्णिवंशीय राजा जो पांडव पक्ष में लड़ता हुआ बाल्हिक द्वारा गया था।

ब्रद्धगरग—स. पु. [सं. वृद्धगर्ग] दुश्चिन्हों की उत्पत्ति के बारे में अत्रि ऋषि को ज्ञान देने वाला एक आचार्य।

ब्रद्धगारग्य—सं. पु. [सं. वृद्धगार्ग्य] वह महर्षि, जिसने नीलवृषभ छोड़ने, अमावस्या के दिन तिलमिश्रित जल से तर्पण करने व वर्षाऋतु में दीपदान करने के बारे में पितरों से पूछा था।

ब्रद्धता—सं. स्त्री. [सं. वृद्धता] १ वृद्ध होने की अवस्था, बूढ़ापा।

२ दुख, कष्ट। * (डिं. को.)

रू. भे.—बिरधाई, विरधापण, बिरधापणौ, ब्रद्धता, व्रधता, व्रधपण, व्रधपणौ, व्रध्धपण, व्रध्धपणौ।

ब्रद्धपूनम, ब्रद्धपूरणिमा—देखो 'ब्रद्धपूनम' (रू. भे.)

ब्रद्धवयस, ब्रद्धवेस—सं. पु. [सं. वृद्धवयस] वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

रू. भे.—व्रधवयस, व्रधवेस।

ब्रद्धसरमा—सं. पु. [सं. वृद्धशर्मन्] १ आयु एवं स्वर्भानु के संसर्ग से उत्पन्न पांच पुत्रों में से एक।

२ वसुदेव की बहन श्रुतदेवा का पति व दन्तवक्र का पिता करूष देशीय राजा।

ब्रद्धसरवा, ब्रद्धस्रवा-सं. पु. [सं. वृद्धश्रवस्] देवराज इन्द्र ।
रू. भे.—ब्रधसरवा, ब्रधस्रवा ।

ब्रद्धसेना-सं. स्त्री. [सं. वृद्धसेना] सुमति राजा की पत्नी एवं देवताजित राजा की माता का नाम ।

ब्रद्धाचळ-सं. पु. [सं. वृद्धाचल] मद्रास में स्थित एक तीर्थस्थान ।

ब्रद्धाग्नि, ब्रद्धाग्नी-सं. पु. [सं. वृद्धाग्नि] एक प्राचीन ऋषि ।

ब्रद्धाश्रम-सं. पु. [सं. वृद्धाश्रम] वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

ब्रद्धि-सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] १ बढ़ने की अवस्था, बढ़ोतरी ।
उ०—ऊरध अकास, पाताळ पास, सब ठोर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध । वैराग ब्रद्धि, सुख बळ समृद्धि, निरभय निसांन, निरधन निधांन । —ऊ. का.
२ वृद्ध होने की अवस्था, बुढ़ापा ।
३ ब्याज, सूद । ४ लाभ ।
५ प्रगति, विकास ।
६ बच्चा उत्पन्न होने पर घर में होने वाला सूतक ।
७ देखो 'ब्रद्धियोग' ।
रू. भे.—विरधि, विरधी, विरिधि, ब्रधि, ब्रधी, ब्रिदि, ब्रिदी ब्रिद्धि ब्रिद्धी, ब्रिधि, ब्रिधी ।

ब्रद्धिका-सं. स्त्री. [सं. वृद्धिका] वृक्षों पर गिरे हुए शिव-वीर्य से उत्पन्न स्त्रियां जो मनुष्य का मांस भी भक्षण कर लेती हैं ।

ब्रद्धतिथ, ब्रद्धतिथि, ब्रद्धतिथी-सं. स्त्री. [सं. वृद्धतिथि] किसी मास या पक्ष में दो तिथि या क्षयतिथि के अतिरिक्त वह तिथि जो घड़ियों में पूर्ण हो ।

ब्रद्धियोग-सं. पु. [सं. वृद्धियोग] सत्ताईस प्रकार के योगों में से एक योग विशेष ।

ब्रद्धिसराद्ध, ब्रद्धिसराध, ब्रद्धिस्राद्ध, ब्रद्धिस्राध-सं. पु. [सं. वृद्धिश्राद्ध] विवाहादि मांगलिक अवसरों पर पितरों आदि के लिये नान्दीमुख नामक श्राद्ध ।

ब्रध —देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)
उ०—१ आलम का अड़साल, ईखै गूडर आसना । गढ का गा गढपति कन्हड़, ब्रध अर तरणा बाळ । —अ. वचनिका
उ०—२ देवी रक्त नीलंमणी सीत रंगं, देवी रूप अवार बोरूप अंगं । देवी बाळ जूवा ब्रधं वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसां भुजाळी । —देवि.
उ०—३ सू अकबर वा जिहांनगीर तथा साहिजांन में तीन पीढी तो राजावां नूं मूसलमांन करण री उपाय मैं रया पण तावै आयो नहीं । साहिजांनजी सूं तो सादलेखां अरज इण बात री करी थी । तद हजरत इसी कही, मैं तो अब ब्रध हो गया सू कोई इस जगा बैठागा जिसकूं भारी है । —द. दा.
२ देखो 'बध' (रू. भे.)

ब्रधपण, ब्रधपणौ—देखो 'ब्रद्धता' ।

ब्रधवयस—देखो 'ब्रद्धवेस' (रू. भे.)

ब्रधवा—देखो 'विधवा' (रू. भे.)

ब्रधवापण, ब्रधवापणौ—देखो 'विधवापणौ' (रू. भे.)

ब्रधवेस—देखो 'ब्रद्धवेस' (रू. भे.)

ब्रधसरवा, ब्रधस्रवा—देखो 'ब्रद्धस्रवा' (रू. भे.)

ब्रधांराज, ब्रधांराय, ब्रधांराव-सं. पु. [सं. वृद्धराज] ब्रह्मा ।
उ०—सिधांराव रै गणेस ब्रधांराव रै दिनेस सोहै, जोध बळी राव रै लंकेस रो है जेम । त्रलोकराव रै मकंकेत तायजादो तेम, ऊमेद राव रै 'अजो' रायजादो येम ।
—रावराजा अजीतसिंहजी रो गीत

ब्रधा —देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)
उ०—ताहरां आंनो वाघेलो मोळं राजा भीम नूं कहै, राज, अबो-राज नायो छै । थें पण मतां चढो । मनूं विदा करो और उमराव मोहतो विदा करो । ताहरां राजा कहै छै, मनाजी ब्रधा हूवा । लूणसाह तो कांम मेलियो छै । थां वाहरो तो अठै सरै नहीं ।
—हाहुल हमीर री बात

ब्रधि, ब्रधी—१ देखो 'बध' (रू. भे.)
उ०—ब्रधि किया बळ ब्रंद । —रांमरासौ
२ देखो 'ब्रद्धि' (रू. भे.)
उ०—'बाका' हरख न ब्रधि सूं, हांण हुवां नहं सोक । हरि संतोख दियो हियै, तिण नूं दीध त्रिलोक । —बां. दा.

ब्रधु-वि. [सं. वृद्ध] दीर्घ, वृहद, विशाल । (अ. मा.)
२ देखो 'ब्रद्ध' (रू भे.)

ब्रध्न-सं. पु —१ एक सूर्यवंशी राजा ।
२ देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)

ब्रध्नपण, ब्रध्नपणौ – देखो 'ब्रद्धता' ।
उ०—बाळापणै धोळा भया, तरुणापणै भया लाल । ब्रध्नपणै काळा भया, कारण कोण जमाल । —जमाल

ब्रध्नेचा-सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा ।

ब्रध्नेचो-सं. पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

ब्रन—देखो 'ब्रण' (रू. भे.)
२ देखो 'वरण' (रू. भे.)
उ०—१ भाळ ब्रन हुई अवखास विच भळहळे, मार हेकां वियां हियै मिळती । 'अमर' री भगवती खुरम मुह आगाळी, गळ अर्जै ऊअजै मीर गळती । —केसोदास गाडण
उ०—२ मो सजन चालंतड़ा, रोय रोय गम रतन्न । पड़िया विस रा बोसरा, आंसु मोती ब्रन । —ढो. मा.

उ०—३ तन घण घटा तराज, घरर घर बाज तिलक घन। पंत दंत बक पाज, वणै सोभाज सेत ध्रन। —सू. प्र.

उ०—४ विळि माह तणी माहुटि सूं मसि ध्रन, तपि प्रासाद तणी तपन। जन श्रोजन परिण अधिक जांणयो, मध्यरात्रि प्रति मध्याहन। —वेलि.

उ०—५ कळी सेत ध्रन पोळटैं, पड़ै जोखिम कळस, खसै खुंभी, हुवै मंडप खांगो। भींतड़ा भाजि ढहि जाइ धरती मिळै, गीतड़ा नह जाय, कहै 'गांगो'। —गांगी

उ०—६ गढवाडांय ओवत कोण गजे, ध्रन पाल गयां घव पाल वजं। अग मांझ धमां घट प्रांण जितं, इह गांवत हेरण कोण मतं। —पा. प्र.

व्रनप्रहार—सं. पु.—१ अति उदार या दातार व्यक्ति।

२ प्रजा समूह।

व्रनखट—देखो 'खटदरसण' (२) (रू भे.)

व्रनणौ, ध्रनबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

ध्रनणहार, हारो (हारी), ध्रनणियो—वि०।

ध्रनियोड़ो, ध्रनियोडो, ध्रन्योड़ो—भू० का० कृ०।

ध्रनीजणो, ध्रनीजबो—कर्म वा०।

व्रनवणौ, ध्रनवबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दस जोयण लगं जियं री देहो, ध्रनवतां ओवतां बिस्तार। इउं हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा व्रख वाधिया उदार। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ध्रनवअइ काम रूप रउ वणतउ, हेमां सरस हजूर हुअउ। कहइ स भूट बाळियउ कंद्रप, मयण सही अउळजं मुअउ। —महादेव पारवती री वेलि

ध्रनवणहार, हारो (हारी), ध्रनवणियो—वि०।

व्रनवियोड़ो, व्रनवियोड़ो, ध्रनव्योड़ो—भू० का० कृ०।

व्रनवीजणौ, व्रनवीजबो—कर्म वा०।

व्रनवियोड़ो—देखो 'वरणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रनवियोड़ी)

व्रनियोड़ो—देखो 'वरणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ध्रनियोड़ी)

व्रम—१ देखो 'व्रण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ देवी अरूलणी भख्खणी देव जोगी, देवी भ्रम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जांनंमुरी व्रम मेहा, देवी देव चामुंड संख्याति देहा। —देवि.

उ०—२ महल्ल गोळ सोभ मांन, कुंदनी कळस्य ए, पणत काच नील व्रम, धारिखं भरस्स ए। पवै गिरां पगार पोळि, लोहमे कपाट ए, (जु) त्रिगमेर सीस आंणि, ओपियंत आट ए। —गु. रू. बं.

उ०—३ काटल प्रावध मूझ कर, मन मंदाइण व्रम। आवध राखै ऊजळा, मैला ज्यां रा मन्न। —बां. दा.

व्रप—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—१ करतार घणूं कासूं कहां, वडा देव वांमण व्रपा। केसवा रखं कुमया करं, किसन हिमें करिजौ क्रिपा। —पी. ग्रं.

उ०—२ हरि हरि करि उद्धरं, बडो सेवग बभीखण, हरि हरि करि उद्धरं, गजह सामंद घू अजअण। हरि हरि करि उद्धरं, दक्खि व्रप बडो सुदामा, हरि हरि करि उद्धरं, सेस संकर सिव ब्रहमा। —अ. खि.

व्रमंड—देखो 'ब्रह्मंड' (रू. भे.)

उ०—रिखण चो साम जगत चो तारण, आधारण व्रमंड अकवीस। जण जण कना काहा तु जाचं, जाच येक दाता जगदीस। —ओपो आढो

व्रम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—अकालग्यांन दरसी निज व्रम कूं पहिचांणै। भूत, भवस्त, बरतमांन जुगति सौं जांणै। च्यार वेद नो व्याकरण खट सासत्रूं कं विनाण। पिंडत विद्या में पारावार जांणै नवदूण पुरांण। —सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

व्रमग्राखर—देखो 'ब्रह्माक्षर' (रू. भे.)

व्रमकुंड—देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू. भे.)

व्रमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

व्रमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

व्रमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

व्रमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

व्रमचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

व्रमचार—१ देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

व्रमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

व्रमजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

व्रमतीरथ—देखो 'ब्रह्मतीरथ' (रू. भे.)

व्रमदंड—देखो 'ब्रह्मदंड' (रू. भे.)

व्रमदुवार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे.)

व्रमदांन—देखो 'ब्रह्मदांन' (रू. भे.)

व्रमदिन—देखो 'ब्रह्मदिन' (रू. भे.)

व्रमदेत, व्रमदंत, व्रमदंत्य—देखो 'ब्रह्मदंत्य' (रू. भे.)

व्रमदोस, व्रमदोस—देखो 'ब्रह्मदोस' (रू. भे.)

ब्रमग्रोह—देखो 'ब्रह्मग्रोह' (रू. भे.)
ब्रमनाभ—देखो 'ब्रह्मनाभ' (रू. भे.)
ब्रमनिस्ठ—देखो 'ब्रह्मनिस्ट' (रू. भे.)
ब्रमपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू. भे.)
ब्रमपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)
ब्रमपुतर—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)
ब्रमपुतरि, ब्रमपुतरी—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)
ब्रमपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)
ब्रमपुत्रि, ब्रमपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)
ब्रमभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे)
ब्रममूरत—देखो 'ब्रह्ममूरत' (रू. भे.)
ब्रमरंध्र—देखो 'ब्रह्मरध्र' (रू. भे.)
ब्रमरात, ब्रमरात्रि—देखो 'ब्रह्मरात' (रू. भे.)
ब्रमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)
ब्रमवादिनी—देखो 'ब्रह्मवादिनी' (रू. भे.)
ब्रमविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू. भे)
ब्रमवेता ब्रमवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू भे.)
ब्रमसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे)
ब्रमसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)
ब्रमसूत, ब्रमसूत्र—देखो 'ब्रह्मसूत' (रू. भे.)

उ०—तीरथ-राज प्रयागि, राव कमधज्ज पधारे, ब्रमसूत निय पहरि करगि अंजळि कुस धारे। करि मंजन बधि सहित, कीध तरपण गंगा तट, विवह दांन दे वि.ां, अंकमाळी मक्से वट।
—गु. रू. ब

ब्रमहत्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे.)
ब्रमांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—नाचै तिम नट्ट थई जिम नाथ, महोदधि मज्झ कूदै सुज माथ। संपेखै संभ निसभ सधीर, ब्रमाणी ताम धई वर बीर।
—मा. वचनिका

ब्रमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
ब्रम्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
ब्रम्मधिया, ब्रम्मधो, ब्रम्मधोया—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू. भे.)

उ०—'करण' सुजाव बधै नो करणा. फळ हूंता गम अगम कीया। चाढै घूमंडळ चोतोड़ा, धू धारक जिम ब्रम्मधोया।
—राणा जगतसिंघ रो गीत

ब्रम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—देवी विस्णु रै रूप जंघा वधारे, देवी मुकुंद रै रूप मधुकीट मारे। देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म ब्रम्मा, देवी साथ तण मेलिया जोग सम्मा।
—देवि.

ब्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
ब्ररस, ब्ररस—देखो 'वरस' (रू. भे.)
ब्रव—देखो 'ब्रव' (रू. भे.)
ब्रवण-सं. पु.—दान, पुण्य। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—पवन चंदन रव हर पनंग पूरण दळद्री प्रेत। विध मगन मूरख ब्रवण दीरघ ऊ काहु देत।
—एका.

वि.—दातार, दानी, उदार।

उ०—कुंवर किरणाळ सुपह सपखाळ, विरदि उजुआळ सकथ धजबंध। प्रसिधि दवि पाज ब्रवण गज बाज, मदति व्रजराज मरद मनमंध।
—ल. पि.

रू. भे.—ब्रवण।

ब्रवणलोकेस, ब्रवणलोकेसु, ब्रवणलोकेसू-सं. पु.—ईस्वर, परमात्मा। (ना. मा.)

ब्रवणो, ब्रवबो-क्रि. स.—१ दान देना।

उ०—१ मन महराण धिनो मेवाड़ा, दाखै धाड़ा दसु दिसा। राजा अन बांदै रजवाड़ा, तुं गडवाडा ब्रवै तिसा।
—रांणा भीमसींग री गीत

उ०—२ अवतार उदार लाखो हसो, जगा जेठ दातार 'जंहै' जिसो। धरा-थंभ जाडेज धूमै धड़ं, ब्रवै बाज जेहा ज गीतां वडं।
—ल. पि.

उ०—३ जम जांणै रै जग जांणै, जिण लंक ब्रवी जग जांणै। स्रीमुख दाख सुकंठ सहोदर, राख प्रभाव धरांणै।
—र. ज. प्र.

२ देना।

उ०—१ तांम सूझै न को ठांम धवळह तणा, घणा अन राइयां रूंख राखै घणा। ब्रवै काय रंभ रथ जूथ आखै सुवर, पढ़ै कवि पंखियां 'जसौ' धू कळपतर।
—हा. झा.

उ०—२ ब्रवतो द्रव रीझ झड़ी मैं कळवळ, सोभा समंद झड़ी में साद। जिम चितरांण ओव झड़ी मं, आवै घड़ी घड़ी मैं याद।
—रांणा सिमुसिंघ री गीत

उ०—३ मदवां खै जाइम ज्यां अपजस, चक्रवत ब्रवै न जांणै चोज। राजा अमर करै ले रूपग, मंगळ वेगागळ दै मोज।
—किसनो आढो

उ०—४ घर प्रीत पूछै गहर भूधर कहैं विध कवि राव। उर वधत हरख अमाप सुण सुण ब्रवै कोडपसाव।
—र. रू.

३ वित्तीर्ण करना, वितरित करना, बांटना।

उ०—राजा कमधज सुतण पदारथि, उण सुत गणपति भूप ब्रवण अथि। तोगनाथ जिण सुतण भूप तथि, कीरति पार जेण न लहै कथि।
—सू. प्र.

४ त्यागना, छोड़ना ।

५ अर्पण करना ।

६ बोलना, कहना ।

उ०—ब्रखियौ सिव आराध वडाळौ, असठौ अक्षर मंत्र जप अ बाळौ। अजमावण कजि मंत्र अप अक्खैं, दुगम पहाड़ फोड़ि द्रम दक्खें ।
—सू. प्र.

ब्रखणहार, हारौ (हारी), ब्रखणियौ—वि० ।
ब्रखिओडो, ब्रखियोड़ौ, ब्रख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
ब्रखीजणौ, ब्रखीजबौ—कर्म वा० ।
ब्रखणौ, ब्रखबौ—रू० भे० ।

ब्रस—१ देखो 'ब्रख' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)
३ देखो 'बिस' (रू. भे.)
४ देखो 'बरस' (रू. भे.)
५ देखो 'ब्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—बनां नंदघा परहरी, पर नंदघा न करेह । सोभ नही संसार मा, पळतें पत्र गहि लेह । पळतें पत्र गहि लेह, ब्रस देखो नर सोई । और पाप कूं नफौ, निंदन नफौ न कोई ।
—वील्होजी

ब्रसक—देखो 'ब्रखक' (रू. भे.)

ब्रसकेतु—देखो 'ब्रखकेतु' (रू. भे.)

ब्रसचक, ब्रसचकर, ब्रसचक्र—सं पु. [सं. वृश्चिक] १ वृश्चिक राशि का नाम । (प. मा.)
२ देखो 'ब्रखचक्र' (रू. भे.)

ब्रसण—देखो 'ब्रखण' (रू. भे.)

ब्रसणकंच्छ, ब्रसणकच्छु, ब्रसणकच्छ—देखो 'ब्रखणकच्छ' (रू. भे.) (अमरत)

ब्रसदरभ—देखो 'ब्रखदरभ' (रू. भे.)

उ०—महाराजा मोरध्वज री व राजा ब्रसदरभ री जिण भूखी आत्मा हित आपरै बेटा नूं चीर सिंह नू खुवायौ सो मोरध्वज अक्षय पुण्य पायौ ।
—साह रांमदत्त री वारता

ब्रसदेवा—देखो 'ब्रखदेवा' (रू. भे.)

ब्रसद्वीप—देखो 'ब्रखद्वीप' (रू. भे.)

ब्रसधार, ब्रसधारिण, ब्रसधारी—देखो 'ब्रखधारी' (रू. भे.)

ब्रसधुज, ब्रसध्वज—देखो 'ब्रखध्वज' (रू. भे.)

ब्रसध्वजा—देखो 'ब्रखध्वजा' (रू. भे.)

ब्रसपत, ब्रसपति, ब्रसपती—१ देखो 'ब्रखपति' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—औ ब्रसपत दसमैं ग्रह आयौ, विदुख तिकां दुख लाभ वतायौ। कुळ अप उग्र थयौ ह्वै कोई, सुतन प्रताप चौगुणौ सोई ।
—रा. रू.

ब्रसभ—देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

ब्रसभकेतु—देखो 'ब्रखभकेतु' (रू. भे.)

ब्रसभगत, ब्रसभगति, ब्रसभगती—देखो 'ब्रखभगति' (रू. भे.)

ब्रसभधज, ब्रसभधुज, ब्रसभध्वज—देखो 'ब्रखभध्वज' (रू. भे.)

ब्रसभाक—देखो 'ब्रखभांक' (रू. भे.)

ब्रसभांण, ब्रसभांणु, ब्रसभांन, ब्रसभांनु—सं. पु. [सं. वृषभानु] कृष्ण-प्रेमिका राधा के पिता का नाम ।

रू. भे.—ब्रखभान, विरखभांण, विरखभांणु, विरखभांन, विरख-भांनु, ब्रखभांण, ब्रखभांणु, ब्रखभांन, ब्रखभांनु ।

ब्रसभांनुनंदणी, ब्रसभांनुनंदिणी, ब्रसभांनुनंदिनी—देखो 'ब्रखभांनुनंदिनी' (रू. भे.)

ब्रसभांनुसुता—देखो 'ब्रखभांनुसुता' (रू. भे.)

ब्रसल—देखो 'ब्रखल' (रू. भे.)

ब्रसलांछण, ब्रसलांछन—देखो 'ब्रखलांछन' (रू. भे.)

ब्रसली—देखो 'ब्रखली' (रू. भे.)

ब्रसलीपत, ब्रसलीपति, ब्रसलीपती—देखो 'ब्रखलीपति' (रू. भे.)

ब्रसवाहण, ब्रसवाहन—देखो 'ब्रखवाहण' (रू. भे.)

ब्रससेण, ब्रससेन—देखो 'ब्रखसेन' (रू. भे.)

ब्रसस्कंध—देखो 'ब्रखस्कंध' (रू. भे.)

ब्रसांक—देखो 'ब्रखांक' (रू. भे.)

ब्रसासुर—देखो 'ब्रखासुर' (रू. भे.)

ब्रसोत्सरग—देखो 'ब्रखोत्सरग' (रू. भे.)

ब्रस्चक—देखो 'ब्रस्चिक' (रू. भे.)

उ०—रवि मीन रासि सनि करक राह, अरु मकररासि केतह अथाह । कहि **ब्रस्चक** भांण बुध बुध प्रकास, तन लगन मिथुन सुभ अनंत तास ।
—सू. प्र.

ब्रस्चकसंकरांत, ब्रस्चकसंकरांति, ब्रस्चकसंकरांती, ब्रस्चकसंकरायंत, ब्रस्चकसक्रांत, ब्रस्चकसक्रांति, ब्रस्चकसक्रांती, ब्रस्चकसंक्रायंत, ब्रस्चकस-क्रांति—देखो 'ब्रस्चिकसंक्रांति' (रू. भे.)

उ०—**ब्रस्चकसक्रांत** दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सचीस । राजै तदि मंगळ कुंभ रासि, कहि मीन ब्रहस्पति बळ प्रकासि ।
—सू. प्र.

ब्रस्चिक—सं. पु. [सं. वृश्चिक] (स्त्री ब्रस्चिकणी, ब्रस्चिकनी) १ बिच्छू ।

उ०—पऊठ कोडि घटि अम्ह तणइ, रोम सरूपी राय । तं पीऊ पाखइ मूंहनइं, ब्रस्चिकनी परी थाइ ।
—मा. कां. प्र.

२ बारह राशियों में से आठवीं राशि । (ज्योतिष)

३ बारह लग्नों में से आठवां लग्न । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.– ब्रच्छिक, ब्रछिक, ब्रस्चक ।

ब्रस्चिकपत्रिका–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकपत्रिका] पोई नामक साग ।

ब्रस्चिकप्रिया–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकप्रिया] पोई नामक साग ।

ब्रस्चिकसकरांत, ब्रस्चिकसकरांति, ब्रस्चिकसंकरांती, ब्रस्चिकसंकरायंत, ब्रस्चिकसक्रांत, ब्रस्चिकसंक्रांति, ब्रस्चिकसंक्रांती, ब्रस्चिकसंक्रायत–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकसक्रांति] वृश्चिक राशि में सूर्य का प्रवेश एवं इस दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

रू. भे.– ब्रस्चकसंकरांत, ब्रस्चकसंकरांति, ब्रस्चकसंकरांती, ब्रस्चकसंकरायंत, ब्रस्चकसंक्रांत, ब्रस्चकसक्रांति, ब्रस्चकसंक्रायंत ।

ब्रस्चिकाळी–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकाली] प्रायः सारे भारत में पाई जाने वाली बिच्छू नामक लता ।

ब्रस्टर—देखो 'बिस्टर' (रू. भे.) (नां. मा.)

ब्रस्टरसव, ब्रस्टरसवा, ब्रस्टरस्रव, ब्रस्टरस्रवा–सं. पु. [सं. विष्टरश्रवस्]

१ ईश्वर, परमात्मा । (नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण । (अ. मा.) ३ विष्णु भगवान का नाम ।

ब्रस्टि, ब्रस्टी–सं. स्त्री. [सं. वृष्टि] १ वर्षा, मेह ।

उ०—तीरथंकर नइ पारणं, कुण करसइ मुझ होडि । ब्रस्टि करूं सोवन तणी, साढी बारह कोडि । —स. कु.

२ बहुत सी चीजों को एक साथ ऊपर से गिराने की क्रिया ।

३ एक ही क्रिया को लगातार बार बार करने की क्रिया ।

रू. भे.—ब्रस्टो, ब्रस्ठी, व्रिस्टि, व्रिस्टी ।

ब्रस्णि, ब्रस्णो–सं. पु. [सं. वृष्णि] १ बादल, मेघ ।

२ यादव वंश ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ देवराज इन्द्र ।

ब्रस्णिकगरभ, ब्रस्णिगरभ–सं. पु. [सं. वृष्णिकगर्भ] श्रीकृष्ण ।

ब्रहमंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ दसे भाख ज्यारां जती बंस दीता, सको कत त्रिलोक री नाथ सीता । ब्रहमंड कोडेक भांजे वणावे, इसो रांम माता कठै कांमि आवे । — सू. प्र.

उ०—२ भणंके चलो कोमंडां तूर भेरी, फबै संख सहनाय आनेक फेरी । बिसम्मी सुरां सिद्धवां डाक वागी, ब्रहंमंड इक्कीसमें हाक वागी । —सू. प्र.

ब्रहंम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—जोग पंथ जांणुं नहीं, माया रूपो कांन्ह । जादम वस छुहाय करि, दीयो ब्रहम निदांन । —सुरजनदास पूनियो

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रहंमण, ब्रहंमांण, ब्रहंमांणयं—१ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ वेद मंत्र पाठी चत्र वेदह, जांणै जोतिख भेद सुभेदह । होम दियै आहुत हुतासण, तेडै तांम इसा ब्रहंमण । —गु. रू. बं.

उ०—२ आमना चत्र वेद ब्रहंमांणयं विप्रयं, रुघ जुज्जर साम अथरवणयं जपयं । वेदोधुनि जै जै सब्बदयं वणयं, गुंजार रव भेर पंडसदयं घणयं । —गु. रू. बं.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रहंमांणी —देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—देवी वैस्णवी महेसी ब्रहंमांणी, देवी इंद्रायणी चंद्रांणी रतारांणी । देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इळा आधार आसूर हाता । —देवि.

ब्रहंमि, ब्रहंमी—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रह, ब्रहत, ब्रहती–वि. [सं. बृहत्] १ आकार की दृष्टि से अत्यन्त बड़ा, विशाल ।

२ विस्तार की दृष्टि से बहुत लम्बा-चौड़ा ।

३ अपार, बहुत ।

सं. पु.—१ वेद ।

२ ब्रह्म ।

३ प्रत्येक चरण में नौ अक्षरों वाला वर्णवृत्त ।

रू. भे.—ब्रह, ब्रहत, ब्रहती, ब्रहद, बहद, व्रिहत, व्रिहद ।

ब्रहत्कलप–सं. पु. [सं. बृहत्कल्प] एक सूत्र विशेष ।

उ०—छ छेदै महानिसीथ निसीथ, पांच सहस गिणिजै इवीथ । ब्रहत्कलप बीजो वाखांण, व्यारसै विहुतर संख्या जाण । —ध. व. ग्रं.

ब्रहदंग–सं. पु. [सं. बृहत्+अंग] हाथी, हस्ती ।

ब्रहदबळ–सं. पु.—बृहद्बल नामक एक सूर्यवंशी राजा जो विश्रुतवान का पुत्र था ।

उ०—अपति प्रसेनजीत तै नंदण, खुनक प्रसेन सुतण खळ खंडण । बळवत खुनक सुआव ब्रहदबळ, दुझल हुवौ हरवक्र केरव दळ । —सू. प्र.

ब्रहदभवन, ब्रहदभांण, ब्रहदभांणु, ब्रहदभान, ब्रहदभानु–सं. पु. [सं. बृहद्भानु] १ आग, अग्नि । (ह. नां. मा.)

२ चित्रक ।

३ सूरज, सूर्य ।

४ सत्यभामा के पुत्रों में से एक ।

रू. भे.—ब्रहदभांण, ब्रहदभांनु, व्रिहदभांण, व्रिहदभांणु, व्रिहदभांन, व्रिहदभांनु ।

ब्रहदभोज–सं. पु.—पुराणोक्त बृहद्राज नामक एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—जै सुत ब्रहदभोज अगजाहर, ब्रहदमोज सुत बहुन्य कीतबर। जिण ग्रप बहुनि सुजाव क्रतंजय, जेण सुजाव नरेस रणंजय।
—सू. प्र.

ब्रहबळ, ब्रहबल—वि. [सं. बृहबल] अत्यधिक बड़ा; बहुत बड़ा।

उ०—भगू तें ब्यागू ते ब्रहबल विभूतं प्रतिबिभू, तुजैना जानै को सुहृद स्वसु जानं भल त्रभू। कहूँ क्या ब्यावेधी कहन नहि आवं कुल कुलें, मदांधो मायावी तुम र हम भावी तुलें। —ऊ. का.

ब्रहबस्व—स. पु. [सं. बृहदश्व] एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—१ काहिं जिण सुतण वीर ग्रप केहो, जग जस प्रगट भगीरथ जेहो। जे सुत ब्रहबस्व भूप करण जय, तै सुत भानुमानु तेजोमय।
—सू. प्र

उ०—२ भारद्र जेगसुत वंसमोर, जै सुत जवनासव ब्रह्म जोप। सम्रम जवनासव हुवो साव, ब्रहबस्व जेण सुत तप बधाव।
—सू. प्र.

ब्रहनट, ब्रहन्नट, ब्रहन्नड—सं. पु [सं. बृहन्नट] अर्जुन। (अ. मा.)

उ०—मूभइ रडइ मुहि पडइ मनि कंप थाइ, देखी अतूं कटक उत्तर सून्य थाइ। पाछउं हवं वलि ब्रहन्नड मडं म मारि, छूटा पलइ कहि न मूलउ का विचारि। —सालिभद्र सूरि

रू. भे.—ब्रिहनट, ब्रिहन्नट, ब्रिहन्नड।

ब्रहन्नळा—सं. स्त्री. [सं. बृहन्नला] १ बनवास काल के बाद एक वर्ष के अज्ञातवास काल में राजा विराट के यहां स्त्री वेष में रहते समय अर्जुन का नाम।

२ अर्जुन।

ब्रहमंड, ब्रहमंडक—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ भिड़े मुख मूछ अणी भुंवहार, धरे हथ रोळवियो बब-धार। वगे मुख चोळ छिबं ब्रहमंड, 'पतै' प्रस हाकलियो परचंड।
—सू. प्र.

उ०—२ कोट मुलक खिडिया केताइ खंड, ब्याइ बसूहक फाटो ब्रहमड। बडा बडा भात्रे वरियांम, 'अबर' आगै करै सलांम।
—गु. रू. बं.

उ०—३ ब्रहमड किनां फुट्टो बळं, धसक तळातळ आतळं। मुखं हसं सकति महाबळ, बेताळा कुळ ब्याकुळं। —मा. वचनिका

उ०—४ घट मैं तारा चंद रवि, घट मांहि ब्रहमंड। हरिया घट मैं रांम है, वाको जोति अखंड। —अनुभववांणी

उ०—५ झूंझारां आवध झळहळं य, ब्रहमंडक बीजां बळवळं य। सैफळी वाजियो सांमतांह, भेलियो लोह मुह रावतांह।
—गु. रू. बं.

ब्रहमंडी—१ देखो 'ब्रह्मांडी' (रू. भे.)

उ०—सिव सकत्ती सम मुगती, सिव भक्ति सकति सकति सिव सभं। आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड ब्रहमंडो।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'ब्रह्मांडी' (रू. भे.)

ब्रहम—सं. पु.—१ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २१ मात्रायें होती हैं।

उ०—दस एकादस मात्र दे, एकांणि पाये एम। ब्रहम छंद वाखां-णिजे, गुण लखपति निगेम। —ल. पिं.

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यांनी सो बडा ब्रहम विचारै। —केसोदास गाडण

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ दसरत्थ विभं इम नजर दीध, कांमना पुत्र धरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अनाप, आविया ब्रहम सिव बिसन आप। —सू. प्र.

उ०—२ सिब ब्रहम बिसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप जिगन व्रत सगि पाय। त्रिय भूप धरम थित गरभ तांम, कांमना सकळ नप ज्याग काम। —सू. प्र.

उ०—३ रगतासुर भ्रै रीत, सूर उदै जसण सभं। माहव ब्रहम महेस मुं, गावे भाडा गीत। —मा. वचनिका

उ०—४ साळउ दइ हाथ तपै तप संकर, ब्रहम तियइ रउ करइ विचार। बीजो दुनी राखडी बांधइ, संभूनाथ अचळ संसार।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्रहमकपाळ—देखो 'ब्रह्मकपाळ' (रू. भे.)

ब्रहमकरम—देखो 'ब्रह्मकरम' (रू. भे.)

ब्रहमकवच—देखो 'ब्रह्मकवच' (रू. भे.)

ब्रहमकांड—देखो 'ब्रह्मकाड' (रू. भे.)

ब्रहमकुंड—देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू. भे.)

ब्रहमकूरच—देखो 'ब्रह्मकूरच' (रू भे.)

ब्रहमक्षत्र, ब्रहमक्षत्री, ब्रहमखत्री—देखो 'ब्रह्मक्षत्र' (रू. भे.)

ब्रहमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

ब्रहमग्यान—देखो 'ब्रह्मग्यान' (रू. भे.)

उ०—ज्यां नदिया मंजन करै, धरै सदा हरि ध्यांन। उर निरोध हर आसरै, बिसरै नह ब्रहमग्यांन। —अ. मा.

ब्रहमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यांनी सो बडा ब्रहम विचारै। —केसोदास गाडण

ब्रहमघातक, ब्रहमघातको—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू. भे.)

ब्रहमघातणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ब्रहमघातिक, ब्रहमघातिको—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू. भे.)

उ०—श्रीनाथ रुद्र गणपति सकळ, भासंकर मिळ पंच ए। इण माहि भेद जांणै जिको, ब्रहमघातिकी मांन ए। —मा. वचनिका

ब्रहमघातिणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ब्रहमचरज, ब्रहमचरज्ज, ब्रहमचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—सो घण स्त्री कहै इण हीज धड़ सूं एकण घण रो पती भ्ररथात ब्रहमचरय व्रत वाळो एकण हीज धरा रो पती भ्राप रो वैर लै नै पड़सी। —वी. स. टी.

ब्रहमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

ब्रहमपुरांण—देखो 'ब्रह्मपुरांण' (रू. भे.)

उ०—तवतां कुरांण काजी तठै, ब्रहमपुरांण वचाविया। भ्रासुरां धरम मेटै 'भ्रजं', सुरां धरम दरसाविया। —सू. प्र.

ब्रहमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे.)

ब्रहमफांस—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)

ब्रहमभोज—'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रहममुहुरत, ब्रहममूहरत—देखो 'ब्रह्ममुहूरत' (रू. भे.)

ब्रहमयोनि—देखो 'ब्रह्मयोनि' (रू. भे.)

ब्रहमरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू. भे.)

ब्रहमरेख, ब्रहमलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू. भे.)

ब्रहमळा-वि.—१ विमल, पवित्र।

उ०—सभंत ब्रह्म कै सिनान, केक भ्रप्पणं करै, धरत्त केक न्यास ध्यांन, चडि पाठ उच्चरै। जपंत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र ब्रहमळा, करंत पूज नौ प्रकार, केक कंत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रहमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)

ब्रहमवाणी—देखो 'ब्रह्मवांणी' (रू. भे.)

ब्रहमवाचा—देखो 'ब्रह्मवाचा' (रू. भे.)

उ०—देसपति संभ्रम दमण ऊदम भ्रगम गम हींदुभ्रां भ्रोपम, सरमधारी करण सुधरम ब्रहमवाचा दानि विक्रम। भ्रस करन समदि भ्रण जगम दीपिभ्रो बिरदाळ, ताई भूपाळ जो भूपाळ। —ल. पि.

ब्रहमांड—देखो 'ब्रह्मांड' (मह., रू. भे.)

उ०—नमो भ्रादि नाराइणी, ब्रहमाणी ब्रहमंड। रुद्राणी जांणी रिधू, भ्रतुळित तेज भ्रखंड। —मा. वचनिका

ब्रहमांण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू. भे.)

उ०—१ भ्रो जो हूं भ्राज चूकूं भ्रवसांण, वकै नह वेद मुखां ब्रहमांण। जावै वित ऊभां मूंझ जोयार, धरा नह छोड दियै इंद्रधार। —गो. रू.

उ०—२ मांनै ब्रहमांण पठै पुरांण, वदै वखांण रिखेसवरं। गुण भणं जगत्त गुर सको भ्रसुर सुर, तेम भ्रठारह भार तरं। —पि. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—हुय चोप कोड घमंड हुयं, कर कोड नवै कनियांण कथं। खट कोड लखै ब्रहमांण खड़ी, तव लाखह लोवळियाळ लडी। —पा. प्र.

३ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—पढावे कुरांणां तिकां पढावे काजियां पूजा, सुरांणां पुरांणां धेन ब्रहमांणां सेव। 'राजा' तणौ छत्रधारी खागधारी राजहंस, दांणवां सूं वेधकारी भ्रवतारी देव। —महारांणा जयसिंह (दूसरा) री गीत

ब्रहमांणी—१ देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—१ नमो भ्रादि नाराइणी, ब्रहमांणी ब्रहमंड। रुद्रांणी जांणी रिधू, भ्रतुळित तेज भ्रखंड। —मा. वचनिका

उ०—२ पंचम नांम प्रसिद्ध, सकंदमाता सुररांणी। ब्रहमांणी काळिरत्रि, कहां तिम काइयांणी। —मा. वचनिका

२ देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे.)

उ०—चोथी रांणी विनोता ब्रहमांणी। तिणरै पुत्र—पहिलो नवनाटक, बीजो चंद्रमा, तीजो कोरंभ। —रा. वसावळी

ब्रहमान—१ देखो 'ब्रह्म' (मह; रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा', (मह; रू. भे.)

ब्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ 'भगवंत' सुतण हुभ्रो ऋहुं भुवणं, घण दीहां लग नांम धणी। ब्रहमा विसन महेस वदीतो, तप तुंगिम जस तूझ तणौ। —गोपाळ मीसण

उ०—२ नमो मात ध्याता नमो रंग जांणी, नमो बाळ ध्याती ब्रहमा बखाणी। नमो रात्रि संधा नमो छांह रूपी, नमो उमया चोभुजी द्रग भ्रोपी। —मा. वचनिका

उ०—३ नांव परताप सब सत महमा करै, विसन सिव सेस ब्रहमादि सारा। दास हरिरांम निज नांव परताप तें, होय जुग माहि नर निसतारा। —भ्रनुभववांणी

उ०—४ कमध कहै कर रूक कळासो, भ्रातम जोध विधा भ्रभियासो। बात रहै ब्रहमा बरसासो, हुपसी जुद्ध नहीं ऐ हासो। —गु. रू. बं.

ब्रहमि—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—नरिंदि चौथो प्रभु मारसींघ नाहरू, बिळै परमेस वेदां तणौ वाहरू। ब्रहमि पीधा मिही वेद चत्र वाळिया, भ्रधिकि चारण तणा वचन भ्रजूभ्राळिया। —पी. ग्रं.

२ देखो 'ब्रह्म' (भ्रल्पा., रू. भे.)

ब्रहमिण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

ब्रहमौ—देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू. भे.)

ब्रहम्मंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—ब्रहम्मंड कोटेक जो रोम वासं, स तो जोवतां जेणि केतो सरासं। एको रांम रो वास जोरं अपारं, धरा सात दीपावली सेस धारं। —सू. प्र.

ब्रहम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ देवी उम्मया खम्मया ईसनारी, देवी धारणी मुंड त्रिभुवन्न धारी। देवी सब्बदा रूप धो रूप सोमा, देवी वेद पारख्ख धरणी ब्रहम्मा। —देवि

उ०—२ देवी सतमी अस्ठमी नोम नूजा, देवी चोथ चौदस्स पूनम्म पूजा। देवी सरसती लख्खमी महाकाळो, देवी कन्न विस्णु ब्रहम्मा कमाळो। —देवि.

ब्रहव्रह, ब्रहध्व्रह-सं. स्त्री—युद्ध स्थल में वीरों द्वारा की जाने वाली जोशीली आवाज।

उ०—१ कतियांणी कहकह नारद व्रहव्रह, हेका टहटह वीर हसं। वड रावत ब्रहव्रह पोरसि ब्रहव्रह, दूजो टहठह होठ डसं।

— गु. रू. बं.

उ०—२ ठहट्टह रम ब्रहध्व्रह बीर, मिळं रणताळि कमध्वज धीर। निहट्टां निग्रहि बांध्यो नेत्र, खरा खुरसांण मरुध्धर खेत्र।

—राउ जैतसी री रासो

ब्रहसपत, ब्रहसपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहस्पती-सं. पु. [सं. बृहस्पतिः] १ वह व्यक्ति जो महाविद्वान एवं पंडित हो।

२ बुधवार के बाद व शुक्रवार के पहले आने वाला दिन।

३ एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र एवं देवताओं के गुरु माने जाते हैं। (अ. मा.)

उ०—स्रो गुरन पति ब्रहस्पति कहै, देवन पति गोविंद। देवन पति ब्रह्मा वदं, सासन पति पति अव। —अग्यात

वि. वि.—इनकी पत्नी तारा को सोम हरण कर ले गया तब इनका सोम के साथ युद्ध हुआ। ब्रह्मा आदि देवताओं ने इनकी पत्नी तो वापिस दिलवादी किन्तु इनकी पत्नी व सोम के समागम से बुध की उत्पत्ति हुई।

४ सौर जगत का पांचवां ग्रह।

उ०—१ तेजमें रूप बहु पुत्र ताथ, सोभा अपार गुरु एह साथ। ब्रहसपति भवन वसमें वखाणि, जिण हीज भवन रविनंद जांणि।

—सू प्र.

उ०—२ सुथही धर्म के इंद्र सार, इण रीत ब्रहसपति गुण उदार। अब कहूं सनीसर गुण अनेक, बखाण कमो तत वयन एक।

—सू प्र.

उ०—३ वत्सकसंक्रांत [illegible] वद वितोल, ससि सुक्र रासि तुल वर सघोस। राजं तद्दि [illegible] [illegible] दाखि, कहि मीन ब्रहस्पति बळ प्रकासि। —सू प्र.

५ नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि की रचना करने वाले एक ऋषि।

उ०—ठग कामेती ठोठ गुर, चुगल न कीजे सेण। चोर न कीजे पाहरू, ब्रहस्पति रा वेण। —बां. दा.

६ युद्ध, यज्ञ, बुद्धि आदि के अधिष्ठाता देव।

७ वैशाली के मरुत्त आविक्षित मरुत्त राजा का पुरोहित एक अंगिराकुलोत्पन्न ऋषि।

वि० वि०—इसने अपने बड़े भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता से संभोग किया था। गर्भस्त बालक के द्वारा उक्त क्रिया करने में अत्यधिक अड़चनें पैदा किये जाने पर इसने उसे जन्मांध होने का शाप दिया। ममता एवं इसके संसर्ग से भरद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

८ सोलहवें द्वापर के भगवदवतार गोकर्ण के चार पुत्रों में से एक।

९ चौथे द्वापर के एक वेदव्यास का नाम।

रू. भे.—ब्रहतीपति, ब्रहसपत, ब्रहसपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहस्पती, ब्रिहसपत, ब्रिरसपत, बिरसपति, बिरसपती, बिरस्पत, बिरस्पति, बिरस्पती, बिसपत, बिसपत, बिसपति, बिसपती, ब्रसपत, ब्रसपति, ब्रसपती।

ब्रहसपतवार, ब्रहसपतिवार, ब्रहसपतीवार, ब्रहस्पतवार, ब्रहस्पतिवार, ब्रहस्पतीवार—देखो 'ब्रहस्पति' (२)

ब्रहांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ उदै मरवक ऊगहंत, माळ लक्ख मंडहो। स्रीवंत साह लाखपत्ति, कवि श्रोड दी धुहो। वियास भट्ट कै महत, जोतिकी ब्रहांमणं। कथा पुरांण भागवंत, भारथं रामाइणं। —गु. रू. बं.

उ०—२ मांड नव तेरहो नवै ग्रह मांडिया, ब्रहांमण फरै नारद वधाळं। रोहणी वोदणी छेह सर राळिया, रघर तंबोळ मुख हूंत राळं। —दुरसो आढो

ब्रहास, ब्रहास—सं. पु.—अश्व, घोड़ा। (ना. डि को.)

उ०—१ अवागळ धीह ब्रहब्रह तूर, 'कलावत' जंग करंत करूर। वहै असवार अनेक ब्रहास, दियं खग झटक 'गोयंददास'।

—सू. प्र.

उ०—२ बिढै महता जुधि और ब्रहास, दियं खग झाटक गोकळ-दास। वंरीहर वाढत वीजळ वाह, 'गोपाळ' कराळ करै गजगाह।

—सू. प्र.

उ०—३ खुरगकन समोभ्रम आइ लास, बिलहणा हुवइ छूटइ ब्रहास। अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ चापि। —रा. ज. सी.

उ०—४ फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊंबास अरिस आरिखि चमूर। बणवीर चड़िय तेवहि ब्रहासि, अहिकार बंध बाइइ अयासि। —रा. ज. सी

उ०—५ नाठै ससउ दिगळ आवासि, बांसाइ राजा वत्सइ ब्रह्मासि। परि सूता छइ रांणी सही, नळ राजा किणि लखियउ नहीं। —डो मा.

ब्रह्मिंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

ब्रह्मि—देखो 'ब्रह्मा' (अल्पा., रू. भे.)

ब्रह्मांड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ सोना रा कळस घणूं ताइ सुंदर, लगा ‍ंडिया इकवीस अखंड। जडिया कुंदण तणी जेवडी, बांस जिकै लागा ब्रह्मांड।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सातें ही ब्रह्मांड संकिया, पुड सातें संकिया पयाळ। बाजियो लोह रहक सिर बाजइ, लागा युध करिवा लंकाळ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रहियै जुग बोल जितै धर अंबर, सायर सिला तिरावण हार। इकवीसूं ब्रह्मांड उपावै, नांव तणौ सूं निसतार।

—परमानंद वणियाळ

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—१ रोमंच अंग धोम रूप, ब्रह्म तेज मैं वणै, जटास छवंटा जडागि, आग नेत्र ऊफणै। वसिस्ठ आय जेण वार, ग्यांन कीध धू-मती, दईव सेव तुभः नंद, मैं न कोइ भूपती। —सू. प्र.

उ०—२ सींचै अम्रत अंग प्रति संजम, जोवन लगै विकार जरा जम। परमहंस आंणद मैं प्रांणी, ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वांणी।

—सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—आरद्र जेयसुत वंस ओप, जै सुत जवनासव ब्रह्म जोप। संभ्रम जवनासव हुवी आव, ब्रहदस्व जेण सुत तप वधाव।

—सू. प्र.

३ देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—दहणइ कर दीध प्रगट राजाधिक, ब्रह्म आगा तैं कीध विचार। ईसर तूं जगदीस तणउ अंस, सहु ब्रह्में माहियउ संसार।

—महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—सभत ब्रह्म के सिनांन, केक अप्पण करै, धरत्त केक ध्यास ध्यांन, चंडि पाठ उच्चरै। जपंत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र ब्रहमळा, करंत पूज नो प्रकार, केक कंत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रह्मगिनांन, ब्रह्मग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

उ०—लख्न भरतार लील लहरी रव, ताप पाप भो टाळै। 'ईसर' तणो रमै तो आतम, ब्रह्मगिनांन विचाळै। —ईसरदास बारहठ

ब्रह्मग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—सारस बतक मुरगाबी बक छेल संजै। हरख भगत तीर खंजन कुमार हुंजै। छहूं रिति जिन्हूं के तट परि ब्रह्मग्यांनी सिध मुनिराज आवै। मांनसरोवर कै ओळै सूल अनेक (क) लीलग आवै। —सू. प्र.

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज, ब्रह्मचरय्य, ब्रह्मचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—सो घणा स्त्री कहै इण हीज घड़ सूं एकण घण री पती मरताय ब्रह्मचरय व्रतवाळो एकणहीज घण री वैर लेने पड़सी। मरताय ज्यांरो ब्रह्मचरय व्रत निस्ट हुवोड़ो है और पर स्त्री गमण आदि कळंका सूं पूरित है तिकै बिना सिर तरवार बाह नही सकसी। —वी. स टी.

ब्रह्मचारिणी—देखो 'ब्रह्मचारिणी' (रू. भे.)

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रह्मजळ—देखो 'ब्रह्मजळ' (रू. भे.)

ब्रह्मजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रह्मदेव-सं. पु.—१ देखो 'ब्रह्मा'।

उ०—सुर मिळै कीध मसलति सकाज, आवी प्रभु आगळ अरज आज। सुरिंद्र मिळै ब्रह्मदेव साथ, हरि अग्र रहै सह जोड़ि हाथ।

—सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मदेव' (रू. भे.)

ब्रह्मद्वार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे.)

ब्रह्मधिया, ब्रह्मधी—देखो 'ब्रह्मधीय।' (रू. भे.)

ब्रह्मपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू. भे.)

ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)

ब्रह्मपुत्त, ब्रह्मपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रह्मपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)

ब्रह्मपुरांण—देखो 'ब्रह्मपुरांण' (रू. भे.)

ब्रह्मभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रह्ममुहरत, ब्रह्ममूहरत—देखो 'ब्रह्ममुहरत' (रू. भे.)

ब्रह्मयोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रह्मरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू. भे.)

ब्रह्मरिसी—देखो 'ब्रह्मरिसी' (रू. भे.)

ब्रह्मरूप—देखो 'ब्रह्मरूप' (रू. भे.)

उ०—मोहस आवर पय सबर, सहि गुर एकण साथि। ब्रह्मरूप गुण वाचिया, ज्याइ एणि अहोनांथि। —वि. प्र

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू. भे.)

ब्रह्मलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)

ब्रह्मविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू. भे.)

ब्रह्मवेता, ब्रह्मवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)

ब्रह्मसिर—देखो 'ब्रह्मसिर' (रू. भे.)

ब्रह्मसुतन—देखो 'ब्रह्मसुतन' (रू. भे.)

ब्रह्मसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे.)

ब्रह्मसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्यचतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि

उ०—२ ए ग्रनिरुधजी का नांम। चतुरमुख। चतुरवरण। चतुरातभाविग्य। चतुरजुग विधायक। सरवजीव विस्वकेत। ब्रह्मसू नरवर हंस देहनायक। —वेलि टी

ब्रह्महत्या, ब्रह्महित्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे.)

ब्रह्मांड, ब्रह्मांडि—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

ब्रह्मांण—देखो 'ब्रह्म' (मह., रू. भे.)

ब्रह्मांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ कूंकतडी मेल्ही चिहुं कनारां, नीघसजड ग्रागळि नीसांण। ब्रह्मा विस्णु पधारउ वहिला, जोगेसर तेडीया जांण। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सिव ब्रह्मा विसनर कहैं, संत भरे सब साखि। रांम नांम एको भला, हरीया हिरदे राखि। —ग्रनुभववांणी

उ०—३ विवध सासत्र रा जांणणहार त्रिकाळदरसी इसा स्री ब्रह्माजी कनै सिधाइजै दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै ग्रसुर बिहडीजै, कीरत कानै सुणीजै। —मा. वचनिका

उ०—४ हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या व्रहस्पति तणी, प्रतिग्या फरूसराम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान बलि तणउ, ग्रवस्टंभ मेरु तणउ, गरुग्राई गगन तणी, तेज तु सूरय तणउं, क्षमा धरणि तणी,.........। —व. स.

ब्रह्माव—१ देखो 'ब्रह्माव' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—तिण मात वदइ ग्रन्य बीजा भूपति, ग्रति ही गति दाखवइ ग्रसंत। ए ब्रह्माव उपाव ग्राखियउ, रिख तीरइ बाघउ रेवत। —महादेव पारवती री वेलि

ब्रह्मावत - देखो 'ब्रह्मावत' (रू. भे.)

ब्रह्मावरत—देखो 'ब्रह्मावरत' (रू. भे.)

उ०—.........रतनपुर कामरू ग्रोडियांण जालंधर सिंधु ग्रारब बंगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थान पुरासन मूलथाण मद्र ग्रद्र ग्रजरवेध विराट करहड बाइव हैव ग्रारयावरत्त ब्रह्मावरत्त त्रिगरत्त प्रभृति देसा। —व. स.

ब्रह्मावरि—देखो 'ब्रह्मावरि' (रू. भे.)

ब्रह्मासन—देखो 'ब्रह्मासन' (रू. भे.)

ब्रह्मास्त्र—देखो 'ब्रह्मास्त्र' (रू. भे.)

ब्रांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—कनवज पारस्वै महोरगढ राज करता, तिण ग्रापरी गुरुगोग्राचार वोसारयो, महापुन्यवंत तिण एक ब्रांमण देरासर पूजिवा भणी राख्यो, तिणनैं घणां गांव सांसण दीना। ब्रामणां री वंस वधारयो। —रा. वंसावळी

ब्रांस, ब्रांसि, ब्रासु—१ देखो 'बांस' (रू. भे.)

उ०—उडै खग चोट घडां सू ग्रंत, भडांचा सीस दडांची भत। ग्रणी मर फूटै कूंत ग्रव्रास, बबार बपै किरि बाजै ब्रांस। —गु. रू. बं.

२ देखो 'भरोसो' (रू. भे.)

उ०—ब्रांसि परधन को नवि ग्रहि. तिहां चुउ जुग सी विधि रहि? गो ब्राह्मण नी पूजा घणी, वात मी तें युग तणी? —नन्नाख्यांन

ब्रांह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—वळे लिखी ग्रा वात विमळ मलिनाथ ब्रांह्मण। स्री सुर मंगळ सबद ग्रादि कहियां नह ग्रवगुण। —सू. प्र.

ब्राचड—सं. स्त्री.—ग्रपभ्रंश भाषा का एक भेद विशेष जो ग्राठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रान्त में व्यवहार में ग्राता था।

ब्राजणी, ब्राजबी—देखो 'विराजणी, विराजबी' (रू. भे.)

उ० चढि एण विध चक्रवत्ति, तदि ब्राजियोस तखत्ति। चोसरा चमर मचार, वणि झपट वारंवार। —सू. प्र.

ब्राजणहार, हारो (हारी), ब्राजणियो—वि०।

ब्राजिग्रोडो, ब्राजियोडो ब्राज्योडो—भू० का० कृ०।

ब्राजीजणी, ब्राजीजबी—भाव वा०।

ब्राजियोडो—देखो 'विराजियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्राजियोडी)

व्रात—स. स्त्री. [स. व्रातः] समूह, झुण्ड।

उ०—ग्रर बरात रा प्राघुणका नू महानम में बुलाय खटरस मय नांना व्यंजना री व्रात पूरण ग्रसि चखावियो। - वं. भा.

रू. भे.—व्रात।

व्रात्य—वि. [स. व्रात्यः] व्रत का, व्रत से सम्बन्धित।

सं. पु.—१ नीच या कमीना पुरुष।

२ शूद्र पिता एवं क्षत्रियाणी माता के संसर्ग से उत्पन्न वर्णसंकर।

३ वह ब्राह्मण जिसका समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न होने के कारण पतन हो गया हो।

४ सेना में रहने वाला, सैनिक।

उ०—नरेस देस देस के निदेस मानतै नही, थिरांन थांन थांन के जबांन जानतै नही। घरा ग्रमात्य व्रात्य नाक नाक नाघरै नहीं, करीर हा ग्रताबि ग्रा खमां खमां करै नही। —ऊ. का.

ब्राळ-सं. स्त्री.—१ अग्नि शिखा, आग की लपट।

उ०—खळ हळां चलै रळतळां खाळ, बीजळां झळां वीमळां ब्राळ। गूछळां गळां गूथळां गड्डु, सिधळां कळां सांकळां सड्डु।
—गु. रू. बं.

२ बाष्प, भाप।

ब्राहंम—देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—मलल जिणांबं सो जणं, न द्याजो औरां कही। जांह कै दळ बळ एतळा 'उदा', ब्राहंम सोध्यो ही लाधो नहीं। —ऊदोनेंण

ब्राहंमण, ब्राहमण, ब्राहम्मण, ब्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ आणद लखण रोमांचित आंसू, वाचत गदगद कंठ न वणं। कागळ करि दीधो करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राहमण तणं।
—वेलि

उ०—२ वेदमंत्र बोलंत, वेद पाठी ब्राहंमण। पहरं पट्ट अबोट, द्रब्ब आपं घण सघण। —गु. रू. बं.

उ०—३ विकमाईत नांम ब्राहम्मण, बूझं मंत्र कुमंत्री बमण। अंतह करण दुरम्मति आई, वहै खुरम्मह जेठो भाई।
—गु रू. बं.

उ०—४ ब्रह्मादिक सारीखा ब्राह्मण, चवग्रह कन्हइ अनाथां नाथ। वेई जोड़ी देखतां बराबर, हथलेवइ ले दीधष हाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्राह्मणी—देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे.)

ब्राह्मी—देखो 'ब्राह्मी' (रू. भे.)

ब्रिंद—देखो 'ब्रंद' (रू. भे.)

उ०—सिध थया रिखि काज सहि, बध किआ खळ ब्रिंद।
—रांमरासो

ब्रिंदा—देखो 'ब्रंदा' (रू. भे.)

ब्रिंदारक—देखो 'ब्रंदारक' (रू. भे.)

ब्रिकोदर—देखो 'ब्रकोदर' (रू. भे.)

ब्रिक्ख, ब्रिख-सं. पु.—१ जल, वारि।

२ देखो 'ब्रक' (रू. भे.)

३ देखो 'ब्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ ऐहा जोध बहसिया आया, काजळ मसि (क) वरनो काया। माथं छत्रस ऊजळ दीठा, बळियं ब्रिक्ख किरि हंस बयठा।
—गु. रू. बं.

उ०—२ जड ऊबड ब्रिक्ख पडंत जुआ, है पाए पहाड मसट्ट हुआ। पतिसाह पयांण पुरं कियं, असमानक अस्सणि ऊलटियं।
—गु. रू. बं.

उ०—३ दळ सिणगार कहै 'गोदाउत', थिर जस अथिर कळ पावंत। ब्रिख छाया आचारि खत्री बंस, पातां सूं सोभा पावंत।
—हरिरांम राठोड़ ऊहड़ री गीत

उ०—आकुळ थ्या लोक केहवो अथिरज; वंछित छाया ए विहित। सरण हेम दिसि लीघो सूरिज, सूरिज ही ब्रिख आसरि। —वेलि

४ देखो 'ब्रख' (रू. भे.)

५ देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

६ देखो 'बरस' (रू. भे.)

७ देखो 'विस' (रू. भे.)

ब्रिखभ—देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

उ०—वांणिज विण साह सहर हाटां विण, जळ विण गांव वसं जेहड़ो। विण गायां ब्रिखभ, सभा पंडित बिण, महमा तीरथ तेहड़ो। —त्याग-प्रसंसा री गीत

उ०—२ कादरं भंरस बीभच्छरस किआ। सुरं सातरस अदभुतरस किआ। दूणिआं करुणारस किआ। वैकुंठ सूं लिखमी सहित आप विसन गुरड़ चढि आया। कविळास सूं सिघवाहणी चंडी सहित ईसर ब्रिखभ चढि आया। —र. वचनिका

ब्रिखवात—देखो 'ब्रखवात' (रू. भे.) (अ. मा.)

ब्रिखसेण, ब्रिखसेन—देखो 'ब्रखसेण' (रू. भे.)

ब्रिख—१ देखो 'ब्रक' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रख' (रू. भे.)

३ देखो 'ब्रक्ष' (रू. भे.)

४ देखो 'बरस' (रू. भे.)

५ देखो 'विस' (रू. भे.)

ब्रिज, ब्रिज्ज—देखो 'ब्रज' (रू. भे.)

उ०—अगम पथ इण इसक री, निभं ठाकुरं नांहि। जग ग्वाळणियां डोलियो, मुरपुरपत ब्रिज मांहि। —र. हमीर

ब्रित—१ देखो 'ब्रत' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रत्त' (रू. भे.)

ब्रिति, ब्रिती, ब्रित्ति, ब्रित्ती—देखो 'ब्रति' (रू. भे.)

ब्रिथा—देखो 'ब्रथा' (रू. भे.)

उ०—वकं वयण लंकेस विभीखण, म्हे तौ भुजबळ मिता। बाणी ब्रिथा हुवं रे वीरा, चित अधकांणी चिंता। —र. रू.

ब्रिद—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—गुण जांणग लाखो खत्रीआं गुर, असि दातार अभिनमो आंमुर। धरती पछिमी करामति धारी, भूपां रूप लियं ब्रिद भारी।
—ल. पि.

२ देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)

ब्रिदि, ब्रिदी—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—तुं सां ब्रह्म बिसन हो तरिया, तं उर ऊपरि मांणस धरियां। तं पावइं बड़ा ब्रिदि पाया, तं जगदीस जिसा नर जाया। —पी. ग्रं.

३ देखो 'ब्रद्धि' (रू. भे.)

ब्रिद्—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—सिरोमणि साज लिये व्रिद् 'बाल', लहै खट भाख वणी वपि लाज। व्रिवी परमांण बिसेख वखाण, तपै तुखिताण पट्टा सिरताज।
—ल. पि.

व्रिद्दी—सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता विशेष जो अष्टवर्ग की औषधियों में गिनी जाती है। (अमरत)

व्रिद्ध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

व्रिद्धि, व्रिद्धी—१ देखो 'वृद्धि' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रद्धियोग'।

व्रिध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)
उ०—१ नमो मोह माया नमो कांम क्रोधं। नमो व्रिध तरणा, नमो बाळ बोधं। —अनुभववांणी
उ०—चौवीसमां अवतार वेदव्यास जैसे। सो कैसे बाळ-वय विद्या बुधि सनकादिकूं जैसे। सुखदेव सैं तरुण व्रिध सो वेदव्यास तैसे।
—सू. प्र.
उ०—३ व्रिध जूनां दीठो वोहत, कनें राजि इण काज। देवां सुख असुहां दमण, उकति बतावो राज। —मा वचनिका
उ०—४ तठा उप्रांत सुर, रिख, जख्य, गंध्रप मांहे व्रिध, जूंनी मोहर घणी दीठी। विवध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा श्रीब्रह्माजी कनै सिधाईजै वरद सुणाईजै, कहै तिकां विध कीजै असुर व्रिहंडीजै, कीत कांने सुणीजै। —मा. वचनिका

व्रिधप, व्रिधपण, व्रिधपणौ—सं. पु.—वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
उ०—सुजु करे अहीरां सरिस सगाई, औळाडै राजकुळ इसा। व्रिधपणे मनि कोई वेसासौ, पांतरिया माता इ पिता। —वेलि

व्रिधि व्रिधी—देखो 'वृद्धि' (रू. भे.)
उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तंतु व्रिधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि। —वेलि

व्रिप, व्रिप्प—देखो 'विप्र' (रू. भे.)
उ०—रोम तणो रघनाथ पार सिव सकति न पांमै। नरहर रै नाम मैं जोगि ब्रहमा व्रिप जांमै। —पी. ग्रं.

व्रिप्पि, व्रिप्पी—देखो 'विप्री' (रू. भे.)
उ०—व्रिप्पी लुघ तेरह रो बणाउ, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाउ। लुघ सतावीस वैसो लखाइ, सहि सेस लेख सुद्रणि सभाइ।
—ल. पि.

व्रिप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

व्रिप्रि, व्रिप्री—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

व्रिसपत, व्रिसपति, व्रिसपती—देखो 'व्रहस्पति' (रू. भे.)
उ०—कहिजै कासुं सुकवि थोड़ गुण नावै धातां, आप अगम जग ईस वेद नह जांणै वातां। तत पांच गुण तीन कोम डिगपाळ कमाळो सोम राह छिनि सूर केत व्रिसपति कोलाळी। —पी. ग्रं.

व्रिससेण, व्रिससेन—देखो 'व्रखसेण' (रू. भे.)

व्रिस्टि, व्रिस्टी—देखो 'व्रस्टी' (रू. भे.)
उ०—व्यास भणइ मंत्रनइ उपाय, विहिली व्रस्टि हुसइ गढ माहि। गढ ऊपरि गढ रोहा समइ, वूठा देव दिवस चउदमइ।
—कां. दे. प्र.

व्रिस्पत, व्रिस्पति, व्रिस्पती—देखो 'व्रहस्पति' (रू. भे.)

व्रिह—देखो 'विरह' (रू. भे.)
उ०—व्रिह की मारी विरहनी, ए मन बैठी धारि। का तो तन सीतल करो, का तो द्यो तन जारि। —अनुभववांणी
उ०—२ व्रहि की मारी व्रिरहनी, देह सुं भई बदेह। जनहरिया किन सुं करै, साई विना संनेह। —अनुभववांणी
उ०—३ वन वन कुंज कुं गिरवर सोधां, सोधां नद नदीयां री नैर। रसराज उण सावरै विन उठ रह्यो, व्रिह जोबनिया री लैर।
—रसीले राज रा गीत

व्रिहत, व्रिहद—देखो 'व्रहत' (रू. भे.)

व्रिहदमांण, व्रिहदभांणु व्रिहदमांन, व्रिहदभांनु—देखो 'व्रहदभांनु' (रू. भे.)

व्रिहनट, व्रिहन्नट, व्रिहन्नड—देखो 'व्रहन्नट' (रू. भे.)

व्रीख—देखो 'वीख' (रू. भे.)
उ०—हरीया संगी रांम है, का सतगुर की सीख। जै पैंडै दुनियां चलै, भरु न एको व्रीख। —अनुभववांणी
उ०—२ बाळापण तरणा गयो, वड बूढापो धाय। हरीया कर सिर कंपिया, व्रीख भरी नही जाय। —अनुभववांणी
उ०—३ सखा जु लीयां आवै छै। तांह का हाथ खांचि खांचि ऊभा रहै छै। ज्यौं मदिवहतो हाथी व्रीख दोय चलै। अर व मुरड नै ऊभो रहै। त्यौं रुखममणीजी ऊभा रहता जाय छै।
—वेलि. टी.

व्रीखणौ, व्रीखबौ—१ देखो 'वीखणौ, वीखबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)
व्रीखणहार, हारो (हारी), व्रीखणियौ—वि०।
व्रीखियोड़ो, व्रीखियोड़ो, व्रीख्योड़ो—भू० का० कृ०।
व्रीखीजणो, व्रीखीजबौ—भाव वा०।

व्रीखियोड़ो—१ देखो 'वीखियोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'वेखियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. व्रीखियोड़ी)

व्रीड़, व्रीडा—सं. स्त्री. [सं.] लज्जा, शर्म। (अ. मा; एका. नां. मा.)
रू भे—व्रोड़, व्रोडा।

व्रीड़ित—वि.—शर्मिन्दा, लज्जित, संकुचित।
उ०—सुसमित सुनमित निज बदन सु व्रीड़ित, पुंडरीकाख पिया प्रसन। प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन।
—वेलि

व्रीवणो, व्रीवबो—देखो 'व्रीवणो, व्रीवबो' (रू. भे.)

व्रीवणहार, हारो (हारी), व्रीवणियो—वि० ।

व्रीवियोड़ो, व्रीवियोड़ो, व्रीव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

व्रीवीजणो, व्रीवीजबो—भाव वा० ।

व्रीवियोड़ो देखो 'व्रीवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रीवियोड़ी)

व्रोध, व्रोध—देखो 'विरोध' (रू. भे.)

उ०—पड़े धमाबड़ व्रोध छतरधर फिरंग पालटै, ग्रांटधर क्रोध भुज नयण भड़िया । सोध ग्रंगरेज हिंदुवांण ग्राया सरब, जोध सिर सेस रे कदम जुड़िया । —कोठारिया रावत जोधसिंघ री गीत

व्रोहाळ—देखो 'भ्रू' (मह; रू. भे.)

उ०—भालाळ क्रोधाळ ज्यं बंण भणं, मिळ मूंछ व्रोहाळ रोसाळ मुणं । वादयां मत कावळ वंण बको, धुर धाज हुसी मोय हूंत धको । —पा, प्र.

व्हाड़ियो—देखो 'वड़ियो' (रू. भे.)

व्हा—देखो 'वा' (रू. भे.)

व्हांणो—देखो 'वांहणो' (रू. भे.)

व्हा—१ देखो 'वा' (रू. भे.)

२ देखो वाह' (रू. भे.)

उ०—१ महारांणी भिभकनै लारै जोयो । पछै खिलखिल हसी । बोली—व्हा ग्रे काली मासी व्हा ! यूं डेट ग्रठा तांई खुर रगड़ती किसै सुरग रै लोभ सूं ग्राई । सिझ्या रा घरै ई मिळ जावती ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ पण यूं तो म्हारे सूं ई बीस गुणी वत्तो कालो निकळो । कूकरियां रै ग्रेंठा हांचळां नै धोवण तो देणा हा । व्हा ग्रे काळी छोकरी व्हा ! कोई देख लियो तो म्हारो तो कीं कोनीं, थारी ग्रकल बल्वांणीला । —फुलवाड़ी

उ०—पंच मांय रा मांय हंसिया । ग्रो राईको तो साव ग्रबूभ डळो । ग्रं सांच बोल जाता तो पछै वांदो ई कांई बात रो हो । व्हा, व्हैगो इणरै हाथा न्याव ? ग्रैड़ो न्याव निवेड़ण जोग ग्रकल व्हैती तो तड़ो लियां लरड़िया रै लारै डरर-डरर करतो क्यूं रवड़तो ।

—फुलवाड़ी

व्हार—१ देखो 'वहार' (रू. भे.)

२ देखो 'बाहर' (रू. भे.)

व्हाळी—देखो 'वाळो' (ग्रल्पा; रू. भे.)

व्हाळो—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

व्हालो—देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—१ भाबकि पहठी भाळि, सुंदरि दीठी सास विण । जिमि व्हालां विच वाळ, प्रिय जोई भाक नहीं । —डो. मा.

उ०—२ रांणी मांडयां डपला नै सोगो रे, माहरं व्हालां को पड़ै वियोगो । हा हा करूं हिवै कांसूं रे, माहरो हिवड़ो फटै मां सूं ।

—जयवांणी

उ०—३ माहरं ग्रावा-पोषो हुंतो, दी थो तमारे हाथो जो । जिम जांणो तिम राखजो, व्हालो माहरो ग्रायो जो । —जयवांणी

उ०—४ क्रोधी कांम विगाड़दै, रीस कियां वेही थीजै रे । व्हाला पण वेरी हुवै, ऐसो कांम किम कीजै रे । —जयवांणी

उ०—५ लुगायां रै कोई री टाबर घोड़िये में सूतो तो कोई री बारै रमण नै गयोड़ो, तो कोई रै चूल्हे पर घाट हिलायां विना ग्रोदो व्हे हो पण सगळा नै ग्राप ग्राप रो जीव व्हालो । —रातवासो

व्हेणो, व्हेबो—१ देखो 'होणो, होबो' (रू. भे.)

उ०—१ कांई भरोसो रीसां बळतो ग्रबकै लोठो लेयनै म्हारा माथा मैं नीं ठरकाय दै । पण इसी कोई बात नीं व्ही । काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो बातां करण लाग्यो ।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ ग्रन्नदाता ग्राप महीनो भर व्हियो नित रोज किला में पधारो । घात व्हेणी व्हैती तो कदेई व्हे जाती । धनजी-भीमजी माथै ग्रापरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण कांई ए दो ग्रादमी दरबार सूं ई वत्ता सांमरथ है । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ ज्यूं त्यूं करनै दिन ऊगो । मिनख दिसा फरागतो जावण लाग्या तो मसांण कांनी गिरजड़ा भमता निगै ग्राया । देखण वाळां नै वहम व्हियो । जाय नै देखै तो बांटका रै ग्रोळै लाभू रै छोकरा री लास पड़ी । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—४ ग्रागै ई हाथ ग्रर लारै ई हाथ, रक्षा करै गोरखनाथ । चूंथी सी क ग्रांख्यां भारत रो नकसो व्हे जिसो चे'रो, जाबड़ा दोनूं कांनी बैठोड़ा, जांणे एक कांनी हिंदमहासागर ग्रर दूजै कानी, बंगाळ री खाड़ी । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—५ ठीक तो यूं उणरो बाप है । बड़ो खतरनाक छोरो है । उण माथै तीन सो दो पूरो लागू व्हेग्यो है, बचणो मुसकल है ।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—६ सिरिमांनजी ग्रो तीन सो दो रो मांमलो है, ग्रापनै ध्यांन व्हेणो चाहिजै । तीन हजार सूं एक पाई कम नीं चालै ।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—७ उणनै बाग दियां नै दो दिन व्हियां पछै ई धणी-लुगाई दोन्यूं जणा मूंडा में ग्रन्न रो दांणो तकात नीं घाल्यो ।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—८ भूपति इम भाखियो, हमैं सुभड़ां किम व्हीजै । बोल्या भड़ ग्रजबंज, कमधपति सोच न कीजै । —मे. म.

उ०—९ घेरो नंम्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पं'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर रो माथो वाढ नांक्यो। दुस्मियां रै मन चींतो व्हो। —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—१० जिण दिन सूं म्हूं इणरी मां नै साथै चढायनैं ग्रायो हूं, उण दिन सूं लगायनै ग्राज दिन ताई ग्रो नितरोज मोटर माथै आवै अर उणरै ग्रावण री वाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलाई व्हो। पण इणरै ग्रावण मैं जेज नीं व्है।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—११ तमक सुधा त्रिय ग्रमर तन, पारस भय परसंत। व्हे कंचण इण दुख हरण, द्रग 'प्रताप' दरसंत। —जैतदांन बारहठ

उ०—१२ इण उपरांत ई हसनै बोल्या—वो रोज गावो जिको चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दो नीं लाडू। ग्राज तो म्हूं सांचाणी चाकरी माथै बहिर व्हियो हूं।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—१३ सिळह मझा व्है कैजमां, गुडि पाखर गजघट्ट। सूं बाधो दखणादि दळ, राठौड़ै, रिणवट्ट। —गु. रू. बं.

उ०—१४ म्हनै तो हाल ताई भरोसो नीं व्है कै ग्रो सपनो है कै साच है म्हारो लाडल बेटो थूं दुहाग री चिंता मत करज्यै। राजावां रा तो ग्रै थ८ व्हिया करै। —फुलवाड़ी

उ०—१५ व्हो—म्हैं तो इता बरस जांणतो कै म्हारा सूं वत्तो बिडरूप उणियारो इण दुनिया मैं भवै ई कोई व्हैला। पण ग्राज म्हारो भरम मिट्यो। ग्रैडी खुमो तो ग्राज पं'ली किणी रूपाळा सूं रूपाळा राजकंवर नै ई नीं व्हो व्हैलो। —फुलवाड़ो

२ देखो वहणी, वहबो' (रू. भे.)

व्हेणहार, हारो (हारी), व्हेणियो—वि०।

व्हियोड़ो, व्हेयोड़ो—भू० का० कृ०।

व्हेईजणो, व्हेईजबो—भाव वा०।

व्हैयोड़ो—१ देखो होयोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्हैयोड़ी)